ऑर्थोडॉक्स डॉगमैटकि थयिोलॉजी

मेट्रोपॉलटिन मकरयि (बुल्गाकोव)

भाग I.
ईश्वर स्वयं में और संसार तथा मानव के साथ उनके सामान्य संबंध पर

संशोधति और वस्तिारति संस्करण, 2005।
©होली ट्रनिटिी ऑर्थोडॉक्स मशिन।
संपादक: उनकी उत्कृष्टता अलेक्जेंडर,
ब्यूनस आयर्स और दक्षणि अमेरकिा के बशिप।
(चौथे संस्करण, सेंट पीटर्सबर्ग, 1883 पर आधारति।)

वषिय-सूची:

परचिय....5
§1. ऑर्थोडॉक्स डॉगमैटकि थयिोलॉजी का कर्तव्य....5
§2. ऑर्थोडॉक्स डॉगमैटकि थयिोलॉजी के वषिय-वस्तु के रूप में ईसाई डॉगमा की अवधारणा....5
§3. चर्च में धर्मसद्धिान्तों का उद्भव और वकिास: ऑर्थोडॉक्स धर्मसद्धिान्तशास्त्र के स्रोत और प्रतमिान....9
§4. धर्मशास्त्रों के वभिन्नि वर्गीकरण और ऑर्थोडॉक्स धर्मशास्त्रीय धर्मशास्त्र में इन वर्गीकरणों का महत्व....14
§5. ऑर्थोडॉक्स धर्मशास्त्रीय धर्मतत्व की प्रकृति, संरचना और वधिि....17
§6. ऑर्थोडॉक्स डॉगमैटकि थयिोलॉजी का पहला कालखंड....23
§7. ऑर्थोडॉक्स डॉगमैटकि थयिोलॉजी का दूसरा कालखंड....27
§8. ऑर्थोडॉक्स धर्मशास्त्रीय धर्मशास्त्र का तीसरा कालखंड....33

अनुभाग 1. ईश्वर स्वयं में....40
§9. ऑर्थोडॉक्स चर्च की शक्षिा के अनुसार, परमेश्वर के बारे में हमारे ज्ञान की सीमा।....40
§10. ईश्वर स्वयं के वषिय में ऑर्थोडॉक्स शक्षिा का सार और वभिाजन।....45

अध्याय 1. ईश्वर पर, जो स्वभावतःएक है।....46
§11. जाँच की संरचना और वधिि....46
1. ईश्वर की एकता पर....46
§12. चर्च की शक्षिा और धर्मसद्धिान्त का संक्षप्ति इतहिास....46
§13. पवत्रि शास्त्र से ईश्वर की एकता के प्रमाण....47
§14. पवत्रि पतिरों और चर्च के शक्षिकों द्वारा प्रयुक्त ईश्वर की एकता के तार्कक प्रमाण....51
§15. धर्मसद्धिान्त के नैतकि नहितिार्थ....55

२. ईश्वर की प्रकृति पर 56
§16. इस सिद्धांत का संक्षिप्त इतिहास, इस पर चर्च की शिक्षा, और इस शिक्षा की संरचना 56
§17. दैवीय सत्ता की अवधारणा: ईश्वर आत्मा है 58
§18. ईश्वर के सारभूत गुणों की अवधारणा, उनकी संख्या और वर्गीकरण। 62
§19. दिव्य सत्ता के सामान्य गुण। 63
1. अनंतता। 64
२. स्व-अस्तित्व (αυτούσια, aseitas)। 66
3. स्वतंत्रता। 67
४. अगोचरता और सर्वव्यापकता। 68
5. अनंतकाल। 71
6) अपरिवर्तनीयता। 72
7. सर्वशक्तिमानता। 73
§20. ईश्वर के मन के गुण। 75
1. सर्वज्ञता। 75
२. परम ज्ञान। 79
§21. ईश्वर की इच्छा के गुण। 80
1. परम स्वतंत्रता। 81
२. परम पवित्रता। 82
३. अनंत सद्गुण। 84
४. सबसे पूर्ण सत्य और निष्ठा। 87
५. अनंत न्याय। 88
§22. ईश्वर के सारभूत गुणों का उनके सार और एक-दूसरे के साथ संबंध। 90
§ 23. धर्मसिद्धान्त का नैतिक अनुप्रयोग। 94

अध्याय 2. परमेश्वर पर, जो व्यक्तियों में त्रैक्य है। 98

§ 24. पवित्र त्रिमूर्ति के धर्मसिद्धान्त का विशेष महत्व और अकल्पनीयता, इस पर चर्च की शिक्षा, और इस शिक्षा की संरचना। 98
1. ईश्वर में व्यक्तियों की त्रिमूर्ति पर, दिव्य स्वभाव की एकता को बनाए रखते हुए। 100
§ 25. इस धर्मनिर्णय का संक्षिप्त इतिहास और चर्च की इस शिक्षा का अर्थ। 100
§ 26. पुराने नियम के पवित्र धर्मग्रंथों से ईश्वर में व्यक्तियों की त्रैक्य स्वभाव के प्रमाण, साथ ही सार की एकता को बनाए रखते हुए। 104
§27. परमेश्वर में व्यक्तियों की त्रैयिक प्रकृति के लिए नए नियम के पवित्र धर्मग्रंथों से साक्ष्य, साथ ही सार की एकता को बनाए रखना। 110
§ 28. पवित्र परंपरा से उसी सत्य की पुष्टि। 121
§ 29. एक ईश्वर में व्यक्तियों की त्रिमूर्ति के सिद्धांत और सुदृढ़ तर्क के बीच संबंध। 128
§ 30. सिद्धांत का नैतिक अनुप्रयोग। 132
2. दैवीय व्यक्तियों की समानता और एकसारता पर। 133
§ 31. पिछले अनुभाग से संबंध; इस धर्मशास्त्र का संक्षिप्त इतिहास और चर्च की इस पर शिक्षा का अर्थ। 133
§ 32. पिता की दिव्यता। 137
§33. पवित्र शास्त्र से पुत्र की दिव्यता और पिता के साथ उसकी एकसारता का प्रमाण। 138
§ 34. पवित्र परंपरा से पुत्र की दिव्यता और पिता के साथ उसकी एकसारता का प्रमाण। 145
§ 35. पवित्र आत्मा की दिव्यता और पिता तथा पुत्र के साथ उसकी एकसारता के लिए पवित्र शास्त्र से साक्ष्य। 151
§ 35. पवित्र आत्मा की दिव्यता और पिता तथा पुत्र के साथ उसकी एकसारता के विषय में पवित्र परंपरा से साक्ष्य। 157
§ 37. डॉगमा के नैतिक निहितार्थ। 160
3. दिव्य व्यक्तियों के बीच उनके व्यक्तिगत गुणों के अनुसार अंतर पर। 161
§ 38. पिछले खंड से संबंध; इस धर्मसिद्धान्त और इस पर चर्च की शिक्षा का संक्षिप्त इतिहास। 161
§ 39. परमेश्वर पिता का व्यक्तिगत गुण। 166
§ 40. पुत्र ईश्वर का व्यक्तिगत गुण। 167
§ 41. पवित्र आत्मा परमेश्वर का व्यक्तिगत गुण। 169
§ 42. पवित्र धर्मग्रंथ के आधार पर पवित्र आत्मा के प्रवाहन के प्रश्न की परीक्षा। 170
§ 43. प्राचीन धर्मसूत्र पवित्र आत्मा की उत्पत्ति के बारे में क्या सिखाते हैं। 180
§ 44. प्राचीन परिषदों ने पवित्र आत्मा के प्रवाहन के संबंध में क्या शिक्षा दी। 183

§45. पवित्र आत्मा के प्रवाहन के प्रश्न की परीक्षा, पवित्र पिताओं और चर्च के शिक्षकों की गवाहियों के आधार पर। ..192
§46. पवित्र आत्मा के पुत्र से भी उत्पन्न होने की शिक्षा की रक्षा के लिए पवित्र पिता और चर्च के शिक्षकों की रचनाओं से उद्धृत गवाहियों को हमें कैसे देखना चाहिए? 205
§47. सभी जांचे गए पैट्रिस्टिक साक्ष्यों से निकाला गया निष्कर्ष।....218
§48. पवित्र आत्मा की उत्पत्ति के संबंध में धर्मशास्त्रीय तर्क के तर्कों पर एक विचार।....219
§ 49. सामान्य निष्कर्ष।....221
§ 50. धर्मसिद्धान्त का नैतिक अनुप्रयोग।....222

अनुभाग 2. ईश्वर पर, उनकी दुनिया और मानवता के साथ सामान्य संबंध में....223
§ 51. इस संबंध की चर्च की समझ और इस पर उसकी शिक्षा....223

अध्याय 2. ईश्वर के सृष्टिकर्ता के रूप में....223
§ 52. चर्च की शिक्षा और इस शिक्षा की संरचना....223
1. सामान्य रूप से ईश्वर की सृष्टि पर....224
§ 53. ईश्वर की सृष्टि की अवधारणा और इस सिद्धांत का संक्षिप्त इतिहास....224
§ 54. ईश्वर ने संसार की सृष्टि की....225
§ 55. ईश्वर ने शून्य से संसार की रचना की....227
§ 56. ईश्वर ने संसार की सृष्टि शाश्वत से नहीं, बल्कि समय के साथ या समय के साथ-साथ की।....229
§ 57. परम पवित्र त्रिमूर्ति के सभी व्यक्तियों की सृष्टि के कार्य में सहभागिता....232
§ 58. सृष्टि का तरीका....234
§ 59. सृष्टि के लिए प्रेरणा और इसका उद्देश्य....236
§ 60. सृष्टि की पूर्णता और संसार में बुराई की उत्पत्ति....239
§ 61. सिद्धांत के नैतिक निहितार्थ....240
ईश्वर की सृष्टि के प्रमुख प्रकारों पर....241
1. आध्यात्मिक जगत पर....241
§ 62. चर्च की शिक्षा और धर्मनिष्ठा के संबंध में झूठी रायों का संक्षिप्त अवलोकन....241
1.1. शुभ आत्माओं या स्वर्गदूतों पर....241
§ 63. स्वर्गदूतों की अवधारणा और उनके अस्तित्व की निश्चितता....242
§ 64. परमेश्वर से स्वर्गदूतों की उत्पत्ति और उनकी उत्पत्ति का समय....244
§ 65. स्वर्गदूतों का स्वभाव....248
§66. स्वर्गदूतों की संख्या और उनके पदक्रम: स्वर्गीय पदक्रम....252
1.2. दुष्ट आत्माओं पर....255
§ 67. दुष्ट आत्माओं के विभिन्न नाम और उनके अस्तित्व की निश्चितता....256
§ 68. दुष्ट आत्माओं को ईश्वर ने अच्छा बनाकर रचा था, लेकिन वे अपनी इच्छा से दुष्ट हो गए।....257
§ 69. दुष्ट आत्माओं का स्वभाव, उनकी संख्या और पदक्रम....262
§ 70. निर्धारित सिद्धांत का नैतिक अनुप्रयोग....264
२. भौतिक जगत पर....265
§71. चर्च की शिक्षा और धर्मसिद्धान्त पर झूठे विचारों का संक्षिप्त अवलोकन....265
§72. मोशे का भौतिक जगत की उत्पत्ति का विवरण एक कहानी है....266
§73. छः दिनों में सृष्टि के मूसा के वृत्तांत का अर्थ....267
§74. मूसा के वृत्तांत के विरुद्ध उठाए गए आपत्तियों का एक उत्तर....269
§75. सिद्धांत का नैतिक अनुप्रयोग....271
३. सूक्ष्म रूप—मनुष्य....272
§76. पिछले भाग से संबंध। चर्च की शिक्षा और इस शिक्षा की संरचना....272
3.1. मानव की उत्पत्ति और स्वभाव....272
§77. मूसा के वृत्तांत में प्रथम मनुष्यों, आदम और हव्वा, की उत्पत्ति का सार और अर्थ....272
§78. समस्त मानव जाति का आदम और हव्वा से वंशज होना....275
§79. प्रत्येक मानव का मूल और, विशेष रूप से, आत्माओं का मूल....279
§80. मनुष्य की संरचना....282
§81. मानव आत्मा के गुण....286
§82. मनुष्य में ईश्वर की प्रतिमा और समानता....289
3.2. मनुष्य के उद्देश्य और मूल स्थिति पर....292

§83. मानव जाति का उद्देश्य 292
§84. प्रथम मानव की अपनी प्रयोजन, या पूर्णता के लिए क्षमता 295
§85. प्रथम मानव को उसकी नियति पूरी करने में ईश्वर की विशेष सहायता 297
§86. परमेश्वर द्वारा पहले मनुष्य को दिया गया आज्ञा, इसकी आवश्यकता और महत्व 301
§87. प्रथम मनुष्य का आनंद 304
3.3. स्वैच्छिक पतन और इसके परिणामों पर x मानव के पतन के 305
§88. हमारे प्रथम माता-पिता के पतन का स्वभाव 305
§89. हमारे प्रथम माता-पिता के पाप की गंभीरता 308
§90. हमारे प्रथम माता-पिता के पतन के परिणाम 310
§91. मानव जाति में हमारे प्रथम माता-पिता के पाप का संचरण : प्रारंभिक टिप्पणियाँ 314
§92. मूल पाप की वास्तविकता, इसकी सार्वभौमिकता और इसके संचरण का तरीका 315
§93. हम में आदि पाप के परिणाम 323
§94. धर्मसिद्धान्त का नैतिक अनुप्रयोग 325

अध्याय 2. प्रदाता के रूप में परमेश्वर 327
§ 95. चर्च की शिक्षा और इस अध्याय की संरचना 327
1. सामान्य रूप से दैवीय प्रबंध पर 327
§ 96. दैवीय व्यवस्था का सिद्धांत, इसके कार्य और रूप, और इस सिद्धांत पर गलत विचारों का एक अवलोकन 328
§ 97. दैवीय अनुग्रह की वास्तविकता 329
§ 98. दैवीय अनुग्रह के प्रत्येक कार्य की वास्तविकता 332
§ 99. दोनों प्रकार की दैवीय व्यवस्था की वास्तविकता 335
§ 100. परम पवित्र त्रिमूर्ति के सभी व्यक्तियों की प्रॉविडेंस के कार्य में भागीदारी 337
§101. ईश्वर की परमप्रबन्धकता और नैतिक प्राणियों की स्वतंत्रता तथा संसार में विद्यमान बुराई के बीच संबंध 339
§102. सिद्धांत का नैतिक अनुप्रयोग 341
2. ईश्वर की प्रबंधक शक्ति के संबंध में उसकी सृष्टि के मुख्य प्रकारों पर 341
2.1. आध्यात्मिक जगत के संबंध में 341
§ 103. पिछले खंड के साथ संबंध और विषय पर दृष्टिकोण 341
§ 104. ईश्वर अच्छे स्वर्गदूतों की सहायता करते हैं 342
§ 105. ईश्वर अपने अच्छे स्वर्गदूतों को उनकी सेवा में शासन करते हैं 345
§ 106. ईश्वर सामान्य रूप से मानव जाति की सेवा में अच्छे स्वर्गदूतों का निर्देशन करते हैं 348
§107. मानव समाजों के संरक्षक स्वर्गदूत 349
§ 108. व्यक्तियों के संरक्षक स्वर्गदूत 353
§ 109. ईश्वर केवल दुष्ट स्वर्गदूतों की गतिविधि की अनुमति देते हैं 358
§ 110. ईश्वर ने दुष्ट आत्माओं की गतिविधियों को सीमित किया है और उन्हें सीमित करना जारी रखता है, साथ ही उन्हें अच्छे परिणामों की ओर निर्देशित करता है 362
§ 111. सिद्धांत का नैतिक अनुप्रयोग 366
2.2. भौतिक जगत पर 367
§ 112. पिछले विषयों से संबंध 367
§ 113. ईश्वर दृश्यमान जगत के प्राणियों के हित के लिए कार्य करता है 368
§ 114. परमेश्वर दृश्यमान संसार का शासन करता है 369
§ 116. सिद्धांत का नैतिक अनुप्रयोग 371
2.3. दीनों के लिए, मनुष्य के लिए 371
§ 117. पिछले भाग से संबंध: मानव जाति के लिए ईश्वर की विशेष देखभाल 371
§ 118. ईश्वर व्यक्तियों की व्यवस्था करता है 374
§119. ईश्वर की व्यवस्था सभी से बढ़कर धर्मी लोगों पर अनुग्रह करती है: संदेह का समाधान 376
§ 120. वे तरीके जिनसे ईश्वर मानवता का पालन-पोषण करते हैं और अगले भाग में संक्रमण 380
§ 121. सिद्धांत का नैतिक अनुप्रयोग 381

परिचय

प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर स्थापित होकर,
जिसका मूल आधार स्वयं यीशु मसीह हैं।
एफ़ि. 2:20.

ताकि यदि मैं विलंब करूँ, तो तुम जान लो
कि मनुष्य को परमेश्वर के घर में अपना आचरण कैसा रखना चाहिए,
जो जीवते परमेश्वर की मंडली है,
सत्य का स्तंभ और आधार।
1 तीमु. 3:15.

प्रिय, हर आत्मा पर विश्वास न करो,
पर आत्माओं की परीक्षा करो, यह जानने के लिए कि वे परमेश्वर की हैं या नहीं।
1 यूहन्ना 4:1।

सिद्धान्त का अध्ययन सबसे बड़ा खजाना है।
(सबसे बड़ा खजाना सिद्धांतों का अध्ययन है)।
सेंट साइरिल ऑफ़ जेरूसलम, कैटेकेटिकल प्रवचन, 4:2.

§1. ऑर्थोडॉक्स डॉगमैटिक थियोलॉजी का कर्तव्य

ऑर्थोडॉक्स डॉगमैटिक थियोलॉजी, एक विज्ञान के रूप में समझी जाए, तो उसे ईसाई धर्मसिद्धांतों को यथासंभव पूर्णता, स्पष्टता और गहनता के साथ, एक व्यवस्थित क्रम में प्रस्तुत करना चाहिए, और इसके अलावा, ऑर्थोडॉक्स चर्च की भावना के अनुसार।[1]

§2. ऑर्थोडॉक्स डॉगमैटिक थियोलॉजी के विषय-वस्तु के रूप में ईसाई डॉगमा की अवधारणा

'ईसाई धर्मसिद्धान्त' शब्द का तात्पर्य उन प्रकट की गई सच्चाइयों *से* है जो चर्च द्वारा लोगों को उद्धारकारी विश्वास के निर्विवाद और अपरिवर्तनीय सिद्धांतों के रूप में सिखाई जाती हैं। अर्थात्, प्रत्येक ईसाई धर्मसिद्धान्त में तीन अनिवार्य विशेषताएँ मानी जाती हैं: एक धर्मसिद्धान्त है—

1) *एक सत्य* है *जो प्रकट किया गया है* और इसलिए पवित्र शास्त्र, या पवित्र परंपरा, या दोनों में निहित है: क्योंकि ईसाई धर्म के लिए अन्य कोई स्रोत नहीं हैं, और जो शिक्षा इन स्रोतों में नहीं मिलती, वह कभी भी ईसाई धर्मसिद्धान्त नहीं हो सकती। यही वह अर्थ है जिसमें—मसीहा द्वारा पृथ्वी पर लाई गई—सत्यताओं को स्वयं परमेश्वर के वचन में ही 'डॉग्मा' कहा गया है,[2] तथा *'दिव्य डॉग्मा',*[3] *'मसीह के डॉग्मा',*[4] *'प्रभु के डॉग्मा',*[5] *'सुसमाचार के डॉग्मा'* और *'प्रेरितों के डॉग्मा'* जैसे अभिव्यक्तियाँ चर्च के प्राचीन और प्रसिद्ध पादरियों में पाई जाती हैं;[6] वास्तव में, संपूर्ण

---

[1] देखें ए. एम., *ऑर्थोडॉक्स थियोलॉजी का परिचय*, §§ 151, 152, 160, 162, 177 और 178।

[2] जब, उदाहरण के लिए, उद्धारकर्ता के विषय में कहा जाता है कि उन्होंने *अपनी शिक्षा द्वारा आज्ञाओं के विधान* (δόγμασι) *को समाप्त कर दिया* (एफ़ि. 2:15), या कि उन्होंने ***अपनी शिक्षा द्वारा*** *हमारे विषय में लिखा हुआ विधान* (δόγμασι) *मिटा दिया* (कुल. 2:14)। संत क्रिसोस्टोम, धन्य थियोडोरेट, संत थियोफिलैक्ट और कुछ अन्य शिक्षकों ने इन अंशों की व्याख्या करते हुए 'डॉग्मा' का अर्थ ठीक-ठीक सुसमाचार की शिक्षा ही समझा है।

[3] Δόγματα θεῖα *(थियोडोरेट,* एपिस्ट. एड जोहान. एंटिओह.), — ईश्वर के *(ओरिज़ि.* इन मैथ. वॉल. 12, एन. 23; क्लेम. *एलेक्स.* स्ट्रोम. 3:2; 6:15)।

[4] यीशु मसीह के सिद्धांत *(*मैग्नेशियाई लोगों के नाम *इग्नाशियस* 13; *संत जस्टिन की शहादत,* खंड 4; *बेसिल,* भजन संहिता 46 पर, खंड 4)।

[5] प्रभु के सिद्धांतों में दृढ़ होने का प्रयत्न करो *(इग्नाजियस का* एफ़िसियों को पत्र, § 13)।

[6] सुसमाचारों के सिद्धांत (*अतानासियस,* मत्ती पर प्रवचन 9); प्रेरितों के *(थियोडोरेट,* चर्च का इतिहास 1. 2. 7).

ईसाई सद्धिांत को सामान्यतः *'डॉग्मा'* कहा जाता है,[7] सुसमाचार लेखकों और प्रेरतिों को *डॉग्मा के शक्षिक* कहा जाता है,[8] जबकि ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों को *डॉग्मा के रक्षक कहा* जाता है।[9] इसी पहली वशिषता के द्वारा ईसाई धर्मशास्त्र को अलग पहचाना जाता है: क) सामान्य रूप से सभी गैर-ईसाई धर्मशास्त्रों और सच्चाइयों से, जैसे: हर दूसरे धर्म के धर्मशास्त्र और सच्चाइयाँ,[10] ; दार्शनकि अर्थ में धर्मशास्त्र से,[11] ; राजनीतकि अर्थ में,[12] ; और इसी तरह; ख) उन सच्चाइयों से जो ईसाई तो हैं लेकनि दव्यि प्रकटीकरण में शामलि नहीं हैं, जैसे: अधकिांश ऐतहिासकि सच्चाइयाँ, उदाहरण के लिए, इस या उस चर्च फादर के जीवन और कार्यों के बारे में; और अनुष्ठानकि तथा धर्मशास्त्रीय सच्चाइयाँ, यानी वे जो चर्च की पूजा और अनुशासन को परभिाषति करती हैं। इन सभी स□□□ों को, केवल इसलिए कि वे दव्यि प्रकाशन में शामलि नहीं हैं—भले ही वे कतिने भी महत्वपूर्ण क्यों न हों—ईसाई धर्मसद्धिांत नहीं कहा जा सकता।

2) — *चर्च द्वारा* एक सत्य *सखिाया जाता* है। क्योंकि यद्यपि प्रत्येक ईसाई धर्मसद्धिान्त दव्यि प्रकाशन में नहिति है, हम, व्यक्तगित वश्विासयिों के रूप में, प्रत्यक्ष रूप से प्रकाशन से प्रत्येक को ग्रहण करते हुए, आसानी से कसिी एक या दूसरे धर्मसद्धिान्त को समझने में वफिल हो सकते हैं, या उसे गलत समझ सकते हैं, या, भले ही हम इसे सही ढंग से समझें, यह दृढ़ वश्विास न हो कि धर्मसद्धिान्तों की हमारी समझ पूरी तरह से सत्य है,[13] — जबकि कलीसयिा, अन्य बातों के अलावा, प्रभु द्वारा सभी लोगों के लिए उनके प्रकाशन की संरक्षक और व्याख्याकार, *सत्य का स्तंभ और आधार* बनने के लिए स्थापति की गई थी (1 तीमु. 3:15), और इस उद्देश्य के लिए पवत्रि आत्मा द्वारा इस तरह से नरि्देशति की जाती है कि वह न तो गलती कर सकती है, न धोखा दे सकती है, न ही धोखा खा सकती है।[14] परणिामस्वरूप, इस बात का पूरी तरह से आश्वस्त होने के लिए कि कुछ प्रकट की गई सच्चाइयों को धर्मसद्धिान्तों के रूप में स्वीकार कयिा जाना चाहिए, और उन्हें इसी प्रकार से समझा जाना चाहिए, न कि किसी अन्य प्रकार से, हमें इन सच्चाइयों और उनकी सटीक परभिाषा को मसीह की कलीसयिा के मुख से सुनना चाहिए — अर्थात्, सच्ची, ऑर्थोडॉक्स कलीसयिा से। इसी अर्थ में यरूशलेम की प्रेरति परषिद, जो संपूर्ण शक्षिण चर्च का प्रतनिधित्वि करती थी, ने शब्द — ἔδοξε (*पवत्रि आत्मा और हम दोनों को यह उचति प्रतीत हुआ...* प्रेरतिों के काम 15:28), अपने संक्षप्ति आदेशों की शुरुआत में, जन्हिें बाद में सभी वश्विासयिों के मार्गदर्शन के लिए प्रकाशति कयिा गया था; और पवत्रि सुसमाचार लेखक लूका ने इन आदेशों को *यरूशलेम में प्रेरतिों और बुज़ुर्गों द्वारा स्थापति* धर्मसद्धिान्तों या *आदेशों* (δόγματα) *के रूप में* संदर्भति कयिा (प्रेरतिों के काम 16:4)। इसी प्रकार, बाद में आए सभी सार्वभौमकि परषिदों ने, जो समान रूप से संपूर्ण शक्षिण चर्च का प्रतनिधित्वि करती थीं, अपने आदेशों की शुरुआत—प्रेरतिों की परषिद के उदाहरण का अनुसरण करते हुए—*'उचति प्रतीत हुआ'* (ἔδοξε) शब्द से की और इन आदेशों को धर्मसद्धिान्त (dogmas) कहा; उदाहरण के लिए: *छठे सार्वभौमकि परषिद के एक सौ सत्तर पवत्रि पतिाओं का हमारे प्रभु यीशु मसीह में दो इच्छाओं और कार्यों के संबंध में धर्मशास्त्र*।[15] परणिामस्वरूप, प्राचीन पादरयिों के लेखों में, ईसाई धर्मसद्धिान्तों को अक्सर सीधे तौर पर *चर्च के*

---

[7] .... आप उन लोगों द्वारा धोखा खाए गए हैं जो दैवीय सद्धिांत को एक सकि्के की तरह जाली बनाते हैं *(साइनेस.* एपस्टि. V)। उन्होंने उन्हें नयिुक्त कयिा और उन्हें अपने *सद्धिांत* और शक्षिा के प्रचार में नरि्देश दयिा *(लैक्टैंटियस,* उत्पीड़क ☐☐ की मृत्यु पर, n. 2. Conf. *St Basil,* Hexaëm. orat. 6).

[8] सद्धिान्त के शक्षिक — अपुद *ओरजिेन,* *कॉन्ट्रा सेल्सुम*, पुस्तक III.

[9] 'सद्धिान्त के' — *यूसेबयिस,* चर्च का इतहिास, पुस्तक VII, अध्याय 30 में।

[10] उदाहरण के लिए कहा जाता है: 'ग्रीक डोग्मा' *(सोज़ोमेन,* चर्च का इतहिास, पुस्तक V, अध्याय 16)।

[11] .... De suis decretis, quae philosophi vocant *dogmata (Cicero*, *Quaestiones Academicae*, IV, Θ). अतः पेलूसयिम के संत इसडिोर सोक्रेटसि को *ten attic dogmaton nomotheten* कहते हैं। पुस्तक I, पत्र II, व्याकरणवद् ओफेलीउस को।

[12] पवत्रि शास्त्र में, नम्निलखिति को कभी-कभी 'डॉगमा' कहा जाता है: *सीज़र* या राजाओं के *फरमान* (लूका 2:1; प्रेरतिों के काम 17:17; दानयिेल 2:13), *एक* शाही *आज्ञा* (दानयिेल 6:8 और 9), *एक* शाही *फरमान* (15), और शब्द — ἐδογμάτισαν — का उपयोग राजाओं (एस्तेर 3:9) और सरकारी प्राधकिरण की भावना में कार्य करने वाली लोकप्रयि सभा के नरि्णयों दोनों के संदर्भ में कयिा जाता है। (2 मक्काबीस 10:8; 15:36).

[13] ए. एम. द्वारा लखिति 'ऑर्थोडॉक्स थयिोलॉजी का परचिय', § 127 देखें। सेंट पीटर्सबर्ग, 1847।

[14] पूर्वी कैथोलकि चर्च के पैट्रआर्कों का ऑर्थोडॉक्स वश्विास पर पत्र, अनुच्छेद 2 और 12; अधकि ववरिण के लिए, उपरोक्त परचिय, §§ 134–140 देखें।

[15] पवत्रि प्रेरतिों, पवत्रि सार्वभौमकि और स्थानीय परषिदों, और पवत्रि पतिाओं की कोरमचाया या *नयिमों की पुस्तक* देखें — पहले पन्नों पर।

धर्मसद्धिान्त, चर्च के वचन,[16] के रूप में संदर्भति कयिा जाता है, जबकि जो ईसाई इन धर्मसद्धिान्तों का लगातार पालन करते हैं, उन्हें *चर्च का सदस्य* बताया जाता है।[17] इसी नई वशिषता के द्वारा ईसाई धर्मसद्धिान्तों को अलग पहचाना जाता है: क) नजिी मतों से, जन्हिें वश्विासी स्वयं वश्विास की सच्चाइयों के संबंध में दव्यि प्रकाशन के आधार पर सीधे बना सकते हैं, और जो, भले ही वे पूरी तरह से सही हों, तब तक केवल मत ही बने रहेंगे जब तक कि उन्हें चर्च द्वारा परभिाषति और सभी को नहीं सखिाया जाता।[18] दूसरी ओर, b) *ऑर्थोडॉक्स, सुदृढ़ और धर्मपरायण धर्मसद्धिान्त*,[19] गैर-ऑर्थोडॉक्स धर्मसद्धिान्तों से या, पवत्रि पतिरों के शब्दों में, *अधार्मकि, वकि्रत और वधिर्मी धर्मसद्धिान्तों* से भन्नि हैं, जन्हिें वशिष चर्चों या समुदायों द्वारा धारण कयिा जाता है जन्हिोंने स्वयं को मसीह की सच्ची कलीसयिा से अलग कर लयिा है।[20]

3) — चर्च द्वारा *उद्धारकारी वश्विास के एक नर्विवािद और अपरविर्तनीय नयिम* के रूप में एक सत्य सखिाया जाता है: — यह ईसाई धर्मशास्त्र की अंतमि आवश्यक वशिषता है, जो चर्च द्वारा सखिाए गए और समाहति कयि गए ईसाई प्रकाशन के अन्य सभी सत्यों से इसे अलग करती है। ईसाई प्रकाशन के सत्य, जो मुख्य रूप से पवत्रि धर्मग्रंथों में नहिति हैं, दो प्रकार के हैं: वश्विास के सत्य, जन्हिें वश्विासी को बुद्धि से स्वीकार करना चाहए, और व्यवहार के सत्य, जन्हिें इच्छा से स्वीकार करके जीवन में लागू करना चाहए। वश्विास के सत्य आगे दो वर्गों में वभिाजति हैं: कुछ ईसाई धर्म के सार से संबंधति हैं, जैसे कि ईश्वर और मनुष्य के बीच एक पुनर्स्थापति संघ, और इनमें ईश्वर और उसकी दुनयिा और वशिष रूप से मनुष्य के साथ उसके संबंध का सद्धिांत शामलि है, जो यह ठीक-ठीक परभिाषति करता है कि कसिी व्यक्ति को उद्धार पाने के लए कसिमें और कैसे वश्विास करना चाहए: इन्हीं को चर्च उद्धार देने वाले वश्विास के नर्विवािद और अपरविर्तनीय नयिमों के रूप में सखिाती है। अन्य सीधे तौर पर ईसाई धर्म के सार से संबंधति नहीं हैं, और इनमें या तो पुराने नयिम में परमेश्वर की कलीसयिा के ऐतहिासकि वृत्तांत और, कुछ हद तक, नए नयिम—जो परमेश्वर के लोगों के न्यायाधीशों, राजाओं, शासकों और महापुजारयिों, साथ ही पवत्रि भवष्यिवक्ताओं, प्रेरतिों और कई अन्य हस्तयिों से संबंधति हैं—या वभिन्नि हस्तयिों के व्यक्तगित कथन शामलि हैं, नबयिों, प्रेरतिों, और यहाँ तक कि स्वयं उद्धारकर्ता मसीह की व्यक्तगित बातें, जो ईसाई धर्म के सार से संबंधति नहीं हैं (जैसे यूहन्ना 1:42, 47; 4:50; 6:8); या ईश्वर के लोगों, अन्य राष्ट्रों, शहरों और इसी तरह की *चीज़ों के* भाग्य के बारे में भवष्यिवाणयिाँ—और इसलए, यद्यपि वे हमारे पूर्ण वश्विास के योग्य हैं, क्योंकि वे दव्यि प्रकटीकरण में प्रस्तुत की गई हैं, फरि भी चर्च उन्हें मोक्ष के लए आवश्यक नहीं सखिाती है। आचरण के सत्य भी दो श्रेणयिों में वभिाजति हैं: वे जो यह नर्धिारति करते हैं कि एक व्यक्ति, जो ईश्वर के साथ अनुग्रह की नई वाचा में बुलाए गए एक नैतकि प्राणी के रूप में, उसे ठीक-ठीक क्या करना चाहए: ये वास्तव में, नैतकि ईसाई आज्ञाएँ हैं; और वे जो दखिाते हैं कि एक ईसाई को बाहरी आराधना में परमेश्वर के साथ अपने संबंध को कैसे व्यक्त करना चाहए, और एक ईसाई को *परमेश्वर के घर में* (1 तीमु. 3:15) कैसे *आचरण करना* चाहए—ये वे अनुष्ठानकि और धर्मशास्त्रीय सच्चाइयाँ हैं, जनिकी संख्या, तथापि, नए नयिम की पुस्तकों में बहुत कम है। इन सभी प्रकट की गई सच्चाइयों में से, इस प्रकार चार वर्गों में उप-वभिाजति, केवल पहले वर्ग में आने वालों को संकीर्ण अर्थ में धर्मसद्धिान्त कहा जाता है; अर्थात्, वे सत्य जो मसीही धर्म के सार से संबंधति हैं, जनिमें परमेश्वर का सद्धिांत

---

[16] चर्च के धर्मसद्धिान्त (*अलेक्जेंड्रयिा के सरिलि*, आमोस 2:7; VI, 2; *क्रसिोस्टोम*, मत्ती 21:23 में); चर्च के धर्मसद्धिान्त (*नसिबिा के ग्रेगरी*, यूनोमयिस के वरिुद्ध, भाषण XII, खंड II, पृ. 815Paris . 1638; *क्रसिोस्टोम*, फलिपिीयों को लखि पत्र पर व्याख्यान VI); 'चर्च संबंधी प्रवचन' (*ओरजिन*, मत्ती पर, खंड XI, संख्या 17; खंड XII, संख्या 23)।

[17] चर्च संबंधी (*ग्रेग. ऑफ. नस्सिा*, *कॉन्ट्रा यूनोम. ओरेट. II*, *ओप.*, खंड II, पृ. 481, एड. मोरेल.); जो चर्च में इकट्ठा होते हैं (*एपफिेनयिस*, *हेरेस.*, LXI, संख्या 4); जो चर्च से हैं (*ओरजिन*, *कॉन्ट्रा सेल्स.*, V, 61)।

[18] इस अर्थ में, संत क्रसिोस्टोम अपने बारे में कहते हैं: 'क्योंकि आपने देखा होगा कि हमारे द्वारा कहा गया बहुत कुछ ववािदात्मक रूप से प्रचारति कयिा जाता है, न कि सद्धिांतगत रूप से।' मैथ्यू XXI, 23 में, *कोटेलर.* मोनम. इक्लेस. ग्र. III, 145 में।

[19] चर्च के रूढ़वािदी सद्धिांत (*अलेक्जेंड्रयिा के सरिलि*, *डेफेंसयिो एनाथेमोरम*, X; *क्रसिोस्टोम*, *जेनेससि पर होमलीज*, II, n. 5); दृढ़ता (*ओरजिन*, *यूहन्ना पर टीका*, खंड VI, n. 2; खंड XX, संख्या 22); धर्मपरायणता (*ओरजिन*, मत्ती पर, खंड XVII, संख्या 7; *अलेक्जेंड्रयिा के सरिलि*, आमोस 6:2); धर्मपरायण (*सरिलि*, प्रतीक में, एड मोनाच.);

[20] धर्म-वरिोध के सद्धिांत (*क्रसिोस्टोम*, खंड VIII, प्रवचन V, ed.Paris , पृ. 133); impia et irreligiosa dogmata (*इरनेयस*, वरिोधी मतों के वरिुद्ध, पुस्तक II, प्रस्तावना, संख्या 1); δόγματα μυσαρά (*थयिोडोरेट*, यशायाह पर Nav. quaest. XVI); 'नास्तकि' (*यूसेबयिस*, in Ps. LVII, 12); 'महामारि और घातक सद्धिांत' (*ऑगस्टाइन*, De Civitate Dei XVIII, 51, n. 1). तीसरे सार्वभौमकि परषिद के नयिम VII में भी कहा गया है: '*नेस्टोरयिस के नीच और वकि्रत सद्धिांत*'

और उसकी दुनिया तथा मानवता के साथ उसकी संबंधता शामिल है, और जो यह ठीक-ठीक निर्धारित करते हैं कि एक मसीही को उद्धार पाने के लिए क्या और कैसे विश्वास करना चाहिए। विश्वास की सच्चाइयों के रूप में, वे आचरण के सभी सच्चाइयों (नियमों) से भिन्न हैं; और उद्धारदायक विश्वास के नियमों के रूप में, वे विश्वास की उन सच्चाइयों से भिन्न हैं जो सीधे तौर पर ईसाई धर्म के सार और मानव जाति के उद्धार से संबंधित नहीं हैं।

संकुचित अर्थ में, चर्च संबंधी भाषा में 'डॉग्मा' शब्द केवल विश्वास के सत्यों को संदर्भित करता है, न कि ईसाई आचरण से संबंधित सभी सत्यों को, चाहे वे नैतिक, पूजा-संबंधी या कैननिक हों। यह स्वयं सार्वभौमिक परिषदों के उदाहरण से स्पष्ट है, जिन्होंने केवल अपने विश्वास की परिभाषाओं को ही डॉग्मा के रूप में नामित किया, जबकि अपने अन्य सभी फरमानों को *कैनन* या *नियम* कहा।[21] यह पवित्र पिताओं की रचनाओं से भी स्पष्ट है, उदाहरण के लिए:

a) जेरूसलम के संत सिरिल, जिनकी रचनाओं में हम पढ़ते हैं: "धर्म का सार (या ईश्वर की उपासना का तरीका) निम्नलिखित दो बातों में निहित है: धर्मपरायणता के सिद्धांतों का सटीक ज्ञान और अच्छे कर्म;"[22] धर्मसिद्धान्त बिना अच्छे कर्मों के ईश्वर को अप्रिय हैं; और वह कर्मों को भी स्वीकार नहीं करता यदि वे भक्ति के धर्मसिद्धान्तों पर आधारित न हों;" b) सेंट ग्रेगरी ऑफ़ निस्सा, जिन्होंने उद्धारकर्ता के प्रेरितों से कहे शब्दों के आधार पर: *'इसलिए जाओ और* (μαθητεύσατε) *सभी राष्ट्रों को सिखाओ... जो मुझे आज्ञा दी गई है, उन* सब का पालन करना *सिखाना* (Matt. 28:19–20), संपूर्ण ईसाई शिक्षा को दो भागों में विभाजित करता है: नैतिक और धर्मशास्त्रीय (εις έθικον μέρος καί είς δογμάτων άκριβείαν); c) संत जॉन क्राइसोस्टोम, जिनके अनुसार ईसाई धर्म में ऑर्थोडॉक्सी के सिद्धांतों के साथ-साथ धार्मिक आचरण की भी आवश्यकता है।[23] अंतत; इसका पुष्टि पूजा-संबंधी पुस्तकों में *'डॉग्मैटिक'* (δογματικόν) शब्द के प्रयोग से होती है, जहाँ *'डॉग्मैटिक्स'* से तात्पर्य ईश्वर की माता को समर्पित भजनों से है, जो ईश्वर की माता की शाश्वत कुँवारीपन, प्रभु के अवतार और उनमें दो स्वभावों के मिलन से संबंधित विश्वास के सिद्धांत को समाहित करते हैं।

डॉगमा को धर्म की वे सच्चाइयाँ कहा जाता है *जो* दिव्य प्रकटकिरण में प्रस्तुत की गई हैं, जो ईसाई धर्म के सार—परमेश्वर और मानवता के बीच एक पुनर्स्थापित संघ—से संबंधित हैं, जिनमें परमेश्वर और उसकी दुनिया, और विशेष रूप से मानवता के साथ, उसके संबंध के बारे में वास्तविक सिद्धांत निहित है, और जिन्हें चर्च द्वारा सिखाया जाता है, उद्धारकारी विश्वास के नियमों के रूप में, जो निर्विवाद और अपरिवर्तनीय हैं। इस बिंदु को साबित करने के लिए, यह बताना पर्याप्त है: (क) ऑर्थोडॉक्स धर्मसिद्धांतों या धर्मविश्वासों के संक्षिप्त कथन, जिनमें वास्तव में केवल ईश्वर और उनकी दुनिया, और विशेष रूप से मानवता के साथ, संबंधों के बारे में सत्य ही निहित हैं, और बाद में धर्मशिक्षा-पुस्तकों में इन धर्मविश्वासों की चर्च द्वारा दी गई व्याख्याएँ, जहाँ हम यही देखते हैं; ख) यह तथ्य कि, शुरू से ही, ऑर्थोडॉक्स चर्च ने हमेशा उन लोगों को अपने धर्म से—और परिणामस्वरूप शाश्वत उद्धार में हिस्सेदारी से—बहिष्कृत किया है, जिन्होंने इसके धर्मशास्त्रों को अस्वीकार करने या तोड़ने की हिम्मत की,[24] और — ग) अपने धर्मशास्त्रों की निर्विवादता और अटूटता पर चर्च की स्पष्ट शिक्षा: 'यदि कोई, जैसा कि छठी सार्वभौमिक परिषद के धर्मपिता कहते हैं, जो धर्म की मान्यताओं को धारण और स्वीकार नहीं करता, और उनके अनुसार सोचता और उपदेश नहीं देता, बल्कि उनके विरुद्ध जाने का प्रयास करता है, वह शापित हो, पवित्र और धन्य धर्मपिता द्वारा पहले से स्थापित आदेश के अनुसार, और उसे एक अजनबी के रूप में ईसाई समुदाय से बाहर और निष्कासित कर दिया जाए। क्योंकि, पहले से निर्धारित आदेश के अनुसार, हमने दृढ़ संकल्प के साथ यह निर्णय लिया है कि न तो निम्नलिखित में कुछ जोड़ा जाएगा और न ही इससे कुछ घटाया जाएगा, और हम किसी भी तरह से ऐसा नहीं कर सकते" (कैनन 1)। ईसाई धर्मसिद्धांतों की यह अटूटता और अपरिवर्तनीयता इस तथ्य पर आधारित है कि वे सभी स्वयं ईश्वर द्वारा प्रकट किए गए हैं और हमें चर्च, जो दैवीय रूप से स्थापित और अचूक शिक्षक है, द्वारा सिखाए गए हैं।

---

[21] कोरमचाया या *कैनन की पुस्तक* देखें।

[22] भक्ति का मार्ग इन दो चीजों से बनता है: धर्मपरायण सिद्धांतों की सटीकता और अच्छे कर्म। कैटेक. IV, पृ. 2.

[23] ईसाई धर्म, अपनी धर्मसिद्धियों की शुद्धता के साथ-साथ, एक सुव्यवस्थित शासन की भी मांग करता है। *क्रिसोस्टोम,* यूहन्ना पर उपदेश XXVII। परमधर्मपिता ने इसे उत्पत्ति पर अपने उपदेश II, संख्या 5, और उत्पत्ति पर उपदेश XIII, संख्या 4 में दोहराया है।

[24] देखें प्रविष्टि: *विधिर्म — 'द बुक ऑफ रूल्स' के* नवीनतम संस्करण के अंत में संलग्न वर्णानुक्रमिक अनुक्रमणिका *में...* (सेंट पीटर्सबर्ग, 1843)।

तदनुसार, ईसाई धर्मसद्धिान्तों को, यदि हम अन्य प्रकट किए गए सत्यों के बीच केवल उनके विशिष्ट चरित्र पर विचार करें, तो इस प्रकार भी परिभाषित किया जा सकता है: "ये सत्य के सार हैं जो ईसाई चर्च द्वारा धारित और सिखाए गए विश्वास के सद्धिांत का एक अभिन्न अंग हैं।" और इस प्रकार ऑर्थोडॉक्स डॉगमैटिक थियोलॉजी (dogmatic theology) कुछ और नहीं बल्कि *ऑर्थोडॉक्स सद्धिांत की प्रणाली* है। हालाँकि, यदि हम ईसाई धर्म के सद्धिांतों की संपूर्ण सामग्री पर विचार करें, तो उन्हें इस प्रकार परिभाषित किया जाना चाहिए: 'ईश्वर और संसार, और विशेष रूप से मानव जाति के साथ उसके संबंध के बारे में सत्य का सार (जैसा कि चर्च द्वारा माना और सिखाया जाता है); या, दूसरे शब्दों में, स्वयं ईश्वर के बारे में और ईश्वर को सृष्टिकर्ता, प्रदाता और उद्धारकर्ता के रूप में।' परिणामस्वरूप, 'ऑर्थोडॉक्स डॉगमैटिक थियोलॉजी' शब्द का अर्थ *उस अनुशासन से* लगाया जाना चाहिए *जो* परंपरागत रूप से परिभाषित इस धर्मशास्त्र की शाखा के अनुसार, *ईश्वर और उनके कार्यों के संबंध में ऑर्थोडॉक्स चर्च की शिक्षा को प्रस्तुत करता है*।

§3. चर्च में धर्मसद्धिान्तों का उद्भव और विकास: ऑर्थोडॉक्स धर्मसद्धिान्तशास्त्र के स्रोत और प्रतिमान

उपरोक्त में प्रस्तुत ईसाई धर्मसद्धिान्तों की समझ से यह स्पष्ट है कि इन सभी की दिव्य उत्पत्ति है। परिणामस्वरूप, किसी को भी इनकी संख्या में वृद्धि करने या कमी करने, या इन्हें किसी भी प्रकार से बदलने या रूपांतरित करने का अधिकार नहीं है: जितने धर्मसद्धिान्त परमेश्वर द्वारा आरंभ में प्रकट किए गए थे, उतने ही सभी समय के लिए बने रहने चाहिए, जब तक ईसाई धर्म का अस्तित्व रहेगा। हालाँकि, स्वयं प्रकाशनवाक्य में संख्या और सार दोनों में अपरिवर्तित रहते हुए, विश्वास के धर्मसद्धिान्तों को फिर भी प्रकट किया जाना चाहिए, और प्रकट भी किया जाता है, कलीसिया के भीतर विश्वासियों के लिए।

जब से लोगों ने प्रकटवाक्य में सिखाए गए धर्मसद्धिान्तों को आत्मसात करना और उन्हें अपनी समझ के दायरे में लाना शुरू किया, तब से ये पवित्र सत्य अनिवार्य रूप से विभिन्न व्यक्तियों द्वारा विभिन्न तरीकों से व्याख्यायित किए गए हैं (जैसा कि किसी भी सत्य के साथ होता है जब वह मानव जाति की संपत्ति बन जाता है), — अनिवार्य रूप से, मतभेद, धर्मसद्धिातों के संबंध में विभिन्न भ्रम, और यहां तक कि धर्मसद्धिातों के विभिन्न विकृत रूप या कुविश्वास, चाहे जानबूझकर हों या अनजाने में, उत्पन्न होने ही थे और हुए भी। इन सब से विश्वासियों की रक्षा करने के लिए, और उन्हें यह दिखाने के लिए कि उन्हें प्रकाशन के आधार पर ठीक क्या और कैसे विश्वास करना चाहिए, चर्च ने शुरू से ही, स्वयं पवित्र प्रेरितों से प्राप्त परंपरा के अनुसार, उन्हें विश्वास के संक्षिप्त कथन या धर्मसूत्र प्रदान किए।[25] ये कुछ ही शब्दों में ईसाई धर्म के सभी मूल सद्धिांतों को प्रस्तुत करते थे, और प्रत्येक खंड का दोहरा उद्देश्य था: एक ओर, यह प्रकाशन के सत्य को इंगित करता था, जिसे श्रद्धालुओं को आस्था के एक सद्धिांत के रूप में स्वीकार करना था; दूसरी ओर, यह उन्हें उस किसी भी विधर्म से बचाता था जिसके खिलाफ यह निर्देशित था।[26] ईसाई धर्म की पहली तीन शताब्दियों में ऐसा ही रहा: चर्च के पास केवल एक ही धर्मसूत्र नहीं था, बल्कि कई धर्मसूत्र प्रचलित थे, जो *भावना में* समान होते हुए भी *शब्दावली में* भिन्न थे,[27] और लगभग प्रत्येक में कुछ विशिष्ट विशेषताएँ थीं जो किसी विशेष धर्मसूत्र

---

[25] शब्द *'प्रतीक'* (σύμβολον) के विभिन्न अर्थों, साथ ही ईसाई चर्च में प्रतीकों की उत्पत्ति पर, बाइबिल-ऐतिहासिक उनकी उत्कृष्टता *फ्लोरेट,* मॉस्को के मेट्रोपॉलिटन, पृ. 599–601, चौथा संस्करण, और *स्विज़र* के *थेसॉरस एक्लेसियास्टिकस* में *σύμβολον* प्रविष्टि के अंतर्गत।

[26] इस प्रकार, उदाहरण के लिए, प्राचीन धर्मविश्वासों के शब्द: 'मैं विश्वास करता हूँ... *सर्वशक्तिमान, स्वर्ग और पृथ्वी के स्रष्टा* में,' ने ऑर्थोडॉक्स को संप्रदायियों—साइमोनियन और मेनांड्रियन संप्रदायों की झूठी शिक्षाओं से बचाया, जो प्रेरितिक युग में ही प्रकट हो गए थे और यह सिखाते थे कि दुनिया का निर्माण ईश्वर ने नहीं बल्कि स्वर्गदूतों ने किया था; उसी धर्मविश्वासों की यह शिक्षा कि यीशु मसीह का *गर्भधारण पवित्र आत्मा* द्वारा *हुआ* और उनका *जन्म कुँवारी मरियम से हुआ,* ने उन्हें उस समय के अन्य विधर्मी—सेरिन्थियों और एबियोनियों—की झूठी शिक्षाओं से बचाया, जो यह सिखाते थे कि यीशु का गर्भधारण और जन्म सामान्य लोगों की तरह हुआ था, और कि वह यूसुफ और मरियम का पुत्र था।

[27] आज भी ज्ञात चर्चों के प्राचीन प्रतीक—यरूशलेम, केसरिया, अलेक्जेंड्रिया, एंटिओक, रोम और एक्विलिया—उस समय के प्रारंभिक चर्च पिताओं: आइरेनियस, टर्टुलियन, साइप्रियन, ग्रेगरी द वंडरवर्कर, और एपोस्टोलिक संविधानों में भी पाए जाते हैं। इनमें से कुछ धर्मविश्वास संक्षिप्त हैं, जबकि अन्य अधिक विस्तृत हैं। कुछ शब्दों और अभिव्यक्तियों में अंतर के अलावा, वे कुछ प्रावधानों को प्रस्तुत करने की क्रमबद्धता में भी एक-दूसरे से भिन्न हैं। धर्मविश्वासों को स्वयं बिधम की *Origin. Eccles.*, पुस्तक X, अध्याय 3 और 4 में देखें।

के उपयोग वाले स्थानों पर उत्पन्न होने वाली त्रुटियों का मुकाबला करने के उद्देश्य से थीं।[28] इन प्रतीकों में से, *संत ग्रेगरी द वंडरवर्कर का प्रतीक* आज भी ऑर्थोडॉक्स चर्च में विशेष सम्मान का पात्र है; यह पवित्र त्रिमूर्ति के सभी व्यक्तियों के व्यक्तिगत गुणों और पूर्ण समानता के सिद्धांत को सैबेलीउस और सामोसता के पॉल के विरोध में प्रस्तुत करता है।[29]

चौथी शताब्दी से, जब एरियस और, बाद में, मैसेडोनियस की सबसे हानिकारक विधर्म उत्पन्न हुईं, और जब विधर्मी विशेष रूप से उन शब्दों का दुरुपयोग करने लगे, जिनका उपयोग अब तक विश्वास के विभिन्न सत्यों को व्यक्त करने के लिए किया जाता था, और उन्होंने ऑर्थोडॉक्स के अनुकरण पर अपने स्वयं के धर्म-सूत्र जारी करना शुरू कर दिया, — चर्च ने सभी विश्वासियों के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में, एक एकल, निर्णायक धर्मविश्वास तैयार करने और उसे प्रचारित करने, जो अक्षरशः भी अपरिवर्तित हो, और, अधिक सामान्य रूप से, पवित्र शब्दों और चर्च-धर्मशास्त्रीय भाषा के अर्थ को स्थापित करने की आवश्यकता महसूस की।[30] वास्तव में, ऐसा ही एक धर्म-सूत्र प्रथम सार्वभौमिक धर्मसभा में तैयार किया गया था और, दूसरी धर्मसभा में पूरक किए जाने के बाद, *निकेन-कॉन्स्टेंटिनोपोलिटिन धर्म-सूत्र के* नाम से, तीसरी और बाद की सार्वभौमिक धर्मसभाओं के नियमों के अनुसार, यह संपूर्ण ईसाई जगत और सभी युगों के लिए आस्था का अपरिवर्तनीय मानक बन गया।[31] इस धर्म-संहिता में पहले वाली संहिताओं के समान ही

---

[28] उदाहरण के लिए, अक्विलिया के चर्च के धर्मविश्वास में, 'मैं *सर्वशक्तिमान परमेश्वर पिता में* विश्वास करता हूँ' शब्दों के बाद, *'अदृश्य और अकथनीय'* (invisibilem et impassibilem) शब्द जोड़े गए हैं। यह विशेष रूप से सेबेलीयनों और पैट्रिपासियनों के विरुद्ध निर्देशित है। रूफिनस, जो स्वयं एक्विलिया की चर्च से थे, कहते हैं, 'यह जानना आवश्यक है,' "कि ये दो शब्द रोमन चर्च के धर्म-विश्वास में नहीं पाए जाते हैं, बल्कि हमें इन्हें सेवेलियन विधर्म, जिसे पैट्रिपासियनवाद के नाम से जाना जाता है, के विरुद्ध जोड़ना पड़ा, जो यह सिखाता है कि पिता (पैटर) स्वयं कुँवारी से पैदा हुए, दृश्यमान हुए और देह में दुखित हुए (पासस एस्ट)। ऐसा लगता है कि हमारे पूर्वजों ने ये शब्द विशेष रूप से पिता के विरुद्ध इस अपमान को दूर करने के लिए जोड़े थे, यानी, उन्होंने पिता को अदृश्य और पीड़ा सहने में असमर्थ बताया' *(रूफिनस, *एक्सपोजिट. सिम्बोली* में)*। बेशक, इसी कारण से, कुछ प्राचीन धर्मसूत्रों में बाद में *यीशु मसीह के नरक में अवतरण और संतों की सहभागिता से संबंधित* प्रावधान जोड़े गए, हालांकि यह ठीक-ठीक नहीं पता है कि उन्हें कब जोड़ा गया था। अपुड. *बिगिम.* ओप. सिट. लिब. X, कैप. 3, § 7.

[29] हम यहाँ तथाकथित *प्रेरितों के विश्वास-सूत्र* का कोई उल्लेख नहीं करते हैं, जिसका उपयोग विशेष रूप से पहली तीन शताब्दियों के दौरान रोमन चर्च में किया जाता था और जिसे पश्चिम में अभी भी विशेष सम्मान दिया जाता है, — हम इसका उल्लेख इसलिए नहीं करते हैं क्योंकि पूर्वी चर्च — ऑर्थोडॉक्स चर्च — ने इस धर्मविश्वास का उपयोग न तो पहली तीन शताब्दियों के दौरान किया, जब उसने अन्य धर्मविश्वासों का उपयोग किया था, और न ही बाद के सभी समयों में किया, और परिणामस्वरूप उसने इसे कभी भी, सख्त मायने में, *प्रेरितों की* धर्मसूत्र के रूप में नहीं माना है, और न ही उसने इसे सभी अन्य प्राचीन धर्मसूत्रों पर कभी तरजीह दी है, जिनकी उत्पत्ति परंपरा के अनुसार, यदि पित्र में नहीं तो आत्मा और सामग्री में, प्रेरितों से ही हो सकती थी (ग्रंथसूची इतिहास उनकी उत्कृष्टता *फ्लिरेट*, मॉस्को के मेट्रोपॉलिटिन, पृ. 600, चौथा संस्करण)। फ्लोरेंस की परिषद में ऑर्थोडॉक्स चर्च के प्रतिनिधियों ने लैटिनों को जवाब देते हुए कहा, जो अपने प्राचीन धर्म-विश्वास की ओर इशारा करते हुए यह दावा कर रहे थे कि इसकी उत्पत्ति स्वयं प्रेरितों से हुई है, 'हमारे पास न तो प्रेरितों का धर्म-विश्वास है और न ही हमने उसे देखा है।' Concil. Florent. sect. VI, cap. 6.

[30] हालांकि, यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि चर्च-धर्मशास्त्रीय भाषा का विकास आंशिक रूप से निकिया की पहली परिषद से भी पहले शुरू हो गया था: (क) कुछ स्थानीय परिषदों में, जैसे कि सामोसटा के पॉल के खिलाफ एंटिओक की परिषद, जिसने अपने धर्म-विश्वास में *'एकसार'* — ομοούσιος — शब्द को शामिल किया; और (ख) व्यक्तिगत शिक्षकों, उदाहरण के लिए, अलेक्जेंड्रिया के डायोनिसियस, जिन्होंने इसी शब्द का उपयोग किया (एपिस्ट. एड डायोनिसि. रोमन.), और एंटिओक के थियोफिलस, जिनकी रचनाओं में हमें पहली बार *'त्रिमूर्ति'* शब्द — τριάς (एड एपोस्टोलिकि. II, n. 15); मिलता है; — यह प्रथा निकिया परिषद के बाद भी जारी रही, नई विधर्मों के उदय के जवाब में, जिनके खिलाफ, ऑर्थोडॉक्स सिद्धांत को अत्यंत सटीकता के साथ परिभाषित करने के लिए, स्वयं शब्दों के अर्थ को और अधिक सटीक रूप से स्थापित करना आवश्यक था। इस प्रकार बनी हुई गिरिजाघराती-दैवी भाषा के सबसे महत्वपूर्ण शब्द, जिनमें से प्रत्येक का अपना सख्त रूप से परिभाषित अर्थ है, हैं: क) ईश्वर के सिद्धांत की व्याख्या में, कि वह *त्रिमूर्ति में एक है, सार* में एक है, *व्यक्तियों* या हाइपोस्टेसीस में त्रित्व है..... कि पिता का व्यक्तिगत गुण यह है कि *वे अजन्मे हैं*, पुत्र का यह कि वे पिता से *उत्पन्न हुए हैं*, और पवित्र आत्मा का यह कि वे पिता से *निकलते हैं*; ख) उद्धारकर्ता मसीह के विषय में सिद्धांत की व्याख्या में, कि वह *अवतार धारण किया* या *मनुष्य बना*, कि उसमें एक ही *व्यक्ति* है और दो *स्वभाव* नहीं—दैवी और मानवीय—जो *बिना मिश्रण, बिना परिवर्तन, बिना विभाजन* और *अविभाज्य रूप से* एकजुट हैं, और इसी तरह।

[31] तीसरी सार्वभौमिक परिषद, कैनन 7; छठी सार्वभौमिक परिषद, कैनन 1 और 2। चौथी सार्वभौमिक परिषद, कांस्टेंटिनोपल की परिषद के दृष्टिकोण के लिए, देखें लाबबियस — *कॉन्सि. टॉम. IV, पृ. 567; कॉन्स्टेंटिनोपल की परिषद (867) के फरमान के लिए, जिसे लंबे समय तक पूर्व में आठवीं सार्वभौमिक परिषद माना जाता था, देखें वोस्क्रेसनेये च्टेनिया, खंड IV, पृ. 400। तुलना करें 'ऑर्थोडॉक्स थियोलॉजी का परिचय' ए. एम. द्वारा, पृ. 565–570, सेंट पीटर्सबर्ग, 1847। दूसरे और, विशेष रूप से, तीसरे सार्वभौमिक परिषदों के समय से, यह सुनिश्चित करने के लिए सख्त सावधानी बरतनी जाने लगी कि, विश्वास के मौलिक सत्यों को व्यक्त करते समय, मनमाने ढंग से गढ़े गए शब्दों का उपयोग न किया जाए, बल्कि चर्च द्वारा परिभाषित शब्दों का ही उपयोग किया जाए; और छठी सार्वभौमिक परिषद ने, कॉन्स्टेंटिनोपल के पूर्व पैट्रिआर्क— सर्जियस, के मामले की जांच करते समय— पायरस और पॉल, और कुछ अन्य समान विचारधारा वाले व्यक्तियों ने—उन पर ऑर्थोडॉक्स विश्वास

सद्धिांत नहिति हैं; लेकनि अंतर यह है कि इसमें वभिन्नि नई वधिर्मों के वरिुद्ध, वशिेष रूप से एरयिस के वरिुद्ध पवत्रि त्रमिूर्ति के दूसरे व्यक्ति की दव्यिता से संबंधति अनुच्छेदों को, कुछ अनुच्छेदों को अधकि स्पष्टता और वस्तिार से प्रस्तुत कयिा गया है, फोटोनीस और अपोलनिारसि, और पवत्रि त्रमिूर्ति के तृतीय व्यक्ति की दव्यिता के संबंध में—मेसेडोनयिस के वरिुद्ध।[32]

अगली शताब्दी में, मोनोफज़िाइट संप्रदाय का उदय हुआ, और चौथा सार्वभौमकि धर्म-सभा (451 में) *हमारे प्रभु यीशु मसीह के एक ही व्यक्तित्व में दो स्वभावों के संबंध में* एक धार्मकि परभिाषा तैयार की, जो (धार्मकि परभिाषा) नकिेन-कॉन्स्टेंटनिोपोलटिन धार्मकि वशि्वास के तीसरे खंड में नहिति अर्थ की सबसे सटीक व्याख्या के अलावा और कुछ नहीं है।[33]

लगभग उसी समय, तथाकथति *अथानासयिन क्रीड* सामने आई, जसिमें परम पवत्रि त्रमिूर्ति के सद्धिांत के अलावा, प्रभु यीशु में दो स्वभावों के मलिन के सद्धिांत को अत्यंत सटीकता के साथ प्रस्तुत कयिा गया है—एक ऐसा क्रीड जसिे यद्यपि सार्वभौमकि परषिदों में नहीं लखिा गया था, फरि भी पूरी कलीसयिा द्वारा स्वीकार और पूजति कयिा जाता है। बाद में मोनोथेलटिकि वधिर्म उत्पन्न हुआ, और छठी सार्वभौमकि परषिद (681 में) ने *हमारे प्रभु यीशु मसीह में दो इच्छाओं और क्रयिाओं के संबंध में* एक धार्मकि परभिाषा तैयार की, जसिे काल्सेडोनयिाई धार्मकि परभिाषा का एक और वस्तिारीकरण माना जा सकता है। आइकनोक्लास्टों का वधिर्म उत्पन्न हुआ, और सप्तम सार्वभौमकि परषिद (787 में) ने *प्रतमिाओं की पूजा के संबंध में* एक धार्मकि परभिाषा तैयार की / एकीकरण परषिदों के ये सभी धर्मसूत्र—चौथा, छठा और सातवां—नकिेन-कॉन्स्टेंटनिोपोलटिन धर्मसूत्र, का एक आवश्यक पूरक हैं, यद्यपि इन्हें एकीकरण परषिदों के स्वयं के नयिमों के कारण इसमें शामलि नहीं कयिा गया है, जो इसके पूर्ण अखंडता और अपरविर्तनीयता से संबंधति हैं। मुख्य धर्मसद्धिान्तों के अतरिक्ति, जो शुरू से ही धर्मवशि्वासों में शामलि थे और जनि पर सार्वभौमकि परषिदों में वस्तिार से चर्चा की गई, कुछ अन्य धर्मसद्धिान्तों पर भी एक साथ—उभर रही वधिर्मों के जवाब में—स्थानीय परषिदों में वस्तिार से चर्चा की गई, जन्हिें बाद में छठी सार्वभौमकि परषिद, ट्रुलो परषिद द्वारा अनुमोदति कयिा गया; उदाहरण के लिए: मूल पाप, अनुग्रह के कार्य, यहाँ तक कि शशिुओं के लिए भी बपतस्मिा की आवश्यकता (कार्थेज परषिद के 123–130वें कैनन में) से संबंधति धर्मसद्धिान्त और पुष्टि की संस्कार पर (लाओडसियिा की परषिद के कैनन 48 में), साथ ही व्यक्तगित पवत्रि पतिाओं द्वारा उनकी कई रचनाओं में भी, जनिमें से उसी ट्रुलो परषिद द्वारा नामति और अनुमोदति (कैनन 2 में) पवत्रि पतिाओं का वशिेष सम्मान के योग्य स्थान है।[34] इस प्रकार कलीसयिा में ईसाई धर्मसद्धिान्तों के प्रकाशन या वकिास का दूसरा, सबसे महत्वपूर्ण काल पूरा हुआ—सबसे महत्वपूर्ण, सबसे पहले इसलिए क्योंकि यहीं सार्वत्रकि परषिदों में धर्मसद्धिान्तों का प्रकाशन और परभिाषति कयिा गया, जो अचूक हैं; और क्योंकि मौलकि धर्मसद्धिान्त परभिाषति कए गए—जो स्वयं में या जनिके अंतर्गत अन्य सभी आते हैं—एक अपरविर्तनीय वशि्वास का प्रतमिान सभी युगों के लिए सभी धर्मसद्धिान्तपरक धर्मशास्त्र की नींव के रूप में नर्णिायक रूप से स्थापति कयिा गया, और चर्च संबंधी धर्मशास्त्र की भाषा स्वयं को सटीक रूप से परभिाषति और स्थापति कयिा गया। यही कारण है कि पूर्वी ऑर्थोडॉक्स चर्च स्पष्ट रूप से यह स्वीकार करता है: 'हमारे धर्मसद्धिान्त और हमारी

के वपिरीत नए शब्दों को पेश करने का आरोप लगाया (देखें *लैबयिस*, *कॉन्सलि. खंड VI, पृष्ठ 610–611), और पवत्रि पतिाओं के धर्मसद्धिान्तों की पुनःपुष्टि की, कि न केवल उन्हें उसी अर्थ में समझा जाए जसिमें उन्हें स्वीकार कयिा गया था, बल्कि उन्हें बल्किुल उन्हीं शब्दों में व्यक्त कयिा जाए, और कुछ भी नया बल्किुल न जोड़ा जाए (अपud *Labb.* ibid., पृ. 1028)।

[32] यह ध्यान देने योग्य है कि दूसरे सार्वभौमकि परषिद के धर्मपतिागणों ने, पहले सार्वभौमकि परषिद के धर्मवशि्वास को और अधकि वस्तिार से प्रस्तुत करते हुए, — क) ऐसा करते समय, प्राथमकि रूप से पवत्रि धर्मग्रंथों के *शब्दों* और *पूरे वाक्यांशों का* उपयोग करने का प्रयास कयिा, और — ख) अंतमि चार खंड उधार लिए, जो नाइसन धर्मवशि्वास में नहीं पाए जाते थे, नकियिा परषिद से पहले चर्च में प्रचलति पुराने धर्मवशि्वासों से।

[33] हम यहाँ सम्राट मार्सयिन को इस सार्वभौमकि परषिद के *संबोधन* (προσφωνητικός) *का* उल्लेख करने से नहीं चूक सकते, जो वर्तमान संदर्भ में हमारे लिए अत्यधकि महत्व रखता है; इसमें, धर्मपतिागण इस वचिार को वस्तिार से प्रस्तुत करते हैं कि कलीसयिा के भीतर धर्मसद्धिातों का क्रमकि प्रकटीकरण या वकिास आवश्यक है, वशिेष रूप से वधिर्मों के उदय के जवाब में, कि चर्च को ऐसा करने का अधकिार हमेशा है, और यह कि, धर्मसद्धिान्तों के ऐसे प्रकटीकरण में, वह कुछ भी नया नहीं पेश करती है। अपुद *लैब.* कॉन्सलि. वॉल. IV, पृ. 819–828।

[34] ट्रुलो परषिद द्वारा सूचीबद्ध, सार्वभौमकि और स्थानीय परषिदों तथा पवत्रि पतिाओं के सभी धर्म-सूत्र और वशि्वास के ववरिण, 1839 और 1843 में सेंट पीटर्सबर्ग में प्रकाशति *कोर्मचया*, या *पवत्रि प्रेरतिों, पवत्रि सार्वभौमकि और स्थानीय परषिदों, और पवत्रि पतिाओं के नयिमों की पुस्तक* में पाए जा सकते हैं।

पूर्वी चर्च की शिक्षाएं आदिकाल से चली आ रही हैं, जिन्हें पवित्र और सार्वभौमिक परिषदों द्वारा सही और धार्मिक रूप से परिभाषित और पुष्टि की गई है; उनमें कुछ भी जोड़ना या उनसे कुछ भी लेना अनुमत नहीं है। परिणामस्वरूप, जो लोग ऑर्थोडॉक्स विश्वास के दैवीय सिद्धांतों पर हमसे सहमत होना चाहते हैं, उन्हें सादगी और आज्ञाकारिता के साथ, बिना किसी जांच-पड़ताल या जिज्ञासा के, उन सभी बातों का पालन करना चाहिए और उन पर समर्पण करना चाहिए जो प्रेरितों और उनके उत्तराधिकारियों के समय से, पवित्र और सार्वभौमिक परिषदों द्वारा पुष्टि की गई, पितृ परंपरा द्वारा परिभाषित और निर्धारित की गई हैं। हमारे चर्च के ईश्वर-वाहक पितृपुरुषों।"[35]

हालांकि, इसका यह मतलब नहीं है कि सार्वभौमिक परिषदों के बंद हो जाने के साथ ही ऑर्थोडॉक्स चर्च के भीतर धर्मशास्त्र का आगे का विकास समाप्त हो गया। यह बंद नहीं हुआ, क्योंकि गलतियाँ और विधर्म समाप्त नहीं हुए। इन त्रुटियों में सबसे महत्वपूर्ण थीं, सबसे पहले, रोमन चर्च की त्रुटियाँ, जिसने उसे सार्वभौमिक चर्च से अलग कर दिया—और ऑर्थोडॉक्स पूर्व में, उनके खिलाफ एक से अधिक बार परिषदें बुलाई गईं और विश्वास के सबसे सटीक बयानों को तैयार किया गया; और दूसरी बात, विभिन्न संप्रदायों में प्रोटेस्टेंटों की त्रुटियाँ, जिन्हें पूर्वी ऑर्थोडॉक्स चर्च के पुरोहितों द्वारा बार-बार परिषद की जांच के अधीन किया गया, जिन्होंने एक ही समय में इन त्रुटियों के खिलाफ सबसे सटीक आस्था के बयानों को प्रकाशित किया, ताकि ऑर्थोडॉक्सी की शुद्धता की रक्षा की जा सके। इस प्रकार, पूर्वी ऑर्थोडॉक्स चर्च के दो सबसे व्यापक धर्म-स्वीकरण अस्तित्व में आए, जिनमें प्राचीन सार्वभौमिक परिषदों की सिद्धांतगत परिभाषाओं को बाद में उत्पन्न हुई त्रुटियों और विधर्मों के संबंध में विस्तार से बताया गया है। हम संदर्भित करते हैं: *पूर्वी कैथोलिक और प्रेरितिक चर्च का ऑर्थोडॉक्स धर्म-स्वीकृतपित्र और ऑर्थोडॉक्स-कैथोलिक चर्च के पैट्रिआर्कों का ऑर्थोडॉक्स विश्वास पर पत्र*।[36] इन धर्म-सूत्रों के मॉडल का अनुसरण करते हुए, और विशेष रूप से पहले वाले का, ऑर्थोडॉक्स पूर्व और रूस दोनों में, उसी उद्देश्य के लिए बाद में विश्वास के अन्य विवरण या धर्म-शिक्षा-पुस्तिकाएँ संकलित की गईं; इनमें से, हमारे देश में निम्नलिखित का सर्वोपरि स्थान है: *ऑर्थोडॉक्स कैथोलिक पूर्वी चर्च का ऑर्थोडॉक्स ईसाई धर्मशास्त्र,* सर्वपवित्र शासीन सिनाद द्वारा समीक्षा एवं अनुमोदन किया गया। यह दावा नहीं किया जा सकता कि ईसाई धर्मसिद्धान्तों की व्याख्या अब समाप्त हो गई है: यह तब तक समाप्त नहीं होगी जब तक धर्मसिद्धान्तों के विरुद्ध त्रुटियाँ समाप्त नहीं हो जातीं, और परिणामस्वरूप, जब तक चर्च की आवश्यकता—नई त्रुटियों के प्रति प्रतिक्रिया में—ऑर्थोडॉक्सी की रक्षा के लिए अपने धर्मसिद्धान्तों को परिभाषित और स्पष्ट करने की समाप्त नहीं हो जाती।[37]

तो फिर, चर्च के भीतर सिद्धांतों के इस विकास या स्पष्टीकरण के महत्व के बारे में सामान्यतः क्या कहा जा सकता है? इसमें सिद्धांतों की संख्या में कोई वृद्धि नहीं होती; — नहीं: ऑर्थोडॉक्स चर्च आज भी उतने ही सिद्धांतों को मानती है जितने कि आरंभ में स्वयं ईश्वर ने प्रकट किए थे। न ही यह उन धर्मसिद्धान्तों में कोई परिवर्तन है, जिन्हें ऑर्थोडॉक्स चर्च अपनी अखंडता और अपरिवर्तनीयता में पूरी तरह से पालन और शिक्षित करती रहती है। वास्तव में, यह संपूर्ण विकास उन्हीं सिद्धांतों की *एक अधिक सटीक परिभाषा और व्याख्या* से अधिक कुछ नहीं है, जो अपने सार में अपरिवर्तनीय हैं, और ईसाई धर्म के भीतर उत्पन्न हुई और जारी विभिन्न त्रुटियों और विधर्मों के जवाब में सदियों से

---

[35] आरंभ में ऑर्थोडॉक्स विश्वास पर पूर्वी पैट्रिआर्कों का पत्र देखें।

[36] इन पुस्तकों के बारे में और अधिक जानकारी के लिए, ए. एम. की *इंट्रोडक्शन टू ऑर्थोडॉक्स थियोलॉजी* का § 149 देखें।

[37] इससे यह स्पष्ट है कि रोमन लेखकों द्वारा पूर्वी ऑर्थोडॉक्स चर्च के खिलाफ लगाए गए आरोप कितने अन्यायपूर्ण हैं, मानो केवल सात प्राचीन सार्वभौमिक परिषदों का सख्ती से पालन करके और पोप के व्यक्तित्व में चर्च की अचूक शिक्षा के जीवित अंग को स्वीकार न करके, वह अचल, निर्जीव और मृत हो गई हो। हाँ, ऑर्थोडॉक्स चर्च वास्तव में सात सार्वभौमिक परिषदों में दृढ़ता से और अटूट रूप से स्थापित है, ठीक वैसे ही जैसे उन सात स्तंभों पर जिन पर परमेश्वर की बुद्धि ने अपना घर बनाया है (नीतिवचन 9:1); शताब्दियों से, ऑर्थोडॉक्स चर्च ने सार्वभौमिक परिषदों में पुष्टि किए गए एक भी धर्मशास्त्र को न तो तोड़ा है और न ही अस्वीकार किया है, और न ही उसने प्राचीन सार्वभौमिक चर्च के लिए अज्ञात एक भी नया धर्मशास्त्र अपनाया है; और इसीलिए *इसे ऑर्थोडॉक्स* कहा जाता है / फिर भी, साथ ही, इसकी एक जीवित देह रही है, और वह बनी हुई है, जिसके माध्यम से वह अपनी अचूक शिक्षा व्यक्त करती है: यह इसके सभी पादरियों की आवाज़ है, ये उनकी परिषदें हैं; साथ ही, उसने सात सार्वभौमिक परिषदों और प्राचीन पवित्र पिताओं का हर बात में अनुसरण करते हुए, नए-नए उत्पन्न होने वाले विधर्मों और त्रुटियों के जवाब में, ऑर्थोडॉक्स के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में, अपने अपरिवर्तनीय धर्मसिद्धान्तों को अधिक विस्तार से और अधिक गहनता से समझाना कभी बंद नहीं किया है, ठीक वैसे ही जैसे उसने रोमन चर्च की त्रुटियों और बाद में प्रोटेस्टेंट त्रुटियों का विरोध करते समय किया था। परिणामस्वरूप, ऑर्थोडॉक्स पूर्वी चर्च आज भी ठीक उसी तरह जीती और कार्य करती है जैसे प्राचीन सार्वभौमिक चर्च तब करती थी जब रोमन पैट्रिआर्केट उससे अलग नहीं हुआ था।

धीरे-धीरे हो रहा है।[38] और इस परभिाषा और व्याख्या को कसिने कयिा है और कर रहा है? यह चर्च द्वारा कयिा गया है और कयिा जा रहा है, जसिमें पवत्रि आत्मा नरिंतर वास करता है और इसे सभी त्रुटयिों से सुरक्षति रखता है। यह कैसे कयिा जाता है? केवल उसी दव्यि प्रकटीकरण के आधार पर, अर्थात् पवत्रि शास्त्र और पवत्रि परंपरा, जसिमें स्वयं ईश्वर ने आरंभ से ही इन सद्धिांतों को सखिाया था। परणिामस्वरूप, धर्मसद्धिान्तों के वकिास में, ईसाई धर्म-शक्षिा में कुछ भी नया नहीं जोड़ा जाता है; बल्कि, वधिर्मों के उत्तर में, जो बात को ऑर्थोडॉक्स वश्विासी हमेशा से प्रकाशन के आधार पर मानते आए हैं—यद्यपि इतनी वस्तिार से नहीं—उसे उनके लिए और अधकि सटीक रूप से परभिाषति और समझाया जाता है। और इस प्रकार, स्वयं धर्मसद्धिान्त और चर्च के भीतर उनका सबसे वस्तिृत वकिास, दोनों ही हमारे परम सम्मान के योग्य हैं: क्योंकि धर्मसद्धिान्त और उनका वकिास दोनों ही समान रूप से दैवीय प्रकाशन पर आधारति हैं; धर्मसद्धिान्त और उनका वकिास दोनों ही समान रूप से अचूक शक्षिक, चर्च द्वारा प्रकाशन से व्युत्पन्न हैं।

धर्मसद्धिान्तों की उत्पत्ति और स्पष्टीकरण के बारे में हमारे द्वारा कही गई बातों से, हमें नम्निलखिति नष्किर्ष नकिालने चाहिए:

1) ऑर्थोडॉक्स डॉगमैटकि थयिोलॉजी का एकमात्र *स्रोत* दैवी प्रकटीकरण है, अर्थात् *पवत्रि शास्त्र और पवत्रि परंपरा।*

2) *नकिेन-कॉन्स्टेंटनिोपल प्रतीक-श्रद्धा को* इस धर्मशास्त्र की अटूट *नींव* के रूप में मान्यता दी जानी चाहिए; इसने सभी पछिली प्रतीक-श्रद्धाओं को प्रतस्थिापति कर दयिा है और इसे सार्वभौमकि चर्च द्वारा सभी युगों के लिए वश्विास के अपरविर्तनीय मॉडल के रूप में स्वीकार कयिा गया है, — और, इस धर्मवश्विास के साथ-साथ, इसके पूरक के रूप में, *पवत्रि सार्वभौमकि और स्थानीय परषिदों तथा* ट्रुलो की परषिद द्वारा नामति *पवत्रि पतिरों के* सभी अन्य *वश्विास-वक्तव्य,* साथ ही *संत ग्रेगरी द वंडरवर्कर* और *अलेक्जेंड्रयिा के* संत *अथेनासयिस के* धर्मवश्विास के रूप में जाना जाने वाला *धर्मवश्विास,* जन्हिें पूरी कलीसयिा स्वीकार करती है और सम्मान देती है।[39]

3) नम्निलखिति को नर्णिायक *मार्गदर्शक के रूप* में पहचाना जाना चाहिए, जसिमें ऑर्थोडॉक्स धर्मशास्त्रीय धर्मशास्त्र में धर्मसद्धिान्तों की सबसे वस्तिृत व्याख्या शामलि है: 1) *कैथोलकि और प्रेरतिकि पूर्वी चर्च का ऑर्थोडॉक्स धर्मोपदेश,* 2) *पूर्वी पैट्रआर्कों का पत्र, जो ऑर्थोडॉक्स वश्विास पर है*; और 3) * * *(कैथोलकि पूर्वी चर्च का वस्तिृत ईसाई धर्मशास्त्र)* — सख्ती से कहें तो, पहले और आखरिी, उन भागों में जनिमें वश्विास के प्रतीक की व्याख्या शामलि है।[40]

---

[38] ऊपर टप्पिणी 33 देखें। पाँचवीं शताब्दी के एक चर्च लेखक, वसिंट ऑफ़ लरियिस ने भी इस वषिय पर बहुत वविकपूर्ण ढंग से लखिा है: 'शायद कोई कहेगा: "तो क्या मसीह की कलीसयिा के धर्म में कोई प्रगति नहीं हो सकती?" नश्चिति रूप से हो सकती है, और वह भी एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रगति।' 'Nam ' यह ऐसा कौन सा व्यक्ति है, जो मनुष्यों के लिए इतना घृणति और परमेश्वर द्वारा इतना घृजति है, जो इसे रोकने का प्रयास करेगा? फरि भी, ऐसा होना चाहिए कि यह वश्विास में वास्तव में *एक प्रगति* हो, *न कि एक परविर्तन।* क्योंकि प्रगति का अर्थ है कि प्रत्येक वस्तु अपने भीतर ही वस्तिृत होती है; जबकि परविर्तन का अर्थ है कि कोई वस्तु एक रूप से दूसरे रूप में परविर्तति हो जाती है। इसलिए इसे बढ़ना चाहिए, और यह व्यक्तगित रूप से और समग्र रूप से, एक व्यक्ति में और *पूरी कलीसयिा में,* आयु के चरणों और युगों के माध्यम से समझ, ज्ञान और बुद्धि में बहुत और जोरदार प्रगति करनी चाहिए... क्योंकि *यह वाजबि है,* वास्तव में, कि स्वर्गीय दर्शन के उन *प्राचीन सद्धिांतों को* समय के साथ *परष्किृत, संवार और वकिसति कयिा जाए;* लेकनि यह *अनुमत नहीं है* कि *उन्हें बदला जाए.... हाँ, वे स्पष्ट, प्रबुद्ध और वशिष्टि बनें; लेकनि उन्हें अनविार्य रूप से अपनी पूर्णता, अखंडता और उचति चरित्र को बनाए रखना चाहिए।* कॉमनीस, 1, अध्याय 38।

[39] प्राचीन काल में, प्रतीक को उसकी वशिेष महत्वता के प्रमाण के रूप में वशिेष नाम दए गए थे। इसे कहा जाता था: (क) *सत्य* — ἀλήθεια (*Iren.* adv. haeres. lib. 1, पृ. 9, न. 5; पृ. 10, न. 2), और *सत्य का नयिम* — κανών τής αληθείας (उपरोक्त, पुस्तक I, पृ. 9, टप्पिणी 4); ख) *वश्विास* — πίστι; (उपरोक्त, पुस्तक III, पृ. 1, टप्पिणी 14), *कैथोलकि वश्विास (ऑगस्टीन,* *De fide et symbolo*, अध्याय 1), वश्विास का *नयिम (टर्टुलयिन,* *Adversus Praxitum*, अध्याय 2; *ऑगस्टीन,* प्रतीक की परंपरा पर उपदेश CCXIII), *वश्विास की आड़ (टर्टुलयिन,* कुंवारीयों के आवरण पर, अध्याय 1), *कैथोलकि* वश्विास की *नींव (ऑगस्टीन,* कैटेकुमेन को प्रतीक पर उपदेश, अध्याय 1); c) *प्रेरतिों की शक्षिा (इरनेयस,* वधिर्मों के वरिुद्ध, पुस्तक III, अध्याय 24; पुस्तक IV, अध्याय 33), *सार्वभौमकि शक्षिा* — διδασκαλία καθολική (Constit. Apost. पुस्तक VI, पृ. 14); d) *कलीसयिा का वश्विास (Irenaeus,* Against Heresies, पुस्तक III, अध्याय 24), *कलीसयिा का कैनन* या नयिम *(Origen,* De Principiis, पुस्तक IV, अध्याय 9), *संपूर्ण वश्विव के लिए चर्च की प्राचीन प्रणाली* — τό ἀρχαῖον τής ἐκκλησίας σύστημα κοίτα, παντός τού κόσμου (*इरनेयस,* वरिोधी संप्रदायों के वरिुद्ध, पुस्तक IV, अध्याय 33)। धर्मवश्विास की यह अंतमि संज्ञा रूढ़विादी धर्मशास्त्रीय वज्ञिान या प्रणाली के लिए वशिेष रूप से महत्वपूर्ण है।

[40] अन्य *वश्विास-प्रमाणों के* लिए, जनिमें ऑर्थोडॉक्स चर्च की प्रतीकात्मक शक्षिा भी पाई जा सकती है, और जन्हिें इसलिए ऑर्थोडॉक्स धर्मशास्त्रीय वविचन में उपयोग कयिा जा सकता है, ए. एम. के *Introduction to Orthodox Theology*, § 149 को देखें।

§4. धर्मशास्त्रों के विभिन्न वर्गीकरण और ऑर्थोडॉक्स धर्मशास्त्रीय धर्मशास्त्र में इन वर्गीकरणों का महत्व

धर्मसिद्धान्तों की विभिन्न अवधारणाओं के बीच अंतर करने के लिए, इन्हें आमतौर पर विभिन्न दृष्टिकोणों से परखा जाता है, जिनसे धर्मसिद्धान्तों के विभिन्न वर्गीकरण व्युत्पन्न होते हैं; हालाँकि, इनमें से सभी को ऑर्थोडॉक्स धर्मसिद्धान्तशास्त्र में स्वीकार नहीं किया जा सकता। और —

1) धर्मसिद्धांतों के आवश्यक लक्षणों पर ध्यान केंद्रित करके, उन्हें बाइबिल के धर्मसिद्धांतों—चूंकि वे बाइबिल या सामान्य रूप से प्रकाशितवाक्य में निहित हैं—और *चर्च संबंधी* धर्मसिद्धांतों—चूंकि वे चर्च द्वारा प्रचारित किए जाते हैं—में विभाजित किया जाता है: यह एक अनुचित विभाजन है। क्योंकि कोई भी धर्मसिद्धांत सख्त रूप से 'चर्च संबंधी' नहीं है—अर्थात्, बाइबिल के धर्मसिद्धांतों से अलग; कम से कम ऑर्थोडॉक्स चर्च में तो नहीं: यह अत्यंत सटीकता के साथ उन्हीं dogmas को बनाए रखती है जो प्रकाशन में पाए जाते हैं, और केवल अपने झुंड को उनकी परिभाषा और व्याख्या करती है, उन्हें ईश्वर के वचन के आधार पर यह सिखाती है कि उन्हें क्या और कैसे विश्वास करना चाहिए। जहाँ तक प्रकाशन पर आधारित न होने वाले, या यहाँ तक कि इसका खंडन करने वाले धर्मसिद्धान्तों की बात है, वे केवल गैर-ऑर्थोडॉक्स चर्चों या समुदायों में ही पाए जा सकते हैं; उदाहरण के लिए, रोमन चर्च का पोप की सर्वोच्चता और अचूकता के बारे में धर्मसिद्धान्त।

2) जब धर्मसिद्धियों पर उनके प्रकटीकरण के संदर्भ में विचार किया जाता है, तो *स्पष्ट* धर्मसिद्धियों (explicita) और *निहित* धर्मसिद्धियों (implicita) के बीच एक अंतर किया जाता है। यह भेद विषय की स्वभावकि प्रकृति में निहित है; क्योंकि वास्तव में, चर्च के भीतर ऐसे धर्मसिद्धान्त हैं जिन्हें विस्तार से परिभाषित किया गया है, जैसे: पवित्र त्रिमूर्ति और यीशु मसीह में दो स्वभावों के मिलन से संबंधित धर्मसिद्धान्त, जिन्हें विधर्मियों द्वारा अनेक विकृतियों का सामना करना पड़ा और जिन्हें सार्वत्रिक परिषदों में परिभाषित किया गया है; — और ऐसे धर्म-सिद्धान्त भी हैं जिन्हें विस्तार से परिभाषित नहीं किया गया है, उदाहरण के लिए: विशेष न्याय और दुष्ट आत्माओं के पतन से संबंधित धर्म-सिद्धान्त। चर्च यह सिखाती है कि, प्रत्येक व्यक्ति की मृत्यु पर, एक विशेष न्याय होता है; लेकिन यह स्पष्ट रूप से यह नहीं बताती कि यह न्याय ठीक कब, कहाँ, या कैसे होता है; *यह यह* भी सिखाती *है* कि दुष्ट स्वर्गदूत शुरू में अच्छे थे और अपनी इच्छा से गिर गए — लेकिन यह सटीक रूप से यह निर्दिष्ट नहीं करती कि उनका पतन कैसे हुआ, यह कब हुआ, या गिरे हुए लोगों की संख्या कितनी बड़ी है। धर्मसिद्धान्तों के बीच इस अंतर को ऑर्थोडॉक्स धर्मसिद्धान्तशास्त्र में भी ध्यान में रखना चाहिए: यह तथाकथित *'राय' के लिए* इसमें जगह बना देगा / ऑर्थोडॉक्स चर्च जो किसी दिए गए धर्मसिद्धान्त के बारे में निश्चित रूप से सिखाती है, उसे धर्मसिद्धान्तशास्त्र द्वारा बिना शर्त समर्पण और अखंडता के साथ स्वीकार किया जाना चाहिए; लेकिन जहाँ चर्च ने किसी धर्मसिद्धान्त को परिभाषित नहीं किया है, वहाँ धर्मशास्त्री, किसी भी अन्य ईसाई की तरह, अपनी व्यक्तिगत राय रख सकता है, बशर्ते कि ये राय चर्च द्वारा परिभाषित धर्मसिद्धान्त के सार, अन्य सभी धर्मसिद्धान्तों और सामान्य रूप से चर्च की शिक्षा के अनुरूप हों, और कम से कम कुछ हद *तक* प्रकाशन पर आधारित हों: ऑर्थोडॉक्स धर्मशास्त्र के क्षेत्र में इस प्रकार की राय का अभ्यास पवित्र पिताओं के उदाहरण से पवित्र किया गया है। हालांकि, यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि कुछ धर्मसिद्धान्तों को *'प्रकट'* और दूसरों को केवल सापेक्ष रूप से *'अप्रकट'* कहा जा सकता है; क्योंकि ठीक उसी तरह जैसे चर्च के भीतर कोई भी धर्मसिद्धान्त पूरी तरह से अप्रकट नहीं है (प्रत्येक के लिए उसमें हमेशा कोई न कोई स्पष्ट शिक्षा होती है), इसी प्रकार, कोई भी धर्मशास्त्र अति सूक्ष्म विवरण तक प्रकट नहीं किया गया है: प्रत्येक के संबंध में (यहाँ तक कि पवित्र त्रिमूर्ति के धर्मशास्त्र के संबंध में भी), कोई भी हमेशा ऐसे प्रश्न उठा सकता है जिनका कोई उत्तर चर्च की सकारात्मक शिक्षा में नहीं मिल सकता है, और व्यक्ति को केवल विशेष मतों तक ही सीमित रहना होगा, चाहे वे अपने स्वयं के हों या चर्च के प्राचीन और प्रसिद्ध पादरियों के हों।

3) जब एक-दूसरे के संबंध में धर्मसिद्धान्तों पर विचार किया जाता है, तो उन्हें *सामान्य* और *मौलिक* धर्मसिद्धान्तों में विभाजित किया जा सकता है, जिन्हें आस्था के *अनुच्छेद* (ἄρθρα τής πίστεως) *के रूप में* भी जाना जाता है, जिनमें से प्रत्येक कई अन्य धर्मसिद्धान्तों को समाहित करता है, या कम से कम उनके लिए एक आधार के रूप में कार्य करता है; और *विशेष* धर्मशास्त्र (δόγματα τής πίστεως), जो पहले से व्युत्पन्न हैं या उन पर आधारित हैं। सार्वभौमिक धर्मसभाओं में परिभाषित और पुष्टि किए गए सामान्य धर्मशास्त्रों का निकाय, विश्वास का प्रतीक (Symbol of Faith) बनाता है। 'ऑर्थोडॉक्स और कैथोलिक विश्वास के *अनुच्छेद*,' ऑर्थोडॉक्स कन्फेशन (भाग 1,

प्रश्न 5 का उत्तर) में कहा गया है, 'पहली नकिया परषिद और दूसरी कॉन्स्टेंटनिोपल परषिद के धर्मवशि्वासों के अनुसार, बारह हैं। वे हमारे वशि्वास से संबंधति हर बात *को* इतनी स्पष्टता *से* प्रस्तुत करते *हैं* कि हमें उन संतों की समझ के अनुसार ही, न उससे अधकि, न उससे कम, और न ही कसिी अन्य तरीके से वशि्वास करना चाहए। हालाँकि, इनमें से कुछ '' लेख स्वयं में स्पष्ट और बोधगम्य हैं; जबकि अन्य *में कुछ छपिा हुआ है, जसिसे बाकी को समझना चाहए*। पवत्रि चर्च हमें अपने वस्तिृत वशि्वास-स्वीकृतयिों या धर्मोपदेशों में, प्रतीक-श्रद्धा पर आधारति, वशिष धर्मसद्धियिों की व्युत्पत्ति और परभिाषा प्रस्तुत करती है। धर्मसद्धियिों का यह वर्गीकरण, चूंकि यह पूरी तरह से ऑर्थोडॉक्स चर्च के उनके बारे में अपने दृष्टकिोण के अनुरूप है, इसलए इसे ऑर्थोडॉक्स धर्मसद्धति्व में भी स्वीकार कयिा जाना चाहए और यह बहुत महत्व रखता है / यह हमें समझाता है कि, क्रीड में चर्च द्वारा प्रस्तुत आस्था के अनुच्छेदों को स्वीकार करके, हम इस प्रकार उन सभी वशिष धर्मसद्धान्तों को स्वीकार करने के लए स्वयं को प्रतबिद्ध करते हैं जन्हिें चर्च उनसे व्युत्पन्न करती है; और कसिी भी वशिष धर्मसद्धान्त को अस्वीकार करके, हम अनवािर्य रूप से, यद्यपि नहितिार्थ रूप में, उस आस्था के अनुच्छेद को ही अस्वीकार करते हैं जसिसे वह धर्मसद्धान्त व्युत्पन्न होता है। यह यह भी समझाता है कि, एक ओर, कई जो केवल प्रतीक-वशि्वास को जानते और सच्चे मन से स्वीकार करते हैं, जबकि वे चर्च के सभी वशिष धर्मसद्धान्तों को नहीं जानते, उन्हें उसके ऑर्थोडॉक्स संतान के रूप में क्यों माना जाता है और उन्हें उद्धार की आशा क्यों होती है; और दूसरी ओर, अन्य ईसाई, ऑर्थोडॉक्स चर्च के कसिी वशिष धर्मसद्धात को भी जद्दिी होकर अस्वीकार करने पर—अर्थात्, कोई ऐसा जो शाब्दकि रूप से धर्मवशि्वास में शामलि नहीं है—वशि्वासयिों के साथ संप्रभुता से बहष्कृत कर दए जाते हैं और उन्हें वधिर्मी घोषति कर दयिा जाता है। पहले वाले, स्पष्ट समझ के साथ क्रीड को स्वीकार करके, उसी समय—यद्यपि स्पष्ट जागरूकता के बनिा—चर्च द्वारा क्रीड से व्युत्पन्न सभी वशिष्टि धर्मसद्धान्तों को स्वीकार करते हैं; जबकि बाद वाले, कसिी भी वशिष धर्मसद्धात का वरिोध करके, उस धर्मसद्धात के आधार पर बने धर्मवशि्वास के उस अनुच्छेद को ही अस्वीकार करते हैं, या, अधकि सटीक रूप से, धर्मवशि्वास के नौवें अनुच्छेद को अस्वीकार करते हैं, जसिमें हम स्वीकार करते हैं: *'मैं एक, पवत्रि, सार्वभौमकि और प्रेरतिकि कलीसयिा में वशि्वास करता हूँ'*

४) जब हमारे ववेक के साथ धर्मसद्धान्तों के संबंध पर वचिार कयिा जाता है, तो वे उन धर्मसद्धान्तों में वभिाजति होते हैं *जो* ववेक से *परे* हैं—या रहस्य—और वे जो ववेक के लए *बोधगम्य हैं*। पहले को *'शुद्ध'* धर्मसद्धान्त (pura) भी कहा जाता है: क्योंकि वे केवल अलौककि प्रकाशन पर आधारति हैं; बाद वाले को *'मश्रिति'* धर्मसद्धान्त (mixta) कहा जाता है: क्योंकि वे हमें न केवल अलौककि प्रकाशन से, बल्कि प्राकृतकि तर्क से भी ज्ञात हैं। यह भेद स्वयं में वैध है और ऑर्थोडॉक्स डॉगमैटक्सि के क्षेत्र में उपयोगी भी है। इसे लगातार ध्यान में रखते हुए, हम यह जान पाएँगे कि किन धर्मसद्धान्तों के संबंध में धर्मशास्त्र में तर्क का उपयोग कयिा जा सकता है, और वास्तव में, कयिा जाना चाहए, तथा कनिके संबंध में नहीं; और सामान्य रूप से, दोनों ही मामलों में तर्क को स्वयं का आचरण कैसे करना चाहए।

५) मानव जाति के शाश्वत उद्धार के संबंध में धर्मशास्त्रों पर वचिार करते समय, कुछ लोग *मौलकि* (fundamentales) धर्मशास्त्रों—जन्हिें उद्धार प्राप्त करने के लए स्वीकार और स्वीकार कयिा जाना चाहए—और *गैर-मौलकि* (non fundamentales) धर्मशास्त्रों—जन्हिें स्वीकार कयिा जा सकता है, लेकनि जन्हिें, एक तरह से, उद्धार को कसिी भी तरह की हानि पहुँचाए बनिा अस्वीकार भी कयिा जा सकता है: के बीच अंतर करने का प्रयास करते हैं; एक भेद जो प्रोटेस्टेंटों द्वारा गढ़ा गया है, जसिे ऑर्थोडॉक्स धर्मशास्त्र में कसिी भी परस्थितिि में स्वीकार नहीं कयिा जा सकता।

सबसे पहले, यह पवत्रि शास्त्र के वरिुद्ध है। उद्धारकर्ता मसीह ने, जब अपने शष्यिों को संसार भर में प्रचार करने के लए भेजा, उनसे कहा: *'इसलयि जाओ और सब जातयिों के शष्यि बनाओ, उन्हें पति और पुत्र और पवत्रि आत्मा के नाम से बपतस्मिा दो, और उन्हें यह सखिाओ कि जो कुछ मैं ने तुम से आज्ञा दी है, सब कुछ वे माने रहें* (मत्ती 28:19–20), इसमें बनिा कसिी भेदभाव के अपने सद्धिांत जोड़ते *हुए: 'जो वशि्वास करता है और बपतस्मिा लेता है, वह उद्धार पाएगा; परन्तु जो वशि्वास नहीं करता*—स्पष्ट रूप से प्रेरतिों की शक्षिा को पूरी तरह से अस्वीकार करते हुए—वह *दोषी ठहराया जाएगा* (मरकुस 16:16)। और प्रेरतिों ने, वास्तव में, प्रभु की आज्ञा के अनुसार, *यह प्रचार करने में कोई चूक नहीं की... परमेश्वर की सारी इच्छा (*प्रेरतिों के काम 20:27), और, एक ओर, उन्होंने उन लोगों की प्रशंसा की जन्होंने उनकी *सभी* शक्षिाओं का वफादारी से पालन कयिा: *'मैं तुम्हें सराहता हूँ भाइयों, कि तुम वह सब याद रखो जो मैंने तुम्हें*

सखिाया है और परंपराओं को वैसे ही थामे रहो जैसे मैंने उन्हें तुम्हें सौंपा है (1 कुरन्थियिों 11:2), जबकि दूसरी ओर, उन्होंने इस शकि्षा में कसिी भी चीज़ को तोड़ने-मरोड़ने या अस्वीकार करने की हमि्मत करने वालों पर शाप की घोषणा की: *'यदि हम या स्वर्ग का कोई दूत भी तुमको उस सुसमाचार के सविाय कोई और सुसमाचार सखिाए, तो वह श्रापति हो* (गलातयिों 1:8; तुलना करें 2 यूहन्ना 9-10; तीतुस 3:10)। प्रश्न उठता है: तो फरि प्रेरतिों ने इन सभी सत्यों को, जो हमें परमेश्वर के वचन में मलिते हैं, क्यों प्रस्तुत कयिा होगा, जबकि इनमें से केवल कुछ ही हमारे उद्धार के लिए आवश्यक हैं, जबकि बाकी अनावश्यक हैं?

दूसरा, यह पवत्रि परंपरा और ऑर्थोडॉक्स चर्च के अभ्यास का खंडन करता है, जसिने शुरू से ही न केवल उन लोगों को वधिर्मी माना है जन्हिोंने इसके मौलकि धर्मसद्धिातों को साहसपूर्वक अस्वीकार या वकि्रत कयिा, बल्कि उन लोगों को भी जन्हिोंने उन धर्मसद्धिातों को अस्वीकार या वकि्रत कयिा जन्हिें अब प्रोटेस्टेंट गैर-आवश्यक मानते हैं: उदाहरण के लिए, सप्तम सार्वभौमकि परषिद में, इसने प्रतमिा-भंजकों को पवत्रि प्रतमिाओं और ईश्वर के संतों की पवत्रि अवशेषों की पूजा न करने के कारण चर्च से बहष्किृत कर दयिा।

तीसरा, यह तर्कसंगतता का भी खंडन करेगा: एक ही सद्धिांत से पूरी तरह से वरिोधाभासी नष्किर्ष नकिालना तर्कसंगतता के वपिरीत कुछ भी नहीं हो सकता — और ठीक यही तब होता है जब धर्मग्रंथों को मौलकि और गैर-मौलकि में वभिाजति कयिा जाता है। हम पहले वाले को स्वीकार करने और उन्हें हमारे उद्धार के लिए आवश्यक मानने के लिए बाध्य क्यों हैं? इसके सविा कोई और आधार नहीं सोचा जा सकता कि ईश्वर ने स्वयं हमें ये धर्मसद्धिान्त प्रकट कएि हैं। लेकनि दूसरे प्रकार के धर्मसद्धिान्त भी ईश्वर ने स्वयं प्रकट कएि हैं और वे उनके प्रकाशन में नहिति हैं: तो फरि, हम कथति तौर पर इन धर्मसद्धिान्तों को स्वीकार न करने और इन्हें हमारे उद्धार के लिए आवश्यक न मानने के हकदार क्यों हैं?

चौथा, धर्मसद्धियिों का ऐसा वभिाजन एक काल्पनकि वभिाजन है, जसिे अभी तक स्वयं प्रोटेस्टेंटों के अनुभव द्वारा पुष्टि नहीं मलिी है: क्योंकि आज भी वे और उनके सभी वद्विान इस बात पर आपस में सहमत नहीं हैं *कि* प्रकाशन के कनि सत्यों को आवश्यक धर्मसद्धिांत माना जाना चाहएि और कनि को नहीं; कुछ एक चीज़ को आवश्यक मानते हैं, जबकि अन्य कसिी और चीज़ को मानते हैं; और वे कभी भी सहमत नहीं हो सकते: दोनों ही कारणों से, क्योंकि यह वषिय अपनी प्रकृति से ही मनमाने ढंग से रचा गया है, और क्योंकि इस मामले में शामलि व्यक्तगित मन की प्रकृति के कारण भी।

अंत में, मतभेदों का ऐसा वभिाजन अपने परणिामों में अत्यंत खतरनाक है। यह—

क) यह ईसाई धर्म के पूर्ण उखाड़ फेंकने का कारण बनता है: क्योंकि जैसे ही कोई यह अनुमति देता है कि हर कोई यह नर्धिारति करे कि कौन से धर्मशास्त्र आवश्यक हैं और कौन से गैर-आवश्यक—अर्थात्, कन्हिे स्वीकार कयिा जाना चाहएि और कन्हिे अस्वीकार कयिा जा सकता है—तो जल्द ही प्रकाशन में एक भी धर्मशास्त्रीय सत्य नहीं बचेगा जसिे कोई भी अस्वीकार करने का वचिार न करे, जैसा कि प्रोटेस्टेंट तर्कवादयिों के अनुभव ने दखिाया है; ख) धार्मकि उदासीनता की ओर ले जाता है: तब हर कोई, यह आश्वासन देते हुए कि वे ईसाई धर्म के आवश्यक सद्धिांतों की घोषणा करते हैं, चाहे वे कसिी भी चर्च या ईसाई समुदाय से संबंधति हों, ईसाई संप्रदायों के बीच सभी मतभेदों को कम महत्व की बात मानना शुरू कर देगा; ग) उद्धार के संबंध में नरिाशा की ओर ले जाता है: यदि, शाश्वत उद्धार प्राप्त करने के लिए, आवश्यक धर्मसद्धिातों में वश्विास करना आवश्यक है; फरि भी कोई भी प्रोटेस्टेंट अब तक इन धर्मशास्त्रों को सही और नर्वविाद रूप से परभिाषति करने में सक्षम नहीं हुआ है—और न ही कोई सक्षम है, तो फरि ये लोग कैसे आश्वस्त हो सकते हैं कि वे मोक्ष के सही मार्ग पर हैं, यानी, कि वे केवल गौण धर्मशास्त्रों को अस्वीकार करते हुए, आवश्यक धर्मशास्त्रों—और वास्तव में उन सभी—में वश्विास करते हैं? क्या इस तरह की सोच के साथ, मन की शांति मलि सकती है?....

६) अंत में, यह उल्लेख करना आवश्यक है कि धर्मसद्धिान्तों का वभिाजन उन धर्मसद्धिान्तों में होता है जो ऑर्थोडॉक्स चर्च और गैर-ऑर्थोडॉक्स चर्चों और समुदायों के साथ *साझा* हैं, और इसके *अपने वशिष्टि* धर्मसद्धिान्त—अर्थात्, वे जन्हिें उसने अकेले ही अपनी संपूर्णता में संरक्षति रखा है, जो प्राचीन सार्वभौमकि चर्च से वरिासत में मलि हैं, जबकि अन्य ईसाई समुदायों ने या तो उन्हें वकि्रत कयिा है या पूरी तरह से अस्वीकार कर दयिा है। इस अंतर को ध्यान में रखना चाहएि ताकि ऑर्थोडॉक्स डॉगमैटकि्स में, बाद वाली श्रेणी के धर्मसद्धिान्तों पर प्राथमकि ध्यान दयिा जा सके, क्योंकि उन पर गलत वश्विास रखने वालों द्वारा सबसे अधकि बार हमला कयिा जाता है।

§5. *ऑर्थोडॉक्स धर्मशास्त्रीय धर्मतत्व की प्रकृति, संरचना और विधि*

डॉगमैटिक थियोलॉजी की प्रकृति इसके कर्तव्य की अवधारणा, इसके विषय-वस्तु और इसके आदर्शों द्वारा निर्धारित होती है। *रूप में*, यह एक प्रणाली होनी चाहिए; अर्थात्, इसे ईसाई धर्म के धर्मसिद्धान्तों को एक कठोर अनुक्रम में, यथासंभव पूर्णता, स्पष्टता और दृढ़ता के साथ प्रस्तुत करना चाहिए। यह इसका बाहरी स्वरूप है, जिसके द्वारा यह अलग पहचाना जाता है: (क) उन सभी अन्य रूपों और विश्वास की स्वीकारोक्तियों से, जिनमें पवित्र चर्च स्वयं धर्मसिद्धान्तों को सिखाती है; और (ख) सामान्यतः धर्मसिद्धान्तों की किसी भी अन्य अव्यवस्थित व्याख्या से। *भावना में*, यह ऑर्थोडॉक्सवाद से ओत-प्रोत होना चाहिए और परिणामस्वरूप, धर्मसिद्धान्तों की अपनी व्याख्या में, इसे निरंतर ऑर्थोडॉक्स चर्च की सुदृढ़ शिक्षाओं द्वारा निर्देशित किया जाना चाहिए; इसे इसके धर्मविश्वासों और आस्था की स्वीकारोक्तियों के अधीन होना चाहिए। यह ऑर्थोडॉक्स धर्मशास्त्रीय धर्मशास्त्र का आंतरिक चरित्र है, जो इसे सभी गैर-ऑर्थोडॉक्स धर्मशास्त्रीय धर्मशास्त्रों से अलग करता है, जैसे कि रोमन कैथोलिक, लूथरन, रिफॉर्म्ड चर्चों और उन सभी अन्य संप्रदायों के धर्मशास्त्र, जिन्होंने स्वयं को मसीह की सच्ची कलीसिया से अलग कर लिया है।

ऑर्थोडॉक्स धर्मशास्त्र की एक प्रणाली का निर्माण करना और उसकी संरचना की रूपरेखा तैयार करना केवल इसके एकमात्र सिद्धांत—इसके विषय-वस्तु की सही समझ—के आधार पर ही संभव है, क्योंकि एक विज्ञान को अपने विषय का सटीक प्रतिनिधित्व करना चाहिए; इसलिए, इसे अपने घटक भागों में विभाजन के मामले में इसके अनुरूप होना चाहिए। ऑर्थोडॉक्स धर्मशास्त्रीय सिद्धांत का विषय-वस्तु हमें ज्ञात है: यह विश्वास के सिद्धांतों का सार है, या, यदि हम उनकी सामग्री पर विचार करें, तो यह विश्वास के उन सत्यों का सार है जो सीधे तौर पर ईसाई धर्म के सार से संबंधित हैं, और जिनमें स्वयं में ईश्वर के सिद्धांत और उनकी दुनिया के साथ, और विशेष रूप से मानवजाति के प्रति संबंध शामिल हैं। लेकिन ईसाई धर्म केवल परमेश्वर और मानवता के बीच एक ऐसा मिलन नहीं है, जैसा कि वह आदमि मिलन था, जिसके लिए प्रभु ने मानवता को, सभी अन्य आध्यात्मिक प्राणियों के साथ, उनकी सृष्टि के माध्यम से ही बुलाया था, बल्कि विशेष रूप से मानव जाति के पतन के बाद बहाल किया गया वह वाचा है, एक ऐसी वाचा जिसके लिए केवल पतित मानव जाति को सीधे बुलाया जाता है, और वह भी मसीह यीशु में छुटकारा पाने के द्वारा; इस कारण से, ईसाई धर्मसिद्धान्त, जो ईश्वर के सिद्धांत और उनकी दुनिया से, और विशेष रूप से मानव जाति से, संबंध को निर्धारित करते हैं, दो प्रकार के हैं। कुछ में ईश्वर और मानव जाति के सामान्य (naturali, ordinario) संबंध का सिद्धांत शामिल है, जो ईश्वर का दुनिया के सभी अन्य प्राणियों के प्रति था और है, और जो ईश्वर की दो क्रियाओं: सृष्टि और परिरक्षण में व्यक्त होता है। अन्य में ईश्वर का सिद्धांत, विशेष रूप से मानव जाति के उद्धारकर्ता के रूप में, और मानव जाति के साथ उनके विशेष संबंध (supranaturali, extraordinario) शामिल हैं, जिसे हमारे *उद्धार का* महान कार्य कहा जाता है।[41] पहले सत्य एक धर्म के रूप में ईसाई धर्म से संबंधित हैं, और यदि मानव जाति ने इसे आज तक संरक्षित रखा होता तो आदमि धर्म में भी पाए जाते; बाद वाले विशेष रूप से पुनर्स्थापित ईसाई धर्म से संबंधित हैं। ईसाई धर्मसिद्धातों का यह विभाजन प्राचीन चर्च पिताओं द्वारा सबसे अधिक प्रयुक्त होता था, जो सामान्यतः प्रथम प्रकार के धर्मसिद्धातों के समूह को शब्द Θεολογία — धर्मशास्त्र — और द्वितीय प्रकार के धर्मसिद्धातों के समूह को शब्द οἰκονομία — उद्धार का रहस्य या मोक्ष की व्यवस्था — से संबोधित करते थे। (एफि. 3:9).[42] यह बाद की अवधि में ऑर्थोडॉक्स चर्च के भीतर सामान्य उपयोग में रहा: 'यह उसकी प्रथा है,' 17वीं शताब्दी के अंत के आसपास अलेक्जेंड्रिया के पैट्रिआर्क, मित्रोफान क्रिटोपोलोस ने

---

[41] या, जैसा कि आमतौर पर कहा जाता है, *'उद्धार का* प्रबंधन'—ग्रीक: οἰκονομία τῆς σωτηρίας का शाब्दिक अनुवाद—हालांकि यह अभिव्यक्ति पूरी तरह से सीधी नहीं है (चर्च स्लावोनिक और रूसी शब्दकोश में 'stewardship' प्रविष्टि देखें, जिसे साम्राज्यिक के दूसरे विभाग द्वारा संकलित किया गया है विज्ञान अकादमी, खंड 1)।

[42] *योहान दमास्क.* *De fide orthodoxa*, पुस्तक 1, अध्याय 2। इस विचार के समर्थन में अन्य पवित्र पिताओं के उद्धरण पेटाविसि (*De Theologia dogmatica*, खंड. I, Prolegomena, अध्याय 1, और खंड V, पुस्तक IV, अध्याय 1), जो, अपनी ओर से, प्रस्तुत अंशों के आधार पर, निम्नलिखित सामान्य अवलोकन करते हैं: 'ईश्वर के संबंध में सभी विमर्श दो भागों में विभाजित हैं, जिनमें से एक को धर्मशास्त्र — θεολογία — और दूसरे को — ओइकोनोमिया — οἰκονομία — कहा जाता है। 'धर्मशास्त्र' (θεολογία) शब्द का अर्थ, सख्ती से कहें तो, वह है जो स्वयं दिव्य स्वभाव और दिव्य व्यक्तियों से संबंधित है, यानी ईश्वर की प्रकृति और उसके गुणों से, चाहे वे स्वतंत्र (absolutae proprietates) हों या दुनिया से कोई संबंध न रखते हों, या उनका ऐसा संबंध हो (relativae)। दूसरी ओर, ओइकोनोमिया (Oikonomia) में वह सब कुछ शामिल है जो ईश्वर की स्थिति और कार्यों से संबंधित है, जो हमारे उद्धार की परवाह करते हैं — जिसे यूनानी 'एंसार्कोन ओइकोनोमियिन' (ensarcon oikonomian) कहते हैं, और लैटिन लोग अवतार (incarnatio) और उद्धारकर्ता मसीह के देह में जीवन को कहते हैं।

अपनी *कन्फेशन ऑफ द कैथोलिक एंड एपोस्टोलिक चर्च ऑफ द ईस्ट* में लिखा, 'अपनी धर्मशास्त्रीय शिक्षा को *सरल धर्मशास्त्र* (θεολογία άπλή), और *उद्धार* संबंधी धर्मशास्त्र' (θεολογία οίκονομική).[43] इन सबके परिणामस्वरूप, ऑर्थोडॉक्स धर्मशास्त्रीय धर्मशास्त्र आज भी दो मुख्य भागों में विभाजित किया जा सकता है: I) स्वयं *ईश्वर का* सिद्धांत और संसार तथा विशेष रूप से मानव जाति के साथ उनका सामान्य संबंध, अर्थात् *सृष्टि और परमेश्वर की व्यवस्था* (θεολογία άπλή), और II) *ईश्वर का* सिद्धांत, विशेष रूप से *मानव जाति के उद्धारकर्ता के रूप में*, और मानव जाति के साथ उनका विशेष संबंध, अर्थात् *मोक्ष का संस्कार* (θεολογία οίκονομική).

विशेष रूप से, प्रत्येक धर्मशास्त्र को अलग से समझाते समय, ऑर्थोडॉक्स धर्मशास्त्र *को चाहिए कि वह:*

1) सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, चर्च के संक्षिप्त या अधिक विस्तृत धर्मविश्वास-सूत्रों से उस धर्मनिर्देश की एक सटीक परिभाषा प्रदान करना, क्योंकि ऑर्थोडॉक्स धर्मनिर्देश-शास्त्र का प्राथमिक कार्य यह दिखाना है कि ऑर्थोडॉक्स चर्च धर्मनिर्देशों के संबंध में क्या सिखाती है। इसे प्राप्त करने का सबसे सरल तरीका यह है कि उन कई सिद्धांतों पर चर्च की शिक्षा को प्रत्येक खंड या अध्याय की शुरुआत में एक साथ प्रस्तुत किया जाए, जिसमें उन सिद्धांतों पर चर्चा की जानी है; फिर प्रणाली की आवश्यकताओं के अनुसार प्रस्तुत शिक्षा को भागों में विभाजित किया जाए, और ऐसा करने के बाद, प्रत्येक भाग की एक के बाद दूसरे की अलग से जांच की जाए। कभी-कभी, ऐसे मामलों में, किसी विशेष धर्मसिद्धान्त की विस्तार से व्याख्या करते समय उसकी एक और भी अधिक विशिष्ट परिभाषा प्रदान करना आवश्यक हो सकता है।

२) एक धर्मशास्त्र की चर्च की परिभाषा के बाद, उसकी नींव पवित्र धर्मग्रंथ और पवित्र परंपरा से स्थापित की जानी चाहिए। क्योंकि चर्च हमें अपना सिद्धांत नहीं सिखाती, न ही वह ऐसा अपनी इच्छा से करती है; उसके धर्मशास्त्र दैवीय रूप से प्रकट की गई सच्चाइयाँ हैं, जिन्हें वह एक-एक करके ईश्वर के वचन से प्राप्त करती है। इस संबंध में ऑर्थोडॉक्स डॉगमैटिक्स के लिए प्रमुख नियम इस प्रकार हैं:

1) *पवित्र शास्त्र के संबंध में:* (क) सिद्धांतों का समर्थन करने के लिए न केवल नए नियम से, बल्कि जहाँ आवश्यक हो, पुराने नियम से भी उद्धरण दिए जाने चाहिए; क्योंकि दोनों मिलकर, सार में, एक ही दैवीय प्रकटीकरण बनाते हैं, और यद्यपि पुराने नियम के संस्कारिक और नागरिक कानून नए नियम के आगमन पर लागू होना बंद हो गए, — फिर भी, विश्वास और नैतिकता का पुराना नियम आज भी पूरी तरह से लागू है, जिसे केवल नए नियम के प्रकाशन में और अधिक विस्तार से समझाया और प्रकट किया गया है; ख) हालाँकि, जब पुराने नियम के अंश उद्धृत किए जाते हैं, तो उन्हें मुख्य रूप से मान्य ग्रंथों से लिया जाना चाहिए: क्योंकि गैर-मान्य ग्रंथों की गवाही सिद्धांतों के समर्थन में उतना महत्व नहीं रख सकती; ग) किसी विशेष धर्मशास्त्र से संबंधित प्रत्येक धर्मग्रंथ के अंश का हवाला देने की आवश्यकता नहीं है; केवल सबसे स्पष्ट अंशों, तथाकथित *'शास्त्रीय' अंशों* का हवाला देना पर्याप्त है; घ) धर्मग्रंथों के अंशों का चयन और व्याख्या धर्मशास्त्रों का समर्थन करने के लिए केवल ध्वनि, रूढ़िवादी व्याख्याशास्त्र के नियमों के अनुसार ही किया जाना चाहिए।

---

[43] इसलिए यह उचित माना जाता है कि सरल धर्मशास्त्र और आर्थिक धर्मशास्त्र के बीच ऐसा अंतर किया जाए। तत्पश्चात तुरंत यह जोड़ा जाता है कि चर्च सरल धर्मशास्त्र के विषय के रूप में स्वयं ईश्वर के सिद्धांत और ईश्वर को स्रष्टा तथा प्रदाता के रूप में निर्धारित करती है, और परिणामस्वरूप बाकी सब कुछ दूसरे भाग के लिए छोड़ देती है: "सरल धर्मशास्त्र," वे सिखाते हैं, "को यह ज्ञान प्रस्तुत करना चाहिए कि ईश्वर एकमात्र और अद्वितीय ईश्वर हैं, और सत्ता के अनुसार एक ही हैं; कि वे बिना आरंभ के, अजन्मे, अविनाशी और शाश्वत हैं; कि वे सभी दृश्यमान और अदृश्य वस्तुओं के सृष्टिकर्ता हैं, और प्रत्येक प्राणी, दृश्यमान और अदृश्य, के शासक, प्रदाता और संरक्षक भी हैं।" (कन्फेशियो कैथोलिका एट एपोस्टोलिका इन एक्लेसिया ओरिएन्टली, एड. हेल्मस्ट., अध्याय 1)। यह ध्यान देने योग्य है कि सेंट जॉन ऑफ़ डेमास्कस की *दिव्यशास्त्र* स्वयं, ग्रीक पांडुलिपियों में से एक में—हालांकि यह कोई प्राचीन नहीं है—दो भागों में विभाजित है, जिनमें से पहला, जॉन की कृतियों के संपादक के अनुसार, लेकिन — 'धर्मशास्त्र पर, अर्थात् एक, त्रिमूर्ति ईश्वर, सृष्टिकर्ता और प्रदाता पर', जबकि बाद वाला 'आर्थिक व्यवस्था, या अवतारित ईश्वर, उद्धारकर्ता और पुरस्कृतकर्ता पर' से संबंधित है (पेरिस के अनुसार *संत जॉन ऑफ़ डेमास्कस* की ऑर्थोडॉक्स विश्वास पर पुस्तक के प्रस्तावना देखें लेकिन के इस पिता के कार्यों के संस्करण, खंड 1, पृ. 119)। भले ही कोई केवल इसी आधार पर इस बात से सहमत न हो कि ऐसा विभाजन स्वयं संत जॉन ऑफ़ डेमास्कस ने किया था—क्योंकि यह उनके *दिव्यताशास्त्र* की किसी अन्य ग्रीक पांडुलिपि में नहीं मिलता है— कम से कम, यहाँ मिट्रोफ़ान क्रिटोपोलोस के उन शब्दों की और पुष्टि देखी जा सकती है, कि ऑर्थोडॉक्स पूर्व में बाद के समय में, वास्तव में धर्मशास्त्रीय ईश्वरशास्त्र को इस तरह विभाजित करना प्रथा थी। हालाँकि, स्वयं सेंट डेमासेन ने, अपनी *दिव्यताशास्त्र* को केवल अध्यायों में विभाजित करने के बाद, *पेरी तेस थेयास ओइकोनोमियास* (Perí tēs theiás oikonomías) अध्याय की शुरुआत त्रित्वीय ईश्वर और उनकी सृष्टि और व्यवस्था पर अध्यायों की व्याख्या करने के बाद ही करते हैं (देखें *डे टाइड ऑर्थोड.*, अध्याय 45, या पुस्तक III, अध्याय 1)।

पवित्र परंपरा के संबंध में: (क) परंपरा से साक्ष्य का हवाला केवल शास्त्रों से साक्ष्य का हवाला देने के बाद ही धर्मसद्धिान्तों की पुष्टि या स्पष्टीकरण के लिए दिया जाना चाहिए, जो ईसाई धर्म का पहला और सबसे महत्वपूर्ण स्रोत है; ख) उन सभी मामलों में परंपरा से साक्ष्य उद्धृत करना आवश्यक है जहाँ पवित्र शास्त्र का साक्ष्य या तो पर्याप्त रूप से स्पष्ट और पूर्ण नहीं है, या विभिन्न व्याख्याओं और विवादों के अधीन है; ग) लेकिन परंपरा से अंश उद्धृत करने की कोई आवश्यकता नहीं है जहाँ पवित्र शास्त्र के अंश पूरी तरह से स्पष्ट और निश्चित हैं, इस प्रकार कि वे ऑर्थोडॉक्स की ओर से किसी भी संदेह या पुनर्व्याख्या के अधीन नहीं हैं और न ही गैर-ऑर्थोडॉक्स द्वारा, उदाहरण के लिए, ईश्वर के कुछ गुणों से संबंधित सद्धिांत में: इस मामले में, परंपरा से उद्धृत अंश—जो मुख्य रूप से चर्च के पवित्र पिताओं की रचनाओं में संरक्षित हैं—हमारे लिए केवल इस बात का परिचय दे सकते हैं कि धर्म के प्राचीन और प्रसद्धि शिक्षकों ने कुछ धर्मसद्धिान्तों की व्याख्या कैसे की; (घ) सामान्यत; तथापि, परंपरा से उद्धृत अंशों में उनकी वास्तविक प्रेरितीय उत्पत्ति के लक्षण होने चाहिए।[44]

प्रत्येक धर्मशास्त्र की व्याख्या में इन दो आवश्यक कर्तव्यों को पूरा करने के बाद—अर्थात् यह दिखाने के बाद कि ऑर्थोडॉक्स चर्च इस मामले पर क्या सिखाती है और पवित्र धर्मग्रंथ और पवित्र परंपरा के आधार पर यह प्रदर्शित करने के बाद कि वह ऐसा क्यों सिखाती है—धर्मशास्त्रीय धर्मशास्त्र *कर सकता है:*

3) विचाराधीन धर्मसद्धिान्त के संबंध में सुदृढ़ मानवीय विवेक के विचारों को स्वीकार करना (रोमियों 12:2; 1 थिस्सलुनीकियों 5:20)। यदि यह धर्मसद्धिान्त मन के लिए सुलभ सत्य है, तो मन इसके लिए नए स्पष्टीकरण ढूंढ सकता है और अपनी ही जानकारी के दायरे में इसके लिए और भी अधिक समर्थन पा सकता है। हालांकि, यदि धर्मशास्त्र रहस्यमय और अकल्पनीय है, तो मन कम से कम यह तो दिखा सकता है कि यह रहस्य, अपनी सारी अकल्पनीयता के बावजूद, विश्वासी के लिए प्रकाश का स्रोत कैसे है — यह ईसाई धर्म की अन्य सत्यताओं से कितनी निकिटता से जुड़ा है जो मन के लिए बोधगम्य हैं — कैसे यह विचार यह जो विचार व्यक्त करता है वह ईश्वर के योग्य, उनकी पूर्णताओं के अनुरूप, और साथ ही मानव नैतिकता के लिए लाभकारी है—यह कितनी अन्यायपूर्ण बात है कि इस रहस्य को केवल इसलिए खारिज कर दिया जाए क्योंकि यह अपारदर्शी है, और इसी तरह। अंत में, यह सर्वविदित है कि तर्क से समझ में आने वाले दोनों ही धर्मसद्धिान्त, और विशेष रूप से वे जो अकल्पनीय हैं, हमेशा से ही स्वतंत्र विचारकों के आपत्तियों के अधीन रहे हैं और आज भी हैं, जो, अधिकांशत; तर्क से ही उत्पन्न होती हैं, और इसलिए केवल तर्क की सहायता से ही खंडित की जा सकती हैं। यह सच है कि इस प्रकार के सभी विचार—चाहे वे व्याख्या करने के लिए, या धर्मग्रंथों को सुदृढ़ करने और उनकी रक्षा के लिए मानव की स्वाभाविक बुद्धि से लिए गए हों—ईसाई धर्मशास्त्र के क्षेत्र में, जो सकारात्मक और अलौकिक है, बहुत अधिक मूल्य के नहीं हो सकते; फिर भी वे विश्वासियों द्वारा ईसाई धर्मग्रंथों की समझ को बहुत सुविधाजनक बना सकते हैं, और उन्हें प्रकाशन के परम सत्य की अवधारणाओं के करीब ला सकते हैं, और कुछ मामलों में, कम से कम, अनावश्यक नहीं हैं (जब अकल्पनीय धर्मसद्धिान्तों की व्याख्या की जाती है), अन्य में — उपयोगी (जब बोधगम्य धर्मसद्धिान्तों की व्याख्या की जाती है), और अन्य में — यहाँ तक कि आवश्यक (जब आपत्तियों का समाधान किया जाता है)। यही कारण है कि प्रारंभिक चर्च के पवित्र पिताओं और शिक्षकों ने न केवल विश्वास के मामलों में तर्क और ज्ञान के वैध उपयोग को अस्वीकार नहीं किया, बल्कि इसे आवश्यक भी माना,[45] और

---

[44] इन सभी पर अधिक स्पष्टता के लिए, 'ऑर्थोडॉक्स थियोलॉजी का परिचय' (§ 131: *प्रेरितिक परंपरा की विशेषताओं पर,* और § 132: *पवित्र परंपरा के महत्व और उपयोग पर*) देखें।

[45] हम निम्नलिखित अंशों पर ध्यान आकर्षित करते हैं: (क) अलेक्जेंड्रिया के सिरिल: 'विश्वास ज्ञान है, और ज्ञान, बदले में, विश्वास है; किसी दिव्य सत्ता में, दोनों अनुकूलता और असंगति उत्पन्न होती हैं' (स्ट्रॉम. खंड II, पृ. 4); ख) संत क्रिसोस्टोम: 'क्योंकि हम तब और भी अधिक विश्वास करते हैं जब हम उस कारण और तर्क को जानते हैं जिससे यह घटित होता है' (हिब्रू में होम. XII, पृ. 2); ग) धन्य ऑगस्टीन: 'ईश्वर से यह दूर रहे कि वह हम में उस चीज़ से घृणा करे, जिसके द्वारा उसने हमें सभी अन्य जीवित प्राणियों से श्रेष्ठ बनाया है। मैं कहता हूँ, यह दूर रहे कि हम इस कारण से विश्वास करें, या कि हम तर्क को स्वीकार करें या खोजें, *जबकि वास्तव में हम तब तक विश्वास भी नहीं कर सकते थे जब तक हमारे पास तर्कसंगत मन नहीं होता।*' इस प्रकार, धर्मोपदेश से संबंधित कुछ मामलों में, जिन्हें हम अभी तर्क से समझने में सक्षम नहीं हैं लेकिन एक दिन होंगे, विश्वास को तर्क से पहले आना चाहिए, जिससे हृदय शुद्ध हो ताकि वह महान सच्चाइयों को ग्रहण कर सके और प्रकाश फैला सके; यह निश्चित रूप से तर्क का विषय है (एपिस्ट. एड कंसेंट. CXX, n. 3); (घ) हिलारी: प्रेरित ने हमें एक ऐसा विश्वास नहीं दिया जो नग्न और तर्क से रहित हो: जो, यद्यपि उद्धार के लिए अत्यंत शक्तिशाली है, फिर भी, जब तक कि उसे सद्धिांत द्वारा निर्देशित नहीं किया जाता, विपत्ति के समय भागने के लिए एक सुरक्षित शरणस्थली तो होगी, परन्तु विजय की स्थिर सुरक्षा को बनाए नहीं रखेगी; और यह हथियारों से लैस लोगों के साथ चलने वाली अदम्य दृढ़ता के बजाय, भाग जाने के बाद कमजोरों के लिए एक शिविर के समान होगी (पुस्तक XII); (d) धन्य थियोडोरेट:

जब उन्होंने ईसाई धर्मसद्धिान्तों की वस्तिार से व्याख्या की, वशिेष रूप से गलत सोच रखने वालों के वरिुद्ध, तो उन्होंने कसिी भी तरह से केवल पवत्रि धर्मग्रंथ और पवत्रि परंपरा की गवाहयिों तक ही खुद को सीमति नहीं रखा, बल्कि वे मानव सामान्य ज्ञान का भी सहारा लेते थे, सहायता के लिए तर्कशास्त्र, दर्शन, प्राकृतकि वज्ञिान और अन्य वज्ञिानों का आह्वान करते थे, और उनमें से प्रत्येक में, अपनी-अपनी समझ के अनुसार, प्रकट की गई सच्चाइयों के प्रमाण या व्याख्याएँ खोजने का प्रयास करते थे।[46] और यही काम प्रसद्धि शक्षिकों ने कयिा, न केवल उन मामलों में जहाँ मामला बोधगम्य धर्मशास्त्रों से संबंधति था—जैसे, जब उन्होंने बहुदेववादयिों के वरिुद्ध ईश्वर की एकता, या स्टोइक और नसिर्गवादी (पैंथेइस्ट) के वरिुद्ध दव्यि व्यवस्था (प्रोवडिेन्स) के अस्तत्वि को सद्धि कयिा, या ग्नॉस्टकि और मार्सयिोनाइट्स,[47] के वरिुद्ध दुनयिा में बुराई की उत्पत्तकिो मानवीय स्वतंत्रता के दुरुपयोग से उत्पन्न होने के रूप में समझाया, बल्कि तब भी, संप्रदायियों की त्रुटयिों का खंडन करते हुए, उन्होंने ईसाई वश्विास के सबसे बड़े रहस्यों पर चर्चा की: ईश्वर में व्यक्तयिों की त्रमिूर्ति, परमेश्वर के वचन का पूर्व-शाश्वत जन्म, उनका अवतार, क्रूस पर उनकी मृत्यु, और इसी तरह। महान सार्वभौमकि शक्षिकों—बेसलि द ग्रेट, ग्रेगरी द थयिोलोजयिन और जॉन क्रसिोस्टोम, और वशिेष रूप से सेंट अथेनासयिस द ग्रेट और धन्य ऑगस्टीन—की कृतयिाँ इन सभी अकल्पनीय सत्यों पर ऐसे बौद्धकि चतिन से भरी हैं।[48] और सेंट जॉन ऑफ़ डेमास्कस, पहले व्यवस्थति धर्मशास्त्री, ने हमें अपनी *एक्ज़ैक्ट एक्सपोज़िशन ऑफ़ द *ऑर्थोडॉक्स* फेथ* में एक और भी अधकि प्रत्यक्ष उदाहरण दयिा है कि कैसे, डॉगमैटकि धर्मशास्त्र के

'वश्विास को ज्ञान की आवश्यकता है, जैसे ज्ञान को वश्विास की; क्योंकि न तो ज्ञान के बनिा वश्विास हो सकता है, और न ही वश्विास के अलावा ज्ञान'; हालाँकि, वश्विास ज्ञान से पहले आता है, जबकि ज्ञान वश्विास के बाद आता है (ग्रैकार., अफेक्ट., क्यूरेट., पृ. 479)।

[46] इस वचिार का समर्थन करने के लिए चर्च के धर्मपति की रचनाओं से वशिष्टि उदाहरणों का हवाला देना अनावश्यक होगा: वे इतने अधकि हैं कि चर्च के सबसे वद्विान धर्मपति और शक्षिकों की लगभग हर उल्लेखनीय कृति में कई उदाहरण मलि सकते हैं: जस्टनि, अलेक्जेंड्रयिा के क्लेमेंट, बेसलि द ग्रेट, ग्रेगरी द थयिोलोजयिन, जॉन क्रसिोस्टोम, ऑगस्टीन, अलेक्जेंड्रयिा के सरिलि और अन्य। सामान्य रूप से यह उल्लेख करना पर्याप्त है: 1) कि पवत्रि पतिाओं ने कसिी भी तरह से सांसारकि शक्षिा की उपेक्षा नहीं की, बल्कि इसके वपिरीत इसे ईसाई धर्मशास्त्री के लिए उपयोगी माना: उदाहरण के लिए, संत ग्रेगरी द थयिोलोजयिन कहते हैं, 'मुझे वश्विास है कि कोई भी ववेिकी व्यक्तशिक्षिा को हमारे लिए सर्वोपरि भलाई के रूप में स्वीकार करेगा, और न केवल हमारे शक्षिण का यह सबसे कुलीन रूप, जो सभी अलंकरण और वाक्पटुता को ठुकराते हुए, केवल मोक्ष और चतिनशील सौंदर्य से संबंधति है, बल्कि वह *उच्च शक्षिा* भी जो कई ईसाई, अपनी अज्ञानता में, अनाड़ी, खतरनाक और ईश्वर से दूर ले जाने वाली मानकर तुच्छ समझते हैं... वज्ञिानों में, हमने अनुसंधान और कल्पना को अपनाया है, लेकनि उन सभी चीजों को अस्वीकार कर दयिा है जो राक्षसों, भ्रम और वनिाश की गहराइयों की ओर ले जाती हैं। हमने उनसे *वह सब कुछ* नकिाला है *जो भक्तकि लिए भी उपयोगी है,* बुरे से बेहतर सीखकर, और उनकी कमजोरी को अपने शक्षिण की ताकत में बदल दयिा है। इसलिए, शक्षिा का अपमान नहीं कयिा जाना चाहिए, जैसा कि कुछ लोग तर्क देते हैं; इसके वपिरीत, हमें उन लोगों को मूर्ख अज्ञानी मानना चाहिए जो, ऐसा दृष्टकिोण रखते हुए, सभी को अपनी तरह का देखना चाहेंगे, ताकि वे अपनी कमयिों को एक सामान्य कमी की स्थति में छपिा सकें और अज्ञानी के रूप में उजागर होने से बच सकें" ("पवत्रि पतिाओं के कार्य", रूसी अनुवाद, मास्को थयिोलॉजकिल अकादमी द्वारा प्रकाशति, खंड IV, पृष्ठ 63–64); २) कि कई पवत्रि पति और चर्च के शक्षिक दर्शनशास्त्र, वशिेष रूप से प्लेटो के दर्शन का अध्ययन करने के शौकीन थे, उन्होंने अन्य ईसाइयों को इसका अध्ययन करने की सलाह दी, और स्वयं ईसाई सद्धिांत की व्याख्या में अक्सर इसका उपयोग कयिा (देखें, कीव के पांचवें वर्ष के छात्रों के नबिंधों के खंड 1 में आध्यात्मकि अकादमी, 5वां वर्ष — नबिंध: *'पहली पाँच शताब्दयिों के चर्च पतिाओं ने सामान्य रूप से दर्शनशास्त्र और वशिेष रूप से प्लेटोनकि दर्शन को कैसे देखा*, और तुलना करें *बाल्थस:* *प्लेटोनज्म के आरोपति पवत्रि पतिाओं का बचाव*...); और 3) कि, अंत में, सभी धर्मनरिपेक्ष वज्ञिानों में से, दर्शनशास्त्र की वह शाखा जसिे उन्होंने सबसे अधकि महत्व दयिा और ईसाई धर्मशास्त्री के लिए आवश्यक माना, वह द्वंद्ववाद (डायलेक्टकि) थी: 'क्योंकि द्वंद्ववाद की शक्तसिद्धिांतों के खलिाफ एक सुरक्षात्मक बाधा है, जो उन्हें बनिा चुनौती के बने रहने से रोकती है। 'और जो लोग उनका वरिोध करते हैं, उनके खलिाफ एक अभेद्य रक्षा,' संत बेसलि द ग्रेट ने तर्क दयिा (यशायाह के अध्याय 2 में)। 'पवत्रि धर्मग्रंथों में पाए जाने वाले सभी प्रकार के प्रश्नों में प्रवेश करने और उनका समाधान करने के लिए ववािद की वधिा का अत्यधकि मूल्य है,' — ऐसा ही धन्य ऑगस्टीन (De doctrina Christiana, पुस्तक II, अध्याय 31) भी कहते हैं। डायलेक्टकि पर इसी प्रकार की टप्पिणयिाँ अलेक्जेंड्रयिा के क्लेमेंट (Stromata, पुस्तक I, पृ. 319; पुस्तक VI, पृ. 655), ग्रेगरी ऑफ नस्सिा (De anima et resurr., खंड III, पृ. 201, सं. *मोरेल.*), जेरोम (खंड III, पृ. 995) और अन्य। और संत ग्रेगरी द थयिोलोजयिन, संत बेसलि द ग्रेट के बारे में बताते हैं कि, यद्यपि वे सभी वज्ञिानों का पूर्ण ज्ञान रखते थे और दर्शन में अत्यधकि नपिुण थे, वे वशिेष रूप से "उस शाखा में कुशल थे जो तार्ककि तर्कों और वरिोधाभासों के साथ-साथ बहसों से संबंधति है, और जसिे डायलेक्टक्सि कहा जाता है," — और यह कि भूलभुलैया से बाहर नकिलना उनके शब्दों के जाल से बचने की तुलना में आसान था, जब वे इसे आवश्यक समझते थे' (वर्क्स ऑफ द होली फादर्स, रूसी अनुवाद, खंड IV, पृ. 78-79)।

[47] उदाहरण के लिए देखें, आइरेनयिस, *Contra Haereses*, पुस्तक II; टर्टुलयिन, *Adversus Hermogenem* और *Contra Maxion*; एपफिानयिस, *Haereses* XXXI, XLI–XLIV; ग्रेगरी ऑफ़ नस्सिा, *Contra Manicheus: Decem Syllogismi*, *Opp.*, खंड II, ed.Paris , 1615.

[48] उदाहरण के लिए, बेसलि द ग्रेट के कार्यों से, पवत्रि आत्मा पर प्रबंध और यूनोमयिस के खलिाफ पाँच पुस्तकें; सेंट ग्रेगरी द थयिोलोजयिन से, यूनोमयिनों के खलिाफ धर्मशास्त्र पर पाँच प्रवचन; और धन्य ऑगस्टीन से, परम पवत्रि त्रमिूर्ति पर पंद्रह पुस्तकें देखें।

क्षेत्र में, प्रकटवाक्य से प्राप्त सच्चाइयों—चाहे वे बोधगम्य हों या अबोधगम्य—के प्रमाणों और व्याख्याओं को तर्क से प्राप्त उन्हीं सच्चाइयों के प्रमाणों और व्याख्याओं के साथ जोड़ा जा सकता है।[49]

ऑर्थोडॉक्स डॉगमैटिक्स के क्षेत्र में तर्क का प्रयोग करते समय, निम्नलिखित नियमों का पालन करना चाहिए: क) इसका उपयोग केवल प्राचीन पवित्र पितरों के उदाहरण के अनुसार करना, और न कि जैसा आधुनिक तर्क (ratio) के पैरोकार — तर्कवादी — चाहेंगे; अर्थात्, इसे निरंतर विश्वास के अधीन रखना चाहिए (2 कुरिन्थियों 10:5),[50] जो नींव[51] और स्रोत,[52] और आवश्यक शर्त (यशायाह 7:9),[53] दोनों है। और सभी धार्मिक ज्ञान का सच्चा न्यायाधीश (κριτήριον)[54] — यह सुनिश्चित करने के लिए कि मन प्रकट की गई सच्चाइयों का उचित श्रद्धा के साथ व्यवहार करे,[55] और अपनी शक्ति से परे की बातों को समझने और समझाने का प्रयास न करे,[56] *यह मानने का* साहस नहीं करता *कि वह अपने बारे में वैसा ही सोचे जैसा उसे सोचना चाहिए* (रोमियों 12:3), — लेकिन किसी भी तरह से बुद्धि को विश्वास का न्यायाधीश मानने के लिए नहीं, जिसे कथित तौर पर अलौकिक सिद्धांतों को अपनी आलोचनात्मक जांच के अधीन करने, उनकी योग्यता पर निर्णय लेने, और फिर उन्हें किसी न किसी तरह से व्याख्यायित करने का अधिकार है: यह अब प्रकट धर्मशास्त्र के क्षेत्र में तर्क का उपयोग नहीं, बल्कि उसका दुरुपयोग होगा — एक ऐसा दुरुपयोग जो ईसाई प्रकटीकरण, जो दिव्य और अलौकिक है, के सार के बिल्कुल विपरीत है, और उद्धारकर्ता मसीह और प्रेरितों के इरादे के भी विपरीत है, जिन्होंने लोगों से, सबसे बढ़कर, विश्वास की माँग की (मरकुस 16:16; रोमियों 14:23; इब्रानियों 11:6, आदि) — एक ऐसा दुरुपयोग जिसके विरुद्ध कलीसिया के सभी प्राचीन शिक्षकों ने इतनी दृढ़ता से विरोध किया;[57] ख) ऐसा करते समय, किसी विशेष दार्शनिक प्रणाली या सिद्धांत का विशेष रूप से अनुसरण न करना, बल्कि सामान्य रूप से सुदृढ़ तर्क का अनुसरण करना, और, धर्मपिताओं की सलाह पर, मानव ज्ञान की सभी शाखाओं में विश्वास के लिए उपयोगी पाया जा सकने वाला सब कुछ उपयोग करना, जैसे कोई मधुमक्खी जो हर फूल पर बैठकर उससे उसके लिए उपयुक्त

---

[49] विशेष रूप से पुस्तक 1, अध्याय V देखें: इस बात का प्रमाण कि *एक ही ईश्वर है, कई नहीं*; अध्याय VI: *वचन और पुत्र पर। तर्क से ईश्वर के अस्तित्व का प्रमाण*; अध्याय VII: *तर्क से पवित्र आत्मा का प्रमाण*; साथ ही तीसरी पुस्तक, जो मुख्य रूप से यीशु मसीह में दो स्वभावों और उनके मिलन तथा पारस्परिक सहभागिता के अकल्पनीय तरीके से संबंधित है।

[50] चर्च के प्राचीन शिक्षकों ने एक उपमा के माध्यम से इस मामले में मौजूद होने वाले तर्क और विश्वास के बीच संबंध को समझाने का प्रयास किया: उन्होंने कहा, विश्वास, अब्राहम के घर में सारा की तरह, स्वामिनी होनी चाहिए, जबकि तर्क या दर्शन, हागर की तरह, दासी होनी चाहिए *(क्लेमें. एलेक्स.* स्ट्रोम. 1, पृ. 284–285; *Hieron.* epist. 146 ad Magn.).

[51] 'तब, विश्वास ज्ञान की नींव है।' *Clem. Alex.* Strom. lib. VII, c. 10. यह भी देखें *Iren.* adv. hær., ed. Massuet., lib. I, e. 1–10; lib. II, c. 28; *Athanas*. epist. 1 ad Serapion. cap. 20.

[52] संत जॉन क्राइसोस्टोम ने कहा: 'ज्ञान विश्वास के माध्यम से आता है, और विश्वास के बिना कोई ज्ञान नहीं है' *(क्राइसोस्टोम,* फिलिप्पियों को लिखे पत्र पर उपदेश XI); 'समझ विश्वास का काम है' (हिब्रियों पर उपदेश XXI, संख्या 1); अलेक्जेंड्रिया के संत सिरिल: 'ज्ञान विश्वास के बाद आता है, उससे पहले नहीं' (कैटेन. इन कैप. 6 जोआन.). यह भी देखें यरूशलेम के संत सिरिल — कैटेक. V, 2, और बुल्गारिया के संत थियोफिलैक्ट — इन कैप. I एड टिम.

[53] नबी ने ठीक ही कहा था: *'यदि तुम विश्वास नहीं करोगे, तो तुम समझोगे नहीं* (यशायाह 7:9)। यहाँ उन्होंने इन दोनों के बीच स्पष्ट अंतर किया, और यह सिद्धांत स्थापित किया कि हमें पहले विश्वास करना चाहिए, ताकि हम उस बात को समझ सकें जिस पर हम विश्वास करते हैं। इसलिए यह तर्कसंगत है कि विश्वास को तर्क से पहले आना चाहिए। *ऑगस्टीन,* कन्सेन्टियस को पत्र CXX। यही बात अलेक्जेंड्रिया के क्लेमेंट — स्ट्रोमेटिक्स, पुस्तक II, पृ. 4 — और संत बेसिल द ग्रेट — भजन संहिता CXV पर व्याख्यान — में भी पाई जाती है।

[54] तब, विश्वास ज्ञान से अधिक मौलिक है, और उसका मानदंड है। *क्लेमेंट ऑफ अलेक्जेंड्रिया,* स्ट्रोमैटा, पुस्तक II, अध्याय 4।

[55] हमें अपनी सोच में हमेशा सावधानी बरतनी चाहिए, लेकिन खासकर जब हम ईश्वर के बारे में कुछ कहते या सुनते हैं। *क्रिसोस्टोम,* हिब्रूओं को लिखी गई पत्र पर प्रवचन II।

[56] अत्यधिक सूक्ष्मता के वश में होना उचित नहीं है, और न ही अपनी चरम जांच-पड़ताल में उस बात को सहन करना जो तर्क से परे है। *सिरिल्यूज ऑफ़ अलेक्जेंड्रिया,* सम्राट थियोडोसियस को संबोधित अपने भाषण में।

[57] 'इस पर विस्तार से विचार किया जाना चाहिए…', संत एम्ब्रोज़ कहते हैं, 'अन्यथा कोई दर्शनशास्त्र के माध्यम से हमारे दावे को कमजोर कर सकता है। क्योंकि हमने एरियन को विधर्म में पड़ते देखा है, जबकि वे सोचते थे कि मसीह की उत्पत्ति इस संसार के रीति-रिवाजों से ज्ञात की जा सकती है।' उन्होंने प्रेरित को त्याग दिया है और अरिस्टोटल का अनुसरण करते हैं; उन्होंने परमेश्वर के साथ रहने वाली बुद्धि को त्याग दिया है, और तर्कशास्त्र के अनुशासन के अनुसार वाद-विवाद के जालों और शब्दों के फंदों की प्रशंसा की है (भजन संहिता CXVIII, उपदेश XXII, n. 10)। यह भी देखें टर्टुलियन (De praescriptione haeresium, अध्याय 7), संत जॉन क्राइसोस्टोम (भजन संहिता CXV पर प्रवचन, संख्या 1), संत बेसिल द ग्रेट (यूनोमियस के विरुद्ध, पुस्तक 1), और धन्य ऑगस्टीन (समय पर प्रवचन 87)।

चीज़ नकिालना जानती है;[58] ग) धर्मशास्त्रीय सद्धिांत के क्षेत्र में तर्क के सभी ऐसे वचिार—यहाँ तक कि वैध वचिार भी—चाहे वे व्यक्तगित रूप से हमसे उत्पन्न हों या हमें पवत्रि पतिाओं की रचनाओं से प्राप्त हों, उन्हें कसिी भी तरह से स्वयं धर्मशास्त्रों के समकक्ष नहीं रखा जाना चाहिए, न ही धर्मशास्त्रों के प्रमाणों या व्याख्याओं से उनकी तुलना की जानी चाहिए, पवत्रि शास्त्र और पवत्रि परंपरा से लिए गए; न ही इन्हें सख्त धर्मशास्त्रीय अर्थ में मान्य प्रमाण माना जाना चाहिए: इस नयिम की उपेक्षा ने, जैसा कि रोमन चर्च के अनुभव ने दखिाया है, अक्सर कुछ प्राचीन शक्षिकों या यहां तक कि बाद के धर्मशास्त्रयिों की नजिी राय को धर्मसद्धिान्तों के दर्जे तक पहुँचा दयिा है;[59] (घ) धर्मशास्त्रों पर चर्चा करते समय अत्यधकि वैचारकि सूक्ष्मता में न जाएँ, और तो और उन नरिर्थक प्रश्नों से बचें जो सीधे तौर पर चर्च की सकारात्मक शक्षिा से संबंधति नहीं हैं; मध्ययुगीन स्कॉलरशपि के उदाहरण ने दखिाया है कि ऐसी सूक्ष्मता और प्रश्न धर्मशास्त्र को कनि चरमों तक ले जा सकते हैं।[60]

4) हम धर्मसद्धिान्तों के इतहिास का सहारा ले सकते हैं। हमने पहले ही उल्लेख कयिा है कि आस्था के धर्मसद्धिान्त, दव्यि सच्चाइयों के रूप में, ऑर्थोडॉक्स चर्च की शक्षिा में हमेशा अपरविर्तति रहते हैं: वह आज भी इन सच्चाइयों को उसी रूप में सखिाती है जसि रूप में उसने उन्हें स्वयं प्रभु यीशु से प्राप्त कयिा था, और समय के अंत तक उन्हें सखिाती रहेगी। हालांकि, जसि तरह से व्यक्तगित वश्विासयिों ने धर्मसद्धिान्तों को समझा है, वह सदयिों में कई बार बदल गया है: ऐसे लोग रहे हैं जन्हिोंने धर्मसद्धिान्तों के बारे में झूठे वचिार रखे; ऐसे भी रहे हैं जन्हिोंने धर्मसद्धिान्तों को पूरी तरह से तोड़-मरोड़ दयिा या अस्वीकार कर दयिा और वधिर्म में पड़ गए। परणिामस्वरूप, पवत्रि चर्च ने सार्वभौमकि और स्थानीय परषिदों का आयोजन कयिा, और इन परषिदों में ऑर्थोडॉक्स का मार्गदर्शन करने के लिए इन धर्मसद्धिान्तों की सबसे सटीक परभिाषाएँ और व्याख्याएँ जारी कीं; जबकि उत्साही पादरयिों ने वधिर्मयिों के खलिाफ पूरे ग्रंथ लखि और, वधिर्म की प्रकृति तथा स्थान और समय की परस्थितियिों की मांगों के अनुसार, प्रत्येक ने अपनी व्यक्तगित समझ और तर्क के अनुसार, बचाए जा रहे धर्मसद्धिान्त के पक्ष में वभिन्नि व्याख्याओं या प्रमाणों का उपयोग कयिा। यहीं से धर्मसद्धिान्तों का इतहिास उत्पन्न हुआ, जो जब ऑर्थोडॉक्स धर्मसद्धिान्तशास्त्र में प्रस्तुत कयिा जाता है, तो चर्च की इन पर शक्षिा की अधकि सटीक समझ में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। हालांकि, यह आवश्यक नहीं है कि इस इतहिास को डॉगमैटक्सि में वस्तिार से प्रस्तुत कयिा जाए: वश्विास की सच्चाइयों के संबंध में वधिर्म और झूठी रायों का वस्तिृत ववरिण, साथ ही उन पवत्रि पतिाओं और चर्च के शक्षिकों की शक्षिा का वस्तिृत ववरिण जन्हिोंने इन सच्चाइयों का बचाव कयिा, ये सभी वशिष्टि वषिय हैं, जबकि धर्मशास्त्र को अपनी धर्मसद्धिान्तों के इतहिास में उनसे उतना ही ग्रहण करना चाहिए जतिना कि उनके बेहतर समझ के लिए वास्तव में आवश्यक हो, और परणिामस्वरूप—केवल तभी जब इसकी वास्तव में आवश्यकता हो। हालांकि, चूँकि कुछ धर्मसद्धिान्त ऐसे हैं, जो कम से कम अपने वशिष्टि प्रस्तावानों में, कभी भी पुनर्व्याख्या या वधिर्म के अधीन नहीं रहे हैं, या जन्हिें इतहिास की सहायता के बनिा ही काफी आसानी से समझा जा सकता है, यह स्पष्ट है कि धर्मसद्धिान्तशास्त्र को इतहिास की ओर केवल कुछ वशिष मामलों में ही मुड़ना चाहिए जहाँ इसकी वास्तव में आवश्यकता हो, — उदाहरण के लिए, जब पवत्रि त्रमिूर्ति, अवतार, ईश्वर-मानव के व्यक्तत्वि, आदि के सद्धिांत की व्याख्या की जाती है। जब कसिी सद्धिांत से संबंधति सद्धिांत को धर्मशास्त्र में वस्तिार से समझाया जाता है, तो उस सद्धिांत के इतहिास की जगह, सुवधिा के अनुसार, व्याख्या के बल्कुि शुरुआत में, बीच में या अंत में हो सकती है। और परंपरा से प्राप्त सद्धिांतों के प्रमाणों के साथ इस इतहिास को मलिाना सबसे उपयुक्त है, क्योंकि उनका उनसे घनष्ठि संबंध है।

5) अंत में, यह धर्मसद्धिातों और ईसाई जीवन के बीच संबंध को प्रदर्शति कर सकता है। यह सर्ववदिति है कि धर्म के धर्मसद्धिात और ईसाई नैतकिता के नयिम ईसाई धर्म की प्रकृति के कारण एक दूसरे से सबसे घनष्ठि रूप से

---

[58] *बेसलि द ग्रेट,* भजन संहति CXV पर प्रवचन; *ऑगस्टीन,* मसीह के सद्धिांत पर, पुस्तक II। यहाँ अलेक्जेंड्रयिा के क्लेमेंट के शब्द भी ध्यान देने योग्य हैं: "दर्शन नाम से मेरा तात्पर्य कसिी वशिष प्रणाली से नहीं है—स्टोइक, प्लेटोनकि, एपक्यिूरयिन, या अरस्टिोटेलयिन—बल्कि वह जो इन स्कूलों में सत्य है, जो सत्य और ईश्वरीय आचरण सखिाती है; ऐसी सभी चीजों को, समग्र रूप में, मैं दर्शन कहता हूँ" (स्ट्रॉमेट. लबि. 1, चैप. 7)।

[59] इस प्रकार, *पुत्र से पवत्रि आत्मा के नकिलने का* सद्धिांत, जसि अब रोमन चर्च एक धर्मशास्त्र के रूप में प्रस्तुत करती है, शुरू में (7वीं शताब्दी में) केवल कुछ ही लोगों की नजिी राय थी।

[60] यहाँ तक कि संत ग्रेगरी द वंडरवर्कर ने भी ईसाई धर्मशास्त्रयिों से आग्रह कयिा: 'आओ, हम शुष्क, अमूर्त शब्दों से सुसमाचार के संदेश की बारीकी से जाँच न करें, न ही अनंत पूछताछों में लगें और तर्क-वतिर्क के बीज बोएँ, और न ही वश्विास के सौम्य और कोमल संदेश को कठोर और कठोर बना दें।' (*उमास्कस* द्वारा *एक्लॉग. टाइट. 76* में, पुस्तक *ऑन द इनकार्नेशन एंड फेथ* से उद्धृत)।

जुड़े हुए हैं—कि वे परमेश्वर द्वारा प्रकाशन में अविभाज्य रूप से संप्रेषित किए जाते हैं और एक सच्चे ईसाई के जीवन में अविभाज्य बने रहते हैं; और इसलिए, यद्यपि विद्वता में, दोनों का अध्ययन करने की सुविधा के लिए, उन्हें एक-दूसरे से अलग किया जाता है और अलग-अलग माना जाता है, फिर भी विद्वता, जब अवसर आता है , उनके बीच इस जीवंत संबंध को दर्शाने के लिए बाध्य है। यदि धर्मतत्त्वशास्त्र प्रत्येक धर्मसिद्धांत की उचित व्याख्या करने के बाद, उसके नैतिक अनुप्रयोग को प्रदर्शित करते हुए निष्कर्ष निकालता है, तो वह सबसे विवेकपूर्ण ढंग से कार्य करेगा। हालांकि, चूँकि इस तरह की व्याख्या केवल पहले से ही प्रतिपादित सिद्धांतों से नैतिक चिंतन और शिक्षाप्रद नियमों का निष्कर्षण होगी—और यह सीधे तौर पर उनके वास्तविक प्रतिपादन और प्रस्तुति से संबंधित नहीं है, जिसके साथ ही धर्मतत्त्वशास्त्र को स्वयं को संबद्ध करना चाहिए—धर्मतत्त्वशास्त्र में ये सभी नैतिक चिंतन, ईसाई नैतिक शिक्षा की व्याख्या करने वाले एक अलग विषय के अस्तित्व को देखते हुए, इनका विस्तार किसी भी तरह से व्यापक होने की आवश्यकता नहीं है, हालांकि बाद वाले के अस्तित्व से इन्हें किसी भी तरह से रोका भी नहीं जाता है।

सामान्य रूप से, यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि यह अनुशासन, जब भी किसी धर्मशास्त्र की व्याख्या की जाती है, तो हम द्वारा रेखांकित ऑर्थोडॉक्स धर्मशास्त्र की सच्ची पद्धति की पहली दो शर्तों को पूरा करने के लिए बाध्य है—अर्थात्, पहले यह दिखाना कि ऑर्थोडॉक्स चर्च किसी धर्मशास्त्र को कैसे सिखाती है, और फिर पवित्र धर्मग्रंथ और पवित्र परंपरा से इसके आधार उद्धृत करना: अन्यथा यह नाम का हकदार नहीं होगा। हालाँकि, यह अपनी सुविधानुसार शेष तीन शर्तों को पूरा कर सकता है, या यह पूरी तरह से उन्हें पूरा न करने, या सुविधा के अनुसार केवल कुछ को पूरा करने का विकल्प चुन सकता है; और इससे इसे ऑर्थोडॉक्स डॉगमैटिक्स कहलाने का अधिकार नहीं छीनेगा।

§6. ऑर्थोडॉक्स डॉगमैटिक थियोलॉजी का पहला कालखंड

ऑर्थोडॉक्स डॉगमैटिक थियोलॉजी का इतिहास तीन अवधियों में विभक्त है, जो एक-दूसरे से काफी भिन्न हैं: *पहली* अवधि — दूसरी शताब्दी से आठवीं शताब्दी के मध्य तक, प्रेरितों के शिष्यों से लेकर सेंट जॉन ऑफ़ डेमास्कस (770–754) तक; *दूसरा* काल – आठवीं शताब्दी के मध्य से लगभग सत्रहवीं शताब्दी के मध्य तक, संत जॉन ऑफ़ डमास्कस से कीव के मेट्रोपॉलिटन पीटर मोहिला (1631–1647) तक; *तीसरा* काल – सत्रहवीं शताब्दी के मध्य से आज तक।

पहले काल में, हम अभी तक धर्मशास्त्र को एक विज्ञान या एक प्रणाली के रूप में नहीं देखते हैं; लेकिन हम धर्मशास्त्रों की जांच करने की एक वैज्ञानिक पद्धति देखते हैं, और हम धर्मशास्त्रों की एक व्यवस्थित व्याख्या की शुरुआत भी देखते हैं, भले ही यह अपूर्ण और अधूरी *हो,* और धर्मशास्त्र को ईसाई धर्म के अन्य सत्यों से एक कठोर अलगाव के बिना, धर्मशास्त्र के विषय के रूप में देखा जाता हो।

ईसाई धर्मसिद्धांतों की जाँच करने की विद्वत्तापूर्ण पद्धति—जिसे उद्धारकर्ता मसीह और उनके प्रेरितों, और उनके बाद प्रेरित युग के लोगों ने सबसे सरल और सुलभ रूप में सिखाया था—का विकास प्रारंभिक कलीसिया की परिस्थितियों के कारण हुआ। इसके द्वारा हमारा तात्पर्य है—

क) मूर्तिपूजक विद्वानों के रूप में चर्च के शत्रुओं का उदय, जिन्हें केवल यह दिखाना पर्याप्त नहीं था कि ईसाई धर्म क्या सिखाता है, बल्कि यह भी आवश्यक था कि वे इसके पवित्र सिद्धांतों को साबित करें और तर्क-वितर्क के माध्यम से उनका बचाव करें;[61]

ख) मसीह की कलीसिया में विद्वान पगनों के प्रवेश,[62] , जिन्होंने पहले विज्ञान या एक व्यवस्थित ढांचे के नियमों के अनुसार हर चीज़ के बारे में सोचने की आदत डाली थी, उन्होंने स्वाभाविक रूप से मसीही सच्चाइयों की जांच के लिए उसी पद्धति को लागू किया;

ग) विधर्मीयों का उदय, जिन्होंने किसी एक दर्शन (विशेष रूप से नव-प्लेटोवाद) के सिद्धांतों को दिव्य प्रकाशन पर लागू करके, अपनी ही तर्कशक्ति के माध्यम से पवित्र धर्म के अगोचर सत्यों को समझाने का प्रयास किया, और

---

[61] *ऑग. नीदर* द्वारा 'ईसाई धर्म और चर्च का सामान्य इतिहास', हैम्बर्ग 1826, खंड 1, भाग 1, पृष्ठ 163–181: *मूर्तिपूजकों की रचनाओं के माध्यम से ईसाई धर्म का विरोध।*

[62] अर्थात्: जस्टिन द फिलॉसफर, टाटियन, एथेनागोरस, थियोफिलस ऑफ एंटिओक, हर्मास, क्वाड्रैटस, अरिस्टिडीज, कैस्टर, टर्टुलियन और कई अन्य।

इस तरह इसके कई धर्मसद्धिान्तों को वकिृत कर दयिा, और फरि तर्क-वतिर्क की शक्तसि अपनी गलतयिों का बचाव करने वालों का मुकाबला केवल उसी हथयिार से कयिा जा सकता था;[63]

(d) ईसाई वद्यिालयों की स्थापना, जहाँ चर्च के भावी पादरी, न केवल आस्था के सत्यों बल्कि कुछ सहायक वज्ञिानों का भी अध्ययन करते हुए, अनजाने में ही हर चीज़—और परणिामस्वरूप ईसाई सत्यों—के बारे में वैज्ञानकि तरीके से सोचने की आदत डाल लेते थे; ये स्कूल, जनिमें अलेक्ज़ेंड्रयिा का स्कूल वशिेष रूप से प्रसद्धि था, , दूसरी और तीसरी शताब्दयिों में पहले से ही मौजूद थे, और चौथी, पांचवीं और बाद की शताब्दयिों में और भी बढ़ गए;[64]

(घ) अंत में, कई पवत्रि पतिाओं का दर्शनशास्त्र के प्रतपि्रेम: वे कभी-कभी इसे मसीह का मार्ग और दव्यि ज्ञान को समझने का एक पूर्व-तैयारी साधन बताते थे,[65] और अन्य समयों में सुसमाचार की सच्चाइयों के एक कलि और रक्षा के रूप में,[66] प्रसद्धि शक्षिकों ने इस वषिय में आसानी से भाग लयिा और प्रकट कएि गए सद्धिांत की व्याख्या और रक्षा में इसका उपयोग कयिा: उनमें से कुछ ने मुख्य रूप से एक संकर दर्शन का अनुसरण कयिा,[67] दूसरों ने प्लेटो के दर्शन को प्राथमकिता दी,[68] जबकि अन्य ने अरस्तू के दर्शन को पसंद कयिा, जो पाँचवीं शताब्दी के बाद से ईसाई वद्वािनों के बीच लोकप्रयि होने लगा और ईसाई स्कूलों में अपना स्थान बना लयिा।[69] उपरोक्त सभी कारणों से, ईसाई धर्मसद्धिान्तों के अध्ययन के लएि एक वद्वितापूर्ण दृष्टकिोण बहुत जल्दी उभरा: हम इसे पहले से ही जस्टनि द फलिॉसफर (†165), एथेनागोरस (†180), के कार्यों में पाते हैं, एंटीओक के थयिोफलिस (†199), आइरेनयिस (†203) और टर्टुलयिन (†220); और अलेक्ज़ेंड्रयिाई वद्यिालय के प्रसद्धि शक्षिकों और शष्यिों की रचनाओं में तो और भी अधकि: क्लेमेंट ऑफ़ अलेक्ज़ेंड्रयिा (†217), ओरजिन (†254), ग्रेगरी द वंडरवर्कर (†270), डायोनीसयिस ऑफ़ अलेक्ज़ेंड्रयिा (†265) और अन्य। चौथी शताब्दी में, यह पद्धति चर्च के धर्मगुरुओं के बीच, वशिेष रूप से एथनासयिस और बेसलि द ग्रेट, ग्रेगरी द थयिोलोजयिन और ग्रेगरी ऑफ़ नस्सिा के बीच, एक आम बात हो गई; पाँचवीं शताब्दी में, यह वकिास के एक और भी उच्च स्तर पर पहुँच गई—थयिोडोरेट, सरिील ऑफ़ अलेक्ज़ेंड्रयिा और, सबसे बढ़कर, ऑगस्टीन में। इस वधिि का सार इस तथ्य में नहिति था कि चर्च के पूजनीय पादरी, कसिी वशिेष धर्मसद्धिान्त की व्याख्या या रक्षा करते समय, उसके अर्थ को और अधकि सटीक रूप से परभिाषति करने का प्रयास करते थे, और उसे पवत्रि शास्त्र और पवत्रि परंपरा,[70] से स्पष्ट करते थे, और इस उद्देश्य के लएि अक्सर प्रेरति चर्चों के उदाहरण,[71] का, तथा पवत्रि भजनों का, प्राचीन काल से चर्च में प्रचलति प्रार्थनाओं और संस्कारों,[72] या पूर्व के शक्षिकों के लेखों से गवाहयिों की एक

---

[63] नीयांडर का उपरोक्त कार्य, खंड 1, भाग 2, पृ. 397–537: *संप्रदायों का इतहिास।*

[64] वे एफ़ेसस, स्मर्ना, अंताकयिा, अलेक्ज़ेंड्रयिा, केसरयिा, कार्थेज और अन्य स्थानों में पाए गए। *फ्लेउरी* — डस्सि. II इन हस्टि. इक्लेस. §§ 13–15. तुलना करें: उनकी उत्कृष्टता *इनोसेंट द्वारा लखिति* चर्च इतहिास की रूपरेखा, *भाग* 1, पृ. 4–5, चौथे संस्करण पर आधारति।

[65] अतःदर्शन मार्ग तैयार करता है, उस चीज़ के लएि मार्ग प्रशस्त करता है जसि मसीह द्वारा पूर्ण कयिा जाता है / *क्लेमेंट ऑफ़ अलेक्ज़ेंड्रयिा,* *स्ट्रोमाटा*, पुस्तक I, पृ. 282। ओरजिन भी इसे दोहराते हैं: *फलिोकालयिा*, अध्याय XIII, पृ. 41–42।

[66] तर्कशास्त्र उभरती हुई वधिर्मों का शकिार होने से बचने में मदद करता है। *क्लेम. अलेक्ज़.* स्ट्रॉम. पुस्तक I, पृ. 319. ऊपर टप्पिणी 46 भी देखें।

[67] ऊपर टप्पिणी 58 देखें।

[68] ऊपर टप्पिणी 46 भी देखें।

[69] *फ्लोरिई* — हस्टि. इक्लेस., खंड VII, पुस्तक 32, § 6.

[70] इसके प्रमाण 'इंट्रोडक्शन टू ऑर्थोडॉक्स थयिोलॉजी', ए. एम., § 128 में मलि सकते हैं।

[71] *इरनेयस,* *वशि्वासघातयिों के वरिुद्ध*, पुस्तक III, अध्याय 2 और 3; *टर्टुलयिन,* *वशि्वासघातयिों के उपचार पर*, अध्याय 19, 20, 21 और 22; *ओरजिन,* *सद्धिांतों पर* की पुस्तक I की प्रस्तावना*, n. 2, पृ. 47. Ed.Paris , 1572.

[72] इस प्रकार, यहाँ तक कि द्वतिीय शताब्दी के पुरोहति कैउस ने भी, वधिर्मी आर्टमिोन के वरिुद्ध यीशु मसीह की दव्यिता को सद्धि करते हुए, यीशु मसीह को परमेश्वर के सम्मान में प्रारंभकि ईसाइयों द्वारा रचति भजनों का उल्लेख कयिा (देखें: *यूसेबयिस,* *चर्च का इतहिास*, पुस्तक V, अध्याय 28, पृ. 157, एम्स्टर्डम 1795, और apud *Phot.* — Biblioth. cod. 48); संत जस्टनि और टर्टुलयिन ने पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा के नाम पर तीन बार डुबोकर बपतस्मि के प्राचीन रूप के माध्यम से परमेश्वर के भीतर त्रमिूर्ति का प्रदर्शन कयिा *(Just.* Apolog. 1, n. 61; *टर्तुल्लयिन,* *एडवर्सस प्रैक्सयिास*, अध्याय 27, और *कॉन्ट्रा मार्शयिन*, पुस्तक I, अध्याय 28); संत बेसलि द ग्रेट — अति पवत्रि त्रमिूर्ति की स्तुति में प्राचीन संध्या भजन, या *'सूर्य-सदृश' धन्यवाद-गीत के* शब्दों के माध्यम से पवत्रि आत्मा की दव्यिता (डे स्परिटि्यू सैंटो एड एम्फलि., अध्याय 29, संख्या 73); संत जॉन क्रसिोम ने इस वचिार का समर्थन करते हुए कि स्वर्गदूत शांति के स्वर्गदूत हैं, एकटेनयिा के शब्दों की ओर इशारा कयिा, जसिमें डीकन परमेश्वर से *शांति के एक स्वर्गदूत के लएि* प्रार्थना करता है (होमलि. XXXVIII, पृ. 477, खंड V, फ्रांकोफ. 1698); धन्य अगस्टीन ने चर्च की सार्वभौमकि प्रथा और इस तथ्य का हवाला देते हुए मृतकों के लएि प्रार्थनाओं के सद्धिांत के

शृंखला उद्धृत करते थे,[73] और शहीदों के कार्यों से कही गई बातों का सहारा लेते थे;[74] साथ ही, वे धर्मसद्धिान्त पर बौद्धकि चतिन में संलग्न थे, प्रकट की गई सच्चाइयों से नष्किर्ष नकिालते थे, तर्कसंगत उपपत्तं (syllogisms) रचीं, और यहां तक कं कभी-कभी, वशिेष रूप से वधिर्मी (heretics) के साथ ववािदों में, द्वंद्वात्मक सूक्ष्मताओं (dialectical subtleties) में भी गहराई तक उतरीं,[75] ; उन्होंने, जहां उचति समझा, स्वयं मूर्तपिूजक लेखकों के साक्ष्यों[76] का उपयोग कयिा; और, सामान्य रूप से, उन्होंने कसिी एक ईसाई सद्धिांत के पक्ष में सांसारकि ज्ञान द्वारा प्रदान की जा सकने वाली कसिी भी चीज़ को यह मानकर खारजि नहीं कयिा कं वह अपूर्ण और दोषपूर्ण है।[77]

एक वशिष्टि प्रणाली के भीतर धर्मसद्धिान्तों की एक व्यापक व्याख्या की शुरुआत—यद्यपं अभी भी अधूरी और अपूर्ण, और इन सत्यों को धर्मसद्धिान्तशास्त्र के वषिय के रूप में अन्य सभी ईसाई सत्यों से कठोर रूप से पृथक् कएि बनिा—मलि सकती है:

1) ओरजिन *के सद्धिांतों पर* ग्रंथ — *पेरी आर्कॉन*।[78] यह चार पुस्तकों में वभिाजति है, जनिमें *से पहली पुस्तक* ईश्वर पति, पुत्र (लोगोस) और पवत्रि आत्मा से संबंधति है, इसके बाद उच्च आत्माओं, उनकी स्वतंत्रता, उनका पतन, और आत्मा तथा पदार्थ के बीच के अंतर पर चर्चा की गई है; *दूसरा पुस्तक* संसार और मनुष्य की सृष्टं और संसार में पाई जाने वाली चीजों से संबंधति है; यह इस तथ्य पर चर्चा करती है कं पुराने और नए नयिम दोनों का एक ही ईश्वर है, वचन का अवतार, भवष्यिवक्ताओं और प्रेरतिों में पवत्रि आत्मा का कार्य, आत्मा, पुनरुत्थान, और पुरस्कार और दंड; *तीसरे में*— मानव स्वतंत्र इच्छा पर, शैतान और अन्य शत्रु शक्तयिों के खलिाफ मनुष्य के संघर्ष की प्रकृतं पर, यह दर्शाते हुए कं यह सब दुनयिा के नैतकि उद्देश्य और मोक्ष से कैसे संबंधति है; *चौथे में*— सभी चीजों के अंतमि लक्ष्य पर, पवत्रि धर्मग्रंथ की दव्यि प्रकृतं पर और इसे कैसे पढ़ना और व्याख्या करना है। डॉगमैटकि थयिोलॉजी पर यह कृतं, जसिमें नबिंधों के बीच सख्त सुसंगतं और पूर्णता दोनों का अभाव है (उदाहरण के लएि, इसमें अनुग्रह और संस्कारों पर कोई शकि्षा नहीं है), और जसिमें लगभग पूरा अंतमि भाग डॉगमैटकि सच्चाइयों के बजाय व्याख्याशास्त्र के नयिमों को प्रस्तुत करता है, हमारे लएि केवल इसलएि उल्लेखनीय है कं यह अपनी तरह की एक अग्रणी कृतं है, अपने समय की पहली। हालाँकं, चूँकं वद्विान लेखक ने इसमें आस्था के मामलों पर अपने स्वयं के दार्शनकि वचिारों को वास्तवकि ईसाई सद्धिांतों की तुलना में अधकि प्रस्तुत कयिा, और कुछ सद्धिांतों की अपनी व्याख्या में ऑर्थोडॉक्सी की शुद्धता से भी भटक गए,[79] इसलएि, सख्ती से कहें तो, इस कृतं को ऑर्थोडॉक्स धर्मशास्त्रीय सद्धिांत के इतहिास में शामलि नहीं कयिा जाना चाहएि।

महत्व को दर्शाया कं 'वेदी के सामने पुजारी द्वारा अर्पति प्रार्थनाओं में, मृतकों के लएि मध्यस्थता एक वशिेष, अनवािर्य स्थान रखती है' (Tractat. de cur. pro mort. ger., अध्याय IV)।

[73] रूसी अनुवाद में पवत्रि पतिाओं के कार्य, *खंड* IX: संत बेसलि द ग्रेट — *पवत्रि आत्मा पर*, अध्याय 29, और 1846 के लएि ईसाई पठन, भाग I: धन्य थयिोडोरेट — *परमेश्वर के वचन के अपरविर्तनीय अवतार पर*, पृ. 69–75।

[74] उदाहरण के लएि, संत बेसलि महान ने *पवत्रि आत्मा* पर उसी अध्याय 29 में अपने तर्क का समर्थन करने के लएि शहीद एथेनोजेन्स के भजन की ओर इशारा कयिा—जो उन्होंने अपने शष्यिों को फांसी के तख्ते की ओर ले जाया जा रहे समय सौंपा था।

[75] यह सबसे स्पष्ट रूप से एरयिनों के वरिुद्ध संत अथेनासयिस महान के चार शब्दों में और पेलगयिनों के वरिुद्ध धन्य ऑगस्टीन के लेखन में देखा जा सकता है।

[76] पैगनों के खलिाफ रचनाओं में, उदाहरण के लएि, *पलितुस के* प्रसद्धि *कार्यों (जस्टनि*, एपोलॉजी, पुस्तक I, अध्याय 35; *टर्टुलयिन*, एपोलॉजी अगेंस्ट द जेन्टाइल, अध्याय 5 और 21; *क्रसिोस्टोम*, होमीली XXVI, ऑन 2 कॉरथियिंस), सम्राट ट्राजन को प्लनिी द यंगर के पत्र *(Tertull.* Apolog. adv. gentes, chap. 2), और उन्होंने मूर्तपिूजक दार्शनकिों, कवयिों, इतहिासकारों और अन्य लेखकों के उद्धरण भी दएि। *V. Lu*טר — Histor. theologico-crit. de vita, scriptis atque doctrina S. Patrum... part II, p. 6, ed. Aug. Windelic. 1784.

[77] यहाँ वर्णति, वश्विास के सद्धिांतों की व्याख्या करने में प्राचीन पवत्रि पतिाओं द्वारा अपनाई गई पद्धतं के संबंध में इस वचिार की सबसे वस्तिृत पुष्टं सेलयिस के *Historie génér. des auteurs sacrés...* में पाई जा सकती है, जहाँ वह वभिन्नि शकि्षकों, वशिेष रूप से अलेक्जेंड्रयिा के एथनासयिस (खंड V में), बेसलि द ग्रेट (खंड VI में), के कार्यों का वश्लिेषण करते हैं, ग्रेगरी द थयिोलोजयिन (खंड VII में) और ऑगस्टीन (खंड XI और XII में)।

[78] दुर्भाग्य से, यह प्रसद्धि कृतं हमें न तो मूल रूप में और न ही धन्य जेरोम के अनुवाद में प्राप्त हुई है; यह केवल रूफनिस के अनुवाद में संरक्षति है, जो अत्यधकि त्रुटपिूर्ण और मनमाना है, जसिमें कटौती और परविर्तन शामलि हैं, जैसा कं रूफनिस ने स्वयं (प्रोलेगोम. डी प्रसिपि.) में स्वीकार कयिा था। इसलएि इस कृतं पर एक पूरी तरह से सटीक और सठकि नर्णिय लेना अत्यंत कठनि है।

[79] अर्थात्: — क) उन्होंने संसार को ईश्वर की सर्वशक्तमित्ता का एक *आवश्यक* परणिाम माना, और इसलएि वर्तमान संसार से पहले अनगनित संसारों की एक शृंखला, और वर्तमान संसार के बाद अनंत काल तक अस्तत्वि में रहने वाली अन्य संसारों की एक समान शृंखला का प्रतपिादन कयिा; ख) उन्होंने मानवीय आत्माओं को पतति आत्माएं माना जो संवेदी दुनयिा में भेजी जाती हैं और शुद्धकिरण के उद्देश्य से शरीरों के साथ

2) यरूशलेम के संत सरिलि के *धर्मोपदेशों* में।[80] इसमें दो प्रकार हैं: *धर्मोपदेश,* जनिकी संख्या अठारह है, जो शकि्षा या बपतस्मिा के लिए तैयारी कर रहे लोगों को संबोधति हैं; और *कैटेकुमेनल प्रवचन,* जनिकी संख्या पाँच है, जो नव-शकि्षति लोगों को संबोधति हैं। कैटेकुमेन (baptism के उम्मीदवारों) के लिए उपदेशों में, पहले अपने श्रोताओं को, उनकी परस्थितियिों के अनुसार, पाप, पश्चाताप और बपतस्मिा की समझ प्रदान करने, और बाद में ईसाई धर्म के मौलकि सद्धिांतों और उसके सार की समझ प्रदान करने के बाद, परम पावन वस्तिार से, एक-एक करके, उस समय यरूशलेम की कलीसयिा में प्रचलति धर्म-वश्विास के सभी अनुच्छेदों की व्याख्या करते हैं। 'संस्कारों पर धर्मोपदेश' में, वे संस्कारों—बपतस्मिा, क्रस्मिाशन और यूखरस्ति—पर चर्चा करते हैं, साथ ही नव-बपतस्मितिों के कर्तव्यों को भी नर्धिारति करते हैं। ये प्रवचन ओरजिन के *'प्ररसिपिल्स' पर* प्रबंध से एक अलग दृष्टकिोण से हमारे लिए कीमती हैं—वे एक व्यवस्थति ढांचे के भीतर धर्मशास्त्रों की एक सच्ची रूढ़विादी व्याख्या के पहले जीवति उदाहरण के रूप में कीमती हैं: यहाँ पवत्रि महा-पस्त्री, चर्च की ओर से, उसके धर्म-सूत्र के आधार पर, और उसके मार्गदर्शन में, वश्विास के सत्यों की व्याख्या करते हैं, और इस प्रकार हमें एक उपदेशक के रूप में, न कि एक व्यवस्थति धर्मशास्त्री के रूप में, संक्षेप में सबसे प्राचीन चर्च संबंधी सद्धिांत की संपूर्ण संरचना का संदेश देते हैं।

3) धन्य ऑगस्टीन की दो रचनाओं में, जनिमें से एक को *'वश्विास, आशा और प्रेम पर हैंडबुक'* (Enchiridion ad Laurentium de fide, spe et charitate) *के* नाम से जाना जाता है, जो कसिी लॉरेंटयिस के लिए लखिी गई थी;[81] दूसरी रचना का शीर्षक *'ईश्वर का नगर'* (de civitate Dei) है। पहला आधुनकि धर्मशकि्षा (कैटेकज्मि) के समान है; यह क्रीड (वश्विास-सूत्र) के अनुसार वश्विास के अनुच्छेदों को संक्षेप में प्रस्तुत करके शुरू होता है, फरि आशा के बारे में और भी संक्षेप में बताता है, और अंत में प्रेम के बारे में — यह केवल इसलिए उल्लेखनीय है कि इसे पश्चमिी चर्च के धर्मसद्धिातों की एक व्यापक और काफी व्यवस्थति व्याख्या का पहला प्रयास माना जा सकता है। दूसरा ग्रंथ कहीं अधकि महत्वपूर्ण है: यह ईश्वर के राज्य या मूर्तपिूजा के खलिाफ संघर्ष में ईसाई चर्च की एक गहरी अवधारणा पर आधारति है, और इस केंद्रीय वषिय के संबंध में, जो पूरे ग्रंथ में व्याप्त है, ईश्वर, सृष्टि, देवदूत, मनुष्य और उसका पतन, चर्च—जो आरंभ से अस्तत्वि में है और दुनयिा के अंत तक रहेगी—पुनरुत्थान, अंतमि न्याय, और शाश्वत पुरस्कार और दंड, इन बल्कुिल उन्हीं वषियों पर मूर्तवािदयिों की झूठी शकि्षाओं के वपिरीत। हालांकि, यह स्वीकार कयिा जाना चाहिए कि धन्य ऑगस्टीन का यह व्यापक (22 पुस्तकों का) और अनुकरणीय कार्य चरत्रि में इतना धर्मशास्त्रीय नहीं बल्कि ऐतहिासकि है, और इसमें इतहिास के एक सच्चे दर्शन की नींव नहिति है।

४) धन्य थयिोडोरेट (†४३०) द्वारा *'ईश्वरीय सद्धिांतों की संक्षप्ति व्याख्या'* में, जो वधिर्मों के वरिुद्ध उनके कार्य की पाँचवीं पुस्तक है और २९ अध्यायों में वभिाजति है। यह ग्रंथ अब तक गनिाए गए सभी ग्रंथों से इस प्रकार भन्नि है कि, पहले 23 अध्यायों में, यह वशिेष रूप से धर्म की मान्यताओं से संबंधति है, जो ईसाई धर्म के अन्य सत्यों से अलग और बनिा कसिी अन्य वषियांतर के है; इसे अधकि सुसंगतता के साथ प्रस्तुत कयिा गया है, स्पष्टता और सुसंगति, यद्यपि यह पछिले प्रबंधों से छोटा है और, उनकी तरह, इसमें आस्था के सभी सत्य शामलि नहीं हैं।[82]

इसी तरह के ग्रंथों में शामलि कएि जा सकते हैं:

a) संत ग्रेगरी ऑफ नस्सिा द्वारा *द ग्रेट कैटेकेटकिल डस्किोर्स* (Λόγος κατηχητικός ὁ μέγας) (†370), जो चालीस अध्यायों में वभिाजति है, जसिमें मुख्य रूप से सुदृढ़ तर्क की सहायता से, वश्विास के प्रमुख सद्धिांतों—पवत्रि त्रमिूर्ति, अवतार और उसके वभिन्नि पहलुओं, बपतस्मिा, यूखरस्ति, मनुष्य की अमरता और शाश्वत अग्नि—की जांच पैगनों और यहूदयिों के वरिोध में काफी वस्तिार से की गई है;

जुड़ जाती हैं; एक बार शुद्ध हो जाने पर, वे फरि से शुद्ध आत्माएं बन जाती हैं, जैसा कि वे पतन से पहले थीं, और अपने सही स्थान पर लौट आती हैं; ग) परणिामस्वरूप, उन्होंने चर्च के आदि पाप के सद्धिांत का खंडन कयिा, जो लोगों में उनके प्रथम माता-पति से संचारति होता है; घ) उन्होंने यातनाओं की अनंतता को अस्वीकार कर दयिा; और — ङ) यद्यपि उन्होंने प्रत्यक्ष रूप से शरीर के पुनरुत्थान को अस्वीकार नहीं कयिा, फरि भी उन्होंने यह माना कि शरीर तब कसिी प्रकार के सूक्ष्म, आध्यात्मकि सार में बदल जाएगा। फ़ोटीयस को ओरजिन की इस कृति में परम पवत्रि त्रमिूर्ति के व्यक्तयिों स्वयं से संबंधति अन्य त्रुटयिाँ मलिीं *(फ़ोटीई* बब्लिओथ. कोड. VIII)।

[80] वे रूसी में दो अनुवादों में भी जाने जाते हैं: एक मॉस्को के आर्चबशिप एम्ब्रोज़ द्वारा और दूसरा यारोस्लाव थयिोलॉजकिल सेमनिरी में तैयार कयिा गया।

[81] इसका रूसी में *पी. टोडोरस्की द्वारा* अनुवाद कयिा गया और 'धन्य ऑगस्टीन की तीन पुस्तकें' शीर्षक के तहत एक संग्रह में प्रकाशति कयिा गया, सेंट पीटर्सबर्ग, 1795।

[82] *क्रॉन. क्वार्टा* 1844, भाग IV, पृ. 173–229 और 311–389 में प्रकाशति।

ख) जेनाडियस द्वारा *चर्च के धर्मशास्त्रों पर* एक ग्रंथ (de dogmatibus ecclesiasticis), जो पहले एक पुरोहित और बाद में मासलिया के बिशप (†495) थे; यह चर्च के सिद्धांतों की एक सूची से अधिक कुछ नहीं है, जिसे लगभग किसी विशेष क्रम के बिना और बहुत कम व्याख्या के साथ प्रस्तुत किया गया है, जिसका उद्देश्य विभिन्न विधर्मों का खंडन करना था; फिर भी यह सूची काफी विस्तृत और व्यापक है (इसे 88 संक्षिप्त अध्यायों में प्रस्तुत किया गया है) और, इस संबंध में, यह सभी पिछली कोशिशों से बेहतर है;[83]

ग) अंत में, *ऑर्थोडॉक्स विश्वास का एक संक्षिप्त विवरण* (ἐκθεσις σύντομος τής ορθοδόξου πίστεως) सिनाई के अनास्तासियस, एंटिओक के पैट्रिआर्क (†561) द्वारा, एक शिक्षक और एक शिष्य के बीच प्रश्नों और उत्तरों (प्रत्येक के बाईस) के रूप में प्रस्तुत किया गया — एक यूनानी कैटेकिज़्म का सबसे पहला उदाहरण, यद्यपि सबसे संक्षिप्त।[84]

हालांकि, यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि इस पूरे विचारधीन काल में एक भी ऐसा ग्रंथ सामने नहीं आया जिसमें धर्म की मान्यताओं को वास्तव में वैज्ञानिक तरीके से प्रस्तुत किया गया हो, अर्थात्, यथासंभव पूर्णता, स्पष्टता और गहनता के साथ, और एक कठोर प्रणाली के भीतर, यह काल फिर भी ऑर्थोडॉक्स डॉगमैटिक्स के इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण है — उस समय एक विज्ञान के रूप में इसके स्वरूप के लिए बहुत कम किया गया था, लेकिन इसकी सामग्री, अर्थात्, के संबंध में, यह कहा जा सकता है कि सब कुछ किया गया था। तभी इसकी नींव की ही जांच की गई, उसे स्थापित किया गया और हर तरफ से सुरक्षित रखा गया; तभी सभी विशेष धर्मसिद्धान्तों की हर बारीकी से, यहां तक कि सबसे छोटी बारीकी से भी, जांच की गई; अनेक और अक्सर सबसे व्यापक धर्मसिद्धान्त संबंधी ग्रंथ और प्रवचन लिखे गए, ताकि अब केवल इन सामग्रियों का उपयोग करके विज्ञान की एक ठोस इमारत खड़ी करनी बाकी रह गई थी।[85] यह सार्वभौमिक परिषदों और पवित्र पिताओं की डॉगमैटिक्स का युग था — एक अत्यंत समृद्ध और अनुकरणीय गुणवत्ता का काल।

§7. ऑर्थोडॉक्स डॉगमैटिक थियोलॉजी का दूसरा कालखंड

दूसरे कालखंड के दौरान, जिसमें तथाकथित मध्य युग का पूरा समय शामिल है, ऑर्थोडॉक्स डॉगमैटिक थियोलॉजी की पहली प्रणाली बिल्कुल शुरुआत से ही उभर आई थी; यद्यपि यह अभी भी अपूर्ण थी, इसमें एक प्रणाली की सभी विशेषताएँ पहले से ही मौजूद थीं: परिणामस्वरूप, यह लगभग पूरे कालखंड में प्रमुख बनी रही; बहुत कम अन्य समान प्रयास किए गए, और वे सभी इससे बहुत पीछे रह गए; कुछ विशिष्ट डॉगमैटिक अध्ययन और ग्रंथ भी लिखे गए, कम से कम पहले लिखी गई चीज़ों की तुलना में — और, सबसे विशेष रूप से, इस समय सामने आए सभी कार्य, अधिकांशत; अपने पहले काल के दौरान ऑर्थोडॉक्स डॉगमैटिक्स के लिए तैयार की गई सामग्री पर ही संतुष्ट थे।

यह सेंट जॉन ऑफ़ डेमास्कस का ही भाग्य था कि उन्होंने ऑर्थोडॉक्स डॉगमैटिक थियोलॉजी की पहली प्रणाली लिखी; इसलिए उन्हें सही मायने में इस विषय का जनक कहा जा सकता है। सच्ची भक्ति के प्रति उत्साह से भरपूर, जिसमें उनका पालन-पोषण हुआ था, और ईश्वर के वचन तथा पवित्र पिताओं की कृतियों का गहराई से अध्ययन करने के बाद, जिन्हें वे अथक रूप से पढ़ते थे, और दर्शनशास्त्र, विशेष रूप से (अरिस्टोटेलियन) तर्कशास्त्र, के साथ-साथ अन्य विज्ञानों में भी अनुभवी और कुशल होने के नाते, उन्होंने *'ऑर्थोडॉक्स विश्वास की सटीक व्याख्या* ([86]) तैयार करने के

---

[83] इस कृति का सर्वश्रेष्ठ संस्करण, जिसमें विभिन्न रूप और टीकाएँ शामिल हैं, पेरिस, 1847 में अबॉट ला मिने द्वारा संपादित *Patrolog. curs. compl.* के खंड 58 में निहित है।

[84] इसे कई अवसरों पर प्रकाशित किया गया है, लेकिन केवल लैटिन अनुवाद में, मूल में नहीं (देखें *कैसमिरी ओउदिनी,* *Commentar. de script. eccles. antiqu.*, खंड 1, पृष्ठ 1663–1664, लेइपज़िग, 1722)। इसका उपयोग हमारे स्लावोनिक अनुवाद में भी किया गया था और इसे 1649 में मास्को में पैट्रिआर्क जोसेफ के अधीन प्रकाशित **विश्वास के लेखों पर एक संक्षिप्त व्याख्यान का संग्रह** में शामिल किया गया था (देखें *बर्गी* — *दे स्टेटु एक्लेस. एट रेलीग. Moscoviticae, पृ. 25, स्टॉकहोम 1704, और *साखारोव की* *रिव्यू ऑफ स्लावोनिक-रशियन bibliography*, खंड 1, पुस्तक 2, संख्या 510)। आजकल इसे आमतौर पर यहाँ *परंपरा के अनुसार भजनसंग्रह* के साथ ही मुद्रित किया जाता है।

[85] हम इनकी विशाल संख्या के कारण इन सभी पादरियों की रचनाओं को सूचीबद्ध नहीं करेंगे। इनका एक सूचीपत्र वाल्चियस के धर्मशास्त्र पुस्तकालय (खंड 1, अध्याय 2 और अध्याय 5, खंड 2) में पाया जा सकता है। एक सूचीपत्र और वास्तविक सामग्री लम्पर, डुपिन और सेलियर की प्रसिद्ध पादरियों की रचनाओं में पाई जाती है।

[86] सटीक ऑर्थोडॉक्स विश्वास का *एक्डोसिस* या *एक्थेसिस*। हमारे पास इस कृति के चार अनुवाद हैं: एक बुल्गारिया के एक्ज़ार्क, जॉन द्वारा, जो 9वीं शताब्दी या 10वीं की शुरुआत में ही किया गया था; एक 17वीं शताब्दी में स्लावेनेट्सा के एपिफानियस द्वारा; एक 18वीं शताब्दी के

लिए उपरोक्त सभी साधनों का उपयोग करने का संकल्प लिया — और एक ऐसा ग्रंथ प्रकाशित किया जो ऑर्थोडॉक्स डॉगमैटिक्स के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ है। यह कृति, जिसमें कई अध्याय हैं और जिसे बाद में (किसी अज्ञात व्यक्ति ने) अधिक सुविधा के लिए चार पुस्तकों में विभाजित किया—[87] , प्रबंधों के आयोजन के लिए सबसे स्वाभाविक संरचना प्रस्तुत करती है। सबसे पहले (पहली पुस्तक में) ईश्वर के बारे में सिद्धांत प्रस्तुत किया गया है: उनकी अगम्यता, उनका अस्तित्व, सार में उनकी एकता, व्यक्तियों में उनकी त्रिमूर्ति, और उनके गुण; फिर (दूसरी पुस्तक में) — सिद्धांत: (क) ईश्वर की सृष्टि: अदृश्य जगत, यानि शुभ और दुष्ट स्वर्गदूत; दृश्य जगत अपने भागों और तत्वों के साथ; सूक्ष्म जगत — मानव अपनी विविध शक्तियों के साथ, विशेष रूप से उसकी स्वतंत्रता और पतन; और — (ख) ईश्वर की दिव्य व्यवस्था, पूर्वज्ञान और पूर्वनिर्धारण।

इसके अतिरिक्त (तीसरे पुस्तक में) — मानव उद्धार के लिए ईश्वर की दैवी व्यवस्था का सिद्धांत, अर्थात्: क) ईश्वर के पुत्र का अवतार; ख) अवतारित एक में दो स्वभाव, और हाइपोस्टेसिस की एकता; ग) मसीह में दो स्वभावों के हाइपोस्टैटिक संघ के परिणाम—स्वभावों और गुणों का पारस्परिक संचार, यह तथ्य कि परम पवित्र कुँवारी ईश्वर की माता हैं, कि मसीह में दो इच्छाएँ और दो क्रियाएँ हैं, और यह कि उनमें मांस का स्वभाव और इच्छा दिव्यता प्राप्त कर चुके हैं; d) उद्धारकर्ता मसीह की अपमान की स्थिति, हमारे उद्धार के लिए क्रूस पर उनकी मृत्यु, और नरक में उनका अवतरण।

अंत में (चौथे पुस्तक में), निम्नलिखित शिक्षाएँ प्रस्तुत की गई हैं: क) यीशु मसीह के महिमामय स्वरूप की अवस्था पर—उनका पुनरुत्थान, स्वर्ग में आरोहण और परमपिता के दाहिने हाथ पर विराजमान होना—जबकि कुछ संबंधित मुद्दे हल किए जाते हैं; ख) उद्धार की प्राप्ति के संबंध में सिद्धांत: विश्वास पर, संस्कारों—बपतिस्मा और यूखरिस्त पर, संतों, उनके अवशेषों और प्रतिमाओं की आराधना पर, पवित्र शास्त्र, कुँवारीपन और अन्य संबंधित विषयों पर; ग) उद्धार की व्यवस्था के समापन से संबंधित सिद्धांत: विरोधी मसीह का आगमन, मृतकों का पुनरुत्थान, और अनंत दंड और पुरस्कार।

इस बाहरी विशेषता—निबंधों की स्वाभाविक और तार्किक व्यवस्था—के अलावा, यहाँ पर विचार किया जा रहा संत जॉन ऑफ़ डेमास्कस का कार्य एक वैज्ञानिक अनुशासन या प्रणाली के आंतरिक गुणों द्वारा भी विशिष्ट है: वह सटीकता, स्पष्टता और पूर्णता जिसके साथ समग्र रूप से धर्मसिद्धान्तों को पहले किसी एक ही पुस्तक में कभी प्रस्तुत नहीं किया गया है। धर्मसिद्धांतों की व्यक्तिगत रूप से व्याख्या करने के लिए इस कृति में अपनाई गई विधि ऑर्थोडॉक्स धर्मसिद्धांत विज्ञान के लिए भी सबसे उपयुक्त है: पवित्र पिता, विश्वास के सत्यों की व्याख्या और प्रमाण करने में, न केवल पवित्र धर्मग्रंथों के अंशों का, बल्कि कलीसिया के प्राचीन और प्रसिद्ध शिक्षकों की गवाहियों का भी सहारा लेते हैं, और लगभग कुछ भी ऐसा नहीं कहते जो या तो सार्वभौमिक परिषदों या उनसे पहले के पितृपुरुषों द्वारा परिभाषित और पवित्र न किया गया हो; और साथ ही वह दिव्य प्रकाशन के प्रकाश से प्रबुद्ध, सुदृढ़ तर्क के विचारों की सहायता लेते हैं। चर्च के पितरों और शिक्षकों में, वे सबसे अधिक बार संत ग्रेगरी द थियोलोजियन के विचारों का हवाला देते हैं, उसके बाद संत डायोनिसियस द एरोपागिट, संत बेसिल द ग्रेट, संत ग्रेगरी ऑफ निस्सा, नेमेसियस, जो सीरिया में नेमेसियन के बिशप थे, संत अथेनासियस द ग्रेट और जॉन क्रिसोस्टोम, और आगे चलकर—संत सिरील ऑफ अलेक्जेंड्रिया, लियो द ग्रेट, मैक्सिमिस द कन्फेशर, एपिफेनियस और अन्य। इन सबके परिणामस्वरूप, संत जॉन ऑफ़ डेमास्कस की धर्मशास्त्र को, एक प्रकार से, विश्वास के धर्मसिद्धान्तों पर चर्च के पिता के विचारों का खज़ाना कहा जा सकता है; इसके अलावा, ये ऐसे विचार हैं जिनके माध्यम से उन्होंने दूरदर्शी अंतर्दृष्टि के साथ, विश्वास के शिक्षकों की आत्मा

उत्तरार्ध में मॉस्को के आर्चबिशप, एम्ब्रोज़ द्वारा; और अंत में, मॉस्को थियोलॉजिकल में तैयार किया गया एक अनुवाद पहले तीन स्लावोनिक में हैं, जबकि आखिरी रूसी में है।

[87] सेंट जॉन ऑफ़ डेमास्कस की *दिव्यताशास्त्र* की विभिन्न सूचियों और संस्करणों में अध्यायों की संख्या भिन्न-भिन्न है: कुछ में 96, कुछ में 100, कुछ में 102, कुछ में 103, और कुछ में 149 आदि (देखें *पेट्री लैम्बेकियस* — *Commentar. de Aug. Bibliotheca Caesar. वडिोबोनेंसी, पुस्तक IV, पृष्ठ 269, 468, 469 और पुस्तक V, पृष्ठ 13, सं. *कोलारिई*); बुल्गारिया के एक्सार्क, जॉन द्वारा स्लावोनिक अनुवाद में 112 हैं; एम्ब्रोज़ के संस्करण में — 111 *(कालायदोविच,* — जॉन, बुल्गारियाई एक्सार्क पर, पृ. 20 और 56, मॉस्को 1824)। यह विसंगति इस तथ्य से उत्पन्न हुई कि कुछ अध्यायों को एक ही संख्या के अंतर्गत समूहित किया गया था या अलग-अलग खंडों के रूप में प्रस्तुत किया गया था। इस *धर्मशास्त्र* का चार पुस्तकों में विभाजन, जो किसी भी ग्रीक पांडुलिपि में नहीं मिलता है, बल्कि केवल लैटिन पांडुलिपियों में मिलता है, की संभावना है कि मध्य युग के दौरान पश्चिम में इसकी रचना की गई थी, जहाँ *धर्मशास्त्र* का ऐसा विभाजन प्रचलन में था (*सेंट जॉन की* पुस्तक के प्रस्तावना को देखें *डैंटास्केनी* डी फाइड ऑर्थोड., एम. लेकेना, उनके द्वारा प्रकाशित इस पिता के कार्यों के खंड 1 में, पृ. 119–120.)

तक प्रवेश कयिा, और कई स्थानों पर उन्हें ईश्वर के वचन से सुदृढ़ और स्पष्ट कयिा, और अपने स्वयं के चतिन के साथ सामंजस्यपूर्ण रूप से संयुक्त कयिा। हालाँकि, दूसरी ओर यह ध्यान दिए बनिा नहीं रह सकता कि: क) इस पहली ऑर्थोडॉक्स डॉगमैटकि्स प्रणाली में, वशि्वास के सभी वषिय समान पूर्णता के साथ प्रस्तुत नहीं कए गए हैं, और कुछ का तो उल्लेख भी नहीं कयिा गया है,[88] बेशक, ऐसा इसलिए है क्योंकि पवित्र पतिा ने केवल उन धर्मसद्धिान्तों पर वशिेष ध्यान दयिा जो उनके समय में वधिर्मीयों द्वारा वकि्त कए जा रहे थे; ख) कि गैर-डॉगमैटकि प्रकृति के कुछ वषियों को इस कृति में शामलि कयिा गया है,[89] यद्यपि वे डॉगमा से संबंधति हैं; ग) अंत में, कि वशि्वास के वास्तवकि डॉगमा, जो डॉगमैटकि धर्मशास्त्र का वास्तवकि वषिय-वस्तु हैं, को यहाँ जानबूझकर वशिषि्ट धर्मशास्त्रीय प्रश्नों और मतों से अलग नहीं कयिा गया है।[90] हालाँकि, यह ध्यान में रखना चाहए कि पवित्र पतिा ने अपनी *'ऑर्थोडॉक्स वशि्वास की व्याख्या'* कक्षा के लिए नहीं, बल्कि सभी ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों के लिए लखिी थी, और इसलिए उन्होंने इसकी शर्तों और आवश्यकताओं का सख्ती से पालन करने का इरादा नहीं कयिा था।

सेंट जॉन ऑफ़ डेमास्कस के *धर्मशास्त्रीय नबिंध* का प्रकाशन न केवल पूर्व में बल्कि संपूर्ण मसीही चर्च में एक ऐतहिासकि घटना थी: क्योंकि उस समय, मसीही पूर्व और पश्चमि अभी भी वशि्वास में एकजुट थे; और पश्चमि के लिए, ठीक वैसे ही जैसे पूर्व के लिए, **ऑर्थोडॉक्स वशि्वास की सटीक व्याख्या*** ऑर्थोडॉक्स धर्मशास्त्र की पहली प्रणाली थी। दुर्भाग्य से, यह दोनों के लिए आम आखरिी प्रणाली भी थी: इसके तुरंत बाद, 9वीं शताब्दी के अंत से और वशिेष रूप से 11वीं शताब्दी के मध्य से, पश्चमिी चर्च, नवाचार की भावना और कुछ वशिेष मतों को धर्मसद्धिान्त का दर्जा देने के जुनून में बहकर, प्राचीन सार्वभौमकि चर्च को बदल गया और खुद को ऑर्थोडॉक्स पूर्व से अलग कर लयिा। तब से, रोमन चर्च और ऑर्थोडॉक्स चर्च में धर्मशास्त्र का भाग्य अलग हो गया है। पश्चमि में, स्कॉलास्टसिज्मि का उदय हुआ और उसने जड़ें जमा लीं, *और* वह चर्च का ही एक योग्य साथी बन गया, जसिने अपने द्वारा नव-अपनाए गए सद्धिांतों को चरम तक वकिसति कयिा। ईश्वर के वचन और पवित्र पतिाओं के प्रति उचति श्रद्धा को भूलकर, उन्होंने धर्म की सद्धिांतों को पवित्र धर्मग्रंथ और परंपरा के अंशों से कम, बल्कि तर्कशास्त्र की सूक्ष्मता से साबति करना शुरू कर दयिा, और अक्सर अरस्तू, ससिेरो, वे न केवल क्रसिोस्टोम और बेसलि द ग्रेट, बल्कि भवषि्यवक्ताओं और प्रेरतिों की गवाहयिों पर भी वर्जलि या ओवडि और अन्य मूर्तपिूजक लेखकों को प्राथमकिता देने लगे। आस्था के सच्चे सद्धिांतों के प्रति सम्मान खोने के बाद, जब कुछ नजिी रायों को सद्धिांत का दर्जा दे दयिा गया, वे मुख्य रूप से इस तरह की धार्मकि अनुमानों में लग गए, आस्था के धर्मशास्त्रों से नषि्कर्ष नकिालने का प्रयास करते हुए, इन नषि्कर्षों को सबसे वशिषि्ट प्रश्नों में तोड़ते हुए, अनगनित प्रश्न गढ़ते हुए—कभी-कभी सबसे खोखले और तुच्छ—तर्कशास्त्र के सभी नयिमों के अनुसार बहस करते हुए, और इस सब को सर्वोपरि महत्व देते हुए। अनेक स्कूल, अकादमयिाँ और वशि्ववद्यिालय स्थापति हुए, जनिमें पाँच या छह शताब्दयिों के दौरान, स्कूलास्टकि धर्मशास्त्र अपनी सभी वचित्रिताओं और वकि्तयिों के साथ वकिसति हुआ और फल-फूल उठा। इन वद्यिालयों में, इसी शैली में अनेक धर्मशास्त्रीय प्रणालयिाँ लखिी गईं, जबकि सेंट जॉन ऑफ़ डेमास्कस की धर्मशास्त्र की सबसे प्राचीन प्रणाली लगभग भुला दी गई थी, भले ही प्रारंभकि स्कॉलैस्टकि्स ने इसका उपयोग कयिा था।[91] ऐसे धर्मशास्त्रीय संप्रदाय उभरे, जो अपने *सेराफकि* या *दविय* शकि्षकों के वचिारों के कारण सदयिों तक एक-दूसरे के साथ जोरदार बहस करते रहे, और पश्चमिी धर्मशास्त्रीय साहतिय को अनगनित ग्रंथों से भर दयिा।[92] हालांकि, पूर्व में स्थति काफी अलग थी। प्राचीन ऑर्थोडॉक्सी के प्रति पूर्णतः वफादार रहते हुए, यहाँ भी पहले की तरह उन्होंने लखिति और अलखिति दोनों रूपों में परमेश्वर के वचन के प्रति परम सम्मान बनाए रखा; और पहले की तरह उन्होंने वशि्वास की सच्चाइयों का अध्ययन जारी रखा, हर मामले में पवित्र सार्वभौमकि और स्थानीय परषिदों तथा पवित्र पतिरों का अनुसरण करते हुए। पूर्व के

---

[88] उदाहरण के लिए, अनुग्रह, औचतिय, या पवित्र संस्कारों पर कोई शकि्षा नहीं है, दो को छोड़कर: बपतस्मिा और यूखरस्ति।

[89] जैसे कि प्रबंध: प्रकाश, अग्नि और स्वर्गीय पडिों—सूर्य, चंद्रमा और तारों—पर, वायु और हवाओं पर, जल पर, पृथ्वी पर, दुख, भय, क्रोध, चतिन की क्षमता, स्मृति और इसी तरह की चीजों पर।

[90] देखें पुस्तक II, अध्याय 6 से 22, और पुस्तक IV, अध्याय 4, 5, 7, आदि।

[91] जैसे: पीटर लोम्बार्ड, थॉमस एक्वनिास और अन्य। *सेंट जॉन ऑफ़ डेमास्कस* के ऑर्थोडॉक्स वशि्वास पर ग्रंथ के प्रस्तावना को देखें, जो इस फादर के कार्यों के लेकेन संस्करण में है।

[92] स्कॉलैस्टसिज्मि पर, मोशेम या अलेक्जेंडर नैटालसि द्वारा लखिति चर्च संबंधी इतहिास देखें—जो 11वीं, 12वीं, 13वीं, 14वीं और 15वीं शताब्दयिों को कवर करते हैं—और, अधकि वस्तिार के लिए, *बुलाए का* *Histor. Universitatis Parisiensis*, ed.Paris , 1665–1673, चार खंडों में।

विभिन्न भागों में भी ऐसे विद्यालय थे जहाँ, उस समय के पश्चिमी विद्यालयों की तरह, उच्चतर विज्ञान भी पढ़ाए जाते थे, कम से कम तब तक जब तक तुर्कों ने कॉन्स्टेंटिनोपल (1453 में) पर कब्जा नहीं कर लिया; पूर्व में अरस्तू का दर्शन, विशेष रूप से द्वंद्वात्मक तर्क ([93]), भी प्रचलित था—लेकिन यहाँ इसने धर्मशास्त्र के क्षेत्र में उस तरह के अनुचित बल के साथ अतिक्रमण नहीं किया जैसा कि स्कॉलैस्टिक्स के मामले में हुआ था। पूर्व में, अरस्तू के प्रमुख प्रभाव में कोई नई धर्मशास्त्रीय प्रणालियाँ विकसित नहीं की गईं, जहाँ उसकी और अन्य मूर्तिपूजक लेखकों की बातों को पवित्र धर्मग्रंथों और पवित्र पिताओं की गवाहियों के बराबर सम्मान दिया जाता था। यहाँ, संत जॉन ऑफ़ डमास्कस की प्राचीन धर्मशास्त्रीय प्रणाली प्रमुख बनी रही, जो पूरी तरह से चर्च के और भी प्राचीन शिक्षकों की रचनाओं से ली गई थी; और यदि इसी प्रकृति की कोई नई रचनाएँ लिखी गईं, तो वे भी सच्ची ऑर्थोडॉक्सी के उन्हीं सिद्धांतों पर आधारित थीं, और विश्वास के मामलों में उन्हीं विश्वसनीय नेताओं के मार्गदर्शन में थीं।

इस तथ्य का जीवंत प्रमाण कि उस समय पूर्व में सेंट जॉन ऑफ़ डेमास्कस की धर्मशास्त्र प्रमुख बनी हुई थी, इस कृति की ग्रीक में मौजूद अनगिनत प्रतियाँ प्रस्तुत करती हैं, जो कोंस्टेंटिनोपल के तुर्कों के हाथ लगने तक कई शताब्दियों तक बनी रहीं, और आज भी पूरे यूरोप की विभिन्न पुस्तकालयों में संरक्षित हैं।[94]

संत जॉन ऑफ़ डमास्कस की मृत्यु के लगभग एक सौ पचास साल बाद ही, जब दक्षिण स्लावों के बीच ऑर्थोडॉक्स धर्म दृढ़ता से स्थापित हो गया, तब बुल्गारिया में जॉन द एक्सार्क, या पैट्रिआर्कल वाइकर, ने उनकी *दिव्यशास्त्र* का स्लावोनिक भाषा में अनुवाद किया, जो नव-प्रबुद्ध ईसाइयों के लिए सबसे महत्वपूर्ण पुस्तकों में से एक थी।[95] रूस में ऑर्थोडॉक्सी की निर्णायक स्थापना के साथ, यह *दिव्यताशास्त्र*, अपने स्लावोनिक अनुवाद में, हमारे यहाँ भी परिचित हुआ, और तब से यहाँ लगातार प्रचलित है, जैसा कि विभिन्न शताब्दियों की प्रतियों से प्रमाणित होता है।[96]

उस समय पूर्व में ऑर्थोडॉक्स डॉगमैटिक थियोलॉजी पर एक व्यवस्थित ग्रंथ के रूप में लिखी गई अन्य कृतियों में हमें केवल तीन का ही पता है:

1) मठवासी यूथमियस ज़िगाडेनस या ज़िगाबेनस द्वारा *'ऑर्थोडॉक्स विश्वास का डॉगमैटिक शस्त्रागार'*।[97] इसे 12वीं शताब्दी की शुरुआत में सम्राट अलेक्सियोस कोम्नेनोस के आदेश पर संकलित किया गया था, और इसमें चर्च के पवित्र पिताओं और शिक्षकों (मुख्य रूप से: एथनासियस द ग्रेट, बेसिल द ग्रेट, जॉन क्रिसोस्टोम, ग्रेगरी द थियोलॉजिस्ट, ग्रेगरी ऑफ़ निस्सा, डायोनिसियस द एरोपागिट, सिरिल ऑफ़ अलेक्ज़ेंड्रिया, मैक्सिमिस द कन्फेसर,

---

[93] *Corpus Hist. Bysant.* खंड XXI, पृष्ठ 208–209, वेनिस संस्करण; *Philippi * Cyprii* — *Chronicon eccles. Graecae*, पृ. 258, 280 एवं अन्य, लाइपज़िग, 1687; विशेष रूप से — *Institut. Hist. Eccl. *Moshemii** — 11वीं, 12वीं, 13वीं और 14वीं शताब्दी, भाग II, अध्याय 1 में।

[94] 11वीं सदी की पांडुलिपि (दिनांक 1069) हमारे शाही सार्वजनिक पुस्तकालय में रखी गई है (देखें *रूम्यान्त्सेव संग्रहालय की पांडुलिपियों की सूची*, पृ. 240, सेंट पीटर्सबर्ग, 1842); 12वीं सदी की पांडुलिपि मॉस्को में synodal पुस्तकालय में रखी गई है (Accurat. codic. Graec. MSS. biblioth. Mosqu. S. Synodi notitia et recensio, *क्रिसिट द्वारा* संपादित / *फ्रिड. डी मैथेई*, लाइपज़िग 1805, खंड 1, संख्या 376); विभिन्न शताब्दियों की ऐसी कई प्राचीन पांडुलिपियाँ, जिनमें से अधिकांश तुर्कों द्वारा कब्जा किए जाने से पहले कॉन्स्टेंटिनोपल में लिखी गई थीं, वियना में शाही पुस्तकालय और इंग्लैंड की विभिन्न पुस्तकालयों में रखी गई हैं (*पेट्री लैम्बेकियस हैम्बर्गेन्सिस*, कमेंट. डी ऑग. बिब्ल. सीज़र. वडोबोनेंसी, 2रा संस्करण, *कोलारी* द्वारा, खंड III, पृ. 260, 294 और 303; खंड IV, पृ. 269 और 478–479, और विशेष रूप से खंड V, पृ. 2–14 और 535; साथ ही — पांडुलिपियों की सूची एंग्लियाई एट हिबर्नियाई, इन यूनम कलेक्ट... ऑक्सोनियाई 1797 — वर्णानुक्रमिक अनुक्रमणिका देखें, प्रविष्टि: *इमासेनस योहान्स* के अंतर्गत) /

[95] *कालायदोविच*, जॉन — बुल्गारियाई लोगों के एक्ज़ार्क, अध्याय III, पृ. 17–58।

[96] एक 12वीं सदी की पांडुलिपि जो पहले कालायदोविच के कब्जे में थी और अब मास्को में synodal पुस्तकालय में रखी गई है (इओआन, बुल्गारियाई एक्ज़ार्क, पृ. 17, 26–28); एक 15वीं सदी की पांडुलिपि रुम्यान्त्सेव संग्रहालय में है (इस संग्रहालय की सूची — पृ. 508), 16वीं सदी की पांडुलिपियाँ — उसी संग्रहालय में (पृ. 236–240), वोल्कोलामस्क मठ की पुस्तकालय में (*कालायोदोविच*, जॉन, बुल्गेरियाई प्रति, पृ. 75), काउंट टॉलस्टॉय के पांडुलिपियों के बीच शाही सार्वजनिक पुस्तकालय में (इन पांडुलिपियों की सूची, खंड II, संख्या 217, पृ. 365), 17वीं सदी की प्रतियां — उन्हीं पांडुलिपियों के बीच (सूची, खंड II, संख्या 8, 136, 175 और 249), वोस्करेन्स्की न्यू जेरूसलम मठ की पुस्तकालय में (इस *पुस्तकालय* के *पांडुलिपियों* की *सूची* देखें *रूसी* प्राचीन स्मारक* — *साखारोव*, खंड 1, सेंट पीटर्सबर्ग 1842, पृ. 6) और अन्यत्र (देखें *प्रोसीडिंग्स ऑफ द इंपीरियल मॉस्को इतिहास और प्राचीन रूसी अध्ययन के लिए साम्राज्यिक मास्को सोसाइटी के 1846 के रीडिंग्स, लेख: *सिल्वेस्टर मेदवेदेव*, *'स्लाविक-रूसी ग्रंथसूची के पिता'* — पृष्ठ XXVII, और उसके बाद: *पुस्तकों और उनके संकलकों की सूची* — पृष्ठ 29 और 32)।

[97] ऑर्थोडॉक्स धर्म का एक डॉगमैटिक शस्त्रागार (अर्थात्, डॉगमाओं का एक संग्रह), एक ही खंड में, सिगाडेन के भिक्षु यूथमियस द्वारा क्रमबद्ध और सावधानीपूर्वक सामंजस्य के साथ व्यवस्थित, धन्य और ईश्वर-वाहक पिताओं के लेख शामिल हैं। मूल संस्करण केवल एक बार 1710 में वलाचिया में प्रकाशित हुआ था, जबकि लैटिन अनुवाद कई अवसरों पर प्रकाशित हुआ है (वालाही — बिब्ल. थियोल. 1, पृ. 617)।

लयिोन्टयिस ऑफ़ साइप्रस, जॉन ऑफ़ डेमास्कस और फोटयिस) वशि्वास के सबसे महत्वपूर्ण मामलों पर और सबसे महत्वपूर्ण धार्मकि त्रुटयिों के खलिाफ। उस समय के कई उत्कृष्ट धर्मशास्त्रयिों ने इस संग्रह पर काम कयिा, जबकि यूथमियिस ज़गिाबेन ने केवल एकत्रति वचिारों को व्यवस्थति कयिा, उन्हें अध्यायों या खंडों में वभिाजति कयिा, और उन्हें एक एकल, काफी सुसंगत संपूर्ण में एक साथ लाया। यहाँ, 27 या 28 अध्यायों में—जन्हिें कुछ पांडुलपियिों में दो पुस्तकों में वभिाजति कयिा गया है—*[98] * सबसे पहले ईश्वर के सद्धिांत, उनके सार में एकता और व्यक्तयिों में त्रत्वि, उनकी सृष्टि और अवतार को प्रस्तुत करता है; फरि यह यहूदयिों, साइमन द मैजकिस और मार्सयिन, मनखियिों, सेबेलीयों, एरयिनों के खलिाफ तर्क करता है, आत्मा-वरिोधयिों, रोमनों, नेस्टोरयिनों, मोनोफज़िटिों, मूर्तभिंजकों, अर्मेनयिाईयों, पॉलशियिनों, बोगोमल्सि और अन्य वधिर्मयिों के वरिुद्ध; और इस प्रकार, यद्यपि अधकि ववािदात्मक दृष्टकिोण से, लगभग सभी मौलकि धर्मसद्धिान्तों को शामलि कयिा गया है। यूथमियिस ज़गिाबेनस का कार्य संत जॉन ऑफ़ डमास्कस की धर्मशास्त्र की तरह एक समान आंतरकि एकता, सुसंगति और स्पष्टता से युक्त नहीं है, लेकनि यह कुछ प्रबंधों की व्यापकता और गहनता में बाद वाले से बेहतर है।

२) *ऑर्थोडॉक्स वशि्वास का खजाना* (θυσαυρός ὀρθοδοξίας), नकितिास खोनयिाट्स (मृत्यु लगभग 1206) द्वारा — यह भी एक डॉगमैटकि और ववािदास्पद प्रकृतकिा ग्रंथ है, जो प्राचीन और समकालीन वधिर्मों के खलिाफ नर्दिेशति है, जसिमें अन्य के अलावा, पॉलशियिन, बोगोमलि और सारासेन शामलि हैं, साथ ही यह भी प्रदर्शति करता है कि बाद वालों को मसीह की कलीसयिा की गोद में कैसे स्वीकार कयिा जा सकता है। यह ज़गिाबेनोस की **ऑल-आर्मड** से इस मायने में भन्नि है कि यह न केवल पवत्रि पतिाओं के उद्धरणों से, बल्कि सुदृढ़ तर्क पर आधारति दलीलों से भी वशि्वास के सत्यों की पुष्टि करता है और त्रुटयिों का खंडन करता है, और यह कई मुद्दों की जांच कहीं अधकि वस्तिार और अधकि स्पष्टता से करता है। यह 27 पुस्तकों से मलिकर बना है, जनिमें से, दुर्भाग्य से, केवल पहली पाँच ही प्रकाशति हुई हैं।[99]

3) *मसीह के एक सच्चे वशि्वास पर चर्च संबंधी प्रवचन* — संत समियिोन, थ्रेसलॉनीकी के आर्चबशिप (जो प्रारंभकि 15वीं शताब्दी में रहते थे) द्वारा। वे दो भागों में वभिाजति हैं: पहला भाग नास्तकिों, मूर्तपिूजकों और यहूदयिों के वरिुद्ध है, और इसमें दस अध्याय हैं, जनिमें यह दर्शाया गया है कि ईश्वर का अस्तत्वि है, कि वह सार में एक और व्यक्तयिों में त्रमिूर्ति है; दूसरा भाग वधिर्मयिों के वरिुद्ध है, जो साइमन द मैगस से शुरू होकर बाद के व्यक्तयिों तक फैला हुआ है: बोगोमल्सि, बरलाम, अकनिीडनि और अन्य, साथ ही मुसलमानों के खलिाफ, और इसमें तेईस अध्याय हैं, जनिमें ऑर्थोडॉक्स सद्धिांत की कुछ अन्य वशिेषताओं को प्रस्तुत कयिा गया है। यह कृति व्यापक नहीं है, लेकनि इसकी स्पष्टता, सटीकता और सबसे बढ़कर, इस तथ्य से प्रतष्ठिति है कि यह मुख्य रूप से पवत्रि धर्मग्रंथ और पवत्रि पतिाओं के लेखों से ली गई है।[100]

हम यहाँ ऑर्थोडॉक्स चर्च के भीतर उस समय प्रकट हुए मतों की एक व्यापक व्याख्या के कुछ संक्षप्ति प्रयासों को चुपचाप नहीं छोड़ सकते। ये हैं: क) थेस्सालोनकिी के आर्चबशिप ग्रेगरी पलामास, जो 14वीं शताब्दी के मध्य में रहते थे, द्वारा *'ऑर्थोडॉक्स* वशि्वास की व्याख्या' (*The Exposition* of the *Orthodox* Faith);[101] ख) *पवत्रि प्रतीक की व्याख्या मसीह के ऑर्थोडॉक्स वशि्वास की* — थस्सिलोनकिी के एक अन्य आर्चबशिप, समियिन द्वारा — 15वीं शताब्दी की शुरुआत में;[102] c) *मसीह के ऑर्थोडॉक्स और अछूते वशि्वास का स्वीकारोक्ति* — जेनाडयिस या जॉर्ज

---

[98] *पेट्रि लैम्बसियिस* — कमेंटरी, वडिोबोनेंससि के ऑगस्टनियिन पुस्तकालय से, खंड III, पृ. 420, और खंड V, पृ. 698; *केव* — स्क्रप्टि, 12वीं सदी के साहत्यि का चर्च का इतहिास, प्रवष्टिः *एवथमियिस ज़गिाबेनस के* अंतर्गत /

[99] और वह भी, संयोगवश, केवल एक लैटनि अनुवाद में — *मैक्स. biblioth. Patrum*, खंड XXV, पृ. 54 और बाद के पृष्ठों में। (देखें *कैसमिरि ओउडनि* — *Comment. de Script. Eccles. antiqu.*, खंड II, पृ. 1711, लेइपज़गि 1722; *वालच* की *Bibl. Theol.* 1, पृ. 619)। सभी पुस्तकों की सामग्री की सूची मोन्फौकॉन (*Palaeograph. graec.*, पुस्तक IV, अध्याय 9, पृ. 327) द्वारा दी गई है। तुलना करें: *फैब्रसियिस की *Biblioth. graec.*, खंड XI, पृ. 420)।

[100] पूर्ण शीर्षक इस प्रकार है: धर्मगुरु और पुरोहतिों द्वारा नास्तकिों (ग्रीक और यहूदी दोनों) तथा अनेक वधिर्मों के वरिुद्ध, और प्रभु, परमेश्वर तथा हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह में एक वशि्वास के संबंध में संवाद। सभी पवत्रि शास्त्रों और चर्च के पतिरों से उद्धृत, और उन वषियों की रक्षा में संकलति, जनि पर वभिन्नि वधिर्मी समय-समय पर उनसे प्रश्न करते रहे हैं। सेंट समियिन ऑफ थेसालोनकिी के संपूर्ण संग्रहति कार्यों में शामलि, जो 1820 में वेनसि में ग्रीक में प्रकाशति हुए थे।

[101] रूसी भाषा में पत्रकिा *Voskresnoe Chtenie* (रवविार का पठन), खंड V, पृष्ठ 17–11, कीव 1841 में प्रकाशति।

[102] इस संत की कृतयिों के उपर्युक्त ग्रीक संस्करण में, पृष्ठ 451–479 पर, इस शीर्षक के अंतर्गत शामलि है: *ईसाइयों के ऑर्थोडॉक्स वशि्वास के पवत्रि प्रतीक की व्याख्या*।

स्कॉलारियिस, कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआिर्क द्वारा, जसिे कॉन्स्टेंटनिोपल पर कब्ज़ा करने के बाद तुर्की सुल्तान मेहमद द्वतिीय द्वारा पूछे गए एक प्रश्न के जवाब में रचा गया था;[103] d) *धर्मशास्त्र* (Κατήχησις) मेलेटियिस पेगास द्वारा, कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआिर्क, 16वीं सदी के एक प्रतष्ठिति वद्विान,[104] और, वशिेष रूप से — डी) कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआिर्क जेरमयिाह द्वारा वुर्टेमबर्ग के प्रोटेस्टेंट धर्मशास्त्रयिों को लखिे गए *तीन धर्मशास्त्रीय पत्र* (1576 और 1581 के बीच लखिे गए), जसिमें, ईश्वर के वचन, सार्वभौमकि परषिदों के फरमानों और पवत्रि पतिाओं की शक्षिाओं के आधार पर, पूर्वी ऑर्थोडॉक्स चर्च के सद्धिांत को काफी वस्तिार से प्रस्तुत कयिा गया है, वशिेष रूप से उन पहलुओं के संबंध में जो इसकी आस्था को ऑगस्टनियिन की आस्था से अलग करते हैं।[105] रूस में प्रकाशति हुए समान कार्य इस प्रकार हैं: ई) *एक पुस्तकि एक सच्चे ऑर्थोडॉक्स वश्विास और पवत्रि, कैथोलकि और प्रेरति चर्च पर,* जो लैटनिों के वरिुद्ध नर्दिेशति थी और लगभग 1588 में ओस्ट्रोग में प्रकाशति हुई थी;[106] g) एक पुस्तक *'एक, पवत्रि, कैथोलकि और प्रेरति चर्च' पर,* कोप्यस्टेन के ह्येरोमोंक ज़कारयिास *द्वारा,* जो लैटनिों के वरिुद्ध नर्दिेशति थी और 1619 में कीव में प्रकाशति हुई;[107] h) लाव्रेन्ती ज़िज़ानयि नामक एक लथिुआनयिाई आर्चप्रीस्ट से संबंधति *एक धर्मशक्षिा,* जो 1627 में मास्को में प्रकाशति हुई।[108]

जहाँ तक उस समय पूर्व में लखिे गए वशिष्टि धर्मशास्त्रीय अध्ययनों और ग्रंथों की बात है, वे मुख्यतः ऑर्थोडॉक्सी की वशिष्टि धर्मशास्त्रीय मान्यताओं से संबंधति हैं, जन्हिें पापयिों और प्रोटेस्टेंटों ने वकिृत या अस्वीकार कर दयिा था। इन कृतयिों में सबसे उल्लेखनीय हैं: (a) वे जो पश्चमिी चर्च *की पवत्रि आत्मा के पुत्र से उद्गम संबंधी* शक्षिा के वरिुद्ध नर्दिेशति *हैं* — 9वीं शताब्दी में कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआिर्क फोतउिस द्वारा; 12वीं शताब्दी में नकियिा के मेट्रोपॉलटिन यूस्ट्राटयिस द्वारा; 13वीं सदी के कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआिर्क हरमन; और थेस्सालोनकिी के दो आर्चबशिप—14वीं सदी के ग्रेगरी पलामास और नीलस कावासलिस; ख) *पोप की सर्वोच्चता के* सद्धिांत के

---

[103] यह कमिल के ग्रंथ: *Libri Symbol. Eccl. graecae*, पृ. 1–24, येना 1843 में पाया जा सकता है।

[104] *साइप्रस के फलिपि* — *क्रॉन. इक्ल. ग्रीका*, पृ. 434, लाइपज़िग 1687.

[105] इन पत्रों को वुर्टेमबर्ग के धर्मशास्त्रयिों द्वारा यर्मियाह के पत्रों के साथ, इस शीर्षक के अंतर्गत प्रकाशति कयिा गया था: *Acta et scripta Theolog. Wirtemb. et Patriarchae Constantinop. D. Hieremiae.... graece et latine ab iisdem Theolog. edita*, Wirtemb. 1584.

[106] रूम्यान्त्सेव के संगीत पांडुलपियिों की सूची, संख्या 295; पुरानी-मुद्रति पुस्तकों की सूची, काउंट टॉलस्टॉव का संग्रह, धार्मकि मुद्रण, संख्या 26; और *साखारोव की* स्लाव-रूसी ग्रंथसूची की समीक्षा, खंड 1, पुस्तक 2, संख्या 80।

[107] *साखारोव की* स्लाव-रूसी ग्रंथसूची की समीक्षा, खंड 1, पुस्तक 2, संख्या 176।

[108] उपरोक्त, संख्या 235। धर्मशक्षिा-पुस्तकों के प्रकाशन से पहले हमारे पूर्वज वश्विास के मामलों में कसि पर नर्भिर थे? सामान्यतःचर्च पतिाओं की रचनाओं के अलावा—जनिमें से कई लंबे समय से स्लावोनकि भाषा में अनुवादति हो चुकी थीं—वशिेष रूप से: 1) संत जॉन ऑफ़ डेमास्कस द्वारा *'ऑर्थोडॉक्स वश्विास की सटीक व्याख्या'* (देखें ऊपर टप्पिणी 96); 2) चर्च के प्राचीन शक्षिकों द्वारा इसी प्रकार की कुछ अन्य रचनाएँ, जो यद्यपि अधकि संक्षप्ति थीं, और जन्हिें भी लंबे समय से स्लावोनकि भाषा में अनुवादति कयिा गया था, जैसे: a) *सैद्धांतकि प्रश्न और उत्तर,* एक कृति जो एक वस्तिृत धर्मशक्षिा जैसी है, जसिे सनिाई के अनास्तासयिस, अंकोन के पैट्रआिर्क (†599) ने लखिा है, जो सवयितोस्लाव के संग्रह — 11वीं सदी (रूम्यंतसेव पांडुलपियिों की सूची संख्या 356) और बाद में 15वीं सदी की प्रतयिों में (उसी में, संख्या 6); ख) *वश्विास और ईसाई जीवन के संबंध में नयिम* — कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआिर्क सेंट जेनाडयिस (†471) द्वारा, जो 14वीं सदी की एक पांडुलपि में पाया गया (रूसी अनुवाद में पवत्रि पतिाओं के कार्यों का पूरक, पृ. 1, मॉस्को 1845); c) *'राजकुमार एंटओिकस को अनेक और आवश्यक वषियों पर...'* अलेक्जेंड्रयिा के संत अथेनासयिस द्वारा, साथ ही प्रश्नों और उत्तरों के रूप में एक प्रकार का धर्मशास्त्र, पाया गया 16वीं सदी की पांडुलपियिों में (काउंट टॉलस्टॉव की *पांडुलपियिों की* सूची, खंड 1, संख्या 304); डी) *धर्मशास्त्र की पुस्तक, जो वश्विास के सद्धिांत और उससे संबंधति सबसे आवश्यक पापों को प्रस्तुत करती है,* पाया गया 16वीं सदी की पांडुलपियिों में (उपरोक्त, खंड II, संख्या 340), — एक अज्ञात लेखक की रचना, लेकनि इसे 1649 में मॉस्को में पैट्रआिर्क जोसेफ के अधीन प्रकाशति कैटेकज़िम में, कई *पैट्रस्टिकि (पति-संबंधी)* वश्विास-वक्तव्यों के साथ शामलि कयिा गया था *(साखारोव,* ओब्ज़ोर. स्लावकि-रूसी ग्रंथसूची, खंड 1, पुस्तक 2, संख्या 510)। उपरोक्त का उल्लेख करने के अलावा, स्लावोनकि भाषा में अन्य *मुद्रति धर्मशक्षिा-पुस्तकिाएँ* भी ज्ञात हैं; लेकनि वे या तो हमारे देश में उपयोग में नहीं थीं या वे ऑर्थोडॉक्स भी नहीं थीं। ये हैं: क) 1527 में वेनसि में प्रकाशति एक धर्मशास्त्र (*इवांजर्नि द्वारा रूसी चर्च* लेखन की शब्दकोश, खंड 1, पृ. 262, 2nd संस्करण); ख) एक लूथरन कैटेकज़िम, जसिे ऑर्थोडॉक्सी से धर्मत्यागी, मातफेई कावेचनिस्की, समियिन बडनी और лаврецкी क्रश्किोव्स्की द्वारा अनुवादति कयिा गया, और 1561 में नेस्वज़ि में प्रकाशति कयिा गया, और बाद में 1583 में रोम में (उपरोक्त और *रूसी हस्टिोरकिल में)। संग्रह, खंड VI, पृ. 302, मॉस्को 1843); c) एक धर्मशास्त्र जसिका अनुवाद अंगोन डाल्माट और स्टीफन इस्त्रयिाननि ने कयिा, 1561 में ट्यूबगिेन में प्रकाशति (उसी ऐतहिासकि संग्रह में और उसी पृष्ठ पर); d) एक धर्मशास्त्र, जो लैटनि से अनुवादति और 1585 में वल्नियिस में प्रकाशति हुआ (*बर्गी* — *दे स्टेटू एक्ले. एट रलिीग.*Moscow , पृ. 31, और *साखारोव* — *रूसी पुस्तक-सूची का कालानुक्रमकि सूचीपत्र* *रूसी प्राचीन स्मारक*, सेंट पीटर्सबर्ग, 1842); ई) दो स्लावोनकि धर्मशास्त्र, लेकनि 1582 और 1603 में लैटनि अक्षरों में मुद्रति (रूसी ऐतहिासकि संग्रह, खंड VI, पृ. 303); एफ) एक धर्मशास्त्र जो 1611 में वेनसि में मटफेई दवकिोवचि द्वारा प्रकाशति कयिा गया था (उपरोक्त)।

खलिाफ—थेस्सालोनकिी के वही आर्चबशिप, नीलस कावासलिस, और 14वीं सदी के भकि्षु बार्लाम; ग) सामान्य रूप से *लैटनिों की त्रुटयिों के वरिुद्ध*— नकिति पेक्टोराटस, 11वीं सदी के कॉन्स्टेंटनिोपल के एक पादरी; जॉर्ज, 12वीं सदी के कॉर्सीरा के मेट्रोपॉलटिन; 13वीं सदी में साइप्रस के ग्रेगरी; और 15वीं सदी में एन्क्रा के मकरयिस; और, रूसी लोगों में से, लयिोन्टयिस कार्पोवचि और कॉपस्टिेन के ज़कारयिास — 17वीं सदी की शुरुआत में; (घ) *प्रोटेस्टेंट वधिर्मों के वरिुद्ध* — यूनानयिों में से: गैब्रयिल, फलिाडेल्फयिा के मेट्रोपॉलटिन; और रूसी लोगों में से: ज़निोवी, 16वीं सदी के नोवगोरोड के एक भकि्षु।[109]

§8. ऑर्थोडॉक्स धर्मशास्त्रीय धर्मशास्त्र का तीसरा कालखंड

इस प्रकार ऑर्थोडॉक्स डॉगमैटकि थयिोलॉजी के लिए मध्य युग बीता—एक ऐसा काल जसिे ईसाई दुनयिा भर में प्रबोधन की स्थतिकि कारण आम तौर पर '*अंधकार* युग' कहा जाता है। 15वीं शताब्दी के अंत से, और वशिेष रूप से 16वीं शताब्दी की शुरुआत से, मुद्रण प्रेस (1440) के आवष्किार, पश्चमि के लोगों के बीच प्राचीन यूनानी वद्विता और उसके ग्रंथों के प्रसार, कॉन्स्टेंटनिोपल के पतन के परणिामस्वरूप (1453), धर्मसुधार (1517) और अन्य कारकों के परणिामस्वरूप, पश्चमिी यूरोप के लिए सामान्य रूप से ज्ञानोदय का एक नया युग, और वशिेष रूप से धर्मशास्त्र के वकिास में एक नया चरण, आरंभ हुआ। पूर्व के लिए, उसकी ऑर्थोडॉक्स चर्च के साथ, और साथ ही ऑर्थोडॉक्स धर्मशास्त्र के लिए, यह अवधि बहुत बाद में शुरू हुई—लगभग 17वीं शताब्दी के मध्य से, हालांकि इसकी नींव पछिली दो शताब्दयिों के दौरान ही रख दी गई थी।

इसके लिए मार्ग प्रशस्त करने वाले परस्थितियिाँ इस प्रकार थीं। सार्वभौमकि चर्च से अलग होने के बाद से ही, रोमन पोन्तफि (पोप) नरिंतर ऑर्थोडॉक्स पूर्व—और वशिेष रूप से, ऑर्थोडॉक्स रूस—को अपने अधीन करने के वचिार में लगे हुए थे, जैसा कि इतहिास में दर्ज प्रयासों की अखंड शृंखला से स्पष्ट है। लेकनि सोलहवीं शताब्दी से आगे चलकर ये प्रयास उतने तीव्र, सफलता के उतने करीब और ऑर्थोडॉक्सी के लिए उतने खतरनाक कभी नहीं थे। ग्रीस में, उन्हें साम्राज्य के पतन (1453) और उसके बाद शकि्षा में आई गरिावट से मदद मलिी; रूस में, शकि्षा की कमी और उसके पश्चमिी भाग के पोलैंड में वलिय से मदद मलिी। (1569)। दोनों जगहों पर मुख्य साधन नव-स्थापति (1540) जेसुइट संघ था। उन्होंने जल्दी ही पोलैंड और पश्चमिी रूस में पैठ बना ली, और पोलोत्स्क, वल्नियिस और वोल्हनियिा में अपने स्वयं के स्कूल स्थापति कयि, ताकि ऑर्थोडॉक्स बच्चों को अपने ही अंदाज़ में शकि्षति कयिा जा सके; वे हर जगह पूर्वी चर्च के खलिाफ लेखन का प्रसार करते थे ताकि उन वयस्कों को भी अपने जाल में फंसा सकें जन्हिें पालने से ही उसकी संतान माना जाता था — और 16वीं शताब्दी के अंत के आसपास रूस के पश्चमिी कष्ेत्र में उत्पन्न हुई दुर्भाग्यपूर्ण यूनयिन, इन प्रयासों का पहला फल थी।[110] इसी तरह, लोयोला के योग्य शष्यिों ने जल्दी से ग्रीस में प्रवेश कयिा, गालाटा और यहां तक कि कॉन्स्टेंटनिोपल में अपने स्वयं के स्कूल स्थापति कयि, खुद को युवाओं के स्वैच्छकि शकि्षक के रूप में प्रस्तुत कयिा, लोगों के लिए आध्यात्मकि मार्गदर्शक के रूप में कार्य करने का प्रयास कयिा, और ऑर्थोडॉक्सी के लिए हानकिारक लेखन का प्रसार कयिा,[111] जबकि ग्रीस के बाहर, पश्चमि के प्रसद्धि वश्विवद्यिालयों और अकादमयिों में, जहाँ, अपनी खुद की स्कूलों के अभाव में, शकि्षा के लिए प्यासे ग्रीक युवक जल्दी से पहुँचते थे, वे अनजाने में उसी भावना से भर गए, उसी जाल में फँस गए; और पोप ग्रेगरी तेरहवें ने स्वयं रोम में एक ग्रीक कॉलेज की स्थापना की, जहाँ उन्होंने आने वाले सभी ग्रीक और रूसी लोगों को नश्शिुल्क शकि्षा दी।[112] वेटकिन की ओर से यह सारी तीव्र गतविधि धर्मसुधार आंदोलन से समझी जा सकती है: इसके परणिामस्वरूप अपने प्राचीन अनुयायियिों की अनगनित भीड़ खोने के बाद, पोपों ने पूर्वी चर्च को अपने अधकिार में लाकर अपनी इस हानि की भरपाई करने की कोशशि की, और ऐसा करने के लिए उन्होंने कोई कसर नहीं छोड़ी। लेकनि प्रोटेस्टेंट भी नष्क्रयि नहीं रहे: उन्होंने भी (वशिेषकर लूथरन और कैल्वनिवादयिों ने) पूर्वी ईसाइयों के बीच अपनी शकि्षाओं का प्रसार करने में तेजी दखिाई, और 16वीं सदी में ही पोडोलयिा, कीव, गैलीशयिा,

---

[109] देखें *हज़ि एमनिेंस इनोसेंट*— आउटलाइन ऑफ़ चर्च हस्टि्री, सेंट्यूरीज़ IX–XVII, '*ऑन इक्लेसयिास्टकिल राइटर्स*' खंड में; *मचि. हेनेक्की* — अबबलि्डुंग डेर आल्टन उंड न्युन ग्रीचशि करि्खे, लीपज़िग 1711. परशिष्टि, पृ. 70–72 और 78; *वाल्चii* — *Bibl. Theolog.* 1, पृ. 630–642; हज़ि एमनिेंस *यूजीन*— *डकि्शनरी ऑफ़ रशयिन इक्लेसयिास्टकिल राइटर्स*, हमारे द्वारा उल्लखिति रूसी लेखकों के नामों के अंतर्गत।

[110] रूसी चर्च का इतहिास, उनकी उत्कृष्टता *फलिारेट,* खंड III, पृ. 81; खंड V, पृ. 72 ff., सं. 1847।

[111] *साइप्रस के एफ.* द्वारा ग्रीक चर्च का क्रॉनकिन, पृष्ठ 461–464।

[112] *लयिोन अलैटयिस*— पश्चमिी और पूर्वी चर्चों की शाश्वत सहमति पर, पुस्तक III, अध्याय 7, टप्पिणी 7, पृ. 986, ed.Colon . एग्रप्पिन.

वोल्हनिया और बेलारूस में; वे वलाचिया में प्रवेश कर चुके थे और ग्रीस में खुद को स्थापित कर चुके थे, जहाँ, स्वयं कॉन्स्टेंटिनोपल में, उन्होंने जेसुइट्स का विरोध करने वाले एक शक्तिशाली गुट का गठन किया;[113] उन्होंने ऑर्थोडॉक्स के बीच अपनी रचनाओं का प्रसार करने का भी प्रयास किया, और रूसी लोगों को धर्मांतरित करने के लिए उन्होंने अपने धर्मशास्त्रों का स्लावोनिक भाषा में अनुवाद किया,[114] जबकि ग्रीस में उन्होंने कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क, सिरिल लुकारिस के नाम से, कैल्विनिवाद की भावना से पूरी तरह ओत-प्रोत *एक विश्वास-स्वीकृति* प्रकाशित की, जिसने पूरे पूर्वी चर्च में इतना उथल-पुथल मचा दिया।[115] इस प्रकार ऑर्थोडॉक्स खुद को दो आग्नेय घेरे में पाया: पापवादियों ने उन्हें अपने पक्ष में लाने का भरसक प्रयास किया, यह तर्क देते हुए कि अन्य बातों के अलावा, पूर्वी चर्च हमेशा से ही सिद्धांत के मामलों में पश्चिमी रोमन चर्च के साथ सहमत रहा है; जबकि प्रोटेस्टेंट उन्हें अपनी ओर खींचने का प्रयास कर रहे थे, यह दावा करते हुए कि रोमन नहीं बल्कि उनका अपना प्रोटेस्टेंट सिद्धांत ही पूर्व के सिद्धांतों के अनुरूप था।[116] ऐसे हालात में ऑर्थोडॉक्सी की रक्षा के लिए और क्या किया जाना बाकी था? सबसे पहले और सबसे आवश्यक था कि ऑर्थोडॉक्स पूर्वी चर्च के लिए यथासंभव सटीक और विस्तृत एक विश्वास-स्वीकृति तैयार की जाए, जिससे उसके अनुयायी स्पष्ट रूप से देख सकें कि उसने अनादिकाल से कैसे विश्वास किया है और दूसरों को विश्वास करना कैसे सिखाया है, और उसका वास्तविक सिद्धांत पापियों और प्रोटेस्टेंटों के सिद्धांत से कैसे भिन्न था; तब ऑर्थोडॉक्सों के लिए अपने स्वयं के स्कूल स्थापित करना आवश्यक था, जहाँ अन्य बातों के अलावा, ऑर्थोडॉक्स धर्मशास्त्र को उसकी पूरी व्यापकता में पढ़ाया जाएगा, और जिनसे न केवल ऑर्थोडॉक्स विश्वास के योग्य शिक्षक, बल्कि गैर-ऑर्थोडॉक्स विरोधियों के खिलाफ इसके विद्वान रक्षक भी निकलेंगे। इन दो आवश्यकताओं में से, जिन्हें उस समय ग्रीस और रूस दोनों में कई लोगों द्वारा स्पष्ट रूप से पहचाना गया था, ई[117] , कीव के मेट्रोपॉलिटन पीटर मोहिला ने सबसे उत्साहपूर्वक प्रतिक्रिया दी। उन्होंने *पूर्वी कैथोलिक और प्रेरितिक चर्च के ऑर्थोडॉक्स धर्मोपदेश को* संकलित करने का साधन खोजा, और कीव-मोहिला अकादमी में धर्मशास्त्र की शिक्षा को उसी स्तर पर शुरू करने वाले पहले व्यक्ति थे जिसे स्तर पर उस समय यूरोप के स्कूलों में सिखाया जाता था, इस प्रकार नींव रखी (1631–1647) ऑर्थोडॉक्स डॉगमैटिक थियोलॉजी के इतिहास में *एक* नए, *तीसरे कालखंड* की।

ऑर्थोडॉक्स स्वीकारोक्ति, वास्तव में, इस इतिहास में एक नए युग की शुरुआत करती है। अब तक, पूर्वी चर्च के पुत्रों के पास कोई विशिष्ट प्रतीकात्मक पाठ नहीं था जिसमें वे स्वयं के लिए विश्वास के मामलों पर सबसे विस्तृत मार्गदर्शन पा सकें—जो स्वयं चर्च के नाम पर प्रदान किया गया हो— विश्वास के मामलों में धर्मशास्त्रीय व्याख्या और सिद्धांतों के बचाव के संबंध में मार्गदर्शन; इसके बजाय, उन्हें केवल सार्वभौमिक और स्थानीय परिषदों के संक्षिप्त प्रतीकात्मक विश्वास-वक्तव्यों और ट्रुलम परिषद द्वारा निर्धारित पवित्र पिताओं के नियमों, जिनका बाद में सभी अन्य पैट्रिस्टिक लेखनों द्वारा अनुसरण किया गया, से ही संतोष करना पड़ा, जिनका, हालांकि, उतना महत्व नहीं था। पीटर मोहिला का *ऑर्थोडॉक्स कन्फेशन,* जिसे दो परिषदों—कीव परिषद (1640) और यासी परिषद में समीक्षा और

---

[113] रूसी चर्च का इतिहास, *उनकी उत्कृष्टता फिलारेट द्वारा,* खंड III, पृष्ठ 84–85; आधुनिक यूनानी चर्च की एक संक्षिप्त आलोचना..., *कॉन्स्टेंटिन इकोनोमोस* द्वारा, 1839, पृ. 299 और 360; यूनानियों के धर्म के प्रामाणिक स्मारक... *जोहान आयमोन* द्वारा, पृ. 8–15, सं. 1708.

[114] उपरोक्त टिप्पणी 108 और पुस्तक: 'द ऑर्थोडॉक्स कन्फेशन' के संबंध में सर्व-रूस के पैट्रिआर्क एड्रियन का पत्र देखें।

[115] क्रॉनकिन इक्लेस. ग्रीके, *एफ. साइप्री,* पृ. 481: मेलेटियस की चर्च इतिहास, खंड III, पृ. 430 और 447; उनकी उत्कृष्टता *इनोसेंट द्वारा* चर्च इतिहास की रूपरेखा, 17वीं सदी, लेख में: *'ग्रीस में चर्च लेखकों पर'* /

[116] इस मामले पर पापियों और प्रोटेस्टेंटों के बीच विवाद 16वीं शताब्दी के अंत में ही, कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क, जेरमियाह और वर्टमबर्ग के धर्मशास्त्रियों के बीच पत्राचार के बाद शुरू हो गए थे, और उस समय दोनों पक्षों द्वारा इस विषय पर कई ग्रंथ लिखे गए थे; लेकिन 17वीं सदी के पहले क्वार्टर से, तथाकथित सिरिल लुकारिस के कबूलनामे के अवसर पर, वे काफी तीव्र हो गए; और बाद में पापियों और प्रोटेस्टेंटों दोनों द्वारा लिखे गए ग्रंथों की संख्या बढ़ गई, जिसका उद्देश्य यह साबित करना था कि क्या ग्रीक चर्च अपने सिद्धांत में रोमन चर्च या प्रोटेस्टेंट चर्च के साथ सहमत थी। इन कृतियों की एक सूची हाइनकिट की *Abbildung der alt. und neuen griech. Kirche* (लाइपज़िग, 1711), परिशिष्ट, पृष्ठ 80-82 पर मिल सकती है।

[117] यह स्पष्ट है: (क) पूर्वी पैट्रिआर्कों के हर धर्मप्रांत में स्कूल स्थापित करने के निर्णय से, जिसे 1593 में उनकी परिषद में ही अपनाया गया था (इस परिषद के कार्य **स्क्रिज़ाली** में प्रकाशित हुए थे, जिसे 1656 में पैट्रिआर्क निकोन द्वारा संपादित किया गया था); ख) उस समय दक्षिणी रूस में कई स्कूलों की वास्तविक स्थापना से (रूसी चर्च का इतिहास, हिज़ एमिनेंस *फिलारेट द्वारा,* खंड III, पृ. 65; खंड IV, पृ. 95-99); ग) उस समय ग्रीस और रूस दोनों में कई कृतियों के प्रकट होने से, जिनका उद्देश्य पापियों और सुधारकों के दावों के खिलाफ ऑर्थोडॉक्सी की रक्षा करना था (देखें *हेनेक्की* — अबबलिडुंग डेर आल्टेन उंड नुए ग्रिच. चर्च, अनु. पृ. 71, 78, और हिज़ एमिनेंस *फिलारेट* द्वारा रूस की चर्च का इतिहास, खंड IV, 104)।

संशोधन कयिा गया (1643)—और बाद में चारों सार्वभौमकि पैट्रआर्कों और रूसी पैट्रआर्कों, जोआकमि और एड्रयिन द्वारा समीक्षा और अनुमोदन कएि जाने के बाद, यह पूर्वी चर्च की पहली प्रतीकात्मक पुस्तक बन गई। यहाँ, पहली बार, इसकी सभी धर्मसद्धिान्तों को इसके नाम से यथासंभव सटीकता के साथ प्रस्तुत कयिा गया है, और इस तरह से कि वे न केवल प्राचीनता की वधिर्मों के खलिाफ, बल्कि सार्वभौमकि ऑर्थोडॉक्सी से इसके प्रस्थान के बाद पश्चमि में उत्पन्न हुई नई त्रुटयिों के खलिाफ भी नर्दिेशति हों। इस प्रकार यह धर्मशास्त्रों की गहन व्याख्या के माध्यम से, सभी ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों और वशिेष रूप से ऑर्थोडॉक्स धर्मशास्त्रयिों के लिए, वश्विास के मामलों में सबसे वस्तिृत और साथ ही सबसे वश्विसनीय मार्गदर्शकिा प्रदान करता है। स्कूलों में ऑर्थोडॉक्स धर्मशास्त्रीय सद्धिांत की शुरुआत इस वषिय के इतहिास में एक नर्णिायक मोड़ को भी चह्निति करती है, क्योंकि यहीं पर यह पहली बार वास्तव में एक वज्ञिान बनता है, अन्य वज्ञिानों के बीच अपनी जगह बनाता है, और अपरहिार्य रूप से अनुकूल होता है—जहाँ तक प्रकट की गई सच्चाइयों की प्रकृति अनुमति देती है— वज्ञिान और शक्षिा की सभी शर्तों के अधीन हो जाता है—जबकि धर्मशास्त्र पर सभी पछिले कार्य, यद्यपि उनमें अधकि या कम मात्रा में वज्ञिान की कुछ वशिेषताएँ थीं, एक पूरी तरह से अलग उद्देश्य के लिए लखिे गए थे—वद्यिालय के लिए नहीं, बल्कि जीवन के लिए।

जब से हमारे देशी स्कूलों में ऑर्थोडॉक्स डॉगमैटकि थयिोलॉजी को शामलि कयिा गया है, तब से इसके वकिास में तीन वशिष्टि चरणों की पहचान की जा सकती है।

सबसे पहले, पहले अस्सी वर्षों (1631–1711) के दौरान, इसे अलग-अलग प्रबंधों के रूप में पढ़ाया जाता था, जनिके बीच लगभग कोई व्यवस्थति संबंध नहीं था और वश्विास के धर्मनरिपेक्ष सद्धिांतों को अन्य ईसाई सच्चाइयों से सख्त रूप से अलग नहीं कयिा गया था। इसीलिए इसे 'डॉगमैटकि थयिोलॉजी' के बजाय सामान्य रूप से 'थयिोलॉजी' कहा जाता था, हालांकि यह मुख्य रूप से धर्मशास्त्रों से संबंधति था। यह सब कीव अकादमी की तीन या चार पाठ्यपुस्तकों से जाना जाता है, जो पांडुलपिि के रूप में संरक्षति हैं। इनमें से सबसे पुरानी (1642 से 1646 तक पढ़ाई गई) अपने प्रबंधों की व्यवस्था में थॉमस एक्वनिास की प्रसद्धि *सुम्मा थयिोलॉजकिा* ([118]) के क्रम का अनुसरण करती है, जहाँ एक नश्चिति प्रणाली के नशिान अभी भी दखिाई देते हैं; दूसरी पाठ्यपुस्तक (1693–1697) में, नबिंध अब कसिी भी आंतरकि संबंध से नहीं जुड़े हैं, बल्कि केवल प्रत्येक की शुरुआत में रखे गए एक नबिंध से दूसरे नबिंध तक बाहरी मौखकि संक्रमणों द्वारा जुड़े हैं; तीसरे (1702–1706) और चौथे (1706–1711) पाठ्यपुस्तकों में, ऐसे बाहरी संबंध भी कभी-कभी अनुपस्थति होते हैं। ईश्वर, अवतार, चर्च, संस्कार और वश्विास के अन्य सद्धिांतों पर चर्चा करते हुए, इन सभी पाठ्यपुस्तकों में पापों और सद्गुणों पर, यानी नैतकि धर्मशास्त्र के वषियों पर, प्रबंध भी शामलि हैं। इन सच्चाइयों को स्पष्ट करने में प्रयुक्त वधिि पूरी तरह से शास्त्रीय (स्कॉलास्टकि) है। यह बहसों (disputatio) की एक श्रृंखला से बनी है, जनिमें से प्रत्येक को कई प्रश्नों में वभिाजति कयिा गया है; इन प्रश्नों को और भी छोटे प्रश्नों में उप-वभिाजति कयिा जाता है और सबसे वशिष्टि प्रस्तावों में व्यक्त कयिा जाता है; इसके बाद प्रमाण, कई आपत्तयिां और खंडन आते हैं। इन पाठ्यपुस्तकों में दृष्टकिोण ऑर्थोडॉक्स चर्च की भावना में और पूरी तरह से ववािदास्पद है, वशिेष रूप से पापस्टिों और प्रोटेस्टेंटों के खलिाफ; परणिामस्वरूप, ववािदास्पद वषियों की गहराई से जांच की जाती है, और, सकारात्मक दृष्टकिोण से सच्चाइयों की व्याख्या करने के बाद, उन्हें वशिेष ववािदास्पद ग्रंथों (tractatus Theologiae controversae) को समर्पति कयिा जाता है। हमारे यहाँ स्कूलास्टकि धर्मशास्त्र के इतने अव्यवस्थति रूप में और इस तरह की पद्धति के साथ पहली बार प्रकट होने का कारण यह है कि, रूप के लहिाज़ से, इसे यूरोप से हमारे यहाँ लाया गया था, जहाँ कीव कॉलेज के लगभग सभी पहले शक्षिक शक्षिति हुए थे, और जहाँ, बेहतरीन स्कूलों में, स्कूलास्टसिज़्म अभी भी प्रचलति था।[119] जहाँ तक उस दशिा का सवाल है, जसिे इसने अपनाया, इसका स्पष्टीकरण उस समय की ऑर्थोडॉक्स चर्च की भावना और परस्थितियिों से मलिता है, जो उस समय ग्रीस और रूस दोनों में—दक्षणि-पश्चमि के साथ-साथ पूर्व में भी—रोमन कैथोलकिों और प्रोटेस्टेंटों के सबसे कठोर हमलों का सामना कर रही थी।

---

[118] *थोमा अक्वनिाटसि* — *सुम्मा थओलोजयिाई*, कई अवसरों पर प्रकाशति। इसमें तीन भाग हैं और यह न केवल डॉगमैटकि बल्कि नैतकि शक्षिा भी प्रस्तुत करता है। *वाल्ची* — *बब्रिल. थओलॉग.* 1, पृ. 28.

[119] कएिव अकादमी *का इतहिास*, हरिोमों *क मकारी बुल्गाकोव द्वारा*, सेंट पीटर्सबर्ग, 1843, पृ. 36–39, 61–62, 69–74, 136–138.

थेओफान प्रोकपोवचि, जिन्होंने 1711 से 1716 तक कीव अकादमी में डॉगमैटिक थियोलॉजी पढ़ाई, उन्होंने पहली बार इसे नैतिक धर्मशास्त्र—[120] —से एक अलग विषय के रूप में अलग किया और इसे एक व्यवस्थित ढांचे में प्रस्तुत किया; इसलिए उन्हें रूस में व्यवस्थित धर्मशास्त्र का जनक माना जाता है। उनकी डॉगमैटिक्स की रूपरेखा इस प्रकार है: पहला भाग स्वयं ईश्वर पर चर्चा करता है (de Deo ad intra): 1) सार में एक और 2) व्यक्तियों में त्रिमूर्ति; दूसरा भाग बाहरी दुनिया के संबंध में ईश्वर पर चर्चा करता है (de Deo ad extra), अर्थात्, उनके कार्यों में, और विशेष रूप से: 1) उनकी सृष्टि: (क) दृश्यमान जगत और (ख) अदृश्य जगत, और (2) उसकी दिव्य व्यवस्था के संबंध में: (क) सभी प्राणियों के संबंध में सामान्य और (ख) पतित मानवता के संबंध में विशेष, जो यीशु मसीह के माध्यम से मानव जाति के पुनर्स्थापन में निहित है।[121] कुल मिलाकर, रूपरेखा स्पष्ट रूप से ठोस है, हालांकि विवरणों में (विशेष रूप से अंतिम खंड के उप-विभाजन में: मानव जाति के पुनर्स्थापन पर) यह अपनी कमियों से रहित नहीं है, और यद्यपि लेखक स्वयं इसे पूरा नहीं कर सके, क्योंकि उन्होंने अपनी टिप्पणियों को केवल मानव जाति के पतन पर प्रबंध तक ही पहुँचाया था।[122] इन नोट्स में प्रयुक्त विधि में अभी भी स्कॉलैस्टिसिज़्म का प्रभाव दिखता है, हालांकि अब यह एक अधिक मध्यम रूप में है: सच्चाइयाँ अधिकांशतः विवादों के रूप में नहीं, बल्कि सकारात्मक रूप में प्रस्तुत की गई हैं; कई निरर्थक प्रश्न हटा दिए गए हैं। इन नोट्स के स्वर में विवादात्मकता अभी भी प्रमुख है, हालांकि ये मुख्य रूप से पापियों के खिलाफ निर्देशित हैं। लेखक व्यापक धर्मशास्त्रीय विद्वता का प्रदर्शन करता है। हालांकि, यह स्वीकार किए बिना नहीं रहा जा सकता कि थियोफेनेस, ने संभवतः अपनी नोट्स जल्दबाजी में तैयार की थीं, उन्होंने मौजूदा पाठ्यपुस्तकों से लिए गए विचारों पर हमेशा पर्याप्त विचार नहीं किया, और बाद में इन नोट्स को पूरक बनाने या सुधारने का भी समय नहीं मिला — इसलिए, जैसा कि कीव के मेट्रोपॉलिटन, हिज़ एमिनेंस इवेन्टिन, पहले ही उल्लेख कर चुके थे, कुछ स्थानों पर हरगार्ड और अन्य विदेशी धर्मशास्त्रियों के सीधे उद्धरण बने हुए हैं।[123]

थेओफेनेस प्रोकॉपोविच के बाद, लगभग एक पूरे सदी (1715–1809) तक, हमारे देश में डॉगमैटिक थियोलॉजी (dogmatic theology) को पढ़ाने के क्रम और विधि में एक उल्लेखनीय उतार-चढ़ाव रहा। कुछ लोग थियोफान्स से पहले प्रचलित पुराने दृष्टिकोण का पालन करते रहे, यानी, उन्होंने अपने नोट्स को एक-दूसरे से असंबंधित, अलग-अलग ग्रंथों के रूप में संकलित किया; अन्य, इसके विपरीत, थियोफान्स का अनुसरण करते हुए, कुछ निश्चित प्रणाली के भीतर धर्मशास्त्रों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया। कुछ ने पहले की पद्धति—स्कूलास्टिक, यद्यपि किमोबेश मध्यम—को बनाए रखा और सच्चाइयों की व्याख्या न केवल सकारात्मक रूप से बल्कि विवादात्मक रूप से भी की, और वह भी हमारी भाषा से अलग, अर्थात् लैटिन में; अन्य लोगों ने इन सच्चाइयों को केवल सकारात्मक तरीके से, सरलता से और आम जनता की समझ में आने वाले तरीके से प्रस्तुत किया, जिसमें लगभग कोई स्कूलास्टिकवाद या विवादात्मकता नहीं थी, और वह भी देशी भाषा में।

धर्मशास्त्रीय धर्मतत्व पर लिखी गई कृतियों में, जो मध्यम स्तर के शास्त्रीय और उपदेशात्मक-विवादपरक तरीके का उपयोग करके अलग-अलग प्रबंधों के रूप में लिखी गई हैं, सबसे उल्लेखनीय हैं: क) आर्चिमांड्राइट सिल्वेस्ट्र कुलाब्का के धर्मशास्त्रीय व्याख्यान, जो 1741 से 1745 तक कीव अकादमी में दिए गए थे, हालांकि अधूरे हैं;[124] ख) आर्चिमांड्राइट याकिन्फ कार्पिनस्की द्वारा *लिखित *एक संक्षिप्त डॉगमैटिक और पोलमिकिल थियोलॉजी**, जिसे 1771–1772 में कोलोम्ना सेमिनरी में पढ़ाया गया था, और ग्यारह अध्यायों में व्यवस्थित किया गया था;[125] c) अंत में,

---

[120] वे समग्र धर्मशास्त्र को दो भागों में विभाजित करते हैं, पहले को: pars Theologiae de fide seu de credendis, और दूसरे को: pars Theologiae de faciendis कहते हैं (देखें Prolegom. अध्याय 3)।

[121] डॉगमैटिक थियोलॉजी के लिए अपनी योजना की एक विस्तृत व्याख्या के बाद, थियोफेन्स निष्कर्ष निकालते हैं: 'इसे और संक्षेप में कहने के लिए: *ईश्वर* पर *आंतरिक रूप से* उनकी सार और व्यक्तियों में, और *बाहरी रूप से* उनकी गतिविधि में विचार किया जाना चाहिए, जो सृष्टि और दिव्य व्यवस्था में निहित है। परन्तु, दिव्य व्यवस्था दो प्रकार की है: एक सामान्य, और दूसरी विशेष, जिसमें हमारे उद्धार का सम्पूर्ण विषय निहित है (उसी में)।

[122] हालाँकि, थियोफेंस की *डॉगमैटिक थियोलॉजी*, उनकी तैयार की गई रूपरेखा के अनुसार, पूरी तरह से कीव के मेट्रोपॉलिटन सैमुअल द्वारा पूरी की गई और 1782 में लाइपज़िग में तीन खंडों में प्रकाशित की गई।

[123] ऐतिहासिक हस्तियों की शब्दावली: रूस में पुरोहित वर्ग के लेखक, खंड II, पृ. 314. द्वितीय संस्करण.

[124] कीव अकादमी का इतिहास, सेंट पीटर्सबर्ग, 1843, पृ. 139–141।

[125] यह शीर्षक के अंतर्गत प्रकाशित हुआ था: *Compendium orthodoxae Theologicae doctrinae, ab Arch. *Hyacinto Harpinski* concinnatum*. लाइपज़िग, 1786.

आर्चमैंड्राइट सल्विेस्टर लेबेदनि्स्की द्वारा लखि*ति डॉगमैटकि और पोलमिकिल थयिोलॉजी*, जसिे 1797–1799 में काज़ान अकादमी में पढ़ाया गया था, और जसिमें अड़सठ अध्याय शामलि हैं।[126] हालाँकि यह ध्यान देने योग्य है कि बाद के दो कार्यों में नबिंध और अध्याय कसिी जानबूझकर बनाई गई प्रणाली से जुड़े नहीं हैं, वे एक-दूसरे के बाद सबसे स्वाभावकि क्रम में आते हैं, लगभग ठीक वैसे ही जैसे उन्हें आमतौर पर व्यवस्थति कार्यों में व्यवस्थति कयिा जाता है।

प्रणाली के रूप में लखिी गई डॉगमैटकि थयिोलॉजी पर कार्यों में — a) उपदेशात्मक-ववािदात्मक और शैक्षणकि वधियिों का उपयोग करते हुए — नम्निलखिति ज्ञात हैं: **Christian Orthodox Theology** His Eminence जॉर्ज ऑफ कोनशियिा द्वारा[127] और **Dogmatic-Polemical Theology** His Eminence द्वारा इरनेयस फाल्कोव्स्की:[128] । ये दोनों ग्रंथ कीव अकादमी में पढ़ाए गए थे: पहला 18वीं सदी के मध्य में (1751 से 1755 तक), और दूसरा पछिली सदी के अंत और वर्तमान सदी की शुरुआत में (1795–1804), और दोनों थयिोफान प्रोकपोवचि द्वारा तैयार की गई एक योजना के अनुसार संकलति कएि गए थे; ख) पूरी तरह से सकारात्मक तरीके का उपयोग करते हुए, बनिा ववािदास्पदता या शास्त्रीयता के — महामहमि थयिोफलिैक्ट गोर्स्की द्वारा लखिति *'डॉगमैटकि थयिोलॉजी* — मास्को अकादमी में (1769 से 1774 तक) स्वयं लेखक द्वारा तैयार की गई एक योजना के अनुसार पढ़ाई जाती थी, जो वशिेष रूप से कठोर नहीं थी।[129]

अंत में, नम्निलखिति कार्य आम जनता के लिए सरल, सुलभ शैली में और मातृभाषा में लखिे गए थे, बनिा कसिी कठोर प्रणाली के लेकनि काफी हद तक सुसंगतता के साथ:

क) *एक संक्षप्ति ईसाई धर्मशास्त्र* — मास्को के महाधर्माध्यक्ष थयिोफलिक्ट द्वारा, जसिे उन्होंने सर्व-रूसी सहिासन के उत्तराधकिारी, पॉल पेट्रोवचि (1763-1765) को पढ़ाया था: यह तीन भागों में है, और धर्मशास्त्र वशिेष रूप से दूसरे भाग में प्रस्तुत कयिा गया है;[130]

ख) **डॉगमैटकि थयिोलॉजी** — आर्चमैंड्राइट मकरी द्वारा, जसिे 1764–1766 में ट्वर थयिोलॉजकिल सेमनिरी में पढ़ाया गया था[131] ; और — ग) **क्रश्चियिन थयिोलॉजी** — हाइरोमोंक जुवेनैलयिस मेदवेद्स्की द्वारा, जसिमें डॉगमैटक्सि पहला भाग है, जसिे 1797 में संकलति कयिा गया था।[132]

आर्कमैंड्राइट मकारयिस, उनकी उत्कृष्टता आइरेनयिस और उनकी उत्कृष्टता थयिोफलिैक्ट के कार्यों को, अब तक उल्लखिति सभी डॉगमैटकि थयिोलॉजी पर कार्यों में, गहनता और व्यापकता के मामले में सर्वश्रेष्ठ के रूप में सही रूप से मान्यता प्राप्त है।

1809 में शुरू हुई हमारे धर्मशास्त्र वद्यिालयों के सुधार के बाद से—या, अधकि सटीक रूप से, 1812 में इन वद्यिालयों के लिए धर्मशास्त्रों की पाठ्यसूची के प्रकाशन के बाद, और बाद में 1814 में धर्मशास्त्र अकादमयिों और सेमनिारयिों के लिए वधिानों के प्रकाशन के बाद से— — हमारे यहाँ डॉगमैटकि थयिोलॉजी (dogmatic theology) को स्थायी रूप से व्यवस्थति तरीके से पढ़ाया जाता रहा है। इसके लिए एक सामान्य रूपरेखा नर्धिारति की गई है (उपरोक्त पाठ्यक्रम में), और वधि तिथा दशिा दोनों को नर्दिष्ट कयिा गया है (पाठ्यक्रम और वधिानों में)। तब से, जैसा कि सर्ववदिति है, हमारे धर्मशास्त्र अकादमयिों और सेमनिारों के प्रोफेसरों द्वारा ऑर्थोडॉक्स धर्मसद्धिान्तों की एक व्यवस्थति व्याख्या के कई प्रयास लखिे गए हैं, हालांकि, दुर्भाग्य से, इनमें से सभी केवल पांडुलपिि के रूप में ही बने हुए हैं, कुछ नबिंधों को छोड़कर जो हमारे धर्मशास्त्र पत्रकिाओं में प्रकाशति हुए हैं। एकमात्र प्रकाशति कृति मॉस्को वश्िववद्यिालय के प्रोफेसर, आर्चप्रीस्ट पीटर टर्नोव्स्की की 'डॉगमैटकि थयिोलॉजी' है, जो अपनी स्पष्टता और

---

[126] यह दो बार (1799 और 1805 में) इस शीर्षक के तहत प्रकाशति हुआ था: *Compendium Theologiae classicum didactico-polemicum doctrinae orthodoxae Chrietianae, maximo consonum per theoremata et quaestiones expositum... et caet.*

[127] इसे पांडुलपिि के रूप में भी प्रकाशति और संरक्षति कयिा गया है। इसका सारांश *इतहिास ऑफ द कीव अकादमी* (History of the Kyiv Academy), पृष्ठ 141–142 में देखें।

[128] क्रस्टियिने, ऑर्थोडॉक्से, डॉग्मैटकिो-पोलमिकिाए थयिोलॉजी। पूर्व में सबसे प्रतष्ठिति थयिोफ. प्रोकोपोवचि और उनके उत्तराधकिारयिों द्वारा सुसज्जति, रूसी... युवाओं के उपयोग के लिए अनुकूलति एक सारसंग्रह, और आर्चमैंड्राइट *इरनीअस फाल्कोव्स्की* द्वारा उसी प्रतष्ठिति थयिोफ. द्वारा तैयार की गई रूपरेखा के अनुसार अंतमि छह पुस्तकों के अतरिक्ति के साथ पूरा कयिा गया। मास्को 1802.

[129] पूर्वी ऑर्थोडॉक्स चर्च के डॉगमा, या वश्िवासों का ईसाई सद्धिांत..., सेंट पीटर्सबर्ग, 1818। योजना की रूपरेखा के लिए, § 22, पृ. 67 देखें।

[130] इसे कई बार प्रकाशति कयिा गया। *एम. इवजेनी* द्वारा लखिति 'डक्शिनरी ऑफ़ इक्लेसयिास्टकिल राइटर्स' में, *'प्लाटन लेवशनि* प्रवष्टिि देखें /

[131] दो बार प्रकाशति: 1783 और 1790 में, सेंट पीटर्सबर्ग में।

[132] 1806 में मास्को में प्रकाशति।

संक्षिप्तता के लिए विशिष्ट है।[133] 1838 में पूर्व चर्च स्कूल आयोग द्वारा सेमिनरी विषयों के शिक्षण के संबंध में जारी किए गए विनियम, और 1840 में पवित्र सिनिड द्वारा इसी विषय पर जारी किए गए नए विनियम, अन्य बातों के अलावा, वास्तव में ऑर्थोडॉक्स धर्मशास्त्र की विधि और दिशा को तेजी से परिभाषित कर रहे हैं। आशा की जाती है कि इन दिशानिर्देशों के अनुसार हमारे देश में अंततः डॉगमैटिक थियोलॉजी पर व्यवस्थित पाठ्यपुस्तकें संकलित होंगी, जो विषय के योग्य हों और धर्मशास्त्र महाविद्यालयों में शिक्षित हो रहे युवाओं तथा समग्र चर्च की आवश्यकताओं के लिए पूर्णतः उपयुक्त हों।[134]

यह बिना किसी कारण के नहीं है कि, पूरे हाल के काल में ऑर्थोडॉक्स डॉगमैटिक थियोलॉजी के एक विज्ञान के रूप में विकास की बात करते हुए, हमने केवल अपने ही देश तक ही सीमित रहा है। ग्रीस और पूरे पूर्व में, कॉन्स्टेंटिनोपल के पतन के समय से, शिक्षा अत्यधिक पतन की स्थिति में पहुँच गई थी; विद्यालय लगभग अस्तित्वहीन थे, और जहाँ वे मौजूद थे, वे केवल प्राथमिक संस्थाएँ थीं जहाँ धर्मशास्त्र नहीं पढ़ाया जाता था।[135] उच्च शिक्षा की चाह रखने वाले सभी लोग या तो पश्चिमी संस्थानों में जाने के लिए मजबूर थे, या उन्होंने अपना पूरा जीवन गहन घरेलू अध्ययन को समर्पित कर दिया।[136] पिछली सदी के मध्य तक, प्रसिद्ध एवेर्निनियोस बुलगारिस के समय में—जिन्होंने क्रमशः इओनिना, माउंट अथोस और कॉन्स्टेंटिनोपल में जिम्नेज़ियम के प्रधानाध्यापक के रूप में सेवा की, और जो व्यवस्थित तरीके से धर्म के सिद्धांतों को पढ़ाने वाले पहले व्यक्ति थे—तब जाकर यह विषय ग्रीक स्कूलों में जाना गया;[137] लेकिन यह वहां केवल पांडुलिपियों से ही लगातार पढ़ाया जाता था, जो हमारे लिए अज्ञात हैं। ग्रीस को एक स्वतंत्र राज्य का दर्जा बहाल होने पर, जब राज्य द्वारा स्थापित एथेंस विश्वविद्यालय में धर्मशास्त्र के सभी विषयों की संपूर्णता और व्यापकता में शिक्षा के लिए एक पद की स्थापना की गई, और जैसे-जैसे सामान्य शिक्षा—धर्मनिरपेक्ष और आध्यात्मिक दोनों—ग्रीकों के बीच अधिक से अधिक फैलने लगी, यह आशा की जाती है कि वे एक बार फिर से ऑर्थोडॉक्स डॉगमैटिक थियोलॉजी के विकास में सक्रिय भाग लेंगे, जिसे एक विज्ञान के अर्थ में समझा जाता है।

डॉगमैटिक प्रणालियों और पाठ्यपुस्तकों से हटकर, विश्वास के संक्षिप्त विवरणों और विशिष्ट डॉगमैटिक अध्ययनों की ओर मुड़ने पर, हमें वर्तमान अवधि के दौरान, ग्रीस और हमारे अपने देश दोनों में, दोनों की एक पर्याप्त संख्या मिलती है।

विश्वास की संक्षिप्त व्याख्याओं और स्पष्टीकरणों में, सबसे उल्लेखनीय हैं: I) ग्रीक भाषा में — a) *पूर्वी कैथोलिक और प्रेरितिक चर्च का धर्मोपदेश*, जिसे हायरोमोंक मित्रोफान क्रिटोपोलोस ने लिखा था, जो बाद में अलेक्जेंड्रिया के पैट्रिआर्क बने, और जिसे उन्होंने यूरोप की यात्रा के दौरान विदेशी विद्वानों के अनुरोध पर लिखा था;[138] बी) यरूशलेम के पैट्रिआर्क डोसिथियस का *धर्मोपदेश*, जिसे 1672 में यरूशलेम की परिषद में पढ़ा और अनुमोदित

---

[133] दो बार प्रकाशित: 1838 और 1843 में।

[134] माध्यमिक धार्मिक शिक्षा संस्थानों के लिए इस तरह की पाठ्यपुस्तक, वास्तव में, हाल ही में हमारे देश में इस शीर्षक के तहत प्रकाशित हुई है: 'ऑर्थोडॉक्स कैथोलिक पूर्वी चर्च का डॉगमैटिक थियोलॉजी, जिसमें धर्मशास्त्र के पाठ्यक्रम का एक सामान्य परिचय भी शामिल है — जो रेक्टर, आर्चिमांड्राइट एंथनी द्वारा कीव थियोलॉजिकल सेमिनरी में पढ़ाया जाता है'। रेक्टर, *आर्चिमांड्राइट एंथनी द्वारा* सेमिनरी /

[135] *मार्ट. क्रूसियो* द्वारा टर्कोग्रीसियाई लिब्री ऑक्टो.... बेसल में प्रकाशित, पृष्ठ 94, 205, 246 और 537; क्रॉनिकिन इक्ल. ग्रीक. *फिल. साइप्री,* पृष्ठ 507। क्रूसियो स्वयं कहते हैं, 'पूरे ग्रीस में, विद्वता कहीं भी नहीं फलती-फूलती; उनके पास कोई अकादमियाँ या सार्वजनिक प्रोफेसर नहीं हैं, सिवाय तुच्छ स्कूलों के, जिनमें लड़कों को होरोलोज़ियन, ऑक्टेओचोस, साल्टर और मास में उपयोग की जाने वाली अन्य पुस्तकें पढ़ना सिखाया जाता है।' वास्तव में, पुरोहितों और भिक्षुओं में से बहुत कम ही उन्हें सचमुच समझते हैं... क्रीट ही विज्ञानों के लिए एकमात्र शरणस्थली बनी रही (टर्कोग्रेक., पृ. 537)। कॉन्स्टेंटिनोपल में पहला ग्रीक स्कूल मेहमद चौथे (शासनकाल 1644–1689) के शासनकाल के दौरान अमीर व्यापारी मानोलाकिस द्वारा स्थापित किया गया था (पैट्रिआर्क *डोसिथियस द्वारा* जेरूसलम का इतिहास, खंड II, पृष्ठ 477)।

[136] कुछ इटली की अकादमियों में जाते हैं, जहाँ वे प्राचीन भाषा, दर्शन के सिद्धांत *और पितरों के धर्मशास्त्र* का अध्ययन करते हैं (Turcograec... पृ. 205)। हालाँकि, इन सभी प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद, यूनानियों के बीच—और विशेष रूप से यूनानी पादरियों के बीच—विद्वानों की संख्या लगातार महत्वपूर्ण बनी रही / मोस्कोपोलिस के डेमेट्रियस, सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दी के कुछ हिस्से के दौरान, उनकी संख्या *नियानवे* गिनते हैं *(मोस्कोपोलिस के डेमेट्रियस प्रोकॉपियस की* 'पिछली शताब्दी के ग्रीक विद्वानों, और कुछ जो हमारे अपने समय में अभी भी फल-फूल रहे हैं, की संक्षिप्त सूची', 1720 में संकलित*)* / देखें *फैब्रिसियस का* *ब्राइब्लियोथ. ग्रेक.*, खंड XI, पृ. 770–804, हैम्बर्ग, 1722)।

[137] लेख देखें: *'आधुनिक ग्रीस में शिक्षा की स्थिति: पिछली सदी की शुरुआत से लेकर हाल की घटनाओं तक, अर्थात् स्वतंत्रता युद्ध* (1821) *तक*, 1843 के *मोस्क्वित्यानिन* में, भाग VI, पृ. 367–403, और *आध्यात्मिक लेखकों की शब्दकोश*, *मॉस्को: एवगेनिया,* प्रविष्टि के अंतर्गत: *एवगेनी बुल्गर।*

[138] 'पूर्वी चर्च का धर्मोपदेश, कैथोलिक और प्रेरित... मित्रोफान द हायरोंक द्वारा', लैटिन अनुवाद के साथ प्रकाशित, हेल्म्स्टाडी 1661।

कयि गया था, और बाद में सभी पूर्वी प्राइमेट्स की ओर से 1723 में हमारे पवत्रि सनिड को ऑर्थोडॉक्स वशि्वास की सटीक व्याख्या के रूप में भेजा गया था,[139] और सी) *ऑर्थोडॉक्स कन्फेशन, या ऑर्थोडॉक्स एपोस्टोलकि चर्च के वशि्वास की व्याख्या* — यूजीन बुल्गारसि द्वारा, जन्हिोंने स्लावनेन और खेरसन के आर्चबशिप के पद पर रूस में अपना जीवन समाप्त कयि;[140] II) रूसी भाषा में — a) उनकी उत्कृष्टता थयिोफान प्रोकपोवचि का *कैटेकज़िम्*, जो लंबे समय तक स्कूलों में उपयोग कयि जाता रहा;[141] b) मॉस्को के मेट्रोपॉलटिन, उनकी उत्कृष्टता प्लेटो द्वारा लखिति संक्षप्ति और व्यापक दोनों प्रकार के *धर्मशास्त्र*, जन्हिोंने इस उद्देश्य को भी पूरा कयि;[142] c) अंत में, मॉस्को के मेट्रोपॉलटिन, उनकी उत्कृष्टता फलिारेत द्वारा लखिति *धर्मशास्त्र*, वशिेष रूप से वस्तिृत वाला, जो अब स्कूलों में शक्षिण और सभी ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों के उपयोग के लिए प्रकाशति कयि गया है।[143]

वशिेष धर्मशास्त्रीय अध्ययन, वर्तमान काल में और अतीत में, मुख्य रूप से उन वशि्वास के मामलों से संबंधति रहे हैं जो गैर-ऑर्थोडॉक्स समूहों द्वारा हमले के अधीन रहे हैं, और इसलिए अधकि ववािदात्मक प्रकृतकि हैं। इनमें से सर्वश्रेष्ठ कृतयिाँ हैं:

I) पापयिों के वरिुद्ध: a) *पवत्रि आत्मा की उत्पत्त*ि पर — जॉर्ज कोरेसयिस, इओनकियिोस गैल्याटोव्स्की, और वशिेष रूप से एडम ज़र्नकिोव और थयिोफान प्रोकपोवचि द्वारा; b) *पोप की सर्वोच्चता के* सद्धिांत का खंडन — जॉर्ज कोरेसयिस, गलयिातोव के इओनकियिस और यरूशलेम के पैट्रआर्क नेक्टारयिस; c) *यूखरस्ति की रूपांतरण के समय पर* — लकिहुद भाइयों, इओनकियिस और सोफ्रोनओिस, रोस्तोव के संत डेमेट्रयिस और यावोर्स्क के स्टीफन द्वारा;

II) प्रोटेस्टेंटों के वरिुद्ध: क) *चर्च के सात संस्कारों पर,* साथ ही *आइकन (चत्रिों), मध्यस्थता और संतों पर* — जॉर्ज कोरेसयिा; 6) *सामान्य रूप से लूथरन और कैल्वनिवादी त्रुटयिों का खंडन* — मेलेटयिस सरिगि, लकिहुद भाइयों, स्टीफन यावॉर्स्की और थयिोफलिैक्ट लोपटस्कि;

III) संप्रदायवादयिों के वरिुद्ध: a) *मसीहा-वरिोधी के आगमन और युग के अंत के समय पर* — स्टीफन यावोर्स्की द्वारा; b) *सामान्यतःसभी संप्रदायवादी त्रुटयिों का खंडन* — रूस के पवत्रि पैट्रआर्कों के नाम पर प्रकाशति पुस्तकें, साथ ही सेंट दमित्रिी ऑफ रोस्तोव, थयिोफलिैक्ट ऑफ लोपातस्कि, पटिरिमि, थयिोटोकोस,[144] उनकी उत्कृष्टता फलिारेट, मॉस्को के मेट्रोपॉलटिन[145] और उनकी उत्कृष्टता इग्नाटयिस ऑफ वरोनेज़।[146]

---

[139] मूल, एक लैटनि अनुवाद के साथ, कमिल की *लब्रिी सम्बिोल. एक्ल. ग्रेके* में पाया जा सकता है, जबकि रूसी संस्करण इस शीर्षक के तहत प्रकाशति हुआ था: **ऑर्थोडॉक्स-कैथोलकि चर्च के पैट्रआर्कों का ऑर्थोडॉक्स वशि्वास पर पत्र* /*

[140] इसे 1765 में एम्स्टर्डम में हेलेनकि ग्रीक में मुद्रति कयि गया था।

[141] एम. इवजेनी की शब्दकोश में, *'थयिोफान प्रोकोपोवचि* शीर्षक के अंतर्गत उन पर प्रवष्टिि देखें /

[142] वहाँ *'पलाटन लेवशनि* प्रवष्टिि के अंतर्गत भी देखें /

[143] इस अवधि के दौरान प्रकाशति अन्य धर्मशक्षिा-पुस्तकों में, ग्रीस में नम्निलखिति जानी जाती हैं: (क) *चर्च के दैवी और पवत्रि सद्धिांतों का सारांश* — *ग्रेगोरी प्रोटोसन्सिेलस द्वारा,* वेनसि, 1635; (6) *पवत्रि धर्मशक्षिा... *नकिोलस बुलगारस* द्वारा, वेनसि 1861; c) *Sacra tabula fidei Apostolicae, sanctae, oecumeuicae ac orthodoxae graecae orientalis Ecclesiae...*, केवल लैटनि में प्रकाशति, *दयिोक्लेटस पॉलीइड्स,* पवत्रि पर्वत के आर्चबशिप द्वारा, 1736; II) रूस में: a) एक संक्षप्ति धर्मशास्त्र, या वशि्वास के अनुच्छेदों का सार, *पीटर मोहलि द्वारा,* 1645 में कीव में, 1646 में लवावि में और 1649 में मास्को में प्रकाशति; ख) एक पुस्तक एक, सच्चे, ऑर्थोडॉक्स वशि्वास और पवत्रि चर्च पर, 1648 में मास्को में प्रकाशति; ग) धर्मशक्षिा, या पवत्रि, ऑर्थोडॉक्स-कैथोलकि चर्च के वशि्वास में एक संक्षप्ति नरि्देश..., पवत्रि पूर्वी चर्चों की शक्षिाओं के अनुसार प्रस्तुत, चेर्नत्सिा, 1715; घ) पुरोहतिों के लिए आवश्यक मामलों का एक संग्रह, सुप्रस्ल में 1722 में मुद्रति; ई) द न्यू मेंटर, या युवाओं के लिए नरि्देश, आर्चमांड्राइट *मकारी सुसाल्नकिोव द्वारा,* सेंट पीटर्सबर्ग, 1785 में प्रकाशति; एफ) पादरी *अलेक्ज़ेंडर बेलीकोव का* कैटेकज़िम, मास्को, 1818 में प्रकाशति, और अन्य।

[144] यहाँ उल्लेख कयि गए ग्रीक लेखकों की कृतयिों के शीर्षकों के लिए, *हाइनक्टि* की *Abbildung der alt. und neuen griech. Kirche* (लाइपज़ग, 1711), परशिष्टि, पृ. 70–80 देखें; कुछ के लिए, फैब्रसियिस की *Biblioth. Graec., खंड X, पृ. 789–799 और खंड XI, पृ. 770–804, हैम्बर्ग, 1722। जहाँ तक रूसी लेखकों का सवाल है, मेट्रोपॉलटिन *यूजीन* द्वारा लखिति 'Historical Dictionary…' देखें — उनके संबंधति नामों के अंतर्गत।

[145] एक बोलने वाले पुराने वशि्वासी के साथ संवाद, *क्रशि्चयिन रीडगि्स* 1835–1836 में प्रकाशति।

[146] पवत्रि सोलोवेत्स्की मठ की सत्यता बनाम 'सोलोवेत्स्की याचकिा' नामक याचकिा की मथि्या, जो वशि्वास संबंधी है, सेंट पीटर्सबर्ग, 1844, और अन्य।

हाल ही में, हमारे देश में प्रकाशित होने वाली तीन धार्मिक पत्रिकाओं में कई व्यक्तिगत डॉगमैटिक अध्ययन और, अधिक सामान्य रूप से, विभिन्न लंबाई के कार्य प्रकाशित हुए हैं: *क्रिश्चियन रीडिंग्स*,[147] *संडे रीडिंग्स*[148] और *द राइटिंग्स ऑफ द होली फादर्स विद एडिशन्स ऑफ अ स्पिरिचुअल नेचर*,[149] साथ ही हमारे धर्मशास्त्र अकादमियों के छात्रों के कार्यों के कभी-कभार प्रकाशनों में: सेंट पीटर्सबर्ग, कीव और मॉस्को।[150]

अनुभाग 1.
ईश्वर स्वयं में

क्योंकि स्वर्ग में तीन गवाह हैं:
पिता, वचन और पवित्र आत्मा;
और ये तीनों एक हैं
(1 यूहन्ना 5:7)।

§9. ऑर्थोडॉक्स चर्च की शिक्षा के अनुसार, परमेश्वर के बारे में हमारे ज्ञान की सीमा।

ऑर्थोडॉक्स चर्च क्रीड में ईश्वर के बारे में अपनी सभी शिक्षाओं की शुरुआत *'मैं विश्वास* करता हूँ...' शब्दों से करती है, और जो पहला सिद्धांत (डॉग्मा) वह हम में स्थापित करना चाहती है, वह इस प्रकार है: 'ईश्वर मानव मन के लिए अकल्पनीय है; मनुष्य उसे केवल आंशिक रूप से ही जान सकते हैं—उतनी ही सीमा तक जितनी उन्होंने स्वयं अपनी कृपा से अपने विश्वास और भक्ति के लिए प्रकट होने की इच्छा की है।"[151] यह एक निर्विवाद सत्य है: यह पवित्र

---

[147] उदाहरण के लिए: 1) ईश्वर का सिद्धांत, यथा वह एक है, और 2) ईश्वर पिता, ईश्वर के पुत्र और पवित्र आत्मा का सिद्धांत, क्रिश्चियन रीडिंग्स 1822, VI, पृ. 50 और 166; 3) संरक्षक देवदूत पर एक प्रवचन, 1823, XI, 301; 4) पवित्र आत्मा और उनके कार्यों पर, 1833, 11, 163; 5) यीशु मसीह के मध्यस्थता के माध्यम से परमेश्वर और मनुष्य के बीच मेल-मिलाप पर, 1833, IV, 317; 6) पृथ्वी पर यीशु मसीह द्वारा अपनी कलीसिया की स्थापना पर, 1839, III. ४३ और १७४; ७) मसीह की पवित्र कलीसिया पर, १८४६, IV, ७०; ८) पूर्व-निर्धारण पर, १८४५, IV, ३०१; ९) स्वर्गीय लोगों की स्मृति पर एक ग्रंथ, १८२४, XVI, १६९ और अन्य।

[148] उदाहरण के लिए: 1) पवित्र आत्मा की कृपा पर, वर्ष V, पृ. 59; 2) संतों के गौरव पर, VI, 73; 3) परमेश्वर की माता के व्यक्तित्व और सेवकाई से संबंधित पुराने नियम की पूर्वछवियाँ, VII, 293; 4) दिवंगतों की स्मृति, VIII, 251; 5) परम पवित्र कुँवारी मरियम पर ऑर्थोडॉक्स कैथोलिक चर्च की शिक्षा, XI, 273, और अन्य।

[149] अर्थात्: 1) मसीह की ऑर्थोडॉक्स चर्च पर और 2) ईश्वर की व्यवस्था पर (पूरक के भाग 1 में); 3) यीशु मसीह की त्रैयात्मक सेवकाई पर (भाग 2 में); 4) संसार के उद्धारकर्ता को ग्रहण करने के लिए मानव जाति की तैयारी पर (भाग 3 में); 5) हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के व्यक्तित्व पर (भाग 5 में), और अन्य।

[150] उदाहरण के लिए, निम्नलिखित प्रबंध इस प्रकार हैं: 1) संतों के बुलावे पर; 2) एंटेलॉन्स की पूजा पर; 3) मृतकों के स्मरण पर; 4) यीशु मसीह के अधोलोक में अवतरण पर; 5) पवित्र अवशेषों की पूजा पर; 6) सुसमाचार में उल्लेखित दैत्यग्रस्त लोगों पर (*सेंट पीटर्सबर्ग थियोलॉजिकल के भाग III में व्यायाम के लिए छात्र* में) अकादमी, 6वां शैक्षणिक वर्ष, सेंट पीटर्सबर्ग, 1825 में प्रकाशित); 7) पवित्र आत्मा की उत्पत्ति पर (*द थियोलॉजिकल अकादमी के छात्रों के निबंध, 5वां शैक्षणिक वर्ष* के खंड 1 में, कीव, 1832); 8) पापियों के धर्म परिवर्तन में ईश्वर की दिव्य व्यवस्था के तरीकों पर... (*कीव थियोलॉजिकल अकादमी के छात्रों के संकलित कार्यों* के खंड 1, कीव, 1839 में); 9) परमेश्वर के पुत्र की दिव्यता पर, 10) पुष्टि पर, और 11) दिवंगतों के स्मरण पर (मास्को थियोलॉजिकल अकादमी के छात्रों द्वारा लिखे गए, अलग से प्रकाशित)।

[151] इस प्रकार ऑर्थोडॉक्स चर्च सिखाती है: I) *ईश्वर के सार के बारे में*: 'ईश्वर अपने सार में क्या है, यह कोई भी प्राणी नहीं जान सकता—न केवल दृश्यमान, बल्कि अदृश्य भी, यानी, स्वयं स्वर्गदूत भी नहीं; क्योंकि सृष्टिकर्ता और प्राणी के बीच कोई भी तुलना नहीं है। लेकिन हमारी भक्ति के लिए, जैसा कि यरूशलेम के सिरिलियन गवाही देते हैं, *यह जानना* पर्याप्त है कि हमारा एक ही ईश्वर है, एक ऐसा ईश्वर जो है और जो शाश्वत है, जो हमेशा स्वयं के समान है और वही है" (ऑर्थोडॉक्स कन्फेशन, भाग I, प्रश्न 8 का उत्तर); II) *ईश्वर में व्यक्तियों की त्रिमूर्ति पर*: "कोई भी समानता इस रहस्य को पूरी तरह से समझा नहीं सकती या इसे हमारे मन में अलग से प्रस्तुत नहीं कर सकती—कि परमेश्वर सार में

शास्त्र में स्पष्ट रूप से वर्णित है और चर्च के पवित्र पिताओं तथा शिक्षकों की रचनाओं में विस्तार से समझाया गया है, और यह तर्कसंगत कारणों द्वारा भी समर्थित है।

पवित्र शास्त्र एक ओर यह सिखाते हैं: क) कि परमेश्वर *अप्राप्य ज्योति में वास करते हैं, जिसे किसी भी मनुष्य ने नहीं देखा है और न देख सकता है* (1 तीमुथियुस 6:16);[152] (ख) कि न केवल मनुष्यों के लिए, बल्कि सभी सृजित प्राणियों के लिए, उसका सार अज्ञात है, *उसके उद्देश्य अथाह हैं और उसके मार्ग अगम्य हैं* (रोमियों 11:33–34; तुलना करें यूहन्ना 1:18; 1 यूहन्ना 4:12; Sir. 18:3,4), और c) कि परमेश्वर को केवल परमेश्वर स्वयं ही पूरी तरह से जानते हैं: *मनुष्यों में से कौन जानता है कि मनुष्य के भीतर क्या है, सिवाय उस मानवीय आत्मा के जो उसमें वास करती है? इसी प्रकार, परमेश्वर की बातें परमेश्वर की आत्मा के सिवाय कोई नहीं जानता* (1 Cor. 2:11), और *पुत्र को कोई नहीं जानता सिवाय पिता के; और पुत्र के सिवाय कोई पिता को नहीं जानता* (मत्ती 11:27)। फिर भी, दूसरी ओर, पवित्र शास्त्र हमें बताते हैं कि अदृश्य और अगम्य स्वयं मानवजाति के सामने प्रकट होने के लिए प्रसन्न हुए —

क) सृष्टि में: *उसकी अदृश्य गुणधर्म, उसकी अनन्त शक्ति और दिव्य स्वभाव, सृष्टि की उत्पत्ति से ही उसके कार्यों पर मनन करने से स्पष्ट रूप से देखे गए हैं, ताकि वे बहानारहित हों* (रोमियों 1:20; तुलना करें भजन संहिता 18:2–5; बुद्धिमान 13:1–5), और इससे भी अधिक—

(ख) अलौकिक प्रकटीकरण के माध्यम से, जब परमेश्वर, *जिन्होंने प्राचीन काल में भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बहुविध और विभिन्न प्रकार से पुरखों से बात की थी, ने इन अंतिम दिनों में अपने पुत्र के द्वारा हमसे बात की है* (इब्रानियों 1:1–2; तुलना करें नीतिवचन 9:16–19), और जब परमेश्वर के इस एकमात्र पुत्र ने, *देह में* पृथ्वी पर प्रकट होकर (1 तीमुथियुस 3:16), *हमें प्रकाश और समझ दी, ताकि हम सच्चे परमेश्वर को जान सकें* (1 यूहन्ना 5:20), और बाद में प्रेरितों के माध्यम से उनकी शिक्षा का प्रचार किया, उन पर *सत्य के आत्मा को* भेजकर, जो *सभी चीजों में और परमेश्वर की गहराइयों में प्रवेश करता है* (यूहन्ना 14:16–18; 1 कुरिन्थियों 2:10)। अंत में, पवित्र शास्त्र इस बात की पुष्टि करते हैं कि, यद्यपि इस प्रकार, *एकलौते पुत्र, जो पिता की गोद में हैं,* ने हमें परमेश्वर का *प्रकाशन किया,* जिसे *किसी ने कभी नहीं देखा* (यूहन्ना 1:18), फिर भी अभी भी हम अदृश्य को केवल *जैसे किसी धुंधली काँच के माध्यम से, एक पहेली में* देखते हैं, और अभी भी हम अगम्य को केवल *आंशिक रूप से* समझते हैं (1 कुरिन्थियों 13:12), और वर्तमान में हम *दृष्टि से नहीं, बल्कि विश्वास से चलते हैं* (2 कुरिन्थियों 5:7).[153] चर्च के पवित्र पिता और शिक्षकों ने इस सत्य की विस्तार से व्याख्या की, विशेष रूप से इसके संबंध में उत्पन्न हुए विधर्मी विचारों के उत्तर में।

एक और व्यक्तियों में त्रिमूर्ति कैसे हैं... कोई भी मन, चाहे मानव का हो या दैवीय, उसे समझ नहीं सकता, और न ही कोई जीभ उसका वर्णन कर सकती है। इस प्रकार *विश्वास करके,* हम और कुछ नहीं चाहते... हमारे लिए इतना ही काफी है कि पुराने नियम के पवित्र धर्मग्रंथ, एक ईश्वर की बात करते हुए, हमें व्यक्तियों की त्रिमूर्ति का प्रकटीकरण करते हैं... पवित्र धर्मग्रंथ और कलीसिया के शिक्षक दोनों ही इसके बारे में बार-बार बात करते हैं" (उपरोक्त, प्रश्न 10 का उत्तर); III) *ईश्वर के गुणों पर:* "जिस प्रकार ईश्वर अगम्य हैं, उसी प्रकार उनके गुण भी अगम्य हैं। हालाँकि, जहाँ तक हम पवित्र शास्त्र और कलीसिया के शिक्षकों से ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं, उसी हद तक हम उन पर चिंतन भी कर सकते हैं और उनके बारे में बात कर सकते हैं" (— प्रश्न 11 का उत्तर)। इसी शिक्षा को ऑर्थोडॉक्स कैथोलिक ईस्टर्न चर्च के व्यापक ईसाई धर्मशास्त्र में, धर्मविश्वास की *पहली* धारा की व्याख्या में प्रस्तुत किया गया है, और इसे अक्सर पूजा-संबंधी पुस्तकों में व्यक्त किया गया है, उदाहरण के लिए: 1) सेवा पुस्तक में: 'तुम्हें प्रार्थना करना उचित और न्यायसंगत है... क्योंकि तू वह ईश्वर है जो अकथनीय, अगोचर, अदृश्य और अचिंत्य है..." (सेवा पुस्तक, फोलियो 81, मास्को 1817 में प्रकाशित); 2) सेवाओं की पुस्तक में: "हे आदि रहित, अदृश्य, अगोचर, अचिंत्य और अकथनीय राजा..." (फोलियो 234, मॉस्को 1836 में प्रकाशित); 3) ऑक्टेओचोस में: "अदृश्य, अथाह, अकल्पनीय और अकथनीय, हे एक, हे शाश्वत त्रिमूर्ति, तो आपको तो निराकार दैवीय आदेश भी नहीं समझ सकते" (भाग 1, फोलियो 94, मॉस्को 1838 में प्रकाशित)।

[152] अन्य प्रासंगिक ग्रंथों में शामिल हैं: निर्गमन 33:18–20; अय्यूब 11:7–9; बुद्धिमान 9:13; सिरीख 43:33, 34।

[153] पवित्र प्रेरित के इन शब्दों में, न केवल धर्मशास्त्र में बल्कि दर्शनशास्त्र में भी, एक सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न का समाधान हो जाता है: यह प्रश्न कि क्या, और किस हद तक, परमार्थिक ज्ञान—जिसका मुख्य विषय ईश्वर है—हमारे लिए संभव है। प्रेरित स्पष्ट रूप से कहते हैं कि ऐसा ज्ञान हमारे लिए संभव है, लेकिन वे यह भी कहते हैं: 1) कि हम अब परमेश्वर को केवल *दर्पण के* समान देखते हैं (δι' ἐσόπτρου), और परिणामस्वरूप हम उन्हें सीधे और आमने-सामने नहीं देखते, जैसे हम भौतिक दुनिया की वस्तुओं को देखते हैं, बल्कि हम केवल परमेश्वर की एक प्रतिमा देखते हैं, जो हमारे लिए दुनिया और प्रकटीकरण के दर्पण में प्रतिबिंबित होती है। यह पर्याप्त नहीं है: यहाँ तक कि एक दर्पण की सहायता से भी, कोई वस्तुओं को पर्याप्त रूप से जान सकता है, बशर्ते कि उनकी छवियाँ उसमें स्पष्ट और सुस्पष्ट रूप से प्रतिबिंबित हों — लेकिन प्रेरित आगे कहते हैं — 2) कि इसके विपरीत, परमेश्वर की छवि हमें दर्पण में एक भूत-सा, ढकी हुई, एक पहेली के रूप में दिखाई देती है (*एक पहेली में* — ἐν αἰνίγματι); और एक पहेली को अभी भी सुलझाया जाना बाकी है, और पहेली को सुलझाना हमेशा अधिक या कम कठिन होता है और यह केवल अनुमानों और अधिक या कम सटीक धारणाओं तक ही ले जा सकता है। इसलिए, प्रेरित निष्कर्ष निकालते हैं — 3) कि हम अब परमेश्वर को केवल *आंशिक रूप से* जानते हैं, यानी, हम परमेश्वर को उनकी संपूर्णता में नहीं जानते हैं, और जो हम उनके बारे में जानते हैं, उसे हम

कुछ वधिर्मी यह सखिाते थे कि ईश्वर हमारे लिए पूरी तरह से बोधगम्य हैं, कि हम उन्हें ठीक वैसे ही जानते हैं जैसे वह स्वयं को जानते हैं, और यह सबसे अधकि ईश्वर के ज्ञात नामों द्वारा सुगम होता है, जो उनके सार को व्यक्त करते हैं: ऐसे ही दूसरे-शताब्दी के वधिर्मी वैलेन्टनिस, टॉलेमी, कार्पोक्रैटस,[154] और, सबसे बढ़कर, चौथी शताब्दी में रहने वाले एटयिस और यूनोमयिस तथा उनके अनुयायी।[155] संत आइरेनयिस ने पहले तीन के खलिाफ हथयिार उठाए;[156] संत ग्रेगरी ऑफ़ नसिा, संत ग्रेगरी द थयिोलोजयिन, संत बेसलि द ग्रेट, संत जॉन क्रसिैस्टम और कई अन्य ने यूनोमयिस और उसके अनुयायियों के खलिाफ लखिा।[157] उन्होंने सभी ने एकमत होकर वभिन्नि तर्कों के आधार पर यह प्रदर्शति कयिा कि ईश्वर का सार हमारे लिए अव्यक्त है: a) क्योंकि हमारी आत्मा सीमति है, जबकि ईश्वर अनंत है, और यदि अनंत को कसिी सीमति प्राणी द्वारा पूर्णतः समझ लयिा जाए तो वह अनंत ही नहीं रहेगा; [158] (b) इस तथ्य से कि हमारी सीमति आत्मा अभी भी एक भौतकि शरीर के साथ संयुक्त है, जो, एक कुहरे की तरह, हमारे और पूर्णतः अमूर्त दव्यिता के बीच स्थति है, और आध्यात्मकि नेत्र को दव्यि प्रकाश की करिणों को पूर्ण स्पष्टता के साथ ग्रहण करने से रोकती है;[159] c) क्योंकि, अपनी सीमतिता और शरीर के साथ घनष्ठि संबंध के अलावा, हमारी आत्मा पाप से धूमलि है—जसिने इसे ईश्वर के शुद्ध चतिन तक उठने में और भी अक्षम बना दयिा है;[160] d) इस बात में कि हम उन सीमति प्राणयिों और वस्तुओं को भी पूरी तरह से नहीं समझ पाते जो हमेशा हमारी आँखों के सामने होती हैं; हम पदार्थ के सार और प्रकृति में कार्यरत तत्वों, हमारी आत्मा के सार और शरीर के साथ उसके मलिन की प्रकृति, न ही स्वर्गदूतों, महादूतों और अन्य अदेह शक्तयिों की प्रकृति को समझ पाते हैं;[161] e) उन्होंने उन लोगों के बीच भी ईश्वर के बारे में ज्ञान की अपूर्णता की ओर इशारा कयिा जन्हिें उससे वशिेष प्रकटीकरण प्राप्त हुए थे, जैसे: मूसा, यशायाह, यहेजकेल, पतरस और पौलुस, और

अपूर्ण रूप से जानते हैं; और — 4) कि, परणिामस्वरूप, हमारे पारलौककि ज्ञान का स्वरूप वश्विास है: *हम वश्विास से चलते हैं, दृष्टि से नहीं।* यहाँ परमेश्वर के स्वयं के उन वचनों को याद करना स्वाभावकि है जो उन्होंने मूसा से कहे, जो उनका मुख देखना चाहते थे: *'तू मुझे पीछे से देखेगा, पर मेरा मुख नहीं देखा जाएगा [तू नहीं देख पाएगा]'* (नरि्ग. 33:23)।

[154] *इरनेयस,* वरिोधी मतों के वरिुद्ध, पुस्तक II, अध्याय 28, टप्पिणी 9।

[155] एटयिस ने अपने बारे में कहा: 'मैं ईश्वर को इतनी स्पष्टता और पूर्णता से जानता हूँ कि मैं स्वयं को भी उतनी सीमा तक नहीं जान सकता जतिना मैं ईश्वर को जानता हूँ' (देखें *एपफिेनयिस,* हेरेस. 76); एक यूनोमयिस ने घमंड कयिा कि वह परमेश्वर के सार को सटीक रूप से जानता था और, सामान्य रूप से, परमेश्वर का वही ज्ञान रखता था जो परमेश्वर को स्वयं अपने बारे में है *(थयिोडोरेट,* *हेरेस. फैबुल.*, पुस्तक IV, पृ. 3)।

[156] टप्पिणी 154 देखें, और क्रि. ख्त. 1838, III, पृष्ठ 3–19 में, लेख: *संत आइरेनयिस, लयों के बशिप— इस तथ्य पर कि, जब दैवीय रहस्यों की जांच करते समय, कसिी को भी सत्य के नयिम और ईश्वर की सही समझ से कभी वचिलति नहीं होना चाहिए, और* उसे *पवत्रि धर्मग्रंथों पर* वश्विास करना *चाहिए, न कि हमारी बुद्धि की सीमाओं से परे की जांच में गहराई से उतरना चाहिए।*

[157] संत ग्रेगरी ऑफ नसिा: **कॉन्ट्रा इव्नोमयिम ऑरेशन्स ड्यूडेसमि** (खंड II में, संपादति मोरेल); संत ग्रेगरी द थयिोलॉजस्टि: **यूएनोमयिनों के वरिुद्ध धर्मशास्त्र पर पाँच प्रवचन** (क्रॉनकिल ऑफ रीडग्सि 1841, भाग I, II और III में, और रूसी अनुवाद में *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, खंड III); संत बेसलि द ग्रेट: *दुष्ट इव्नोमयिस के बचाव भाषण का खंडन* (होली फादर्स के कार्य, रूसी अनुवाद, खंड VII); संत जॉन क्रसिोस्टोम: *एनोमोईअनों के वरिुद्ध असीम पर पाँच प्रवचन* (क्रॉनकिल रीडग्सि 1841, भाग III और IV, और 1842, 1); संत एफ्रेम द सीरयिन: *ईश्वर के सार की जांच करने वालों के वरिुद्ध* (क्रॉनकिल रीडग्सि 1838, I, 20)।

[158] 'यदि दव्यि स्वभाव को मन द्वारा समझा जाता है तो वह अनवािर्य रूप से सीमति होना चाहिए: क्योंकि एक अवधारणा भी सीमा का एक रूप है' (पवत्रि पतिाओं के कार्य, रूसी अनुवाद, खंड III, पृ. 26)। इसी बदिु को संत जस्टनि (ट्राइफोन, संख्या IV), एथेनागोरस (लेगेट., X), और इरेनयिस द्वारा भी समझाया गया है (Advers. Haeres. IV, 19). एंटओिक के थयिोफलिस (Ad Autol. 1,3), महात्मा अथेनासयिस (Decret. Syn. Nicaen. n. 22) और धन्य ऑगस्टीन (De civit. Dei lib. XII, c. 18).

[159] "हमारे और परमेश्वर के बीच यह शारीरकि कुहासा खड़ा है, ठीक वैसे ही जैसे पुराने समय में मस्रियिों और इब्रानयिों के बीच एक बादल खड़ा था। और शायद यही अभपि्राय है: *'उसने अँधेरे को अपना आवरण बना लयिा है'* (भजन संहति 17:12); अर्थात्, हमारी देहबद्धता, जसिके माध्यम से कुछ ही देखते हैं, और वह भी केवल थोड़ा सा" (पवत्रि पतिाओं के कार्य, रूसी अनुवाद, खंड III, पृ. 28; तुलना करें पृ. 20)।

[160] "हर कोई ईश्वर के बारे में दार्शनकिता करने में सक्षम नहीं है, क्योंकि यह उन लोगों के लिए ही है जन्हिोंने स्वयं की परीक्षा की है, जन्हिोंने अपना जीवन चतिन में बतिाया है, और *जन्हिोंने,* सबसे बढ़कर, आत्मा और शरीर दोनों को *शुद्ध कयिा* है—या कम से कम शुद्ध करने की प्रक्रयिा में हैं। हालाँकि, अशुद्ध लोगों के लिए शुद्ध एक को छूना भी सुरक्षति नहीं हो सकता है, ठीक वैसे ही जैसे कमजोर दृष्टि वाले व्यक्ति के लिए सूर्य की करिण को देखना सुरक्षति नहीं है" (होली फ़ादर्स के कार्य, खंड III, पृ. 7) / "इसलिए, हमें पहले खुद को शुद्ध करना चाहिए, और तभी शुद्ध एक के साथ संवाद करना चाहिए" (उपरोक्त, 11, पृ. 165; तुलना करें पृ. 174)।

[161] इस तर्क को वस्तिार से संत आइरेनयिस (क्रोनोलॉजकिल रीडग्सि 1838, III, पृ. 5-7), संत जॉन क्राइसोस्टोम (क्रोनोलॉजकिल रीडग्सि 1841, IV, पृ. 59), संत बेसलि द ग्रेट (वर्क्स ऑफ द होली फादर्स, VII, 36–37) और, वशिेष रूप से, संत ग्रेगरी द थयिोलोजयिन (वर्क्स *ऑफ द होली* फादर्स, III, 38–51)।

वास्तव में सभी भविष्यवक्ताओं और प्रेरितों;[162] (f) इसी प्रकार, उन्होंने यह भी इंगित किया कि ईश्वर की सत्ताएँ न केवल मनुष्यों के लिए, बल्कि चेरुबिम, सेराफिम और वास्तव में सभी उच्चतम सृजित आत्माओं के लिए भी अकल्पनीय हैं;[163] (g) अंत में, उन्होंने यह अवलोकन किया कि यदि ईश्वर पूरी तरह से समझ में आ जाएँ, तो वे हमारे लिए ईश्वर ही नहीं रहेंगे।[164] ईश्वर को अकल्पनीय कहने में, पवित्र पिताओं ने उन्हें नामहीन, अकथनीय, अभिव्यक्तिहीन और अविश्वसनीय भी कहा,[165] और कहा कि पवित्र शास्त्र में उन पर लगाए गए सभी नाम—जैसे यहोवा (एक), एलोहिम (एलोआ का बहुवचन — शक्तिशाली), अदोनाई (प्रभु), शद्दाई (शक्तिमान, सर्वशक्तिमान), ईश्वर, प्रभु और अन्य — ये उनके वास्तविक सार को व्यक्त नहीं करते, बल्कि केवल उस चीज़ को व्यक्त करते हैं जो उनके सार और स्वभाव (τά περί τήν φύσιν) से संबंधित है, या दुनिया और मानवता के साथ उनके संबंध को दर्शाते हैं,[166] और सार में, ये नाम सकारात्मक होने से अधिक नकारात्मक हैं,[167] क्योंकि हम कभी भी ईश्वर के लिए ऐसा कोई नाम नहीं पा सकते जो उनकी

---

[162] यह प्रमाण अंतिम तीन संतों द्वारा भी विस्तार से प्रस्तुत किया गया है: जॉन क्रिसोस्टोम (क्रॉन. रीडिंग्स 1841, III, 373–379; IV, 200), बेसिल द ग्रेट (वर्क्स ऑफ द होली फादर्स, VII, 35 और 37) और ग्रेगरी द थियोलोजियन (III, 33–36).

[163] संत जॉन क्रिसिस्टम ने एनोमियन के विरुद्ध अपनी पूरी तीसरी धर्मोपदेश और अपनी चौथी का अधिकांश भाग इस विचार की व्याख्या के लिए समर्पित किया है (क्रोनोलॉजिकल रीडिंग्स 1841, IV, 165–206)।

[164] क्योंकि ईश्वर, जब कल्पित किया जाता है, तो ईश्वर नहीं है *(अथानासियस* क्वेस्ट. एड एंटिओक., रेस्पॉन्स. एड क्वेस्ट. 1; क्रॉन. रीडिंग्स 1842, II, 213)।

[165] 'अव्यक्त' *(जस्टिन,* एपोलॉजी 1, n. 61), 'नरिनाम' (मैक्सिमिस *ऑफ टायर,* डिस्कोर्स VIII, § 10), 'अनाम' *(ग्रेगरी द थियोलोजियन,* द वर्क्स ऑफ द *होली* फादर्स, रूसी अनुवाद, III, 96), 'अनरिदिष्ट' *(टर्टुलियन,* एड ग्र., n. 5; *थियोफिलस,* एड ऑटोल्यकस I, 3), 'अनविक्त' *(ग्रेगरी ऑफ निस्सा,* ओरेशन XII अगेंस्ट इवनमस), ἀνέφραστος (*यूसेबियस,* डेमोंस्ट्रेशन ऑफ द गॉस्पेल IV, 1), inenarrabilis (*इरेनियस,* अगेंस्ट हेरेसीज़ IV, 20, n. 6), ineffabilis *(ऑगस्टीन,* ऑन Psalm LXXXV, n. 12) और इसी तरह।

[166] "ऐसा कोई एक नाम नहीं है जो ईश्वर के सम्पूर्ण स्वभाव की घोषणा करते हुए, उसे पूर्ण रूप से प्रतिबिंबित करने के लिए पर्याप्त हो" (*संत बेसिल द ग्रेट,* होली फादर्स के कार्य, VII, 31)। "पवित्र शास्त्र की गवाही के अनुसार, हमने यह जाना है कि ईश्वरत्व का कोई नाम नहीं है और वह अकथनीय है (ἀκατονόμαστόν τε καί ἄφραστόν), और हम यह पुष्टि करते हैं कि प्रत्येक नाम, चाहे वह मनुष्यों द्वारा रचा गया हो या पवित्र ग्रंथों में सिखाया गया हो, उसमें केवल दिव्य स्वभाव (περί τήν θείαν φύσιν νοουμένων) के बारे में कल्पित कुछ का संकेत करने की शक्ति है, और वह स्वयं स्वभाव को व्यक्त नहीं करता है" (*Gregor. Nyss.* tract. quod non sint tres dii, vol. III, p. 18, ed. Morel.), "जो हम सकारात्मक रूप से परमेश्वर को श्रेय देते हैं, वह हमें उनकी प्रकृति नहीं, बल्कि केवल वह प्रकट करता है जो प्रकृति से संबंधित है (τά περί τήν φύσιν) / यह विचार करना चाहिए कि ईश्वर को आरोपित किए गए प्रत्येक गुण से यह नहीं पता चलता कि वह स्वभावतः क्या है, बल्कि यह इंगित होता है कि वह क्या नहीं है, या उससे विपरीत चीज़ के साथ उसका कोई संबंध, या उसकी प्रकृति से निकलने वाली कोई चीज़ (τί τών παρεπομένων τή φύσι), या उसका कर्म" (*सेंट जॉन ऑफ डेमास्कस /* एन एक्ज़ैक्ट एक्सपोजिशन ऑफ द ऑर्थोडॉक्स फेथ, पृष्ठ 9 और 32। मॉस्को 1844)। एक समान दृष्टिकोण सेंट ग्रेगरी द थियोलॉजिस्ट द्वारा भी व्यक्त किया गया है (वर्क्स ऑफ द होली फादर्स, III, 96)। ईश्वर के सभी नामों में से, कुछ प्राचीन लेखकों ने केवल 'अस्तित्वमान' नाम को एक विशेष दर्जा दिया, इस आधार पर कि यह कथित तौर पर आंशिक रूप से ईश्वर के सार को ही दर्शाता है। 'जहाँ तक हम समझ सकते हैं,' सेंट ग्रेगरी द थियोलोजियन तर्क देते हैं, 'नाम: *'अस्तित्वमान'* और *'ईश्वर'* एक अर्थ में सार के नाम हैं; और यह नाम विशेष रूप से—'अस्तित्वमान'—केवल इसलिए नहीं है क्योंकि जब पहाड़ पर मूसा से बात करने वाले ने अपना नाम पूछा और कहा गया कि उसे क्या कहा जाए, तो उसने स्वयं को यह नाम दिया और लोगों से कहने का आदेश दिया: *'मैंने तुम्हें भेजा है'* (निर्गमन 3:14), बल्कि इसलिए भी क्योंकि हमें यह नाम परमेश्वर के लिए सबसे उपयुक्त लगता है" (वर्क्स ऑफ द होली फादर्स III, 96–97)। संत जॉन ऑफ डेमास्कस कहते हैं, "ईश्वर को दिए गए सभी नामों में, सबसे उपयुक्त नाम 'हो ὁ ὑπάρχων' *(जो है)* प्रतीत होता है, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने स्वयं पहाड़ पर मूसा को उत्तर देते हुए कहा: *'तुम इस्राएलियों से इस प्रकार कहना: "जो है, उसने मुझे तुम्हारे पास भेजा है"* (निर्गमन 3:14)। क्योंकि ईश्वर स्वयं में अस्तित्व की संपूर्णता को समाहित करते हैं, मानो एक असीम और अनंत सार का सागर" (प्रेसाइज़ एक्सपोज़िशन ऑफ़ द ऑर्थोडॉक्स फेथ, पृ. 32)। यह विचार डियोनिसियस द एरोपागिट (De divin. nomin., अध्याय V), एपिफेनियस (Haeres. 69), एम्ब्रोज़ (Comment. in Ps. 43) और जेरोम (Epis. 136) में भी पाया जाता है।

[167] *थियोफिलस,* *एड ऑटोलाइकस*, 1, 3–4; *ग्रेगरी ऑफ नाज़ियनज़स,* *भगवान पर भजन*; *डायोनिसियस द एरोपागिट,* *दिव्य नामों पर*, अध्याय 1, § 5; *जॉन ऑफ डेमास्कस,* *ऑर्थोडॉक्स विश्वास की सटीक व्याख्या*, अध्याय IV, पृ. 8–9. 'ईश्वर अनुपम है; यह कहना आसान है कि वह क्या नहीं है, बजाय इसके कि वह क्या है,' धन्य ऑगस्टीन ने कहा (भजन संहिता 85, टिप्पणी 12)।

वास्तवकि प्रकृतकि अनुरूप हो,[168] और ठीक यही ईश्वर का नामहीनपन (ánonymia) ही उनके कई नामों (polyonymia) का कारण है, जो हम उन्हें देते हैं।[169]

लेकनि जहाँ कुछ वधिर्मी एक चरम पर पहुँच गए, यह दावा करते हुए कि ईश्वर पूरी तरह से हमारी समझ में आ सकता है, वहीं अन्य, कुछ मूर्तपिूजकों के पदचन्हिों पर चलते हुए, वपिरीत चरम में फँस गए। हम मार्सयिोनाइट्स और समकालीन अन्य झूठे शकि्षकों का उल्लेख कर रहे हैं जन्हिोंने दावा कयिा कि ईश्वर पूरी तरह हमारी समझ से परे है और एक पूर्णतःअज्ञात ईश्वर है, '[170] ' — मुख्यतःउद्धारकर्ता के इन शब्दों पर नर्भिर करते हुए: *'पुत्र को कोई नहीं जानता सविाय पतिा के; और पतिा को कोई नहीं जानता सविाय पुत्र को*' '[171] ' इन झूठे शकि्षकों का खंडन करते हुए, संत आइरेनयिस ने लखिा कि 'उद्धारकर्ता ने कसिी भी तरह से यह नहीं कहा कि परमेश्वर को जानना पूरी तरह से असंभव है, बल्कि केवल यह कहा कि कोई भी परमेश्वर की इच्छा के बनिा, परमेश्वर के नर्दिेश के बनिा, उसके प्रकाशन के बनिा (*जसिके प्रतिपुत्र स्वयं को प्रकट करने का चुनाव करता है*) परमेश्वर को नहीं जान सकता। लेकनि चूंकि पतिा ने हमें ईश्वर को जानने की अनुमति दी है, और पुत्र ने हमें उनका प्रकटीकरण कयिा है, हमारे पास उनके बारे में आवश्यक ज्ञान है। अन्यथा, ईश्वरपुत्र का संसार में आना व्यर्थ हो जाता: वह क्यों आया? नश्चिति रूप से केवल हमें यह बताने के लिए नहीं, जैसे कि: 'ईश्वर को न खोजो—क्योंकि वह अगम्य है, और तुम उसे नहीं पाओगे।'[172] इसी प्रकार, बाद के पवत्रि पतिाओं ने, जो यूनोमयिनों का खंडन करने में लगे हुए थे, यद्यपि हमारे लिए ईश्वर के सार की अगम्यता को प्रदर्शति कयिा, फरि भी उन्होंने हमारे ईश्वर को जानने की संभावना को बल्किुल भी अस्वीकार नहीं कयिा; इसके वपिरीत, उन्होंने यह सखिाया: क) कि, यद्यपि हम परमेश्वर को उनके सार में नहीं समझ सकते, फरि भी हम उन्हें उनके कार्यों के माध्यम से जान सकते हैं: सृष्टि और व्यवस्था में, दृश्यमान जगत में और हमारे अंतरात्मा में,[173] और वशिेष रूप से उनके अलौककि प्रकाशन में;[174] ख) कि, यद्यपि ईश्वर के नामों में से कोई भी नाम उनके सार को व्यक्त नहीं करता, तथापि, सभी को एक साथ और यहाँ तक कि प्रत्येक को अलग-अलग मलिाकर देखा जाए, वे हमें ईश्वर की एक काफी स्पष्ट और पर्याप्त समझ प्रदान करते हैं — और यह न केवल सकारात्मक नामों के बारे में कहा जाना चाहिए, बल्कि नकारात्मक नामों के

---

168 'क्योंकि कोई भी कभी अकथनीय ईश्वर का नाम नहीं बोल सका है, और न ही कोई यह कहने की हम्मित करेगा कि वह है, कहीं ऐसा न हो कि वे पागलपन की मूर्खता में पड़ जाएँ' (*जस्टनि*, एपोलॉजी II, 6)। इसी बात का उल्लेख जॉन क्रसिोस्टोम (होम. II, हब्रिूओं के नाम पत्र पर, पृ. 438), ऑगस्टीन (भजन संहति 35 पर व्याख्यान) और अन्य लोगों में भी मलिता है।

169 *थयिोफलिस*, एड ऑटोलाइकस 1, 3, 4; *ग्रेगरी ऑफ नाज़यिनज़स*, हाइमन ऑन गॉड; *ग्रेगरी ऑफ नस्सिा*, अगेंस्ट यूनोमयिस, ओरेटेशन XII, पृ. 757. मोरेल.

170 जावानी लेखकों में से कई ने ईश्वर को पूरी तरह से अकल्पनीय माना। साइमोनडिस का एक प्रसद्धि वृत्तांत है, जब तानाशाह हायरॉन ने उससे पूछा कि ईश्वर क्या है, तो उसने वचिार करने के लिए एक दनि का समय माँगा; फरि, जब दोबारा पूछा गया, तो उसने तीन, फरि छह, बारह दनि और इसी तरह माँगते गए, और अंत में उत्तर दयिा: 'मैं इस वषिय पर जतिना अधकि वचिार करता हूँ, वह मेरे लिए उतना ही अधकि अस्पष्ट होता जाता है।' *ससिरो*, *डे नेचुर डीओरम*, n. 22। यह भी देखें *प्लेटो*, *टमियस*, पृ. 28।

171 *इरनेयस*, *वरिुद्ध संप्रदायवाद*, पुस्तक I, अध्याय 27, संख्या 1; पुस्तक III, अध्याय 24, संख्या 2; पुस्तक IV, अध्याय 20, संख्या 6.

172 उपरोक्त, पुस्तक IV, अध्याय 6, संख्या 4।

173 'एक ओर तो, सारी सृष्टि के माध्यम से ईश्वर को जानने का मार्ग है; और दूसरी ओर, एक मार्ग जो उससे कम महत्वपूर्ण नहीं है, वह है अंतरात्मा का मार्ग' (*क्रसिोस्टोम*, होमीली XI, खंड V, पृ. 53)। इस प्रकार ईश्वर ने सृष्टि को सुशोभति कयिा, ताकि यद्यपि वह अपनी प्रकृति में नहीं देखा जाता, फरि भी वह अपने कार्यों के माध्यम से जाना जा सके (*एथानस*. orat. contra gent., खंड 1, पृ. 38)। सभी चीजों में, ईश्वर का ज्ञान स्वाभावकि रूप से उनमें व्याप्त है; और यह सृष्टि स्वयं, साथ ही इसकी एकता और शासन, दैवीय स्वभाव की महानता की घोषणा करते हैं (*Cyrill. Alex*, lib. de S. Trinit. p. 1). संत डायोनसियिस द एरोपागटि ने उन सभी तीन मार्गों की पहचान की जनिसे हम सृजति वस्तुओं से ईश्वर के ज्ञान तक पहुँचते हैं: 'सभी चीजों को हटाकर और उनकी पराकाष्ठा से, और सभी चीजों के कारण के माध्यम से' (De divin. nomin. VII), अर्थात्, स्कॉलस्टकि्स की शब्दावली का उपयोग करने के लिए: *नकार का मार्ग*— via negationis, जब हम ईश्वर से सृष्ट प्राणयिों में पाई जाने वाली सभी अपूर्णताओं को हटा देते हैं; *कारणवाद का मार्ग*— via causalitatis, जब हम सृष्ट प्राणयिों के पूर्ण गुणों को उनके कारण के रूप में ईश्वर को प्रदान करते हैं; और *उत्कृष्टता का मार्ग*— via eminentiae, जब हम इन पूर्ण गुणों को परम श्रेष्ठता के साथ उन्हें प्रदान करते हैं। हालाँकि, अन्य पवत्रि पतिाओं ने इन तीन तरीकों को केवल दो बताया है: *नकार का मार्ग* और *सकारात्मकता का मार्ग*— क्योंकि कारणता का मार्ग और वशिष्टिता का मार्ग इस बात पर एकमत हैं कि वे दोनों हमें ईश्वर के बारे में कुछ सकारात्मक बताने की शकि्षा देते हैं (पवत्रि पतिाओं के कार्य, खंड VII, पृ. 31; *सेंट जॉन ऑफ़ डेमास्कस*, एक्सैक्ट. ऑर्थोडॉक्स वश्विास की व्याख्या, पुस्तक I, अध्याय 12, पृ. 39)।

174 *पेलूसयिम के इसडिोरस*, 396, पुस्तक 1, पृ. 96; *अलेक्जेंड्रयिा के अथेनासयिस*, पैगनों के वरिुद्ध भाषण, संख्या 1, और अन्य।

बारे में भी,[175] और — c) कि, अंत में, यदि हमारे लिए ईश्वर का ज्ञान पूरी तरह से असंभव होता, तो सुसमाचार का संदेश व्यर्थ हो जाता, हमारा विश्वास व्यर्थ हो जाता, और यह अधर्मी होने का एक सीधा बहाना प्रदान करता।[176] स्वस्थ ईसाई सिद्धांत के रक्षकों ने कहा कि केवल हमारा वर्तमान ईश्वर-ज्ञान, आने वाले जीवन में हमें प्रदान किए जाने वाले ज्ञान की तुलना में, एक शिशु के ज्ञान की तरह है, जिसकी तुलना एक परिपक्व पुरुष के ज्ञान से की जाती है: एक ऐसा ज्ञान जो अपूर्ण, अस्पष्ट, अनुमानपरक, रूपकात्मक या प्रतीकात्मक,[177] — ऐसा ज्ञान जो विश्वास में निहित है और विश्वास में परिणत होता है।[178] अंत में, हमने जिस डॉग्मा की परीक्षा की है, उस पर प्राचीन पवित्र पितरों के विचारों की संक्षिप्त अभिव्यक्ति के रूप में, हम संत जॉन ऑफ़ डेमास्कस के *'ऑर्थोडॉक्स विश्वास की सटीक व्याख्या' के* प्रथम अध्याय से उनके शब्द उद्धृत करते हैं: "ईश्वरत्व अकथनीय और अगम्य है। क्योंकि *पुत्र को पिता के सिवाय कोई नहीं जानता; और पिता को पुत्र के सिवाय कोई नहीं जानता* (मत्ती 11:27)। इसी प्रकार, पवित्र आत्मा ईश्वर की बातें जानता है, जैसे मनुष्य की आत्मा मनुष्य के भीतर की बातें जानती है (1 कुरिन्थियों 2:11)। प्रथम और धन्य सत्ता के अलावा, किसी ने भी कभी ईश्वर को नहीं जाना है, जब तक कि ईश्वर ने स्वयं उन्हें प्रकट न किया हो—न तो मनुष्यों में, बल्कि अनंतकालीन शक्तियों, केरूबीम और सेराफिम में भी किसी ने नहीं। फिर भी, ईश्वर ने हमें अपने बारे में पूर्ण अज्ञानता में नहीं छोड़ा है। क्योंकि ईश्वर ने स्वयं प्रत्येक व्यक्ति की प्रकृति में अपने अस्तित्व का ज्ञान अंकित किया है। और स्वयं सृष्टि, *उसका* संरक्षण और शासन, दिव्य की महानता (ज्ञान 13:5) का घोषणा करते हैं। इसके अलावा, पहले व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा, फिर उनके एकमात्र पुत्र, हमारे प्रभु और परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के द्वारा, परमेश्वर ने हमें अपने बारे में ज्ञान प्रदान किया है, जहाँ तक हम इसे समझने में सक्षम हैं। इसलिए, जो कुछ भी व्यवस्था द्वारा हमें सौंपा गया है, नबियों, प्रेरितों और सुसमाचार लेखकों के माध्यम से, हम इसे स्वीकार करते हैं, स्वीकार करते हैं और सम्मान करते हैं, और इसके अलावा और कुछ नहीं चाहते। इस प्रकार ईश्वर, सर्वज्ञ होने और प्रत्येक व्यक्ति के भले के लिए प्रबंध करने वाले के रूप में, ने हमारे लिए जानने के लिए जो कुछ भी उपयोगी है, वह सब प्रकट किया है, और उस बात के संबंध में मौन रहे हैं जिसे हम समझ नहीं सकते। हम इससे संतुष्ट हैं, और शाश्वत सीमाओं को बदलने या दिव्य परंपरा का उल्लंघन किए बिना, इस पर दृढ़ता से कायम रहेंगे (नीतिवचन 22:28)।[179]

§10. ईश्वर स्वयं के विषय में ऑर्थोडॉक्स शिक्षा का सार और विभाजन।

ईश्वर ने अन्य प्राणियों के साथ अपने संबंध के अलावा, अपने बारे में हमें जो कुछ भी प्रकट करने की कृपा की है, उसका सार ऑर्थोडॉक्स चर्च ने एथनासियन क्रीड के निम्नलिखित शब्दों में संक्षेप में व्यक्त किया है: "कैथोलिक विश्वास यह है: कि हम त्रित्व में एक ईश्वर की, और एक में त्रित्व की उपासना करते हैं, न तो व्यक्तियों को मिलाते हुए

---

[175] यह कहने के बाद कि कोई एक नाम ईश्वर के सार को पूरी तरह व्यक्त नहीं कर सकता, संत बेसिल महान आगे कहते हैं: 'लेकिन कई और विविध नाम, अपने उचित अर्थ में लिए गए, एक ऐसी अवधारणा का निर्माण करते हैं जो निस्संदेह संपूर्ण की तुलना में अस्पष्ट और बहुत सीमित है, लेकिन हमारे लिए पर्याप्त है।' ईश्वर को दिए गए नामों में से कुछ उन बातों को इंगित करते हैं जो ईश्वर में मौजूद हैं, जबकि अन्य, इसके विपरीत, उन बातों को इंगित करते हैं जो उनमें मौजूद नहीं हैं। क्योंकि इन दो साधनों द्वारा—अर्थात् जो वहाँ नहीं है उसकी नकारात्मकता और जो वहाँ है उसकी सकारात्मकता द्वारा—हमारे भीतर ईश्वर की एक प्रकार की छवि बनती है" (वर्क्स ऑफ़ द होली फ़ादर्स, खंड VII, पृ. 31)। यह भी देखें डायोनिसियस द एरोपागिट (डी डिविनि. नोम., अध्याय 4), थियोडोरेट (सर्म. II, डी प्रोविडेंशिया) और सेंट जॉन ऑफ़ डेमास्कस (एक्ज़ैक्ट एक्सपोज़िशन ऑफ़ द ऑर्थोडॉक्स फेथ, पुस्तक 1, अध्याय 9, पृष्ठ 32-33 और 39)।

[176] '"अनपेठनीय" से मेरा तात्पर्य यह नहीं है कि ईश्वर का अस्तित्व है, बल्कि यह कि वह जो है, वही है। क्योंकि हमारा प्रचार व्यर्थ नहीं है, और न ही हमारा विश्वास व्यर्थ है.... हमारी निष्ठा को अधर्मीपन का बहाना न बनाओ' *(ग्रेगरी द थियोलोजियन,* द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स, III, 20–21)।

[177] *जॉन क्राइसोस्टोम,* होमीली 1 ऑन द इनकॉम्प्रिहेन्सिबिल, क्रि. रीडिग्स 1841, III, 370–371; *हिलारियन,* इन भजन संहिता 120, n. II; *ग्रेगरी ऑफ निसा,* बुक 12 अगेंस्ट इव्नोमस; *ऑगस्टीन,* *डे सिविटिटे देई*, बुक XV, अध्याय 25।

[178] *क्रिसोस्टोम,* फिलिप्पियों को लिखी गई पत्र पर धर्मोपदेश XI; *अलेक्ज़ेंड्रिया के क्लेमेंट,* स्ट्रोमाटा, पुस्तक VII, अध्याय 10; *अथेनासियस,* सेरापियन को पहला पत्र, अध्याय 20; *ऑगस्टीन,* कन्सेन्टियस को पत्र 120।

[179] यरूशलेम के संत सिरिल के शब्द भी ध्यान देने योग्य हैं: 'कोई कह सकता है: यदि ईश्वर का स्वभाव अगोचर है, तो फिर आप इसके बारे में क्यों बात करें? लेकिन क्या इसलिए कि मैं पूरी नदी नहीं पी सकता, मुझे अपने लाभ के लिए उससे संयम से पानी नहीं लेना चाहिए? क्या इसलिए कि मेरी आँखें पूरे सूरज को समा नहीं सकतीं, मुझे अपनी ज़रूरत के मुताबिक उस पर नज़र नहीं डालनी चाहिए? केवल इसलिए कि किसी बड़े बगीचे में प्रवेश करने पर मैं सारे फल नहीं खा सकता, क्या आप चाहेंगे कि मैं उसे पूरी तरह से भूखा छोड़ दूँ?" (कैटेकेटिकल होमीज़ VI, 5, रूसी अनुवाद में, पृ. 100–101)।

और न ही सार को वभिाजति करते हुए;" या, और भी संक्षेप में, *ऑर्थोडॉक्स कन्फेशन के* शब्दों में: "ईश्वर स्वभाव में एक और व्यक्तियों में त्रमिूर्ति है" (भाग 1, प्रश्न 10 का उत्तर)। इस प्रकार, स्वयं ईश्वर के संबंध में संपूर्ण ऑर्थोडॉक्स सद्धिांत दो भागों में वभिाजति है: I) उस ईश्वर के संबंध में सद्धिांत, जो स्वभाव में एक है, और — II) उस ईश्वर के संबंध में सद्धिांत, जो व्यक्तियों में त्रमिूर्ति है।

अध्याय 1.
ईश्वर पर, जो स्वभावतः एक है।

§11. जाँच की संरचना और वधिी

तत्व में एक ही ईश्वर की जाँच की संरचना स्पष्ट है: सबसे पहले यह दखिाना आवश्यक है कि ईश्वर तत्व में एक ही है, और दूसरे, ईश्वर के स्वततत्व की अवधारणा को स्पष्ट करना।

1. ईश्वर की एकता पर

§12. चर्च की शक्षिा और धर्मसद्धिान्त का संक्षपित इतहिास

'मैं वश्विास करता हूँ' शब्दों के बाद, जो ईश्वर की अगम्यता के सद्धिांत को संदर्भति करते हैं, हम धर्मवश्विास में 'एक ईश्वर में' शब्द उच्चारति करते हैं, और इस प्रकार चर्च के एक अन्य सद्धिांत—ईश्वर की एकता के सद्धिांत—की घोषणा करते हैं। इस धर्मशास्त्र को हमेशा से ही ईसाई धर्म के सबसे मौलकि और आवश्यक धर्मशास्त्रों में से एक माना गया है, जैसा कि इस तथ्य से स्पष्ट है कि यह नकिने क्रीड से भी पहले चर्च द्वारा उपयोग कए जाने वाले सभी धर्म-सूत्रों में,[180] और वास्तव में नकिया परषिद से पहले और बाद में चर्च के शक्षिकों द्वारा लखि गए सभी नजिी धर्म-स्वीकारों में पाया जाता है।[181]

शुरुआत से ही, ईसाइयों ने इस सद्धिांत को सभी झूठे धर्मों—बहुदेववाद या द्वैतवाद का प्रचार करने वाले मूर्तपिूजक धर्मों—से सच्चे, ईश्वर-प्रदत्त धर्म की प्राथमकि वशिष्टि शक्षिा के रूप में सही माना।[182]

ईश्वर की एकता के ईसाई सद्धिांत के वरिोधी: (क) सबसे पहले *और* सबसे महत्वपूर्ण, बेशक, मूर्तपिूजक या बहुदेववादी थे, जन्हिें ईसाई धर्म में परविर्तति करना आवश्यक था; ख) फरि, दूसरी शताब्दी से, सामूहकि रूप से ग्नॉस्टकि के नाम से जाने जाने वाले ईसाई वधिर्मी, जनिमें से कुछ ने, पूर्वी दर्शन और दैवीय ज्ञान के प्रभाव में, एक सर्वोच्च ईश्वर को स्वीकार करते हुए भी, कई छोटे देवताओं या युगों (aeons) का भी प्रतपिादन कयिा जो उनसे उत्पन्न हुए थे और जन्हिोंने इस मौजूदा दुनयिा को बनाया था, — जबकि अन्य, उसी दर्शन से प्रभावति होकर, जो अन्य बातों के अलावा, दुनयिा में बुराई की उत्पत्ति के प्रश्न को हल करना चाहता था, दो परस्पर शत्रु सह-शाश्वत सद्धिांतों—सद्भाव का

---

[180] उदाहरण के लिए: (a) यरूशलेम के चर्च के धर्म-वश्विास में: πιστεύω εἰς ἑνα Θεόν...; (b) केसरयिा के चर्च का: πιστεύομεν εἰς ἑνα Θεόν...; (c) अंतीयक के चर्च का: credo in unum et solum Deum... (*कैसयिन,* *De incarnat.*, पुस्तक VI, पृ. 1272 में); d) अलेक्जेंड्रयिा के चर्च का: πιστεύομεν εἰς ἑνα Θεόν (*सोक्रैट.*, पुस्तक 1, अध्याय 26); e) प्रेरतिों की संवधिानों में शामलि धर्मवश्विास में: πιστεύω καί βαπτίζομαι εἰς ἑνα ἀγέννητον, μόνον ἀληθινόν Θεόν...; f) — इरेनयिस में: "क्योंकि चर्च... प्रेरतिों से... एक ईश्वर में वश्विास प्राप्त करके..." (Contra haereses, Book 1, Chapter 1, n. 1); g) — टर्तुल्लयिन में: 'वश्विास का केवल एक ही नयिम है, जो अपरविर्तनीय और अचल है, अर्थात् *एक* सर्वशक्तमिान ईश्वर में वश्विास करना' (De veland. virgin, Chapter 1) और इसी तरह।

[181] उदाहरण के लिए: a) ग्रेगरी द वंडरवर्कर: 'एक ईश्वर, जीवति वचन के पति...'; b) अथेनासयिस द ग्रेट: 'हम एक अजन्मे ईश्वर में वश्विास करते हैं' (Orr., खंड 1, अनुच्छेद 1, पृ. 99); c) बेसलि द ग्रेट: πιστεύομεν καί ὁμολογοῦμεν ἑνα μόνον ἀληθινόν καί ἀγαθόν Θεόν (Serm. de fide, vol. II, p. 227, ed. Garnier.), और अन्य।

[182] *जस्टनि द मार्टरि,* *कोहोर्ट*, *एड ग्राइक.*, अध्याय 36: 'यह जानना आपके लिए संभव है कि केवल एक ही ईश्वर है; यह सच्ची धार्मकिता का पहला लक्षण है।'

सद्धिांत और बुराई का सद्धिांत—को दुनयिा में सभी अच्छे और बुरे के प्रमुख कारणों के रूप में मानते थे;[183] ग) थोड़ी देर बाद, तीसरी शताब्दी के अंत से और वशिेष रूप से चौथी शताब्दी के मध्य से, नए ईसाई वधिर्मी, मनीकयिनों ने भी—इसी वचिार के साथ—दो देवताओं, अच्छे और बुरे, का प्रतपिादन कयिा, जनिमें से पहले को उन्होंने प्रकाश का शाश्वत राज्य और दूसरे को अंधकार का शाश्वत राज्य प्रदान कयिा;[184] d) छठी शताब्दी के अंत से, त्रि-ईश्वरवादी (Tri-Godists) का एक छोटा सा संप्रदाय, जो एक ईश्वरत्व में त्रि-व्यक्तित्वि के ईसाई सद्धिांत को समझने में असफल रहा, और उसने तीन पूरी तरह से अलग-अलग ईश्वरों को स्वीकार कयिा, ठीक उसी तरह जैसे, उदाहरण के लिए, मानव जाति के तीन अलग-अलग व्यक्तियिा अवभिाज्य सदस्य अलग होते हैं, भले ही वे सभी एक ही स्वभाव साझा करते हों, और जैसे कि हर प्रकार और वर्ग के प्राणयिों के अवभिाज्य सदस्य आम तौर पर अलग होते हैं;[185] (d) अंत में, सातवीं से बारहवीं शताब्दी तक — पॉलशियिन, जनि्हें कई लोग मनीकोइज्म की एक शाखा मानते थे, और जनि्होंने वास्तव में, मनीकोइयों की तरह, दो देवताओं को स्वीकार कयिा: एक अच्छा और एक बुरा।[186]

उपरोक्त सभी त्रुटयिों—बहुदेववादी, द्वैतवादी और त्रैतवादी—के वरिुद्ध ऑर्थोडॉक्स सद्धिांत की रक्षा करते हुए, ऑर्थोडॉक्स चर्च के पादरयिों ने लगातार यह दृष्टकिोण बनाए रखा कि ईश्वर एक है, उसी तरह नहीं जैसे एक ही प्रकार या प्रजाति की अन्य चीजों के बीच हर चीज एक होती है, न ही उस अर्थ में जसिमें कसिी अन्य देवता को, अन्य देवताओं के समूह से अलग करके, 'एक' कहा जा सकता है—बल्कि एक इस अर्थ में कि कोई अन्य ईश्वर नहीं है, न तो उसके बराबर, न उससे श्रेष्ठ, न ही उससे नीच, और केवल वही एकमात्र ईश्वर है।[187] इस सत्य का समर्थन करने के लिए—न केवल सत्य की प्रकृति के कारण, बल्कि इसके वरिोधयिों की प्रकृति के कारण भी—ऑर्थोडॉक्स शक्षिकों ने परंपरागत रूप से दो प्रकार के प्रमाणों का उपयोग कयिा है: पवत्रि शास्त्र से और सुदृढ़ तर्क से।

§13. पवत्रि शास्त्र से ईश्वर की एकता के प्रमाण

पवत्रि शास्त्र में ईश्वर की एकता का सत्य बहुत स्पष्ट और वस्तिार से प्रस्तुत कयिा गया है।

यह पुराने नयिम के प्रकाशन का सबसे मौलकि सद्धिांत था: *'मैं यहोवा तुम्हारा परमेश्वर हूँ, जसिने तुम्हें मस्रि देश से, दासत्व के घर से नकिाला; मेरे सवि तेरा कोई और देवता न हो'* (नर्गिमन 20:2, 3) — दस आज्ञाओं में से यह पहली आज्ञा है, जो परमेश्वर ने सनिाई पर्वत पर यहूदी लोगों को दी थी और यह, यों कहें, कि पूरे पुराने नयिम की नींव के रूप में कार्य करती है।

---

[183] उनकी उत्कृष्टता *इनोसेंट* द्वारा लखिति चर्च इतहिास की रूपरेखा, पुस्तक II, अनुभाग VII, संप्रदायों और फूट पर।

[184] उसी इतहिास में, शताब्दयिाँ III और IV, अनुभाग VII।

[185] ट्राइबोनयिों का अस्तत्वि वशिेष रूप से एक नश्चिति फलिोपोनस के कारण है—जो लगभग 580 में अलेक्जेंड्रयिा में रहते थे (*जॉन ऑफ़ डेमास्कस*, *डी हेरेसिस*, संख्या 88, संपादति ले-क्वएिन द्वारा, और महामहमि *इनोसेंट की* *आउटलाइन ऑफ़ एक्लेसयिास्टकिल हस्टि्री*, सदी VI, अनुभाग VII). इन त्रुटयिों को बाद में कुछ शक्षिावदिों द्वारा भी बनाए रखा गया, अर्थात्: गोडेस्चॉक (9वीं सदी), रोसेलनि (11वीं सदी) और पीटर एबेलेर्ड (12वीं सदी), साथ ही शेरलॉक और पीटर ताइडटि (17वीं सदी के अंत में)।

[186] *फ़ोटयिस*— मनीकोई धर्म के पुनरुत्थान पर (खंड XIII, गैलांड संस्करण में); उनकी उत्कृष्टता *इनोसेंट* द्वारा चर्च इतहिास की रूपरेखा, 9वीं–11वीं शताब्दयिाँ, अनुभाग VII. हाल के समय में (18वीं सदी), प्रसद्धि फ्रांसीसी लेखक बेले द्वैतवादी प्रणाली के रक्षक थे, लेकनि उन्होंने स्वयं जल्द ही इसकी नाजुकता और मूर्खता को स्वीकार कर लयिा *(बेले,* Eclaircissements sur les Manichéens, Dictionn. crit. के अनुसार)।

[187] *क्लेम. एलेक्स.* पैडैग. पुस्तक 1, अध्याय 8: 'क्या एक ईश्वर है, और उस एक के परे, और उससे ऊपर, एकता है?' *ओरजिन,* *डे प्रसिपियिस* 1.6.... ताकि यह न माना जाए कि ईश्वर में स्वयं के भीतर कुछ भी बड़ा या छोटा है, बल्कि यह कि वह हर मामले में *मोनास* और, कह सकते हैं, *एन*...; *ब्रूफनि* — एक्सपोजटि. फाइडि, पृ. 18: "जब हम कहते हैं कि पूर्वी चर्च एक ईश्वर, पति, सर्वशक्तमिान, और एक प्रभु में वश्विास करते हैं, तो यहाँ यह समझना चाहिए कि उसे *'एक' संख्या के संदर्भ में नहीं, बल्कि संपूर्णता के संदर्भ में* कहा जाता है (unum non numero dici, sed universitate)। इस प्रकार, यदि कोई एक व्यक्ति, या एक घोड़े की बात करता है, तो इस मामले में *'एक' संख्यात्मक रूप* में समझा जाता है: क्योंकि एक दूसरा व्यक्ति, और एक तीसरा हो सकता है, ठीक उसी तरह जैसे एक दूसरा घोड़ा हो सकता है। लेकनि जहाँ कोई 'एक' की बात इस तरह से करता है कि एक दूसरा या तीसरा जोड़ा नहीं जा सकता, वहाँ 'एक' शब्द संख्यात्मक रूप में नहीं, बल्कि उसकी संपूर्णता में लयिा जाता है। उदाहरण के लिए, यदि हम कहते हैं: 'एक सूर्य'—यहाँ *'एक'* शब्द इस अर्थ में प्रयुक्त होता है कि न तो दूसरा और न ही तीसरा जोड़ा जा सकता है। ईश्वर के मामले में तो और भी अधकि: जब उन्हें 'एक' कहा जाता है, तो इसका अर्थ संख्यात्मक 'एक' नहीं, बल्कि उनकी संपूर्णता में समझा जाता है—'एक' ठीक उसी अर्थ में कि कोई दूसरा ईश्वर नहीं है।"

[188]ईश्वर ने स्वयं बाद में इस सत्य को इस्राएलियों पर बार-बार अंकित किया। उन्होंने मूसा के द्वारा उनसे कहा, *'देखो, देखो,* जब उन्होंने *परमेश्वर के बजाय दुष्टात्माओं को बलिदान चढ़ाई... और अपनी व्यर्थता से मुझे दुखी* किया' (व्यवस्थाविवरण 32:17–21)—*'यह मैं हूँ, मैं हूँ— और मेरे सिवा कोई और परमेश्वर नहीं* (व्यवस्थाविवरण 32:39)। बाद में, जब इस्राएल के लोग फिर से मूर्तिपूजा में पड़ गए, तो उन्होंने उन्हें यशायाह नबी के माध्यम से एक बार फिर याद दिलाया: *'मैं यहोवा हूँ; यही मेरा नाम है; और मैं अपनी महिमा किसी और को, न अपनी स्तुति मूर्ति को नहीं दूँगा* (यशायाह 42:8); *'मैं ही पहिला और मैं ही आखिरी हूँ, और मेरे सिवा कोई परमेश्वर नहीं* (यशायाह 44:6); *'और तुम मेरे गवाह हो। क्या मेरे सिवा कोई और परमेश्वर है?'* (यशायाह 44:8); *'प्राचीन काल से, समय की आरंभिक अवस्था से हुई बातों को याद करो, क्योंकि मैं परमेश्वर हूँ, और कोई और परमेश्वर नहीं है, और मेरे सदृश कोई नहीं* (यशायाह 46:9; तुलना करें यशायाह 45:5–6). यह उल्लेखनीय है कि पवित्र शास्त्र के इन और कई अन्य अंशों में, ईश्वर स्वयं को एकमात्र सच्चा ईश्वर ( ) कहकर सभी मूर्तिपूजक देवताओं को *व्यर्थ (vain),*[189] *मूर्तियों को झूठी (false), निर्शब्द (voiceless), नक्काशीदार (graven), मृत (dead) और* सामान्यतः मानव हाथों का काम (the work of human hands) कहते हैं;[190] अतः वह स्पष्ट रूप से उन्हें, यहाँ तक कि किसी प्रकार के नम्रिनतर देवताओं के रूप में भी, देखने से मना करता है।

साथ ही, भविष्यवक्ताओं ने इस्राएलियों में ईश्वर की एकता का सत्य स्थापित किया, या तो अपनी ओर से बोलकर या गंभीरतापूर्वक इसकी घोषणा करके, और साथ ही यह भी घोषित किया कि मूर्तिपूजक देवता देवता नहीं थे। इस प्रकार — (क) मूसा, यहूदी लोगों को परमेश्वर के विशेष आशीर्वादों की याद दिलाते हुए और उन्हें सर्वोच्च के आज्ञाओं का पालन करने के लिए प्रेरित करते हुए, बार-बार कहते हैं: *'ताकि तुम जान लो कि केवल यहोवा [तुम्हारा परमेश्वर] ही परमेश्वर है, [और] उसके सिवा और कोई नहीं है* (व्यवस्थाविवरण 4:35); *'इसलिए आज यह जान लो, और मन में ठान लो, कि यहोवा [तुम्हारा परमेश्वर] ही ऊपर स्वर्ग में और नीचे पृथ्वी पर परमेश्वर है, [और] उसके सिवा और कोई नहीं है'* (व्यवस्थाविवरण 39); और भी आगे: *सुन, हे इस्राएल: यहोवा हमारा परमेश्वर, यहोवा एक है; और तुम यहोवा अपने परमेश्वर से अपने पूरे हृदय और अपनी पूरी आत्मा और अपनी सारी शक्ति से प्रेम करोगे* (व्यवस्थाविवरण 6:4–5); ख) भजनकार एक स्थान पर उद्घोष करता है: *'क्योंकि यहोवा के सिवा और कौन परमेश्वर है, और हमारे परमेश्वर के सिवा और कौन चट्टान है?'* (भजन संहिता 17:32); और दूसरे में: *'हे यहोवा, देवताओं में तेरे सदृश कोई नहीं, और तेरे समान काम भी नहीं हैं।' सभी राष्ट्र जिन्हें तू ने बनाया है, वे आकर तेरे सामने दण्डवत करेंगे, हे यहोवा, और तेरे नाम का महिमा करेंगे; क्योंकि तू महान है और अद्भुत करता है—तू, हे परमेश्वर, एक है* (भजन संहिता 85:8-10); तीसरे में: *क्योंकि यहोवा महान है और स्तुति के योग्य है; वह सब देवताओं से अधिक भययोग्य है। क्योंकि राष्ट्रों के सभी देवता मूर्तियाँ हैं, परन्तु यहोवा ने आकाश को बनाया* (भजन संहिता 95:4–5); c) भविष्यवक्ता यिर्मियाह परमेश्वर के सामने स्वीकार करता है: *'हे यहोवा, तेरे सदृश कोई नहीं! तू महान है, और तेरा नाम सामर्थ्य में महान है। हे राष्ट्रों के राजा, तेरा भय न माननेवाला कौन होगा?' क्योंकि यह केवल आप ही का है; क्योंकि सभी राष्ट्रों के बुद्धिमानों और उनके सभी राज्यों में आप जैसा कोई नहीं है। उनमें से प्रत्येक मूर्ख और बेसमझ है; उनकी शिक्षा केवल एक वृक्ष है। चांदी, जो चादरों में ठोंकी गई है, tarshish से लाई जाती है, सोना uphaz से, जो कारीगर का काम और शोधक के हाथों का बना है; उनके वस्त्र नीलमणि और बैंगनी रंग के हैं: यह सब कुशल लोगों का काम है। परन्तु यहोवा परमेश्वर सत्य है; वह जीवित परमेश्वर और अनन्त राजा है। पृथ्वी उसके क्रोध से काँपती है, और राष्ट्र उसकी उग्रता को सहन नहीं कर सकते* (यिर्म. 10:6–10)। और हम यहाँ धर्मी राजा हिजकियाह की प्रार्थना को भी याद किए बिना नहीं रह सकते, जो यह दर्शाती है कि परमप्रभु के दूतों के अलावा अन्य यहूदियों द्वारा भी परमेश्वर की एकता की सच्चाई को कैसे समझा गया था: *और हिजकियाह ने,* जैसा कि राजाओं की चौथी पुस्तक में वर्णित है, *प्रभु के सामने प्रार्थना की और कहा: 'हे इस्राएल के परमेश्वर, जो करूबों पर विराजमान*

---

[188] *मूर्ति की ओर न मुड़ो, और न अपने लिए कोई ढाली हुई मूर्तियाँ बनाओ* (लैव्यिों 19:4)। *और तुम उनकी सभी ढाली हुई मूर्तियों को नष्ट कर दोगे* (गिनती 33:52)।

[189] *'ताकि वे फिर अपनी मूर्तियों को बलिदान न करें* (लैव्य. 17:7)। *यहोवा यों कहता है: 'तुम्हारे पितरों ने मुझ में क्या दोष पाया, कि वे मुझ से फिर गए और व्यर्थता के पीछे हो गए, और व्यर्थ हो गए?'* (यिर्म. 2:5)।

[190] *उनकी जीभ* (बाबेल के देवता) *एक कारीगर द्वारा बनाई गई है... और बोल नहीं सकती* (यिर्म. 7; तुलना करें 58)। *मेरा हाथ मूर्तियों के राज्यों पर हावी हो गया है, जहाँ यरूशलेम और सामरीया से भी अधिक मूर्तियाँ हैं* (यशायाह 10:10)। *उन्होंने अपनी विदेशी, व्यर्थ की मूर्तियों से मुझे क्यों क्रोधित किया है?* (यिर्मियाह 8:19)। *और अब उन्होंने अपने पाप में यह जोड़ दिया है: उन्होंने अपनी चाँदी से, अपनी ही कल्पना के अनुसार, ढले हुए बछड़े बनाए हैं—जो कुशल कारीगरों का काम है* (होशे 13:2)। *मैं तुम्हारे बीच से तुम्हारे बछड़े और तुम्हारी मूर्तियाँ नाश कर दूँगा, और तुम फिर कभी अपने हाथों के बनाए हुए की पूजा नहीं करोगे* (मीका 5:13)।

है! केवल तू ही पृथ्वी के सभी राज्यों का परमेश्वर है; तू ने आकाश और पृथ्वी को बनाया है। हे प्रभु, अपना कान लगाकर [मेरी] सुन; हे प्रभु, अपनी आँखें खोलकर देख और सुन, सेनाकेरीब के वचन, जिसने [तुझ पर] अपमान करने के लिए भेजा है, जीवित परमेश्वर! हे प्रभु, यह सच है कि अश्शूर के राजाओं ने राष्ट्रों और उनकी भूमि को उजाड़ दिया है, और उनके देवताओं को आग में डाल दिया है; फिर भी वे देवता नहीं, बल्कि मनुष्यों के हाथों का काम, लकड़ी और पत्थर हैं; इसलिये उन्होंने उन्हें नष्ट कर दिया है। और अब, हे हमारे प्रभु परमेश्वर, हमें उसके हाथ से बचा, ताकि पृथ्वी के सब राज्य जान लें कि हे प्रभु, तू ही एकमात्र परमेश्वर है (2 राजा 19:15–19)।

इसके बाद एक घोर और दुस्साहसी बदनामी आती है—यह दावा करना कि पुराने नियम में बहुदेववाद के सिद्धांत के निशान हैं, और यह कि यहूदियों का परमेश्वर, उनकी पवित्र पुस्तकों के अनुसार, उस समय के अन्य लोगों के देवताओं के समान, देवताओं में से केवल एक, एक लोक देवता था।[191]

पहले दृष्टिकोण का समर्थन करने के लिए, पवित्र शास्त्र के उन अंशों का हवाला दिया गया है जहाँ परमेश्वर को बहुवचन में *'एलोहीम* (एलोहीम — 'देवता', 'एलोह' — 'ईश्वर' से) कहा गया है, और जहाँ उन्हें बोलते हुए दर्शाया गया है: *'आओ हम मनुष्य को अपनी प्रतिमा में [और] अपनी समानता में बनाएँ* (उत्पत्ति 1:26); *'हम उसके* (आदम) *लिए एक सहायक बनाएँ जो उसके अनुकूल हो'* (2:18), और इसी तरह। लेकिन — (क) जब वही मूसा, जिनकी पुस्तकों में ये अंश पाए जाते हैं, इतनी बार और इतनी स्पष्ट रूप से एक ईश्वरवाद का प्रचार करते हैं, जो पूरे सिनाई विधान का सबसे प्रमुख आज्ञा है; जब वे सीधे तौर पर सभी मूर्तिपूजक देवताओं को व्यर्थ और मूर्तियों को कहते हैं, और हर संभव तरीके से यहूदियों को उनका अनुसरण करने से रोकने का प्रयास करते हैं (लैव्य. 17:7; Deut. 32:21 और अन्य), तो, बिना क य किसी संदेह के, प्रश्न में उठाए गए अंशों में वह अपनी ही शिक्षाओं के विपरीत, निहित रूप से बहुदेववाद के सिद्धांत को व्यक्त नहीं कर सकते थे, — और इसलिए चर्च के पवित्र पिताओं से सहमत हुए बिना नहीं रहा जा सकता कि, यद्यपि यहाँ ईश्वर के लिए बहुवचन का प्रयोग किया गया है, परन्तु व्यक्त किया गया विचार देवताओं की बहुलता का नहीं, बल्कि एक ही ईश्वर के भीतर दिव्य व्यक्तियों का है; अर्थात्, परम पवित्र त्रिमूर्ति के रहस्य का संकेत दिया गया है;[192] ख) विशेष रूप से, *'एलोहीम'* नाम के संबंध में, यह भी ध्यान दिया जाना चाहिए कि, मूसा की अपनी व्याख्या के अनुसार, इसका अर्थ बिल्कुल भी कई देवता नहीं है, बल्कि एक और वही ईश्वर *है*, जिन्हें अन्यथा प्रभु कहा जाता है: क्योंकि मूसा में हमें यह अभिव्यक्ति मिलती है: *'प्रभु [तुम्हारा ईश्वर] ईश्वर है* (देखें व्यवस्थाविवरण 4:39 हिब्रू पाठ के अनुसार)— इसीलिए मूसा की रचनाओं और बाद के यहूदी पवित्र लेखकों की रचनाओं में ईश्वर के ये दोनों नाम अक्सर एक साथ मिलकर एक ही नाम के रूप में प्रयुक्त होते हैं: यहोवा-एलोहीम—प्रभु ईश्वर (निर्गमन 9:30; यहोशू 22:22; 1 शमूएल 6:20; 2 शमूएल 7:18–19; 1 इतिहास 17:16–26; भजन 83:9; भजन 12; योना 4:6 (हिब्रू पाठ के अनुसार)। दूसरे दृष्टिकोण का समर्थन करने के लिए—अर्थात्, कि पुराना नियम इब्रानियों के केवल राष्ट्रीय ईश्वर को कई देवताओं में से एक के रूप में घोषित करता है—वे उन अंशों की ओर इशारा करते हैं जहाँ उन्हें *इब्राहीम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर* कहा गया है (निर्गमन 3:6 और निर्गमन 15), *यहूदियों का परमेश्वर* (निर्गमन 3:18), *और 'यहोवा तुम्हारा परमेश्वर देवताओं का परमेश्वर और प्रभुओं का प्रभु है'* (व्यवस्थाविवरण 10:17)। हालाँकि—(क) पहले दो उपाधियाँ पूरी तरह से यहूदियों के साथ परमेश्वर के विशेष संबंध द्वारा समझाई जाती हैं। उन्हें एक ऊँचे उद्देश्य के लिए चुनने के बाद—पृथ्वी पर व्यापक दुष्टता के बीच सच्चे विश्वास को बनाए रखने के लिए—उसने उनके पूर्वज अब्राहम के साथ एक विशेष वाचा स्थापित की, जिसे उसने बाद में कई अवसरों पर दोहराया (उत्पत्ति 17:7–9; निर्गमन 19:4–6; व्यवस्थाविवरण 26:16-19)—एक वाचा कि वह उन के साथ रहेगा, सब से बढ़कर, और उन्हें अपना, सब राष्ट्रों में से चुना हुआ, अपना विशेष लोग बनाएगा (2 शमूएल 7:24); परिणामस्वरूप, वह स्वाभाविक रूप से, एक विशेष अर्थ में, इब्राहीम, इसहाक और याकूब का परमेश्वर, और यहूदियों का परमेश्वर कहा जा सकता था। जहाँ तक — b) इस्राएलियों से मूसा के वचन का प्रश्न है: *'प्रभु तुम्हारा परमेश्वर देवताओं का परमेश्वर और प्रभुओं का प्रभु है'* (व्यवस्थाविवरण 10:17); यह दावा करना पूरी तरह से अनुचित है कि यहाँ अन्य, छोटे देवताओं के वास्तविक अस्तित्व का संकेत दिया गया है, जबकि यह ज्ञात है कि व्यवस्थाविवरण की उसी पुस्तक में पहले यहूदी विधि-दाता ने अपने लोगों से स्पष्ट रूप से कहा

---

[191] यह लगभग नवीनतम तर्कवादियों की सामान्य धारणा है।

[192] *थियोफिलस टू ऑटोलाइकस*, पुस्तक II; *इसिडोर ऑफ पेलसियम*, पुस्तक III, पत्र 112; *बेसिल द ग्रेट*, अगेंस्ट यूनोमियस, पुस्तक V, और ऑन द होली स्पिरिट, अध्याय 16; *सिरिल*, अगेंस्ट जूलियन, पुस्तक 1; *क्रिसोस्टोम*, उत्पत्ति पर होमलीज, पुस्तक VIII; *थियोडोरेट*, उत्पत्ति पर, प्रश्न 19; *ऑगस्टीन*, त्रिमूर्ति पर, पुस्तक 1, अध्याय 7, और अन्य।

था: *'इसलिये आज यह जान लो, और मन में ठान लो, कि यहोवा [तुम्हारा परमेश्वर] ही ऊपर आकाश में और नीचे पृथ्वी पर परमेश्वर है; और कोई और नहीं है'* (4:39)। मूसा स्पष्ट *रूप से* सर्वोच्च को स्वयं मूर्तिपूजक देवताओं से भी ऊपर के ईश्वर के रूप में संदर्भित करते हैं, जो मूर्तिपूजकों की समझ के अनुरूप है, जो इस बात से आश्वस्त थे कि ये देवता वास्तव में मौजूद थे, यद्यपि वह स्वयं उन्हें केवल मूर्तियों या काल्पनिक प्राणियों के रूप में संदर्भित करते हैं (लैव. 19:4; गिनती 33:52)।[193]

नए नियम की पुस्तकों की ओर मुड़ने पर, हम पाते हैं कि यहाँ भी ईश्वर की एकता का सत्य उसी उच्च महत्व के साथ प्रस्तुत किया गया है जैसा कि पुराने नियम में था। उद्धारकर्ता स्वयं, जब एक विद्वान ने उनसे पूछा कि *सभी आज्ञाओं में सबसे पहली आज्ञा कौन सी है, तो* उन्होंने उत्तर दिया: *'हे इस्राएल, सुन! प्रभु हमारा परमेश्वर ही एकमात्र प्रभु है'* (मरकुस 12:28–29)। अन्य अवसरों पर भी उन्होंने इस सत्य को उतनी ही स्पष्टता से, या उससे भी अधिक स्पष्टता *से* व्यक्त किया—उदाहरण के लिए, जब एक व्यक्ति ने उन्हें 'नेक शिक्षक' कहा, *तो* उन्होंने कहा: *'केवल परमेश्वर के सिवा कोई नेक नहीं है'* (मरकुस 10:17-18), और अपने स्वर्गीय पिता से अपनी प्रार्थना में उन्होंने घोषणा की: *'जीवन यह है कि वे तुझे, एकमात्र सच्चे परमेश्वर को, जानें'* (यूहन्ना 17:3)। स्वर्गीय पिता *को एकमात्र सच्चा परमेश्वर* कहकर, मसीह निस्संदेह हमें सिखाते हैं कि अन्य सभी तथाकथित देवता झूठे देवता हैं।[194]

पवित्र प्रेरितों ने, स्वाभाविक रूप से, बहुदेववादियों—पगानों—को मसीह की ओर मोड़ने का काम जब भी उन्हें सौंपा गया, तब ईश्वर की एकता के सत्य का प्रचार किया। *'हे मनुष्यों! तुम क्या कर रहे हो?'* पौलुस और बर्नबास ने तब पुकारा, जब लिस्त्रियावासियों ने पौलुस द्वारा किया गया चमत्कार देखा और उन्हें वे देवता समझ लिया जो पृथ्वी पर उतर आए थे, जुपटिर और मर्करी, और उन्हें बलिदान चढ़ाने को तैयार थे—*'हम भी तुम ही जैसे मनुष्य हैं, और हम तुम्हें यह शुभ समाचार सुनाने आए हैं कि तुम इन झूठे देवताओं से मुड़कर जीवित परमेश्वर की ओर लौट आओ, जिसने स्वर्ग, पृथ्वी, समुद्र और उनमें जो कुछ भी है, सब कुछ बनाया है* (प्रेरितों के काम 14:7–15)। एथेंस में एरेओपैगस में संत पौलुस का भाषण (—प्रेरितों के काम 17:22–31, और एफिसुस और अन्य स्थानों में पौलुस के उपदेश का विवरण—प्रेरितों के काम 19:25–26) भी देखें। बाद में, प्रेरितों को कभी-कभी यह सत्य नए धर्मी हुए गैर-यहूदियों के ईसाइयों को दोहराना आवश्यक लगा—उदाहरण के लिए, मूर्तियों को बलिदान किए गए भोजन को खाने के बारे में एक प्रश्न के जवाब में, भाषाओं के शिक्षक ने कोरिंथ में अपने शिष्यों को लिखा, जिसमें अन्य बातों के अलावा, निम्नलिखित कहा गया: *मूर्तियों पर चढ़ाया गया भोजन खाने के विषय में, हम जानते हैं कि संसार में मूर्ति कुछ भी नहीं है, और यह कि एक ही परमेश्वर के सिवा कोई और ईश्वर नहीं है। क्योंकि यद्यपि स्वर्ग में या पृथ्वी पर तथाकथित देवता हैं—जैसा कि वास्तव में कई 'देवता' और कई 'स्वामी' हैं—तथापि हमारे एक परमेश्वर है, पिता, जिससे सब वस्तुएँ हैं, और जिसके लिए हम जीते हैं; और एक प्रभु, यीशु मसीह, जिसके द्वारा सब वस्तुएँ हैं, और जिसके द्वारा हम जीते हैं* (1 कुरिन्थियों 8:4–6)। अंत में, प्रेरितों ने अक्सर अन्य धर्मशास्त्रीय और नैतिक सच्चाइयों को समझाने या पुष्टि करने के लिए परमेश्वर की एकता की सच्चाई का संदर्भ दिया। इस प्रकार, यह साबित करते हुए कि एक व्यक्ति यहूदी विधियों के कर्मों के बिना विश्वास से धर्मी ठहराया जाता है, संत पौलुस लिखते हैं: *'क्या परमेश्वर केवल यहूदियों का परमेश्वर है, और अन्यजातियों का नहीं? बेशक, वह अन्यजातियों का भी परमेश्वर है, क्योंकि परमेश्वर एक ही है, जो खतना किए हुओं को विश्वास के द्वारा और खतना न किए हुओं को विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराएगा* (रोमियों 3:29-30); अन्यत्र, मसीहियों को अपने उच्च बुलावे के योग्य जीवन जीने और अपने बीच आत्मा की एकता बनाए रखने के लिए प्रेरित करते हुए, वह उन्हें अन्य बातों के अलावा यह याद दिलाते हैं कि उनका *एक ही परमेश्वर और पिता है, जो सभी के ऊपर, सभी के बीच और हम सभी में है* (इफिसियों

---

[193] संत जॉन क्राइसोस्टोम (भजन संहिता 50 में) यह देखते हैं कि धर्मग्रंथ में मूर्तिपूजक मूर्तियों को कभी-कभी देवताओं के रूप में संदर्भित किया जाता है — सम्मान के कारण नहीं, न ही उस उपाधि की कृपा से, बल्कि उन लोगों के भ्रम के कारण जो भटक गए हैं और इस प्रकार उन्हें ऐसा कहा है। यह भी ज्ञात है कि धर्मग्रंथ में 'देवताओं' का नाम कभी-कभी राजाओं, शासकों, न्यायाधीशों और पुरोहितों को दिया जाता है (निर्ग. 22:28; भजन संहिता 81:1 और 6; 135:2, आदि)। इन्हीं देवताओं के संदर्भ में मूसा परमप्रभु को 'देवताओं का परमेश्वर' और 'प्रभुओं का प्रभु' कह सकते थे, और यह केवल मूर्तिपूजकों के देवताओं या मूर्तियों के संदर्भ में नहीं था।

[194] उद्धारकर्ता के भी ऐसे ही वचन हैं: (क) यहूदियों से: *'तुम विश्वास कैसे कर सकते हो, जब तुम एक दूसरे से महिमा ग्रहण करते हो, और उस एक परमेश्वर से महिमा नहीं खोजते जो स्वर्ग में है?'* (यूहन्ना 5:44), और — ख) शैतान को: *'मेरे पास से दूर हो जा, शैतान! क्योंकि लिखा है: "अपने प्रभु परमेश्वर की आराधना कर और केवल उसी की सेवा कर"'* (लूका 4:8)।

4:1–6); तीसरे, विश्वासियों से *सभी लोगों के लिए प्रार्थना करने का* आग्रह करते हुए, वह इसका कारण यह देता है कि *परमेश्वर एक है और परमेश्वर तथा मनुष्यों के बीच एक ही मध्यस्थ है, जो मनुष्य मसीह यीशु है* (1 तीमु. 2:1–5)।[195]

§14. पवित्र पितरों और चर्च के शिक्षकों द्वारा प्रयुक्त ईश्वर की एकता के तार्किक प्रमाण

पवित्र धर्मपिता और चर्च के शिक्षकों द्वारा सुदृढ़ तर्क के आधार पर उपयोग किए गए ईश्वर की एकता के प्रमाण, लगभग वही हैं जो आज भी इसी उद्देश्य के लिए सामान्यतः उपयोग किए जाते हैं। इनमें से कुछ इतिहास और मानव आत्मा (मानवशास्त्रीय) की गवाही से, कुछ दुनिया के अवलोकन (ब्रह्मांडीय) से, और कुछ स्वयं ईश्वर की अवधारणा (अस्तित्वमीमांसीय) से लिए गए हैं।

पहले प्रकार के प्रमाण प्रस्तुत करते हुए, पवित्र पिताओं और शिक्षकों ने इशारा किया—

1) ईश्वर की एकता की प्राचीन परंपरा, जो सभी लोगों में व्यापक रूप से प्रचलित थी, जिसके परिणामस्वरूप सबसे असभ्य मूर्तिपूजकों ने भी, चाहे वे बहुदेववाद और मूर्तिपूजा में कितनी भी गहराई तक क्यों न डूब गए हों, हमेशा अपने विश्वासों में एक एकल सर्वोच्च ईश्वर की अवधारणा को बनाए रखा, अपने अन्य देवताओं को उससे उत्पन्न या यहां तक कि उसके द्वारा बनाए गए छोटे देवता मानते हुए, और किसी भी स्थिति में उसकी शक्ति और अधिकार के अधीन थे।[196]

2) स्वयं मूर्तिपूजक लेखकों के बीच ईश्वर की एकता को स्वीकार करने में सहमति। इस विचार के समर्थन में, ईसाई धर्म के रक्षकों ने ऑर्फियस, हेसियोड, सोफोक्लीज़, प्लेटो, ज़ेनोफेनेस और अन्य का उल्लेख किया, या यहां तक कि उनके लेखों से अंश उद्धृत किए—ऐसे अंश *जो* वास्तव *में* अक्सर बहुत स्पष्ट और प्रभावशाली *थे*।[197]

लेकिन मध्यस्थ एक ही है, और ईश्वर एक है (गलातियों 3:20)। *यह समय आने पर धन्य और एकमात्र सर्वशक्तिमान राजा- राज और प्रभु- प्रभु, जो अमरत्व के स्वामी हैं, द्वारा प्रकट किया जाएगा* (1 तीमुथियुस 6:15-16)।

3) अंततः ईश्वर को एकमात्र और अद्वितीय मानने का विचार हमारे स्वभाव में निहित है। इसी अंतर्निहित विचार को *आत्मा की गवाही* कहा गया, जिसे प्रत्येक व्यक्ति अपने भीतर रखता है, और जिसे, चाहे वह मूर्तिपूजक पूर्वाग्रहों और अंधविश्वासों द्वारा कितना भी दबाया जाए, मूर्तिपूजकों द्वारा अपने दैनिक संवादों में अनैच्छिक रूप से, जैसे सहज प्रवृत्ति से, अक्सर व्यक्त किया जाता है। टर्तुल्लियन मूर्तिपूजकों से कहता, 'अपने ही आत्मा की गवाही सुनो, जो मन के कारावास के बावजूद' (संभवतः विविध, हमेशा ठीक से व्यवस्थित नहीं, वैज्ञानिक ज्ञान का संदर्भ, जो अक्सर किसी व्यक्ति की आध्यात्मिक अंतर्ज्ञान के विकास में बाधा डालता है; *संपादक की टिप्पणी*) पूर्वाग्रह और खराब परवरिश, वासनाओं के उग्रता, झूठे देवताओं की दासता को—जब यह, मानो, नशे या गहरी नींद से जागती है, जब यह, कहने का मतलब है, स्वास्थ्य की

---

[195] निम्नलिखित अंश भी यहाँ लागू होते हैं: *'तुम विश्वास करते हो कि परमेश्वर एक है; तुम भले करते हो; भूत-प्रेत भी विश्वास करते हैं—और काँपते हैं* (याकूब 2:19)। *एकमात्र बुद्धिमान परमेश्वर को, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमारा उद्धारकर्ता है, युगों-युगों से पहले, और अब और अनंतकाल तक महिमा और भव्यता, सामर्थ्य और अधिकार हो* (यहूदा 1:25। तुलना करें रोमियों 14:26)।

[196] *ऑगस्टीन,* *कॉन्ट्रा फाउसटस*, पुस्तक X, पृ. 10; *लैक्टैंटियस,* *इंस्टिट्यूशियो*, पुस्तक I, अध्याय 3; *ओरोसियस द प्रेस्बटिर*, *हिस्टोर.*, पुस्तक VI, अध्याय 1, *पैट्रोलॉजिया कर्सस कम्प्लेटस* *के* खंड 31 में पृष्ठ 986 / संत जस्टिन अपने *डे मोनार्किया देई*, अध्याय 1 में इस सार्वभौमिक परंपरा और विश्वास को *καθολική δόξα* के रूप में संदर्भित करते हैं।

[197] इस तर्क का उपयोग यावचियिनों के खिलाफ एथेनागोरस (लेगेट., अध्याय 6 और 7), जस्टिन द मार्टियर (कोहॉर्ट, एड ग्रीक., अध्याय 18 और 19; Dialog. cum Tryphon, ch. 6), टर्टुलियन (De testim. animae, ch. 1), मिन्यूशियस फेलिक्स (Octavius, pp. 18–20), अलेक्जेंड्रिया के क्लेमेंट (Strom. Book V, ch. 14), लैक्टैंटियस (Instit. Book I, ch. 6), सिरील (Contra Julian, Book I), ऑगस्टीन (Contra Faustus, Book XX, Chapter 10; De Civitate Dei, Book IV, Chapter 31), प्रुडेन्सियस (Apotheosis contra Haereses Sabellianorum, V, 23, 59) और अन्य। जिन अंशों का वे मूर्तिपूजक लेखकों से हवाला देते हैं, उनमें से हम कुछ की ओर ध्यान आकर्षित करेंगे:

क) ओरफियस के शब्द:

'एक है जो स्वयं उत्पन्न हुआ है; सभी चीजें उसी से उत्पन्न हुई हैं।'

6) — ज़ेनोफ़ेनेस:

एक ईश्वर है, जो देवताओं और मनुष्यों दोनों में सबसे महान है।

c) — सोफोक्लीज़:

'सत्य में, केवल एक ही ईश्वर है,
जिसने स्वर्ग और विशाल पृथ्वी को व्याप्त किया है,
और समुद्र पर हवाओं की आनंदमय गर्जना।

एक चगिारी महसूस करती है, तो यह अनैच्छकि रूप से एकमात्र सच्चे ईश्वर का नाम पुकारती है और चल्लिाती है: *'हे महान ईश्वर! हे अच्छे ईश्वर! ईश्वर ऐसा करे!* इस प्रकार सभी लोगों के होठों पर उसका नाम है। आत्मा भी नम्निलखिति शब्दों के साथ उसे न्यायाधीश के रूप में स्वीकार करती है: *'ईश्वर देखता है; मैं ईश्वर पर भरोसा करता हूँ; ईश्वर मुझे पुरस्कृत करेगा।*' ओह, स्वभाव से ही ईसाई (naturaliter Christianae) आत्मा की गवाही! और जब यह ये शब्द उच्चारति करती है, तो इसकी दृष्टि कैपटिल की ओर नहीं, बल्कि स्वर्ग की ओर मुड़ती है, यह जानते हुए कि वहाँ जीवति परमेश्वर का महल है, और यह कि वहीं से, और केवल उसी से, इसका स्वयं का उद्गम हुआ है।"[198]

दुनिया की परीक्षा के माध्यम से ईश्वर की एकता को साबति करने का प्रयास करते हुए, चर्च के प्राचीन पादरयिों ने इस प्रकार तर्क दयिा:

1) संसार एक है, और इसके सभी भागों, बड़े और छोटे—चाहे वे कतिने भी अधकि और ववििधि क्यों न हों—के वन्यिास में यह पूर्ण एकता प्रदर्शति करता है: इससे यह स्पष्ट रूप से सृष्टकिर्ता की एकता की गवाही देता है।[199]

2) संसार के जीवन में एक नरिंतर क्रम और सामंजस्य स्पष्ट है; सब कुछ नश्चिति नयिमों के अनुसार प्रवाहति होता है, नश्चिति उद्देश्यों की ओर प्रयासरत है, सब कुछ एक-दूसरे से जुड़ा रहता है और संपूर्ण के कल्याण में योगदान देता है: यह एक अवविादनीय संकेत है कि संसार का केवल एक सर्वोच्च शासक है, जो अपनी सर्व-ज्ञानी योजनाओं के अनुसार सभी चीजों को व्यवस्थति करता है। यदि दुनिया के कई शासक, कई देवता होते, जो स्वाभावकि रूप से एक-दूसरे से भन्नि हों, तो प्रकृति में ऐसा सुव्यवस्थति क्रम और सामंजस्य नहीं हो सकता था; इसके वपिरीत, सब कुछ अव्यवस्था में पड़ जाता और अराजकता में डूब जाता; तो प्रत्येक देवता अपनी इच्छा और अपने वचिारों के अनुसार अपने हस्सि, या वास्तव में पूरी दुनिया पर शासन करेगा, और नरिंतर टकराव और संघर्ष होगा।[200]

3) एक ही ईश्वर—सर्वशक्तमिान और सर्वज्ञ—संसार को बनाने और संचालति करने के लिए पूरी तरह से पर्याप्त है: तो फरि, बाकी सभी देवताओं का उद्देश्य क्या है? वे, स्पष्ट रूप से, अनावश्यक हैं। *यह* कहना कि कई देवताओं ने मलिकर इस दुनिया को बनाया और गढ़ा, और मलिकर इसे चलाते हैं, यह सुझाव देना है कि उनमें से प्रत्येक, अलग से, इस कार्य के लिए अपर्याप्त है, उसमें न तो ईश्वर के योग्य सर्वशक्तमिानता है और न ही सर्वज्ञता; और परणिामस्वरूप, वे सभी अपूर्ण हैं और देवता नहीं हैं।[201]

---

198 *टर्तुल्लयिन,* *एपोलोजेटकिस*, पृ. 17; तथा *डे टेस्टमिोनयिो एनमि*, अध्याय II और VI; और ई. कार्नीव द्वारा रूसी अनुवाद में, जो 1847 में सेंट पीटर्सबर्ग में प्रकाशति हुआ था, देखें पृ. 42, 194–197 और 203। इसी वचिार को मन्यिूस फेलक्सि ने भी दोहराया है: 'मैं आम लोगों को, जब वे स्वर्ग की ओर अपने हाथ फैलाते हैं, कुछ भी नहीं कहते सुनता सविाय *"ईश्वर"* के: "ईश्वर *महान* है", *"ईश्वर सत्य* है", और "यदि *ईश्वर इच्छा करें*" / क्या यह आम लोगों की स्वाभावकि वाणी है, या एक घोषति ईसाई की प्रार्थना?' (ऑक्टाव., अध्याय 18); अर्नोबयिस (एड जेंटेस, पुस्तक II) और, अधकि वस्तिार से, लैक्टैंटयिस (दविय संस्थाएँ, पुस्तक II, अध्याय 1)।

199 "सभी अस्तत्विमान चीज़ों के एक ही स्रष्टा होने का नरि्वविाद प्रमाण," कहते हैं संत अथेनासयिस महान, "यह है कि एक ही संसार है, कई नहीं" — और फरि वे इस वचिार को अपने मूर्तपिूजकों के वरिुद्ध प्रबंध के अध्याय 39 में वकिसति करते हैं। इस वचिार को यूसेबयिस (प्रेपरेट. इवैंजेल., पुस्तक III, पृ. 13) और एम्ब्रोज़ ने भी वस्तिार से समझाया है: 'वशि्व की सामान्य प्रकृति एक ईश्वर की गवाही देती है, क्योंकि केवल एक ही वशि्व है' (डे फाइड, पुस्तक I, अध्याय 1)।

200 *इरनेयस,* *एगेंस्ट हेरेसीज़*, पुस्तक II, अध्याय 27, नोट 2; *जस्टनि* मार्टरि, *एडाजयिम*, अध्याय XVII; *टर्टुलयिन,* *एगेंस्ट मार्कयिन*, 1, 3 और 5; *अथेनासयिस,* *ओरेशन अगेंस्ट द पैगन्स*, अध्याय 38; *ग्रेगरी द थयिोलोजयिन*— *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, खंड VI, पृ. 224; *गरिलि. एलेक्स.* ऑन द होली ट्रनिटिी; *ऑगस्टीन,* ऑन ट्रू रलिीजन, अध्याय 32, 33, 36 और 40। उद्धृत अंश में संत अथेनासयिस द ग्रेट कहते हैं, "स्वयं संसार का क्रम, और इसके सभी भागों की पूर्ण सामंजस्यता स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि ब्रह्मांड का एक ही शासक और प्रबंधक है, न कि कई। क्योंकि यदि कई शासक होते, तो यह व्यवस्था बनी नहीं रह सकती थी; इसके वपिरीत, सब कुछ भ्रम और वकिृति में पड़ जाता—क्योंकि प्रत्येक अपनी मनमानी के अनुसार कार्य करता और दूसरे का वरिोध करता। और जैसे हमने कहा है कि बहुदेववाद ईश्वरlessness है, वैसे ही बहु-शासन को अनविार्य रूप से अराजकता कहा जाना चाहिए: क्योंकि यदि कोई दूसरे के अधकिार को उखाड़ फेंके, तो नस्सिंदेह, कोई शासक नहीं बचेगा, बल्कि एक सार्वभौमकि अराजकता होगी। 'जहाँ कोई शासक नहीं है, वहाँ कोई व्यवस्था नहीं है; इसके वपिरीत, केवल अव्यवस्था है,' — और इसी प्रकार अध्याय के अंत तक।

201 "यदि एक ही संसार कई लोगों द्वारा बनाया गया होता," उसी महान शक्षिक ने अगले अध्याय (Contra Gentiles, अध्याय 39) में आगे कहा, "तो इससे स्रष्टाओं की दुर्बलता का पता चलता, क्योंकि एक ही कार्य को साकार करने के लिए कई लोगों की भागीदारी आवश्यक होती; और साथ ही, यह रचना के लिए उनमें से प्रत्येक के ज्ञान की अपर्याप्तता को भी दर्शाता। क्योंकि यदि एक ही इसके लिए पर्याप्त होता, तो एक-दूसरे की कमयिों को पूरा करने के लिए कई लोगों की आवश्यकता नहीं होती। लेकनि यह कहना कि ईश्वर में कुछ भी कमी है, न केवल अधर्मी है, बल्कि सभी अधर्मों से बढ़कर है: क्योंकि मनुष्यों में भी, जो कोई एक कार्य अकेले नहीं बल्कि कई लोगों की सहायता से पूरा करता है, उसे एक

अंत में, सबसे महत्वपूर्ण प्रमाण, जो चर्च के शिक्षकों ने स्वयं ईश्वर की अवधारणा से प्राप्त किए हैं, वे निम्नलिखित दो हैं:

1) सभी लोगों की सर्वसम्मत सहमति से, ईश्वर एक ऐसा सत्ता है जिसके ऊपर और परे कोई नहीं है, और न ही हो सकता है। लेकिन सभी में से सबसे ऊँच और सबसे परिपूर्ण सत्ता केवल एक ही हो सकती है: क्योंकि यदि इसके बराबर अन्य होते, तो वह सभी में से सबसे ऊँच और सबसे परिपूर्ण होना बंद हो जाता, यानी, वह एक ईश्वर होना बंद हो जाता।[202] दूसरी ओर, कई सर्वश्रेष्ठ पूर्ण प्राणियों का अस्तित्व असंभव है क्योंकि उनके बीच अनिवार्य रूप से एक अंतर होना चाहिए: अन्यथा, वे कई होने के बजाय एक ही प्राणी होंगे। यदि, हालांकि, हम उनके बीच एक अंतर स्वीकार करते हैं, तो फिर उनकी सभी पूर्णताओं में समान कौन होगा? निस्संदेह किसी एक के पास किसी अन्य, तीसरे, चौथे और बाकी सभी की तुलना में किसी न किसी गुण का अधिक या कम होना चाहिए। अतः यदि प्रत्येक में पूर्णता की कमी हो—चाहे वह सद्गुण, शक्ति, बुद्धि या कोई अन्य गुण हो—तो वे अब सबसे परिपूर्ण प्राणी नहीं रहेंगे; वे देवता नहीं होंगे।[203]

२) ईश्वर, सबसे पूर्ण प्राणी के रूप में, एक ही समय में एक अनंत प्राणी भी है जो सभी चीजों को स्वयं से भर देता है। अब, यदि कई ईश्वर होते, तो उनकी अनंतता कैसे बनी रहती? जहाँ एक का अस्तित्व होता, वहाँ निश्चित रूप से दूसरा, न तीसरा, न चौथा, और न ही बाकी सभी का अस्तित्व हो सकता था।[204]

ईश्वर की एकता के इन और अन्य समान प्रमाणों को, उन मूर्तिपूजकों और सामान्यतः सभी विधर्मियों के विरुद्ध प्रस्तुत करते हुए, जिन्होंने ईश्वर के एकत्व (जो स्वभाव से एक है) *के* बारे में ईसाई सिद्धांत को अस्वीकार या विकृत कर दिया था, चर्च के पादरियों ने द्वैतवादियों के खिलाफ विशिष्ट तर्कों से भी खुद को लैस किया, जिन्होंने दो सह-शाश्वत, परस्पर शत्रु सिद्धांतों—अच्छाई और बुराई—का प्रतिपादन किया। इस बाद वाले प्रकार के तर्क का सार मुख्य रूप से दो प्रस्तावाओं में निहित है:

1) कि द्वैतवादी प्रणाली में स्वयं कई असंगतियाँ निहित हैं। रूढ़िवाद के रक्षकों ने पूछा: ये दो, परस्पर शत्रु सिद्धांत, क्या शक्ति में समान हैं, या नहीं? यदि वे समान हैं, तो वे एक-दूसरे को पूरी तरह से निष्क्रिय कर देंगे, और दुनिया

पूर्ण कलाकार नहीं बल्कि एक कमजोर कलाकार कहा जाएगा।" इसी बात को टर्टुलियन (कॉन्ट्रा मार्शियन, पुस्तक I, अध्याय 5), एम्ब्रोज़ (डी फाइड, पुस्तक I, अध्याय 1) और लैक्टैंशियस (डिविइन इंस्टिट्यूट्स, पुस्तक I, अध्याय 3) में भी पाया जाता है।

202 *टर्तुल्लियन,* *एडवर्सस मार्सियोनेम*, पुस्तक I, अध्याय 3 और 4; *पुरुडेन्सियस,* *एडवर्सस मार्सियोनेम*, V, 20–24; *नोवाटियन,* *Trinitas*, अध्याय IV; *ग्रेगरी ऑफ़ निस्सा,* *Catechetical Orations*, प्रस्तावना। "यदि आप जानना चाहते हैं कि ईश्वर एक है," कहते हैं उल्लेखित लेखकों में से पहले, "पूछिए कि ईश्वर क्या है — और आप जान जाएंगे। जहाँ तक मानवीय समझ ईश्वर को परिभाषित करने में सक्षम है, वह परिभाषा यह है: ईश्वर, जैसा कि सभी की अंतरात्मा द्वारा पहचाना जाता है, सर्वोच्च महानता (summum magnum) है, जो अनंतकाल में निवास करता है, अजन्मा, अकल्पित, बिना किसी शुरुआत या अंत के.... और इसी तरह। तो फिर, इस सर्वोच्च महानता के अस्तित्व की स्थिति क्या होनी चाहिए? कि कुछ भी इसके बराबर न हो, और परिणामस्वरूप कोई अन्य परम महानता न हो; क्योंकि यदि होती, तो वह इसके बराबर होती; और यदि वह इसके बराबर होती, तो वह परम महानता नहीं रहती, जो उस शर्त—या, मैं कह सकता हूँ, उस नियम—के विपरीत है जो यह दावा करता है कि कुछ भी परम महानता के बराबर नहीं है। इसलिए यह आवश्यक है कि परम महानता एक (unicum) हो और उसका कोई समकक्ष न हो, अन्यथा वह परम महानता ही नहीं रहेगी।" टर्तुल्लियन इस तर्क की शुरुआत और समाप्ति इन शब्दों से करते हैं: 'Deus si non unus est, non est' — ठीक उसी तरह जैसे महात्मा अथेनासियस ने *बहुदेववाद को 'नास्तिकता'* कहा (एथानेज़ियस, कॉन्ट्रा जेन्ट., अध्याय 38)।

203 पाठ में, हमने संत सिरिल ऑफ़ अलेक्जेंड्रिया (डी एस. ट्रिनिटि.) और संत जॉन ऑफ़ डेमास्कस के शब्दों को लगभग शब्दशः उद्धृत किया है, जिन्हें उन्होंने बाद में अपनी *थियोलॉजी* (*एक्जैक्ट एक्सपोज़िशन ऑफ़ द ऑर्थोडॉक्स फेथ*, पुस्तक I, अध्याय 5, पृष्ठ 10-11) में दोहराया था। लैक्टैंशियस ने इसी तरह तर्क दिया था। शक्ति का एक अधिक पूर्ण स्वरूप उस में हो सकता है जो संपूर्ण है, बजाय उस में जो संपूर्ण का केवल एक छोटा सा हिस्सा है। लेकिन यदि ईश्वर परिपूर्ण है (क्योंकि वह वैसा ही परिपूर्ण है जैसा उसे होना चाहिए), तो वह एक के अलावा कुछ और नहीं हो सकता, ताकि सभी चीजें उसी में हो सकें। इसलिए, यह निष्कर्ष निकलता है कि देवताओं के गुण और शक्तियाँ कमजोर होनी चाहिए: क्योंकि प्रत्येक में केवल उतनी ही कमी होगी जितनी दूसरों में पाई जाती है। इस प्रकार, जितने अधिक होंगे, वे उतने ही कमजोर होंगे (दिव्य संस्थान, पुस्तक 1, अध्याय 3)।

204 *इरनेयस,* *एगेंस्ट हेरेसीज़*, पुस्तक II, अध्याय 1, संख्या 2 और 5; *टर्टुलियन,* *एगेंस्ट मार्शन*, पुस्तक 1, अध्याय 2; *अथेनासियस,* *एगेंस्ट द पैगन्स*, संख्या 6; *अलेक्जेंड्रिया के सिरिल,* *ऑन द होली ट्रिनिटी*, अध्याय 4; *जॉन ऑफ़ डेमास्कस*/सही व्याख्यान ऑफ़ द ऑर्थोडॉक्स फेथ, पुस्तक 1, अध्याय 5, पृ. 1। "जब ईश्वर, अनंत में सभी चीजों के पूर्णत्व (omnium pleroma in immense) के रूप में, अनिवार्य रूप से सभी चीजों को अपने भीतर समाहित करता है और स्वयं किसी में समाहित नहीं होता है, तो ईश्वर के ऊपर कोई अन्य पूर्णत्व, या सिद्धांत, या शक्ति, या कोई अन्य ईश्वर कैसे हो सकता है? यदि कुछ भी उनके बाहर अस्तित्व में है, तो वह अब सभी चीजों की पूर्णता नहीं है और वह सभी चीजों को समाहित नहीं करता है, क्योंकि पूर्णता—या ईश्वर, जो सभी चीजों से ऊपर है—में वह वस्तु का अभाव होगा जिसे उसके बाहर अस्तित्व में माना गया है... और उसमें उन (देवताओं) के संबंध में एक आरंभ, एक मध्य और एक अंत होगा जो उसके बाहर हैं', और इसी तरह (उद्धृत अंश से संत आइरेनियस के शब्द)।

में न तो अच्छा होगा और न ही बुरा। हालाँकि, यदि वे बराबर नहीं हैं, तो मजबूत कमजोर को नष्ट कर देगा, और दुनिया में या तो केवल अच्छाई होगी या केवल बुराई। ये सिद्धांत सह-अस्तित्व कैसे रखते हैं? वे एक-दूसरे के भीतर मौजूद नहीं हो सकते, न ही वे एक साथ मौजूद हो सकते हैं, क्योंकि वे एक-दूसरे को नष्ट करने वाले विरोधी हैं। इसलिए यह मानना पड़ेगा कि प्रत्येक ब्रह्मांड के एक अलग हिस्से में रहता है। तो फिर, उनमें से प्रत्येक को उसका अपना क्षेत्र किसने सौंपा है? यह नहीं कहा जा सकता कि उन्होंने स्वयं इस पर सहमति व्यक्त की और आपस में एक संधि की: क्योंकि ठीक उसी तरह जैसे बुराई अब बुराई नहीं रह जाती जब वह शांति में और अच्छाई के साथ सामंजस्य में होती है, वैसे ही अच्छाई भी अब अच्छाई नहीं रह जाती जब वह बुराई के साथ मैत्रीपूर्ण संबंधों में होती है। अत; इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि हमें यह मानना चाहिए कि किसी और ने—और वास्तव में, वह सर्वशक्तिमान सत्ता, जिसका उन पर अधिकार है—प्रत्येक को एक अलग निवास स्थान प्रदान किया है। यदि ऐसा है, तो दो नहीं, बल्कि तीन सिद्धांत होंगे; या, अधिक सटीक रूप से कहें तो, एक सर्वोच्च सिद्धांत होगा, जिसके अधीनस्थ दो निम्न सिद्धांत होंगे।[205]

2) इस तथ्य में कि द्वैतवादियों की प्रणाली उस उद्देश्य के लिए पूरी तरह से अनावश्यक है जिसके लिए इसे बनाया गया था। वे मानते हैं कि दो सिद्धांतों—अर्थात्, अच्छे सिद्धांत के साथ एक बुरा सिद्धांत—को मानना आवश्यक है, ठीक उसी के लिए ताकि दुनिया में बुराई की उत्पत्ति और अस्तित्व की व्याख्या की जा सके, क्योंकि, वे कहते हैं, बुराई का अच्छाई से उत्पन्न होना असंभव है। लेकिन बुराई किसी प्रकार का सार (वास्तविकता) या किसी सार का गुण नहीं है, बल्कि यह एक आकस्मिक चीज़ है; यह केवल अच्छाई की अनुपस्थिति और प्राकृतिक से अप्राकृतिक की ओर एक विचलन है। क्योंकि प्रकृति से कुछ भी बुरा नहीं है: *वह सब कुछ जो उसने* सृष्टि की शुरुआत से *बनाया है, बहुत अच्छा है* (उत्पत्ति 1:31), और सभी प्राणी, जैसे वे बनाए गए थे वैसे ही रहते हुए, *बहुत अच्छे हैं*। हालाँकि, जो प्राकृतिक से मनमाने ढंग से विचलित होकर अस्वाभाविक की ओर मुड़ता है, वह (नैतिक रूप से) बुरा हो जाता है। स्वभाव से, हर चीज़ सृष्टिकर्ता की सेवा करती है और उसकी आज्ञा मानती है; लेकिन जब कोई भी प्राणी जानबूझकर विद्रोह करता है और अपने सृष्टिकर्ता की अवज्ञा करता है, तो वह बुरा हो जाता है। जहाँ तक तथाकथित 'भौतिक' बुराई (जैसे आपदाएँ, दंड और इसी तरह की चीजें) का सवाल है, वह अपने सार में बुराई नहीं है, बल्कि केवल हमारे संबंध में बुराई है; इसके अलावा, यह हमारी नैतिक बुराई का परिणाम है और ईश्वर द्वारा हमारे अपने नैतिक लाभ के लिए भेजी या अनुमत की जाती है। परिणामस्वरूप, एक और बुराई के सिद्धांत को गढ़ने की बिल्कुल भी आवश्यकता नहीं है: केवल एक अच्छा सिद्धांत मौजूद है, जिससे सब अच्छा निकलता है; जो बुरा हो जाता है वह बाद में, अपनी स्वतंत्र इच्छा से, अपनी प्रकृति और उद्देश्य से भटकने के कारण ऐसा होता है।[206]

---

[205] *इरनेयस,* *एडवर्सस हेरेसेस*, II, 1, n. 4; III, 25, n. 3; *टर्तुल्लियन,* *एडवर्सस मार्शियोनेम*, 1, 2 और 3; *टाइटस बोस्ट्रेन्सयिस,* *एडवर्सस मनीक्यूम*, 1, 5–7; *अलेक्जेंड्रिया के अथेनासियस,* *कॉन्ट्रा जेनटिल्स*, अध्याय 6 और 7; *यरूशलेम के सिरिल,* *कैटेकेटिकल ओरेशन्स*, VI, 13, रूसी अनुवाद में पृष्ठ 109; *ग्रेगरी द थियोलोजियन,* पवित्र पिताओं के कार्य, खंड IV, पृ. 227; *बेसिल द ग्रेट,* पवित्र पिताओं के कार्य, खंड V, पृ. 29 में सृष्टि पर प्रवचन 2; *जॉन ऑफ़ डेमास्कस*। ऑर्थोडॉक्स विश्वास की सटीक व्याख्या, पुस्तक IV, अध्याय 20, पृ. 284.

[206] *टर्तुल्लियन,* *अगेंस्ट मार्शियन*, पुस्तक II, पृ. 14; *अलेक्जेंड्रिया के अथानासियस,* *अगेंस्ट द पैगन्स*, अध्याय 7; *ग्रेगरी द थियोलोजियन,* *वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, खंड III, पृ. 320; *बेसिल द ग्रेट,* **ऑन द फैक्ट दैट गॉड इज़ नॉट द कॉज़ ऑफ इविल*, *क्रॉनकिल रीडिंग्स* 1824, XIII, और द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स, खंड VIII में; *ऑगस्टीन,* *डे जेनेसिस, कॉन्ट्रा मैनिकियम*, पुस्तक II, अध्याय 29, टिप्पणी 43; *जॉन ऑफ डेमास्कस,* *एक्जैक्ट एक्सपोजिशन ऑफ द ऑर्थोडॉक्स फेथ*, पुस्तक III, अध्याय 20. "विश्वास करो," संत ग्रेगरी द थियोलोजियन लिखते हैं, "कि बुराई का न तो कोई अलग सार है और न ही उसका अपना कोई क्षेत्र है; कि वह न तो बिना शुरुआत के है और न ही स्व-अस्तित्व में है, और न ही उसे ईश्वर ने बनाया है, बल्कि यह हमारा अपना किया हुआ है और दुष्ट का कार्य है, और यह हममें हमारी ही लापरवाही से उत्पन्न हुई है, न कि सृष्टिकर्ता से" (उपरोक्त संदर्भ)। "हमारी धारणा के संबंध में एक प्रकार का बुराई है, और अपनी प्रकृति से दूसरी। स्वभाव से बुराई हम पर ही निर्भर करती है, जैसे: अन्याय, अज्ञानता, आलस्य, ईर्ष्या, हत्या, जहर देना, धोखा और अन्य ऐसे दुर्गुण, जो अपने स्रष्टा की प्रतिमा में रची गई आत्मा को कलंकित करके, आमतौर पर उसकी सुंदरता को धुंधला कर देते हैं। हम उस चीज़ को भी बुरा कहते हैं जो हमारी संवेदनाओं के लिए बोझिल और अप्रिय हो, जैसे कि, उदाहरण के लिए, बीमारी और शारीरिक कष्ट, आवश्यक वस्तुओं की कमी, अपमान, संपत्ति का नुकसान, और प्रियजनों से वियोग—ये सभी सर्व-ज्ञानी और दयालु प्रभु हमारे अपने भले के लिए हम पर भेजते हैं। वह उन लोगों से धन छीन लेता है जो उसका दुरुपयोग करते हैं, और उन्हें पाप करने के साधनों से वंचित कर देता है। वह उन लोगों पर बीमारी भेजता है जिनके लिए अपने अंगों को बाँध लेना पाप को बेरोकटोक करने से कहीं अधिक लाभदायक होता है। मृत्यु तब आती है जब हमारे जीवन की अवधि, जो ईश्वर के धर्मपरायण निर्णय द्वारा हम में से प्रत्येक के लिए आरंभ से निर्धारित होती है, समाप्त हो जाती है; क्योंकि वह दूर से ही देख लेता है कि हम में से प्रत्येक के लिए क्या लाभदायक है। अकाल, सूखा और अत्यधिक वर्षा शहरों और राष्ट्रों के लिए सामान्य विपत्तियाँ हैं, जो उन्हें उनके अत्यधिक अधर्म के लिए दंडित करती हैं। जैसे एक डॉक्टर एक कल्याणकर्ता होता है, भले ही वह शरीर को पीड़ा और दर्द पहुँचाता है,

यहाँ यह दखिाना अनावश्यक है कि विशिष रूप से, ऑर्थोडॉक्सी के रक्षकों ने ट्राइबोज़ाइट्स की त्रुटि का खंडन कैसे कयिा: यह वधिर्म केवल एक ईश्वर में तीन व्यक्तियों के बारे में ईसाई सद्धिांत को सही ढंग से समझने में वफिलता के कारण उत्पन्न हुआ, और यह कसिी भी तर्कसंगत वचिारों पर आधारति नहीं था, बल्कि केवल पवत्रि धर्मग्रंथ के कुछ अंशों की गलत व्याख्या पर आधारति था; और इसलिए इसका खंडन वहाँ देखा जाएगा जहाँ परमेश्वर के वचन पर आधारति परम पवत्रि त्रमिूर्ति का ऑर्थोडॉक्स सद्धिांत प्रस्तुत कयिा गया है।

§15. धर्मसद्धिान्त के नैतकि नहितिार्थ

हम ईश्वर की एकता से संबंधति इस धर्मनर्णिय से अपने लिए तीन महत्वपूर्ण सबक सीख सकते हैं।

पहला पाठ ईश्वर के साथ हमारे संबंध से संबंधति है। 'मैं एक ईश्वर में वशि्वास करता हूँ'—हर ईसाई धर्म-स्वीकृति की शुरुआत में यह घोषणा करता है—'एक ईश्वर, और न कि कई, या दो, या तीन, जैसा कि मूर्तपिूजक और कुछ वधिर्मी वशि्वास करते थे'; इसलिए, हमें केवल उसी *की* ईश्वर के रूप में *सेवा करनी* चाहिए (Deut. 6:13; मत्ती 4:10); केवल उसी से अपने पूरे हृदय और अपनी पूरी आत्मा से प्रेम करना (व्यवस्थावविरण 6:4 और 5); अपनी सारी आशा केवल उसी में रखना (भजन संहति 117:8 और 9; 1 पतरस 1:21), जबकि साथ ही हम हर प्रकार के बहुदेववाद और मूर्तपिूजा से स्वयं को बचाते हैं (नर्गिमन 20:3–5)। मूर्तपिूजक, एक सर्वोच्च ईश्वर में वशि्वास करते हुए भी, कई छोटे देवताओं को भी मानते थे, और अक्सर इन देवताओं में अदेह आत्माओं को भी शामलि करते थे, चाहे वे अच्छे हों या बुरे (परचिति आत्मा और दुष्टात्मा), साथ ही वे दविंगत लोग जन्हिोंने अपने जीवनकाल के दौरान कसिी न कसिी तरह से खुद को वशिष्टि बनाया था: और हम अच्छे स्वर्गदूतों का सम्मान करते हैं, और हम उन पवत्रि लोगों का भी सम्मान करते हैं जन्हिोंने अपने जीवनकाल के दौरान वशि्वास और धार्मकिता के द्वारा खुद को वशिष्टि बनाया; लेकनि हमें यह न भूलें कि, ऑर्थोडॉक्स चर्च की शक्षिा के अनुसार, हमें उनका सम्मान छोटे देवताओं के रूप में नहीं, बल्कि परमेश्वर के सेवकों और मत्रिों के रूप में, परमेश्वर के सामने हमारे मध्यस्थों और हमारे उद्धार में सहायकों के रूप में करना चाहिए — उनका इस तरह से सम्मान करते हुए कि सारी महमिा मुख्य रूप से केवल उसी को मलि, क्योंकि वह अपने संतों में अद्भुत है। (भजन संहति 67:36; मत्ती 10:40)। पगनों ने अपने देवताओं की मूर्तयिाँ बनाईं, अपनी मूर्तयिों और नक्काशीदार प्रतमिाओं को स्थापति कयिा, और, अपनी घोर अंधता में, इन मूर्तयिों और प्रतमिाओं को स्वयं देवता मान लयिा, और उन्हें दैवीय पूजा अर्पति की: कोई भी ईसाई कभी भी ऐसी मूर्तपिूजा में न पड़े। और हम सच्चे परमेश्वर और उनके संतों की प्रतमिाओं का उपयोग करते हैं और उनकी पूजा करते हैं, और उनके सामने सरि झुकाते हैं; लेकनि हम उनका उपयोग और सम्मान केवल उन छवयिों के रूप में करते हैं जो हमारे लिए पवत्रि और गहराई से शक्षिाप्रद हैं, और हम कसिी भी तरह से उन्हें देवता नहीं मानते; और जब हम पवत्रि प्रतमिाओं के सामने सरि झुकाते हैं, तो हम लकड़ी या रंग की पूजा नहीं करते, बल्कि स्वयं परमेश्वर और उनके संतों की पूजा करते हैं, जन्हिें प्रतमिाओं पर चत्रिति कयिा गया है; पवत्रि प्रतमिाओं के प्रति सच्ची श्रद्धा ऐसी ही होनी चाहिए, और इसका मूर्तपिूजा से कोई भी लेना-देना नहीं होगा। आखरिकार, यह सर्वविदति है कि मूर्तपिूजकों ने सभी मानवीय भावों को मानवीय रूप दयिा और उन्हें इस रूप में देवता बना दयिा: हम, हालांकि, भावों को देवता बनाने के लिए उन्हें मानवीय रूप नहीं देते हैं; हम उनके सच्चे मूल्य को जानते हैं; लेकनि, दुर्भाग्य से, ईसाई भी अक्सर अपनी इच्छाओं की पूजा देवताओं की तरह करते हैं, हालांकि वे स्वयं इसे महसूस नहीं करते हैं। कोई व्यक्ति विशिष रूप से पेटपूजा और सामान्य रूप से कामुक सुखों के प्रति इतना समर्पति होता है कि, प्रेरति के शब्दों में, उसका *देवता उसका पेट है* (फलि. 3:19); एक और व्यक्ति अपने लिए खजाने इकट्ठा करने में इतना उत्सुक है, और उन्हें इतनी मोहब्बत से रखता है, कि सचमुच में उसके *धन के प्रति प्रेम को मूर्तपिूजा* ही कहा जा सकता है (कुलु. 3:5); तीसरा व्यक्ति अपनी योग्यता और लाभों, चाहे वे वास्तवकि हों या काल्पनकि, में इतना व्यस्त रहता है, और उन्हें इतनी ऊँची कदर देता है, कि वह, मानो, उन्हें अपने लिए एक मूर्ति बना लेता है, जसिकी वह पूजा करता है और दूसरों से भी पूजा करने की माँग करता है (दानयि्येल 3)। संक्षेप में, कसिी भी चीज़ के प्रति कोई भी जुनून या आसक्ति—भले ही वह कुछ महत्वपूर्ण और नेक क्यों न हो—हमारे लिए एक नया देवता या मूर्ति बन जाती है जसिकी हम पूजा करते हैं, बशर्ते हम खुद को उस में इतनी पूरी तरह से समर्पति कर दें कि हम परमेश्वर को भूल जाएं और उसकी इच्छा के वपिरीत काम करें; और एक ईसाई को

क्योंकि वह रोग से लड़ता है, मरीज से नहीं: उसी तरह ईश्वर भी अच्छा है जब वह व्यक्तगित दंडों के माध्यम से, समग्र रूप से मोक्ष लाता है" (उपरोक्त उद्धरण)।

यह दृढ़ता से ध्यान में रखना चाहिए कि ऐसी मूर्तिपूजा एकमात्र सच्चे ईश्वर की उपासना के साथ कभी भी सह-अस्तित्व में नहीं रह सकती, उद्धारकर्ता के वचनों के अनुसार: *'कोई भी दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता...' 'तुम परमेश्वर और धन-दौलत दोनों की सेवा नहीं कर सकते* (मत्ती 6:24)।

दूसरा पाठ हमारे पड़ोसियों के प्रति हमारे रवैये से संबंधित है। एक ईश्वर में विश्वास करके, जिनसे हम सभी का अस्तित्व प्राप्त होता है, जिनमें हम सभी *जीते हैं, गति करते हैं और हमारा अस्तित्व है* (प्रेरितों के काम 17:28), और जो अकेले ही हम सभी के लिए अंतिम लक्ष्य हैं, हम स्वाभाविक रूप से अपने बीच एकता की ओर प्रेरित होते हैं: हमें भाइयों की तरह रहना चाहिए, ताकि पारस्परिक भाईचारे के बंधन में बँधकर, हम एक स्वर्गीय पिता के अधिकार के अधीन पृथ्वी पर एक महान परिवार का निर्माण कर सकें। पवित्र प्रेरित ने ईसाइयों को *आत्मा की एकता* के लिए, *शांति के बंधन में,* बुलाया था, *और* उन्हें यह बताते हुए कि उनका *एक ही ईश्वर और पिता है, जो सभी के ऊपर, सभी के बीच और हम सभी में है* (इफिसियों 4:3-6)। सभी लोगों के आपस में और परमेश्वर के साथ इसी एकता के लिए हमारे प्रभु ने स्वयं पहले अपने पिता से प्रार्थना की थी, जब उन्होंने कहा: *'वे सब एक हों, जैसे आप, हे पिता, मुझ में हैं और मैं आप में हूँ, वैसे ही वे भी हम में एक हों'* (यूहन्ना 17:21)। सभी लोगों के इस दोहरे पुनर्मिलन के लिए ही वह पृथ्वी पर आए (यूहन्ना 10:16), उन्होंने उन्हें एक सच्चे परमेश्वर को जानना सिखाया (यूहन्ना 17:3), और उस विभाजनकारी दीवार को तोड़ दिया जो अन्यजातियों को यहूदियों से अलग करती थी (इफिसियों 2:14–18), ने सभी को वचन और उदाहरण द्वारा, पूर्ण पारस्परिक प्रेम की एक नई आज्ञा सिखाई (यूहन्ना 13:34), और इस प्रेम को अपने सच्चे अनुयायियों के पहले संकेत के रूप में स्थापित किया: *'इसके द्वारा सब लोग जान लेंगे कि तुम मेरे चेले हो, यदि तुम एक दूसरे से प्रेम करोगे* (यूहन्ना 13:35)।

अंत में, तीसरा पाठ स्वयं के प्रति हमारे दृष्टिकोण से संबंधित है। परमेश्वर में, जो सार में एक हैं, विश्वास करते हुए, आइए हम अपने अस्तित्व के भीतर उस मूल एकता को बहाल करने का ध्यान रखें जो पाप के द्वारा हम में भंग हो गई है। वर्तमान में हम अपने अस्तित्व के भीतर एक विभाजन, अपनी शक्तियों, क्षमताओं और आकांक्षाओं का एक असंगति महसूस करते हैं; *क्योंकि मैं अपने अंतरंग में परमेश्वर के विधान में आनंदित होता हूँ;* फिर भी उसी समय, *मेरे अंगों में मैं एक दूसरे विधान को देखता हूँ जो मेरे मन के विधान से युद्ध करता है और मुझे मेरे अंगों में बसने वाले पाप के विधान का बन्दी बना देता है* (रोमियों 7:22–23), ताकि हम में से प्रत्येक के भीतर अब एक नहीं, बल्कि दो व्यक्ति हों—भीतरी और बाहरी, आध्यात्मिक और शारीरिक। इसलिए हमें सावधान रहना चाहिए, , कि हम *अपना पुराना जीवन—पुरानी मनुष्यता का—*उतार दें, *जो छलपूर्ण कामनाओं में सड़ रही है, और अपने मन की आत्मा में नये सिरे से बनें, और नया मनुष्य पहन लें, जो परमेश्वर के समान धार्मिकता और सच्चाई की पवित्रता में रचा गया है।* (इफिसियों 4:22–24), और इस प्रकार हम एक बार फिर अपने अस्तित्व में एक के रूप में प्रकट हो सकें, ठीक वैसे ही जैसे हम सृष्टिकर्ता के हाथों से निकले थे।

और यह एकता, स्वाभाविक रूप से, हमें एक और एकता की ओर ले जाएगी, जो हमारे अस्तित्व का मुख्य उद्देश्य है—परम सत्ता, हमारे मूल आदर्श के साथ नैतिक एकता, जिनकी ओर हम अपने अस्तित्व की प्रकृति से ही आकर्षित होते हैं: क्योंकि नए मनुष्य का पूरा जीवन परमेश्वर को समर्पित होगा; *और 'जो प्रभु से जुड़ा है, वह प्रभु के साथ एक आत्मा है',* पवित्र प्रेरित ने कहा (1 कुरिन्थियों 6:17)।

२. ईश्वर की प्रकृति पर

§16. इस सिद्धांत का संक्षिप्त इतिहास, इस पर चर्च की शिक्षा, और इस शिक्षा की संरचना

ईश्वर अपनी परम सत्ता में क्या है, यह प्रश्न (ουσία, φύσις, essentia, substantia, natura), ईसाई धर्म की आरंभिक शताब्दियों से ही चर्च पिताओं के विशेष ध्यान का विषय रहा है; एक ओर, यह प्रश्न स्वयं में अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रत्येक मानव के मन और हृदय के निकट है, और इससे भी अधिक इसलिए कि उस समय विधर्मी इस प्रश्न पर काफी बहस करते थे, जिन्होंने स्वाभाविक रूप से ऑर्थोडॉक्सी के रक्षकों को उनका विरोध करने के लिए प्रेरित किया।[207] लेकिन प्राचीन काल में, विश्वास के शिक्षकों ने, उन झूठे शिक्षकों की त्रुटियों का खंडन करते हुए जो ईश्वर के सार

[207] ऊपर § 9 और टिप्पणियाँ 154, 155 देखें।

को उसकी संपूर्णता में जानने का दावा करते थे, मुख्य रूप से इस विचार पर जोर दिया कि ईश्वर का सार हमारे लिए अव्यक्त है, कि हम न केवल इसे नहीं जानते, बल्कि इस वर्तमान जीवन में इसे जान भी नहीं सकते।[208] और इसलिए उन्होंने जानबूझकर ईश्वर की किसी एक, निश्चित अवधारणा की खोज से परहेज़ किया, जिसे उनके सार के सटीक अनुरूप के रूप में पहचाना जा सके; इसके विपरीत, उन्होंने उन्हें विभिन्न तरीकों से परिभाषित किया, जैसा कि उनके अनुकूल था, उन विभिन्न गुणों का सहारा लेते हुए जिनके तहत उन्हें प्रकटीकरण में चित्रित किया गया है: कभी-कभी उन्होंने कहा कि ईश्वर स्वभावतः शुद्ध आत्मा है;[209] अन्य समयों में उन्होंने उसे सृजनात्मक सार कहा जिसने सभी दृश्य और अदृश्य वस्तुओं को उत्पन्न किया;[210] अन्य समयों में उन्होंने उसमें परम महानता देखी,[211] या सबसे परिपूर्ण[212] और उच्चतम भलाई,[213] या एक ऐसा अस्तित्व जो हमेशा विद्यमान रहता है।[214] और यद्यपि कभी-कभी कुछ लोगों ने ईश्वर के सार को व्यक्त करने के लिए किसी एक ज्ञात नाम को निर्दिष्ट करने का प्रयास किया,[215] तो उन्होंने इसे केवल या तो अपनी व्यक्तिगत राय के रूप में व्यक्त किया,[216] या एकल व्युत्पत्ति के आधार पर,[217] साथ ही यह भी उल्लेख किया कि सामान्यतः ईश्वर को जो भी नाम दिए जाते हैं, यहां तक कि वे नाम जो उनके लिए सबसे उपयुक्त प्रतीत होते हैं, वे भी उनके सार को पूरी तरह से व्यक्त नहीं करते।[218] संक्षेप में, ईश्वर को मूलतः अकल्पनीय और नामहीन बताते हुए, प्रारंभिक चर्च के पादरियों ने उन्हें अनिर्वचनीय भी कहा।[219]

मध्य युग में हम कुछ बिल्कुल अलग देखते हैं। ईश्वर को अकल्पनीय मानते हुए भी, स्कॉलरस्टिक्स ने फिर भी यह सटीक रूप से परिभाषित करने का प्रयास किया कि उसका सार क्या है। इस उद्देश्य के लिए, उन्होंने ईश्वर में दो

---

[208] उसी § 9 और टिप्पणियाँ 156–169 देखें।

[209] Θεός ἐστι πνεύμα ἁυλον, ὀφθαλμός ακοίμητος καί νοῦς ἀκίνητος। *अलेक्ज़ेंड्रिया के अथानासियस,* *Quaestiones aliae* और *Responsa ad quaestiones*, खंड III, पृ. 335, *Paris *, 1698। यह भी देखें *ऑगस्टीन,* *De cognitione verae vitae*, अध्याय 7।

[210] *अलेक्ज़ेंड्रिया के अथानासियस,* वही: 'ईश्वर सभी अदृश्य और दृश्य प्राणियों का सृजनात्मक सार है।' कॉन्फ. *जस्टिन,* डायलॉग विद ट्रिफो, पुस्तक III.

[211] उपरोक्त टिप्पणी 202 देखें।

[212] ईश्वर स्वयं परम शुभ हैं। *बेसिल,* भजन संहिता XXXIII, 7.

[213] सभी में सबसे सुंदर और सबसे उत्कृष्ट अच्छाई यह दिव्य सत्ता है। *ग्रेगरी ऑफ निसिया,* ऑन द मेकिंग ऑफ मैन, अध्याय 12.

[214] *एम्ब्रोस:* जब 'ईश्वर के सार' की बात की जाती है, तो उससे और क्या अभिप्रेत है, सिवाय इसके कि ईश्वर हमेशा मौजूद रहता है? यही बात स्वयं अक्षर व्यक्त करते हैं: चूँकि दिव्य शक्ति 'हमेशा मौजूद रहने वाली' (οὐσα ἀεί) है, यानी, चूँकि वह हमेशा है, इसलिए उसे 'सार' (οὐσία) कहा जाता है, जिसमें ध्वनि संक्षिप्तता और वाक्पटुता के लिए एक अक्षर का क्रम बदल दिया गया है (On the Incarnation, अध्याय 9)। या: 'ऊसिया' (oōsia) क्या है और यह किससे व्युत्पन्न है, यदि 'ऊसिया' (ousia) (ऊसा ऐई) नहीं है, जो हमेशा बनी रहती है? *चूँकि 'होना' हमेशा अस्तित्व में रहना है, ईश्वर है;* और जो हमेशा बना रहता है उसे दिव्य 'ऊसिया' कहा जाता है (डे फिदे, पुस्तक III, अध्याय 7)।

[215] हम ईश्वर के नाम को समझते हैं: 'ο ών' — अस्तित्वमान (उपरोक्त टिप्पणी 1bb देखें)। हालाँकि, सेंट डायोनिसियस द एरोपाजियन ने शब्द 'ο άγαθός' — *शुभ* — को भी ऐसा ही नाम माना (देखें डिवाइन नेम्स, एक्सैक्ट में ऑर्थोडॉक्स विश्वास की व्याख्या, पुस्तक 1, अध्याय 9), जबकि संत ग्रेगरी द थियोलोजियन ने कुछ हद तक शब्द: 'ο Θεός' — *ईश्वर* — को ऐसा नाम माना (पवित्र पिताओं के कार्य, रूसी अनुवाद, खंड III, पृ. 96)।

[216] उदाहरण के लिए, संत ग्रेगरी द थियोलोजियन इसे इस प्रकार व्यक्त करते हैं: 'जहाँ *तक हम आसानी से समझ सकते हैं,* "अस्तित्वमान" और "ईश्वर" की संज्ञाएँ, *एक निश्चित अर्थ में,* सार की संज्ञाएँ हैं...'; जबकि सेंट जॉन ऑफ डेमास्कस कहते हैं: 'ईश्वर को दिए गए सभी नामों में, सबसे उपयुक्त नाम — ओं वॉन, 'अस्तित्वमान' *लगता* है' (देखें टिप्पणी 166)।

[217] *'जो है'* (ὁ ών), उन्होंने कहा, परमेश्वर के *सार* — οὐσία — को व्यक्त करता है: क्योंकि οὐσία कुछ और नहीं है — οὐσα ἀεί — वह जो हमेशा है, जो हमेशा अस्तित्व में रहता है; और परमेश्वर, वास्तव में, हमेशा अस्तित्व में रहता है — ὁ ών — और स्वयं से और स्वयं के माध्यम से अस्तित्व में रहता है; और परिणामस्वरूप, है, उत्कृष्ट रूप से, ओउसिया (οὐσία), जबकि अन्य सभी प्राणी अपनी अस्तित्वता उसी से और उसी के माध्यम से प्राप्त करते हैं (देखें टिप्पणी 214; साथ ही *हिलेर.* डी ट्रिनिटेट, पुस्तक I; एफिसियों के नाम पत्र के अध्याय 3 में *हयरोनिमस;* यूहन्ना पर *अगस्टिन.* प्रबंध 38)।

[218] इस प्रकार, सेंट जॉन ऑफ़ डेमास्कस, 'ο ών' (*अस्तित्वमान*) नाम को ईश्वर का सर्वोत्तम नाम बताते हुए भी, इसके बारे में आगे कहते हैं: 'यह संज्ञा केवल यह दर्शाती है कि ईश्वर है (τό εἶναι), और यह नहीं कि वह क्या है' (τό τί εἶναι)। सही आस्था की सटीक व्याख्या, पुस्तक 1, अध्याय 9, पृष्ठ 32–33; तुलना करें टिप्पणियाँ 165 और 166।

[219] *क्लेम. एलेक्स.* स्ट्रॉम. V, 12; *यूसेथियस,* सोक्रेट्स के 'चर्च इतिहास' में, पुस्तक III, अध्याय 7; *एम्ब्रोज़,* 'एरियनों के विरुद्ध ऑर्थोडॉक्स विश्वास पर', अध्याय 6, पैट्रोलॉजिया कर्सस कम्प्लेटस के खंड XVII में, पृ. 560; *ऑगस्टीन,* *On the Knowledge of the True Life*, अध्याय 7; *हिलेरी,* *On the Trinity*, पुस्तक I: 'निश्चित रूप से, ईश्वर यही है: जब उसकी बात की जाती है, तो उसकी बात नहीं की जा सकती; जब उसकी कल्पना की जाती है, तो उसकी कल्पना नहीं की जा सकती; जब उसकी तुलना की जाती है, तो उसकी तुलना नहीं की जा सकती; जब उसे परिभाषित किया जाता है, तो वह अपनी ही परिभाषा से परे हो जाता है।'

सारों के बीच अंतर कयिा: भौतकि और पारलौककि। पहले से उनका तात्पर्य ईश्वर की स्वयं प्रकृतसि था, जो सर्व-परपिूर्ण है, या वह सब कुछ जो ईश्वर में पाया जाता है; 'अधभिौतकि सार' शब्द से उनका तात्पर्य उस गुण से था जो सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से हमें ईश्वर में प्रस्तुत होता है, जो उनके सभी अन्य गुणों की जड़ और स्रोत के रूप में कार्य करता है, और जो उन्हें सभी अन्य प्राणयिों से नर्णिायक रूप से अलग करता है। यह वही गुण था जसिे उन्होंने हर संभव तरीके से पहचानने का प्रयास कयिा, और इसके प्रश्न ने स्कूलों में सबसे तीव्र बहसों को जन्म दयिा, जसिसे अनगनित मतों की एक वशिाल संख्या उत्पन्न हुई। चार प्रमुख का उल्लेख करना ही पर्याप्त है: कुछ का मानना था कि ईश्वर का पारलौककि सार कसिी वशिेष गुण या पूर्णता में नहीं, बल्कि सभी पूर्णताओं की संपूर्णता में नहिति है; अन्य ने इसे सभी पूर्णताओं की मूल अनंतता (in infinitate radicali) या आवश्यकता (exigentia) में स्थापति कयिा; तीसरा समूह—वास्तवकि समझ (in intellectione actuali) या केवल मौलकि समझ (radicali), अर्थात् समझने की स्वयं क्षमता में; अंत में, एक चौथा समूह—ईश्वर की स्व-अस्तत्विता या स्वयं से अस्तत्वि (in esse a se sev aseitate) में। अंतमि दृष्टकिोण के सबसे अधकि अनुयायी थे और यह आज भी रोमन चर्च के धर्मशास्त्रयिों के बीच प्रचलति है।[220] *यह* देखना आसान *है* कि ये सभी वचिार, यद्यपि वे धर्मशास्त्र के सार को नहीं छूते, परमेश्वर के बारे में सच्ची ईसाई शक्षिा को कोई हानि नहीं पहुँचाते, फरि भी वे नरिर्थक हैं, क्योंकि वे इस अकल्पनीय वषिय को बलि्कुल भी स्पष्ट नहीं करते; और यह कि परमेश्वर के *पारलौककि* सार का प्रश्न ईसाई वशि्वास या जीवन के लिए नहीं, बल्कि अकादमकि बहस का वषिय है।

इन सभी सूक्ष्मताओं को त्यागते हुए, ऑर्थोडॉक्स चर्च ने हमेशा केवल उसी बात का पालन कयिा है, और आज भी करता है, जो ईश्वर स्वयं ने अपनी प्रकटीकरण में इसके लिए प्रकट की है, बनिा कसिी भी तरह से ईश्वर के सार को परभिाषति करने का प्रयास कए, जसिे यह अकल्पनीय और, परणिामस्वरूप, कठोर अर्थ में, अकल्पनीय,[221] लेकनि, अपने बच्चों को ईश्वर की एक ऐसी अवधारणा प्रदान करने की इच्छा रखते हुए जो यथासंभव नकिट, सटीक और सभी के लिए सुलभ हो, वह उनके बारे में नम्निलखिति कहती हैं: 'ईश्वर शाश्वत आत्मा हैं, सर्व-सद्गुणी, सर्व-ज्ञानी, सर्व-धर्मी, सर्व-शक्तमिान, सर्व-व्यापी, अपरविर्तनीय, सर्व-संतुष्ट, सर्व-धन्य।' यहाँ वह हमें, पहली बात, ईश्वर के अकल्पनीय सार (या दूसरे शब्दों में, उसकी प्रकृति) की ओर इशारा करती हैं, जहाँ तक कि उसे वर्तमान में हमारे मन द्वारा समझा जा सकता है, और दूसरी बात, उन आवश्यक गुणों की ओर जनिसे यह सार प्रतष्ठिति होता है—या, अधकि सटीक रूप से, जनिसे ईश्वर स्वयं सभी अन्य प्राणयिों से प्रतष्ठिति होते हैं।[222]

§17. दैवीय सत्ता की अवधारणा: ईश्वर आत्मा है

'आत्मा' शब्द वास्तव में हमारे लिए ईश्वर के अकल्पनीय सार या स्वभाव को सबसे अच्छी तरह से दर्शाता है। हम केवल दो प्रकार के स्वभाव को जानते हैं: भौतकि, जटलि, जसिमें चेतना और तर्कशीलता का अभाव होता है; और अमूर्त, सरल, आध्यात्मकि, जो अधकि या कम मात्रा में चेतना और तर्कशीलता से युक्त होता है। हम यह मान ही नहीं सकते कि ईश्वर के भीतर प्रथम प्रकार का स्वभाव है, क्योंकि हम उनके सभी कार्यों—सृष्टि और प्रकृति दोनों में—उच्चतम बुद्धि के लक्षण देखते हैं। इसके वपिरीत, इन नशिानों पर नरिंतर मनन करने से हम यह मानने के लिए ववश हैं कि ईश्वर की प्रकृति उत्तरवर्ती प्रकार की है। और यदि, वास्तव में, प्रकटवाक्य स्वयं ईश्वर को एक आध्यात्मकि सत्ता के रूप में प्रस्तुत करता है—तो उस स्थति में हमारा यह अनुमान पहले से ही एक नर्विवाद सत्य के स्तर पर पहुँच

---

[220] देखें *पेरॉन*— *प्रेलेक्ट. थयिोलॉज.*, खंड II, भाग I, अध्याय 3, और *लबिरमैन*— *इंस्ट. थयिोलॉज.*, खंड III, पुस्तक 1, अध्याय 2। इस बाद के दृष्टकिोण का एक बहुत ही वस्तिृत और गहन खंडन थयिोफानेस प्रोकपोवचि द्वारा उनकी *दव्यिताशास्त्र* — खंड II, भाग 1, पुस्तक 1, अध्याय 1, पृष्ठ 315–327, लेइपज़गि 1782 में प्रस्तुत कयिा गया था।

[221] "क्योंकि तू *अकथनीय* ईश्वर, अनारंभ और अतुलनीय है"... लटिर्जकिल लीफलेट 12, मॉस्को 1836। तुलना करें टप्पिणी 151।

[222] ऑर्थोडॉक्स कैथोलकि ईस्टर्न चर्च के सामान्य ईसाई धर्मशास्त्र से उद्धृत शब्द ठीक उसी प्रश्न का उत्तर देते हैं: 'ईश्वरीय प्रकटकिरण से ईश्वर के *सार* और *अनविार्य गुणों* की क्या समझ प्राप्त की जा सकती है?' (पहला खंड देखें)। इस संदर्भ में, धन्य ऑगस्टीन, जन्होंने, यद्यपि एक अंश में कहा था: 'porro summus Spiritus, sicut a nullo intellectu valet proprie cogitari, ita riulla definitione poterit proprie determinari' — फरि भी तुरंत आगे कहते हैं: 'sed quia intellectualis mens eum utcunque agnoscere anhelat, haec aenigmatica definitio ei interim sufficiat:' *पवत्रि आत्मा ईश्वर एक* अदृश्य *सार है*, जो प्रत्येक प्राणी के लिए अकल्पनीय है, और जो सभी जीवन, सभी ज्ञान, और सभी अनंतकाल को एक साथ और स्वाभावकि रूप से धारण करता है, या *स्वयं जीवन, स्वयं ज्ञान, स्वयं सत्य, स्वयं न्याय, और स्वयं अनंतकाल के रूप में वद्यिमान है* (सच्चे जीवन के ज्ञान पर, अध्याय 7, पेट्रोलोजयिा कर्सस, खंड में)। XXXVI, पृ. (1010).

जाता है।[223] और प्रकटवाक्य वास्तव में हमें यही सिखाता है कि ईश्वर शुद्ध आत्मा हैं, किसी भी शरीर से असंबंधित, और परिणामस्वरूप, उनकी प्रकृति पूरी तरह से अदृश्य, अति सूक्ष्म जटिलता से रहित और सरल है। यह स्पष्ट है:

1) पवित्र शास्त्र के उन अंशों से जो ईश्वर में उन सभी गुणों का खंडन करते हैं जो अनिवार्य रूप से पदार्थ या शरीर से संबंधित हैं: a) प्रत्येक शरीर स्थान से सीमित होता है, जबकि ईश्वर किसी भी चीज़ से सीमित नहीं है और सर्वत्र विद्यमान है: *'क्या कोई मनुष्य ऐसी गुप्त जगह में छिप सकता है जहाँ मैं उसे नहीं देख सकता?' प्रभु कहते हैं। 'क्या मैं स्वर्ग और पृथ्वी को नहीं भरता?' प्रभु कहते हैं* (यिर्म. 23:24; भजन संहिता 138:7–12); b) प्रत्येक शरीर का एक निश्चित रूप होता है और इसलिए उसे चित्रित किया जा सकता है — ईश्वर का कोई मूर्त रूप नहीं है, और इसलिए पुराने नियम ने उन्हें चित्रित करने पर सख्त मनाही की: *'तुम ईश्वर की तुलना किससे करोगे? और तुम उसके लिए कैसी समानता पाओगे?* (यशा. 40:18, तुलना करें यशा. 25); *अपने हृदयों में यह दृढ़ता से थाम लो कि जिस दिन प्रभु ने तुम से [माउंट] पर बात की, तुमने कोई मूर्त नहीं देखी होरेब आग के बीच से, 16 ऐसा न हो कि तुम भटक जाओ और अपने लिए कोई मूर्त गढ़ो, किसी पुरुष या स्त्री की मूर्त का कोई चित्र* (व्यव. 4:15–16);[224] c) हर शरीर, अपनी प्रकृति से, देखा जा सकता है—ईश्वर को *अदृश्य का ईश्वर* कहा जाता है (कुलु. 1:15; 1 तीमु. 1:17; रोम. 1:20), जिसे *कभी किसी ने नहीं देखा* (यूहन्ना 1:18 तुलना करें यूहन्ना 6:46), और विशेष रूप *से—जिसे किसी भी मनुष्य ने नहीं देखा है और न ही देख सकता है* (1 तीमु. 6:16 तुलना करें निर्ग. 33:18–23); d) प्रत्येक भौतिक प्राणी परिवर्तन के अधीन है — *प्रत्येक अच्छा वरदान और प्रत्येक उत्तम वरदान ऊपर से, ज्योतियों के पिता से उतरता है, जिसमें न कोई परिवर्तन है और न पलटने का साया* (याकूब 1:17); ई) प्रत्येक शरीर, भागों से मिलकर बना होने के कारण, नश्वर और नाशवान है — परमेश्वर *युगों का राजा, अविनाशी* है (1 तीमुथियुस 1:17), और अन्यजातियों को इस बात के लिए दोषी ठहराया गया है कि उन्होंने *अविनाशी परमेश्वर की महिमा को नाशवान मनुष्य, और पक्षियों, और चौपायों के समान प्रतिमा के लिए बदल दिया* (रोमियों 1:23)।

2) उन अंशों से जहाँ, इसके विपरीत, परमेश्वर को वे गुण दिए गए हैं जो स्वाभाविक रूप से केवल आत्मा से संबंधित हैं, जैसे: क) आत्म-जागरूकता और व्यक्तित्व: *'अब देखो, [देखो,] यह मैं हूँ, मैं—और मेरे सिवाय कोई परमेश्वर नहीं* (व्यवस्थाविवरण 32:39, तुलना करें निर्गमन 20:2-3); *'मैं यहोवा हूँ, मैं पहिला हूँ, और अन्त तक मैं वही हूँ* (यशा. 41:4, तुलना करें यशा. 48:12); *'मैं ही अल्फा और ओमेगा, आरंभ और अंत हूँ,' यहोवा कहता है, 'जो है, और जो था, और जो आने वाला है, सर्वशक्तिमान* (प्रकाशितवाक्य 1:8; 22:13); 6) मन: *'क्योंकि यहोवा का मन किसने जाना है? या उसका परामर्शदाता कौन रहा है?'* (रोमियों 11:33–34);[225] c) स्वतंत्र इच्छा: *प्रभु स्वर्ग में और पृथ्वी पर, समुद्रों में और सभी गहराइयों में जो कुछ भी वह चाहता है, वह करता है* (भजन संहिता 134:6), और सामान्य रूप से, *वह अपनी इच्छा की योजना के अनुसार सभी चीजों को पूरा करता है* (इफिसियों 1:11);[226] d) अनंत जीवन और अखंड गतिविधि: *'मैं जीवित हूँ,' प्रभु कहते हैं:* (यर. 22:24), *'मैं सदा जीवित रहने वाला हूँ'* (व्यव. 32:40); *'मेरा पिता अब तक काम करता है, और मैं भी काम*

---

[223] जब हम कहते हैं कि *'आत्मा'* शब्द हमारे लिए दिव्य सार को सबसे स्पष्ट रूप से दर्शाता है, तो हम किसी भी तरह से यह नहीं कह रहे हैं कि दिव्य सार इस प्रकार हमारे लिए बोधगम्य हो जाता है। सेंट जॉन ऑफ डेमास्कस इसे इस प्रकार समझाते हैं: 'ईश्वर को जो आ□□दित है, उसे जानकर और इससे ईश्वर के सार तक आरोहण करके, हम स्वयं सार को नहीं समझते, बल्कि केवल उसको समझते हैं जो सार से संबंधित है (τά περί τήν ούσίαν), — ठीक उसी तरह, यह जानते हुए कि आत्मा अदेह, अमापनीय और अदृश्य है, हम अभी भी उसके सार को नहीं समझते; और न ही हम शरीर के सार को समझते हैं यदि हम जानते हैं कि वह सफेद या काला है, बल्कि हम केवल उस चीज़ को पहचानते हैं जो उसके सार से संबंधित है। हालाँकि, सच्चा वचन यह सिखाता है कि *ईश्वरत्व सरल है,* और उसमें एक ही, सरल, अच्छी क्रिया (ένεργείαν) है, जो हर तरह से और सभी चीजों में सक्रिय है" (सही समर्पण: ऑर्थोडॉक्स विश्वास की व्याख्या, पुस्तक 1, अध्याय 10, पृ. 34)।

[224] यह भी जोड़ना चाहिए कि नए नियम की कलीसिया में भी, पवित्र प्रतिमाओं पर स्वयं ईश्वर को उनके सार में चित्रित नहीं किया गया है, बल्कि केवल वे विभिन्न रूप हैं जिनमें वे पुराने और नए नियम में लोगों के सामने प्रकट होने के लिए प्रसन्न थे। इस प्रकार, परमेश्वर पिता को एक *वृद्ध* पुरुष, *एक अधिक आयु वाले व्यक्ति के* रूप में चित्रित किया गया है, जैसा कि वे भविष्यवक्ता दानिय्येल (दानिय्येल 7:9, 13, 22) को प्रकट हुए थे; ईश्वर का पुत्र, जो पवित्र आत्मा और कुँवारी मरियम से अवतारित हुआ, और जो फिर धीरे-धीरे बढ़कर *एक परिपूर्ण मनुष्य की* आयु (Eph. 4:13) तक पहुँचा, उसे जीवन के विभिन्न चरणों में चित्रित किया गया है: एक शिशु, एक बालक, एक युवक और एक पुरुष के रूप में; पवित्र आत्मा, जो उद्धारकर्ता पर उनके बपतिस्मा के समय *कबूतर के रूप में देहधारी होकर* उतरा (लूका 3:22), को कबूतर के रूप में चित्रित किया गया है।

[225] अन्य अंश जिनमें ईश्वर को एक मन और, अधिक सामान्य रूप से, मानसिक शक्तियों का भी धनी बताया गया है, वे हैं: निर्ग. 3:7; 2इति. 6:30; अयो. 14:13; भजन संहिता 7:10; यशायाह 46:11; 64:9; यिर्मयाह 14:10; हबक्कूक 4:2; 1 यूहन्ना 3:20; प्रकाशितवाक्य 18:5।

[226] यह भी देखें: भजन संहिता 39:7, 9; अय्यूब 23:13; यशायाह 48:11; दानिय्येल 5:21; मत्ती 6:10; 7:21; 12:50; 26:39, 42; मरकुस 14:36; लूका 22:42; यूहन्ना 4:34; 5:30; रोमियों 9:18; 1 कुरिन्थियों 12:6; गलातियों 1:4; इफिसियों 1:5; 5:7; 1 थिस्सलुनीकियों 4:3; 1 पतरस 2:15; इब्रानियों 10:36; 13:21.

करता हूँ' (यूहन्ना 5:17); *'जैसे पिता में स्वयं जीवन है, वैसे ही उसने पुत्र को भी स्वयं में जीवन रखने का अधिकार दिया है* ' (यूहन्ना 5:26), — तदनुसार, सच्चे परमेश्वर को *जीवते परमेश्वर* कहा जाता है, सभी झूठे देवताओं के विपरीत (1 थिस्स. 1:9; 1 तीमु. 6:17; 2 कुरि. 3:3; इब्र. 12:22; यूहन्ना 6:57, 69)।

3) अंत में, उन अंशों से जहाँ परमेश्वर को स्पष्ट रूप से आत्मा कहा गया है। ऐसे केवल दो अंश हैं; फिर भी दोनों समान रूप से स्पष्ट और निस्संदेह हैं। पहला उद्धरण उद्धारकर्ता की सामरी स्त्री के साथ हुई बातचीत में मिलता है: उसे यह सिखाने की इच्छा से कि परमेश्वर की *आराधना* केवल माउंट गेरीज़िम पर, जैसा सामरियों का मानना था, या यरूशलेम में, जैसा यहूदियों का विश्वास था, ही नहीं *होनी चाहिए*, बल्कि एक ऐसा समय आने वाला है जब *सच्चे आराधक* हर जगह उसकी आराधना करेंगे, मसीह ने कहा: *'ईश्वर आत्मा है, और जो उसकी उपासना करते हैं उन्हें आत्मा और सच्चाई में उपासना करनी चाहिए'* (यूहन्ना 4:20–24); परिणामस्वरूप, उन्होंने 'आत्मा' शब्द का उपयोग एक ऐसे अस्तित्व को दर्शाने के लिए किया जो किसी स्थान से बंधा नहीं है, एक अवास्तविक, सर्वव्यापी, तर्कसंगत और नैतिक अस्तित्व है। हमें प्रेरित पौलुस की कोरिन्थियों के नाम पत्र में एक और अंश मिलता है: *'प्रभु आत्मा हैं; और जहाँ प्रभु का आत्मा है, वहाँ स्वतंत्रता है'* (2 कुरिन्थियों 3:17), जहाँ, स्पष्ट रूप से, 'आत्मा' शब्द का प्रयोग रूपक रूप से नहीं, बल्कि सबसे सख्त, शाब्दिक अर्थ में किया गया है। यह भी ध्यान देने योग्य है कि प्रेरित पौलुस, *हमारे शरीर के अनुसार* हमारे पिताओं के विपरीत, परमेश्वर को *आत्माओं का पिता* कहते हैं (इब्रानियों 12:9)।

पवित्र चर्च, प्रेरितिक परंपरा की संरक्षक, ने इस सिद्धांत को आदिकाल से माना है; इसे उसके शिक्षकों ने स्पष्ट रूप से व्यक्त किया, विशेष रूप से मानव-रूपवादियों (anthropomorphites) की त्रुटियों के जवाब में,[227] जिन्होंने ईश्वर के वचनों पर आधारित होकर: *'आओ हम मनुष्य को अपनी प्रतिमा में बनाएँ'* (उत्पत्ति 1:26), और धर्मग्रंथ के उन अनेक अंशों पर जहाँ मानव गुणों और अंगों को ईश्वर से जोड़ा गया है,[228] ने दावा किया कि ईश्वर वास्तव में मांस में लिपटे हुए हैं और हर तरह से एक मनुष्य के समान हैं। ऐसी धारणा का खंडन करने के लिए, प्राचीन पादरियों ने —

1) सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, उन्होंने यह स्पष्ट करने का प्रयास किया कि प्रश्न में धर्मग्रंथों के अंशों को बिल्कुल अलग तरह से समझा जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि ईश्वर की प्रतिमा को मानव के शरीर में निहित नहीं समझना चाहिए—क्योंकि इसका कोई आधार नहीं है—बल्कि उसकी आत्मा में,[229] उसकी शक्तियों और क्षमताओं में,[230] उसके गुणों में, प्रेरित के शब्दों के अनुसार—एफि. 4:24,[231] या—पृथ्वी के प्राणियों पर मनुष्य के प्रभुत्व में, स्वयं सृष्टिकर्ता के शब्दों के अनुसार, जिन्होंने, जैसे ही कहा था: *'आओ मनुष्य को अपनी प्रतिमा में, अपनी समानता के अनुसार बनाएँ*, तुरंत जोड़ा गया: *'और उन्हें समुद्र की मछलियों, आकाश के पक्षियों, [और जंगली जानवरों,] और पशुओं, और सारी पृथ्वी, और पृथ्वी पर रेंगने वाली हर रेंगने वाली चीज़ पर अधिकार दिया जाए* (उत्पत्ति 1:26)।[232] इसी प्रकार, 'जब दिव्य शास्त्र में हमें ऐसे कई अंश मिलते हैं जिनमें किसी भौतिक वस्तु को प्रतीकात्मक रूप से ईश्वर से जोड़ा गया है, तो हमें यह समझना चाहिए कि हम मनुष्यों के लिए, जो मोटे शरीर में लिपटे हैं, ईश्वरत्व के दिव्य, उत्कृष्ट और अदृश्य

---

[227] सीरियाई संन्यासी *अवदेउस* या *अवदीउस* (चौथी शताब्दी) को मानव-रूपवाद का संस्थापक माना जाता है; उनके अनुयायियों को उनके नाम पर *अवडयिन के नाम से* जाना जाता था (*क्रिसोस्टोम*, *इन जेनेस.*, धर्मोपदेश XIII, संख्या 2; *एपिफेनियस*, *हेरेस.* LXX; *थियोडोरेट*, *एच. ई.* IV, 9)। इस विधर्म को बाद में मिस्र के संतों—ओरिजिनिस्टों (*सोक्रैट. n.* VI, 7; *सोज़ोम. n.* VIII, 12) और मनिखियों (*ऑगस्टिन.* कोंट्रा एपिस्ट. मनि. n. 2; एडव. फास्ट. XX, 7; XXV, 1; कन्फैस. V, 10); मध्य युग में — अल्बिजेन्सियन (*लूक. ट्यूडेन्सिस* 11:9); आधुनिक समय में — हॉब्स (लेवियाथन IV, 34, नोट पी. 3), प्रीस्टली और कई कार्टेशियन।

[228] उदाहरण के लिए: चेहरा (उत्पत्ति 4:16), आँखें (यशायाह 1:15), कान (भजन संहिता 16:6), मुँह (भजन संहिता 32:6), हृदय (यिर्मयाह 3:15), हाथ, मांसपेशियाँ और उंगलियाँ (भजन संहिता 43:3,4; 8:4; यशायाह 25:11; 40:11), पैर (भजन संहिता 98:5) और एक और (यिर्मयाह 18:17)।

[229] *एपिफेनियस*, हेरेसेस 90; *यूसेबियस*, भजन संहिता पर व्याख्या VIII, 5; *नाइसा के ग्रेगरी*, *'आओ मनुष्य को बनाएं* पर भाषण; *थियोडोरेट*, चर्च का इतिहास, पुस्तक IV, अध्याय 9; *ऑगस्टाइन*, त्रिमूर्ति पर, पुस्तक XII, अध्याय 7।

[230] *ग्रेगरी ऑफ़ निसा*, *ऑन द क्रिएशन ऑफ़ मैन*, अध्याय 4; *एम्ब्रोस*, *कमेंटरी ऑन द हेक्सामेरॉन*, पुस्तक VI, अध्याय 8; *साइरिल ऑफ़ अलेक्ज़ेंड्रिया*, जॉन पर पुस्तक IX; *जेरोम*, *एपिस्टल* 146।

[231] *यीशु के विषय में एक सत्य है: कि तुम्हें अपने पूर्व जीवन-शैली के अनुसार पुराने स्व को उतार देना चाहिए, जो अपनी कपटी इच्छाओं से भ्रष्ट हो गया है... और नए स्व को धारण करना चाहिए, जो परमेश्वर के स्वरूप के अनुसार धार्मिकता और सच्ची पवित्रता में सृजित किया गया है।* *क्रिसोस्टोम*, अपाड डमास्केन. इन पैरेल, पृ. 8; *सेवेरियन*, दे मुंडी क्रेट. ओरात. V, n. 4 (इन ओप. *क्रिसोस्टो*. खंड IV, पृ. 484, एड. मोंटफौक.); *एम्ब्रोस*, दे बोनो मोर्टिस, अध्याय 5.

[232] *क्रिसोस्टोम*, उत्पत्ति, होमीली VIII, संख्या 3; *पम्फिलियो के यूसेबियस*, परमेश्वर के अवतार और अदृश्यता पर, बिब्लियोथेका पैट्रम, गैलैंड संस्करण, खंड IV, पृ. 498.

कार्यों को समझना और व्यक्त करना असंभव है, जब तक कि हम रूपकों, प्रकारों और प्रतीकों का उपयोग न करें। इस प्रकार, यदि कुछ भी देहधारी ईश्वर को आबद्ध किया गया है, तो वह प्रतीकात्मक रूप में कहा जाता है और इसका एक उच्चतर अर्थ होता है; क्योंकि ईश्वर सरल और अदेह है। इस प्रकार, ईश्वर में, *'आँखों', 'पलकों'* और *'दृष्टि'* से हमें उनकी सर्व-परिशीलन शक्ति, उनके सर्व-व्यापी ज्ञान को समझना चाहिए; क्योंकि हम भी, दृष्टि इंद्रिय के माध्यम से, एक अधिक पूर्ण और निश्चित समझ प्राप्त करते हैं। *'कानों'* और *'श्रवण'* से हमें उनकी कृपापूर्ण ध्यान और हमारी प्रार्थना की स्वीकृति को समझना चाहिए; क्योंकि हम भी, जब हमसे निवेदन किया जाता है, तो कृपापूर्वक उन लोगों की ओर अपना कान झुकाते हैं जो निवेदन करते हैं, और इस इंद्रिय के माध्यम से उन्हें अपनी कृपा दिखाते हैं। *'होठों' और 'वाणी'* से हमें ईश्वर की इच्छा की अभिव्यक्ति को समझना चाहिए; क्योंकि हम भी अपने हृदय के विचारों को अपने होठों और वाणी के माध्यम से प्रकट करते हैं। *'भोजन* और *पेय'* से हमारा तात्पर्य ईश्वर की इच्छा के प्रति हमारी सहमति से है; क्योंकि स्वाद के माध्यम से हम अपनी प्रकृति की आवश्यक मांगों को पूरा करते हैं। *'गंध'* से *हमारा तात्पर्य* ईश्वर की ओर निर्देशित हमारे विचारों और हमारी हार्दिक प्रवृत्ति की स्वीकृति से है; क्योंकि गंध के माध्यम से हम सुगंध को महसूस करते हैं। *'चेहरे'* से तात्पर्य कर्मों में उनके प्रकट होने और प्रकटीकरण से है; क्योंकि हमारा अपना चेहरा भी यह प्रकट करता है कि हम कौन हैं। *'हाथों'* से — उनकी सक्रिय शक्ति; क्योंकि हम भी जो कुछ भी उपयोगी है, और विशेष रूप से वह जो सबसे कीमती है, उसे अपने हाथों से करते हैं। *'दाहिने हाथ' से अभिप्रेत है* धर्म के कार्यों में उसकी सहायता; क्योंकि हम भी, जब अधिक उत्तम, महत्वपूर्ण और अधिक शक्ति की मांग करने वाले कार्य करते हैं, तो अधिकतर अपने दाहिने हाथ से ही कार्य करते हैं। *'स्पर्श'* से *अभिप्रेत है* सबसे छोटी और सबसे छिपी हुई चीजों का भी उसका सटीक ज्ञान और विवेक, क्योंकि हम जो कुछ भी छूते हैं, वह उससे छिपा नहीं रह सकता। *पैरों के* नीचे और *चलना* — उनका आना और प्रकट होना, चाहे ज़रूरतमंदों की मदद करने के लिए हो, उन्हें दुश्मनों से बचाने के लिए हो, या किसी अन्य उद्देश्य के लिए; क्योंकि हम भी पैदल ही जगहों पर जाते हैं। *शपथ के* नीचे — उनके परामर्श की अपरिवर्तनीयता, क्योंकि हमारे बीच पारस्परिक समझौते भी शपथ द्वारा ही पुष्ट किए जाते हैं। *'क्रोध* और *प्रचंड क्रोध' से* अभिप्रेत *है* बुराई से उसकी अरुचि और घृणा; क्योंकि हम भी तब क्रोधित हो जाते हैं जब हम अपनी इच्छा के विपरीत चीज़ से घृणा करते हैं। *'भूल, नींद* और *सुस्ती' से अभिप्रेत है* अपने शत्रुओं से प्रतिशोध लेने में उसकी मन्दता, और अपने लोगों के लिए अपनी प्रथागत सहायता को नियत समय तक स्थगित रखना। संक्षेप में, ईश्वर के बारे में जो कुछ भी देहधारी रूपों (σωματικώς) में कहा गया है, उसमें कोई छिपा हुआ अर्थ निहित है, और यह हमें हमारी समझ से परे की बातें सिखाता है, जो हमें परिचित हैं।"[233] हालाँकि, केवल इन्हीं व्याख्याओं तक ही सीमित न रहते हुए, चर्च के पादरी —

2) उन्होंने मिलकर सकारात्मक रूप से यह प्रदर्शित करने का प्रयास किया कि ईश्वर एक अद्रव्य और अतनु (निराकार) सत्ता हैं। इस उद्देश्य के लिए, उन्होंने प्रकाशन में उल्लिखित और सुदृढ़ तर्क द्वारा समान रूप से स्वीकृत ईश्वर के विभिन्न गुणों की ओर इशारा किया, जो देहधारी होने के साथ असंगत हैं, जैसे: क) उनकी अनंतता और सर्वव्यापकता: 'क्या आप ईश्वर को देह कह सकते हैं?' संत ग्रेगरी द थियोलोजियन पूछते हैं, 'लेकिन फिर आप उसे अनंत कैसे कह सकते हैं, जिसमें न कोई सीमा है और न ही कोई रूप...? सभी चीजों में व्याप्त होना और सभी चीजों को भरना ईश्वर का गुण है, जैसा कि कहा गया है: *"क्या मैं स्वर्ग और पृथ्वी को नहीं भरता?" प्रभु कहते हैं (*यिर्मियाह 23:24), और फिर: *'प्रभु का आत्मा संपूर्ण ब्रह्मांड को भरता* है' (सोलोमन की बुद्धि 1:7) — यह कैसे संरक्षित हो सकता है यदि ईश्वर स्वयं कुछ चीजों को सीमित करते हैं, जबकि स्वयं दूसरों द्वारा सीमित हैं?"[234] — ख) अपरिवर्तनीयता पर: "क्या ईश्वर अपरिवर्तनीय होगा यदि वह परिभाषित और पीड़ा के अधीन हो? और तत्वों से मिलकर बना और फिर तत्वों में विघटित होने वाला वह तत्त्व पीड़ा के अधीन कैसे नहीं हो सकता?"[235] — c) उनकी अविनाशी, अमरता और अनंतता: "जटिलता (घटक भागों से मिलकर बनी, *संपादकीय टिप्पणी*) संघर्ष की शुरुआत है; संघर्ष विभाजन की ओर ले जाता है; विभाजन विनाश की

---

[233] *सेंट जॉन ऑफ़ डेमास्कस,* सटीक व्याख्यान ऑफ़ द ऑर्थोडॉक्स फेथ, पुस्तक 1, अध्याय 11. यही बात, यद्यपि संक्षेप में, *सेंट ग्रेगरी द थियोलोजियन,* वर्क्स ऑफ द होली फादर्स, खंड III, पृष्ठ 122–123; सेंट *जॉन क्राइसोस्टोम,* एक्सपोजिशन ऑन द psalms, बुक VII, संख्या 11; *ब्लेस्ड थियोडोरेट,* ऑन psalm CXIX और अन्य में पाई जाती है।

[234] पवित्र पिताओं के कार्य, खंड III, पृ. 22; *सेवेरियन,* *ओराटियो दे मुंडी क्रीएशन*, V, n. 3; *सेंट जॉन ऑफ़ डेमास्कस,* *ऑर्थोडॉक्स विश्वास की सटीक *व्याख्या**, पुस्तक 1, अध्याय 4.

[235] *ऑगस्टीन,* *दे सिविटिटे देई*, पुस्तक XI; *सेंट जॉन ऑफ डेमास्कस,* *एक्ज़ैक्ट एक्सपोज़िशन ऑफ़ द ऑर्थोडॉक्स फेथ*, पुस्तक 1, अध्याय 4।

ओर ले जाता है; और वनिाश पूरी तरह से ईश्वर के लिए अपरचिति है, जो उनकी पहली प्रकृति है — इसलिए, उनमें कोई वभिाजन नहीं है, अन्यथा वनिाश हो जाएगा; कोई संघर्ष नहीं है, अन्यथा वभिाजन होगा; कोई जटलिता नहीं है, अन्यथा संघर्ष होगा;"[236] (d) अंत में — इस तथ्य पर कि ईश्वर, सार्वभौमकि वशि्वास के अनुसार, सबसे परपिूर्ण सत्ता हैं — जो वे नहीं होते यदि उनकी प्रकृति पूरी तरह से सरल न होती, क्योंकि जटलिता हमेशा एक नशि्चति अपूर्णता को दर्शाती है।[237] इस संबंध में, हमारे लिए यह वशिेष रूप से उल्लेखनीय है कि प्राचीन पादरियों ने मानव-रूपवादियों की त्रुटि की नदिा करते हुए —

3) इसे एक वधिर्म कहा,[238] एक लापरवाह वधिर्म,[239] वधिर्मों में सबसे मूर्खतापूर्ण,[240] और लगातार उन मानव-रूपवादियों को, जो जदि्दी होकर अपनी राय पर अड़े रहे, वधिर्मयिों में गनिा,[241] केवल उन लोगों को बख्शा जो सादगी और अज्ञानता के कारण इससे भटक गए थे।[242] यह एक स्पष्ट संकेत है कि चर्च ने इस त्रुटि को वशि्वास के मामलों में तुच्छ नहीं माना, जैसा कि नवीनतम स्वतंत्रचतिक दावा करते हैं;[243] इसके वपिरीत, उसने इसे अत्यंत महत्वपूर्ण माना और ईश्वर की पूर्ण सादगी को ध्यान में रखते हुए इसे अपनी अपरविर्तनीय धर्मशास्त्र के रूप में मान्यता दी।

इससे यह स्पष्ट है कि ईसाई दृष्टकिोण से, ईसाई धर्म के भीतर ही उत्पन्न हुए प्राचीन और आधुनकि, दोनों प्रकार के सर्वदेववादियों को कैसे देखा जाना चाहिए, जो अस्तत्वि में मौजूद सभी चीज़ों—और परणिामस्वरूप भौतकि दुनिया—को ईश्वर या दैवीय अभव्यिक्ति के रूप में मानते हैं। यदि चर्च के नर्णिय के अनुसार, ईश्वर को केवल एक भौतकि आवरण—शरीर—के रूप में खुले तौर पर मानना नदिनीय है, तो ईश्वर को स्वयं शरीर या पदार्थ के रूप में मानना और भी अधकि नदिनीय है। यही कारण है कि, 'ऑर्थोडॉक्सी के आदेश' में, जसिे ऑर्थोडॉक्स चर्च महा-उपवास के पहले सप्ताह के दौरान संपन्न करती है, हम अन्य बातों के अलावा, नम्निलखिति शब्द सुनते हैं: 'जो कहते हैं कि ईश्वर आत्मा नहीं बल्कि मांस है—अनाथेमा।'[244]

§18. ईश्वर के सारभूत गुणों की अवधारणा, उनकी संख्या और वर्गीकरण।

ईश्वर के *सारभूत* गुण (τά ούσιώδη ιδιώματα, proprietates essentiales, या, संक्षेप में, άξιώματα, νοήματα, έπιτηδεύματα, attributa, perfectiones) वे हैं जो दैवी अस्तत्वि स्वयं से संबंधति हैं और इसे सभी अन्य प्राणयिों से अलग करते हैं; परणिामस्वरूप, ये परम पवत्रि त्रमिूर्ति के सभी व्यक्तयिों के लिए समान रूप से उपयुक्त गुण हैं, जो सार में एक हैं — इसीलिए इन्हें ईश्वर के सामान्य गुण (ιδιώματά κοινά) भी कहा जाता है, जो वशिेष या व्यक्तगित गुणों से भन्नि हैं

---

[236] *ग्रेगरी द थियोलोजियन,* पवत्रि पतिाओं के कार्य, खंड III, पृ. 22; *अलेक्जेंड्रिया के अथेनासियस,* गैर-यहूदियों के वरिुद्ध भाषण, पृ. 21.

[237] *एम्ब्रोस,* *De Fide*, पुस्तक 1, पृ. 16, टप्पिणी 106; *ऑगस्टीन,* *De Trinitate*, पुस्तक V। सामान्य रूप से, ऊपर दिए गए सभी प्रमाण पूरी तरह से प्रकट करते हैं: ओरजिन (*De Principiis*, 1, टप्पिणी 1, 6; 11, 2; *Contra Gelsium*, VI, 69, 70; VII, 27, 38) और यूसेबियस (De incorp. et invisib. Deo, in Biblioth. Patrum, ed. Galland, VI, pp. 497–503, और ibid., De incorporali, Book I, pp. 503–506)।

[238] 'और आज भी एक संप्रदाय है जो दैवीय को मानव-रूपी बताता है /' *सेवेरियन,* 'दुनिया की सृष्टि पर भाषण', V, n. 3.

[239] ... उन्होंने एक वस्तिृत ग्रंथ में *उस हास्यास्पद* मानव-रूपकवाद *के कुफ्र का* खंडन वस्तिार से कयिा ... *कैसियन।* कोलाट. X, अध्याय 2 (पैट्रोलॉजिया कर्सस कम्प्लेटस का खंड 49, पृ. 821)।

[240] वास्तव में, मानव-रूपवादियों के वरिुद्ध... क्रोध में... आपने अपनी दृष्टि... उस वृद्ध पुरुष पर टकिाई, यह इच्छा करते हुए कि उस पर *सबसे मूर्खतापूर्ण वधिर्म का* संदेह डाला जाए / *जेरोम,* जेरूसलम के जॉन के वरिुद्ध पुस्तक, खंड 11 (पैट्रोलॉगस कर्सस का खंड 23, संपूर्ण संस्करण, पृ. 364)।

[241] *एपफिेनियस,* *हेरेसिया*, पुस्तक III, संप्रदाय 70, खंड 2 और बाद में; *ऑगस्टीन,* *हेरेसिया*, 76 और 86; *फिलास्ट्रस,* *डे हेरेसिस*, *बब्लियिोथेका पैट्रम* डी ला बगिने, खंड V, स्तंभ 50; *दमास्कनस,* *डे हेरेसिस*, खंड 70.

[242] ... 'जसिे एपफिेनियस उनकी देहातीपन (मस्रि के भक्षिुओं का) के कारण मानते हैं,' धन्य ऑगस्टीन कहते हैं, 'उन्हें उदारता दखिाना ताकि उन्हें संप्रदाय-वरिोधी न कहा जाए।' *ऑगस्टीन,* *हेरेसिया*, 50.

[243] *इज़ाक ऑफ़ बेज़ोस,* मनीकयिवाद का इतहिास... पुस्तक III, अध्याय 2.

[244] ईश्वरीय सत्ता की पूर्ण अदेहता और आध्यात्मकिता की अवधारणा अन्य पूजा-संबंधी अनुष्ठानों में भी बहुत बार दोहराई जाती है, उदाहरण के लिए: *'जो स्वभाव से एक अदेह और अदृश्य ईश्वर है'*... (ऑक्टोएकोस, भाग 1, फोलयिो 163 वर्सो. मास्को, 1838); या: *'हे त्रमिूर्ति, हम आपको एक ही ईश्वर के रूप में महमिामंडति करते हैं: पवत्रि, पवत्रि, पवत्रि हैं आप, पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा, एक सरल सत्ता, जसिे अनंत काल से एक के रूप में पूजा जाता है'* (लेन्टन ट्रायोडयिन, फोलयिो 136, वर्सो, मास्को, 1835)।

(τά προσωπικά ιδιώματα, proprietates personales), जो ईश्वरत्व के प्रत्येक व्यक्ति से अलग-अलग संबंधित हैं और उन्हें एक-दूसरे से अलग करते हैं।[245]

ईश्वर के अनिवार्य या सामान्य गुणों की संख्या निर्धारित करना असंभव है। और चर्च, हमें ईश्वर की एक ठोस समझ प्रदान करते हुए और उनमें से कुछ का नाम लेते हुए ("ईश्वर एक शाश्वत आत्मा, सर्व-सद्गुणी, सर्व-ज्ञानी, सर्व-धर्मी, सर्व-शक्तिमान, सर्व-व्यापी, अपरिवर्तनीय, सर्व-संतुष्ट, सर्व-धन्य है"), फिर भी यह अवलोकन करती है कि ईश्वर के सामान्य गुण अनगिनत हैं: क्योंकि प्रकटवाक्य में परमेश्वर के बारे में जो कुछ भी कहा गया है, जो सार में एक हैं, यह सब, एक अर्थ में, दैवीय सत्ता के गुणों का निर्माण करता है।[246] इसलिए, कलीसिया के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, हम केवल उनमें से कुछ पर ही विचार करने तक ही सीमित रहेंगे—वे सबसे महत्वपूर्ण हैं, जो दैवीय सार का सबसे अच्छा वर्णन करते हैं, अन्य, कम स्पष्ट गुणों को समाहित या समझाते हैं, और जिन्हें दैवीय प्रकाशन में अधिक स्पष्ट रूप से वर्णित किया गया है।

ईश्वर के सारभूत गुणों की विशिष्ट अवधारणाएँ बनाने और उनके संबंध में सिद्धांत को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करने के लिए, धर्मशास्त्रियों ने प्राचीन काल से इन्हें विभिन्न वर्गों में विभाजित करने का प्रयास किया है; और विशेष रूप से मध्यकालीन तथा आधुनिक युगों में इस प्रकार की अनेक वर्गीकरण योजनाएँ विकसित की गई हैं, जिनमें से प्रत्येक के, यद्यपि समान रूप से नहीं, अपने-अपने गुण और दोष हैं।[247] बाद वाले का मुख्य कारण स्पष्ट है: ईश्वर के अस्तित्व के गुण ( ), स्वयं अस्तित्व की तरह ही, हमारे लिए पूरी तरह से अव्यक्त हैं। इसलिए, उनके किसी सबसे उत्तम वर्गीकरण को खोजने के लिए व्यर्थ प्रयास किए बिना, हम उस वर्गीकरण को चुनेंगे जो हमें सबसे सही और सरल प्रतीत होता है।

ईश्वर स्वभावतःआत्मा हैं; और प्रत्येक आत्मा में, उसकी आध्यात्मिक प्रकृति (पदार्थ) के अलावा, हम विशेष रूप से दो मुख्य शक्तियों या गुणों को पहचानते हैं: बुद्धि और इच्छा। इस संदर्भ में, ईश्वर के आवश्यक गुणों को तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है:

I) सामान्य रूप से ईश्वर के अस्तित्व के गुण, अर्थात् वे गुण जो समान रूप से ईश्वर की स्वभाविक प्रकृति (पदार्थ) — जो आध्यात्मिक है — और उसकी दोनों शक्तियों: बुद्धि और इच्छा से संबंधित हैं, और जो सामान्य रूप से एक आत्मा के रूप में ईश्वर को सभी अन्य प्राणियों से अलग करते हैं;

II) ईश्वर की बुद्धि के गुण, अर्थात् वे जो केवल ईश्वर की बुद्धि से संबंधित हैं; और अंत में —

III) ईश्वर की इच्छा के गुण, अर्थात् वे गुण जो केवल ईश्वर की इच्छा से संबंधित हैं।

§19. दिव्य सत्ता के सामान्य गुण।

ईश्वर, आत्मा के रूप में, सामान्यतःसभी अन्य प्राणियों से इस बात में भिन्न हैं कि वे सभी अपनी अस्तित्व और शक्तियों दोनों में सीमित हैं, और परिणामस्वरूप अधिक या कम अपूर्ण हैं, जबकि वह एक आत्मा हैं जो हर दृष्टि से असीमित या *अनंत* हैं; दूसरे शब्दों में, *वह सर्व-पूर्ण हैं*। विशेष रूप से, अन्य सभी प्राणी: (क) अपने अस्तित्व की उत्पत्ति और अवधि में सीमित हैं: वे सभी अपना अस्तित्व ईश्वर से प्राप्त करते हैं और उस पर तथा, कुछ हद तक, एक-दूसरे पर निरंतर निर्भर रहते हैं — जबकि ईश्वर ने अपना अस्तित्व किसी से नहीं लिया है और किसी भी मामले में किसी पर निर्भर

---

[245] पूर्वी कैथोलिक और प्रेरितिक चर्च के ऑर्थोडॉक्स स्वीकारोक्ति, भाग 1, प्रश्न 13 का उत्तर।

[246] उपरोक्त — प्रश्नों 13 और 17 के उत्तर: ईश्वर के गुण अनगिनत हैं।

[247] और यह ठीक ईश्वर के गुण थे जिन्हें विभाजित किया गया था: 1) *नकारात्मक गुण* (άποφατικά, negativa), जिनके द्वारा सभी सीमित और अपूर्ण चीज़ें ईश्वर से अलग की जाती हैं, और *सकारात्मक गुण* (καταφατικά, affirmativa), जिनके द्वारा पूर्णताएँ उन्हें सौंपी जाती हैं, उदाहरण के लिए: बिना आरंभ के, सर्वज्ञ *(सेंट जॉन ऑफ़ डेमास्कस,* Exact. ऑर्थोडॉक्स विश्वास की व्याख्या, पुस्तक 1, अध्याय 12); 2) *निष्क्रिय* (ánenergetika, quiescentia, immanentia), अर्थात् वे जो क्रिया की अवधारणा को शामिल नहीं करते, और *सक्रिय* (energetika, operative, transeuntia), जो ऐसी अवधारणा को शामिल करते हैं: शाश्वत, अच्छा...; 3) *नैतिक* (मोरालिया), जो ईश्वर की इच्छा से संबंधित हैं, और *प्राकृतिक* (फिज़िका, स्यू मेटाफिज़िका), जो इस प्रकार संबंधित नहीं हैं: धर्मी, स्व-अस्तित्वमान; 4) *उपयुक्त* (प्रोप्रिया) और *रूपक* (मेटाफ़ोरिका, स्यू इम्प्रोप्रिया) में: सर्वशक्तिमान, क्रोधित; 5) *प्राथमिक* (primitiva) और *व्युत्पन्न* (derivata) में, जिसमें प्राथमिक व्युत्पन्न के लिए आधार का काम करता है: शाश्वत, अमर, 6) *सापेक्ष* (relativa), जो दुनिया के साथ ईश्वर के संबंध को व्यक्त करता है, और *निरपेक्ष* (absolute), जो अन्य प्राणियों से किसी भी संबंध के बिना ईश्वर से संबंधित है: सर्व-सत्, अनंत, और इसी तरह। इन और ईश्वर के गुणों के कई अन्य वर्गीकरणों पर एक चर्चा पुस्तक में पाई जा सकती है: *पॉल जैक्स. एंड्रियो* — कमेंट. डी एट्रिब्यूट. डिविनि. वैरिसि डिविजिनibus ईअरमक्वे कोमोडिसि एट इनकोमोडिसि, — प्रेमियो ओर्नाटा. लुग्ड. बैटाव. 1824.

नहीं है: वह *स्वयंभू और स्वतंत्र* है; (ख) अपने अस्तित्व की प्रकृति या रूप में सीमित हैं; क्योंकि वे अनिवार्य रूप से स्थान और समय की शर्तों के अधीन हैं, और परिणामस्वरूप परिवर्तन के अधीन हैं — ईश्वर स्थान की सभी शर्तों से परे हैं: *असीम* और *सर्वव्यापी*; वे समय की सभी शर्तों से परे हैं: *शाश्वत* और *अपरिवर्तनीय*; (ग) अंत में, वे अपनी शक्तियों में, मात्रा और गुणवत्ता दोनों में सीमित हैं — ईश्वर के लिए इस संबंध में भी कोई सीमाएँ नहीं हैं: वह *सर्वशक्तिमान है*। इस प्रकार, ईश्वर में स्वाभाविक रूप से निहित मुख्य गुण हैं: 1) असीमता या पूर्ण पूर्णता, 2) स्व-अस्तित्व, 3) स्वतंत्रता, 4) अगोचरता और सर्वव्यापकता, 5) शाश्वतता, 6) अपरिवर्तनीयता, और 7) सर्वशक्तिमानता।

1. अनंतता।

जब हम ईश्वर को अनंत (ἀόριστος, infinitus) कहते हैं, हमारा तात्पर्य यह है कि वह न केवल हर दृष्टि से हर सीमा और कमी से मुक्त है, बल्कि उसमें सभी संभावित पूर्णताएँ (tot tot — realitatibus) भी हैं, और इसके अलावा वह उच्चतम स्तर पर या किसी भी स्तर या माप के बिना है (ὑπερτελής, ens realissimum seu infinite perfectum)।[248]

पवित्र शास्त्र ईश्वर के इस गुण को दो तरीकों से दर्शाता है: कभी-कभी ईश्वर के बारे में पूर्ण अर्थ में बात करते हुए, और कभी-कभी उनकी तुलना अन्य प्राणियों से करते हुए; लेकिन दोनों ही मामलों में यह इसे बहुत स्पष्ट और प्रभावशाली ढंग से दर्शाता है।

यह परमेश्वर की निरपेक्ष असीमता के बारे में बताता है जब—क) यह सीधे परमेश्वर को पूर्ण और सभी कमियों से रहित कहता है: *'परमेश्वर ज्योति है, और उसमें कुछ भी अंधकार नहीं है* (1 यूहन्ना 1:5); *'तुम सिद्ध हो जाओ, जैसे तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है'* (मत्ती 5:48); ख) उसे महान और अनंत रूप से महान कहता है: *'महान है यहोवा और स्तुति के योग्य; उसकी महानता अथाह है* (भजन संहिता 144:3); *'महान है हमारा प्रभु, और महान है उसकी सामर्थ्य; उसकी समझ माप से परे है* (भजन संहिता 146:5); *देखो, परमेश्वर महान है, और हम उसे समझ नहीं सकते; उसकी आयु की संख्या अथाह है* (अय्यूब 36:26); *परमेश्वर का भवन कितना महान है, और उसके राज्य का विस्तार कितना विशाल है! वह महान और अनंत है, ऊँचा और अमापनीय है* (भजन संहिता 3:24–25); ग) उन्हें महिमामय, और राजा तथा महिमा के स्वामी, महिमा के परमेश्वर कहा जाता है: *सेनाओं का यहोवा, वह महिमा का राजा है* (भजन संहिता 23:10); *महिमा के परमेश्वर ने गरजन की है, बहुजल पर यहोवा* (भजन संहिता 28:3), *उसकी महिमा आकाशों से ऊपर है* (112:4); *सम्पूर्ण पृथ्वी उसकी महिमा से परिपूर्ण* है (यशायाह 6:3)—और परमेश्वर में महिमा और वैभव कुछ और नहीं बल्कि उसकी सिद्धताएँ ही हैं, या इन सिद्धताओं का अविभाज्य परिणाम और प्रकटकिरण है; (घ) अंत में, उनका वर्णन सर्व-संपन्न और *धन्य के रूप में* किया गया है (1 तीमु. 1:11; 6:15), जिन्हें किसी चीज़ की कमी नहीं है (प्रेरितों के काम 17:25-26) और हमेशा *आपके साक्षात आनंद में पूर्ण आनंद और आपके दाहिने हाथ पर अनंतकाल के लिए परमानंद* प्राप्त करते हैं (भजन संहिता 15:11), — और ऐसी पूर्ण संतुष्टि और आनंद अनिवार्य रूप से परमेश्वर में सिद्धताओं की पूर्णता का संकेत देते हैं, जिनके बोध में वही अकेले सर्व-संपन्न और धन्य हो सकते हैं।

जब परमेश्वर की तुलना अन्य प्राणियों से की जाती है, तो पवित्र शास्त्र: क) उनमें से किसी को भी ऐसा नहीं पाता जिसकी तुलना उनसे की जा सके: *'हे यहोवा, तेरे सदृश कौन है?'* (भजन संहिता 34:10; 17:19); *'तो तुम परमेश्वर की तुलना किससे करोगे? अथवा उसकी समानता किसमें पाओगे?'* (यशायाह 40:18); ख) *जब* विशेष रूप से उन प्राणियों को संबोधित किया जाता है जिन्हें दुनिया में किसी भी कारण से सबसे महान और सबसे ऊँचा माना जाता है, तो यह उन पर उसकी पूर्ण श्रेष्ठता को स्थापित करता है: *'प्रभु के समान कोई पवित्र नहीं; क्योंकि तेरे सिवाय और कोई नहीं; और हमारे परमेश्वर के समान कोई चट्टान नहीं* (1 शमूएल 2:2); *उस उपदेशक के समान कौन है?* (अय्यूब 36:22); *हे यहोवा, देवताओं में तेरे सदृश कौन है? हे प्रभु, पवित्रता में महिमामय, स्तुति के योग्य, चमत्कारों के सृष्टा, तेरे सदृश कौन है?*

---

[248] "हम एक सच्चे ईश्वर में विश्वास करते हैं, सर्वशक्तिमान और *अनंत* — ἀόριστον...." (पूर्वी पैट्रिआर्कों का ऑर्थोडॉक्स विश्वास पर पत्र, अनुच्छेद 1). "ईश्वर... स्वतः *परिपूर्ण* और महिमामय हैं — καθ' ἑαυτόν ὑπερτελής καί δεδοξασμένος" (पूर्व की कैथोलिक और प्रेरितिक चर्च का ऑर्थोडॉक्स धर्मोपदेश, भाग 1, प्रश्न 8 का उत्तर)। और प्राचीन काल से परमेश्वर की असीमता को कैसे समझा गया है, यह संत मैक्सिमिस द कन्फेसर के शब्दों से स्पष्ट है: 'उसे (परमेश्वर को) "अपरिभाषित" कहा जाता है क्योंकि वह किसी भी अवधारणा के अधीन नहीं है...' (स्कॉल. इन कैप. 2. डायोनिसियस द एरोपागिट, डी कोएलेस्ट. हियिराच.), और संत ग्रेगरी द थियोलोजियन के शब्दों से: 'हे परमेश्वर... एक अस्तित्व के महासागर के समान, अनंत और अनिर्दिष्ट, जो समय और प्रकृति की हर अवधारणा से परे है (Orat. XXXVIII, n. II; Works of the Holy Fathers, vol. III, p. 238).

(नरि्ग. 15:11), — और तुरंत बाद उसे कहता है — *यहोवा, तुम्हारा परमेश्वर, देवताओं का परमेश्वर और प्रभुओं का प्रभु है, एक महान, शक्तशिाली और भयानक परमेश्वर* (व्यव. 10:17), *राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु* (1 तीमु. 6:15)। लेकनि इतना ही नहीं: c) कभी-कभी यह परमेश्वर के गुणों को इतना महान प्रस्तुत करता है कि अन्य प्राणयिों के गुण उसकी तुलना में फीके पड़ जाते हैं — उदाहरण के लिए परमेश्वर को न केवल शक्तशिाली, बल्कि *एकमात्र शक्तशिाली* (1 तीमुथयिुस 6:15), न केवल अच्छा, बल्कि एकमात्र अच्छा (मरकुस 10:18), न केवल पवत्रि, बल्कि *एकमात्र पवत्रि* (1 राजा 2:2), न केवल सर्वज्ञ, बल्कि *एकमात्र सर्वज्ञ* (1 तीमुथयिुस 1:17), न केवल अमर, बल्कि एकमात्र *अमर* (1 तमिुथयिुस 6:16), मानो अन्य सभी प्राणयिों में ये गुण बलि्कुल भी न हों। अंत में — d) कुछ अंशों में यह वास्तव *में* अन्य प्राणयिों को ईश्वर की अनंत महानता की तुलना में तुच्छ के रूप में वर्णति करता है, उदाहरण के लिए *यह* दावा करते हुए कि ईश्वर के सामने *सभी राष्ट्र शून्य के समान हैं — शून्यता और रिक्तता को उनकी दृष्टि में और भी तुच्छ माना जाता है* (यशायाह 40:17), कि वह *राजकुमारों को शून्य कर देता है, और पृथ्वी के न्यायायिों को कुछ भी नहीं बना देता* (23).

ईश्वर की इस अनंत महानता और पूर्णता को स्वस्थ तर्क द्वारा भी हमेशा पहचाना गया है।[249] वास्तव में, यह अपनी प्रकृति और बाहरी जगत की आवाज़ के प्रति आज्ञाकारी रहते हुए, इसे पहचानने में वफिल नहीं हो सकता।

हमारे भीतर एक ऐसे अस्तत्वि की कल्पना नहिति है जो सर्वोत्तम और असीम है—एक ऐसी कल्पना जो मनुष्य में पूर्ण चेतना प्रकट होने से पहले ही जागृत हो जाती है, और जसिके परणिामस्वरूप, जैसा कि चर्च के प्राचीन शक्षिकों ने देखा, सभी लोग, वे वकिास के कसिी भी चरण में क्यों न हों, आमतौर पर ईश्वर को उस रूप में कल्पना करते हैं जो कसिी भी अन्य चीज़ से अधकि ऊँचा और अधकि परपिूर्ण हो सकता है।[250] इसके सार्वभौमकि होने, इसके उदय के समय और इसकी स्वयं की सामग्री को देखते हुए, हम इस वचिार की उत्पत्ति की व्याख्या इस बात को स्वीकार कयि बनि नहीं कर सकते कि यह मानव जाति में जन्मजात है, अर्थात्, आत्मा के साथ हमें प्रदान कयि गया है और हमारे तर्क की प्रकृति के साथ अवभिाज्य रूप से एकीकृत है।[251] तदनुसार, मन को पहले अपनी ही प्रकृति को बदलना होगा ताकि बाद में या तो ईश्वर के अस्तत्वि से इनकार कयि जा सके या ईश्वर को अनंत रूप से परपिूर्ण न मानकर उसकी कल्पना की जा सके।

जब हम बाहरी जगत को नहिारते हैं, और उसमें लगभग हर मोड़ पर आश्चर्यजनक भव्यता, सौंदर्य और अन्य अनगनित तथा अत्यंत ववििधि पूर्णताओं के नशिान देखते हैं, हम यह महसूस कयि बनि नहीं रह सकते कि *स्वर्ग* वास्तव *में* हमें *परमेश्वर की* महमिा—अर्थात् *उसकी* सद्धिताएँ— *घोषति कर रहे हैं,* और सारी प्रकृति उनकी अखंड रूप से चर्चा करती है, जैसे सबसे वाक्पटु उपदेशक (भजन संहति 18:2–5)। यदि ऐसी रचनाएँ हैं, तो स्रष्टा कैसा होगा ! यदि इतने सारे और इतने उत्तम गुण सारी सृष्टि में बखिरे हुए हैं, तो उनमें कतिनी और कसि हद तक ये गुण होने चाहिए—वह जो *सभी चीजों को जीवन और सांस और सब कुछ* देता है (प्रेरतिों के काम 17:25)! 'यदि एक सुंदर स्वर्ग है—हमारे अपने एक पवत्रि पति के शब्दों का उपयोग करने के लिए—और स्वर्गों में दृश्यमान सूर्य, चंद्रमा और तारे हैं, तो, ओह, वह कतिना अधकि सुंदर है जसिने इन सुंदर चीजों को बनाया। यदि पृथ्वी अपने मनोरम दृश्यों, पहाड़ों, पहाड़यिों, जंगलों, ओक के बागों, बगीचों, अंगूर के बागों, खेतों के साथ सुंदर है, फूल, और, इसके अलावा, कीमती चीजें: चांदी, सोना, अनमोल रत्न; और, इसके अतरिक्ति, सुंदर लोग, जनिके चेहरे स्वर्गदूतों जैसे हैं—इन सभी चीजों को अपनी शक्ति और बुद्धि से बनाने वाला

---

[249] जैसा कि उदाहरण के लिए, पगन (प्राचीन यूनानी) ऋषयिों की रचनाओं से स्पष्ट है: *पाइथागोरस* — एनीएड्स, पुस्तक V, अध्याय V (अंतमि), और पुस्तक VI, अध्याय IX, खंड 6; *पाइथागोरस का यूरफिामास* — जीवन पर पुस्तक (डायोजेनेस लाएर्टीयस की कृतयिों के अंत में); *प्लेटो का हेराक्लटिस* — मेटाफजिकिस में।

[250] धन्य ऑगस्टीन कहते हैं, 'यहाँ तक कि वे भी, जो स्वर्ग या पृथ्वी पर अन्य देवताओं को मानते और पूजते हैं, जब वे देवताओं के देवता की कल्पना करते हैं, तो वे हमेशा उसे इतना श्रेष्ठ और उत्कृष्ट मानते हैं कि उसकी कल्पना से बेहतर कुछ भी नहीं हो सकता… वे उसे सभी प्राणयिों से श्रेष्ठ मानते हैं, चाहे वे दृश्यमान और देहधारी हों या तर्कशील और आध्यात्मकि… और एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं मलि सकता जो उस चीज़ को परमेश्वर (सर्वोच्च) माने जो कसिी भी अन्य चीज़ से अधकि परपिूर्ण हो। इस प्रकार, हर कोई उस चीज़ को परमेश्वर के रूप में पहचानता है जसिे वे सभी चीज़ों से ऊपर पसंद करते हैं" (De doctrin. Christ. lib. 1, p. 7)। टर्टुलयिन ने भी इसकी पुष्टि की: ऊपर टप्पिणी 202 देखें।

[251] *टर्तुल्लयिन,* *अपोलॉजी*, अध्याय 17; *जेरोम,* *गलातयिों के नाम पत्र के पहले अध्याय पर टीका*: "जसिसे यह स्पष्ट है कि ईश्वर का ज्ञान सभी चीजों की प्रकृति में अंतर्नहिति है"; *लैक्टैंशियस,* *दव्यि संस्थान*, पुस्तक IV, अध्याय 4 और 28; *जॉन ऑफ़ डेमास्कस,* *ऑर्थोडॉक्स वशि्वास की सटीक व्याख्या*, पुस्तक 1, अध्याय 1: "ईश्वर ने स्वयं प्रत्येक व्यक्ति के स्वभाव में अपने अस्तत्वि का ज्ञान अंकति कयि है।" पैगनों में — *अरस्तू* *ऑन द हेवन्स*, पुस्तक 1, पृ. 3; *सिसिरो,* *ऑन द नेचर ऑफ द गॉड्स*, 1, 16; *सेनेका,* *एपस्टिल्स*, 117; *यावनब्लचि,* *ऑन द मस्टि्रीज़*, I, 3.

कतिना बेहतर, अधकि कीमती और अधकि आवश्यक है! इस प्रकार, सृष्टि के कार्यों के माध्यम से, हम सृष्टिकर्ता को जानना सीखते हैं।"[252]

यह ध्यान में रखना चाहिए कि, जैसा कि हमने पहले ही उल्लेख किया है, ईश्वर की अनंतता या सर्व-पूर्णता ईश्वर का कोई विशेष गुण नहीं है, बल्कि एक सामान्य गुण है जो अन्य सभी को समाहित करता है: "ईश्वर," जेरूसलम के संत सिरिल कहते हैं, "सभी बातों में परिपूर्ण है... ज्ञान में परिपूर्ण, शक्ति में परिपूर्ण, महिमा में परिपूर्ण, पूर्वज्ञान में परिपूर्ण, भलाई में परिपूर्ण, न्याय में परिपूर्ण, मानवता के प्रति प्रेम में परिपूर्ण।"[253] आइए अब हम ईश्वर के अस्तित्व के विशिष्ट गुणों की ओर मुड़ें, जो इस प्रकार हैं:

२. स्व-अस्तित्व (αυτούσια, aseitas) /

ईश्वर को स्वयंभू कहा जाता है क्योंकि उनका अस्तित्व किसी अन्य सत्ता का ऋणी नहीं है, बल्कि वे स्वयं से ही अपना अस्तित्व और जो कुछ भी उनके पास है, प्राप्त करते हैं।[254]

पवित्र शास्त्र में हमें ईश्वर की स्व-अस्तित्व की स्पष्ट रूपरेखा तब मिलती है जब हम पढ़ते हैं:

(क) कि ईश्वर से पहले कोई दूसरा ईश्वर नहीं था जिससे उसने अपनी सत्ता प्राप्त की हो, और वास्तव में, किसी ने भी उसे कुछ नहीं दिया: *'तुम मेरे गवाह हो,' प्रभु कहते हैं, 'और मेरा सेवक जिसे मैंने चुना है, ताकि तुम मुझे जानो और मुझ पर विश्वास करो, और यह समझो कि मैं ही हूँ: मुझ से पहले कोई ईश्वर नहीं था, और न ही मेरे बाद कोई होगा'* (यशायाह 43:10).

ख) कि वह पहले ईश्वर, अल्फा—सभी चीजों की शुरुआत हैं। *इस्राएल के राजा और उनके मुक्तिदाता, सेनाओं के यहोवा, यहोवा का वचन है: 'मैं पहिला और मैं आखिरी हूँ; मेरे सिवाय कोई ईश्वर नहीं है* (यशायाह 44:6); *'मैं प्रभु का पहिला हूँ और अन्त के दिनों में मैं वही हूँ* (41:4; तुलना करें 48:12)। *'मैं पहिला और अन्तिम, और जीवित हूँ; मैं मर गया था, और देखो, मैं युगानुयुग जीवित हूँ'* (प्रकाशितवाक्य 1:18)।

(ग) कि उसमें स्वयं में जीवन है और वह जीवन का सच्चा स्रोत है: *जैसे पिता में स्वयं में जीवन है, वैसे ही उसने पुत्र को भी स्वयं में जीवन प्रदान किया है* (यूहन्ना 5:26)। (मनुष्य के पुत्र) *तेरे भवन की चर्बी से तृप्त होते हैं, और तू उन्हें अपनी आनंद की धारा से पिलाता है; क्योंकि तेरे ही पास जीवन का फव्वारा है; तेरी ही रोशनी में हम रोशनी देखते हैं* (भजन संहिता 35:9–10)।

(d) अंत में, उनका नाम ही 'वह जो है' है — ὁ ὤν, उत्कृष्ट रूप से वह जो है (κατ' ἐξοχήν)। *और मूसा ने परमेश्वर से कहा: 'देख, मैं इस्राएलियों के पास जाऊँगा और उनसे कहूँगा: "तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।"' और वे मुझसे कहेंगे, 'उसका नाम क्या है?' मैं उनसे क्या कहूँ?' 14 परमेश्वर ने मूसा से कहा, 'मैं जो हूँ।' और उसने कहा, 'इस प्रकार तू इस्राएलियों से कहना: "मैं जो हूँ ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है"'* (निर्ग. 3:13-14)।

चर्च के पवित्र पिताओं और शिक्षकों ने मुख्य रूप से इस दूसरे अंश पर ध्यान केंद्रित किया और यह देखा कि *'मैं हूँ* नाम परमेश्वर के लिए सबसे उपयुक्त नाम है: क) क्योंकि परमेश्वर सभी अस्तित्व को अपने भीतर समाहित करता

---

[252] *संत दिमित्री ऑफ रोस्तोव* / संग्रहित कृतियाँ, खंड II, पृ. 186; *ऑगस्टीन,* *डी ट्रिनिटि*, पुस्तक XV, अध्याय 4: "चीजों का स्वभाव ही यह घोषणा करता है *कि* उसका *एक अति उत्तम सृष्टा* है, जिसने हमें एक मन दिया है... जिससे हम यह देख सकते हैं कि जीवित को निर्जीव पर..., बुद्धिमान को बुद्धिहीन पर..., और अपरिवर्तनीय को परिवर्तनशील पर प्राथमिकता दी जानी चाहिए। और इसी कारण से, चूँकि हम निस्संदेह सृष्टिकर्ता को सृष्टि की चीज़ों से ऊपर रखते हैं, हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि वह परम रूप से जीवित है, सभी चीज़ों को जानता और समझता है, और मर नहीं सकता, नष्ट नहीं हो सकता या बदल नहीं सकता; न ही वह एक शरीर है, बल्कि सभी आत्माओं में सबसे शक्तिशाली, सबसे न्यायप्रिय, सबसे सुंदर, सर्वोत्तम और सबसे धन्य है।"

[253] कैटेकेटिकल प्रवचन VI, § 8, रूसी अनुवाद में पृष्ठ 105।

[254] "एक ईश्वर, जीवित वचन, ज्ञान और स्व-अस्तित्व वाली शक्ति के पिता" (संत ग्रेगरी द वंडरवर्कर का धर्म-विश्वास)... "हमारा एक ईश्वर है, एक ईश्वर *जो है और हमेशा से है* — Θεόν όντα καί άεί όντα...." (पूर्वी कैथोलिक और प्रेरितिक चर्च का ऑर्थोडॉक्स स्वीकारोक्ति, प्रश्न 8 का उत्तर)। "ईश्वर के आवश्यक गुण हैं:... अस्तित्व में होना.... *बिना आरंभ के* — τό είναι.... άναρχον...." (उपरोक्त, प्रश्न 13 का उत्तर)। "मैं एक ईश्वर, सर्वशक्तिमान पिता में विश्वास करता हूँ.... जो *बिना आरंभ के, अजन्मा* और *निर्दोष* है" (बिशपों के चुनाव और अभिषेक की रस्म, पृ. 9, उल्टा पक्ष)। "एक त्रित्वमय सत्ता की आराधना करते हुए, हम, विश्वासियों, पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा की महिमा करें...., *एक अकल्पित ईश्वर,* अदेह प्राणियों के साथ पुकारते हुए: पवित्र, पवित्र, पवित्र हो, हे राजा" (ट्रायोडियन, लेंटन, पृ. 140, उल्टा पृष्ठ, मॉस्को 1837)।

है, मानो अस्तित्व का एक असीम और अनंत सागर;[255] ख) क्योंकि ईश्वर स्वयं से और स्वयं के द्वारा अस्तित्व में हैं, जबकि अन्य सभी प्राणी अपना अस्तित्व उनसे प्राप्त करते हैं;[256] ग) क्योंकि ईश्वर इस प्रकार से अस्तित्व में हैं कि, उनकी तुलना में, अन्य सभी प्राणी, मानो, अस्तित्वहीन हैं।[257] इस गुण को न केवल सार में बल्कि ईश्वर के सभी गुणों में भी विस्तारित करते हुए, पवित्र पिताओं ने ईश्वर के लिए विभिन्न अभिव्यक्तिपूर्ण और महत्वपूर्ण नाम गढ़े, जैसे: स्व-ईश्वर — αὐτόθεος,[258] स्व-प्रभु — αὐτοκύριος,[259] स्व-जीवन — αὐτοζωή,[260] स्व-शक्ति — αὐτοδύναμις,[261] स्व-सत्य — αὐτοαλήθεια,[262] स्व-प्रज्ञा — αὐτοσοφία,[263] स्व-पवित्रता — αὐτοαγιότης,[264] स्व-भलाई — αὐτοαγαθότης,[265] आदि। "हम विश्वास करते हैं," सेंट जॉन ऑफ़ डेमास्कस कहते हैं, "एक ईश्वर में... उस शक्ति में जो स्वयं प्रकाश है (αὐτόφως), स्वयं सद्भाव (αὐτοαγαθότης), स्वयं सार (αὐτοουσία), क्योंकि इसका अस्तित्व और इसके गुण किसी और के ऋणी नहीं हैं, बल्कि यह स्वयं ही अस्तित्व के लिए स्रोत है, जीवन के लिए स्रोत है, बुद्धि के लिए स्रोत है, और सभी के लिए सभी भलाई का कारण है।"[266]

यहाँ तक कि तर्कसंगत बुद्धि भी ईश्वर की स्व-अस्तित्वमानता को स्वीकार करने के लिए विवश है। यह देखते हुए कि संसार में हर चीज़ अनिश्चित और आकस्मिक है, और कारणों और प्रभावों की एक अखंड शृंखला के माध्यम से और पीछे की ओर जाते हुए, कोई भी यह महसूस किए बिना नहीं रह सकता कि एक-दूसरे से उत्पन्न होने वाले इन आश्रित अस्तित्वों की शृंखला अनंत तक नहीं बढ़ाई जा सकती (अन्यथा यह निरर्थक होगा), और यह कि अंततः एक प्रथम, स्व-अस्तित्वमान सत्ता की कल्पना करनी ही होगी, जिसे अपना अस्तित्व किसी और से प्राप्त नहीं हुआ, बल्कि जो सभी अस्तित्वमान चीजों का प्रथम कारण है।[267] ऐसा अस्तित्व—जिसकी कभी कोई शुरुआत नहीं हुई और जो स्वयं और अपने आप से अस्तित्व में है—कैसे संभव है, हम बिल्कुल नहीं समझते; फिर भी हम यह महसूस करते हैं कि उसका अस्तित्व हमारे तर्क की एक आवश्यक आवश्यकता है। इसी आवश्यकता को मानते हुए, यहां तक कि मूर्तिपूजक दार्शनिकों ने भी ईश्वर के स्व-अस्तित्व को स्वीकार किया।[268]

3. स्वतंत्रता।

ईश्वर में 'स्वायत्तता' शब्द से हमारा तात्पर्य उस गुण से है, जिसके द्वारा वह अपनी सत्ता, शक्तियों और कर्मों में केवल स्वयं द्वारा ही निर्धारित होता है, न कि किसी बाहरी कारण से, और वह आत्मनिर्भर (αὐτάρκης, ἀνενδεής), आत्म-शासी (αὐτεξούσιος) तथा सार्वभौम (αὐτοκρατής) है।[269]

---

255 उपरोक्त टिप्पणी 166 देखें।

256 *हिरोनिमस,* एपिस्ट. 136; *ऑगस्टीन,* दे सिविटिटे देई, पुस्तक 1, अध्याय 32; दे जेनेसी एड लिटिरम, पुस्तक V, अध्याय 16; *हिलरी,* इन वर्बा एक्सोडी, अध्याय 3: *'एगो सुम क्वी सुम'।*

257 *क्लेमेंट ऑफ़ अलेक्ज़ेंड्रिया,* *पेडागोगस*, पुस्तक 1, अध्याय 8; *डायोनिसियस द एरोपागिट,* *ऑन द डिवाइन नेम्स*, अध्याय 5; *यूसेबियस,* *प्रिपरेशन फॉर द गॉस्पेल*, इवेंजेल, पुस्तक XI, अध्याय 9; *ऑगस्टीन,* भजन 134 पर व्याख्या: "क्योंकि वह (ईश्वर) ऐसा है कि, उसकी तुलना में, जो वस्तुएँ बनी हैं, वे नहीं हैं।"

258 *एपिफेनियस,* *हेरेसेस*, 77; *यूसेबियस,* *चर्च का इतिहास*, पुस्तक X, अध्याय 4.

259 *ग्रेगरी ऑफ नाज़ियनज़स,* ओरेशन 37।

260 *डायोनिसियस द एरोपागिट,* *दिव्य नामों पर*, अध्याय 2, खंड 8; अध्याय 6, खंड 1।

261 *अतानासियस,* अन्यजातियों के विरुद्ध भाषण; *निसिसा के ग्रेगरी,* हेक्साएम *पर* टीका।

262 *अथेनासियस,* अन्यजातियों के विरुद्ध भाषण।

263 *डियोनिसियस द एरोपागिट,* *दिव्य नाम पर*, अध्याय 5; *क्रिसोस्टोम,* *प्रोविडेंस पर*, पुस्तक 1, अध्याय 7.

264 *डियोनिसियस द एरोपागिट,* *दिव्य नामों पर*, अध्याय 12, संख्या 1.

265 उपरोक्त, अध्याय 2। धन्य ऑगस्टीन कहते हैं, 'प्रभु भला है,' 'लेकिन भला उसी तरह नहीं जैसे वे भले पदार्थ हैं जिन्हें उसने बनाया है; वह *अपनी ही* भलाई से भला है, न कि किहीं और से प्राप्त भलाई से' (भजन संहिता 134)।

266 सही आस्था की व्याख्या, पुस्तक 1, अध्याय 8, पृष्ठ 16।

267 इस विचार को धन्य ऑगस्टीन (lib. de cognit. verae vitae, chap. 7) और दमास्कस के संत जॉन (सही समर्पण: ऑर्थोडॉक्स विश्वास की व्याख्या, पुस्तक 1, अध्याय 3, पृ. 6) द्वारा समझाया गया है।

268 उनके साक्ष्यों का हवाला यूसेबियस ने दिया है — *प्रेपरेटियो इवैंजलीई*, पुस्तक XI, अध्याय 9–11।

269 'ईश्वर आत्मा हैं... सर्व-संपन्न' (ऑर्थोडॉक्स कैथोलिक पूर्वी चर्च का विस्तृत धर्मशास्त्र, प्रथम अनुच्छेद पर)। "ईश्वर की सर्वशक्तिमत्ता (παντοκρατορία) और सर्वशक्तिमान शक्ति उनकी अपनी इच्छा और विवेक द्वारा निर्धारित होती है" (ऑर्थोडॉक्स कन्फेशन, भाग 1, प्रश्न 14 का उत्तर)। "उन्हें सर्वशक्तिमान कहा जाता है क्योंकि सभी चीजें उनकी शक्ति के अधीन हैं" (उपरोक्त)।

ईश्वर का यह गुण सीधे पछिले गुण से ही नकिलता है। यदि ईश्वर एक स्व-अस्तित्ववान सत्ता है, और जो कुछ भी उसके पास है वह सब केवल उसी से है, तो वह अस्तित्व और शक्तियों के मामले में किसी पर भी निर्भर नहीं है। लेकिन इसके अलावा, पवित्र शास्त्र ईश्वर की स्वतंत्रता को विभिन्न पहलुओं में चित्रित करता है—

क) जब यह कहा जाता है कि परमेश्वर को किसी बाहरी चीज़ की आवश्यकता नहीं है, बल्कि वह सभी पर सब कुछ प्रदान करता है: *परमेश्वर, जिसने संसार और उसमें जो कुछ भी है उसे बनाया, वह, स्वर्ग और पृथ्वी का प्रभु होकर, न तो मनुष्यों के बनाए मंदिरों में वास करता है और न ही उसे मनुष्यों के हाथों की सेवा की आवश्यकता है, जैसे कि उसे किसी चीज़ की ज़रूरत हो, वह स्वयं सभी को जीवन और श्वास और सब कुछ देता है* (प्रेरितों के काम 17:24–25; तुलना करें यशायाह 40:28)। और निर्भरता की पहली अनुभूति हमारे भीतर ठीक उसी क्षण उत्पन्न होती है जब हमें एहसास होता है कि हम बाहरी मदद के बिना काम नहीं चला सकते।

ख) जब यह दावा करता है कि कोई भी बाहरी वस्तु परमेश्वर को कुछ भी प्रदान नहीं कर सकती, न तो उसके अस्तित्व और पूर्णताओं के संबंध में, और न ही उसके कार्यों के संबंध में। *प्रभु की आत्मा को किसने समझा है, या उसकी सलाह देने वाला उसका सहायक कौन रहा है? वह किससे सलाह लेता है, और कौन उसे सिखाता और धर्म का मार्ग दिखाता है, और उसे ज्ञान प्रदान करता है, और उसे बुद्धि का मार्ग दिखाता है?* (यशायाह 40:13-14); *या किसने उसे पहले से कुछ दिया है, कि उसे चुकाना पड़े? क्योंकि उसी से और उसी के द्वारा और उसी के लिये सब वस्तुएँ हैं* (*रोमियों* 11:35-36)।

ग) जब वह हमें परमेश्वर को सभी अन्य प्राणियों पर सर्वशक्तिमान प्रभु के रूप में प्रस्तुत करते हैं, जिसे, परिणामस्वरूप, कोई भी और कुछ भी करने के लिए मजबूर नहीं कर सकता। *मेरी संसार और जो कुछ भी उसमें है* (भजन संहिता 49:12); *हे प्रभु, हे प्रभु, राजा, सर्वशक्तिमान! सब कुछ तेरे वश में है, और जब तू इस्राएल को बचाना चाहे, तब कोई भी तेरा विरोध नहीं कर सकता; आपने स्वर्ग और पृथ्वी और स्वर्ग के नीचे की सभी अद्भुत वस्तुओं को बनाया; हे प्रभु, आप सभी के प्रभु हैं, और कोई भी आपके विरुद्ध नहीं खड़ा हो सकता* (एस्तेर 4:17), *क्योंकि सभी आपकी सेवा करते हैं* (भजन संहिता 118:91)।

(d) जब, अंत में, यह गवाही देता है कि परमेश्वर वास्तव में सभी बाहरी जबरदस्ती से मुक्त है और *अपनी इच्छा की योजना के अनुसार* कार्य करता है (इफिसियों 1:11)।

चर्च के पवित्र पिताओं और शिक्षकों ने यह भी सिखाया: क) कि परमेश्वर के पास कुछ भी कमी नहीं है और इसलिए उसे किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं है;[270] ख) कि 'वह न तो चीजों के क्रम के अधीन है, न ही तारों के प्रभाव के अधीन है, न ही संयोग के अधीन है, न ही भाग्य के अधीन है;'[271] ग) कि वह 'एक आत्म-संतुष्ट और आत्म-शासित सत्ता, सर्वशक्तिमान, जीवन-दायक..., एक ऐसी शक्ति है जो सभी पर शासन करती है और अनंत तथा अमर राज करती है — एक ऐसी शक्ति जिसका कोई विरोध नहीं कर सकता..., जो सभी अधिकारों और पदों की स्थापना करती है, जबकि स्वयं हर अधिकार और पद से ऊपर है,"[272] और d) कि वह "जो चाहे, जब चाहे और जैसे चाहे, वैसा ही करता है।"[273]

आम समझ, ईश्वर को स्व-अस्तित्वमान और सभी अस्तित्वमान चीजों के स्रष्टा और शासक के रूप में स्वीकार करते हुए, उसे स्वतंत्र के रूप में स्वीकार करना अनिवार्य है।

४. अगोचरता और सर्वव्यापकता।

ईश्वर को *अनंत* कहा गया है इस अर्थ में कि वह, परम आत्मा के रूप में और, इसके अलावा, हर तरह से असीमित होने के कारण, विशेष रूप से स्थान या जगह द्वारा किसी भी सीमा के अधीन नहीं है, बल्कि सभी चीजों को स्वयं से भर देता है

---

[270] *क्रिसोस्टोम,* भजन संहिता 44 में: 'ईश्वर को न तो आशीर्वाद की आवश्यकता है और न ही अनुग्रह की, क्योंकि दैवीय समझ से परे है' (तुलना करें भजन संहिता 114 में); *ऑगस्टीन,* प्रश्नों की पुस्तक 83, प्रश्न 22: 'जहाँ कोई कमी नहीं है, वहाँ कोई आवश्यकता नहीं है; जहाँ कोई अभाव नहीं है, वहाँ कोई निर्णय नहीं है। लेकिन परमेश्वर में कोई अभाव नहीं है: इसलिए, कोई आवश्यकता नहीं है।'

[271] *सेंट सिरिल ऑफ जेरूसलम।* कैटेकेटिकल लेक्चर्स, पुस्तक IV, संख्या 5, पृष्ठ 61। प्लेटोवादियों की यह धारणा कि स्वयं ईश्वर भाग्य (फेटम) के अधीन हैं और उस पर निर्भर हैं, का खंडन नेमेसियस, नेमेसिया के बिशप द्वारा विस्तार से किया गया है — *लिब. डी नेचुरा होमिनिस*, अध्याय 38।

[272] *संत जॉन ऑफ डेमास्कस।* ऑर्थोडॉक्स विश्वास की सटीक व्याख्या, पुस्तक 1, अध्याय 14 और 8।

[273] *हिप्पोलीटस,* *नोएटस के विरुद्ध*, अध्याय VIII: 'सभी चीजों को वैसे ही करना जैसे वह चाहता है, जिस तरह वह चाहता है, जब भी वह चाहता है'।

(ἀπερίγραπτος και τά πάντα πληρών — immensus); जबकि *सर्वव्यापकता* इस तथ्य में निहित है कि सभी चीजों को स्वयं से भरकर, वह स्वाभाविक रूप से हर जगह मौजूद है और हर प्राणी में अंतर्निहित है (πανταχού καί πάσι παρών — सर्वत्र उपस्थिति)।[274]

ईश्वर की सर्वव्यापकता में विश्वास और उसका सिद्धांत दैवीय प्रकटीकरण के सभी युगों में विद्यमान रहे हैं:

क) कुलपिता काल के दौरान। यह विश्वास याकूब और लाबान के शब्दों में व्यक्त होता है जब उन्होंने एक-दूसरे के साथ अपनी वाचा की पुष्टि की: *तब याकूब ने उससे कहा: 'देख, हमारे साथ कोई नहीं है; देख, परमेश्वर मेरे और तेरे बीच गवाह है'* (उत्पत्ति 31:44; तुलना करें 50); और बाद में — पोतीफर की पत्नी को यूसुफ के उत्तर में: *'तब मैं यह बड़ा अधर्म कैसे करूँ और परमेश्वर के विरुद्ध पाप कैसे करूँ?'* (उत्पत्ति 39:9)।

ख) पूर्व-कानूनी अवधि के दौरान। हमें इज़राइल को मूसा की इस आज्ञा में परमेश्वर की सर्वव्यापकता पर एक स्पष्ट शिक्षा मिलती है: *'इसलिये आज यह जान लो, और मन में धर लो, कि यहोवा [तुम्हारा परमेश्वर] ही ऊपर स्वर्ग में और नीचे पृथ्वी पर परमेश्वर है, [और] उसके सिवाय और कोई नहीं है [उसके अतिरिक्त]* (व्यवस्थाविवरण 4:39), और बाद में स्वयं प्रभु के वचनों में: *'स्वर्ग मेरा सिंहासन है, और पृथ्वी मेरा पादपीठ है; तो तुम मेरे लिये घर कहाँ बनाओगे, और मेरी विश्राम-स्थली कहाँ है?'* (यशायाह 66:1); *'क्या कोई मनुष्य ऐसे गुप्त स्थान में छिप सकता है जहाँ मैं उसे न देखूँ?' प्रभु कहते हैं। 'क्या मैं स्वर्ग और पृथ्वी को नहीं भरता?' यहोवा कहता है* (यिर्म. 23:24)। और परमेश्वर की सर्वव्यापकता की उतनी ही स्पष्ट स्वीकारोक्ति दाऊद की परमेश्वर से प्रार्थना में मिलती है: *'मैं तेरी आत्मा से कहाँ जाऊँ? तेरे presence से कहाँ भागूँ? यदि मैं स्वर्ग में चढ़ूँ, तो आप वहाँ हैं; यदि मैं कब्र में उतरूँ, तो आप वहाँ हैं। यदि मैं भोर के पंख लेकर समुद्र के सबसे दूर के छोर पर जा बसा, तब भी आपका हाथ मुझे मार्ग दिखाएगा, और आपका दाहिना हाथ मुझे दृढ़ता से थामे रहेगा* (भजन संहिता 138:7–10; तुलना करें आमोस 9:2–3), और सुलैमान की प्रार्थना में: *'स्वर्ग और स्वर्गों का स्वर्ग तुम्हें समा नहीं सकता, और यह मन्दिर भी नहीं, जो मैंने तुम्हारे नाम के लिए बनाया है;'* (3 राजा 8:27; तुलना करें 2 इतिहास 6:18)।

(ग) ईसाई युग के दौरान। परमेश्वर की सर्वव्यापकता का विचार उद्धारकर्ता द्वारा सामरी स्त्री से कही गई इस बात में स्पष्ट रूप से निहित है कि सच्चे परमेश्वर की उपासना किसी एक विशिष्ट स्थान तक सीमित नहीं हो सकती, बल्कि हर जगह होनी चाहिए (यूहन्ना 4:21–23), और — यह बात पवित्र प्रेरित पौलुस द्वारा स्पष्ट रूप से व्यक्त की गई है जब वे कहते हैं कि *परमेश्वर, जिसने संसार और उसमें जो कुछ भी है उसे बनाया, जो स्वर्ग और पृथ्वी का प्रभु है, वह मनुष्यों के हाथों से बने मंदिरों में नहीं रहता,* और उसने *समस्त मानव जाति को एक ही रक्त से उत्पन्न किया... ताकि वे परमेश्वर को खोजें, इस आशा में कि वे उसकी उपस्थिति को महसूस करें और उसे पाएं, यद्यपि वह हम में से किसी से भी दूर नहीं है: क्योंकि उसी में हम जीते और चलते-फिरते और अपनी सत्ता रखते हैं* (प्रेरितों के काम 17:24,26–28), और जैसा कि गवाही दी गई है: *'सभ का एक परमेश्वर और पिता, जो सभ के ऊपर है, और सभ के द्वारा, और हम सभ में है'* (इफिसियों 4:6)।

चर्च के पवित्र पिताओं और शिक्षकों ने विभिन्न त्रुटियों को रोकने या खंडन करने के लिए, जहाँ तक संभव हो, ईश्वर की सर्वव्यापकता के स्वभाव को समझाने का प्रयास किया। इस उद्देश्य के लिए, उन्होंने यह सिखाया कि ईश्वर सर्वव्यापी है और सभी चीजों को स्वयं से भर देता है, क) अपनी प्रकृति के विस्तार या फैलाव द्वारा नहीं, जैसे, उदाहरण के लिए, हवा या प्रकाश: क्योंकि ईश्वर की प्रकृति अद्रव्य और पूरी तरह से आध्यात्मिक है;[275] ख) वह केवल अपने सर्वज्ञता और सर्वशक्तिमानता के कार्यों (τή ένεργεία, क्रियाशील) के माध्यम से सर्वव्यापी नहीं है, जैसा कि कुछ प्राचीन विचारकों का मानना था और जैसा कि कुछ आधुनिक स्वतंत्र विचारक मानते हैं,[276] बल्कि अपने सार (τή ούσία

---

[274] "दृढ़ विश्वास के साथ और बिना किसी संदेह के मानो कि ईश्वर *सर्वव्यापी है... πανταχού παρών*" (सही स्वीकारोक्ति, भाग 1, प्रश्न 17 का उत्तर)। "ईश्वर के आवश्यक गुण हैं: अस्तित्व… *सर्वव्यापी, सर्व-व्यापक, और अपार*" — "जो सर्वत्र उपस्थित है और सभी चीज़ों को भरता है, अकथनीय" (उपरोक्त, प्रश्न 13 का उत्तर, तुलना करें प्रश्न 15)। "हे स्वर्गीय राजा, सांत्वनादाता, सत्य के आत्मा, *जो सर्वत्र उपस्थित हो और सभी चीज़ों को भरते हो..*" (पवित्र आत्मा की प्रार्थना)।

[275] *एथनासियस,* लिबि. एडवर्सस साबेलियानोस: 'ईश्वर, सभी चीजों के साथ सह-उपस्थित हुए बिना, सभी चीजों में व्याप्त हैं, क्योंकि यह एक दैहिक अवधारणा है।' *ऑगस्टाइन.* Epist. 57; इस धारणा में ही कि ईश्वर सर्वत्र व्याप्त है, हमें दैहिक सोच का विरोध करना चाहिए..., कहीं ऐसा न हो कि हम ईश्वर को एक विशाल परिमाण द्वारा सभी चीजों में व्याप्त समझने लगें, जैसे कि वह पृथ्वी, या हवा, या प्रकाश हो।

[276] हाल के विचारकों में, कई सोसिनियन और रेमोंस्ट्रेंट इस दृष्टिकोण को मानते हैं; जहाँ तक प्राचीनों का सवाल है, सिनाई के अनास्तासियस ने अपनी पाँच पुस्तकों में से दूसरी पुस्तक में इसका उल्लेख किया है, जिसका शीर्षक *De incircumscripta Dei essentia* है।

— substantialiter) के माध्यम से — क्योंकि पहला अनुमान अनिवार्य रूप से दो असंगतियों को जन्म देता है: पहली, ईश्वर को एक ऐसे स्थान से परिभाषित किया जाता है जिसमें वह कथित तौर पर वास करता है और जहाँ से वह केवल अपनी बुद्धि और सर्वशक्तिमानता की शक्ति से दुनिया के सभी हिस्सों पर कार्य करता है; और दूसरी बात, ईश्वर के कार्य उसके सार से पूरी तरह से अलग और दूर होते हैं, जबकि कार्य केवल वहीं किए जा सकते हैं जहाँ उन्हें करने वाली सत्ता स्वयं मौजूद हो;[277] c) वह सर्वव्यापी है, इस प्रकार नहीं कि वह अपनी प्रकृति के विभिन्न भागों के साथ दुनिया के विभिन्न हिस्सों में मौजूद हो—बड़े स्थानों में अधिक, छोटे स्थानों में कम—बल्कि वह हर जगह, या प्रत्येक स्थान में, बड़े और छोटे में समान रूप से, पूर्ण रूप से मौजूद है;[278] d) इस प्रकार नहीं कि वह किसी स्थान में सीमित या समाहित हो; इसके विपरीत, वह सभी चीज़ों में और सभी चीज़ों के बाहर है,[279] और, परिणामस्वरूप, वह स्वयं सभी अस्तित्वमान को घेरे हुए है, परन्तु वह संसार और उसमें निवास करने वाले प्राणियों के लिए किसी भी प्रकार का स्थान नहीं है;[280] e) और, अंत में, ऐसा भी नहीं है कि, सभी चीजों में व्याप्त होते हुए, वह स्वयं किसी भी चीज़ से व्याप्त हो, या किसी भी चीज़ के साथ मिल जाए, या दुनिया में किसी भी अशुद्ध या पापी चीज़ से अपवित्र हो जाए।[281] हालाँकि, ईश्वर की सर्वव्यापकता की इन सभी व्याख्याओं को प्रस्तुत करते समय, प्रारंभिक चर्च के पादरियों ने ईश्वर के इस गुण की अकल्पनीयता की धारणा को दृढ़ता से मन में रखा। "'हम जानते हैं,' संत जॉन क्राइसोस्टोम कहते हैं, 'कि ईश्वर सर्वत्र उपस्थित हैं, लेकिन हम यह नहीं समझ सकते कि कैसे: क्योंकि हम केवल उनकी मूर्त उपस्थिति से ही अवगत हैं, और हमें ईश्वर की प्रकृति को पूरी तरह से समझने का वरदान नहीं मिला है। सूक्ष्मता में गहराई में जाए बिना, हमें ईश्वर की सर्वव्यापकता के एक ऐसे तरीके को स्वीकार करना चाहिए जो ईश्वर के योग्य और हमारी भक्ति के लिए लाभकारी हो।'[282]

यह स्वीकार करते हुए कि ईश्वर शुद्ध आत्मा हैं, और इसके अलावा एक ऐसे सत्त्व हैं जो हर दृष्टि से अनंत और सर्वोत्तम हैं, और साथ ही संसार में उनके कार्यों के निशान हर जगह देखते हुए, मन ईश्वर की सर्वव्यापकता को स्वीकार

---

[277] इन विचारों को सिने के अनास्तासियस ने उपरोक्त कृति में और पैट्रआर्क फोतिउस ने अपने पहले प्रबंध में विस्तार से समझाया है, जिसे हेनरिक कैनिशियस ने (एंटिक्विटीज़ लेक्चर, पुस्तक V, पृ. 189) प्रकाशित किया था।

[278] *संत जॉन ऑफ डेमास्कस।* ऑर्थोडॉक्स विश्वास की सटीक व्याख्या; पुस्तक 1, अध्याय 13: "यह समझना चाहिए कि ईश्वर के कोई भाग नहीं हैं; वह सर्वत्र पूर्ण रूप से उपस्थित हैं और अपनी संपूर्णता में—वह किसी ज्ञात संपूर्ण के भाग के रूप में किसी विशेष भाग में नहीं रहते, जैसे देहधारी वस्तुएँ विभाजित होती हैं, बल्कि सभी चीजों में पूर्ण रूप से उपस्थित हैं, और सभी चीजों से परे पूर्ण रूप से हैं;" *हिलार.* पुस्तक 1 कॉन्स्टेंटियस को: *'ईश्वर सर्वत्र है, और वह सर्वत्र पूर्ण रूप से उपस्थित है; थियोफिलस* ऑटोलिकस 11, 3 को; *अलेक्जेंड्रिया के क्लेमेंट,* दैवीय व्यवस्था पर, अंश (गैलैंड 11 में): 'प्रत्येक चीज़ में, संपूर्ण'; *एम्ब्रोज़,* विश्वास पर, पुस्तक 1, पृष्ठ 4 और 8; *ऑगस्टीन,* पत्र 57; इसलिए वह पूर्ण रूप से उपस्थित है, क्योंकि वह चीजों के एक भाग को अपना वर्तमान भाग और दूसरे भाग को दूसरा भाग प्रदान नहीं करता—बराबर को बराबर, छोटे को छोटे, और बड़े को बड़े के लिए—बल्कि समान माप में न केवल संपूर्ण सृष्टि के लिए, बल्कि इसके प्रत्येक भाग के लिए भी पूर्ण रूप से उपस्थित है (कन्फेशन्स, पत्र 112 और 222)।

[279] *यरूशलेम के संत किरिल:* 'स्थान से असीमित, फिर भी स्थानों के स्रष्टा, वह उनमें से प्रत्येक में उपस्थित हैं, और किसी में भी समाहित नहीं हैं' (कैटेकेटिकल ऑरेशन्स VI, § 8, पृ. 105), — 'वह सभी चीजों में और सभी चीजों के बाहर हैं' (कैटेकेटिकल ऑरेशन्स IV, § 5, पृ. 60); *Hilar.* de Trinit. 1, 6; *Augustin.* de Genes. ad litter. VIII, 26, n. 48; *Athanas.* epist. ad Serapionem: πανταχού έστι, καί έξω πάντων ών; *Hieronymus* in Esa. chap. 66; *John of Damascus.* सही आस्था की व्याख्या, पुस्तक 1, अध्याय 13: "वह स्वयं के लिए स्वयं ही स्थान है; वह सभी चीजों को भरता है और सभी चीजों के बाहर मौजूद है।"

[280] "यदि ईश्वर सभी चीजों के लिए स्थान हैं," संत मैक्सिमिस द कन्फेसर कहते हैं, "तो देहगत अर्थ में नहीं, बल्कि उनकी सृजनात्मक शक्ति (οὐ σωματικώς, ἀλλά δημιουργικώς) द्वारा: क्योंकि वह स्वर्ग और पृथ्वी और सभी चीजों को भरते हैं, जबकि वह स्वयं सभी चीजों के बाहर हैं—तो, स्पष्ट रूप से, वह असीमता या सीमाओं के बिना एक शक्ति हैं" (स्कॉल. इन कैप. 1. डायोनिसि. एरियोपग. डी डिविनि. नोमनि.)। या, जैसा कि धन्य ऑगस्टीन लिखते हैं: 'वह किसी स्थान में नहीं है; बल्कि, सभी चीजें उसमें हैं, न कि वह किसी स्थान में है — फिर भी इस तरह से नहीं कि वह स्वयं स्थान है।' क्योंकि एक स्थान वह है जो, अंतरिक्ष में, किसी पिंड की लंबाई, चौड़ाई और ऊंचाई द्वारा घिरा होता है: और ईश्वर ऐसी कोई चीज़ नहीं है (De divers, quaest. 83, qu. 20)।

[281] "दैवी स्वभाव सभी चीज़ों में व्याप्त है बिना किसी में मिश्रित हुए, जबकि कुछ भी उसे भेद नहीं सकता (*जॉन ऑफ़ डेमास्कस,* सटीक व्याख्यान ऑफ़ द ऑर्थोडॉक्स फेथ, पुस्तक 1, अध्याय 14; तुलना करें अध्याय 33), — 'एक शक्ति है जो हर सार में व्याप्त है, जबकि स्वयं शुद्ध बनी रहती है' (उपरोक्त, अध्याय 8); *एम्ब्रोसियस,* *डी फिदे*, पुस्तक 1, अध्याय 4 और 8; *सिरिल,* *थेसॉरस*, पुस्तक VI: क्योंकि (ईश्वर का सार) स्वयं में शुद्ध रहता है, और स्वाभाविक रूप से दूसरे के साथ अपनी सहभागिता में अविमिश्रित रहता है। ईश्वर, जो स्वभाव से शुद्ध है, शुद्ध कैसे बना रहता है, भले ही संसार में बहुत कुछ पापी और अशुद्ध है—इस बात को ईश्वर की सर्वव्यापी शक्ति की तुलना सूर्य की किरणों से करके समझाया गया, जो यद्यपि कई अशुद्ध स्थानों से होकर गुजरती और उन्हें प्रकाशित करती हैं, फिर भी स्वयं शुद्ध रहती हैं (*ग्रेगरी ऑफ निसिस,* ऑरेशन अगेंस्ट Ar. et Sabell. in *Mai* Collect. VIII, 11, पृ. 9; *Augustin.* De civit. Dei lib. VII, c. 3 et Epist. 57).

[282] *क्रिसोस्टोम,* हिब्रूओं के नाम पत्र पर धर्मोपदेश XII; *ग्रेगरी द थियोलोजियन,* पवित्र पिताओं के कार्य, खंड III, 25

करने के लिए विवश हो जाता है, ठीक वैसे ही जैसे स्वयं मूर्तिपूजक और उनके ऋषि भी करते थे—[283] —हालांकि इस सर्वव्यापकता का स्वरूप, वास्तव में, हमारी समझ से परे हो सकती है।

5. अनंतकाल।

जब कहा जाता है कि ईश्वर शाश्वत (ἀΐδιος — aeternus) है, तो इसका अर्थ है कि उनके अस्तित्व की न कोई शुरुआत है *और* न कोई अंत, और वे सामान्यतः समय की सभी बाधाओं से मुक्त हैं।[284]

पवित्र शास्त्र में, यह गुण है

क) यह गुण बार-बार स्वयं परमेश्वर को ही दिया गया है: *'मैं सदा जीवित रहूँगा'* (व्यवस्थाविवरण 32:40); *'मैं वही हूँ, मैं पहिला हूँ और मैं बाद वाला हूँ'* (यशायाह 48:12; तुलना करें 41:4; 44:6); *'मैं ही आरंभ और अंत हूँ'* (प्रकाशितवाक्य 1:8 और 17); *'मेरे पहले कोई परमेश्वर नहीं था, और मेरे बाद कोई होगा भी नहीं'* (यशायाह 43:10); *'मैं वही हूँ जो है'* (निर्गमन 3:14);

ख) भविष्यवक्ताओं, जैसे दाऊद ने, उनकी महिमा की: *आरंभ में, [हे प्रभु,] तूने पृथ्वी की नींव डाली, और आकाश तेरे हाथों का काम हैं; वे नाश हो जाएँगे, परन्तु तू बना रहेगा; और वे सब एक वस्त्र के समान घिस जाएँगे, और, एक चोगा की नाईं, तू उन्हें बदल देगा, और वे बदल जाएँगे; परन्तु आप वैसे ही बने रहते हैं, और आपके वर्ष कभी समाप्त नहीं होंगे* (भजन संहिता 101:26–28); *पहाड़ों के जन्म से पहले, और आपने पृथ्वी और ब्रह्मांड को आकार दिया, आप युगानुयुग परमेश्वर हैं* (भजन संहिता 89:3); *आपकी दृष्टि में एक हजार वर्ष कल के समान हैं* (5); यशायाह: *'क्या तुम नहीं जानते? क्या तुमने नहीं सुना कि सनातन यहोवा परमेश्वर, जिसने पृथ्वी की सीमाओं को बनाया है, न थकता है और न उसकी शक्ति क्षीण होती है? उसकी समझ अथाह है'* (40:28; तुलना करें 57:15); यिर्मयाह: *'वह जीवित परमेश्वर और सनातन राजा है'* (10:10);

ग) इसकी गवाही नए नियम के लेखकों द्वारा भी दी गई है, जिनमें पौलुस परमेश्वर को *युगों का अक्षय राजा* (1 तीमु. 1:17) और *एकमात्र अमरत्व के* स्वामी (6:16) कहता है, जबकि प्रेरित पतरस, भजनकार के शब्दों को दोहराते हुए कि परमेश्वर की दृष्टि में *एक हजार वर्ष एक दिन के समान हैं*, यह जोड़ते हैं कि *'प्रभु के पास एक दिन एक हजार वर्ष के समान है, और एक हजार वर्ष एक दिन के समान है'* (2 पतरस 3:8)।

इसके अलावा, पवित्र शास्त्र ईश्वर को उनके अस्तित्व से ही प्राप्त अनंतकाल को उनके गुणों और कर्मों तक विस्तारित करता है, और —

(d) कहता है: *'हे प्रभु, तेरा दयालु प्रेम सदा के लिए बना रहता है'* (भजन संहिता 137:8), *'तेरी धार्मिकता शाश्वत धार्मिकता है'* (भजन संहिता 118:142, 144); *'तेरा नाम युगानुयुग रहेगा'* (भजन संहिता 134:13); या: *'उसका प्रभुत्व एक शाश्वत प्रभुत्व है जो कभी नष्ट नहीं होगा'* (दानिय्येल 7:14); *जिसका राज्य एक शाश्वत राज्य है* (27); *प्रभु की योजना सदा के लिए बनी रहती है* (भजन संहिता 32:11), *और प्रभु का वचन सदा के लिए बना रहता है* (1 पतरस 1:25; तुलना करें भजन संहिता 118:89)।

चर्च के पवित्र पिता और शिक्षक हमें समझाते हैं कि ईश्वर की अनंतता को कैसे समझें। यह किसी प्रकार का अनंत और अनंतकाल नहीं है, जैसा कि आम तौर पर कल्पना की जाती है, जो क्रमशः एक के बाद एक आने वाले अनगिनत भागों से बना हो, और परिणामस्वरूप अनिवार्य रूप से अतीत, वर्तमान और भविष्य को समाहित करता हो — इसके विपरीत, यह एक ही, स्थिर, अपरिवर्तनीय वर्तमान है। संत ग्रेगरी द थियोलोजियन कहते हैं ( ), "ईश्वर हमेशा था, है, और रहेगा, या यूँ कहें कि, हमेशा है," क्योंकि 'था' और 'रहेगा' शब्द हमारे समय के विभाजन को दर्शाते हैं और क्षणभंगुर स्वभाव की विशेषता हैं; लेकिन *जो* है—वह हमेशा है। और इसी नाम से वह स्वयं को तब संबोधित करते हैं जब वह पहाड़ पर मूसा से बात करते हैं (निर्गमन 3:14); क्योंकि वह स्वयं में अस्तित्व की संपूर्णता को समाहित करते हैं, जिसका न तो आरंभ हुआ है और न ही अंत होगा। किसी अनिश्चित और अनंत सार के सागर की तरह, जो समय और प्रकृति की किसी भी धारणा की सीमाओं से परे फैला हुआ है, केवल मन ही (और वह भी बहुत अस्पष्ट और अपर्याप्त रूप से, इस बात पर विचार करने में

---

[283] *प्लॉटिनिस,* एनेड्स VI, पुस्तक 5, पृ. 4.

[284] "मजबूती से और बिना किसी संदेह के विश्वास करो कि ईश्वर हैं… शाश्वत — 'ἀιδιος' (सही स्वीकारोक्ति, भाग I, प्रश्न 17 का उत्तर)। "ईश्वर के आवश्यक गुण हैं: होना… शाश्वत, बिना आरंभ के, और अनंत — τό ἐίναι ἄΐδιον, ἀναρχον, ἀτελεύτητον" (उपरोक्त, प्रश्न 13 का उत्तर)। "तू वही है जो युगों का सृष्टिकर्ता होने के नाते, सनातन से पूर्व का है" (सितंबर के लिए मिनिट्स, शीट 11, उल्टी ओर, मॉस्को 1837)।

कि उसमें क्या है, नहीं बल्कि इस बात पर विचार करने में कि उसके चारों ओर क्या है), कुछ रूपरेखाएँ प्रस्तुत करके, उसे वास्तविकता के एक ही पहलू के विरुद्ध स्थापित किया जाता है, एक ऐसा पहलू जो पकड़े जाने से पहले ही भाग जाता है और मन में कल्पना किए जाने से पहले ही फिसल जाता है, जो हमारी बुद्धि की आँख को—यदि वह शुद्ध हो—ठीक उतना ही प्रकाशित करता है जितना कि बिजली की एक चमकती कड़क की तीव्रता दृष्टि को प्रकाशित करती है।"[285] ईश्वर की अनंतता की अवधारणा को डायोनिसियस द एरोपागाइट, टर्टुलियन, ग्रेगरी ऑफ निस्सा, इसिडोर ऑफ पेलुसियम, ऑगस्टाइन, ग्रेगरी द ग्रेट और अन्य लोगों द्वारा ठीक इसी तरह समझाया गया है।[286]

समय की सीमाओं में बँधे होने और हमारे चारों ओर केवल क्षणभंगुरता देखने के कारण, हम ईश्वर के शाश्वत अस्तित्व की कल्पना करने में पूरी तरह असमर्थ हैं; फिर भी हमारी बुद्धि ईश्वर में इस गुण को स्वीकार करने के सिवा कुछ नहीं कर सकती: क) ईश्वर एक सत्-सत्ता हैं, अर्थात्, एक ऐसे जिन्होंने अपने अस्तित्व की शुरुआत किसी से भी नहीं ली है और अपने भीतर जीवन का एक अक्षय स्रोत रखते हैं — परिणामस्वरूप, उनका कोई अंत नहीं हो सकता; ख) ईश्वर परम पूर्णता और असीमताओं वाले सत्त्व हैं, जो सभी सीमाओं से मुक्त हैं, और परिणामस्वरूप किसी भी लौकिक सीमा से: आरंभ, अवधि, उत्तराधिकार या अंत से। यहां तक कि मूर्तिपूजक दार्शनिकों ने भी ईश्वर की शाश्वतता को स्वीकार किया।[287]

6) अपरिवर्तनीयता।

ईश्वर में अपरिवर्तनीयता वह गुण है जिसके द्वारा वह अपने सार, अपनी शक्तियों और पूर्णताओं, तथा अपने गुणों और कार्यों में हमेशा एक ही रहता है।[288]

ईश्वर के इस गुण का वर्णन करते हुए, पवित्र शास्त्र: क) ईश्वर से मनुष्य में पाई जाने वाली किसी भी परिवर्तनशीलता को बाहर करता है: *'ईश्वर कोई मनुष्य नहीं है कि वह झूठ बोले, न मनुष्य का पुत्र कि वह अपना मन बदले* (गिनती 23:19), *और 'इस्राएल का विश्वासयोग्य झूठ नहीं बोलेगा और न ही अपना मन बदलेगा'; क्योंकि वह मनुष्य नहीं है कि* वह *पश्चाताप करे* (1 राजा 15:29); *मनुष्य के हृदय में बहुत सी योजनाएँ होती हैं, परन्तु केवल वही होता है जो यहोवा ठहराता है* (नीतिवचन 19:21); ख) — सभी परिवर्तनशीलता, जो बाहरी दुनिया में भी देखी जा सकती है: *आरंभ में, हे यहोवा, तूने पृथ्वी की नींव डाली, और आकाश तेरे हाथों का काम हैं; वे नाश हो जाएँगे, परन्तु तू बना रहेगा; और वे सब एक वस्त्र के समान घिस जाएँगे, और एक ओढ़नी के समान तू उन्हें बदल देगा, और वे परिवर्तित हो जाएँगे; परन्तु तू वही है, और तेरे वर्ष कभी समाप्त न होंगे* (भजन संहिता 101:26-28; तुलना करें इब्रानियों 1:11-12); *आकाश और पृथ्वी मिट जाएँगे, परन्तु मेरे वचन कभी न मिटेंगे* (मरकुस 13:31); और (ग) इस बात की गवाही देता है कि परमेश्वर में परिवर्तन का साया भी नहीं है: *हर अच्छा वरदान और हर उत्तम उपहार ऊपर से, ज्योतियों के पिता के पास से आता है, जिसमें न तो कोई परिवर्तन है और न ही पलटने का साया* (याकूब 1:17); d) अंत में, यह स्वयं परमेश्वर को बोलते हुए प्रस्तुत करता है: *'क्योंकि मैं यहोवा हूँ; मैं नहीं बदलता'* (मलाकी 3:6)।

---

[285] पवित्र पिताओं के कार्य, खंड III, पृ. 238, और खंड IV, पृ. 154–155।

[286] *डायोनिसियस द एरोपागाइट,* *दिव्य नामों पर*, अध्याय 5; *टर्टुलियन,* *मार्कियन के विरुद्ध*, पुस्तक 1, अध्याय 8; (*ग्रेगरी* ऑफ *निस्सा,* *यूनोमियस के विरुद्ध*, पुस्तक 1, पृ. 98; *इसिडोर ऑफ पेलुसियम,* पुस्तक III, पत्र 149; *ऑगस्टीन,* कन्फेशन्स, पुस्तक IX, अध्याय 10: 'भूतकाल में होना और भविष्य में होना दैवीय जीवन का हिस्सा नहीं है, बल्कि केवल होना है, क्योंकि यह शाश्वत है।'Nam , 'भूतकाल में होना और भविष्य में होना शाश्वत नहीं है' (कन्फेशन्स, पुस्तक XI, अध्याय 16); *ग्रेगरी द ग्रेट,* मोरल टीचिंग्स, पुस्तक XVI, अध्याय 20 और पुस्तक XX, अध्याय 23।

[287] *प्लेटो*— टायमियस में; *प्रोकुलस,* टायमियस पर टिप्पणी 11 में; *प्लॉटिनस*— एनेड्स III, पुस्तक 7, अध्याय 1, 2 और 4; *नुमेनियस*— यूसेबियस की 'प्रिपरेशन्स फॉर द गॉस्पेल', पुस्तक XI, अध्याय 10 में; *प्लूटार्क*— वही, अध्याय 11।

[288] "दृढ़ विश्वास के साथ और बिना किसी संदेह के मानो कि ईश्वर का अस्तित्व है... अपने सार में *अपरिवर्तनीय* — ἀμετάβλητος εἰς τὴν φύσιν" (ऑर्थोडॉक्स कन्फेशन, भाग 1, प्रश्न 17 का उत्तर). "हमारे पास एक ईश्वर है... जो सदैव स्वयं के समान है और वही है — ὁμοιον καί τούτόν πάντοτε μέν τόν ἑαοτόν" (उपरोक्त, प्रश्न 8 का उत्तर)। "महिमा के सिंहासन पर विराजमान, और गर्त पर दृष्टि डालते हुए, बिना आरंभ के, अदृश्य, अगम्य, अपरिवर्तनीय" (लिटर्जिकल बुक, पृ. 128, उल्टा पक्ष, मॉस्को 1817)। "ईश्वर की पूर्व-निर्धारित योजना... अपरिवर्तनीय बनी रहती है" (विस्तारित ईसाई धर्म-शिक्षा, अनुच्छेद 1 पर)।

चर्च के पवित्र पिता और शिक्षकों ने, जिन्होंने इसी प्रकार ईश्वर को हर दृष्टि से पूर्ण अपरिवर्तनीयता का धनी माना,[289] ने अपने विचारों की व्याख्या के लिए निम्नलिखित तर्क प्रस्तुत किए: (a) किसी प्राणी की परिवर्तनशीलता अनिवार्य रूप से उसमें विभिन्न अवस्थाओं के अनुक्रम या क्रमबद्धता के साथ होती है — परन्तु ईश्वर में कोई अनुक्रम या क्रमबद्धता नहीं हो सकती: क्योंकि ईश्वर शाश्वत है;[290] ख) परिवर्तन या तो बेहतर के लिए हो सकता है या बदतर के लिए — लेकिन इनमें से कोई भी ईश्वर में स्वीकार्य नहीं है: क्योंकि ईश्वर सर्व-पूर्ण है;[291] c) परिवर्तन किसी अस्तित्व के सार में वृद्धि या कमी के माध्यम से भी हो सकता है — लेकिन ईश्वर में किसी भी प्रकार की वृद्धि या कमी संभव नहीं है: क्योंकि ईश्वर अपार और पूरी तरह से अद्रव्य हैं।[292] विशेष रूप से, स्वतंत्र प्राणियों, और विशेषकर मनुष्य के संबंध में ईश्वर की इच्छा और आदेशों की अपरिवर्तनीयता को समझाने के लिए, पवित्र धर्मपितागण ने पवित्र शास्त्र के आधार पर ईश्वर की इच्छा के भीतर एक भेद स्थापित किया: पहला (θέλημα πρώτον) और दूसरा (δεύτερον), या फिर पूर्व (προηγούμενον) और पश्चात् (έπο'μενον), या, जैसा कि उन्होंने बाद में व्यक्त किया, अनपेक्षित (voluntatem absolutam) और सशर्त (voluntatem conditionatam) में। 'प्रथम इच्छा' शब्द से तात्पर्य उस इच्छा से है जिसके द्वारा ईश्वर किसी भी बाहरी शर्त के बिना कुछ चाहता है; उदाहरण के लिए, *वह चाहता है कि सभी लोग उद्धार पाएँ और सत्य के ज्ञान में आएँ* (1 तीमु. 2:4); जबकि उत्तरार्ध उस इच्छा को संदर्भित करता है जिसके द्वारा वह स्वतंत्र प्राणियों के संबंध में, उन पर बाध्यकारी किसी शर्त के अधीन, कुछ इच्छा करता है; उदाहरण के लिए, उसने मानवजाति के पास अपना एकलौता पुत्र भेजा, *ताकि जो कोई उस पर विश्वास करता है वह नाश न हो, बल्कि अनंत जीवन पाए* (यूहन्ना 3:16; मरकुस 16:16)। इस प्रकार, स्वतंत्र प्राणियों के संबंध में, और वास्तव में सभी के संबंध में, परमेश्वर की इच्छा अपरिवर्तनीय रहती है, और इस इच्छा और इसके विधानों द्वारा प्राणियों की स्वतंत्रता किसी भी तरह से प्रतिबंधित नहीं होती है।[293]

और स्वस्थ तर्क इन सभी दैवीय विचारों की न्यायसंगतता को स्वीकार किए बिना नहीं रह सकता, और परिणामस्वरूप ईश्वर को एक अपरिवर्तनीय सत्ता मानने के लिए विवश है, ठीक वैसे ही जैसे प्राचीन काल के मूर्तिपूजक ऋषि भी मानते थे।[294]

7. सर्वशक्तिमानता।

सर्वशक्तिमान शब्द का प्रयोग ईश्वर के लिए इस अर्थ में किया जाता है कि उनके पास सभी चीजों को अस्तित्व में लाने और उन पर शासन करने की असीमित शक्ति है—इसलिए उन्हें परस्पर बदलकर सर्वशक्तिमान या सर्वबलवान (παντοδύναμος), और सर्वनियंता (παντοκράτωρ) कहा जाता है।[295]

---

[289] *डायोनिसियस द एरोपागाइट,* *दिव्य नामों पर*, अध्याय 11, संख्या 6; *थियोफिलस,* *टू ऑटोल्यकस*, 1, 4; *ओरिजिन,* *सिद्धांतों पर*, 1, 1, संख्या 6; *क्रिसोस्टोम,* रोमियों को लिखे पत्र पर, होमीली III; *ऑगस्टीन,* *डी ट्रिनिटेट* की पुस्तक IV का प्रस्तावना: 'ईश्वर का सार, जैसा कि वह है, उसमें कुछ भी परिवर्तनशील नहीं है, न तो अनंतकाल में, न सत्य में, और न ही इच्छा में…' (*कन्फेशन्स*, पुस्तक XIII, अध्याय 16, खंड 20)।

[290] *टर्तुल्लियन,* *एडवर्सस प्रैक्सिटिम*, XXVII: 'ईश्वर में अपरिवर्तनीय और अचल के रूप में विश्वास करना आवश्यक है, जैसे कि वह शाश्वत है; लेकिन रूपांतरण मूल अवस्था से विचलन है'; *ओरिजिन,* *ओराटियो* XXIV; *ऑगस्टीन,* *लिबि. क्वेस्ट. 83*, क्व. 19; *लैक्टैंटियस,* *इंस्ट. लिबि. 11*, सी. 8; *बॉसुएट के एंटिपिटर,* डमास्कस के *पैरेलल* अध्याय 1 में।

[291] *ग्रेगरी ऑफ़ निसा,* कमेंट्री ऑन द psalms, ट्रीटीज़ II, अध्याय 4, पृ. 298, एड. मोरेल; *हिलरी,* कमेंट्री ऑन Psalm 2; *ऑगस्टीन,* प्रवचन XII, ऑन डाइवर्स मैटर्स, अध्याय 16: 'क्योंकि परिवर्तन या तो बदतर के लिए होता है या बेहतर के लिए…' (कन्फेशन्स, कमेंट्री ऑन 1 जॉन, ट्रीटीज़ VI, अध्याय 3)।

[292] *ग्रेगरी ऑफ़ निसा,* अगेंस्ट यूनोमियस, ओरेशन XII; *ऑगस्टीन,* *द सिटी ऑफ गॉड*, पुस्तक XI, अध्याय 10; *जॉन ऑफ डेमास्कस,* *एक्ज़ैक्ट एक्सपोज़िशन ऑफ द ऑर्थोडॉक्स फेथ*, पुस्तक 1, अध्याय 8।

[293] *क्रिसोस्टोम,* एफिसियों को लिखे पत्र पर धर्मोपदेश 1; *जॉन ऑफ़ डेमास्कस,* ऑर्थोडॉक्स विश्वास की सटीक व्याख्या, पुस्तक II, अध्याय 29; *टर्टुलियन,* कन्फेशन्स, ब्रह्मचर्य के लिए आग्रह पर पुस्तक, अध्याय 2 और 3।

[294] *प्लेटो* — *डी रिपब्लिका* की पुस्तक 2, *यूसेबियस के* *प्रेपरेटियो इवैंजलीई* की पुस्तक XIII, अध्याय 3 में उद्धृत; *सालस्ट,* अपने *डी देई एट मुंडो* की शुरुआत में; *प्लॉटिनस,* *एनियड्स* IV, पुस्तक 8, अध्याय 2।

[295] "दृढ़ विश्वास के साथ और बिना किसी संदेह के मानो कि ईश्वर सर्वशक्तिमान हैं — παντοδύναμος" (ऑर्थोडॉक्स कन्फेशन, भाग 1, प्रश्न 17 का उत्तर)। "ईश्वर के आवश्यक गुण हैं: सर्वशक्तिमान होना…" (उपरोक्त, प्रश्न 13 का उत्तर)। "उन्हें *सर्वशक्तिमान* या *सर्व-प्रभु* — παντοδύναμος ή παντοκράτωρ — कहा जाता है, क्योंकि सभी चीजें उनकी शक्ति के अधीन हैं, और क्योंकि उन्होंने दुनिया को बिना

पवित्र ग्रंथों में ईश्वर के इस गुण को दर्शाने वाले अनगनित अंश पाए जाते हैं। वे गवाही देते हैं:

क) सामान्य रूप से ईश्वर की सर्वशक्तिमानता के बारे में: *'मैं जानता हूँ कि आप सब कुछ कर सकते हैं, और आपका कोई भी उद्देश्य विफल नहीं हो सकता* (अय्यूब 42:2); *'अब्बा, पिता! आपके लिए सब कुछ संभव है* (मरकुस 14:36); *'ईश्वर के साथ सब कुछ संभव है* (मत्ती 19:26); *क्योंकि परमेश्वर के लिये कुछ भी असम्भव नहीं है* (लूका 1:37)। साथ ही, परमेश्वर को *सामर्थी* (भजन संहिता 88:9), *सेनाओं का यहोवा* (भजन संहिता 23:10), *एकमात्र सामर्थी* (1 तीमुथियुस 6:15), और *सर्वशक्तिमान* कहा गया है: *महान और शक्तिशाली परमेश्वर, वह परमेश्वर जो योजना में महान और कर्म में शक्तिशाली है, सर्वशक्तिमान प्रभु, सर्वशक्तिमान परमेश्वर* (यिर्म. 33:18–19; तुलना करें 2 कुरि. 6:18; प्रकाशितवाक्य 16:7)।

विशेष रूप से, परमेश्वर की सर्वशक्तिमानता को दर्शाया गया है—

ख) सृष्टि में: *'और परमेश्वर ने कहा, "प्रकाश हो।" और प्रकाश हो गया'* (उत्पत्ति 1:3); *क्योंकि उसने कहा, और वह हो गया; उसने आज्ञा दी, और वह प्रगट हो गया* (भजन संहिता 32:9; तुलना करें 148:5); *हमारा परमेश्वर स्वर्ग में [और पृथ्वी पर] है; वह जो कुछ भी चाहता है, वही करता है* (भजन संहिता 113:11; तुलना करें 134:6); *यहोवा के वचन से आकाश बने, और उसके मुख के साँस से उनकी सारी सेना* (भजन संहिता 32:6; तुलना करें यिर्मयाह 32:17; यशायाह 40:26–28); *हे प्रभु, महिमा और सम्मान और सामर्थ्य ग्रहण करने के लिए आप योग्य हैं: क्योंकि आपने सभी चीजें बनाई हैं, और आपकी इच्छा से ही वे अस्तित्व में हैं और बनाई गई हैं* (प्रकाशितवाक्य 4:11)।

ग) प्राणियों के लिए आपकी व्यवस्था और उन पर आपके प्रभुत्व में: *वे सभी समय पर अपना भोजन देने के लिए आप पर निहारते हैं। आप उन्हें देते हैं—वे ग्रहण करते हैं; आप अपना हाथ खोलते हैं—वे भलाई से तृप्त हो जाते हैं; आप अपना मुँह छिपाते हैं—वे व्याकुल हो जाते हैं; आप उनकी आत्मा ले लेते हैं—वे मरकर मिट्टी में मिल जाते हैं; जब आप अपनी आत्मा भेजते हैं, तो वे नये सिरे से सृजित होते हैं, और आप पृथ्वी का मुख नवीनीकृत करते हैं* (भजन संहिता 103:27-30)। *हे प्रभु, महानता, सामर्थ्य, महिमा, विजय, वैभव और स्वर्ग तथा पृथ्वी में जो कुछ भी है, वह सब आपका है; आपका है हे प्रभु, राज्य तेरा ही है, और तू सर्वोपरि प्रभु के रूप में महिमामय है। धन-संपत्ति और सम्मान दोनों तेरी उपस्थिति से आते हैं, और तू सब पर शासन करता है; तेरे हाथ में सामर्थ्य और शक्ति है, और सब वस्तुओं को ऊँचा उठाने और उन्हें बल देने की शक्ति तेरे ही पास है* (1 इतिहास 29:11–12; तुलना करें व्यवस्थाविवरण 10:17; 1 तीमुथियुस 6:15; प्रकाशितवाक्य 17:14; कुलुस्सियों 1:17; इब्रानियों 1:3)।

और निम्नलिखित परमेश्वर की सर्वशक्तिमानता की और भी स्पष्ट गवाही देते हैं—

(d) चमत्कारों के करने में: *[हमारे] परमेश्वर के समान महान परमेश्वर कौन है? हे परमेश्वर, तू चमत्कार करने वाला है* (भजन संहिता 76:14-15; तुलना करें 85:10); *वह पृथ्वी पर दृष्टि डालता है, और वह काँपती है; वह पर्वतों को छूता है, और वे धुआँ देते हैं* (भजन संहिता 103:32), *जिसने प्लेयड्स और ऑरियन को बनाया, और मृत्यु की छाया को भोर की रोशनी में बदल देता है, और दिन को रात की तरह अँधेरा कर देता है, जो समुद्र के जल को बुलाता है और उन्हें पृथ्वी के ऊपर उंडेल देता है* (आमोस 5:8)। *धन्य हो यहोवा परमेश्वर, इस्राएल का परमेश्वर, जो अकेला ही आश्चर्यकर्म करता है* (भजन संहिता 71:18; तुलना करें 136:4)।

(घ) मसीही विश्वास और कलीसिया के प्रसार और संरक्षण में: *'मैं अपनी कलीसिया की स्थापना करूँगा, और नरक के द्वार उस पर हावी नहीं होंगे* (मत्ती 16:18); *परन्तु परमेश्वर ने जगत की मूर्खता को चुना, ताकि वह बुद्धिमानों को लज्जित करे, और परमेश्वर ने जगत की दुर्बलता को चुना, ताकि वह सबल लोगों को लज्जित करे; और परमेश्वर ने संसार की नीची और तुच्छ वस्तुओं को—और जो कुछ नहीं हैं—चुना, ताकि जो कुछ हैं उन्हें शून्य कर दे, ताकि कोई भी प्राणी परमेश्वर के सामने घमण्ड न कर सके* (1 कुरिन्थियों 1:27–29); *क्योंकि उसे तब तक राज्य करना है जब तक कि वह अपने सभी शत्रुओं को अपने पैरों तले नहीं ला देता* (1 कुरिन्थियों 15:25)।

(ई) विश्वासियों के उद्धार के लिए उसकी देखभाल में: *'मैं उन्हें अनंत जीवन देता हूँ, और वे कभी नाश नहीं होंगे; कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन नहीं लेगा* (यूहन्ना 10:28); *और 'उनकी सामर्थ्य का कार्य, जो उन्होंने मसीह में किया, उसके अनुसार जो विश्वास करते हैं, उनके प्रति उनकी सामर्थ्य कितनी अतुलनीय है* (इफिसियों 1:19); *अब उसी को महिमा*

किसी बाधा और बिना किसी प्रयास के, बल्कि अपनी एकमात्र इच्छा से बनाया" (उपरोक्त, प्रश्न 14 का उत्तर, भाग III, संपूर्ण)। "धन्य का खज़ाना, अनंत-प्रवाह, पवित्र पिता, चमत्कारी, *सर्वशक्तिमान और सर्वसमर्थ*"... (लिविंगजकिल बुक, पृ. 224, उल्टा पक्ष)।

हो, जो हम जो कुछ भी माँगते या सोचते हैं, उससे अतुलनीय अधिक करने में समर्थ है, हमारे भीतर कार्यरत शक्ति के अनुसार, कलीसिया में और मसीह यीशु में सभी पीढ़ियों तक, युगानुयुग। आमीन (इफिसियों 3:20-21)।

चर्च के पवित्र पिताओं और शिक्षकों ने ईश्वर की सर्वशक्तिमानता के सत्य को इतना प्रसिद्ध माना कि उन्होंने इसे साबित करना अनावश्यक समझा। धन्य ऑगस्टीन ने लिखा, 'मुझे दिखाओ,' मैं नहीं कहता कि कोई ईसाई या यहूदी, बल्कि मुझे कोई मूर्तिपूजक दिखाओ जो मूर्तियों की पूजा करता है और राक्षसों की सेवा करता है, जो यह स्वीकार न करे कि परमेश्वर सर्वशक्तिमान है। वह मसीह से इनकार कर सकता है; लेकिन वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर से इनकार नहीं कर सकता।'[296] जहाँ तक कुछ लोगों द्वारा उठाए गए आपत्तियों की बात है कि ईश्वर के लिए ये दोनों बातें संभव नहीं हैं, इस बात पर जोर दिया गया: ईश्वर निश्चित रूप से मर नहीं सकता, किसी को नुकसान नहीं पहुँचा सकता, स्वयं को नकार नहीं सकता या झूठ नहीं बोल सकता (2 तिमोथी 2:13; इब्रानियों 6:18), न ही वह पाप कर सकता है या किसी भी तरह से दुष्ट हो सकता है; लेकिन वह सर्वशक्तिमान है, और इसलिए वह ऐसा कुछ भी नहीं कर सकता। क्योंकि यदि वह मर सकता, किसी को हानि पहुँचा सकता, झूठ बोल सकता या पाप कर सकता और किसी भी तरह से दुष्ट हो सकता, तो यह ईश्वर की सर्वशक्तिमत्ता का नहीं, बल्कि कमजोरी और शक्तिहीनता का संकेत होता, चाहे वह शारीरिक हो या नैतिक। ईश्वर वह सब कुछ कर सकते हैं जो वे चाहते हैं, बशर्ते कि वह उनके स्वभाव के विरुद्ध न हो। लेकिन मरना या अस्तित्व समाप्त करना उनके स्वभाव के पूरी तरह से विरुद्ध है; और वे, अपने स्वभाव से ही, केवल अच्छा चाहते हैं और किसी भी प्रकार की बुराई की कामना नहीं करते।[297]

एक ऐसे अस्तित्व की अवधारणा में गहराई से उतरना जो हर दृष्टिकोण से सबसे पूर्ण और असीम है, साथ ही एक स्व-अस्तित्वमान अस्तित्व जो जीवन का एकमात्र स्रोत है,[298] और, दूसरी ओर, दुनिया की आश्चर्यजनक भव्यता और अपारता को देखकर, जो ईश्वर द्वारा बनाई गई और निरंतर बनाए रखी गई है, मन अनिवार्य रूप से ईश्वर की सर्वशक्तिमानता की अवधारणा पर पहुँचता है। यही कारण है कि यहां तक कि मूर्तिपूजक ऋषियों ने भी इसे स्वीकार किया।[299]

§20. ईश्वर के मन के गुण।

ईश्वर के मन को दो दृष्टिकोणों से देखा जा सकता है: सैद्धांतिक और व्यावहारिक, अर्थात् स्वयं में और ईश्वर की क्रियाओं के संदर्भ में। पहले दृष्टिकोण में, हमें इस मन का एक गुण ज्ञात होता है: सर्वज्ञता; दूसरे में, एक अन्य गुण: परम बुद्धिमत्ता।

1. सर्वज्ञता।

जब हम ईश्वर को सर्वज्ञ (τά πάντα εϊδώς, omniscius) मानते हैं, तो हमारा तात्पर्य केवल इतना नहीं कि वह सभी बातें जानता है, बल्कि यह भी कि वह सभी बातें सबसे परिपूर्ण तरीके से जानता है।[300] पहला दिव्य ज्ञान की वस्तुओं को संदर्भित करता है, दूसरा इसके स्वरूप और गुणों को।

---

[296] *ऑगस्टीन।* प्रवचन CXXXIX, पृ. 2।

[297] *डायोनिसियस द एरोपागाइट,* *दिव्य नामों पर*, अध्याय 8; *इसिडोर ऑफ़ पेलसियम,* पुस्तक III, पत्र 335; *क्रिसोस्टोम,* यूहन्ना पर धर्मोपदेश 38 और प्रेरितों के काम पर धर्मोपदेश 51; *एम्ब्रोज़,* *विश्वास पर*, पुस्तक IV, अध्याय 3; *ऑगस्टीन,* कैटेकुमेन को धर्मविश्वास पर उपदेश: 'ईश्वर सर्वशक्तिमान है, और चूंकि वह सर्वशक्तिमान है, वह मर नहीं सकता, वह धोखा नहीं खा सकता, वह झूठ नहीं बोल सकता। कितनी सारी चीजें हैं जो वह नहीं कर सकता! और वह सर्वशक्तिमान है, और वह सर्वशक्तिमान है ठीक इसलिए क्योंकि वह ये चीजें नहीं कर सकता।Nam यदि वह मर सकता, तो वह सर्वशक्तिमान नहीं होता; यदि वह झूठ बोल सकता, धोखा खा सकता, धोखा दे सकता या अन्याय कर सकता, तो वह सर्वशक्तिमान नहीं होता। वह वही करता है जो वह चाहता है; यही सर्वशक्तिमत्ता है। वह जो कुछ भी अच्छा चाहता है, वही करता है; जो कुछ भी बुरा है, वह नहीं चाहता"; *संत ग्रेगरी द थियोलोजियन।* पवित्र पिताओं के कार्य, खंड III, पृ. 88: "हम यह स्वीकार करते हैं कि ईश्वर का दुष्ट होना या अस्तित्व में न होना असंभव है (क्योंकि यह ईश्वर में शक्ति के बजाय शक्तिहीनता को इंगित करेगा), या अस्तित्वहीन का अस्तित्व में होना, या दो और दो का एक साथ चार और दस होना असंभव है।"

[298] वास्तव में, केवल वही सच्चे अर्थों में सर्वशक्तिमान कहा जाता है जो वास्तव में ऐसा है, और जिससे ही अस्तित्व में आने वाली हर चीज़ आती है, चाहे वह आध्यात्मिक हो या भौतिक। *ऑगस्टीन,* *कॉन्ट्रा फाउसटस*, पुस्तक XXVI, पृ. 5.

[299] इसका पैगन लेखकों से साक्ष्य *ह्यूटियस द्वारा* एकत्र किया गया था — *Conc.*, पुस्तक II, अध्याय 11.

[300] "दृढ़ता से और बिना किसी संदेह के विश्वास करो कि ईश्वर… सर्वज्ञ है — τά πάντα εἴδώς" (ऑर्थोडॉक्स कन्फेशन, भाग I, प्रश्न 17 का उत्तर)। "ईश्वर के आवश्यक गुण हैं: … जो सभी छिपे और प्रकट को जानने वाला है" (उपरोक्त, प्रश्न 13 का उत्तर)। "हे परमेश्वर, जो

धर्मग्रंथ दिव्य ज्ञान की वस्तुओं का विस्तार से वर्णन करता है। यह सामान्य रूप से गवाही देता है कि ईश्वर सभी चीजों को जानता है, और विशेष रूप से कि वह स्वयं को और स्वयं के बाहर की हर चीज़ को जानता है: जो कुछ भी संभव और वास्तविक है, जो कुछ भी अतीत, वर्तमान और भविष्य है।

(क) परमेश्वर सब कुछ जानता है: *परमेश्वर हमारे हृदय से बड़ा है और सब कुछ जानता है* (1 यूहन्ना 3:20); *प्रभु ज्ञान का परमेश्वर है* (1 शमूएल 2:3), और *उसकी समझ अथाह है* (भजन संहिता 146:5)। *तुम सर्व के प्रभु हो, और हे प्रभु, कोई भी तुम्हारे विरुद्ध नहीं ठहर सकता। तुम सब कुछ जानते हो* (एस्तेर 4:17)।

ख) परमेश्वर स्वयं को जानते हैं। *पिता के सिवाय कोई भी पुत्र को नहीं जानता; और पुत्र के सिवाय कोई भी पिता को नहीं जानता* (मत्ती 11:27)। *क्योंकि मनुष्यों में से कौन उस बात को जानता है जो किसी मनुष्य के भीतर है, सिवाय उसके मनुष्य आत्मा के जो उसमें रहता है? इसी प्रकार, परमेश्वर की बातें कोई नहीं जानता, सिवाय परमेश्वर के आत्मा के* (1 कुरिन्थियों 2:11)।

ग) ईश्वर वह सब कुछ जानता है जो संभव है। वही है *जो अस्तित्व में न होने वाली चीज़ को 'अस्तित्व में होने वाली' कहता है* (रोमियों 4:17), *जो छिपी हुई बातों को जानता है और सभी चीजों के होने से पहले ही उनके बारे में जानकार होता है* (दानिय्येल 13:42)।

घ) परमेश्वर *वह* सब कुछ जानता है जो वास्तव में मौजूद है: *क्योंकि वह पृथ्वी के छोर तक देखता है और पूरे आकाश के नीचे सब कुछ देखता है* (अय्यूब 28:24),—*और कोई भी प्राणी उससे छिपा नहीं है, बल्कि सभी चीजें उसकी दृष्टि के सामने उजागर और खुली हुई हैं* (इब्रानियों 4:13)।

विशेष रूप से, वह सब कुछ जानता है—क) भौतिक दुनिया में: *वह तारों की संख्या गिनता है; वह उन सभी को नाम से बुलाता है* (भजन संहिता 146:4; तुलना करें सिरिख 1:2), *वह पहाड़ों पर सभी पक्षियों को जानता है* (भजन संहिता 49:11); *उसकी आँखें पूरी पृथ्वी का निरीक्षण करती हैं* (2 इतिहास 16:9); *पाताल भी उनके सामने नंगा है, और अबाडोन पर कोई आवरण नहीं है* (अय्यूब 26:6); बीबी) नैतिक क्षेत्र में, जैसे: हमारे जीवन और कर्म, अच्छे और बुरे दोनों: *क्योंकि मनुष्य के मार्ग यहोवा की आँखों के सामने हैं, और वह उसके सब पथों को तौलता है* (नीतिवचन 5:21); *क्योंकि उसकी दृष्टि मनुष्य के मार्गों पर है, और वह उसके सभी पग देखता है। कोई अंधेरा, या मृत्यु की छाया नहीं है, जहाँ अधर्म करने वाले छिप सकें* (अय्यूब 34:21-22); *प्रभु की दृष्टि सर्वत्र है; वह दुष्टों और धर्मी दोनों को देखता है* (नीतिवचन 15:3); हमारे हृदयों की नैतिक स्थिति: *क्योंकि प्रभु सब हृदयों की परीक्षा करता है और मन की सारी गतिविधियों को जानता है* (1 इतिहास 28:9; तुलना करें 20:27); *मनुष्य का हृदय सब कुछ से अधिक छलपूर्ण और अत्यन्त दुष्ट है; कौन इसे समझ सकता है? मैं, यहोवा, हृदय की परीक्षा करता हूँ और मन की गहराई को परखता हूँ* (यिर्म. 17:9,10); *केवल आप ही मनुष्यों के पुत्रों के हृदयों को जानते हैं* (2 इति. 6:30; तुलना करें भजन संहिता 7:10; सिरिख 42:18); *हे यहोवा, आप, सभी हृदयों का जानने वाला* (प्रेरितों के काम 1:24; तुलना करें 15:8); हमारी आवश्यकताएँ, इच्छाएँ, आँसू, प्रार्थनाएँ: *हे प्रभु! मेरी सारी इच्छाएँ तेरे सामने हैं, और मेरा हाँफना तुझ से छिपा नहीं है* (भजन संहिता 37:10); *तूने मेरे भटकने को गिन लिया है* (भजन संहिता 55:9); *प्रभु की आँखें धर्मी लोगों पर हैं, और उनके कान उनकी पुकार पर लगे रहते हैं* (भजन संहिता 33:16; 1 पतरस 3:12); *अपने पिता से प्रार्थना करो जो गुप्त में हैं; और तुम्हारा पिता, जो गुप्त में किया हुआ देखता है, तुम्हें खुले आम प्रतिफल देगा* (मत्ती 6:6)।

(घ) परमेश्वर को सब कुछ पता है जो हो चुका है: क्योंकि *उसकी सारी योजनाएँ सनातन काल से परमेश्वर के ज्ञात हैं* (प्रेरितों के काम 15:18; तुलना करें सिरिख 23:29; 42:19–20), और वह दिन आएगा जब प्रभु *धार्मिकता से संसार का न्याय करेंगे* (प्रेरितों 17:31), जब *वे अंधकार में छिपी हुई बातों को प्रकाश में लाएंगे और हृदय के इरादों को प्रकट करेंगे* (1 कुरिन्थियों 4:5), और *वे प्रत्येक व्यक्ति को उनके कर्मों के अनुसार प्रतिफल देंगे* (रोमियों 2:6)।

ई) परमेश्वर को वह सब कुछ ज्ञात है जो वर्तमान में है: *पाताल और अबाडोन यहोवा के सामने [खुले] हैं, मनुष्यों के पुत्रों के हृदयों का तो कहना ही क्या* (नीतिवचन 15:11); *वह गहरी और छिपी हुई बातें प्रकट करता है, जानता है कि अंधकार में क्या है, और प्रकाश उसके साथ वास करता है* (दानिय्येल 2:22)। *क्योंकि वह पृथ्वी के छोर तक देखता है और आकाश के नीचे सब कुछ देखता है* (अय्यूब 28:24)।

अनुग्रहकारी और दयालु हैं, जो हृदयों और मनों की परीक्षा करते हैं, और अकेले मनुष्यों की गुप्त बातें जानते हैं, क्योंकि तुझ से कुछ भी छिपा नहीं है, बल्कि सब कुछ तेरी आँखों के सामने नंगा और खुला हुआ है"... (लिटजकिल बुक, पृ. 11, मॉस्को 1836)।

(g) परमेश्वर जानते हैं कि भविष्य में *क्या होने वाला है: 'मैं परमेश्वर हूँ और कोई और परमेश्वर नहीं है; मुझ-सा कोई नहीं। मैं आरम्भ से अन्त की, और प्राचीन काल से उस बात की जो अब तक नहीं हुई, घोषणा करता हूँ* (यशायाह 46:9-10; तुलना करें 41:23; दानियेल 13:42; बुद्धमान 8:8)।

और वास्तव में — (aa) भविष्य न केवल अपरिहार्य है, बल्कि संभावित और स्वतंत्र भी है: *'मैंने तुम्हें गर्भ में रचने से पहले ही तुम्हें जान लिया था* (यर. 1:5); *'तुम दूर से ही मेरे विचारों को जान लेते हो'। चाहे मैं चलूँ या विश्राम करूँ तू मेरे साथ है, और मेरी सारी चाल-ढाल तेरे परिचित हैं* (भजन संहिता 138:2,3); *तेरी आँखों ने मेरे अकार रूप को देखा* (16); *तुम्हारा पिता जानता है कि तुम्हें क्या चाहिए, इससे पहले कि तुम उससे माँगो* (मत्ती 6:8); *जिनके विषय में उसने पहले से जाना, उनके लिए उसने पूर्वनिर्धारित भी किया कि वे उसके पुत्र के स्वरूप के अनुरूप हों* (रोमियों 8:29); bb) सशर्त भविष्य, यानी वह जो कुछ निश्चित परिस्थितियों में हो सकता था, लेकिन नहीं हुआ क्योंकि शर्तें पूरी नहीं हुईं। *हाय तेरा, कोराज़ीन! हाय तेरा, बेतसैदा! क्योंकि यदि तेरे में जो चमत्कार हुए, वे तिरे और सीदोन में हुए होते, तो वे तो बहुत पहले बोरी और राख में बैठकर मन फिरा चुके होते* (मत्ती 11:21)।[301]

अपने स्वरूप और स्वभाव में, दिव्य ज्ञान हमारे ज्ञान से पूरी तरह से अलग है, जैसा कि हम अब तक उद्धृत अंशों से पहले ही निष्कर्ष निकाल सकते हैं:

(क) हम ज्ञान प्राप्त करते हैं, अर्थात्, हम वह जानने लगते हैं जो हम पहले नहीं जानते थे — ईश्वर के साथ ऐसा नहीं है; वह सदा से सब कुछ जानता है: *'उसके सब काम सनातन से परमेश्वर के ज्ञात हैं* (प्रेरितों के काम 15:18);

ख) हम चीजों को धीरे-धीरे जानते हैं, पहले एक, फिर दूसरी, फिर तीसरी, और इसी तरह — ईश्वर सब कुछ एक साथ जानते हैं। *ईश्वर हमारे हृदय से महान हैं और सब कुछ जानते हैं* (1 यूहन्ना 3:20);

ग) हम अपनी इंद्रियों की सहायता से चीजों को जानते हैं, जो हमें वस्तुओं के संस्कार पहुँचाती हैं; कल्पना से, जो हमें वस्तुओं की छवियाँ प्रस्तुत करती है; स्मृति, जो हमारे लिए अतीत की छवियों को संरक्षित करती है और उन्हें जीवंत करती है; और, अंत में, तर्क, जो इन सब में गहराई से उतरता है और अपने स्वयं के निर्णय और निष्कर्ष बनाता है — ईश्वर अतीत, वर्तमान और भविष्य, सब कुछ सीधे देखता और जानता है, और इसलिए उसे उपरोक्त में से किसी भी सहायक की आवश्यकता नहीं है: वह *पृथ्वी के छोर तक देखता है और आकाश के नीचे की हर चीज़ पर नज़र रखता है* (अय्यूब 28:24);

(ग) हम वस्तुओं के केवल बाहरी स्वरूप, या मात्र घटनाओं को ही देख पाते हैं, जबकि ईश्वर चीजों और जो कुछ भी अस्तित्व में है, उसके सार तक प्रवेश करता है: *'क्या कोई मनुष्य ऐसे गुप्त स्थान में छिप सकता है जहाँ मैं उसे नहीं देख सकता?' प्रभु कहते हैं। 'क्या मैं स्वर्ग और पृथ्वी को नहीं भरता?'* (यिर्म. 23:24); *'मैं, यहोवा, हृदय की परीक्षा करता हूँ और मन की परख करता हूँ* (यिर्म. 17:10);

(d) हमारा ज्ञान, अधिकांशत; अपूर्ण, अस्पष्ट, अनुमानित और प्रतीकात्मक होता है, इसलिए हमें सत्य की केवल सबसे निचली डिग्री तक ही पहुँच मिलती है — परमेश्वर सभी बातों को पूरी तरह से और सबसे उत्तम तरीके से जानता है: *सभी वस्तुएँ उनके सामने नंगी और प्रकट हैं* (इब्रानियों 4:13); और इसीलिए कहा गया है कि वह स्वयं सत्य हैं, '[302] ' और *'तेरा सत्य तुझे चारों ओर घेरे रहता है'* (भजन संहिता 88:9, 15), और *प्रभु के सभी मार्ग दया और सत्य हैं* (भजन संहिता 24:10; 118:151); *तेरी सारी आज्ञाएँ सत्य हैं* (भजन संहिता 118:86); *उसके हाथों के काम सत्य और न्याय हैं* (भजन संहिता 110:7);

ई) अंत में, हमारा ज्ञान बदलता है, परिपूर्ण होता है और अक्सर फीका पड़ जाता है: क्योंकि हम जो सीख चुके हैं उसमें से बहुत कुछ भूल जाते हैं, — लेकिन परमेश्वर का ज्ञान अपरिवर्तनीय और शाश्वत है: *प्रभु की सच्चाई [हमेशा] बनी रहती है* (भजन संहिता 116:2)। हालाँकि, यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि ज्ञान का ईश्वरीय तरीका, अपने सार में ही, हमारी समझ से परे है, यद्यपि, इसकी तुलना अपने ज्ञान से करके, हम उनके बीच का अंतर समझ सकते हैं:

---

[301] यह भी देखें 1 राजा 23:10–14; यिर्मयाह 38:17–24; यहेजकेल 3:6।

[302] *जो मुझे भेजने वाला है वह सत्य है* (यूहन्ना 8:26)। *मैं मार्ग, सत्य और जीवन हूँ* (यूहन्ना 14:6)। *परन्तु जब वह, अर्थात् सत्य का आत्मा, आएगा, तो वह तुम्हें सब सत्य के भीतर मार्गदर्शन करेगा* (यूहन्ना 16:13)। *यहोवा परमेश्वर सत्य है* (यिर्म. 10:10)।

'तेरा ज्ञान मेरे लिए अद्भुत है, — यह बहुत ऊँचा है, मैं इसे माप नहीं सकता — यहाँ तक कि पुराने नियम के ईश्वर-प्रकाशित पुरुषों में से एक ने भी कहा (भजन संहिता 138:6)।[303]

चर्च के पवित्र पिता और शिक्षक न केवल अपने लेखों में वह सब कुछ दोहराते हैं जो पवित्र शास्त्र ईश्वर के सर्वज्ञत्व के बारे में कहता है। अर्थात्, वे ईश्वर को स्वयं अपने और सभी प्राणियों का ज्ञान,[304] अतीत, वर्तमान और भविष्य का ज्ञान,[305] आवश्यक, संभावित और सशर्त का ज्ञान,[306] और एक ऐसा ज्ञान जो हमारे ज्ञान से सर्वोत्तम और अलग है,[307] — प्रदान करते हैं — लेकिन साथ ही वे ईश्वर के इस सर्वज्ञत्व के कारणों को समझाने का प्रयास भी करते हैं। वे पहला कारण इस तथ्य को देते हैं कि ईश्वर स्वयं सभी चीज़ों का स्रष्टा है और सब कुछ उसी पर निर्भर करता है;[308] दूसरा — इस तथ्य को कि वह अपने मन में सभी चीज़ों के विचारों को धारण करता है;[309] तीसरा — इस तथ्य को कि वह अपनी ही सत्ता के माध्यम से प्रत्यक्ष रूप से सर्वत्र उपस्थित है।[310] चर्च के प्राचीन शिक्षकों ने भी, जहाँ तक संभव था, ईश्वर की सर्वज्ञता से संबंधित एक विशिष्ट प्रश्न को हल करने का प्रयास किया, जिसे लंबे समय से सबसे कठिन माना जाता रहा है: ईश्वर की पूर्वज्ञान और मानव स्वतंत्र इच्छा के बीच संबंध का प्रश्न।

उन्होंने तर्क दिया कि यह पूर्वज्ञान किसी भी तरह से हमारी स्वतंत्रता को सीमित नहीं करता: क्योंकि —

a) ईश्वर केवल हमारे कर्मों को ही नहीं, बल्कि उनके कारण—हमारी स्वतंत्रता—को भी पूर्वदर्शी है। वह देखता है कि हम ये कर्म अपनी स्वतंत्र इच्छा से करेंगे, और यदि हम चाहें तो उनके स्थान पर अन्य कर्म करेंगे, जिन्हें वह भी पूर्वदर्शी है; अतः यदि हम कुछ कर्मों को अन्य पर प्राथमिकता देने का निर्णय लेते हैं, तो हमारी पसंद पूरी तरह हमारी स्वतंत्र इच्छा पर निर्भर करेगी; [311]

ख) इस मामले में ईश्वर की पूर्वज्ञान की तुलना मानवीय पूर्वज्ञान से की जा सकती है: जैसे कि हम, किसी साधन से पहले से यह जानकर कि हमारे पड़ोसी ने कुछ करने का संकल्प लिया है, उसे चुने हुए कार्य को करने के लिए बाध्य नहीं कर सकते, वैसे ही ईश्वर भी हमें अपने पूर्वज्ञान के माध्यम से कुछ निश्चित कार्यों के लिए बाध्य नहीं करते हैं: वह उन्हें हमारे स्वैच्छिक कार्यों के रूप में देखता है, न कि आवश्यक कार्यों के रूप में; [312]

---

303 'मैं यह कहने का दम नहीं भरता कि परमेश्वर कैसे जानता है; मैं केवल इतना कहता हूँ कि वह वैसे नहीं जानता जैसे मनुष्य जानता है, और न ही वैसे जैसे स्वर्गदूत जानते हैं; परन्तु मैं यह कहने का दम नहीं भरता कि वह ठीक-ठीक कैसे जानता है: क्योंकि मैं इसे समझने में असमर्थ हूँ।' *ऑगस्टीन,* भजन संहिता XLIX में।

304 *पॉलीक.* एड फिलिप. n. IV; *थियोफिल.* एड ऑटोलिक. 1, 4; *जस्टिन.* एपोलॉग. 1, n. 16; *एथेनागोरस,* लॉज, XXXI; *मिनुटियिनस फेलिसियिस,* ऑक्टेव्स, XXXII; *आइरेनियस,* अगेंस्ट हेरेसीज़, IV, 19, n. 2; *क्लेमेंट ऑफ़ अलेक्जेंड्रिया,* स्ट्रोमाटा, VI, 17; *ओरिजिन,* ऑन द प्रिंसिपिल्स, III, 1, n. 13; IV, 37; *बेसिलि,* एपिस्टल VIII, n. 11.

305 *इरेनियस,* *कॉन्ट्रा हेरेसेस* 11, 26, n. 3: 'जो कुछ भी हो चुका है, है, या होगा, वह ईश्वर के ज्ञान से बाहर नहीं है'; *क्लेमेंट ऑफ एलेक्जेंड्रिया,* *स्ट्रोमाटा* VI, 17: 'वह सभी बातें जानता है, न केवल वे जो हैं, बल्कि वे भी जो होंगी, और यह भी कि प्रत्येक कैसी होगी'...; *जस्टिन,* एपोलॉजी 1, अध्याय 44; *टर्टुलियन,* अगेंस्ट मार्शन 11.5; *ओरिजिन,* ऑन द प्रिंसिपिल्स III, 1, n. 17; *यूसेबियस,* डेमोंस्ट्रेशन *ऑफ द गॉस्पेल* IV, 1।

306 *इग्नाशियस,* *एड फिलिपिस*, अध्याय IV; *ग्रेगरी ऑफ निसा,* *समय से पहले ले लिए गए शिशुओं पर*, खंड III, सं. मोरेल; *ऑगस्टीन,* *स्थिरता के वर पर*, अध्याय 9.

307 *क्लेमेंट ऑफ़ अलेक्जेंड्रिया,* स्ट्रोमाटा, VI, 17; *ऑगस्टीन,* एड सिम्प्लिसिम, पुस्तक I, प्रश्न 2; द ट्रिनिटी, XV, 14.

308 *डायोनिसियस द एरोपागाइट,* *दिव्य नामों पर*, VII, n. 2; *पैंटेनस,* *खंड*, राउट. *रेलिक्विया साक्रा*, खंड 1, पृ. 340.

309 *ऑगस्टीन,* *De quaest. LXXXIII*, प्रश्न 46.

310 *इरेनियस,* विधी मतों के विरुद्ध, पुस्तक IV, अध्याय 19, संख्या 2; *मिनुटियिनस फेलिसियिस,* ऑक्टेव्स, XXXII।

311 *ऑगस्टीन,* *डे सिविटाटे देई*, पुस्तक V, अध्याय 9: "इस प्रकार, वह जो सभी चीजों के कारणों को पूर्व में जानता था, वह निश्चित रूप से उन कारणों के भीतर हमारी इच्छाओं के प्रति अनभिज्ञ नहीं हो सकता था, जिन्हें वह हमारे कार्यों के कारणों के रूप में पूर्व में जानता था..." (तुलना करें *अध्याय* 10), और *स्वतंत्र इच्छा पर*, पुस्तक III, अध्याय 3: "चूंकि वह हमारी इच्छा को पूर्वदर्शी है, इसलिए उसका अस्तित्व होना ही चाहिए। अतः इच्छा का अस्तित्व होना ही चाहिए, क्योंकि वह इच्छा का पूर्वदर्शी है। और यदि वह ईश्वर की शक्ति के भीतर न होती तो इच्छा का अस्तित्व भी नहीं हो सकता था; अतः वह उस शक्ति का भी पूर्वदर्शी है..."

312 *ओरिजिन,* उत्पत्ति पर टीका, यूसेबियस में, *सुसमाचार के लिए तैयारियाँ*, पुस्तक VI, अध्याय 11; *ऑगस्टीन,* *स्वतंत्र इच्छा पर*, पुस्तक III, अध्याय 4।

(c) ईश्वर के लिए न तो अतीत है न ही भविष्य, केवल वर्तमान है: इसलिए वह पूर्वानुमान नहीं लगाता, बल्कि वास्तव में हमारे कर्मों को ठीक वैसे ही देखता है जैसे हम उन्हें करते हैं; परिणामस्वरूप, जब हम किसी के कर्मों के साक्षी बनते हैं, तो हमारी स्वतंत्रता उतनी ही प्रभावित होती है जितनी हमारे पड़ोसी की।[313] इसका अर्थ है—

d) यह हमारे कर्म नहीं हैं जो ईश्वर की पूर्वज्ञान पर निर्भर करते हैं, बल्कि इसके विपरीत: ईश्वर उन्हें इसलिए पूर्वज्ञान करता है या देखता है क्योंकि हमने स्वयं स्वेच्छा से उन्हें करने का निर्णय लिया है—और उन्हें कर रहे हैं।[314]

बुद्धि के लिए ईश्वर की सर्वज्ञता की सच्चाई निस्संदेह होनी चाहिए, कम से कम इसलिए कि वह ईश्वर को सबसे परिपूर्ण और अनंत सत्ता के रूप में कल्पना करती है, और साथ ही उन कारणों के आधार पर (जिनका उल्लेख हमने ऊपर किया है) जिनके द्वारा चर्च के पवित्र पिताओं ने ईश्वर की सर्वज्ञता की व्याख्या की। यहां तक कि स्वयं मूर्तिपूजकों ने भी हमेशा इस सत्य को स्वीकार किया है।[315]

२. परम ज्ञान।

प्रज्ञा की सामान्य अवधारणा के आधार पर, ईश्वर की परम प्रज्ञा (σοφία, sapientia) को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है: यह सर्वोत्तम उद्देश्यों और सर्वोत्तम साधनों के सबसे पूर्ण ज्ञान में, और साथ ही बाद वाले को पहले वाले पर लागू करने की सबसे पूर्ण क्षमता में निहित है; तदनुसार, यह ईश्वर की सर्वज्ञता ही है, जिसे उनके दैवीय कार्यों के संबंध में देखा जाता है, या दूसरे शब्दों में, एक व्यावहारिक दृष्टिकोण से देखा गया ईश्वर का स्वयं का मन है।[316]

पवित्र शास्त्र इस गुण को परमेश्वर को अत्यंत स्पष्टता के साथ तब श्रेय देता है जब—

क) यह सामान्य रूप से उसे सर्व-ज्ञानी के रूप में प्रस्तुत करता है, जिसमें *ज्ञान और सामर्थ्य है; उसकी योजना और समझ* (अय्यूब 12:13), *एकमात्र बुद्धिमान परमेश्वर* (रोमियों 14:26; 1 तीमुथियुस 1:17; यहूदा 25) और सभी के लिए ज्ञान का स्रोत: *'यदि तुम में किसी को ज्ञान की कमी है, तो वह परमेश्वर से मांगे, जो सभी को उदारता से और बिना दोष दिए देता है, और उसे दिया जाएगा'* (याकूब 1:5); *क्योंकि यहोवा ज्ञान देता है; उसके मुख से ज्ञान और समझ निकलती है* (नीतिवचन 2:6; दानिय्येल 2:21)। विशेष रूप से—

ख) पुराने नियम के लेखक मुख्य रूप से संसार को परमेश्वर की बुद्धि के दर्पण के रूप में इंगित करते हैं। *हे यहोवा, तेरे काम कितने विविध हैं! 'आपने इन सभी को बुद्धि से बनाया है,'* दाऊद सृष्टि की पूर्णता पर आश्चर्य करते हुए पुकार उठता है (भजन संहिता 103:24)। *'यहोवा ने बुद्धि से पृथ्वी की नींव डाली; समझ से उसने आकाशों को स्थिर किया,'* दाऊद का बुद्धिमान पुत्र अपनी नीतिवचनों में दोहराता है (नीतिवचन 3:19)। *'उसने अपनी सामर्थ्य से पृथ्वी को बनाया, अपनी बुद्धि से संसार को स्थिर किया, और अपनी समझ से आकाश को फैलाया,' यह* हम यिर्मयाह की भविष्यवाणी की पुस्तक में पढ़ते हैं (यिर्म. 10:12)।

ग) नए नियम के लेख, सबसे बढ़कर, हमारे उद्धार के निर्माण को परमेश्वर की अकथनीय बुद्धि के एक कार्य के रूप में चित्रित करते हैं। *'हम मसीह का, जो सलीब पर चढ़ाया गया, प्रचार करते हैं,'* पवित्र प्रेरित पौलुस कुरिन्थियों को लिखी अपनी पत्री में कहते हैं, *'जो यहूदियों के लिए ठोकर का कारण और यूनानियों के लिए मूर्खता है, परन्तु बुलाए हुओं के लिए, चाहे वे यहूदी हों या यूनानी, मसीह परमेश्वर की सामर्थ्य और परमेश्वर की बुद्धि है* (1 कुरिन्थियों 1:23, 24); *हम परमेश्वर की बुद्धिमत्ता का प्रचार करते हैं, एक रहस्य, एक गुप्त बुद्धिमत्ता, जिसे परमेश्वर ने युगों के आरंभ से पहले हमारी महिमा के लिए ठहराया था* (2:7)। *'ताकि अब, मंडली के द्वारा, स्वर्ग में प्रधानताओं और शक्तियों के*

---

313 *ओरिजिन,* *डी प्रिंसिपियिस*, पुस्तक III, 1; *एम्ब्रोस,* *डी फेड*, पुस्तक 1, अध्याय 7; *क्रिसोस्टोम,* *होमलीज ऑन द ऑब्स्कयोर पैसजेस ऑफ द प्रॉफेट्स*, होमली 1, n. 4; *थियोडोरेट,* *कमेंटरी ऑन होमली VIII*, 30; *ऑगस्टीन,* *क्वेस्टशन्स टू सिम्प्लिसियिस*, पुस्तक II.

314 *ओरिजिन,* *अगेंस्ट सेल्सस*, 11, 20; *ऑन द प्रिंसिपिल्स*, पुस्तक III, 3, n. 4; *ऑगस्टीन,* *द सिटी ऑफ गॉड*, पुस्तक V, 9, n. 4.

315 *थेल्स, अलेक्जेंड्रिया के क्लेमेंट* द्वारा उद्धृत, *स्ट्रोमाटा*, V, 14; *प्लेटो,* *पार्मेनडिस*; *पिंडर,* ओलंपिक ओड्स 1, 64; *एस्चिलिस,* कोएफ़ोरा 201, 202; *सोफ़ोक्लीज़,* इलेक्ट्रा 659; *ज़ेनोफ़ोन,* सिम्पोजियम IV, n. 48; *प्लूटार्क,* आइसीस एंड ओसिरिस LX; Ser. num. vind. XXI.

316 "एक ईश्वर, जीवित वचन, बुद्धि और स्व-अस्तित्व वाली शक्ति के पिता... एक प्रभु..., ईश्वर से ईश्वर.... बुद्धि, जिसमें सभी चीजों की रचना समाहित है"... (संत ग्रेगरी द वंडरवर्कर का धर्मविश्वास)। "हे महान और सर्वोच्च ईश्वर, जिसकी सभी सृष्टि द्वारा पूजा की जाती है, ज्ञान का स्रोत" (लिटिरजीकल बुक, पृ. 48, मॉस्को 1836)। "हे महान और सर्वोच्च ईश्वर... जिसने ज्ञान के द्वारा सभी सृष्टि की रचना की"... (उपरोक्त, पृ. 193, उल्टा पक्ष)। "दया के प्रभु और परमेश्वर… जो सभी चीजों को बुद्धिमानी से निर्धारित करते हैं" (उपरोक्त, फोलियो 233, पृष्ठ का पिछला भाग)।

साम्हने *परमेश्वर की उस बहुविध बुद्धि का प्रकाश हो, जो उस ने हमारे प्रभु यीशु मसीह में पूरी की है, उस अनन्त उद्देश्य के अनुसार* (इफसियों 3:10, 11), वह कहीं और लिखते हैं। और अंत में, अपनी तीसरी पत्री में, परमेश्वर के उसी महान निर्माण कार्य की अद्भुत योजना पर मनन करने के बाद, वह उद्घोषणा करता है: *'हे परमेश्वर की धन-संपत्ति और बुद्धि और ज्ञान की गहराई! उसके निर्णय कितने अगम्य हैं, और उसके मार्ग कितने अथाह हैं!'* (रोमियों 11:33)।

चर्च के पवित्र पिताओं और शिक्षकों ने, ईश्वर के वचन का अनुसरण करते हुए, ईश्वर की परम बुद्धि के प्रकटीकरणों की ओर भी इशारा किया: (क) संपूर्ण विश्व की संरचना में: सूर्य, चंद्रमा और तारों, वायु, जल और पृथ्वी, पत्थरों, पौधों और जानवरों—बड़े और छोटे, उत्कृष्ट और तुच्छ, उपयोगी और हानिकारक—की संरचना में, और उन्होंने इन सभी का विस्तार से वर्णन किया, न केवल अपने लेखों के कुछ अंशों में, बल्कि इस विषय को समर्पित संपूर्ण ग्रंथों में भी:[317] वे कहते थे, "घास का एक तना या किसी जड़ी-बूटी का एक तना ही उस कला पर चिंतन करने के लिए आपके पूरे मन को व्यस्त करने के लिए पर्याप्त है, जिससे इसे बनाया गया है;"[318] b) विशेष रूप से, मनुष्य की संरचना में, और विशेष रूप से: उसकी आँखों, पलकों, भौंहों, मस्तिष्क, हृदय, हाथों, पैरों और अन्य अंगों और अंशों की संरचना में: "यदि हम अपना ध्यान नाखूनों पर भी दें," संत जॉन क्राइसोस्टोम कहते हैं, "तो हमें यहाँ भी ईश्वर की बुद्धिमत्ता के स्पष्ट निशान दिखाई देंगे, नाखूनों के आकार में ही नहीं बल्कि उनकी बनावट और स्थिति में भी;"[319] ग) अंत में, हमारे उद्धार की संरचना में, मानव जाति के मोक्ष के लिए स्वयं परमेश्वर के अवतार की उपयुक्तता पर चर्चा करते हुए,[320] और विशेष रूप से परमेश्वर के पुत्र के अवतार पर, न कि परमेश्वर पिता या पवित्र आत्मा के,[321] उद्धारकर्ता के दुनिया में देर से आने के कारणों पर,[322] उनके स्वागत के लिए मानव जाति की क्रमिक तैयारी पर,[323] उनकी मृत्यु की उचितता पर, और विशेष रूप से क्रूस पर उनकी मृत्यु पर[324] और आदि। उदाहरण के लिए, सेंट ग्रेगरी ऑफ निस्सा कहते हैं, 'बचाने की इच्छा रखना, अच्छाई का संकेत है; एक बंदी को छुड़ाना न्याय का संकेत है; और शत्रु के लिए दुर्गम को सुलभ बनाना परम बुद्धिमत्ता का कार्य है।'[325]

ईश्वर की सर्वज्ञता की अवधारणा और यह दृष्टिकोण कि संसार ईश्वर के हाथों का कार्य है, सर्वशक्तिमान की परम बुद्धिमत्ता के प्रति स्वाभाविक मानवीय मन को आश्वस्त करने के लिए पूरी तरह पर्याप्त हैं, जिसे मूर्तिपूजकों ने भी स्वीकार किया था।[326]

§21. ईश्वर की इच्छा के गुण।

ईश्वर की इच्छा को दो दृष्टिकोणों से देखा जा सकता है: स्वयं में और प्राणियों के संबंध में। पहले मामले में, यह हमें दिखाई देती है: (क) अपनी प्रकृति से ही *परम स्वतंत्र,* और (ख) अपनी स्वतंत्र गतिविधि के माध्यम से *सर्व-पवित्र।*

---

317 हम बेसिल द ग्रेट, जॉन क्रिसोस्टोम, ग्रेगरी ऑफ निस्सा और अन्य लोगों के 'छह दिनों पर प्रवचन' का संदर्भ देते हैं; साथ ही कुछ व्यक्तिगत अंश या उपदेश, जैसे: सेंट सिरिल ऑफ जेरूसलम के — होमीली प्रवचन IX, पृष्ठ 153–163, रूसी अनुवाद में, और सेंट जॉन क्राइसोस्टोम का अंकोई के लोगों के लिए प्रवचन XI।

318 *बेसिल द ग्रेट,* द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स, खंड V, पृ. 80.

319 *जॉन क्रिसोस्टोम:* मानव शरीर की संरचना में ईश्वर की बुद्धिमत्ता पर, क्रिश्चियन रीडिंग्स 1838, II, पृ. 159–171; *बेसिल द ग्रेट:* मनुष्य की संरचना पर प्रवचन, क्रिश्चियन रीडिंग्स 1841, IV, पृ. 3–34।

320 *क्रिसोस्टोम,* यूहन्ना पर व्याख्यान VI; *अथेनासियस,* *परमेश्वर के वचन के अवतार पर*, खंड II, § 1698, पृ. 33; *स्वीकारोक्ति*, पृ. 48; *निकिसिया के ग्रेगरी,* *धर्मोपदेश*, अध्याय 27; *ऑगस्टीन,* *पाप और अनुग्रह पर*, अध्याय II, और *परमेश्वर का नगर*, पुस्तक XIV, अध्याय 27.

321 *इरनेयस,* *एगेंस्ट हेरेसीज़*, पुस्तक V, अध्याय 1; *अथेनासियस,* *ओरेशन III अगेंस्ट द एरियन्स*; *क्रिसोस्टोम,* *होमीली XVIII ऑन जॉन*; *जेनाडियस,* *ऑन द डॉगमाज़ ऑफ़ द चर्च*, अध्याय 2; *जॉन ऑफ़ डेमास्कस,* *एक्ज़ैक्ट एक्सपोज़िशन ऑफ़ द ऑर्थोडॉक्स फेथ*, पुस्तक IV, अध्याय 4.

322 *ग्रेगरी ऑफ निस्सा,* *Orat. de nat. Christ.*, खंड II, पृ. 773; *थियोडोरेट,* *Serm. VI contra Graec.*; *ऑगस्टीन,* *Epist. 49*; *De Genes. contra Manich.*, पुस्तक 1, अध्याय 14.

323 *जॉन ऑफ़ डेमास्कस।* ऑर्थोडॉक्स विश्वास की सटीक व्याख्या, पुस्तक III, अध्याय 1; *थियोफिलैक्ट।* एफ़िसियों को लिखी पत्र की अध्याय III, श्लोक 10 पर।

324 *अलेक्जेंड्रिया के संत अथेनासियस।* — यीशु मसीह के सूली पर चढ़ाए जाने पर, क्रि. रीडिंग्स 1838, II, पृ. 132–158।

325 *नाइसा के ग्रेगरी।* कैटेकेटिकल ओरेशन्स, अध्याय XXXIII, XXXIV, खंड III, पृ. 80, सं. मोरेल।

326 *डायोजेनेस लाएर्टियस,* प्रस्तावना, अध्याय VII; *अरस्तू* भौतिकी, पुस्तक II, अध्याय 8.

दूसरे मामले में, यह है: क) सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, *सर्व-सद्गुणमय*: क्योंकि सद्गुण सभी प्राणियों, तर्कशील और अतर्कशील दोनों के संबंध में ईश्वर के सभी कार्यों का पहला और प्रमुख कारण है; ख) दूसरे, विशेष रूप से, केवल तर्कशील प्राणियों के संबंध में, *सत्य* और *विश्वसनीय* के रूप में: क्योंकि यह स्वयं को उनके लिए एक नैतिक कानून के रूप में और इस कानून को पूरा करने के लिए वादों या नैतिक प्रोत्साहनों के रूप में प्रकट करता है; ग) अंत में, *न्यायपूर्ण के रूप में*: क्योंकि यह इन प्राणियों के नैतिक कार्यों की देखरेख करता है और उनके गुणों के अनुसार उन्हें पुरस्कृत करता है। इस प्रकार, ईश्वर की इच्छा के प्रमुख गुण, या अधिक सटीक रूप से, ईश्वर के प्रमुख गुण जहाँ तक वे इच्छा से संबंधित हैं, हैं: 1) परम स्वतंत्रता, 2) पूर्ण पवित्रता, 3) अनंत भलाई, 4) पूर्ण सत्य और निष्ठा, और 5) अनंत न्याय।

1. परम स्वतंत्रता।

ईश्वर को परम स्वतंत्र (ἐλεύθερος, ἀυτεξούσιος, liberrimus), क्योंकि वह अपनी क्रियाओं को किसी भी आवश्यकता या बाध्यता, चाहे वह बाहरी हो या आंतरिक, से पूरी तरह स्वतंत्र रूप से निर्धारित करते हैं, और केवल अपनी परम बुद्धि की अवधारणाओं (विचारों) के आधार पर, और *यह सब उनकी इच्छा की प्रसन्नता के अनुसार होता है* (इफिसियों 1:11): वह जो इच्छा करते हैं उसे चुनते हैं और जो चुना है उसे अपनी इच्छानुसार पूरा करते हैं।[327]

पवित्र शास्त्र परमेश्वर को सर्वोच्च स्वतंत्रता प्रदान करता है:

(क) सामान्य रूप से अपने सभी कार्यों में, यह पुष्टि करते हुए कि वह *अपनी इच्छा की प्रसन्नता के अनुसार सब कुछ* करता है (इफिसियों 1:11), और विशेष रूप से—

ख) संसार की सृष्टि में: *'तू ने सब वस्तुएँ सृजीं, और तेरी इच्छा से उनका अस्तित्व है और वे सृजी गईं* (प्रकाशितवाक्य 4:11)। *हमारा परमेश्वर स्वर्ग में [और पृथ्वी पर] है; वह जो कुछ भी चाहता है, वही करता है* (भजन संहिता 113:11)। *यहोवा जो कुछ भी चाहता है, वही करता है, स्वर्ग में और पृथ्वी पर, समुद्रों में और सारी गहराइयों में* (भजन संहिता 134:6)।

(c) उनके बारे में उनकी घोषणा में: *'मैंने अपनी महान शक्ति और फैली भुजा से पृथ्वी, मानव और पृथ्वी की सतह पर रहने वाले पशुओं को बनाया, और इसे जिसे मैं चाहता था, उसे दे दिया* (यर. 27:5)। *'जिस पर मैं दया करूंगा, उस पर मैं दया करूंगा; जिस पर मैं अनुग्रह करूंगा, उस पर मैं अनुग्रह करूंगा* (रोम. 9:15; तुलना करें निर्ग. 33:19)। *और जो पृथ्वी पर बसते हैं, वे सब कुछ भी नहीं हैं; अपनी इच्छा के अनुसार वह स्वर्गदूतों के बीच और पृथ्वी पर रहने वालों के बीच कार्य करता है; और कोई भी उसके हाथ का विरोध नहीं कर सकता* (दानिय्येल 4:32; तुलना करें अय्यूब 23:13)। *परमप्रभु मनुष्यों के राज्यों पर राज्य करता है और उन्हें जिसकी इच्छा हो, उसी को दे देता है* (दानिय्येल 4:14, 22, 29)। *राजा का मन यहोवा के हाथ में है, पानी की धाराओं के समान; वह उसे जहाँ चाहे मोड़ता है* (नीतिवचन 21:1)। *क्या दो छोटे पक्षी एक पैसा में नहीं बिकते? फिर भी, तुम्हारे पिता की इच्छा के बिना उनमें से एक भी नहीं गिरेगा; और तुम्हारे सिर के सब बाल भी गिने हुए हैं* (मत्ती 10:29, 30)।

(ग) मानव जाति की मुक्ति में: क्योंकि स्वर्गीय पिता *ने हमें यीशु मसीह के द्वारा अपने पुत्रों के रूप में गोद लेने के लिए पूर्वनिर्धारित किया है, अपनी इच्छा की सुयोग्यता के अनुसार* (इफिसियों 1:5), *हमें अपनी इच्छा का रहस्य उसकी सुयोग्यता के अनुसार प्रकट किया है, जिसे उसने पहले से ही मसीह में ठान रखा था* (9); और उद्धारकर्ता मसीह ने *हमें इस वर्तमान बुरे युग से छुड़ाने के लिए, हमारे पापों के लिए स्वयं को दे दिया, हमारे पिता परमेश्वर की इच्छा के अनुसार; उसकी महिमा युगानुयुग होती रहे* (गलातियों 1:4, 5)।

(d) हमारे पुनर्जन्म और पवित्रता में: *अपनी इच्छा के अनुसार, उसने हमें सत्य के वचन से उत्पन्न किया, ताकि हम उसकी सृष्टि के प्रथम फलों के समान हों* (याकूब 1:18); और *प्रत्येक को सामान्य भलाई के लिए आत्मा की एक प्रकटता दी गई है। 8 एक को आत्मा के द्वारा ज्ञान का वचन दिया गया है, दूसरे को उसी आत्मा के द्वारा ज्ञान का वचन... तथापि ये सब बातें एक ही आत्मा के द्वारा होती हैं, जो अपनी इच्छा के अनुसार इन सब को एक-एक करके बाँट देता है* (1 कुरिन्थियों 12:7, 8, 11)।

---

[327] "ईश्वर की सर्वशक्तिमानता और सर्वशक्तिशाली शक्ति उनकी अपनी इच्छा और क्रिया द्वारा निर्धारित होती है; और इसलिए वह वह सब कुछ नहीं करता जो वह करने में सक्षम है, बल्कि केवल वही करता है और करने में सक्षम है जो वह चाहता है" (सही स्वीकारोक्ति, भाग 1, प्रश्न 14 का उत्तर)। "जहाँ ईश्वर इच्छा करता है, वहाँ प्रकृति के क्रम को पार कर दिया जाता है, क्योंकि वह वही सृजित करता है जो वह इच्छा करता है" (ट्रायोडियन ऑफ़ लेन्ट, पृ. 136, मॉस्को 1835)।

चर्च के पवित्र पिता और शिक्षक, जो अपने लेखों में सामान्यतःपरमेश्वर की स्वतंत्रता का बहुत बार उल्लेख करते हैं, ने तीन अवसरों पर इस पर अपनी राय विशेष स्पष्टता के साथ व्यक्त की: क) जब उन्होंने प्राचीन दार्शनिकों के खिलाफ हथियार उठाए, जिन्होंने दावा किया कि संसार शाश्वत है और ईश्वर की इच्छा से नहीं, बल्कि अनिवार्य रूप से, किसी शरीर से छाया या प्रकाश से किरण की तरह अस्तित्व में आया है;[328] ख) जब उन्होंने मूर्तिवादियों और कुछ विधर्मियों की इस भ्रांति का खंडन किया, जो यह दावा करते थे कि संसार में सब कुछ, स्वयं ईश्वर सहित, भाग्य के अधीन है,[329] और — ग) जब, हमारे भीतर ईश्वर की प्रतिमा वास्तव में क्या है, इसे सटीक रूप से परिभाषित करने की इच्छा से, उन्होंने इसे मनुष्य की स्वतंत्र इच्छा में स्थापित किया।[330] इन सभी उदाहरणों में उन्होंने कहा कि ईश्वर किसी भी आवश्यकता के अधीन नहीं है और वह अपनी क्रियाओं को पूर्णतःस्वतंत्र रूप से निर्धारित करता है;[331] कि उसने आरंभ से ही वह सब कुछ सृजित किया जो वह चाहता था और जैसा वह चाहता था, और वह संसार में सभी घटनाओं को केवल अपनी इच्छा के अनुसार ही घटित करता रहता है,[332] और वह अपनी स्वभावगत प्रकृति से ही सर्वोच्च है।[333]

वास्तव में, यदि ईश्वर सबसे पूर्ण आत्मा हैं, एक स्वतंत्र और सर्वशक्तिमान आत्मा है, तो हमारी बुद्धि को यह स्वीकार करना चाहिए कि ईश्वर स्वभाव से ही परम रूप से स्वतंत्र है — क्योंकि स्वतंत्रता एक आत्म-जागरूक आत्मा का सबसे आवश्यक गुण है, और वह जो सर्वशक्तिमान है और सभी चीजों को अपनी शक्ति में रखता है, स्वयं किसी पर निर्भर नहीं है, वह किसी भी आवश्यकता या बाध्यता के अधीन नहीं हो सकता।

२. परम पवित्रता।

ईश्वर को पवित्र (ἅγιος, sanctus) कहकर, हम यह स्वीकार करते हैं कि वह सभी पापों से पूरी तरह मुक्त है, पाप कर ही नहीं सकता, और अपने सभी कार्यों में नैतिक कानून के प्रति पूरी तरह से वफादार है; इसलिए, वह बुराई से घृणा करता है और अपनी सभी रचनाओं में केवल अच्छाई से प्रेम करता है।[334]

---

[328] *बेसिल द ग्रेट,* द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स, खंड V, पृष्ठ 6–7 में, सिक्स-डे क्रिएशन पर, प्रवचन 1; *अथानासियस,* *इन हेक्साएम*, पुस्तक I, पृष्ठ 5; *थियोफिलस,* *एड ऑटोलिकस*, 11, 13; *एपिफानियस,* *हेरेसिया* XXIII, n. 5; *ज़कारियास ऑफ़ माइटिलिन,* *डिस्प्यूटेटियो डी मुंडो*, *बिब्लियोथेका पैट्रम ग्रेको-लैटिना* का खंड XII,Paris , 1644।

[329] *इरनेयस,* *एडवर्सस हेरेसेस*, पुस्तक II, अध्याय 5, संख्या 4; *टर्तुल्लियन,* *एडवर्सस हेटरमॉर्गन*, अध्याय 16; *हिप्पोलीटस,* *एडवर्सस नोएटियन्स*, अध्याय VIII, X; *एपिफानियस,* *हेरेसेस*, LXX, संख्या 7; *ऑगस्टीन,* *डे सिविटिटे देई*, पुस्तक XI, अध्याय 24.

[330] *इरनेयस,* *विरोध में संप्रदाय*, पुस्तक IV, अध्याय 8; *एम्ब्रोस,* *हेक्सामेरॉन पर*, पुस्तक VI, अध्याय 8; *जेरोम,* पत्र 146; *नाइसा के ग्रेगरी,* *मानव की सृष्टि पर*, अध्याय 4, भाषण XVI; *जॉन ऑफ़ डेमास्कस।* सही आस्था की सटीक व्याख्या, पुस्तक II, अध्याय 12; पुस्तक III, अध्याय 14।

[331] *यह कहना* उचित नहीं है कि ईश्वर, जो सर्व-व्यापी है, *स्वतंत्र है और अपनी शक्ति का नियंत्रक है, आवश्यकता के अधीन है,* ताकि उसकी इच्छा के विपरीत कुछ भी अनुग्रह से घटित हो सके... (*इरनेयस,* विरोधी मतों के विरुद्ध, II, 5, n. 4). क्योंकि दिव्य स्वभाव वासनाओं के अधीन नहीं है, इसलिए वह जो चाहता है वह करता है, या जो वह नहीं चाहता वह नहीं करता; क्योंकि वह जो चाहे करने में सक्षम है... (*एपिफेनियस,* विरोधी मतों के विरुद्ध, LXX, n. 7).

[332] 'जब वह इच्छा करता है, तो वह कार्य करता है.... इसलिए उसने वैसा ही कार्य किया जैसा उसने चाहा....' (*Hippol.* adv. Noët. X). क्योंकि उसने ऐसा कार्य किया मानो स्वयं से, चूँकि उसने वैसा ही कार्य किया जैसा उसने चाहा.... और जब तक वह इच्छा करता है, सभी चीजें उसकी शक्ति से बनी रहती हैं.... (*एनड्रियास.* इन हेक्साएम, पुस्तक I, अध्याय 5)।

[333] "यदि मनुष्य को धन्य और पूर्व-अस्तित्व वाले ईश्वरत्व की प्रतिमा में बनाया गया है, और ईश्वरत्व स्वभाव से स्वतंत्र है और इच्छाशक्ति रखता है (αὐτεξούσιος δέ φύσει καί θελητική ή θεῖα φύσις); तो मनुष्य, ईश्वरत्व की प्रतिमा के रूप में, स्वभाव से स्वतंत्र है और इच्छाशक्ति रखता है" (जॉन ऑफ़ डेमास्कस। सटीक व्याख्यान ऑफ़ द ऑर्थोडॉक्स फेथ, पुस्तक III, अध्याय 14)।

[334] "आप अपने मन में जो भी अच्छा सोच सकते हैं, उसे उसके कारण और स्रोत के रूप में परम-भलाई, ईश्वर को ही मानिए। इसके विपरीत, यह मानिए कि सभी बुराइयाँ उससे अपरिचित और उससे दूर हैं, स्थान के अनुसार नहीं बल्कि स्वभाव से" (ऑर्थोडॉक्स कन्फेशन, भाग 1, प्रश्न 31 का उत्तर)। "ईश्वर का किसी भी बुराई में कोई हिस्सा नहीं है"... (पूर्वी पादरियों का पत्र, ऑर्थोडॉक्स विश्वास पर, अनुच्छेद 3)। "यह पूरी तरह से सच है और इसमें कोई संदेह नहीं है कि ईश्वर बुराई का कारण नहीं हो सकते"… (उपरोक्त, अनुच्छेद 4)। "हे प्रभु, तू पवित्र है, और परम पवित्र है, और तेरी पवित्रता के वैभव का कोई माप नहीं है...; केवल तू ही पवित्रता और मूल पवित्रता है; पवित्र है तू, हे आदिहीन पिता, पवित्र है तू, हे सह-शाश्वत पुत्र, और पवित्र है तू, हे पवित्र आत्मा, एक और अविभाज्य, हमारे परमेश्वर...; हे पवित्र परमेश्वर, जिसने पवित्र आत्मा के सहयोग से पुत्र के द्वारा सभी चीजों को बनाया है: हे पवित्र और सर्वशक्तिमान, जिसके द्वारा हमने पिता को जाना और पवित्र आत्मा संसार में आए हैं: हे पवित्र, अमर और सांत्वना देने वाले आत्मा, जो पिता से निकलते हैं और पुत्र में विश्राम करते हैं: हे पवित्र त्रिमूर्ति, तुझे महिमा हो; ईश्वर, स्वभाव में एक, निष्पाप; केवल आप ही पाप से मुक्त हैं" (लिटजी बुक, पृ. 130; सर्विस बुक, पृष्ठ 157 पर उल्टा, और पृष्ठ 194 पर

पवित्र शास्त्र वास्तव में पुष्टि करता है कि ईश्वर है

क) सभी पापों से पूरी तरह मुक्त है। *परमेश्वर विश्वासयोग्य है, और [उसमें] कोई अधर्म नहीं है* (व्यवस्थाविवरण 32:4); *परमेश्वर प्रकाश है, और उसमें बिलकुल भी अंधकार नहीं है* (1 यूहन्ना 1:5); *क्योंकि परमेश्वर बुराई से परीक्षा नहीं भोगता, और न ही वह स्वयं किसी को परीक्षा में डालता है* (याकूब 1:13); *वह शुद्ध है* (1 यूहन्ना 3:3); *परमेश्वर से जन्मा हर कोई पाप नहीं करता, क्योंकि उसका बीज उसमें बना रहता है; और वह पाप नहीं कर सकता, क्योंकि वह परमेश्वर से जन्मा है* (9)।

b) यह पूरी तरह से नैतिक कानून के अनुरूप है। तदनुसार, पवित्र शास्त्र — aa) अक्सर सामान्य रूप से ईश्वर को पवित्र के रूप में संदर्भित करता है: *'पवित्र है प्रभु हमारा ईश्वर'*;[335] को धर्मी और श्रद्धेय के रूप में भी: *'वह धर्मी और सत्य है'*;[336] को इज़राइल के पवित्र के रूप में: *'मैं वीणा पर तेरा गायन करूँगा, हे इज़राइल के पवित्र'*;[337] bb) विशेष रूप से, यह व्यक्त किया गया है कि *उसका पवित्र नाम*;[338] उसका *पवित्र वचन* (भजन संहिता 104:42), उसका *पवित्र विधान* (रोमियों 7:12), उसकी *पवित्र भुजा* (भजन संहिता 97:1), *उनका मार्ग पवित्र है* (भजन संहिता 76:14), उनका *सिंहासन पवित्र है* (भजन संहिता 46:9), उनका *पादपीठ— यह पवित्र है* (भजन संहिता 98:5), और यह कि वह *अपने सभी कार्यों में भला है* (भजन संहिता 144:17); (bb) गवाही देता है कि स्वर्ग में जो स्वर्गदूत उसकी महिमा करते हैं, उसके सिंहासन को घेरे हुए, निरंतर एक दूसरे से पुकार कर कहते हैं: *'महिमावान, महिमावान, महिमावान है सेनाओं का यहोवा! सारी पृथ्वी उसकी महिमा से परिपूर्ण है!'* (यशायाह 6:3; तुलना करें प्रका. 15:4), और — (gg) आज्ञा देता है कि हम भी पृथ्वी पर उसकी महिमा करें, उसकी परम पवित्रता का अनुकरण करते हुए: *'जिस पवित्र ने तुम्हें बुलाया है, वैसे ही तुम भी अपने सारे आचरण में पवित्र बनो।' क्योंकि लिखा है: 'पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ'* (1 पतरस 1:15, 16; तुलना करें लैव्यिों 11:44; 19:2; 20:7)।

ग) वह अपनी सृष्टि में बुराई से घृणा करता है और केवल अच्छाई से प्रेम करता है: *'जो मन से कपटी हैं वे यहोवा के घृणित हैं; परन्तु जो निर्दोषता से चलते हैं वे उसकी प्रसन्नता हैं'* (नीतिवचन 11:20); *'धर्मपरायणों के मार्ग से यहोवा प्रसन्न रहता है; परन्तु जो अधर्म के मार्ग पर चलते हैं उनसे वह घृणा करता है* (नीतिवचन 15:9)। *क्योंकि आप ऐसे परमेश्वर हैं जो अधर्म से प्रेम नहीं करते; कोई दुष्ट आपके साथ नहीं बस सकता; दुष्ट आपके सामने नहीं ठहर सकता: आप उन सब से घृणा करते हैं जो अधर्म का अभ्यास करते हैं* (भजन संहिता 5:5,6)। *तुम्हारे अधर्म ने तुम्हारे और तुम्हारे परमेश्वर के बीच में अलगाव उत्पन्न किया है, और तुम्हारे पापों ने उसका मुँह तुम से फेर दिया है, इसलिये वह न सुनेगा* (यशायाह 59:2)। *अपने को धोओ, शुद्ध हो जाओ; अपनी बुराइयाँ मेरी आँखों के सामने से हटा दो; बुराई करना बंद करो* (यशायाह 1:16; तुलना करें भजन संहिता 14:1–5; 23:3–6)।

पवित्र पिताओं और चर्च के शिक्षकों की रचनाओं में हमें मिलता है:

क) परमेश्वर की पवित्रता की अवधारणा की एक अत्यंत सटीक व्याख्या। ईश्वर पवित्र उसी तरह से नहीं है जैसे सृजित प्राणी पवित्र होते हैं: वह अपनी स्वभाविक प्रकृति से पवित्र है, स्वयं में और स्वयं के द्वारा पवित्र है, और सभी के लिए पवित्रता का स्रोत है; जबकि अन्य प्राणी केवल उसके सहयोग से, उसकी पवित्रता द्वारा ही पवित्र हो सकते हैं। परिणामस्वरूप, केवल वही सच्चे अर्थों में पवित्र है, एकमात्र पवित्र।[339]

ख) उन विधर्मियों के विरुद्ध ईश्वर की पवित्रता का बचाव, जिन्होंने ईश्वर पर दुनिया में मौजूद बुराई का कारण होने का आरोप लगाया। बुराई को केवल पाप के रूप में ही समझा जाना चाहिए, जो ईश्वर की इच्छा के विरुद्ध एक उल्लंघन है; फिर भी बाकी सब जिसे हम भौतिक बुराई कहते हैं, जिसके द्वारा ईश्वर हमें हमारे पापों के लिए दंडित करते हैं, वह बुराई नहीं है: क्योंकि इसमें स्वयं के भीतर अच्छाई की शक्ति निहित है, जो हमारे सुधार में योगदान करती है और हमें

उल्टा; ओक्टोइकोस, भाग 1, पृष्ठ 165 पृष्ठ-पृष्ठ पर; भाग II, पृष्ठ 8; सामान्य धर्मविधि, *भाग* 1, *पृष्ठ* 6 पृष्ठ-पृष्ठ पर, और पृष्ठ 22 पृष्ठ-पृष्ठ पर)।

335 भजन संहिता 98:9; तुलना करें यश. 24:19; यशायाह 6:3; 2 मक्काबी 14:36; यूहन्ना 17:11; प्रकाशितवाक्य 4:18.

336 व्यव. 32:4; तुलना करें भजन संहिता 10:7; 144:13; प्रकाशितवाक्य 15:4.

337 भजन संहिता 70:22; तुलना करें भजन संहिता 88:19; यशायाह 1:4; 5:16; 10:20; 12:6; 29:19–23; 43:3; 54:5; यहे. 39:7; हब. 1:12; बारूख 4:37; प्रकाशितवाक्य 6:10.

338 भजन संहिता 32:21; 102:1; 104:3; 105:47; 110:9; 144:21; यहेजकेल 20:39; 39:7; लूका 1:49.

339 *यरूशलेम के सिरिल*/ रहस्यों पर निर्देश, पुस्तक V, § 19: 'वास्तव में, जो स्वभाव से पवित्र हैं, वे ही एकमात्र पवित्र हैं; और हम पवित्र हैं, स्वभाव से नहीं, बल्कि संचार, तपस्या और प्रार्थना के द्वारा' (रूसी अनुवाद में, पृ. 467); *सिरिल*/ *अलेक्ज.* अध्याय XLIX यशायाह व. 7 में।

अच्छा करने के लिए प्रेरित करती है।[340] लेकिन सभी पाप तर्कशील प्राणियों की स्वतंत्रता के दुरुपयोग से उत्पन्न होते हैं, जिन्हें ईश्वर ने अच्छा बनाया था, और एक बार यह स्वतंत्रता प्रदान करने के बाद, वह इस पर अतिक्रमण नहीं करना चाहता।[341] वह स्वयं पाप भी नहीं कर सकता, क्योंकि वह सभी बातों में अपरिवर्तनीय है,[342] वह स्वयं और अपनी इच्छा के विरुद्ध कार्य नहीं कर सकता,[343] और वह परम शुभ है, जो सभी बुराइयों को बहिष्कृत करता है, जैसे प्रकाश अंधकार को बहिष्कृत करता है, और अस्तित्व अस्तित्वहीनता को बहिष्कृत करता है।[344]

c) धर्मग्रंथ के कुछ ऐसे अंशों की व्याख्या जिसमें ईश्वर, प्रतीत होता है, बुराई का लेखक प्रतीत होता है। "जब आप सुनते हैं: *'क्या किसी नगर में कोई विपत्ति है जिसे प्रभु ने नहीं भेजा?'* (आमोस 3:6), तो जानिए कि यहाँ 'बुराई' शब्द पापियों पर उनकी अधर्मों को सुधारने के लिए भेजी गई पीड़ाओं को संदर्भित करता है।"[345] " *मैं प्रकाश को उत्पन्न करता हूँ और अंधकार रचता हूँ, मैं शांति करता हूँ और विपत्ति लाता हूँ* (यशायाह 45:7) — वह आपके भीतर एक विशेष तरीके से *शांति लाता है* जब, अपनी उद्धारकारी शिक्षा के माध्यम से, वह आपकी आत्मा को शांत करता है और उन वासनाओं को वश में करता है जो आपकी आत्मा के विरुद्ध युद्ध करती हैं ; *विपत्तियाँ लाता है,* यानी बुराई को रूपांतरित कर उसे बेहतर में बदल देता है, ताकि उसमें अच्छाई के गुण आ जाएँ.... हालाँकि, यदि हम *'शांति' को* युद्ध से मुक्त एक अवस्था कहें, और 'बुराई' को युद्ध की विपत्तियाँ...: तो हम कहेंगे कि ईश्वर, अपने धर्मी निर्णय से, युद्ध में उन पर दंड भेजता है जो दंड के पात्र हैं।"[346] इसी प्रकार — "वचन: *'परमेश्वर ने सभी को अवज्ञा के अधीन कर दिया है* (रोमियों 11:32); और भी: *'ईश्वर ने उन्हें सुस्ती की आत्मा, ऐसी आँखें दी हैं जो नहीं देखतीं और ऐसे कान जो नहीं* सुनते' (रोमियों 11:8), को इस प्रकार नहीं समझना चाहिए जैसे ईश्वर स्वयं इन सब का कारण हों, बल्कि इस प्रकार समझना चाहिए कि उन्होंने केवल इसकी अनुमति दी, क्योंकि मनुष्य को स्वतंत्रता दी गई है, और कोई अच्छा काम जबरदस्ती नहीं किया जाना चाहिए।"[347]

यह कोई संयोग नहीं है कि सबसे मूर्तिपूजक लोगों में भी कई लोगों ने ईश्वर को पवित्र माना;[348] यह सत्य स्वाभाविक मन के लिए भी सुलभ है। यदि ईश्वर सबसे परिपूर्ण सत्ता है, तो वह अनिवार्य रूप से पवित्र होना चाहिए; और यदि वह पवित्र नहीं है, तो वह सबसे परिपूर्ण नहीं है: क्योंकि एक तर्कशील और स्वतंत्र सत्ता में पवित्रता सभी पूर्णताओं में प्रथम है, जबकि पाप सभी संभावित अपूर्णताओं में प्रथम और सबसे बुरा है। हम ईश्वर को सम्मान और पूजा के योग्य एक सत्ता के रूप में भी कल्पना करते हैं; लेकिन क्या हमारा तर्क पवित्रता से रहित किसी सत्ता को पूजा के योग्य मान सकता है? हम अपने भीतर एक अपरिवर्तनीय नैतिक कानून को महसूस करते हैं, जो स्वयं पवित्र है और हमसे केवल पवित्रता की ही मांग करता है; लेकिन यह कानून हमें ईश्वर द्वारा दिया गया है और यह उनकी इच्छा की अभिव्यक्ति है: क्या यह स्पष्ट प्रमाण नहीं है कि ईश्वर केवल पवित्र चीज़ से प्रेम करते हैं, केवल पवित्र चीज़ की इच्छा रखते हैं, और इसलिए वे स्वयं पूरी तरह से पवित्र हैं?

३. अनंत सद्गुण।

ईश्वर में सद्भाव वह गुण है जिसके द्वारा वह हमेशा अपनी रचनाओं पर उतनी ही आशीर्वादों की वर्षा करने के लिए तैयार रहता है, और वास्तव में करता भी है, जितनी प्रत्येक अपनी प्रकृति और स्थिति के अनुसार प्राप्त करने में सक्षम है। यह भलाई (ἀγαθότης, bonitas), जिन प्राणियों पर यह कार्य करती है उनकी विभिन्न परिस्थितियों के आधार पर,

---

340 *बेसिल महान:* 'इस तथ्य पर कि ईश्वर बुराई का कारण नहीं है'। Chr. Th. 1824, XIII, पृ. 255–258; *Tit. Bostrens.* adv. Manich. 11,9.10.15; *Clem. Alex.* Paedag. 1,8; *Augustin.* de Genes. ad litt. XI, 6, note 8. Cf. note 206.

341 *बेसिल द ग्रेट,* Chr. Ch. 1824, XIII, पृ. 263 में; *Clem. Alex.* Strom. 1,17; *ग्रेगोर. Nyss.* Hom. VII in Ecclesiast., और Catech. अध्याय 5; *Athanas. Alex.* contra gent. अध्याय 7.

342 *ऑगस्टीन,* *दे सिविटिटे देई*, पुस्तक XXII, अध्याय 1; *सिरिपसि के सिरिल,* *कमेंटरी ऑन जॉन*, पुस्तक V, शब्दों पर: *'मैं अपनी ओर से कुछ नहीं करता...'; बोस्टन के टाइटस,* *अगेंस्ट मनिखियिनज़िम*, पुस्तक II, *बिब्लियोथेका पैट्रम*, खंड IV, स्तंभ 903 में।

343 *एथेनागोरस,* *एपोलोजेटिकस*, पृ. 6: 'क्योंकि ईश्वर का प्रकृति के विपरीत कार्य करना नहीं है।'

344 *टर्तुल्लियिन,* *कॉन्ट्रा मार्शियिन*, पुस्तक I, पृ. 26; *ग्रेगरी ऑफ निसा,* *कैटेकज़िम*, अध्याय 1; *बेसिल द ग्रेट,* हेक्सामेरॉन पर उपदेश 11।

345 बासिल *द ग्रेट,* क्रॉनिकल्स चर्चिल 1824, XIII, पृ. 254.

346 उपरोक्त, पृ. 251–252।

347 *जॉन ऑफ़ डेमास्कस,* *एक्ज़ैक्ट एक्सपोज़िशन ऑफ़ द ऑर्थोडॉक्स फेथ*, पुस्तक IV, अध्याय 19, पृ. 282.

348 *एस्किलिस,* *एडामांटिया*, 637; *यूमेनडिस*, 27, 40, 55; *सोफोकलीस,* *Ant. *, 1044.

विभिन्न नामों से जानी जाती है: *इसे अनुग्रह* (χάρις, gratia) कहा जाता है जब यह उन पर आशीर्वाद प्रदान करती है जिन्होंने उन्हें पाने का हक नहीं अर्जित किया है (रोमियों 11:35; एफि. 2:5); *दया* (έλεος, οίκτιρμός, misericordia), जब यह पीड़ितों और ज़रूरतमंदों की सहायता के लिए आती है (लूका 1:72, 78; 2 कुरि. 1:3); *धीरज* (μακροθυμία, longanimitas), जब यह पापियों के प्रति सहनशीलता दिखाता है और, उनके परिवर्तित होने की प्रतीक्षा करते हुए, उन्हें दंड देने में देरी करता है (रोमियों 2:4; 3:25); *दयालुता* (χρηστότης, lenitas), जब यह पापों के लिए दंड को कम करता है (रोमियों 11:22), और इसी तरह।[349]

पवित्र शास्त्र में अनगिनत ऐसे अंश हैं जो ईश्वर की भलाई को दर्शाते हैं:

क) सामान्यत; परमेश्वर का वर्णन इस प्रकार किया गया है —

क) न केवल अच्छा, बल्कि एकमात्र अच्छा के रूप में: *'प्रभु का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है; उसकी दया सदा के लिए बनी रहती है* (भजन संहिता 117:1; तुलना करें भजन संहिता 33:9; 72:1; 85:5; 118:68; 134:3; 135:1); *परमेश्वर के सिवाय कोई भी अच्छा नहीं है* (मरकुस 10:18);

बीबी) न केवल उदार और दयालु, बल्कि उदारता के पिता भी: *यहोवा उदार और दयालु है, क्रोध में धीमा और अटूट प्रेम में महान है* (भजन संहिता 102:8; तुलना करें निर्गमन 34:6; भजन संहिता 111:4; 144:8); *धन्य हो हमारे प्रभु यीशु मसीह के पिता, दया के पिता और सब प्रकार के सांत्वना के परमेश्वर* (2 कुरिन्थियों 1:3);

(ख) केवल प्रेम ही नहीं, बल्कि प्रेम के परमेश्वर, सभी अनुग्रह के परमेश्वर: *परमेश्वर प्रेम है, और जो प्रेम में बना रहता है, वह परमेश्वर में बना रहता है, और परमेश्वर उसमें* (1 यूहन्ना 4:16; तुलना करें पद 8); *एकमत रहो, शांति से जियो— और प्रेम और शांति का परमेश्वर तुम्हारे साथ रहेगा* (2 कुरिन्थियों 13:11); *अब सर्व अनुग्रह का परमेश्वर, जिसने हमें मसीह यीशु में अपनी अनंत महिमा के लिए बुलाया है, वह स्वयं, तुम्हारे थोड़े से दुख के बाद, तुम्हें सिद्ध कर देगा, तुम्हें स्थिर कर देगा, तुम्हें मज़बूत कर देगा, और तुम्हें अटूट बना देगा* (1 पतरस 5:10)।

6) सृष्टि के संबंध में। *प्रभु सब पर अनुग्रह करता है, और उसकी करूणा उसकी सारी कृतियों पर बनी रहती है* (भजन संहिता 144:9)। *जब आप अपना हाथ खोलते हैं, तो वे अच्छी-भली चीज़ों से तृप्त हो जाते हैं* (भजन संहिता 103:28)। वह *घाटियों में झरने भेजता है* (भजन संहिता 103:10), '' और *अपनी ऊँचाइयों से पहाड़ों को सींचता है* (13), *पशुओं के लिए घास उगाता है* (14), वस्त्र पहनाता है... *मैदान की घास* (मत्ती 6:30), *पोषण देता है... आकाश के पक्षियों को* (26), *प्रत्येक जीवित प्राणी के लिए भोजन प्रदान करता है* (भजन संहिता 135:25) और *अपनी इच्छा के अनुसार सभी जीवित चीजों को* तृप्त करता है (भजन संहिता 144:16)।

c) विशेष रूप से लोगों के प्रति इस संबंध में कहा गया है:

(क) कि परमेश्वर हमारे पिता हैं: *पृथ्वी पर किसी को अपना पिता मत कहो, क्योंकि तुम्हारा केवल एक ही पिता है, जो स्वर्ग में है* (मत्ती 23:9; तुलना करो व्यवस्थाविवरण 32:6; यशायाह 63:16; मला. 1:b; 1 कुरि. 8:4, 6; इफि. 4:6); *हमारे पिता जो स्वर्ग में हैं! आपका नाम पवित्र माना जाए* (मत्ती 6:9);

bb) कि वह एक पिता की तरह सभी प्रार्थनाओं को ध्यान से सुनता है: *क्या तुम में से कोई ऐसा है जो, जब उसका बेटा उससे रोटी मांगे, तो उसे पत्थर देगा? या जब वह मछली मांगे, तो उसे सांप देगा? इसलिए, यदि तुम, बुरे होते हुए भी, अपने बच्चों को अच्छी चीज़ें देना जानते हो, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता उनसे कितनी अधिक अच्छी चीज़ें देगा जो उससे माँगते हैं* (7:9–11);

(cc) कि वह एक पिता के रूप में हमारी सभी ज़रूरतों का ध्यान रखता है: *वह अपने सूर्य को दुष्टों और भलों पर उदय होने की आज्ञा देता है, और धर्मी और अधर्मी दोनों पर वर्षा भेजता है* (मत्ती 5:45), *सभी को जीवन और साँस और सब कुछ देता है* (प्रेरितों के काम 17:25), और इसके अलावा *हमारे आनंद के लिए भरपूर* देता है (1 तीमुथियुस 6:17;

---

[349] "ईश्वर भला और परम भला है — ἀγαθός καί ὑπεράγαθος" (ऑर्थोडॉक्स कन्फेशन, भाग 1, प्रश्न 8 का उत्तर)। "ईश्वर के आवश्यक गुण हैं: भला होना..." (उपरोक्त, प्रश्न 13 का उत्तर)। "सृष्टिकर्ता स्वभाव से ही भला है" (पूर्वी पिताओं का पत्र, ऑर्थोडॉक्स विश्वास पर, अनुच्छेद 4)। "धन्य और परोपकारी, कृपालु और परम दयालु प्रभु, दया से भरपूर और भलाई में समृद्ध, उदारता के पिता और सभी सांत्वना के परमेश्वर"... (लिटिरजीकल बुक, पृ. 51, उल्टा पक्ष, मॉस्को 1836)। "प्रभु यीशु मसीह, हमारे परमेश्वर, उदारता का अक्षय स्रोत, मानव जाति के लिए प्रेम की अथाह गहराई, दीर्घ-सहिष्णुता और भलाई की अमर गहराई"... (उपरोक्त, फोलियो 215 और 219)। "जीवन और जीवन-दाता: प्रकाश और प्रकाश-प्रदाता: *सर्व-सद* और अनुग्रह का स्रोत"... (उपरोक्त, फोलियो 187, पृष्ठ का पिछला भाग)।

तुलना करें 4:3); वह हमारे आत्मा पर *हर अच्छा वरदान और हर उत्तम उपहार* भी प्रदान करता है (याकूब 1:17) और *अपनी इच्छा के अनुसार तुम में इच्छा करने और कार्य करने दोनों के लिए काम करता है* (फलि. 2:13);

gg) अंत में, हमारे प्रति परमेश्वर की अनंत भलाई की सबसे प्रभावशाली गवाही हमारे उद्धार का कार्य है जो उन्होंने पूरा किया: *क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, बल्कि अनंत जीवन पाए* (यूहन्ना 3:16)। *हमारे प्रति परमेश्वर का प्रेम इस बात में प्रकट हुआ कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को संसार में भेजा, ताकि हम उसके द्वारा जीवन प्राप्त करें। प्रेम यह है: कि हमने परमेश्वर से प्रेम नहीं किया, परन्तु उसने हमसे प्रेम किया और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए अपने पुत्र को भेजा* (1 यूहन्ना 4:9, 10)। *परन्तु जब हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर की कृपा और प्रेम प्रगट हुआ, तब उसने हमें उद्धार दिया, और यह हमारे किए हुए किसी धर्मी काम के कारण नहीं, बल्कि अपनी दया के अनुसार, पवित्र आत्मा के हमें नया जन्म देने और हमें नया करने के स्नान द्वारा, जिसे उसने हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के द्वारा हम पर भरपूर उंडेल दिया* (तीतुस 3:4-6)। *जिसने अपने ही पुत्र को हमारे लिए बलिदान कर दिया, वह हमारे साथ सब कुछ उदारतापूर्वक क्यों नहीं देगा?* (रोमियों 8:32)।

चर्च के पवित्र पिताओं और शिक्षकों ने भी, सबसे अधिक बार और विशेष उत्साह के साथ ईश्वर की भलाई की प्रशंसा की। 'यदि कोई पूछे: हम किसका सम्मान करते हैं और किसकी पूजा करते हैं? — उत्तर तैयार है: हम प्रेम का सम्मान करते हैं। क्योंकि, जैसा कि पवित्र आत्मा ने घोषित किया है, हमारा *परमेश्वर प्रेम है* (1 यूहन्ना 4:8), और यह नाम परमेश्वर को किसी भी अन्य नाम से अधिक प्रसन्न करता है।"[350]

वे —

क) इस गुण को ईश्वर में सबसे आवश्यक माना: ईश्वर स्वभाव से अच्छा है, स्वयं में और स्वयं के माध्यम से अच्छा है; और अच्छाई, एक तरह से, उसका सार ही है: वह सारी अच्छाई, सारा प्रेम है;[351]

ख) इस गुण को सृष्टि और पालन-पोषण के प्रमुख कारण के रूप में माना: सनातन काल से परमेश्वर अकेले और धन्य थे, उन्हें किसी की या किसी भी चीज़ की आवश्यकता नहीं थी; लेकिन केवल अपनी अनंत दया से उन्होंने अन्य प्राणियों को अपनी आनंद में सहभागी बनाने की इच्छा की, और उन्हें अस्तित्व प्रदान किया, उन्हें सबसे विविध सिद्धियों से सुशोभित किया, और निरंतर उन पर अस्तित्व और आनंद के लिए आवश्यक सभी आशीर्वादों की वर्षा करते हैं;[352]

(ग) सबसे बढ़कर, उन्होंने मानवता के प्रति ईश्वर की कृपा का वर्णन किया — ईश्वर हमारे साझा पिता हैं और वे हम में से प्रत्येक से अधिक प्रेम करते हैं जितना एक सांसारिक पिता और माता अपने बच्चों से करते हैं, — जितना हम स्वयं से करते हैं;[353] वह हम पर केवल तभी दयालु नहीं होता जब वह हम पर दया दिखाता है, बल्कि जब वह हमें दंडित करता है तब भी — न केवल जब वह हमें कुछ देता है, बल्कि जब वह उसे छीन लेता है तब भी;[354] हमारी खुशी और मोक्ष

---

[350] होमीली 23, द वर्क्स ऑफ़ द होली फ़ादर्स II, पृ. 231 में।

[351] *डायोनिसियस द एरोपागाइट,* *दिव्य नामों पर*, अध्याय IV, टिप्पणी 1; *आइरेनियस,* *संप्रदायों के विरुद्ध*, पुस्तक III, 25, टिप्पणी 3; *ग्रेगरी ऑफ निस्सा,* *मोसेस के जीवन पर*: 'पहला और प्रमुख अच्छाई, जिसकी स्वभाव से ही प्रकृति अच्छाई है, वही है जो दिव्य है; जो कुछ भी स्वभाव से अच्छा माना जाता है, वही वह है, और वही उसे कहा जाता है' (खंड 1, पृ. 169, सं. मोरेल. Conf. खंड III, पृ. 147); *Oecumen.* अधिनियमों के Xt अध्याय में: 'ईश्वर अपने सार में ही अच्छा है, सभी अच्छी चीजों की शुरुआत और स्रोत'; *Augustin.* enarrat. in Psalm. XCIX, n. 15; CXXXIV, n. 4; पत्र CLIII, जिसे LIV भी कहा जाता है, अध्याय 5, n. 12; *मठवासी मैक्सिमस,* *प्रेम पर*, सेंचुरिया IV, खंड 90: 'केवल ईश्वर ही स्वभाव से अच्छा है।'

[352] *डायोनिसियस द एरोपागाइट,* *दिव्य नामों पर*, अध्याय IV, क्रमांक 2, 3, 4; *ग्रेगरी ऑफ निस्सा,* *कैटेकिज़्म*, अध्याय V, पृ. 484; *क्रिसोस्टोम,* फिलिमोन को लिखे पत्र पर व्याख्यान III: 'क्या उन्होंने, हमारी प्रार्थना का उत्तर देते हुए, हमें और आकाश, पृथ्वी, समुद्र और सभी चीजों को नहीं बनाया—क्या उन्होंने ये चीजें हमारे लिए अपनी भलाई के कारण नहीं बनाईं? मुझे बताइए।' *हिलारियन,* भजन संहिता 11 पर टीका; *एम्ब्रोसियस,* *भजन संहिता* CXVIII पर; *ऑगस्टीन,* *द सिटी ऑफ गॉड*, पुस्तक XI, अध्याय 21; लॉरेंटियस को *एनचिरीडियन*, अध्याय 27; *माइटिलिनि के ज़ैरियस,* *ऑन द क्रिएशन ऑफ द वर्ल्ड*; *अलेक्जेंड्रिया के सिरिल,* *डायलॉग ऑन द ट्रिनिटी*, संवाद 4।

[353] क्योंकि कोई भी—न तो पिता, न माता, न मित्र, न कोई और—ने हमें उतना प्रेम किया है जितना ईश्वर ने, जिसने हमें बनाया.... (*क्रिसोस्टोम,* मत्ती पर होमीली XIX, या XX, संख्या 7) / यह स्पष्ट है कि परमेश्वर हमें स्वयं से अधिक प्रेम करते हैं (मत्ती पर होमीली XLVI, या XLVII, संख्या 1)।

[354] क्रिसोस्टोम। ओप., खंड II, पृ. 87 और 250; खंड III, पृ. 29, 35; खंड IV, पृ. 136, 253; खंड V, पृ. 136, 138, 699, सं. डी मोन्फौकॉन। वेनिस, 1734।

उसकी अपनी महिमा से भी अधिक प्रिय हैं,[355] इसलिए हमारे मोक्ष के लिए उसने अपने एकमात्र पुत्र को भी नहीं बख्शा, बल्कि उसे अत्यंत कष्टदायक यातनाओं और सबसे अपमानजनक मृत्यु के लिए सौंप दिया।[356]

यह कल्पना करना कठिन है कि कोई भी विवेकशील व्यक्ति हो सकता है जो ईश्वर के कार्यों पर सावधानीपूर्वक चिंतन करने के बाद अपनी आत्मा की गहराई से यह स्वीकार न करे कि ईश्वर वास्तव में प्रेम हैं। इसे, कोई कह सकता है, हमारे चारों ओर की सभी प्रकृति की आवाज़ कहा जा सकता है, विशेष रूप से हर कीट और जीवन का आनंद लेने वाले हर घास के तने की आवाज़; यह हमारे अंतरात्मा की आवाज़ भी है: क्योंकि सभी चीजें सृष्टिकर्ता के प्रेम से ही अस्तित्व में आई हैं और मौजूद हैं, और उनकी अनगिनत दया हर जगह बरसती है। यहाँ तक कि मूर्तिपूजक भी, चाहे वे कितने भी अंधे क्यों न रहे हों, इस पर ध्यान दिए बिना नहीं रह सके, और उन्होंने ईश्वर को अच्छा माना।[357]

४. सबसे पूर्ण सत्य और निष्ठा।

हम ईश्वर को सत्य और विश्वसनीय (ἀληθινός, πιστός, verax, fidelis) मानते हैं, क्योंकि जो कुछ भी वह अपनी रचनाओं को प्रकट करता है, वह हमेशा सत्य और विश्वसनीय रूप से प्रकट करता है; और विशेष रूप से, जो वादे या धमकियाँ वह उन्हें देता है, वह हमेशा अपने कहे हुए को पूरा करता है या निश्चित रूप से पूरा करेगा।[358]

ईश्वर अपनी सभी प्रकटीकरणों में अपने प्राणियों के प्रति सत्य हैं। पवित्र शास्त्र इस बात की पुष्टि करता है जब यह कहता है:

(क) कि *प्रभु परमेश्वर सत्य है* (यिर्म. 10:10; यूहन्ना 3:33; रोमियों 3:4; प्रकाशितवाक्य 3:7), *सत्य के प्रभु, सत्य के परमेश्वर* (भजन संहिता 30:6) और *वह परमेश्वर जो अपने वचन में अपरिवर्तनीय है* (तीतुस 1:2), कि वास्तव में *परमेश्वर के लिए झूठ बोलना असंभव है* (इब्रानियों 6:16–18);

ख) कि उसका *वचन* भी *सत्य है* (यूहन्ना 17:17), और *प्रभु के वचन शुद्ध हैं, भट्टी में परखी हुई चाँदी के समान, जो सात बार शुद्ध की गई है* (भजन संहिता 11:7); *ये वचन सत्य और विश्वासयोग्य हैं* (प्रकाशितवाक्य 21:5; 22:6; तुलना करें भजन संहिता 32:4; 118:89, 90), और

ग) कि, सामान्य रूप से, *प्रभु के सभी मार्ग दया और सत्य हैं* (भजन 24:10), *'तेरे मार्ग न्याय और सत्य के हैं'* (प्रकाशितवाक्य 15:3), और *'तेरे न्याय सत्य और न्यायसंगत हैं'* (प्रकाशितवाक्य 16:7; 19:2)।

ईश्वर अपने सभी वचनों और चेतावनियों में विश्वसनीय है। इस संबंध में, पवित्र शास्त्र कहता है:

क) परमेश्वर के विषय में: *'परमेश्वर कोई मनुष्य नहीं है कि वह झूठ बोले, न ही मनुष्य का पुत्र है कि वह अपना मन बदले* (गिनती 23:19; तुलना करें 1 राजा 16:29); *'परमेश्वर विश्वासयोग्य है, जिसने तुम्हें अपने पुत्र, हमारे प्रभु यीशु मसीह की संगति में बुलाया है* (1 कुरिन्थियों 1:9); *प्रभु विश्वासयोग्य है, जो तुम्हें बल देगा और तुम्हें दुष्ट से बचाएगा* (2 थिस्स. 3:3); *हम बिना डगमगाए अपनी आशा के अंगीकार पर दृढ़ बने रहें, क्योंकि जिसने वादा किया है वह विश्वासयोग्य है* (इब्र. 10:23); *भले ही हम अविश्वासी हों, वह विश्वासी बना रहता है, क्योंकि वह स्वयं को नकार नहीं सकता* (2 तीमु. 2:13); *वह विश्वासी है जो तुम्हें बुलाता है, और वह इसे पूरा भी करेगा* (1 थिस्स. 5:24; तुलना करें व्यवस्थाविवरण 7:9);

---

[355] क्योंकि जैसे वह अपनी महिमा की परवाह करता है, वैसे ही मानव जाति के उद्धार की भी... *क्रिसोस्टोम।* एक्सपोजिटियो इन सॉल्म CXIII, संख्या 3, पृष्ठ 297।

[356] *क्रिसोस्टोम।* होमीली XXXI, या यूहन्ना पर XXX, n. 2; *ऑगस्टीन,* *डे वेरा रिलीज़ियो*, अध्याय XVI: 'उसने मानव जाति के प्रति इससे अधिक महान उदारता कभी नहीं दिखाई, जितनी कि जब, परमेश्वर की उसी बुद्धि के माध्यम से—अर्थात् एकमात्र पुत्र, जो पिता के सह-तत्त्व और सह-शाश्वत हैं—उन्होंने मनुष्य के संपूर्ण स्वभाव को धारण करने की कृपा की, और वचन देहधारी हुआ, और हमारे बीच वास किया' (यूहन्ना 1:14)।

[357] *ऐसक्युलस,* *अगामेम्नन*, 952 और 1148; *प्रोमेथियस बाउंड*, 772; *प्लेटो,* *यूतिफ्रो*; *हायरोक्लेस,* *ऑरिया कार्मिना पाइथागोरई*; *प्लॉटिनस,* *एनेड्स*, पुस्तक V, अध्याय 5, खंड 13; *प्रोकलस,* *प्लेटो की *रिपब्लिक* की पुस्तक II पर टीका**।

[358] "ईश्वर न तो दुष्ट हो सकता है, न पाप कर सकता है, न *झूठ बोल* सकता है, और न ही *स्वयं को नकार सकता है*"... (सही स्वीकारोक्ति, भाग I, प्रश्न 14 का उत्तर)। "हे प्रभु हमारे परमेश्वर, अपने वादों में विश्वसनीय और अपनी देन में अपरिवर्तनीय"... (लिटिरजीकल बुक, पृष्ठ 86, उल्टा पक्ष, मॉस्को 1836)। "क्योंकि तू महान और अद्भुत परमेश्वर है, जो अपनी वाचा का पालन करता है... (उपरोक्त, पृ. 46 और 64); क्योंकि तू एकमात्र सच्चा परमेश्वर है"... (दिव्य सेवा, पृ. 28, मॉस्को 1837; भजन संहिता, पृ. 109, उल्टा पक्ष, मॉस्को 1818)।

ख) स्वयं परमेश्वर के वचनों और चेतावनियों के विषय में: *'मैं तुम से सच कहता हूँ यह सब होने तक यह पीढ़ी बिलकुल न जाएगी। आकाश और पृथ्वी टल जाएँगे, परन्तु मेरी बातें बिलकुल न जाएँगी* (मरकुस 13:30, 31; लूका 21:32, 33)।

ईश्वर का यह गुण उन लोगों द्वारा पूरी तरह से समझाया गया है जिन पर हमने पहले विचार किया है। ईश्वर, जैसा कि हमने देखा है, सर्वज्ञ हैं; इसलिए, वे स्वयं किसी भी बात में धोखा नहीं खा सकते; वे सर्व-पवित्र हैं; इसलिए, वे किसी को भी किसी भी तरह से धोखा नहीं दे सकते; वे सर्वशक्तिमान हैं; इसलिए, वे दूसरों को दिया गया वचन, चाहे वह वादा हो या चेतावनी, हमेशा पूरा करने में सक्षम हैं। और इसलिए, बेशक, कोई इस बात पर संदेह नहीं करेगा कि चर्च के सभी पवित्र फादर और शिक्षकों ने सर्वसम्मति से ईश्वर की सत्यनिष्ठा और विश्वसनीयता की घोषणा की है,[359] क्योंकि यह सत्य न केवल पवित्र धर्मग्रंथ में परम स्पष्टता के साथ प्रस्तुत किया गया है, बल्कि यह स्वस्थ तर्क के लिए भी इतना स्पष्ट है।

५ *अनंत न्याय।*

यहाँ 'न्याय' या 'धर्मनिष्ठा' (δικαιοσύνη, justitia) शब्द से परमेश्वर का वह गुण अभिप्रेत है जिसके द्वारा वह सभी नैतिक प्राणियों को उनके कर्मों के अनुसार पुरस्कृत करता है, अर्थात्: वह अच्छे लोगों को पुरस्कृत करता है और दुष्टों को दंडित करता है।[360]

ईश्वर की न्यायप्रियता की सामान्य अवधारणा व्यक्त की गई है: क) परमेश्वर से पुरखा अब्राहम के शब्दों में: *'यह आप से दूर रहे कि आप ऐसा करें— धर्मी को दुष्ट के साथ नष्ट करना, ताकि धर्मी को भी दुष्ट के समान भाग भोगना पड़े* (उत्पत्ति 18:25); ख) भजनकार द्वारा: *'ईश्वर एक धर्मी न्यायी है, [शक्तिमान और धीरजवान]'* (भजन संहिता 7:12), *'प्रभु धर्मी है; वह न्याय से प्रेम करता है* (10:7); *प्रभु अपने सब मार्गों में धर्मी है* (भजन संहिता 144:17); *वह राष्ट्रों का न्याय धर्मी रीति से करेगा* (भजन संहिता 95:10); *और वह संसार का न्याय धर्मी रीति से करेगा, और राष्ट्रों पर सीधा न्याय चलाएगा* (भजन संहिता 9:9; तुलना करें भजन संहिता 66:5; 95:13; 118:75, 137, 144); c) उद्धारकर्ता के वचनों में: *मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों के साथ अपने पिता की महिमा में आएगा, और तब वह प्रत्येक व्यक्ति को उनके कर्मों के अनुसार प्रतिफल देगा* (मत्ती 16:27); d) प्रेरित पौलुस के वचनों में: *जो प्रत्येक व्यक्ति को उनके कर्मों के अनुसार प्रतिफल देगा... क्योंकि परमेश्वर के यहाँ पक्षपात नहीं है* (रोमियों 2:6, 11; तुलना करें गलातियों 2:6; इफिसियों 6:9; कुलु. 3:25); (ई) प्रेरित पतरस के वचन से: *'यदि तुम उसे "पिता" कहते हो, जो हर एक का उनके कर्मों के अनुसार निष्पक्षता से न्याय करता है, तो पृथ्वी पर परदेशी होने के अपने समय में भय के साथ आचरण करो* (1 पत. 1:17)।

कि विशेष रूप से परमेश्वर धर्मी लोगों को उनके सभी अच्छे कर्मों के लिए पुरस्कृत करते हैं या पुरस्कृत करेंगे, इसकी गवाही निम्नलिखित से मिलती है: (क) भजनकार: *'जो कोई तेरे शरण में आएगा वह आनंदित होगा... क्योंकि हे यहोवा, तू धर्मी लोगों को आशीष देता है* (भजन संहिता 5:12, 13); *'जिसके हाथ निर्दोष हैं और जिसका हृदय शुद्ध है... उसे प्रभु का आशीर्वाद और उसके उद्धारकर्ता परमेश्वर की दया प्राप्त होगी* (भजन संहिता 23:4, 5); *'वह उन लोगों*

---

[359] उदाहरण के लिए, *रोम के संत क्लेमेंट* कहते हैं: "हम अपने आत्मा की आशा के द्वारा, उस पर अटूट विश्वास रखते हैं जो अपने वचनों में सच्चा और अपने न्याय में धर्मी है (Epist. I. ad Corinth., अध्याय 2): क्योंकि वही सच्चा है जिसने प्रत्येक व्यक्ति को उनके कर्मों के अनुसार पुरस्कृत करने का वादा किया है" (Epist. II ad Corinth., अध्याय 27); *संत साइप्रियन:* 'सबसे पहले, ईश्वर सत्य है; विश्वासियों के लिए उसका वचन शाश्वत और अटूट है' (Lib. de mort.); *संत जॉन क्रिसिस्टम:* "उनके (ईश्वर के) शब्द शुद्ध और झूठ से रहित (ἀπηλλαγμένα ψεύδους) हैं; जैसे आग में तपाए गए चाँदी में कोई विदेशी या अशुद्ध वस्तु नहीं होती, वैसे ही ईश्वर द्वारा बोले गए शब्दों को बिना चूके पूरा होना चाहिए" (एक्सपोजिशन Psalm. XI. n. 2); *संत अथेनासियस:* "ईश्वर विश्वसनीय है, क्योंकि, जैसा कि दाऊद गाते हैं, प्रभु अपने वचनों में विश्वसनीय और भरोसेमंद हैं, और उनके लिए झूठ बोलना असंभव है" (Contra Arian. orat. III); *धन्य ऑगस्टीन:* 'जो लोग कुछ ऐसा खोजना चाहते हैं जो सर्वशक्तिमान नहीं कर सकते, उन्होंने निश्चित रूप से उसे खोज लिया है; मैं कहूँगा: वह झूठ नहीं बोल सकता' (De civit. Dei, Book XXII, Chapter 25); *सेंट सिरिल ऑफ अलेक्जेंड्रिया:* "अविश्वसनीय होना हमेशा दिव्य स्वभाव के लिए उपयुक्त और उसे अत्यधिक प्रसन्न करने वाला है" (Book II on John, Chapter 3)।

[360] "ईश्वर आत्मा है… सर्व-धर्मनिष्ठ" (सरलीकृत धर्मशिक्षा, अनुच्छेद 1)। "उसमें पक्षपात की कोई गुंजाइश नहीं है" (पूर्वी पितरों का पत्र ऑर्थोडॉक्स विश्वास पर, अनुच्छेद 3)। "हे प्रभु, तू धर्मी है, और तेरे न्याय धर्मी हैं" (लिटिरजीकल बुक, पृ. 246, मॉस्को 1836)। "हे प्रभु, तू धर्मी है, और सभी के विषय में तेरा न्याय धर्मी है" … (उपरोक्त, पृ. 222, उल्टा पृष्ठ)।

से भलाई नहीं रोकता जो नष्ठिा से चलते हैं' (भजन संहति 83:12); 6) बुद्धमिान व्यक्तः *'वह धर्मी के घर को आशीष देता है* (नीतविचन 3:33); ग) प्रेरति पौलुस: *मैंने अच्छा संघर्ष कयिा है, मैंने दौड़ पूरी कर ली है, मैंने वशि्वास बनाए रखा है; और अब मेरे लिए धार्मकिता का मुकुट रखा हुआ है, जसिे प्रभु, वह धर्मी न्यायी, उस दनि मुझे प्रदान करेंगे; और न केवल मुझे, बल्कि उन सभी को भी जनि्होंने उनके प्रकट होने से प्रेम कयिा है* (2 तीमु. 4:7,8)। *क्योंकि परमेश्वर अन्यायी नहीं है; वह आपके काम और उस प्रेम की मेहनत को नहीं भूलेगा जो आपने उसके नाम पर दखिाया है, क्योंकि आपने पवत्रि लोगों की सेवा की है और करते ही रहते हैं* (इब्रानयिों 6:10)। *यह जानते हुए कि हर कोई प्रभु से उस भलाई के अनुपात के अनुसार प्राप्त करेगा जो उसने की है, चाहे वह दास हो या स्वतंत्र मनुष्य* (इफसियिों 6:8; तुलना करें मत्ती 10:42; रोमयिों 2:6)।

अंत में, कि परमेश्वर पापयिों को उनके सभी दुष्ट कर्मों के लिए दंडति करता है या दंडति करेगा; इसकी पुष्टि में, पवत्रि शास्त्र: क) एक ओर, अतीत में हुई परमेश्वर की सजा के कई उदाहरण प्रस्तुत करता है, जैसे: हमारे पति प्रथम माता-पिता का स्वर्ग से नष्किासन, काइन का भाग्य, सदोम और गमोरा का वनिाश, सार्वभौमकि प्रलय, मानव जाति के पापों के लिए ईश्वर-मानव की मृत्यु; और, दूसरी ओर, भवष्यि का अंतमि न्याय, जहाँ *लोगों द्वारा बोले गए हर व्यर्थ वचन के लिए, उन्हें न्याय के दनि हसिाब देना होगा* (मत्ती 12:36), और दुष्ट लोग नष्पिक्ष न्यायाधीश का कठोर नर्णिय सुनेंगे: *'मेरे पास से चले जाओ, हे श्रापति लोगो, उस सनातन आग में जो शैतान और उसके दूतों के लिए तैयार की गई है* (मत्ती 25:41)। इसके अलावा, पवत्रि शास्त्र — ब) गवाही देता है कि *प्रभु का श्राप दुष्टों के घर पर है* (नीतविचन 3:33; तुलना करें 15:25), और *वह उनकी अधार्मकिता उन्हीं पर लौटाएगा, और उन्हें उनकी दुष्टता से नष्ट कर देगा; प्रभु हमारा परमेश्वर उन्हें नष्ट कर देगा* (भजन संहति 93:23); c) ईश्वर को एक भस्म करने वाली आग कहता है: *'क्योंकि हमारा परमेश्वर भस्म करने वाली आग है* (इब्रानयिों 12:29; व्यवस्थावविरण 4:24), और d) मानव सदृश रूप में उस पर क्रोध और प्रतशिोध का आरोप लगाता है: *परमेश्वर का क्रोध स्वर्ग से उन सब मनुष्यों की अधार्मकिता और दुष्टता के वरिुद्ध प्रकट होता है, जो अपनी अधार्मकिता से सत्य को दबाते हैं* (रोमयिों 1:18; तुलना करें नर्गिमन 32:10; गनिती 11:10; भजन 2:5, 12; 87:17; अय्यूब 7:14); *'प्रतशिोध मेरा है; मैं प्रतफिल दूँगा,' प्रभु कहते हैं* (रोमयिों 12:19; इब्रानयिों 10:80; व्यवस्थावविरण 32:35); *हे प्रतशिोध के परमेश्वर, हे प्रभु, प्रतशिोध के परमेश्वर, अपना परचिय दे* (भजन संहति 93:1)।

चर्च के पवत्रि पति और शक्षिक, जब ईश्वर की न्यायशीलता पर चर्चा करते थे, तो उन्होंने अन्य बातों के अलावा, इस गुण के बारे में आम तौर पर उठाए जाने वाले संदेहों को दूर करने का प्रयास कयिा, जनिमें मुख्य रूप से दो हैं:

पहला: ईश्वर में पापयिों को दंड देने वाले सत्य को उसकी अनंत दया के साथ कैसे सामंजस्य स्थापति कयिा जाए? कुछ प्राचीन वधिर्मी (नोस्टकि), इसे असंगत मानते हुए, दो ईश्वर मानने का वचिार लेकर आए: एक सर्वोच्च ईश्वर—जो दयालु है—और उससे अधीनस्थ एक ईश्वर—जो न्यायप्रयि है।[361] ऐसे वचिार के वरिुद्ध, प्रारंभकि चर्च के पादरयिों ने कहा कि सच्चा ईश्वर अनविार्य रूप से दयालु और न्यायी दोनों होना चाहिए;[362] कि उसकी दयालुता धर्मी दयालुता है, और उसका न्याय अच्छा न्याय है;[363] कि वह तब भी न्यायी बना रहता है जब वह हमारे पापों को क्षमा करता है और हम पर दया दखिाता है;[364] वह तब भी अच्छा ही रहता है जब वह हमारे पापों के लिए हमें दंडति करता है, क्योंकि वह एक पति की तरह दंडति करता है, न कि क्रोध या प्रतशिोध के लिए, बल्कि हमें सुधारने और हमारे नैतकि कल्याण

---

361 देखें *आइरेनयिस,* *एगेंस्ट हेरेसीज़* III, 25, n. 3; *टर्तुल्लयिन,* *एगेंस्ट मार्शन* 1,6; *एपफिानयिस,* *एगेंस्ट हेरेसीज़* LXII, 2.

362 *इरनेयस,* *कॉन्ट्रा हेरेसेस* III, 25, n. 2; *टर्टुलयिन,* *एडवर्सस मार्सयिोनेम* 11, 12; *डे रेसरेक्शन कैर्न्स* XIV.

363 *क्लेमेंट ऑफ़ एलेक्ज़ेंड्रयिा,* *स्ट्रोमैटा* VI, 14; *क्रसिोस्टोम,* *भजन संहति पर व्याख्या* XXXIV, n. 4; *इलारयिन,* *भजन संहति पर प्रबंध* CXLIV, n. 14; *ऑगस्टीन,* *अक्षरशःअर्थ के अनुसार उत्पत्ति पर* 1, 11.

364 *ऑगस्टीन,* भजन संहति CXLVII पर व्याख्या, संख्या 13: "और जब वह दंड देता है, तो वह न्यायी है; और जब वह दया दखिाता है, तो वह न्यायी है; क्योंकि जो इसके योग्य हैं, उन पर दया दखिाने से अधकि न्यायी क्या हो सकता है?" (कन्फेशन्स, भजन संहति XCVIII पर व्याख्या, संख्या 7, 8)।

के लिए;[365] आदि। उसके दंड भी उसकी न्यायप्रियता की तुलना में हमारे प्रति उसकी पितृसुलभ दया और प्रेम की गवाही अधिक देते हैं।[366]

दूसरा: हम ईश्वर की न्यायसंगतता के साथ इस तथ्य को कैसे सामंजस्य कर सकते हैं कि धर्मी अक्सर पृथ्वी पर पीड़ित होते हैं, जबकि पापी समृद्धि प्राप्त करते हैं? इसके उत्तर में प्राचीन पादरियों ने उत्तर दिया: क) लोगों के संबंध में ईश्वर की न्यायसंगतता को उनके वर्तमान जीवन की सीमाओं तक सीमित नहीं किया जाना चाहिए, जो उनके लिए केवल परीक्षाओं का स्थान और अनंत काल के लिए तैयारी का समय है; एक और जीवन है, जहाँ ईश्वर की न्यायप्रियता सभी को उनके कर्मों के अनुसार पुरस्कृत करेगी;[367] c) ईश्वर अक्सर न्याय के अनुसार यहाँ धर्मी लोगों को दंडित करते हैं: क्योंकि पृथ्वी पर कोई भी धर्मी व्यक्ति ऐसा नहीं है जिसने किसी न किसी रूप में पाप न किया हो; वह पापियों को भी न्याय के अनुसार पुरस्कृत करते हैं: क्योंकि ऐसे पापी भी हैं जिनके भीतर थोड़ी-बहुत अच्छाई होती है;[368] c) वह धर्मी लोगों को एक अच्छे उद्देश्य के लिए दंडित करता है, ताकि परीक्षाओं के माध्यम से वह उन्हें सभी पापी अशुद्धियों से शुद्ध कर सके और उन्हें भलाई में और अधिक मजबूत बना सके, और ताकि, यहाँ अस्थायी रूप से दंडित करने के बाद, वह उन्हें अनंतकाल में दंडित न करे; वह पापियों को एक अच्छे उद्देश्य से क्षमा करता है, ताकि वे उसकी असीम पितृसुलभ दया को अनुभव कर सकें और उन्हें पश्चाताप का समय मिल सके, या वह उन्हें यहाँ उनमें मौजूद किसी भी भलाई के लिए पुरस्कृत करता है, ताकि वहाँ वह उनके सभी बुरे कर्मों का प्रतिफल चुका सके;[369] (d) फिर भी, दूसरी ओर यह निश्चित है कि यहाँ भी पापी अक्सर दंड भोगते हैं, जबकि धर्मी को पुरस्कार मिलता है, और यह कि धर्मी, विपत्ति के बीच में भी, सबसे कीमती आंतरिक आशीर्वादों का आनंद लेते हैं: ईश्वर से प्राप्त आध्यात्मिक शांति, आनंद और सांत्वना, जबकि पापी सदैव अपनी ही वासनाओं और अधर्मों में पीड़ा भोगते हैं, जो उनकी आत्मा और शरीर पर विनाशकारी प्रभाव डालते हैं।[370]

यहाँ तक कि स्वस्थ तर्क को भी ईश्वर में सर्वोत्तम न्याय को स्वीकार करना चाहिए।[371] दूसरों के प्रति कोई भी अन्याय हम में केवल दो कारणों से उत्पन्न हो सकता है: अज्ञानता या हमारे तर्क की त्रुटि, और इच्छा की विकृति से। लेकिन ईश्वर में, इन दोनों में से कोई भी कारण स्थान नहीं पा सकता: ईश्वर सर्वज्ञ और अत्यंत पवित्र सत्ता हैं; वह सब कुछ जानता है, जिसमें नैतिक प्राणियों के सबसे गुप्त कर्म भी शामिल हैं, और उन्हें न्यायपूर्वक न्याय करने में सक्षम है; वह अपनी स्वभाविक प्रकृति से ही सभी भलाई को प्रेम करता है और सभी बुराइयों से घृणा करता है। आइए यह भी जोड़ें कि ईश्वर सर्वशक्तिमान है, जिसके पास परिणामस्वरूप दूसरों को उनके गुणों के अनुसार पुरस्कृत करने के सभी साधन मौजूद हैं।

§22. ईश्वर के सारभूत गुणों का उनके सार और एक-दूसरे के साथ संबंध।

इस प्रकार ईश्वर के सार और उसके सारभूत गुणों के बारे में, प्रत्येक को बारी-बारी से, रूढ़िवादी सिद्धांत को प्रस्तुत करने के बाद, हम स्वाभाविक रूप से अब एक-दूसरे के प्रति उनके पारस्परिक संबंध के प्रश्न पर आते हैं। यह प्रश्न प्राचीन काल से ही चर्च के भीतर, और विशेष रूप से मध्य युग के दौरान, पश्चिम और पूर्व दोनों में, बहस का विषय रहा है, और इसे सुलझाने में, लोग अक्सर चरमपंथ में पड़ गए हैं। पहला चरम यह मानता है कि ईश्वर के सार और उनके आवश्यक गुणों के बीच, और साथ ही स्वयं गुणों के बीच, एक वास्तविक भेद (τώ πράγματι, realis) है, ताकि ये गुण ईश्वर में सार से और एक-दूसरे से भी कुछ अलग होते हैं; दूसरा चरम, इसके विपरीत, यह दावा करता है कि ईश्वर का सार और उसके सभी आवश्यक गुण एक-दूसरे के साथ पूरी तरह से एकरूप हैं, कि वे न केवल वास्तविकता में बल्कि हमारी मानसिक

---

[365] *टर्तुल्लियन,* *कॉन्ट्रा मार्शियन*, II, अध्याय 13; *क्रिसोस्टोम,* *द पसाम्स पर टिप्पणी*, IV, संख्या 7; VI, संख्या 1; CXVII, संख्या 1; *एम्ब्रोज़,* *दुनिया से पलायन पर*, अध्याय III, संख्या 14; *द पसाम्स पर टिप्पणी*, XXXVII, संख्या 17 और 26; *ऑगस्टीन,* *द पसाम्स पर टिप्पणी*, LV, संख्या 13.

[366] *टर्तुल्लियन,* *डे रेसरेक्शियोने कार्न्स*, XIV; *ऑगस्टीन,* *मार्सेलस को पत्र 138*.

[367] *क्रिसोस्टोम,* मत्ती पर होमलियाँ, होमली XIII, n. 6.

[368] *क्रिसोस्टोम,* कार्य, खंड 1, पृ. 744, 786, सं. डी मोन्फौकॉन।

[369] *क्रिसोस्टोम,* कृतियाँ, खंड 1, पृ. 749, 789; खंड II, पृ. 257, 258; खंड X, पृ. 429; *ऑगस्टीन,* पत्र CCX, या LXXXVII, खंड 1.

[370] *क्रिसोस्टोम,* ओलंपियास को पत्र XVII; 1 कुरिन्थियों 11 पर होमीली 1, संख्या 3; *ऑगस्टीन,* भजन संहिता LVII पर टिप्पणी, संख्या 20.

[371] जैसा कि यहां तक कि विधर्मी भी स्वीकार करते थे। *एस्काइलस,* एगेमैनन, 369, 813; *सोफोकलीज़,* एजैक्स, 133; इलेक्ट्रा, 1383; एंटीगोनी, 1140।

धारणाओं में भी अवभाज्य हैं (ἐπινοία, νόησει, cogitatione), और कि ईश्वर को आत्मीय रूप से निर्दिष्ट की गई सभी विभिन्न विशेषताएँ—उदाहरण के लिए, स्व-अस्तित्व, बुद्धि, भलाई और न्याय—ईश्वर में एक ही और वही वस्तु दर्शाती हैं।[372] ईश्वर के सार और आवश्यक गुणों के बारे में उस शिक्षा का सख्ती से पालन करते हुए जो ऑर्थोडॉक्स चर्च हमें दिव्य प्रकटिकरण के आधार पर प्रदान करती है, हमें कहना चाहिए कि ये दोनों चरम सीमाएँ समान रूप से सत्य से परे हैं, और हम इनमें से किसी को भी स्वीकार नहीं कर सकते — क) कि ईश्वर का सार और आवश्यक गुण वास्तविकता में एक-दूसरे से भिन्न और अलग हैं; न ही — b) कि हमारे मानसिक अवधारणाओं में भी उनके बीच कोई भेद नहीं है।

प्रथम प्रस्ताव: 'ईश्वर का सार और उसके अनिवार्य गुण वास्तव में एक-दूसरे से अलग या पृथक नहीं हैं; इसके विपरीत, वे ईश्वर में एकता का निर्माण करते हैं।' यह विचार अनिवार्य रूप से निम्नलिखित से उत्पन्न होता है:

1) पवित्र धर्मग्रंथ के उन अंशों से जहाँ ईश्वर को सबसे शुद्ध आत्मा के रूप में चित्रित किया गया है, और जिनसे सभी भौतिकता, देहबद्धता और जटिलता हटा दी गई है।[373] लेकिन यदि ईश्वर में, आवश्यक गुण वास्तव में उनके सार से और एक-दूसरे से अलग और पृथक होते, तो वह सरल नहीं बल्कि मिश्रित होते, अर्थात्, वह अपने सार और अपने गुणों से मिलकर बने होते, जो एक-दूसरे से अलग हैं। चर्च के पवित्र पिताओं ने ठीक इसी प्रकार तर्क किया: 'ईश्वरत्व सरल है, संयुक्त नहीं,' कहते हैं संत जॉन ऑफ़ दमास्कस; 'लेकिन जो अनेक और विविध तत्वों से मिलकर बना होता है, वह संयुक्त होता है। इस प्रकार, यदि हम अकल्पितता, अनंतता, अदेहता, अमरता, शाश्वतता, सद्गुण, सृजनात्मक शक्ति और इसी तरह के गुणों को ईश्वर में मौलिक भेद (οὐσιωδείς διαφοράς ἐπί Θεοϋ) कहें, तो ईश्वरत्व, इतने सारे गुणों से मिलकर होने के कारण, सरल नहीं बल्कि जटिल होगा; और ऐसा कहना अधर्म की पराकाष्ठा है।"[374] और इससे भी पहले, संत बेसिल द ग्रेट ने यह साबित करते हुए कि पवित्रता स्वयं पवित्र आत्मा के सार का हिस्सा है, क्योंकि वह सरल है, लिखा: "हालांकि, यदि पवित्र आत्मा सरल नहीं है, तो वह अपने सार और पवित्रता से मिलकर बना है, लेकिन ऐसा कोई अस्तित्व जटिल है। तो, कौन इतना मूर्ख है जो पवित्र आत्मा को सरल के बजाय एक मिश्रित सत्ता कहे, और—उनकी सरलता के कारण—पिता और पुत्र के समतत् कहने से इंकार करे?"[375] ईश्वर की अविभाज्यता के इसी विचार को, कि वे अलग-अलग सार और गुणों में विभाजित नहीं हो सकते, एथनासियस द ग्रेट, हिलरी और अलेक्जेंड्रिया के सिरिल में भी पाया जाता है।[376]

2) पवित्र शास्त्र के उन अंशों से जहाँ ईश्वर को न केवल जीवन, सत्य, बुद्धि, प्रेम आदि गुणों का धनी माना गया है, बल्कि ये सभी गुण उसमें निहित भी बताए गए हैं, उसे —

क) सत्य और जीवन: *'मैं मार्ग, सत्य और जीवन हूँ'* (यूहन्ना 14:6);

ख) प्रेम: *'ईश्वर प्रेम है'* (1 यूहन्ना 4:8);

ग) ज्ञान और शक्ति: *'हम मसीह को, जो सलीब पर चढ़ाया गया, प्रचार करते हैं... जो परमेश्वर की शक्ति और परमेश्वर का ज्ञान है'* (1 कुरिन्थियों 1:23-24)। यदि परमेश्वर के सारभूत गुण वास्तव में उसके सार से और एक-दूसरे

---

[372] यह दृष्टिकोण प्रारंभिक शताब्दियों में एटियस, यूनोमियस और उनके अनुयायियों—यूनोमियनों या अनोमोएनों—द्वारा, और 14वीं शताब्दी में बारलाम और अकिंडिनोस और उनके अनुयायियों द्वारा अपनाया गया था, जिनके खिलाफ कॉन्स्टेंटिनोपल में चार परिषदें आयोजित की गईं *(बेसिल,* *Contra Eunomium*, पुस्तक I; *कांटाक्यूज़.* Histor. 11,38 et seq.; *Nicephor. Gregor.* Histor. Byzant. XI, 10; *Leo Allat.* de concens. eccl. Orient. et occid. 11,17; Graec. Orthod. Vol. I, p. 756; *Le Quien.* — Oriens. Christ. 11,55). 12वीं सदी में पश्चिम में ऐसा करने वाले पहले व्यक्ति पिकिटावियम के बिशप गिल्बर्ट पोरेटन थे, जबकि पूर्व में 14वीं सदी में माउंट अथोस के कुछ निश्चित भिक्षु थे *(एलेक्स. नैटल.* *सिनॉप्स. इन सेक. XI एट XII*, अध्याय 4, अनुच्छेद 9; *ग्रेगोर. पालामा*— *ओरेट. I एट II इन डोमिनिकि. Transform. apud *Combefis.* Auctor. noviss. Vol. II, Part 1, p. 106 et seq.; *Manuel Galecas,* On Essence and Operations, ibid., apud *Combefis,* p. 1 et seq.; *John Cyparisiot*, Palamit, Sermons on Transgressions V, ibid., p. 68 et seq.). ये अभिव्यक्तियाँ: τώ πράγματι, या ἐπινοία, νοήσει — का उपयोग स्वयं ग्रीक चर्च के पुरोहितों द्वारा ईश्वर के सार और गुणों के बीच के अंतर के संबंध में विधर्मियों के खिलाफ तर्क देते समय किया गया था; *बेसिल,* *Contra Evnomianum*, पुस्तक I; *ग्रेगरी ऑफ निस्सा,* *Contra Evnomianum*, पुस्तक XII और *कैटेकिज़्म*, अध्याय 2; *दामास्कनस,* *डे फाइड ऑर्थोडॉक्सा*, पुस्तक 1, अध्याय 8)।

[373] इन अंशों का उल्लेख पहले किया गया था, जब यह अवधारणा समझाई जा रही थी कि *ईश्वर आत्मा है।*

[374] ऑर्थोडॉक्स विश्वास का सटीक विवरण, पुस्तक 1, अध्याय 9।

[375] *बेसिल,* पत्र 141, पृ. 933।

[376] *अथेनासियस:* .... क्योंकि ईश्वर, मानवीय दृष्टि से, एक संयुक्त सत्ता पाए जाएँगे, जिसमें एक वस्तु उनके भीतर विद्यमान है जिसे वे धारण करते हैं, और दूसरी वस्तु स्वयं वे हैं, धारक;. (ओरेट. V); *हिलैरियस:* क्योंकि ईश्वर मानव अर्थ में रचित नहीं हैं, ऐसा कि उनमें एक वस्तु हो जिसे वे धारण करते हों, और दूसरी वह स्वयं हों जो उसे धारण करते हों, बल्कि जो कुछ भी वे हैं वह संपूर्णतः जीवन है (डी ट्रिनिटि. लिबि. VIII); *अलेक्जेंड्रिया के सिरिल,* थिसॉरस, लिबि. XXXIV, पृ. 353.

से अलग और पृथक होते, तो ऐसे सभी भाववाक्य अनुचित होते; तब कोई ईश्वर को केवल उनके गुण—प्रज्ञा, प्रेम और अन्य—को मात्र भागों के रूप में ही मान सकता था; लेकिन अब यह नहीं कहा जा सकता था कि वह संपूर्ण प्रज्ञा और प्रेम है, कि वह, अपने सार में ही, प्रेम और प्रज्ञा है, या कि वही ईश्वर जो प्रज्ञा है, प्रेम भी है। इस संबंध में पवित्र शास्त्र हमें जो प्रस्तुत करता है, वह चर्च के पवित्र पिताओं और शिक्षकों की रचनाओं में भी पाया जाता है, जैसे:

(क) संत आइरेनियस में: 'ईश्वर सरल और अविभाज्य है, और पूरी तरह से स्वयं के समान और बराबर है; वह पूरी तरह से अनुभूति है, पूरी तरह से आत्मा है, पूरी तरह से विचार है, पूरी तरह से मन है, पूरी तरह से सुनना है, पूरी तरह से दृष्टि है, पूरी तरह से प्रकाश है, और पूरी तरह से सभी अच्छाइयों का स्रोत है;'[377]

ख) सेंट सिरिल ऑफ जेरूसलम से: "हमारे पास एक ईश्वर है जो अपने सार में एक है; क्योंकि यद्यपि उसे अच्छा और धर्मी, और सर्वशक्तिमान और सबओथ कहा जाता है, वह विविध या अलग नहीं है; बल्कि एक और वही होकर, वह ईश्वरत्व के अनगिनत कार्यों को प्रकट करता है; वह एक गुण में दूसरे से बड़ा नहीं है, न ही दूसरे में छोटा है, बल्कि हर मामले में स्वयं के समान है; वह केवल मानव जाति के प्रति अपने प्रेम में महान और अपनी बुद्धि में छोटा नहीं है, बल्कि मानव जाति के प्रति उसका प्रेम उसकी बुद्धि के बराबर है; वह आंशिक रूप से देखता है और आंशिक रूप से नहीं देखता, ऐसा नहीं है; बल्कि वह पूरी तरह से आँख है, पूरी तरह से कान है और पूरी तरह से मन है;"[378]

ग) सेंट ग्रेगरी ऑफ निस्सा से: "ईश्वर, अपनी प्रकृति से ही, वह सब कुछ है जो अस्तित्व में है; वह सत्य, ज्ञान और शक्ति का सार है;"[379]

d) संत मैक्सिमस द कन्फेसर: "लोगों को विभिन्न रूप से अच्छा, बुद्धिमान या न्यायप्रिय कहा जाता है; लेकिन ईश्वर, बिना किसी सीमा के, ये सभी चीजें हैं: वह अच्छा, बुद्धिमान और न्यायप्रिय है; वह सभी पूर्णता के सार के रूप में अच्छाई, बुद्धिमत्ता और न्याय है।"[380] इसी बात को धन्य ऑगस्टीन[381] और रोम के पोप संत लियो ने भी कहा है।[382]

दूसरा प्रस्ताव: "ईश्वर का सार और उसके अनिवार्य गुण, यद्यपि वास्तव में न तो एक-दूसरे से भिन्न हैं और न ही अलग, फिर भी हमारी मानसिक धारणाओं में वे विभेदित होते हैं; और यह विभेद स्वयं ईश्वर में ही आधारहीन नहीं है, इसलिए उसके किसी एक गुण की अवधारणा साथ ही उसकी सत्ता या किसी अन्य गुण की अवधारणा नहीं होती।" और यह प्रस्ताव —

1) यह पवित्र शास्त्र से अनिवार्य रूप से निष्कर्षित होता है। वहाँ हम देखते हैं कि एक अंश में परमेश्वर को शाश्वत कहा गया है, दूसरे में सर्वव्यापी, तीसरे में सर्व-सत्, चौथे में न्यायपूर्ण या सर्व-प्रज्ञावान, और उनकी शाश्वतता का वर्णन एक प्रकार से किया गया है (भजन संहिता 101:26–28), उनकी सर्वव्यापकता का वर्णन दूसरे प्रकार से (भजन संहिता 138:7–10), उनकी भलाई एक और तरीके से (भजन संहिता 144:9), और उनकी न्यायप्रियता और बुद्धिमत्ता एक और तरीके से (मत्ती 16:27; भजन संहिता 103:24)। इन सब को पढ़कर, जो स्वयं परमेश्वर—जो सत्य और अचूक हैं—ने हमें सिखाया है, हम स्वाभाविक रूप से अपने मन में उनके अनेक गुणों में अंतर करना सीख जाते हैं, और हम किसी भी तरह से यह स्वीकार नहीं कर सकते कि उदाहरण के लिए, आध्यात्मिकता और अनंतता, सर्वव्यापकता और भलाई, न्याय और बुद्धि, भले ही वह, एक सबसे सरल और सबसे पूर्ण सत्ता के रूप में, पूरी तरह से भलाई, पूरी तरह

---

[377] *इरनेयस*, *एगेंस्ट हेरेसीज़*, पुस्तक II, अध्याय 12, n. 3; *कन्फेशन्स*, 1, 12, n. 2; IV, II, n. 2.

[378] कैटेकेटिकल लेक्चर्स, पुस्तक VI, संख्या 7, रूसी अनुवाद में पृष्ठ 103।

[379] *ग्रेगरी ऑफ निस्सा*, होमीली 1 ऑन द सॉन्ग ऑफ सॉन्ग्स, खंड 1, पृ. 570: 'लेकिन प्रभु, अपनी ही प्रकृति से—जो सत्य, ज्ञान और शक्ति है—इन चीज़ों का सार हैं।'

[380] *यूथिमियस* ऑफ *ज़िगाबेना*, *पैनोप्लिया*, शीर्षक III, अनुच्छेद 1 में।

[381] इसलिए एक ही वस्तु का उल्लेख किया जाता है, चाहे उसे शाश्वत ईश्वर कहा जाए, या अमर, या अक्षय, या अपरिवर्तनीय; और इसी प्रकार, जब उसे जीवित और बुद्धिमान कहा जाता है—जो निश्चित रूप से बुद्धिमान कहने का अर्थ है—तो उसी एक वस्तु का उल्लेख होता है। क्योंकि वह ऐसी बुद्धि का स्वामी नहीं है जिससे वह बुद्धिमान हो, बल्कि वह स्वयं बुद्धि है। और यह जीवन, और यह स्वयं सद्गुण या शक्ति, और यह स्वयं रूप, जिसके द्वारा वह शक्तिशाली और सुंदर कहा जाता है… और इसी तरह (On the Trinity, Book XV, Chapter 5, n. 7; Confessions, Book XV, Chapter 3; Book VI, Chapter 7; On Faith and the Creed, Chapter 9, al. 20)

[382] कोई भी मनुष्य सत्य नहीं है, कोई भी मनुष्य ज्ञान नहीं है, कोई भी मनुष्य न्याय नहीं है; फिर भी कई लोग सत्य, ज्ञान और न्याय में सहभागी हैं। परन्तु परमेश्वर को अकेले ही ऐसी किसी भी सहभागिता की आवश्यकता नहीं है। जो कुछ भी सही ढंग से उस के विषय में सोचा जाता है, *वह कोई गुण नहीं, बल्कि उसका वास्तविक सार है।* क्योंकि अपरिवर्तनीय में कुछ भी जुड़ता नहीं है, और न ही उससे कुछ नष्ट होता है, क्योंकि जो शाश्वत है वह हमेशा उसके लिए उपयुक्त है (Epist. XCIII, अध्याय 5)।

से न्याय, पूरी तरह से बुद्धि, पूरी तरह से शाश्वत, आध्यात्मिक और सर्वव्यापी है; और भले ही उसकी सभी विशेषताएँ उसके भीतर अविभाज्य हैं और एक एकल एकता का निर्माण करती हैं।

२) इसका विस्तार से प्रतिपादन चर्च के पवित्र पिताओं और शिक्षकों, विशेष रूप से बेसिल द ग्रेट और ग्रेगरी ऑफ निस्सा ने, एनोमियन (Anomoeans) के विरोध में किया था, जो यह मानते थे कि ईश्वर में कुछ भी, विचार (κατ' ἐπίνοιαν) में भी, अलग नहीं किया जा सकता, और कि नाम जो उन पर लागू किए गए हैं—प्रज्ञा, अनंतता, न्याय और अन्य—सभी बिना भेदभाव के एक ही अवधारणा को व्यक्त करते हैं, और किसी विशेष गुण के बजाय उनके स्वभाव और सार को दर्शाते हैं।[383]

संत बेसिल द ग्रेट ने लिखा, "नहीं, सभी (दैवीय) नामों का अर्थ एक जैसा नहीं होता, क्योंकि *'प्रकाश' का* अर्थ *'बेल' के अर्थ* से, और *'बेल' का अर्थ 'मार्ग' के अर्थ* से, और *'मार्ग'* का अर्थ *'चरवाहे' के अर्थ* से अलग है... और एक भी ऐसा नाम नहीं है जो ईश्वर के पूरे स्वभाव की घोषणा करते हुए, उसे पूरी तरह से व्यक्त करने के लिए पर्याप्त हो; बल्कि, कई और विविध नाम, जिनमें से प्रत्येक का अपना अलग अर्थ है, हमें एक ऐसी अवधारणा देते हैं जो, बेशक, संपूर्ण की तुलना में अस्पष्ट और बहुत सीमित है, लेकिन हमारे लिए पर्याप्त है।[384] तो यह कहना कितना हास्यास्पद है कि सृष्टि ही सार है, या परमप्रसाद, या पूर्वज्ञान भी सार है; और, सामान्य रूप से, हर क्रिया को 'सार' कहना? और यदि ये पद एक ही अर्थ की ओर ले जाते हैं, तो अनिवार्य रूप से वे एक-दूसरे के समतुल्य हैं, जैसा कि हम बहुनामी व्यक्तियों के मामले में देखते हैं, जब, उदाहरण के लिए, हम एक ही व्यक्ति को साइमन, पीटर और सेफास कहते हैं। परिणामस्वरूप, जिसने भी ईश्वर की अपरिवर्तनीयता के बारे में सुना है, वह भी उनकी अजन्माता की अवधारणा तक पहुँच जाएगा। और जिसने भी उसकी अविभाज्यता के बारे में सुना है, वह सृष्टि की अवधारणा तक पहुँच जाएगा। और ऐसी संमिश्रण से अधिक बेतुका और क्या हो सकता है, जब वह जो प्रत्येक नाम को उसके उचित अर्थ से वंचित कर देता है, सामान्य प्रचलन और आत्मा की शिक्षा के विपरीत नियम निर्धारित करता है? जब हम ईश्वर के बारे में सुनते हैं कि *'आपने सभी चीज़ें बुद्धि से बनाई हैं'* (भजन संहिता 103:24), तो हम उनकी सृजनात्मक कला को पहचानते हैं। जब हम सुनते हैं कि *'आप अपना हाथ खोलते हैं और अपनी इच्छा के अनुसार हर जीवित प्राणी को तृप्त करते हैं'* (भजन संहिता 144:16), तो हम सर्वव्यापी परमप्रबंध को पहचानते हैं। इसके अलावा, जब हम सुनते हैं कि *उसने अंधकार को अपना आवरण बना लिया है* (भजन संहिता 17:12), तो हम उसके स्वभाव की अदृश्यता को समझते हैं। और फिर, परमेश्वर के मुख से जो कहा गया है उसे सुनकर: *'मैं यहोवा हूँ; मैं नहीं बदलता'* (मलाकी 3:6), हम परमेश्वर के सार की शाश्वत पहचान और अपरिवर्तनीयता को पहचानते हैं। तो क्या यह सरासर मूर्खता नहीं है कि यह दावा किया जाए कि प्रत्येक विशेष नाम का अपना विशिष्ट अर्थ नहीं है, बल्कि सभी नाम, अपनी विशिष्टता के बावजूद, एक-दूसरे के बराबर हैं?"[385]

इन शब्दों में, पवित्र पिता उस एक कारण की ओर इशारा करते हैं कि हमारे मानसिक अवधारणाओं में हम ईश्वर के नामों और गुणों के बीच अंतर क्यों करते हैं: ईश्वर के गुणों के बीच हमारे भेद केवल शुद्ध रूप से व्यक्तिपरक नहीं हैं — नहीं, उनका आधार स्वयं ईश्वर में, उनके विभिन्न प्रकटीकरणों, कार्यों और हमारे साथ उनके संबंधों में निहित है, जो सृष्टि और परमेश्वर की व्यवस्था हैं, यद्यपि ईश्वर स्वयं, अपने आप में, पूरी तरह से एक, सरल और सहज हैं। संत ग्रेगरी ऑफ निसा एक अन्य कारण और आधार की ओर इशारा करते हैं जब वे कहते हैं: 'यह किसी को नहीं पता कि ईश्वर का स्वभाव, चाहे उसकी सत्ता कुछ भी हो, एक, सरल, अविभाज्य है, और किसी भी तरह से किसी भी प्रकार के विविध संयोजन के रूप में कल्पना नहीं किया जा सकता? लेकिन चूँकि मानवीय आत्मा, जो नीचे घूमती और सांसारिक शरीर में डूबी हुई है, उस साध्य (ईश्वर) को एक साथ समझने में असमर्थ है, वह कई मानसिक छवियों के माध्यम से अनेक और खंडित तरीकों से अकल्पनीय स्वभाव तक पहुँचती है, और किसी एक ही विचार से छिपे हुए रहस्य को समझ नहीं सकती।"[386] अर्थात्, इसका कारण एक ओर तो दिव्य सत्ता की अनंत गरिमा और अपार विशालता में निहित है, और दूसरी ओर, हमारी

---

[383] संत बेसिल द ग्रेट यूनोमियस और उसके अनुयायियों की इस शिक्षा के उद्देश्य की व्याख्या करते हैं: 'यूनोमियस इस बात से इनकार करता है कि ईश्वर की *अजन्मापन* को हमारी अवधारणा (κατ' ἐπίνοιαν) के अनुसार प्रतिष्ठित किया जा सकता है, — इस आशा में कि इससे यह अधिक आसानी से साबित हो जाएगा कि अजन्मता स्वयं ईश्वर का सार है, और इससे यह अविवादनीय निष्कर्ष निकाला जा सके कि पुत्र, एक उत्पन्न होने वाले के रूप में, पिता के समान सार का नहीं है — ἀνόμοιος" (कॉन्ट्र. यूनोम. लिब. I, "पवित्र पिताओं के कार्य" VII, 20)।

[384] "पवित्र पिताओं के कार्य" VII, पृ. 24 और 31: πλείω δέ καί ποικίλα (ὀνόματα) κατ' ἰδίαν ἕκαστον σημασίαν...

[385] उपरोक्त, पृ. 26–27।

[386] Contra Eunom. पुस्तक XII, पृ. 402.

बुद्धि की सीमाओं और कमजोरी में, जो अनिवार्य रूप से, ईश्वर को, मानो, टुकड़ों में और विभिन्न कोणों से देखती है, और एक पहलू में उसे आरंभहीन और स्व-अस्तित्वमान मानती है, एक में—सर्वव्यापकता; एक में—सनातनता; एक में—सर्वज्ञता; एक में—पवित्रता, या अच्छाई, या सत्य, और अन्य गुण, जो सभी ईश्वर में एक-दूसरे से अविभाज्य हैं, फिर भी एकसार नहीं हैं। अन्यत्र, संत ग्रेगरी, अपने भाई संत बेसिल द ग्रेट की तरह, यूनोमियस के खिलाफ यह तर्क देते हैं कि ईश्वर के सभी अनगिनत गुणों में से प्रत्येक का अपना अलग अर्थ है, और किसी भी तरह से एक दूसरे में समाहित नहीं है,[387] और वे उस विधर्मी का इस तथ्य के लिए मज़ाक उड़ाते हैं कि, ईश्वर के गुणों को मिलाकर, उसने कहा: "ईश्वर अपनी अनंतता से अजन्मा है, और अपनी अजन्मता से वह अनंत है; क्योंकि इन दोनों नामों का एक ही अर्थ है।"[388] इस संदर्भ में धन्य ऑगस्टीन के शब्द भी उल्लेखनीय हैं: "ईश्वर होना एक बात है, और पिता होना दूसरी। यद्यपि पितृत्व और सार (ईश्वर में) एक ही हैं, यह नहीं कहा जा सकता कि पिता, अपने पितृत्व के कारण, ईश्वर हैं, या कि वह अपने पितृत्व के कारण सर्वज्ञ हैं। हमारे धर्मपिताओं का दृष्टिकोण हमेशा से ही दृढ़ (स्थिर) रहा है, और इसी कारण उन्होंने एनोमियन (Anomoeans) को आस्था की सीमाओं से बहुत दूर भटक जाने के कारण अस्वीकार कर दिया, क्योंकि इन विधर्मी लोगों ने ईश्वर के सार और गुणों के बीच के सभी अंतर को समाप्त कर दिया था।"[389]

§ 23. धर्मसिद्धान्त का नैतिक अनुप्रयोग।

ईश्वर के सार और आवश्यक गुणों के बारे में यह सिद्धांत हमारे जीवन और गतिविधियों में सबसे दूरगामी प्रभाव डाल सकता है। इस सिद्धांत के प्रकाश में, न केवल किसी व्यक्ति के ईश्वर के प्रति कर्तव्य परिभाषित होते हैं, बल्कि ईसाई भक्ति के कई अन्य नियम भी निर्धारित होते हैं।

1) ईश्वर, अपने सार द्वारा, आत्मा हैं, और अपने सार के प्रमुख गुण द्वारा, जो अन्य सभी को समाहित करता है। आत्मा असीम है, अर्थात्, सबसे परिपूर्ण, सर्वोच्च, सर्व-महिमामय। अतः—

क) सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, हम ईश्वर का सम्मान करना और उससे प्रेम करना सीखते हैं: हम सबसे पूर्ण की ही आराधना और प्रेम करें, और कौन हो सकता है, जब सभी पूर्णताएँ स्वाभाविक रूप से हमारे भीतर इन दोनों भावनाओं को जगाती हैं? और ईश्वर के प्रति प्रेम, श्रद्धा के साथ मिलकर, उनके प्रति हमारे सभी कर्तव्यों का आधार बनता है (मत्ती 22:37)।

ख) इसके अलावा, हम यह भी सीखते हैं कि ईश्वर के प्रति हमारा प्रेम और हमारे श्रद्धाभाव इस प्रकार होने चाहिए:

क) सबसे सच्चा और आध्यात्मिक: *'ईश्वर आत्मा है, और जो उसकी उपासना करते हैं, उन्हें आत्मा और सत्य में उपासना करनी चाहिए,'* उद्धारकर्ता ने कहा (यूहन्ना 4:24); कोई भी बाहरी आराधना तभी मूल्यवान हो सकती है जब वह आंतरिक जीवन की अभिव्यक्ति हो: अन्यथा, यह परमेश्वर को अप्रसन्न करती है (यशायाह 1:11-15) — और भविष्यवक्ता के वचनों के अनुसार *परमेश्वर के लिए* सच्ची *भेंट एक कुचली हुई आत्मा है* (भजन संहिता 50:19);

bb) सर्वोच्च और सबसे पूर्ण: क्योंकि ईश्वर अपनी सिद्धियों में उन सभी अन्य प्राणियों से अनंत रूप से श्रेष्ठ हैं, जिनके प्रति हम श्रद्धा और प्रेम रख सकते हैं; और परिणामस्वरूप, यदि हमें सभी से बढ़कर किसी से प्रेम और सम्मान करना है, तो वह *प्रभु परमेश्वर* है ... *अपने पूरे हृदय से ..., और अपनी पूरी आत्मा से ..., और* अपने *पूरे मन से,* और अपनी सारी *शक्ति से* (मरकुस 12:30);

(cc) सबसे गहराई से श्रद्धालु: यदि स्वर्ग में सर्वशक्तिमान प्रभु के सिंहासन के चारों ओर रहने वाले सेराफिम भी, उसकी महिमा की भव्यता को सहन न कर सकने के कारण, एक-दूसरे से यह पुकारते समय अपने चेहरे ढाँप लेते हैं: *'सेनाओं का यहोवा पवित्र, पवित्र, पवित्र है* (यशायाह 6:2-3); तो हमें, जो उसकी सभी आध्यात्मिक प्राणियों में सबसे नीच और सबसे कमज़ोर हैं, उसे कितनी श्रद्धायुक्त भक्ति से सेवा करनी चाहिए (भजन संहिता 2:11)?

ग) आइए हम भजनकार के वचनों को ध्यान में रखते हुए, अपने हृदय और होठों से, अपने विचारों में और अपने पूरे जीवन में परमेश्वर की महिमा करना सीखें: *'हे राष्ट्रों के कुल, यहोवा को दान करो, यहोवा को महिमा और सम्मान दो...*

---

[387] और दिव्य जीवन के संबंध में अनगिनत अन्य अर्थ हैं, जिनमें से प्रत्येक को अर्थ-विज्ञान की आवाज़ों के माध्यम से, स्वयं अपनी विशिष्ट अर्थ के अनुसार उद्घोषित किया जाता है (Contra Eunom. Book XII, p. 410 et seq.).

[388] उपरोक्त, पृ. 415.

[389] त्रिति्व पर, पुस्तक VIII, अध्याय 4।

क्योंकि यहोवा महान और स्तुति के अति योग्य है; वह सब देवताओं से बढ़कर भययोग्य है' (भजन संहिता 95:7, 4; 144:3), और उद्धारकर्ता के वचन: *'तुम्हारा प्रकाश मनुष्यों के साम्हने चमके, कि वे तुम्हारे भले काम देखकर तुम्हारे स्वर्गीय पिता की महिमा करें* (मत्ती 5:16)।

(घ) अंत में, हम ईश्वर को अपने सर्वोच्च कल्याण के रूप में पाने का प्रयास करना सीखते हैं, और केवल उसी में पूर्ण मानसिक शांति की खोज करते हैं, दाऊद के साथ दोहराते हुए: *'स्वर्ग में मेरा और कौन है? और तेरे सिवा मैं पृथ्वी पर कुछ भी नहीं चाहता। मेरी देह और मेरा हृदय दोनों थक जाएँ,* परन्तु *परमेश्वर मेरे हृदय का बल और मेरी अनन्त भाग हैं* (भजन संहिता 72:25–26)। सत्य की खोज में हमारे मन की प्यास चाहे कितनी भी गहरी हो, परमेश्वर परम सत्य हैं; भलाई की ओर हमारी इच्छाशक्ति की प्रवृत्ति चाहे कितनी भी प्रबल हो, परमेश्वर परम पूर्ण भलाई हैं; चाहे हमारे हृदय का सुख और आनंद के लिए प्रेम कितना भी अतृप्त क्यों न हो, ईश्वर परम और अनंत आनंद हैं। तो फिर, उसमें सिवाय, हम अपनी आत्मा की सभी उच्च आवश्यकताओं के लिए पूर्ण संतुष्टि कहाँ पा सकते हैं?

२) दिव्य सत्ता के उन प्रत्येक गुणों पर विशेष रूप से चिंतन करके जो ईश्वर को उनकी रचनाओं से अलग करते हैं, हम अपने लिए नए सबक सीख सकते हैं। और —

क) यदि केवल ईश्वर ही स्वयंभू हैं—अर्थात्, वे किसी के भी ऋणी नहीं हैं—जबकि अन्य सभी प्राणी, और परिणामस्वरूप हम स्वयं भी, उनके ऋणी हैं; तो हमें अवश्य करना चाहिए:

क) शास्त्र के वचनों के अनुसार लगातार उसके सामने स्वयं को नम्र करें: *'तुम्हारे पास वह क्या है जो तुमने प्राप्त नहीं किया? और यदि तुमने इसे प्राप्त किया भी है, तो तुम ऐसे क्यों घमंड करते हो जैसे कि तुमने इसे प्राप्त नहीं किया?*' (1 कुरिन्थियों 4:7), और

bb) उसको निरंतर धन्यवाद देना: 'क्योंकि *हम उसी में जीते हैं और उसी में चलते फिरते हैं और उसी में अपना अस्तित्व रखते हैं*' (प्रेरितों के काम 17:28)।

ख) यदि केवल वही आत्म-संतुष्ट और सभी चीजों से संतुष्ट है, और इसलिए *उसे मेरे उपहारों की कोई आवश्यकता नहीं है* (भजन 15:2), बल्कि *वह स्वयं सभी को जीवन और सांस और सब कुछ देता है* (प्रेरितों के काम 17:25): तो हमें —

क) अपने भीतर उस पर सबसे पूर्ण निर्भरता और उसके प्रति पूर्ण समर्पण की भावना को पोषित करें, और —

bb) जब हम उसे कोई उपहार या बलिदान चढ़ाते हैं, तो यह कतई न सोचें कि हम सर्व-संपन्न को कोई उपकार कर रहे हैं, जबकि हमारे पास जो कुछ भी है वह सब उसकी ही संपत्ति है।

c) यह निश्चितता कि हम सर्वव्यापी परमेश्वर की स्वयं उपस्थिति में हैं, चाहे हम कहीं भी हों, —

क) स्वाभाविक रूप से हमें उसके सामने अत्यंत सावधानी और श्रद्धा के साथ आचरण करने के लिए प्रेरित करता है;

bb) हमें पाप से बचा सकता है, जैसे एक बार इसने यूसुफ को पाप से बचाया था (उत्पत्ति 39:9);

cc) सभी खतरों में हमें प्रोत्साहित और सांत्वना दे सकता है, जैसे इसने दाऊद को प्रोत्साहित किया, जिसने अपने बारे में कहा: *'मैंने हमेशा प्रभु को अपने सामने रखा है; क्योंकि वह मेरे दाहिने हाथ में है, मैं नहीं डगमगाऊँगा* (भजन संहिता 15:8);

dd) हमें हर स्थान पर प्रभु को पुकारने, उसकी स्तुति करने और धन्यवाद देने के लिए प्रेरित कर सकता है (यूहन्ना 4:21–24)।

d) यह ध्यान में रखते हुए कि केवल परमेश्वर ही शाश्वत है, जबकि पृथ्वी पर हमारे चारों ओर की अन्य सभी चीजें अस्थायी और क्षणिक हैं, हम सीखते हैं—

क) अपनी आशा नश्वर वस्तुओं पर न रखें, बल्कि परमेश्वर में उस एक अक्षय भलाई की खोज करें (मत्ती 6:19–20);

bb) *अपनी आशा राजकुमारों या मनुष्य के पुत्र में न रखना,* जो किसी भी क्षण मर सकते हैं और हमें बिना किसी सहारे के छोड़ सकते हैं (भजन संहिता 145:3–5), बल्कि अपनी सारी आशा उस एक में रखना जिसके पास अमरत्व है (1 तीमुथियुस 6:16), और जो हमें कभी न छोड़ेंगे।

e) परमेश्वर के पूर्ण अपरिवर्तनीय होने का विचार —

क) हमें ईश्वर पर इस विशेष निर्भरता की ओर और भी अधिक प्रेरित कर सकता है, क्योंकि लोग आम तौर पर बहुत चंचल होते हैं; इस पृथ्वी के महान और शक्तिशाली लोगों की कृपा इतनी आसानी से डगमगाती और फीकी पड़ जाती

है; यहां तक कि रिश्तेदारों और दोस्तों का प्यार भी अक्सर हमें निराश करता है — जबकि ईश्वर अकेले ही हमेशा एक जैसे और अपरिवर्तनीय हैं;

bb) साथ ही हमें नैतिक दृष्टि से ईश्वर की अपरिवर्तनीयता का अनुकरण करने के लिए प्रेरित कर सकता है, अर्थात् हमारे आत्मा की सभी धार्मिक आकांक्षाओं में और सद्गुण तथा मोक्ष के मार्ग पर हमारी अटूट प्रगति में दृढ़ता और स्थिरता के लिए प्रयास करना।

(e) सर्वशक्तिमान ईश्वर में एक जीवित विश्वास हमें सिखाता है —

aa) हमारे सभी कार्यों में उसकी सहायता और आशीर्वाद की खोज करना: *जब तक यहोवा घर न बनाए, तब तक जो उसे बनाते हैं, वे व्यर्थ परिश्रम करते हैं; जब तक यहोवा नगर की रक्षा न करे, तब तक पहरुआ व्यर्थ जागता रहता है* (भजन संहिता 126:1);

bb) किसी से न डरना और सबसे बड़े खतरों का सामना करते हुए भी हतोत्साहित न होना, बशर्ते हम वही करें जो उसे भाता है और इस प्रकार उसकी कृपा प्राप्त करें: *'यदि परमेश्वर हमारे पक्ष में है, तो हमारा विरोध कौन कर सकता है?'* (रोमियों 8:31); लेकिन—

cc) यदि हम ऐसा कुछ करते हैं जो उसे अप्रसन्न करता है, तो स्वयं उसके सामने डरना और कांपना: वह न केवल हमारे *शरीर को* बल्कि हमारी *आत्मा को* भी *गेहन्ना* में *नष्ट करने में* सक्षम है (मत्ती 10:28)।

3) यदि हम ईश्वर के मन के गुणों पर अपना ध्यान केंद्रित करें, तो हमें यहाँ भी बहुत कुछ शिक्षाप्रद मिलेगा।

(क) ईश्वर सर्वज्ञ है: यह धर्मी लोगों के लिए कितनी बड़ी सांत्वना और प्रोत्साहन का स्रोत है! भले ही लोग, उसके इरादों से अनजान और उसके कार्यों की सराहना करने में असमर्थ, उस पर अपमान करते हैं और यहाँ तक कि उसका उत्पीड़न भी करते हैं, — उसके लिए यह अनमोल है कि स्वयं ईश्वर स्पष्ट रूप से उसकी आत्मा को उसके सभी विचारों और इच्छाओं सहित देखते हैं, उद्धार के शत्रुओं के विरुद्ध रक्तरंजित संघर्ष में उसके सभी कर्मों को जानते हैं, उसकी स्वैच्छिक वंचनाओं और अयोग्य कष्टों को जानते हैं, और उसकी गंभीर परीक्षाओं के बीच हर आह और हर आँसू को जानते हैं। पापी के लिए यह कितना भयानक एहसास है! चाहे वह लोगों के सामने कितना भी पाखंड करके दिखावा करे, चाहे वह अपने आपराधिक इरादों को छिपाने की कितनी भी कोशिश कर ले, चाहे वह किसी भी अंधकार में अपने अन्याय करे—वह यह स्वीकार करने से खुद को रोक नहीं सकता कि एक ऐसा सत्ता है जिससे कोई चीज़ छिपी नहीं रह सकती, जिसके सामने *सब कुछ नंगा और प्रकट हो जाता है* (इब्रानियों 4:13), कि लोग धोखा खा सकते हैं, लेकिन ईश्वर कभी नहीं धोखा खाते।

ख) ईश्वर अनंत बुद्धिमान है: इसलिए—

क) यदि हम सार्वजनिक जीवन में या प्रकृति में ऐसी घटनाओं के साक्षी बनें, जो पहली नज़र में सार्वभौमिक विनाश और प्रलय का खतरा पैदा करती प्रतीत हों, तो हमारा मन और हृदय परेशान न हो: यह सब सर्वोच्च बुद्धि की अगम्य योजनाओं द्वारा लाया गया या अनुमत है;

bb) यदि हम स्वयं कठिन परिस्थितियों में हों तो हमें हतोत्साहित न होना चाहिए या परमेश्वर के विरुद्ध शिकायत नहीं करनी चाहिए, बल्कि हमें स्वयं को पूरी तरह से उनकी पवित्र इच्छा के हवाले कर देना चाहिए, यह विश्वास करते हुए कि वह हमसे बेहतर जानते हैं कि हमारे लिए क्या अच्छा है और क्या हानिकारक है;

cc) हम अपनी पूरी क्षमता से, उनकी परम बुद्धि का अनुकरण करना सीखेंगे, उस परम लक्ष्य की ओर लगातार प्रयास करते हुए जिसे उन्होंने हमारे लिए निर्धारित किया है, और इस उद्देश्य के लिए उन सबसे विश्वसनीय साधनों को चुनते हुए जिन्हें उन्होंने स्वयं अपने प्रकाशन में हमारे लिए पूर्वनिर्धारित किया है।

४) अंत में, ईश्वर की इच्छा के प्रत्येक गुण या तो केवल अनुकरण के लिए एक आदर्श प्रस्तुत करते हैं, या फिर कुछ अन्य नैतिक शिक्षाएँ भी प्रदान करते हैं।

(क) ईश्वर को परम स्वतंत्र कहा जाता है क्योंकि वह स्वयं हमेशा केवल अच्छा ही चुनते हैं, और उसे किसी भी बाहरी जबरदस्ती या प्रलोभन के बिना चुनते हैं: हमारी सच्ची स्वतंत्रता में भी यही होना चाहिए! बस इसलिए अच्छा करने की क्षमता और स्वतंत्र रूप से अर्जित की गई आदत में, कि यह अच्छा है, और न कि जैसा आम तौर पर सोचा जाता है, अच्छा या बुरा करने की मनमानी शक्ति में, और बुरा करने की मनमानी शक्ति में तो और भी कम: क्योंकि उद्धारकर्ता ने कहा (यूहन्ना 8:34), *'जो कोई पाप करता है, वह पाप का दास है'*, और बुरा करके, हम हर बार अपनी स्वतंत्रता का एक

हसि्सा खो देते हैं, और अपनी वासनाओं और अशुद्ध इच्छाओं के प्रतअिधकि से अधकि समर्पति हो जाते हैं, जनि पर हमें अधकिार रखना चाहए।

ख) परमेश्वर परम पवत्रि है, और उसने हमें आज्ञा दी है: *'पवत्रि बनो, क्योंकि मैं [प्रभु तुम्हारा परमेश्वर] पवत्रि हूँ* (लूका 11:44)। इस शर्त के बनिा, हम प्रभु के साथ परम धन्य मलिन के योग्य कभी नहीं माने जा सकते: क्योंकि *प्रकाश का अँधेरे से क्या मेल है?* (2 कुरनि्थयिों 6:14); और न ही हम कभी उन्हें देखने के योग्य माने जाएँगे: क्योंकि केवल *शुद्ध हृदय वाले ... ही परमेश्वर को देखेंगे* (मत्ती 5:8; तुलना करें इब्रानयिों 12:14)।

c) ईश्वर अपनी सभी सृष्टयिों के प्रति, और वशिेष रूप से हम मनुष्यों के प्रति, अनंत रूप से भला है: यह—

क) हमें उसकी सभी आशीषों के लिए धन्यवाद देना सखिाता है, और उसके पतित्व के प्रेम का पारविारकि प्रेम से प्रतफिल देना सखिाता है: *आइए हम उससे प्रेम करें, क्योंकि उसने पहले हमसे प्रेम कयिा* (1 यूहन्ना 4:19);

66) हमें अपने पड़ोसयिों के प्रति दयालु और कृपालु होने की शकि्षा देता है: *'दयालु बनो, जैसे तुम्हारा पति दयालु* है' (लूका 6:36);

(cc) हमें यह सखिाता है कि हम अपनी सभी ज़रूरतों में मदद के लिए नडिर होकर उससे प्रार्थना करें, इस दृढ़ वशि्वास के साथ कि हमें वह सब कुछ मलिेगा जसिकी हम मांग करते हैं (मत्ती 7:11), बशर्ते कि हम *गलत चीजों की* मांग न करें (याकूब 4:3);

(d) अंत में, हमें यह सखिाता है कि हम अपनी मुक्ति के लिए कभी नराश न हों, भले ही हमारे पाप कतिने भी गंभीर क्यों न हों, बल्कि सच्ची पश्चाताप के साथ अपने स्वर्गीय पति की ओर लौटें, जो कहते हैं: *'मुझे मरने वाले की मृत्यु में कोई आनंद नहीं मलिता...; परन्तु लौट आओ, और जयिो!'* (यहे. 18:32)।

d) परमेश्वर सर्वथा सत्य और वशि्वासयोग्य है। यहाँ

aa) हमारे वशि्वास के लिए एक अटूट नींव है: प्रभु ने हमें जो कुछ भी प्रकट कयिा है, हमें उसे नशि्रत समर्पण के साथ स्वीकार करना चाहए और उससे दृढ़ता से चपिटना चाहए, भले ही बहुत कुछ ऐसा हो जसिे हम नहीं समझते। यहाँ नहिति है

bb) हमारी आशा के लिए भी एक अटूट नींव: वह नसि्संदेह हमसे कए गए सभी वादों को पूरा करेंगे—वह इसे पूरा करेंगे, यदि यहाँ नहीं, तो अनंतकाल में। यहाँ हमारे लिए एक जीवंत सबक है, कि हम भी *झूठ को अस्वीकार करके एक-दूसरे से सच* बोलें, *क्योंकि हम एक-दूसरे के अंग हैं* (इफसियिों 4:25), और, दूसरों से वादे या प्रतबिद्धताएँ करते समय, हमेशा अपने वचन को वफादारी से नभिाएँ।

(e) परमेश्वर अनंत रूप से धर्मी है: यह एक वचिार हमारे नैतकि चरत्रि के लिए कतिना कुछ कर सकता है, यदि हम इसे अपने मन और हृदय में जीवंत और गहराई से धारण करें! यह

क) हमें पाप से दूर रखेगा और पश्चाताप के लिए प्रेरति करेगा, लगातार हमारे सामने परमेश्वर की भयानक तलवार को प्रस्तुत करेगा, जो पापी के सरि पर अदृश्य रूप से लटकी हुई है, और उस अनंत आग को जो कब्र के पार पश्चाताप न करने वाले पापयिों की प्रतीक्षा कर रही है। यह —

bb) हमें सद्गुण के लिए प्रेरति करेगा, और हमें इसके दुखद मार्ग पर सांत्वना, सहारा और प्रोत्साहन देगा, हमेशा हमें उन परम और अनंत आशीर्वादों की याद दलिाते हुए जो स्वर्गीय पति के महलों में धर्मी लोगों के लिए तैयार कए गए हैं। और अंत में —

cc) नरिंतर हमारे सामने नषि्पक्ष न्यायाधीश और प्रतफिलदाता की छवि प्रस्तुत करके, यह हमें अपने पड़ोसयिों के प्रति न्यायपूर्ण और नषि्पक्ष होने और *प्रत्येक को उनका उचति हक़ देने* (रोमयिों 13:7) का पाठ सखिाएगा।

संक्षेप में, यदि हम यह संकल्प करें कि *हे प्रभु, हम तेरे मुख के प्रकाश में* चलेंगे (भजन संहति 88:16), और हमारे प्रभु की अनंत सद्धियिों को अवरिाम स्मरण करेंगे; *सीधा मार्ग* हमारे लिए हमेशा स्पष्ट रहेगा (भजन संहति 106:7), और इन सद्धिताओं पर चतिन करके हम अपने परेशान जीवन की सभी सबसे कठनि और ववििधि परस्थितियिों के बीच अपने लिए मार्गदर्शन और शकि्षा पा सकते हैं। भजन रचने वाले ने व्यर्थ में नहीं कहा: 'हे परमेश्वर, *तेरी* ही *रोशनी में हम प्रकाश देखेंगे* (भजन संहति 35:10)।

अध्याय 2.
परमेश्वर पर, जो व्यक्तियों में त्रैक्य है।

§ 24. पवित्र त्रमिूर्त के धर्मसद्धिान्त का वशिेष महत्व और अकल्पनीयता, इस पर चर्च की शक्षिा, और इस शक्षिा की संरचना।

ईश्वर, जो सार में एक हैं, और उनके सारभूत गुणों के संबंध में अब तक हमने जो सत्य प्रस्तुत कए हैं, वे ईश्वर के बारे में ईसाई धर्म की संपूर्ण शक्षिा को समाहति नहीं करते। केवल यह स्वीकार कर लेना क ईश्वर एक है, हमें खुद को ईसाई कहने का अधकिार नहीं देता: एक ईश्वर को यहूदयिों द्वारा स्वीकार कयिा जाता है, जन्हिोंने मसीहा के रूप में उद्धारकर्ता मसीह को नहीं पहचाना है और जो ईसाई धर्म को अस्वीकार करते हैं; इसे मुसलमानों द्वारा स्वीकार कयिा जाता है; और इसे ईसाई धर्म के भीतर ही कई प्राचीन और आधुनकि वधिर्मी लोगों द्वारा स्वीकार कयिा गया है और कयिा जाता रहा है। ईश्वर के बारे में संपूर्ण ईसाई सद्धिांत, जसिे गरमिा के साथ ईसाई का नाम धारण करने के लए हृदय में रखना और ओठों से स्वीकार करना आवश्यक है, इस तथ्य में नहति है क ईश्वर एक और त्रत्विमय दोनों हैं: सार में एक, व्यक्तियों में त्रत्विमय। यह सद्धिांत सबसे मौलकि ईसाई धर्मशास्त्र है: हमारे उद्धारकर्ता, प्रभु यीशु, और हमारे पवत्रिकर्ता—पवत्रि आत्मा—से संबंधति धर्मशास्त्र सीधे इसी पर आधारति हैं; परणिामस्वरूप, इसे अस्वीकार करके, कोई अनविार्य रूप से इन धर्मशास्त्रों को अस्वीकार कर देता है, और उसके बाद, कसिी न कसिी हद तक, हमारी मुक्ति की संरचना से संबंधति प्रत्येक एक भी सद्धिांत। और यह स्वीकार करके क ईश्वर सार में एक और व्यक्तियों में त्रमिूर्त है, हम न केवल उन मूर्तपिूजकों और कुछ वधिर्मीयों से अलग हैं जो कई या दो देवताओं के अस्तत्वि को स्वीकार करते थे, बल्कि यहूदयिों, मुसलमानों और उन सभी वधिर्मीयों से भी अलग हैं जन्हिोंने केवल एक ईश्वर को पहचाना है और पहचानते रहते हैं।[390] परम पवत्रि त्रमिूर्त के सद्धिांत के वशिेष महत्व के कारण, यह उन सभी धर्मसूत्रों की मुख्य सामग्री है जो कभी भी रहे हैं और वर्तमान में ऑर्थोडॉक्स चर्च में उपयोग कए जाते हैं, साथ ही चर्च के पादरयिों द्वारा वभिन्नि अवसरों पर लखि गए सभी वशिेष वश्विास-घोषणाओं की भी।[391]

[392]फरि भी, सभी ईसाई धर्मसद्धिातों में सबसे महत्वपूर्ण होने के साथ-साथ पवत्रि त्रमिूर्त का धर्मसद्धिात सबसे अधकि अकल्पनीय भी है। हमने पहले ही ईश्वर के एकत्व (सार में एक) और उसकी मूलभूत गुणों, वशिेष रूप से उसकी स्व-अस्तत्वि, अनंतता और सर्वव्यापकता की व्याख्या करते समय बहुत कुछ अकल्पनीय का सामना कयिा है। समय आने पर हम और भी बहुत कुछ अथाह देखेंगे, जब हम अवतार और हमारे उद्धारकर्ता के व्यक्तित्वि, क्रूस पर उनके मृत्यु, ईश्वर की माता की सदा-कुँवारीपन, हमारे भीतर अनुग्रह के कार्यों, और इसी तरह के अन्य सद्धिांतों का अन्वेषण करेंगे। लेकनि सभी ईसाई रहस्यों में सबसे बड़ा रहस्य, नस्सिंदेह, परम पवत्रि त्रमिूर्त का सद्धिांत है; क एक ही ईश्वर में तीन व्यक्ति कैसे हैं, जैसे क पति ईश्वर हैं, और पुत्र ईश्वर हैं, और पवत्रि आत्मा ईश्वर हैं, फरि भी तीन ईश्वर नहीं, बल्कि एक ही ईश्वर—यह हमारी सभी समझ से परे है।[393] और यही कारण है क वधिर्मी, जन्हिोंने अपनी ही

---

[390] चर्च के पवत्रि पतिाओं ने ठीक इसी प्रकार तर्क कयिा: *सेंट ग्रेगरी ऑफ नसिा:* 'ईसाई की पहचान पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा में वश्विास से होती है; यह उस व्यक्ति का स्वरूप है जो सत्य के रहस्य के अनुसार रूपांतरति हुआ है' (De Spirit. Sanct., ed. *Maj* VIII, 11, पृ. 18); *संत ग्रेगरी द थयिोलोजयिन:* 'जब मैं ईश्वर की बात करता हूँ, तो मेरा तात्पर्य पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा से है, इस व्यक्तियों की संख्या से परे ईश्वरत्व को वभिाजति कए बनिा, कहीं ऐसा न हो क मैं देवताओं की भीड़ को जन्म दूँ, न ही इसे एक सीमति संख्या तक सीमति करना, कहीं ऐसा न हो क हम पर दव्यिता को कम करने का आरोप लगाया जाए, जब हम या तो ईश्वरत्व की एकता का समर्थन करके यहूदी धर्म में, या ईश्वरत्व की बहुलता का समर्थन करके मूर्तपिूजक धर्म में पड़ जाएं" ("द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स" रूसी अनुवाद में, खंड III, पृ. 240); *सेंट जॉन ऑफ डेमास्कस:* "स्वभाव की एकता बहुदेववादयिों की बहुदेवता संबंधी झूठी राय को पूरी तरह से नष्ट कर देती है, जबकि वचन और आत्मा की स्वीकारोक्ति यहूदयिों की शक्षिा को उलट देती है" (एक्ज़ैक्ट एक्सपोज़शिन ऑफ़ द ऑर्थोडॉक्स फेथ, पुस्तक 1, अध्याय 7)।

[391] इन धर्म-सूत्रों के संग्रह देखें, उदाहरण के लए: *Biblioth. der Symbole und Glaubensreg. der Apostolisch-kathol. Kirche*, संपादक *हान/* ब्रेस्लाउ 1842।

[392] *संत ग्रेगरी द थयिोलोजयिन,* *वर्क्स ऑफ द होली फादर्स* I, 37; *संत बेसलि द ग्रेट,* वही, VII, 269।

[393] *इरनेयस,* *एडवर्सस हेरेसेस*, पुस्तक II, अध्याय 28; *अलेक्जेंड्रयिा के अथेनासयिस,* *सरापयिन को पत्र*, 1, संख्या 17, 18, 20; *ग्रेगरी द थयिोलोजयिन,* 'द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स', II, 288: 'केवल त्रमिूर्त में एक को और एक में त्रमिूर्त को जानना सखिाओ, जसिकी उपासना की जाती है, जसिकी वशिष्टिता और एकता अकल्पनीय है'; *हलिार:* डी ट्रनिटि. II, संख्या 5: यह वाणी की पहुँच से परे, इंद्रयिों के उद्देश्य से परे,

बुद्धि से विश्वास के सत्यों की व्याख्या करने का प्रयास किया है, किसी अन्य सिद्धांत पर उतनी ठोकर नहीं खाई जितनी उन्होंने परम पवित्र त्रिमूर्ति के रहस्य पर खाई है। और इसलिए, सबसे बढ़कर, हमें यहाँ चर्च की सकारात्मक शिक्षा का कड़ाई से पालन करना चाहिए, जिसने इस धर्मशास्त्र को सभी विधर्मी मतों से सुरक्षित और संरक्षित रखा है, और ऑर्थोडॉक्सों के मार्गदर्शन के लिए इसे यथासंभव सटीकता के साथ प्रस्तुत किया है।[394] सबसे पवित्र त्रिमूर्ति के इस धर्मशास्त्र की ऐसी व्याख्या ऑर्थोडॉक्स चर्च में वर्तमान में प्रचलित तीनों धर्मविश्वासों में पाई जाती है, अर्थात्:

1) नेओकेसरेया के बिशप, संत ग्रेगरी द वंडरवर्कर के क्रीड में:

"एक ईश्वर, जीवित वचन के पिता, स्वयं में विद्यमान ज्ञान और शक्ति के, और अनंत की प्रतिमा: पूर्ण का पूर्ण पिता, एकमात्र-जन्मे पुत्र के पिता।

एक प्रभु, एक ही से एक, ईश्वर से ईश्वर, ईश्वरत्व की प्रतिमा और अभिव्यक्ति, सक्रिय वचन, सभी चीजों की रचना को धारण करने वाली बुद्धि, और सभी सृष्टि को स्थापित करने वाली शक्ति; सच्चे पिता का सच्चा पुत्र, अदृश्य का अदृश्य, अविनाशी का अविनाशी, अमर का अमर, शाश्वत का शाश्वत।

और एक पवित्र आत्मा है, जो परमेश्वर से निकलता है, पुत्र के द्वारा प्रकट हुआ, अर्थात् मनुष्यों के लिए; वह जीवन जिसमें जीवित लोग अपना स्रोत पाते हैं; पवित्र झरना; पवित्रिकरण प्रदान करने वाला पवित्र स्थान। वह परमेश्वर पिता है, जो सभी के ऊपर और सभी में है, और परमेश्वर पुत्र है, जो सभी के द्वारा है।

त्रिमूर्ति महिमा, अनंतता और राज्य में परिपूर्ण, अविभाज्य और अविच्छेद्य है। क्योंकि त्रिमूर्ति में कुछ भी सृजित, या अधीनस्थ, या आकस्मिक नहीं है—कुछ भी ऐसा नहीं है जो पहले अस्तित्व में नहीं था, न ही कुछ ऐसा जो बाद में अस्तित्व में आया। न तो पिता कभी पुत्र के बिना रहे, और न ही पुत्र पवित्र आत्मा के बिना; परन्तु त्रित्व अपरिवर्तनीय, अचल, और हमेशा एक ही और समान है।"

2) निकेन-कॉन्स्टेंटिनोपल धर्मविश्वास में:

"मैं एक ईश्वर, पिता में विश्वास करता हूँ...

और एक प्रभु यीशु मसीह में, जो परमेश्वर का पुत्र है, एकमात्र जनमा हुआ, जो सभी युगों से पहले पिता से जन्मा। ज्योति से ज्योतिमान, सच्चा परमेश्वर सच्चे परमेश्वर से, जनमा हुआ, न कि बनाया हुआ, पिता के समान सार का...

और पवित्र आत्मा में, जो प्रभु है, जीवन दाता है, जो परमपिता से उत्पन्न होता है, जिसे परमपिता और पुत्र के साथ आराधित और महिमामय माना जाता है..."

3) अलेक्जेंड्रिया के संत अथेनासियस के नाम से प्रसिद्ध धर्मविश्वास में:

"कैथोलिक धर्म यही है: कि हम त्रिमूर्ति में एक ईश्वर की, और एक में त्रिमूर्ति की उपासना करते हैं, न तो व्यक्तियों को मिलाते हुए और न ही सार को विभाजित करते हुए। क्योंकि पिता का व्यक्ति एक है, पुत्र का व्यक्ति दूसरा है, और पवित्र आत्मा का व्यक्ति एक अन्य है।

बुद्धि की कल्पना से परे है; जो कुछ भी इनसे परे खोजा जाता है, वह व्यक्त नहीं किया जा सकता, प्राप्त नहीं किया जा सकता, समझा नहीं जा सकता; स्वयं वस्तु (त्रिमूर्ति) का स्वभाव शब्दों के अर्थ को समाप्त कर देता है; इसकी मनन एक अगम्य प्रकाश से अस्पष्ट हो जाती है; और जो कुछ भी किसी सीमित सीमा के भीतर नहीं आता है, वह बुद्धि की क्षमता से परे है; *ऑगस्टीन,* *डी ट्रिनिटिटे*, पुस्तक XV, अध्याय 6: "किस प्रकार का तर्क, बुद्धि की क्या शक्ति और सामर्थ्य, मन की क्या चपलता और विचार की तीक्ष्णता हमें दिखाएगी... कि त्रिमूर्ति कैसे अस्तित्व में है?" और अन्यत्र: "हालाँकि, वह क्या है, यह अनुत्वर्य है; यहाँ तक कि स्वर्गदूतों की भाषा भी इसे व्यक्त नहीं कर सकती, मनुष्य की भाषा तो दूर की बात है" (ऑन द सबिल, टू द कैटेकुमन, अध्याय IX); *जेरोम,* इज़ेया पर भाष्य, पुस्तक XVIII, संख्या 1: मैं त्रिमूर्ति के रहस्य के बारे में नहीं बोलता, जिसकी उचित स्वीकारोक्ति ज्ञान की अज्ञानता है।

[394] क्योंकि, जैसा कि धन्य ऑगस्टीन पवित्र त्रिमूर्ति पर अपने प्रबंध में कहते हैं, कहीं भी कोई इतना खतरनाक रूप से भटकता नहीं होता, न ही कुछ इतना मेहनत से खोजा जाता है, न ही कुछ इतना फलदायी रूप से खोजा जाता है (De Trinit. lib. 1, c. 3, n. 5)। और अन्यत्र, इसी विषय पर चर्चा करते हुए: 'हमें *एक निश्चित नियम* के अनुसार बोलने की अनुमति है, कहीं ऐसा न हो कि शब्दों की स्वतंत्रता उन बातों के संबंध में भी एक अधर्मी विचार को जन्म दे जिनका वे संकेत करती हैं' (De civit. Dei, Book X, Chapter 23). और *संत ग्रेगरी द थियोलोजियन,* अपनी एक प्रवचन (22वीं) में परम पवित्र त्रिमूर्ति के सिद्धांत को प्रस्तुत करने के बाद, अपने बारे में टिप्पणी करते हैं: "इस प्रकार, यथासंभव संक्षेप में, मैंने आपको हमारी प्रज्ञा प्रस्तुत की—सिद्धान्ततः; विवादात्मक रूप से नहीं; मछुआरों की पद्धति से, अरस्तू की नहीं; आध्यात्मिक रूप से, वाक्पटुता से नहीं; चर्च के नियमों के अनुसार, बाज़ार की नहीं" ("पवित्र पिताओं के कार्य" II, 225)।

फरि भी, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की दिव्यता एक है; उनकी महिमा समान है, और उनकी महिमा एकसार है। जैसा पिता है, वैसा ही पुत्र है, और वैसा ही पवित्र आत्मा है... इस प्रकार: ईश्वर पिता, ईश्वर पुत्र, ईश्वर पवित्र आत्मा: फरि भी तीन ईश्वर नहीं, बल्कि एक ईश्वर...

पिता न तो किसी से बने हैं, न ही बनाए गए हैं, और न ही उत्पन्न हुए हैं। पुत्र न तो स्वयं पिता से बने हैं, न ही बनाए गए हैं, बल्कि उत्पन्न हुए हैं। पवित्र आत्मा न तो किसी से बने हैं, न ही बनाए गए हैं, और न ही पिता से उत्पन्न हुए हैं, बल्कि निकलते हैं...

और इस त्रिमूर्ति में, कोई पहला या आखिरी नहीं है: कोई बड़ा या छोटा नहीं है: बल्कि तीनों ही व्यक्ति सह-सारभूत और एक-दूसरे के बराबर हैं।"

सर्वपवित्र त्रिमूर्ति के संबंध में ऑर्थोडॉक्स चर्च की इस शिक्षा पर बारीकी से विचार करने पर, हम यह देखे बिना नहीं रह सकते कि यह तीन प्रस्तावाओं से मिलकर बनी है: एक सामान्य और दो विशिष्ट, जो सीधे सामान्य प्रस्ताव से निकलती हैं और उसे स्पष्ट करती हैं।

सामान्य प्रस्ताव: ईश्वर में, जो सार में एक हैं, तीन व्यक्ति या हाइपोस्टेसीस हैं: पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा।

विशिष्ट प्रस्तावानाएं:

पहला: सार में एक होने के कारण, ईश्वर में तीन व्यक्ति एक दूसरे के बराबर और एकसार हैं: पिता ईश्वर हैं, पुत्र ईश्वर हैं, और पवित्र आत्मा ईश्वर हैं; फरि भी, ईश्वर तीन नहीं, बल्कि एक हैं।

दूसरा: फरि भी, तीन व्यक्तियों के रूप में, वे अपनी व्यक्तिगत विशेषताओं में एक-दूसरे से भिन्न हैं: पिता किसी से उत्पन्न नहीं हुए हैं, पुत्र पिता से उत्पन्न हुए हैं, और पवित्र आत्मा पिता से निकलते हैं।

परिणामस्वरूप, परम पवित्र त्रिमूर्ति का सिद्धांत, जब अपनी विशिष्टता में देखा जाता है, तो निम्नलिखित तीन सिद्धांतों को समाहित करता है: 1) ईश्वर में व्यक्तियों की त्रैतीय प्रकृति का सिद्धांत, साथ ही सार की एकता को बनाए रखना; 2) दैवी व्यक्तियों की समानता और एकसारता का सिद्धांत; और 3) दैवी व्यक्तियों के बीच उनके व्यक्तिगत गुणों के अनुसार भेद का सिद्धांत।

1. ईश्वर में व्यक्तियों की त्रिमूर्ति पर, दिव्य स्वभाव की एकता को बनाए रखते हुए।

§ 25. इस धर्मनिर्णय का संक्षिप्त इतिहास और चर्च की इस शिक्षा का अर्थ।

कि ईश्वर, स्वभाव में एक, व्यक्तियों में त्रिमूर्ति है, इसे पवित्र चर्च ने आरंभ से ही हमेशा और अविचल रूप से स्वीकार किया है, जैसा कि इसके धर्मविश्वासों और अन्य अविवादित साक्ष्यों से प्रमाणित होता है।[395] फरि भी प्रारंभिक शताब्दियों में इस सत्य को व्यक्त करने का तरीका विश्वास के ऑर्थोडॉक्स शिक्षकों के बीच भी भिन्न था। कुछ ने ईश्वर में सार या पदार्थ को दर्शाने के लिए इन शब्दों का उपयोग किया: οὐσία, φύσις, substantia, natura;[396] कुछ अन्य, हालांकि बहुत कम और बहुत ही दुर्लभ रूप से, इन शब्दों का उपयोग दिव्य व्यक्तियों को दर्शाने के लिए करते थे।[397] इसी प्रकार, कुछ ने ईश्वर में *व्यक्तियों को* दर्शाने के लिए इन शब्दों का उपयोग किया: ὑπόστασις, ὑπαρξις, या τρόπος ὑπάρξεως;[398] दूसरों ने, इसके विपरीत, इन शब्दों का उपयोग दिव्य *सार को* व्यक्त करने के लिए किया, जबकि *व्यक्तियों को* व्यक्त करने के लिए उन्होंने πρόσωπον और persona शब्दों का प्रयोग किया।[399] *'Hypostasis'* शब्द के प्रयोग में

---

[395] आगे § 28 देखें।

[396] *एथान. एलेक्स.* कोंट्रा यूनोम. लिब. 1: 'क्या एक स्वभाव है या तीन, और इस संबंध में एक सार है, जैसा कि परिषदों ने प्रेरितों के अनुसार लिखा है?' *एम्ब्रॉस.* एपिस्ट. 63: 'त्रिमूर्ति *एक सार की* है, एक महिमा की, एक दिव्यता की।'

[397] *पीटियस शहीद,* देखें *फोटो.* बाइब्लियोथ., कोड. CIX; *अलेक्जेंड्रिया के सिरिल,* *कॉन्ट्रा नेस्टर*, पुस्तक III, अध्याय 6; *जॉन मैक्सेंटियस,* *संवाद*, II (बिब्लियोथेका पैट्रम, खंड IV, पृ. 485).

[398] *डायोनिसियस द एरोपागाइट,* *ऑन द एक्लेसियास्टिकल हियरार्की*, अध्याय 2; *अलेक्जेंड्रिया के अथानासियस,* *डायलॉग ऑन द ट्रिनिटी*, 1; *एपिफेनियस,* *अगेंस्ट हेरेसीज़*, LXXIII, संख्या 34; *बेसिल,* *एपिस्टल* 43; *दमास्कस के जॉन,* *ऑन द ऑर्थोडॉक्स फेथ*, पुस्तक III, अध्याय 5.

[399] सार्डिस परिषद के फादर्स: 'हम इस कैथोलिक परंपरा को मानते हैं: एक ही हाइपोस्टेसिस है... पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा का' (*थियोडोरेट,* एच. ई. II, पृ. 8 के अनुसार)। इसी प्रकार, पोप दामासस के अधीन आयोजित रोम की परिषद: 'पवित्र आत्मा, पिता और पुत्र के समान ही

इस अंतर ने पूर्व में, विशेष रूप से एंटिओक में, महत्वपूर्ण विवादों को जन्म दिया, और कुछ समय के लिए पूर्वी और पश्चिमी चर्चों के बीच असहमति उत्पन्न हुई, पूर्व ने यह सिखाया कि ईश्वर में तीन हाइपोस्टेसीज़ की स्वीकारोक्ति करनी चाहिए, सैबेलीयनवाद के आरोप से बचने के लिए, जबकि पश्चिमी ने दावा किया कि ईश्वर में एक ही हाइपोस्टेसिस है, एरियनवाद के आरोप से बचने के लिए।[400] इन विवादों को सुलझाने के लिए एलेक्ज़ेंड्रिया (362 ईस्वी) में एक परिषद बुलाई गई, जिसमें संत अथानासियस महान के साथ इटली, अरब, मिस्र और लीबिया के बिशप भी शामिल थे। परिषद में दोनों पक्षों के प्रतिनिधियों को सुना गया, और यह स्पष्ट हुआ कि दोनों पक्षों के विश्वास बिल्कुल समान थे, केवल शब्दावली में अंतर था: कि जो लोग कहते थे, 'ईश्वर में एक सार और तीन हाइपोस्टेज़ हैं,' और जो कहते थे, 'ईश्वर में एक हाइपोस्टेज़ और तीन व्यक्ति हैं,' दोनों ही ऑर्थोडॉक्स थे, — क्योंकि पहले वाले 'πρόσωπον' (persona, 'व्यक्ति') के बजाय 'Hypostasis' शब्द का उपयोग करते थे, जबकि बाद वाले इसका उपयोग 'οὐσία' (substantia, 'सार') के बजाय करते थे।[401] हालांकि, उस समय से चर्च में पहले वाले अभिव्यक्ति के रूप का धीरे-धीरे प्रचलन होने लगा: संत एपिफेनियस, बेसिल द ग्रेट, ग्रेगरी द थियोलॉजिस्ट, जॉन क्रिसोस्टोम, निसिबिस के ग्रेगरी, पेलुसियम के इसिडोर और अन्य लोगों ने लगातार यह माना कि ईश्वर में एक सार और तीन हाइपोस्टेसिस हैं,[402] और उन्होंने इन शब्दों के बीच अंतर को परिभाषित करने का प्रयास किया। "पवित्र त्रिमूर्ति में," संत बेसिल द ग्रेट ने लिखा, "वह है जो सामान्य है और वह जो विशेष है: सामान्य को *सार से* जोड़ा जाता है, जबकि *हाइपोस्टेसिस* प्रत्येक व्यक्ति की विशिष्टता को दर्शाता है।"[403] "पहला," संत ग्रेगरी द थियोलोजियन भी कहते हैं, "ईश्वरत्व की प्रकृति (τήν φύσιν τής θεότητος) को दर्शाता है, जबकि दूसरा त्रिगुणों के व्यक्तिगत गुणों *(τάς τών τριών ἰδιότητας)* को दर्शाता है।"[404] यह ठीक इसी भावना में था कि दूसरे सार्वभौमिक परिषद के पिताओं ने पश्चिमी बिशपों को लिखे अपने पत्र में लिखा: "हमारा विश्वास, हमारे बपतिस्मा के अनुसार, हमें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर विश्वास करना सिखाता है, अर्थात् एक ईश्वरत्व में, और शक्ति में, और सार (οὐσία) में "पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की, अविभाज्य महिमा और सह-शाश्वत राज्य तीन पूर्ण हाइपोस्टासीस या तीन पूर्ण व्यक्तियों में।"[405] और जबकि पाँचवीं शताब्दी में कुछ लोग अभी तक οὐσία और ὑπόστασις शब्दों के बीच इस अंतर का सख्ती से पालन नहीं करते थे, छठी, सातवीं और बाद की शताब्दियों तक यह पूरी तरह स्थापित हो गया था।[406]

हाइपोस्टेसिस और सार का है…' (उपरोक्त, पुस्तक II, अध्याय 22, और *सोज़ोमेन,* पुस्तक VI, अध्याय 23 में)। देखें *बेसिल,* एपिस्टल 391, और *ग्रेगरी ऑफ नाज़ियनज़स,* ओरेशन XXI, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स* II, पृ. 210, 211 में; और *अलेक्ज़ेंड्रिया के अफानासियोस,* अफ्रीकियों को पत्र।

[400] देखें सेंट बेसिल द ग्रेट, टेरेंटियस कोमिटिस को पत्र 214, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स* XI, पृ. 95–99, और ग्रेगरी द थियोलोजियन *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स* II, पृ. 210–211. सावेलियनवाद ने विशेष रूप से यह सिखाया कि ईश्वर में एक ही सार (οὐσία) और एक ही हाइपोस्टासिस (ὑπόστασις) है, यद्यपि एक ही ईश्वर ने, विभिन्न समयों पर, तीन रूप या व्यक्ति (πρόσωπα) धारण किए, कभी पिता के रूप में, कभी पुत्र के रूप में, और कभी पवित्र आत्मा के रूप में प्रकट हुए। दूसरी ओर, एरियन ने तीन सार (essences) माने: पिता का सार—दैवीय; पुत्र का सार—सृजित; और पवित्र आत्मा का सार—जो सृजित भी था, लेकिन पुत्र के सार से भिन्न था।

[401] यह सब एंटिओकियाई लोगों को लिखे गए परिषद के पत्र में वर्णित है, जिसे संत अथेनासियस ने लिखा था और जिस पर परिषद में उपस्थित सभी बिशपों ने हस्ताक्षर किए थे। देखें Opp. *Athanasii,* खंड I, भाग II, पृ. 770, पेरिस 1698।

[402] *एपिफेनियस,* हेरेसेस 73; *बेसिल,* एपिस्टल 325; *ग्रेगरी ऑफ नाज़ियनज़स,* ओरेशन 21 ऑन सेंट अथेनासियस; *क्रिसोस्टोम,* होमीली II ऑन द एपिस्टल टू द हिब्रूज़; *ग्रेगरी ऑफ निसा,* अगेंस्ट यूनोमियस, बुक I, पृ. 67, 125, एड. ग्रेट.; *पेलुसियम के ज़िडोर:* 'क्योंकि या तो प्रकृति की एकता हाइपोस्टेसिस में विभाजित है, या हाइपोस्टेसिस की एकता एक ही सार में एकजुट है।'

[403] *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, X, पृ. 92 ff. में, परम पवित्र त्रिमूर्ति के रहस्य में सार और उपस्थिति के बीच अंतर पर, अपने भाई ग्रेगरी को संत बेसिल द ग्रेट का पत्र।

[404] 'द वर्क्स ऑफ़ द होली फ़ादर्स', II, पृ. 110.

[405] ...तीन पूर्ण हाइपोस्टेसीस में, अर्थात् तीन पूर्ण व्यक्तियों में। देखें *थियोडोरेट,* एच. ई., पुस्तक V, पृ. 9.

[406] पाँचवीं शताब्दी में, धन्य जेरोम ने ὑπόστασις शब्द का अर्थ 'ουσία' बताया और इसे 'persona' अर्थात् व्यक्तित्व के अर्थ में स्वीकार करने के लिए अनिच्छुक थे (Epist. 57 ad Damasum), जबकि अलेक्ज़ेंड्रिया के संत सिरील ने अक्सर इसका उपयोग 'φύσις' (स्वरूप) शब्द के स्थान पर किया (देखें Anathema III de duodecim)।

लेकिन जहाँ धर्म की ऑर्थोडॉक्स शिक्षकों ने शब्दों के चुनाव में ही मतभेद रखा, और लगातार त्रिमूर्ति में एक ईश्वर और एकता में त्रिमूर्ति की व्याख्या की,[407] वहीं ईश्वर-विरोधी (heretics) ने इस सिद्धांत के सार को ही विकृत कर दिया, कुछ ने ईश्वर में व्यक्तियों की त्रैत (triune) प्रकृति से इनकार किया, तो कुछ ने तीन ईश्वर होने का दावा किया।

सबसे शुरुआती विधर्मी थे:

क) प्रेरितों के जीवित रहते हुए भी — *साइमन द मैजिकिस:* उसने यह सिखाया कि पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा केवल एक ही व्यक्ति के प्रकटीकरण और प्रतिमाएँ थे, और एक ही ईश्वर, पिता के रूप में, ने स्वयं को सामरी लोगों के सामने प्रकट किया, पुत्र के रूप में मसीह में यहूदियों के सामने, और पवित्र आत्मा के रूप में अन्यजातियों के सामने;[408]

ख) दूसरी शताब्दी में — *पैरैक्सियस:* उसने दावा किया कि एक ही ईश्वर, अपने भीतर छिपे हुए रूप में, पिता हैं, और सृष्टि के कार्य में और बाद में उद्धार के कार्य में प्रकट हुए रूप में, पुत्र, मसीह हैं;[409]

(c) तीसरी शताब्दी में — *नोएटियस,* जिसने पिता और पुत्र को एक ही व्यक्ति, एक ही ईश्वर के रूप में पहचाना, जो अवतार धारण कर कष्ट और मृत्यु सहन कर गया;[410] *सावेलियन,* जिन्होंने यह सिखाया कि पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा केवल एक ही व्यक्ति, ईश्वर के तीन नाम, या तीन क्रियाएँ (ενέργειαι) हैं, जो हमारे लिए अवतार धारण कर मृत्यु का स्वाद चख चुके हैं;[411] और *सामोसता के पॉल,* जिनके अनुसार पुत्र और पवित्र आत्मा ईश्वर में उसी प्रकार विद्यमान हैं जैसे मन और शक्ति एक मानव में विद्यमान हैं;[412]

घ) चौथी शताब्दी में — *एंकेरा के मार्सेलस* और उनके शिष्य *फोटिनिस:* उन्होंने सेबेलीउस का अनुसरण करते हुए प्रचार किया कि पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा परमेश्वर में एक ही व्यक्ति के केवल नाम हैं, और, सामोसाता के पॉल का अनुसरण करते हुए, कि पुत्र या वचन परमेश्वर का मन है, जबकि पवित्र आत्मा परमेश्वर की शक्ति है;[413]

ई) मध्य युग में — *बोगोमिल्स,*[414] कई *वाल्डेनसियिन*[415] और कुछ व्यक्ति;[416]

f) आधुनिक समय में — *स्वेडनबॉर्ग* और उनके अनुयायी[417] और कई अन्य, जिन्हें *नामवादियों* या *रूपवादियों* के रूप में जाना जाता है।[418]

जैसा कि हमने पहले ही उल्लेख किया है,[419] यह अंतिम त्रुटि निम्नलिखित द्वारा मान्य की गई थी: क) *फिलोपोनस* (लगभग 540) और उनके अनुयायी; ख) कुछ स्कूलास्टिक: *गोडेस्चल्क* (9वीं सदी), *रोसेलिन* (11वीं सदी) और *पीटर*

---

[407] 'त्रिमूर्ति में एक, और एक में त्रिमूर्ति, जिसके प्रति हम नमन करते हैं...' (*ग्रेगरी ऑफ नाज़ियनज़स,* ओरेशन 25, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स* II, 288)। शब्द *'त्रिमूर्ति'* — *ट्रियास*, ट्रिनिटिस, पहली बार उन प्राचीन लेखों में दिखाई देता है जो हमें यूनानी भाषा में एंटिओक के थियोफिलस (एडी ऑटोलिक. II, संख्या 15) की रचनाओं में, और लैटिन में टर्टुलियन (एडव. प्रैक्स. II, III, VIII) की रचनाओं में प्राप्त हुए हैं। लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि यह शब्द इन लेखकों से पहले प्रचलन में नहीं था; इसके विपरीत, यह संत जेम्स, प्रभु के भाई की धर्मपरायणता (pp. 4, 6, 33, 39) और संत एंड्रयू प्रेरित की शहादत के कृत्यों (अध्याय 11) में भी पाया जाता है — ये दो ग्रंथ हैं जिन्हें कुछ लोग, बिना किसी कारण के नहीं, पहली शताब्दी का मानते हैं (V. Liturg. graece edit. पेरिस 1560, पृ. 137; *रेनोडो,* *Dissert. de liturg. Orig. et autor.*, अध्याय V, § 2, खंड 1 में, *Collect. liturg. Orient*; *गैलैंड,* *Biblioth. Patr.*, खंड I, प्रस्तावना, अध्याय 4)।

[408] देखें *आइरेनियस,* *एडवर्सस हेरेसेस*, पुस्तक I, अध्याय 23।

[409] *टर्तुल्लियन,* *एडवर्सस प्रैक्स.

[410] *हिप्पोलीटस,* *कॉन्ट्रा नोएटस*; *एपिफेनियस,* *हेरेसिया* LVII; *ऑगस्टीन,* *हेरेसिया* XXXVI.

[411] *एपिफानियस,* *हेरेसिया* LXII; *बेसिल,* *पत्र* 210; *थियोडोरेट,* *चर्च का इतिहास* III, 9.

[412] *एपिफानियस,* *हेरेसिया* LXV.

[413] *बेसिल,* पत्र 69, 263, टिप्पणी 4; 313, टिप्पणी 5; *सोजोमेन,* एच. ई. IV, 16; *थियोडोरेट,* एच. ई. II, 11.

[414] उन्होंने यह सिखाया कि पुत्र और पवित्र आत्मा केवल कुछ समय के लिए परमेश्वर से उत्पन्न हुए थे, और अंततः उनकी ओर लौट जाएँगे / *ज़िगाबेन के यूथिमियस,* *पैनोप्लिया*, पुस्तक II, शीर्षक 23.

[415] देखें *रीचिन,* वाल्डेनियनों पर प्रबंध, अध्याय III, संख्या 20।

[416] जैसे: जॉन कैम्पान, लुडविग गेजर, और विशेष रूप से स्पेनिश चिकित्सक माइकल सर्वेटस, जिन्होंने इस विषय पर एक ग्रंथ लिखा: *De Trinitatis erroribus libri VII*, संस्करण 1531, और बाद में इसी प्रकार के दो और ग्रंथ लिखे।

[417] *Svedenb.*, *Summ. Exposit. nov. doctr.*, nos. 118, 119.

[418] उन्हें *'नामवादियों'* कहा जाता है क्योंकि वे पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा को एक ईश्वर के तीन नाम (nomina) के रूप में मानते हैं; और 'रूपवादियों' कहा जाता है क्योंकि वे ईश्वर में तीन व्यक्तियों को स्वीकार नहीं करते, बल्कि अस्तित्व और क्रिया के केवल तीन रूप (three *modos* exietendi et operandi) मानते हैं।

[419] ऊपर टिप्पणी 185 देखें।

एबेलोर्ड (12वीं सदी); और ग) कुछ बाद के लेखक: *Sherlock, Peter Taidit और Embs*.[420] उन सभी का सामान्य विचार यह था कि, यद्यपि दिव्य व्यक्ति—पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा—एक सार के हैं लेकिन सार में एक नहीं, और एक स्वभाव रखते हैं लेकिन प्रत्येक के पास यह अलग-अलग है, जैसे, उदाहरण के लिए, मानव जाति के तीन व्यक्ति, और इसलिए तीन देवता हैं, एक ईश्वर नहीं।

इन बिल्कुल विपरीत विधर्मी विचारों से बचने के लिए—जिनमें से पहला परमेश्वर के भीतर हाइपोस्टेसिस को भ्रमित करता है, जबकि दूसरा सार को विभाजित करता है—पवित्र चर्च अपने ऑर्थोडॉक्स बच्चों को सिखाती है: 'आओ हम त्रिमूर्ति में एक ईश्वर की और एक में त्रिमूर्ति की आराधना करें, न तो हाइपोस्टेसिस को भ्रमित करते हुए और न ही सार को विभाजित करते हुए।'

न तो हाइपोस्टेसिस का विलय करना: अर्थात्, पादरियों, पुत्र और पवित्र आत्मा को केवल तीन नामों, या छवियों, या एक ही ईश्वर के प्रकट रूपों के रूप में नहीं मानना, जैसा कि विधर्मी मानते थे, न ही उन्हें उसके तीन गुणों, शक्तियों या कार्यों के रूप में मानना, बल्कि ईश्वरत्व के तीन अलग-अलग व्यक्तियों के रूप में मानना, क्योंकि उनमें से प्रत्येक—पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा—जिसमें दिव्य मन और अन्य दिव्य गुण हैं—का अपना एक विशिष्ट, व्यक्तिगत गुण है: "क्योंकि पिता का हाइपोस्टेसिस एक है, पुत्र का दूसरा, और पवित्र आत्मा का तीसरा।"

नीचे दिया गया विधर्मी सार को विभाजित करता है: अर्थात्, यह मानकर कि पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा सार में एक हैं, एक दूसरे के भीतर अविभाज्य रूप से रहते हैं, और, केवल अपनी व्यक्तिगत गुणों में एक दूसरे से भिन्न, एक ही मन, इच्छा और सभी अन्य दिव्य गुणों को साझा करते हैं — जो सृजित प्राणियों में किसी भी वर्ग के तीन अविभाज्य प्राणियों से बिल्कुल अलग है, जो एक ही स्वभाव को साझा करते हैं।

"सृष्टि के प्राणियों में, संत जॉन ऑफ़ डेमास्कस के शब्दों का उपयोग करते हुए, अविभाज्य सत्ताओं का सामान्य स्वभाव केवल बुद्धि द्वारा ही समझा जाता है, क्योंकि अविभाज्य सत्ताएँ एक दूसरे के भीतर मौजूद नहीं होतीं, बल्कि प्रत्येक स्पष्ट रूप से और अलग से, अर्थात् अपने आप में, मौजूद होती है, और प्रत्येक में कई ऐसी विशेषताएँ होती हैं जिनके द्वारा वह दूसरों से भिन्न होती है। वे स्थान और समय में अलग हैं; वे इच्छा की प्रवृत्ति, शक्ति, बाहरी रूप या आकृति, कौशल, स्वभाव, गरिमा, जीवन-शैली और अन्य विशिष्ट विशेषताओं में भिन्न हैं; और सबसे बढ़कर इसलिए कि वे एक दूसरे के भीतर नहीं बल्कि अलग-अलग मौजूद हैं। इसीलिए कहा गया है: 'दो, तीन व्यक्ति और कई'। लेकिन पवित्र, पूर्व-सारभूत, सर्वोपरि, अकल्पनीय त्रिमूर्ति में हम कुछ अलग देखते हैं। यहाँ, व्यक्तियों की सह-शाश्वतता से, सार, कर्म और इच्छा की एकता से, गुणों की सामंजस्यता से, अधिकार, शक्ति और भलाई की एकता—मैं 'समानता' नहीं कहता, बल्कि एकता (ταυτότητα)—और उनकी गति की एकल दिशा से वास्तव में समानता और एकता का बोध होता है... प्रत्येक हाइपोस्टेसिस दूसरे के साथ उतना ही एक है जितना कि वह स्वयं के साथ: अर्थात् पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा—जन्म न देने, जन्म देने और उत्पत्ति को छोड़कर—हर दृष्टि से एक ही हैं, केवल मन (ἐπίνοια) में ही भिन्नता है। क्योंकि हम ईश्वर को एक के रूप में जानते हैं, और केवल पितृत्व, पुत्रत्व और प्रवाहन के गुणों में ही हम एक अंतर का अनुभव करते हैं... असीमित दिव्यता में, जैसा कि हम हमारे यहाँ करते हैं, कोई भी स्थानिक दूरी की कल्पना नहीं कर सकता, क्योंकि हाइपोस्टेसीस एक दूसरे के भीतर मौजूद हैं, फिर भी विलीन नहीं बल्कि एकजुट हैं, प्रभु के वचनों के अनुसार: *'मैं पिता में हूँ और पिता मुझ में है'* (यूहन्ना 14:11); — न ही इच्छा, उद्देश्य, क्रिया, शक्ति, या किसी अन्य चीज़ का कोई अंतर है जो हम में एक वास्तविक और पूर्ण विभाजन लाता है। इसलिए, हम पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा को तीन देवता नहीं, बल्कि पवित्र त्रिमूर्ति में एक ही ईश्वर के रूप में स्वीकार करते हैं।"[421]

यहीं में परम पवित्र त्रिमूर्ति के रहस्य की असल अपार्यता निहित है: कि ईश्वरत्व के तीन विशिष्ट व्यक्ति स्वभाव से एक हैं और पूर्णतः अविभाज्य हैं; और यदि वे सृष्ट प्राणियों के बीच तीन अविभाज्य सत्ताओं के रूप में एक-दूसरे से अलग रहते, तो हमारे लिए इसमें कुछ भी अपार्य नहीं होता। "ईश्वरत्व एक ही और त्रिमूर्ति दोनों है: हे महिमामय

---

[420] उन्होंने अपने विचार इस कृति में प्रस्तुत किए: *Tractat. de Deo uno et trino*. मेन्ज़, 1789.

[421] सही व्याख्या ऑर्थोडॉक्स विश्वास की, पुस्तक 1, अध्याय 8, पृ. 28–29। यही विचार, यद्यपि संक्षेप में, संत ग्रेगरी द थियोलोजियन द्वारा बार-बार व्यक्त किया गया है, *वर्क्स ऑफ द होली फादर्स* III, 115–117; 261–262, आदि।

रहस्य! स्वभाव से एकजुट, यह व्यक्तियों के अनुसार विभाजित है: क्योंकि जो एक है वह विभाजित नहीं होता, फिर भी एक में तीन हैं: ये हैं पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, जो सभी चीजों को धारण करते हैं।"[422]

§ 26. पुराने नियम के पवित्र धर्मग्रंथों से ईश्वर में व्यक्तियों की त्रैक्य स्वभाव के प्रमाण, साथ ही सार की एकता को बनाए रखते हुए।

ईश्वर में व्यक्तियों की त्रिमूर्ति का सत्य, सार की एकता को बनाए रखते हुए, नए नियम में पूर्ण स्पष्टता के साथ प्रकट होता है; फिर भी यह पुराने नियम में भी कुछ हद तक ज्ञात था। उत्पत्ति की पुस्तक के आरंभिक अध्यायों से ही पुराने नियम की रचनाओं में इस परम रहस्य के कई संकेत मिलते हैं, जिन्हें यद्यपि पूरी तरह स्पष्ट नहीं कहा जा सकता, प्राचीन यहूदियों ने आंशिक रूप से समझा था, और ईसाइयों के रूप में हमारे लिए नए नियम के प्रकाशन की रोशनी में ये और भी अधिक बोधगम्य हैं। इन संकेतों को तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है।

कुछ केवल यह **व्यक्त करते हैं** कि एक ईश्वर के भीतर एक नहीं, बल्कि कई व्यक्ति हैं। इसमें ईश्वर के ये वचन शामिल हैं:

क) मनुष्य की सृष्टि से पहले: *'और परमेश्वर ने कहा, "आओ, हम मनुष्य को अपनी प्रतिमा में, अपनी समानता के अनुसार बनाएँ"* (उत्पत्ति 1:26);

ख) स्वर्ग से पतित प्रथम माता-पिता के निष्कासन से पहले: *'और यहोवा परमेश्वर ने कहा, "देखो, आदम हम में से एक की नाईं भला और बुरा जानने लगा है; और अब कहीं ऐसा न हो कि वह अपना हाथ बढ़ाकर जीवन के वृक्ष में से भी ले ले और खाकर सदैव जीवित रहे"* (उत्पत्ति 3:22);

ग) बाबेल की मीनार के बाद भाषाओं के भ्रम और मानव जाति के प्रसार से पहले: *'और प्रभु ने कहा: "देखो, वे एक ही प्रजाति के हैं, और उन सभी की एक ही भाषा है; और यह वही है जो उन्होंने करना शुरू कर दिया है, और वे उस काम से नहीं रुकेंगे जो उन्होंने करने की योजना बनाई है; तो चलो, हम नीचे उतरें, और वहाँ उनकी भाषा को भ्रमित कर दें, ताकि कोई भी दूसरे की बात न समझ सके"* (उत्पत्ति 11:6–7)।

इन सभी अंशों में, ईश्वर को स्पष्ट रूप से किसी के साथ परामर्श करते या संवाद करते हुए दर्शाया गया है। वास्तव में किसके साथ? यह मान लेना उचित नहीं है कि उन्होंने स्वर्गदूतों से परामर्श किया, जैसा कि यहूदी मानते हैं।[423] ऐसा कोई विचार —

क) यह सामान्य मानवीय तर्क के भी विरुद्ध है, जो यह कल्पना नहीं कर सकता कि परमेश्वर, जो अनंत ज्ञान और सर्वशक्तिमान है, अपने सेवकों—स्वर्गदूतों—से परामर्श करेगा, चाहे मनुष्य की सृष्टि से पहले हो या किसी अन्य कार्य से पहले, जैसे कि उसे उनकी सहायता की आवश्यकता हो;[424]

b) यह पवित्र शास्त्र के भी विरुद्ध है, जो सृष्टि के संपूर्ण कार्य को केवल परमेश्वर को ही श्रेय देता है (यशायाह 44:24), और सामान्यतः यह अस्वीकार करता है कि कोई भी किसी भी मामले में उनका परामर्शदाता हो सकता है (यशायाह 40:13–14; रोमियों 11:34)।

न ही कोई यहूदियों के एक अन्य दृष्टिकोण से सहमत हो सकता है, अर्थात् कि इन उल्लेखित अंशों में ईश्वर केवल स्वयं से ही संवाद कर रहे हैं, जैसा कि लोग कभी-कभी किसी कार्य के लिए स्वयं को प्रेरित करने हेतु करते हैं, और पृथ्वी के शक्तिशाली लोगों के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, स्वयं के बारे में बहुवचन में बोलते हैं।[425] क्योंकि —

---

[422] लेन्टेन ट्रायोडियन, फोलियो 408 वेर्सो, मॉस्को, 1835। या, जैसा कि एक अन्य अंश में है: "हे विश्वासियों, हम एकता में त्रिमूर्ति का गान करें, एक ईश्वरत्व में: पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, एक सत्ता और एक स्वभाव, अविभाज्य, अविच्छेद्य और अविभागत: क्योंकि ईश्वर तीन व्यक्तियों में एक हैं।" नवंबर लिटिर्जी, फोलियो 283 वर्सो, मॉस्को, 1837

[423] देखें: *बेसिल,* हेक्साएमरोन पर उपदेश IX; *क्रिसोस्टोम,* उत्पत्ति पर *उपदेश* VIII; *एम्ब्रोस,* हेक्साएमरोन पर, पुस्तक VI, अध्याय 7.

[424] "परामर्श की गरिमा," इस अवसर पर संत बेसिल द ग्रेट टिप्पणी करते हैं, "को (यहूदियों द्वारा) मंत्रियों को दिया जाता है; वे हमारे जैसे दासों को हमारी सृष्टि के शासक बना देते हैं"... ("द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स" V, पृ. 172)।

[425] वी. *बासिल,* हेक्साएमरोन पर होमीली IX; *थियोडोरेट,* उत्पत्ति पर प्रश्न XIX में। कुछ प्राचीन विधर्मी भी इसी दृष्टिकोण को मानते थे *(यूसेबियस,* मार्सेलस के विरुद्ध, पुस्तक IV, अध्याय 15), और सोसिनियन भी इसे दोहराते हैं *(वोकेलियस,* सच्चे धर्म पर, पुस्तक V, अध्याय 9)।

क) यह कल्पना करना अजीब है कि परमेश्वर को किसी कार्य के लिए ऐसी आत्म-प्रेरणा की आवश्यकता होगी: 'वास्तव में, यह एक अजीब बेमतलब की बात है,' संत बेसिल द ग्रेट टिप्पणी करते हैं, 'यह दावा करना कि कोई बैठकर खुद को आज्ञा देता है, खुद की निगिरानी करता है, और खुद को अधिकारपूर्वक और जोर देकर मजबूर करता है;'[426]

ख) पृथ्वी के शक्तिशाली लोगों की अपनी बहुवचन में बात करने की प्रथा बाद में उत्पन्न हुई, और यह मूसा के दिनों में अभी तक मौजूद नहीं थी, जैसा कि उनके पूरे पेंटेटेच से स्पष्ट है — परिणामस्वरूप, मूसा इस प्रथा का पालन करके ईश्वर को इस प्रकार स्वयं के बारे में बात करते हुए चित्रित नहीं कर सकते थे;[427]

ग) लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि, ऐसी धारणा के तहत, ईश्वर के शब्दों का अर्थ बहुत ही अजीब है: *'देखो, आदम हम में से एक के समान हो गया है'* (उत्पत्ति 3:22); इन्हें इस प्रकार समझना होगा: *'देखो, आदम मुझ में से एक के समान हो गया है!'*... यहूदी और, वास्तव में, गलत सोच वाले सभी लोग उन तीन उल्लिखित उदाहरणों में किसी अन्य प्राणी का नाम नहीं बता सकते जिनसे परमेश्वर ने परामर्श किया हो, और वास्तव में वे ऐसा करते भी नहीं हैं। अब एक अंतिम दृष्टिकोण शेष है—चर्च के पवित्र पिताओं और शिक्षकों का दृष्टिकोण, जिसके सभी सही सोच वाले ईसाई अनुयायी हैं—कि उल्लिखित मामलों में, परमेश्वर ने वास्तव में स्वयं से परामर्श किया, लेकिन केवल परमेश्वर को एक व्यक्ति के रूप में नहीं, बल्कि सार में एक और व्यक्तियों में त्रिमूर्ति के रूप में समझा।[428]

यह दृष्टिकोण सत्य के सभी लक्षणों को दर्शाता है। यह

(क) यह ईश्वर द्वारा स्वयं से परामर्श करने में किसी भी असंगति को पूरी तरह से दूर करता है: यदि ईश्वर की सारगत एकता के भीतर, तीन अलग और सह-समान व्यक्ति हैं, तो उनमें परामर्श करना संभव और स्वाभाविक दोनों है, और पूरी तरह से उनके अनुरूप है;

---

[426] "पवित्र पिताओं के कार्य" V, पृ. 171। और थोड़ा पहले: "कौन सा लोहार, या बढ़ई, या मोची, अपने काम के औजारों के साथ अकेले बैठकर, जब कोई उसके साथ मेहनत में साझेदार न हो, अपने आप से कहेगा: 'मैं एक चाकू बनाऊँगा, या एक हल जोड़ूँगा, या एक जूता सिलूँगा'? इसके विपरीत, क्या वह चुपचाप से अपने से अपेक्षित कार्य को पूरा नहीं करेगा?"

[427] यह बात सबसे विद्वान यहूदी रब्बियों में से एक, अब्बेन एज्रा द्वारा भी स्वीकार की गई है — उत्पत्ति 25:26 में (इस अंश पर *इमैनुएल ट्रेमेलियस* देखें)। ध्यान देने योग्य हैं धन्य थियोडोरेट के ये शब्द: 'वे (यहूदी) मानते हैं कि सर्व वस्तुओं के ईश्वर — *"आओ, हम मनुष्य बनाएं"* — ने स्वयं से कहा, पृथ्वी के शक्तिशाली लोगों के उदाहरण का अनुसरण करते हुए; क्योंकि प्रांतीय राज्यपाल और सैन्य कमांडर आमतौर पर बहुवचन में बोलते हैं, उदाहरण के लिए: 'हम आज्ञा देते हैं, हम लिखते हैं, हम आदेश देते हैं', और इसी तरह; फिर भी ये मूर्ख लोग यह नहीं समझते कि परमेश्वर, जो सभी का प्रभु है, अक्सर अपने बारे में एकवचन में बोलता है, उदाहरण के लिए: *'सभी मनुष्यों का अंत मेरे सामने आ गया है* (उत्पत्ति 6:13); *'मैं उस लोगों को पृथ्वी के मुख से मिटा डालूँगा जिन्हें मैंने बनाया है* (पद 7); *'मेरे सामने तेरा कोई और देवता न होगा* (निर्गमन 20:3); *'देख, मैं एक नई बात करता हूँ; अब वह निकल आएगी* (यशायाह 43:19); *'मैं पहाड़ों पर नदियाँ और घाटियों में झरने खोलूँगा* (यशायाह 41:18)। आम तौर पर, पवित्र शास्त्रों में, परमेश्वर अपने बारे में एकवचन में बोलते हैं, और शायद ही कभी बहुवचन में; और जब वे ऐसा करते हैं, तो वे आमतौर पर इसके द्वारा पवित्र त्रिमूर्ति में व्यक्तियों की संख्या को इंगित करते हैं" (क्रॉनिकल ऑफ रीडिंग्स 1843, III; पृ. 343–344)।

[428] पहले अंश (उत्पत्ति 1:26) को चर्च के पिता और शिक्षकों द्वारा सर्वसम्मति से पवित्र त्रिमूर्ति के रहस्य की ओर इशारा करने वाला माना गया, एकमात्र अंतर यह था कि कुछ लोगों ने इसमें तीनों दिव्य व्यक्तियों की एक परिषद देखी *(थियोफिलस,* एड ऑटोल्यकस, पुस्तक 11; *बेसिल,* *कॉन्ट्रा यूनोमियम*, पुस्तक V; *एपिफेनियस,* *हेरेसेस*, XXIII, n. 5; *थियोडोरेट,* *इन जेनेसिस*, क्वेस्टियो 19; *अलेक्जेंड्रिया के सिरिल,* *थेसॉरस*, पुस्तक 1; *इसिडोरस ऑफ़ पेलसियम,* पुस्तक III, पत्र 112), जबकि अन्य इसे केवल पिता और पुत्र के बीच एक परामर्श के रूप में देखते थे, जिन्हें भविष्यवक्ता (यशायाह 9:6) ने *महान परिषद के स्वर्गदूत के रूप में* संदर्भित किया है *(टर्तु□□□□ यन,* *दे कार्ने क्रिस्टी*, अध्याय 5; *सिनिड ऑफ़ एंटिओक,* *इन एपिस्ट. एड पौलम सामोसेट.*; *यरूशलेम के सिरिपघम,* कैटेकिज़्म X; *बेसिल,* पवित्र आत्मा पर, अध्याय 16; *क्रिसोस्टोम,* उत्पत्ति पर उपदेश VIII; *अथानासियस,* मूर्तिपूजकों के विरुद्ध पुस्तक; *एम्ब्रोस,* हेक्सामेरॉन पर, पुस्तक VI, अध्याय 7; *ऑगस्टाइन,* त्रिमूर्ति पर, पुस्तक I, अध्याय 7)। दूसरे अंश (उत्पत्ति 3:22) को *संत बेसिल द ग्रेट* (Contra Eunomium, Book V), *संत सिरिल* (Contra Julian, Book III) और *धन्य ऑगस्टीन* (De Genesi ad litteram, Book XI, Chapter 39) द्वारा ईश्वर में त्रिमूर्ति का संकेत माना गया था। अंत में, अंतिम अंश (उत्पत्ति 11:6–7) को *संत बेसिल द ग्रेट* (Contra Eunomium, पुस्तक V), *संत ग्रेगरी ऑफ निसा* (De Testimonium contra Iudaeos de Trinitate), *संत सिरिल* (Dialogues 3 on the Trinity) और *धन्य थियोडोरेट* (ओरेट. 2 एड ग्रीक.)। इन तीनों ही अंशों को *ऑर्थोडॉक्स धर्म- स्वीकृति* (भाग 1, प्रश्न 10 का उत्तर) और *पूजा- संबंधी पुस्तकों,* उदाहरण के लिए: में, पवित्र त्रिमूर्ति के संदर्भ के रूप में स्वीकार किया जाता है। "जब आरंभ में तूने आदम को बनाया, हे प्रभु, तब तूने अपनी कृपा में अपनी हाइपोस्टैटिक वाणी को पुकारा: *'आओ हम मनुष्य को अपनी प्रतिमा में बनाएँ*—जबकि पवित्र आत्मा सह-सृष्टिकर्ता के रूप में उपस्थित था; इसलिए हम तुझसे पुकारते हैं: हे सृष्टिकर्ता, हमारे परमेश्वर, तुझमें महिमा हो" (ऑक्टोइकोस, भाग 1, फोलियो 97, मास्को 1838)। और फिर: "हे पिता, ऊपर से तीन हाइपोस्टेसिस की एकमात्र दैवी शक्ति को प्रकट करते हुए, आपने अपने समकक्ष पुत्र और आत्मा से कहा: *'आओ, हम उतरें और उनकी भाषाओं को उलझा दें'*" (उपरोक्त, fol. 18)।

ख) यह विचार विचाराधीन अंशों में मूसा की कथा-शैली के अनुरूप है, जहाँ हम देखते हैं कि ईश्वर अकेले बोलते हैं, फिर भी बहुवचन में बोलते हैं और, इसके अलावा, स्वयं से या अपने भीतर बोलते हैं : *'और ईश्वर ने कहा: आओ हम मनुष्य को अपनी प्रतिमा [और] अपनी समानता में बनाएँ; और प्रभु ईश्वर ने कहा: 'देखो, आदम हम में से एक के समान हो गया है...'; और प्रभु ने कहा: '... आओ हम नीचे उतरें और वहाँ उनकी भाषा को उलझा दें...'*;

ग) अंत में, इसे भाषण के संदर्भ द्वारा पुष्टि की जाती है। ईश्वर के वचनों: *'आओ, हम मनुष्य को अपनी प्रतिमा में बनाएँ* का उद्धरण देने के बाद, पवित्र वंशावलीकार आगे लिखते हैं: *'और परमेश्वर ने मनुष्य को अपनी प्रतिमा में बनाया; उसने उसे परमेश्वर की प्रतिमा में बनाया।*' परिणामस्वरूप, *'आओ, हम बनाएँ* शब्द उसी सत्ता को संदर्भित करता है जिसके बारे में कहा गया है: 'और *उसने बनाया*', और *'हमारी प्रतिमा में* वाक्यांश का अर्थ *'परमेश्वर की प्रतिमा में* भी है / दूसरे उदाहरण में, ईश्वर के वचन: *'देखो, आदम हम में से एक के समान हो गया है*, स्पष्ट रूप से उन शब्दों की ओर इशारा करते हैं जिनके द्वारा हमारे प्रथम माता-पिता को अभी-अभी धोखा दिया गया था: *'तुम देवताओं के समान हो जाओगे* (उत्पत्ति 3:5)। परिणामस्वरूप, *'हम में से एक के समान'* अभिव्यक्ति ईश्वर या दैवी व्यक्तियों के अलावा किसी और पर लागू नहीं हो सकती। तीसे अंश के संबंध में भी यही दोहराया जाना चाहिए: *'आओ, हम उतर चलें और वहाँ उनकी भाषा को उलझा दें*' क्योंकि थोड़ी देर पहले मूसा ने लिखा था: *'और यहोवा नगर और मीनार को देखने के लिये उतर आया* (पद 5), और थोड़ी देर बाद उन्होंने जोड़ा: *'और यहोवा ने उन्हें वहाँ से सारी पृथ्वी के मुख पर बिखेर दिया* (पद 8)। इस प्रकार, वाक्यांश *'आओ हम* उतरें...' उसी सत्ता को संदर्भित करता है जिसके बारे में कहा गया *है 'वह उतर* गया'; इसी तरह, *वाक्यांश 'आओ हम भ्रमित करें'* उसी सत्ता को संदर्भित करता है जिसके बारे में यह जोड़ा गया है: *'उसने भ्रमित किया*।[429]

पुरानी वाचा के अन्य अंश एक ही परमेश्वर के भीतर व्यक्तियों की त्रैक्य प्रकृति की ओर सटीक रूप से इशारा करते हैं। इस प्रकार—

(a) पवित्र इतिहासकार, ममरे की ओक पर अब्राहम के पास ईश्वर के प्रकट होने का वर्णन करते हुए कहते हैं: *'और प्रभु ममरे की ओक के पास उन पर प्रकट* हुए...'; फिर: *'उसने* (अब्राहम ने) *अपनी आँखें उठाईं और देखा, और देखो, तीन पुरुष उसके सामने खड़े* थे'; और तुरंत बाद: *जब उसने उन्हें देखा, तो वह [अपने] तम्बू के द्वार से उनकी ओर दौड़ा और भूमि पर झुक गया, और कहा: 'हे मेरे प्रभु! यदि मैं आपकी दृष्टि में अनुग्रह पाया है, तो अपने दास के पास से न जाएँ* (उत्पत्ति 18:1–3)।

धन्य ऑगस्टीन पूछते हैं, "क्या आप देखते हैं कि अब्राहम तीन से मिलता है, फिर भी एक के सामने नतमस्तक होता है?... तीनों को देखकर, उसने त्रित्व का रहस्य जाना, और एक के सामने नतमस्तक होकर, उसने तीन व्यक्तियों में एक ईश्वर की गवाही दी।"[430]

---

[429] "संसार की सृष्टि में, हम देखते हैं कि परमेश्वर पुत्र और आत्मा के साथ संवाद करता है, ठीक वैसे ही जैसे मूसा ने, मानवीय शब्दों में, उसे संवाद करते और बोलते हुए दर्शाया है: *'आओ हम मनुष्य को अपनी प्रतिमा में [और] अपनी समानता में बनाएँ* (उत्पत्ति 1:26); क्योंकि वह किससे कहता है, *'आओ बनाएं*, यदि वचन और एकलौते पुत्र से नहीं, जिनके द्वारा, सुसमाचार लेखक के शब्दों के अनुसार, *सभी वस्तुएँ... अस्तित्व में आईं* (यूहन्ना 1:3), और आत्मा से, जिसके बारे में लिखा है: *'ईश्वर का आत्मा मुझे रचता है* (अय्यूब 33:4)? लेकिन भले ही वह स्पष्ट रूप से यह न बताएं कि वह किसके बारे में बात कर रहे हैं या किससे वार्तालाप कर रहे हैं, फिर भी यह स्पष्ट है कि जब वह कहते हैं: *'देखो, आदम हम में से एक के समान हो गया है* (उत्पत्ति 3:22), और फिर: *'आओ, हम उतर चलें और वहाँ उनकी भाषा को उलझा दें* (उत्पत्ति 11:7), ताकि आप उन लोगों को समझ सकें जिन्हें परमेश्वर स्वयं के साथ एक समान मानते हैं। क्योंकि कोई भी स्वर्गदूतों को सृष्टिकर्ता और प्रभु के समान सम्मान में स्वीकार करने का साहस नहीं करेगा, और ईश्वर में एक ही व्यक्ति की कल्पना करना असंभव है जब कहा जाता है: *'हम में से एक के* समान', और: *'आओ, हम उतरें और उनकी भाषा को भ्रमित* करें'।" सेंट बेसिल द ग्रेट, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स* VII, पृ. 216.

[430] *ऑगस्टीन* / समय पर प्रवचन LXVII, संख्या 2, और प्रवचन LXX, संख्या 4। इस अंश की व्याख्या ऑगस्टीन से भी पहले संत अथेनासियस द ग्रेट द्वारा बिल्कुल इसी तरह की गई थी (पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के सामान्य सार पर, खंड II, पृष्ठ 9 में संख्या 9, संस्करण। पेरिस 1698) और संत एम्ब्रोज़: 'देखो, विश्वास का पहला रहस्य। ईश्वर उसे (अब्राहम) के पास प्रकट हुए और उसने तीन को देखा' (De Abraham, Book 1, Chapter 5, n. 33), और अन्यत्र: 'वह (अब्राहम) तीन को देखता है, लेकिन एक की पूजा करता है' (De Cain et Abel, Vol. 1, p. 197, सं. बेनेड.). "आपने देखा, जैसा कि पूजा-संबंधी पुस्तकों में भी कहा गया है, उस तरीके से जिस तरह एक मनुष्य के लिए त्रिमूर्ति को देखना संभव है, और आपने उन्हें एक घनिष्ठ मित्र के रूप में स्वागत किया, अति धन्य अब्राहम: इसके लिए आपको अद्भुत आतिथ्य का पुरस्कार मिला, अर्थात् विश्वास के द्वारा अनगिनत राष्ट्रों का पिता बनने का" (दिसंबर के मिनिट्स, फोलियो 83, वर्सो। साथ ही अक्टूबर, भाग 1, फोलियो 18, 185, 233, वर्सो; लेंटन ट्रायोडियन, फोलियो 52)।

और यह और भी उल्लेखनीय है, यह देखते हुए कि अब्राहम के पास प्रकट हुए तीनों स्वयं उससे इस तरह बात करते हैं जैसे वे तीन नहीं बल्कि एक हों; उदाहरण के लिए, पद 13 में: *और प्रभु ने अब्राहम से कहा: 'सारah ने अपने मन में क्यों हँसी?'* या श्लोक 17 में: *'और प्रभु ने कहा: "क्या मैं अब्राहम [मेरे सेवक] से वह छिपाऊँ जो मैं करने वाला हूँ?"'*[431]

ख) स्वयं परमेश्वर ने, यहूदी याजकों को इस्राएल के पुत्रों को आशीर्वाद देने की आज्ञा देते हुए, उन्हें निम्नलिखित शब्द बोलने का आदेश दिया: *'यहोवा तुम्हें आशीष दे और तुम्हें सुरक्षित रखे! यहोवा अपनी मुखाकृति तुम्हारे ऊपर प्रकट करे और तुम्हें अनुग्रह दे! यहोवा अपनी मुखाकृति तुम्हारी ओर फेरकर तुम्हें शान्ति दे!'* (गिनती 6:24–26)। यहाँ सर्वोच्च का नाम—जो विशेष रूप से केवल परमेश्वर का ही है—तीन बार लिया गया है, और हर बार उस पर विशेष आशीर्वाद की कामना के साथ जिसे आशीर्वाद दिया जा रहा है—क्या यहाँ एक और आशीर्वाद के शब्दों के साथ एक स्पष्ट मेल नहीं है, जो नए नियम में पवित्र प्रेरित and द्वारा व्यक्त किया गया है, जो उसी विचार को, केवल बहुत अधिक स्पष्ट रूप से व्यक्त करता है: *'हमारे प्रभु उद्धारकर्ता यीशु मसीह की कृपा, और परमेश्वर पिता का प्रेम, और पवित्र आत्मा की सहभागिता तुम सभ के साथ हो'* (2 कुरिन्थियों 13:13)।[432]

(c) भजनकार एक स्थान पर कहते हैं: *'यहोवा के वचन से आकाश बना, और उसकी सारी सेना उसकी ओठों की साँस से'* (भजन संहिता 32:6)। और यहाँ, पवित्र पिताओं के अनुसार, ईश्वर में व्यक्तियों की त्रिमूर्ति का एक संकेत है: क्योंकि इसमें तीन का उल्लेख है जिन्होंने सृजन के कार्य में भाग लिया: प्रभु, उनका वचन और आत्मा; जबकि अन्य अंशों में धर्मग्रंथ वास्तव में सृजन के कार्य को न केवल परमेश्वर पिता को, बल्कि उनके वचन, या पुत्र, और पवित्र आत्मा को भी श्रेय देता है, और इस मामले में उन्हें दिव्य व्यक्तियों के रूप में प्रस्तुत करता है (यूहन्ना 1:1-3; उत्पत्ति 1:2; अय्यूब 33:4)।[433]

(d) भविष्यवक्ता यशायाह, जिन्हें प्रभु का सम्पूर्ण महिमा में दर्शन प्राप्त हुआ, गवाही देते हैं कि उनके सिंहासन के चारों ओर खड़े सेराफिम एक-दूसरे से पुकार रहे थे: *'सैनिकों के प्रभु पवित्र, पवित्र, पवित्र हैं'* (यशायाह 6:3)। हम आसानी से स्वीकार करते हैं कि इस सेराफिक उद्घोषणा को, जब अलग से देखा जाए, तो अभी तक सख्त रूप से परम पवित्र त्रिमूर्ति की ओर इशारा करने वाला नहीं माना जा सकता।[434] लेकिन यदि हम इसे, जैसा कि हमें करना चाहिए, पुराने नियम के अन्य अंशों के साथ मिलाकर देखें जो स्पष्ट रूप से ईश्वर में व्यक्तियों की बहुलता का संकेत देते हैं (उत्पत्ति 1:26; 3:22); और भी अधिक यदि इसे नए नियम के उन अंशों के साथ देखा जाए जो स्पष्ट रूप से कहते हैं कि यिशायाह, जब उसे सेनाओं के प्रभु का दर्शन मिला और उसकी वाणी सुनने को मिली, तो उसने उसी समय उसके पुत्र को देखा (यूहन्ना 12:40-41) और पवित्र आत्मा को सुना (प्रेरितों के काम 28:25-27); अंत में, यदि हम याद करें कि प्राचीन यहूदियों ने स्वयं, निश्चित रूप से पर्याप्त कारण के बिना नहीं, सेराफिम द्वारा *'पवित्र'* शब्द के त्रिगुण दोहराव को ईश्वरत्व के तीन व्यक्तियों—[435] —पर लागू किया था, तो इस मामले में इस सेराफिक स्तुति के सच्चे अर्थ के बारे में कोई संदेह नहीं

---

431 हालाँकि, यह ध्यान देने योग्य है कि अन्य चर्च पिताओं ने इस अंश की व्याख्या कुछ अलग तरह से की; अर्थात्, उन्होंने अब्राहम के पास प्रकट होने वाले तीन व्यक्तियों में परमेश्वर के पुत्र को देखा, जिन्हें बार-बार प्रयुक्त होने वाले पद 'सबसे ऊँचा' (18:1, 13,17, 20, 26, 32, 33), और उनके साथ *दो स्वर्गदूत,* जिन्हें अगले अध्याय (19:1) की शुरुआत में नाम से बताया गया है। देखें *हिलारियस,* *De Trinitate*, पुस्तक V; *यूसेबियस,* *Demonstratio Evangelii*, पुस्तक V, अध्याय 23; *जेरोम,* *जेकार्याह के अध्याय 11 पर टिप्पणी*।

432 देखें *अथेनासियस,* *De Communi Ess. Patr., Filii et Sp. S.*, n. 19, खंड II, पृ. ¥2, सं. पेरिस, 1698। पुरानी वाचा के कई अन्य समान अंशों पर धन्य थियोडोरेट ने अपने ग्रंथ: **ऑन द बिगिनिंग***, क्रॉनिकल रीडिंग्स 1846, II, पृ. 214–218 में चर्चा की है।

433 *साइप्रियन,* *एडवर्सस जूडियोज़*, पुस्तक 11, खंड 3; *ग्रेगरी द थियोलोजियन,* *द वर्क्स ऑफ़ द होली फादर्स* में, IV, पृ. 19; *बेसिल द ग्रेट,* वही, VII, पृ. 181, 193, 288; *एम्ब्रोज़,* *De Spiritus Sancto*, पुस्तक II, पृ. 5; *जेरोम,* इस अंश पर *टिप्पणी*; जॉन ऑफ़ *डेमास्कस,* *पैरेललज़िम*, पुस्तक 1, अध्याय 1। *ऑर्थोडॉक्स कन्फेशन,* भाग 1, प्रश्न 10 के उत्तर को भी देखें।

434 क्योंकि धर्मग्रंथ के अन्य अंशों में एक ही शब्द या यहाँ तक कि एक पूरे विचार की तीन बार की पुनरावृत्ति कभी-कभी केवल बात पर ज़ोर देने के लिए उपयोग की जाती है, उदाहरण के लिए: *'छलकपट की बातों पर भरोसा न करो: "देखो, यहोवा का मन्दिर है, यहोवा का मन्दिर है, यहोवा का मन्दिर है!"'* (यिर. 7:4); *'देश, देश, देश! यहोवा का वचन सुनो'* (यिर. 22:29); *हे राष्ट्रों के कुलजनो, यहोवा को दान दो, यहोवा को महिमा और सम्मान दो; यहोवा को उसके नाम की महिमा दो* (भजन संहिता 95:7–8। तुलना करें भजन संहिता 92:3–4; 102:20, 22; यशायाह 24:18–19 और अन्य)।

435 इसके अलावा, उज्जीएल के पुत्र योनातान, अपनी खल्दीय व्याख्या में, इस अंश की व्याख्या करते हुए कहते हैं: *'पवित्र हैं पिता, पवित्र हैं पुत्र, पवित्र है पवित्र आत्मा।'* फिर रब्बी शिमोन, जो सबसे प्राचीन लोगों में से एक थे, इसी अंश की इस प्रकार व्याख्या करते हैं: *'पवित्र,* अर्थात् पिता; *पवित्र,* अर्थात् पुत्र; *पवित्र,* अर्थात् पवित्र आत्मा' (देखें *गैलाटिन,* *डे अर्केनिस कैथोल. वेरिटिटिस*, पुस्तक II, अध्याय 1)। यह ध्यान देने योग्य है कि पिंद्रहवीं सदी में रहे पीटर गलाटिन ने, जैसा कि वे स्वयं बताते हैं (उपरोक्त, पुस्तक V, अध्याय 3), यहूदियों के ईसाइयों

रह जाता। यही कारण है कि चर्च के पवित्र पिता और शिक्षक सर्वसम्मति से पुष्टि करते हैं कि यहाँ जो व्यक्त किया गया है वह तीन-गुना दोहराव: *'पवित्र, पवित्र, पवित्र'* के माध्यम से परमेश्वर में व्यक्तियों की त्रैतत्वता और *'सेनाओं के प्रभु'* शब्दों में सार की एकता, दोनों है।[436]

अंत में, **पुराने नियम के कुछ अंश** परम पवित्र त्रिमूर्ति के प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्ति और दिव्यता के बारे में अलग से बात करते हैं, और साथ ही उनके नामों का भी उल्लेख करते हैं, उदाहरण के लिए:

(क) पिता और पुत्र की व्यक्ति और दिव्यता: *'प्रभु ने मुझसे कहा: "तू मेरा पुत्र है; आज मैंने तुझे उत्पन्न किया है"* (भजन संहिता 2:7), या: *'प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा: "मेरे दाहिने बैठ जा"* (भजन संहिता 109:1), *'तेरा जन्म भोर से पहले गर्भ से हुआ, ओस की तरह* (3);[437]

ख) पवित्र आत्मा के व्यक्तित्व और दिव्यता के बारे में, ठीक पहले दो व्यक्तियों की तरह: *'और अब प्रभु परमेश्वर और उनकी आत्मा ने मुझे भेजा है* (यशायाह 48:16); *और यहोवा का आत्मा* (अर्थात् परमप्रधान का आत्मा), *बुद्धि और समझ का आत्मा, परामर्श और सामर्थ्य का आत्मा, ज्ञान और पवित्रता का आत्मा, उस पर* (अर्थात् मसीह पर, जो पुत्र है) *विराजेगा; और वह यहोवा के भय से भर जाएगा* (यशायाह 11:2–3); या: *'परमेश्वर का आत्मा मुझ पर है,'* मसीहा स्वयं कहते हैं, *'क्योंकि यहोवा ने मुझे गरीबों को सुसमाचार सुनाने के लिए अभिषेक किया है; उसने मुझे टूटे हुए दिल वालों को चंगा करने, बंदियों को स्वतंत्रता का प्रचार करने और बंधे हुए लोगों के लिए जेल के द्वार खोलने के लिए भेजा है'* (यशायाह 61:1; तुलना करें लूका 4:18–21, साथ ही उत्पत्ति 1:2; भजन संहिता 32:6)।[438] क्या इन सभी और कई अन्य समान अंशों[439] ने यहूदियों को यह एहसास नहीं दिलाया कि ईश्वर एक व्यक्ति नहीं हैं, बल्कि उनका एक पुत्र और एक पवित्र आत्मा भी है?

के पक्ष में अनुकूल छंदों को बदलने का समय मिलने से पहले, सबसे प्राचीन पांडुलिपियों से योनह की व्याख्या और अन्य यहूदी पुस्तकों को पढ़ा था।

[436] *एथान.* दे इंकर्नाट. एट कॉन्ट्रा एरियन. नं. 10: "जब सेराफिम ईश्वर की महिमा करते हैं, यह पुकारते हुए: *'पवित्र, पवित्र, पवित्र है सेनाओं का प्रभु',* तो वे पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की महिमा करते हैं" (ओप. खंड 1, पृ. 877, सं. 1698); *बेसिल द ग्रेट,* पवित्र आत्मा पर, पुस्तक III: "मैं मानता हूँ कि यशायाह ने सेराफिम के त्रिगुण उद्घोष: *'पवित्र, पवित्र, पवित्र* के बारे में लिखा, आंशिक रूप से इसलिए क्योंकि प्राकृतिक पवित्रता को तीनों हाइपोस्टेसिस में निहित माना जाता है" ("वर्क्स ऑफ द होली फादर्स" VII, पृ. 135); *क्रिसोस्टोम,* ओप., खंड 1, पृ. 587, सं. वेनिस 1741; *एम्ब्रोस.* डी फेडे, पुस्तक II, अध्याय 4: 'यह प्रदर्शित करने के लिए कि त्रिमूर्ति का एक ही ईश्वरत्व है, 'पवित्र, पवित्र, पवित्र' तीसरी बार कहने के बाद, उन्होंने एकवचन में जोड़ा: 'सेनाओं का यहोवा परमेश्वर।" यही *बात ऑर्थोडॉक्स कन्फेशन,* भाग 1, प्रश्न 10 के उत्तर में, और *अनुष्ठानिक पुस्तकों में भी पाई जाती है:* "एक प्रभु—शासक, जैसा यशायाह ने परमेश्वर को तीन व्यक्तियों में देखा था—की महिमा सेराफिम की सबसे शुद्ध आवाज़ों द्वारा की जाती है; उन्हें सबसे तेजस्वी अस्तित्व और त्रैक्य की घोषणा करने के लिए भेजा गया था" (ऑक्टोएकोस, भाग 1, फोलियो 165 और पृष्ठ के दूसरी ओर 234)।

[437] हमने पहले ही इन और इसी तरह के ग्रंथों की जाँच कर ली है, जो अन्यत्र, परमेश्वर के पुत्र की दिव्यता की ओर संकेत करते हैं, जो पुराने समय से प्रतिज्ञा किया गया मसीहा है। देखें *ऑर्थोडॉक्स थियोलॉजी का परिचय,* § 84।

[438] ग्रेगरी *द थियोलोजियन,* *वर्क्स ऑफ द होली फादर्स* III, पृ. 129; *क्रिसोस्टोम,* *ओप.*, खंड 1, पृ. 562, वेनिस 1741; *आइचनास,* *एपस्टि. 1 एड सेरापियन*, संख्या 5 और 23; *एपस्टि. II एड सेरापियन*, संख्या 8.

[439] ये हैं: अग्ग. 2:4–5; जकर्याह 3:1–3; 2 राजा 23:2.

और इसमें कोई संदेह नहीं है कि प्राचीन यहूदियों के पास — क) परम पवित्र त्रिमूर्ति की अवधारणा थी, कम से कम उनमें से कुछ सबसे विशिष्ट लोगों के पास तो थी[440] और कुछ हद तक: इसका प्रमाण उनके सारांश-व्याख्याओं में,[441] उनके कबाला और तालमूड में,[442] और उनके रब्बियों के लेखों में पाया जा सकता है;[443]

ख) परमेश्वर के पुत्र और पवित्र आत्मा की दिव्य व्यक्तियों के रूप में अवधारणा थी, और उनके पिता के साथ एकसार होने की, यद्यपि यह पूरी तरह से स्पष्ट या निश्चित नहीं थी: साक्ष्य उन्हीं स्रोतों में पाया जा सकता है।[444]

जहाँ तक इन अवधारणाओं के पूरी तरह से स्पष्ट न होने का प्रश्न है, और क्यों परमेश्वर को पुराने नियम में परम पवित्र त्रिमूर्ति के रहस्य को केवल एक निश्चित सीमा तक प्रकट करना प्रसन्न हुआ—यह उनकी अनंत बुद्धि की योजनाओं में छिपा हुआ है। ईश्वर-ज्ञानी शिक्षकों ने इसका मुख्य रूप से दो कारणों से श्रेय दिया:

(क) मानव स्वभाव में अंतर्निहित एक ऐसी शक्ति—जो सीमित और त्रुटिपूर्ण है—जिसे केवल धीरे-धीरे ही प्रकटीकरण के सर्वोच्च रहस्यों की समझ तक पहुँचाया जा सकता था, जैसे-जैसे उसकी शक्तियाँ और ग्रहणशीलता प्रकट और सुदृढ़ होती गईं: संत ग्रेगरी द थियोलोजियन का तर्क है, "यह असुरक्षित था, कि पिता की दिव्यता की स्वीकारोक्ति से पहले, और पुत्र को (यदि मैं इसे कुछ साहसपूर्वक कहूँ तो), पवित्र आत्मा के उपदेश का बोझ हम पर लादना और हमें अपनी अंतिम शेष शक्ति खोने के खतरे में डालना, जैसा कि उन लोगों के साथ होता है जो अत्यधिक भोजन के बोझ तले दबे होते हैं, या जो अपनी अभी भी कमजोर आँखों को सूरज की रोशनी पर टिकाते हैं; हालांकि, यह उचित था कि त्रिमूर्ति का प्रकाश क्रमिक वृद्धि, महिमा से महिमा तक की उन्नति और प्रगति के माध्यम से प्रबुद्ध हो रहे लोगों को प्रकाशित करे;"[445]

ख) एक और — यहूदी लोगों की प्रकृति और कमजोरियों के संबंध में, जिनके लिए पुराने नियम का प्रकाशन संप्रेषित किया गया था: धन्य थियोडोरेट कहते हैं, "ईश्वर ने अपनी अनंत बुद्धिमत्ता में यह उचित नहीं समझा कि यहूदियों को पवित्र त्रिमूर्ति की स्पष्ट समझ प्रदान करें, कहीं ऐसा न हो कि वे इसमें कई देवताओं की पूजा का बहाना ढूंढ लें—वे जो मिस्र की मूर्तिपूजा के प्रति इतने प्रवृत्त थे; और यही कारण है कि, बेबीलोन के बंधन के बाद, जब यहूदियों में

---

[440] 'चाहे राजशाही में हो या त्रिमूर्ति में, इसकी हमेशा घोषणा की गई। और उनमें सबसे विशिष्ट लोगों, यानी भविष्यवक्ताओं और पवित्र लोगों द्वारा इस पर विश्वास किया गया था...' *एपिफेनियस,* ओपी., खंड 1, पृ. 18, पेरिस, 1622. "यह न कहो कि पूर्वज पुत्र के विषय में मौन थे, जबकि वह हम पर प्रकट हुआ है, बशर्ते कि तुम पुत्र को सृजनकर्ता वचन के रूप में स्वीकार करो: क्योंकि पूर्वजों ने वचन को जाना, परमेश्वर के वचन की आराधना की, और वचन के साथ, आत्मा की भी"... *बेसिल द ग्रेट,* "द वर्क्स ऑफ़ द होली फ़ादर्स" VII, पृ. 219.

[441] ऊपर टिप्पणी 435 देखें।

[442] इस प्रकार, कब्बाला के सभी भागों में सबसे पुराना भाग — *सेफर येत्ज़िरिह* (सृष्टि की पुस्तक) — पूरे ग्रंथ में निम्नलिखित विचार से ओत-प्रोत है: 'ईश्वर एक है; परन्तु उन्होंने स्वयं को त्रिमूर्ति में, तीन सेफ़ीरोत में प्रकट किया है।' और पुस्तक की बिल्कुल शुरुआत में, इन *तीन सेफ़ीरोत को* ईश्वर के भीतर स्पष्ट रूप से प्रतिष्ठित किया गया है (अध्याय 1, खंड 1); फिर यह *इन तीन तत्वों* को सभी चीजों के प्रमुख सिद्धांतों के रूप में वर्णित करता है (अध्याय 1, खंड 2; अध्याय III, खंड 2, 3, 4) और *तीन पिताओं* के रूप में (अध्याय VI, खंड 1, 3), और अंत में, कि ये *तीनों* एक हैं, जो अपने आप में विद्यमान हैं (अध्याय VI, खंड 3) (वी. *ड्राक.*, *दे ल'हार्मनी एंट्रे लेग्लीस एट ला सिनेगॉग*, खंड 1, पृ. 438–445, पेरिस, 1844)। *ज़ोहार* में, जो तलमुद का दूसरा सबसे पुराना हिस्सा है, मूसा के शब्दों की व्याख्या में: *'हे इस्राएल, सुन: 'यहोवा हमारा परमेश्वर, यहोवा एक है* (व्यवस्थाविवरण 6:4), यह उल्लेख किया गया है: *'दो* हैं, जिनमें *एक* और जुड़ता है, और वे *तीन* हैं; और *तीन* होते *हुए* भी, *वे एक* से अधिक कुछ नहीं हैं / इन दो को छंद में दो "यहोवा" द्वारा नामित किया गया है, और उनके साथ "हमारा परमेश्वर" जुड़ा है। और चूँकि वे एक साथ मिलकर एक पूर्ण एकता का निर्माण करते हैं' (*ड्राच.*, वही, पृ. 314, 414-420)। इसके अलावा, तलमूद में, उत्पत्ति के पहले अध्याय की आयत 26 और 27 की व्याख्या पवित्र त्रिमूर्ति के सिद्धांत के पक्ष में की गई है (*ड्राच.*, वही, पृ. 429)।

[443] माइमोनिडिस और अन्य *(ड्राक.,* वही, पृ. 433–435)।

[444] हम पहले ही पुत्र, या वादा किए गए मसीहा के संबंध में यहूदी गवाहियों का हवाला दे चुके हैं ('ऑर्थोडॉक्स थियोलॉजी का परिचय', § 84)। जहाँ तक पवित्र आत्मा का प्रश्न है, यहाँ सबसे प्रमुख रब्बियों में से एक, एलिया लेवीटे, अपने सभी पूर्ववर्तियों की ओर से गवाही देते हैं: 'हमारे धन्य शिक्षकों ने पवित्र आत्मा को *शेखिनह* कहा: क्योंकि वह भविष्यवक्ताओं पर विराम लेता है' (वी. अपुद *हरमन। वीट्ज़ियम,* डिसिर्ट. डी ट्रिनिटि. पृ. 99, लुग्ड. बैटॉर. 1736)—जिसकी पुष्टि वास्तव में तालमूड के कई अंशों से होती है (देखें *डैसियम,* डी शेकिना, अध्याय XVIII, फोल. 709 और बाद के)— लेकिन *शेखिनाह* नाम (शहान — विश्राम करने से), जैसा कि स्वयं तलमूड से ज्ञात है, और जैसा कि यहूदी स्वयं स्वीकार करते हैं, उनके रब्बियों द्वारा विशेष रूप से केवल ईश्वर के लिए ही प्रयुक्त किया गया था (तलमूड में, रब्बी नाथन द्वारा लिखित *अवोत* ग्रंथ, अध्याय 34 देखें)।

[445] "पवित्र पिताओं के कार्य" III, पृ. 126। यही बात एपिफानियस (Haeres. LXXIV, § 10), ऑगस्टीन (in Quaest. ex Nov. परीक्षण, अध्याय 86) और नोवाटियन: 'मानवीय दुर्बलता को धीरे-धीरे और क्रमशः पोषित किया जाना था, क्योंकि महान चीजें खतरनाक होती हैं यदि वे अचानक आएं। क्योंकि अंधकार के बाद सूर्य का अचानक प्रकाश भी, अपनी अत्यधिक भव्यता के साथ, दिन को उन आँखों के सामने प्रकट नहीं करता जो इससे अपरिचित हैं, बल्कि अंधापन पैदा करता है' (De Trinitate, अध्याय 26)।

बहुदेववाद के प्रति स्पष्ट अरुचि उत्पन्न हो गई, तो उनकी पवित्र और यहाँ तक कि non- ly पवित्र पुस्तकों में पहले की तुलना में कहीं अधिक, और कहीं स्पष्ट, ऐसे अंश पाए जाते हैं, जिनमें दैवीय व्यक्तियों का उल्लेख है।"[446]

अंत में, यह ध्यान दें कि पुराने नियम के उन अंशों की जांच करते समय जिनमें परम पवित्र त्रिमूर्ति के रहस्य का उल्लेख है, हमारा प्राथमिक उद्देश्य यह दिखाना था कि इस रहस्य का सिद्धांत नए नियम में किसी भी तरह से नया नहीं है, जैसा कि बाद के लेखक दावा करते हैं। यहूदियों, कि पुराने नियम के धर्मी भी उसी त्रित्ववादी ईश्वर—पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा—में विश्वास करते थे, जिनमें हम भी विश्वास करते हैं... लेकिन इस सबसे महत्वपूर्ण ईसाई सिद्धांत के मुख्य आधार, निस्संदेह, पुस्तकों में निहित हैं—

§27. परमेश्वर में व्यक्तियों की त्रैयिक प्रकृति के लिए नए नियम के पवित्र धर्मग्रंथों से साक्ष्य, साथ ही सार की एकता को बनाए रखना।

नए नियम के वे अंश जो परम पवित्र त्रिमूर्ति के सिद्धांत की पुष्टि करते हैं, उन्हें तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है: कुछ में ईश्वर में व्यक्तियों की त्रिमूर्ति और साथ ही सार की एकता, दोनों विचारों की अभिव्यक्ति होती है; अन्य मुख्य रूप से दैवीय व्यक्तियों की वास्तविकता और पृथक्त्व को दर्शाते हैं; और तीसरी श्रेणी मुख्य रूप से, या यहां तक कि विशेष रूप से, उनकी सार की एकता को दर्शाती है।

I) प्रथम प्रकार के अंश, कालानुक्रमिक क्रम में, शामिल हैं:

1) उद्धारकर्ता का प्रवचन, जिसमें प्रेरितों को पवित्र आत्मा भेजने के संबंध में उनके प्रति उनके वचन शामिल हैं, जैसा कि यूहन्ना के सुसमाचार के अध्याय 14, 15 और 16 में वर्णित है। अपने शिष्यों को उनसे अपने निकटवर्ती अलगाव, संसार से पिता के पास अपनी दृश्यमान विदाई के बारे में बताने के बाद, और इस आने वाले अलगाव के समय में उन्हें सांत्वना देना चाहकर (यूहन्ना 14:1–7), उद्धारकर्ता—

क) सबसे पहले वह उन्हें अपने और पिता के संबंध की याद दिलाते हैं, जो वह पहले ही कई मौकों पर उन्हें बता चुके थे: *'जिसने मुझे देखा है, उसने पिता को देखा है... जो वचन मैं तुम से बोलता हूं, वह मैं अपने आप से नहीं बोलता; परन्तु पिता, जो मुझ में रहता है, वही अपने काम करता है। मेरे ऊपर विश्वास करो कि मैं पिता में हूँ और पिता मुझ में हैं... और यदि तुम मेरी आज्ञा से पिता से कुछ भी माँगोगे, तो मैं उसे करूँगा, ताकि पिता का महिमा पुत्र में हो* (9, 10, 11, 13)। यहाँ, स्पष्ट रूप से, पवित्र त्रिमूर्ति के पहले दो व्यक्तियों को अलग किया गया है: पिता और पुत्र—वह पुत्र जो शिष्यों से बात कर रहा है, और वह पिता जिनके बारे में वह बात कर रहा है—और उनके सार की एकता को इंगित किया गया है: क्योंकि, जैसा कि चर्च के शिक्षक कहते हैं, यदि पिता और पुत्र, दो अलग-अलग व्यक्तित्व होते हुए भी, सार में एक नहीं होते, तो पुत्र यह नहीं कह सकता था: *'जिसने मुझे देखा है, उसने पिता को देखा है'*... या: *'मैं पिता में हूँ और पिता मुझ में है'*।[447]

ख) फिर वह अपने शिष्यों के विचारों को दूसरे सांत्वनादाता, पवित्र आत्मा की ओर मोड़ता है, जिसे वह अपनी जगह पर पिता से उनके पास भेजने का वादा करता है: *'मैं पिता से प्रार्थना करूँगा, और वह तुम्हें एक और सांत्वनादाता देगा, कि वह सदा तुम्हारे साथ रहे'*; और थोड़ी देर बाद: *'परन्तु वह सान्त्वनादाता, पवित्र आत्मा, जिसे पिता मेरे नाम से*

---

[446] Lib. de curat. Graecarum affect. यही विचार निसे के ग्रेगरी (in verba: *'faciemus hom., ad imag.'*, Orat. II), पेलूसियम के इसिडोर (lib. II, epist. 143) और जॉन क्रिसोस्टोम में भी मिलता है, जो कहते हैं: "यही वह सटीक कारण था कि यहूदी, भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से, परमेश्वर के पुत्र को स्पष्ट या स्पष्ट रूप से नहीं जानते थे, बल्कि अस्पष्ट और आकस्मिक रूप से जानते थे। बहुदेववाद की भूल को अभी-अभी त्यागने के बाद, यदि वे फिर से परमेश्वर और परमेश्वर के बारे में सुनते, तो वे एक बार फिर अपनी पूर्व पीड़ा में लौट जाते। इसीलिए भविष्यवक्ता हर जगह और अधिक रूप से कहते हैं कि ईश्वर एक है, और उसके सिवा कोई और नहीं है—वे ऐसा पुत्र को अस्वीकार करने के लिए नहीं कहते (ईश्वर न करे!), बल्कि उनकी कमजोरी को दूर करने और उन्हें कई और काल्पनिक देवताओं की धारणा से हटाने के लिए कहते हैं" (अनपेय पर, एनोमियस के विरुद्ध, वचन 5, क्रि. रीडिंग्स 1842, I, पृ. 27)।

[447] *क्रिसोस्टोम,* यूहन्ना पर होमीली LXXIV, n. 1: "एकसार होने को प्रदर्शित करने की इच्छा से, उन्होंने कहा: 'जिसने मेरे सार (οὐσίαν) को जाना है, उसने पिता के सार को भी जाना है...'; यदि वह एक अलग सार का होता, तो वह यह नहीं कहता...;" *अथेनासियस,* एरियन के विरुद्ध, भाषण III, n. 5; *ऑगस्टीन,* जॉन पर प्रबंध LXX; *अलेक्जेंड्रिया के सिरिल,* पवित्र और जीवन-दायक त्रिमूर्ति पर, अध्याय 16: "इस प्रकार, यदि वह (यीशु मसीह) पिता के समान ही बोलते हैं, और यदि पिता उनमें वास करते हैं और वह पिता में, और जिसने उन्हें देखा है उसने पिता को देखा है, और जो उन्हें जानता है वह पिता को भी जानता है, तो यह सभी तर्कशील लोगों के लिए स्पष्ट है कि पिता और पुत्र का स्वभाव एक ही है, और जो कुछ भी पिता के पास है, वह पुत्र के पास भी है। अन्यथा, यदि उनके पास पितृत्व की स्वभाविक प्रकृति को छोड़कर वह सब कुछ नहीं होता जो पिता के पास है, तो उन्होंने स्वयं में पिता का अनावरण नहीं किया होता; क्योंकि यही पितृत्व का विशिष्ट गुण है, जैसे पुत्रत्व पुत्र का विशिष्ट गुण है" (क्रिस. होम. 1847, III, पृ. 35–36)।

भेजेगा, वह तुमको सब कुछ सिखाएगा और जो कुछ मैं ने तुम से कहा है, उसे तुमको याद दिलाएगा। (14:26)। यहाँ, परम पवित्र त्रिमूर्ति के तीनों व्यक्तियों को पहले से ही अलग किया गया है, और ठीक व्यक्तियों के रूप में: पुत्र, जो अपने बारे में कहता है: *'मैं निवेदन करूँगा...'*; पिता: *'मैं पिता से प्रार्थना करूँगा';* पवित्र आत्मा, जिन्हें *दूसरा सांत्वनादाता* कहा जाता है — और इसलिए वे पुत्र से भिन्न हैं; जिन्हें पिता द्वारा भेजा जाएगा — और इसलिए वे पिता से भिन्न हैं; और जिन्हें प्रेरितों के लिए पुत्र का स्थान लेने और उन्हें सब कुछ सिखाने के लिए भेजा जाएगा — और इसलिए वे ठीक वैसे ही एक व्यक्ति हैं जैसे पुत्र हैं।[448]

(ग) फिर वह शिष्यों को इस दूसरे सांत्वनादाता के बारे में नई जानकारी देता है, जिसे उन्हें अपने मार्गदर्शक के रूप में प्राप्त करना है—पिता के साथ उसके संबंध के बारे में जानकारी: *'परन्तु जब वह सांत्वनादाता आएगा, जिसे मैं पिता से तुम्हारे पास भेजूंगा, अर्थात् सत्य का आत्मा जो पिता से निकलता है, वह मेरी गवाही देगा* (15:26)। यहाँ, इस तथ्य के अलावा कि, पिछले ग्रंथों की तरह, पवित्र त्रिमूर्ति के तीनों व्यक्तियों—पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा—को स्पष्ट रूप से अलग किया गया है, पवित्र आत्मा की पिता के साथ एकसारता भी दिखाई गई है: *'सत्य का आत्मा, जो पिता से निकलता है...'*[449]

(घ) वे आगे अपने शिष्यों से पवित्र आत्मा के स्वयं से, परमेश्वर पिता के पुत्र के रूप में, संबंध के बारे में बात करते हैं: *'परन्तु जब वह, सत्य का आत्मा, आएगा, तो वह तुम्हें सारी सच्चाई में मार्गदर्शन करेगा; क्योंकि वह अपनी ओर से कुछ न बोलेगा, परन्तु जो कुछ वह सुनेगा, वही बोलेगा; और जो कुछ होने वाला है, वह तुम्हें बता देगा। वह मेरा महिमामंडन करेगा, क्योंकि वह जो कुछ मेरा है, उसे लेकर तुम्हें बता देगा। पिता के पास जो कुछ भी है, वह मेरा है; इसीलिए मैंने कहा कि वह जो कुछ मेरा है, उसे लेकर तुम्हें बता देगा* (16:13–15)। यह पवित्र आत्मा की पुत्र के साथ एकसारता को व्यक्त करता है, क्योंकि उद्धारकर्ता के वचन: *'जो कुछ पिता के पास है वह सब मेरा है'*, केवल उनके सार की एकता को ही दर्शा सकते हैं, और किसी भी तरह से उनके व्यक्तिगत गुणों को नहीं।[450]

(घ) अंत में, सब कुछ समाप्त करने के लिए, वह शिष्यों से वही दोहराते हैं जिससे उन्होंने आरंभ किया था: *'मैं तुम से सच कहता हूं, जो कुछ तुम पिता से मेरे नाम पर मांगोगे, वह तुम्हें देगा... क्योंकि पिता स्वयं तुम से प्रेम करते हैं, क्योंकि तुम ने मुझ से प्रेम किया है और विश्वास किया है कि मैं परमेश्वर से निकला हूं।' मैं पिता से आया हूँ और संसार में प्रवेश किया; और अब मैं संसार को छोड़कर पिता के पास जाता हूँ* (16:23, 27, 28)। यहाँ, पुत्र की पिता के साथ एकसारता का विचार नई ताजगी के साथ व्यक्त किया गया है: *'मैं परमेश्वर से आया हूँ... मैं पिता से आया हूँ'*।[451]

२) संपूर्ण संसार में प्रचार करने के अपने मिशन पर भेजने से पहले शिष्यों को उद्धारकर्ता की आज्ञा: 'इसलिये *जाओ और सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ, और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दिलाओ* (मत्ती २८:१९)। यहाँ स्पष्ट रूप से तीन का नाम लिया गया है और उन्हें अलग-अलग बताया गया है: पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, और उनका एकल नाम स्थापित किया गया है।[452] तो फिर, इन शब्दों को कैसे समझा जाए? निस्संदेह—

---

448 *क्रिसोस्टोम,* यूहन्ना पर होमीली LXXV, n. 1

449 *ग्रेगरी द थियोलोजियन,* *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स* III, पृ. 109; *एम्ब्रोज़,* *ऑन द होली स्पिरिट*, अध्याय 1; *थियोडोरेट,* *ब्रीफ एक्सपोजिशन* दिव्य डोग्मा, अध्याय 3: "शब्दों द्वारा: *'जो पिता से उद्भूत होते हैं'*, उन्होंने यह दिखाया कि पिता पवित्र आत्मा का स्रोत हैं, और यह नहीं कहा: 'उद्भूत होंगे' या 'उत्पन्न होंगे', बल्कि: *'उद्भूत होते हैं'*, यह दिखाने के लिए कि उनका स्वभाव एक और समान है, कि उनका सार अविभाज्य और अविभाद है, और कि व्यक्तित्व एक-दूसरे के साथ संयुक्त हैं। क्योंकि जो निकलता है वह उस से अलग नहीं हो सकता जिससे वह निकलता है' (क्रॉन. रीडिंग्स 1844, VI, पृ. 190)।

450 *डायोनिसियस द एरोपागाइट,* *ऑन द डिवाइन नेम्स*, अध्याय II, § 1; *अथेनासियस,* *ऑन "*ऑल थिंग्स हैव बीन एंट्रस्टेड टू मी*"...*, संख्या 3, 4; *लेटर टू सेरापियन*, 1, संख्या 20; *एम्ब्रोस,* *ऑन द फेथ*, पुस्तक II, अध्याय 3; *एपिफेनियस,* *अगेंस्ट हेरेसीज़*, LXVII; *सिरिल अलेक्ज़ेंड्रिया,* *ऑन* योहन, पुस्तक XII, अध्याय 2; *हिलरी,* द ट्राइनिटी पर, पुस्तक VIII, अध्याय 20: 'इसलिए यह अनुमत नहीं है कि विधर्मी विकृति को अधर्मी समझ में इतनी स्वतंत्रता दी जाए कि प्रभु का यह वचन—कि क्योंकि जो कुछ भी पिता का है वह उसी का है, सत्य का आत्मा उनसे उन्हें प्राप्त करेगा—को प्रकृति की एकता से संबंधित स्वीकार न किया जाए।'

451 *क्रिसोस्टोम,* होमीली LXXXIX, संख्या 2; *अथेनासियस,* *विश्वास की व्याख्या*, संख्या 2.

452 क्योंकि यूनानी पाठ में: βαπτίζοντες αὐτούς εἰς τό ὄνομα τοῦ πατρός καί τοῖο υἱοῦ καί τοῦ ἁγίου πνεύματος, उनमें से प्रत्येक के पहले संज्ञा-उपसर्ग (τοῦ) आता है, जो एक *विशिष्ट* विषय को दर्शाता है, और उन सभी को, *अलग-अलग सत्तायें* होने के नाते, संयोजक (καί) द्वारा जोड़ा गया है। उनका नाम ही, यद्यपि यह तीन अलग-अलग व्यक्तियों को संदर्भित करता है, एकवचन में और साथ ही विशेषण (εις τό ὄνομα) के साथ व्यक्त किया गया है।

(क) जैसा उद्धारकर्ता स्वयं उन्हें समझते थे और जैसा उनके प्रेरति उन्हें समझने में सक्षम थे। लेकनि उद्धारकर्ता ने पहले ही कई अवसरों पर प्रेरतिों को स्पष्ट कर दयिा था कि 'पिता' नाम से उनका तात्पर्य स्वयं परमपिता परमेश्वर से था, जनि्होंने उन्हें संसार में भेजा था (यूहन्ना 6:38–40; 7:16, 18, 28; 11:42 और अन्यत्र), और कि *एक और* है *जो मेरी गवाही देता है* (यूहन्ना 5:32); 'पुत्र' नाम से उनका अभप्रिाय स्वयं से है, जसिे वास्तव में प्रेरतिों ने पहले ही परमेश्वर का पुत्र स्वीकार कर लयिा था, जो परमेश्वर से नकिला था (मत्ती 16:16; यूहन्ना 16:30); अंत में, 'आत्मा' नाम से उनका तात्पर्य *एक अन्य सांत्वनादाता से* है, जसिे उन्होंने पहले ही उनके पास पिता से अपनी ओर से भेजने का वादा कयिा था (यूहन्ना 14:16; 15:26)। परणिामस्वरूप, वर्तमान मामले में भी, चूँकि उद्धारकर्ता ने इन शब्दों की और अधकि व्याख्या करना आवश्यक नहीं समझा, इसलएि उन्होंने स्वयं और प्रेरतिों ने पिता, पुत्र और पवत्रि आत्मा के नामों से तीन दव्यि व्यक्तयिों के अलावा और कसिी का मतलब नहीं लयिा हो सकता। इसी प्रकार, इससे पहले भी और कई अवसरों पर, उद्धारकर्ता ने प्रेरतिों के सामने, साथ ही अपने सभी श्रोताओं के सामने, वर्तमान वाक्यांश के समान वाक्यांशों में *'नाम के* वषिय *में'*, या *'नाम के नाम पर'*, या *'नाम से'* अभव्यिक्ति का उपयोग कयिा था, और हमेशा इसका उपयोग *गरमिा, शक्ति, महमिा और अधकिार को* दर्शाने के लएि कयिा था; उदाहरण के लएि: *'मैं अपने पिता के नाम में आया हूँ'* (यूहन्ना 5:43); *'जो काम मैं अपने पिता के नाम में करता हूँ, वे मेरी गवाही देते हैं* (10:25); *'वे मेरे नाम पर दुष्टात्मा नकिालेंगे* (मरकुस 16:17); *जहाँ दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठे होते हैं, वहाँ मैं उनके बीच में होता हूँ* (मत्ती 18:20; तुलना करें मत्ती 24:5; मरकुस 9:39; 13:6; यूहन्ना 10:25; 17:11). परणिामस्वरूप, वर्तमान मामले में भी, प्रेरतिों को लोगों का बपतस्मि नामों में नहीं, बल्कि पिता और पुत्र और पवत्रि आत्मा के नाम में देने की आज्ञा देकर, उद्धारकर्ता ने इस प्रकार तीन दव्यि व्यक्तयिों की एकल और अवभिाज्य गरमिा, उनके एकल अधकिार, शक्ति और महमिा, और परणिामस्वरूप, उनके एकल और अवभिाज्य सार को सूचति कयिा।

ख) जसिे तरीके से इन शब्दों को बाद में, पवत्रि प्रेरतिों के अनुयायी होकर, मसीह की संपूर्ण कलीसयिा द्वारा समझा गया। फरि भी, अपनी स्थापना के समय से ही, कलीसयिा ने लगातार पिता, पुत्र और पवत्रि आत्मा के नाम पर, तीन दव्यि व्यक्तयिों के रूप में, बपतस्मि दयिा है, और उन वधिर्मीयों की नदिा की है जनि्होंने बपतस्मि देने का प्रयास कयिा, या तो केवल पिता के नाम पर, पुत्र और पवत्रि आत्मा को उनसे नीच समझकर, या केवल उनकी शक्तयिों और गुणों के रूप में, या पिता और पुत्र के नाम पर, और यहाँ तक कि केवल पुत्र के नाम पर, इस प्रकार पवत्रि आत्मा का उनके सामने अपमान करना।[453] इसी तरह, उद्धारकर्ता द्वारा प्रयुक्त *'के नाम* पर' अभव्यिक्ति का हमेशा से यह अर्थ समझा जाता था कि यह तीनों दव्यि व्यक्तयिों की एकल गरमिा, एकल दव्यिता और एकल सार को दर्शाती है: *"उन्होंने कहा: 'नाम में', 'नामों में नहीं,'"* संत एम्ब्रोज़ ने कहा, "इसलएि पिता के लएि अलग नाम नहीं, पुत्र के लएि अलग नाम नहीं, पवत्रि आत्मा के लएि अलग नाम नहीं, क्योंकि एक ही ईश्वर है; कई नाम नहीं, क्योंकि दो ईश्वर नहीं, न ही तीन ईश्वर हैं।"[454]

"कबूलनामे को याद करो," संत ग्रेगरी द थयिोलोजयिन भी कहते हैं, "तुम्हें कसिमें बपतस्मि दयिा गया था? पिता में? — अच्छा! फरि भी यह यहूदी है। पुत्र में? — अच्छा! यह अब यहूदी नहीं है, लेकनि फरि भी अपूर्ण है। पवत्रि आत्मा के नाम पर? — उत्तम! वह पूर्ण है। लेकनि क्या आपको केवल उनके नाम पर बपतस्मि दयिा गया था, या उनके सामान्य

---

[453] *Jusiin.* Apolog. 1, पृ. 61; *Tertull.* De veland. virg. अध्याय 1; Adv. Prax. अध्याय 26; De praescr. haeret. अध्याय 20; *Iren.* Adv. haer. lib. 1, c. 2; *साइप्रयिन,* पत्र 73: 'मसीह राष्ट्रों को पूर्ण और एकजुट त्रमिूर्ति में बपतस्मि लेने की आज्ञा देते हैं...'; *अट्लयिानास,* सेरापयिन को पत्र 1, संख्या 30: 'जो कोई भी त्रमिूर्ति से कुछ भी अलग करता है और पवत्रि आत्मा के बनि, केवल पिता के नाम पर, या केवल पुत्र के नाम पर, या पिता और पुत्र के नाम पर बपतस्मि लेता है; को कुछ भी प्राप्त नहीं होता…; क्योंकि पूर्णता (τελείωσις) त्रमिूर्ति में पाई जाती है" (Conf. epist. ad Serap. II, n. 7; contra Arian. Orat. II, n. 41); *Hilar.* de Trinit. Book II, n. 1. 5; Book XII, n. 57; *बेसलि द ग्रेट,* द पवत्रि आत्मा *पर,* अध्याय 10 (*द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स* VII, पृ. 267); *ग्रेगरी द थयिोलोजयिन,* होमीली 40 (*द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स* III, पृ. 316–317); *एपफिानयिस,* *ओन हेरेसीज़*, XX, n. 3; *क्रसिोस्टोम,* 1 कुरन्थियों पर होमीली XX, n. 3, 4; *एम्ब्रोस,* *ऑन द मस्ट्रीज़*, अध्याय V, n. 28; *ऑगस्टीन,* *अगेंस्ट मैक्समिनिस द एरयिन*, II, 13, n. 2; *अलेक्जेंड्रयिा के सरिलि,* *ऑन द ट्रनिटी*, अध्याय 20 (क्रि. च., 1857, III, पृ. 39–40); *हाइरोनमिस,* एपस्टि. 61 एड पामालयिम; *लयिो महान,* एपस्टि. 13 एड पुलचेरयिम; *जॉन ऑफ़ डेमास्कस,* एक्सैक्ट एक्सपोज़शिन ऑफ द ऑर्थोडॉक्स फेथ, पुस्तक 1, अध्याय 8.

[454] *एम्ब्रोसयिस,* *दे स्परिटिुस सैंक्टो*, पुस्तक 1, अध्याय 14। धन्य ऑगस्टीन इसी वचिार को व्यक्त करते हैं: 'यह एक ईश्वर, क्योंकि वह पिता, पुत्र और पवत्रि आत्मा के नामों में नहीं है, बल्कि पिता, पुत्र और पवत्रि आत्मा के नाम में है: जहाँ आप एक *नाम* देते हैं, वहाँ एक *ईश्वर* है' (यूहन्ना पर टीका, ट्रैक्टेट 6)।

नाम पर भी? — हाँ, और सामान्य नाम पर भी! तो, यह नाम क्या है? निस्संदेह, ईश्वर का नाम।"[455] "पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा में, और *उनके* सामान्य *नाम* में विश्वास, हमें इस (परमानंद) तक ले जाता है; पुनर्जन्म, अधर्मीपन का त्याग और *दिव्यता* की *स्वीकारोक्ति — यह सामान्य नाम — हमें* इसकी ओर ले जाता *है*।"[456] और दूसरे सार्वभौमिक परिषद के सभी पादरियों ने, जैसा कि हमने पहले ही देखा है, पश्चिमी बिशपों को लिखे अपने पत्र में कहा है कि "हमारा विश्वास, हमारे बपतिस्मा के अनुसार, हमें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर विश्वास करना सिखाता है, अर्थात् एक ईश्वरत्व में, और पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की शक्ति और सार में।"[457]

3) संत जॉन द थियोलोजियन के शब्द: *'स्वर्ग में तीन गवाह हैं: पिता, वचन और पवित्र आत्मा; और ये तीनों एक हैं* (1 यूहन्ना 5:7)। इस अंश में, पिछले अंश की तुलना में और भी स्पष्ट रूप से, ईश्वर में व्यक्तियों की त्रिमूर्ति और सार की एकता दोनों व्यक्त की गई हैं।

व्यक्तियों की त्रिमूर्ति: क्योंकि पिता, वचन और पवित्र आत्मा को तीन गवाह कहा जाता है; परिणामस्वरूप, वे एक-दूसरे से भिन्न हैं; परिणामस्वरूप, वचन और आत्मा, जिन्हें पिता के बराबर गवाह के रूप में प्रस्तुत किया गया है, केवल उनके दो गुण, या शक्तियाँ, या कार्य नहीं हैं, बल्कि वे भी पिता की तरह ही व्यक्तित्व हैं।

सार की एकता: क्योंकि यदि वचन और पवित्र आत्मा पिता के साथ एक ही दैवीय स्वभाव और सार को साझा नहीं करते, बल्कि एक भिन्न, सृजित स्वभाव रखते, तो उनके और पिता के बीच एक अनंत दूरी होती, और यह कहना अब संभव नहीं होता: *'और ये तीनों एक हैं'*।[458] यह दावा करके इस अंश की ताकत को कमजोर करने का प्रयास करना अनुचित है कि यहाँ तीन स्वर्गीय साक्षी, पिता, वचन और पवित्र आत्मा को एक के रूप में उनकी सत्ता के संदर्भ में नहीं, बल्कि केवल उनकी सर्वसम्मत गवाही के संदर्भ में प्रस्तुत किया गया है, ठीक वैसे ही जैसे में उल्लिखित तीन पृथ्वी के साक्षी: *'पृथ्वी पर तीन गवाही देते हैं: आत्मा, जल और लहू'; और ये तीनों — एक* (8) *के संबंध* में — निस्संदेह एकता बनाते हैं, सार में नहीं, बल्कि केवल अपनी गवाही के संबंध में। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि —

(क) पवित्र प्रेरित स्वयं स्वर्गीय साक्षियों की एकता और पृथ्वी पर के साक्षियों की एकता के बीच स्पष्ट अंतर करते हैं: बाद वालों के संबंध में, जो वास्तव में एक-दूसरे से भिन्न या सार में अलग हैं, वे केवल इतना कहते हैं: *'और ये तीनों एक हैं'* (καί οί τρεῖς είς τό έν έισιν), अर्थात्, अपनी गवाही के संबंध में *एक हैं*; लेकिन पहले वालों के बारे में वह कहते हैं: *'और ये तीनों एक हैं'* (καί οὗτοι οί τρεῖς έν έισιν), और *'एक'* नहीं; परिणामस्वरूप, *वे* पृथ्वी के गवाहों की तुलना में कहीं अधिक हद तक *एक हैं*, जो न केवल अपनी गवाही के संबंध में, बल्कि सार में भी एक हैं। यह और भी निश्चित है क्योंकि —

ख) पवित्र प्रेरित स्वयं, निम्नलिखित पद में, बिना किसी भेद के, स्वर्गीय साक्षियों की गवाही को परमेश्वर की गवाही के रूप में संदर्भित करते हैं: *'यदि हम मानवीय गवाही को स्वीकार करते हैं, तो परमेश्वर की गवाही उससे भी बड़ी है'*; परिणामस्वरूप, उनका तात्पर्य यह है कि तीनों स्वर्गीय साक्षी, ठीक अपनी दिव्यता के कारण, *एक हैं*, या वे तीनों दिव्य व्यक्ति हैं। और यह और भी अधिक निश्चित है क्योंकि —

c) वही पवित्र प्रेरित, इससे भी पहले, अपनी सुसमाचार में, पहले ही तीनों स्वर्गीय साक्षियों में से प्रत्येक का उल्लेख कर चुके हैं: पिता, पुत्र (या वचन) और पवित्र आत्मा, और उद्धारकर्ता के वचन प्रस्तुत करते हुए उन्हें एक-दूसरे के सह-सार वाले तीन दिव्य व्यक्तियों के रूप में संदर्भित करता है: *'यदि मैं स्वयं की गवाही देता हूँ, तो मेरी गवाही सत्य है: क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैं कहाँ से आया हूँ और कहाँ जा रहा हूँ। मैं स्वयं गवाही देता हूँ, और जिसने मुझे भेजा है, वह पिता भी मेरी गवाही देता है* (यूहन्ना 8:14, 18; तुलना करें 5:32–37); और *'जब सहायक आएगा, जिसे मैं तुम्हारे पास पिता से भेजूंगा, सत्य का आत्मा जो पिता से निकलता है, वह मेरी गवाही देगा* (15:26)। *वह मेरा महिमामंडन करेगा, क्योंकि वह मेरी बातें लेकर तुम्हें बता देगा। जो कुछ भी पिता के पास है, वह मेरा है; इसीलिए मैंने कहा कि वह जो मेरा है, उसे लेगा और तुम्हें बता देगा* (16:14–15)। इस बात की ओर इशारा करके कि यह नए नियम की कुछ यूनानी पांडुलिपियों और कुछ

---

[455] होमीली 33 *द वर्क्स ऑफ़ द होली फ़ादर्स* III, पृ. 181–182 में।

[456] होमीली 22, *द वर्क्स ऑफ़ द होली फ़ादर्स*, खंड II, पृ. 225।

[457] ऊपर टिप्पणी 405 देखें। और बपतिस्मा के बाद... और हमें विश्वास करना सिखाते हुए, पिता के नाम पर, और पुत्र के नाम पर, और पवित्र आत्मा के नाम पर, अर्थात्, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की दिव्यता, शक्ति और एकल सार में विश्वास किया जाना...

[458] "कहा गया है: *'स्वर्ग में तीन गवाह हैं, और एक भी* नहीं, क्योंकि इन तीनों में एक भी व्यक्ति नहीं है,'" संत अथेनासियस द ग्रेट, या अथेनासियस के नाम से जुड़ी पवित्र त्रिमूर्ति पर लिखी पुस्तकों के किसी भी अन्य लेखक, की टिप्पणी है *(Athanas.* Opp. Vol. III, पृ. 606, सं. पेरिस, 1698)।

अनुवादों, वशिष रूप से पूर्वी अनुवादों में अनुपस्थति है, और इसका उपयोग प्राचीन चर्च पतिाओं, जैसे कसिेंट ग्रेगरी द थयिोलोजयिन, एम्ब्रोज़ और हलिारी द्वारा नहीं कयिा गया था, इस वचिारणीय अंश, '[459] ' की प्रामाणकिता पर संदेह डालने का प्रयास करना भी अनुचति है; न ही नकियिा, सार्डसि और अन्य परषिदों द्वारा, जो एरयिनवादयिों के खलिाफ आयोजति की गई थीं—हालांकयिह श्लोक वधिर्मयिों के खलिाफ एक महत्वपूर्ण हथयिार के रूप में काम कर सकता था, और हालांकि कुछ चर्च पतिरों ने इसी अध्याय के श्लोक 6 और 8 का इस उद्देश्य के लिए उपयोग कयिा, जो कहीं कम शक्तशिाली और नरि्णायक हैं। यह सारा प्रमाण कि वचिाराधीन श्लोक प्रामाणकि नहीं है, अपने उद्देश्य के लिए पूरी तरह से अपर्याप्त है, और इसके अलावा सकारात्मक प्रमाणों द्वारा खंडति कयिा गया है:

क) यद्यपयिह पद नए नयिम की कुछ ग्रीक पांडुलपियिों में अनुपस्थति है जो आज तक सुरक्षति हैं, यह कई अन्य में मौजूद था और है।[460] तब कोई पूछ सकता है, कि हमें पहले वाले की बजाय दूसरे वाले को प्राथमकिता क्यों देनी चाहए और यह नष्किर्ष क्यों नकिालना चाहए कि इसे दूसरे वाले में जोड़ा गया था, बजाय इसके कि इसे पहले वाले के पाठ्यक्रम ( ) से हटा दयिा गया हो? इसके वपिरीत, नष्पिक्षता यह मांग करती है कि हम वशिष रूप से दूसरे वाले को प्राथमकिता दें। क्योंकि पहले प्रकार की पांडुलपियिाँ नजिी पांडुलपियिाँ हैं, यानी, वे नजिी व्यक्तयिों के लिए लखिी गई थीं या कुछ नजिी चर्चों में उपयोग की जाती थीं; जबकि दूसरे प्रकार की सूचयिों का उपयोग न केवल नजिी व्यक्तयिों और नजिी चर्चों द्वारा कयिा जाता था, बल्कि संपूर्ण ऑर्थोडॉक्स पूर्वी चर्च द्वारा कयिा जाता था और कयिा जाता है, और कोई भी यह साबति करने की स्थति में नहीं है कि उसने इस श्लोक को अपनी पठन-सूची में केवल कसिी नश्चति समय के बाद ही शामलि कयिा, या यह कि यदि यह पहले से ज्ञात नहीं होता तो वह इसे अपना ही नहीं सकता था। इसके अलावा, यह समझाना बहुत आसान है कि कुछ पांडुलपियिों में इस श्लोक को कैसे हटा दयिा गया होगा: यह बहुत ही सूक्ष्म तरीके से प्रतलिपि बिनाने वालों की चूक के कारण हो सकता है, — क्योंकि यह पद बल्कुिल उसी तरह शुरू होता है जैसे अगला पद और इसका अंत भी बहुत समान है,[461] — और ईसाइयों के दुष्ट इरादों से, वशिष रूप से एरयिनों से, जनिके लिए पद 7 की सामग्री नस्संदेह आपत्तजिनक थी, और जन्होंने वास्तव में, कई ऐसे ग्रंथों को वकिृत या हटा दयिा जो उनकी वधिर्म

---

[459] केवल कई प्रोटेस्टेंट लेखक ही नहीं, बल्कि कुछ रोमन कैथोलकि लेखक भी। दूसरी ओर, हमारे रूसी धर्मशास्त्रयिों ने हमेशा इस ग्रंथ का उपयोग कयिा है, और कुछ ने इसकी प्रामाणकिता का, यद्यपि संक्षेप में, बचाव भी कयिा है। *वी. थियोफ. प्रोकॉपोव।* *दयिोलॉग.*, खंड 1, *दे एस. ट्रनिटि.*, अध्याय 2, पृ. 542–544, लाइपज़िग 1782; *मकाराई,* डॉगमैटकि थयिोलॉजी, अध्याय 3, पृ. 35, मॉस्को 1786; *हायसटि कार्पन्स्की,* थयिोलॉजी का संक्षप्ति ग्रंथ, अध्याय II, खंड 2, पृ. 27, लाइपज़िग 1786; *इरेनेयस फाल्कोव्स्की,* थयिोलॉजी का संक्षप्ति ग्रंथ, पुस्तक II, अध्याय 2, पृ. 78, मॉस्को 1802; *सल्वेस्टर,* *धर्मशास्त्र का सार*, अध्याय XXI, पृ. 158, मॉस्को 1805; *ज़ुवेनालयि* — एक्सपी., *धर्मशास्त्र*, भाग 1, प्रबंध 2, अध्याय 2, पृ. 210, मॉस्को 1806।

[460] उदाहरण के तौर पर, हम उद्धृत करते हैं: (क) *Bibliae Complutensie* के प्रकाशकों द्वारा, लगभग 1515 में, उपयोग की गई सूचयिाँ (वी. फाइफर. Triada testium in coelo, एरलान्गेन, 1771); b) प्राचीन ब्रटिशि पांडुलपि (कोड. ब्रटिानकिस), जसिके सम्मान में एरास्मस ने अपनी न्यू टेस्टामेंट की तीसरी (1522) संस्करण में इस श्लोक को शामलि कयिा, हालांकि उन्होंने पहले दो संस्करणों में इसे हटा दयिा था; c) रॉबर्ट स्टीफन द्वारा अपनी 1550 के न्यू टेस्टामेंट संस्करण में उपयोग की गई साठ ग्रीक पांडुलपियिाँ, जनिमें से केवल सात में यह श्लोक नहीं था; d) एरयिस मोंटानस द्वारा अपनी 1571 के पॉलीग्लॉट बाइबलि संस्करण में उपयोग की गई पांडुलपियिाँ; ई) कैल्वनि और थयिोडोर बेज़ा की गवाही पर, जो कहते हैं कि उनके समय में (16वीं शताब्दी में) सबसे अच्छे ग्रीक पांडुलपियिों में यह श्लोक था; एफ) सोरबोन पुस्तकालय में रखी एक 10वीं सदी की पांडुलपि के पाठ पर, जसिका शीर्षक है: *Correctorium Bibliae*, जहाँ, इस वचन के संबंध में, यह उल्लेख है: *hie *corrupti sunt quidam libri Graecorum,* ut ait beatus Hieronymus, qui hoc capitulum non habent, in quo maxime fides catholica roboratur* — जसिसे यह स्पष्ट होता है कि यह वचन 10वीं सदी की अधकिांश यूनानी पांडुलपियिों में मौजूद था और केवल कुछ क्षतग्रिस्त पांडुलपियिों में ही इसे हटा दयिा गया था; (ग) अंत में, प्रेरतिों के पत्रों के प्रस्तावना के शब्दों में, जसिे आमतौर पर धन्य जेरोम, और यह सबसे अंत में 7वीं शताब्दी में लखिा गया था, जहाँ हम पढ़ते हैं: 'जसिमें (यूहन्ना का पहला पत्र) हमने *अवश्वसनीय अनुवादकों के* काम के माध्यम से, वश्वास की सच्चाई के संबंध में कई त्रुटयिाँ पाई हैं; क्योंकि उन्होंने अपने संस्करण में केवल तीन शब्द शामलि कयि हैं, अर्थात्, *"जल", रक्त और आत्मा,* अपने संस्करण में, जबकि उन्होंने *पति, वचन और पवत्रि आत्मा की गवाही* को छोड़ दयिा, जसिमें कैथोलकि वश्वास सबसे दृढ़ता से समर्थति है, और पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा का एक ही दव्यि सार पुष्ट होता है — जसिसे यह भी पता चलता है कि 7वीं शताब्दी में भी यह पद केवल *कुछ* पांडुलपियिों में अनुपस्थति था, और वे भी *गलत अनुवादकों द्वारा* भ्रष्ट की गई थीं, यानी यूनानी पांडुलपियिों में नहीं, और उस समय ऑर्थोडॉक्स ने इस हटाए जाने के खलिाफ जोरदार वरिोध कयिा था (देखें *वटिसी,* परम पवत्रि त्रमिूर्ति पर प्रबंध, प्रश्न III, अनुच्छेद 2)।

[461] दोनों *'तीन गवाहयिाँ देती हैं* शब्दों से शुरू होती हैं, लेकनि समाप्त होती हैं—पहली *'और ये तीनों एक हैं' से, और* अंतमि *'और ये तीनों एक के हैं* से।

के विपरीत थे।[462] यह पर्याप्त होता कि केवल एक या दो प्रतियों में इस श्लोक को हटा दिया जाता, ताकि यह बाद की सभी प्रतियों में न दिखाई दे, चाहे वे भ्रष्ट संस्करण से नकल की गई हों या अनुवादित की गई हों। फिर भी, दूसरी ओर, अब तक कोई यह स्पष्ट नहीं कर पाया है कि इस श्लोक को यूहन्ना के दूसरे पत्र में कैसे और क्यों शामिल किया गया होगा। यहाँ लिपिकारों को चूक के लिए दोषी नहीं ठहराया जा सकता: एक पूरे विचार का सम्मिलन केवल जानबूझकर ही हो सकता था। न ही विधिर्मियों पर दुर्भावना का संदेह किया जा सकता है: यह श्लोक किसी भी विधिर्म का समर्थन नहीं करता; इसके विपरीत, यह ऑर्थोडॉक्सी का समर्थन करता है। न ही यह माना जा सकता है कि इस जालसाजी के लिए ऑर्थोडॉक्स स्वयं ही जिम्मेदार थे: क्योंकि वे विधिर्मियों के खिलाफ इतने महत्वपूर्ण अंश का उपयोग क्यों नहीं करते, और पूरी चर्च इसे सामान्य उपयोग में कैसे अपना सकती थी?

ख) यद्यपि यह श्लोक कुछ अनुवादों, विशेष रूप से पूर्वी अनुवादों में अनुपस्थित है, यह अन्य में मौजूद है, उदाहरण के लिए, पुराने लैटिन या इटालिक संस्करणों और वर्तमान वल्गेट में।[463] फिर भी यहाँ भी, बाद वाले को प्राथमिकता दी जानी चाहिए: पुराना लैटिन अनुवाद निस्संदेह प्रामाणिक पाठ से बनाया गया था और यह सभी अनुवादों में सबसे पुराना है,[464] — जबकि पूर्वी अनुवादों में से अधिकांश बाद में सामने आए और वे *'सरल'* (पेस्किटो) के रूप में जाने जाने वाले सीरियाक अनुवाद पर आधारित थे, या कम से कम उसी के आधार पर संशोधित किए गए थे; नतीजतन, उनमें वह श्लोक शामिल नहीं है जिसका हम बचाव कर रहे हैं, केवल इसलिए कि वह सीरियाई अनुवाद में अनुपस्थित है, और उनकी संख्या से कुछ भी साबित नहीं होता। इसके अलावा, सीरियाई अनुवाद में स्वयं इस श्लोक को यूनानी पाठ की तरह ही—चाहे प्रतिलिपि बनाने वालों द्वारा या विधिर्मियों द्वारा—आसानी से हटाया जा सकता था।[465]

[466](c) यद्यपि कुछ चर्च-पिता और परिषदों ने इस पद का उपयोग नहीं किया, अन्य चर्च-पिता और चर्च के शिक्षकों ने किया। विशेष रूप से, दूसरी शताब्दी में, टर्टुलियन—जिन्होंने पुराने लैटिन अनुवाद का उपयोग करते हुए निस्संदेह नए नियम का ग्रीक पाठ भी अपने पास रखा था और कभी-कभी अनुवाद की तुलना उसके साथ करते थे;[467] तीसरी शताब्दी में — संत साइप्रियन; चौथी में — संत अथेनासियस द ग्रेट, या एरियस के खिलाफ ग्रीक निबंध के लेखक, जिसे कई लोग संत अथेनासियस का मानते हैं, और इडियाटियस द एल्डर, या , पवित्र त्रिमूर्ति पर आठ पुस्तकों के एक अन्य लेखक, जिसे भी संत अथेनासियस का माना जाता है;[468] 5वीं शताब्दी में — ल्योंस के आर्चबिशप यूचेरियस[469] और अफ्रीका, मॉरिटानिया, सार्डिनिया और कोर्सिका के चार सौ बिशप, जिन्होंने इस श्लोक को अपने परिषद के धर्म-स्वीकारोक्ति में शामिल किया, जो वैंडल राजा गुनेरिक, एक एरियन, को प्रस्तुत किया गया था;[470] छठी शताब्दी में — टैप्सिया के बिशप

---

[462] संत एम्ब्रोज़ ने अक्सर इसके लिए एरियनों की निंदा की — *De fide*, पुस्तक II, अध्याय 15, टिप्पणी 335; साथ ही पुस्तक V, अध्याय 16, टिप्पणी 193; और विशेष रूप से *De Spiritu S.*, पुस्तक III, अध्याय 10, जहाँ, यह बताने के बाद कि उन्होंने अपने कोडेक्स से निम्नलिखित पाठ को छोड़ दिया था: *'आत्मा ईश्वर है...'*, वे उद्घोष करते हैं: 'और काश कि आप इसे अपने कोडीसेस से हटा देते, और चर्च के कोडीसेस से नहीं!' क्योंकि उस समय, जब ऑक्सेंटियस, अपनी अधर्मी अविश्वास में, हथियारों और सेना के साथ मिलान की कलीसिया पर कब्ज़ा कर चुका था, और जब वैलेंस और उर्सैटियस द्वारा सिरमियम की कलीसिया पर छापा मारा जा रहा था, और उसके याजक सहमति दे रहे थे, तब आपका यह झूठ और पवित्रता का अपमान *कलीसियाई संहिताओं* में शामिल कर दिया गया था। और शायद आपने यह पूर्व में भी किया होगा.... सोक्रेटिस गवाही देते हैं कि अरिअनों ने भी इसी प्रकार यूहन्ना के प्रथम पत्र के अध्याय 4 की आयत 2 को संहिताओं से हटा दिया था।

[463] मिलियस के अनुसार, यह अर्मेनियाई अनुवाद में भी पाया जाता है, और इस ग्रंथ के कुछ संस्करणों में शामिल है, हालांकि इसे सबसे हालिया संस्करण (सं. वेनेटा ज़ोहराबी, 1805) से हटा दिया गया है। यह ग्रीक पाठ पर आधारित ब्रुसियोला के इतालवी संस्करण (1532) में भी मौजूद है।

[464] टर्तुल्लियन ने पहले ही इस अनुवाद का उपयोग कर लिया था, लेकिन यह निस्संदेह टर्तुल्लियन के समय से बहुत पहले तैयार किया गया था। *विसिकमैन,* *टू लेटर्स ऑन सम कंट्रोवर्सी कंसर्निंग 1 जॉन 5:7*, रोम, 1835। कुछ लोग इस अनुवाद को प्रेरितिक युग का या, कम से कम, दूसरी शताब्दी के पहले भाग का मानते हैं *(मिलियस,* प्रोलेगोम. एड सुआम एडिट. एन. टी., पृ. 41)।

[465] यह ध्यान देने योग्य है कि पूरी रोमन चर्च, पूर्वी ऑर्थोडॉक्स चर्च की तरह, इस पाठ को अपनी *वल्गेट* में प्रामाणिक के रूप में स्वीकार करती है और इसका उपयोग करती है।

[466] प्रभु कहते हैं: 'मैं *और पिता एक हैं।*' और फिर पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के विषय में लिखा है: *'और ये तीनों एक हैं'* (De unit. eccles., पृ. 195–196, सं. मॉर, पेरिस 1726; Conf. epist. ad Jubaian., LXXIII, पृ. 133)।

[467] Contra Prax. अध्याय XXV और XXXI। Conf. de monogam. अध्याय XI, जहाँ, 1 कुरिन्थियों, अध्याय 7, पद 39 के लैटिन अनुवाद का हवाला देने के बाद, लेखक टिप्पणी करते हैं: 'मैं निश्चित रूप से जानता हूँ कि *प्रामाणिक ग्रीक पाठ* में ऐसा नहीं है जैसा कि यह सामान्य प्रचलन में आ गया है।'

[468] *एथनासियस,* ओप., खंड II, पृ. 205, 229 और 603, 606, 622, सं. पेरिस 1698।

[469] *यूचर.* फॉर्म्युला. स्पिरिचुअल. इंटेलिजिब. अध्याय II, संख्या 3.

[470] वैंडल उत्पीड़न पर, पुस्तक III, पृ. 54, सं. रुइनार्ट, पेरिस, 1694।

वजिलियिस, फुलजेन्टयिस और कैसयिोडोरस।[471] बाद वाले की गवाही वशिष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि उन्होंने अपना लगभग पूरा जीवन पवत्रि ग्रंथ को पढ़ने और सुधारने में समर्पति कर दयिा, वभिन्नि स्थानों से बाइबलि के सबसे प्राचीन पांडुलपियिों को इकट्ठा करने में कसिी भी खर्च की परवाह न करते हुए, उन्होंने अपने भक्षिुओं को हमेशा सबसे प्राचीन पांडुलपियिों या उन पांडुलपियिों का उपयोग करने की सलाह दी जो ग्रीक पाठ के आधार पर संशोधति की गई थीं, और स्वयं, अत्यधकि परश्रिम के साथ, भजन संहति, भवष्यिवक्ताओं और प्रेरतिों के पत्रों की पुस्तकों की समीक्षा और सुधार कयिा।[472] परणिामस्वरूप, यदि ऐसे कसिी लेखक ने अपने जीवन के अंत के करीब लखिी गई कसिी कृति में वचिाराधीन अंश का भी उपयोग कयिा, तो इसका मतलब यह है कि उसे वह उन सबसे प्राचीन और सबसे सटीक पांडुलपियिों में मलिा था जन्हिें उसने वभिन्नि स्रोतों से एकत्र कयिा था; और छठी शताब्दी में, 'प्राचीन पांडुलपियिाँ' केवल वे ही हो सकती थीं जो दो, तीन या चार शताब्दयिों पहले लखिी गई थीं। हम उन कई बाद के लेखकों का उल्लेख नहीं करते जन्हिोंने इस अंश का उपयोग भी कयिा। जहाँ तक उन लेखकों और यहाँ तक कि उन पूरे परषिदों का सवाल है जन्हिोंने इसका उपयोग नहीं कयिा, तो इससे यह नष्किर्ष नहीं नकिाला जा सकता कि वे इस श्लोक से अनभज्ञि थे या इसे जाली मानते थे; हो सकता है कि उन्होंने इसे हमारे लएि अज्ञात अन्य कारणों से उपयोग न करने का वकिल्प चुना हो। इस प्रकार, उदाहरण के लएि, यह ध्यान में रखना चाहएि कि नकिियिा की परषिदों, सार्डसि की परषिद और एरयिनों के वरिुद्ध लखिने वाले सभी पादरयिों ने, सख्ती से कहें तो, परमेश्वर में व्यक्तयिों की त्रमिूर्ति की रक्षा नहीं की, बल्कि परमेश्वर के पुत्र, यीशु मसीह की दव्यिता की रक्षा की; परणिामस्वरूप, उन्होंने इस वशिष पद का उपयोग नहीं कयिा होगा क्योंकि यह सीधे तौर पर उनके वषिय से संबंधति नहीं था, और क्योंकि उनके पक्ष में धर्मग्रंथ के अन्य, अधकि स्पष्ट अंश थे। केवल कुछ—बहुत ही कुछ—लेखकों, जैसे कि धन्य ऑगस्टीन, के मामले में ही यह नष्किर्ष नकिाला जा सकता है कि उनके पास अपनी प्रतयिों में यह पद नहीं था, जन्हिोंने पवत्रि त्रमिूर्ति के सद्धिांत की व्याख्या करते हुए, उसी अध्याय के छंद 6 और 8 का उपयोग तो कयिा, लेकनि छंद 7 का उपयोग नहीं कयिा, जो अतुलनीय रूप से अधकि स्पष्ट है।[473] हालाँकि, जैसा कि हम पहले ही दो बार उल्लेख कर चुके हैं, नजिी प्रतयिों में इसकी अनुपस्थति सबसे सूक्ष्म तरीके से हो सकती थी।

(d) जसि प्रसंग में यह श्लोक आता है, उसके संदर्भ में इसकी जांच से यह स्पष्ट रूप से संकेत मलिता है कि यह एक प्रामाणकि श्लोक है, न कि बाद में जोड़ा गया। यह अनविार्य रूप से श्लोक 8 और 9 से नहिति और अपेक्षति है, जो इसके बाद आते हैं। श्लोक 8 में हम पढ़ते हैं: *'और पृथ्वी पर तीन गवाह हैं: आत्मा, जल और लहू; और ये तीनों एक हैं।'* यहाँ यह समझना असंभव है कि *'पृथ्वी पर* गवाही देना' वाला वाक्यांश क्यों प्रयोग कयिा गया है, जब तक कि यह न माना जाए कि इसका तात्पर्य *स्वर्ग में* गवाही देने वालों से है; यह समझना असंभव है कि *'और ये तीनों एक हैं'* वाक्यांश क्यों जोड़ा गया है, जब तक कि हम यह न मानें कि यह पछिले छंद के शब्दों के अनुरूप है: *'और ये तीनों एक बात की गवाही देते हैं';* इसके बनिा, यह कहना पर्याप्त होता: *'और पृथ्वी पर तीन गवाही देते हैं: आत्मा, पानी और लहू*; और, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि, यह पूरी तरह से अस्पष्ट है कि, ग्रीक पाठ में—जैसा कि सेंट ग्रेगरी द थयिोलोजयिन ने भी उल्लेख कयिा है—श्लोक 8 के शब्द *'और तीनों गवाही देते हैं* (τρεῖς εἰσιν οἱ μαρτυροῦντες)... *और 'ये तीनों एक हैं'* (καί οἱ τρεῖς εἰς τό ἓν εἰσιν), पुल्लगि में हैं, जबकि आत्मा, जल और रक्त (τό πνεύμα καί τό ὕδωρ καί τό αἷμα) सभी नपुंसकलगि में हैं,[474] जब तक कि यह केवल पछिले श्लोक 7 के समान शब्दों से मेल खाने के लएि न हो: *'स्वर्ग में तीन गवाही देते हैं...' ये तीनों एक हैं,* और इन्हें उनके संज्ञाओं (πατήρ, λόγος καί πνεύμα) की प्रकृति के अनुसार पुल्लगि लगि में होना चाहएि। फरि श्लोक 9 में लखिा है: *यदि हम मानवीय गवाही स्वीकार करते हैं, तो परमेश्वर की गवाही उससे भी महान है।* तो फरि, ईश्वर की यह गवाही क्या है, यदि वह पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा की गवाही नहीं है, जसिका उल्लेख छंद 7 में कयिा गया है? यह उल्लेख करना तो दूर की बात है कि इस वचन की वषिय-वस्तु स्वयं पूरी तरह से पवत्रि प्रेरति यूहन्ना के अनुकूल है और, कह सकते हैं, उनकी वशिष्टि वशिषताओं में से एक है: क्योंकि केवल वही परमेश्वर के पुत्र को वचन

---

[471] *वहिलि*— *डी ट्रनिटि.*, पुस्तक I और VII (*ब्रायोथ. पैट्र.*, सं. ल्यों, खंड VIII, पृ. 771 आदि); *फुल्जेन्ट.* रस्पिॉन्स. एड ऑब्जेक्ट. एरयिन. X, और साथ ही डी ट्रनिटि. पुस्तक IV; *कैसयिोडोरस*/कॉम्प्लेक्शन, एपस्टिोल. एट एक्टा अपोस्टोल. एट अपोकैलपिस., फ्लोरेंस 1721 में संपादति, 1 यूहन्ना के अध्याय V पर टप्पिणी देखें।

[472] कैसयिोडोरस स्वयं अपनी कृति *लबि. इंस्टट्यिूट. डविनिार.*, अध्याय 3, और इस पुस्तक की प्रस्तावना में इन सभी पर चर्चा करते हैं।

[473] *ऑगस्टीन,* *कॉन्ट्रा मैक्समिनिम*, पुस्तक III, अध्याय 22।

[474] ओरेट. XXXVII, n. 47, *द वर्क्स ऑफ़ द होली फ़ादर्स* III, पृ. 119 में।

(लोगोस) कहता है (यूहन्ना 1:1; प्रकाशतिवाक्य 19:13), और तीनों साक्षियों का उल्लेख करता है: पिता, पुत्र (यूहन्ना 8:18) और पवित्र आत्मा (15:26)।

(ई) अंत में, हमें यह न भूलें कि जब बाइबल के किसी विशेष अंश के प्रामाणिक होने या न होने का प्रश्न आता है, तो केवल पवित्र चर्च ही सर्वोच्च निर्णायक हो सकती है, क्योंकि स्वयं उद्धारकर्ता ने उसे परमेश्वर के वचन के शाश्वत संरक्षण का कार्य सौंपा है और पवित्र आत्मा द्वारा उसे विश्वास के मामलों में सभी त्रुटियों से सुरक्षित रखा जाता है। और संपूर्ण ऑर्थोडॉक्स चर्च ने विचाराधीन यूहन्ना के पत्र के उस अंश को प्रामाणिक के रूप में मान्यता दी है और देना जारी रखती है, जिसे वह अपने बच्चों द्वारा सार्वभौमिक उपयोग के लिए प्रस्तुत करती है।[475] यही मुख्य कारण है कि हम भी, इस अंश की प्रामाणिकता को स्वीकार करते हैं और स्वीकार करना ही चाहिए!

II. दूसरे प्रकार के अंशों में—अर्थात्, वे जो मुख्य रूप से दैवीय व्यक्तियों की विशिष्ट व्यक्तिगतता की गवाही देते हैं—कुछ सभी तीन व्यक्तियों की व्यक्तिगतता और विशिष्टता को एक साथ प्रदर्शित करते हैं, जबकि अन्य, विशेष रूप से, या तो पिता की व्यक्तिगतता, या पुत्र की व्यक्तिगतता, या पवित्र आत्मा की व्यक्तिगतता को दर्शाते हैं।

1) ईश्वरत्व के तीनों व्यक्तियों को एक साथ वास्तविक और एक-दूसरे से अलग प्रस्तुत किया गया है:

क) एपिफेनी के सुसमाचार वृत्तांत में: *और जब यीशु बपतिस्मा ले चुके, तो वे तुरन्त पानी में से ऊपर आए—और देखो, स्वर्ग उनके लिए खुल गया, और यूहन्ना ने परमेश्वर की आत्मा को कबूतर के समान उतरते और उन पर ठहरते देखा। और देखो, स्वर्ग से एक स्वर आया, 'यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं प्रसन्न हूँ* (मत्ती 3:16–17; मरकुस 1:10–11; लूका 3:21–22)। यहाँ, स्पष्ट रूप से, व्यक्तियों को अलग किया गया है: पिता, जो पुत्र के विषय में स्वर्ग से गवाही दे रहे हैं; पुत्र, जिसे यूहन्ना ने यॉर्डन में बपतिस्मा दिया था; और पवित्र आत्मा, जो पुत्र पर कबूतर के समान देहधारी रूप में उतर रहा है।[476]

ख) पवित्र प्रेरित पौलुस के कोरिन्थियों को कहे शब्दों में: *'हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा, और परमेश्वर पिता का प्रेम, और पवित्र आत्मा की सहभागिता तुम सभ के साथ* हो' (2 कुरिन्थियों 13:13)। यहाँ पवित्र प्रेरित विश्वासियों पर पुत्र, या यीशु मसीह, और पवित्र आत्मा से भी आध्यात्मिक आशीर्वाद की कामना करते हैं, ठीक वैसे ही जैसे वे पिता से करते हैं; इसके अलावा, वे उनमें से प्रत्येक से एक विशिष्ट आशीर्वाद की कामना करते हैं; परिणामस्वरूप, पुत्र और पवित्र आत्मा भी पिता की ही तरह व्यक्ति हैं, सभी समान और फिर भी एक-दूसरे से भिन्न हैं।[477]

(c) पवित्र प्रेरित पतरस के नए धर्मी बने यहूदियों को कहे शब्दों में, जहाँ वे उन्हें *'परमेश्वर पिता की पूर्वज्ञान के अनुसार, आत्मा द्वारा पवित्रता के माध्यम से, यीशु मसीह के आज्ञापालन और रक्त छिड़कने के लिए* चुने हुए' कहते हैं (1 पतरस 1:1–2)। यहाँ भी, पिता, पवित्र आत्मा और यीशु मसीह, या पुत्र, को व्यक्तियों के रूप में पूरी तरह से अलग और समान रूप से उल्लेख किया गया है, और प्रत्येक को एक विशिष्ट क्रिया से जोड़ा गया है।[478]

2) विशेष रूप से, पवित्र शास्त्र इस प्रकार चित्रित करता है:

क) पिता का व्यक्तित्व, जब यह उन्हें श्रेय देता है:

क) ज्ञान: *पिता के सिवाय कोई भी पुत्र को नहीं जानता* (मत्ती 11:27; तुलना करें मत्ती 24:36; 6:4, 8, 32; प्रेरितों के काम 1:7);

bb) इच्छा: *मैं अपनी इच्छा नहीं करता, परन्तु उस पिता की इच्छा करता हूँ जिसने मुझे भेजा है* (यूहन्ना 5:30; तुलना करें 6:38–40; लूका 12:32; मत्ती 6:9–10);

cc) क्रिया: *मेरा पिता अब भी कार्य कर रहे हैं* (यूहन्ना 5:17–19), और जब वह विस्तार से बताते हैं कि कैसे पिता ने पुत्र को संसार में भेजा (यूहन्ना 6:39; 8:16) और फिर पवित्र आत्मा को (यूहन्ना 14:26), और कैसे पिता पुत्र से प्रेम

---

[475] ठीक इसी पाठ पर *ऑर्थोडॉक्स धर्म-स्वीकृति* दिव्य व्यक्तियों की एकसारता (consubstantiality) के अपने सिद्धांत को आधारित करती है (देखें भाग 1, प्रश्न 9 का उत्तर)।

[476] यह एपिफेनी की पूर्व संध्या के लिए चर्च के ट्रॉपारियन में भी स्पष्ट रूप से व्यक्त किया गया है: "हे प्रभु, जब तू यॉर्डन में बपतिस्मा ले रहा था, तब त्रित्वीय आराधना प्रकट हुई: क्योंकि तेरे पिता की आवाज़ ने तेरी गवाही दी, और तुझे अपना प्रिय पुत्र कहा, और आत्मा, कबूतर के रूप में, वचन की पुष्टि की घोषणा की; प्रकट हो, हे मसीह परमेश्वर, और जगत को प्रकाशित कर; महिमा तुझ में हो।"

[477] *एथनासियस* का सेरापियन को पत्र 1, संख्या 30, 31, जहाँ उन्होंने इस विचार को विस्तार से समझाया है, और पत्र III, संख्या 6।

[478] नए नियम में ऐसे कई अंश हैं जहाँ ईश्वरत्व के तीनों व्यक्तियों का उल्लेख अलग-अलग व्यक्तियों के रूप में किया गया है, उदाहरण के लिए: प्रेरितों के काम 2:32–33; 5:30–32; 7:55; रोमियों 1:3–4; 15:15–16, 30; 1 कुरिन्थियों 6:11; 12:4–6; 2 कुरिन्थियों 1:19–22; गलातियों 4:2, 6; 2 थिस्सलुनीकियों 2:13–14; तीतुस 3:4–6.

करते हैं (यूहन्ना 3:35; 5:20; 15:9) और संसार (यूहन्ना 3:16; 14:21; 1 यूहन्ना 4:9–10), लोगों को सत्य का प्रकाशन करता है (मत्ती 16:17; इब्रानियों 1:1), और जो उससे माँगते हैं उन्हें अच्छी-अच्छी चीज़ें देता है (मत्ती 7:11; लूका 11:13; यूहन्ना 16:23), पापों को क्षमा करता है (मत्ती 6:14; लूका 23:34), बचाता है (यूहन्ना 12:27), महिमा देता है (यूहन्ना 17:5) और इसी तरह।

ख) पुत्र का व्यक्तित्व, जब पुत्र को, पिता के समान, इस प्रकार वर्णित किया गया है:

क) ज्ञान: *'जैसे पिता मुझे जानते हैं, वैसे ही मैं भी पिता को जानता हूँ'* (यूहन्ना 10:15; 17:25; मत्ती 11:27, लूका 10:22);

bb) इच्छा: *'हे पिता, मैं चाहता हूँ कि जिन्हें आपने मुझे दिया है, वे भी मेरे साथ उस स्थान पर हों जहाँ मैं हूँ'* (यूहन्ना 17:24; 10:18; 5:30);

cc) क्रिया: *'मेरा पिता अब भी काम कर रहा है, और मैं भी काम कर रहा हूँ'* (यूहन्ना 5:17–36; 17:4), और जब वह विस्तार से बताता है कि पुत्र कैसे संसार में आया और हमारे उद्धार के लिए देहधारी हुआ (यूहन्ना 1:14; इब्रानियों 2:14), और— —स्वर्ग में उनके आरोहण के बाद, उन्होंने पिता से पृथ्वी पर एक अन्य सांत्वनादाता, पवित्र आत्मा को भेजा (यूहन्ना 16:7; 17:18; 20:21; लूका 24:49), कि पुत्र पिता और संसार से प्रेम करता है (यूहन्ना 10:11; 14:31; 15:9), लोगों को प्रकाशन प्रदान किया (यूहन्ना 1:18; 8:28; 17:6, 26), जो माँगते हैं उन्हें आशीषें प्रदान करता है (यूहन्ना 14:13), पापों को क्षमा करता है (मरकुस 2:9–10) आदि।

(c) पवित्र आत्मा का व्यक्तित्व, जब उन्हें, पिता और पुत्र के समान, इस प्रकार वर्णित किया जाता है:

एए) ज्ञान: *क्योंकि मनुष्यों में से कौन उस बात को जानता है जो मनुष्य के भीतर है, सिवाय उसके मनुष्य आत्मा के जो उसमें वास करता है? इसी प्रकार, परमेश्वर की बातें कोई नहीं जानता सिवाय परमेश्वर के आत्मा के* (1 कुरि. 2:11);

bb) इच्छा: *क्योंकि पवित्र आत्मा और हम दोनों को यह उचित लगा कि हम आप पर इन आवश्यक बातों के अलावा और कोई बोझ न डालें* (प्रेरितों के काम 15:28; 2:4; 1 कुरिन्थियों 12:11);

cc) क्रिया: *प्रत्येक को सामान्य भलाई के लिए आत्मा की एक प्रकटता दी गई है...; फिर भी ये सभी बातें एक ही आत्मा द्वारा की जाती हैं, जो अपनी इच्छा के अनुसार प्रत्येक को व्यक्तिगत रूप से बांटता है* (1 कुरिन्थियों 12:7, 11), और जब वह विस्तार से बोलता है, तो वह पुत्र की गवाही देता है और उसकी महिमा करता है (यूहन्ना 15:26; 16:14), लोगों को नया जन्म देता है (यूहन्ना 3:5–8; 1 पतरस 1:3; तीतुस 3:5), उन्हें सारी सच्चाई में मार्गदर्शन करता है (यूहन्ना 14:26; 16:13), भविष्य की भविष्यवाणी करता है (16:13), चरवाहों की नियुक्ति करता है (प्रेरितों के काम 20:28) और इसी तरह।

यह भी जोड़ना चाहिए कि पवित्र धर्मग्रंथ के उन सभी अंशों में, जो इन प्रत्येक व्यक्तियों की दिव्यता और उनके व्यक्तिगत गुणों के बारे में बात करते हैं, दिव्य व्यक्तियों की वास्तविकता और विशिष्टता स्पष्ट रूप से निहित है। क्योंकि यदि पिता परमेश्वर हैं, और पुत्र परमेश्वर हैं, और पवित्र आत्मा परमेश्वर हैं, और प्रत्येक के पास एक विशिष्ट गुण है जो अन्य दो के पास नहीं है, तो यह निष्कर्ष निकलता है कि वे सभी समान रूप से व्यक्ति हैं और पृथक व्यक्ति हैं। लेकिन इन अंशों पर उचित समय पर चर्चा की जाएगी।

III. अंत में, बाइबिल के सबसे उल्लेखनीय अंश, जो मुख्य रूप से या विशेष रूप से दैवीय व्यक्तियों की एकता और अविभाज्यता की गवाही देते हैं, इस प्रकार हैं:

1) नए नियम की दानियेल नबी की दृष्टि की व्याख्या, जिसे उन्होंने अपनी पुस्तक के अध्याय 6 में वर्णित किया। नबी बताते हैं कि उन्हें एक बार प्रभु की एक दृष्टि प्रदान की गई थी (परमप्रधान) सबओथ *को* अपनी सारी महिमा में *एक ऊँचे और उत्तम सिंहासन पर विराजमान देखा* (पद 1–4), और उसी क्षण प्रभु ने उनसे कहा: *'जाओ और इस प्रजा से कह दो: "तुम अपने कानों से सुनोगे पर समझोगे नहीं, और अपनी आँखों से देखोगे पर देखोगे नहीं।"' क्योंकि इस प्रजा का हृदय कठोर हो गया है* (पद 9–10)। यहाँ, स्पष्ट रूप से, परमेश्वर पिता का संदर्भ दिया गया है, जिन्हें मुख्य रूप से पुराने नियम में जाना जाता था और जिन्हें सर्वोच्च और सबाओथ कहा जाता था। लेकिन संत यूहन्ना सुसमाचारकर्ता, इस अंश का उल्लेख करते हुए, यह देखते हैं कि यिशायाह *ने* परमेश्वर के पुत्र की *महिमा देखी* और *उसकी बात की* (यूहन्ना 12:40-41), जबकि प्रेरित पौलुस गवाही देते हैं कि यिशायाह की आज्ञा: *'इन लोगों के पास जा और कह...'*, पवित्र आत्मा द्वारा उच्चारित किया गया था (प्रेरितों के काम 28:25–27)। तो फिर, यह कैसे हो सकता है कि, पिता को देखने के बाद, नबी ने

पुत्र को भी देखा, और, पिता को सुनकर, पवित्र आत्मा को भी सुना, जब तक कि यह इस एकमात्र शर्त पर न हो कि *ये तीनों,* यद्यपि व्यक्तियों के रूप में भिन्न *हैं,* सार में *एक हैं* (1 यूहन्ना 5:7), कि वे सभी एक अविभाज्य दिव्यता, एक अविभाज्य महिमा और गौरव, और एक अविभाज्य क्रिया में सहभागी हैं?[479]

2) नए नियम के अंश जो पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के अधिकार की एकता को दर्शाते हैं। उदाहरण के लिए, यहाँ यह देखा गया है कि कैसे संत बेसिल द ग्रेट इस प्रकार के बयानों में सामंजस्य स्थापित करते हैं: *'दामास्कस चले जाओ, और वहाँ तुझे बता दिया जाएगा* (प्रेरितों के काम 22:10); *'वह मेरा चुना हुआ पात्र है* (प्रेरितों के काम 9:15); प्रभु ने यह बात स्वर्ग से पौलुस से तब कही जब उन्होंने उसे संपूर्ण संसार के लिए सुसमाचार का प्रचारक नियुक्त किया। हालाँकि, जब अनानियस दमिश्क में प्रवेश कर रहे पतरस से मिले, तो उन्होंने कहा: *'हे भाई सौल! अपनी आँखें* खोलो… *परमेश्वर, हमारे पितरों के परमेश्वर ने तुम्हें चुना है*; और यह भय कि यह मसीह के बारे में समझा जाए, उन्होंने यह भी जोड़ा: *'ताकि तुम उनकी इच्छा जानो और* धर्मी—यीशु—को *देखो* (प्रेरितों के काम 22:13-14)। वास्तव में, पौलुस ने स्वयं अपनी बुलाहट और पूर्व-निर्धारण के विषय में पवित्रशास्त्र का उल्लेख करते हुए कहा: *'यीशु मसीह का दास पौलुस, जो प्रेरित होने के लिए बुलाया गया है'; और फिर उसने अपनी बुलाहट के अलावा एक और बात का उल्लेख किया: 'परमेश्वर के सुसमाचार के लिए चुना हुआ* (αφορισμένος, अलग किया हुआ)' (रोमियों 1:1)। और हम प्रेरितों के काम की पुस्तक से सीखते हैं कि आत्मा ने किसे अलग किया; क्योंकि लिखा है: *जब* प्रेरित *प्रभु की सेवा कर रहे थे और उपवास कर रहे थे, तब पवित्र आत्मा ने कहा: 'बर्नाबास और सऊल को मेरे लिए उस काम के लिए अलग करो जिसके लिए मैंने उन्हें बुलाया है* (प्रेरितों के काम 13:2)। तो फिर, जिसे परमेश्वर पिता ने पूर्वज्ञान से जाना है, और जिसे पुत्र ने बुलाया है, उसे प्रभु His स्वभाव के द्वारा चुनता है और आत्मा अलग करता है, तो त्रित्व के भीतर सार का भेद कैसे स्वीकार किया जा सकता है, जिसमें क्रिया में एकता है?"[480]

3) उद्धारकर्ता के वचन: *'मैं और पिता एक हैं* (यूहन्ना 10:30)। यह कि यहाँ परमेश्वर के पुत्र का पिता के साथ सार में एकत्व बताया गया है, और किसी अन्य संबंध में नहीं, यह पूरे अंश के संदर्भ से स्पष्ट है। पवित्र सुसमाचार लेखक के अनुसार, उद्धारकर्ता यहूदियों से बात कर रहे थे, जिन्होंने उनसे मांग की: *'यदि तू मसीह है, तो हमसे साफ-साफ कह*।' पहले तो उन्होंने सीधे उत्तर दिया: 'मैंने तुमसे पहले ही कहा है, और जो काम मैं पिता के नाम पर करता हूँ, वे मेरी गवाही देते हैं; परन्तु तुम विश्वास नहीं करते, क्योंकि तुम मेरी भेड़ों में से नहीं हो, जो मेरी आवाज़ सुनती हैं।' तब, अपने विचारों को अपनी इन भेड़ों की ओर मोड़ते हुए, और यह दिखाना चाहते हुए कि वह उन्हें अनंत जीवन देंगे और कोई भी उन्हें उनके हाथ से नहीं छीन पाएगा, उन्होंने आगे कहा: *'मेरे पिता, जिन्होंने उन्हें मुझे सौंपा है, उन सब से बड़े हैं* (जैसा कि यहूदी स्वयं भी मानते थे), *और कोई भी उन्हें मेरे पिता के हाथ से छीन नहीं सकता*—और *मैं और पिता एक हैं*।' परिणामस्वरूप, वे शक्ति, अधिकार और दिव्यता में एक हैं। यहूदियों ने उद्धारकर्ता के शब्दों को ठीक इसी तरह समझा, और *उन्होंने उन्हें पत्थर मारने के लिए पत्थर उठा लिए,* यह कहते हुए: *'हम तुम्हें किसी अच्छे काम के लिए नहीं बल्कि धर्मनिंदा के लिए पत्थर मारना चाहते हैं, और इसलिए कि तुम एक मनुष्य होकर खुद को परमेश्वर बना रहे हो*।' और उद्धारकर्ता ने क्या किया? न केवल उन्होंने इस विचार से उन्हें रोकने की कोशिश नहीं की या अपने शब्दों की किसी अन्य तरीके से व्याख्या नहीं की, बल्कि इसके विपरीत, उन्होंने यह दावा करना शुरू कर दिया कि उन्होंने कोई ईश्वरनिंदा नहीं की है, यह कहते हुए: *'मैं परमेश्वर का पुत्र हूँ'* और, पिता के नाम पर किए गए अपने कार्यों की ओर इशारा करते हुए, उन्होंने आगे कहा: *'ताकि तुम जानो और विश्वास करो कि पिता मुझ में हैं और मैं उन में हूँ'* (31–38)। तब यहूदियों ने फिर से उन पर उठ खड़े हुए और उन्हें मार डालने का प्रयास किया।[481] पुत्र की परमपिता के साथ एकसारता को दर्शाने वाले समान अंश हैं: यूहन्ना 5:19; 14:16; 16:15; 17:10।

---

[479] संत बेसिल द ग्रेट ठीक इसी तरह यशायाह की दृष्टि के संबंध में प्रस्तुत तीन अंशों की व्याख्या करते हैं, और निष्कर्ष में वे कहते हैं: "नबी पिता के व्यक्तित्व का परिचय देते हैं, जिन पर यहूदी विश्वास करते थे; सुसमाचारकार, पुत्र के व्यक्तित्व का; पौलुस, आत्मा के व्यक्तित्व का; फिर भी सभी, सहमति से, उस एक को जिसे देखा गया, एक प्रभु सबओथ कहते हैं। हाइपोस्टेसिस (तत्त्व) के संबंध में उनके शब्द भिन्न हैं, लेकिन एक ईश्वर की उनकी समझ अविभाजित बनी रहती है" (युनोमियस के विरुद्ध, पुस्तक V, *पवित्र पिताओं के कार्य*, पृ. 189)।

[480] *बेसिल द ग्रेट,* यूनोमियस के विरुद्ध, पुस्तक V, *द वर्क्स ऑफ़ द होली फ़ादर्स*, खंड VII, पृष्ठ 185–187।

[481] इस अर्थ में, पवित्र पितागण सर्वसम्मति से इस अंश की व्याख्या इस प्रकार करते हैं: *बेसिल द ग्रेट:* "उन्होंने जोड़ा: *'मैं और पिता एक हैं,* स्पष्ट रूप से 'एक' शब्द का अर्थ शक्ति में समान और एक समान लेना" ("द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स" VII, पृ. 56); *ग्रेगरी द थियोलोजियन:* 'जब आप पढ़ते हैं: *"मैं और पिता एक हैं", तो* अपने मन को उनके सार की एकता पर केंद्रित करें' (उपरोक्त, III, 192); *जॉन क्रिसोस्टोम:* "मैं और पिता एक हैं'; यहाँ वे शक्ति के संदर्भ में बोल रहे हैं, क्योंकि संपूर्ण प्रवचन इसी बिंदु से संबंधित था। तो, यदि शक्ति समान है, तो यह स्पष्ट है

4) नए नियम की गवाहियाँ, जिनमें से कुछ यह दावा करती हैं कि प्राचीन काल से परमेश्वर पिता स्वयं, इस्राएल के प्रभु परमेश्वर, ने भविष्यवक्ताओं के द्वारा बात की (इब्रानियों 1:1; लूका 1:68–70), जबकि अन्य कहते हैं कि *ये शब्द परमेश्वर के पवित्र पुरुषों ने पवित्र आत्मा से प्रेरित होकर बोले थे,* और वही पवित्र आत्मा *दाऊद* और अन्य भविष्यद्वक्ताओं के *मुख से* बोला (2 पतरस 1:21; प्रेरितों के काम 1:16; 28:25; इब्रानियों 3:7; 10:15; तुलना करें यिर्मयाह 31:33)। तो फिर, इसे कैसे समझाया जा सकता है, यदि केवल इस तथ्य से नहीं कि पिता और पवित्र आत्मा, यद्यपि अपनी व्यक्तिगत विशेषताओं में एक-दूसरे से भिन्न हैं, परन्तु सार में अविभाज्य हैं; कि पिता आत्मा में हैं और आत्मा पिता में है; और इसलिए, जब पिता ने भविष्यद्वक्ताओं के मुख से बात की, तो आत्मा ने उनके साथ बात की, और इसके विपरीत भी?[482] इसी अर्थ में पवित्र आत्मा, जिसने प्राचीन भविष्यवक्ताओं को और नए नियम में प्रेरितों को प्रेरित किया, को पिता का आत्मा कहा जाता है: *'क्योंकि तुम नहीं, जो बोलोगे, परन्तु तुम्हारे पिता का आत्मा तुम में बोलेगा,'* उद्धारकर्ता ने अपने शिष्यों से कहा जब उन्होंने उन्हें प्रचार के लिए भेजा (मत्ती 10:20)।

5) पवित्र आत्मा के विषय में प्रेरित के वचन: *परमेश्वर ने यह हमें अपने आत्मा द्वारा प्रकट किया है; क्योंकि आत्मा सब कुछ, यहाँ तक कि परमेश्वर की गहराइयों को भी, परखता है। क्योंकि मनुष्यों में कौन जानता है कि मनुष्य के भीतर क्या है, सिवाय उस मनुष्य के आत्मा के जो उसमें वास करता है? इसी प्रकार, परमेश्वर की बातें कोई नहीं जानता, सिवाय परमेश्वर के आत्मा के। परन्तु हम ने इस संसार का आत्मा ग्रहण नहीं किया, बल्कि परमेश्वर की ओर से आत्मा ग्रहण किया है, ताकि हम उन बातों को जान सकें जो परमेश्वर ने हमें मुफ़्त में दी हैं* (1 कुरिन्थियों 2:10–12)। यहाँ यह ध्यान देने योग्य है:

क) कि पवित्र आत्मा को परमेश्वर का सबसे पूर्ण ज्ञान प्रदान किया गया है: फिर भी उद्धारकर्ता ने इस गुण को केवल पिता और स्वयं में ही माना, और इसे अपनी दिव्यता और पिता के साथ समानता के संकेत के रूप में बताया (मत्ती 11:27); परिणामस्वरूप, पवित्र आत्मा के संबंध में भी यही निष्कर्ष निकाला जाना चाहिए;

ख) पवित्र आत्मा को *परमेश्वर से आत्मा* कहा जाता है: परिणामस्वरूप, वह शून्य से उत्पन्न नहीं हुआ है, न ही वह एक प्राणी है, बल्कि इसके विपरीत, वह परमेश्वर के समान स्वभाव का है;

ग) पवित्र आत्मा को परमेश्वर के साथ ठीक उसी संबंध में प्रस्तुत किया गया है जैसा मानव आत्मा मनुष्य के साथ होती है, अर्थात्, उसे परमेश्वर में निवास करते हुए और उसके साथ एक होते हुए प्रस्तुत किया गया है, ठीक वैसे ही जैसे हमारी आत्मा हमारे भीतर निवास करती है और शरीर के साथ मिलकर एक ही मानव का निर्माण करती है।[483]

आखिर में, हम सामान्य शब्दों में कह सकते हैं कि परम पवित्र त्रिमूर्ति का सिद्धांत पूरे नए नियम का केंद्रीय विषय है। क्योंकि यह हमें क्या उपदेश देता है? सुसमाचारों में, यह मुख्य रूप से पिता के बारे में बताता है, जिन्होंने *जगत से इतना प्रेम किया कि उन्होंने अपने एकलौते पुत्र को दे दिया, ताकि जो कोई भी उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, बल्कि अनंत जीवन पाए* (यूहन्ना 3:16), और पुत्र के बारे में, जो देहधारी हुए और हमारे उद्धार का महान कार्य पूरा किया; प्रेरितों के कामों और पत्रों में—मुख्य रूप से पवित्र आत्मा के बारे में, जिसे उद्धारकर्ता ने अपनी जगह पर प्रेरितों के पास भेजा, और जिन्होंने तब से हमारे पुनर्जनन और पवित्रता का महान कार्य शुरू कर दिया है।

कि सार भी समान है' (इन जोएन. होम. 61, पृ. 812, एड. सैवलि.); *अलेक्ज़ेंड्रिया के सिरिल* (थेसॉरस, पुस्तक XII) और *धन्य ऑगस्टीन* (योहन पर प्रबंध XLVIII), जो, इसके अलावा, इस एरियन झूठ का पूरी तरह से खंडन करते हैं कि यह अंश केवल ईश्वर पिता के साथ यीशु मसीह के नैतिक मिलन को संदर्भित करता है, एक ऐसा मिलन जिसमें सृजित प्राणी भी उनके साथ साझा कर सकते हैं।

[482] *बेसिल द ग्रेट,* अगेंस्ट यूनोमियस, पुस्तक V, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स* VII, पृ. 187–188; *एम्ब्रोज़,* *डे स्पिरिटु एस.*, पुस्तक II, अध्याय 13।

[483] *महान* अथानासियस: "जो ईश्वर से है वह सृजित प्राणी नहीं है, अन्यथा हम स्वयं ईश्वर को—जिससे पवित्र आत्मा निकलता है—एक सृजित प्राणी कहने लगेंगे…", और आगे: "क्या यह परम अधर्म नहीं है कि पवित्र आत्मा, *जो ईश्वर से निकलता है और ईश्वर की गहराइयों को जानता है,* को एक सृजित प्राणी माना जाए? अन्यथा, यह कहना पड़ेगा कि मनुष्य की आत्मा मनुष्य के बाहर (ἔξωθεν αὐτοῦ) है और यह कि वचन, जो पिता में वास करता है, भी एक प्राणी है" (एपिस्ट. 1 एड सेरापियन, संख्या 22); *एम्ब्रोस,* डी स्पिरिटु एस., पुस्तक II, अध्याय II, संख्या 124–129; *अलेक्ज़ेंड्रिया के क्लेमेंट,* पवित्र त्रिमूर्ति पर, अध्याय 23: "प्रेरित के वचनों—1 कुरिन्थियों 2:10–11—से यह स्पष्ट है कि पवित्र आत्मा एक अलग स्वभाव या पदार्थ का अस्तित्व नहीं है, बल्कि दिव्य स्वभाव का धनी है..., और जैसे *कोई पुत्र को पिता के सिवाय नहीं जानता; और कोई पिता को पुत्र के सिवाय नहीं जानता,* वैसे ही, प्रेरित के वचनों के अनुसार, *कोई भी परमेश्वर की बातों को परमेश्वर के आत्मा के सिवाय नहीं जानता*— और इन वचनों से हम स्वभाव की एकता को पहचानते हैं; उसने कहा: *'परमेश्वर से आत्मा,* इस प्रकार यह सिखाते हुए कि आत्मा का अस्तित्व पिता से है और वह उसी सार का है" (क्रॉन. रीडिंग्स 1847, III, 43–45)।

§ 28. पवित्र परंपरा से उसी सत्य की पुष्टि

पवित्र धर्मग्रंथ के—विशेषकर नए नियम के—वे सभी अंश कितने भी स्पष्ट और प्रचुर क्यों न हों, जिनमें एक ईश्वर में व्यक्तियों की त्रिमूर्ति के सिद्धांत का वर्णन है, हमें फिर भी यहाँ पवित्र परंपरा की ओर मुड़ना चाहिए, जो चर्च में उसके आरंभ से ही संरक्षित है। यह आवश्यक है क्योंकि धर्मग्रंथ के इन सभी अंशों की विभिन्न पुनर्व्याख्याएँ और विवाद होते रहे हैं और अब भी होते हैं, जिन्हें केवल प्रेरित परंपरा और प्राचीन कलीसिया की आवाज़ द्वारा ही निर्णायक रूप से सुलझाया जा सकता है—कम से कम एक विश्वासी के लिए।[484] यह चर्च का बचाव करने के लिए भी आवश्यक है, उन स्वतंत्र विचारकों द्वारा लगाए गए अन्यायपूर्ण आरोप के खिलाफ कि उसने पहली सार्वभौमिक परिषद के बाद, चौथी शताब्दी से ही ईश्वर में तीन हाइपोस्टेसिस (Hypostases) के इस सिद्धांत को सिखाना शुरू किया, और इससे पहले यह सिद्धांत या तो उसमें पूरी तरह से अज्ञात था या पूरी तरह से अलग तरीके से सिखाया जाता था।[485] इसलिए परंपरा के सूत्र को केवल चौथी शताब्दी या प्रथम सार्वभौमिक परिषद तक ट्रेस करना और यह दिखाना पर्याप्त है कि प्रारंभिक ईसाई चर्च ने पहले तीन शताब्दियों के दौरान परम पवित्र त्रिमूर्ति के बारे में क्या और कैसे सिखाया।

मामलों को और स्पष्ट करने के लिए, हम प्रस्तुत करेंगे —

I) उस समय संपूर्ण चर्च ने प्रेरितिक परंपरा का अनुसरण करते हुए परम पवित्र त्रिमूर्ति के बारे में कैसे शिक्षा दी;

II) इसके व्यक्तिगत पादरियों और मंडली ने कैसे सिखाया या विश्वास किया; और

III) अंत में, हम इस विषय पर स्वयं चर्च के शत्रुओं की गवाहियाँ प्रस्तुत करेंगे।

I. मसीह की संपूर्ण कलीसिया ने निकिया परिषद से पहले परम पवित्र त्रिमूर्ति के बारे में ठीक उसी तरह से **शिक्षा दी**, जैसे उसने निकिया परिषद से लेकर आज तक शिक्षा दी है और देती आ रही है। इसका अकाट्य प्रमाण निम्नलिखित द्वारा प्रस्तुत किया जाता है:

1) उस समय विभिन्न चर्चों में प्रचलित सार्वजनिक धर्मसूत्र या विश्वास के प्रतीक, जो स्वयं पवित्र प्रेरितों से प्राप्त हुए थे। इस प्रकार:

(a) प्रेरितों के विश्वास-सूत्र (Apostles' Creed) के रूप में जाने जाने वाले धर्म-सूत्र में, जिसका उपयोग मुख्य रूप से रोमन चर्च में और आम तौर पर पश्चिम में किया जाता था, हम पढ़ते हैं: 'मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर पिता में विश्वास करता हूँ...; मैं यीशु मसीह, उनके एकमात्र पुत्र, हमारे प्रभु में विश्वास करता हूँ...; मैं पवित्र आत्मा में विश्वास करता हूँ;'

ख) प्रेरित संविधानों (Apostolic Constitutions) में निर्धारित धर्मविश्वास, जिसका उपयोग मुख्य रूप से पूर्व (East) में बपतिस्मा (baptism) संस्कार के दौरान किया जाता था: 'मैं विश्वास करता हूँ और एक अजन्मे, एक सच्चे ईश्वर, सर्वशक्तिमान, मसीह के पिता में बपतिस्मा लेता हूँ..., और प्रभु यीशु मसीह में, जो उसकी एकमात्र संतान, सभी सृष्टि के प्रथमज, सभी युगों से पूर्व, पिता से उनकी सुइच्छा (εὐδοκία) से उत्पन्न, सृजित नहीं हुए...; मैं पवित्र आत्मा में भी बपतिस्मा लेता हूँ, अर्थात् सांत्वनादाता में, जो संसार की शुरुआत से सभी संतों में कार्यरत रहे हैं, और जिन्हें बाद में हमारे उद्धारकर्ता, प्रभु यीशु मसीह के वचन के अनुसार, पिता द्वारा प्रेरितों के पास भेजा गया था...;"[486]

(ग) यरूशलेम की कलीसिया के धर्मविश्वास में: "मैं एक परमेश्वर, सर्वशक्तिमान पिता में विश्वास करता हूँ...; और एक प्रभु यीशु मसीह में, जो परमेश्वर के एकलौते पुत्र हैं, जो सब वस्तुओं से पहले पिता से उत्पन्न हुए, सच्चे

---

[484] ए. एम. द्वारा लिखित 'परिचय टू ऑर्थोडॉक्स थियोलॉजी', §§ 127, 132, 134–137 देखें।

[485] तर्कवादियों की सामान्य धारणा।

[486] Constit. Apostol. lib. VII, cap. 41. यद्यपि छठी सार्वभौमिक परिषद के धर्मसभा-पिता (कैनन 2 में) ने इन *फरमानों* के बारे में टिप्पणी की कि 'कुछ असहमत लोगों ने, चर्च के नुकसान के लिए, उनमें कुछ नकली और धर्मपरायणता के लिए विदेशी चीजें शामिल कर दी हैं,' यहाँ उद्धृत धर्मविश्वास, प्राइमासियल चर्च के अन्य धर्मोपदेशों के साथ पूरी तरह से सुसंगत होने और इसमें कुछ भी विधर्मी न होने के कारण, विद्वानों द्वारा सही रूप से ऑर्थोडॉक्सी के सबसे प्राचीन और सम्माननीय उदाहरणों में से एक के रूप में मान्यता प्राप्त है। और चूँकि इसकी रचना में, यह पश्चिमी चर्चों की तुलना में पूर्वी चर्चों के धर्म-सत्यसंग्रहों से अधिक मिलता-जुलता है, इसलिए यह निष्कर्ष निकाला गया है कि इसका उपयोग मुख्य रूप से पूर्व में किया जाता था। *बिंगम।* ओरिजि. इक्लेस. खंड IV, पृ. 92–95. हैल. 1755; *क्रैबे,* *यूबर डेन उर्सप्रुंग उंड डेन इनहोल्ट डेर अपोस्टोल. कॉन्स्टि.*, पृ. 204, हैम्बर्ग 1829; *हान,* *बिल्थेक डेर सिम्बोल एंड ग्लाउबेंसरेगुलन डेर अपोस्टोलिशि-कैथोलिशि किर्खे*, पृ. 40–41, ब्रेस्लाउ 1842.

परमेश्वर, जनिके द्वारा सभ वस्तुएँ बनीं...; और एक पवत्रि आत्मा में, जो परमेश्वर का आत्मा है, जो भवष्यिद्वक्ताओं के द्वारा बोलता था...;"[487]

d) सेसरयिा की कलीसयिा के धर्म-सूत्र में: "हम एक ईश्वर, सर्वशक्तमिान पतिा..., और एक प्रभु यीशु मसीह, परमेश्वर का वचन, परमेश्वर से परमेश्वर, ज्योतसि ेज्योत,ि जीवन से जीवन, एकमात्र पुत्र, सारी सृष्टि के प्रथमज, जो युगों से पूर्व पतिा से उत्पन्न हुए..., में वश्विास करते हैं...; हम एक पवत्रि आत्मा में भी वश्विास करते हैं, और उनमें से प्रत्येक के अस्तत्वि (εἶναι) और व्यक्तगित अस्तत्वि (ὑπάρχειν) को स्वीकार करते हैं: पतिा—वास्तव में पतिा, पुत्र—वास्तव में पुत्र, और पवत्रि आत्मा—वास्तव में पवत्रि आत्मा, ठीक वैसे ही जैसे हमारे प्रभु ने, जब अपने शष्यिों को प्रचार के लएि भेजा, कहा: *'इसलयि जाओ और सब जातयिों के लोगों को चेला बनाओ, और उन्हें पतिा और पुत्र और पवत्रि आत्मा के नाम से बपतस्मिा दलिाओ।'*"[488]

2) उस समय की संपूर्ण कलीसयिा के वश्विास संबंधी गवाहयिाँ, जैसा कसिंत आइरेनयिस और टर्टुलयिन द्वारा दी गई हैं, जो स्वयं उस काल में जीवति थे और अपने पद के नाते उसकी सच्ची शक्षिा को जानने में सक्षम तथा बाध्य थे। अपनी युवावस्था के दनिों को पूर्व में प्रेरतिीय कद के एक व्यक्त—संत पॉलीकार्प—के नकिट मार्गदर्शन में बतिाने, बाद में समकालीन ईसाई जगत के आधे हस्सि े की यात्रा करने, और अंत में पश्चमि में ल्यों के बशिप के रूप में मसीह की कलीसयिा की सेवा करने के बाद, आइरेनयिस इसके वश्विास के बारे में यही कहते हैं: "यद्यपि कलीसयिा संसार भर में पृथ्वी के छोर तक बखिरी हुई है, तथापि *उसने प्रेरतिों और उनके शष्यिों से* एक परमेश्वर, सर्वशक्तमिान पतिा..., और एक ईश्वरपुत्र यीशु मसीह में, जो हमारे उद्धार के लएि देहधारी हुए, और पवत्रि आत्मा में, जन्हिोंने भवष्यिद्वक्ताओं के द्वारा उद्धार की योजना की घोषणा की, *वश्विास ग्रहण कयिा है*।... इस उपदेश और इस वश्विास को प्राप्त करके, कलीसयिा, जैसा कि हमने कहा है, यद्यपि संसार में बखिरी हुई है, फरि भी इसे सावधानी से सुरक्षति रखती है, मानो एक ही घर में रहती हो; एक ही प्रकार से इस पर वश्विास करती है, मानो एक ही आत्मा और एक ही हृदय रखती हो; और एक स्वर में इसका प्रचार करती है, शक्षिति करती है और इसे हस्तांतरति करती है, मानो एक ही मुख से बोलती हो। यद्यपि संसार में अनगनित भाषाएँ हैं, परंपरा की शक्ति एक ही है। जर्मनी, इबेरयिा, और सेल्ट्स के बीच स्थापति चर्च कसिी अन्य तरीके से वश्विास नहीं करतीं और न ही उपदेश देतीं; न ही पूर्व में, मस्सि्र, लीबयिा और दुनयिा के केंद्र में (यानी, उस समय के ईसाई दृष्टकिोण के अनुसार, यरूशलेम की चर्च और अन्य जो फलिस्तिीन में स्थति थीं) स्थापति चर्च ऐसा करतीं। लेकनि जैसे सूर्य, ईश्वर की यह रचना, संपूर्ण वश्वि में एक और समान है, वैसे ही सत्य का एक और समान उपदेश हर जगह चमकता है और उन सभी लोगों को प्रबुद्ध करता है जो सत्य के ज्ञान को प्राप्त करना चाहते हैं। और चर्चों के नेताओं में, न तो कोई वाक्पटु व्यक्ति इसके वरिुद्ध बोलेगा और न ही कोई अकुशल व्यक्ति इस परंपरा को कमजोर करेगा।"[489]

टर्तुल्लयिन, जन्हिोंने परम पवत्रि त्रमिूर्ति पर चर्च की शक्षिा का बचाव प्रैक्सयिस के वरिुद्ध कयिा—जसिने परमेश्वर के भीतर व्यक्तयिों को एक कर दयिा था और दावा कयिा था कि केवल एक ही परमेश्वर है—साक्ष्य देते हैं: "और हम *हमेशा से* मानते आए हैं, और अब भी मानते हैं, एक ही ईश्वर में, उस व्याख्या (dispensatione) के साथ, जसिे 'ईश्वर की व्यवस्था' कहा जाता है, कि एक ही पतिा का एक पुत्र है, उनका वचन... हम मानते हैं कि यह पुत्र पतिा द्वारा कुँवारी के पास भेजा गया था, और उससे मनुष्य और ईश्वर दोनों के रूप में, मनुष्य का पुत्र और ईश्वर का पुत्र के रूप में जन्म लयिा, और उसका नाम यीशु मसीह रखा गया... हम मानते हैं कि उन्होंने, अपने वादे के अनुसार, पतिा से पवत्रि आत्मा को भेजा, जो सांत्वना देने वाले, और उन लोगों के वश्विास को पवत्रि करने वाले हैं जो पतिा, पुत्र और पवत्रि आत्मा में वश्विास करते हैं। यह सद्धिांत सुसमाचार की शुरुआत से ही हर जगह व्यापक रूप से प्रचलति रहा है, सभी वधिर्मी लोगों से भी पहले, और कल के प्रैक्सयिस से तो और भी पहले..."[490]

---

[487] यह धर्मसूत्र हमें सेंट सरिलि ऑफ जेरूसलम के धर्मोपदेशों के माध्यम से प्राप्त हुआ है, जनिके लएि यह आधार के रूप में कार्य करता है।

[488] इस प्रतीक चह्नि को नकियिा की परषिद में केसरयिा के बशिप यूसेबयिस द्वारा हमारे पूर्वजों से प्राप्त वश्विास के नयिम के रूप में पढ़ा गया था: 'जैसा कि हमने इसे प्राप्त कयिा है,' यूसेबयिस ने कहा, 'हमसे पहले के बशिपों से और पहली धर्मोपदेश में...', 'और इस प्रकार अब, अपने वश्विास में वश्विास करते हुए, हम इसे प्रस्तुत करते हैं। और यह है: हम वश्विास करते हैं...' *सोक्रेट.* एच. ई. पुस्तक I, अध्याय 8; *थयिोडोरेट.* एच. ई. पुस्तक 1, अध्याय 12; और *अथेनासयिस।* Epist. de decret. synodi Nicen. in Opp. I. 1, P. 1, p. 238, ed. Montfaucon.

[489] *इरनेयस,* *हरसियिों के वरिुद्ध*, पुस्तक I, अध्याय 10, § 1.

[490] *टर्तुल्लयिन,* अगेंस्ट प्रैक्स. अध्याय 2.

3) प्रारंभिक चर्च के कुछ संस्कार और रीति-रिवाज।

हम संदर्भित करते हैं:

क) बपतिस्मा का संस्कार, जिसे यह निरंतर प्रदान करता था, उद्धारकर्ता की आज्ञा के अनुसार, पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर, '[491] ', और, प्रेरितिक परंपरा के आधार पर, ' ' के अलावा किसी अन्य तरीके से नहीं—यानी बपतिस्मा लेने वाले व्यक्ति को पानी में तीन बार डुबोना—ताकि इस प्रकार एक ईश्वर की तीन सम-महान हाइपोस्टासीज़ में, अपने और बपतिस्मा लेने वाले व्यक्ति के विश्वास, दोनों की और भी स्पष्ट गवाही दी जा सके;[492]

ख) एक संक्षिप्त स्तुति-गीत, जिसे प्रारंभ में मुख्यतः दो रूपों में प्रयुक्त किया जाता था: 'पवित्र आत्मा के द्वारा पुत्र में पिता की महिमा', या: 'पवित्र आत्मा सहित पिता और पुत्र की महिमा',[493] और कभी-कभी: 'पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा की महिमा',[494] या: 'उसे (मसीह को), पिता और पवित्र आत्मा के साथ, सदा और सदा के लिए सम्मान और महिमा हो,' और इसी तरह;[495] यह स्तुति-गीत, जैसा कि संत बेसिल द ग्रेट कहते हैं, सुसमाचार के प्रचारित होने के बाद से ही चर्चों में प्रयुक्त होता आ रहा है, और अपने सभी रूपों में यह दिव्य व्यक्तियों के बीच अंतर और उनके सम्मान, महिमा और सार की अविभाज्यता, दोनों को व्यक्त करता है;[496]

c) अंत में, दीपक जलाने का धन्यवाद-गीत या संध्या का भजन, जिसे वही संत बेसिल एक *प्राचीन* भजन कहते हैं जो *संतों से* प्राप्त हुआ है, और जिससे वे बाद में इन शब्दों का उद्धरण करते हैं: "हम परमपिता और पुत्र और पवित्र आत्मा की स्तुति करते हैं," जिससे प्रारंभिक ईसाइयों के विश्वास का प्रदर्शन होता है कि पवित्र आत्मा का सम्मान परमपिता और पुत्र के बराबर है।[497]

४) प्रारंभिक चर्च द्वारा उन लोगों के खिलाफ जारी किए गए घोषणापत्र जिन्होंने परम पवित्र त्रिमूर्ति के सिद्धांत को किसी भी तरह से विकृत करने की हिम्मत की। यह सर्वविदित है कि जैसे ही ऐसे व्यक्ति प्रकट हुए और अपनी झूठी शिक्षाओं को फैलाना शुरू किया, सभी विश्वासियों—और विशेष रूप से पादरियों—की आवाज़ नवप्रवर्तकों और विधर्मियों, '[498] ' के रूप में उनके खिलाफ उठ खड़ी हुई, और चर्च ने तुरंत उन्हें ऑर्थोडॉक्स समुदाय से बहिष्कृत कर दिया। इसी प्रकार उसने प्रैक्सियस, नोएटियस, सबेलियस और सामोसटा के पॉल के साथ किया, जिन्होंने ईश्वर में व्यक्तियों की त्रैक्य स्वभाव को नकारने की हिम्मत की, और इससे भी पहले—एबियोनाइट्स और चेरिंथियंस के साथ, जिन्होंने पुत्र की दिव्यता और पिता के साथ एकसारता को अस्वीकार कर दिया था।[499] क्या इससे सीधे तौर पर यह निष्कर्ष नहीं निकलता कि प्रारंभिक कलीसिया में परम पवित्र त्रिमूर्ति का सिद्धांत स्पष्ट था और सभी मसीहियों

---

[491] ऊपर टिप्पणी 453 देखें।

[492] *टर्टुलियन,* अगेंस्ट प्रैक्स. अध्याय 27: 'अंत में, (मसीह ने) आज्ञा दी कि हमें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा में बपतिस्मा दिया जाए। क्योंकि हम प्रत्येक नाम में, प्रत्येक व्यक्ति में, एक बार नहीं, बल्कि तीन बार बपतिस्मा लेते हैं।' Conf. de coron. milit. ch. 3, जहाँ टर्तुल्लियन स्पष्ट रूप से इस प्रथा को पवित्र परंपरा पर आधारित करते हैं; साथ ही — *Basil*. de Spir. S. ch. 27 (*द वर्क्स ऑफ़ द होली फ़ादर्स* VII, पृ. 333, 336); *Hieronym.* contra Lucifer, ch. 4.

[493] इन स्तुति-रूपों पर विस्तृत चर्चा के लिए, देखें *संत बेसिल द ग्रेट,* द होली स्पिरिट, अध्याय 25, 27, 29; और *संत जॉन ऑफ़ डेमास्कस।* Epist. de hymno trysagio, n. 6; *Euthymius Zigabus,* Panopl. P. II, Titl. XII, अध्याय 29, और *Bingham,* Origin. eccles., खंड V, पुस्तक XIII, अध्याय 2।

[494] प्रेरितिक संविधान VIII, अध्याय 12: कि तुझे ही सारी महिमा, सम्मान और कृतज्ञता, स्तुति और आराधना हो, पिता को, पुत्र को और पवित्र आत्मा को, अब और सदा और अनंतकाल तक... जगतों के जगत। आमीन।

[495] *Epist. eccl. Smyrn.* de martyr. S. Polycarpi, n. 24: 'मसीह को महिमा हो, पिता और पवित्र आत्मा के साथ, युगानुयुग' (Chr. Th. 1821, I, पृ. 141); संत इग्नेशियस की *शहादत,* संख्या 7 (क्रि. थ. 1822, VIII, पृ. 356).

[496] *बेसिल द ग्रेट,* पवित्र आत्मा पर, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स* VII, पृ. 323, 336, 337, 349 में।

[497] उपरोक्त, पृ. 345–346: 'यह हमारे पूर्वजों की पूर्वज्ञात इच्छा थी कि वे संध्या के प्रकाश की कृपा को मौन रूप से स्वीकार न करें, बल्कि इसके प्रकट होते ही धन्यवाद दें। और हम यह नहीं कह सकते कि दीपक के लिए इन धन्यवाद के शब्दों का प्रवर्तक कौन था; वैसे भी, लोग प्राचीन भजन गाते हैं, और किसी ने भी कभी उन लोगों को अधर्मी नहीं माना है जो कहते हैं: *'हम परमपिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की स्तुति करते हैं'* (संध्या भजन *'हे कोमल प्रकाश'* के अंतिम शब्द इस प्रकार पढ़े जाते हैं: *'हम परमपिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की स्तुति करते हैं'*)।

[498] उदाहरण के लिए, टर्टुलियन चर्च की शिक्षा की तुलना संप्रदायियों की झूठी शिक्षाओं—विशेषकर *प्रैक्सियस की*—से करते हुए कहते हैं: hanc (अर्थात्, कलीसियाई) नियम सुसमाचार की शुरुआत से ही लागू रहा है, यहाँ तक कि सबसे पहले के विधर्मियों से भी पहले, कल के प्रैक्सियस से तो दूर की बात है; यह सभी विधर्मियों की *संतान* और कल के प्रैक्सियस की *नवीनता,* दोनों से सिद्ध होगा... (Adv. Prax. अध्याय 2)।

[499] *यूसेबियस,* *चर्च इतिहास*, पुस्तक III, अध्याय 27, 28; *थियोडोरेट,* *चर्च इतिहास*, पुस्तक I, अध्याय 3; *जेरोम,* मत्ती पर *प्रोलेगोमेना*।

के बीच गहराई से जड़ें जमा चुका था? अन्यथा, इस सिद्धांत का कोई भी विकृति निवाचार और विधिर्म प्रतीत नहीं हो सकती थी, बल्कि इसे सही मायने में एक तुच्छ मामला माना जाता।

II. प्रारंभिक चर्च के व्यक्तिगत सदस्य—चाहे पादरी हों या मंडली—स्वाभाविक रूप से पवित्र त्रिमूर्ति के रहस्य में उसी प्रकार विश्वास करते थे, जैसा चर्च ने स्वयं उन्हें सिखाया था। इसलिए, उनकी गवाहियाँ और स्वीकारोक्ति, जो आज तक सुरक्षित हैं—यद्यपि स्वभाव से व्यक्तिगत—जब इन्हें संपूर्ण रूप में देखा जाता है, तो वे उस समय पूरी कलीसिया द्वारा धारित विश्वास की और पुष्टि के रूप में काम कर सकती हैं। और वास्तव में हमें उस काल से ऐसी कई गवाहियाँ प्राप्त हुई हैं, आंशिक रूप से कलीसिया के प्रारंभिक पितरों और शिक्षकों के लेखन में, और आंशिक रूप से पहले शहीदों के कार्यों में।

1) पहली तीन शताब्दियों के पवित्र पिताओं और शिक्षकों ने, विभिन्न स्तरों की स्पष्टता के साथ, अपने लेखों में एकता वाले सार के भीतर ईश्वर में व्यक्तियों की त्रिमूर्ति के सिद्धांत की सर्वसम्मति से घोषणा की। इस प्रकार—

पहली शताब्दी के पितृपुरुषों, या प्रेरितिक पितृपुरुषों में, *रोम के संत क्लेमेंट* कहते हैं: 'क्या हमारे पास एक ईश्वर, और एक मसीह, और हम पर उंडेल दिया गया अनुग्रह का एक आत्मा नहीं है? ...' और कहीं और: "ईश्वर जीवित है, और प्रभु यीशु मसीह, और पवित्र आत्मा;"[500] *हरमास* कहते हैं: "जो लोग उसके पुत्र के द्वारा ईश्वर में विश्वास लाए हैं, उन्हें पवित्र आत्मा से परिधानित किया गया है...;"[501] *संत इग्नेशियस द गॉड-बेयरर* ने मैग्नेशियनों को निर्देश दिया: "प्रभु और प्रेरितों के सिद्धांतों में दृढ़ होने का प्रयास करो, ताकि जो कुछ भी तुम करते हो वह शरीर और आत्मा में, विश्वास और प्रेम में, पुत्र, और पिता, और पवित्र आत्मा में तुम्हारे लाभ के लिए हो... "बिशप और एक-दूसरे की आज्ञा मानो, ठीक वैसे ही जैसे यीशु मसीह ने देह में पिता की आज्ञा मानी, और प्रेरितों ने मसीह, पिता और आत्मा की आज्ञा मानी...."[502]

दूसरी शताब्दी के धर्मपिता और शिक्षकों में से, *संत जस्टिन शहीद*, सुसमाचार के प्रचार के बाद ईसाई धर्म में परिवर्तित हुए लोगों को बपतिस्मा की संस्कार कैसे प्रदान की जाती थी, इसका वर्णन करते हुए कहते हैं: "तब हम उन्हें पानी वाली जगह पर ले जाते हैं, और वे उसी तरह पुनर्जन्म पाते हैं जैसे हम स्वयं पुनर्जन्म पाए थे, अर्थात्, उन्हें तब सभी के पिता और प्रभु ईश्वर, और हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह, और पवित्र आत्मा के नाम पर पानी से धोया जाता है;" इसके अलावा, यूखरिस्त की संस्कार की जिस क्रम में उत्सव मनाया जाता है, उसका वर्णन करते हुए, वे टिप्पणी करते हैं: "और वह (अध्यक्ष), (रोटी और पानी में मिली शराब का प्याला) ग्रहण करने के बाद, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर सभी के पिता की स्तुति और महिमा करता है," — और कुछ पंक्तियों बाद: "हम सभी आशीर्वादों के लिए, सभी के सृष्टिकर्ता को उनके पुत्र यीशु मसीह और पवित्र आत्मा के माध्यम से धन्यवाद देते हैं।"[503] यह सिद्धांत और भी स्पष्ट रूप से *संत आइरेनियस* द्वारा व्यक्त किया गया है, जिनकी पूरी कलीसिया के—और परिणामस्वरूप अपनी—पवित्र त्रिमूर्ति में विश्वास के बारे में गवाही का हमने पहले ही हवाला दिया है; *एंटीओक के थियोफिलिस,* जो कहते हैं: "आकाश की वस्तुओं के निर्माण से पहले के तीन दिन त्रिमूर्ति के प्रतीक हैं: ईश्वर, उनका वचन, और उनकी बुद्धि;"[504] *अथेनागोरस,* जो ईसाइयों का अधर्मी होने का अनुचित आरोप लगाने वालों से बचाव करते हुए पूछते हैं: 'यह सुनकर कौन आश्चर्यचकित नहीं होगा कि जिन्हें ईश्वर पिता, ईश्वर पुत्र और ईश्वर पवित्र आत्मा कहा जाता है, और जो एकता में उनकी शक्ति और क्रम में उनके भेद को स्वीकार करते हैं, उन्हें अधर्मी कहा जाता है?..."; और फिर जोड़ते हैं कि ईसाइयों की मुख्य चिंता यह है "ईश्वर और उनके वचन को जानना, यह जानना कि पुत्र का पिता के साथ क्या एकत्व है

---

[500] *रोम के क्लेमेंट,* कोरिन्थियों को पत्र 1, खंड XLVI (क्रि. थ. 1824, XIV, पृ. 284 में), और *बेसिल द ग्रेट,* पवित्र आत्मा पर, अध्याय 29, खंड 72 ('द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स' VII, पृ. 344 में)।

[501] *हर्म.* पास्टर, पुस्तक III, उपमा IX, अध्याय 12 और 13, *गैलांडी की* *bibliotheca Patrum Minor* के खंड 1 में।

[502] एपिस्ट. एड मैग्नेस., अध्याय 13, क्रॉनिक रीडिंग्स 1830, XXXVIII, पृष्ठ 3 ff. में।

[503] एपोलॉज. 1, क्र. च. 1825, XVII, पृ. 92, 98 और 100 में संख्याएँ 61, 65, 67; तुलना करें पृ. 27–28।

[504] Ad Autol. II, n. 15: 'प्रकाशमानों की सृष्टि से पूर्व के तीन दिन त्रिमूर्ति के प्रकार हैं: ईश्वर के, उनके वचन के, और उनकी बुद्धि के।' यहाँ थियोफिलिस पवित्र आत्मा को *'ज्ञान' के रूप में* संदर्भित करते हैं, जैसा कि संत आइरेनियस ने भी इस शब्द का अक्सर उपयोग किया।

और पिता का पुत्र के साथ क्या सहभागिता है, आत्मा क्या है, और एकत्रिति—आत्मा, पुत्र और पिता—के बीच क्या एकत्व और भेद है।"[505]

दूसरी शताब्दी के उत्तरार्ध और तीसरी शताब्दी की शुरुआत के शिक्षकों में से, *अलेक्जेंड्रिया के क्लेमेंट* लिखते हैं: "सभी का एक ही पिता है, सभी का एक ही वचन है, और एक ही पवित्र आत्मा है जो सर्वत्र उपस्थित है;" और उसी कृति के निष्कर्ष में: "आओ हम एक ही पिता और पुत्र की महिमा करें और उन्हें धन्यवाद दें... पवित्र आत्मा के साथ, जो सभी चीजों में एक है..., जो कुछ भी अच्छा है, जो कुछ भी उत्तम है, जो कुछ भी बुद्धिमान है, जो कुछ भी धर्मी है, उसी की महिमा अब और हमेशा हो, आमेन;"[506] *टर्टुलियन,* विधर्मी प्रैक्सियस का खंडन करते हुए कहते हैं: "वह सोचता है कि कोई एक ईश्वर में तभी विश्वास कर सकता है जब वह उसी सत्ता को पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा तीनों कहना शुरू कर दे, मानो ईश्वर सभी चीजों में एक नहीं रहेगा, क्योंकि उससे—एक से—सभी चीजें आती हैं, अर्थात्, अस्तित्व की एकता में, और जब दिव्य व्यवस्था के रहस्य का पालन किया जाता है, जो एकता की घोषणा करते हुए तीन—पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा—के बीच अंतर करता है—स्थिति में नहीं (नॉन स्टेटू), बल्कि पद में (सेड ग्रेडू); सार में नहीं, बल्कि रूप में; शक्ति में नहीं, बल्कि एक ही शक्ति के पहलू में; क्योंकि एक ही ईश्वर है, जिनमें ये पद, रूप और पहलू पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नामों के अंतर्गत विभिदित हैं (अध्याय 2)। वे त्रिमूर्ति की संख्या और क्रम को एक के विभाजन के रूप में देखते हैं, जबकि एक, स्वयं से त्रिमूर्ति उत्पन्न करते हुए, उससे किसी भी तरह से प्रभावित नहीं होता है; इसके विपरीत, वह अपनी संपूर्णता में संरक्षित रहता है। वे प्रचार करते हैं कि हम दो और तीन का उपदेश देते हैं, जबकि वे स्वयं को एक ईश्वर के उपासक कहते हैं, मानो एकता, जब अनुचित रूप से सीमित हो, तो विधर्म को जन्म नहीं देती, और त्रिमूर्ति, जब तर्कसंगत रूप से समझी जाए, तो सत्य का निर्माण नहीं करती (अध्याय 3)। हमने अपने होठों से कभी यह नहीं कहा कि दो ईश्वर, दो प्रभु हैं; हालाँकि, ऐसा इसलिए नहीं है कि हम इस बात से इनकार करते हैं कि पिता ईश्वर हैं, और पुत्र ईश्वर हैं, और पवित्र आत्मा ईश्वर हैं, और उनमें से प्रत्येक ईश्वर है, बल्कि इसलिए कि दो ईश्वरों का प्रचार न करें (अध्याय 13)। 'एक ईश्वरत्व की त्रिमूर्ति—पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा' (अध्याय 21).

तीसरी शताब्दी के लेखकों में, हम *ओरिजिन* में पढ़ते हैं: "हमें तीन हाइपोस्टेसिस (Hypostases), अर्थात् पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा को स्वीकार करने की शिक्षा दी जाती है;"[507] "पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के बारे में जो कुछ भी कहा गया है, उसे सभी युगों और सभी अनंत काल से ऊपर माना जाना चाहिए, क्योंकि यह एक ही त्रिमूर्ति है, जो सभी समझ से परे है, न केवल अस्थायी बल्कि शाश्वत भी;"[508] *पाटारा के संत मेथोडियस* से: "पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा का राज्य एक है, ठीक वैसे ही जैसे उनका सार (οὐσία) और प्रभुत्व (κυριότης) एक है; इसीलिए हम एक ही त्रैक्य ईश्वरत्व की एक ही उपासना-कृत्य से उपासना करते हैं, जो आरंभहीन, अकल्पित, अनंत और शाश्वत है;"[509] से *सेंट साइप्रियन*: "यदि वह (मूर्तिभिंजकों द्वारा बपतिस्मा प्राप्त) ईश्वर का मंदिर बन गया है, — मैं पूछता हूँ: किस ईश्वर का, पिता..., या पुत्र..., या पवित्र आत्मा, जब तीनों एक हैं?"[510] *संत हिप्पोलीटस* से: "नोएटियस को, अपनी इच्छा के विरुद्ध भी, पिता, सर्वशक्तिमान ईश्वर, और ईश्वर के पुत्र मसीह यीशु, मनुष्य बने ईश्वर..., और पवित्र आत्मा—को स्वीकार करना होगा; उसे यह स्वीकार करना होगा कि ये वास्तव में तीन हैं...; अन्यथा हम एक ईश्वर को स्वीकार नहीं कर सकते, जो पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा में सच्चे विश्वास के साथ मान्य हो;"[511] *अलेक्जेंड्रिया के डायोनिसियस से:*

---

[505] Legat. pro Christ, nos. 10 और 12; Conf. no. 24: क्योंकि जब हम वचन और पवित्र आत्मा को 'ईश्वर' और 'पुत्र' कहते हैं, तो हमारा तात्पर्य, सारत; पिता, पुत्र और आत्मा से होता है।

[506] पेडागोगस, पुस्तक III, अध्याय 6 और 12।

[507] हम, हालाँकि, तीन हाइपोस्टेसीज़ को पहचानना सीखते हैं: पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा। जोआन्न. खंड II, संख्या 6 में।

[508] De princip. IV, n. 28. और आगे: "यदि आप एक ईश्वर को स्वीकार करते हैं और फिर भी यह विश्वास नहीं करते कि पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा एक ही ईश्वर हैं, तो यह विश्वास अविश्वासी को कठिन, अकल्पनीय और अभिव्यक्ति से परे क्यों नहीं लगेगा?" (निग्मन होम. V, n. 3) "ईश्वर में तीन व्यक्तियों—पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा—के बीच यह भेद तीन धाराओं के जल के समान है, जो एक-दूसरे से अलग होते हुए भी एक ही स्रोत से प्रवाहित होते हैं" (गणना होम. XII, n. 1). 'पवित्र त्रिमूर्ति, जो सभी सृष्टि की शुरुआत है' (भजन संहिता XVII, 16)। 'सियोन के स्तंभ, स्वर्गीय सिद्धांत, और आराधक और पवित्र त्रिमूर्ति का सच्चा विश्वास' (भजन संहिता CXLVII, 13)।

[509] *मेथोडियस,* *रामोस. पाम.* संख्या 5 में।

[510] *साइप्रियन,* जुबाजन को पत्र, LXXIII। तुलना करें टिप्पणी 467।

[511] *हाइपोल.* कॉन्ट्रा नोएट. संख्या 8 और 12।

"यदि वे यह दावा करते हैं कि उपस्तत्वि (hypostases), चूंकि वे तीन हैं, अलग-अलग हैं, तो वास्तव में वे तीन ही हैं, भले ही वधिर्मी ऐसा न चाहें; अन्यथा, उन्हें दविय त्रमिूर्त की अवधारणा को पूरी तरह से उखाड़ फेंकना चाहिए।"[512]

पवत्रि त्रमिूर्त के संबंध में वशि्वास के सबसे प्राचीन शकि्षकों की रचनाओं से इन सभी साक्ष्यों का सारांश प्रस्तुत करने के लिए, आइए हम धन्य ऑगस्टीन, जो समय के हसिाब से उनसे कहीं अधकि नकिट थे और उनके वशि्वासों को हमसे बेहतर जानते होंगे। वे वशिेष रूप से कहते हैं: "पुराने और नए नयिम के रहस्यों के सभी ऑर्थोडॉक्स व्याख्याकार, जन्हिें मैं पढ़ पाया हूँ, जन्हिोंने मुझसे पहले त्रमिूर्त, जो परमेश्वर है, पर लखिा, ने पवत्रि शास्त्र के अनुसार यह सखिाने का प्रयास कयिा कि पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा, एक ही अवभिाज्य सार (substantiae) की समानता द्वारा, दैवीय एकता का नर्मिाण करते हैं, और इसलिए वे तीन देवता नहीं, बल्कि एक ही ईश्वर हैं।"[513]

2) प्राचीन शहीदों के कार्यों में, त्रमिूर्तवादी ईश्वर की उतनी ही स्पष्ट स्वीकारोक्तयिाँ मलिती हैं, जो वशिेष रूप से महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे अधकिांशतः साधारण, अनपढ़ लोगों द्वारा कही गई थीं, और परणिामस्वरूप चर्च द्वारा सखिाए गए अनुसार ही, बनिा अपनी कसिी कल्पना या तर्क के मश्रिण के व्यक्त की गई थीं। उदाहरण के तौर पर, हम उद्धृत करते हैं:

(क) *पवत्रि शहीद पॉलीकार्प* के शब्द, जो उन्होंने तब कहे जब वे अपने लिए तैयार की गई चति पर चढ़ने के लिए तैयार थे: "हे प्रभु, सर्वशक्तमिान परमेश्वर, अपने प्रयि और धन्य पुत्र के..., इन सबके लिए और सभी बातों के लिए मैं आपकी स्तुति करता हूँ, आपको धन्य कहता हूँ, और आपको महमिामय ठहराता हूँ, साथ ही शाश्वत और स्वर्गीय यीशु मसीह, आपके प्रयि पुत्र के साथ, जसिे आपको और पवत्रि आत्मा के साथ, महमिा मलि, अब और हमेशा के लिए;"[514]

ख) *ल्यों के शहीद एपपिोडयिस के* स्वीकारोक्ति पर, जन्हिोंने वर्ष 178 में यातनाएँ सहन कीं: "मैं वशि्वास करता हूँ कि मसीह, पति और पवत्रि आत्मा के साथ, परमेश्वर हैं, और मैं आनंदपूर्वक अपनी आत्मा उस के लिए अर्पण करता हूँ जो मेरा सृष्टकिर्ता और मेरा उद्धारकर्ता दोनों है;"[515]

ग) *शहीद वसिेंट* का बयानी, जनिकी मृत्यु वर्ष 304 में हुई: "मैं प्रभु मसीह, एकमात्र उच्चतम पति के एकलौते पुत्र में वशि्वास करता हूँ, और मैं उन्हें, पति और पवत्रि आत्मा के साथ, एकमात्र ईश्वर के रूप में स्वीकार करता हूँ;"[516]

(d) उसी वर्ष शहीद हुए दो अन्य शहीदों के शब्द, अर्थात् *शहीद यूप्ला*: "मैं पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा का सम्मान करता हूँ; मैं पवत्रि त्रमिूर्त का सम्मान करता हूँ, जसिके बनिा कोई ईश्वर नहीं है;" और *शहीद अफ्रा*: "प्रभु यीशु मसीह!... मैं अपनी बलदिान तुझको अर्पण करता हूँ, जो पति और पवत्रि आत्मा के साथ, सदा और सदा के लिए परमेश्वर होकर राज्य करते हो।"[517] और हमें यह न भूलें कि, पवत्रि त्रमिूर्त में अपने वशि्वास की ऐसी स्वीकारोक्तयिाँ करते हुए, शहीदों ने उन्हें अपने ही रक्त से सील कर दयिा: इस प्रकार, यह वशि्वास उनके हृदयों में गहराई से जड़ जमा चुका था, और उन्होंने मोक्ष के लिए इसे अत्यंत प्रयि माना!

III. अंत में, प्रारंभकि चर्च के स्वयं शत्रु—भीतरी और बाहरी **दोनों—त्रमिूर्त ईश्वर में इसकी आस्था के साक्षी बन सकते हैं**।

आंतरकि शत्रु, यानी वधिर्मी, दो तरीकों से इसकी गवाही देते हैं। कुछ लोग ऐसा ईश्वर में व्यक्तयिों की त्रैतयि प्रकृति पर चर्च की शकि्षा को समझने में वफिल होकर करते हैं, जबकि वे सार की एकता को बनाए रखते हैं, और रूढ़वािदी लोगों पर तीन देवताओं की पूजा करने का आरोप लगाते हैं, जैसा कि प्रैक्सयिस और उसके अनुयायियों ने दूसरी शताब्दी की शुरुआत में कयिा था।[518] अन्य लोग ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि वे स्वयं ईश्वर में तीन व्यक्तयिों के सद्धिांत को मानते और प्रचारति करते थे, और फरि भी उन्हें इसके लिए चर्च द्वारा कसिी भी नदिा का सामना नहीं करना पड़ा, जैसा

---

[512] देखें सेंट *बेसलि द ग्रेट*, द होली स्परिटि पर, अध्याय 29, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स* VII, पृ. 344 में।

[513] *डी ट्रनिटिटे*, पुस्तक I, अध्याय 4, संख्या 7.

[514] संत पॉलीकार्प की शहादत पर *स्मर्ना* की कलीसयिा का पत्र, *यूसेबयिस*, चर्च इतहिास, पुस्तक IV, अध्याय 16 में, *क्रॉनकिल रीडगि्स* 1821, खंड I, पृ. 135–136, और 1848, खंड IV, पृ. 215 में भी।

[515] संत एपपिोडयिस और अलेक्जेंडर का पैशयिो, *ग्रुइनारी*, *एक्टा प्रमिोरम मार्टरिम सन्सिेरा*, पृ. 76, एम्स्टर्डम संस्करण, 1713 में।

[516] उपरोक्त, सेंट वसिेंट द लेवाइट का पैशयिन, पृ. 369। पवत्रि शहीद वसिेंट का स्मरणोत्सव ऑर्थोडॉक्स चर्च द्वारा 11 नवंबर को मनाया जाता है।

[517] उपरोक्त, पृ. 407–408 और 456। पवत्रि शहीद यूपुलस की स्मृति ऑर्थोडॉक्स चर्च द्वारा 11 अगस्त को मनाई जाती है। शहीद जुलटिा (उपरोक्त, पृ. 480) और शहीद मार्शयिल (पृ. 536) के समान स्वीकारोक्तयिों को भी देखें।

[518] *टेर्टुलयिन* में, अगेंस्ट प्रैक्स, अध्याय 3 देखें।

कि नाज़रेनियों के बारे में ज्ञात है, जो प्रेरति युग में ही प्रकट हुए थे,[519] और नवतयिानों के बारे में, जो तीसरी शताब्दी में प्रकट हुए थे।[520] प्रश्न उठता है: यदि ऑर्थोडॉक्स वास्तव में ईश्वर में व्यक्तियों की त्रमिूर्ति की शिक्षा नहीं मानते थे, तो वधिर्मयिों ने उनके इस आग्रह के लिए उन पर आरोप क्यों लगाया? और दूसरी ओर, चर्च, जो आमतौर पर वशि्वास के मामलों में कसिी भी नवाचार के लिए वधिर्मयिों को नंदिा करती थी, वह ईश्वर में तीन हाइपोस्टेसिस के सद्धिांत के लिए ही कुछ वधिर्मयिों की नंदिा करने में कैसे वफिल रही, यदि वह स्वयं इस सद्धिांत को नहीं मानती थी और केवल एक ईश्वर में वशि्वास करती थी?

प्रारंभकि चर्च की आदत अपने बाहरी दुश्मनों, यहूदयिों और मूर्तपिूजकों से अपने रहस्यों को छपिाने की थी; परणिामस्वरूप, उसने परम पवत्रि त्रमिूर्ति के सद्धिांत के रहस्य को भी छपिाया। यह आश्चर्य की बात नहीं है कि वे इस रहस्य के बारे में बहुत कम जानते थे और उन्होंने इसका इस्तेमाल ईसाइयों को कोसने के लिए नहीं कयिा। हालाँकि, कुछ यहूदयिों और pagans ने इसके बारे में सुना और पवत्रि धर्म के खलिाफ एक हथयिार के रूप में इसका इस्तेमाल कयिा। दार्शनकि सेल्सस, एक यहूदी की ओर से ओरजिन पर आपत्ति जताते हुए, एक स्थान पर टप्पिणी करते हैं कि ईसाई आमतौर पर pagans को बहुदेववाद के लिए फटकारते हैं, जबकि वे स्वयं ईश्वर के भीतर कई व्यक्तियों को स्वीकार करते हैं।[521] पैगन लेखक लूसयिन, ईसाई सद्धिांत का मज़ाक उड़ाने की इच्छा से, अपनी संवाद-कृति *Philopatrides* में त्रफिोन नामक एक ईसाई का परचिय कराता है, जो क्रटियिास नामक एक पैगन को धर्मशक्षिा दे रहा है; और जब बाद वाला पूछता है: 'मुझे कसिकी या कसि चीज़ की कसम खानी चाहिए?' वह उत्तर देता है: 'उस ईश्वर की कसम खाओ, जो उच्चतम पर शासन करता है, महान और अमर एक, पति का पुत्र, पति से नकिलने वाला आत्मा, तीन में से एक, एक में तीन; उन्हें जुपटिर के स्थान पर स्वीकारो और उन्हें ईश्वर के रूप में सम्मानति करो।'[522]

इन गवाहयिों की श्रृंखला का नष्किर्ष नकिालते हुए, जो इस हास्यास्पद धारणा को पूरी तरह से खारजि करती हैं कि चर्च ने केवल चौथी शताब्दी के बाद ही ईश्वर में तीन व्यक्तियों के वशिष्टि सद्धिांत को सखिाना शुरू कयिा, जबकि इससे पहले उसका कोई अलग वशि्वास था, हम कसिी भी तरह की गलतफहमी को दूर करने के लिए, नम्निलखिति टप्पिणयिाँ जोड़ना आवश्यक समझते हैं:

1) सर्वपवत्रि त्रमिूर्ति के रहस्य में संपूर्ण प्रारंभकि चर्च के वशि्वास और व्यक्तगित व्यक्तियों, चाहे वे कोई भी हों, के वशि्वास के बीच अंतर करना आवश्यक है। पूरे चर्च ने, नस्सिंदेह, पहले तीन सदयिों में इस महान रहस्य को ठीक उसी तरह सखिाया जैसा उसने चौथी शताब्दी से लेकर आज तक सखिाया है—एक तथ्य जसिकी पुष्टि हमारे द्वारा उद्धृत गवाहयिों से स्पष्ट रूप से होती है। चर्च, जो अपनी शक्षिा में केवल लखिति और अलखिति दोनों ही रूपों में ईश्वर के वचन पर नर्भिर था, और जसिके भीतर हर समय पवत्रि आत्मा वद्यिमान था, जो उसे सर्व सत्य में मार्गदर्शन करता था, वह तब अचूक था, ठीक वैसे ही जैसे वह आज भी अचूक है। लेकनि इसके व्यक्तगित सदस्य—चाहे वे झुंड हों या स्वयं चरवाहे—इसके शक्षिण को आत्मसात करने में और बाद में, चाहे अपने लिए या दूसरों के लिए, इसे स्पष्ट करने का प्रयास करते हुए, वे त्रुटि करने के अधीन थे, जैसे कि वे अब हैं: क्योंकि ऐसे मामलों में, चर्च द्वारा व्याख्या की गई प्रकट की गई शक्षिा अनविार्य रूप से लोगों की व्यक्तगित धारणाओं के साथ मलिी-जुली होती थी, और प्रत्येक व्यक्ति केवल अपनी सीमति समझ के अनुसार ही उस सद्धिांत पर अपने वचिारों की व्याख्या कर सकता था। इसलिए, यदि कलीसयिा के सबसे शुरुआती शक्षिकों—चाहे एक या कई—की रचनाओं में परम पवत्रि त्रमिूर्ति के सद्धिांत के संबंध में कोई त्रुटि पाई जाती है, तो इन त्रुटयिों को कसिी भी तरह से स्वयं कलीसयिा के वरिुद्ध नहीं माना जाना चाहिए।

2) जब हम उस समय के व्यक्तगित शक्षिकों की रचनाओं में पवत्रि त्रमिूर्ति के सद्धिांत के वकिास का पता लगाते हैं, तो हमें धर्मशास्त्र के सार—यानि इसके नहिति वचिार—और इसके अभव्यिक्ति तथा वस्तिृत व्याख्या के तरीके के बीच एक कठोर अंतर करना चाहिए। धर्म-सद्धिान्त का सार—कि एक ईश्वर में तीन व्यक्ति हैं—प्रारंभकि चर्च के

---

[519] देखें *कोटेलर,* *पैट्र. एपोस्टोल.*, खंड 1, क्लेमेंटाइन, होमीली III, अध्याय 72; *बेनेडिक्टस के* *कन्फेशन्स*, त्रि-स्नान पर; *ले-क्वएिन,* *डे क्रस्टि. नाज़ावेनसि*, डमासेनस का नबिंध VII, संख्या 12-16, और *मारान,* *डे डविनिटि. क्रस्टिी*, पुस्तक II, अध्याय 7।

[520] *साइप्रयिन,* मैग्नस को पत्र LXIX, या LXXVI: "यदि कोई यह आपत्ति करे कि नोवाटयिन कैथोलकि चर्च के समान ही नयिम का पालन करता है, हमारे समान ही धर्मवशि्वास से बपतस्मिा देता है, और उसी *ईश्वर पति,* उसी *पुत्र, मसीह, और* उसी *पवत्रि आत्मा को* स्वीकार करता है... आदि..." कॉन्फ. बाइब्लयिोथ. वेटर. पैट्र. गैलैंड. खंड III, प्रस्तावना अध्याय 4: नोवाटयिन, रोमन पुरोहति पर।

[521] *ओरजिनि,* *सेलसस के वरिुद्ध*, पुस्तक II।

[522] *लुडाणी* ओप., खंड IX, फलिोपैट्र., संख्या 12, पृष्ठ 232, सं. *लेहमैन,* लेइपज़गि, 1831।

पादरियों द्वारा पूरे चर्च और बाद की शताब्दियों के पादरियों के साथ पूर्ण सामंजस्य में स्वीकार किया गया था, जैसा कि हमारे द्वारा प्रस्तुत साक्ष्यों से पुष्टि होती है। हालांकि, सार की एकता के भीतर तीन दिव्य व्यक्तियों के विचार की अभिव्यक्ति का तरीका और विस्तृत व्याख्या में, वास्तव में, पहली तीन शताब्दियों के पादरियों के बीच वह स्पष्टता, सटीकता और निश्चितता हमेशा मौजूद नहीं थी जो बाद के युगों के लेखकों में पाई जाती है।

3) हालाँकि, इसे किसी भी तरह से प्रारंभिक चर्च के व्यक्तिगत पादरियों के विरुद्ध नहीं माना जाना चाहिए। सर्वपवित्र त्रिमूर्ति के सिद्धांत की उनकी व्याख्या में कभी-कभी स्पष्टता या सटीकता की कमी, आंशिक रूप से स्वयं रहस्य की गहनता और अप्राप्यता के कारण थी, जिसे विस्तार से समझाने वाले वे *पहले* थे, विशेष रूप से मूर्तिपूजकों और विधर्मी लोगों के विभिन्न हमलों का सामना करते हुए। उतना ही मानव भाषा की सीमाओं से, और इस रहस्य को व्यक्त करने के लिए उपयुक्त शब्दों को खोजने में अत्यंत कठिनाई से भी—ऐसे शब्द जिन्हें प्राइमेट चर्च के पादरियों ने भी *सबसे पहले* खोजा और उपयोग किया।[523] जबकि चौथी, पाँचवीं और बाद की शताब्दियों के लेखकों ने सर्वपवित्र त्रिमूर्ति के सिद्धांत की व्याख्या करते समय स्वाभाविक रूप से अपने पूर्ववर्तियों के अनुभवों से प्रेरणा ली, और उनसे वह सब कुछ ग्रहण किया जो उन्हें सर्वोत्तम लगा, — वे ऐसे समय में रहते थे जब विभिन्न विधर्मों के परिणामस्वरूप, इस सिद्धांत की स्थानीय और सार्वभौमिक परिषदों द्वारा ठीक उन्हीं शब्दों में जांच और पूरी तरह से परिभाषा की जा चुकी थी।

4) न्याय यह भी मांग करता है कि चर्च के प्रारंभिक शिक्षकों की रचनाओं में कुछ ऐसे अंश, जो ईश्वरत्व के तीन व्यक्तियों की अवधारणा को पूरी तरह से सटीक या स्पष्ट रूप से व्यक्त नहीं करते हैं, उनकी तुलना उन्हीं लेखकों के अन्य अंशों से की जानी चाहिए जहाँ यह अवधारणा अधिक सही और स्पष्ट रूप से व्यक्त की गई है, और किसी भी हाल में केवल पहले उद्धरणों के आधार पर यह निष्कर्ष नहीं निकाला जाना चाहिए कि इस या उस लेखक ने परम पवित्र त्रिमूर्ति के बारे में गलत सिखाया था। इस प्रकार, सामान्य रूप से पहली तीन शताब्दियों के सभी लेखक, यहाँ तक कि जस्टिन, अलेक्जेंड्रिया के क्लेमेंट और ओरिजिन भी, जो दोषारोपण से बरी हो जाते हैं, जिनकी रचनाओं में वास्तव में कभी-कभी दैवीय व्यक्तियों के सिद्धांत में कुछ त्रुटियाँ होती हैं, लेकिन जैसा कि हमने देखा है, ऐसी रचनाएँ भी हैं जो सटीक हैं और इस सिद्धांत को सही ढंग से व्यक्त करती हैं।[524]

5) अंत में, प्रारंभिक पादरियों द्वारा परम पवित्र त्रिमूर्ति पर दिए गए उपदेश में कुछ अनजाने त्रुटियों का जानबूझकर फायदा उठाकर, धन्य ऑगस्टीन की गवाही के अनुसार, जैसा कि प्राचीन विधर्मी अक्सर करते थे, अपनी ही गलती को उनके नाम पर फैलाना पूरी तरह से लापरवाही होगी।[525]

§ 29. एक ईश्वर में व्यक्तियों की त्रिमूर्ति के सिद्धांत और सुदृढ़ तर्क के बीच संबंध।

चर्च के पवित्र पिताओं और शिक्षकों के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, जो, परम तत्व की एकता के भीतर ईश्वर में व्यक्तियों की त्रिमूर्ति के सिद्धांत की अगम्यता को स्पष्ट रूप से स्वीकार करते हुए, फिर भी कभी-कभी इस सिद्धांत के संबंध में तर्कसंगत तर्क प्रस्तुत करना आवश्यक समझते थे,[526] हम भी इसके स्वस्थ तर्क से संबंध के बारे

---

523 **डी इनकैर्नेलिबिल्स** में धन्य ऑगस्टीन टिप्पणी करते हैं, *'व्यक्तिगत अभिव्यक्ति के लिए*, ताकि हम किसी तरह उस बात पर बोल सकें जिसे हम संभवतः व्यक्त नहीं कर सकते, हमारे ग्रीक पिताओं ने कहा: "एक सार, तीन हाइपोस्टेसीज़" (ὑπόστασεις), जबकि लैटिन लोगों ने कहा: "एक सार या पदार्थ, तीन व्यक्ति"... और जब कहा गया है, वह कम से कम एक पहेली जैसी तरह से समझा जाता है, तो इसे इस तरह कहना उचित समझा गया, ताकि जब कोई पूछता है कि ये तीनों क्या हैं, तो कुछ कहा जा सके, जिन्हें सच्चा विश्वास तीन घोषित करता है... (De Trinit. Book VII, Chapter 4, n. 7). तो फिर, हमारे लिए यह मानने के अलावा और क्या बचा है कि जब *संप्रदायियों के जालों या त्रुटियों के विरुद्ध विस्तृत चर्चा करना आवश्यक था*, तो इन पदों को भाषण की आवश्यकता के कारण विभाजित किया गया था? क्योंकि जब भाषण में *मानवीय अपर्याप्तता* प्रभु परमेश्वर के बारे में मन के *सबसे भीतरी कोनों में* जो *कुछ भी* वह रखती है, उसे मानवीय समझ तक पहुँचाने का प्रयास करती है... और इसी तरह (उपरोक्त, संख्या 9)।

524 वर्तमान विषय के संबंध में, संत ग्रेगरी द थियोलोजियन की यह शिक्षा भी ध्यान देने योग्य है: वे कहते हैं, "यदि ईश्वर के वचन में, या *धर्मपरायण पुरुषों* से, आप पुत्र या पवित्र आत्मा का उल्लेख इस प्रकार सुनते हैं मानो वे परमपिता ईश्वर से दूसरे हों (और ऐसे वाक्यांश वास्तव में मिलते हैं, उदाहरण के लिए, संत जस्टिन, Apolog. 1, n. 13), तो मैं आपको सलाह देता हूँ कि आप इस गहरी बुद्धिमत्ता के शब्दों में वह अर्थ खोजें कि वे दिव्यता को विभाजित नहीं करते, बल्कि इसे एक ही, शाश्वत मूल तक वापस ले जाते हैं, ताकि आप शक्ति की एकता देख सकें, और सम्मान में कोई अंतर नहीं।" "द वर्क्स ऑफ़ द होली फ़ादर्स" IV, पृ. 223.

525 *ऑगस्टीन,* *De catechizandis rudibus*, अध्याय 8.

526 नीचे टिप्पणी 539 देखें।

में कुछ शब्द कहने की अनुमति लेंगे, ताकि एक ओर, हम इस विषय के बारे में झूठी राय का खंडन कर सकें, और दूसरी ओर, अपने लिए सही दृष्टिकोण को प्रस्तुत और स्पष्ट कर सकें।

1. आदिकाल से, इस विषय के संबंध में दो *गलत* मत रहे हैं।

कुछ लोगों ने दावा किया है, और करते भी रहते हैं, कि त्रिएक ईश्वर का सिद्धांत स्वस्थ तर्क का खंडन करता है, क्योंकि यह स्वयं अपने आप में विरोधाभासी है,[527] — लेकिन वे पूरी तरह से गलत हैं:

(क) ईसाई धर्म यह सिखाता है कि ईश्वर एक हैं और फिर भी त्रिमूर्ति हैं, एक ही दृष्टिकोण से नहीं बल्कि विभिन्न दृष्टिकोणों से; कि वह सत्ता में एक हैं, और व्यक्तियों में त्रिमूर्ति हैं; और एक अवधारणा ईश्वर की सत्ता को संदर्भित करती है, जबकि दूसरी दिव्य व्यक्तियों को संदर्भित करती है, ताकि ये अवधारणाएँ एक-दूसरे को बिल्कुल भी नकार न करें — तो फिर, विरोधाभास कहाँ है? यदि ईसाई धर्म यह सिखाता कि ईश्वर सार में एक और त्रित्वमय दोनों हैं, या कि उनमें तीन व्यक्ति और एक व्यक्ति दोनों हैं, या यहाँ तक कि ईश्वर में व्यक्ति और सार एक ही हैं—तो, वास्तव में, एक विरोधाभास होता। लेकिन, हम दोहराते हैं, ईसाई धर्म यह शिक्षा नहीं देता है, और जो कोई भी जानबूझकर ईश्वर में सार और व्यक्तियों की ईसाई अवधारणाओं को भ्रमित नहीं करता है, वह परम पवित्र त्रिमूर्ति के सिद्धांत में आंतरिक विरोधाभास खोजने का विचार भी नहीं करेगा।

ख) किसी भी विचार को तर्कसंगतता और स्वयं के विरोधी के रूप में वर्णित करने के लिए, पहले उस विचार को पूरी तरह से समझना, उसके विषय और वाक्यांश के अर्थ को समझना, और उनकी असंगति को पहचानना आवश्यक है। लेकिन पवित्र त्रिमूर्ति के रहस्य के संबंध में, कोई भी यह दावा नहीं कर सकता कि उसने ऐसा किया है: हम केवल इतना जानते हैं कि प्रकृति या सार क्या है, और सृजित प्राणियों में एक व्यक्ति क्या है, लेकिन हम ईश्वर में न तो सार और न ही व्यक्तियों को पूरी तरह से समझते हैं, जो अपनी सभी रचनाओं से अनंत रूप से परे है। परिणामस्वरूप, हम यह निर्णय लेने की स्थिति में नहीं हैं कि सार में एक और व्यक्तियों में त्रिमूर्ति वाले ईश्वर की अवधारणाएँ संगत हैं या असंगत; हमारे पास यह दावा करने का कोई अधिकार नहीं है कि ईश्वर, जो सार में एक और व्यक्तियों में त्रिमूर्ति है, का विचार एक आंतरिक विरोधाभास रखता है। क्या उस चीज़ का न्याय करना उचित है जिसे हम समझते नहीं हैं?

ग) इसके विपरीत, सुदृढ़ तर्क इस विचार को पूरी तरह से सत्य और किसी भी विरोधाभास से मुक्त होने के लिए स्वीकार करने के लिए बाध्य है। यह इसके आंतरिक अर्थ को नहीं समझता है; लेकिन, बाहरी साक्ष्यों के आधार पर, यह निश्चित रूप से जानता है कि यह विचार ईसाई प्रकाशन में स्वयं ईश्वर द्वारा स्पष्ट रूप से संप्रेषित किया गया है: और ईश्वर सत्य के ईश्वर हैं।

अन्य लोग, और वे गिरते भी जा रहे हैं, विपरीत चरम पर पहुँच गए हैं, और दावा करते हैं कि त्रिमूर्ति के ईश्वर का सिद्धांत मन के लिए पूरी तरह से बोधगम्य है[528] — एक और अन्याय! इस तरह बोलना न केवल परमेश्वर के वचन का सीधा खंडन है, जो परम पवित्र त्रिमूर्ति का ज्ञान केवल परम पवित्र त्रिमूर्ति के व्यक्तियों को ही देता है और किसी और को नहीं (मत्ती 11:27; 1 कुरिन्थियों 2:11), और परिणामस्वरूप पवित्र चर्च और उसके सभी शिक्षकों का खंडन करता है, जिन्होंने हमेशा त्रिमूर्ति के धर्मशास्त्र को सबसे बड़ा रहस्य माना है,[529] — तो आश्चर्य होता है, वे किस साधन से यह साबित करने का इरादा रखते हैं कि यह सिद्धांत हमारे लिए समझ में आने योग्य है?

a) इस तथ्य से कि वे इसके निशान कई प्राचीन मूर्तिपूजक धर्मों में पाते हैं: मिस्र, भारतीय, फारसी, ग्रीक और रोमन।[530] लेकिन—

---

[527] प्राचीन काल में विरोधी-त्रिमूर्तिवादी विधर्मी इसी प्रकार बोलते थे, और हाल के समय में सोसिनियन और सभी तर्कवादी इसी प्रकार बोलते हैं।

[528] इस विचार को विस्तार से बताया गया: पाँचवीं शताब्दी में, क्लॉडियनस मामर्टस नामक एक पुरोहित द्वारा (De statu animae, Book II, p. 7, in Biblioth. Patr., ed. Lugdun., vol. VI, p. 1062); मध्य युग में, कुछ स्कूलास्टिक्स द्वारा: पीटर एबेलेर्ड, रिचर्ड विक्टोरिनस (De Trin. lib. I, p. 4; lib. III, p. 5; lib. IX, p. 1), गैंडेव के हेनरी (Quodl. VIII, quaest. 18) और, विशेष रूप से, रेमंड लुल (Lib. de demonstratione aequiparent.); आधुनिक समय में, शेलिंग और हेगेल के कई अनुयायियों ने इस दृष्टिकोण का समर्थन किया है (देखें एन. *मोलर,* *स्पेकुलेट. डारस्टेल्लुंग. देस क्रिस्टेंटुम्स*. लीपज़िग, 1834)।

[529] उपरोक्त टिप्पणियाँ 151 और 393 देखें।

[530] *Pfanner,* Syst. theolog. gont., अध्याय 3; *Vogel*, Die relig. veter. Aegypt. et Graec..., Nuremberg 1793; *Mayer*, Brahma, oder die Relig. der Indier, Leipzig 1818, पृ. 37.

aa) यह सर्ववदिति है कि इन धर्मों में पाई जाने वाली हर चीज़ (भ्रामक) मानवीय तर्क का उत्पाद नहीं है, बल्कि इसका बहुत कुछ, परंपरा के अनुसार, पतिसत्तात्मक, दैवीय रूप से प्रकट धर्म, से प्राप्त हुआ था, जो अब्राहम से पहले, मानव जाति की सामान्य विरासत थी, यद्यपि यह अधिक या कम विकृत रूप में थी;

bb) ऐसी परंपराओं में, निस्संदेह, ईश्वर में त्रिमूर्ति से संबंधित कुछ अवधारणाओं को भी शामिल करना चाहिए जो मूर्तिपूजक धर्मों में संरक्षित हैं, क्योंकि ये अवधारणाएं अत्यंत भ्रमित, अस्पष्ट, अस्पष्टीकृत और धुंधली हैं; जबकि, यदि स्वयं तर्क ने उन्हें परम पवित्र त्रिमूर्ति के अपने ज्ञान के परिणामस्वरूप तैयार किया होता, वे स्वाभाविक रूप से स्पष्टता और सटीकता से विशेषता प्राप्त होतीं, ठीक वैसे ही जैसे ज्ञान के अन्य सभी रूपों के साथ होता है;[531]

(cc) अंत में, यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि मूर्तिवादी धर्मों में पाई जाने वाली ईश्वर की त्रैतिय प्रकृति की अवधारणाएँ परम पवित्र त्रिमूर्ति के *सच्चे* सिद्धांत, या ईसाई सिद्धांत से लगभग मेल नहीं खाती हैं;[532] तदनुसार, भले ही उन्हें मन का श्रेय दिया जाए, वे, *तुरंत* के रूप में, इस विचार के प्रमाण के रूप में अधिक न्यायसंगत रूप से काम करेंगे कि केवल तर्क ही इस परम रहस्य को समझने में असमर्थ है।

ख) इस तथ्य से कि दार्शनिक प्लेटो की कृतियों में दिव्य त्रिमूर्ति की अवधारणाएँ पाई जाती हैं।[533] फिर भी प्लेटो भी —

aa) इस विषय पर इतनी अस्पष्टता और भ्रम के साथ बोलता है कि उसके सबसे उत्तम अनुयायी भी उसे समझ नहीं पाए; कुछ ने सोचा कि उनके गुरु ने तीन देवताओं की कल्पना की: एक सर्वोच्च देवता, जो सभी चीजों का कारण और संसार का पिता है; एक दूसरा, निम्न देवता, जो पहले से रचा गया था, एक प्रकार की बुद्धि का प्रतिनिधित्व करता है, और जिसके माध्यम से सभी चीजें बनाई गईं; अंत में, एक तीसरा देवता, जो उससे भी निम्नतर था, दूसरे से उत्पन्न और संसार की आत्मा, या स्वयं संसार ही था;[534] जबकि अन्य का मानना था कि प्लेटो ने, सख्ती से कहें तो, त्रिमूर्ति की स्थापना नहीं की, बल्कि ईश्वर के भीतर एक चतुष्टय की स्थापना की, क्योंकि उन्होंने सभी चीजों के तीन सिद्धांतों—जो स्वयं एक-दूसरे के अधीन थे—को एक और उच्चतर एकता के अधीन कर दिया।[535] अतः—

bb) यह स्पष्ट है कि प्लेटो के असमान दर्जे के तीन या चार देवताओं के सिद्धांत और एक ईश्वर में तीन सह-समान व्यक्तियों के ईसाई सिद्धांत के बीच बिल्कुल भी समानता नहीं है, और कुछ चर्च पिताओं ने प्लेटो को एरियस का अग्रदूत कहना अनुचित नहीं समझा;[536]

---

[531] *स्टोलबर्ग,* *इसा मसीह के धर्म का इतिहास*, खंड 1, पृष्ठ 5: **जनजातियों के बीच हमारे धर्म के रहस्यों के संबंध में प्रारंभिक परंपराओं के निशान** देखें।

[532] उदाहरण के लिए, *फ़ारसी ज़ेन्ड-अवेस्ता* सबसे पहले एक सर्वोच्च देवता—*ज़ेरुअने अकरेने—की* घोषणा करती है, जो अनंत और अनंतकाल से अस्तित्व में रहने वाले समय के अलावा और कुछ नहीं है, जो हमेशा अपनी ही अथाह गहराई में डूबा रहता है, अदृश्य और अचेत; और दूसरे, दो और सिद्धांत: अच्छाई का सिद्धांत और बुराई का सिद्धांत, *ओरमुज़्द* और *अहरमिन,* जो एक-दूसरे के शाश्वत शत्रु हैं, पहला अच्छाई की दुनिया का सृष्टा है, और दूसरा बुराई की दुनिया का सृष्टा है (ज़ेन्ड-अवेस्ता, ज़ोरोस्टर का लिविंग वर्ड, जिसमें... रिंग 1767)। इसी तरह, यद्यपि भारतीय धार्मिक सिद्धांत एक दिव्य *त्रिमूर्ति—ब्रह्मा, विष्णु* और *शिव*—की बात करता है, ये एक ही ईश्वर के भीतर तीन व्यक्ति नहीं हैं, बल्कि एक ही परम *परा-ब्रह्म के* तीन गुण, कर्म या अभिव्यक्तियाँ हैं, जो अपने भीतर से ही सब कुछ अस्तित्व में लाता है और अपने द्वारा सभी चीजों में प्राण फूँकता है: "भारतीय का विश्वास है कि संसार का शासन ब्रह्मा, विष्णु और शिव द्वारा किया जाता है; पहला सृजनात्मक शक्ति है, दूसरा संरक्षण करने वाली बुद्धि है, तीसरा न्याय का विनाशकारी क्रोध है; पहला वह पदार्थ है जिससे सभी चीजें बनाई जाती हैं, दूसरा वह स्थान है जिसमें सभी चीजें रहती हैं, तीसरा समय है, जो सभी चीजों को नष्ट कर देता है; पहला सूर्य है, जो जीवन देता है; दूसरा जल है, जो इसे बनाए रखता है; तीसरा अग्नि है; पहला अतीत है, दूसरा वर्तमान है, तीसरा भविष्य है' (ईस्ट इंडिया; सेमेन और स्टोयकोविच द्वारा प्रकाशित, पृ. 40, मॉस्को, 1846)। हालांकि, शिक्षाओं के अन्य भागों में जहाँ इन देवताओं—ब्रह्मा, विष्णु और शिव—को अवतारित किया गया है, वहाँ उन्हें तीन अलग-अलग देवताओं के रूप में चित्रित किया गया है, और इसके अलावा सबसे अनोखी विशेषताओं के साथ; प्रत्येक की कई पत्नियाँ हैं और, उनके माध्यम से, देवताओं की अनगिनत पीढ़ी है। उदाहरण के लिए, शिव का वर्णन इस प्रकार किया गया है: "वह राक्षसों और आत्माओं की एक सेना से घिरा, नशे में धुत, बिखरे बालों वाला, यज्ञ की चिताओं की राख से ढका, खोपड़ियों और हड्डियों से सजा, इधर-उधर दौड़ता और लड़खड़ाता है; कभी वह ज़ोर से हँसता है, तो कभी भयानक गर्जना करता है" और इसी तरह (उपरोक्त, पृ. 45, 69 आदि)।

[533] *प्लेटो,* डायोनिसियस को पत्र 2 (*यूसेबियस,* *प्रेप. इवैंग.*, पुस्तक II, अध्याय 20 में उद्धृत); हरमियास, एरास्टस और कोरसिस को पत्र 6।

[534] *प्लॉटिनस,* एनेड्स, पुस्तक V, अध्याय 1, अनुभाग 3, 8 और 13; *नुमेनियस,* यूसेबियस की *प्रेपरेशन फॉर द गॉस्पल*, पुस्तक II, अध्याय 20 में उद्धृत; *मैक्रोबियस,* *ऑन द ड्रीम ऑफ़ सिपियो*, पुस्तक 1, अध्याय 14।

[535] *प्रोक्लस,* टिमायस पर टीकाएँ, पुस्तक II; *जस्टिन,* कोहोर्ट, यूनानियों को: 'प्लेटो, तो, कभी-कभी कहते हैं कि सभी चीजों के तीन सिद्धांत हैं—ईश्वर, पदार्थ, और रूप—और कभी-कभी चार, क्योंकि वह सार्वभौमिक आत्मा को जोड़ते हैं।'

[536] *सिरिल,* जूलियन के विरुद्ध, पुस्तक 1। कोंफ. *बाल्टस,* प्लेटोवाद के आरोपित पवित्र पिताओं का बचाव, पुस्तक II, अध्याय 3।

(cc) यह निष्कर्ष निकालना स्वाभाविक है कि प्लेटो ने दिव्य त्रिमूर्ति की अपनी अवधारणाओं को अपनी तर्कसंगत सोच और विवेक (अन्यथा वह उन्हें और अधिक स्पष्ट रूप से व्यक्त करता) के फलस्वरूप नहीं, बल्कि कहीं और से उधार ली गई अवधारणाओं के रूप में व्यक्त किया, और शायद, उन्हें गलत या अपर्याप्त रूप से आत्मसात किया; और हो सकता है कि उसने ये अवधारणाएँ या तो मूर्तिपूजक धर्मों की मिश्रित परंपराओं से उधार ली हों, या, जैसा कि कई ईसाई शिक्षकों ने दावा किया है, पुराने नियम की पवित्र पुस्तकों से और यहूदियों के साथ अपने संपर्क से।[537]

c) ईश्वर की प्रकृति के संबंध में कुछ बौद्धिक तर्क, जिनके बारे में कहा जाता है कि वे एक ही ईश्वर के भीतर व्यक्तियों की त्रिमूर्ति की संभावना और यहां तक कि आवश्यकता को पूरी तरह से स्पष्ट करते हैं। फिर भी ये तर्क किसी भी तरह से इतनी उच्च सम्मान के पात्र नहीं हैं। उदाहरण के लिए, उनमें से सबसे अच्छा माना जाने वाला तर्क इस प्रकार है: "ईश्वर में, आत्मा के रूप में, सबसे पहले, एक दोहरी गतिविधि, अर्थात् बुद्धि की गतिविधि और इच्छा की गतिविधि, और दूसरी, इन दोनों गतिविधियों के स्रोत को अलग करना चाहिए। और चूँकि ईश्वर में कुछ भी आकस्मिक या क्षणिक नहीं हो सकता, इसलिए इन दोनों गतिविधियों, साथ ही उनके स्रोत को भी स्वायत्तता प्राप्त होनी चाहिए: परिणामस्वरूप, एक ही दिव्य सत्ता के भीतर, तीन विशिष्ट और स्वतंत्र व्यक्तियों को स्वीकार करना आवश्यक है: पिता, बुद्धि और इच्छा की क्रियाओं के स्रोत के रूप में; बुद्धि की क्रिया, या पुत्र; और इच्छा की क्रिया, या पवित्र आत्मा।[538] लेकिन क्या परम पवित्र त्रिमूर्ति के ईसाई सिद्धांत की इस तरह व्याख्या करना इस सिद्धांत को विकृत करने, या इसे बिल्कुल भी समझने में विफल होने के बराबर नहीं है?

2) पवित्र त्रिमूर्ति के रहस्य और सुदृढ़ तर्क के संबंध के बारे में *सही* दृष्टिकोण वह है जो चर्च के पवित्र पिताओं और शिक्षकों द्वारा अपनाया गया है। वे इस दोनों धारणाओं को खारिज करते थे कि यह रहस्य सुदृढ़ तर्क का खंडन करता है और यह कि यह हमारे लिए पूरी तरह से समझ में आता है, फिर भी उन्होंने यह स्वीकार किया कि, चूंकि पवित्र त्रिमूर्ति आंशिक रूप से अपनी सृष्टि में प्रतिबिंबित होती है, हमारी बुद्धि वास्तविक दुनिया में इसकी कुछ समानताएँ पा सकती है, यद्यपि वे केवल बहुत ही अस्पष्ट और सबसे अपूर्ण समानताएँ ही होंगी। इसी कारण, जब अवसर मिला, तो उन्होंने स्वयं भी ऐसी उपमाओं का उपयोग किया, ताकि इस अगम्य रहस्य को सामान्य अवधारणाओं के जितना संभव हो उतना करीब लाया जा सके: उन्होंने, उदाहरण के लिए, सूर्य, सूर्यकिरण और प्रकाश की ओर इशारा किया, जिनमें एकता और भिन्नता दोनों मौजूद हैं; एक ही पेड़ की जड़, तने और फल के रूप में; वसंत, धारा और नदी के रूप में, जो अविभाज्य रूप से जुड़े हुए फिर भी अलग हैं; एक ही स्थान पर जलती हुई तीन मोमबत्तियों के रूप में जो एक ही, अविभाजित प्रकाश बिखेरती हैं; आग, आग की रोशनी और गर्मी के रूप में, जो एकता के भीतर त्रिमूर्ति का भी प्रतिनिधित्व करते हैं; एक ही मानव आत्मा के भीतर तीन अलग-अलग शक्तियों की ओर—बुद्धि, इच्छा और स्मृति, या चेतना, ज्ञान और इच्छा, और इसी तरह।[539] इन तुलनाओं में, निस्संदेह, भौतिक और आध्यात्मिक दुनिया से कई अन्य तुलनाएँ जोड़ी जा सकती हैं: इस प्रकार, भौतिक दुनिया में, हर वस्तु में अनिवार्य रूप से तीन आयाम होते हैं: चौड़ाई, लंबाई और गहराई; जिस स्थान में पिंड स्थित होते हैं, वह भी इन्हीं तीन आयामों को धारण करता है; समय, जिसके भीतर पिंड विकसित होते या बदलते हैं, उसी

---

[537] *जस्टिन,* *अपोलाजी*, 1, क्रमांक 59, 60; गैर-यहूदियों के लिए उपदेश, क्रमांक 3–6; *अलेक्जेंड्रिया के क्लेमेंट,* स्ट्रोमाटा, पुस्तक V, पृ. 710; *यूसेबियस,* सुसमाचार के लिए तैयारियाँ, पुस्तक II, अध्याय 20; *थियोडोरेट,* यूनानियों के विरुद्ध प्रवचन 2; *ऑगस्टीन,* मसीह के सिद्धांत पर, पुस्तक I, पृ. 28.

[538] *स्टैटलर,* Theolog. theoret. tractat. V, और *ज़िमिमर,* Theolog. Christ. p. III, § 58 में देखें। लेकिन इससे भी कहीं अधिक अजीब हैं ईश्वर में त्रिमूर्ति के तर्कसंगत प्रमाण जो स्कूली दार्शनिक रेमंड लुल ने प्रस्तुत किए थे, जिन्होंने उनकी निर्विवाद स्पष्टता और प्रभावशीलता का घमंड किया था। उदाहरण के लिए, उनमें से एक इस प्रकार है: ईश्वर में *वह तत्त्व* होना चाहिए *जो भलाई प्रदान करता है, वह तत्त्व जो भलाई ग्रहण करने में सक्षम है,* और *वह तत्त्व जो भलाई प्रदान करता है।* अब, जो भलाई प्रदान करता है वह पिता है, जो भलाई ग्रहण करने में सक्षम है वह पुत्र है, और जो भलाई प्रदान करता है वह पवित्र आत्मा है। अत; इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि ईश्वर में तीन व्यक्तियों को स्वीकार किया जाना चाहिए... (लिब. डी डेमोंस्ट्र. एक्वपिरेंट.)।

[539] *टर्तुल्लियन,* *एडवर्सस प्रैक्सिटिम*, अध्याय VIII; *अथेनासियस,* *एरियन के विरुद्ध भाषण IV*; *ग्रेगरी* ऑफ नाज़ियनज़स, *ईश्वरशास्त्र पर भाषण V*; *ग्रेगरी ऑफ निस्सा,* *एवनमस के विरुद्ध पुस्तक 1*; *ऑगस्टीन,* *विश्वास और धर्मविश्वास पर*, अध्याय IX, संख्या 17; *त्रित्व पर*, पुस्तक IX, संख्या 18; X, संख्या 19; XIV, n. 8, 13; XV, n. 28; *रोस्तोव के संत डेमेट्रियस/* द इन्क्वायरी, पृ. 292: 'आत्मा ईश्वर की प्रतिमा है, क्योंकि इसमें त्रैकिक शक्ति है फिर भी एक ही स्वभाव है। मानव आत्मा की शक्तियाँ ये हैं: स्मृति, बुद्धि और इच्छा। स्मृति में यह परमेश्वर पिता के समान है, समझ में परमेश्वर पुत्र के समान, और इच्छा में परमेश्वर पवित्र आत्मा के समान है। और जैसे पवित्र त्रिमूर्ति में, यद्यपि तीन व्यक्ति हैं, परन्तु तीन देवता नहीं, बल्कि एक ही परमेश्वर है: वैसे ही मानवीय आत्मा में भी, यद्यपि आत्मा की तीन शक्तियाँ हैं, परन्तु तीन आत्माएँ नहीं, बल्कि एक ही आत्मा है..."

प्रकार तीन अनविार्य भागों से मलिकर बना है: अतीत, वर्तमान और भवषि्य; आध्यात्मकि जगत में, प्रत्येक सत्य अनविार्य रूप से तीन अवस्थाओं को समाहति करता है: प्रतनिधित्वि, प्रतनिधित्वि की गई वस्तु, और प्रतनिधित्वि तथा वस्तु के बीच का मेल; प्रत्येक सद्गुण में भी तीन शामलि होते हैं: स्वतंत्र क्रयिा, नयिम, और नयिम के साथ स्वतंत्र क्रयिा का सामंजस्य, और इसी तरह। लेकनि साथ ही, जहाँ आवश्यक हो, दुनयिा में दविय त्रमिूर्त कि ऐसी छवयिों की ओर इशारा करने की अनुमत दिेते हुए, हमें यह दृढ़ता से ध्यान में रखना चाहिए कि चर्च के प्राचीन शक्षिकों द्वारा पहले ही अवलोकन कए जाने के अनुसार, वे सभी मूल से अनंत रूप से दूर हैं, वे केवल आंशकि रूप से इसकी समानता कर सकते हैं, लेकनि इसे समझाने से कोसों दूर हैं, और इसलए, उनका उपयोग अत्यंत सावधानी और वविेक के साथ कयिा जाना चाहिए।

"मैंने अपने जज्ञिासु मन से जो कुछ भी अपने भीतर चतिन कयिा है," कहते हैं *संत ग्रेगरी द थयिोलोजयिन, "*मैंने अपनी समझ को समृद्ध करने के लिए जो कुछ भी उपयोग कयिा है, जहाँ भी मैंने इसके (परम पवत्रि त्रमिूर्त कि रहस्य) लिए कोई समानता खोजी है, मुझे ऐसा कुछ भी सांसारकि नहीं मलिा जसि पर ईश्वर की प्रकृत लिागू की जा सके। भले ही कोई मामूली समानता मलि भी जाए, उससे कहीं बड़ी समानता मुझसे छूट जाती है, और मैं तुलना के लिए चुनी गई वस्तु के साथ यहीं नीचे रह जाता हूँ। दूसरों के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, मैंने एक झरना, एक कुआँ और एक धारा की कल्पना की, और तर्क दयिा: क्या वे क्रमशःपति, पुत्र और पवत्रि आत्मा से समानता नहीं रखते? क्योंकि एक झरना, एक धारा और एक नदी समय के मामले में अवभिाज्य हैं, और उनका सह-अस्तत्वि अखंड है, भले ही ऐसा लगता है कि वे तीन गुणों द्वारा प्रतषि्ठति हैं। लेकनि मुझे डर था, पहली बात, कि कहीं मैं ईश्वरत्व में कसिी प्रकार की ऐसी धारा को स्वीकार न कर लूँ जो कभी समाप्त न होती हो; और दूसरी बात, कि कहीं ऐसा समानता संख्यात्मक एकता को न ला दे। क्योंकि एक झरना, एक कुआं और एक धारा संख्या की दृष्ट से एक ही सत्ता बनाते हैं, जो केवल उनकी कल्पना के तरीके में भन्नि हैं। उन्होंने फरि से अपना ध्यान सूर्य, करिण और प्रकाश पर केंद्रति कयिा। लेकनि यहाँ भी एक चति है: पहली बात, कि एक सरल स्वभाव में सूर्य और सूर्य से नकिलने वाली वस्तु में देखी जाने वाली जटलिता से दृष्ट नि हट जाए; दूसरी बात, कि पति को सार प्रदान करते समय, अन्य व्यक्तयिों को उनकी स्वतंत्रता से वंचति न कयिा जाए, न ही उन्हें ईश्वर की केवल शक्तयिों तक सीमति कयिा जाए जो पति में तो मौजूद हैं लेकनि स्वतंत्र नहीं हैं। क्योंकि करिण और प्रकाश दोनों स्वयं सूर्य नहीं हैं, बल्कि सूर्य के कुछ उत्सर्जन और सूर्य के सारभूत गुण हैं। तीसरा, ताकि ईश्वर को एक ही समय में सत्ता और अ-सत्ता दोनों का श्रेय न दयिा जाए (और यह उदाहरण ऐसे नषि्कर्ष पर ले जा सकता है); और यह पहले कही गई बात से भी अधकि बेतुका है... और सामान्य रूप से, मुझे प्रस्तुत की गई बात की परीक्षा में ऐसा कुछ भी नहीं मलिता जो कसिी के वचिारों को चुनी गई उपमाओं पर टकिाए रखे, जब तक कि कोई, उचति वविेक के साथ, छवि से एक ही तत्व न ले और बाकी सब को एक ओर न कर दे। अंत में, मैंने यह नषि्कर्ष नकिाला कि सभी छवयिों और परछाइयों से मुंह मोड़ना ही सबसे अच्छा है, क्योंकि वे भ्रामक हैं और सत्य से बहुत दूर हैं, और इसके बजाय एक अधकि धार्मकि सोच का पालन करना, कुछ कथनों पर ध्यान केंद्रति करना, आत्मा को अपना मार्गदर्शक मानना, और जो भी अंतर्दृष्ट उससे प्राप्त होती है, उसे अंत तक संरक्षति रखना चाहिए, और इस वर्तमान युग से उसके साथ एक सच्चे साथी और संवाददाता के रूप में गुजरना, साथ ही, अपनी पूरी क्षमता से, दूसरों को पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा की उपासना करने के लिए मनाना—एक ही ईश्वरत्व और एक ही शक्त।"[540]

§ 30. सदिधांत का नैतकि अनुप्रयोग।

पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा की उपासना में, एक सार में तीन व्यक्त—

1) आइए हम याद रखें कि दविय त्रमिूर्त कि कुछ हद तक हम में से प्रत्येक में प्रतबिंबति होती है।

यह प्रतबिंबति होता है—

क) हमारे अस्तत्वि के तीन घटक भागों, आत्मा, प्राण और शरीर में: इससे हमें यह सीखना चाहिए कि यह सुनश्चिति कयिा जाए कि *आपकी आत्मा, प्राण और शरीर स्वस्थ... नर्दिोष रखे जाएँ*(1 थस्सि. 5:23), ताकि सृष्टकिर्ता

[540] प्रवचन 31, *द वर्क्स ऑफ़ द होली फ़ादर्स* III, पृ. 131–133; तुलना करें IV, पृ. 223। हलिारी ने इसी तरह तर्क दयिा: 'यदि ईश्वर की प्रकृत पर चर्चा करते समय, हम तुलना के उदाहरण प्रस्तुत करें, तो कोई भी उन्हें स्वयं में पूर्ण तर्क की पूर्णता वाला न समझे; क्योंकि सांसारकि चीज़ों और ईश्वर के बीच कोई तुलना नहीं है… अत; प्रत्येक तुलना को ईश्वर के लिए उपयुक्त होने के बजाय मनुष्य के लिए उपयोगी माना जाना चाहिए: क्योंकि यह उसे पूरा करने से अधकि समझ को दर्शाती है (De Trinit. Book 1, n. 19).

स्वयं द्वारा स्थापित एकता और सामंजस्य उनके बीच संरक्षित रह सके; ताकि शरीर आत्मा पर हावी न हो, और न ही आत्मा आत्मा की उच्च आकांक्षाओं पर, बल्कि ये सभी अपने उचित क्रम में और एक-दूसरे के साथ सही संबंध में बने रहें।

यह परिलक्षित होता है —

ख) हमारी आध्यात्मिक प्रकृति की तीन प्रमुख शक्तियों में: मन, इच्छाशक्ति और भावनाओं में; आइए हम यहाँ भी प्राकृतिक एकता और सामंजस्य को बनाए रखना सीखें, यानी, इन शक्तियों में से किसी को भी दूसरे के खर्च पर दबाया या उपेक्षित नहीं किया जाना चाहिए; इसके विपरीत, सभी को अपने-अपने उद्देश्यों की ओर सामंजस्यपूर्ण रूप से प्रयास करना चाहिए: बुद्धि परम सत्य की ओर, इच्छाशक्ति परम शुभ की ओर, और भावनाएँ परम आनंद की ओर; और यह कि सभी एक-दूसरे के उचित संबंध में हों—इच्छाशक्ति बुद्धि के अधीन, और भावनाएँ बुद्धि और इच्छाशक्ति दोनों, या नैतिक कानून के अधीन।

२) हमें याद रखें कि, यद्यपि हम मौलिक रूप से एक नहीं हैं—जैसे स्वर्ग में गवाही देने वाले तीनों एक हैं—फिर भी हम एक ही मानवीय समुदाय का निर्माण करते हैं; और इसलिए, एक-दूसरे से अलग होते हुए भी, हम अपने बीच सबसे करीबी नैतिक एकता प्राप्त कर सकते हैं, और मानो एक ही मन, एक ही इच्छा और एक ही भावना के स्वामी बन सकते हैं। इसका साधन हमें स्वयं त्रिमूर्ति ईश्वर द्वारा ईसाई विश्वास की एकता में, ईसाई प्रेम की एकता में, और ईसाई आशा की एकता में दिखाया गया है (इफिसियों 4:3–6; यूहन्ना 13:34; 17:21)।

3) अंत में, आइए हम यह भी याद रखें कि, यद्यपि हम परमेश्वर की सृष्टि हैं और वास्तव में सभी सजीव प्राणियों में सबसे कमजोर हैं, मसीही बनकर हम दिव्य स्वभाव के सहभागी बन गए हैं (2 पतरस 1:4); कि पवित्र आत्मा की कृपा से, जिसने हमें नया जन्म दिया है, हम सभी स्वर्गीय पिता की संतान और उसके एकलौते पुत्र के भाई हैं (यूहन्ना 1:12–13; लूका 8:21)। और इसलिए हम स्वयं त्रिमूर्ति परमेश्वर के साथ सबसे घनिष्ठ नैतिक एकता में प्रवेश कर सकते हैं, बशर्ते कि, उन पर विश्वास करते हुए और आशा में उनकी ओर प्रयासरत होकर, हम उनसे अपने *पूरे हृदय*, अपनी *पूरी आत्मा* और अपने *पूरे मन से* प्रेम करें (मत्ती 22:37)। तब, निस्संदेह, उद्धारकर्ता का यह वचन हम में पूरा होगा : *'जो मुझ से प्रेम रखता है, वह मेरी आज्ञा का पालन करेगा; और मेरा पिता उसे प्रेम करेगा, और हम उसके पास आकर उसके साथ अपना निवास करेंगे* (यूहन्ना 14:23)—और हम प्रेरित के वचनों का अर्थ समझेंगे: *'क्या तुम नहीं जानते कि तुम परमेश्वर का मंदिर हो, और परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है?'* (1 कुरिन्थियों 3:16)।

2. दैवीय व्यक्तियों की समानता और एकसारता पर।

§ 31. पिछले अनुभाग से संबंध; इस धर्मशास्त्र का संक्षिप्त इतिहास और चर्च की इस पर शिक्षा का अर्थ।

दिव्य व्यक्तियों की समानता और एकसारता के सिद्धांत का निष्कर्ष स्वाभाविक रूप से उस सिद्धांत से निकलता है जिसे हमने अभी-अभी परखा है। यदि ईश्वर में वास्तव में तीन अलग और स्वतंत्र व्यक्ति हैं—पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा—और यदि *ये तीनों* स्वभाव में *एक* और पूरी तरह से अविभाज्य *हैं*, तो इसका यह परिणाम निकलता है कि वे सभी एक-दूसरे के पूरी तरह से समान हैं, सभी एकसार हैं; इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि पिता ईश्वर हैं, पुत्र ईश्वर हैं, और पवित्र आत्मा ईश्वर हैं, लेकिन इस तरह से कि तीन ईश्वर नहीं, बल्कि एक ही ईश्वर हैं। इसलिए यह काफी स्वाभाविक है कि, जहाँ मसीह की कलीसिया ने परमेश्वर में व्यक्तियों की त्रित्व की शिक्षा को सार की एकता के साथ, लगातार और अपरिवर्तित रूप से बनाए रखा है, वहीं उसने दैवीय व्यक्तियों की समानता और एकसारता की शिक्षा को भी समान रूप से और अपरिवर्तित रूप से बनाए रखा है।

फिर भी, कलीसिया के व्यक्तिगत सदस्यों में भी, अक्सर ऐसे लोग थे जिन्होंने इस सिद्धांत को भी विकृत किया, यद्यपि विभिन्न तरीकों से। कुछ ने तीनों व्यक्तियों—पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा—की समानता और एकसारता को अस्वीकार कर दिया; अन्य ने विशेष रूप से पुत्र की पिता के साथ समानता और एकसारता पर आपत्ति जताई; और कुछ ने पवित्र आत्मा की पिता और पुत्र के साथ समानता और एकसारता पर आपत्ति जताई।

पहले वालों ने भी अपने विचार विभिन्न तरीकों से व्यक्त किए। कुछ ने पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा को एक दैवीय स्वभाव का माना, लेकिन एक ही समान स्वभाव नहीं, बल्कि अलग-अलग स्वभावों का माना, और दावा किया कि

उनमें पिता सर्वोच्च हैं, पुत्र पिता से नीचे हैं, और पवित्र आत्मा पुत्र से नीचे हैं।[541] अन्य लोगों ने केवल पिता और पुत्र को दिव्य स्वभाव का माना, लेकिन फिर भी उन्हें अलग माना, पुत्र को पिता से नीच समझा; जबकि उन्होंने पवित्र आत्मा को सृजित माना।[542] कुछ अन्य, जबकि उन्होंने तीनों व्यक्तियों को एक ही दिव्य सार (पदार्थ) का धारक माना, ऐसा इस प्रकार किया कि उन्होंने इस सार का एक भाग विशेष रूप से पिता को, एक भाग विशेष रूप से पुत्र को, और एक भाग विशेष रूप से पवित्र आत्मा को आवंटित किया, और परिणामस्वरूप उन्हें एक-दूसरे से पूरी तरह पृथक कर दिया।[543] इन विधर्मी विचारों का खंडन करते हुए, जो, वैसे भी, कभी अधिक लोकप्रिय नहीं हुए, हमें संत ग्रेगरी द थियोलोजियन, बेसिल द ग्रेट, हिलारी और ऑगस्टीन के कथन मिलते हैं।[544]

पवित्र त्रिमूर्ति के द्वितीय व्यक्ति की दिव्यता—अर्थात् पिता के साथ पुत्र की समानता और एकसारता—को अस्वीकार करने वाले विधर्मी कहीं अधिक संख्या में थे और समय-समय पर उन्होंने चर्च के भीतर सबसे शक्तिशाली आंदोलनों को जन्म दिया। ऐसे थे:

a) प्रेरितिक युग के आरंभिक काल में ही — सेरिन्थस और एबियॉन: प्राचीनों की गवाही के अनुसार, पवित्र प्रेरित यूहन्ना ने अपनी सुसमाचार लिखते समय इन्हीं लोगों को ध्यान में रखा था, जो पुत्र की दिव्यता को इतनी स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है;[545]

ख) दूसरी शताब्दी में — कार्पोक्रैट्स, थियोडोतस और आर्टमिोन अपने अनुयायियों के साथ, जो अपनी झूठी शिक्षाओं को परमेश्वर के वचन पर आधारित करना चाहते थे, उन्होंने यूहन्ना के सुसमाचार को अस्वीकार कर दिया, अन्य पवित्र पुस्तकों को भ्रष्ट किया और मनमाने व्याख्याओं के माध्यम से धर्मग्रंथों के अर्थ को तोड़-मरोड़ दिया,[546] लेकिन इरेनियस में उन्हें उत्साही विरोधी मिले, टर्तुल्लियन और चर्च के अन्य शिक्षकों;[547] c) तीसरी शताब्दी में — samosata के पॉल , जिन्होंने वचन या परमेश्वर के पुत्र की व्यक्तिमित्व और यीशु मसीह की दिव्यता को अस्वीकार कर दिया,[548] और जिन्हें अंतीयोक की दो परिषदों (264 और 270 में) द्वारा निंदा किया गया।[549] लेकिन इस प्रकार के सभी विधर्मियों में सबसे खतरनाक था —

(d) चौथी शताब्दी में — अलेक्जेंड्रिया का एक पुरोहित एरियस। उसने यह सिखाया कि वचन, या परमेश्वर का पुत्र, समय में आरंभिक था, यद्यपि सभी से पहले; कि उसे शून्य से सृजित किया गया था, हालांकि बाद में, उसके द्वारा, परमेश्वर ने सभी चीज़ों की रचना की; कि उसे केवल सृजित आत्माओं में सबसे परिपूर्ण होने के नाते परमेश्वर का पुत्र कहा जाता है, लेकिन उसमें दिव्य स्वभाव नहीं है, और इसलिए वह पिता से पूरी तरह से अलग है।[550] इस धर्मद्रोही झूठे सिद्धांत के जवाब में, जिसने पूरी ईसाई दुनिया को उकसाया था और कई लोगों को गुमराह कर दिया था, पहली सार्वभौमिक परिषद (325 में) बुलाई गई, जिसमें चर्च के 318 प्रमुखों ने सर्वसम्मति से ऑर्थोडॉक्सी (सही आस्था) की प्राचीन शिक्षा की पुष्टि की और विधर्मियों के खिलाफ निम्नलिखित निंदा की घोषणा की: "हम विश्वास करते हैं… एक प्रभु यीशु मसीह में, जो परमेश्वर का पुत्र है, एकमात्र जन्मा हुआ, पिता से जन्मा हुआ, अर्थात् पिता के सार से, परमेश्वर से परमेश्वर, प्रकाश से प्रकाश, सच्चा परमेश्वर से सच्चा परमेश्वर, जन्मा हुआ, न कि बना हुआ, पिता के समसार (ὁμοούσιον) … परन्तु जो परमेश्वर के पुत्र के विषय में कहते हैं कि एक समय था जब वह अस्तित्व में नहीं था, या कि

---

[541] ऐसे थे: फावस्टस, प्रमुख मनिखियों में से एक (*अगस्टनि.*, लिबि. कॉन्ट्रा एपस्टि. फंडामेंटि, चैप. 2 के अनुसार), डोनाटस, डोनाटस्टि संप्रदाय के संस्थापक (उसी के अनुसार, लिबि. डी हेरेस., चैप. 69), और अपोलिनारिस (*ग्रेगोर. नाज़ियेंस.*, एपस्टि. 1 एड क्लैडोनियम के अनुसार)।

[542] संत बेसिल द ग्रेट के अनुसार, उनके समय में इस विचार को मानने वाले बहुत से लोग थे (एपस्टि. 70 एड एपस्टि. गैलियाई एट इटालियाई)।

[543] उनका उल्लेख हिलारी (De Trinitate, पुस्तक 6) और ऑगस्टीन (De Haeresis, अध्याय 74) द्वारा गुमनाम रूप से किया गया है।

[544] उपरोक्त संदर्भ में। विशेष रूप से, हिलारी — *लिब्री कॉन्ट्रा ऑक्सेंटियम* में।

[545] *इरनेयस,* विरोधी मतों के विरुद्ध 1, अध्याय 26; III, अध्याय II, संख्या 1; V, अध्याय 1, संख्या 3; *जेरोम,* प्रसिद्ध पुरुषों पर, अध्याय 9; *यूसेबियस,* चर्च का इतिहास III, 27 और 38; *एपिफेनियस,* मतभेदों पर 28।

[546] *इरनेयस,* *हरसियों के विरुद्ध*, 1, 25; *हिप्पोलिटस,* *नोएटस के विरुद्ध*, अध्याय 3; *एपिफानियस,* *हरसियों के विरुद्ध*, 54 और 55; *यूसेबियस,* *चर्च का इतिहास*, IV, 7; V, 28; *थियोडोरेट,* *चर्च का इतिहास*, II, 4; *ऑगस्टीन,* *हरसियों के विरुद्ध*, 33.

[547] उपरोक्त और *टर्टुलियन,* *डी प्रेस्क्रिप्शियोने हेरेसियम*, अध्याय 54।

[548] *एपिफानियस,* *हेरेसिया* 65; *फिलास्ट्रस,* *हेरेसिया* 64; *यूसेबियस,* *चर्च का इतिहास* V, 28; VII, 27; *थियोडोरेट,* *चर्च का इतिहास* 1, 4; II, 8.

[549] *यूसेबियस,* *एच. ई.* VII, 28 और बाद में; *जेरोम,* *डे विरिबिस इलस्ट्रेबस*, अध्याय 71; *अथेनासियस,* *डे सिनाइडसि*।

[550] *एपिफेनियस,* *हेरेसिया* 69, n. 12; *सोक्रेटिस,* *चर्च का इतिहास* 1, 5, 6; *सोजोमेन,* *चर्च का इतिहास* 1, 15; *थियोडोरेट,* *चर्च का इतिहास* 1, 4; *हिलरी,* *त्रिमूर्ति पर* IV, 11.

उसके जन्म से पहले वह अस्तित्व में नहीं था, या कि वह अस्तित्वहीन वस्तुओं से उत्पन्न हुआ, या कि वह किसी अन्य हाइपोस्टेसिस या सार से उत्पन्न हुआ, या कि परमेश्वर का पुत्र परिवर्तनशील या परिवर्तनीय है—ऐसे लोग कैथोलिक और प्रेरितिक चर्च द्वारा शापित हैं।"[551]

शीघ्र ही, एरियनवाद के भीतर से तीन संप्रदाय उभरे: स्वयं एरियन, जिन्होंने यह दावा किया कि पुत्र, एक सृजित प्राणी के रूप में, किसी भी तरह से पिता के समान नहीं था (κατά πάντα ανόμοιος τώ Ιησού), और इसलिए उन्हें एनोमियन भी कहा जाता था; और, उनके प्रमुख नेताओं के नाम पर, एटियस और यूनोमियस, एटियन्स और यूनोमियन्स; अर्ध-एरियन्स (जिनमें सबसे प्रसिद्ध एन्क्रा के बेसिल थे, केसरिया के यूसेबियस और निकोमेडिया के यूसेबियस), जिन्होंने यह सिखाया कि पुत्र कोई प्राणी नहीं है बल्कि परमेश्वर का सच्चा पुत्र है, जो सभी युगों से पहले पिता से उत्पन्न हुआ है, फिर भी उन्होंने उसे एकसार (όμοούσιον) नहीं बल्कि एक ही सार का माना (όμοιούσιον) पिता के समान है; अंत में, एक तीसरा समूह, जो एरियनों और अर्ध-एरियनों के बीच एक मध्यम स्थिति में था, और अपने नेता अकाकियस के नाम पर अकाकियनों के रूप में जाना जाता था: उन्होंने यह सिखाया कि पुत्र पिता के समान (όμοιος) है, लेकिन सार और दिव्यता में उनके समान नहीं, बल्कि केवल मूल को प्रतिबिंबित करने वाले एक स्वरूप के रूप में।[552] इन सभी विधर्मी सिद्धांतों को, उनके सूक्ष्म से सूक्ष्म विवरणों तक, कई स्थानीय परिषदों में खंडित किया गया, और विशेष रूप से चर्च के सबसे प्रमुख शिक्षकों: अथेनासियस और बेसिल द ग्रेट, ग्रेगरी द थियोलॉजिस्ट, जॉन क्रिसोस्टोम, ग्रेगरी ऑफ़ निस्सा, एपिफेनियस, हिलरी, के लेखन में। एम्ब्रोस, अलेक्जेंड्रिया के सिरिल और अन्य (553).[553] उस समय से, एरियनवाद धीरे-धीरे क्षीण होने लगा, लेकिन पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ। मध्य युग में, कई काफिर या अल्बानियाई लोग एरियस की शिक्षाओं का पालन करते थे;[554] 16वीं शताब्दी से आगे — एनैबैप्टिस्ट और सोसिनियन की विशाल बहुमत, जो मसीह को केवल एक मनुष्य मानते हैं;[555] हाल के समय में, इसी विधर्म का प्रचार प्राकृतिकवादियों और तर्कवादियों द्वारा किया गया है।

पवित्र आत्मा की दिव्यता को अस्वीकार करने वाले विधर्मियों में—और परिणामस्वरूप पिता और पुत्र के साथ उसकी समानता और एकसारता को नकारने वालों में—निम्नलिखित प्रसिद्ध हैं: वैलेन्टिनस (दूसरी शताब्दी), जिसने यह सिखाया कि पवित्र आत्मा स्वभावतः स्वर्गदूतों से भिन्न नहीं है;[556] एरियनों ने पवित्र आत्मा को ईश्वर की एक

---

[551] देखो "कैनन की पुस्तक में..." प्रथम सार्वभौमिक परिषद के 318 पवित्र पितरों का धर्मसूत्र। एरियनों को इस धर्मसूत्र में सबसे अधिक नापसंद शब्द *ομοούσιος—'एक ही सार* का'—था, जिसने उनकी तुरंत को इतनी स्पष्ट रूप से उजागर कर दिया। 'यह शब्द,' उन्होंने कहा, 'पवित्र शास्त्र में नहीं मिलता।' 'सही,' धर्मरक्षकों ने उत्तर दिया, 'लेकिन यह विचार शास्त्र में मौजूद है; इस शब्द द्वारा एक स्पष्ट शिक्षा व्यक्त की गई है; और यदि हमें इस पर विश्वास करना है, तो हम इसे इसी प्रकार क्यों न कहें?' (*Phaebad.* Orthod. fid. cap. III. V; *Athanas.* Decret. Synod. Nicen. n. 28; *Augustin.* epist. 238). 'यह शब्द पहले के शिक्षकों द्वारा उपयोग नहीं किया गया था,' कुछ अन्य जोड़ेंगे। यह अनुचित है: इसका उपयोग, यद्यपि शायद ही कभी, उदाहरण के लिए, संत ग्रेगरी द वंडरवर्कर (De fide, अध्याय II) द्वारा, थियोग्नोस्टस (apud *Athanas.* epist. ad Episc. African.) द्वारा, अलेक्जेंड्रिया के संत डायोनिसियस (Epist. ad Dionys. रोमन.) और अन्य लोगों द्वारा, जैसा कि न केवल संत अथेनासियस द ग्रेट (Epist. ad Ep. African.) द्वारा, बल्कि सेसरेआ के यूसेबियस द्वारा भी प्रमाणित है, जिन्होंने स्वयं शुरू में उपरोक्त शब्द पर आपत्ति जताई थी, फिर भी बाद में स्वीकार किया कि उन्होंने इसे प्राचीन, प्रसिद्ध शिक्षकों की रचनाओं में देखा था (Epist. de fide, Nicaeae exposita, apud *Theodoret.* H. E. I, II, al. 12; *Socrat.* H. E. 1, 8), और यहाँ तक कि एरियन फिलोस्टोर्जियस (H. E. 1, 7) द्वारा भी स्वीकार किया गया। संत हिलरी बताते हैं कि निकिया परिषद से पहले 'होमोउसियोस' शब्द का उपयोग दुर्लभ क्यों किया जाता था: क्योंकि, जब तक चर्च द्वारा स्वयं इस शब्द के अर्थ को परिभाषित नहीं किया गया था, तब तक इसका आसानी से गलत अर्थ लगाया जा सकता था, उदाहरण के लिए, जिस तरह से इसका उपयोग मार्सियोनाइट्स और वैलेन्टिनियनिस्ट्स द्वारा किया गया था, जो ईश्वर में उत्सर्जनवाद (emanationism) को मानते थे, या सेबेलीयनों द्वारा, जिन्होंने दैवीय हाइपोस्टेसीस (Divine Hypostases) को मिला दिया था (*हिलार.* डी ट्रिनिटि. IV, 4)।

[552] *एपिफेनियस,* हेरेसेस 73 और 74; *रुफिनस,* चर्च का इतिहास I, 25; *सोक्रेटिस,* चर्च का इतिहास II, 30, 35, 40; *सोज़ोमेन,* चर्च का इतिहास II, 33; III, 15; *थियोडोरेट,* चर्च का इतिहास II, 25.

[553] इन अनेक कृतियों को यहाँ सूचीबद्ध करना अनावश्यक होगा: इन्हें केवल उनके शीर्षकों से ही किसी विशेष पिता की कृतियों की सूची में आसानी से पाया जा सकता है।

[554] *मोनेटा* एडव. कैथार. एट वाल्डेन. पुस्तक III, अध्याय 3, भाग I, § 1.

[555] *बॉक,* *Histor. Antitriuit.* खंड I, भाग I, पृ. 369; *फॉस्ट,* *Socin· Disput. de Cbristi nat.* in **B*. FF. Polon.* खंड I, भाग 1, पृ. 781; **Cathech. Racov*.*, प्रश्न 53, 71, 73.

[556] देखें *अथेनासियस,* ओरेशन 2, और *ओरिजिन* के सिद्धांतों पर स्वीकारोक्ति, पुस्तक II, अध्याय 7।

सृष्टि माना;[557] और यहां तक कि अर्ध-एरियनों ने भी यही विचार रखे।[558] हालाँकि, कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क मेसेडोनियस को आत्मा-अस्वीकारियों का नेता माना जाता है। उन्होंने खुलेआम और विशेष साहस के साथ पवित्र आत्मा की दिव्यता के सिद्धांत के विरुद्ध विद्रोह किया, उसे पुत्र की सृष्टि और पिता व पुत्र के अधीन बताया, और शीघ्र ही एरियनों और अर्ध-एरियनों में अनेक अनुयायी बना लिए।[559] हालाँकि, उसी समय इस विधर्म के कट्टर विरोधी भी थे। चर्च के ऑर्थोडॉक्स शिक्षकों—बेसिल द ग्रेट, ग्रेगरी द थियोलोजियन, अलेक्ज़ेंड्रिया के एथनासियस, निस्सा के ग्रेगरी, एम्फिलोचियस, एम्ब्रोस, तारसस के डायोडोरस और अन्य—ने इसे खंडित करने के लिए विशिष्ट ग्रंथ लिखे।[560] इसे परिषदों द्वारा और भी अधिक गंभीरता से निंदा किया गया—अलेक्ज़ेंड्रिया की परिषद (362), इल्यरिकम की परिषद (374), इकोनियम की परिषद (377) और अंत में कॉन्स्टेंटिनोपल की दूसरी सार्वभौमिक परिषद (381)। उक्त परिषद के धर्मपिताओं ने ऑर्थोडॉक्सी की रक्षा में पवित्र आत्मा से संबंधित धर्मसूची की इस धारा की व्याख्या निम्नलिखित शब्दों में की: 'हम विश्वास करते हैं… पवित्र आत्मा में, जो प्रभु और जीवनदाता है, जो पिता से उत्पन्न होता है, जिसे पिता और पुत्र के साथ पूजित और महिमामंडित किया जाता है, जिसके बारे में भविष्यवक्ताओं ने कहा…'

इस प्रकार, विभिन्न विधर्मों के सामने, दैवीय व्यक्तियों की समानता और एकसारता के धर्मसिद्धान्त का बचाव और व्याख्या करते हुए, पवित्र चर्च ने लगातार वही दृष्टिकोण अपनाया है, जिसे वह आज भी बनाए हुए है, अर्थात् 'ईश्वर पिता, ईश्वर पुत्र, और ईश्वर पवित्र आत्मा—फिर भी तीन ईश्वर नहीं, बल्कि एक ईश्वर।'[561] यह उनमें से प्रत्येक—पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा—को उनके अपने अधिकार में ईश्वर कहती है, क्योंकि उनमें से प्रत्येक एक विशिष्ट व्यक्ति है जो सभी दिव्य पूर्णताओं का धारक है। लेकिन यह कहता है कि ये सभी—पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा—तीन देव नहीं, बल्कि एक ही ईश्वर हैं: क्योंकि ये दिव्य पूर्णताएँ अविभाज्य रूप से धारण करते हैं; क्योंकि इनका एक ही सार, एक ही दिव्यता, एक ही इच्छा, एक ही शक्ति, अधिकार, महिमा और गौरव है; क्योंकि तीन व्यक्तियों के रूप में उनका भेद दिव्य गुणों के अंतर पर आधारित नहीं है—जो तीनों में अविभाज्य हैं—बल्कि केवल व्यक्तिगत गुणों के अंतर पर आधारित है, जिसके द्वारा पिता ठीक पिता हैं, पुत्र पुत्र हैं, और आत्मा आत्मा हैं, जबकि जो दिव्य स्वभाव को ही बनाता है वह उन सभी में एक और समान है। इसे समझाते हुए, संत ग्रेगरी द थियोलोजियन कहते हैं: "ईश्वरत्व तीन अनंत व्यक्तियों की अनंत सह-सारिता है, जिसमें प्रत्येक, जब स्वयं में मनन किया जाता है, तो पिता और पुत्र, पुत्र और पवित्र आत्मा के रूप में ईश्वर है, और साथ ही प्रत्येक में अपनी व्यक्तिगत विशेषता को बनाए रखता है, और तीनों, जब एक साथ कल्पना किए जाते हैं, तो वे भी ईश्वर हैं; पहला सह-सारभूतता के कारण, दूसरा उत्पत्ति की एकता के कारण।" और कहीं और: "हमारा एक ईश्वर है, क्योंकि ईश्वरत्व एक है, और जो ईश्वर से उत्पन्न हुए हैं वे एक में ही समाहित हैं, भले ही हम तीन में विश्वास करते हैं; क्योंकि जैसे एक दूसरे से अधिक ईश्वर नहीं है, वैसे ही दूसरा उससे कम ईश्वर नहीं है; और एक दूसरे से पहले नहीं है, न ही दूसरा बाद में—वे इच्छा में अलग नहीं हैं, न ही शक्ति में विभाजित हैं; और उनमें से कोई भी ऐसी बात लागू नहीं होती जो केवल विभाज्य चीजों में होती है। इसके विपरीत, संक्षेप में कहें तो, दिव्यता विभाजित में अविभाज्य है, जैसे एक दूसरे के भीतर समाए हुए तीन सूर्य, प्रकाश का एक ही विस्तार। इसलिए, जब हम दिव्यता, प्रथम कारण और एकल उत्पत्ति को ध्यान में रखते हैं; तो जो हम कल्पना करते हैं वह एक है। लेकिन जब हम उन पर विचार करते हैं जिनमें दिव्यता निवास करती है—पहले कारण से उत्पन्न होने वाले प्राणी, और उनसे एक साथ और समान

---

[557] *एपिफेनियस,* *हेरेसेस*, 69, 76; *जेरोम,* *पमाकियस को पत्र*, 38.

[558] *एपिफेनियस,* *हेरेसिया* 73.

[559] *सुकरात,* चर्च का इतिहास II, 45; *सोजोमेन* IV, 27; *एपिफेनियस,* संप्रदायों पर 74; *ऑगस्टीन,* संप्रदायों पर, अध्याय 52.

[560] पवित्र आत्मा पर *बेसिल, नाज़ियांज़स के ग्रेगरी,* भाषण XXXI; *अथेनासियस,* सेरापियन को पत्र; *ग्रेगरी ऑफ़ निस्सा,* *ऑन द ट्रिनिटी एंड द होली स्पिरिट*; *एम्फिलोचियस,* *एपिस्टल टू द सिलिऊ अर्जेंस्ट द न्यूमैटिस्ट्स* कोटेलर, *मोन्यूमेंटल* II, 99 और बाद में; *एम्ब्रोज़,* *ऑन द होली स्पिरिट*; *डायोडोरस,* इन फोटिनस, *बिब्लियोथेका*, कोड. CII.

[561] या, जैसा कि संस्कार संबंधी पुस्तकों में है: 'मैं तीन की स्तुति करता हूँ, खेरूबियों के भजन में, पवित्र ईश्वरत्व: प्रकाश और प्रकाश, जीवन और जीवन, जो उत्पन्न करता है वह ईश्वर, जो उत्पन्न हुआ है वह ईश्वर, जो पिता से उत्पन्न होता है वह ईश्वर, जीवित आत्मा' (लेन्टन ट्रायोडियन, फोलियो 228, पृष्ठ का पिछला भाग)। "क्योंकि हम तीन देवताओं की नहीं, बल्कि एक ईश्वरत्व की महिमा करते हैं; फिर भी हम वास्तव में तीन हाइपोस्टेसीज़ (अस्तित्वों) का सम्मान करते हैं: पिता, जो अजन्मे हैं; पुत्र, जो पिता से उत्पन्न हुए हैं; और पवित्र आत्मा, जो पिता से निकलते हैं—एक ईश्वर में तीन, यद्यपि प्रत्येक अलग है, जैसे ईश्वर है, और उसकी सही ढंग से महिमा की जाती है" (लेन्टन ट्रायोडियन, फोलियो 224 पृष्ठ पर। मॉस्को, 1835)।

रूप से उत्पन्न होने वाले प्राणी—तो तीन हैं जिनकी पूजा की जाती है।" तीसरे अंश में भी: " , दिव्यता में एकता है, लेकिन जिन पर दिव्यता का अधिकार है, वे संख्या में तीन हैं। प्रत्येक एक अकेला ईश्वर है, यदि कोई उनमें से किसी एक का उल्लेख करता है। और फिर, एक ही आरंभ-रहित ईश्वर है, जिससे ईश्वरत्व की समृद्धि प्रवाहित होती है, जब वचन त्रिगुणों की बात करता है... जिन्हें 'तीन ईश्वर' कहा जा सकता है, वे वे हैं जो समय, या विचार, या शक्ति, या इच्छा द्वारा एक-दूसरे से विभाजित थे, ताकि प्रत्येक कभी भी दूसरों के समान न हो, बल्कि हमेशा उनके साथ संघर्ष में रहे। लेकिन मेरी त्रिमूर्ति में एक ही शक्ति, एक ही विचार, एक ही महिमा, एक ही अधिकार है; और इसलिए एकता बनी रहती है, जिसमें ईश्वरत्व की एकल सामंजस्य में महान महिमा निहित है, अखंडित रहती है।"[562]

§ 32. पिता की दिव्यता।

पवित्र त्रिमूर्ति के प्रथम व्यक्ति की दिव्यता पर किसी ने भी संदेह नहीं किया है, यहाँ तक कि उन विधर्मी लोगों में भी नहीं जिन्होंने अन्य दो व्यक्तियों की दिव्यता को अस्वीकार कर दिया था। और यह काफी स्वाभाविक है:

(क) क्योंकि कोई व्यक्ति किसी को ईश्वर के रूप में तब तक नहीं पहचान सकता जब तक कि वह पहले से ही सुदृढ़ तर्क को पूरी तरह से त्याग न दे (भजन संहिता 13:1), और साथ ही —

ख) क्योंकि पवित्र शास्त्र में पिता की दिव्यता इतनी स्पष्ट रूप से प्रस्तुत की गई है कि किसी भी भ्रम या संकोच का सबसे छोटा सा भी कारण नहीं बचता।

मसीह उद्धारकर्ता स्वयं अपने पिता को कहते हैं:

क) ईश्वर: *'क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, बल्कि अनन्त जीवन पाए* (यूहन्ना 3:16);

ख) एकमात्र सच्चा परमेश्वर: *'अब यह अनंत जीवन है, कि वे तुझे, एकमात्र सच्चे परमेश्वर को, और उस यीशु मसीह को जिसे तूने भेजा है, जानें* (यूहन्ना 17:3);

ग) स्वर्ग और पृथ्वी का प्रभु: *'मैं तुझे स्तुति करता हूँ हे पिता, हे स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु, कि तूने ये बातें बुद्धिमानों और ज्ञानियों से छिपाकर बालकों पर प्रगट की हैं* (मत्ती 11:25)।

पवित्र प्रेरितों ने भी अक्सर पिता को के रूप में संदर्भित किया है

क) ईश्वर, लगभग अपने सभी पत्रों की शुरुआत इस वाक्यांश से करते हुए: *'तुम्हें अनुग्रह और शान्ति हमारे पिता ईश्वर की ओर से* मिले' (रोमियों 1:7; 1 कुरिन्थियों 1:3; 2 कुरिन्थियों 1:2; गलातियों 1:3; एफि. 1:2; फिलि. 1:2; कुलु. 1:3, आदि), और उन्हें एकमत होकर और एक स्वर से हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता की महिमा करने के लिए प्रोत्साहित करते हुए (रोमियों 15:6; कुलु. 1:12; 3:17);

ख) एक ईश्वर: *फिर भी हमारे लिए केवल एक ही ईश्वर है, पिता, जिससे सब कुछ है* (1 कुरिन्थियों 8:6; इफिसियों 4:6);

ग) धन्य परमेश्वर: *धन्य हो हमारे प्रभु यीशु मसीह के पिता, अनुग्रह के पिता और सब प्रकार के सांत्वना के परमेश्वर* (2 कुरिन्थियों 1:3; 1 पतरस 1:3; इफिसियों 1:3, आदि)।

[563]इस सत्य के और अधिक प्रमाणों का पवित्र परंपरा से उल्लेख करना पूरी तरह से अनावश्यक होगा। आइए हम केवल यह ध्यान दें कि, इस सत्य को स्वीकार करते हुए, कलीसिया के प्राचीन शिक्षकों ने परमेश्वर पिता को विभिन्न अभिव्यक्तिपूर्ण उपाधियाँ दीं, जैसे: स्वयं-ईश्वर, सर्व-ईश्वर, सर्वोपरि-ईश्वर,[564] , सर्व-ईश्वर, सर्व-पिता, सर्व-स्रष्टा, सर्व-शक्तिमान, सर्व-राजा, और इसी तरह।[565]

---

[562] "पवित्र पिताओं के कार्य" रूसी अनुवाद में। खंड III, पृ. 315 और 115; खंड VI, पृ. 224.

[563] सभी का ईश्वर (*क्लेम.* स्ट्रोम. II, 9; *यूसेब.* एच. ई. X, 4; *अथेनासियस,* कॉन्ट्रा एरियन. ओरेट. II, n. 75); सभी का पिता (*जस्टिन,* एपोलॉजी 1, क्रमांक 45, 61, 63; *आइरेनियस,* एडवर्सस हेरेसिस IV, 20, क्रमांक 1); सभी का स्रष्टा (*जस्टिन,* डायलॉग विद ट्रायफो, क्रमांक XXXV, LVI).

[564] Αὐτόθεος (*ओरिजिन,* इन जोआन., खंड II, संख्या 2, 3); κάθολος Θεός (*यूसेबियस,* ओरेट. पैनग्यिर. इन एच. ई. एक्स, 14); ὁ επί πάντων Θεός (कॉन्स्टिट. एपोस्टोल., III, 17; *ओरिजिन,* कॉन्ट्रा सेल्स., VI, 47; *बेसिल,* पत्र 38, खंड 4)।

[565] Παντοκράτωρ (*पॉलीकार्प,* एपिस्टल टू द स्मर्नाईन्स, n. 14; आइरेनियस, अगेंस्ट हेरेसीज़, 1, 10; III; 6, n. 2); παμβασιλεύς (क्लेमेंट, स्ट्रोमाटा, VII, 5; *यूसेबियस,* डेमोंस्ट्रेशन ऑफ द गॉस्पेल, 1, 5).

§33. पवित्र शास्त्र से पुत्र की दिव्यता और पिता के साथ उसकी एकसारता का प्रमाण।

पवित्र त्रिमूर्ति के दूसरे व्यक्ति, परमेश्वर के पुत्र की दिव्यता, पवित्र शास्त्र में उतनी ही स्पष्टता से प्रस्तुत की गई है, जितनी कि उनकी पिता के साथ एकसारता। यहाँ प्रासंगिक पवित्र ग्रंथ दो श्रेणियों में आते हैं: कुछ सीधे-सीधे परमेश्वर के पुत्र की दिव्यता के बारे में बताते हैं; अन्य यीशु मसीह की दिव्यता की गवाही देते हैं। लेकिन चूँकि यीशु मसीह स्वयं परमेश्वर के पुत्र हैं, जिन्होंने मानव स्वभाव को वास्तविक रूप से धारण किया, इसलिए दोनों के बीच अंतर करने की कोई आवश्यकता नहीं है। इन ग्रंथों में, जिनकी संख्या अनगिनत है, पवित्र शास्त्र यीशु मसीह या परमेश्वर के पुत्र को वह सब कुछ श्रेय देता है जो संभवतःसच्चे परमेश्वर को दिया जा सकता है, जैसे:

1) ईश्वर के उपाधियाँ। यह उसे कहता है—

क) ईश्वर: *'आरम्भ में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। वह आरम्भ में परमेश्वर के साथ था* (यूहन्ना 1:1-2)। यहाँ—

क) वचन को ईश्वर कहा जाता है, '[566] ' स्पष्ट रूप से उसी अर्थ में जैसा कि परमपितामह ईश्वर के लिए कहा गया है, जिनके साथ वह आरंभ से था; परिणामस्वरूप, वास्तविक अर्थ में;

bb) 'वचन' नाम से, निस्संदेह, परमेश्वर का पुत्र, यीशु मसीह, अभिप्रेत है; क्योंकि, अपनी कथा जारी रखते हुए, सुसमाचारकार कहता है: *और वचन देहधारी हुआ और हमारे बीच में वास किया, और वह अनुग्रह और सत्य से परिपूर्ण था; और हमने उसकी महिमा देखी, जो परम-पिता की एकमात्र संतान की महिमा के समान थी... क्योंकि व्यवस्था मूसा के द्वारा दी गई थी; परन्तु अनुग्रह और सत्य यीशु मसीह के द्वारा आए* (14:17)।

(ख) अवतारित ईश्वर: *और निस्संदेह— भक्ति का महान रहस्य: ईश्वर देह में प्रकट हुए, आत्मा में सिद्ध हुए, स्वर्गदूतों द्वारा देखे गए, अन्यजातियों में प्रचारित हुए, संसार भर में विश्वास किया गया, और महिमा में उठा लिए गए* (1 तीमु. 3:16)। यह स्वयंसिद्ध है कि यहाँ किसी ईश्वर की बात की जा रही है।[567]

ग) प्रभु: *फिर भी हमारे लिए एक ही परमेश्वर है, पिता, जिससे सब कुछ है, और हम उसके लिए हैं; और एक ही प्रभु है, यीशु मसीह, जिसके द्वारा सब कुछ है, और हम उसके द्वारा हैं* (1 कुरिन्थियों 8:6; तुलना करें मत्ती 22:43-44); महिमा का प्रभु: *यदि उन्होंने उसे जान लिया होता, तो वे महिमा के प्रभु को क्रूस पर नहीं चढ़ाते* (1 कुरिन्थियों 2:8); प्रभु परमेश्वर: *अपने और उस सम्पूर्ण झुण्ड का ध्यान रखो, जिसके लिए पवित्र आत्मा ने तुम्हें निगरान नियुक्त किया है, ताकि तुम प्रभु और परमेश्वर की कलीसिया का चरवाहा बनो, जिसे उसने अपने ही लहू से मोल लिया है* (प्रेरितों के काम 20:28)। 'प्रभु परमेश्वर' नाम, जिसने अपने ही लहू से कलीसिया को खरीदा, को पुत्र के सिवाय किसी अन्य दिव्य व्यक्ति के रूप में समझा नहीं जा सकता[568] (यहूदा 4 भी देखें)।

घ) सच्चे परमेश्वर: *हम यह भी जानते हैं कि परमेश्वर का पुत्र आया और हमें प्रकाश और समझ दी, ताकि हम सच्चे परमेश्वर को जान सकें और उसके सच्चे पुत्र, यीशु मसीह में रह सकें। वही सच्चे परमेश्वर और अनंत जीवन है* (1 यूहन्ना 5:20)। ऐसा प्रतीत होता है कि इससे बड़ी कोई गवाही नहीं हो सकती। यहाँ प्रेरित यीशु मसीह को कहते हैं:

क) परमेश्वर का सच्चा पुत्र; परिणामस्वरूप, वास्तविक अर्थ में पुत्र, रूपक अर्थ में नहीं; स्वाभाविक पुत्र, जो पिता के सार से उत्पन्न हुआ है, अनुग्रह से गोद लिया हुआ नहीं;

बीबी) वह उसे *सच्चा परमेश्वर* भी कहता है, जैसा कि संकेतवाचक सर्वनाम *'यह'* (οὗτος) से इंगित होता है, जो निस्संदेह निकटतम व्यक्ति को संदर्भित करता है;

---

[566] सुसमाचारकार की अभिव्यक्ति में: *'वचन परमेश्वर था,* Θεός ἦν ὁ Λόγος' — विषय को 'ὁ Λόγος', वचन, माना जाना चाहिए, जैसा कि वह लेख के साथ खड़ा है, और कर्म को 'Θεός', परमेश्वर, माना जाना चाहिए, जो लेख के बिना खड़ा है, ठीक वैसे ही जैसे उद्धारकर्ता के शब्दों में: *'ईश्वर आत्मा है,* πνεῦμα ὁ Θεός' (यूहन्ना 4:24), जहाँ कर्ता 'Θεός' है, यद्यपि यह दूसरे स्थान पर आता है, और कर्म 'πνεῦμα' है।

[567] लैटिन वल्गेट में, इस पाठ में *'ईश्वर'* शब्द किसी अज्ञात कारण से छोड़ दिया गया है; लेकिन मूल में, यानी यूनानी पांडुलिपियों में, यह लगातार पाया जाता है (*Scholz,* Nov. Test, graece ad fidem test, critic, vol. II, p. 33., Lips. 1636), और इस प्रकार प्राचीन चर्च पिताओं ने वर्तमान पाठ को पढ़ा: संत जॉन क्राइसोस्टोम (homil. in hunc locum), बेसिल द ग्रेट (Epist. 261, Opp. T. III, p. 401, ed. Benedict.), डिडिमस (Tractat. de Trinit.) और अन्य।

[568] उद्धृत ग्रंथों में से पहला ग्रंथ सेंट जॉन क्रिसोस्टोम (अनोमोएनों के विरुद्ध होमीली V) द्वारा एरियनों के विरुद्ध उपयोग किया गया था, सेंट अथेनासियस (De decrete Synodi Nicænsis) और संत सिरिल (थेसॉरस, पुस्तक 9); दूसरे और तीसरे का उपयोग उसी संत सिरिल (थेसॉरस, पुस्तक 32) द्वारा किया गया था।

cc) उसे ठीक उसी अर्थ में सच्चा ईश्वर कहता है, जैसे कुछ शब्दों पहले उसने परमेश्वर पिता को सच्चा ईश्वर कहा था।[569]

e) महान परमेश्वर: *परमेश्वर का अनुग्रह प्रकट हुआ है, सभी मनुष्यों को बचाते हुए, हमें यह सिखाते हुए कि हम अधर्मीपन और सांसारिक वासनाओं को त्यागकर, इस वर्तमान युग में संयम, धर्म और भक्ति से युक्त जीवन जिएँ, जब तक कि हम धन्य आशा और हमारे महान परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के प्रकट होने की प्रतीक्षा कर रहे हैं* (तीतुस 2:11–13)। कि यहाँ *'महान परमेश्वर'* की उपाधि किसी और के लिए नहीं, बल्कि यीशु मसीह के लिए है, इसकी पुष्टि होती है:

(aa) यूनानी पाठ में वाक्यांश की संरचना से;[570]

बीबी) इस अंश के अर्थ से: यह स्पष्ट रूप से न्यायाधीश परमेश्वर के भविष्य के पुरस्कार और महिमामय आगमन की ओर इशारा करता है, जिसका मसीही प्रतीक्षा करते हैं, — और धर्मग्रंथ के अन्य अंशों से यह ज्ञात है कि *पिता किसी का न्याय नहीं करते, बल्कि उन्होंने सभी न्याय पुत्र को सौंप दिया है* (यूहन्ना 5:22), और यह कि स्वयं पुत्र ही एक दिन जीवितों और मरे हुओं का न्याय करने के लिए अपनी महिमा में प्रकट होंगे, जैसा कि उन्होंने स्वयं बार-बार गवाही दी है (मत्ती 24:3–43; मरकुस 13:3–33; लूका 17:22–37);

(bb) अंत में, इस अंश की तुलना उसी अध्याय की आयत 10 से करने पर, जहाँ प्रेरित निश्चिंदेह यीशु मसीह को 'उद्धारकर्ता परमेश्वर' कहते हैं: *ताकि वे* (सामान्य रूप से—ईसाई) *हर तरह से हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर की शिक्षा का गौरव बढ़ाएँ*[571]

(f) परमेश्वर, धन्य। प्रेरित, यहूदियों के विभिन्न विशेषाधिकारों को सूचीबद्ध करते हुए, अन्य बातों के अलावा कहते हैं: *'जिनके हैं पुत्रों के रूप में गोद लेना, और महिमा, और वाचाएँ, और व्यवस्था का दिया जाना, और आराधना, और प्रतिज्ञाएँ; जिनके हैं पूर्वज, और जिनसे, देह के अनुसार, मसीह आए, जो सभी के ऊपर परमेश्वर हैं, सदा के लिए धन्य, आमीन* (रोमियों 9:4–5)। निम्नलिखित कारक हमें इन अंतिम शब्दों को परमेश्वर पिता के बजाय यीशु मसीह पर लागू करने के लिए बाध्य करते हैं:

क) अलंकार: *'जो सभी के ऊपर है'* (ὁ ὢν ἐπί πάντων) अभिव्यक्ति स्पष्ट रूप से पिछले विषय, यानी, देह के अनुसार मसीह को संदर्भित करती है;

bb) अनुच्छेद का संदर्भ: यह बताने के बाद कि मसीह केवल *देह के अनुसार* यहूदियों में से थे, प्रेरित स्वाभाविक रूप से पाठक को यह प्रश्न पूछने की अपेक्षा करने के लिए प्रेरित करते हैं कि फिर मसीह *देह के अनुसार* कौन *नहीं हैं*;

cc) प्रवचन का उद्देश्य: प्रेरित इस तथ्य की ओर इशारा करते हैं कि यीशु मसीह मांस के अनुसार यहूदी वंश के हैं, जो चुने हुए लोगों का एक विशेषाधिकार है, और इसके अलावा सबसे महत्वपूर्ण विशेषाधिकार के रूप में—तो यह विशेषाधिकार किस बात में निहित होगा यदि मसीह केवल एक मनुष्य होते, और अंतिम शब्द उन पर लागू नहीं होते: *'ईश्वर, जो सर्वोपरि है, सदा के लिए धन्य'*?[572] इस गवाही का महत्व भी उतना ही निर्विवाद है:

(aa) इसमें, यीशु मसीह को परमेश्वर कहा गया है, *जो सभी से ऊपर है*, अर्थात् सर्वोच्च है, ठीक वैसे ही जैसे परमेश्वर पिता को दूसरे अंश में (इफिसियों 4:6) कहा गया है;

bb) वह परमेश्वर *जो धन्य है*, उसी प्रकार पिता परमेश्वर के समान (2 कुरिन्थियों 1:3; इफिसियों 1:8);

---

[569] इस पाठ का उद्धरण इस अर्थ में संत बेसिल द ग्रेट ('द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स' VII, पृ. 175) और संत सिरिल (initio Dialog. IV) द्वारा दिया गया है।

[570] क्योंकि यूनानी में, *'महान ईश्वर और हमारे उद्धारकर्ता'* शब्दों से पहले, τοῦ μεγάλου Θεοῦ καί Σωτήρος ἡμών, केवल एक ही सर्वनाम-उपसर्ग होता है; परिणामस्वरूप, ये दोनों उपाधियाँ एक ही व्यक्ति, यीशु मसीह, Ἰησοῦ Χρίστοῦ, को संदर्भित करती हैं। लेकिन यदि *'महान ईश्वर'* नाम एक व्यक्ति को और *'हमारे उद्धारकर्ता'* नाम दूसरे को दर्शाता, तो यूनानी भाषा की प्रकृति के अनुसार दो सर्वनाम-उपसर्ग होने चाहिए थे: एक *'महान ईश्वर'* शब्दों से पहले और दूसरा *'हमारे उद्धारकर्ता'* शब्दों से पहले।

[571] संत अथेनासियस (lib. de communi essent. Patr. et Fil.), संत बेसिल द ग्रेट ('वर्क्स ऑफ द होली फादर्स' VII, पृ. 176) और संत सिरिल (Thesaur. lib. 32) ने उन प्रेरित के शब्दों को, जिन पर हमने विचार किया है (तीतुस 2:13), पुत्र के संदर्भ में समझा।

[572] ये शब्द पुत्र पर द्वारा लागू किए गए थे: आइरेनियस (Contra Haereses III, 18), टर्तु□□□□यन (Contra Hereses 13 और 16), अथेनासियस द ग्रेट (Against the Arians, Orations 2 और 5), ग्रेगरी ऑफ़ निस्सा (Against Eunomius, Book X), एम्ब्रोस (De Spirit. S. 1, अध्याय 3; De fide IV, 6), ऑगस्टीन (De Trinit. II, 13) और अन्य।

cc) *सदा के लिए धन्य*परमेश्वर — फिर से, पूरी तरह से उसी तरह जैसे परमेश्वर पिता (2 कुरिन्थियों 11:31), और अंत में —

dd) यह सब *'आमीन'* शब्द के साथ समाप्त होता है, जो पवित्र शास्त्र में प्रयुक्त होने पर, हमेशा सत्य को सुदृढ़ करता है या उस पर मुहर लगाता है, और इसी प्रेरित ने, कहीं और, झूठे देवताओं के विपरीत, एक सच्चे परमेश्वर की स्तुति में इसी तरह की एक स्तुति को इसी के साथ समाप्त किया है: *सृष्टिकर्ता के बजाय प्राणियों की पूजा की गई, जो युगानुयुग धन्य हैं, आमीन* (रोमियों 1:25)।

2) दिव्य स्वभाव, परमेश्वर पिता के साथ पूर्ण समानता और एकसारता।

क) दैवीय स्वभाव। यह मुख्य रूप से पवित्र प्रेरित पौलुस की दो उक्तियों द्वारा कवर किया गया है:

क) पहली — कुलुस्सियों के नाम पत्र में: *'क्योंकि उसी* (यीशु मसीह) *में देह रूप में परमेश्वरत्व की सारी परिपूर्णता वास करती है* (2:9), जहाँ दिव्य स्वभाव को पूरी तरह से मसीह को ही दिया गया है (तुलना करें रोमियों 1:20);

bb) दूसरी — फिलिप्पियों के नाम पत्र में: *'तुम में भी वही मन हो जो मसीह यीशु में था': वह, परमेश्वर के स्वरूप में होते हुए, परमेश्वर के बराबर होने को कोई ऐसी वस्तु नहीं समझा जिसे पकड़ना हो; परन्तु उसने अपना आप खाली किया, दास का स्वरूप धारण किया, मनुष्य की समानता में बना और मानवीय रूप में प्रकट हुआ; उसने अपना आप नीचा किया और मृत्यु तक, यहाँ तक कि क्रूस पर मृत्यु तक, आज्ञाकारी बना* (2:5–8)। यहाँ अभिव्यक्तियाँ: *'परमेश्वर के स्वरूप में होना* (εν μορφή θεοῦ ὑπάρχων) और *'परमेश्वर के बराबर होना* (τό εἶναι ἴσα θεώ) स्पष्ट रूप से इन अभिव्यक्तियों के विपरीत हैं: *'दास का रूप धारण करना* (μορφήν δούλου λαβών), *'मनुष्यों के समान बनना'* (ἐν ὁμοιώματι ἀνθρώπῶ γενόμενος). लेकिन जैसे कि बाद वाले वाक्यांश स्पष्ट रूप से यीशु मसीह के व्यक्तित्व में ठीक मानव स्वभाव को दर्शाते हैं; वैसे ही, परिणामस्वरूप, पहले वाले वाक्यांश उनमें दिव्य स्वभाव को दर्शाते हैं।[573] इसके अलावा, प्रेरित कहते हैं:

(aa) कि मसीह, *परमेश्वर के स्वरूप में होते हुए* भी, *परमेश्वर के बराबर होने को पकड़ने योग्य वस्तु नहीं समझते थे* (οὐχ' ἁρπαγμόν ἡγήσατο): इसका अर्थ है कि यह समानता अधिकार से, अर्थात् स्वभाव से, उनकी थी;

bb) कि जब उन्होंने एक साधारण मनुष्य का रूप धारण किया तो उन्होंने स्वयं को नम्र या शून्य किया; इसका अर्थ है कि, स्वभावतः वह न तो परमेश्वर के सेवक हैं, न ही परमेश्वर की कोई सृष्टि हैं, बल्कि स्वयं परमेश्वर हैं। अन्यथा, उनकी नम्रता किस बात में होती?

ख) परमेश्वर पिता के साथ पूर्ण समानता: *'मेरा पिता आज भी कार्य कर रहा है, और मैं भी कार्य कर रहा हूँ* (यूहन्ना 5:17)। *क्योंकि पिता जो कुछ भी करते हैं, पुत्र भी वही करता है* (19)। *जैसे पिता मरे हुओं को जिलाता है और जीवन देता है, वैसे ही पुत्र भी जिसको चाहे जीवन देता है* (21)। *जिस प्रकार पिता में स्वयं जीवन है, उसी प्रकार उसने पुत्र को भी स्वयं में जीवन प्रदान किया है* (26)। *और मैं उन्हें अनंत जीवन देता हूँ, और वे कभी नाश नहीं पाएँगे; और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन नहीं सकेगा। मेरा पिता, जिसने उन्हें मुझे दिया है, उन सब से बड़ा है; और उन्हें मेरा पिता मेरे हाथ से कोई छीन नहीं सकता* (10:28–29)। *यदि तुम मुझे जानते, तो तुम मेरे पिता को भी जानते* (14:7)।[574]

(c) परमेश्वर पिता के साथ एकसार। यह प्रकट किया गया है:

(aa) उद्धारकर्ता के शब्दों से: *'मैं और पिता एक हैं* (यूहन्ना 10:30), जिसका अर्थ हमने पहले ही देखा है;[575]

---

[573] "मैं पुष्टि करता हूँ," संत बेसिल द ग्रेट कहते हैं, "कि वाक्यांश *'परमेश्वर के स्वरूप में होना* (फिलि. 2:6) वाक्यांश 'परमेश्वर के सार में होना' के समान है। क्योंकि जैसे शब्द: *'दास का रूप धारण करना* (पद 7), इस बात का संकेत करते हैं कि हमारे प्रभु मानव स्वभाव के सार में पैदा हुए थे; वैसे ही, निश्चित रूप से, शब्द: *'परमेश्वर के स्वरूप में होना*, दैवीय सार के एक गुण को दर्शाते हैं" ("द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स" VII, पृ. 45)।

[574] अलेक्जेंड्रिया के संत सिरिल इन सभी अंशों का उपयोग पिता और पुत्र की समानता को प्रदर्शित करने के लिए करते हैं (पवित्र और जीवन-दायक त्रिमूर्ति पर, अध्याय 12 और 13, *क्रॉनिकल ऑफ रीडिंग्स*, 1847, खंड III, पृ. 23–26)। उनके निम्नलिखित शब्द भी ध्यान देने योग्य हैं: 'हमारे प्रभु मसीह स्वयं हमें एक अन्य अंश में यह स्पष्ट समानता घोषित करते हैं, कहते हुए: *"जैसे पिता मुझे जानता है, वैसे ही मैं भी पिता को जानता हूँ"* (यूहन्ना 10:15); और फिर कहीं और: *'जब तक पिता, जिसने मुझे भेजा है, उसे खींचता नहीं, कोई मेरे पास नहीं आ सकता* (6:44)। इससे हम सीखते हैं कि पुत्र, ठीक वैसे ही जैसे पिता करते हैं, उन लोगों को पिता के पास लाता है जिन्हें बचाया जाना है। तो फिर, वह दास-सदृश सेवा कहाँ है जिसके बारे में विधर्मी बात करते हैं? एक प्राणी के योग्य सेवा कहाँ है? यहाँ पिता के अधिकार और पुत्र की आज्ञाकारिता के बीच असमानता कहाँ है?' (उपरोक्त, पृ. 27)?

[575] ऊपर § 27 और टिप्पणी 481 देखें।

bb) उद्धारकर्ता के अन्य शब्दों से: *'जिसने मुझें देखा है, उसने पिता को देखा है... मैं पिता में हूँ और पिता मुझ में हैं'* (यूहन्ना 14:9, 11), जिसका अर्थ हमने पहले ही देखा है;[576]

cc) उद्धारकर्ता के शब्दों के तीसरे समूह से: *'यदि तुम मुझे जानते, तो तुम मेरे पिता को भी जानते* (यूहन्ना 8:19; तुलना करें 14:7), जो अनिवार्य रूप से यह दर्शाता है कि पिता और पुत्र एक ही सार के हैं;[577]

gg) अंत में, उद्धारकर्ता के शब्दों के चौथे समूह से: *'जो कुछ मेरा है, वह तुम्हारा है, और जो कुछ तुम्हारा है, वह मेरा है'* (यूहन्ना 17:10); *'जो कुछ पिता के पास है, वह मेरा है* (16:15), जो बिल्कुल उसी सत्य को दर्शाते हैं।[578]

3) दैवीय गुण, जो हैं:

क) अनंतकाल: *'मैं तुम से सच कहता हूँ, इस से पहिले कि इब्राहीम हुआ, मैं हूँ* (यूहन्ना 8:58)। *'और अब हे पिता, मुझे अपनी उपस्थिति में उसी महिमा से महिमामय कर जो संसार के होने से पहिले मुझ में तेरे साथ थी* (17:5)। और भी स्पष्ट रूप से: *'मैं ही आरंभ और अंत हूँ* (प्रकाशितवाक्य 1:10; तुलना करें पद 12, 17, 18)। *'आरंभ और अंत, जो मरा था और देखो, मैं जीवित हूँ, यह कहता है* (प्रकाशितवाक्य 2:8)। *देखो, मैं शीघ्र आ रहा हूँ, और मेरा प्रतिफल मेरे साथ है, ताकि मैं हर एक को उसके कामों के अनुसार दूँ। मैं ही आरंभ और अंत हूँ, प्रथम और अंतिम* (प्रकाशितवाक्य 22:12–13)।

ख) स्व-अस्तित्व। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक से अभी-अभी उद्धृत शब्दों के अतिरिक्त, जो परमेश्वर के पुत्र की अनंतता की ओर इशारा करते हुए, साथ ही उनके स्व-अस्तित्व की ओर भी इशारा करते हैं, उद्धारकर्ता के शब्द भी यहाँ लागू होते हैं: *क्योंकि जैसे पिता में स्वयं जीवन है, वैसे ही उसने पुत्र को भी स्वयं में जीवन प्रदान किया है* (यूहन्ना 5:26)।

ग) सर्वव्यापकता: *'मनुष्य का पुत्र, जो स्वर्ग से उतर आया और स्वर्ग में है, के सिवाय कोई स्वर्ग पर नहीं चढ़ा* (यूहन्ना 3:13)। *'क्योंकि जहाँ दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठे होते हैं, वहाँ मैं उनके बीच में होता हूँ* (मत्ती 18:20)।

d) अपरिवर्तनीयता। पवित्र प्रेरित परमेश्वर के पुत्र के इस गुण को तब चित्रित करते हैं जब वे भजनकार के वचन उन्हें लागू करते हैं: *'हे प्रभु, आरम्भ में तूने पृथ्वी की नींव डाली, और आकाश तेरे हाथों का काम हैं; वे नाश हो जाएंगे, परन्तु तू बना रहेगा; और वे सब वस्त्र के समान घिस जाएंगे; तू उन्हें लपेटेगा, और वे बदल जाएंगे; परन्तु आप वही हैं, और आपके वर्ष कभी समाप्त नहीं होंगे* (इब्रानियों 1:10–12), और जब वह उसी पत्र में आगे कहता है: *'यीशु मसीह कल, आज और युगानुयुग एक ही हैं* (13:8)।

घ) सर्वज्ञता। उद्धारकर्ता स्वयं इस गुण का दावा करते हैं: *'मेरे पिता ने सब कुछ मुझे सौंप दिया है, और पुत्र को कोई नहीं जानता, सिवाय पिता के; और पिता को कोई नहीं जानता, सिवाय पुत्र के, और उन लोगों को जिन्हें पुत्र उसे प्रकट करना चाहे* (मत्ती 11:27; यूहन्ना 10:15)। *और सब कलीसियाएँ जान जाएँगी कि मैं वही हूँ जो हृदयों और मन को परखता है* (प्रकाशितवाक्य 2:23)। प्रेरितों ने भी उन में यह पहचाना: *'अब हम जानते हैं कि आप सब कुछ जानते हैं और आपको किसी के पूछने की आवश्यकता नहीं है। इसलिए हम विश्वास करते हैं कि आप परमेश्वर से आए हैं* (यूहन्ना 16:30)। *हे प्रभु! आप सब कुछ जानते हैं; आप जानते हैं कि मैं आपसे प्रेम करता हूँ* (यूहन्ना 21:17)। या: *यीशु ने स्वयं उन पर भरोसा नहीं किया, क्योंकि वह उन्हें जानते थे और उन्हें किसी के गवाह होने की आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि वह स्वयं जानते थे कि मनुष्य में क्या है* (यूहन्ना 2:24–25)। *जिसमें बुद्धि और ज्ञान के सब खजाने छिपे हुए हैं* (कुलु. 2:3)।

---

[576] उसी § और टिप्पणी 447 में।

[577] "आप देखते हैं," अलेक्जेंड्रिया के संत सिरिल टिप्पणी करते हैं, "कि कैसे यहाँ भी वह एकसारता प्रकट करते हैं: *'यदि तुम मुझे जानते,'* वह कहते हैं, *'तो तुम मेरे पिता को भी जानते;* क्योंकि जो एक ही सार का है, उसे दूसरे सार के द्वारा जाना नहीं जा सकता। विभिन्न स्वभावों की सत्ताएँ, जो एक-दूसरे से पराई हैं, एक-दूसरे को समझा नहीं सकतीं; लेकिन एक ही स्वभाव की सत्ताएँ एक-दूसरे से जानी जाती हैं'" (क्रॉनिकल ऑफ रीडिंग्स 1847, III, पृ. 31)। "यदि," संत बेसिल द ग्रेट भी विचार करते हैं, "किसी ने पुत्र को उसके सार में जान लिया है, तो उसने पिता को भी जान लिया है (क्योंकि कहा गया है: *'यदि तुम मुझे जानते, तो तुम मेरे पिता को भी* जानते'—यूहन्ना 14:7); अर्थात्, पुत्र पिता के समतत्त्व का है, क्योंकि कोई भी अदेह तत्त्व एक असदृश सार से जाना नहीं जा सकता" ("द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स" VII, पृ. 146)।

[578] ऊपर टिप्पणी 450 देखें। संत बेसिल द ग्रेट तर्क देते हैं, "यदि पुत्र ही केवल पिता की सृष्टि है, और बाकी सब कुछ पुत्र की सृष्टि है, तो जिसने कहा, *'जो कुछ मेरा है, वह तुम्हारा है';* ऐसा कह सकते थे; लेकिन, यूनोमियस के दृष्टिकोण के अनुसार, उन्हें यह जोड़ना नहीं चाहिए था: *'और जो कुछ तुम्हारा है वह मेरा है* (यूहन्ना 17:10), क्योंकि पुत्र स्वयं अपने नहीं हो सकते थे। इससे यह स्पष्ट होता है कि उन्होंने अपनी पिता के समानता, और अपने सार के बारे में कहा, जो हर तरह से बिना शर्त पिता के सार के समान है, न कि सृजित प्राणियों के बारे में" ("द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स" VII, पृ. 161)।

(ई) सर्वशक्तिमान। *मेरी भेड़ें मेरी आवाज़ सुनती हैं, और मैं उन्हें जानता हूँ: और वे मेरा अनुसरण करती हैं। और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ और वे कभी नाश नहीं पाएँगे; और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन नहीं सकेगा। मेरा पिता, जिसने उन्हें मुझे दिया है, सब से बड़ा है; और कोई उन्हें मेरे पिता के हाथ से छीन नहीं सकता* (यूहन्ना 10:27–29)। *वह* (यीशु मसीह) *हमारे दीन शरीर को अपने महिमामय शरीर के समान रूप का बना देगा, उस सामर्थ्य से जिससे वह सब वस्तुओं को अपने वश में करता है* (फिलिप्पियों 3:21)।

ग) महिमा: *क्योंकि यदि वे जानते, तो वे महिमा के प्रभु को सूली पर नहीं चढ़ाते* (1 कुरिन्थियों 2:8; तुलना करें याकूब 2:1)।

4) सभी अस्तित्वमान चीज़ों पर दिव्य कर्म और अधिकार। परमेश्वर के पुत्र को कहा जाता है:

क) संसार का सृष्टिकर्ता। *सभी वस्तुएँ उसी के द्वारा उत्पन्न हुईं, और उसी के बिना कुछ भी उत्पन्न नहीं हुआ जो उत्पन्न हुआ है* (यूहन्ना 1:3)। *क्योंकि उसी के द्वारा सब वस्तुएँ सृष्टि में और पृथ्वी पर, दृश्य और अदृश्य सृजित की गईं: चाहे वे सिंहासन हों, प्रभुत्व हों, प्रधानताएँ या शक्तियाँ—सब उसी के द्वारा और उसी के लिए सृजित की गईं: और वह सब वस्तुओं से पहले है, और उसी में सब वस्तुएँ एक साथ टिकी रहती हैं* (कुलु. 1:16–17; तुलना करें इब्र. 1:2 और 10)।

ख) धारण करने वाला। *वह सभी वस्तुओं से पहले है, और उसी में सभी वस्तुएँ एक साथ टिकी रहती हैं* (कुलुस्सीयों १:१७); *अपनी सामर्थ्य के वचन से सभी वस्तुओं को थामे हुए* (इब्रानियों १:३)।

ग) अपनी ही शक्ति से चमत्कार करने वाले: *जैसे पिता मृतकों को जिला उठाते हैं और जीवन देते हैं, वैसे ही पुत्र भी जिसे चाहें जीवन देते हैं* (यूहन्ना 5:21)। *और ये चिन्ह विश्वास करने वालों के साथ होंगे: वे मेरे नाम पर भूत निकालेंगे; वे नई-नई भाषाएँ बोलेंगे; वे साँपों को उठा लेंगे; और यदि वे कोई घातक वस्तु पीएँ, तो वह उन्हें कोई हानि नहीं पहुँचाएगी; वे बीमारों पर हाथ रखेंगे, और वे अच्छे हो जाएँगे* (मरकुस 16:17-18)।

(घ) सभी का शासक, राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु। *उन्होंने इस्राएल के बच्चों के पास वचन भेजा, यीशु मसीह के द्वारा शांति का प्रचार करते हुए; वह सभी का प्रभु है* (प्रेरितों के काम 10:36; तुलना करें यहूदा 4)। *वे मेम्ने से युद्ध करेंगे, और मेम्ना उन पर जय पाएगा; क्योंकि वह प्रभुओं का प्रभु और राजाओं का राजा है* (प्रकाशितवाक्य 17:14)। *उसके वस्त्र और उसकी जाँघ पर यह नाम लिखा है: 'राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु'* (प्रकाशितवाक्य 19:16)।

5) दिव्य सम्मान। यह विचार पवित्र धर्मग्रंथ में तब व्यक्त किया गया है जब —

क) यह सामान्य शब्दों में आज्ञा देता है: *कि सभी पुत्र का सम्मान करें जैसे वे पिता का सम्मान करते हैं। जो पुत्र का सम्मान नहीं करता, वह उस पिता का सम्मान नहीं करता जिसने उसे भेजा है* (यूहन्ना 5:23); और जब यह बाद में, विशेष रूप से आज्ञा देता है:

ख) पुत्र में विश्वास करना: *'परमेश्वर का काम यह है कि तुम उसी पर विश्वास करो जिसे उसने भेजा है'* (यूहन्ना 6:29)। *और उसकी आज्ञा यह है कि हम उसके पुत्र यीशु मसीह के नाम पर विश्वास करें* (1 यूहन्ना 3:23; तुलना करें यूहन्ना 3:18; 6:40; प्रेरितों के काम 16:31; 20:21).

ग) उस में आशा रखना। *तुम्हारा मन व्याकुल न हो; परमेश्वर पर विश्वास करो, और मुझ पर भी विश्वास करो* (यूहन्ना 14:1)। *ये बातें मैं तुम से इसलिए कहता हूँ कि तुम में शान्ति रहे। संसार में तुम्हें क्लेश होगा; परन्तु धीरज धरः मैंने संसार पर जय प्राप्त की है* (यूहन्ना 16:33)। *पौलुस, परमेश्वर हमारे उद्धारकर्ता, और प्रभु यीशु मसीह हमारी आशा की आज्ञा से यीशु मसीह का प्रेरित* (1 तीमुथियुस 1:1; तुलना करें मत्ती 12:11; कुलुस्सियों 1:27),

d) उसे प्रेम करना। *जो प्रभु यीशु मसीह से प्रेम नहीं करता वह श्रापित है, मरान-अथा* (1 कुरिन्थियों 16:22; तुलना करें यूहन्ना 14:23)।

(e) प्रार्थना में उसको पुकारना। *और यदि तुम मेरे नाम से पिता से कुछ भी माँगोगे, तो मैं वह करूँगा, ताकि पिता पुत्र में महिमा पाए। यदि तुम मेरे नाम से कुछ भी माँगोगे, तो मैं वह करूँगा* (यूहन्ना 14:13–14)। *सच-सच मैं तुम से कहता हूँ: जो कुछ भी तुम पिता से मेरे नाम से माँगोगे, वह तुम्हें देगा* (यूहन्ना 16:23; तुलना करें रोमियों 10:13; प्रेरितों के काम 22:16)।

(ई) उसकी आराधना करना। *इसी प्रकार, जब वह पहिलौठे को संसार में प्रवेश कराता है, तो वह कहता है: 'और परमेश्वर के सब स्वर्गदूत उसकी आराधना करें* (इब्रानियों 1:6)। *कि यीशु के नाम पर हर घुटना झुक जाए—*

स्वर्ग में, पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे—और हर जी कहे कि यीशु मसीह प्रभु हैं, परमेश्वर पिता की महिमा के लिए (फिलिप्पियों 2:10-11)।

(ग) उसकी गवाही देना। *जो कोई यह गवाही देता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है, उसमें परमेश्वर वास करता है, और वह परमेश्वर में* (1 यूहन्ना 4:15)। *क्योंकि यदि तू अपने मुँह से यह स्वीकार करे कि यीशु प्रभु है, और अपने हृदय में विश्वास करे कि परमेश्वर ने उन्हें मरे हुओं में से जिलाया है, तो तू उद्धार पाएगा; क्योंकि हृदय से विश्वास करके धर्मी ठहरता है, और मुँह से स्वीकार करके उद्धार पाता है* (रोमियों 10:9-10)।

यह सच है कि पवित्र धर्मग्रंथ में ऐसे अंश हैं जो, पहली नज़र में, परमेश्वर के पुत्र की दिव्यता और पिता के साथ उसकी समानता के सिद्धांत के अनुरूप नहीं लगते, और जिनका उपयोग इसलिए प्राचीन काल से उन विधर्मियों द्वारा किया जाता रहा है जिन्होंने हमारे उद्धारकर्ता की दिव्यता को अस्वीकार किया। लेकिन हमें याद रखना चाहिए:

(क) कि, पवित्र शास्त्र की शिक्षा के अनुसार, यीशु मसीह केवल परमेश्वर ही नहीं बल्कि मनुष्य भी हैं;

ख) कि, परमेश्वर के रूप में, उनका अस्तित्व पिता से है, और परिणामस्वरूप, यद्यपि वे उनकी ही सार के हैं और उनसे पूर्ण रूप से समान हैं, व्यक्तिगत संबंध के मामले में वे पिता के पुत्र हैं और परम पवित्र त्रिमूर्ति के व्यक्तियों के क्रम में दूसरे स्थान पर हैं; और

ग) कि, अंत में, हमारे उद्धारकर्ता के रूप में, *अपने पृथ्वी पर जीवन के दिनों के दौरान* वे स्वेच्छा से स्वयं को नम्र करने की अवस्था में थे (इब्रानियों 5:7; Phil. 2:6–8), हमारे पापों को स्वयं पर लेने की कृपा करते हुए, इस प्रकार हम पर पड़े हुए शाप को दूर किया (Gal. 3:13), और पिता की इच्छा को पूरी तरह से पूरा किया, जिन्होंने अपने पुत्र के लहू द्वारा संसार को बचाने का निश्चय किया था (Rom. 3:25). इन विचारों के आलोक में, हम पवित्रशास्त्र के उन अंशों का सच्चा अर्थ आसानी से समझ जाएँगे, जिन्हें युगों से विधर्मी लोगों ने प्रभु यीशु की दिव्यता के सिद्धांत का खंडन करने के लिए उद्धृत किया है। इस प्रकार—

(क) जब उन्होंने कहा: *'पुत्र स्वयं कुछ नहीं कर सकता, जब तक वह पिता को करते हुए न देखे* (यूहन्ना 5:19), तो उन्होंने पिता के साथ अपने व्यक्तिगत संबंध के संदर्भ में कहा, जिनके साथ वह न केवल एक ही सत्ता, बल्कि एक ही इच्छा, एक ही क्रिया और एक ही शक्ति को भी साझा करते हैं; और इसलिए, स्वाभाविक रूप से, जो कुछ भी वह करते हैं, वह हमेशा पिता से और पिता के साथ करते हैं, और वह अपनी इच्छा से कुछ भी नहीं कर सकते;[579]

ख) जब उन्होंने कहा: *'मेरा पिता मुझसे बड़ा* है' (यूहन्ना 14:28), तो उन्होंने न केवल पिता के साथ अपने व्यक्तिगत संबंधों के संदर्भ में, जो उनके कारण हैं,[580] बल्कि अपनी मानवता के संदर्भ में भी कहा, जो निस्संदेह उनकी दिव्यता से नीचली है;[581]

---

[579] "पुत्र के लिए ऐसा कुछ भी सृजित करना असंभव और पूरी तरह से असंगत है जिसे पिता सृजित नहीं करते। क्योंकि जो कुछ भी पिता के पास है, वह पुत्र का है; और इसके विपरीत, जो कुछ भी पुत्र का है, वह पिता का है। इस प्रकार, ऐसा कुछ भी नहीं है जो उनका अपना हो; क्योंकि सब कुछ साझा है। और उनका अस्तित्व ही साझा है और समान सम्मान का है, भले ही पुत्र का अस्तित्व पिता से है" (*सेंट ग्रेगरी, होमीली 30, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स* III, पृ. 88)। "*पुत्र स्वयम् कुछ भी नहीं कर सकता जब तक वह पिता को कर्म करते हुए नहीं देखता: क्योंकि पिता जो कुछ भी करते हैं, पुत्र भी वैसा ही करता है*" (यूहन्ना 5:19)। और एक अन्य अंश में: "जो कुछ भी पुत्र सृजित करता है, वह पिता से और पिता के साथ सृजित करता है: क्योंकि पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की इच्छा, क्रिया और शक्ति एक और वही हैं—केवल समान नहीं, बल्कि एकसार हैं" (*सेंट जॉन ऑफ़ डेमास्कस*, एक्सैक्ट एक्सपोज़िशन ऑर्थोडॉक्स विश्वास की व्याख्या, पुस्तक I, अध्याय 13, पृष्ठ 45–46, और पुस्तक IV, अध्याय 18, पृष्ठ 274)।

[580] "यहाँ, *'महान'* शब्द 'कारण' के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। चूंकि पुत्र की उत्पत्ति पिता से होती है, अतः पिता कारण और उत्पत्ति के रूप में *महान* हैं। इसीलिए प्रभु ने कहा: *'मेरा पिता मुझसे महान है*, अर्थात् क्योंकि वे पिता हैं। लेकिन 'पिता' शब्द का और क्या अर्थ है, यदि यह नहीं कि वह उससे उत्पन्न हुए एकमात्र के कारण और मूल हैं?" (*संत बेसिल द ग्रेट*, युनोमियस के विरुद्ध पुस्तक I, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स* VII, पृ. 56)। इसी बात को *संत ग्रेगरी द थियोलोजियन* (*द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, खंड III, पृ. 85), *सार्डिस की परिषद के फादर्स* (अपुद *थियोडोरेट*, *एच. ई.* II, अध्याय 8), *संत जॉन क्रिसिस्टम* (होमिलि. योहन पर 75वां व्याख्यान, अध्याय 14, श्लोक 29), *संत एपिफानियस* (हेरेसिस 69), *पेलुसियम के संत इसिडोर* (पुस्तक III, पत्र 334) और *दमिश्क के संत जॉन* (सही व्याख्यान ऑफ द ऑर्थोडॉक्स फेथ 1, 8, पृ. 23)।

[581] "जब वे कहते हैं: *'मेरा पिता*, जिसने मुझे भेजा है, *मुझसे बड़ा है* (यूहन्ना 14:28), तो वे पिता को स्वयं से बड़ा इसलिए कहते हैं क्योंकि वे स्वयं मनुष्य बने; परन्तु, पिता के वचन के रूप में, वे उनके समान हैं" (*संत अथेनासियस महान*, अवतार पर प्रवचन ईश्वर वचन, अरिअस के विरुद्ध, क्रिश्चियन रीडर 1840, खंड III, पृ. 171–172)। इस अंश की व्याख्या *संत एम्ब्रोज़* (De fide III, अध्याय 4), *संत सिरिल* (In Io. lib. X), *धन्य ऑगस्टीन* (De Trinitate 15, अध्याय 7, 9, 11), *पोप लियो* (Epist. ad Flavian, अध्याय 4) और अन्य लोगों द्वारा भी की गई है।

ग) जब उन्होंने कहा: *'मैं अपने पिता और तुम्हारे पिता के पास, और अपने परमेश्वर और तुम्हारे परमेश्वर के पास जाता हूँ* (यूहन्ना 20:17), तो उन्होंने परमेश्वर के पुत्र के रूप में और एक मनुष्य के रूप में दोनों ही रूपों में कहा; क्योंकि परमेश्वर स्वभाव से उनके पिता हैं, जबकि वे उद्धार की योजना के माध्यम से परमेश्वर बने, चूंकि पुत्र ने मानव स्वभाव को ग्रहण किया — जबकि, हमारे संबंध में, इसके विपरीत, परमेश्वर केवल अनुग्रह से पिता हैं, और स्वभाव से प्रभु और परमेश्वर हैं;[582]

(घ) जब उन्होंने कहा: *'परन्तु उस दिन या घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग में दूत, न पुत्र, परन्तु केवल पिता'* (मरकुस 13:32; मत्ती 24:36)—उन्होंने अपनी मानवता में तो बात की ही, साथ ही साथ स्वेच्छा से स्वयं को नम्र करने की अवस्था में, '[583] ', और दिव्य व्यवस्था की योजनाओं के अनुसार, मानवजाति को न्याय के समय का प्रकटीकरण करना अनुचित समझा;[584]

d) जब उन्होंने कहा: *'हे मेरे पिता, यदि यह संभव है, तो यह प्याला मुझ से दूर हो जाए; फिर भी, जैसा मैं चाहता हूँ वैसा नहीं, बल्कि जैसा तू चाहता है'* (मत्ती 26:39), इस प्रकार उन्होंने अपने भीतर दो इच्छाओं का प्रकटीकरण किया: मानव इच्छा, जो शरीर की दुर्बलता के कारण प्रार्थना कर रही थी कि पीड़ा उनसे दूर हो जाए, और दिव्य इच्छा, जो पूरी तरह से पिता की इच्छा के समान या एकरूप है, और जो पीड़ा और मृत्यु को स्वीकार करने के लिए तैयार थी;[585]

e) जब उन्होंने क्रूस पर पुकारा: *'हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर! आपने मुझे क्यों छोड़ दिया?'* (मत्ती 27:46), उन्होंने हमारी ओर से पुकारा: क्योंकि उन्होंने अपने लिए नहीं, बल्कि हमारे लिए दुख उठाया, और यह स्वयं वही नहीं थे जिन्हें परमेश्वर पिता ने त्यागा (जो उनके सार की एकता और अविभाज्यता को देखते हुए असंभव है), बल्कि हमें त्यागा गया था; और क्रोधित दिव्यता के साथ हमारे मेल-मिलाप के लिए ही उन्होंने क्रूस पर चढ़ाई।[586]

---

[582] 'वह कहते हैं: "*मैं अपने पिता और तुम्हारे पिता के पास, और अपने परमेश्वर और तुम्हारे परमेश्वर के पास जाता हूँ* (यूहन्ना 20:17)। क्योंकि परमेश्वर स्वभाव से उनके पिता हैं, और अनुग्रह से हमारे; और वे उद्धार की योजना के द्वारा परमेश्वर बने, यथार्थ में वे मनुष्य बने; जबकि वे स्वभाव से हमारे प्रभु और परमेश्वर हैं" (*सेंट अथेनासियस,* एरियन के विरुद्ध प्रवचन, क्रॉनिकल ऑफ रीडिंग्स 1840, III, पृ. 178)। यही विचार *सेंट सिरिल ऑफ जेरूसलम* (होमलीज XI, II. 19, रूसी अनुवाद में पृ. 200) और *सेंट ग्रेगरी द थियोलोजियन* ("वर्क्स ऑफ द होली फादर्स" III, पृ. 86) में भी पाया जाता है,

[583] यह सभी के लिए स्पष्ट है कि पुत्र जानता है, ठीक वैसे ही जैसे ईश्वर जानता है, फिर भी वह स्वयं को अज्ञानी बताता है, जैसे एक मानव करता है, जहाँ तक दृश्य को बोधगम्य से अलग किया जा सकता है। इसी विचार को इस तथ्य से भी व्यक्त किया गया है कि यहाँ 'पुत्र' उपाधि का उपयोग एक अमूर्त और निरपेक्ष तरीके से किया गया है, अर्थात् इस बात के बिना कि वह किसका पुत्र है, ताकि हम इस तर्क को धर्मपरायणता के अनुरूप अर्थ में समझ सकें, और इसे उसकी दिव्यता के बजाय उसकी मानवता से जोड़ सकें। (*सेंट ग्रेगरी द थियोलोजियन,* *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स* III, पृ. 94)। इसी बात को *संत अथेनासियस* (एरिअनवादियों के विरुद्ध, भाषण 4), *एंटिओक के यूस्टेथियस* (एरिअनवादियों के विरुद्ध, पुस्तक 6), *अलेक्जेंड्रिया के संत सिरिल* (संवाद, पुस्तक 6) और अन्य लोगों ने भी कहा है।

[584] "संक्षेप में—*यहाँ तक कि स्वर्गदूत भी* नहीं—यीशु मसीह अपने शिष्यों को उस बात को जानने का प्रयास न करने की शिक्षा देते हैं, जिसे स्वर्गदूत स्वयं भी नहीं जानते। संक्षेप *में, पुत्र* ने उन्हें न केवल जानने से, बल्कि इसके बारे में पूछने से भी मना किया है। यह किये शब्द उनके द्वारा इस इरादे से कहे गए थे, यह इस तथ्य से देखा जा सकता है कि, पुनरुत्थान के बाद, उन्होंने उनकी जिज्ञासा को और भी अधिक बल के साथ मना किया जब उन्होंने देखा कि वे इसमें अत्यधिक लिप्त थे।" और आगे: "यदि आप दिन और घड़ी के बारे में पूछेंगे, तो आप मुझसे कुछ नहीं सुनेंगे, वह कहते हैं; लेकिन यदि आप सामान्य रूप से समय और प्रारंभिक संकेतों के बारे में पूछेंगे, तो, कुछ भी छिपाए बिना, मैं आपको सब कुछ विस्तार से समझाऊंगा। कि मैं जानता हूं कि वह दिन कैसा होगा, इसके लिए मैंने समय के अंतराल के बारे में बात करके बहुत सारे प्रमाण दिए हैं। मैंने सभी भविष्य की घटनाओं की भविष्यवाणी की है; मैंने यह भी बताया है कि वर्तमान क्षण से उस दिन तक कितना समय बचा है (यह अंजीर के पेड़ की दृष्टान्त द्वारा आपको समझाया गया है), और इस प्रकार मैं आपको सीधे दहलीज पर ले आया हूँ। हालाँकि, अगर मैंने आपके लिए दरवाज़ा नहीं खोला है, तो वह आपके ही भले के लिए है" (*सेंट जॉन क्राइसोस्टोम* होमलीज 76 ऑन द गॉस्पेल ऑफ मैथ्यू, II. 1. 2., रूसी अनुवाद में, खंड III, पृष्ठ 321, 322–323)। "उन्होंने न्याय के समय के बारे में इसीलिए चुपचाप रहने का निर्णय लिया क्योंकि लोगों के लिए इसके बारे में सुनना लाभदायक नहीं था; क्योंकि निरंतर अपेक्षा धर्मपरायणता में अधिक उत्साही बनाती है, जबकि यह ज्ञान कि न्याय अभी बहुत दूर है, धर्मपरायणता में अधिक लापरवाह बना देता है, इस आशा में कि बाद में पश्चाताप करके उद्धार पाया जा सकता है। और वास्तव में, क्या यह संभव है कि वह जो उस घड़ी तक होने वाली सभी बातों को जानता था (क्योंकि उसने यह सब कहा) वह उस घड़ी को न जानता हो?" (*सेंट बेसिल द ग्रेट,* *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स* VII, पृ. 166)।

[585] "एक मनुष्य के रूप में, जो अन्य मनुष्यों के समान हो गए थे, वे प्रार्थना करते हैं कि पीड़ा उनसे दूर हो जाए; लेकिन परमेश्वर के रूप में, जो अपनी दिव्य प्रकृति से पीड़ा से अछूते हैं, वे पीड़ा और मृत्यु को स्वीकार करने के लिए तैयार थे" (*सेंट एथनासियस,* होमीली अगेंस्ट द एरियंस, इन द क्रिश्चियन रीडिंग्स फॉर 1840, III, पृ. 207)।

[586] *संत ग्रेगरी द थियोलोजियन,* होमीली 80, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स* III, पृ. 82–83 में; *संत अथेनासियस:* "जब वे कहते हैं: *'हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर! आपने मुझे क्यों छोड़ दिया?'* तो वे हमारी ओर से बोलते हैं, क्योंकि उन्होंने *एक दास का रूप धारण किया, मनुष्यों के*

संत ग्रेगरी द थियोलोजयिन कहते हैं, 'इसी दृष्टकिोण से, हम यह भी मान सकते हैं कि पुत्र को उनके *दुखों के माध्यम से,* साथ ही उनकी पुकार, उनके आँसू, उनकी प्रार्थना और उनकी उपासना की स्वीकृति (इब्रानयिों 5:7-8) के माध्यम से *आज्ञाकारिता में प्रशक्षिति कयिा गया:* यह सब हमारे लिए पूरा कयिा गया और चमत्कारकि रूप से एकजुट कयिा गया है। वह स्वयं, वचन के रूप में, न तो आज्ञाकारी थे और न ही अवज्ञाकारी (क्योंकि ये दोनों उन लोगों की वशिेषताएँ हैं जो अधीनस्थ और गौण होते हैं, जनिमें से एक सदाचारी होता है और दूसरा दंड का पात्र), बल्कि *एक सेवक के स्वरूप में* (फलि. 2:7), साथी-सेवकों और सेवकों के साथ सहानुभूति रखते हुए, ने स्वयं पर एक परायी समानता धारण की, स्वयं में मेरे सम्पूर्ण अस्तित्व और जो कुछ भी मेरा है, उसका प्रतनिधित्वि कयिा, ताकि वह स्वयं में मेरे सबसे बुरे गुणों को भस्म कर सके, जैसे आग मोम को भस्म करती है, या सूर्य सांसारकि वाष्प को भस्म करता है, और ताकि मैं, उसके साथ एकता के द्वारा, उस में भाग ले सकूँ जो उसके योग्य है।"[587]

इस प्रकार शास्त्र के उन अंशों की व्याख्या करने का उचति तरीका प्रदर्शति करने के बाद, जो पहली नज़र में पुत्र की दव्यिता के सद्धिांत का खंडन करते प्रतीत होते हैं, और उनमें से सबसे कठनि की व्याख्या करने के बाद, हम अन्य सभी, जो कहीं कम कठनि हैं, अंशों ,[588] की समीक्षा करना अनावश्यक समझते हैं, और हम इस सद्धिांत की पुष्टि के लिए ऑर्थोडॉक्स धर्मशास्त्र के एक अन्य स्रोत की ओर मुड़ते हैं।

§ 34. पवत्रि परंपरा से पुत्र की दव्यिता और पति के साथ उसकी एकसारता का प्रमाण।

प्राचीन ईसाई चर्च, जो सच्ची प्रेरति परंपरा की संरक्षक थी, ने नस्सिंदेह पहले तीन सदयिों के दौरान परमेश्वर के पुत्र की दव्यिता में बलि्कुल उसी तरह वशि्वास कयिा था जैसे आज सभी ऑर्थोडॉक्स ईसाई वशि्वास करते हैं; क्योंकि हमें यह ध्यान देना चाहिए कि वर्तमान मामले में, ठीक वैसे ही जैसे ईश्वर में व्यक्तयिों की त्रमिूर्ति के सद्धिांत में, परंपरा के सूत्र को चौथी शताब्दी से आगे, या प्रथम सार्वभौमकि परषिद से आगे तक खोजने की कोई आवश्यकता नहीं है, जसिके समय से, जैसा कि स्वयं स्वतंत्र वचिारक भी स्वीकार करते हैं, यीशु मसीह के दव्यिता के सद्धिांत को चर्च में पहले ही दृढ़ता से स्थापति कर दयिा गया था।

प्राचीन चर्च के परमेश्वर के पुत्र की दव्यिता में वशि्वास का प्रमाण दो प्रकार का है: कुछ आंतरकि कहला सकते हैं, अन्य बाहरी।

आंतरकि साक्ष्य में शामलि हैं:

१) नकियिा की परषिद से पहले चर्च में प्रयुक्त धर्म-वशि्वास या आस्था के स्वीकारोक्ति इनमें से कुछ में, यीशु मसीह की दव्यिता का वचिार संक्षेप में व्यक्त कयिा गया है, जैसे, उदाहरण के लिए, प्रेरतिों के धर्म-वशि्वास के रूप में जाने जाने वाले धर्म-वशि्वास में: 'मैं यीशु मसीह, उनके एकमात्र पुत्र, हमारे प्रभु, में वशि्वास करता हूँ,' — जबकि अन्य में इसे वस्तिार से और पूरी स्पष्टता के साथ प्रस्तुत कयिा गया है। इस प्रकार, प्रेरतिकि संवधिानों में नहिति धर्मवशि्वास में, यीशु मसीह को 'ईश्वर का एकमात्र पुत्र, सभी सृष्टि का प्रथम-जाया, पति की इच्छा से *सभी युगों से पूर्व उत्पन्न,* अकल्पति' कहा गया है; यरूशलेम की कलीसयिा के धर्म-वधिान में — "ईश्वर का एकमात्र पुत्र, जो सभी युगों से पहले पति से उत्पन्न हुआ, *सच्चा ईश्वर,* जसिके द्वारा सभी वस्तुएँ बनीं;" केसरयिा की कलीसयिा के

समान हो गए और एक मनुष्य के रूप में प्रकट हुए; उन्होंने स्वयं को नम्र कयिा, मृत्यु तक, यहाँ तक कि क्रूस पर मृत्यु तक आज्ञाकारी रहे, और इसी तरह (फलि. 2:7–8), और, जैसा कि यशायाह कहते हैं, *उन्होंने हमारे दोषों को स्वयं पर लयिा और हमारे रोगों को वहन कयिा* (यशा. 53:4); और इसलिए वह अपने लिए नहीं, बल्कि हमारे लिए पीड़ति हुए, और यह परमेश्वर द्वारा त्यागा जाना स्वयं मसीह नहीं, बल्कि हम थे, जनिके लिए वह संसार में आए" (क्रॉनकिल रीडगि्स 1840, III, पृ. 169–170 में प्रोटोप्रेज़बटिर एरयिन के शब्द)। *संत जॉन ऑफ डेमास्कस:* "मसीह कभी भी पति द्वारा परत्यिक्त नहीं हुए... परणिामस्वरूप, उन्होंने हमारी प्रकृति को अपने ऊपर ले लेने के बाद इस प्रकार कहा, और इसलिए कि उन्होंने स्वयं को हमारे समकक्ष रख लयिा; क्योंकि हम पाप के दोषी और एक शाप के अधीन थे, अवज्ञाकारी और अपराधी थे, और इसी कारण से परमेश्वर द्वारा परत्यिक्त थे" (सही समर्पण: ऑर्थोडॉक्स वशि्वास की व्याख्या, पुस्तक IV, अध्याय 18, पृ. 278)।

[587] होमीली 30, *द वर्क्स ऑफ़ द होली फ़ादर्स*, खंड III, पृ. 83.

[588] हालाँकि, जो कोई ऐसा करना चाहे, वह इन सभी अंशों की सबसे वस्तिृत परीक्षा *संत अथेनासयिस* (उनके एरयिनों के वरिुद्ध प्रबंध में), *संत बेसलि द ग्रेट* (पुस्तक 4, यूनोमयिस के वरिुद्ध, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स* VII, पृ. 144–178), *संत ग्रेगरी द थियोलोजयिन* (प्रवचन 29 और 30 में, *द वर्क्स ऑफ़ द होली फ़ादर्स* III, पृष्ठ 72–95) और अन्य धर्मपति के लेखन में जनि्होंने एरयिनों के वरिुद्ध लखिा। और *सेंट जॉन ऑफ डेमास्कस* भी इस प्रकार के अंशों को समझने के लिए वस्तिृत नयिम नरि्धारति करते हैं (एक्ज़ैक्ट एक्सपोज़शिन ऑफ़ द ऑर्थोडॉक्स फेथ, बुक IV, अध्याय 18: *ऑन द एक्सप्रेशन्स यूज़्ड कंसर्निंग क्राइस्ट*)।

धर्म-वधिान में — "ईश्वर का वचन, *ईश्वर से ईश्वर...,* सभी युगों से पहले पति से उत्पन्न;"[589] संत ग्रेगरी द वंडरवर्कर के धर्मवश्विास में, जो नयिो-केसरयिाई चर्च में लोगों को दैनकि शकि्षा के दौरान उपयोग कयिा जाता था — "एक से एक, *ईश्वर से ईश्वर...,* वह शक्तजिसिने सभी चीजों को बनाया..., अमर से अमर, शाश्वत से शाश्वत।"[590]

2) चौथी शताब्दी से पहले परषिदों में, या पादरयिों की एक परषिद की ओर से तैयार कए गए धर्म-सूत्र। ऐसा ही धर्म-सूत्र अलेक्जेंड्रयिा की कलीसयिा के पादरयिों का है, जसिे उन्होंने पौलुस ऑफ़ सैमोसैटा को लखिे एक पत्र में प्रस्तुत कयिा था, जसिने उद्धारकर्ता की दव्यिता को अस्वीकार कर दयिा था: "हम स्वीकार करते हैं," उन्होंने अन्य बातों के अलावा लखिा, ईश्वर की प्रतमिा, उनका वचन और उनकी बुद्धि—ईश्वर के पुत्र और सच्चे ईश्वर के रूप में, एक शाश्वत व्यक्तऔिर एक ही हाइपोस्टेससि। मनुष्यों के साथ ऐसा नहीं हो सकता: क्योंकमिनुष्य का वचन, बुद्धि, शक्तऔिर प्रतमिा मनुष्य के गुण हैं, और वे स्वयं में मौजूद नहीं हैं; और उनमें से कोई भी न तो एक मनुष्य है और न ही मनुष्य का पुत्र... इसके वपिरीत, परमेश्वर की प्रतमिा और जो वचन उनके साथ है, वह परमेश्वर और परमेश्वर का पुत्र है, सारभूत वचन (ἐνυπόστατος Λόγος), अर्थात्, पति से भन्नि एक सार (Hypostasis) का धनी। इस प्रकार पवत्रि पतिाओं ने स्वयं उनकी गवाही दी, और इस प्रकार उन्होंने हमें गवाही देने और वश्विास करने के लिए यह परंपरा दी है।" और आगे: "आप मसीह को केवल एक मनुष्य क्यों कहते हैं, और सच्चे परमेश्वर क्यों नहीं, जसिकी आराधना सारी सृष्टपिति और पवत्रि आत्मा के साथ करती है?... वह अदृश्य परमेश्वर हैं जो दृश्यमान हुए; क्योंकि परमेश्वर, जो देह में प्रकट हुए (1 तीमु. 3:16), एक स्त्री से उत्पन्न हुए, वही हैं जो दनि के प्रभात से पहले गर्भ से परमेश्वर पति से उत्पन्न हुए (भजन संहति 109:3)... वह स्वभाव से प्रभु और पति का वचन है, जसिके द्वारा पति ने सभी चीजों की रचना की, और उसे पवत्रि पतिाओं द्वारा पति के समतत् कहा जाता है... क्योंकउिन्होंने (पवत्रि पतिाओं ने) हमें उनके बारे में परमेश्वर के रूप में सखिाया।"[591] ऐसा ही अंताकयिा की परषिद (269 ईस्वी) का भी स्वीकारोक्तहै, जो उसी वधिर्मी को लखिे एक पत्र में व्यक्त की गई है: "हमने उस वश्विास को लखिति रूप में स्थापति करने का नश्चिय कयिा है, जसिे हमने सबसे पहले ग्रहण कयिा था, जो हमें सौंपा गया है और जसिे कैथोलकि और पवत्रि चर्च आज तक धन्य प्रेरतिों की उत्तराधकिार द्वारा धारण करती है, जो वचन के प्रत्यक्षदर्शी और सेवक थे (लूका 1:2), और जसिे व्यवस्था, भवष्यिद्वक्ताओं और नए नयिम में प्रचारति कयिा गया है। यही है: परमेश्वर अजन्मा, एक, बनिा आरंभ के, अदृश्य है... पुराने और नए नयिमों से अपने पुत्र को जानकर, हम उसकी यह स्वीकारोक्तऔिर घोषणा करते हैं कि वह जन्मा हुआ, एकमात्र पुत्र, अदृश्य परमेश्वर का स्वरूप, सारी सृष्टकिा पहलौठा (कुलु. 1:15), बुद्धऔिर वचन है, और ईश्वर की शक्त(1 कुरन्थियिों 1:24), जो युगों से पहले वद्यिमान है, ईश्वर पुत्र, जो स्वभाव और उपाधसिे ईश्वर है। लेकनि जो कोई इस तथ्य को अस्वीकार करता है कपिरमेश्वर का पुत्र संसार की सृष्टसिे भी पहले परमेश्वर था, और यह कहता है कपिरमेश्वर के पुत्र को परमेश्वर के रूप में स्वीकार करना दो परमेश्वरों के अस्तत्वि को स्वीकार करना है, हम उसे चर्च की मान्यताओं से अलग मानते हैं—और इस बात में सभी कैथोलकि चर्च हमसे सहमत हैं... और सभी दव्यि प्रेरति धर्मग्रंथ परमेश्वर के पुत्र को परमेश्वर के रूप में प्रस्तुत करते हैं।"[592]

3) ईश्वर के पुत्र या यीशु मसीह की दव्यिता को अस्वीकार करने वाले वधिर्मयिों को ऑर्थोडॉक्स समुदाय से चर्च द्वारा दी गई नरि्वासन, अर्थात्: सेरन्थिस, एबयिॉन, थयिोडोटस, कार्पोक्रैटस, सामोसाटा के पॉल और अंत में, एरयिस तथा उनके सभी अनुयायियों का नरि्वासन।[593] इन मामलों में, चर्च का स्वयं परमेश्वर के पुत्र की दव्यिता में वश्विास सबसे स्पष्ट और सबसे गंभीर तरीके से व्यक्त कयिा गया था।

---

[589] उपरोक्त § 28 और टप्पिणयिाँ 486–487 देखें।

[590] इस धर्म-वश्विास और *संत ग्रेगरी ऑफ़ नसिसा द्वारा* इसके ऐतहिासकि ववरिण को, पूरब की कैथोलकि और प्रेरति चर्च की ऑर्थोडॉक्स स्वीकारोक्तकि अंत में देखें। "कथावाचक कहता है, संत ग्रेगरी (चमत्कारकि) ने अपने उत्तराधकिारयिों के लिए एक प्रकार की वरिासत के रूप में पांडुलपिकि रूप में ईश्वर-प्रदत्त सद्धिांत (वश्विास-सूत्र) की रचना की। उस देश में रहने वाले लोग, इस शकि्षा के अनुसार प्रतदिनि शकि्षति होते हुए, आज तक कसिी भी वधिर्म से प्रभावति नहीं हुए हैं।" (पृ. 232–233, मॉस्को 1838)।

[591] बबि्लयिोथ. वेटरन. पैट्र. खंड 1, पृ. 273–278, पेरसि, 1624, और क्र.ि च्ट. 1840, IV, पृ. 10, 12, 14.

[592] कोलेक्ट. कॉन्सलिीओर. *लैबेई,* खंड 1, पृ. 844, पेरसि, 1671, और क्र.ि च., 1840, I, पृ. 238–239, 241.

[593] ऊपर टप्पिणी 499 देखें; साथ ही — *आइरेनयिस,* *कॉन्ट्रा हेरेसेस*, III, अध्याय 19; *यूसेबयिस,* *चर्च का इतहिास*, V, अध्याय 28, पृ. 315, रूसी अनुवाद में, सेंट पीटर्सबर्ग में प्रकाशति 1848: "क्या यह उनके (मसीही संप्रदायियों) लिए शर्म की बात नहीं है कि वे (पोप) वक्टिर के बारे में इस तरह झूठ बोलते हैं, यह अच्छी तरह जानते हुए कि उन्होंने चमड़ा कमाने वाले थयिोडोतस को बहष्कृत कर दयिा था, जो इस धर्मद्रोह के

4) प्रारंभकि चर्च के व्यक्तगित पादरयिों और शकि्षकों के कथन।
प्रेरतिकि पतिाओं में —

a) *रोम के संत क्लेमेंट*, अपने प्रथम पत्र में कोरन्थियों को, उनके पूर्व आचरण की प्रशंसा करते हुए, उन्हें याद दलिाते हैं कि उस समय वे नरिंतर *ईश्वर की पीड़ाओं को* अपनी आँखों के सामने रखते थे;[594] और अपनी दूसरी पत्रकिा में, शुरू से ही, वह उन्हें नरि्देश देते हैं: 'भाइयो, तुम्हें मसीह यीशु के वषिय में वैसा ही सोचना चाहिए जैसा तुम परमेश्वर के वषिय में सोचते हो, जीवतों और मरे हुओं के न्यायी के रूप में;'[595]

b) *संत इग्नासयिस द गॉड-बेयरर* अपनी पत्रकिाओं में कई बार उन्हें ईश्वर, अवतारति ईश्वर, मानव रूप में ईश्वर, ईश्वर का शाश्वत वचन और दविियता में ईश्वर का पुत्र के रूप में संबोधति करते हैं;[596] वे उनके रक्त को ईश्वर का रक्त कहते हैं, और अपने ईश्वर की पीड़ाओं का अनुकरण करने की इच्छा रखते हैं;[597]

ग) *प्रेरतिकि पतिाओं* में से *एक*, जसिने अपना नाम गुप्त रखा, कहते हैं कि ईश्वर ने 'मानव जातकि पास अपने कसिी भी सेवक, एक देवदूत, या एक राजकुमार को नहीं भेजा...; बल्कि स्वयं सभी चीजों के वास्तुकार और सृष्टकिर्ता (δηρουργόν τών όλων)..., जनिके द्वारा सभी चीजों की व्यवस्था और आज्ञा दी जाती है, और जनिके अधीन सभी चीजें हैं....; उसने उसे वैसे भेजा जैसे एक राजा अपना राजकुमार भेजता है; उसने उसे ईश्वर के रूप में भेजा (ώς θεόν έπεμψεν);"[598]

(d) *संत पॉलीकार्प* उन्हें ईश्वर के शाश्वत पुत्र के रूप में संदर्भति करते हैं,[599] , जनिके अधीन स्वर्ग और पृथ्वी की सभी वस्तुएँ हैं और सभी आत्माएँ उनकी सेवा करती हैं।[600]

दूसरी शताब्दी के शकि्षकों में —

(a) *संत जस्टनि* का दावा है कि यीशु मसीह परमेश्वर के प्रथमज पुत्र और स्वयं परमेश्वर दोनों हैं,[601] संख्या में दूसरे लेकनि शक्तमिें नहीं;[602] कि वही पुराने नयिम में इब्राहीम, इसहाक और याकूब के परमेश्वर के नाम से प्रकट हुए थे (अपोलाजी 1, II. 63); कि उसकी दविियता ईश्वर से उसके वास्तवकि जन्म से स्पष्ट है (डायलॉग वदि ट्रायफोन, अध्याय 125, 126), और जोड़ते हैं: 'ज्ञान का वचन, जो स्वयं ईश्वर है, सभी के पतिा से उत्पन्न, इस (रहस्यमय जन्म) के संबंध में मेरी गवाही देता है' (उपरोक्त, अध्याय 61); अंत में, यहूदयिों को संबोधति करते हुए, वह कहते हैं: 'यदि आप ने भवषि्यवक्ताओं के वचनों पर और अधकि सावधानी से मनन कयिा होता, तो आप यह अस्वीकार नहीं करते कि वह (यीशु मसीह) एकमात्र ईश्वर और अजन्मे ईश्वर के पुत्र हैं' (उपरोक्त, अध्याय 121);

नेता और पतिा थे और यह दावा करने वाले पहले व्यक्तथि े कि मसीह केवल एक इंसान थे? यदि विक्टिर, उनके अनुसार, वैसा ही सोचता था जैसा यह अपमानजनक धर्मनदिा सखिाती है, तो वह थयिोडोतस को, जो ऐसी वधिर्म का प्रवर्तक था, बहषि्कृत क्यों करता?"

[594] .... परमेश्वर के वरदानों पर भरोसा करते हुए और उसके वचनों पर पूरा ध्यान देते हुए, तुम अपने हृदय में गहरे रूप से प्रभावति हुए, और उसके दुख-दर्द तुम्हारी आँखों के सामने थे। 1 कुरन्थियों, अध्याय 2.

[595] भाइयो, मैं चाहता हूँ कि तुम यीशु मसीह के वषिय में इस प्रकार सोचो, जैसे परमेश्वर के वषिय में सोचते हो.... 2 कुरन्थियों, अध्याय 1, श्लोक 2।

[596] "मैं मसीह यीशु की स्तुति करता हूँ—मेरे परमेश्वर (τόν θεόν)—जन्हिोंने तुम्हें इतनी अधकि रोशनी दी है; क्योंकि मैंने जाना है कि तुम... हमारे प्रभु में वशि्वास से परपिूर्ण हो, जो देह में दाऊद के वंश से सच्चे रूप में हैं, परमेश्वरत्व (θεότητα) के अनुसार परमेश्वर के पुत्र हैं।" (Epist. ad Smyrn. II. 1). "हमारे ईश्वर (ό Θεός) यीशु मसीह स्वयं को अधकितर इस रूप में प्रकट करते हैं कि वे पतिा में वदि्यमान हैं" (ad Roman, ch. 3. Conf. ad Trail, n. 7; ad Polyc. n. 8). "शरीर और आत्मा दोनों का एक ही चकित्सिक है, *ईश्वर* (ό Θεός), जो जन्म *से है* और जसिकी कोई शुरुआत नहीं है (άγέννητος), *जो देह में प्रकट* हुए… हमारे प्रभु यीशु मसीह" (ad Ephes. n. 7). "हमारे ईश्वर (ό Θεός), यीशु मसीह, मरयिम के गर्भ में थे" (उसी में, संख्या 18; कन्फ., संख्या 19, 20)। "केवल एक ही परमेश्वर है, जसिने स्वयं को अपने पुत्र—यीशु मसीह के द्वारा प्रकट कयिा, जो उसका *शाश्वत वचन* (Λόγος άΐδιος) है" (मैग्नेशयिाई लोगों के नाम पत्र, संख्या 8)।

[597] "तुम, परमेश्वर के अनुकरणकर्ता, *परमेश्वर के लहू* (έν αϊματι Θεοϋ) *से* जीवति कए गए, इस कार्य को पूरी तरह से पूरा कर चुके हो..." (इफसियिों को पत्र, n. 1). "मेरे अनुकरणकर्ता बनो, जैसे मैं अपने परमेश्वर के उत्साह का अनुकरण करता हूँ" (रोमयिों को पत्र, n. 14).

[598] जनि प्रेरति पतिा से ये शब्द संबंधति हैं, वे केवल डायोग्नेटस को लखिे पत्र के लेखक के रूप में जाने जाते हैं, जसिसे हमने इन्हें लयिा है। देखें Epist. id. Diognetum, अध्याय 7 और 11, Opp. Patr. Apostol. में, पृष्ठ 312–314 और 320। ट्यूबगिेन, 1847।

[599] एपसि्ट. स्मर्न. एक्ल. दे मोर्ट. सेंट. पॉलीकार्प. n. 14.

[600] जनिके अधीन सभी चीजें, स्वर्गीय और सांसारकि, हैं; जनिकी हर साँस पूजा करती है। संत पॉलीकार्प का फलिप्पियों को पत्र, संख्या 11.

[601] जो परमेश्वर का पहलौठा वचन है और जो परमेश्वर के रूप में वदि्यमान है। एपोलॉजी I, संख्या 63.

[602] मैं ईश्वर को एक और मानता हूँ, परन्तु अपने मन में नहीं। ट्रायफोन के साथ संवाद, अध्याय 56.

(ख) *टेटियन* मूर्तविदयिों के समक्ष पृथ्वी पर *देह में ईश्वर के* प्रकट होने की वास्तवकिता का बचाव करते हैं, और पवत्रि आत्मा को रूपक रूप से दुखति ईश्वर के सेवक (διάκονον τοϋ τεπονθότος θεοΰ) के रूप में संदर्भति करते हैं;[603]

ग) *संत आइरेनियस,* अपनी कृति 'वरिोधियों के वरिुद्ध' (Against Heresies) में, उद्धारकर्ता को एकमात्र ईश्वर (solus Deus) (पुस्तक III, अध्याय 8, II. 3) कहने के बाद, यह अवलोकन करते हैं कि ईश्वर और सभी के प्रभु और उनके पुत्र यीशु मसीह के अलावा कसिी को भी ईश्वर नहीं कहा जाता है (III, 6, 21); कि स्वर्गदूतों को कभी भी सख्त अर्थ में ईश्वर का नाम नहीं दयिा गया, बल्कि ऐसे मामलों में उनकी सीमति प्रकृति को इंगति करने के लिए हमेशा कोई वशिेषण जोड़ा जाता था (III, 6, 3, 5); कि मिगसि् (Magi) ने यीशु मसीह को उपहार इसलिए लाए क्योंकि वह परमेश्वर हैं (III, 9, 2), और यह कि 'सभी भवषि्यद्वक्ताओं और प्रेरतिों, और स्वयं आत्मा, उन्हें उचति अर्थ में, परमेश्वर, और प्रभु, और शाश्वत राजा, और एकमात्र पुत्र, और देहधारी वचन कहते हैं' (III, 19, 2);

(d) *सार्डसि के मेलटिन* मसीह को ईश्वर और मनुष्य दोनों बताते हैं,[604] और यह कि ईसाई पत्थरों की नहीं, बल्कि वचन-ईश्वर की पूजा करते हैं।[605]

तीसरी शताब्दी के शकि्षकों में —

क) *टर्तुल्लियन* लखिते हैं कि मसीह सभी के लिए ईश्वर और प्रभु हैं, ईश्वर से ईश्वर, जैसे प्रकाश से प्रकाश, पति के सार से उत्पन्न पुत्र और पति के समान स्वभाव वाले;[606] वह ईश्वर के अवतार की संभावना को दर्शाता है,[607] और यह अवलोकन करता है कि 'ईसाइयों का यह कर्तव्य है कि वे उस ईश्वर में वशि्वास करें जो मर गया, और फरि भी हमेशा के लिए जीवति है', और यह कि हम अपने आप के नहीं हैं, बल्कि हमें ईश्वर, सूली पर चढ़ाए गए ईश्वर के रक्त से खरीदा गया है;[608]

b) *अलेक्जेंड्रयिा के क्लेमेंट* वचन के बारे में समान स्पष्टता के साथ बात करते हैं, जो ईश्वर और मनुष्य दोनों हैं, और सभी अच्छी चीजों का स्रोत हैं; उद्धारकर्ता ईश्वर के बारे में, जो ईश्वर के रूप में पहले से जानता है कि वे उससे क्या पूछना चाहते थे,[609] और नम्निलखिति नरि्देश देते हैं: 'हे मनुष्य, उस मनुष्य पर वशि्वास करो जो एक साथ ईश्वर, जीवति ईश्वर है, जसिने पीड़ा सहन की और जसिकी पूजा की जाती है';[610]

ग) *ओरजिन* यीशु को परमेश्वर कहते हैं,[611] अदृश्य परमेश्वर का स्वरूप और हमारे लिए पति का प्रकटीकरण (उत्पत्ति 10:6 पर; यूहन्ना के सुसमाचार पर, खंड II, II.11), परमेश्वर और मनुष्य (मत्ती के सुसमाचार पर, खंड XVII, II.20), जसिके पास वह सब कुछ है जो पति के पास है (वलिाप पर, प्रवचन VIII, II. n 2), पति, ईश्वर और प्रभु के साथ एक और वही हैं,[612] और जनि्हें चर्च पति के साथ अवभिाज्य रूप से दैवीय सम्मान अर्पति करती है (सेल्सस के वरिुद्ध VIII, 26, 67);

---

603 *टैटियन,* ग्रीकों के वरिुद्ध, क्रमांक XXI और XIII।

604 *यूसेबियस,* *चर्च इतहिास*, पुस्तक V, अध्याय 28 में।

605 एपोल. फ्रैग्म. *क्रॉनकि. पाश.* में, गैलैंड, खंड 1, पृ. 678.

606 मसीह सभी का ईश्वर और प्रभु है (यहूदयिों के वरिुद्ध, अध्याय 7)। ईश्वर से ईश्वर, जैसे प्रकाश से प्रकाश (अपील, अध्याय 21)। मैं पुत्र को कहीं और से नहीं, बल्कि पिता के सार से प्राप्त करता हूँ (प्राक्स. के वरिुद्ध, अध्याय 4)। पति के सार के सह-सारभूत (वही, अध्याय 3)।

607 मार्सयिन के वरिुद्ध II, 16; III, 12; मसीह के शरीर पर, अध्याय 3, 4।

608 ईसाइयों का यह भी वशि्वास है कि ईश्वर मरा, और फरि भी सदा-सदा के लिए जीवति है (मार्कयिन के वरिुद्ध, II, 16)। हम अपने आप के नहीं हैं, बल्कि हमें एक कीमत पर खरीदा गया है; और कसि कीमत पर? ईश्वर के लहू से (अक्सोर के वरिुद्ध, II, 3)। ईश्वर को सूली पर चढ़ाया गया... (मार्कयिन के वरिुद्ध, II, 27)।

609 वह वचन है, एकमात्र जो ईश्वर और मनुष्य दोनों हैं.... Coh. I; Conf. Strom. II, 9; Quis div. salv. VI; Paedag. 1, 8.

610 हे मनुष्य, उस पर वशि्वास कर जो मानव और ईश्वर दोनों है, उस ईश्वर पर जसिने दुख उठाया और जसिे जीवति ईश्वर के रूप में पूजा जाता है। कोह. X.

611 ईश्वर यीशु (Contr. Cels. V, 66)। ईश्वर यीशु (ibid. V, 51)। अतः ईश्वर, और, धर्मग्रंथ के अनुसार, उद्धारकर्ता (Select. in Genes. IX, 6)।

612 परन्तु यह कि तुम यह पहचान सको कि पिता और पुत्र में एक ही सर्वशक्तमिान शक्ति है, ठीक वैसे ही जैसे *परमेश्वर और प्रभु पति के साथ एक ही हैं,* प्रकाशतिवाक्य में यूहन्ना को इस प्रकार बोलते हुए सुनो: *'प्रभु परमेश्वर, जो है, और जो था, और जो आनेवाला है, सर्वशक्तमिान,* ऐसा *कहता है।'* क्योंकि आने वाले की कौन है, यदि मसीह नहीं? (De princip. 1, 2, n. 10)। अतः हम एक ईश्वर की उपासना करते हैं, जैसा कि हमने प्रदर्शति कयिा है, पति और पुत्र की (Contr. Cels. VIII, 12)।

(घ) *संत हिप्पोलीटस,* मसीह के विषय में प्रेरित के वचनों (रोमियों 9:6) का संदर्भ देते हुए, लिखते हैं: "*जो* सभी से ऊपर *है,* वह परमेश्वर है: क्योंकि इस प्रकार वह निडर होकर बोलता है: *'सब कुछ मेरे पिता ने मुझे सौंप दिया है* (मत्ती 11:27); ईश्वर, जो सर्वोपरि है, धन्य है, का जन्म हुआ, और, मनुष्य बनकर, सदा के लिए ईश्वर है;"[613]

ई) *अलेक्जेंड्रिया के संत डायोनिसियस* ने, जब कुछ पादरियों ने उनके लेखन में अस्पष्ट अभिव्यक्तियों के आधार पर, पिता के साथ पुत्र की एकसारता के संबंध में उन पर विधर्म का संदेह करना शुरू कर दिया, तो उन्होंने एक अलग पत्र में अपना जोरदार बचाव किया, जिसमें उन्होंने पिता और पुत्र की समानता और एकसारता दोनों को अत्यंत स्पष्टता के साथ स्वीकार किया;[614]

(f) *संत साइप्रियन* कहते हैं: "हमारे पापों के लिए हमारे पास एक वकील और मध्यस्थ हैं, हमारे प्रभु और परमेश्वर, यीशु मसीह (पत्र 3, एक अन्य संस्करण के अनुसार, 7); 'वह हमारा ईश्वर है; वह मसीह है (व्यर्थ की मूर्तियों के विषय में), और जो कोई यह विश्वास नहीं करता कि मसीह ईश्वर है, वह उसका मंदिर नहीं बन सकता' (पत्र 73)।

मसीहा की दिव्यता की पुष्टि यूसेबियस द्वारा उद्धृत एक समकालीन लेखक की गवाही के अनुसार, *अरनोबियस,*[615] *पाटारा के मेथोडियस,*[616] *रोम के फेलिक्स,*[617] *अलेक्जेंड्रिया के पीटर*[618] और उस समय के सभी अन्य ऑर्थोडॉक्स शिक्षकों द्वारा भी उतनी ही स्पष्ट रूप से की गई थी। मसीहा की दिव्यता के सिद्धांत के चर्च में पोप विक्टर के समय के बाद ही प्रकट होने के धर्मद्रोहियों के दावे का खंडन करते हुए, यह लेखक कहता है: 'उनकी बातें शायद विश्वसनीय होतीं, यदि उन्हें पहले तो, खंडित नहीं किया गया होता, पवित्र शास्त्र द्वारा, और दूसरी बात, कुछ भाइयों के लेखन द्वारा, जो विक्टर के समय से पहले प्रकाशित हुए और मूर्तिपूजकों तथा उस समय की संप्रदायों के विरुद्ध सत्य के रक्षण में लिखे गए थे: मैं जस्टिन, मिल्टियाडेस, टेटियन, क्लेमेंट और कई अन्य लोगों की पुस्तकों की बात कर रहा हूँ, जिनमें से सभी मसीह को ईश्वर कहते हैं। इसके अलावा, आइरेनियस, मेलिटिन और अन्य लोगों की रचनाओं से कौन अनभिज्ञ है, जिनमें मसीह को ईश्वर और मनुष्य दोनों कहा गया है? और प्राचीन काल में विश्वासयोग्य भाइयों द्वारा कितने भजन और स्तोत्र रचे गए, जो मसीह को परमेश्वर का वचन कहते हैं और उनकी दिव्यता की महिमा करते हैं!"[619]

5) शहीदों के बयान। जब सम्राट ट्राजन (वर्ष 120 में) ने शहीद सिम्फोरोसा को अपनी देवताओं के सामने धूप न जलाने पर उनके लिए बलिदान करने की धमकी दी, तो उसने अपने उत्पीड़क से कहा: 'तुम्हारे देवता मुझे बलिदान के रूप में स्वीकार नहीं कर सकते; लेकिन यदि मैं मसीह, मेरे *ईश्वर के* नाम पर जलाई जाती हूँ, तो मैं तुम्हारे राक्षसों को और भी अधिक भस्म कर दूँगी।'[620] फेलिसिया और उसके सात बेटों की शहादत के दौरान (वर्ष 150 में), उनमें सबसे छोटे मार्शल ने यातना देने वाले से कहा: "ओह, काश तुम जान पाते कि मूर्तिपूजकों के लिए क्या-क्या दंड इंतज़ार कर रहे हैं! लेकिन ईश्वर अभी भी तुम पर और तुम्हारी मूर्तियों पर अपना क्रोध प्रकट करने में देरी कर रहे हैं। जो कोई भी यह स्वीकार नहीं करता कि मसीह *सच्चा ईश्वर* है, उसे अनंतकाल की आग में डाल दिया जाएगा।"[621] शहीद डोनाटा (वर्ष 200) ने भी अपने यातनाकर्ता के सामने कहा: "हम सीज़र का सम्मान करते हैं, लेकिन हम मसीह, *सच्चे ईश्वर,* के प्रति भय और श्रद्धा रखते हैं।"[622] शहीद पीटर (200 ईस्वी में), यद्यपि तब भी एक युवक थे, जब उन्हें एक विशेष मूर्तिपूजक

---

[613] Contra Noët. अध्याय 6. परमेश्वर, जो सच्चे अर्थ में परमेश्वर है। Adv. Jud. अध्याय 4. Conf. adv. Beron. et Helic. n. 2 और St Theophilus पर प्रवचन n. 10.

[614] रोम के डायोनिसियस को पत्र: 'जैसा कि मैंने आपको एक अन्य पत्र में भी लिखा है, जिसमें मैंने मुझ पर लगाए गए झूठे आरोप का खंडन किया था—अर्थात् कि मैं यह नहीं कहता कि मसीह ईश्वर के समभाविक हैं' (*अथानासियस,* खंड 1, पृ. 255)।

[615] इसलिए, मसीह—हालाँकि आपके लिए वह आपकी इच्छा के विरुद्ध ईश्वर हैं—मैं कहता हूँ, ईश्वर हैं; क्योंकि यह अक्सर कहा जाना चाहिए, ताकि अविश्वासियों के कान चुप हो जाएँ और उनका सुनना बाधित हो जाए... विरुद्ध गेंटायल्स II, 60.

[616] "हम विश्वास करते हैं कि पुत्र में, *उनकी इच्छा की सुसन्तुष्टि के अनुसार* (इफिसियों 1:5), जो हमारे लिए मनुष्य बने, पिता आत्मा के साथ वास करते हैं, उनसे एकसार, अविभाजित दिव्यता के माध्यम से" (*मेथोडियस,* ऑन साइमियन एंड अन्ना, संख्या 6)।

[617] वह परमेश्वर का शाश्वत पुत्र और वचन है, परन्तु परमेश्वर द्वारा उठाया गया कोई मनुष्य नहीं... फिर भी, यद्यपि वह पूर्ण परमेश्वर था, वह एक साथ एक पूर्ण मनुष्य भी बन गया (एपिस्टल टू मैक्सिमि, बिशप एंड क्लर्सी ऑफ़ अलेक्जेंड्रिया)।

[618] .... वह स्वभाव से ईश्वर था, और स्वभाव से मनुष्य बना (De adventu Domini, fragment in *Routh,* Reliqu. S. III, 346)।

[619] *यूसेबियस,* चर्च का इतिहास, पुस्तक V, अध्याय 28, पृष्ठ 314–315, 1848 के रूसी अनुवाद से।

[620] *रुइनार्ट,* *एक्टा प्राइम. मार्टिर. सिन्सेरा*, *पास.* *8; *सिम्फोरो.* पृ. 24, 2nd संस्करण.

[621] उपरोक्त, पासियो एस. *फेलीसिटी,* पृ. 27.

[622] उपरोक्त। *Acta proconsul. Martyr. *Scillitan.* पृ. 87।

देवी को बलदिान चढ़ाने के लिए कहा गया, तो उन्होंने उत्तर दयिा: "नहीं, मुझे प्रार्थना, हृदय की पश्चाताप और स्तुति का बलदिान चढ़ाना है, जीवति और सच्चे ईश्वर, सभी युगों के राजा, मसीह को।"[623]

मसीह उद्धारकर्ता की दविय्ता में प्राचीन चर्च के वशि्वास के **बाहरी प्रमाणों में** शामलि हैं:

1) कुछ मूर्तपिूजकों और यहूदयिों के ववि रण। प्लनिी द यंगर ने सम्राट ट्राजन को लखिा कि ईसाइयों की एक प्रथा है कि जैसे ही दनि का उदय होता है, वे एकत्रति होकर मसीह को *ईश्वर के रूप में* स्तुति का भजन गाते हैं[624] सम्राट हैड्रयिन ने अपने पत्र में सर्वयिानस को लखिा कि अलेक्जेंड्रयिा के कुछ लोग सेरापसि की *पूजा करते हैं*, जबकि अन्य मसीह की *पूजा* करते हैं।[625] ल्यूकेन ने मसीहयिों को उस व्यक्ति को दविय् सम्मान और पूजा देने के लिए फटकार लगाई जसिे फलिस्तिीन में सूली पर चढ़ाया गया था, और उनके लिए ग्रीस के सभी देवताओं को त्याग देने के लिए भी।[626] सेल्सस ने इस ईसाई वशि्वास का मज़ाक उड़ाया कि स्वयं ईश्वर मानव जाति को उद्धार देने के लिए पृथ्वी पर आए, कि ईश्वर का जन्म हुआ और उन्हें सूली पर चढ़ाया गया, और उन्होंने दावा कयिा कि अवतार का ईसाई सद्धिांत यह दर्शाता है कि ईश्वर बदल गए थे।[627] अन्य बहुदेववादयिों ने भी ईसाइयों पर बलि्कुल वही आरोप लगाए।[628] जस्टनि द मार्टायर की प्रसद्धि कृति में यहूदी ट्रायफोन इसे अवशि्वसनीय और असंभव (ἄπιστον καί ἀδύνατον) मानता है, जो ईसाई शकि्षा के वपिरीत है, कि ईश्वर मनुष्य बन गया (डायलॉग वदि ट्रायफोन II. 68)। एक अन्य यहूदी, ओरजिन की सेल्सस के वरिुद्ध समान रूप से प्रसद्धि रचना में, आपत्ति जताता है, पूछता है कि मसीह मस्रि क्यों भागे, जबकि *ईश्वर के लिए* मृत्यु से डरना अनुचति है, और क्या महान ईश्वर अपने ही पुत्र (τόν 'ίδιον ϋιόν) की रक्षा करने में असमर्थ था।[629] यह भी ध्यान देने योग्य है कि जब संत پولकिार्प की शहीद की मृत्यु हुई, तो यहूदयिों ने प्रांतपाल से वनिती की कि वे शहीद के शरीर को ईसाइयों को न सौंपें, यह डर व्यक्त करते हुए कि ईसाई, सूली पर चढ़ाए गए को छोड़कर, नए पीड़ति को *देवता बनाना* (σέβεσθαι) शुरू कर सकते हैं;[630] परणिामस्वरूप, यहूदयिों को यह ज्ञात था कि ईसाई मसीह को ईश्वर के रूप में पूजते हैं।

2) संप्रदायियों की आवाज़। हम, एक ओर, नाज़रेनयिों और डोकेटस्टिों का उल्लेख करते हैं, जो ईसाई धर्म की शुरुआत से ही उभरे और जो नस्सिंदेह यीशु मसीह की दविय्ता में वशि्वास करते थे, फरि भी चर्च द्वारा इस बात के लिए उन पर थोड़ी भी नदिा नहीं की गई; इसके वपिरीत, चर्च ने बाद वालों की नदिा की, वशिेष रूप से इसलिए कि, यद्यपि वे केवल उद्धारकर्ता की दविय्ता में वशि्वास करते थे, उन्होंने उनके मानवीय स्वभाव से इनकार कर दयिा और उन्हें केवल एक *काल्पनकि, भूतयिा* शरीर प्रदान कयिा, क्योंकि वे इसे एक मनुष्य के खुरदरे मांस में लपिटने के लिए ईश्वर के योग्य नहीं मानते थे।[631] दूसरी ओर, हमारे मन में अरिन हैं, जन्होंने वचन की दविय्ता को अस्वीकार कर दयिा; या, अधकि सटीक रूप से, हमारे मन में वह तरीका है जसिसे उन्होंने अपनी झूठी शकि्षा का बचाव कयिा। यह सर्ववदिति है कि जैसे ही यह वधिर्म उभरता है, रूढ़वािदी पादरयिों ने इसे खंडति करते हुए अन्य बातों के साथ-साथ प्रारंभकि चर्च-पति की प्रामाणकिता की ओर लगातार इशारा कयिा, जबकि एरयिनों ने हर संभव तरीके से इससे बचते हुए केवल धर्मग्रंथों की मनमाने व्याख्या तक ही सीमति रहे।

---

[623] उपरोक्त *Acta martyr. *Petri, Andreae* आदि*, पृ. 159.

[624] ... वे रोज़ाना भोर से पहले इकट्ठा होने की आदत रखते थे, और एक-दूसरे के सामने *मसीह को, जैसे ईश्वर को,* छंद सुनाते थे... (पुस्तक X, पत्र 97).

[625] ... कुछ उसे सेरापसि कहते हैं, अन्य मसीह की पूजा करते हैं... (देखें *लैम्प्रीडयिस,* अलेक्जेंडर सेवरस के जीवन में)।

[626] यात्री की मृत्यु पर, n. P: 'वे अभी भी उस महान व्यक्ति का सम्मान करते हैं, जसिे फलिस्तिीन में सूली पर चढ़ाया गया था।' तुलना करें: वही, टप्पिणी 13: जबकि वे ग्रीक देवताओं का परत्यिाग करते हैं, वे अपने उस बुद्धमिान व्यक्ति की पूजा करते हैं जसिे पत्थर मारकर मार डाला गया था।

[627] *ओरजिन,* *कॉन्ट्रा सेल्सम*, IV, II, 5, 7, 8, 10; VII, II, 13; VIII, II, 12, 15, 41 में।

[628] देखें *टर्टुलयिन,* *यहूदयिों के वरिुद्ध*, अध्याय 7, 9, 11, और *अर्नोबयिस,* *गैर-यहूदयिों के वरिुद्ध*, 1, संख्या 23, 24.

[629] ..... क्योंकि ईश्वर के लिए मृत्यु से डरना उचति नहीं था.... (सेल्सस के वरिुद्ध, पुस्तक 1, II. 66)।

[630] *यूसेबयिस,* *चर्च का इतहिास*, IV, अध्याय 15, पृ. 217, 1848 के रूसी अनुवाद से।

[631] नाज़रेनयिों के यीशु मसीह की दविय्ता में वशि्वास की गवाही *शहीद जस्टनि,* और *धन्य जेरोम और ऑगस्टीन* (V. apud *Le Quien,* *Dissert. Damascen.* VII) द्वारा दी गई है। जहाँ तक डोकटस्टि्स का सवाल है, देखें *आइरेनयिस* (*Adv. Haer.* III, 17, 18), *क्लेमेंट ऑफ़ अलेक्जेंड्रयिा* (पेडाग. II, 8), *ओरजिन* (इन जोआन. वॉल. IV, पृ. 165, पेरसि 1759), *पैम्फलिस* (इन बबि्लयिोथ. पैट्र. *गैलांडी,* वॉल. IV, पृ. 23) और अन्य।

अलेक्जेंड्रिया के बिशप अलेक्जेंडर, जो एरियस की निंदा करने वाले पहले व्यक्ति थे, ने कहा, 'वे नहीं चाहते कि प्राचीन काल का कोई भी व्यक्ति उनसे तुलना किया जाए, न ही वे जो हमारे युवा दिनों में हमारे शिक्षक थे... वे स्वयं को सभी से बुद्धिमान बताते हैं, स्वयं को धर्मसिद्धान्तों के आविष्कारक के रूप में प्रस्तुत करते हैं, और घमंड करते हैं कि केवल उन्हें ही ऐसी सच्चाइयाँ प्रकट हुई हैं जो पहले किसी भी नश्वर के मन में कभी नहीं आई थीं।"[632]

तदनुसार, यह निष्कर्ष निकलता है कि अरिअनों को लगा कि ईसाई प्राचीनता उनके पक्ष में नहीं थी, और उन्होंने स्वयं यह स्वीकार किया कि वे अपने झूठे सिद्धांत के आविष्कारक थे। अलेक्जेंड्रिया के संत अथेनासियस ने, निकिया परिषद के निर्णयों पर अपने प्रबंध में प्राचीन पिताओं के कई प्रमाण उद्धृत करने के बाद, अरिअनों से निम्नलिखित शब्दों में कहा: "हमने दिखाया है कि यह सिद्धांत (पिता के साथ वचन की एकसारता का) पूर्वजों से पूर्वजों तक कैसे हस्तांतरित हुआ—लेकिन आप, नए यहूदी और कैफा के शिष्य, अपने दावों का समर्थन करने के लिए कौन से पूर्वजों को प्रस्तुत कर सकते हैं? फिर भी आप एक भी बुद्धिमान और समझदार व्यक्ति का नाम नहीं ले सकते—क्योंकि वे सभी आपसे मुंह मोड़ लेते हैं।"[633]

हम बाद के इतिहास द्वारा प्रस्तुत एक और उदाहरण को चुपचाप नहीं छोड़ सकते। जब सम्राट थियोडोसियस, ईश्वर के पुत्र की दिव्यता के संबंध में ऑर्थोडॉक्स और विभिन्न एरियन संप्रदायों के बीच विवादों को हमेशा के लिए समाप्त करने की इच्छा से, इन सभी संप्रदायों के बिशपों को ऑर्थोडॉक्स के साथ एक परिषद में बुलाया, और पैट्रिआर्क नेक्टारियस की सलाह पर, ई ने पहले एरियन प्रतिनिधियों से पूछा कि क्या वे चाहते थे, ताकि इस मामले को हमेशा के लिए सुलझाया जा सके कि सच्चाई किस पक्ष में है, चर्च के प्राचीन और सम्मानित पादरियों को गवाह के रूप में बुलाया जाए और उनके निर्णय से संतुष्ट हुआ जाए — जिस पर इन प्रतिनिधियों को जवाब नहीं सूझा, वे अपनी-अपनी राय में बँट गए, और बहस करने लगे; और सम्राट को स्पष्ट रूप से दिखाई दिया कि वे उसके प्रस्ताव से बिल्कुल भी सहमत नहीं थे; और इसलिए उन्होंने एक अन्य कार्रवाई करने का संकल्प लिया, यह मांग करते हुए कि प्रत्येक संप्रदाय उन्हें अपना लिखित धर्म-सूत्र प्रस्तुत करे।[634]

इतने व्यापक आंतरिक और बाहरी साक्ष्यों के बाद, और विशेष रूप से प्रभु यीशु की दिव्यता में संपूर्ण प्राचीन चर्च के सच्चे विश्वास के संबंध में चर्च के पादरियों और शिक्षकों की गवाही के बाद, कोई भी विवेकशील व्यक्ति निस्संदेह भ्रमित नहीं होगा, यदि उन्हें बाद वालों की रचनाओं में, इस परम सिद्धांत की विस्तृत व्याख्या में कभी-कभी कुछ अशुद्धियाँ या अस्पष्टताएँ मिलें, या यदि वे ऐसे अंशों पर आएँ जिनमें, स्वयं पवित्र धर्मग्रंथ की तरह, पुत्र को पिता से निम्नतर, पिता के बाद दूसरे स्थान पर, केवल उनकी इच्छा का प्रवर्तक, आदि के रूप में प्रस्तुत किया गया है। पवित्र धर्मग्रंथ में ऐसे अंशों (§ 33) के संबंध में हमने जो कुछ भी अवलोकन किया है, और हमने पहले (§ 28) उन ही प्राचीन पादरियों की शिक्षाओं में ईश्वर की एकता में व्यक्तियों की त्रिमूर्ति के संबंध में समान अशुद्धियों और अस्पष्टताओं के बारे में जो कहा है, यह सब वर्तमान मामले में पूरी तरह से लागू होता है और हर तरह की गलतफहमियों को दूर करने का काम करता है।

§ 35. पवित्र आत्मा की दिव्यता और पिता तथा पुत्र के साथ उसकी एकसारता के लिए पवित्र शास्त्र से साक्ष्य।

पवित्र त्रिमूर्ति के तृतीय व्यक्ति, पवित्र आत्मा की दिव्यता और पिता तथा पुत्र के साथ उनकी एकसारता पवित्र शास्त्र से ठीक उसी प्रकार प्रमाणित होती है जैसे पुत्र की दिव्यता। पवित्र शास्त्र पवित्र आत्मा को निम्नलिखित गुण प्रदान करता है:

1) दैवीय उपाधियाँ। यह स्पष्ट है:

a) ईश्वर के वचन के प्रत्यक्ष वचनों से। भजनकार स्वयं कहता है: *'प्रभु का आत्मा मुझमें बोलता है, और उसका वचन मेरी जीभ पर है।' 'इस्राएल का परमेश्वर बोल चुका है; इस्राएल की चट्टान ने मुझ में कहा है* (2 राजा 23:2–3), और इस प्रकार यह समझाता है कि वह 'प्रभु का आत्मा' नाम से किसे अभिप्रेत करता है (देखें भजन संहिता 84:9)। प्रेरित पतरस ने इसी विचार को और भी स्पष्ट रूप से व्यक्त किया जब उन्होंने हनन्याह को डांटा: *'हनन्याह! तूने शैतान को*

---

[632] एपिस्ट. एड अलेक्जेंड्र. कॉन्स्टेंटिनोप., अपुड *थियोडोरेट.* एच. ई. लिब. I, कैप. 4.

[633] *एथनासियस,* *डे सिन्ड. नाइसेन. डेक्रिट*, संख्या 27, पृ. 233, बेनेड. संस्करण.

[634] *सोक्रैट.* एच. ई., पुस्तक V, अध्याय 10; *सोज़ोम.* एच. ई., पुस्तक VII, अध्याय 12.

अपने हृदय में यह बात डालने क्यों दिया कि तू पवित्र आत्मा से झूठ बोले और भूमि के विक्रय की आय का एक अंश रोक ले?... तूने मनुष्यों से नहीं, बल्कि परमेश्वर से झूठ बोला है (प्रेरितों के काम 5:3-4)। उनके शब्दों का अर्थ यह है: जब हनन्याह ने, अपनी भूमि की बिक्री से प्राप्त आय का एक हिस्सा रोककर, अपने इस काम को प्रेरितों से, यानी मनुष्यों से, छिपाने का निश्चय किया *(उसने अपनी पत्नी के ज्ञान के बिना आय का एक हिस्सा रोक लिया, जबकि एक हिस्सा लाकर प्रेरितों के पैरों तले रख दिया,* पद 2), — तब प्रेरितों के मुखिया ने दोषी व्यक्ति को डाँटते हुए कहा: 'नहीं, तुमने हमसे नहीं बल्कि हम में वास करने वाले पवित्र आत्मा से झूठ बोला है; तुमने मनुष्यों को नहीं बल्कि परमेश्वर को धोखा देने का सोचा था।'[635] और हमें यह न भूलना चाहिए कि प्रेरितों में वास करने वाले पवित्र आत्मा के नाम से, हमें सख्ती से *उस व्यक्ति को दूसरे सांत्वना देने वाले* के रूप में समझना चाहिए, जिसे उद्धारकर्ता ने उनकी जगह पर भेजा था, और जिसने उन्हें सच्चाई की हर बात में मार्गदर्शन दिया, उनके होठों से बात की, और प्रेरितिक सेवकाई के क्षेत्र में उनके कार्यों का निर्देशन किया। (यूहन्ना 14:16, 26; 16:13).[636]

ख) पवित्र धर्मग्रंथ के विभिन्न अंशों की तुलना से। इस प्रकार—

क) पवित्र वंशावलीकार गवाही देता है कि सर्वोच्च स्वयं ने जंगल में इस्राएलियों का मार्गदर्शन किया: *'इस प्रकार केवल यहोवा ने ही उनका मार्गदर्शन किया* (व्यव. 32:12); जबकि भविष्यवक्ता यशायाह बताते हैं कि यह ठीक पवित्र आत्मा ही था जिसने उनका मार्गदर्शन किया: *'उसने अपना पवित्र आत्मा उनके हृदय में डाला...' प्रभु की आत्मा ने उन्हें विश्राम करने के लिए अगुवाई की* (यशायाह 63:14; तुलना करें पद 11);

ख) भजनकार कहता है कि मरुभूमि में इस्राएलियों ने *निरंतर उनके विरुद्ध पाप किया और मरुभूमि में सर्वोच्च को क्रोधित किया* (भजन संहिता 77:17–18, 40–41), ठीक वैसे ही जैसे परमेश्वर स्वयं, psalmist के माध्यम से बोलते हुए, घोषणा करते हैं: *'मरुभूमि में, जहाँ तुम्हारे पूर्वजों ने मुझे परखा, मुझे आज़माया, और मेरे काम देखे* (भजन संहिता 94:8–9); और वही भविष्यवक्ता यशायाह स्पष्ट करते हैं कि *यह उनकी पवित्र आत्मा* थी जिसे इस्राएलियों ने जंगल में *दुखी किया* (63:10), जबकि प्रेरित पौलुस यह देखते हैं कि *'जैसे पवित्र आत्मा कहते* हैं... *जंगल में... जहाँ तुम्हारे पूर्वजों ने चालीस वर्ष तक मुझे परखा, परीक्षा की, और मेरे काम देखे* (इब्रानियों 3:7–9);

ग) पवित्र प्रेरित पौलुस विश्वासियों को परमेश्वर का मंदिर कहते हैं: *'क्या तुम नहीं जानते कि तुम परमेश्वर* (Θεοῦ) *का मंदिर हो, और परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है?'* (1 कुरिन्थियों 3:16), और थोड़ी देर बाद उन्हें पवित्र आत्मा का मंदिर कहते हैं: *क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारे शरीर पवित्र आत्मा का मंदिर है, जो तुम में वास करता है, जिसे तुमने परमेश्वर से प्राप्त किया है?* (1 कुरिन्थियों 6:19);[637]

(d) प्रेरित पतरस गवाही देते हैं कि *भविष्यवाणी कभी भी मानवीय इच्छा से उत्पन्न नहीं हुई, बल्कि परमेश्वर के पवित्र पुरुषों ने पवित्र आत्मा के प्रेरित होने पर बात की* (2 पतरस 1:21), जबकि प्रेरित पौलुस कहते हैं कि *सारी पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से उत्पन्न हुई है* (2 तीमुथियुस 3:16)। "तो फिर," संत बेसिल द ग्रेट पूछते हैं, "पवित्र आत्मा ईश्वर क्यों नहीं हैं, जबकि उनका धर्मग्रंथ दैवीय रूप से प्रेरित है?"[638]

2) दिव्य स्वभाव, पिता और पुत्र के साथ समानता और एकसारता।

क) दिव्य स्वभाव। *'परन्तु जब वह सहायक आएगा, जिसे मैं तुम्हारे पास पिता से भेजूंगा, अर्थात् सत्य का आत्मा जो पिता से निकलता है, वह मेरी गवाही देगा* (यूहन्ना 15:26)। '" *जो पिता से निकलता है,*" इन शब्दों के साथ,' धन्य टिप्पणी

---

635 कई प्राचीन शिक्षकों ने पवित्र आत्मा की दिव्यता के प्रमाण के रूप में इस ग्रंथ का हवाला दिया है: *बेसिल द ग्रेट,* ऑन द होली स्पिरिट, अध्याय 16, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, खंड VII, पृ. 287; *एपिफेनियस,* *हेरेसिया*, 74; *एम्ब्रोस,* *डे स्पिरिटिस सैंक्टो*, पुस्तक I, अध्याय 4, और पुस्तक III, अध्याय 10; *सिरील ऑफ़ अलेक्जेंड्रिया,* ऑन द ट्रिनिटी, II. 25, *क्रोनोलॉजिकल रीडिंग्स* 1847, III, पृ. 47; *ऑगस्टीन,* *कॉन्ट्रा मैक्सिमिस*, III, अध्याय 21; *थियोडोरेट,* *कॉन्ट्रा हेरेसेस*, पुस्तक V, पवित्र आत्मा पर अध्याय, *क्रोनोलॉजिकल रीडिंग्स* 1844, IV, पृ. 193.

636 अन्य अंश जिनमें पवित्र आत्मा को 'प्रभु' कहा गया है, उनमें 1 थिस्स. 3:11, 13 शामिल हैं; तुलना करें: *सेंट बेसिल द ग्रेट,* अगेंस्ट यूनोमियस, पुस्तक V, और ऑन द होली स्पिरिट, अध्याय 21, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, VII, पृ. 191, 311, 312 में।

637 और इन ग्रंथों का उपयोग प्राचीन काल से पवित्र आत्मा की दिव्यता को साबित करने के लिए किया जाता रहा है: *बेसिल द ग्रेट,* *अगेंस्ट यूनोमियस*, पुस्तक III, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, खंड VII, पृ. 139; *थियोडोरेट,* *विरुद्ध संप्रदाय*, पुस्तक V, *क्रोनोलॉजिकल रीडिंग्स* 1844, खंड IV, पृ. 193; *सेंट सिरिल ऑफ़ अलेक्जेंड्रिया,* *पवित्र त्रिमूर्ति पर*, II. 24, *क्रोनोलॉजिकल रीडिंग्स* 1847, खंड III, पृ. 46.

638 यूनोमियस के विरुद्ध, पुस्तक V, *पवित्र पिताओं के कार्य*, खंड VII, पृ. 188 में।

करते हैं मसीहा ने गवाही दी कि पिता पवित्र आत्मा का स्रोत हैं, और उन्होंने यह नहीं कहा: 'प्रवाहित होंगे' या 'उत्पन्न होंगे', बल्कि: *'प्रवाहित होते हैं'*, यह दिखाने के लिए कि उनका स्वभाव एक और समान है, कि उनका सार अविभाज्य और अविभागत है, और कि व्यक्तित्व एक दूसरे के साथ एकजुट हैं। क्योंकि जो प्रवाहित होता है, उसे उससे अलग नहीं किया जा सकता जिससे वह प्रवाहित होता है।"[639]

ख) पिता और पुत्र के साथ समानता। यह स्पष्ट है:

क) बपतिस्मा के विषय में आज्ञा से: *'इसलिये जाओ और सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ, और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दिलाओ* (मत्ती 28:19), जहाँ पवित्र आत्मा को पिता और पुत्र के साथ पूरी तरह से समान दर्जा दिया गया है;[640]

bb) पवित्र प्रेरित के वचनों से: *'वरदानों में विविधता है, परन्तु आत्मा एक ही है; सेवाओं में विविधता है, परन्तु प्रभु एक ही है; और कार्यों में विविधता है, परन्तु ईश्वर एक ही है, जो सब में सब कुछ करता है।' परन्तु सामान्य भलाई के लिए प्रत्येक को आत्मा की एक प्रकटता दी गई है... फिर भी यह सब एक ही आत्मा द्वारा किया जाता है, जो अपनी इच्छा के अनुसार प्रत्येक को व्यक्तिगत रूप से बाँटता है* (1 कुरिन्थियों 12:4–7 और 11), जहाँ पवित्र आत्मा का कार्य पूरी तरह से प्रभु यीशु और परमेश्वर पिता के कार्य के समकक्ष रखा गया है;[641]

(bb) धर्मग्रंथ के विभिन्न अंशों की तुलना से, जिनमें तीनों दैवीय व्यक्तियों का उल्लेख विभिन्न क्रमों में मिलता है, ताकि कभी-कभी पिता का नाम पहले, पुत्र का दूसरे और पवित्र आत्मा का तीसरे स्थान पर आता है (मत्ती 28:19); कभी-कभी पिता का नाम पहले, पवित्र आत्मा का दूसरा, और पुत्र का तीसरा होता है (1 पतरस 1:2); कभी-कभी पुत्र का नाम पहले, पिता का दूसरा, और पवित्र आत्मा का तीसरा होता है (2 कुरिन्थियों 13:13), और कभी-कभी, अंत में, पवित्र आत्मा का नाम पहले आता है, पुत्र का दूसरे स्थान पर, और पिता का तीसरे स्थान पर (1 कुरिन्थियों 12:4-6)—जो पदवी में तीनों की समानता को और भी प्रदर्शित करता है।[642]

ग) पिता और पुत्र के समान ही सार का। इस विचार का समर्थन करने वाले अंश हैं: 1 यूहन्ना 5:7; यशायाह 6:1–10; तुलना करें यूहन्ना 12:40–41 और प्रेरितों के काम 28:25–27; प्रेरितों के काम 9:15; 22:10,14; 13:2 और, विशेष रूप से, 1 कुरिन्थियों 2:10–12,[643] , जिन पर हम पहले ही विचार कर चुके हैं (§ 27 में)। यहाँ हम केवल यह इंगित करेंगे:

क) प्रेरित के शब्द: *'यदि परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है, तो तुम शरीर के अनुसार नहीं, बल्कि आत्मा के अनुसार जीते हो। परन्तु यदि किसी में मसीह का आत्मा नहीं है, तो वह उसका नहीं है।' 10 'और यदि मसीह तुम में है, तो शरीर पाप के कारण मरा हुआ है, परन्तु आत्मा धार्मिकता के कारण जीवित है।'* (रोमियों 8:9–10), जहाँ पवित्र आत्मा

---

639 ईश्वर-विद्या के सिद्धांतों की संक्षिप्त व्याख्या, विरोधी मतों के विरुद्ध पुस्तक V से, क्रॉनकिल रीडिंग्स 1844, IV, पृ. 190; कन्फ. *एम्ब्रॉस.* डी स्पिरिट. एस. लिब. 1, कैप. 1, 7; *पाचस.* डी स्पिरिट. एस. लिब. I, कैप. 12.

640 "बपतिस्मा में सिखाए गए सूत्र के अनुसार, जैसे पुत्र का संबंध पिता से है, वैसे ही आत्मा का संबंध पुत्र से है। और यदि आत्मा को पुत्र के समकक्ष रखा गया है, और पुत्र को पिता के समकक्ष रखा गया है, तो यह स्पष्ट है कि आत्मा को भी पिता के समकक्ष रखा गया है" (*बेसिल द ग्रेट*, द होली स्पिरिट पर, अध्याय 17, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स* VII, पृष्ठ 297-298)। इसी बात को *पेलूसियम के इसिडोर* (lib. I, epist. 109), *अलेक्जेंड्रिया के सिरिल* (पवित्र त्रिमूर्ति पर, क्रि. रीडिंग्स 1847, III, 40) और *थियोडोरेट* (क्रि. रीडिंग्स 1844, IV, पृ. 193) ने भी कहा है।

641 *बेसिल द ग्रेट,* अगेंस्ट यूनोमियस, पुस्तक III, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स* VII, पृ. 137 में; *सिरिलस ऑफ अलेक्जेंड्रिया,* *थेसॉरस*, पुस्तक XIII, पृ. 3 और XIV, 1; *पास्चासियस,* पुस्तक 1, अध्याय II; *थियोडोरेट,* पुस्तक V विरोधी संप्रदाय, क्रि. ख्रि. 1844, IV, पृ. 191.

642 'कभी-कभी वह (प्रेरित पौलुस) तीनों ही हाइपोस्टेसिस को गिनता है, और ऐसा एक ही क्रम का पालन किए बिना, विभिन्न तरीकों से करता है, लेकिन एक ही हाइपोस्टेसिस का नाम कभी शुरुआत में, कभी बीच में, कभी अंत में लेता है—और किस उद्देश्य के लिए? दिव्य स्वभाव की समानता को प्रदर्शित करने के लिए' (*ग्रेगरी द थियोलोजियन,* उद्धृत ग्रंथ 34, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स* III, पृ. 193)। "पहली पत्री में (1 कुरिन्थियों 12:4–6), उन्होंने (प्रेरित पौलुस) पवित्र आत्मा को सबसे पहले रखा, जबकि यहाँ (2 कुरिन्थियों 13:13) उन्होंने उसे सबसे अंत में रखा, जिससे यह दर्शाता है कि नामों का क्रम पदवी में कोई भेद नहीं करता है। इस प्रकार उन्होंने (प्रभु द्वारा स्थापित) क्रम को बाधित किए बिना ही पुत्र को पिता से पहले रखा, बल्कि पवित्र त्रिमूर्ति के भीतर सम्मान की समानता को प्रदर्शित किया" (*थियोडोरेट,* बुक V अगेंस्ट हेरेसीज़, इन क्रि. रीडिंग्स, 1844, IV, पृ. 192)।

643 "इस बात का सबसे महत्वपूर्ण प्रमाण कि आत्मा पिता और पुत्र के साथ एक है, वह कथन है कि उसका परमेश्वर के साथ वही संबंध है जो एक व्यक्ति के भीतर का आत्मा उस व्यक्ति के साथ रखता है। क्योंकि कहा गया है: *'मनुष्यों में से कौन उस मनुष्य के भीतर की बात को जानता है, सिवाय उसके मनुष्य आत्मा के जो उसमें वास करता है? इसी प्रकार, परमेश्वर की आत्मा के सिवा कोई भी परमेश्वर की बातें नहीं जानता* (1 कुरिन्थियों 2:11)। और यह पर्याप्त है।" (*बेसिल द ग्रेट,* द पवित्र आत्मा पर, अध्याय 16, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, खंड VII, पृ. 294; तुलना करें पृ. 138)।

को मसीह का आत्मा कहा गया है, निस्संदेह उनके सार की एकता के कारण, और विश्वासियों में पवित्र आत्मा का वास करना स्वाभाविक रूप से उसी कारण से मसीह स्वयं का उनमें वास करना प्रस्तुत किया गया है;[644] और

bb) ऐसे अंश जिनसे यह स्पष्ट है कि पवित्र आत्मा स्वभाव और कार्य में पिता और पुत्र के साथ अविभाज्य सहभागिता में है; उदाहरण के लिए, उद्धारकर्ता कहते हैं: *'जो वचन मैं तुम से कहता हूँ वे मैं अपने आप से नहीं कहता; 'यह पिता है, जो मुझ में वास करता है, वही अपने काम करता है'* (यूहन्ना 14:10), और अन्यत्र: *'यदि मैं परमेश्वर की आत्मा से दुष्टात्माओं को निकालता हूँ तो परमेश्वर का राज्य निश्चय तुम्हारे पास आ पहुँचा है* (मत्ती 12:28); वह यह भी कहते हैं: *'मैं अपने आप कुछ नहीं कर सकता* (यूहन्ना 5:30); *'मैंने तुमसे वह सब कुछ कह दिया है जो मैंने अपने पिता से सुना है* (यूहन्ना 15:15), और थोड़ा आगे: *'जब वह, सत्य का आत्मा, आएगा, तो वह तुम्हें सारी सच्चाई में मार्गदर्शन करेगा: क्योंकि वह अपनी ओर से नहीं बोलेगा, परन्तु जो कुछ वह सुनेगा वही बोलेगा, और जो कुछ आने वाला है उसे तुम्हें बता देगा* (यूहन्ना 16:13)।

3) दैवीय गुण, उदाहरण के लिए:

क) सर्वज्ञता: *'परन्तु जब वह, सत्य का आत्मा, आएगा, तो वह तुम्हें सारी सच्चाई में मार्गदर्शन करेगा* (यूहन्ना 16:13); *'वह तुम्हें सब कुछ सिखाएगा और जो कुछ मैं ने तुम से कहा है, उसे तुम्हें याद दिलाएगा* (यूहन्ना 14:26); *आत्मा सब कुछ, यहाँ तक कि परमेश्वर की गहराइयों तक, परखता है। क्योंकि मनुष्य के भीतर जो कुछ है, उसे मनुष्य की आत्मा के सिवाय कौन जानता है, जो उसमें है? इसी प्रकार, परमेश्वर की बातें परमेश्वर की आत्मा के सिवाय कोई नहीं जानता* (1 कुरिन्थियों 2:10-11)। *क्योंकि भविष्यवाणी का आरंभ कभी भी मनुष्य की इच्छा से नहीं हुआ, परन्तु परमेश्वर के पवित्र मनुष्यों ने पवित्र आत्मा के प्रेरित होने पर कहा* (2 पतरस 1:21; तुलना करें प्रेरितों के काम 1:16; 4:25; लूका 2:26, 29)।

6) सर्वव्यापी। पवित्र आत्मा के इस गुण का विचार स्पष्ट रूप से व्यक्त किया गया है:

(क) जहाँ यह कहा गया है कि वह एक ही समय में, पृथ्वी की सतह पर फैले सभी विश्वास करने वाले मसीहियों की आत्माओं में वास करता है और काम करता है: *'परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है।' लेकिन यदि किसी के भीतर मसीह का आत्मा नहीं है, तो वह मसीह का नहीं है* (रोमियों 8:9, 11, 14, 16, 26-27), — *जिस पर आप आत्मा में परमेश्वर का निवास स्थान बनने के लिए एक साथ निर्मित हो रहे हैं* (इफिसियों 2:22; तुलना करें 1 कुरिन्थियों 3:16; 6:19; 12:11, 13); और

bb) बुद्धिमान के शब्दों में, कि *प्रभु का आत्मा ब्रह्मांड को भरता है* (बुद्धि 1:7) और *वह सर्व-द्रष्टा* आत्मा है *जो सभी बुद्धिमान, शुद्ध और अति सूक्ष्म आत्माओं में व्याप्त है* (बुद्धि 7:23), — "अर्थात्," संत ग्रेगरी द थियोलोजियन कहते हैं, "जहाँ तक मैं समझता हूँ, *वह आत्मा* जो दैवीय शक्तियों के साथ-साथ भविष्यसूचक और प्रेरितिक शक्तियों में भी *व्याप्त* है, एक साथ और केवल एक स्थान पर नहीं, बल्कि यहाँ-वहाँ मौजूद है, जो इसकी असीमता को दर्शाता है।"[645]

ग) सर्वशक्तिमानता। यह मुख्य रूप से पवित्र आत्मा द्वारा विश्वासियों पर चमत्कारी या असाधारण वरदानों को स्वतंत्र और संप्रभु रूप से प्रदान करने के माध्यम से प्रकट होती है: *सामान्य भलाई के लिए प्रत्येक को आत्मा की एक अभिव्यक्ति दी गई है। एक को आत्मा द्वारा ज्ञान का वचन दिया जाता है; दूसरे को, उसी आत्मा द्वारा, ज्ञान का वचन; तीसरे को, उसी आत्मा द्वारा, विश्वास; एक को उसी आत्मा द्वारा चंगा करने का वरदान; एक को चमत्कार करने का, एक को भविष्यवाणी करने का, एक को आत्माओं में भेद करने का, एक को विभिन्न प्रकार की भाषाएँ बोलने का, और एक को भाषाओं का अर्थ बताने का वरदान। फिर भी ये सब एक ही आत्मा के द्वारा होते हैं, जो अपनी इच्छा के अनुसार इन्हें प्रत्येक व्यक्ति को अलग-अलग बाँटता है* (1 कुरिन्थियों 12:7–11)।

(d) अनंत महिमा। हम इसे उद्धारकर्ता के वचनों से निष्कर्ष निकाल सकते हैं: *'मैं तुम से सच कहता हूँ मनुष्यों के पुत्रों के सब पाप और अपमान क्षमा किए जाएँगे, चाहे वे जो कुछ भी अपमान करें; परन्तु जो कोई पवित्र*

---

[644] "उसे मसीह की आत्मा भी कहा जाता है, क्योंकि वह स्वभाव से मसीह के साथ एक है" (*बेसिल द ग्रेट,* पवित्र आत्मा पर, अध्याय 18, *द वर्क्स ऑफ़ द होली फ़ादर्स*, खंड VII, पृ. 301)। "पवित्र आत्मा को मसीह और प्रभु कहा जाता है, क्योंकि प्रेरित कहते हैं: *'यदि किसी में मसीह का आत्मा नहीं है, तो वह मसीह का नहीं है। परन्तु यदि मसीह तुम में है, तो शरीर पाप के कारण मरा हुआ है, परन्तु आत्मा धार्मिकता के कारण जीवित है* (रोमियों 8:9, 10), जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि आत्मा का वास मसीह का वास है" (युनोमियस के विरुद्ध, V, वही, पृ. 191)।

[645] होमीली 31, *द वर्क्स ऑफ़ द होली फ़ादर्स* III, पृ. 130 में। तुलना करें: *बेसिल द ग्रेट,* *ऑन द होली स्पिरिट*, अध्याय 23।

आत्मा के वरिुद्ध अपमान करेगा, वह कभी क्षमा नहीं पाएगा, बल्कि अनंत दण्ड का पात्र होगा (मरकुस 3:28–29; तुलना करें मत्ती 12:31–32)।

4) दैवीय कार्य, जैसे:

क) अनुग्रह के राज्य में सृष्टि और निरंतरता, या आत्माओं का पुनर्जनन: *'परमेश्वर की आत्मा ने मुझे बनाया, और सर्वशक्तिमान का प्राण मुझे जीवन देता है'* (अय्यूब 33:4; तुलना करें भजन संहिता 32:6)। *जब तक कोई ऊपर से न जन्मे, वह परमेश्वर का राज्य नहीं देख* सकता... *जब तक कोई पानी और आत्मा से न जन्मे, वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता* (यूहन्ना 3:3, 5; तुलना करें तीतुस 3:6)।

ख) अनुग्रह के राज्य में परमेश्वर का प्रबंध और उत्तराधिकार, या मसीह की कलीसिया का शासन। 'जब *तू अपना आत्मा भेजता है, तब वे सृजित होते हैं, और तू पृथ्वी का मुख नया करता है* (भजन संहिता 103:30)। *इसलिए, अपने आप और उन सब भेड़ों का ध्यान रखना, जिनके लिए पवित्र आत्मा ने तुम्हें अधिष्ठाता नियुक्त किया है, ताकि तुम प्रभु और परमेश्वर की कलीसिया का चरवाहा बनो, जिसे उसने अपने ही लहू से मोल लिया है* (प्रेरितों के काम 20:28; तुलना करें प्रेरितों के काम 13:2; 15:28; 16:6–7; 20:23; एफि. 2:22). इसमें विशेष रूप से वे अंश शामिल हैं जो पवित्र आत्मा को श्रेय देते हैं:

क) लोगों का औचित्यकरण और पवित्रिकरण: *'परन्तु तुम धोए गए, परन्तु तुम पवित्र किए गए, परन्तु तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से और हमारे परमेश्वर की आत्मा से धर्मी ठहराए गए* (1 कुरिन्थियों 6:11; तुलना करें 1 पतरस 1:2);

bb) परमेश्वर पिता के बच्चों के रूप में दत्तक ग्रहण: *'जो लोग परमेश्वर की आत्मा से संचालित होते हैं, वे परमेश्वर के बच्चे हैं।' क्योंकि तुमने दासत्व का आत्मा नहीं पाया कि फिर भय में रहो, परन्तु तुमने दत्तक का आत्मा पाया, जिसके द्वारा हम 'अब्बा, हे पिता!' कहकर पुकारते हैं। यही आत्मा हमारे आत्मा के साथ गवाही देता है कि हम परमेश्वर की संतान हैं* (रोमियों 8:14–16);

(bb) उन पर आध्यात्मिक वरदानों का प्रदान करना: *वर तो भिन्न-भिन्न हैं, पर आत्मा एक ही; सेवाएँ तो भिन्न-भिन्न हैं, पर प्रभु एक ही; और काम तो भिन्न-भिन्न हैं, पर ईश्वर एक ही, जो सब में सब काम करता है* (1 कुरिन्थियों 12:4–6);

(d) सभी अच्छे कार्यों में उनकी सहायता करना: *आत्मा हमारी दुर्बलता में हमारी सहायता करता है; क्योंकि हम नहीं जानते कि हमें कैसे प्रार्थना करनी चाहिए, परन्तु आत्मा स्वयं शब्दों से परे गहरी आहों के साथ हमारे लिए मध्यस्थता करता है* (रोमियों 8:26)। *परन्तु आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, सौम्यता, भलाई, विश्वास, नम्रता और आत्मसंयम है* (गलातियों 5:22-23)।

ग) चमत्कार करना। इस विषय पर, संत बेसिल द ग्रेट इस प्रकार सिखाते हैं: 'परमेश्वर की वह उँगली (निर्ग. 8:19), जिसने मिस्र में धूल को जानवरों में बदल दिया, जिससे जानवरों की मूल सृष्टि की ओर संकेत मिलता है, वह सान्त्वना देने वाला, सत्य का आत्मा था। क्योंकि, तीन सुसमाचार लेखकों की गवाही के अनुसार, प्रभु ने यहूदियों से कहा: *'यदि मैं परमेश्वर की आत्मा से दुष्टात्माओं को निकालता हूँ तो परमेश्वर का राज्य निश्चय ही तुम पर आ गया है* (मत्ती 12:28), जबकि लूका कहता है कि उन्होंने कहा: *'यदि मैं परमेश्वर की उँगली से दुष्टात्माओं को निकालता हूँ, तो परमेश्वर का राज्य निश्चय ही तुम पर आ गया है'* (लूका 11:20)। इसलिए, जैसे मिस्र में मूसा के द्वारा हुए और परमेश्वर की उँगली से बने चिन्ह, वैसे ही आत्मा के कार्य द्वारा स्वयं परमेश्वर के अद्भुत चिन्ह भी पूरे होते हैं।" और इसके बाद, संत बेसिल इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि पवित्र आत्मा अन्य चमत्कारिक वरदानों का भी सर्वोच्च प्रदाता है — 1 कुरिन्थियों 12:8–11।[646]

5) दैवीय श्रद्धा। क्योंकि—

क) हम सभी को पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा लेना अनिवार्य है (मत्ती 28:19), और परिणामस्वरूप, हम सभी को पिता और पुत्र के साथ-साथ पवित्र आत्मा का भी अंगीकार और महिमा करना अनिवार्य है;[647]

---

[646] *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, खंड VII, पृष्ठ 183–184 में यूनोमियस के विरुद्ध पुस्तक V।

[647] उसी में, पुस्तक III, पृ. 139, और पुस्तक V, पृ. 195।

ख) हम सभी पवित्र आत्मा का *मंदिर* हैं, जो हम में से प्रत्येक में वास करते हैं (1 कुरिन्थियों 6:19); परिणामस्वरूप, हमें उन्हें मंदिर के प्रभु के रूप में, परमेश्वर के रूप में सेवा करनी चाहिए।

विचाराधीन सत्य के संबंध में निम्नलिखित दो अवलोकन भी बहुत महत्व के हैं:

(क) पवित्र शास्त्र में कहीं भी पवित्र आत्मा को एक सृजित प्राणी नहीं कहा गया है, और न ही उन्हें परमेश्वर की सृष्टियों में गिना गया है, हालाँकि यदि पवित्र लेखकों ने वास्तव में उन्हें एक सृजित प्राणी माना होता तो ऐसा करने का पर्याप्त अवसर होता। इस प्रकार, भजनकार बार-बार सभी ईश्वरीय प्राणियों, स्वर्गीय और पृथ्वी पर के—देवदूतों, शक्तियों, सूर्य, चंद्रमा और अन्य—से परमेश्वर की महिमा करने का आह्वान करता है, लेकिन पवित्र आत्मा के बारे में एक शब्द भी नहीं कहता (भजन संहिता 102:20–22; 148:1–13)। प्रेरित पौलुस परमेश्वर के पुत्र की सृष्टियों में से सबसे महत्वपूर्ण का उल्लेख करते हैं—सिंहासन, प्रभुत्व, प्रधानताएँ और शक्तियाँ—लेकिन पवित्र आत्मा के बारे में कुछ नहीं कहते (कुलु. 1:16)। प्रेरित पतरस गवाही देते हैं कि जब यीशु मसीह स्वर्ग में आरोहण करके परमेश्वर पिता के दाहिने बैठ गए, तो स्वर्गदूतों, अधिकारों और शक्तियों ने उन्हें परमेश्वर-मनुष्य के रूप में स्वीकार किया (1 पतरस 3:22), लेकिन पवित्र आत्मा के उनके प्रति समर्पण का कोई भी संकेत नहीं मिलता है।

(ख) पवित्र आत्मा को हमारे उद्धार के कार्य में यीशु मसीह के साथ ठीक उसी संबंध में रखा गया है, जैसा परमेश्वर पिता को। पिता *ने* अपने पुत्र को *पवित्र किया* और *उसे संसार में भेजा* (यूहन्ना 10:36), और उद्धारकर्ता पवित्र आत्मा के विषय में कहते हैं: *'यहोवा का आत्मा मुझ पर है, क्योंकि उसने मुझे गरीबों को सुसमाचार सुनाने के लिए अभिषेक किया है; उसने मुझे टूटे हुए दिल वालों को चंगा करने के लिए भेजा है* (लूका 4:18), और प्रेरित पतरस कहते हैं: *'परमेश्वर ने नासरी यीशु को पवित्र आत्मा और सामर्थ्य से अभिषेक किया* (प्रेरितों के काम 10:38)। पिता ने स्वयं अपने पुत्र के अवतार को संभव बनाया: *'परमेश्वर ने पापियों के समान देह में अपने पुत्र को भेजा* (रोमियों 8:3), *'जो एक स्त्री से उत्पन्न हुआ'* (गलातियों 4:4); और पवित्र आत्मा के विषय में, परम पवित्र कुँवारी से यह भविष्यवाणी की गई थी: *पवित्र आत्मा तुझ पर आएगा, और परमप्रभु की सामर्थ्य तुझ पर छा जाएगी; इसलिये जो पवित्र बालक उत्पन्न होगा, उसे परमेश्वर का पुत्र कहा जाएगा* (लूका 1:35)। उद्धारकर्ता ने पिता के विषय में गवाही दी: *'पिता, जो मुझ में वास करते हैं, वही ये काम करते हैं* (यूहन्ना 14:10); *'जो काम मैं अपने पिता के नाम पर करता हूँ, वे मेरी गवाही देते हैं* (यूहन्ना 10:25), और पवित्र आत्मा के विषय में: *'यदि मैं परमेश्वर की आत्मा से दुष्टात्माओं को निकालता हूँ, तो परमेश्वर का राज्य निश्चय तुम्हारे पास आ पहुँचा है* (मत्ती 12:28)। पिता ने *अपने ही पुत्र को नहीं बख्शा, बल्कि उसे हम सभी के लिए सौंप दिया* (रोमियों 8:32); यही बात पवित्र आत्मा पर भी लागू होती है जब कहा जाता है कि मसीह ने *पवित्र आत्मा के द्वारा स्वयं को दोष रहित परमेश्वर को अर्पित किया* (इब्रानियों 9:14)। क्या यह संभव होगा कि यीशु मसीह—जो परमेश्वर-पुरुष हैं और परमपिता के समकक्ष हैं—के संबंध में सभी ऐसे कार्य पवित्र आत्मा को ही श्रेय दिए जाएँ, यदि पवित्र आत्मा एक दिव्य व्यक्ति न होकर एक प्राणी होता?

संत ग्रेगरी द थियोलोजियन कहते हैं, "पवित्र आत्मा की दिव्यता पवित्र शास्त्र में बहुत स्पष्ट रूप से प्रकट हुई है," "निम्नलिखित पर विचार करें। मसीह का जन्म होता है — आत्मा उनसे पहले है (लूका 1:35)। मसीह का बपतिस्मा होता है — आत्मा गवाही देता है (यूहन्ना 1:33-34)। मसीह को परीक्षा में डाला जाता है — आत्मा उन्हें सहारा देता है (मत्ती 4:1)। मसीह चमत्कार करते हैं — आत्मा उनके साथ है। मसीह स्वर्गारोहण करते हैं — आत्मा उनके बाद आता है।"[648]

कुछ लोग पवित्र धर्मग्रंथ में ऐसे अंश पाते हैं, जो पहली नज़र में पवित्र आत्मा की दिव्यता के सिद्धांत का समर्थन करते नहीं लगते; लेकिन ऐसे अंश बहुत कम हैं, और उनकी व्याख्या करना कठिन नहीं है। वे, उदाहरण के लिए, निम्नलिखित की ओर इशारा करते हैं:

क) पवित्र आत्मा के विषय में उद्धारकर्ता के वचन: *'वह अपनी ओर से कुछ न बोलेगा, परन्तु जो कुछ वह सुनेगा, वही बोलेगा; और जो कुछ आने वाला है, वह तुम्हें बताएगा* (यूहन्ना 16:13)। लेकिन जैसा कि हम संत बेसिल द ग्रेट के साथ कहते हैं, 'पुत्र भी अपनी इच्छा से नहीं बोलता, बल्कि *मेरे को भेजने वाले पिता की* गवाही देता है; *उसने मुझे आज्ञा दी है कि मुझे क्या कहना है और क्या बोलना है* (यूहन्ना 12:49)..., न कि इसलिए कि वह पिता से सीखता है, बल्कि इसलिए

[648] होमीली 31, *द वर्क्स ऑफ़ द होली फ़ादर्स*, खंड III, पृ. 128.

कि जो कुछ भी पिता कहते हैं, वह उसे आत्मा में पुत्र के द्वारा कहते हैं।"[649] यह उनके सार की एकता, उनकी इच्छा की एकरूपता, उनके कार्य की अविभाज्यता पर निर्भर करता है, और, इस तथ्य के साथ कि पिता पुत्र और पवित्र आत्मा का स्रोत हैं और पवित्र त्रिमूर्ति का पहला व्यक्ति हैं, पुत्र पिता के बाद दूसरे स्थान पर और पवित्र आत्मा तीसरे स्थान पर है।

b) उद्धारकर्ता के अन्य वचनों के संबंध में: *'पुत्र को कोई नहीं जानता, सिवाय पिता के; और पिता को कोई नहीं जानता, सिवाय पुत्र के'* (मत्ती 11:27). फिर भी ये शब्द पवित्र आत्मा को पिता और पुत्र के ज्ञान में सहभागी होने से वंचित नहीं करते, ठीक वैसे ही जैसे प्रेरित के ये शब्द: *'परमेश्वर का आत्मा के सिवाय कोई भी पुत्र के मन को नहीं जानता* (1 कुरिन्थियों 2:11) — पिता और पुत्र को परमेश्वर के ज्ञान में सहभागी होने से वंचित नहीं किया गया है। जहाँ कहीं दो दिव्य व्यक्तियों या एक का उल्लेख होता है, वहाँ सभी तीन का उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं होती।

(ग) प्रेरित के वचनों के विषय में: *'आत्मा हमारी दुर्बलता में हमारी सहायता करता है, क्योंकि हम नहीं जानते कि हमें कैसे प्रार्थना करनी चाहिए, परन्तु आत्मा स्वयं हमारे लिए ऐसी कराहों के साथ मध्यस्थता करता है जो शब्दों से परे हैं* (रोमियों 8:26)। लेकिन बाद के शब्दों में, क्रिया के बजाय कारण लिया गया है, और व्यक्त किया गया अर्थ यह नहीं है कि आत्मा स्वयं शब्दों से परे गहरी कराहों के साथ हमारे लिए प्रार्थना या मध्यस्थता करता है, बल्कि यह है कि वह हमारी प्रार्थनाओं को प्रेरित करता है और हमारे भीतर हार्दिक कराहें जगाता है, जैसा कि इसी अंश के आरंभिक शब्दों से स्पष्ट है: *आत्मा हमारी दुर्बलता में हमारी सहायता करता है; क्योंकि हम नहीं जानते कि हमें कैसे प्रार्थना करनी चाहिए।*[650] हम प्रेरितों को उद्धारकर्ता के शब्दों में एक समान उदाहरण देखते हैं: *'यह आप नहीं हैं जो बोलेंगे, बल्कि आपके पिता का आत्मा आप में से बोलेगा* (मत्ती 10:20), अर्थात्, आत्मा आपको प्रेरित करेगा कि क्या कहना है; वह आपको सारी सच्चाई में मार्गदर्शन करेगा।

(d) यह तथ्य कि प्रेरित अक्सर मसीहियों को परमेश्वर पिता और हमारे प्रभु यीशु मसीह से आशीषें देते हैं, बिना पवित्र आत्मा का उल्लेख किए (1 कुरिन्थियों 1:3 और अन्य)। हालाँकि, यह सर्ववदित है कि कोरिन्थियों को लिखी अपनी दूसरी पत्री में ( ), प्रेरित उन्हें पवित्र आत्मा से भी वही आशीषें देते हैं जो पिता और पुत्र से मिलती हैं: *'हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा, और परमेश्वर पिता का प्रेम, और पवित्र आत्मा की संगति तुम सभ के साथ हो'* (2 कुरिन्थियों 13:13)। और हम में से किसके पास यह अधिकार है कि वह प्रेरित से यह मांगे कि वह हमेशा तीनों दिव्य व्यक्तियों का एक साथ उल्लेख करे?[651]

§ 35. पवित्र आत्मा की दिव्यता और पिता तथा पुत्र के साथ उसकी एकसारता के विषय में पवित्र परंपरा से साक्ष्य।

हमने पहले ही कुछ हद तक प्राचीन चर्च—जो प्रेरितिक परंपरा की संरक्षक थी—की शिक्षा देखी है, जो पवित्र आत्मा की परमपिता और पुत्र के साथ समानता और एकसारता के बारे में है, उन गवाहियों से जिन्हें एक ईश्वर के भीतर व्यक्तियों की त्रिमूर्ति में उसकी आस्था के प्रमाण के रूप में उद्धृत किया गया था। अर्थात्: क) इसके प्राचीन धर्मविश्वासों से, जिनमें यह अपने बच्चों को समान रूप से पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा में विश्वास करना सिखाती थी, कभी-कभी बाद वाले के बारे में यह उल्लेख करते हुए कि वह सांत्वनादाता है, जिसने दुनिया की शुरुआत से सभी संतों में कार्य किया, भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से बात की, और बाद में प्रभु यीशु के वचन के अनुसार पिता द्वारा प्रेरितों को भेजा गया; ख) इसकी प्राचीन संक्षिप्त स्तुति-गीत से, जो हमेशा समान रूप से पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा को, या पवित्र आत्मा के साथ मिलकर अर्पित की जाती थी; ग) प्राचीन संध्या भजन से, जो हमेशा परमेश्वर के पिता, पुत्र और

---

[649] यूनोमियस के विरुद्ध पुस्तक V, *द वर्क्स ऑफ़ द होली फ़ादर्स* VII, पृ. 223–224.

[650] *क्रिसोस्टोम,* रोमियों के नाम पत्र पर होमीली XIV; *ऑगस्टीन,* मैक्सिमिनिस के विरुद्ध, पुस्तक 1, शुरुआत के पास: 'अभिव्यक्ति को समझो, और तुम ईश्वरनिंदा से बचोगे।' क्योंकि ऐसा कहा गया है: *'वह कराहों के साथ हमसे पुकारता है,* ताकि हम समझ सकें'; वह हमें कराहों के साथ पुकारने के लिए प्रेरित करता है। अंत में, एक स्थान पर प्रेरित कहते हैं कि वह (पवित्र आत्मा) पुकारता है: *'अब्बा, पिता';* दूसरे स्थान पर वे कहते हैं: *'जिसमें हम पुकारते हैं: अब्बा, पिता*—लेकिन उसके पुकारने का क्या अर्थ है, यदि यह नहीं कि वह हमें पुकारने के लिए प्रेरित करता है?

[651] पवित्र आत्मा की दिव्यता के विरुद्ध अन्य, पूरी तरह से तुच्छ आपत्तियाँ, जो विभिन्न अव्ययों (उदाहरण के लिए: ἐν — में, σύν — के साथ) पर आधारित हैं, जिनका उपयोग परमेश्वर का वचन उनके बारे में अपनी शिक्षा में करता है, की जाँच संत बेसिल द ग्रेट द्वारा पवित्र आत्मा पर अपने प्रबंध में विस्तार से की गई है (विशेष रूप से अध्याय 25–28 देखें)।

पवित्र आत्मा के सम्मान में गाया जाता था; d) बपतस्मिा के पवित्र संस्कार से, जो आरंभ से ही केवल बपतस्मिा लेने वाले व्यक्ति को पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर तीन बार डुबोकर ही किया जाता था; e) त्रएिक ईश्वर, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा में अपने वशि्वास के लिए मरने वाले प्राचीन शहीदों के बयानों से; (f) अंत में, चर्च के प्राचीन पतिृपुरुषों और शकि्षकों की गवाहयिों से, जनि्होंने स्पष्ट रूप से उसी सत्य को व्यक्त किया (देखें § 28)। अब हम कुछ और पतिृपुरुषीय गवाहयिाँ उद्धृत करेंगे जो पवित्र आत्मा के सद्धिांत से सबसे अधकि प्रत्यक्ष रूप से संबंधति हैं, जसिका हम वविेचन कर रहे हैं। इस प्रकार—

रोम के संत क्लेमेंट उन्हें "पवित्र और धर्मी आत्मा, जो पिता से उत्पन्न होती है" कहते हैं;[652] और इसलिए वह पिता से भनि्न और उनके *समरूप* हैं।

संत जस्टनि उन सभी ईसाइयों की ओर से बोलते हैं जनि पर मूर्तपिूजकों ने अधर्मी होने का आरोप लगाया था: 'हम सच्चे ईश्वर, धार्मकिता के पिता के प्रति अधर्मी नहीं हैं...; परन्तु हम स्वयं उस (परमपिता) का, और उससे उत्पन्न हुए पुत्र का, और भवषि्यद्वाणी की आत्मा का सम्मान और आराधना (σεβόμεθα καί προσκυνούμεν) करते हैं, और उन्हें वचन और सत्य में यह सम्मान प्रदान करते हैं।"[653] "हम उसे (पुत्र को) क्रम में दूसरा, और भवषि्यद्वाणी की आत्मा को तीसरा स्थान देते हैं।"[654]

टाटयिन: "जो आत्मा पदार्थ को घेरे हुए है, वह परमात्मा से पूर्व की आत्मा से हीन है, और, एक आत्मा के समान होने के कारण, उसे पूर्ण ईश्वर के समकक्ष नहीं रखा जाना चाहिए।"[655]

संत आइरेनयिस: "ईश्वर को उन चीज़ों को बनाने के लिए स्वर्गदूतों की कोई आवश्यकता नहीं थी, जनि्हें वह बनाना चाहता था। क्योंकि वह हमेशा वचन और बुद्धि, पुत्र और आत्मा को धारण करता है, जनिके द्वारा और जनिके साथ उसने सभी चीजों को स्वतंत्र रूप से और अपनी इच्छा से बनाया, जनिकी ओर वह मुड़ता है जब वह कहता है: *'आओ हम मनुष्य को अपनी प्रतमिा और समानता में बनाएँ*"[656]

टर्टुलयिन: "ईश्वर का आत्मा ईश्वर है, और ईश्वर का वचन ईश्वर है, क्योंकि वे ईश्वर से हैं।"[657]

संत हपि्पोलीटस: "यदि वचन ईश्वर के साथ था, और स्वयं ईश्वर था: तो क्या कोई तब कहेगा कि दो ईश्वर अभपि्रेत हैं? मैं कहता हूँ कि, यद्यपि दो ईश्वर नहीं बल्कि एक ही है, फरि भी दो व्यक्ति और एक तीसरा है—पवित्र आत्मा का अनुग्रह। क्योंकि यद्यपि एक ही पिता हैं, फरि भी दो व्यक्ति हैं; क्योंकि पहला व्यक्ति पुत्र है, और तीसरा व्यक्ति पवित्र आत्मा है : अन्यथा हम एक ईश्वर को स्वीकार नहीं कर सकते, जबकि वास्तव में पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा में वशि्वास करते हैं।"[658] "हम पवित्र आत्मा की उपासना करते हैं।"[659]

ओरजिन: "कई धर्मग्रंथ हमें पवित्र आत्मा की प्रकृति के बारे में सखिाते हैं। उन सभी से हमने सीखा है कि पवित्र आत्मा का हाइपोस्टेसिस इतना अधकिार और गरमिा (tantae auctoritatis et dignitatis esse) रखता है कि उद्धारकारी बपतस्मिा सर्वोपरि त्रमिूर्ति के नाम (auctoritate) के अलावा नहीं किया जा सकता।"[660] "उन्होंने (प्रेरतिों ने) हमें यह भी सौंपा है कि पवित्र आत्मा, सम्मान और गरमिा में, पिता और पुत्र के साथ एक है।"[661] "वह हमेशा पिता और पुत्र के साथ वास करता है, और हमेशा है, था और रहेगा, ठीक वैसे ही जैसे पिता और पुत्र।"[662]

---

[652] 'इसलिए वह पवित्र और सत्य है, जो उससे (पिता से) नकिलता है....' *गैलैंड.* बबि्लयिोथ. पैट्र. खंड I, पृ. 44.

[653] *जस्टनि.* एपोलॉजी 1, संख्या 6.

[654] पुत्र.... दूसरे स्थान पर, और भवषि्यद्वाणी की आत्मा तीसरे क्रम में, क्योंकि हमें वचन के बाद सम्मानति किया जाता है, हम इसे प्रदर्शति करेंगे। एपोलॉज. I, n. 13.

[655] क्योंकि आत्मा, पदार्थ के माध्यम से एक सेवक होने के कारण, दविय आत्मा से नीच है, जसिे आत्मा के समान माना जाता है, और उसे स्वयं परमेश्वर के समान सम्मानति नहीं किया जाना चाहिए। ओरेट. कॉन्ट्रा ग्रीक. संख्या 4.

[656] एरेसक्सि के वरिुद्ध, पुस्तक IV, अध्याय 20, संख्या 1.

[657] इसलिए, परमेश्वर का आत्मा परमेश्वर है, और परमेश्वर का वचन परमेश्वर है, क्योंकि वे परमेश्वर से उत्पन्न होते हैं... एडवर्स. प्रेक्स. अध्याय 26; कन्फ. अध्याय 13: और पिता परमेश्वर हैं, और पुत्र परमेश्वर हैं, और पवित्र आत्मा परमेश्वर हैं, और प्रत्येक परमेश्वर है।

[658] *हपि्पोलीटस,* *नोएटस के वरिुद्ध*, अध्याय 14; *कन्फेशन्स*, अध्याय 8।

[659] हम पवित्र आत्मा की पूजा करते हैं। नोएट के वरिुद्ध, अध्याय 12।

[660] प्रथम सद्धिांतों पर, पुस्तक I, अध्याय 3.

[661] उन्होंने तब पवित्र आत्मा को वह सम्मान और गरमिा प्रदान की जो पिता और पुत्र से संबंधति है... (प्रेडि. अपोस्ट. एट एक्लेस.)।

[662] वह हमेशा पिता और पुत्र के साथ है, और हमेशा है, और था, और रहेगा, ठीक वैसे ही जैसे पिता और पुत्र (रोम. I, VI, संख्या 7; तुलना करें यरि्म. होम. VIII, संख्या 1)।

अलेक्जेंड्रिया के संत डायोनिसियस: "जो धन्य पवित्र आत्मा के विरुद्ध अपमानजनक शब्द बोलता है, वह दंड से नहीं बचेगा: क्योंकि आत्मा ईश्वर है।"[663]

संत ग्रेगरी द वंडरवर्कर: "एक ही पवित्र आत्मा है, जो परमेश्वर से निकलता है, और जिसे पुत्र के माध्यम से प्रकट किया गया है... त्रिमूर्ति महिमा, अनंतता और राज्य में पूर्ण, अविभाज्य और अविच्छेद्य है। इसलिए, त्रिमूर्ति में कुछ भी सृजित नहीं है, कुछ भी अधीनस्थ नहीं है, कुछ भी आकस्मिक नहीं है—कुछ भी जो पहले मौजूद नहीं था, न ही कुछ जो बाद में अस्तित्व में आया। न तो पिता कभी पुत्र के बिना रहे, न ही पुत्र आत्मा के बिना; लेकिन त्रिमूर्ति अपरिवर्तनीय, अचल, और हमेशा एक और समान है।"[664]

पतरा के संत मेथोडियस: "हम विश्वास करते हैं कि पुत्र में, *उनकी इच्छा की सुसन्तुष्टि के अनुसार* (एफि. 1:5), जो हमारे लिए मनुष्य बने, पिता उनकी अविभाजित दिव्यता के द्वारा पवित्र आत्मा के साथ निवास करते हैं, और उनसे एक सार के हैं।"[665] "न तो पिता कभी पिता होना बंद करेंगे, न ही पुत्र पुत्र, और न ही पवित्र आत्मा अपनी हाइपोस्टेसिस (स्वभाव) में जो हैं, वह होना बंद करेंगे, ताकि त्रिमूर्ति का कोई भी व्यक्ति न तो अनंतता से, न ही (अन्य व्यक्तियों के साथ) सहभागिता से, और न ही राज्य से वंचित हो सके।"[666]

सामान्यत; तथापि, चर्च के पवित्र पिता और शिक्षक जिन्होंने चौथी शताब्दी तक जीवन यापन किया (क्योंकि हम यहाँ केवल उन्हीं तक सीमित हैं, चौथी शताब्दी के पितृसभियों के साक्ष्यों का हवाला देना अनावश्यक समझते हैं, जब पवित्र आत्मा की दिव्यता पर संपूर्ण विस्तृत ग्रंथ लिखे गए थे और यह धर्मसिद्धान्त एक सार्वत्रिक परिषद में निर्णायक रूप से स्थापित हो गया था) — पवित्र आत्मा को निम्नलिखित गुणों का श्रेय देते थे:

667668669670क) दैवीय गुण: शाश्वतता, सर्वव्यापकता, सर्वज्ञता, स्व-पवित्रता, आत्म-पवित्रता और अन्य;

ख) दिव्य कार्य: सृष्टि,[671] पालन-पोषण,[672] विशेष रूप से भविष्यद्वक्ताओं को प्रेरणा,[673] लोगों का पवित्रीकरण,[674] उन पर अनुग्रह का प्रदान करना,[675] और विश्वासियों की आत्माओं में वास करना;[676]

c) पिता और पुत्र के साथ पूर्ण समानता और एकसारता,[677] और —

d) दैवीय आराधना।[678]

अंत में, पवित्र आत्मा के सिद्धांत में कुछ अशुद्धियों के संबंध में, जैसा कि वास्तव में सामान्य रूप से परम पवित्र त्रिमूर्ति के सिद्धांत में भी होती हैं, जो कभी-कभी कलीसिया के प्रारंभिक पादरियों की रचनाओं में पाई जाती हैं, हमने इस मामले पर पहले ही अपने विचार व्यक्त कर दिए हैं (§28), और उन्हें दोहराना अनावश्यक होगा।

---

663 *डायोनिसियस,* *Responsa ad proposit. Pauli Samosat.*, *एथनासियस,* *Opp.*, खंड I, अध्याय 1, पृ. 12, सं. मॉर.

664 उनके प्रतीक या विश्वास की स्वीकारोक्ति को 'ऑर्थोडॉक्स कन्फेशन...' के अंत में देखें।

665 *मेथोडियस,* *ऑन साइमोन एंड एना*, संख्या 6, पृष्ठ 401, पेरिस 1644।

666 उपरोक्त, रामोस पालमार में, संख्या 10 और 11, पृ. 439।

667 *इरनेयस,* विरोधी मतों के विरुद्ध, पुस्तक V, अध्याय 12, n. 2; 'क्या आत्मा एक है?' *ओरिजिन,* सिद्धांतों पर, 1, 3, n. 3, 4; उत्पत्ति 1:1 में।

668 *एथेनागोरस,* लेगेटस, VI; *क्लेमेंट ऑफ़ अलेक्ज़ेंड्रिया,* पेडागोगस, 1, 6; *ओरिजिन, एथेनासियस* में, सेरापियन को पत्र, IV, n. 10.

669 *बरनबास,* कैथोलिक पत्र, खंड 6; *टेटियन,* यूनानियों के विरुद्ध भाषण, XIII; *ओरिजिन,* सिद्धांतों पर, 1, 3, खंड 1.

670 *ओरिजिन,* संख्या पर उपदेश, XI, n. 8.

671 *थियोफिलस,* *एड ऑटोल्यकस*, 1, n. 7; *आइरेनियस,* *अगेंस्ट हेरेसीज़*, IV, अध्याय 20, n. 1.

672 *हिप्पोलीटस,* *एडवर्सस नोएटियन्स*, अध्याय IX: 'जिसके द्वारा संसार को गति मिलती है, जिसके द्वारा सृष्टि दृढ़ रहती है, और जिसके द्वारा संपूर्ण ब्रह्मांड को जीवन मिलता है।'

673 *रोम के क्लेमेंट,* कोरिन्थियों को पहली पत्रिका, खंड 45; *जस्टिन,* एपोलॉजी 1, खंड 31, 32, 63; *एथेनागोरस,* लॉज़ X; *हिप्पोलीटस,* अगेंस्ट नोएटस, अध्याय 9.

674 *इरनेयस,* विरोधी मतों के विरुद्ध III, 17, n. 3.

675 *क्लेमें. रोम.* 1 एड कोरिन्थ., n. 46.

676 *टाटियन,* *कॉन्ट्रा ग्रीक.*, अध्याय 13, 15.

677 *जस्टिन,* एपोलॉजी 1, अध्याय 32; *टेटियन,* ग्रीकों के विरुद्ध, अध्याय 7; *टर्टुलियन,* प्रैक्सस के विरुद्ध, अध्याय 9; *एथेनागोरस,* लेगेटस, X; *साइप्रियन,* पत्र 73.

678 *ओरिजिन,* यूहन्ना पर भाष्य, खंड XXXVIII, टिप्पणी 9; यिर्मयाह पर उपदेश VIII, टिप्पणी 1.

§ 37. डॉगमा के नैतिक निहितार्थ।

हम विश्वास करते हैं कि पिता ईश्वर हैं, पुत्र ईश्वर हैं, और पवित्र आत्मा ईश्वर हैं, परन्तु इस प्रकार कि तीन ईश्वर नहीं, बल्कि एक ही ईश्वर हैं। इससे हम दो मुख्य नैतिक शिक्षाएँ प्राप्त करते हैं।

1) ईश्वरत्व के तीनों व्यक्तियों में एक-दूसरे के बराबर हैं: परिणामस्वरूप, हमें उन सभी को समान दिव्य पूजा अर्पित करनी चाहिए; हमें पुत्र का सम्मान ठीक उसी तरह से करना चाहिए जैसे हम पिता का सम्मान करते हैं, और पवित्र आत्मा का सम्मान कम से कम उतना ही करना चाहिए जितना हम पिता और पुत्र का करते हैं। किसी भी दैवीय व्यक्ति को अस्वीकार करना या तुच्छ समझना, अपने भीतर मसीह में विश्वास को उलटना है।

संत बेसिल द ग्रेट ने लिखा, 'मैं हर उस व्यक्ति को आश्वस्त करता हूँ,' जो मसीह की गवाही तो देता है परन्तु परमेश्वर को नकारता है, कि मसीह उससे प्रसन्न नहीं होंगे, ठीक उसी प्रकार जैसे वे उससे प्रसन्न नहीं होंगे जो परमेश्वर को पुकारता है परन्तु पुत्र को अस्वीकार करता है; क्योंकि उसका विश्वास व्यर्थ है। मैं आत्मा को अस्वीकार करने वाले को भी आश्वस्त करता हूँ कि पिता और पुत्र में उसकी आस्था व्यर्थ सिद्ध होगी, और जब तक आत्मा उपस्थित नहीं है, वह इस आस्था को धारण नहीं कर सकता। क्योंकि जो आत्मा में विश्वास नहीं करता, वह पुत्र में विश्वास नहीं करता; और जो पुत्र में विश्वास नहीं करता, वह पिता में विश्वास नहीं करता। *पवित्र आत्मा के सिवाय कोई भी यीशु को 'प्रभु' नहीं कह सकता* (1 कुरिन्थियों 12:3)। और: *'परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा; एकलौते पुत्र ने, जो पिता की गोद में रहता है, उसी ने उसे प्रकट किया है* (यूहन्ना 1:18)। जो आत्मा में विश्वास नहीं करता, उसका सच्ची उपासना में कोई भाग नहीं है। क्योंकि कोई पवित्र आत्मा के सिवाय पुत्र की उपासना नहीं कर सकता, और न ही कोई पुत्रत्व के आत्मा के सिवाय पिता को पुकार सकता है।"[679]

एक अन्य पवित्र शिक्षक ने कहा, "कल्पना करो, कि त्रिमूर्ति एक ही मोती है, जो हर कोण से एक जैसा दिखता है और समान चमक के साथ चमकता है: यदि इस मोती का कोई हिस्सा क्षतिग्रस्त हो जाए, तो वह पत्थर अपनी सारी सुंदरता खो देगा। जब तुम पिता का सम्मान करने के लिए पुत्र का अपमान करते हो, तो पिता तुम्हारा सम्मान स्वीकार नहीं करते। पुत्र का अपमान करके पिता की महिमा नहीं होगी। यदि *एक बुद्धिमान पुत्र अपने पिता को आनंद देता है* (नीतिवचन 10:1), तो क्या पुत्र का सम्मान पिता के लिए भी सम्मान नहीं होगा? और यदि आप यह भी स्वीकार करते हैं: *'अपने पिता का अपमान करना आपके लिए कोई महिमा नहीं है'* (सिरिक 3:10), तो, परिणामस्वरूप, पिता पुत्र के अपमान से महिमामय नहीं होगा। यदि आप पवित्र आत्मा का अपमान करते हैं, तो पुत्र भी आपके सम्मान को स्वीकार नहीं करता है, क्योंकि यद्यपि आत्मा पुत्र के समान पिता से नहीं है, तथापि वह भी उसी पिता से है।"[680]

२) ईश्वरत्व के तीनों व्यक्तियाँ एक-दूसरे के प्रति एकसार और अविभाज्य हैं: परिणामस्वरूप, हमें उनकी एकल, अविभाजित उपासना करनी चाहिए, और, उनमें से प्रत्येक की—पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा—उपासना करते समय, हमें उनकी सामान्य दिव्यता को लगातार ध्यान में रखना चाहिए। हम में से कोई भी उन ईसाइयों जैसा न हो जिन्हें संत ग्रेगरी द थियोलोजियन ने *'अत्यधिक रूढ़िवादी'* कहा था, और जिन्होंने एक ईश्वर में केवल तीन व्यक्तियों का सम्मान करने के बजाय, तीन अलग-अलग देवताओं का सम्मान और स्वीकार किया।[681] पवित्र चर्च, जो अकेले ही हमें ईश्वर का सच्चा ज्ञान और ईश्वर की सच्ची उपासना सिखा सकती है, इस मामले में हमें सबसे विश्वसनीय मार्गदर्शन प्रदान करती है: इसमें परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र और परमेश्वर पवित्र आत्मा को अलग-अलग संबोधित की गई स्तुतियाँ और प्रार्थनाएँ शामिल हैं; लेकिन अन्य प्रार्थनाओं और स्तुतियों का अधिकांश भाग, लगभग सभी प्रार्थनाओं के निष्कर्ष, उद्गार और स्तुति-गीत एक ईश्वरत्व के तीनों व्यक्तियों को एक साथ संबोधित किए जाते हैं। इस प्रकार, परमपिता परमेश्वर को समर्पित पहली संध्या प्रार्थना का पाठ करते समय: 'सनातन ईश्वर और सभी सृष्टि के राजा...', ऑर्थोडॉक्स ईसाई इसे इस प्रकार समाप्त करता है: 'क्योंकि राज्य, शक्ति और महिमा तेरी ही है, पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा की, अब और सदा और युगानुयुग, आमीन'; फिर, जब हमारे प्रभु यीशु मसीह को संबोधित दूसरी प्रार्थना पढ़ता है: "सर्वशक्तिमान, पिता के वचन, यीशु मसीह, जो स्वयं में सिद्ध हो...," — जिसके अंत में वह कहता है: "क्योंकि तू अपने पिता के साथ बिना आरंभ के महिमामय है, और परम पवित्र आत्मा के साथ, युगानुयुग, आमीन;" और फिर परम पवित्र आत्मा को तीसरी प्रार्थना का पाठ करता है: "हे प्रभु, स्वर्ग के राजा,

---

[679] पवित्र आत्मा पर, अध्याय II, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स* VII, पृ. 271 में।

[680] *ग्रेगरी द थियोलोजियन,* होमीली 37, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स* III, पृ. 228.

[681] होमीली 3, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, खंड I, पृ. 37–38.

सांत्वनादाता, सत्य का आत्मा..." — और इसे इस प्रकार समाप्त करता है: "और मैं आराधना करूँगा, और गीत गाऊँगा, और तेरे परम पवित्र नाम की महिमा करूँगा, पिता और उनके एकमात्र पुत्र के साथ, अब और सदा और युगानुयुग तक, आमीन।" और यह याद रखना चाहिए कि जब भी कलीसिया परमेश्वरत्व के तीनों व्यक्तियों को एक साथ संबोधित करती है, तो वह उन्हें तीन के रूप में नहीं, बल्कि एक त्रिएक परमेश्वर के रूप में संबोधित करती है, और हमेशा उनसे एकवचन '' में प्रार्थना करती है, बहुवचन में नहीं, उदाहरण के लिए: "क्योंकि सभी स्वर्गीय सेनाएँ तुझे स्तुति करती हैं (और आप नहीं), और तुझ पर हम महिमा अर्पित करते हैं (और आप पर नहीं), पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा पर, अब और सदा और युगानुयुग, आमीन," या: "क्योंकि राज्य, सामर्थ्य और महिमा तेरी (आपकी नहीं) है, पिता की, पुत्र की और पवित्र आत्मा की, अब और सदा, और युगानुयुग, आमीन।"

3. दिव्य व्यक्तियों के बीच उनके व्यक्तिगत गुणों के अनुसार अंतर पर।

§ 38. पिछले खंड से संबंध; इस धर्मसिद्धान्त और इस पर चर्च की शिक्षा का संक्षिप्त इतिहास।

पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की समानता और एकसारता का विचार ईसाई सिद्धांत से उत्पन्न उन विचारों में से एक मात्र है, जो ईश्वर की एकतापूर्ण सार के भीतर तीन व्यक्तियों के बारे में है — और, इसकी विस्तार से जांच करने पर, हमने केवल यह जाना है कि दिव्य व्यक्तियों में क्या समान है, और किस अर्थ में वे एक हैं। उसी सिद्धांत से उत्पन्न एक अन्य अवधारणा अनिवार्य रूप से यह आवश्यक बनाती है कि पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, ईश्वरत्व के तीन व्यक्तियों के रूप में, अपनी विशिष्ट विशेषताएँ भी रखें जिनसे वे एक-दूसरे से भिन्न हों — अन्यथा वे तीन नहीं होंगे, और हम अनिवार्य रूप से उन्हें एक-दूसरे के साथ भ्रमित कर देंगे। ईश्वरीय व्यक्तियों की इन विशिष्ट विशेषताओं को प्राचीन काल से चर्च में ईश्वर के *व्यक्तिगत गुणों*, '[682] ' के रूप में संदर्भित किया जाता रहा है, और ये इस तथ्य में निहित हैं कि पिता किसी से उत्पन्न नहीं हुए हैं, बल्कि स्वयं पुत्र को जन्म देते हैं और पवित्र आत्मा उत्पन्न करते हैं; पुत्र पिता से उत्पन्न हुए हैं; और पवित्र आत्मा पिता से उत्पन्न होते हैं।

चर्च के प्राचीन शिक्षकों ने पिता की व्यक्तिगत विशेषता को व्यक्त करने के लिए *'अजन्मापन'*, ἀγεννησία, innativitas, '[683] ' शब्द का उपयोग किया, और उन्हें 'निर्विवाद', ἀναρχος[684] 'कारण रहित', αναίτιος,[685] कहा, जबकि अन्य व्यक्तियों के संबंध में उन्होंने उन्हें 'आरंभ', ἀρχή, के रूप में संदर्भित किया, principium,[686] कारण, αἰτία, causa,[687] रचयिता, auctor,[688] जबकि स्वयं पुत्र के संबंध में — पिता, Πατήρ, Pater, और पवित्र आत्मा के संबंध में — उत्प्रेरक, Προβολεύς.[689] उन्होंने पुत्र के व्यक्तिगत गुण को *'जन्मजात'* शब्द से व्यक्त किया — γέννησις, generatio,[690] और कभी-कभी अधिक सामान्य शब्दों द्वारा जो केवल यह दर्शाते हैं कि पुत्र का अस्तित्व पिता से है, जैसे: προβολή,

---

[682] हाइपोस्टेसीस के विशिष्ट गुण। *निकिया के ग्रेगरी*, अगेंस्ट यूनोमियस, पुस्तक II, खंड II, पृ. 435, सं. मोरेल।

[683] *प्रेरितों के संविधान* VIII, 41; *जस्टिन*, अपोलॉजी 1, n. 49; II, n. 6; *अलेक्जेंड्रिया के क्लेमेंट*, स्ट्रोमाटा VI, 7; *नाइसा के ग्रेगरी*, अगेंस्ट यूनोमियस, पुस्तक I, खंड II, पृ. 342, सं. मोरेल; *यूसेबियस*, *डेमोंस्ट्रेशन ऑफ़ द गॉस्पेल*, I, 5; IV, 1; *जर्मनियस*, इन *हिलारियन*, *हिस्टोरिकल वर्क्स*, फ्रैगमेंट XV, n. 3.

[684] *बेसिल द ग्रेट*, द पवित्र आत्मा पर, अध्याय 8; *ग्रेगरी द थियोलोजियन*, संस्कारों पर भजन, छंद 2, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स* IV, पृ. 218 में; *एपिफेनियस*, *हेरेसेस* 73, खंड I, पृ. 878, सं. पेटावस।

[685] *ग्रेगरी द थियोलोजियन*, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स* IV, 216 में, *हिम्न्स ऑन द मिस्ट्रीज़*, 1; *जॉन ऑफ डेमास्कस*, *एक्जैक्ट एक्सपोजिशन ऑफ द ऑर्थोडॉक्स फेथ*, पुस्तक 1, अध्याय 13; *निकेफ़ोरस ऑफ कॉन्स्टेंटिनोपल*, *एपिस्टल टू लियो III*।

[686] *अथेनासियस*, *ऑन द सिनोड*, संख्या 50; *अगेंस्ट द एरियन्स*, ओरेशन IV, II. 1; *ऑगस्टीन*, *कमेंटरी ऑन जॉन*, I, 1; *जॉन ऑफ डेमास्कस*, *ऑन द ऑर्थोडॉक्स फेथ*, I, 13.

[687] *बेसिल*, *कॉन्ट्रा यूनोमियम*, पुस्तक 1; *हिलरी*, *द ट्रिनिटी पर*, पुस्तकें 11 और 12; *ऑगस्टीन*, *प्रश्नों की पुस्तक 83*, खंड 16।

[688] *हिलारियन*, *त्रित्व पर*, पुस्तक IX; *ऑगस्टीन*, *मैक्सिमिस के विरुद्ध*, III, अध्याय 5 और 4।

[689] *अथानासियस*, अरियनों के विरुद्ध भाषण 2; *ग्रेगरी निसिसा*, यूनोमियों के विरुद्ध पुस्तक 1; *जॉन ऑफ़ डेमास्कस*, ऑर्थोडॉक्स विश्वास की सटीक व्याख्या, पुस्तक 1, अध्याय 8 और 12।

[690] *हिप्पोलीटस*, अगेंस्ट नोएटस, XVI; *ग्रेगरी द थियोलोजियन*, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, खंड III, पृ. 54; खंड IV, पृ. 15; *बेसिल द ग्रेट*, वही, खंड VII, पृ. 68, 82, 199, आदि।

prolatio, processio, derivatio, ἀπορροία, signatura,[691] और क्रियाएँ: προπηδάν, ἐκλάμπειν, ἀναλάμπειν और इसी तरह;[692] पुत्र स्वयं को पुत्र और ईश्वर का शिशु, पिता की प्रतिमा, उनका वचन, बुद्धि, इच्छा और दाहिना हाथ—[693] आदि कहा जाता था। अंततः पवित्र आत्मा के एक व्यक्तिगत गुण को व्यक्त करने के लिए *'ekporeusis'* शब्द का उपयोग किया गया — ἐκπόρευσις, ἐκπόρευμα, processio, πρόοδος, προβολή, πρόβλημα,[694] और क्रियाएँ: ἐκπορεύεσθαι, προσελθεῖν, προϊέναι;[695] पवित्र आत्मा स्वयं को — पिता की प्रतिमा, बुद्धि, ईश्वर की उंगली आदि कहा गया था।[696] पुत्र कैसे पिता से उत्पन्न होता है और उत्पत्ति का वास्तविक कृत्य क्या है — यह, चर्च के प्राचीन शिक्षकों ने कहा, हमारे लिए अकल्पनीय और अभिव्यक्त करने में असमर्थ है;[697] बेशक, 'जन्म' को आध्यात्मिक अर्थ में समझना चाहिए, और इसमें किसी भी शारीरिक पृथक्करण की कल्पना नहीं करनी चाहिए।[698] कैसे पवित्र आत्मा पिता से उत्पन्न होती है, और 'उत्पत्ति' तथा 'जन्म' में क्या अंतर है—उन्होंने इसे भी समान रूप से अकल्पनीय माना; लेकिन उन्होंने यह भी नोट किया कि इनमें निस्संदेह अंतर है, और ये अस्तित्व के दो अलग-अलग रूप हैं, जिन्हें भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए।[699]

ईश्वर के व्यक्तिगत गुणों के बारे में यह सिद्धांत मसीह की कलीसिया में कई शताब्दियों तक इसी रूप में बना रहा: इसे ऑर्थोडॉक्सी के मौलिक सिद्धांतों में से एक के रूप में, चौथी शताब्दी में रचित नाइसन-कॉन्स्टेंटिनोपोलिटन धर्मविश्वास में शामिल किया गया, जो सभी मसीहियों के लिए आस्था का अपरिवर्तनीय मानक बन गया। लेकिन सातवीं शताब्दी में—या, यदि हम लैटिनों के विवरणों पर विश्वास करें, तो पाँचवीं शताब्दी में ही—पश्चिमी यूरोप के कुछ व्यक्तिगत शिक्षकों ने कभी-कभी पवित्र आत्मा की व्यक्तिगत संपत्ति के संबंध में गलत बयान देना शुरू कर दिया, यह दावा करते हुए कि वह न केवल पिता से बल्कि पुत्र से भी उत्पन्न होता है—फिलियोक्वे।[700] हालाँकि, यह सोचा जा सकता है कि उन्होंने यहाँ *'प्रस्थान'* (procedit) शब्द का उपयोग पिता और पुत्र के संबंध में एक ही अर्थ में नहीं किया था, और उनके मन में विशेष रूप से *पिता से* पवित्र आत्मा का शाश्वत *प्रस्थान* था और केवल *पुत्र से* संसार में उनका *अस्थायी*

---

691 *इरनेयस,* *एगेंस्ट हेरेसीज़*, II, 28, n. 6; *ट्रतुल्लियन,* *अपोलाजी*, XXI; *एगेंस्ट द हेरेटिक्स*, III, VII, IX, n. 14; *एथेनागोरस,* *ऑन द लॉज़*, X; *यूसेबियस,* *डेमॉन्स्ट्रेशन ऑफ द गॉस्पेल*, IV, 3; *हिलरी,* *ऑन द ट्रिनिटी*, VIII, 46.

692 *टैटियन,* ग्रीकों के विरुद्ध, V; *थियोफिलिस,* ऑटोलिकस को, 11, 14; *जस्टिन,* टाइफन के साथ संवाद, CXXVIII; *हिप्पोलीटस,* नोएटस के विरुद्ध, XI.

693 *हिप्पोलिटस,* *कॉन्ट्र. नोएट.* संख्या XI; *मेथोडियस,* *डी क्रिस्टो एट एंटीक्रिस्ट.* संख्या III; *ट्रटुलियन,* *कॉन्ट्र. मार्कियन.* III, 16; *डी ओरेट.* IV; *एथेनागोरस,* *लेग.* X; *क्लेमेंट ऑफ़ अलेक्ज़ेंड्रिया,* *स्ट्रोम.* II, 4; *थियोफिलिस,* *एड ऑटोल.* 11, 10; *ओरिजिन,* *इन सिस.* 16:8.

694 *रोम के क्लेमेंट,* अंश (*गैलैंड* 1, 44 में); *एथनासियस,* *विश्वास की व्याख्या*, संख्या 4; *ग्रेगरी महान,* *ओरेट. XX, XLII*; *दमिश्क के जॉन,* *एपिस्ट. डी ट्राइसैग.*, अध्याय 28.

695 *सिरिल,* जूलियन के विरुद्ध, पुस्तक I और यूहन्ना 15:27 पर टीका; *बेसिल,* पवित्र आत्मा पर, पुस्तक XVIII, खंड 46 और पत्र XXXVIII, खंड 4.

696 *इरनेयस,* विरोधी संप्रदायों के विरुद्ध, पुस्तक IV, 7; *थियोफिलिस,* ऑटोलिकस को, 11, 15; *ऑगस्टीन,* फाउसटस के विरुद्ध, पुस्तक XXXII, 12.

697 *इरनेयस,* पुस्तक II, 28, n. 6; *डिडिमस,* ऑन द ट्रिनिटी, 1, 9; *ग्रेगरी द थियोलोजियन,* *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स* में, खंड I, पृ. 173 और 288; खंड III, पृ. 59–60, आदि।

698 *हिप्पोलीटस,* *एगेंस्ट नोएटस*, XVI; *ट्रटुलियन,* *एगेंस्ट प्रैक्सियास*, XIX; *यूसेबियस,* *डेमोंस्ट्रेशन ऑफ द गॉस्पेल*, IV, 15; *बेसिल द ग्रेट,* *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स* में, VII, 68, 82, 87; *ग्रेगरी द थियोलोजियन,* वही, II, 222; III, 55–56.

699 *ग्रेगरी द थियोलोजियन,* वही, II, 173; III, 109, 110; *बेसिल द ग्रेट,* वही, VII, 301; *एपिफेनियस,* *हेरेसेस* LXIX, n. 18; *ऑगस्टीन,* *अगेंस्ट मैक्सिमिस* III, अध्याय 14: "जन्म लेने और उत्पन्न होने में क्या अंतर है… इसे कौन समझा सकता है?... 'यह मैं जानता हूँ; परन्तु उस उत्पत्ति और इस प्रवाह के बीच भेद करना, मैं नहीं जानता, मैं असमर्थ हूँ, और न ही मैं इसके योग्य हूँ;'" *जॉन ऑफ़ डेमास्कस,* एक्सैक्ट एक्सपोज़िशन ऑफ़ द ऑर्थोडॉक्स फेथ, पुस्तक 1, अध्याय 8: "पवित्र आत्मा, यद्यपि पिता से निकलता है, परन्तु जन्म के मार्ग से नहीं, बल्कि प्रवाह (ἐκπορευτῶς) के मार्ग से। यहाँ अस्तित्व का एक और तरीका है, जो पुत्र के जन्म जितना ही अकल्पनीय और अज्ञेय है..." और आगे: "पुत्र जन्म से पिता से है; हालाँकि पवित्र आत्मा भी पिता से है, वह जन्म से नहीं बल्कि प्रवाहन से है। और यद्यपि हमें सिखाया गया है कि जन्म और प्रवाहन के बीच एक अंतर है, हम यह नहीं जानते कि यह अंतर किसमें निहित है, न ही यह कि पुत्र का जन्म और पवित्र आत्मा का पिता से प्रवाहन वास्तव में क्या है" (पृ. 21, 25)।

700 लैटिन लोग विशेष रूप से टोलेडो की पहली परिषद (ईस्वी 400) और पाँचवीं शताब्दी में स्पेन में आयोजित अन्य परिषदों की ओर इशारा करते हैं, जिनके बारे में उनका दावा है कि उन्होंने अपने *स्थानीय* धर्म-विश्वासों में 'फिलियोक्वे' शब्द को शामिल किया, साथ ही धन्य ऑगस्टीन († 430), जिन्हें वे अपने धर्मशास्त्र के प्रमुख समर्थक मानते हैं (Curs. Theolog. compl. VIII, पृ. 652, पेरिस 1841)। लेकिन जहाँ तक इस बात का सवाल है कि क्या पश्चिमी लेखकों की इन गवाहियों पर भरोसा किया जा सकता है—हम इसे बाद में (§§ 44 और 46) देखेंगे।

प्रस्थान या प्रेषण था: कम से कम, उनके समय के एक ग्रीक पिता, मैक्सिमिस द कन्फेसर († 662), ने इन शिक्षकों के शब्दों की व्याख्या इसी प्रकार की, ताकि ग्रीकों को आश्वस्त किया जा सके, जो लैटिनों की नवीनता के खिलाफ अपनी आवाज़ उठाने में तेज़ थे;[701] और बाद में, एक रोमन लेखक, अनास्तासियस द लाइब्रेरियन († 890), संत मैक्सिमिस की व्याख्या का हवाला देते हुए।[702] लेकिन बीज बोया जा चुका था, और जल्द ही उसका फल मिला; आठवीं शताब्दी में, पवित्र आत्मा की उत्पत्ति का प्रश्न पश्चिम में सबसे तीव्र विवादों का विषय बन गया, और कई लोगों ने, पवित्र आत्मा के संसार में अस्थायी मिशन और उनके शाश्वत अस्तित्व के तरीके के बीच अब अंतर नहीं करते हुए, दृढ़ता से यह दावा करना शुरू कर दिया कि पवित्र आत्मा सर्वकाल से समान रूप से *पिता* और *पुत्र* दोनों से उत्पन्न होता है। सदी के अंत के करीब, यह जोड़ — 'फिलियोक्वे' — सबसे अधिक संभावना स्पेन में, स्वयं निकेन-कॉन्स्टेंटिनोपोलिटन धर्मविश्वास में शामिल कर दिया गया।[703] क्योंकि प्रसिद्ध अल्क्विन († 804) ने उस समय ल्योन में भाइयों को लिखा, उन्हें *स्पेनिश* नवाचार से डरने और ' ' धर्म-सूत्र में थोड़ी सी भी वृद्धि की अनुमति न देने की चेतावनी दी;[704] जबकि अक्विलिया के पैट्रिआर्क पॉलिनस ने 791 में एक स्थानीय परिषद भी बुलाई, जिसमें उन्होंने ऐसी किसी भी वृद्धि की निंदा की।[705] दुर्भाग्यवश, सत्य के रक्षकों की आवाज़ अनसुनी रह गई। नौवीं शताब्दी की शुरुआत में (809 में), सम्राट चार्लेमेन ने इस विवादास्पद मामले पर विचार-विमर्श करने के लिए आचेन (अक्विस्ग्राणी) में एक परिषद बुलाई, जिसकी अध्यक्षता उन्होंने स्वयं की।[706] परिषद में क्या हुआ, इसकी सटीक जानकारी उपलब्ध नहीं है, क्योंकि परिषद के कार्यवृत्त

---

[701] "यूहन्ना पर अपनी टीकाओं से रोमन पिताओं और अलेक्जेंड्रिया के सिरिल की गवाहियों का हवाला देते हुए, वे (लैटिन) किसी भी तरह से पुत्र को आत्मा का कारण नहीं मानते (οὐκ αἴτιον τόν Υἱόν ποιούντας τοῦ Πνεύματος): क्योंकि वे जानते हैं कि पुत्र और आत्मा का *केवल एक ही* कारण (μίαν γάρ ἴσασιν οἴτίαν) है—पिता, पहला जन्म के द्वारा, दूसरा प्रवाह के द्वारा; बल्कि वे केवल यह दिखाते हैं कि पवित्र आत्मा पुत्र के द्वारा भेजा जाता है (δι'αύτοῦ χροϋέναι), और इस प्रकार उनके सार की समानता और अभिन्नता को सूचित करते हैं।" एपिस्ट. एड मारिनिम साइप्रि प्रेस्बिटेरम, इन ओप. एस. *मैक्सिमी* टी. II, पृ. 69, सं. पेरिसि 1675।

[702] इसके अलावा, हमने स्वयं उसी संत मैक्सिमिस का, पुरोहित मारिनस को लिखा गया पत्र व्याख्या किया है, जो पवित्र आत्मा की उत्पत्ति के बारे में है, जिसमें वे सुझाव देते हैं कि यूनानी हमारे खिलाफ व्यर्थ ही बहस करते हैं जब हम, जैसा कि वे दावा करते हैं, *पुत्र को पवित्र आत्मा का कारण या सिद्धांत नहीं कहते*; फिर भी, पिता और पुत्र के बीच सार की एकता से अच्छी तरह अवगत होकर, हम स्वीकार करते हैं कि जैसे पवित्र आत्मा पिता से निकलते हैं, वैसे ही वे पुत्र से भी निकलते हैं, *'मिशन'* का अर्थ 'उत्पत्ति' समझते हुए; दोनों भाषाओं की निष्ठापूर्वक व्याख्या करते हुए; विद्वानों को शांति के भाव से शिक्षित करते हुए, साथ ही हम और यूनानियों दोनों को यह सिखाते हुए कि कुछ मामलों में पवित्र आत्मा पुत्र से उत्पन्न होता है, और अन्य मामलों में नहीं, इस प्रकार एक भाषा की बारीकियों को दूसरी में व्यक्त करने की कठिनाई को व्यक्त करते हुए।" *अनास्तासियस, बिब्लियोथेका,* जॉन द डीकन को पत्र। टी. वी. कॉन्सिल. *लैबेई,* पृ. 1771.

[703] यह आम तौर पर माना जाता है कि इस अतिरिक्त को मूल रूप से 589 में आयोजित, स्पेन के टोलेडो की तीसरी परिषद में ही नाइसीन-कांस्टेंटिनोपोलिटन धर्मविश्वास में शामिल कर लिया गया था। हालांकि, टोलेडो की तीसरी परिषद के कार्यों के सबसे शुरुआती संस्करणों में— जैसे कि 1530 का कोलोन संस्करण, 1535 का पेरिसि संस्करण और 1593 का मैड्रिड संस्करण— यह जोड़ अनुपस्थित है, जैसा कि बेल्लार्माइन ने स्वीकार किया था, और जैसा कि कुछ हाल के पश्चिमी लेखक भी स्वीकार करते हैं (देखें अपड *ज़ोर्नकिव,* दे प्रोसेस. Spirit. S. solo Patre, tract, III, pp. 288–269, ed. Region., 1774, और Curs. Theolog. Compl., vol. V, p. 406, Paris, 1841). परिणामस्वरूप, इसे जानबूझकर कार्यवृत्तों के बाद के संस्करणों में डाला गया था।

[704] प्रिय भाइयो, स्वयं को पूरी तरह से स्पेनिश संप्रदाय की भूल से बचाओ; विश्वास में पवित्र पिताओं के पदचिह्नों का अनुसरण करो, और सार्वभौमिक चर्च की परम पवित्र एकता में स्वयं को जोड़ो। लिखा है: 'अपने पिताओं की सीमाओं को पार मत करो'। और कैथोलिक धर्म के प्रतीक में कोई भी नया तत्व न लाएँ, न ही धार्मिक कार्यालयों में ऐसी परंपराओं को बढ़ावा दें जो प्राचीन काल में अज्ञात थीं (एपिस्ट. 69 इन ओप. *अल्कुइनी,* पृ. 1587, सं. पेरिसि, 1617)। अल्क्विन यहाँ उस विशेष अतिरिक्तता का उल्लेख नहीं करते हैं, जिसका वे संदर्भ दे रहे हैं; लेकिन यह ज्ञात है कि पश्चिमी चर्च में निकेन-कॉन्स्टेंटिनोपल प्रतीकाक्षर में 'फिलियोक्वे' के अतिरिक्त किसी अन्य अतिरिक्तता पर कभी विवाद नहीं रहा...

[705] हमसे यह दूर रहे, और यह हर विश्वासी हृदय से दूर रहे, कि हम कोई ऐसा धर्म-सूत्र या विश्वास रचें या सिखाएं जो उनके द्वारा स्थापित धर्म-सूत्र से भिन्न हो, या किसी अन्य तरीके से हो... क्योंकि वास्तव में, विश्वास के विषय में उन बातों में कुछ जोड़ना या घटाना शामिल नहीं है जिन्हें पवित्र पिताओं द्वारा दृढ़ता और मजबूती से प्रचारित किया गया है: उनके अर्थ के अनुसार सही ढंग से सोचना, और उनकी सूक्ष्म समझ को अपनी समझ से पूरक बनाना: परंतु जोड़ना या घटाना उनके पवित्र अर्थ के विरुद्ध कपटपूर्ण ढंग से कार्य करना है; चालाकी से टालमटोल करके उनसे अलग ढंग से सोचना; और एक भ्रमित शैली में एक विकृत सिद्धांत की रचना करना; और इस प्रकार, सिखाने के बजाय, एक अधर्मी मुख से घमंडपूर्वक बकबक करने का दुस्साहस करना है। *ज़ोर्नकि,* *De proc. Sp. S.*, पृ. 369–370, और *थियोफ. प्रोकोपोव,* *Hist., Controv. de process. Sp. S.*, *Theolog.*, खंड I, पृ. 836–838, लेइपज़िग 1782 में देखें।

[706] समकालीन लेखक इस परिषद की प्रामाणिकता की गवाही देते हैं: *एडो* अपनी *क्रॉनिकल* में, वर्ष 809 के लिए; *एटन**डी गेस्टिस फ्रांकोरम* की पुस्तक IV, अध्याय 97 में; *एगिन्हार्ड**हिस्ट. फ्रांकोरम स्क्रिप्टोर.* के खंड II, पृ. 255, सं. पेरिसि 1636 में, और अन्य।

संरक्षति नहीं रहे।[707] जो ज्ञात है वह यह है कि चार्लेमेन के व्यक्तगित प्रभाव के कारण, क्रीड में 'फलियोक्वे' जोड़ने की इच्छुक पार्टी का पलड़ा भारी रहा, और सम्राट व परषिद ने रोम में पोप लयिो तृतीय को एक दूतमंडल भेजा, जसिमें उनसे नए रचे गए सद्धिांत को अनुमोदति करने और क्रीड में इस संशोधन की अनुमति देने का अनुरोध कयिा गया। एक प्रत्यक्षदर्शी वृत्तांत के अनुसार, दूतों ने पहले एक लंबी भाषण में पोप को यह वश्विास दलिाने का प्रयास कयिा कि जसि सद्धिांत के लएि वे उनकी सहमति चाहते थे, वह सत्य और प्राचीन था (यह कैसा सद्धिांत है, जब स्वयं पोप को भी इसकी सत्यता और प्राचीनता के बारे में मनाना पड़ा!)। पोप ने वास्तव में, दखिावटी तौर पर नए सद्धिांत को स्वीकार कर लयिा, लेकनि उन्होंने सभी दूतों के मनाने और इस तथ्य के बावजूद कि, जैसा कि दूतों ने दावा कयिा था, यह जोड़ पहले ही कुछ चर्चों में कयिा जा चुका था, इसे क्रीड में शामलि करने से दृढ़ता से इनकार कर दयिा।[708] और सभी के सामने अपने नषिेध की स्पष्ट गवाही देने तथा वश्विास के अपरविर्तति मॉडल को कसिी भी भ्रष्टाचार से सुरक्षति रखने के लएि, पोप ने नाइसनि-कॉन्स्टेंटनिोपोलटिन धर्मसूत्र को दो चांदी की पट्टकिाओं पर अंकति करने का आदेश दयिा, एक ग्रीक में और दूसरी लैटनि में, और उन्हें सेंट पीटर्स बेसलिकिा में इस शलिालेख के साथ रखा: 'haec Leo posui amore et cautela orthodoxae religionis', अर्थात्, *'मैं, लयिो, ने इसे ऑर्थोडॉक्स धर्म के प्रति प्रेम और उसकी रक्षा के लएि स्थापति कयिा है'*।[709] हालांकि पोप के वरिोध के बावजूद, धर्मवश्विास में इस अनधकिृत जोड़ को गॉल के वभिन्नि हस्सिों में धीरे-धीरे अपना लयिा गया, स्पेन, जर्मनी और इटली में, इसलएि जब नौवीं शताब्दी के दूसरे भाग में, पोप के मशिनरी बोइयार्स के बीच कन्स्टेंटनिोपल की सी से हटाकर रोम की ओर मोड़ने के उद्देश्य से पहुँचे, तो ये मशिनरी वहाँ भी 'फलियोक्वे' जोड़ के साथ क्रीड का प्रसार कर रहे थे। तभी कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआर्क, फोतउिस ने पहली बार अपनी साहसी आवाज़ उठाई, उन्होंने ऑर्थोडॉक्सी की रक्षा में, लैटनिों के दुरुपयोग के खलिाफ, और पूरी दुनिया के सामने धर्मवश्विास में की गई अवैध जोड़ के लएि उनकी फटकार लगाई, जो सार्वभौमकि परषिदों के नयिमों के वपिरीत था, और जसिे उन्होंने जल्द ही (866 में) पूरे पूर्व के बशिपों की एक बड़ी परषिद में नदिा की।[710] पोप नकिोलस प्रथम ने, परषिद के नर्णिय के आगे समर्पण करने और अज्ञानता से हुई त्रुटि' को सुधारने के बजाय, रेइम्स के आर्चबशिप जकिमार और गॉल के अन्य बशिपों को लखिा, और उनसे आग्रह कयिा कि वे यूनानयिों को यह साबति करने के लएि हर संभव प्रयास करें कि पवत्रि आत्मा पुत्र से उत्पन्न होता है;[711] और जॉन के उत्तराधकिारी, एड्रयिन ने, लैटनिों के वरिुद्ध फोतउिस की परषिद के सभी फरमानों की नदिा करके, इस वधिर्म को धर्मसद्धिान्त का दर्जा दे दयिा।[712]

---

[707] केवल शीर्षक के अलावा: *Concilium Aquisgranense de addita ad Symbolum voce *Filioque* celebratum an DCCCIX tenpore Leonis Papae III*. तो फरि, वे संरक्षति क्यों नहीं रहे? क्या यह केवल संयोग से था? या क्या उन्हें बाद में जानबूझकर नष्ट कर दयिा गया था, रोमन झूठे सद्धिांत की कठोर नदिा के रूप में, इस बात के अकाट्य प्रमाण के रूप में कि पश्चमिी बशिप स्वयं जो परषिद में उपस्थति थे—या कम से कम उनमें से कई—ने इस झूठे सद्धिांत का कड़ा वरिोध कयिा था? क्या उन्होंने इसमें चर्च में अब तक अज्ञात एक नवीनता देखी, और कसिी भी परस्थितिि में इसे स्वीकार करने से इनकार कर दयिा? परषिद की बाद की घटनाएँ इस अनुमान को अत्यधकि संभावति बनाती हैं।

[708] उल्लेखति प्रत्यक्षदर्शी, जो पोप के साथ राजदूतों की बातचीत के दौरान उपस्थति था, स्माराग्ड (अब्बास वर्दुनेंससि) है, जसिने इस संपूर्ण महत्वपूर्ण वार्तालाप को भावी पीढ़यिों के लएि दर्ज कयिा। देखें *Labb.* Concilior., खंड VII, पृ. 1195–1198, और *Baron.* Annal. Eccles., खंड IX, पृ. 552, वर्ष 809 के अंतर्गत।

[709] इस घटना की प्रामाणकिता की पुष्टि प्राचीन पश्चमिी लेखकों द्वारा की गई है: *अनास्तासयिस द लाइब्ररेरयिन* ने पोप लयिो तृतीय की अपनी जीवनी में (Vit. Roman. Pontif., ed. Romae 1752, § 84, पृ. 297), *पीटर एबेलार्ड* (lib. II introduct. in Theolog. cap. 14, पेरसि 1616, पृ. 1089), *पीटर लोम्बार्ड* (सेंटें. लबि. 1, चैप. II, कोलोन 1576), *पीटर डेमयिन* (ओप. टी. III, पेरसि 1743, पृ. 329) — और *बारोनयिस, बेल्लार्माइन, बटि* और अन्य जैसे हाल के वद्विानों को भी कोई संदेह नहीं है।

[710] एपस्टि. एनसाइक्लकिा, *फोतयिस के* पत्रों में, लंदन 1651 में प्रकाशति, दूसरा संस्करण। *बारोनयिस* द्वारा उद्धृत अंश देखें, *एनल. इक्ल.* वर्ष 903 के लएि, खंड X, संख्या 33। तुलना करें: उनकी उत्कृष्टता *इनोसेंट द्वारा लखिति* चर्च इतहिास की रूपरेखा, भाग II, पृ. 19, 27, 32. मॉस्को 1834.

[711] एपस्टि. *नकिोलस* प्रथम एड हन्रिकमार्म आर्चबशिप रेमेन्सैम, *लैब.* के पास; कॉन्सलि. खंड VIII, पृ. 468। हनिकमार् ने, यह पत्र (867 के अंत में) प्राप्त करने के बाद, इसे कई बशिपों की उपस्थतिि में फ्रांस के राजा के सामने पढ़कर सुनाया; इसके बाद, पारस्परकि सहमति से, ग्रीकों के आपत्तयिों का जवाब तैयार करने का कार्य दो सबसे वद्विान व्यक्तयिों को सौंपा गया: *ओंडो* (बॉवे के बशिप) और *रैट्राम्नस* (कोर्बी के भकि्षु)। बाद वाले का उत्तर हमें प्राप्त है; लेकनि पहले वाले का उत्तर, जसिे गग्रिकमार् ने संशोधति कयिा था, संरक्षति नहीं रहा है। देखें *सेइलर,* हस्टि. जनरल. देस ऑटर्स सैक्र. एट एक्ले., खंड XIX, पृष्ठ 150–155 और 282, पेरसि 1754।

[712] *Labb.* Concil., खंड VIII, पृष्ठ 1084–1087 और बाद के पृष्ठों में।

बाद के पोप जॉन VIII ने फोतउिस से सहमत होकर, धर्मवशि्वास से उस अवैध सम्मलिन को हटाने का वादा कयिा था,[713] और रोमन दूतों ने, जनि्होंने कुछ ही समय बाद कॉन्स्टेंटनिोपल की महान परषिद (879) में भाग लयिा, वास्तव में उस फरमान पर हस्ताक्षर कर दयिा, जसिने एक बार फरि से हमेशा के लएि नकिेन-कॉन्स्टेंटनिोपल धर्म-सत्य में कसिी भी अतरिक्ति जोड़ या उसमें कसिी अन्य परविर्तन को मना कर दयिा।[714] हालाँकि, पोप, परषिद से अपनी अपेक्षति बात—अर्थात् बोलआिर के चर्च का अपने अधकिार के अधीन होना—प्राप्त करने में वफिल रहने के कारण, ने परषिद के फरमानों को स्वीकार नहीं कयिा और अपना वादा पूरा नहीं कयिा, जसिके परणिामस्वरूप 'फलियिोक्वे' के अतरिक्ति के साथ धर्मवधि पिश्चमिी वभिन्नि चर्चों में उपयोग होती रही। यह ठीक से ज्ञात नहीं है कि रोम में ही इस धर्मवशि्वास का ऐसा प्रयोग कब अनुमत हुआ; लेकनि, स्वयं रोमन लेखकों के ववरिणों के अनुसार, यह 1014 से पहले नहीं था।[715] तब से, वशिष रूप से कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआिर्क, माइकल केरुलारयिोस (1053 में) द्वारा और अधकि नदिा कएि जाने के बाद, रोमन चर्च ने कभी भी अपने झूठे सद्धिांत का परत्यिाग नहीं कयिा है, जो उन सभी नवाचारों में सबसे महत्वपूर्ण है जनि्होंने इसे सार्वभौमकि चर्च से अलग कयिा है।

मध्य युग में, ईश्वर के व्यक्तगित गुणों से संबंधति इस सद्धिांत के कुछ अन्य वकि्रृत रूप पश्चमि में स्कॉलैस्टकिों के बीच प्रकट हुए। कुछ ने इन गुणों के अस्तत्वि को ही खारजि कर दयिा, हालाँकि उन्होंने दैवी व्यक्तयिों की वास्तवकिता से इनकार नहीं कयिा।[716] अन्य यह नर्धिारति करने का प्रयास करते थे कि ईश्वर में से पुत्र कैसे और कसिसे उत्पन्न होता है और पवत्रि आत्मा कैसे उत्पन्न होती है, और उन्होंने, अधकिांशत; यह माना कि पुत्र ईश्वर के मन से उत्पन्न होता है, जबकि आत्मा इच्छा से उत्पन्न होती है।[717] अन्य लोगों ने समान उत्साह के साथ यह समझाने का प्रयास कयिा कि पुत्र की उत्पत्ति पवत्रि आत्मा की प्रवृत्ति से कैसे भन्नि है, और क्यों पहले को 'उत्पत्ति' कहा जाना चाहएि जबकि दूसरे को नहीं — और इस प्रश्न के उत्तर में उन्होंने अत्यंत ववधिि और अजीब मतों में लप्ति हो गए।[718] लेकनि ऐसी सभी कल्पनाएँ और सूक्ष्मताएँ[719] केवल वद्यिालय की दीवारों तक सीमति रहीं और चर्च के जीवन में प्रवेश नहीं कर सकीं।

सोलहवीं शताब्दी से आगे बढ़ते हुए, पश्चमि में प्रोटेस्टेंट समुदाय उभरे जनि्होंने पापवाद की लगभग सभी मथि्या शकि्षाओं को खारजि कर दयिा, हालांकि ऐसा करते हुए उन्होंने कई सच्ची शकि्षाओं को भी अस्वीकार कर दयिा; लेकनि सभी को आश्चर्यचकति करते हुए, उन्होंने पवत्रि आत्मा के 'पुत्र से' प्रवाहति होने संबंधी रोमन मथि्या सद्धिांत को बनाए रखा, जसिे वे आज तक स्वीकार करते आ रहे हैं।

केवल ऑर्थोडॉक्स चर्च ने ही ईश्वर के व्यक्तगित गुणों संबंधी धर्मसद्धिान्त को, अन्य सभी चर्चों की तरह, अपनी मूल शुद्धता और अखंडता में संरक्षति रखा है, और यह सखिाता है: "एक ईश्वरत्व में तीन व्यक्ति हैं, पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा: पति, जनि्होंने सभी युगों से पहले अपने अस्तत्वि से पुत्र को उत्पन्न कयिा और पवत्रि आत्मा को प्रवाहति कयिा; पुत्र, जो सभी युगों से पहले पति से जन्मा और उनसे एकसार है; पवत्रि आत्मा, जो अनंत काल से पति

---

[713] 'इसलएि हम, आपकी श्रद्धा को ध्यान में रखते हुए, पुनःपुष्टि करते हैं,' पोप ने फोतउिस को लखिा, 'कि आपको इस बद्धिु के संबंध में हम पर अपना भरोसा रखना चाहएि, जसिसे परमेश्वर के चर्चों में कलह उत्पन्न हुई है, क्योंकि न केवल हम यह नहीं कहते, बल्कि हम उन लोगों की भी नदिा करते हैं, जनि्होंने अपने पागलपन में, आरंभ से ही दव्यि वचन के उल्लंघनकर्ता, प्रभु मसीह, प्रेरतिों और अन्य पवत्रि पतिाओं की धर्मशास्त्र के वधि्वंसक के रूप में यह कहने की हम्मित की, जनि्होंने परषिद में एकत्र होकर हमें पवत्रि धर्मवशि्वास सौंपा; और हम उन्हें यहूदा के समकक्ष रखते हैं। देखें *लैब.* Concil. Vol. IX, पृ. 235, और *Bevereg.* Pandect, कैनन. Vol. II, पृ. 306, ऑक्सन. 1672. और इस पत्र की प्रामाणकिता के बचाव में, *ज़ोर्नकिाव* — *डे प्रोसेस. स्परि.*, पृ. 415–420, और *थ. प्रोकहोरोवचि,* *थयिोलॉग.*, पृ. 852–853, उद्धृत संस्करण में देखें।

[714] इस परषिद की प्रामाणकिता पर, लैटनिों के वपिरीत, ज़ोर्नकिाव में उपरोक्त, पृ. 164–170, और थयिोफ. प्रोकपोवचि, पृ. 851–852 देखें।

[715] Curs. Theolog. Compl. VIII, पृ. 664, पेरसि 1841; *पेरोन,* Praelect. Theol., खंड II, पृ. 448, लोज़ाउ, 1839।

[716] ये वशिष रूप से प्राएपोसटिीवस, अरमीनम के ग्रेगरी और रपिसि के जॉन हैं (*थॉमस एक्वनिास,* *क्वेस्ट. XXII*, अनुच्छेद 2, और *क्वेस्ट. XL*, अनुच्छेद 1)।

[717] स्कॉलस्टकि्स के बीच यह लगभग सर्वव्यापी दृष्टकिोण था। देखें *थयिोफ. प्रोकोपोव,* *थयिोल.*, खंड 1, पृ. 1229, उद्धृत संस्करण।

[718] *रचिर्ड वकि्टोरनिी,* *डे ट्रनिटिाटे*, पुस्तक VI, अध्याय 18; *बोनवेन्चर,* *इन 1 सेंटेंशयिा*, डस्टि. 13, क्वेस्ट. 2; *सुआरेस,* *डे ट्रनिटिाटे*, पुस्तक XI, अध्याय 6, n. 11, और अन्य।

[719] यहाँ कुछ और प्रश्न दएि गए हैं जनि्हें स्कॉलरयिों ने परम पवत्रि त्रमिूर्ति पर अपने प्रबंध में संबोधति कयिा है: 'क्या परमेश्वर पति ने स्वयं को उत्पन्न कयिा?' 'क्या दव्यि सार ने पुत्र को उत्पन्न कयिा, या पुत्र पति से उत्पन्न हुआ, या पुत्र स्वयं दव्यि सार से जन्मा?' 'क्या पति पुत्र को उत्पन्न करना चाह सकते थे, या उन्होंने ऐसा चाहा?' कि पुत्र शून्य से नहीं, बल्कि किसी वस्तु से है, यद्यपि पदार्थ से नहीं... और इसी तरह... (देखें *पीटर लोम्बार्ड,* *सेंटेंशयिस*, पुस्तक 1, डस्टिंक्शन्स 4, 5, 6 और 7)।

से निकलता है, पिता और पुत्र के साथ एकसार है" (ऑर्थोडॉक्स कन्फेशन, भाग 1, प्रश्न 9 का उत्तर)। "इस प्रकार, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा—अजन्मे, उत्पन्न और उत्पन्न होने वाले—ईश्वरत्व के भीतर व्यक्तियों के रूप में विभिदति हैं, न कि एक पदार्थ के रूप में, जो स्वयं में अविभाज्य है" (उपरोक्त, प्रश्न 12 का उत्तर)। और कहीं और: "पवित्र त्रिमूर्ति के व्यक्तियों के बीच अंतर यह है कि परमेश्वर पिता न तो किसी अन्य व्यक्ति से उत्पन्न हुए हैं और न ही उनसे निकलते हैं; परमेश्वर का पुत्र अनंतकाल से पिता से उत्पन्न हुए हैं; पवित्र आत्मा अनंतकाल से पिता से निकलते हैं" (विस्तारित धर्मशिक्षा, अनुच्छेद 1)।[720]

§ 39. परमेश्वर पिता का व्यक्तिगत गुण।

पिता परमेश्वर के व्यक्तिगत गुण के संबंध में ऑर्थोडॉक्स चर्च की शिक्षा का आधार पवित्र शास्त्र में सबसे दृढ़ है। इनमें शामिल हैं:

क) उद्धारकर्ता के वचन: *'जिस प्रकार पिता में स्वयं जीवन है, उसी प्रकार उसने पुत्र को भी स्वयं में जीवन प्रदान किया है'* (यूहन्ना 5:26), जिससे यह स्पष्ट है कि पिता ने अपना अस्तित्व किसी से प्राप्त नहीं किया, किसी द्वारा बनाए नहीं गए, किसी से उत्पन्न नहीं हुए, और किसी से नहीं निकलते;

ख) वे सभी अंश जहाँ उन्हें पुत्र के संबंध में पिता कहा गया है, जिनके अनगिनत उदाहरण हैं, उदाहरण के लिए: *'मेरे पिता ने सब कुछ मुझे सौंप दिया है, और पुत्र को कोई नहीं जानता, सिवाय पिता के; और पिता को कोई नहीं जानता, सिवाय पुत्र के, और उन लोगों को जिन्हें पुत्र उसे प्रकट करना चाहता है* (मत्ती 11:27); *ताकि वे सभी पुत्र का सम्मान करें जैसे वे पिता का सम्मान करते हैं। जो पुत्र का सम्मान नहीं करता, वह उस पिता का सम्मान नहीं करता जिसने उसे भेजा है* (यूहन्ना 5:23); या जहाँ यह कहा गया है कि वह पुत्र को उत्पन्न करता है: *'प्रभु ने मुझसे कहा: "तू मेरा पुत्र है"; 'आज मैंने तुझे उत्पन्न किया है'* (भजन संहिता 2:7); *'तेरा जन्म भोर से पहले ओस के समान था'* (भजन संहिता 109:3);

ग) अंत में, वे अंश जो पवित्र आत्मा के संबंध में भी पिता को स्रोत के रूप में प्रस्तुत करते हैं: *'परन्तु जब वह सहायक आएगा, जिसे मैं पिता से तुम्हारे पास भेजूंगा, अर्थात् सत्य का आत्मा जो पिता से निकलता है, वह मेरी गवाही देगा* (यूहन्ना 15:26); *हमने इस संसार की आत्मा नहीं पाई, बल्कि परमेश्वर की आत्मा पाई है, ताकि हम उन बातों को समझ सकें जो परमेश्वर ने हमें मुफ़्त में दी हैं* (1 कुरिन्थियों 2:12)।

इसलिए —

क) यह स्पष्ट हो जाता है कि दिव्य व्यक्तियों के क्रम में पिता आमतौर पर पहला स्थान क्यों रखते हैं (मत्ती 28:19) और उन्हें पवित्र त्रिमूर्ति का पहला हाइपोस्टेसिस क्यों कहा जाता है, या, जैसा कि प्राचीन लोग कभी-कभी कहते थे, स्वयं ईश्वर, पहला ईश्वर, आदिम ईश्वर, और इसी तरह;[721]

ख) यह भी स्पष्ट है कि ईश्वर में दिव्यता का केवल एक ही स्रोत है, पिता—यह एक ऐसी धारणा है जिसे प्राचीन शिक्षकों द्वारा बार-बार दोहराया गया है और जिसे आज भी ऑर्थोडॉक्स चर्च द्वारा प्रचारित किया जाता है: क्योंकि पुत्र और पवित्र आत्मा का अस्तित्व केवल उन्हीं से प्राप्त होता है;[722]

---

[720] यही बात पूजा-संबंधी पुस्तकों में भी पाई जाती है: "मैं खेरूबियों के भजन में, आपकी पवित्र दिव्यता का तीन बार गायन करता हूँ: प्रकाश और प्रकाश, जीवन और जीवन, जो उत्पन्न करता है वह ईश्वर, जो उत्पन्न हुआ है वह ईश्वर, जो पिता से उत्पन्न हुआ है वह ईश्वर, जीवित आत्मा" (लेन्टन ट्रायोडियन, फोल. 228 वर्सो, मॉस्को 1835)। "हे पिता, अजन्मा मन, और उनसे जन्मे वचन, और दिव्य आत्मा, जो अकल्पनीय रूप से उत्पन्न होती है, एक ही उत्पत्ति के ईश्वर, त्रि-सूर्य-सदृश, मैं तुम्हें स्तुति करता हूँ" (ऑक्टेकोस, भाग 2, फोलियो 212, उल्टा, मॉस्को 1838)। "महिमा तेरी हो, हे पवित्र पिता, अजन्मा ईश्वर; महिमा तेरी हो, हे आदि रहित पुत्र, एकमात्र पुत्र; महिमा तेरी हो, हे दिव्य आत्मा और सह-सिंहासनधारी, जो पिता से उत्पन्न होकर पुत्र में वास करता है" (जन्मोत्सव के लिए मिनट्स, पृ. 70, मॉस्को 1837)।

[721] Αὐτόθεος *(ओरिजिन,* इन जोएन., खंड II, संख्या 2, 3), πρώτος Θεός *(ओरिजिन,* कॉन्ट. सेल्स., VI, 47, 61), Deus princeps *(अर्नोब.*, सर्वत्र)।

[722] *डियोनिसियस द एरोपागाइट,* *दिव्य पदानुक्रम पर*, अध्याय *I*: 'पिता, प्रकाश का स्रोत, पुत्र और आत्मा के प्रकाश का आरंभ और कारण के रूप में?' *ग्रेगरी द थियोलोजियन,* *पवित्र पिताओं के कार्यों में*, खंड I, पृ. 39; खंड II, पृ. 168; *अथेनासियस,* *De Synodis*, n. 26, 50; *Contra Arianus*, Oration IV, n. 1; *Contra Gregal. Sabelianus*, Opp., Vol. 1, p. 508, ed. Commel; *एपिफेनियस,* *Fid. cath. Expos.*, n. 14; *Haeres.* LXV; *ग्रेगरी नाइसा,* 'ट्रीटीज़ ऑन द कम्युनियन', 'वर्क्स', खंड I, पृ. 917, पेरिस 1615, और अन्य। 'जैसे दिव्य शाखाएँ एक ही जड़ से निकलती हैं, वैसे ही पुत्र और आत्मा प्रकट हुए हैं: क्योंकि *केवल* पिता *को ही श्रेय दिया* जाना है' (जुलाई के लिए मिनट्स, फोलियो 140)। "सूर्य के सूर्य एक अत्यंत विशेष तरीके से प्रकट हुए हैं, पुत्र और आत्मा पिता से, अकल्पित, सह-शाश्वत: *केवल पिता को ही दोनों का कारण माना जाता है*" (जनरल मिन., पृ. 32 और 33, मॉस्को 1834)।

ग) अंत में, यह स्पष्ट है कि पिता, एक प्रकार से, पवित्र त्रिमूर्ति के व्यक्तियों के बंधन और एकता के रूप में कार्य करते हैं, जो सार में एक होते हुए भी व्यक्तियों के रूप में अलग हैं: क्योंकि पुत्र और पवित्र आत्मा, जिनकी उत्पत्ति उनसे हुई है, अपने कारण के रूप में केवल उन्हीं तक उठाये जाते हैं। "तीन में एक स्वभाव," संत ग्रेगरी द थियोलोजियन लिखते हैं; "एक—ईश्वर; एकता—पिता, जिनसे अन्य उत्पन्न होते हैं, और जिनकी ओर वे उठते हैं, उनमें विलीन हुए बिना उनके साथ सह-अस्तित्व में, और समय, इच्छा या शक्ति में आपस में विभाजित नहीं।"[723]

और परमेश्वर पिता के व्यक्तिगत गुण को सही ढंग से समझने के लिए, चर्च के प्राचीन शिक्षकों के इस अवलोकन को ध्यान में रखना चाहिए कि वह पुत्र को जन्म देते हैं और पवित्र आत्मा उनसे उत्पन्न होता है:

क) पूरी तरह से आध्यात्मिक तरीके से, और परिणामस्वरूप बिना किसी पीड़ा के, बिना किसी संवेदी अलगाव के, क्योंकि दिव्य स्वभाव अद्रव्य और सरल है;[724]

ख) वह अनंत काल से और अनंत काल के लिए उत्पन्न करते हैं और उत्पन्न होते हैं: क्योंकि ऐसा कोई समय नहीं था जब पिता, पुत्र के पिता और पवित्र आत्मा के उत्पादक नहीं थे, ठीक वैसे ही जैसे ऐसा कोई समय नहीं था जब वह ईश्वर नहीं थे; और जिसकी कभी शुरुआत नहीं हुई है, उसके अंत होने की बात नहीं कही जा सकती;[725]

ग) एक ऐसे तरीके से उत्पन्न करता है और निकलता है जिसे केवल वही जानता है, और उससे जो उत्पन्न हुआ है और जो उससे निकला है, जबकि सृष्टि में से कोई भी इसे समझ नहीं सकता;[726]

घ) अंत में, कि शाश्वतता और निमित्तहीनता केवल पवित्र त्रिमूर्ति के अन्य व्यक्तियों के संबंध में विशेष रूप से परमेश्वर पिता को ही pripisया जाता है; लेकिन दिव्यता के संदर्भ में, पुत्र और पवित्र आत्मा दोनों ही शाश्वत और निमित्तहीन हैं, या यूँ कहें कि, पूरी पवित्र त्रिमूर्ति सह-शाश्वत और सह-निमित्तहीन है।[727]

§ 40. पुत्र ईश्वर का व्यक्तिगत गुण।

परमेश्वर पुत्र के व्यक्तिगत गुणों के संबंध में ऑर्थोडॉक्स चर्च की शिक्षा का पवित्र शास्त्र में समान रूप से दृढ़ आधार है। क्योंकि यहाँ अक्सर उनका उल्लेख इस प्रकार किया गया है:

क) परमपिता के पुत्र, उदाहरण के लिए: *'पिता पुत्र से प्रेम करते हैं और जो कुछ वे स्वयं करते हैं, वह सब उसे दिखाते हैं... क्योंकि जैसे पिता मृतकों को जिला उठाते हैं और उन्हें जीवन देते हैं, वैसे ही पुत्र भी जिसे चाहे जीवन देता* है' (यूहन्ना 5:20–21; तुलना करें 14:13; 17:1; मत्ती 11:27);

(b) एकमात्र पुत्र: *क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकमात्र पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, बल्कि अनंत जीवन पाए* (यूहन्ना 3:16, 18; 1:14), और इसके अलावा—

---

[723] प्रवचन 42, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स* IV, पृ. 38; तुलना करें II, पृ. 168: "मेरी दृष्टि में, एक ईश्वर में विश्वास तब कायम रहता है जब हम पुत्र और आत्मा दोनों को एक ही कारण का मानते हैं (लेकिन उन्हें उसके साथ मिलाए या घोल दिए बिना) — हम दोनों को ईश्वरत्व की एक ही (कह सकते हैं) गति और इच्छा के कारण, और उनके सार की एकता के कारण मानते हैं।"

[724] ऊपर टिप्पणी 698 देखें, और यह भी: *अलेक्ज़ेंड्र., अलेक्ज़ेंड्रिया के बिशप,* थियोडोरेट, एच. ई. 1, खंड 4 में बाइज़ेन्टियम के अलेक्ज़ेंडर को पत्र; अलेक्ज़ेंड्रिया के *सिरिल,* थिसॉरस, पुस्तक VI; *दमास्कस के जॉन,* ऑर्थोडॉक्स विश्वास की सटीक व्याख्या, पुस्तक 1, अध्याय 8।

[725] *ग्रेगरी द थियोलोजियन,* होमीली 29, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स* III, पृ. 54: "यह जन्म और उत्पत्ति कब हुई? — स्वयं *'कब' से* भी पहले / यदि, तथापि, कुछ अधिक साहसपूर्वक कहना हो: पिता के साथ ही। लेकिन पिता कब थे? — ऐसा कोई समय नहीं था जब पिता नहीं थे। न ही कभी ऐसा समय था जब पुत्र नहीं था, या जब पवित्र आत्मा नहीं था:" *एम्ब्रोसियस,* *डी सिम्बोलो*, अध्याय 4: "जो पिता हैं, वे होने नहीं शुरू हुए; और यदि वे होने नहीं शुरू हुए, तो वे पुत्र होने भी नहीं शुरू हुए" (तुलना करें अध्याय 5); *ऑगस्टीन,* *समय पर उपदेश 191*; *जॉन ऑफ़ डेमास्कस,* *ऑर्थोडॉक्स विश्वास की व्याख्या* ऑर्थोडॉक्स विश्वास की व्याख्या; पुस्तक 1, अध्याय 8: 'पिता अनंतकाल तक और अविराम (ἀκαταπαύστως) रूप से उत्पन्न करते हैं, क्योंकि वे बिना आरंभ के हैं, समय के अधीन नहीं हैं, अनंत हैं और हमेशा एक जैसे हैं। क्योंकि जो बिना आरंभ का है वह अनंत है' (पृ. 20)।

[726] ऊपर टिप्पणी 697 देखें, और साथ ही — *सरीपियास के सिसिलियन,* कैटेकेटिकल लेक्चर XI, II. 8. 11, पृष्ठ 191 और 193, रूसी अनुवाद में; *ग्रेगरी द थियोलोजियन,* होमीली 20: "आप जन्म के बारे में सुनते हैं; जन्म के तरीके को जानने का प्रयास न करें। आप सुनते हैं कि आत्मा पिता से निकलती है; यह जानने के लिए जिज्ञासु न बनें कि वह कैसे निकलती है" (*द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स* II, पृ. 173)। 'क्या आप चाहते हैं कि मैं आपको समझाऊँ कि वह कैसे जन्मा? — जैसा कि उसे जन्म देने वाले पिता और जन्मे हुए पुत्र को पता है' (उसी में, खंड III, पृ. 60)।

[727] *एलेक्ज़ेंड्र. एपिस्को. एलेक्स.* एपिस्ट. एड एलेक्स. बाइज़ां. अपुड थियोडोरेट. एच. ई. 1, अध्याय 4; *यूसेब.* डेमोंस्ट्र. इवैंजेल. लिब. IV; *ग्रेगरी द थियोलॉजिस्ट,* होमीली 29, *द वर्क्स ऑफ द होली फ़ादर्स* III, पृ. 55.

c) जो पिता की गोद में वास करता है: *परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा; एकलौते पुत्र ने, जो पिता की गोद में वास करता है, उसे प्रकट किया है* (यूहन्ना 1:18);

घ) सच्चा पुत्र: *हम यह भी जानते हैं कि परमेश्वर का पुत्र आ गया है और उसने हमें समझ और ज्ञान दिया है, ताकि हम सच्चे परमेश्वर को और उसके सच्चे पुत्र, यीशु मसीह को जान सकें। वही सच्चे परमेश्वर है और अनंत जीवन है* (1 यूहन्ना 5:20);

ई) अपना पुत्र: *'जिसने अपने ही पुत्र* (ἰδίου) *को नहीं बख्शा, परन्तु हमें सब के लिए उसे दे दिया* (रोमियों 8:32)? यह साबित करना अनावश्यक होगा कि, पवित्र शास्त्र के इन और अन्य सभी अंशों में, प्रभु यीशु को शाब्दिक अर्थ में परमेश्वर का पुत्र कहा गया है, न कि किसी रूपक अर्थ में, जब हम पहले से ही जानते हैं कि पवित्र पुस्तकें उन्हें दिव्य स्वभाव, साथ ही दिव्य गुण और पिता तथा पवित्र आत्मा के साथ एकसारत्व (§ 33)।

मसीही धर्म के विधर्मियों द्वारा इस सिद्धांत की विभिन्न विकृत व्याख्याओं के विरुद्ध, पुत्र ईश्वर की व्यक्तिगत प्रकृति के संबंध में, चर्च के प्राचीन पादरियों ने निम्नलिखित विचारों को स्पष्ट करने का प्रयास किया:

1) पुत्र पिता के सार या स्वभाव से ही उत्पन्न हुए हैं, न कि कहीं और से (शून्य से), और न ही शून्य से।[728] यह —

a) जन्म की अवधारणा से ही अनुसरण करता है: 'जन्म का तात्पर्य यह है कि जो जन्म लेता है वह जन्म देने वाले की सार से ही उत्पन्न होता है, और सार में समान होता है; ठीक वैसे ही जैसे सृष्टि और निर्माण के मामले में, इसके विपरीत, सृजित और निर्मित वस्तुएँ बाहरी स्रोत से आती हैं, न कि सृजनकर्ता और निर्माता की सार से;'[729] और —

b) शास्त्र के स्पष्ट शब्दों से पुष्ट होता है: *'तुम्हारा जन्म भोर से पहले, ओस की तरह गर्भ से हुआ था* (भजन संहिता 109:3)। 'यदि — *गर्भ से*: तो प्रश्न उठता है, क्या कोई वास्तव में विश्वास कर सकता है कि पुत्र शून्य से जन्मा था?'[730] 'इसका यह अर्थ नहीं है कि ईश्वर का गर्भ है; लेकिन चूँकि सच्चे, और न कि झूठे, संतान आमतौर पर अपने माता-पिता के गर्भ से ही जन्मते हैं, परमेश्वर ने अपनी उत्पत्ति में स्वयं को एक गर्भ वाला घोषित किया है, ताकि अधर्मी लज्जित हों, ताकि वे, अपनी ही प्रकृति पर विचार करते हुए, यह पहचान सकें कि पुत्र पिता का सच्चा फल है, जो उनके गर्भ से ही उत्पन्न हुआ है।"[731]

2) हालाँकि, यद्यपि पुत्र पिता के सार से ही उत्पन्न हुआ है, ऐसा नहीं है कि इससे पिता के सार से कुछ भी अलग हो जाता है, या पिता किसी भी चीज़ से वंचित हो जाते हैं, या पुत्र में कोई कमी है: नहीं, — "अविभाज्य ईश्वर ने पुत्र को बिना विभाजन के उत्पन्न किया,"[732] "उसने बुद्धि को उत्पन्न किया, फिर भी वह स्वयं बुद्धि से रहित नहीं हुआ; उसने शक्ति को उत्पन्न किया, फिर भी वह कमजोर नहीं हुआ; उसने ईश्वर को उत्पन्न किया, फिर भी वह स्वयं दिव्यता से वंचित नहीं हुआ, न ही उसने कुछ खोया, न ही वह कम हुआ, न ही वह बदला: इसी प्रकार, उत्पन्न हुए में भी किसी भी प्रकार की कमी नहीं है। परिपूर्ण है उत्पन्नकर्ता, परिपूर्ण है उत्पन्न। ईश्वर उत्पन्नकर्ता, ईश्वर उत्पन्न।[733] या, एक निकट उपमा देने के लिए: पुत्र पिता से उत्पन्न हुआ, जैसे प्रकाश प्रकाश से होता है।[734]

---

[728] *हिलार.* डी ट्रिनिटि. लिब. VI: 'तो यहाँ, अनादि, सभी समय से पहले, ने पुत्र को स्वयं से उत्पन्न किया, किसी अंतर्निहित पदार्थ से नहीं, क्योंकि पुत्र के माध्यम से सभी चीजें अस्तित्व में हैं; शून्य से नहीं, क्योंकि स्वयं से पुत्र… और इसी तरह'; *ऑगस्टिन.* एपिस्ट. 66: 'उसने उसे अपनी ही सत्ता से उत्पन्न किया, उसने उसे शून्य से नहीं बनाया…'

[729] *जॉन ऑफ़ डेमास्कस,* एक्सैक्ट एक्सपोज़िशन ऑफ़ द ऑर्थोडॉक्स फेथ, पुस्तक 1, अध्याय 8; *अथेनासियस,* ऑन द डिक्रीज़ ऑफ़ द काउंसिल ऑफ़ निकिया, संख्या 6.

[730] *हिलारियन,* त्रिमूर्ति पर, पुस्तक VI। *अथेनासियस,* एरियनों के विरुद्ध स्वीकारोक्ति, भाषण III, संख्या 27।

[731] *बेसिल महान,* यूनोमियस के विरुद्ध, पुस्तक I, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, खंड VII, पृ. 182–183.

[732] 'किन्तु ईश्वर, अविभाज्य होने के कारण, अविभाज्य और अकम्पनीय है, पुत्र का पिता' (*अथानास.* de decret. Nic. Synod, पृ. 409). उसने उत्पत्ति की क्रिया में सार को विभाजित नहीं किया (*ग्रेगरी ऑफ़ निसिस,* अगेंस्ट यूनोमियस, पुस्तक 1, 18)।

[733] *साइरिल ऑफ़ जेरूसलम,* होमलीज, XI, II. 18, पृ. 200; रूसी अनुवाद में, पृ. 190 और 195।

[734] प्रकाश से प्रकाश / *जस्टिन,* *डायलॉग विद ट्रायफोन*, CXXVIII; *हिप्पोलिटस,* *अगेंस्ट नोएटस*, XI; *सिरिल ऑफ़ जेरूसलम,* *कैटेकेटिकल लेक्चर्स*, XI, n. 4; "जीवन से जीवन के रूप में जन्म, प्रकाश से प्रकाश, सत्य से सत्य, बुद्धि से बुद्धि…"; *सिरिल ऑफ़ अलेक्जेंड्रिया* / थेसॉरस, पुस्तक VI: 'पिता ने पुत्र को स्वयं से अविभाज्य और अविच्छेद्य रूप से विकीर्ण किया है, ठीक वैसे ही जैसे सूर्य उससे निकलने वाली प्रकाश किरणों को विकीर्ण करता है।'

3) परमेश्वर के पुत्र का जन्म एक शाश्वत जन्म है, और परणिामस्वरूप, इसका न तो कभी आरंभ हुआ और न ही इसका कभी अंत होगा।[735] इसीलिए परमेश्वर पिता स्वयं एक अंश में पुत्र से कहते हैं: *'प्रातकाल से पहले, ओस की तरह, तेरा जन्म हुआ है'* (भजन संहिता 109:3), अर्थात्, उन्होंने उसे सभी युगों से पहले, बिना किसी आरंभ के, उत्पन्न किया,[736] और दूसरे में: *'मैंने अब तुझे उत्पन्न किया है'* (भजन संहिता 2:7), अर्थात्, उन्होंने उसे केवल अब उत्पन्न किया, या उसे अनंतकाल से उत्पन्न करते हैं।[737] इसी कारण, धर्मग्रंथ के अन्य अंशों में, इन शब्दों का परस्पर उपयोग किया जाता है — कि परमेश्वर ने वचन को, जो पुत्र है, कहा, और कि परमेश्वर वचन को कहता है; या, दूसरे शब्दों में, कि पुत्र को पिता से उत्पन्न किया गया, और कि पुत्र पिता से उत्पन्न होता है।[738] हालाँकि, पुत्र की इस शाश्वत उत्पत्ति को—जो हमारी समझ से परे है—हमारे सामान्य अवधारणाओं के अनुरूप ढंग से व्यक्त करने के लिए यह कहना कहीं बेहतर है कि पुत्र *सनातन काल से ही* पिता से *उत्पन्न हुआ है,* बजाय इसके कि कहा जाए कि पुत्र *शाश्वत रूप से उत्पन्न हो रहा है:* क्योंकि जो उत्पन्न हो रहा है वह अभी तक उत्पन्न नहीं हुआ है, जबकि पुत्र पहले ही उत्पन्न हो चुका है।[739]

4) अंत में, यह ध्यान में रखना चाहिए कि पुत्र पिता से उत्पन्न हुए, लेकिन उनसे अलग नहीं हुए; या, दूसरे शब्दों में कहें तो, वे अविभाज्य रूप से (ἀδιαστατως) उत्पन्न हुए। इसीलिए उन्हें 'एकमात्र *प्ररयि पुत्र*' (यूहन्ना 1:18) और 'पिता में निवास करने वाले' (यूहन्ना 10:38) कहा जाता है।

संत जॉन ऑफ डेमास्कस कहते हैं, 'जैसे आग और उससे निकलने वाली रोशनी, दोनों एक साथ मौजूद होते हैं—आग पहले नहीं आती और रोशनी बाद में, बल्कि आग और रोशनी एक साथ, — और जैसे प्रकाश हमेशा आग से ही उत्पन्न होता है, ' ' और हमेशा उसी में रहता है और उससे किसी भी तरह से अलग नहीं होता — वैसे ही पुत्र भी पिता से उत्पन्न हुए हैं, उनसे कभी अलग नहीं हुए, बल्कि हमेशा उनमें ही विद्यमान हैं। केवल वह प्रकाश, जो आग से अलग हुए बिना उससे उत्पन्न होता है, और जो हमेशा उसमें निहित रहता है, उसकी अपनी कोई स्वतंत्रता (ὑπόσασιν) नहीं है, जो आग से अलग हो (क्योंकि प्रकाश आग का एक स्वाभाविक गुण है); इसके विपरीत, परमेश्वर का एकमात्र पुत्र, जो पिता से अविभाज्य और अविभाजित रूप से जन्मा है और हमेशा उनमें वास करता है, अपनी ही हाइपोस्टेसिस (Hypostasis) का स्वामी है, जो पिता की हाइपोस्टेसिस से भिन्न है।[740]

§ 41. पवित्र आत्मा परमेश्वर का व्यक्तिगत गुण।

प्रारंभिक टिप्पणियाँ। पवित्र आत्मा ईश्वर की व्यक्तिगत प्रकृति के सिद्धांत, अर्थात् उनके पिता से उत्पन्न होने के विषय में व्याख्या करने से पहले, आइए पहले ध्यान दें:

---

[735] ऊपर टिप्पणी 725 देखें, और *ऑगस्टीन,* पत्र 174 भी: 'तो फिर हम क्या कहेंगे? यदि परमेश्वर का पुत्र पिता से जन्मा, तो पिता ने उत्पन्न करना बंद कर दिया है; और यदि उन्होंने बंद कर दिया है, तो उन्होंने शुरू किया है। लेकिन यदि उन्होंने उत्पन्न करना शुरू किया है, तो एक समय था जब वह पुत्र के बिना थे। लेकिन वह कभी भी पुत्र के बिना नहीं थे... इसलिए, *पिता हमेशा उत्पन्न करते हैं, और पुत्र हमेशा जन्म लेते हैं।*

[736] *ऑगस्टीन,* होमीली 43 ऑन द क्विक्विनिगंटा, अध्याय 3: *'लुसिफर से पहले'* का क्या अर्थ है? 'लुसिफर के माध्यम से' युगों को दर्शाता है। इसलिए, युगों से पहले, 'पहले' कहे जाने वाले हर चीज़ से पहले, जो कुछ भी नहीं है उससे पहले, या जो कुछ भी है उससे पहले... और इसी तरह... कॉन्फ. *अथेनासियस,* एरियनों के विरुद्ध, भाषण III, संख्या 28।

[737] "पुत्र स्वयं पिता के विषय में कहते हैं: *'प्रभु ने मुझसे कहा: "तू मेरा पुत्र है; मैंने तुझे इसी दिन उत्पन्न किया है'* (भजन संहिता 2:7) — *'इसी दिन'* का अर्थ कोई हाल की बात नहीं, बल्कि कुछ शाश्वत, कालातीत है; *'इसी दिन'*, सभी युगों से पहले" *(साइरिल ऑफ़ जेरूसलम,* कैटेकेटिकल लेक्चर्स XI, II. 5, पृ. 18)।

[738] क्योंकि एकमात्र प्ररयि पुत्र को न केवल पिता का वचन कहा जाता है और पूर्णता में 'जन्म लिया हुआ' कहा जाता है, बल्कि उसे शाश्वत रूप से 'जन्म लिया हुआ' बताया गया है; पवित्र शास्त्र परमेश्वर के बारे में स्वतंत्र रूप से बोलने का आदी है, क्योंकि उसने कहा है और कहता है। क्योंकि जब पिता ने पूर्ण वचन को उत्पन्न किया, तब उन्होंने वचन दिया; और चूंकि वे सदा उत्पन्न करते रहते हैं, अतः वे निश्चय ही वचन देते रहते हैं *(पोप ग्रेगरी,* मोरल, पुस्तक XXIII)।

[739] *बार-बार जन्म लेने* से तो *एक बार ही जन्म लेना* बेहतर है; क्योंकि जो लगातार जन्म ले रहा है, वह अभी तक जन्मा नहीं है, और यदि वह लगातार जन्म लेता रहे तो वह कभी जन्मा नहीं माना जाएगा। क्योंकि जन्म लेने और जन्म लेने के बाद होने में अंतर है। और इसलिए यदि पुत्र कभी नहीं जन्मा होता, तो वह कभी भी जन्मा नहीं होता; परन्तु पुत्र, क्योंकि वह जन्मा है, सदा पुत्र ही है; अतः वह सदा जन्मा है *(अगस्टीन,* *क्वेस्टियोनेज़*, पुस्तक LXXXIII, प्रश्न 37)। आइए, अधिक सही कहें, *'सदा जन्मा'*। परन्तु हम यह नहीं कह सकते कि *'वह सदा जन्म ले रहा है'*, कहीं ऐसा न हो कि वह अपूर्ण प्रतीत हो (ग्रेगरी *महान,* *मोरलिटिए*, पुस्तक XXIX, अध्याय 1)।

[740] *जॉन ऑफ़ डेमास्कस,* पुस्तक 1, अध्याय 8, पृ. 20–21; तुलना करें अध्याय 13, पृ. 46।

1) कि यह सद्धिांत हमारी ऑर्थोडॉक्स चर्च को रोमन चर्च और प्रोटेस्टेंट संप्रदायों से अलग करने वाले सबसे मौलकि धर्मसद्धिान्तों में से एक है, जो सभी यह मानते और सखिाते हैं कि पवत्रि आत्मा न केवल पता से, बल्कि पुत्र से भी नकिलता है। इसलएि यह हमारे वशिष ध्यान का पात्र है।

2) इस सद्धिांत की व्याख्या करते समय अवधारणाओं की स्पष्टता सुनश्चिति करने के लिए, पवत्रि आत्मा के *शाश्वत* प्रवाह—जो उनके व्यक्तगित गुण का सही-सही स्वरूप है—और प्राणयिों पर उनके *अस्थायी अवतरण* या संसार में उनके प्रेषण के बीच एक कठोर अंतर करना आवश्यक है, जो स्वयं पवत्रि आत्मा की हाइपोस्टेसिस (अस्तत्वि) से संबंधति नहीं है, बल्कि यह कुछ बाहरी और क्षणकि है, और इसे पवत्रि आत्मा और पुत्र दोनों से संबंधति माना जाता है (यूहन्ना 16:28–29)।

जब ऑर्थोडॉक्स चर्च यह पुष्टि करती है कि पवत्रि आत्मा केवल परमपता से ही उत्पन्न होता है, जो पश्चमिी ईसाइयों की इस शकि्षा के वपिरीत है कि पवत्रि आत्मा संयुक्त रूप से पुत्र से भी उत्पन्न होता है, तो यह वशिष रूप से केवल पवत्रि आत्मा के शाश्वत और हाइपोस्टैटकि प्रवाह (प्रवृत्ति) को संदर्भति करता है। हालांकि, उनकी अस्थायी प्रक्रयिा के संबंध में, ऑर्थोडॉक्स, पश्चमिी ईसाइयों के साथ पूर्ण सहमति में, मानते हैं कि पवत्रि आत्मा की प्रक्रयिा—अर्थात्, उसे संसार में भेजा जाना—केवल पता से नहीं, बल्कि पुत्र से भी, या अधकि सटीक रूप से, पुत्र के माध्यम से होती है।[741]

३) इस मुद्दे को सुलझाने में पूर्ण नष्पिक्षता बनाए रखने के लिए, जो ईसाई पूर्व और पश्चमि के बीच सदयिों पुराने ववािदों का वषिय रहा है, हम न केवल पवत्रि आत्मा के व्यक्तगित स्वभाव पर ऑर्थोडॉक्स शकि्षण के लिए, बल्कि गैर-ऑर्थोडॉक्स दृष्टकिोण के लिए भी, यथासंभव संक्षेप में, साक्ष्य प्रस्तुत करने का प्रयास करेंगे, और दोनों को एक तरह से आमने-सामने पेश करेंगे: ताकि, उन्हें एक-दूसरे से तुलना करके, हर कोई स्वयं देख सके और यह तय कर सके कि सत्य कसि पक्ष में है।

§ 42. पवत्रि धर्मग्रंथ के आधार पर पवत्रि आत्मा के प्रवाहन के प्रश्न की परीक्षा।

I. क्या पवत्रि शास्त्र में इस बात का प्रत्यक्ष और स्पष्ट प्रमाण है कि पवत्रि आत्मा पता से उत्पन्न होते हैं?

हाँ, ऐसा है, और यह, इसके अलावा, अत्यधकि हद तक प्रत्यक्ष और स्पष्ट है। यह मसीहा के प्रेरतिों से कहे नम्निलखिति शब्दों में पाया जाता है: *'परन्तु जब वह सहायक आएगा, जसिे मैं तुम्हारे पास पता से भेजूँगा, अर्थात् सत्य का आत्मा, जो पता से नकिलता है* (τό πνεύμα τής άληθείας, ό παρά τού πατρός έκπορεύεται), *वह मेरी गवाही देगा* (यूहन्ना 15:26)। लेकनि क्या *'जो पता से नकिलता है'* अभव्यिक्ति वास्तव में पवत्रि आत्मा के शाश्वत नर्गिमन को दर्शाती है, न कि संसार में एक अस्थायी मशिन को? बलि्कुल ऐसा ही; और यह है

1) उस उद्देश्य से प्रकट होता है जसिके लिए ये शब्द बोले गए थे। यह संपूर्ण वचन (यूहन्ना 14:16), जसिमें ये पाए जाते हैं, उद्धारकर्ता द्वारा मुख्य रूप से अपने शष्यिों को उनसे होने वाले नकिट अलगाव में सांत्वना देने के लिए दयिा गया था। इस उद्देश्य के लिए, वह अपने शष्यिों से एक वादा करते हैं कि उनकी जगह पर पवत्रि आत्मा को उनके पास भेजेंगे, और पहले वादा कए गए व्यक्ति को *एक अन्य सांत्वना देने वाला* कहते हैं, जो हमेशा उनके साथ रहेगा (14:16), फरि *सत्य के आत्मा* के रूप में, जो उन्हें सब कुछ सखिाएगा और उनके दव्यि शकि्षक से जो कुछ भी उन्होंने सुना है, उसे उन्हें याद दलिाएगा (17:26), और फरि जोड़ता है कि यह भवष्यि का सांत्वना देने वाला, यह सत्य का आत्मा, केवल एक प्राणी मात्र नहीं है, बल्कि *परमपता से उत्पन्न होता* है—अर्थात्, ईश्वर से शाश्वत अस्तत्वि रखता है—और इसलिए एक दव्यि व्यक्ति है (15:26): यह एक ऐसा जोड़ है जो उद्देश्य के लिए पूरी तरह से आवश्यक है। उसके द्वारा आश्वासति हुए बनिा, प्रेरतिों का आश्वासन पूर्ण नहीं हो सकता था; क्योंकि केवल अब ही

---

741 "हे मसीह, आपने हम पर एक नश्चिंकोच मध्यस्थता करने वाली को प्रदान कयिा है, जो आपसे ही उत्पन्न हुई है; उसकी वनितयिों के द्वारा, अपनी दया में, आपने हमें वह आत्मा प्रदान कयिा है, जो भलाई प्रदान करने वाला है, *जो पता से आपके द्वारा* (διά σοϋ προερχόμενον) *उत्पन्न होता है*" (Octoechos, भाग 1, fol. 171, मॉस्को 1838)। "प्रकाशक की ज्योति प्राप्त करके, जसिसे हम प्रबुद्ध हुए हैं, तुमने परमेश्वर-वचन की घोषणा की है, *जो पता से उत्पन्न हुए हैं, पुत्र के द्वारा मानवजाति को प्रकट हुए,* जो एक ही सम्मान के हैं, पता के सह-सहिासनारूढ़ और अनंतकाल से एकसार हैं, और हे प्रयि, तुमने उनकी घोषणा सभी को की है" (सतिंबर के लिए मनि., पृष्ठ 229 के पीछे, मॉस्को 1837; तुलना करें: लेंटन ट्रायोडयिन, पृष्ठ 22 और 75 के पीछे, मॉस्को 1835)।

वे इस बात से आश्वस्त हो सकते थे कि उनका भविष्य का मार्गदर्शक, एक दिव्य व्यक्ति के रूप में, वास्तव में उनके लिए उस व्यक्ति की जगह लेने में सक्षम था जिससे वे अलग होने वाले थे, और जिसे वे परमेश्वर के सच्चे पुत्र, *जीवते परमेश्वर के पुत्र के रूप में* पहचानते थे (मत्ती 16:16; यूहन्ना 16:30)। यह और भी आवश्यक था क्योंकि, यद्यपि उद्धारकर्ता ने प्रेरितों से पवित्र आत्मा के बारे में अक्सर बात की थी, फिर भी उन्होंने एक बार भी यह नहीं समझाया था कि पवित्र आत्मा वास्तव में कौन थे और उनकी व्यक्तिगत गरिमा क्या थी।

2) यह उद्धृत शब्दों के संयोजन और व्यवस्था से ही स्पष्ट है। यदि हम यह स्वीकार करें कि *'जो पिता से निकलता है'* यह अभिव्यक्ति पवित्र आत्मा के शाश्वत निर्गमन को संदर्भित नहीं करती, बल्कि केवल संसार में एक अस्थायी मिशन को दर्शाती है, तो सबसे पहले, हमें उद्धारकर्ता के शब्दों में एक अजीब समतुल्यता स्वीकार करनी होगी—तब इस पाठ को इस प्रकार पढ़ना होगा: "जब सहायक आएगा, जिसे मैं *पिता से भेजूँगा,* सत्य का आत्मा, जो *पिता से भेजा जाता है,* वह मेरी गवाही देगा।" दूसरा, यह अस्पष्ट हो जाएगा कि पवित्र आत्मा के भविष्य के मिशन के बारे में बात करते समय *'प्रस्थान'* क्रिया का प्रयोग वर्तमान काल में क्यों किया गया है, जबकि उद्धारकर्ता ने स्वयं पहले एक से अधिक अवसरों पर इसी मिशन का उल्लेख भविष्य काल में किया था, जैसे पिता के बारे में गवाही देते हुए: *'वह तुम्हें एक और सहायक देगा'* (यूहन्ना 14:16), या: *'जिसे पिता मेरे नाम पर भेजेंगे'* (26), और अपने विषय में: *'जिसे मैं तुम्हारे पास पिता के पास से भेजूँगा'* (15:26)। इस बीच, यह मानते हुए कि विचाराधीन अंश पवित्र आत्मा के शाश्वत प्रवाह के बारे में बात करता है, हमें न तो उद्धारकर्ता के शब्दों में कोई अस्पष्टता मिलती है और न ही क्रिया *'प्रवाहित होता है'* में कुछ भी अस्पष्ट मिलता है; इसके विपरीत, इस क्रिया को वर्तमान काल में होना चाहिए ताकि यह पवित्र आत्मा के शाश्वत—अर्थात्, अनवरत और अपरिवर्तनीय—उत्पत्ति को, कम से कम लगभग, दर्शा सके, ठीक वैसे ही जैसे उद्धारकर्ता ने अपनी शाश्वतता को दर्शाने के लिए वर्तमान काल में क्रिया का उपयोग किया, यह कहते हुए: *'इब्राहीम के होने से पहले, मैं हूँ'* (यूहन्ना 8:58)।

3) अंत में, इसे पूरी ईसाई प्राचीनता की आवाज़ द्वारा अप्रतिवादनीय रूप से पुष्टि की जाती है, जिसने उद्धारकर्ता के शब्दों में: *'जो पिता से उत्पन्न होता है?'* — पवित्र आत्मा के शाश्वत उत्पत्ति के विचार को लगातार पहचाना। यहाँ यह याद दिलाना पर्याप्त है कि इन शब्दों को ठीक इसी अर्थ में न केवल चर्च के सबसे प्रमुख शिक्षकों—बेसिल द ग्रेट,[742] ग्रेगरी द थियोलोजियन,[743] जॉन क्रिसोस्टोम और अन्य,[744] द्वारा, बल्कि संपूर्ण सार्वभौमिक परिषद (दूसरी) द्वारा भी समझा गया था, जिसने इन शब्दों को धर्मविश्वास में शामिल किया।

---

[742] भजन संहिता 32 पर व्याख्यान, पृ. 6: "जिस प्रकार सृष्टि के वचन ने आकाशों को स्थापित किया, उसी प्रकार आत्मा, जो परमेश्वर से है, जो पिता से निकलता है (अर्थात्, *उनके मुख से,* ताकि आप उसे कोई बाहरी या सृजित वस्तु न मानें, बल्कि उसे परमेश्वर से अपनी ही स्वभाव-स्थिति वाला महिमामय मानें), ने स्वयं में से उन सभी शक्तियों को उत्पन्न किया जो उसमें हैं" (*द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, खंड V, पृ. 271; और सेबेलीयों के विरुद्ध प्रवचन 24); "यद्यपि सभी चीजों के बारे में कहा जाता है कि वे परमेश्वर से हैं, फिर भी पुत्र अपने आप में परमेश्वर से हैं, और आत्मा परमेश्वर से हैं, क्योंकि पुत्र पिता से उत्पन्न हुए, और आत्मा पिता से निकलते हैं; लेकिन पुत्र पिता से जन्म के द्वारा, और आत्मा परमेश्वर से एक अगोचर तरीके से" ("पवित्र पिताओं के कार्य", VIII, पृ. 389)।

[743] प्रबंध 29, धर्मविश्वास के तीसरे अनुच्छेद पर: "एक, आरंभ से द्वैत में परिवर्तित होकर, त्रित्व में स्थिर हुआ। और हमारे पास यही है—पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा। पिता माता-पिता और उत्पन्न करने वाले हैं, जो बिना किसी भाव के, समय के परे और अदेह रूप में उत्पन्न करते और जन्म देते हैं; पुत्र जन्मे हुए हैं; आत्मा उत्पन्न हुए हैं, या—मुझे नहीं पता कि जो सभी दृश्यमान चीजों से मुंह मोड़ता है वह इसे क्या कहेगा... हमारे लिए निर्धारित सीमाओं से आगे जाए बिना, हम अजन्मे, जन्मे, और *पिता से उत्पन्न एक को* प्रस्तुत करते हैं, जैसा कि स्वयं वचन ईश्वर एक स्थान पर कहते हैं" (यूहन्ना 15:26) (*द वर्क्स ऑफ़ द होली फ़ादर्स* III, पृ. 53–54; तुलना करें: होमीली 31, पृ. 109)।

[744] "जैसा कि कहा गया है: *'ईश्वर का आत्मा* (Θεοῦ)' (मत्ती 12:28), और फिर पवित्रशास्त्र जोड़ता है: *'ईश्वर से आत्मा'* (1 कुरिन्थियों 2:12); उसी प्रकार यह भी कहा गया है: *'पिता का आत्मा* (मत्ती 10:20), और कहीं ऐसा न सोचें कि यह केवल संज्ञापन (οἰκείωσιν) के रूप में कहा गया है, उद्धारकर्ता पुष्टि करते हैं: *'जब सहायक आएगा, ... सत्य का आत्मा, जो पिता से निकलता है* (यूहन्ना 15:26)। वहाँ, 'ईश्वर से'; यहाँ, 'पिता से'। जैसे उन्होंने स्वयं के लिए कहा: *'मैं परमेश्वर से आया* हूँ' (यूहन्ना 16:27), वैसे ही वे पवित्र आत्मा के लिए भी कहते हैं: *'जो पिता से निकलता है'* / परिणामस्वरूप, आत्मा परमेश्वर की आत्मा और परमेश्वर पिता से आत्मा, दोनों हैं, और पिता से निकलते हैं। तो, 'निकलता है' का क्या अर्थ है? उन्होंने नहीं कहा: 'जन्मा है'... पुत्र पिता से जन्मा है; आत्मा पिता से उत्पन्न होता है। तो, 'उत्पन्न होता है' शब्द की शक्ति क्या है? कहीं ऐसा न हो कि आत्मा को पुत्र समझा जाए, इसलिए पवित्रशास्त्र 'जन्मा' शब्द का उपयोग नहीं करता, बल्कि कहता है कि वह पिता से उत्पन्न होता है—उसे एक झरने से निकलते पानी की तरह प्रस्तुत करते हुए... क्या उत्पन्न होता है? पवित्र आत्मा। कैसे? एक झरने से निकलते पानी की तरह। इस प्रकार, यदि यूहन्ना, पवित्र आत्मा की गवाही देते हुए, उन्हें *'जीवित जल'* कहते हैं (यूहन्ना 7:38), और पिता अपने बारे में कहते हैं: *'उन्होंने मुझ जीवित जल के सोते को छोड़ दिया है* (यिर्मयाह 2:13), तो पिता पवित्र आत्मा का सोता हैं — क्योंकि वह पिता से निकलते हैं..." (होमलि. डी स्पिरिटु सैंक्टो। *क्रिसोस्ट.* ओपी. वॉल्यूम III, पी. 797, एड. डी मोंटफॉक। वेनिस 1734)। क्रिसोस्टोम के इस कार्य की प्रामाणिकता

II. क्या पवित्र शास्त्र में कोई प्रत्यक्ष और स्पष्ट प्रमाण है कि पवित्र आत्मा पुत्र से उत्पन्न होती है?

एक भी उदाहरण नहीं है। यह केवल तर्क और व्याख्या के माध्यम से ही है कि ईश्वर के वचन के विभिन्न अंशों से इस सिद्धांत को निकालने का प्रयास किया जाता है। इस उद्देश्य के लिए:

1) वे तर्क देते हैं कि स्वयं ये शब्द: *'जो पिता से उत्पन्न होता है'*—किसी भी तरह से पवित्र आत्मा के पुत्र से भी उत्पन्न होने को बाहर नहीं करते; इसके विपरीत, वे इसी विचार का भी संकेत देते हैं: क्योंकि पिता और पुत्र सार में एक हैं, और जो कुछ भी पिता के पास है, वह पुत्र के पास भी है।[745] क्या इस तरह के तर्क को स्वीकार किया जा सकता है? बिल्कुल नहीं:

(क) पिता और पुत्र, साथ ही पवित्र आत्मा, वास्तव में सार में एक हैं; लेकिन वे व्यक्तियों के रूप में एक-दूसरे से भिन्न हैं, और जो कुछ भी पिता के पास है, वह पुत्र और पवित्र आत्मा के पास भी है, व्यक्तिगत गुणों को छोड़कर, जो अविभाज्य हैं: अन्यथा हम सेबेलीयनवाद में पड़ जाएँगे, जो दैवीय हाइपोस्टेसीस (divine hypostases) को एक-दूसरे में मिला देता है। और जब कहा जाता है कि पिता ने पुत्र को जन्म दिया और पवित्र आत्मा पिता से निकलता है, तो पिता को, बेशक, ठीक उसी तरह एक व्यक्ति के रूप में समझा जाता है, जिसकी अपनी व्यक्तिगत विशेषता है, जो पुत्र और पवित्र आत्मा दोनों से भिन्न है। तदनुसार, जब कहा जाता है कि पवित्र आत्मा पिता से उत्पन्न होता है, तो 'पिता' नाम से किसी भी तरह से पुत्र को शामिल नहीं समझा जा सकता, जो सार में पिता के साथ एक है, लेकिन व्यक्ति में नहीं।[746] यदि —

ख) यदि हम यह मान लें कि *'जो पिता से उत्पन्न होता है'* शब्द पवित्र आत्मा के पुत्र से भी उत्पन्न होने को न केवल बाहर नहीं करते, बल्कि उसका संकेत करते हैं, क्योंकि पुत्र सार में पिता के साथ एक है, तो हमें यह भी मानना पड़ेगा कि *'पिता से जन्म लिया है'* शब्द पवित्र आत्मा द्वारा पुत्र के जन्म को न केवल बाहर नहीं करते, बल्कि उसका संकेत करते हैं: क्योंकि आत्मा भी सार में पिता के साथ एक है। इतना ही नहीं, हमें यह भी स्वीकार करना चाहिए कि पुत्र, जो पिता से उत्पन्न हुआ है, स्वयं से भी उत्पन्न हुआ है, और पवित्र आत्मा, जो पिता से निकलता है, स्वयं से भी निकलता है: क्योंकि वे सार में पिता के साथ एक हैं, और इसके अलावा सभी सह-शाश्वत हैं।[747] अंत में —

के बारे में फोटियस को कोई संदेह नहीं था (बिब्लियोथ. पी. 841); हालांकि, कुछ आधुनिक विद्वान संदेह रखते हैं — यद्यपि पर्याप्त आधार के बिना — और इसके अलावा स्वीकार करते हैं: 'या तो क्रिसोस्टोम, या, जैसा कि मुझे अधिक संदेह है, *उस विद्वान प्राचीन काल* का कोई अन्य *विद्वान*, या: 'वह लेखक क्रिसोस्टोम से *बहुत* छोटा *नहीं* था' (उपरोक्त, पृष्ठ 795-796)। और यह हमारे उद्देश्यों के लिए पर्याप्त है।

[745] *बेलारमिन,* मसीह पर पुस्तक II, अध्याय 27; *गेरहार्डस,* लोके. थिओल., खंड I, लोके. V, भाग III, अध्याय 4, § 88; *पेरोन,* प्रेलेक्ट. Theol., tract. de S. Trinitate, अध्याय V, प्रस्तावना 1, पृ. 429, खंड II, सं. लॉज़ेन 1839: "Eum (Spir. S.) procedere a l'autre teatatur (Christus) *in sensu inclusive Filii*..." विचाराधीन धर्मशास्त्र के विरुद्ध लैटिनों द्वारा उठाए गए आपत्तियाँ वही हैं जो अनादि काल से दोहराई जाती रही हैं; अत; उनके लिए विभिन्न स्रोतों का संदर्भ लेने की आवश्यकता न हो, इसलिए हम इन आपत्तियों को मुख्य रूप से यहाँ उल्लिखित अंतिम पुस्तक से ही लेंगे, क्योंकि इसके लेखक, जेसुइट पेरॉन, वे सबसे हाल के रोमन धर्मशास्त्रियों में से एक हैं, और क्योंकि उन्हें अपने समकालीनों में सबसे विद्वान में से एक के रूप में मान्यता प्राप्त है, और वे रोमन झूठी धर्मसिद्धांतों के सबसे कट्टर रक्षक हैं, जो ऑर्थोडॉक्स विश्वास और चर्च के प्रति खुली शत्रुता दिखाते हैं।

[746] इस प्रकार पवित्र पिताओं ने इस विषय पर तर्क किया; उदाहरण के लिए, *निस्सा के ग्रेगरी*: 'क्योंकि पिता का एक ही व्यक्ति है, जिससे पुत्र का जन्म हुआ है और पवित्र आत्मा उत्पन्न होता है; अत; चूंकि वह इन कारणों का एकमात्र कारण है, हम उसे एक ईश्वर कहते हैं' (Tract. advers. Graecos ex commun. notion. Vol. II, p. 85, ed. Morel. Paris. 1638); *ग्रेगरी द थियोलॉजिस्ट*: "पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा तीनों अस्तित्व और दिव्यता की अनारंभता में साझा करते हैं; लेकिन पुत्र और आत्मा ही हैं जो अपना अस्तित्व पिता से प्राप्त करते हैं। और पिता का विशिष्ट गुण अजन्मा होना है, पुत्र का जन्म लेना है, और पवित्र आत्मा का गुण उत्पन्न होना है" (होमीली 25, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स* II, पृ. 288); या: "यदि पुत्र और आत्मा पिता के सह-शाश्वत हैं, तो वे सार में सह-शाश्वत क्यों नहीं हैं? क्योंकि वे पिता से हैं, यद्यपि पिता के बाद नहीं... पुत्र और आत्मा कारण के संबंध में सह-शाश्वत नहीं हैं" (होमीली 29, वही, खंड III, पृ. 55)। हम नीचे पितृसभों के और भी कई कथन देखेंगे।

[747] लेकिन 'पवित्र आत्मा, वे कहते हैं, दैवीय व्यक्तियों के क्रम में तीसरे स्थान पर है, और परिणामस्वरूप प्रवासन के क्रम में दूसरे स्थान पर है; और इसलिए यह नहीं हो सकता कि पवित्र आत्मा पुत्र को उत्पन्न करे, जो क्रम और प्रवासन दोनों में *उससे पूर्व है* (qui ordine et processione *anterior* est ipso)' (*पेरोन,* *प्राएल. थियोल.*, खंड II, पृ. 432, उद्धृत संस्करण)। क्या दयनीय बचाव है! रक्षक — (क) आपत्ति से बचता है: मुद्दा यह है कि यदि पुत्र, पिता के साथ एक सार का होकर, पवित्र आत्मा के रूप में उनके साथ ही उत्पन्न होता है, तो आत्मा भी, पिता के साथ एक सार का होकर, पुत्र को उनके साथ ही उत्पन्न करता है: फिर भी रक्षक, दिव्य व्यक्तियों के सार की एकता को स्वीकार करते हुए, सीधे इस तथ्य की ओर मुड़ता है कि वे व्यक्तियों के रूप में भिन्न हैं...; लेकिन — ख) यहां भी वह एक गलत धारणा को स्वीकार करता है: क्या इस बात से यह निष्कर्ष निकलता है, केवल इसलिए कि परम पवित्र त्रिमूर्ति के व्यक्तियों के क्रम में पुत्र को दूसरा और पवित्र आत्मा को तीसरा माना जाता है, कि पुत्र और आत्मा सह-शाश्वत नहीं हैं, कि पुत्र पहले पिता से उत्पन्न होता है और आत्मा बाद में प्रवाहित होता है, और यही कारण

(ग) यदि हम *'जो पिता से निकलता है* शब्दों वाले कथन की संरचना की ही जाँच करें; तो हम विचाराधीन तर्क की निराधारता से और भी अधिक आश्वस्त होंगे। स्वर्ग आरोहण से पहले अपने शिष्यों को सांत्वना देते हुए, उद्धारकर्ता उन्हें अपनी जगह पवित्र आत्मा भेजने का वादा करते हैं, और इस प्रेषण को न केवल पिता बल्कि स्वयं से भी जोड़ते हैं: *'जिसे मैं भेजूँगा* (15:26; तुलना करें 14:26) — फिर भी जैसे ही वह पवित्र आत्मा के प्रस्थान के बारे में बोलना शुरू करते हैं, वह केवल पिता का ही उल्लेख करते हैं, और स्वयं का एक भी संकेत नहीं देते। तो फिर, हम एफ़ेसस के मार्क के साथ पूछ सकते हैं, कि इतनी निकटता से स्वयं का उल्लेख करने और पवित्र आत्मा को भेजने का श्रेय स्वयं और पिता दोनों को देने के बाद, प्रभु ने प्रस्थान के बारे में भी क्यों नहीं कहा: 'जो हमसे निकलता है?'[748] क्या यह स्पष्ट नहीं है कि वह पवित्र आत्मा के संबंध में जो दोनों का है और जो केवल पिता का है, उनके बीच अंतर करता है?

यह दावा करना, जैसा कि कुछ लोग करते हैं, कि जब मसीह ने कहा, *'जो पिता से निकलता है*, तो उनका मतलब पिता और स्वयं को पुत्र के रूप में दोनों से था, पूरी तरह से मनमाना है: क्योंकि उसी प्रवचन में, पवित्र आत्मा को भेजने के बारे में बात करते समय, मसीह ने ऐसा वाक्यांश क्यों नहीं अपनाया; इसके विपरीत, उन्होंने पिता के बारे में अलग से बात की: *'जिसे पिता भेजेंगे'*, और स्वयं के बारे में: *'जिसे मैं भेजूंगा?*[749]

2) *वे* उद्धारकर्ता के इस अंतिम कथन पर जोर देते हैं: *'जिसे मैं* भेजूँगा…', और निष्कर्ष निकालते हैं: यदि आत्मा को पुत्र द्वारा भेजा जाता है, तो, परिणामस्वरूप, वह उससे ही उत्पन्न होता है; क्योंकि अन्यथा पुत्र आत्मा को नहीं भेज सकता था।[750] लेकिन फिर भी, यह एक ऐसी तर्कशैली है जिसे बिना शर्त स्वीकार नहीं किया जा सकता। यह धारणा कि, परम पवित्र त्रिमूर्ति के रहस्य के भीतर, एक व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति को भेजने का अनिवार्य रूप से यह अर्थ है कि जिसे भेजा गया है वह भेजने वाले से ही उत्पन्न होता है, —

a) पवित्र शास्त्र में इसका सबसे छोटा सा भी आधार नहीं है — इसके विपरीत, यह इसके भी विरुद्ध है: क्योंकि शास्त्र कहता है कि पुत्र पवित्र आत्मा द्वारा भेजा जाता है, न कि केवल पिता द्वारा (यशायाह 48:16; 61:1; लूका 14:18), जबकि पुत्र का पूर्व-शाश्वत जन्म विशेष रूप से केवल पिता को ही दिया गया है और पवित्र आत्मा को कहीं भी नहीं।[751]

है कि आत्मा, पुत्र के उत्पत्ति में पिता के साथ सहभागी नहीं हो सकता? नहीं, पुत्र और आत्मा, पिता के समान, सह-शाश्वत हैं; पुत्र पिता से उत्पन्न होता है और पवित्र आत्मा समान रूप से सनातन काल से पिता से प्रवाहित होता है, और इसके अलावा संयुक्त रूप से, इस तरह से नहीं कि एक पहले आए और दूसरा बाद में; और परिणामस्वरूप, यदि पुत्र पिता के साथ पवित्र आत्मा के प्रवाह में भाग ले सकता है, तो ठीक उसी तरह पवित्र आत्मा भी पुत्र के उत्पत्ति में भाग ले सकता है।

[748] देखें Acta concil. Florent. sess. XXIII, *लैबेई के* concilia के खंड XIII में और *हार्डुइनी के* concilia के खंड IX में /

[749] अंत में, पेरॉन पवित्र आत्मा की प्रक्रिया से संबंधित विवादों में लैटिनों के अंतिम आश्रय का सहारा लेते हैं: धन्य ऑगस्टीन का अधिकार, जिनके बारे में कहा जाता है कि उन्होंने यह भी समझा था कि *'जो पिता से प्रक्रिया करता है* शब्दों में पुत्र का भी निहित होना चाहिए (उपरोक्त, पृ. 429)। लेकिन — (क) कौन हमें यह गारंटी दे सकता है कि ऑगस्टीन से उद्धृत किया गया यह अंश (Contra Maxim. arian. lib. II, cap. 14, n. 1) भ्रष्ट नहीं है, जबकि यह सर्वविदित है कि, जैसा कि हम देखेंगे, ऑगस्टीन की रचनाओं में इस प्रकार के कई अन्य अंशों को जानबूझकर बदला गया है? इतनी ही काफी है—ख) इस अंश को ध्यान से पढ़कर इसकी अखंडता पर संदेह करना। वह यह है: 'आप मुझसे पूछते हैं कि, *यदि पुत्र पिता के सार का है, तो क्या पवित्र आत्मा भी पिता के सार का है; क्यों एक ही पुत्र है, और दूसरा पुत्र है* (प्रश्न के सार और रूप पर ध्यान दें)। देखो, मैं उत्तर देता हूँ, चाहे तुम इसे समझो या न समझो। पुत्र पिता से है, पवित्र आत्मा पिता से है: पर एक तो उत्पन्न है, दूसरा निकलता है: *अतः* पुत्र उस पिता का पुत्र है जिससे वह उत्पन्न हुआ है; जबकि आत्मा दोनों से उत्पन्न होता है, क्योंकि वह दोनों से ही उत्पन्न होता है (देखिए कि यह अंतिम विचार कैसे स्थापित आधार से निकलता है, और क्या यह स्पष्ट रूप से विकृत नहीं है?)। लेकिन यही कारण है कि, उस पुत्र के बारे में बात करते हुए, उन्होंने कहा: *'वह पिता से निकलता है* (यूहन्ना 15:26); क्योंकि पिता ही उनके प्रवाहन के कर्ता हैं, जिन्होंने ऐसे पुत्र को उत्पन्न किया, और उन्हें उत्पन्न करते समय यह अनुदान दिया कि पवित्र आत्मा भी उनसे प्रवाहित हों (तब विचार करो, कि यह सब उस प्रश्न से कैसे संबंधित है जिसका उत्तर ऑगस्टीन देना चाहते थे)। क्योंकि यदि...., और इसी तरह (देखें *Patrolog. Curs., compl.* खंड XLII, **Augustini** VIII, पृ. 770, सं. पेरिस 1841)। अंत में, (ग) भले ही धन्य ऑगस्टीन की गवाही विकृत न की गई होती, तो भी संपूर्ण चर्च के अधिकार की तुलना में एक ही शिक्षक का अधिकार क्या महत्व रखता है? सिरील और अलेक्जेंड्रिया के एथनासियस के शब्द, जिन्हें बाद में पेरोन द्वारा उद्धृत किया गया है, बिल्कुल भी उस अर्थ को नहीं दर्शाते हैं जो वह अभिप्रेत करता है, और इसके अलावा, उन्हें लैटिन में मूल के अनुसार पूरी तरह से नहीं उद्धृत किया गया है।

[750] देखें *पेरॉन,* उपरोक्त ग्रंथ, पृ. 422, साथ ही पवित्र आत्मा पर अपने प्रबंधों में अन्य पश्चिमी धर्मशास्त्रियों को भी।

[751] चर्च के प्राचीन शिक्षकों ने सर्वसम्मति से स्वीकार किया कि यिशायाह में उद्धृत अंश पवित्र आत्मा से पुत्र के मिशन को संदर्भित करते हैं: ओरिजिन, बेसिल द ग्रेट, जॉन क्रिसोस्टोम, एम्ब्रोस, इडातिउस, जेरोम, ऑगस्टीन, फुलजेन्टियस, एमेसा के यूसेबियस, सिनाई के अनास्तासियस और अन्य (उन सभी के उद्धरणों के लिए, देखें apud *Zoernicaw* de process. Sp. S. tract. VIII, resp. 7, ed. Regiom. 1774). इस

(b) यह चर्च के प्राचीन, प्रसिद्ध शिक्षकों की धर्मशास्त्र के विपरीत है, जो इस मिशन की व्याख्या काफी अलग तरह से करते हैं जब वे कहते हैं कि पुत्र पवित्र आत्मा को भेजता है, और स्वयं उसे द्वारा भेजा जाता है, विशेष रूप से उनके सार की एकता और एक-दूसरे की क्रियाओं में उनके पारस्परिक संचार या सहभागिता के कारण[752] — सबसे स्वाभाविक व्याख्या! क्योंकि ईश्वरत्व के तीन व्यक्तियों में, उनकी व्यक्तिगत विशेषताओं को छोड़कर, बाकी सब कुछ सामान्य है और, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि, अपने सार की एकता के कारण, वे इच्छा में एकता और एक अविभाज्य क्रिया के स्वामी हैं। और इसलिए, जब एक व्यक्ति प्रमुख रूप से कार्य करता है, तो अन्य दो अनिवार्य रूप से उसके कार्य में सहभागी होते हैं; जब परमेश्वर का पुत्र मानव जाति के उद्धार के लिए संसार में आता है, तो यह एक साथ कहा जाता है कि उसे पिता और पवित्र आत्मा द्वारा भेजा गया है; जब पवित्र आत्मा बाद में मानवजाति को पवित्र करने के लिए आते हैं, तो पिता और पुत्र की सहभागिता इस तथ्य से व्यक्त होती है कि दोनों उन्हें भेजने वाले के रूप में प्रस्तुत किए जाते हैं; और चूंकि धर्मग्रंथ में दुनिया में किसी विशेष कार्य को पिता के लिए नहीं बताया गया है, इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं है कि उन्हें पुत्र और पवित्र आत्मा द्वारा भेजे जाने का उल्लेख भी नहीं मिलता है।[753] सामान्य रूप से, यह ध्यान में रखना चाहिए कि —

c) पुत्र और पवित्र आत्मा का संसार में प्रेषण, जो कि कालिक है, ईश्वर की बाह्य गतिविधि से संबंधित है — और सभी बाह्य गतिविधियाँ सारभूत और अविभाज्य त्रिमूर्ति के लिए सामान्य हैं। इसीलिए चर्च के कुछ प्राचीन शिक्षकों ने यह मत व्यक्त किया कि पुत्र, जिन्हें पिता और पवित्र आत्मा द्वारा संसार में भेजा गया है, स्वयं से भी भेजे जाते हैं; ठीक उसी प्रकार जैसे पवित्र आत्मा, जिन्हें पिता और पुत्र द्वारा भेजा गया है, स्वयं से भी भेजे जाते हैं।[754] हालांकि, यह उल्लेखनीय है कि —

पर सामान्य आपत्ति यह है कि प्रश्न में उल्लिखित ग्रंथों में, यद्यपि पुत्र को पवित्र आत्मा द्वारा भेजा गया प्रस्तुत किया गया है, उन्हें उनकी दिव्यता में नहीं बल्कि उनकी मानवता में, संसार के उद्धारकर्ता के रूप में भेजा गया है। लेकिन — (क) पुत्र को भी पिता द्वारा संसार में उसकी दिव्यता में नहीं, बल्कि केवल *एक स्त्री से उत्पन्न हुए* के रूप में (गलातियों 4:4), मानव जाति के उद्धारकर्ता के रूप में भेजा गया था; क्योंकि अपनी दिव्यता में, पिता के साथ, वह सभी चीजों में व्याप्त है, वह हमेशा से संसार में रहा है, और उसे भेजा नहीं जा सकता, या एक स्थान से दूसरे स्थान पर नहीं जा सकता। यही वह तरीका है जिससे अनादि काल से संसार के लिए पुत्र के मिशन की व्याख्या की गई है: ओरिजिन, बेसिल द ग्रेट, ग्रेगरी द थियोलोजियन, जॉन क्रिसोस्टोम, प्रथम सार्वभौमिक परिषद के धर्मपिता, ग्रेगरी ऑफ निस्सा, जेरोम, ऑगस्टीन, नीलस द एसेटिक, साइरिल ऑफ अलेक्जेंड्रिया, पोप लियो और कई अन्य (ज़्रनकिव के उपरोक्त प्रबंध में उनके कार्यों के अंश देखें VIII, उत्तर 7, पृ. 505–513); ख) और पवित्र आत्मा को जगत में भेजा जाता है और उसे पिता और पुत्र से भेजा जाता है, उसी प्रकार उसकी दिव्यता में नहीं: क्योंकि, अपनी दिव्यता के कारण, वह उनके साथ, सर्वत्र और सदा रहता है। क्रिसोस्टोम टिप्पणी करते हैं, 'जब आप सुनते हैं, कि मसीह कहते हैं: "*मैं तुम्हें* पवित्र आत्मा *भेजूँगा,*"—तो इसे दिव्यता के संदर्भ में न लें, क्योंकि परमेश्वर को भेजा नहीं जाता' (देखें ज़्रनकिव में उपरोक्त, पृष्ठ 514–517, साथ ही अन्य समान पादरियों के कथन)। और 'पिता और पुत्र द्वारा संसार में पवित्र आत्मा को भेजने' की संज्ञा से, हमें चर्च के प्राचीन शिक्षकों का अनुसरण करते हुए, सबसे पहले, यह समझना चाहिए, वे संवेदी प्रकटियाँ जिनमें वे पेंटेकोस्ट के दिन प्रेरितों पर दृश्यमान रूप से अवतरित हुए, और दूसरे — विश्वासियों की आत्माओं में उनके वरदानों का प्रवाह और, सामान्य रूप से, कहीं भी उनकी विशेष अनुग्रह-पूर्ण गतिविधि की प्रकटियाँ, यद्यपि, ईश्वर के रूप में, वे उन स्थानों पर हर समय उपस्थित थे (पितामहों के स्वयं के उद्धरण देखें, वही, पृ. 517–524)।

[752] *एम्ब्रोज़:* "और पिता पुत्र को, और आत्मा को भेजते हैं; इसी प्रकार, पिता और पुत्र दोनों आत्मा को भेजते हैं — अत; यदि पुत्र और आत्मा परस्पर एक-दूसरे को भेजते हैं, जैसे पिता भेजते हैं, तो यह अधीनता के कारण नहीं, बल्कि सामान्य अधिकार से है" (De Sp. S., पुस्तक III, अध्याय 1); और अन्यत्र: "पुत्र ने कहा: *'वह पिता से उत्पन्न होता है';* यह अस्तित्व की उत्पत्ति के कारण है (propter originem); उन्होंने कहा: *'मैं उसे भेजूंगा';* यह स्वभाव की सहभागिता और एकता के कारण है" (प्रतीक पर पुस्तक, अध्याय 10; नीचे टिप्पणी 51 देखें); *जेरोम:* "पवित्र आत्मा, जो पिता से निकलता है, और पुत्र द्वारा स्वभाव की सहभागिता के माध्यम से भेजा जाता है..." (Comment. XVI ad Jes. chap. 57); *अलेक्जेंड्रिया के सिरिल:* "और पुत्र उसे (पवित्र आत्मा को) अपना मानकर प्रदान करते हैं, पिता के सार के साथ अपने सार की एकता के कारण" (इन जोआन. अध्याय 10)।

[753] जहाँ कहीं किसी विशेष क्रिया को पिता, पुत्र या पवित्र आत्मा से जोड़ा गया है: यह न केवल पवित्र आत्मा को, बल्कि पिता और पुत्र को भी संदर्भित करता है; और न ही यह केवल पिता को, बल्कि पुत्र और पवित्र आत्मा को भी संदर्भित करता है। *एम्ब्रोस.* *De Spiritu Sancto*, पुस्तक 1, अध्याय 3. अन्य कई पिताओं के समान कथनों के लिए, ज़्रनकिवा, प्रबंध VIII, प्रश्न 5, पृष्ठ 486–489 देखें।

[754] न ही हमें यह मानना चाहिए कि पुत्र को पिता ने इस तरह भेजा कि उसे पवित्र आत्मा ने नहीं भेजा… न ही उसे पिता और पवित्र आत्मा ने इस तरह भेजा कि उसने स्वयं को नहीं भेजा… (*ऑगस्टीन,* *Contra Maximinum Arianum*, पुस्तक II, अध्याय 20, n. 4, *Patrologia* में) Curs. Compl. Vol. XLII, पृ. 790)। और पवित्र आत्मा केवल इसलिए उन (पिता और पुत्र) से हीन नहीं है कि जबकि वे देते हैं, उन्हें दिया जाता है। क्योंकि उन्हें परमेश्वर के वरदान के रूप में इस प्रकार दिया जाता है कि वे स्वयं को भी देते हैं, ठीक वैसे ही जैसे परमेश्वर करते हैं। क्योंकि यह नहीं कहा जा सकता कि वह अपनी ही शक्ति पर नियंत्रण नहीं रखता, जिसके बारे में कहा गया है: *'आत्मा जहाँ चाहे वहाँ बहती है'* (यूहन्ना 3:8)

(d) एक वशिष्टि कारण कि पुत्र संसार में पवत्रि आत्मा को क्यों भेजता है। यह इस तथ्य में नहिति है कि पुत्र, संसार के उद्धारकर्ता के रूप में, ने परमेश्वर के शाश्वत न्याय के समक्ष अपने पुण्यों के द्वारा, लोगों को पापयिों के पुनर्जन्म और पवत्रिता के लिए पवत्रि आत्मा के अनुग्रहकारी उपहार प्रदान करने का अतुलनीय अधकिार प्राप्त कयिा है: यही कारण है कि पृथ्वी पर पवत्रि आत्मा का मशिन यीशु मसीह के महमिीकरण के अनुसार स्थापति कयिा गया है, जो उनके महान कार्य के पूरा होने के बाद हुआ: *पवत्रि आत्मा अभी उन पर नहीं आया था, क्योंकि यीशु का अभी महमिीकरण नहीं हुआ था* (यूहन्ना 7:39)।

3) वे मसीहा के प्रेरतिों को दिए गए उसी प्रवचन के बाद के शब्दों की ओर इशारा करते हैं: *'मुझे तुम से और भी बहुत बातें कहनी हैं, परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते। परन्तु जब वह, सत्य का आत्मा, आएगा, तो वह तुम्हें सारी सच्चाई में मार्गदर्शन करेगा: क्योंकि वह अपनी ओर से कुछ न बोलेगा, परन्तु जो कुछ वह सुनेगा, वही वह बोलेगा; और वह तुम्हें आने वाली बातें भी बता देगा। वह मेरा महमिीकरण करेगा, क्योंकि जो कुछ मेरा है, वह उसे लेकर तुम्हें बता देगा। जो कुछ भी पति के पास है, वह मेरा है; इसीलिए मैंने कहा कि वह जो मेरा है, उसे लेगा और तुम्हें बता देगा* (यूहन्ना 16:12-15)। यहाँ वे सबसे पहले, *'वह जो मेरा है, उसे लेगा'* इस वाक्यांश पर ध्यान केंद्रति करते हैं, और कहते हैं: 'मेरा', यानी मुझसे; 'लेगा', यानी उत्पन्न करेगा; और दूसरे, शब्दों: *'जो कुछ भी पति के पास है वह मेरा है*, और वे तर्क देते हैं: यदि जो कुछ भी पति के पास है वह पुत्र के पास भी है, और पति के पास, अन्य बातों के अलावा, यह गुण है कि पवत्रि आत्मा उनसे उत्पन्न होता है — परणिामस्वरूप, पवत्रि आत्मा पुत्र से भी उत्पन्न होता है।[755] लेकनि इस तरह की व्याख्या और इस तरह का तर्क:

क) यह अंश की संरचना के पूरी तरह से वपिरीत है। अंश की संरचना के अनुसार, उद्धृत उद्धारकर्ता के शब्दों का अर्थ स्पष्ट रूप से इस प्रकार है: 'मैंने अभी तक आपको कई सच्चाइयाँ नहीं सखिाई हैं, क्योंकि आप अभी उन्हें समझने में सक्षम नहीं हैं। लेकनि जब सत्य का आत्मा आएगा, जसिे मैंने आपको वादा कयिा है, तो वह मेरी ओर से इस कमी की पूर्ति करेगा और आपको सभी सच्चाइयों में मार्गदर्शन करेगा।' वह मेरी ओर से इसकी पूर्ति करेगा: क्योंकि वह अपना कोई नया सद्धिांत, जो मेरे सद्धिांत से अलग हो, नहीं सखिाएगा; *क्योंकि वह अपनी ओर से नहीं बोलेगा, बल्कि वही बोलेगा जो वह सुनता है;* इसके वपिरीत, वह वही शक्षिा जारी रखेगा जो मैंने सखिाई है: *वह मेरी शक्षिाओं में से लेगा और उन्हें आप लोगों को प्रचारति करेगा*। और चूँकि मैं तुम्हें पहले ही बता चुका हूँ कि *मेरी शक्षिा मेरी अपनी नहीं है, बल्कि उस की है जसिने मुझे भेजा है* (यूहन्ना 7:16; तुलना करें 14:10 और अन्य), ताकि मेरे वर्तमान शब्द आपके लिए स्पष्ट हो जाएँ, मैं यह जोड़ूँगा कि *जो कुछ भी पति के पास है वह मेरा* है—इसीलिए मैंने कहा: 'पवत्रि आत्मा *जो मेरा है उसे लेगा और उसे आप लोगों को घोषति करेगा*।'"[756]

तदनुसार, शब्द: *'वह जो मेरा है उसे लेगा'* और फरि: *'जो कुछ भी पति के पास है वह मेरा है'*—का संदर्भ वशिेष रूप से उस शक्षिा से है जसिे पुत्र ने, मानव जाति के उद्धार के लिए पति की इच्छा को पूरा करने हेतु पृथ्वी पर आकर, पति से प्राप्त की; और जसिे पवत्रि आत्मा को, उसी महान कार्य में पृथ्वी पर पुत्र के उत्तराधकिारी के रूप में, पुत्र से प्राप्त करना था। और यह वाक्यांश: *'वह जो मेरा है उसे लेगा और तुम्हें बता देगा*—का अर्थ यह नहीं समझना चाहिए कि: 'पवत्रि आत्मा मुझसे वह उधार लेगा जो वह पहले नहीं जानता था या जसिके पास नहीं था'—क्योंकि आत्मा, परमेश्वर के रूप में, सनातन काल से सभी बातों को जानता और धारण करता है;[757] बल्कि इस प्रकार: 'वह मेरे बाद मेरी ही शक्षिा को

(ऑगस्टाइन, *द ट्रनिटिी पर*, पुस्तक XV, अध्याय 19, संख्या 36, *पैट्रोलॉजस* में, उद्धृत खंड, पृ. 1086)। अन्य समान कथनों के लिए, ज़्रनकिाव, पृष्ठ 489–494 देखें।

[755] *पेरॉन,* *प्रेल. थयिोल.*, खंड II, पृ. 421, लासाने संस्करण; कॉन्फ. *फेयर,* *इंस्टटि. थयिोल.* 1, पृ. 294, वयिना, 1819।

[756] चर्च के प्राचीन और प्रसद्धि शक्षिकों: *जॉन क्रसिोस्टोम* (होमीली LXXVIII, या जॉन पर LXXVII, n. 2, पृष्ठ 460–461, खंड VIII में, वेनसि 1741 संस्करण), *सेसरयिा के यूसेबयिस* (डे एक्लेस. Theolog. lib. III, cap. 5), *सेंट साइरलि ऑफ़ अलेक्जेंड्रयिा* (de Trinit. dialog. VI post. principium), बल्कि रोमन कैथोलकि और प्रोटेस्टेंट चर्चों के कुछ हाल के पवत्रि शास्त्रों के व्याख्याकारों द्वारा भी, जन्हिें, परणिामस्वरूप, हमारे पक्ष में ववािदास्पद अंश की व्याख्या करने के लिए कोई प्रोत्साहन नहीं था, जैसे: माल्डोनेट, लैम्पे (Comment. Evang. Joann. Vol. III, Amsterdam 1726), नेसल (Opusc. fasc. II, p. 53, Halle 1787), रोसेनमुल्लर (Schol. in Evang. Johan. ad cap. XVI, vers. 13–15), ल्यूके (*Lükke*, Commentar über die Schr. Johan., बोना 1820), क्वनिोल *(Kuinol,* Comment. in Joan., लप्सि. 1825) और अन्य।

[757] "यहाँ *'प्राप्त करेगा* वाक्यांश को दव्यि स्वभाव के अनुरूप समझना चाहिए। परणिामस्वरूप, जैसे पुत्र, प्रदान करने में, वह जसिसे वह संप्रेषति करता है उससे वंचति नहीं होता, वैसे ही आत्मा भी वह प्राप्त नहीं करता जो उसके पास पहले से नहीं था" *(अलेक्जेंड्रयिा का डडिाइमस,* आत्मा पर पुस्तक II, एस., जेरोम के कार्यों में, खंड VI)। "कोई भी *'प्राप्त करेगा'* इस वाक्यांश से भ्रमति न हो, बल्कि उन्हें इसे सही ढंग से समझने के

जारी रखेगा, न कि किसी और की; वह *तुम्हें वह सब कुछ याद दिलाएगा जो मैंने तुमसे कहा है* (यूहन्ना 14:26), "और मेरी जगह उस बात को पूरा करेगा जो मैं अभी भी तुमसे कहना चाहता हूँ, लेकिन जिसे तुम अभी समझ नहीं सकते।"[758] ऐसा क्यों है? क्योंकि "हम सारतः उसके साथ एक हैं; हम उसी बुद्धि और ज्ञान के धनी हैं, और उसी अविभाज्य क्रिया के सहभागी हैं," — जैसा कि चर्च के प्राचीन शिक्षकों ने समझाया था।[759] यद्यपि, हालांकि —

(b) उनमें से कुछ ने इन शब्दों में: *'वह मेरी वस्तुओं में से लेगा'*, पवित्र आत्मा की शाश्वत यात्रा का विचार देखा; फिर भी उन्होंने इसे उस तरीके से बिल्कुल अलग समझा, जैसा पश्चिमी ईसाई आज इसे समझना चाहते हैं। "उन्होंने (मसीह ने) कहा: *'वह* पिता *से लेगा'*, अर्थात् मेरे पिता से," संत अथेनासियस महान लिखते हैं, "क्योंकि उन्होंने जोड़ा: *'जो कुछ भी पिता के पास है वह मेरा है; इसलिए मैंने कहा कि वह पिता से लेगा और उसे तुम पर प्रकट करेगा।'*"[760] धन्य ऑगस्टीन इसे और भी स्पष्ट रूप से व्यक्त करते हैं: "और जो (मसीह ने) पवित्र आत्मा के बारे में *कहा—'वह मेरे पास से लेगा'*—वह स्वयं प्रश्न का समाधान कर देता है, कहीं ऐसा न सोचा जाए कि आत्मा, जैसे कि उनसे कुछ दूरी पर है, ठीक वैसे ही जैसे वे स्वयं पिता से हैं, जबकि दोनों पिता से हैं, एक का जन्म होता है, दूसरे का प्रस्थान होता है (क्यूम अंबो दे पात्रे, इले नास्कटुर, इस्ते प्रोसेडेट)। 'इसलिए,' मैं कहता हूँ, 'ताकि वे ऐसा न सोचें, उन्होंने तुरंत जोड़ा: "*जो कुछ भी पिता के पास है वह मेरा है; इसीलिए मैंने कहा कि वह मेरे से लेगा।*" वह निस्संदेह यह चाहते थे कि यह समझा जाए कि आत्मा

लिए सावधानीपूर्वक इस पर विचार करना चाहिए: क्योंकि हमारी मानवीय भाषा में अक्सर परमेश्वर के बारे में इस तरह से कहा जाता है, लेकिन इसे इस अर्थ में नहीं समझना चाहिए... हम कहते हैं कि पवित्र आत्मा इसी प्रकार से पिता और पुत्र दोनों से उत्पन्न होता है, और उन दोनों का है, फिर भी इस प्रकार नहीं कि उसमें कभी भी उनमें निहित ज्ञान और शक्ति की कमी रही हो। — 'क्योंकि आत्मा सदा बुद्धिमान और शक्तिशाली है' (*सिरिल ऑफ अलेक्जेंड्रिया,* जॉन पर पुस्तक XI, अध्याय 2, इस वाक्यांश पर: *'वह मुझसे प्राप्त करेगा'*) / इससे यह स्पष्ट है कि पापियों का तर्क कितनी अच्छी तरह से स्थापित है कि, भले ही *'वह मुझसे प्राप्त करेगा* शब्दों का अर्थ 'वह मुझसे शिक्षा या ज्ञान प्राप्त करेगा' हो—और उस स्थिति में यह अनिवार्य रूप से उन शब्दों से निकलता है कि आत्मा पुत्र से अपना ही सार प्राप्त करता है; क्योंकि ईश्वर में, ज्ञान और सार अविभाज्य हैं (*पेरोन,* उद्धृत ग्रंथ, पृ. 431)।

[758] उसने कहा: *'वह जो* मेरा है, *वह ले लेगा'*, अर्थात् जो कुछ भी मैंने कहा है, वह भी कहेगा। और जब वह बोलेंगे, तो वे अपना कुछ भी नहीं बोलेंगे, न कुछ विरोधी, न अपनी रचना का कुछ, बल्कि केवल वही बोलेंगे जो मेरा है। ठीक वैसे ही, जैसे स्वयं के बारे में गवाही देते समय (मसीह) ने कहा कि *वे अपनी इच्छा से कुछ नहीं बोलेंगे*—अर्थात्, मैं पिता के सिवा कुछ नहीं बोलता, न अपना कुछ, न उससे अलग कुछ—वैसे ही हमें आत्मा के संबंध में भी यह समझना चाहिए। अभिव्यक्ति *'मेरे* से' का अर्थ है 'उससे जो मैं जानता हूँ, मेरी जानकारी से'; क्योंकि एक ही ज्ञान है—मेरा और आत्मा का... *वह मेरे से प्राप्त करेगा,* अर्थात् वह मेरे अनुरूप बोलेगा (συνωδά τοῖς ἐμοῖς)। *'जो कुछ भी पिता के पास है वह मेरा है;* और चूँकि *यह मेरा है,* और पवित्र आत्मा पिता के पास जो कुछ है, उसी से बोलेगा, अतः वह मेरे पास जो कुछ है, उसी से बोलेगा'... (*सेंट जॉन क्रिसोम,* लोकेशन साइट. नोट 756 में)।

[759] *एम्ब्रोसियस,* *De Spir. S.*, पुस्तक II, अध्याय 12: 'यदि आप यह समझना चाहते हैं कि परमेश्वर के पुत्र, जो सभी बातें जानता है और सभी भविष्य की घटनाओं का पूर्वज्ञान रखता है, के पास वे बातें क्यों हैं जिन्हें आप पुत्र के लिए अज्ञात मानते हैं, तो इसका कारण यह है कि पवित्र आत्मा ने उन्हें पुत्र से प्राप्त किया है: और उसने *उन्हें तत्वगत एकता के माध्यम से प्राप्त किया है,* ठीक वैसे ही जैसे पुत्र ने उन्हें पिता से प्राप्त किया था।' *जॉन क्राइसोस्टोम,* यूहन्ना पर व्याख्यान 78, संख्या 3: "चाहे *मेरी अपनी पहल* से—अर्थात् मेरे शरीर पर प्रदान की गई कृपा से—या उस ज्ञान से जो मेरे पास स्वयं है, वह इसे किसी जरूरतमंद के रूप में या किसी और द्वारा सिखाए जाने वाले के रूप में प्राप्त नहीं करेगा, बल्कि इसलिए कि हम *बिल्कुल एक ही ज्ञान को* साझा करते हैं... मेरी शिक्षा और उनकी शिक्षा एक हैं; और जो कुछ भी मुझे तुमसे कहना है, वही वह भी कहेंगे... क्योंकि पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की इच्छा एक है" (पृ. 462–463, खंड VIII, वेनिस संस्करण 1741)। *अलेक्जेंड्रिया के सिरिल,* पवित्र त्रिमूर्ति पर, संवाद VI: "जब वह जोड़ते हैं: *'वह मेरे पास से लेगा*, तो वह उस मौलिक और प्राकृतिक एकता को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करते हैं जिसके द्वारा पवित्र आत्मा उनसे एक हैं" (Orr., खंड V, भाग 1)।

[760] *एथान.* कॉन्ट्रा मैकडोन. डायलॉग. 1, संख्या 16। हालाँकि, कुछ लोग मैसेडोनियस के विरुद्ध संत एथनासियस के इस और एक अन्य प्रवचन को उनके अनुयायी, धन्य थियोडोरेट का मानते हैं (*गार्नेरियस,* इन ऑप. *थियोडोरेटी* वॉल्यूम V, हेरेट. फैब. लिब. V, सी. 3)।

पिता से उत्पन्न होती है " "।'[761] पाठ की इसी व्याख्या को बाद में पश्चिम में प्रसिद्ध अल्क्विन या अल्बिन[762] और अन्य लेखकों, पश्चिमी और पूर्वी दोनों, ने अपनाया।[763]

अब हम विवरणों की ओर मुड़ते हैं। यदि—

c) अभिव्यक्ति: *'वह मेरी से लेगा'* — अर्थ: वह मुझसे अनंत अस्तित्व प्राप्त करेगा, वह मुझसे ही उत्पन्न होता है — तो प्रश्न उठता है: क्रिया *'लेगा'* भविष्य काल में क्यों है, ठीक वैसे ही जैसे उससे ठीक पहले की *क्रिया 'महिमा देगा'* और उसके बाद की *क्रिया 'घोषणा करेगा'*? क्या पवित्र आत्मा तब पुत्र से पहले से ही नहीं निकल रही थी जब वह प्रेरितों से बात कर रहे थे, बल्कि स्वर्ग में उनकी आरोहण के बाद ही निकलने वाली थी? यह दावा करना कि क्रिया *'लेगा'* भूतकाल या वर्तमान काल को व्यक्त करती है, यह दावा करने के समान है कि अन्य दो क्रियाएँ—अर्थात्, *'महिमा देगा'* और *'घोषणा करेगा'*, जो इससे अविभाज्य रूप से जुड़ी हुई हैं—भी भूतकाल या वर्तमान काल को व्यक्त करती हैं; लेकिन यह इस अंश के अर्थ का एक पूर्ण विकृति होगी।[764] यदि, तथापि, हम यह मान लें—बिना किसी आधार के—कि क्रिया *'लेगा'* केवल वर्तमान को दर्शाती है, जबकि अन्य दो भविष्य को दर्शाती हैं, तो हम इस अंश के अर्थ के एक और विकृति का सामना करेंगे। उद्धारकर्ता के शब्दों को इस प्रकार समझना होगा: 'पवित्र आत्मा मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मुझ से ही आता है, और यह तुम पर प्रकट करेगा।' तो फिर, वह क्या प्रकट करेगा?...

आगे और भी असंगतियाँ उत्पन्न होती हैं —

(घ) असहमत लोगों का तर्क, जो उद्धारकर्ता के शब्दों—*'जो कुछ भी पिता के पास है, वह मेरा है'*—को बिना किसी शर्त के लेते हुए कहते हैं: 'लेकिन पिता में पवित्र आत्मा से निकलने का गुण है; इसलिए, पुत्र में भी है।' क्योंकि कोई उतनी ही आसानी से यह तर्क दे सकता है: 'पिता में भी अजन्मा होने का गुण है; अतः पुत्र में भी है: पिता में भी पुत्र को जन्म देने का गुण है; अतः पुत्र में भी है…' दूसरी ओर, चूँकि पुत्र ने स्वयं पिता से कहा: *'जो कुछ मेरा है वह तेरा है'* (यूहन्ना 17:10), और पुत्र में पिता द्वारा उत्पन्न होने का गुण है — तो क्या हमें यह निष्कर्ष निकालना चाहिए कि पिता में भी यह गुण है? अवतार पुत्र का है; तो क्या यह पिता का भी है?.. इन सभी असंगतियों को हल करने का एकमात्र तरीका उद्धारकर्ता के शब्दों, *'जो कुछ भी पिता के पास है, वह मेरा है'*, की व्याख्या एक शर्त के साथ करना है। पुत्र के पास वास्तव में वह सब कुछ है जो पिता के पास सार और दिव्यता में है, ठीक उसी तरह जैसे पिता के पास वह सब कुछ है जो पुत्र के पास है, लेकिन व्यक्तिगत गुणों को छोड़कर। चर्च के प्रसिद्ध प्राचीन शिक्षकों ने इस कथन को ठीक इसी तरह समझा: उन्होंने कहा कि यह कथन विशेष रूप से पिता और पुत्र की प्रकृति की एकता की ओर इशारा करता है, जो उनके

---

[761] *ऑगस्टीन,* *एरियनों के उपदेशों के विरुद्ध*, अध्याय 23। ऑगस्टीन अन्य स्थानों पर भी इसे अक्सर दोहराते हैं, उदाहरण के लिए: वे कहते हैं, 'जो कुछ भी पिता के पास है, वह मेरा है; इसीलिए मैंने कहा, "*वह मुझसे प्राप्त करेगा।*"' 'आप और क्या जानना चाहते हैं? इसलिए, पवित्र आत्मा पिता से प्राप्त करता है, जिससे पुत्र उत्पन्न होता है: क्योंकि इस त्रिमूर्ति में पुत्र पिता से जन्मा है, और पवित्र आत्मा पिता से उत्पन्न होता है; लेकिन जो किसी से नहीं जन्मा है वह किसी से उत्पन्न नहीं होता—केवल पिता ही है' (ट्रैक्टेट. इन जोआन. C), या: उन्होंने समझाया कि उन्होंने क्यों कहा, *'वह मुझसे प्राप्त करेगा'*—क्योंकि वे कहते हैं: *'जो कुछ भी पिता के पास है वह मेरा है; इसीलिए मैंने कहा, "वह मुझसे प्राप्त करेगा"';* अतः इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि पवित्र आत्मा को भी पिता से प्राप्तकर्ता के रूप में समझा जाना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे पुत्र है (On the Trinity, Book II, Chapter 3; Conf. contra epistol. Parmeniani, Book II, Chapter 15, और in Joann. tractat. CVII)।

[762] *वह मुझसे ग्रहण करेगा और तुम्हें* यह *प्रचार करेगा,* अर्थात् मेरे पिता से: पवित्र आत्मा, जो पिता से प्राप्त हुआ है, क्योंकि वह पिता से निकलता है, जिनसे पुत्र भी उत्पन्न हुआ था (*अल्बिनस,* यूहन्ना पर भाष्य, *'वह मुझसे ग्रहण करेगा* शब्दों पर)।

[763] *सुरलि. एलेक्स.*, पुस्तक VI, त्रिमूर्ति पर संवाद, भाग 1, उनके कार्यों के खंड V में; *पैनोपोलिस के नोनस,* यूहन्ना पर व्याख्या, पैयर की ग्रीक लाइब्रेरी के परिशिष्ट में; *वहिलियस,* सेबेलीयस, फोटिनस और एरियस के साथ विवाद; *अपोलिनारिस,* यूहन्ना पर ग्रीक पैट्रिस्टिक चेन में, अध्याय XVI; *ज़कारिया क्रिसोपोलीटस,* सुसमाचार पर भाष्य, शब्दों: *'वह मेरी ओर से ग्रहण करेगा'* पर, खंड XII, भाग 1, बिब्लियोथेका पैट्रम, कोलोन संस्करण; *हेमो,* ईस्टर के बाद चौथे रविवार के लिए ग्रीष्मकालीन उपदेश, पृ. 127, कोलोन 1539।

[764] विरोधी धर्मशास्त्री आमतौर पर यहाँ इस बात की ओर इशारा करते हैं कि, पवित्र धर्मग्रंथ में, शाश्वतता को वर्तमान, भूत और भविष्य के काल द्वारा बिना किसी भेद के व्यक्त किया गया है *(पेरोन,* उपरोक्त, खंड II, पृ. 431)। लेकिन इस धारणा का खंडन बहुत पहले स्वयं असहमत लेखकों में से एक द्वारा कर दिया गया था *(लैम्पे,* कमेंट, इन जोआन. खंड III, पृ. 321, एम्स्टर्डम, 1726)। दूसरा, यह कहा जाता है कि मसीह ने इसलिए भविष्य काल में कहा: *'प्रवाहित होंगे,* क्योंकि उनके मन में *मुख्य रूप से (पोटिसिमम)* पवित्र आत्मा का बाहरी प्रवाह था, जो आंतरिक प्रवाह पर आधारित था—अर्थात्, संसार में पवित्र आत्मा का मिशन, जो अभी होना बाकी था (*पेरॉन,* उपरोक्त)। एक सुखद स्वीकारोक्ति! तो, क्या पवित्र आत्मा की आंतरिक या शाश्वत प्रवासन का यहाँ सीधे उल्लेख नहीं किया गया है, बल्कि केवल इसलिए इसका अनुमान लगाया जाना चाहिए क्योंकि यह बाहरी प्रवासन का पूर्व-आशय है, जिस पर यह आधारित है? लेकिन हम पहले ही देख चुके हैं कि बाहरी प्रवाह, या पुत्र से संसार में पवित्र आत्मा का प्रेषण, शाश्वत प्रवाह को बिल्कुल भी पूर्व-मान्य नहीं करता है, और दोनों के बीच एक पूर्ण अंतर है। परिणामस्वरूप...

सारभूत गुणों और, सामान्य रूप से, उन सभी बातों को दर्शाता है जो उनमें सामान्य हैं (,[765]), लेकिन यह किसी भी तरह से उनके विशिष्ट गुणों को इंगित नहीं करता है।[766] और इस प्रकार यह तर्क दिया गया कि *जो कुछ भी पिता के पास है,* वह न केवल पुत्र के पास है, बल्कि पवित्र आत्मा के पास भी है।[767] तदनुसार, उन्होंने ऐसा करने का इरादा नहीं किया था और न ही कर सकते थे कि उद्धारकर्ता के इन शब्दों से—जैसा आज किया जाता है—पवित्र आत्मा की शाश्वत प्रक्रिया के बारे में कोई निष्कर्ष निकाला जाए; अन्यथा, यह मानना पड़ेगा कि पिता मानते थे कि वह स्वयं से उत्पन्न होता है।

यह ध्यान देने योग्य है कि यहाँ पश्चिमी सिद्धांत के समर्थन में पवित्र आत्मा की व्यक्तिगत प्रकृति के संबंध में परीक्षण किए गए प्रमाण, विशेष रूप से अंतिम प्रमाण, भिन्न मत रखने वालों द्वारा सबसे महत्वपूर्ण माने जाते हैं। अन्य प्रमाण कम प्रभावशाली माने जाते हैं और इसलिए कम ध्यान देने योग्य हैं। इस प्रकार, वे यह निष्कर्ष निकालने का प्रयास करते हैं कि पवित्र आत्मा अनंतकाल से उत्पन्न होती है —

४) गलातियों के प्रति प्रेरित के शब्दों से: *'परन्तु क्योंकि तुम पुत्र हो, इसलिये परमेश्वर ने अपने पुत्र का आत्मा तुम्हारे हृदय में भेजा है, जो पुकारता है, "अब्बा, हे पिता!"'* (गलातियों 4:6), तर्क करते हुए: 'पवित्र आत्मा को *पिता का आत्मा* कहा जाता है (मत्ती 10:20), निस्संदेह इसलिए कि वह उनसे उत्पन्न होता है; परिणामस्वरूप, उसे उसी कारण से *पुत्र का आत्मा* भी कहा जाता है।' लेकिन—

क) यह आवश्यक नहीं है कि जो बातें विभिन्न व्यक्तियों को श्रेय दी जाती हैं, उन्हें ठीक उसी कारण से उन्हें श्रेय दिया जाए। पवित्र आत्मा को परमपिता का आत्मा इसलिए कहा जाता है क्योंकि वह उनसे एकसार है और उनसे अविभाज्य है, और साथ ही, शायद इसलिए भी कि वह उनसे उत्पन्न होता है: क्योंकि पवित्रशास्त्र इस बारे में स्पष्ट रूप से बात करता है (यूहन्ना 15:26); उन्हें केवल इसलिए पुत्र का आत्मा कहा जाता है क्योंकि वह उसी सार के हैं और उनसे कभी अलग नहीं होते, हमेशा उनमें निवास करते हैं—लेकिन क्या उन्हें इसलिए भी ऐसा कहा जाता है क्योंकि वह उनसे उत्पन्न होते हैं, ऐसा कोई आधार परमेश्वर के वचन में कहीं भी नहीं मिलता। और कलीसिया के प्राचीन शिक्षकों ने सर्वसम्मति से यह माना कि पवित्र आत्मा को पुत्र का आत्मा कहा जाता है, ठीक उसी तरह जैसे उन्हें पिता का आत्मा कहा जाता है, विशेष रूप से उनके साथ एकसार होने के कारण,[768] और परिणामस्वरूप, यद्यपि उन्होंने अक्सर उन्हें पुत्र

---

[765] "जब उन्होंने कहा: *'जो कुछ भी पिता के पास है, वह मेरा है,* और आगे: *'जो कुछ भी मेरा है, वह तुम्हारा है, और जो कुछ भी तुम्हारा है, वह मेरा है'*—उन्होंने एकता का प्रदर्शन किया" *(एम्ब्रोस.* दे सैक्राम. इंकॉर्प. डोमिनि. अध्याय 8). "चूँकि जो कुछ भी पिता के पास है, वह वास्तव में, पुत्र का ही है, इसलिए उन्हें पिता के सह-तत्त्व (consubstantial) के रूप में सही माने जाते हैं। इसे इसी प्रकार समझते हुए, निकिया परिषद में धर्मपितामहों ने स्वीकार किया कि पुत्र पिता के सह-तत्त्व हैं और उनके अस्तित्व का ही अंश हैं" *(अथानासियस।* एपिस्ट. एड सेरापियन. II, n. 5. conf. n. 2). 'जो कुछ वह कहते हैं: *"जो कुछ भी पिता के पास है वह मेरा है,"* उन्होंने उन चीजों के बारे में कहा जो पिता की दिव्यता से संबंधित हैं, जिनमें वह उनसे समान हैं, और जो कुछ भी पिता के पास है वह सब कुछ उनके पास है' *(ऑगस्टाइन,* इन जॉन, ट्रैक्टेट सीवीआईआई)। इसी बात को डायोनिसियस द एरोपागाइट (डी डिविनि. नोम., अध्याय 2), टर्टुलियन (कॉन्ट्रा प्रैक्स., अध्याय 17), बेसिल द ग्रेट (ऑन द होली स्पिरिट, अध्याय 8), एपिफेनियस (हेरेस., 67), क्रिसोस्टोम (होमिलिज़ ऑन द ट्रिनिटी), जेरोम (एक्सपोजिशन ऑफ द फेथ टू सिरिल), अलेक्जेंड्रिया के सिरिल (पुस्तक XII, ऑन जॉन, अध्याय 2) और अन्य।

[766] "जो कुछ भी पिता के पास है, वह पुत्र के पास भी है, पाप को छोड़कर" *(ग्रेगरी द थियोलोजियन,* होमीली 34, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स* III, पृ. 190)। "हम विश्वास करते हैं कि पुत्र पिता के सम-तत्त्व का है और पिता के साथ सब कुछ साझा करता है, सिवाय एक बात के: *उत्पत्ति"* *(सिरिल,* डायलॉग II वदि हर्मियास)। "पुत्र के पास वह सब कुछ है जो पिता के पास है, क्योंकि वह उनसे एकसार है, लेकिन वह अपने जन्म के तरीके और संबंध में पिता की हाइपोस्टेसीस से भिन्न है" *(जॉन ऑफ़ डेमास्कस,* एन एक्सैक्ट एक्सपोज़िशन ऑफ़ द ऑर्थोडॉक्स फेथ, बुक III, चैप्टर 7)। इसी प्रकार—क्रिसोस्टोम (होमलि. डी फाइड), ग्रेगरी ऑफ निस्सा (डी फाइड एड सिम्प्लिसियम, खंड II, पृ. 472, पेरिस 1615) और अन्य।

[767] पिता की वस्तुएँ पुत्र की हैं, और पुत्र की वस्तुएँ पवित्र आत्मा की हैं *(क्रिसोस्टोम,* यूहन्ना पर उपदेश, LXVIII, या LVII, टिप्पणी 2, खंड VIII, पृ. 407. पेरिस 1741). जो कुछ भी पिता के पास है, वह पुत्र के पास भी है, और पवित्र आत्मा के पास भी; और उस त्रिमूर्ति के भीतर यह सहभागिता कभी भी कमी नहीं रही है *(लियो महान,* पेंटेकोस्ट पर प्रवचन 1)। जो कुछ भी पिता का है, वह पुत्र का भी है, और जो कुछ भी पुत्र का है, वह पवित्र आत्मा का भी है *(जेरोम,* सिरिल को विश्वास की व्याख्या)। जो कुछ भी पिता के पास है, वह न केवल पुत्र का बल्कि पवित्र आत्मा का भी है *(ऑगस्टाइन,* त्रिमूर्ति पर, पुस्तक X, अध्याय 4)।

[768] "जब पवित्र आत्मा को कभी-कभी पुत्र का आत्मा और कभी-कभी पिता का आत्मा कहा जाता है, तो यह भ्रम (οὐκ ἐν συγχύσει) के संदर्भ में नहीं सिखाया जाता है, बल्कि यह दैवीय सार की अविभाज्यता को दर्शाता है" *(क्रिसोस्टोम,* होमलीज ऑन पेंटेकोस्ट, खंड XII, पृ. 814, एड. मॉन्टफॉक. पेरिस)। एक ही आत्मा को, स्वभाव के समुदाय के कारण, कभी-कभी पिता का और कभी-कभी पुत्र का कहा जाता है *(जेरोम,* इन एपिस्ट. एड गैलाट., पुस्तक II, अध्याय 4)। यही बात *डिडिमिस (*डी स्पिरि. एस., पुस्तक II, इन ओप. *हायरोनिमी,* खंड VI), *अलेक्जेंड्रिया के सिरिल (*डी ट्रिनिटि., पुस्तक VII) और अन्य लोगों द्वारा भी कही गई है।

से अपरचिति नहीं, बल्कि पुत्र का होने वाला, और पुत्र के आत्मा के रूप में संदर्भति कयिा, फरि भी उन्होंने एक ही समय में यह इनकार कयिा कि वे पुत्र से उत्पन्न होते हैं।[769] यह भी जोड़ना चाहिए कि—

(b) प्रेरति के ये वचन यहाँ पवत्रि आत्मा की शाश्वत हाइपोस्टेससि (सार) को बलि्कुल भी संदर्भति नहीं करते, बल्कि विश्वासयिों के हृदयों पर प्रदान कएि गए उनके अनुग्रह-पूर्ण उपहारों को संदर्भति करते हैं; उस पुत्रत्व और प्रेम की आत्मा को, उस स्वतंत्रता और परमेश्वर के सामने नरि्लज्ज साहस की आत्मा को, जसिसे वे सभी परपिूर्ण हैं जो उनसे उत्पन्न हुए हैं, और जसिके बारे में प्रेरति ने कहा: *'क्योंकि तुम दासता का आत्मा नहीं पाए, कि फिरि डरने लगो; परन्तु तुम ने दत्तकता का आत्मा पाया, जसि से हम आबा, अर्थात् पति, कहकर पुकारते हैं।'* (रोमयिों 8:15)। इस अर्थ में समझा जाए, तो आत्मा स्वाभावकि रूप से पुत्र का आत्मा कहलाता है, क्योंकि सभी आध्यात्मकि वरदान हमारे लएि पुत्र के अनंत पुण्यों के द्वारा प्राप्त हुए हैं, और हमारे हृदयों पर उसी के द्वारा प्रदान कएि जाते हैं।[770]

5) रोमयिों से प्रेरति के शब्दों में: *आप शरीर के अनुसार नहीं, बल्कि आत्मा के अनुसार जीते हैं, बशर्ते कि परमेश्वर का आत्मा आप में वास करता हो। लेकनि यदि किसी में मसीह का आत्मा नहीं है, तो वह उसका नहीं है* (रोमयिों 8:9)। फरि भी पवत्रि आत्मा को मसीह का आत्मा उसी कारण से कहा जाता है, जसि कारण से उसे पुत्र का आत्मा कहा जाता है, अर्थात्, क्योंकि वह उसके सह-सार है,[771] और क्योंकि वह वही आत्मा है जो मसीह पर लगातार वरिाम लेता था और उसे भरता था, हमारे उद्धारकर्ता के रूप में (यशायाह 11:2,3), और अंत में क्योंकि उन्हें मसीह के गुणों के कारण हम पर भेजा गया है।[772] इसके अलावा, यदि हम संपूर्ण अंश के संदर्भ में प्रेरति के शब्दों पर वचिार करें, तो उन्हें इस प्रकार समझा जा सकता है: 'आप देहगत, पापी जीवन नहीं जीते, बल्कि आध्यात्मकि, पवत्रि जीवन जीते हैं, क्योंकि परमेश्वर का आत्मा आपके भीतर वास करता है। और जो आध्यात्मकि रूप से नहीं जीता, जसिके भीतर मसीह की आत्मा नहीं है—अर्थात्, जो अपने भीतर वही पवत्रि वचिार और भावनाएँ नहीं रखता जो मसीह में थीं—मैं उसे मसीही नहीं मानता।" क्योंकि उसी अध्याय की पहली आयत में *'मसीह की आत्मा'* अभव्यिक्ति को प्रेरति ने *'मांस'* के वपिरीत, एक ही शब्द *'आत्मा'* से बदल दयिा है, जबकि *'मसीह की आत्मा रखना'* अभव्यिक्ति का अनुरूप एक और है: *'मसीह में होना'* (8:1), *'अपने भीतर मसीह को रखना'* (10)। परणिामस्वरूप, यहाँ पुत्र से पवत्रि आत्मा के शाश्वत प्रवाह का सबसे छोटा सा भी संकेत नहीं माना जा सकता।

6) अंत में, उद्धारकर्ता के सुसमाचार ववरिण से: *'यह कहकर, उन्होंने उन पर श्वास फूंका और उनसे कहा, "पवत्रि आत्मा ग्रहण करो"* (यूहन्ना 20:22)। लेकनि यदि उद्धारकर्ता द्वारा प्रेरतिों को अपनी साँस से पवत्रि आत्मा प्रदान करने के तथ्य से यह नष्किर्ष नकिाला जाए कि पवत्रि आत्मा शाश्वत रूप से पुत्र से उत्पन्न होता है, तो यह स्वीकार करना होगा कि पवत्रि आत्मा प्रेरतिों से भी उत्पन्न होता है — क्योंकि उन्होंने भी अपने हाथ रखने से वश्विासयिों को पवत्रि आत्मा प्रदान कयिा (प्रेरतिों के काम 8:17)। हालाँकि, यह दावा करना कि उद्धारकर्ता की साँस स्वयं केवल पवत्रि आत्मा के प्रदान करने का ही नहीं, बल्कि उसकी शाश्वत उत्पत्ति का भी संकेत करती है, और भी अजीब है: उस स्थति में, मूसा के इस वृत्तांत से कि परमेश्वर ने 'आदम के *नाक में जीवन की श्वास फूंकी* (उत्पत्ति 2:7), यह नष्किर्ष नकिालना होगा कि हमारी आत्मा शाश्वत रूप से परमेश्वर से उत्पन्न होती है। चर्च फादर्स ने इस

---

[769] एक ईसाई के लएि यह वश्विास करना पर्याप्त है कि पति, पति से उत्पन्न पुत्र, और *उसी* पति से नकिलने वाले पवत्रि आत्मा, सभी पति और पुत्र के एक ही पवत्रि आत्मा हैं (*ऑगस्टीन,* *एनचरिीडयिन एड लॉरेंटयिम*, अध्याय 9)। थयिोडोरेट, अलेक्जेंड्रयिा के सरिलि और दमश्कि के जॉन की गवाहयिाँ और भी अधकि स्पष्ट हैं, जैसा कि हम नीचे देखेंगे।

[770] "पवत्रि आत्मा परमेश्वर से है, यह प्रेरति ने स्पष्ट रूप से घोषति कयिा, कहते हुए: *'हमने प्राप्त कयिा है... पवत्रि आत्मा परमेश्वर से* है' (1 कुरन्थियिों 2:12), और यह कि आत्मा पुत्र के द्वारा प्रकट हुआ था, यह प्रेरति ने उसे 'पुत्र का आत्मा' कहकर स्पष्ट कयिा (*बेसलि द ग्रेट, अगेंस्ट यूनोमयिस, बुक 5, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स* VII, पृ. 197–198)। "हम पवत्रि आत्मा को परमेश्वर और पति के आत्मा के रूप में सम्मानति करते हैं, अर्थात्, उनसे उत्पन्न होने वाले के रूप में, जो पुत्र का भी आत्मा है क्योंकि उनके द्वारा वह प्रकट हुए और सृजति प्राणयिों तक पहुँचे, और इसलएि नहीं कि वह अपनी हाइपोस्टेससि या अस्तत्वि उनसे प्राप्त करते हैं" (*दामास्कस,* सब्बाथ पर भाषण)।

[771] मसीह की आत्मा, जो परमेश्वर पति की आत्मा भी है, हमें दी गई है। क्योंकि जनिमें एक ही स्वभाव की एकता है, वे एक-दूसरे के साथ एक हैं (*अम्ब्रोज़,* एफ़सियिों को लखि पत्र पर टीका, अध्याय 3)। "उन्हें मसीह का आत्मा भी कहा जाता है, क्योंकि वह स्वभाव से उनके साथ एक हैं" (बेसलि द ग्रेट, पवत्रि आत्मा पर, अध्याय 18, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स* VII, पृ. 301)। "उन्होंने कहा कि जब परमेश्वर का आत्मा हम में वास करता है, तो मसीह स्वयं हम में वास करते हैं (रोमयिों 8:9-10)। क्योंकि आत्मा स्वभाव की एकता के कारण पुत्र से पृथक नहीं है, यद्यपि वह वास्तव में अपना ही हाइपोस्टेससि (स्वभाव) रखता है" (*सरिील ऑफ़ अलेक्जेंड्रयिा,* जॉन पर पुस्तक IV, अध्याय 3)।

[772] यह ध्यान दयिा जाना चाहिए कि कुछ असहमत टीकाकार स्वयं इस अंश की व्याख्या हमारे साथ सहमति में करते हैं: *कोपे,* *एन. टेस्ट. परपेचुअल एन्टो. इलस्ट्रेटम*, खंड 1, पृ. 104. गोटगिेन, 1778; *रोसेनमुलर,* *स्कॉल. इन एन. टेस्ट.*, खंड IV, पृ. 441. न्यूरमबर्ग, 1806.

सुसमाचार के अंश पर बार-बार वचिार कयिा है और इसकी वभिन्नि प्रकार से व्याख्या की है: कुछ का मानना है कि अपनी साँस फूँकने के माध्यम से, उद्धारकर्ता ने केवल प्रेरतिों को पवत्रि आत्मा की भवष्यि की प्राप्तकि लिए तैयार कयिा; अन्य का मानना है कि उन्होंने इसके द्वारा प्रेरतिों को बाँधने और खोलने का अधकिार प्रदान कयिा; तीसरे समूह का मानना था कि उन्होंने उन पर पवत्रि आत्मा की कृपा और शक्तभिी प्रदान की, यद्यपयिह उस मात्रा से कम थी जसिसे उन्हें अंततः पेंटेकोस्ट के दनि प्रदान कयिा गया था। फरि भी, चर्च के कसिी भी पतिा या शक्षिक को इस ग्रंथ में पवत्रि आत्मा के शाश्वत प्रवाह का कोई सुझाव नहीं मलिा।[773]

III. तो, अब तक कही गई बातों से क्या सामान्य नष्किर्ष नकिाला जा सकता है?

नष्पिक्षता से, नम्निलखिति नष्किर्ष नकिाला जाना चाहए: 'जबकि पवत्रि आत्मा के परमपतिा से नकिलने का सद्धिांत पवत्रि धर्मग्रंथ में अत्यंत स्पष्टता से, यहाँ तक कि शाब्दकि रूप से भी व्यक्त कयिा गया है, पुत्र से पवत्रि आत्मा के नकिलने का सद्धिांत पवत्रि धर्मग्रंथ के लिए पूरी तरह से अपरचिति है; यह न तो शाब्दकि रूप से और न ही आत्मा में इसमें नहिति है, क्योंकि इसके रक्षकों के सभी प्रयासों के बावजूद, इसे धर्मग्रंथ से सही तर्क के माध्यम से भी नहीं नकिाला जा सकता है।"

अब हम पवत्रि परंपरा, या इस धर्मसद्धिान्त के बारे में प्राचीन कलीसयिा के वश्विास की ओर मुड़ते हैं, और सबसे पहले उन सार्वजनकि वश्विास-प्रकटनों (धर्मसूत्रों) पर वचिार करते हैं, जो वशिष कलीसयिाओं में या सार्वभौमकि कलीसयिा में उपयोग कए जाते थे, और सार्वभौमकि तथा स्थानीय परषिदों की शक्षिाओं पर, जन्हिोंने कलीसयिा की आवाज़ का भी प्रतनिधित्वि कयिा।

§ 43. प्राचीन धर्मसूत्र पवत्रि आत्मा की उत्पत्तकि बारे में क्या सखिाते हैं।

1) बनिा कसिी अपवाद के, जहाँ भी इस धर्मशास्त्र का उल्लेख है, वे सर्वसम्मतसि यह सखिाते हैं कि पवत्रि आत्मा केवल पतिा से ही उत्पन्न होता है। इस प्रकार:

क) संत ग्रेगरी द वंडरवर्कर के धर्मवश्विास में, जसिका उपयोग उनके समय से नेओकेसरेया की कलीसयिा में लोगों को धर्म की सार्वजनकि शक्षिा के लिए कयिा जाता रहा है, हम पढ़ते हैं: 'और एक पवत्रि आत्मा, जसिका अस्तत्वि (उत्पत्त)ि ईश्वर से है और जो पुत्र के माध्यम से प्रकट हुआ, अर्थात् लोगों के लिए।'[774] यहाँ, *'ईश्वर से'* अभव्यिक्त नसि्संदेह *'ईश्वर पतिा से'* का अर्थ रखती है—क्योंकि पुत्र के संबंध में आगे कहा गया है: *'और पुत्र के माध्यम से* लोगों को प्रकट कयिा गया'। परणिामस्वरूप, यहाँ पवत्रि आत्मा के संबंध में पतिा से संबंधति और पुत्र से संबंधति के बीच एक स्पष्ट अंतर कयिा गया है: पतिा को यह श्रेय दयिा गया है कि पवत्रि आत्मा अपनी ही हाइपोस्टेसिस (स्वयं का अस्तत्वि) उनसे प्राप्त करता है, जबकि पुत्र को केवल यह श्रेय दयिा गया है कि उनके माध्यम से पवत्रि आत्मा मानवजातकि लिए प्रकट हुआ, या संसार में भेजा गया। यह अंतर अत्यंत महत्वपूर्ण है! हमें यह न भूलें कि संत ग्रेगरी द वंडरवर्कर का धर्म-सूत्र स्वयं उनके द्वारा रचति नहीं था, बल्कि यह उन्हें स्वर्ग से एक वशिष प्रकटोक्तकि द्वारा प्रकट कयिा गया था, और यह कि इस धर्म-सूत्र में, तब तक अस्तत्वि में रहे सभी धर्म-सूत्रों में पहली बार, पवत्रि आत्मा के प्रवाह का सद्धिांत प्रकट होता है।

ख) संत एपफिानयिस की गवाही के अनुसार, प्रथम सार्वभौमकि परषिद के समय से 373 ईस्वी तक चर्च में बपतस्मिा के संस्कार की तैयारी कर रहे लोगों को शक्षिा देने के लिए प्रयुक्त धर्मवश्विास में कहा गया है: "हम वश्विास करते हैं... और पवत्रि आत्मा में, जो प्रभु और जीवन दाता है, जो पतिा से उत्पन्न होता है, जसिे पतिा और पुत्र के साथ मलिकर पूजा और महमिा दी जाती है।"[775] परणिामस्वरूप, पवत्रि आत्मा के संबंध में पतिा से संबंधति और पुत्र से संबंधति के बीच भी एक अंतर कयिा जाता है: पतिा को यह दोनों बातें बताई गई हैं कि पवत्रि आत्मा उनसे उत्पन्न होता है और यह कि पवत्रि आत्मा उनकी संग ही आराधति और महमिामंडति होता है, जबकि पुत्र को केवल दूसरी बात बताई गई है। तो

---

[773] *क्रसिोस्टोम,* होमलीज LXXXVI और LXXXV, मध्य से आगे; *जेरूसलम के सरिलि,* कैटेकज्मि XIV और XVII; *अथेनासयिस,* ऑन द पैराबल्स ऑफ द गॉस्पेल, प्रश्न 29; *जेरोम,* एपस्टिल टू हेबडि, प्रश्न 9; *थयिोफलिक्ट,* जॉन पर टीका, अध्याय 3 और 20।

[774] और पवत्रि आत्मा, जसिका अस्तत्वि ईश्वर से है और जसिे पुत्र के द्वारा, अर्थात् मानवजातकि लिए भेजा जाता है।

[775] और पवत्रि आत्मा को, जो जीवन के प्रभु और दाता हैं, जो पतिा से उत्पन्न होते हैं, और पतिा तथा पुत्र के साथ पूजे जाते हैं। *एपफिानयिस,* *इन एंकरोटो*, संख्या CXX, खंड II, पृ. 122.

फरि कोई पूछ सकता है कि यदि उस समय यह माना जाता था कि यह गुण उनके हैं, तो पहली बात पुत्र को क्यों नहीं बताई गई?

(c) उस धर्मसूत्र में, जैसा कि वही पवित्र पिता गवाही देते हैं, अपोलिनारिस और अन्य लोगों के विधर्म के जवाब में वर्ष 373 से चर्च में प्रचलन में आया, हमें निम्नलिखित मिलता है: 'हम पवित्र आत्मा में विश्वास करते हैं..., कि वह पवित्र आत्मा, परमेश्वर का आत्मा, पूर्ण आत्मा, सांत्वनादाता, अकल्पित, पिता से उत्पन्न और पुत्र द्वारा प्राप्त (या, अन्य पांडुलिपियों के अनुसार, पुत्र द्वारा 'स्वीकृत') है।"[776] परिणामस्वरूप, एक बार फरि एक भेद है—एक भेद जो स्पष्ट रूप से पवित्र धर्मग्रंथ पर आधारित है—इस बात के बीच कि पवित्र आत्मा के संबंध में पिता से क्या संबंधित है और क्या पुत्र से संबंधित है! कहा जाता है कि पवित्र आत्मा पिता से निकलता है (यूहन्ना 15:26), जबकि पुत्र से वह केवल प्राप्त किया जाता है (यूहन्ना 20:22), या ग्रहण करता है (यूहन्ना 16:14)। तो, यदि 'पिता से *उत्पन्न होने*' और 'पुत्र से *प्राप्त करने*' की अभिव्यक्तियों के बीच कोई अंतर नहीं किया जाता, बल्कि उन्हें एक समान माना जाता—जैसा कि पश्चिमी ईसाई अब उन्हें समझते हैं—तो प्राचीन धर्मविश्वास में स्पष्ट रूप से यह क्यों नहीं कहा गया, जैसा कि अब कहा जाता है: 'पिता और पुत्र से उत्पन्न होने वाला'—जो कि दोनों ही छोटा और स्पष्ट होता?

(घ) अंत में, नाइसन-कॉन्स्टेंटिनोपोलिटिन धर्म-सत्य में, जिसने सभी पिछली मान्यताओं को प्रतिस्थापित कर दिया, पवित्र चर्च हमें अभी भी यह विश्वास करना सिखाती है: 'और पवित्र आत्मा में, जो प्रभु है, जीवन का दाता है, जो पिता से निकलता है, जिसे पिता और पुत्र के साथ मिलकर पूजा और महिमा दी जाती है।' यहाँ हमें उस उद्देश्य को याद करना चाहिए जिसके लिए इन शब्दों को धर्म-सत्य में शामिल किया गया था। द्वितीय सार्वभौमिक परिषद के पितृगण इन शब्दों के माध्यम से, मैसेडोनियस के संप्रदायवाद के विरोध में, जो पवित्र आत्मा की दिव्यता को अस्वीकार करता था और उसे पुत्र की एक सृष्टि कहता था, परम सटीकता के साथ पवित्र आत्मा की पिता और पुत्र के साथ एकसारता और पूर्ण समानता की अवधारणा व्यक्त करना चाहते थे। यदि ऐसा है, तो फरि धर्मपिताओं ने ऐसा क्यों नहीं कहा: 'जो परमपिता और पुत्र से उत्पन्न होता है, जिसकी परमपिता और पुत्र के साथ आराधना और महिमा की जाती है', बल्कि इसके बजाय केवल इतना कहा: 'जो परमपिता से उत्पन्न होता है', जबकि पूर्ववर्ती सूत्र उनके उद्देश्य के लिए कहीं अधिक शक्तिशाली होता? क्योंकि इससे स्पष्ट रूप से यह संकेत मिलता कि पवित्र आत्मा न केवल पिता के, बल्कि पुत्र के भी समान सार के हैं। और पवित्र आत्मा के प्रवाहन के बारे में बात करते समय वे केवल पिता का उल्लेख क्यों करते हैं, जबकि बाद में पवित्र आत्मा के दिव्य महिमीकरण के बारे में बात करते समय वे पिता और पुत्र दोनों का उल्लेख करते हैं? यदि, पहली बार, पिता का उल्लेख करके उन्होंने पुत्र का भी निहितार्थ निकाला, तो फरि उन्होंने बाद वाले उदाहरण में, केवल पिता के एकल ' ' नाम तक ही क्यों सीमित नहीं रहे, बल्कि उसमें पुत्र का नाम भी जोड़ दिया? यह एक स्पष्ट संकेत है कि, उस समय, ऐसा कोई भी विश्वास नहीं था कि पवित्र आत्मा पुत्र से भी उत्पन्न होता है।[777]

---

[776] कि वह पवित्र आत्मा, परमेश्वर का आत्मा, पूर्ण आत्मा, सांत्वनादाता, अकल्पित, पिता से निकलने वाला, और पुत्र से प्राप्त (अन्य पाठ: ग्रहण करने वाला) है। *एपिफानियस*/वही, पृ. 123.

[777] "पश्चिमी विद्वान उत्तर देते हैं कि चर्च के पितागणों ने इसे प्रतीकात्मक रूप में व्यक्त किया: *'पिता से उत्पन्न'*, बजाय इसके कि *'और पुत्र से'* जोड़ा जाए, ताकि मैसेडोनियन विधर्म—जो यह दावा करता था कि पवित्र आत्मा *पुत्र द्वारा* बनाया गया था—को स्पष्ट रूप से खंडित किया जा सके, और इसलिए भी क्योंकि उस समय कोई इस बात पर संदेह नहीं करता था कि पवित्र आत्मा पुत्र से उत्पन्न होता है।" *(पेरॉन*, उद्धृत ग्रंथ, पृ. 434)। लेकिन दोनों कारण पूरी तरह से निराधार हैं। और, सबसे पहले, क्या 'पवित्र आत्मा *पुत्र से उत्पन्न होता है* और *'पुत्र द्वारा सृजित है* ये अभिव्यक्तियाँ एक-दूसरे के समान हैं, न कि परस्पर विरोधी? और क्या धर्मपिता, यह कहकर: 'नहीं, आत्मा पुत्र की सृष्टि नहीं है, बल्कि अनंत काल से पुत्र से उत्पन्न होता है, जैसे कि पिता से', उस विधर्मी की अधर्मी धारणा का खंडन नहीं करते? क्या उन्होंने इस धारणा का खंडन पहले ही नहीं कर दिया था जब उन्होंने धर्मविश्वास में शामिल किया: 'हम विश्वास करते हैं... और पवित्र आत्मा में, *जो जीवनदाता है,*' और फिर: 'जिसे पिता और पुत्र के साथ मिलकर पूजा और महिमा दी जाती है'? तो फिर, पुत्र से पवित्र आत्मा के निकलने के बारे में चुप रहने की क्या आवश्यकता थी? और, दूसरे, ऐसा कैसे हुआ कि उस समय किसी को इस बात पर संदेह नहीं हुआ कि पवित्र आत्मा पुत्र से निकलता है, जबकि विधर्मी उसे पुत्र की सृष्टि कहते थे? क्या कोई यह कह सकता है कि हम पिता से पवित्र आत्मा के शाश्वत प्रवाह को अस्वीकार नहीं करते, यदि हम यह दावा करें कि आत्मा पिता की एक सृष्टि है? इसलिए, उस विधर्मी को खंडन करने के लिए जिसने यह सिखाया कि आत्मा पुत्र द्वारा बनाई गई थी—और जिसने इस प्रकार स्पष्ट रूप से पुत्र से पवित्र आत्मा के शाश्वत प्रवाह के सिद्धांत को कमजोर किया— — इस उद्देश्य के लिए, न केवल इस प्रवाह को धर्मविश्वास से नहीं छोड़ा जाना चाहिए था, बल्कि, इसके विपरीत, इसे अत्यंत स्पष्टता के साथ स्पष्ट रूप से व्यक्त किया जाना चाहिए था, यदि वास्तव में उस समय चर्च के भीतर ऐसा कोई विश्वास मौजूद था। पश्चिमी लेखक स्वयं इस सब की सच्चाई से पूरी तरह वाकिफ हैं और इसे सहजता से स्वीकार करते हैं, यद्यपि एक अलग अवसर पर, अर्थात् जब वे यह समझाते हैं कि स्पेन में धर्म-सत्य में 'फिलियोक्वे' का जोड़ क्यों किया गया था। उनमें से एक के शब्द ये हैं: "यह सर्ववदिति है कि 6वीं शताब्दी से, गोथों के कैथोलिक

2) तो फिर, पश्चिमी लेखक इन सबके विरोध में क्या प्रस्तुत करते हैं?

क) कि उद्धृत धर्मविश्वासों के अंशों में, यद्यपि यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि पवित्र आत्मा पिता से निकलता है, कहीं भी यह नहीं जोड़ा गया है: *'एक ही* पिता से'; और परिणामस्वरूप, पुत्र से पवित्र आत्मा के निकलने को किसी भी तरह से बाहर नहीं रखा गया है। फिर भी, पुत्र की व्यक्तिगत प्रकृति के बारे में सिद्धांत प्रस्तुत करते समय, ये वही धर्मविश्वास केवल इतना कहते हैं: 'जो पिता से जन्म लिया है', यह जोड़ने के बिना कि *'एक ही* पिता से'। तो फिर, इससे कौन यह निष्कर्ष निकालेगा कि परमेश्वर का पुत्र केवल एक ही पिता से नहीं, बल्कि पवित्र आत्मा के साथ संयुक्त रूप से उत्पन्न हुआ है? इसके अलावा, हमने देखा है कि इस तरह के अतिरिक्त के बिना भी, धर्मविश्वास फिर भी पवित्र आत्मा के पिता से निकलने को पिता का एक विशिष्ट गुण के रूप में स्पष्ट रूप से स्थापित करते हैं, जो पुत्र का नहीं है।

ख) कि अलेक्जेंड्रिया के संत अथेनासियस के नाम से जाना जाने वाला धर्म-सूत्र यहाँ तक कि स्पष्ट रूप से पवित्र आत्मा के पुत्र से उत्पन्न होने की बात कहता है। क्योंकि लैटिन इस धर्म-सूत्र को, अपनी पांडुलिपियों के अनुसार, इस प्रकार पढ़ते हैं: 'पवित्र आत्मा न तो बनाया गया है, न ही रचा गया है, न ही उत्पन्न हुआ है, बल्कि पिता और पुत्र से उत्पन्न होता है।' लेकिन—

एए) ग्रीक पांडुलिपियों में, कुछ अपवादों को छोड़कर, *'और पुत्र से* यह जोड़ अनुपस्थित है;[778]

bb) यहां तक कि सबसे निष्पक्ष पश्चिमी लेखक भी स्वीकार करते हैं कि यह जोड़ बाद की तारीख में लैटिनों द्वारा किया गया था, जो लैटिन और कुछ ग्रीक पांडुलिपियों दोनों में दिखाई देता है;[779]

cc) चौदहवीं शताब्दी तक, किसी भी पश्चिमी विद्वान ने ग्रीकों के खिलाफ इस धर्मविश्वास का उपयोग नहीं किया;[780] जिसका अर्थ है कि या तो यह बिना जोड़ के भी कई जगहों पर जाना जाता था, या वे कुछ ऐसी चीज की ओर इशारा करने में शर्मिंदा थे जिसे वे स्पष्ट रूप से भ्रष्ट के रूप में पहचानते थे। यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि संत अथेनासियस के नाम से जाना जाने वाला धर्म-विश्वास पाँचवीं शताब्दी के अंत या छठी शताब्दी की शुरुआत तक प्रचलन में नहीं आया था,[781] और, परिणामस्वरूप, इस धर्म-विश्वास को प्रारंभिक चर्च में उपयोग किए जाने वाले विश्वास की सार्वजनिक अभिव्यक्तियों में से एक नहीं माना जा सकता है, उन लोगों के बराबर जिनका हमने उल्लेख किया है।

धर्म में परिवर्तित होने के बाद—जो पूर्व से एरियन, मैसिडोनियन और यूनोमियन की संप्रदायकिताएँ अपने साथ लाए थे, जो पवित्र आत्मा को पिता और पुत्र से नीच समझते थे, *पुत्र द्वारा सृजित मानते थे, और* परिणामस्वरूप (propterea) *पुत्र से पवित्र आत्मा के प्रवाहित होने को अस्वीकार करते थे*— स्पेनिश चर्चों ने यह आदेश दिया कि धर्मविधि के दौरान *फिलिओक्वे के* अतिरिक्त के साथ धर्मसंग्रह का गंभीरता से पाठ किया जाए, और इस प्रकार सच्चे धर्म की खुले तौर पर गवाही दी गई" *(पेरोन,* उद्धृत ग्रंथ, पृ. 447)। ऐसा कैसे हो सकता है? दूसरे सार्वभौमिक परिषद के धर्मपितागणों ने धर्मविश्वास से जानबूझकर 'फिलियोक्वे' शब्द को हटा दिया था ताकि इस विधिर्मी धारणा को स्पष्ट रूप से खारिज किया जा सके कि पवित्र आत्मा पुत्र द्वारा सृजित है; जबकि इसके विपरीत, स्पेनिश चर्चों ने ठीक उसी उद्देश्य के लिए धर्मविश्वास में 'फिलियोक्वे' को डाला! एक उदाहरण में, यह कहना कि किसी को भी पवित्र आत्मा के पुत्र से निकलने पर संदेह नहीं था, जबकि विधिर्मी हर जगह यह प्रचार कर रहे थे कि आत्मा पुत्र द्वारा बनाई गई है; जबकि दूसरे में, यह दावा किया गया कि विधिर्मी, आत्मा को पुत्र की एक सृष्टि के रूप में स्वीकार करके, स्पष्ट रूप से इस बात को अस्वीकार कर देते थे कि वह पुत्र से उत्पन्न होता है: क्या कोई इससे भी अधिक स्पष्ट विरोधाभासों में पड़ सकता है?

[778] इसे पश्चिमी लेखकों में से एक, मार्क एंटोशी डे डोमिनिस ने भी स्वीकार किया था: 'एथनासियन क्रीड की ग्रीक प्रतियां जो मैंने देखी हैं, उनमें "et Filioque" वाक्यांश नहीं है; उनमें केवल "et a Patre" लिखा है' (De republica ecclesiastica, पुस्तक VII, अध्याय 10, टिप्पणी 124)। हालाँकि, यह प्रतीक, इस अतिरिक्त के साथ, गुंडलिंग द्वारा प्रकाशित छह ग्रीक पांडुलिपियों में से दो में पाया जाता है (उसने जो पुस्तक प्रकाशित की थी, उसमें एक टिप्पणी में: *यूस्ट्राटियस जियोलोक्स्की,* *ब्रेव. डेलिनियट. इक्ल. ग्रीका*, न्यूरमबर्ग 1681), और मोनफोकोन द्वारा प्रकाशित चार में से दो में (ओप. *अथानासियि,* खंड II, पृ. 728)।

[779] अर्थात्, विट्रियागो के जेम्स, सीरिया के एकोनियम के बिशप, जो 12वीं शताब्दी की शुरुआत में रहते थे (Hist. Hierosolym. cap. 74, in Hist. Oriental. खंड 1, पृ. 1090, सं. हैनन, 1611), जिसे गंडलगियिस (उपरोक्त, पृ. 83), वॉसियस (डिस्स. डी त्रिबस सिम्बुलो., पृ. 51) और अन्य लोगों द्वारा पहले ही पिछले नोट में उल्लेख किया गया है।

[780] गंडलगियिस और वॉसियस में प्रासंगिक अंश देखें।

[781] *बिगिम,* *ओरिज. इक्लेस.*, पुस्तक X, अध्याय 4, § 18, और *थियोलॉज. कर्स. कॉम्प्ल.*, खंड VI, पृ. 423–425, पेरिस, 1841।

(c) कुछ लोगों ने यह दावा करने का साहस किया है कि स्वयं निकेन-कांस्टेंटिनोपोलिटन प्रतीक में ही, सातवें सार्वभौमिक परिषद के पिताओं ने पहले से ही पढ़ा था: 'पिता *और पुत्र दोनों से* उत्पन्न।'[782] लेकिन यह पूरी तरह से निराधार दृष्टिकोण अब असहमत धर्मशास्त्रियों द्वारा भी खंडित किया गया है।[783]

§ 44. प्राचीन परिषदों ने पवित्र आत्मा के प्रवाहन के संबंध में क्या शिक्षा दी।

1) प्रत्येक सार्वभौमिक परिषद, और उनके बाद लगभग सभी स्थानीय परिषदों ने, जब भी इस सिद्धांत को संबोधित करने का अवसर मिला, सर्वसम्मति से केवल पिता से पवित्र आत्मा के प्रवाह की घोषणा की। अर्थात्:

क) प्रथम सार्वभौमिक परिषद में, कैसरिया के बिशप लियोन्टियस ने उपस्थित सभी लोगों की ओर से, एक ऐसे दार्शनिक को, जिसने स्पष्टीकरण माँगा था, निम्नलिखित शब्दों में संबोधित किया: "पिता की एकमात्र ईश्वरत्व को स्वीकार करो, जिन्होंने अवर्णनीय रूप से पुत्र को उत्पन्न किया, और पुत्र की, जो उनसे उत्पन्न हुए, और पवित्र आत्मा की, जो स्वयं पिता से (ἐξ αὐτοῦ τοῦ Πάτρας) और पुत्र के तत्व (ἰδίου δέ ὄντος τοῦ υἱοῦ) से उत्पन्न हुए, जैसा कि दिव्य प्रेरित गवाही देते हैं: *'क्योंकि यदि किसी में मसीह का आत्मा नहीं है, तो वह उसका नहीं है'* (रोमियों 8:9)।"[784] शब्द: 'स्वयं पुत्र के' केवल यह इंगित करते हैं कि, यद्यपि पवित्र आत्मा पुत्र से उत्पन्न नहीं होता है, फिर भी वह उससे अलग नहीं है; वह सार में उसका ही है, उससे एकसार है, जैसा कि संत बेसिल लिखते हैं: 'आत्मा को मसीह का भी कहा जाता है, क्योंकि वह स्वभाव से मसीह के साथ एक है।'[785]

b) दूसरे सार्वभौमिक परिषद में, धर्मपिताओं ने धर्मविश्वास में, अन्य बातों के अलावा, ये शब्द शामिल किए: 'जो पिता से निकलता है, जिसे पिता और पुत्र के साथ मिलकर पूजा और महिमा दी जाती है' — जिसका अर्थ हम पहले ही देख चुके हैं।

(c) तीसरे सार्वभौमिक परिषद में निम्नलिखित नियम पारित किया गया: 'किसी को भी बोलने, लिखने या पवित्र आत्मा के साथ निकिया नगर में एकत्रित पवित्र पिताओं द्वारा परिभाषित धर्मसूत्र के अलावा कोई अन्य धर्मसूत्र रचने की अनुमति नहीं दी जाए।' और जो लोग सत्य के ज्ञान की ओर मुड़ना चाहने वालों के लिए, चाहे वे मूर्तिपूजक हों, यहूदी हों या किसी भी प्रकार के विधर्म से हों, कोई अन्य धर्मसूत्र रचने, प्रस्तुत करने या प्रस्तावित करने की हिम्मत करते हैं: यदि ऐसे व्यक्ति बिशप या पुरोहित वर्ग के सदस्य हैं, तो उन्हें बहिष्कृत किया जाए—बिशपों को बिशप पद से, और पुरोहितों को पुरोहित वर्ग से; लेकिन यदि वे सामान्य विश्वासी हैं, तो उन पर शाप लगाया जाए" (कैनन 7)। यद्यपि यह स्पष्ट रूप से निकेन-कांस्टेंटिनोपल धर्मविश्वास के बजाय निकेन धर्मविश्वास का संदर्भ देता है—जो पवित्र आत्मा के बारे में धर्मसिद्धान्त को अधिक विस्तार से निर्धारित करता है—यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि एफ़िसुस के धर्मपिता दोनों धर्मविश्वासों को एक ही मानते हैं, और इसे निकेन धर्मविश्वास कहते हैं क्योंकि इसे सबसे पहले निकिया में स्थापित किया गया था, जबकि कॉन्स्टेंटिनोपल में इसे केवल पूरक किया गया था; वास्तव में, बाद की पूरी अवधि के दौरान एफ़िसुस परिषद के निर्णय को इसी तरह समझा गया था।[786] परिणामस्वरूप, उपरोक्त नियम ने न केवल

---

[782] उदाहरण के लिए, यह वही रास्ता था जो कार्डिनल जूलियन और उनके साथ अन्य लैटिनों ने फ्लोरेंस की परिषद में अपनाया था (Concil. Florent. sess. V, Vol. IX concil. *Harduini,* p. 66)।

[783] *Curs. Theolog. Compl.* खंड VIII, पृष्ठ 651–652, पेरिस, 1841। यह भी देखें *थियोफ. प्रोकॉपोविच,* *Theol.*, खंड 1, पृष्ठ 1072–1073।

[784] देखें *गेलास। गाज़ियेत्सी* — कमेंटारियस एक्टोरम कॉन्सिलि निकेन. खंड II, अध्याय 20, *लैबेई* काउंसिलि के खंड II, पृ. 207।

[785] उपरोक्त टिप्पणी 771 देखें।

[786] उदाहरण के लिए, यरूशलेम के पैट्रिआर्क सोफ्रोनीयस, ने कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क सेर्जिउस को लिखे अपने पत्र में, जिसे छठे सार्वभौमिक परिषद में पढ़ा गया था, अन्य बातों के अलावा, कहा है: "पाँच धन्य और पवित्र परिषदों के बाद, मैं विश्वास की केवल एक परिभाषा, एक सिद्धांत, *एक धर्म-सूत्र को* स्वीकार करता हूँ, जिसे निकिया में ईश्वर की इच्छा से एकत्रित 318 पवित्र पिताओं की परम पवित्र और धन्य परिषद ने पवित्र आत्मा के माध्यम से घोषित किया, जिसे ईश्वर द्वारा प्रेरित 150 पिताओं की परिषद ने कॉन्स्टेंटिनोपल में व्याख्या किया, और एफिसिस में 200 दैवीय पिताओं की परिषद *ने पुष्टि* (ἐβεβαίωσε) *किया*" (Concil. VI act. 12, apud *Harduin.* Concil. Vol. III, p. 1285). सम्राट जस्टिनियन ने *तीन अध्यायों के* विरुद्ध अपने विश्वास-स्वीकृति-पत्र में इसी प्रकार की बात कही है *(लाब्ब.* कॉंकलि. खंड V, पृ. 702), और कोंस्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क जॉन ने भी 518 में कोंस्टेंटिनोपल की परिषद में पढ़े गए लोगों के नाम अपने संबोधन में ऐसा ही कहा है *(बर्नी,* कांसिल., खंड II, पैरा I, पृ. 732)। अब हम देखेंगे कि एफ़िसुस की परिषद से शुरू होकर, सार्वभौमिक परिषदों ने स्वयं निकेन और कॉन्स्टेंटिनोपोलिटन दोनों धर्मविश्वासों को एक के रूप में स्वीकार किया, और इन दोनों धर्मविश्वासों की एकल इकाई के अखंडता की पुष्टि के लिए, उन्होंने एफ़िसुस के फरमान के शब्दों को लगभग शब्दशः दोहराया। हालांकि, इन सब के बावजूद, यदि पश्चिमी लेखक इस बात पर जोर देते हैं कि एफ़िसुस की परिषद ने केवल नाइस की धर्मप्रणाता को ही स्वीकार किया, न कि नाइस-कॉन्स्टेंटिनोपल की धर्मप्रणाता को *(पेरॉन,* उपरोक्त, पृ. 446), तो हम उनकी

सार्वजनिक उपयोग के लिए नए धर्म-सूत्रों के मसौदे तैयार करने पर रोक लगाई, बल्कि निकेन-कॉन्स्टेंटिनोपल धर्म-सूत्र में किसी भी प्रकार के परिवर्तन पर भी रोक लगाई, चाहे वह किसी चीज़ को हटाकर हो, विकृत करके हो या कुछ जोड़कर (उदाहरण के लिए, 'फिलियोक्वे') हो, और इस धर्मविश्वास को सभी आगामी युगों के लिए एकमात्र, अपरिवर्तनीय सार्वजनिक आस्था मानक के रूप में मान्यता दी गई।[787]

(d) चौथे सार्वभौमिक परिषद, काल्सेडन परिषद में, निकेन और कॉन्स्टेंटिनोपोलिटन दोनों धर्मविश्वासों को पढ़ने के बाद, धर्मपितागण: —

क) ने कहा: 'ईश्वरीय अनुग्रह का यह बुद्धिमानी भरा और उदारकारी धर्म-सूत्र भक्ति की पूर्ण समझ और पुष्टि के लिए पर्याप्त है; क्योंकि यह पूरी तरह से सिखाता है कि पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के बारे में क्या सिखाया जाना चाहिए;'

bb) बाद में यह आदेश दिया: 'कि तीन सौ अठारह पवित्र पिताओं का विश्वास पूर्ण और अटूट बना रहे,' और उस 'सिद्धांत की पुष्टि की जिसे एक सौ पचास पवित्र पिताओं ने, विधर्मीयों के विरुद्ध साम्राज्यीय शहर कॉन्स्टेंटिनोपल में एकत्र होकर, पवित्र आत्मा की प्रकृति के बारे में था और सभी के लिए सार्वजनिक किया गया—इस प्रकार नहीं कि पहले से स्वीकृत (यानी नाइसीन धर्माधार) में कुछ भी कमी थी उसे जोड़ा जाए, बल्कि पवित्रशास्त्र की गवाहियों द्वारा, पवित्र आत्मा की प्रभुता (δεσποτείαν) से इनकार करने वालों के विरुद्ध, पवित्र आत्मा के विषय में अपने विश्वास की व्याख्या करना मात्र था;"

(cc) अंत में, उन्होंने एफ़िसुस परिषद के उपरोक्त (7वें) कैनन को दोहराया, कि किसी को भी एक अलग धर्म-विश्वास तैयार करने या नाइसीन-कॉन्स्टेंटिनोपल धर्म-विश्वास को बदलने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए, अन्यथा उसे कठोर दंड का सामना करना पड़ेगा।[788] इसके अलावा, सम्राट मार्सियन को लिखे अपने धर्मशास्त्रीय पत्र में, उन्हीं पवित्र पिताओं ने अन्य बातों के अलावा लिखा: "कॉन्स्टेंटिनोपल परिषद में विश्वास के रक्षकों ने, सत्य के हथियार का प्रयोग करते हुए, विधर्मियों के प्रयासों को विफल कर दिया, यह साबित करते हुए कि विश्वास की शिक्षा के अनुसार, पवित्र आत्मा प्रभु और परमेश्वर हैं, और यह कि वे पिता से उत्पन्न होते हैं।"[789]

(d) कॉन्स्टेंटिनोपल में आयोजित पाँचवें सार्वभौमिक परिषद में, पितृगण: —

एए) अपनी धर्मशास्त्रीय परिभाषा की शुरुआत में ही, निम्नलिखित शब्द बोले: "हम स्वीकार करते हैं कि हम चार पवित्र परिषदों को स्वीकार करते हैं, अर्थात्, नीकिया, कॉन्स्टेंटिनोपल, एफ़िसस की पहली परिषद और काल्सेडन की परिषदें; हम, जैसा कि उन्होंने घोषणा की थी, वैसे ही एक और वही विश्वास के संबंध में उनकी सभी परिभाषाओं की घोषणा करते हैं; जहाँ तक उन लोगों का सवाल है जो इन्हें स्वीकार नहीं करते, हम उन्हें कैथोलिक चर्च से पराये समझते हैं;"

(bb) ने नाइसिन-कॉन्स्टेंटिनोपल धर्मविश्वास की पूर्ण अपरिवर्तनीयता के संबंध में काल्सेडन परिषद के फरमान को शब्दशःदोहराया;

cc) उन्होंने कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क, यूटिकिस का पोप विजिलियस को लिखा पत्र सुना और अनुमोदित किया, जिसमें निम्नलिखित स्वीकारोक्ति शामिल थी: "हमने हमेशा से उन पिताओं द्वारा प्रकट किए गए विश्वास को

ओर इस बात की ओर इंगित करेंगे कि, निस्संदेह, सार्वजनिक विश्वास के मानक की अखंडता के संबंध में काल्सेडन परिषद और बाद की सार्वभौमिक परिषदों के निर्णय समान महत्व के हैं — और ये निर्णय निर्विवाद रूप से दोनों धर्मविश्वासों को एक साथ संदर्भित करते हैं, निकेन और कॉन्स्टेंटिनोपोलिटन, को एक के रूप में, और यह कि पोप लियो III ने, ठीक इन्हीं सार्वभौमिक परिषदों के फरमानों का पालन करते हुए, किसी भी परिस्थिति में आचेन के दूतों के सभी आग्रह के बावजूद, *निकेन-कॉन्स्टेंटिनोपोलिटन* धर्मविश्वास में 'फिलियोक्वे' का जोड़ करने के लिए सहमति नहीं दी *(*परिषदों के खंड VII में *समाराग्डस*)। *लाबेई,* पृ. 1199)। परिणामस्वरूप, यदि आप एफ़िसुस परिषद के नियम—जो शाब्दिक रूप से केवल *निकेन* धर्मविश्वास का संदर्भ देता है—को गैर-बाध्यकारी मानते हैं, तो फिर आप बाद की सार्वभौमिक परिषदों के आदेशों का पालन क्यों नहीं करते, जो शाब्दिक रूप से *निकेन-कांस्टेंटिनोपोलिटन* धर्मविश्वास में किसी भी परिवर्तन को प्रतिबंधित करती हैं, ठीक वैसे ही जैसे सम्माननीय पोप स्वयं ने किया था?

[787] कि इस नियम को वास्तव में एफ़िसुस परिषद के अध्यक्ष, अलेक्ज़ेंड्रिया के सिरिल स्वयं और अन्य प्राचीन शिक्षकों द्वारा इसी प्रकार समझा गया था, इसका प्रमाण 'एन इंट्रोडक्शन टू ऑर्थोडॉक्स थियोलॉजी', § 143, पृष्ठ 565–570, सेंट पीटर्सबर्ग, 1847 में उनकी स्पष्ट गवाहियों से मिलता है।

[788] *बिनिई,* *कॉन्सलि.* खंड III, पृ. 337 एवं तत्पश्चात, सं. पेरिसि, 1636; *लैबेई,* *कॉन्सलि.* खंड IV, पृ. 567 एवं तत्पश्चात।

[789] *बिनियम,* वही, पृ. 465–472।

संरक्षति कयिा है और संरक्षति करना जारी रखा है जो चार पवत्रि परषिदों में उपस्थति थे, और हम सभी बातों में इन परषिदों का अनुसरण करेंगे।"[790]

(e) छठी सार्वभौमकि परषिद में, जब नाइसन और कॉन्स्टेंटनिोपल की धर्मपरायण मान्यताओं को पढ़ा गया, तो धर्मपतिागण—

aa) ने घोषणा की: 'ईश्वरीय अनुग्रह की यह पवत्रि और ऑर्थोडॉक्स धर्मवश्विास, ऑर्थोडॉक्स धर्म के पूर्ण ज्ञान और पुष्टकि लिए पर्याप्त है,' और एक बार फरि इसकी पूर्ण अखंडता और अपरविर्तनीयता के संबंध में तीन पूर्व सार्वभौमकि परषिदों के नयिम को दोहराया;[791]

bb) ने अपने पहले कैनन में, अन्य बातों के अलावा, यह आदेश दयिा: 'हम अपने सम्राट थयिोडोसयिस महान के शासनकाल के दौरान इस शाही शहर में एकत्रति 150 पवत्रि पतिाओं द्वारा घोषति वश्विास की स्वीकारोक्तकिा भी समर्थन करते हैं, और हम पवत्रि आत्मा के बारे में धर्मशास्त्रीय बयानों को स्वीकार करते हैं;'[792]

cc) उन्होंने ऑर्थोडॉक्स शक्षिण के एक मॉडल के रूप में यरूशलेम के पैट्रआर्क, संत सोफ्रोनीयस के वश्विास की स्वीकारोक्तकिो सुना और अनुमोदति कयिा, जो पवत्रि आत्मा के बारे में लखिते हैं: "मैं वश्विास करता हूँ... और पवत्रि आत्मा में, जो परमेश्वर पति से उत्पन्न होता है, जसिे प्रकाश और परमेश्वर दोनों के रूप में पहचाना जाता है, और वास्तव में पति और पुत्र के समानसार, एक ही सार और एक ही स्वभाव (ὁμοφυλον) का है;"[793]

gg) उन्होंने पोप अगथोन के दो पत्रों को सुना और अनुमोदति कयिा, जनिमें से एक में वे पुष्टकि करते हैं कि रोम की कलीसयिा पाँच सार्वभौमकि परषिदों द्वारा सौंपी गई आस्था पर दृढ़ता से कायम है, और यह सुनश्चिति करने के लिए वशिेष ध्यान रखती है कि क्या स्थापति कयिा गया है वह बनिा कसिी कमी या वृद्धि के अपरविर्तति रहे, और यह कि इसे शब्द और वचिार दोनों में अक्षुण्ण रखा जाए;[794] जबकि दूसरे में वह अन्य बातों के अलावा, इस प्रकार व्यक्त करते हैं: "यह हमारा पूर्ण ज्ञान है: कि हमें अपने मन की पूरी लगन के साथ, कैथोलकि और प्रेरतिकि वश्विास के उन सद्धिांतों (terminos) का पालन करना चाहिए जनि्हें प्रेरतिकि सहिासन ने अब तक हमारे साथ संरक्षति और सखिाया है, और पवत्रि आत्मा में भी वश्विास करना चाहिए, जीवन-दायक प्रभु, जो परमपति से उत्पन्न हुए हैं, और जनि्हें परमपति और पुत्र के साथ मलिकर आराधति और महमिामंडति कयिा जाता है।"[795]

(g) अंत में, सातवें सार्वभौमकि धर्म-सभा में —

क) यरूशलेम के पैट्रआर्क, संत थयिोडोर द कन्फैसर का धर्म-सूत्र (तीसरे सत्र में) पढ़ा गया और सभी ने सर्वसम्मतसिे इसकी पुष्टकि की; और इस धर्म-सूत्र में पवत्रि आत्मा के बारे में कहा गया है: "हम वश्विास करते हैं... और एक पवत्रि आत्मा में, जो अनन्तकाल से (ἀϊδίως) पति से नकिलता है, और जो वास्तव में पति और पुत्र के साथ सह-अनन्त, एकसार और सह-सम्मानति है," और आगे: 'इस पवत्रि परषिद (कॉन्स्टेंटनिोपल) ने, उसी पवत्रि आत्मा द्वारा नरि्देशति और शक्षिति होकर, पवत्रि आत्मा के पति से शाश्वत, पूर्व-शाश्वत प्रवाह को पहचाना है, और यह कि वह पति और पुत्र के साथ सह-तत्त्व, पूजति और महमिामय है।' जब नकिेन-कॉन्स्टेंटनिोपल प्रतीक-श्रद्धा पढ़ी गई, तो परषिद ने उद्घोष कयिा: "हम सभी इस पर वश्विास करते हैं, हम सभी एकमत हैं, और हम सभी सहमतसिे हस्ताक्षर करते हैं... हम सार्वभौमकि चर्च के प्राचीन नरि्णय का पालन करते हैं; हम धर्मपति के नरि्णय का समर्थन करते हैं; और हम उन लोगों पर शाप की घोषणा करते हैं जो सार्वभौमकि चर्च में कुछ जोड़ते या उससे कुछ घटाते हैं।"[796]

जी) स्थानीय परषिदों में, दूर पश्चमि में हुई कुछ का उल्लेख करना ही पर्याप्त है।

---

[790] *लाब्बेई,* *कॉन्सलि.* खंड V, पृ. 455, 544 आदि।

[791] *बनिियिस,* खंड V, पृ. 260, और *लाबेई,* खंड VI, पृ. 1024 और 1028।

[792] एकुमेनकिल और स्थानीय परषिदों तथा पवत्रि पतिाओं के कैनन की पुस्तक, पृ. 62, सेंट पीटर्सबर्ग, 1843.

[793] *लाबेई,* *कॉन्सलि.* खंड VI, पृ. 856.

[794] उपरोक्त, पृ. 633. हम उस वश्विास को संरक्षति करते हैं, जसिकी परभिाषा हमारे पवत्रि और प्रेरति पूर्वजों और पाँच सम्मानति परषिदों द्वारा उचति समय पर की गई है, और जो हमारे धर्मपतिागण द्वारा हृदय की सरलता और बनिा कसिी अस्पष्टता के हमें सौंपा गया है, जो हमेशा एकमात्र और प्रमुख भलाई की कामना और प्रयास करते हैं, कि जो कुछ भी वधिवित परभिाषति कयिा गया है, उसमें कोई कमी न आए, कुछ भी बदला या जोड़ा न जाए, बल्कि वे शब्द और अर्थ दोनों में अपरविर्तति रखे जाएँ।

[795] *Labb.,* ibid., 682 में।

[796] *लाब्ब.* खंड VII, पृ. 176 आदि।

इस प्रकार, पोप दामासस की अध्यक्षता में रोम की परिषद अपने धर्म-विश्वास में कहती है: "यदि कोई यह स्वीकार नहीं करता कि पवित्र आत्मा वास्तव में और उचित रूप से पिता से उत्पन्न होता है, ठीक उसी तरह जैसे पुत्र दिव्य सार से उत्पन्न होता है और परमेश्वर, परमेश्वर का वचन है: तो वह शापित हो," — और आगे: "यदि कोई पिता और पुत्र के संबंध में सही विश्वास रखता है, लेकिन पवित्र आत्मा के संबंध में सही विश्वास नहीं रखता है, तो वह एक विधर्मी है।"[797]

पाँचवीं शताब्दी में, चार सौ अफ्रीकी बिशपों की परिषद ने वैंडेल राजा गुनेरिक, जो एक एरियन था, को प्रस्तुत अपने धर्म-विश्वास में कहा है: "हम विश्वास करते हैं कि पिता, जो अजन्मे हैं, और पुत्र, जो पिता से उत्पन्न हुए हैं, और पवित्र आत्मा, जो पिता से निकलते हैं, एक ही सार, अर्थात् एक ही तत्व के हैं," — और अन्यत्र: "यदि पवित्र आत्मा पिता से निकलता है, यदि वह परखता है, यदि वह प्रभु है और पवित्र करता है, यदि वह पिता और पुत्र के साथ कार्य करता है और जीवन देता है, यदि वह पिता और पुत्र की पूर्वज्ञान में सहभागी है — तो हमें इस बात पर संदेह क्यों करना चाहिए कि वह परमेश्वर है?"[798]

पोप मार्टिन के अधीन 649 में आयोजित लैटरन परिषद के धर्मपिताओं ने, 'फिलियोक्वे' के अतिरिक्त के बिना, निकेन-कॉन्स्टेंटिनोपल धर्मविश्वास के अनुसार अपने विश्वास की गंभीरता से घोषणा की, और फिर कैलसीडोन परिषद की परिभाषा को शाब्दिक रूप से दोहराया, जिसने सार्वजनिक उपयोग में किसी अन्य धर्मविश्वास को लाने की हिम्मत करने वाले किसी भी व्यक्ति पर दंड लगाया।[799]

2) पश्चिमी चर्च पवित्र आत्मा के व्यक्तिगत स्वरूप में अपने विश्वास के समर्थन में किन परिषदों का हवाला देते हैं, या वे दे सकते हैं?...

a) सभी (सात) सार्वभौमिक परिषदों में से, वे केवल एक की ओर इशारा करते हैं: एफिसुस की परिषद, जिसके बारे में उनका दावा है कि इसने स्पष्ट रूप से पवित्र आत्मा के *पुत्र से* उत्पन्न होने की गवाही दी। कैसे?

क) वे कहते हैं कि उन्होंने प्रेस्बिटिर कैरिसीयस द्वारा प्रस्तुत नेस्टोरियन धर्मविश्वास की निंदा की, जिसमें अन्य बातों के अलावा, पवित्र आत्मा के बारे में निम्नलिखित शब्द थे: 'हम उसे पुत्र नहीं कहते, न ही उसे जो पुत्र के माध्यम से उत्पन्न हुआ है।'[800] लेकिन परिषद ने, नेस्टोरियन धर्मविश्वास को अस्वीकार करते हुए, निस्संदेह उसमें निहित सभी बातों को अस्वीकार नहीं किया—क्योंकि यह कई धर्मसिद्धान्तों को पूरी तरह से रूढ़िवादी तरीके से भी प्रस्तुत करता है—बल्कि केवल उसी को अस्वीकार किया जो उसमें नेस्टोरियन था, जैसा कि परिषद के अपने फरमान से स्पष्ट है: "यदि कोई बिशप, या पुरोहित, या सामान्य विश्वासी पादरी चारसियिस द्वारा प्रस्तुत *ईश्वर के एकमात्र पुत्र के अवतार पर* व्याख्या में निहित बातों या घृणित और विकृत *नेस्टोरियन सिद्धांतों का* अनुमान लगाते या शिक्षण करते पाए जाते हैं—तो उन्हें इस पवित्र सार्वभौमिक परिषद के निर्णय के अधीन किया जाए।"[801] तो फिर, किस आधार पर यह

---

[797] *थियोडोरेट,* एच. ई., पुस्तक V, अध्याय II में। "लेकिन कहा जाता है कि पोप दामासस ने यहाँ यह व्यक्त किया कि पवित्र आत्मा पिता से उत्पन्न होता है, यह बिल्कुल भी पुत्र से उसकी उत्पत्ति को खारिज करने के लिए नहीं, बल्कि मैसेडोनियनों के संप्रदाय के विरुद्ध पिता के साथ उसकी दिव्यता की घोषणा करने के लिए (sed ad profitendam ejusdem cum Patre divinitatem) था" *(पेरोन,* उद्धृत ग्रंथ, पृ. 434)जैसे कि अगर दामासुस यह कहते कि पवित्र आत्मा पिता और पुत्र दोनों से उत्पन्न होता है, तो उन्होंने पिता के साथ पवित्र आत्मा की दिव्यता की घोषणा नहीं की होती!.. और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि, जैसा कि हमने पहले ही उल्लेख किया है, मैसेडोनियनों की यह त्रुटि—जिन्होंने दावा किया कि पवित्र आत्मा पुत्र की एक सृष्टि है और परिणामस्वरूप उन्होंने आत्मा के पुत्र से शाश्वत रूप से उत्पन्न होने को अस्वीकार कर दिया—इसके विपरीत, यह अनिवार्य कर देती कि ऑर्थोडॉक्स जानबूझकर 'फिलियोक्वे' को धर्मविश्वास में शामिल करते, यदि वे वास्तव में इस पर विश्वास करते (देखें टिप्पणी 777)।.

[798] *विक्टर ऑफ यूटिका, बिशप,* *परिसंक्यूशन ऑफ द वैंडल्स एट यूटिका*, पुस्तक II, *बिब्लियोथेका पैट्रम कोलोनिएन्सिस* के खंड V, भाग III, पृ. 638 में, और *एंटीडोट अगेंस्ट वेरियस हेरेसीज़*, बेसल 1528 में संपादित, पृ. 221–225 में।

[799] *लाबेई,* *कॉन्सिल.*, खंड VI, पृ. 241 और 248।

[800] .... न ही हम उसे एक पुत्र के रूप में मानते हैं, और न ही उसका अस्तित्व किसी पुत्र के माध्यम से हुआ। *Labbei,* *Concil.*, खंड III, पृ. 677।

[801] एफ़िसुस। परिषद का नियम 7। सामान्यतः यह दावा करना पूरी तरह से गलत है, जैसा कि कुछ पापी (थॉमस एक्विनास और अन्य) करते हैं, कि नेस्टोरियस ने पुत्र से पवित्र आत्मा के प्रवाह को नकारने वाले पहले व्यक्ति थे। नेस्टोरियस का विधर्म वास्तव में ईश्वर-मानव के व्यक्तित्व और विस्तार से ईश्वर की माता के व्यक्तित्व से संबंधित था, और इसे निम्नलिखित प्रकार से संक्षेपित किया जा सकता है: "यीशु मसीह, जो परम पवित्र कुँवारी से जन्मे हैं, केवल एक मनुष्य हैं जिनके साथ परमेश्वर वचन का केवल नैतिक रूप से ही मिलन हुआ; वे केवल परमेश्वर के वाहक हैं, जिन्होंने चमत्कार पवित्र आत्मा की शक्ति से किए, न कि अपनी शक्ति से, बल्कि एक परायी शक्ति के रूप में; और परिणामस्वरूप, परम पवित्र कुँवारी परमेश्वर की माता नहीं, बल्कि मसीह की माता हैं।" यह बात स्वयं नेस्टोरियस के पत्रों से भी अच्छी तरह ज्ञात है, जो तीसरे

दावा कयिा जा सकता है कि परिषद की नंदिा पवत्रि आत्मा के संबंध में क्रीड के उपरोक्त उद्धृत शब्दों तक भी फैली हुई है? नहीं, परिषद इन शब्दों की नंदिा नहीं कर सकती थी, क्योंकि न केवल इनमें कुछ भी वधिर्मी नहीं है, बल्कि इसके वपिरीत, ये स्वयं सबसे भयानक वधिर्म, मैसेडोनयिाई वधिर्म, के वरिुद्ध नरि्देशति हैं, जो यह सखिाता था कि पवत्रि आत्मा ईश्वर की एक सृष्टि है और वशिेष रूप से पुत्र के माध्यम से अस्तत्वि में आया; और जसिके वरिुद्ध, जैसा कि सर्ववदिति है, नेस्टोरयिस ने अपने पतन तक उत्साहपूर्वक अभयिान चलाया। सबूत के तौर पर, आइए हम क्रीड के उन सभी वाक्यांशों का हवाला दें जनिमें ये शब्द आते हैं:

"हम एक ईश्वर, शाश्वत पति, में वश्विास रखते हैं, जो बाद में उत्पन्न नहीं हुए, बल्कि जो सदा से हैं, शाश्वत ईश्वर... हम ईश्वर के एक पुत्र, एकमात्र प्रयि पुत्र, जो पति के अस्तत्वि से वद्यिमान हैं, सच्चे पुत्र और उनसे अभन्नि हैं, जनिसे वे अस्तत्वि में हैं और जन्हिें वश्विास द्वारा पुत्र के रूप में ग्रहण कयिा जाता है (हम वश्विास करते हैं) पवत्रि आत्मा में भी, जो *ईश्वर के अस्तत्वि से हैं, पुत्र के रूप में नहीं,* — जो स्वभाव से परमेश्वर हैं, जनिमें वही स्वभाव है जो परमपति परमेश्वर का है, जनिसे *वे स्वभाव से हैं,* — सृष्टि से भन्नि और परमेश्वर के साथ एकजुट हैं, जनिसे वे एक वशिेष तरीके से स्वभाव से हैं, सभी सृष्टि के वपिरीत, जसिे हम परमेश्वर के समान स्वभाव का नहीं बल्कि सृजति मानते हैं — हम उन्हें नहीं कहते (पवत्रि आत्मा) पुत्र, या पुत्र के माध्यम से उत्पन्न हुए को नहीं कहते, बल्कि हम उसे एक पूर्ण व्यक्ति के रूप में स्वीकार करते हैं, जैसे हम पति को, जैसे हम पुत्र को, और जैसे हम पवत्रि आत्मा को करते हैं।"[802]

तो फरि, कौन यह देखने में वफिल रहता है कि शब्द: 'हम उसे... पुत्र के माध्यम से उत्पन्न हुआ नहीं कहते'— पवत्रि आत्मा के शाश्वत प्रवाह के सद्धिांत से पूरी तरह से अलग हैं, जसिे पहले बताया गया है, और वशिेष रूप से इस धारणा के खलिाफ नरि्देशति हैं कि आत्मा ईश्वर की एक सृष्टि है और पुत्र के माध्यम से उत्पन्न हुई थी? और इसलिए, कौन इन शब्दों को गैर-पारंपरकि मानेगा?

bb) इस तथ्य से कि परिषद ने सेंट सरिलि ऑफ़ अलेक्जेंड्रयिा के शाप-वचनों को मंजूरी दी, जनिमें से नौवें में पवत्रि पति परमेश्वर की आत्मा *को* पुत्र के लिए वशिेष (ἴδιος) बताते हैं, और अपनी व्याख्या में यह उल्लेख करते हैं कि पुत्र, जब वे मनुष्य बने, तब भी अपने पवत्रि आत्मा के स्वामी थे, जो मूल रूप से उनसे और उनमें नविास करते हैं।[803] लेकनि उपर्युक्त शाप-पत्र को पढ़ने और यह वचिार करने के लिए कि यह कसिके वरिुद्ध नरि्देशति है, , यह वश्विास करने के लिए पर्याप्त है कि यहाँ पवत्रि आत्मा के शाश्वत प्रवाह का एक वचिार भी नहीं था। नेस्टोरयिस ने, अपनी वधिर्म से आत्मा की हाइपोस्टैटकि प्रकृति को कसिी भी प्रकार से प्रभावति कयिे बनि,[804] केवल यह कहा कि दविय उद्धारकर्ता, क्रूस पर अपनी मृत्यु से पहले परमेश्वर वचन के साथ एकीकृत न होने के कारण, पवत्रि आत्मा के समभावकि नहीं थे, और इसलिए उन्होंने पवत्रि आत्मा के माध्यम से चमत्कार कयिे जैसे कि वह उनसे बाहरी, उनसे अपरचिति और एक भन्नि सार वाला शक्ति हो।[805] ये उन्हीं वचिारों के वरिुद्ध हैं जनिके खलिाफ संत सरिलि ने नौवें अनाथेमा में हथयिार उठाए, यह दावा करते हुए कि प्रभु ने पवत्रि आत्मा के माध्यम से चमत्कार कयिे, न कि एक बाहरी शक्ति के रूप में, बल्कि अपनी ही शक्ति के रूप में, और कि आत्मा समरूप या *एकरूप है* (ἴδιος) पुत्र के प्रति, अर्थात् उसमें वही दविय *गुण* (ἰδιώματα) और सार है जो उसमें है। यहाँ शाप-वाक्य के शब्द हैं: 'यदि कोई कहे कि एक प्रभु यीशु मसीह आत्मा द्वारा

सार्वभौमकि परिषद के कार्यों के संस्करण से संलग्न है, और इस तथ्य से कि परिषद में, नेस्टोरयिस के पाखंड का खंडन करने के लिए, ईश्वर के वचन और चर्च के पवत्रि पतिाओं के उद्धरणों की एक पूरी शृंखला उद्धृत की गई थी, जनिमें से सभी वशिेष रूप से ईश्वर-मानव में अवतार के रहस्य और दो स्वभावों के हाइपोस्टैटकि संघ से संबंधति हैं *(बनिी,* कॉन्सलि. एफेस. खंड I, पैरा. संख्या 1, अधनियिम 1, पृ. 193 और बाद के पृष्ठ, कोलोनयिा, 1618)। जहाँ तक पवत्रि आत्मा के शाश्वत प्रवाह का प्रश्न है, नेस्टोरयिस ने अपनी मथि्या शकि्षा में इस पर बलि्कुल भी चर्चा नहीं की; और इसलिए न तो एफ़सिुस की परिषद ने और न ही उन व्यक्तगित शकि्षकों में से कसिी ने, जन्हिोंने इस वधिर्मी की त्रुटयिों के वरिुद्ध लखिा, उस पर पवत्रि आत्मा के प्रवाह के बारे में मथि्या शकि्षा देने का आरोप लगाया।

802 *लाबेई,* *कॉन्सलि.* खंड III, पृ. 677.

803 και ιδιον έχων τό εξ αοτου καί ουσιοδως εμπεφωκος αοτω πνευμα αγιον। वही, पृ. 823।

804 ऊपर टपि्पणी 801 देखें।

805 "यीशु केवल परमेश्वर के एकलौते पुत्र की महमिा से परधिानति थे, और उन्होंने आत्मा परमेश्वर की शक्ति से चमत्कार कयिे, अपनी शक्ति से नहीं, बल्कि स्वयं से परे एक शक्ति से" (Epist. *Nestorii* ad Cyrill., apud *Binium,* Concil. Ephes., par. I, Colon. 1618)। या, और भी बेहतर, यहाँ नेस्टोरयिस के उसी शाप-वाक्य के शब्द हैं, जसिके वरिुद्ध संत सरिलि का नौवाँ शाप-वाक्य नरि्देशति है: "यदि कोई यह दावा करे कि सेवक (अर्थात् यीशु मसीह) की प्रतमिा पवत्रि आत्मा के साथ *एकसार है,* बजाय इसके कि उसने पवत्रि आत्मा के मध्यस्थता द्वारा ही परमेश्वर वचन के साथ सहभागति की—जसिके परणिामस्वरूप उसने कभी-कभी लोगों के बीच चमत्कारकि चंगाई की और आत्माओं पर अधकिार रखा: तो वह धकि्कारति हो" (एपud. *लैब.* कॉन्सलि, खंड III, पृ. 424)।

महिमामय होता है, अपनी ही (τή ἰδία) शक्ति का उपयोग करते हुए जैसे कि वह पराया हो (ἀλλότρια) स्वयं के लिए, और उस से अशुद्ध आत्माओं पर विजय प्राप्त करने और मनुष्यों में दिव्य चिन्ह करने की शक्ति प्राप्त करने के बाद—और इसके विपरीत यह नहीं कहता कि आत्मा, जिसके द्वारा वह (प्रभु) दिव्य चिन्ह करता है, उसकी अपनी (ἴδιος) है: तो ऐसा व्यक्ति अनाथेमा हो।"[806]

हालांकि, चूंकि संत सिरिल ने यहां पर्याप्त स्पष्टता और विस्तार से अपनी बात व्यक्त नहीं की, उनके शब्दों ने तुरंत कुछ पूर्वी बिशपों के बीच भ्रम पैदा कर दिया जो उनके प्रति अनुकूल नहीं थे, और आदरणीय थियोडोरेट ने उनकी ओर से लिखा: "यदि (सिरिल) आत्मा को 'पुत्र का अपना' इस अर्थ में कहते हैं कि वह पुत्र के साथ एकसार है और परमपिता से उत्पन्न होता है, तो हम उनसे सहमत हैं और उनके कथन को ईसाई धर्म के अनुकूल मानते हैं; लेकिन यदि—इस अर्थ में कि पवित्र आत्मा का अस्तित्व पुत्र से या पुत्र के माध्यम से है—तो हम इस कथन को धर्मद्रोही और अधर्मी मानकर अस्वीकार करते हैं। क्योंकि हम प्रभु में विश्वास करते हैं, जिन्होंने कहा: *'सत्य का आत्मा, जो पिता से निकलता है*।'"[807] यही वह कारण था जिसने संत सिरिल को अपने विचार को और अधिक स्पष्ट रूप से व्यक्त करने के लिए प्रेरित किया। थियोडोरेट के हमलों के खिलाफ अपनी रक्षा करते हुए, एक बिशप यूपोतियस को लिखे एक पत्र में, पवित्र पिता कहते हैं कि उन्होंने पवित्र आत्मा को 'पुत्र का अपना' इस अर्थ में नहीं कहा था जिसे थियोडोरेट ने निंदा किया था, बल्कि इस अर्थ में कहा था कि "यद्यपि पवित्र आत्मा परमेश्वर पिता से उत्पन्न होता है, उद्धारकर्ता के वचन के अनुसार वह पुत्र से *अपरिचित* नहीं है, क्योंकि पुत्र पिता के साथ सभी वस्तुओं में समान रूप से सहभागी है।"[808] इसी समय, और उसी कारण से, संत सिरिल ने अंतेओक के जॉन और अन्य पूर्वी बिशपों को लिखा, जिसमें उन्होंने अन्य बातों के अलावा कहा: "हम स्वयं को या किसी और को धर्मविश्वास में एक भी वाक्यांश बदलने, या एक भी अक्षर छोड़ने की अनुमति नहीं देते, इस बात को ध्यान में रखते हुए कि जिसने कहा: *'अपने पूर्वजों द्वारा स्थापित प्राचीन सीमा-स्तंभ को मत हटाओ* (नीतिवचन 22:28)। क्योंकि यह वे नहीं थे जिन्होंने कहा, बल्कि स्वयं परमेश्वर पिता की आत्मा थी, जो उनसे उत्पन्न होती है, फिर *भी सार के अनुसार पुत्र से अपरिचित नहीं है*।"[809] इस पत्र को पढ़ने के बाद, धन्य थियोडोरेट और अन्य पूर्वी बिशपों ने सर्वसम्मति से गवाही दी: "सिरिल का यह पत्र सुसमाचारिक मानसिक दृढ़ता से सुसज्जित है, क्योंकि इसमें हमारे प्रभु यीशु मसीह को पूर्णतःपरमेश्वर और पूर्णतःमनुष्य के रूप में स्वीकार किया गया है, और पवित्र आत्मा के बारे में यह नहीं कहा गया है कि उसकी सत्ता पुत्र से या पुत्र के माध्यम से है, बल्कि यह कि वह पिता से निकलता है, और साथ ही पुत्र का भी है। इस पत्र में इस सत्य को पहचानकर, हमने उस की महिमा की है जिसने जीभ-बंधितों को चंगा किया और असंगत ध्वनियों को सुखद सामंजस्य में बदल दिया।"[810] इस प्रकार, संत सिरिल का नौवां शाप-वचन, जिसे पश्चिमी लोग आज भी पुत्र से निकलने वाले पवित्र आत्मा में प्राचीन चर्च के विश्वास के प्रमाण के रूप में उद्धृत करते हैं, इसके विपरीत, यह इस बात का अकाट्य प्रमाण होना चाहिए कि प्राचीन चर्च ने न केवल इस सिद्धांत को स्वीकार नहीं किया बल्कि इसे पूरी तरह से खारिज कर दिया था।[811]

---

[806] अपुड *लैब.* कांसिल. खंड III, पृ. 824.

[807] .... लेकिन यदि उसकी सत्ता पुत्र से या पुत्र के माध्यम से है, तो हम इसे धर्मद्रोहपूर्ण और अधर्मी मानकर खारिज कर देंगे। अपुद *लैब.* कांसिल. खंड III, पृ. 928.

[808] .... लेकिन यह पुत्र के लिए अपरिचित नहीं है.... वही, पृ. 864 और खंड XIII, फ्लोरेंस परिषद के कार्यों में, सत्र XXIII।

[809] .... और यह सार के मामले में पुत्र से भिन्न प्रकृति का नहीं है। Opp. *Cyrilli.* V, भाग II, पृ. 108, पेरिस 1638, और *हार्डुइन.* एफ़ेसस परिषद के कार्यों में, खंड I, पृ. 1706, साथ ही *लैब.* में उद्धृत / परिषद्, खंड XIII, पृ. 103।

[810] .... और पवित्र आत्मा, जिनका अस्तित्व पुत्र से या पुत्र के द्वारा नहीं है, बल्कि जो पिता से निकलते हैं, उन्हें हम पुत्र का अपना कहते हैं। प्रेरितों के काम में देखें फ्लोरेंस का परिषद, अपुड *लैब.* खंड XIII, पृ. 366, और *हार्डुइन.* खंड IX, पृ. 298। थियोडोरेट द्वारा इस पत्र की प्रामाणिकता के संबंध में, थियोडोरेट के कार्यों के पूरक में *गार्नेरियस,* पृ. 93 देखें।

[811] यहाँ प्रस्तुत तर्कों की ताकत से अवगत, पश्चिमी लेखकों ने लंबे समय से अपने लिए इतने प्रतिकूल मामले को अनेक आपत्तियों से अस्पष्ट करने की कोशिश की है, हालांकि, इन सभी का खंडन ऑर्थोडॉक्स सिद्धांत के रक्षकों द्वारा किया गया है (देखें *ज़ोरनिकिव,* *डे प्रोसेस. Sp. S., tract. 1, पृ. 74–81, 89–96, और *Th. Procopovics*, *Theolog.*, पृ. 826–831)। आजकल, वे यह जोड़ते हैं कि धन्य थियोडोरेट ने किसी भी तरह से पुत्र से पवित्र आत्मा के प्रवाह को अस्वीकार नहीं किया, बल्कि उन्होंने संत सिरिल पर केवल इस आधार पर हमला किया कि उन पर मैसेडोनियस और अपोलिनारिस के संप्रदायों का पालन करने का संदेह था, जिन्होंने कथित तौर पर यह सिखाया था कि आत्मा पुत्र से या पुत्र के माध्यम से बनाई गई थी (*पेरोन,* उपरोक्त, पृ. 435)। हालाँकि — क) इस दावे के समर्थन में उद्धृत थियोडोरेट के शब्द इसके विपरीत कहते हैं: थियोडोरेट उस दृष्टिकोण का वर्णन करते हैं जिसे वह अस्वीकार करते हैं—कि पवित्र आत्मा का अस्तित्व पुत्र से या पुत्र के माध्यम से है—केवल मैसेडोनियस की झूठी शिक्षा के समान और केवल अपोलिनारिस की झूठी शिक्षा के विकृत रूप के रूप में, लेकिन किसी भी तरह से उनसे समान

(cc) अंत में, इस तथ्य से कि परिषद ने उस पत्र को मंजूरी दी जो पूरे मिस्र की चर्च की ओर से नेस्टोरियस को लिखा गया था, और जिसमें अन्य बातों के अलावा, निम्नलिखित शब्द थे: "पवित्र आत्मा पुत्र नहीं है, फिर भी वह उससे अपरिचित नहीं है — क्योंकि उसे सत्य का आत्मा कहा जाता है, और मसीह सत्य हैं, और वह उससे, जैसे परमेश्वर पिता से, प्रवाहित होता है।"[812] हालाँकि, 'आत्मा पुत्र से प्रवाहित होता है' इस वाक्यांश का यह अर्थ नहीं है कि वह पुत्र से उत्पन्न होता है, बल्कि इसका तात्पर्य केवल पवित्र आत्मा का पुत्र के माध्यम से विश्वासियों की आत्माओं में अस्थायी रूप से प्रवाहित होना या उनकी सेवा करना है, जैसा कि पवित्र प्रेरित ने भी व्यक्त किया है (तीतुस 3:6)।[813] इसके अलावा, यह ध्यान देने योग्य है कि पत्र के लेखकों ने इस संबंध में पुत्र और पिता के बीच भी अंतर किया है: वे कहते हैं कि आत्मा पुत्र से (παρά) प्रवाहित होती है, ठीक वैसे ही जैसे ईश्वर और पिता से (ἐκ).

b) स्थानीय परिषदों में, सार्वभौमिक चर्च से उनके पृथक्करण से पहले, पश्चिमी चर्च केवल पाँचवीं शताब्दी से स्पेन में आयोजित टोलेडो और अन्य परिषदों की ओर इशारा कर सकते हैं, जिन्होंने यह जोड़ पेश किया: फिलियोक्वे, और 809 में चार्लेमेन के अधीन आयोजित आखेन (या एक्विस्ग्रेन) की परिषद। हालाँकि—

(क) जहाँ तक पहले वालों का संबंध है:

1) यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि परिषदों ने स्वयं इस शब्द को पेश किया था — 'फिलियोक्वे' स्वयं, या क्या इसे बाद में दूसरों द्वारा पेश किया गया था, क्योंकि उन्हीं परिषदों के फरमानों में ऐसे वाक्यांश शामिल हैं जो पुष्टि करते हैं कि पवित्र आत्मा केवल पिता से ही उत्पन्न होता है, और यह कि पिता ही संपूर्ण ईश्वरत्व का एकमात्र स्रोत है,[814] और इसके अलावा यह ज्ञात है कि टॉलेडो की परिषदों के कार्य, वास्तव में, विचाराधीन विषय के संबंध में भ्रष्टाचार से मुक्त नहीं हैं।[815] यदि—

2) यदि हम यह मान लें कि परिषदों ने स्वयं उक्त जोड़ पेश किया, तो यह सटीक रूप से निर्धारित करना असंभव है कि उन्होंने पुत्र से पवित्र आत्मा के प्रस्थान के संदर्भ में 'प्रस्थान' (procedit) शब्द का प्रयोग किस अर्थ में किया, चाहे वह शाश्वत उत्पत्ति के अर्थ में हो, जैसे पिता से, या केवल दुनिया में एक अस्थायी मिशन के अर्थ में; क्योंकि जब, सातवीं शताब्दी में, ग्रीकों ने पश्चिम में कुछ लोगों द्वारा ऐसी नवाचार के बारे में पहली बार सुना, तो उन्होंने इसकी निंदा करना शुरू कर दिया, — संत मैक्सिमिस द कन्फेशर ने, ऑर्थोडॉक्स को आश्वस्त करने के लिए, लिखा कि पश्चिमी लोगों का, पुत्र से पवित्र आत्मा के निकलने की बात करते समय, ठीक उसी का मतलब था उसकी दुनिया में अस्थायी

नहीं: 'iste Apollinaris seminum fructus est, propinquat vero et Macedonii malignae culturae' (एपीएनडी *लैब.* कॉन्सिल. टी. वी, पृ. 506), — जो पूरी तरह से सही है; ख) यदि धन्य थियोडोरेट पुत्र से पवित्र आत्मा के शाश्वत प्रवाह में विश्वास करते थे, उन्होंने संत सिरिल के नौवें अनाथेमा की व्याख्या की मांग नहीं की होती: 'यदि (सिरिल) आत्मा को पुत्र का अपना इस अर्थ में कहते हैं कि वह पुत्र के सह-तत्त्व (consubstantial) है और पिता से उत्पन्न होता है: तो हम उनसे सहमत हैं...; लेकिन यदि—इस अर्थ में कि आत्मा का अस्तित्व पुत्र से या पुत्र के माध्यम से है—तो हम इसे अस्वीकार करते हैं..., लेकिन निश्चित रूप से कहा होता: 'यदि सिरिल आत्मा को पुत्र का अपना उसी अर्थ में कहता है कि वह पुत्र के समतत्त्व है और पिता की भाँति ही पुत्र से भी उत्पन्न होता है, तो....; लेकिन यदि—इस अर्थ में कि आत्मा पुत्र द्वारा या पुत्र के माध्यम से सृजित है—तो...'; ग) अंत में, थियोडोरेट की टिप्पणियों के जवाब में संत सिरिल ने एक बार भी यह क्यों नहीं कहा: 'नहीं, मैं किसी भी तरह से यह नहीं मानता कि पवित्र आत्मा पुत्र से या पुत्र के माध्यम से बनाया गया है, जैसा कि थियोडोरेट मुझ पर संदेह करता है, बल्कि मैं आत्मा को पुत्र का अपना इसलिए कहता हूँ क्योंकि वह पुत्र से ही उत्पन्न होता है'? संत सिरिल की व्याख्या में यह अंतिम बिंदु अत्यंत महत्व का होता यदि उन्होंने इसे अपनाया होता — फिर भी उन्होंने इसका उपयोग नहीं किया, और केवल इतना कहा: "मैं आत्मा को 'पुत्र के लिए विशेष' कहता हूँ क्योंकि, यद्यपि वह पिता से उत्पन्न होता है, वह सार के मामले में पुत्र से अपरिचित नहीं है।"

812 .... उससे उत्पन्न होता है, ठीक वैसे ही जैसे वह परमेश्वर पिता से उत्पन्न होता है। *Labbei,* *Concil.* खंड III, पृ. 406.

813 उसने (पवित्र आत्मा ने) यीशु मसीह के द्वारा हम पर प्रचुर मात्रा में उंडेल दिया.... तदनुसार, नेस्टोरियस को लिखे गए उपरोक्त परिषद के पत्र में, पुत्र से पवित्र आत्मा के प्रवाह को दर्शाने के लिए लगभग वही क्रिया (προ-χέω) का उपयोग किया गया है, जो प्रेरित (ἐκ-χέω) द्वारा उपयोग की गई क्रिया, या उससे पूरी तरह से व्युत्पन्न क्रिया है।

814 इस प्रकार, 638 के टोलेडो परिषद के धर्म-सूत्र में, अन्य बातों के अलावा, यह कहा गया है: 'हम विश्वास करते हैं पिता में, जो उत्पन्न हुए, निर्मित नहीं, सभी दिव्यता के स्रोत और मूल' *(हार्ड्युइन्नी,* कॉन्सिल., खंड III, पृ. 602, और *लैबेई,* खंड V, पृ. 1741); और 675 में टोलेडो परिषद के धर्म-सूत्र में, इसे और भी अधिक जोर देकर कहा गया है: 'हम पिता को नॉन जेनिटम, नॉन क्रेएटम, सेड इंजेनिटम के रूप में स्वीकार करते हैं: क्योंकि उनकी उत्पत्ति स्वयं किसी से नहीं होती, जिससे पुत्र ने अपना जन्म प्राप्त किया और पवित्र आत्मा ने अपनी प्रवाहिता।' इसलिए वह संपूर्ण दिव्यता का स्वयं स्रोत और मूल हैं (उपरोक्त, *हार्ड्विनी,* पृ. 1018, और *लैब,* खंड VI, पृ. 541)।

815 देखें *ज़ोमकिॅव.*, *डे प्रोसेस. स्पिरि. एस.*, ट्रैक्ट. III, पृ. 288–289।

मशिन, और वे कसिी भी तरह से पुत्र को आत्मा का कारण नहीं कह रहे थे,[816] जैसा कि मैक्समिस की इस व्याख्या की बाद में पश्चमिी लेखकों में से एक, अनास्तासयिस द लाइब्रेरयिन द्वारा पुष्टि की गई थी।[817] हालाँकि, यदि —

3) यदि उस समय कुछ स्पेनशि परषिदों ने पुत्र से, साथ ही पति से, पवत्रि आत्मा की शाश्वत उत्पत्ति को पहले ही स्वीकार कर लयिा था, तो इसका केवल यही नष्किर्ष नकिलता कि यह त्रुटि अन्य पश्चमिी देशों की तुलना में स्पेन के कुछ हस्सिों में पहले उत्पन्न हुई थी, और ऐसे छोटे स्थानीय परषिदों की आवाज़ पूरे चर्च की आवाज़ के सामने कोई महत्व नहीं रखती, जो उस समय—न केवल पूर्व में बल्कि पश्चमि में भी—यह मानती थी कि पवत्रि आत्मा केवल पति से ही उत्पन्न होता है।

बीबी) हालाँकि, आचेन का परषिद, यदि परस्थितियिों पर वचिार कयिा जाए, तो इसके वपिरीत, इस बात का अकाट्य प्रमाण है कि नौवीं शताब्दी तक स्वयं पश्चमि में पुत्र से पवत्रि आत्मा के प्रवाहन को बलि्कुल भी मान्यता नहीं दी गई थी, और उस समय भी इसे एक नवीनता माना जाता था। क्योंकि —

1) प्रश्न उठता है: परषिद कसि वषिय पर चर्चा कर रही थी? आधुनकि लेखक उत्तर देते हैं, पवत्रि आत्मा की उत्पत्ति पर, और वशिेष रूप से इस पर कि क्या वह पुत्र से उसी तरह उत्पन्न होता है जैसे वह पति से होता है। यह चर्चा कसि अवसर पर हुई? क्योंकि यरूशलेम का एक नश्चिति भक्षिु, जॉन, पहला व्यक्ति था जसिने यह प्रश्न उठाया था।[818] लेकनि यदि, जैसा कि पश्चमिी ईसाई अब दावा करते हैं, चर्च ने आरंभ से ही और सदयिों से नस्संदेह पुत्र से पवत्रि आत्मा की शाश्वत उत्पत्ति की घोषणा की है, तो क्या यह उचति था कि गाउल में पादरयिों की एक पूरी परषिद बुलाई जाए और चर्च के नर्विवािद सद्धिांत की पुनःजांच की जाए, केवल यरूशलेम के कसिी अज्ञात भक्षिु द्वारा उठाए गए प्रश्न के कारण? यह स्पष्ट संकेत था कि इस प्रश्न ने पश्चमि में ही वभिन्नि व्याख्याओं को जन्म दयिा था, कि कुछ ने इसे एक तरह से सुलझाया जबकि अन्य ने दूसरी तरह से, और परणिामस्वरूप, पुत्र से पवत्रि आत्मा के प्रवाह के संबंध में पश्चमि में चर्च की कोई नर्णिायक शक्षिा अभी तक नहीं थी।

2) परषिद में घटनाएँ कैसे घटीं, और इसका अंत कैसे हुआ? परषिद के कार्यवृत्त संरक्षति नहीं हैं; लेकनि इतहिासकारों के संक्षप्ति ववरिणों से यह नष्किर्ष नकिाला जा सकता है कि परषिद में तीखी बहस हुई, कि विवाद करने वाली कोई भी पार्टी दूसरी के सामने झुकने को तैयार नहीं थी, और इस कारण से कोई अंतमि नर्णिय नहीं लयिा गया[819] — यह इस बात का और सबूत है कि उस समय पश्चमि में भी, पुत्र से पवत्रि आत्मा के प्रवाहन को अभी तक वश्विास के एक सद्धिांत (डॉगमा) के रूप में मान्यता नहीं मलिी थी!

3) परषिद के समापन पर, सम्राट चार्लेमेन, जन्हिोंने इसकी अध्यक्षता की थी और यह मानना था कि पवत्रि आत्मा पुत्र से उत्पन्न होता है, ने इस नए झूठे सद्धिांत की पुष्टि माँगने के लएि पोप लयिो तृतीय को दूत और एक पत्र भेजा। इस पत्र में, जसिे दूतों ने परषिद की ओर से पोप के समक्ष पढ़कर सुनाया, अन्य बातों के अलावा यह कहा गया है: 'पवत्रि आत्मा की उत्पत्ति के संबंध में *हाल ही में* उत्पन्न (nuper exorta) प्रश्न पर चर्च के पवत्रि पतिाओं द्वारा लंबे समय से अत्यंत ध्यान से वचिार कयिा गया है। लेकनि चूंकि वद्विानों द्वारा इसे लंबे समय तक अनदेखा कयिा गया था, यह सुप्त नहीं रहा, जैसे कि इसे प्राचीन काल में ही वचिार कयिा गया हो, बल्कि ऐसा लगता है कि यह केवल इन वर्तमान दनिों में ही अंधकार से अचानक हमारे सामने उभरा है"..., और आगे: "चूंकि यह प्रश्न वद्विानों द्वारा लंबे समय से अनसुलझा

---

[816] ऊपर टप्पिणी 701 देखें।

[817] ऊपर टप्पिणी 702 देखें।

[818] *एमोनीयस,* *डे गेस्ट. फ्रैंकोरम*, पुस्तक IV, अध्याय 97: "आर्डेन्स का सम्राट, नवंबर महीने में आचेन लौटकर, पवत्रि आत्मा की उत्पत्ति पर एक परषिद आयोजति की, यह एक प्रश्न था जसिे पहली बार यरूशलेम में जॉन नामक एक संन्यासी ने उठाया था" (पृ. 232, पेरसि 1602); *आडो,* अपने 809 वर्ष के वृत्तांत में: "इस धर्मसभा में, पवत्रि आत्मा की उत्पत्ति के प्रश्न पर चर्चा हुई, अर्थात् क्या, जैसे पवत्रि आत्मा पति से उत्पन्न होता है, वैसे ही वह पुत्र से भी उत्पन्न होता है। यह प्रश्न यरूशलेम के जॉन नामक एक भक्षिु ने उठाया था।" इसे 741 से 814 तक के फ्रैंकशि क्रॉनकिल्स के संकलक (पृ. 46, *Hist. Francor. Script.*, खंड II, पेरसि 1636), चार्लेमेन के जीवनीकार (उसी में, पृ. 64), एक अन्य ऐसे जीवनीकार द्वारा लगभग शब्दशःदोहराया गया है (उसी में, पृ. 84), एहगिार्ड (उसी में, पृ. 225), फुल्डा क्रॉनकिल्स (उसी में, पृ. 541), 741 से 882 तक के फ्रैंकशि क्रॉनकिल्स के लेखक (उसी में, खंड III, पृ. 169) और अन्य।

[819] यह अनुमान लगाया जा सकता है: (क) उपर्युक्त ऐमयिोनयिस के शब्दों से, कि, यद्यपि परषिद में बहुत चर्चा हुई, 'nec aliquid tamen definitum est, propter rerum, ut videbatur, magnitudinem' *(ऐमयिोनयिस,* loc. cit.), और — ख) आंशकि रूप से ऑगएिन के भक्षिु जर्मनस के शब्दों से, जो उसने अपनी 809 वर्ष की वंशावली में लखि हैं: 'पवत्रि आत्मा की प्रक्रयिा से संबंधति प्रश्न, जसि पर परषिद में चर्चा हुई, *की जांच की गई है* (बब्लियिोथेका पैट्रम कोलोनएिन्सयिम के खंड XI, पृ. 295 में)।

रहा है, सर्वशक्तिमान ईश्वर ने चरवाहों के हृदयों को इसकी ओर मोड़ने की इच्छा की है, ताकि जब उपेक्षा का समय समाप्त हो जाए, तो वे पवित्र जांच के माध्यम से दिव्य खजाने को उजागर करने का संकल्प ले सकें।"[820] इससे यह स्पष्ट है:

a) कि चर्च के भीतर कोई स्थापित विश्वास नहीं था कि पवित्र आत्मा पुत्र से उत्पन्न होता है: क्योंकि इस प्रश्न को, दूतों के अनुसार, लंबे समय से उपेक्षित कर दिया गया था;

b) कि पुत्र से पवित्र आत्मा के निकलने का सिद्धांत कोई ऐसा धर्मशास्त्रीय सिद्धांत नहीं था जिस पर सभी ईसाइयों का विश्वास करना अनिवार्य हो, बल्कि यह प्राचीन काल से निजी राय का विषय रहा था, एक ऐसा प्रश्न जिससे केवल विद्वान ही संबंधित थे; और —

ग) अंत में, यह कि निजी विद्वानों के बीच भी, नौवीं शताब्दी की शुरुआत से पहले, या आचेन की परिषद से पहले, यह प्रश्न अभी तक हल नहीं हुआ था (जैसेबट इंडिसिकसा)।

४) दूतों का भाषण सुनने के बाद, जिसमें उन्होंने धर्मग्रंथों के (गलत व्याख्या किए गए) अंशों और धर्मपितामहों की गवाहियों (जिनमें से कुछ को तोड़ा-मरोड़ा गया था, और अन्य का गलत उद्धरण दिया गया था) का उपयोग करके अपना तर्क साबित करने का प्रयास किया,[821] पोप कथित तौर पर इस बात से सहमत हो गए कि पवित्र आत्मा पुत्र से भी निकलता है, और उन्होंने दूसरों को भी इस पर विश्वास करने का आदेश दिया, लेकिन उन्होंने दृढ़ता से इस सिद्धांत को धर्म-सत्य में शामिल करने का विरोध किया — इतना कि उन्होंने 'फिलियोक्वे' के बिना, दो चांदी की पट्टियों पर निकेन-कॉन्स्टेंटिनोपल धर्म-सत्य को अंकित करने और रोम में सेंट पीटर्स बेसिलिका में रखने का आदेश भी दिया, इस शिलालेख के साथ: 'मैं, लियो, ने इसे ऑर्थोडॉक्स विश्वास और उसके संरक्षण के लिए प्रेम से स्थापित किया है।'[822] लेकिन —

a) यदि पुत्र से पवित्र आत्मा का प्रवाह अनादि काल से चर्च का एक धर्मसिद्धान्त रहा होता, तो स्वयं पोप के समक्ष धर्मग्रंथों और चर्च के पिता-पुरुषों से इस धर्मसिद्धान्त को सिद्ध करना अभी भी क्यों आवश्यक था, और पोप को यह आदेश क्यों देना पड़ा कि अन्य लोग अब से इसी प्रकार विश्वास करें?[823] पोप —

b) ने इन शब्दों के साथ अपनी सहमति व्यक्त की: 'मैं ऐसा ही सोचता हूँ, मैं ऐसा ही मानता हूँ, इन लेखकों और पवित्र शास्त्र की गवाहियों के साथ';[824] लेकिन चर्च पिताओं के उद्धरणों को तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत किया गया, और शास्त्रीय ग्रंथों की व्याख्या गलत की गई; परिणामस्वरूप, पोप या तो धोखा खा गए या स्वयं धोखे में रहे। पोप —

c) ने यह आदेश दिया कि पवित्र आत्मा की प्रवाहन में विश्वास केवल उन्हीं के लिए आरक्षित हो जो इस इतने ऊँचे रहस्य की समझ तक पहुँचने में सक्षम हों[825] — यह किस प्रकार का सिद्धांत है, जब हर किसी के लिए इसे स्वीकार करना अनिवार्य नहीं है? और अपनी सहमति व्यक्त करने के बाद, पोप —

d) ने हालांकि दूतों से कहा कि परम पवित्र त्रिमूर्ति का रहस्य मानव मन की पहुँच से परे है, कि सार्वभौमिक परिषदों के पिता, जिन्होंने धर्मविश्वास में *'और पुत्र से'* शामिल नहीं किया — और जिन्होंने यह निर्णय किया: 'इस धर्मविश्वास में कोई भी कुछ जोड़ या परिवर्तन नहीं कर सकता'—वे हमसे अधिक बुद्धिमान नहीं थे, और वे मानव बुद्धि

---

[820] *लाबेई,* *कॉन्सिल.*, खंड VII, पृ. 1199.

[821] इसे भाषण को स्वयं पढ़कर और उसमें उद्धृत साक्ष्यों की तुलना स्रोतों से करके आसानी से सत्यापित किया जा सकता है। देखें *लैब.* कांसिल. VII, पृ. 1199 और बाद के पृष्ठ; तुलना करें *ज़ोरनकिव.* डी प्रोसेस. स्पिरि. एस. पृ. 304–308 और 373 और बाद के पृष्ठ, उद्धृत संस्करण।

[822] ऊपर टिप्पणी 709 देखें।

[823] राजदूतों के साथ अपनी बातचीत के समापन पर, कहा जाता है कि लियो तृतीय ने टिप्पणी की: 'sic fiat..., ut quod iam nunc a quibusque prius nescientibus recte creditur, credatur.' *लैबेई,* खंड VII, पृ. 194–198।

[824] यह मेरा दृष्टिकोण है, और मैं इसे इन लेखकों तथा पवित्र शास्त्रों के प्राधिकरणों के अनुसार बनाए रखता हूँ। वही।

[825] जो कोई भी इसे अधिक सूक्ष्म अर्थ में समझने में सक्षम है, और इसे जानने के बाद भी विश्वास करने से इनकार करता है—वह उद्धार नहीं पा सकता। क्योंकि पवित्र विश्वास के कई उच्च रहस्य हैं, जिनमें से यह केवल एक है; कई लोग इनकी जांच करने में सक्षम हैं, जबकि अन्य कई… सक्षम नहीं हैं। और इसलिए, जैसा कि हमने कहा है, *जिसने भी इसे समझ लिया है और फिर भी विश्वास करने से इनकार करता है,* वह उद्धार नहीं पा सकता। और इसके अलावा: यह निश्चित रूप से एक अच्छी बात है, वास्तव में एक बहुत बड़ी भलाई है—विश्वास का एक महान संस्कार, जिस पर *विश्वास करने में कोई भी विफल नहीं होना चाहिए*—जिसके समझने में *कोई भी सक्षम है*। Ibid.

से कम, दिव्य बुद्धि से अधिक निर्देशित थे।[826] और यही कारण है कि उन्होंने स्वयं, सभी दूतों के आग्रह के बावजूद, धर्मविश्वास में कोई जोड़ करने से इनकार कर दिया।

क्या अब भी यह आवश्यक है कि हम प्राचीन धर्मसूत्रों और परिषदों की हमारी समीक्षा से निकलने वाले सामान्य निष्कर्ष को शब्दों में व्यक्त करें? आइए हम चर्च के व्यक्तिगत शिक्षकों की ओर मुड़ें।

§45. पवित्र आत्मा के प्रवाहन के प्रश्न की परीक्षा, पवित्र पिताओं और चर्च के शिक्षकों की गवाहियों के आधार पर।

(क) पवित्र आत्मा केवल पिता से ही उत्पन्न होने के सिद्धांत के समर्थन में पवित्र पिताओं और चर्च के शिक्षकों की रचनाओं से प्राप्त साक्ष्यों को कैसे देखा जाना चाहिए?

ये गवाहियाँ अत्यंत संख्या में और विविध हैं,[827] , और हर कोण से उस सत्य की पुष्टि करके, वे इसे संदेह से परे कर देती हैं।

1) इनमें से कुछ गवाहियाँ, पवित्र आत्मा के पिता से ही उत्पन्न होने का उल्लेख करते हुए, पुत्र का कहीं भी उल्लेख नहीं करतीं। इस प्रकार—

पूर्वी पितृगणों में—

(a) *संत बेसिल द ग्रेट* कहते हैं: "जिस प्रकार सृजनहार वचन ने स्वर्गों की स्थापना की, उसी प्रकार आत्मा, जो ईश्वर से है, जो पिता से निकलता है (अर्थात् उनके मुख से, कहीं आप उन्हें कोई बाहरी और सृजित वस्तु न समझें, बल्कि उन्हें ईश्वर से अपनी ही हाइपोस्टेसिस वाला मानकर महिमामय करें), ने स्वयं में से उन सभी शक्तियों को उत्पन्न किया जो उसमें हैं;"[828]

ख) *संत ग्रेगरी द थियोलोजियन:* "आत्मा वास्तव में पवित्र आत्मा है, जो पिता से निकलता है, लेकिन पुत्र के रूप में नहीं (οὐχ' ὑϊκώς), क्योंकि वह जन्म (γεννητώς) द्वारा नहीं बल्कि प्रवाह (ἐκπορευτώς) द्वारा निकलता है, यदि स्पष्टता के लिए एक नया शब्द उपयोग करना आवश्यक हो;"[829]

ग) *संत जॉन क्रिसोस्टोम:* "मैकेडोनियस के अनुयायियों ने यह मानने से इनकार कर दिया कि पवित्र आत्मा, जो पिता से एक अवर्णनीय तरीके से उत्पन्न होता है, ईश्वर है;"[830]

d) संत *एफ्रेम सीरियाई:* "पवित्र आत्मा उत्पन्न नहीं हुआ है, बल्कि परमपिता की सार (ἐκ τής οὐσίας) से उत्पन्न होता है, जो पूर्ण और विशिष्ट है—क्योंकि वह न तो परमपिता है और न ही पुत्र, बल्कि पवित्र आत्मा है, जिसमें भलाई की पूर्णता है, और वह उस एक की दिव्यता की गवाही देता है जिससे वह उत्पन्न होता है;"[831]

ई) *संत एपिफेनियस:* "यद्यपि कई आत्माएँ हैं, यह आत्मा सभी आत्माओं से ऊपर है, क्योंकि यह अनंत काल से पिता से विद्यमान है, और शून्य से सृजित किसी प्राणी से नहीं...; पुत्र और पवित्र आत्मा एक ही दिव्यता के हैं..., पुत्र पिता से जन्म लिया है, और पवित्र आत्मा पिता से उत्पन्न होता है;"[832]

f) *अलेक्जेंड्रिया के संत सिरिल:* "हम पवित्र आत्मा में भी विश्वास करते हैं, जो सच्चा, सर्वोच्च, अच्छा, सांत्वना देने वाला है, जो पिता से उत्पन्न होता है, अजन्मा है, क्योंकि वह एकमात्र जनित है, और अविनाशी है, क्योंकि पवित्र धर्मग्रंथ में कहीं भी हमें यह नहीं मिलता कि उसे सृजित प्राणियों में गिना गया हो; इसके विपरीत, उसे पिता और पुत्र के

---

[826] ...वे मानव ज्ञान से नहीं बल्कि दैवीय ज्ञान से प्रबुद्ध थे...; मैं यह कहने की हिम्मत नहीं करता कि इसका मतलब यह था कि वे इसे हमसे कम समझते थे। वही। यहाँ प्रस्तुत पूरे तर्क और उनके खंडन के लिए, ज़्नकिव, पृ. 393-398 देखें।

[827] उदाहरण के लिए, यह ज्ञात है कि एडम ज़ोर्नकिव ने अपनी प्रसिद्ध कृति में, पहले दस शताब्दियों के 57 पूर्वी लेखकों और पहले आठ शताब्दियों के 45 पश्चिमी लेखकों से *लगभग एक हज़ार* ऐसी गवाहियाँ उद्धृत कीं, यद्यपि उसने भी इस विषय को पूरी तरह से समाप्त नहीं किया, क्योंकि उसने कुछ प्राचीन लेखों, विशेष रूप से उन लेखों का उपयोग नहीं किया जो उसकी मृत्यु के बाद प्रकाशित हुए थे। वी. *ज़ोर्नकिव.* *डे प्रोसेस. स्पिरि. एस.* ट्रैक्ट. I, IV, V, VIII–XIII.

[828] उपरोक्त टिप्पणी 742 देखें।

[829] प्रवचन 39 — प्रभु के प्रकट होने के पवित्र दिनों पर, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, III, 262 में।

[830] होमलि. इन भजन संहिता. CXV, खंड I, पृ. 977, पेरिस, 1588.

[831] सेरमो डी कॉन्फैस, एट सुई इप्सियस रेप्रेहेंस. खंड III, पृ. 104. रोम, 1589.

[832] हेरेस. LXXIV, ओप. *एरफिन.* खंड 1, पृ. 900–901, सं. 1822। 'पुत्र और पवित्र आत्मा एक ही दिव्यता के हैं... हालाँकि, पुत्र पिता से उत्पन्न हुआ है, और आत्मा पिता से निकलता है।'

समकक्ष रखा गया है। हम जानते हैं कि वह पिता से उत्पन्न होते हैं, लेकिन हम यह जानने की कोशिश नहीं करते कि वह कैसे उत्पन्न होते हैं, और हम धर्मशास्त्रियों और धन्य लोगों द्वारा हमारे लिए निर्धारित सीमाओं के भीतर रहते हैं।"[833]

पश्चिमी परंपरा से —

क) *संत एम्ब्रोज़:* "यदि आप पिता का नाम लेते हैं, तो आप उसी समय उनके पुत्र और उनके मुख के आत्मा का भी नाम लेंगे, बशर्ते आप इसे अपने हृदय में धारण करें; और यदि आप आत्मा का नाम लेते हैं, तो आप परमेश्वर पिता का भी नाम लेंगे, जिनसे आत्मा निकलता है, और पुत्र का भी, क्योंकि वह आत्मा और पुत्र है;"[834]

ख) *हिलारी:* "आश्वासनदाता आएँगे, और पुत्र उन्हें पिता से भेजेंगे; वह सत्य का आत्मा है जो पिता से उत्पन्न होता है...; और पुत्र पिता से उस सत्य के आत्मा को भेजेंगे जो पिता से उत्पन्न होता है;"[835]

ग) *धन्य ऑगस्टीन:* "वे (एरियन) कहते हैं कि पुत्र पिता से उत्पन्न हुआ है, और पवित्र आत्मा पुत्र द्वारा बनाया गया है, लेकिन उन्हें पवित्र धर्मग्रंथ में ऐसा कुछ भी नहीं मिलेगा, क्योंकि पुत्र ने स्वयं कहा कि पवित्र आत्मा पिता से निकलता है...; यह सच है कि पिता ने सभी चीजों को अस्तित्व दिया, और उन्होंने स्वयं किसी से कुछ भी प्राप्त नहीं किया—लेकिन उन्होंने पुत्र, जो उनसे जन्मे हैं, और पवित्र आत्मा, जो उनसे उत्पन्न होते हैं, के अलावा किसी को भी अपने समानता का दर्जा नहीं दिया;"[836]

(घ) रोमन चर्च के डीकन *पास्कासियस* (5वीं शताब्दी): "यदि यह आत्मा पिता से न होता, और, स्वाभाविक रूप से पिता में रहते हुए, उसमें न बसता, तो वह परमेश्वर से उत्पन्न नहीं हो सकता था; लेकिन आप पूछते हैं: क्या आत्मा हमेशा पिता से उत्पन्न होता है? वह हमेशा पिता के साथ है, और हमेशा उनसे अनवरत रूप से निकलता है, ठीक वैसे ही जैसे आग से गर्मी निकलती है लेकिन उससे अलग नहीं होती;"[837]

(e) *गेमस, हाल्बर्स्टैड के बिशप* (9वीं शताब्दी): "पवित्र आत्मा को सत्य का आत्मा कहा जाता है क्योंकि वह सत्य के पिता से निकलता है;"[838]

f) *राबानस मॉरस* (9वीं शताब्दी): "आत्मा अपनी इच्छा से नहीं बोलेगा, शायद इसलिए कि वह अपने आप में मौजूद नहीं है, बल्कि वह पिता से उत्पन्न होता है—क्योंकि पुत्र पिता से जन्म लिया है, और पवित्र आत्मा पिता से उत्पन्न होता है; वह अपनी इच्छा से नहीं बोलेगा, क्योंकि वह अपने आप से अस्तित्व में नहीं है — क्योंकि केवल पिता किसी अन्य से नहीं हैं, लेकिन पुत्र पिता से उत्पन्न हुए हैं, और पवित्र आत्मा पिता से निकलते हैं... पवित्र आत्मा पिता से प्राप्त होते हैं, क्योंकि वह पिता से निकलते हैं, जिनसे पुत्र भी उत्पन्न हुए हैं।"[839]

लेकिन इस पर बस इतना ही। अलग राय रखने वाले भी इस बात से सहमत हैं कि कलीसिया के प्राचीन शिक्षकों में ऐसी बहुत सारी गवाहियाँ हैं जो पवित्र आत्मा के पिता से निकलने का उल्लेख करती हैं; वे केवल इतना कहते हैं कि ये गवाहियाँ कुछ भी साबित नहीं करतीं: क्योंकि यह कहना कि पवित्र आत्मा पिता से उत्पन्न होता है, का अर्थ यह नहीं है कि वह केवल पिता से ही उत्पन्न होता है, और परिणामस्वरूप इसका अर्थ यह नहीं है कि वह पुत्र से भी उत्पन्न होने से इनकार किया जाता है।'[840] लेकिन—

क) प्राचीन शिक्षकों ने आमतौर पर पुत्र के बारे में भी बात की, यह कहते हुए कि वह पिता से उत्पन्न हुआ है, बिना *'केवल पिता से'* शब्द जोड़े—क्या वास्तव में इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि उन्होंने पवित्र आत्मा द्वारा पुत्र के उत्पन्न होने को भी अस्वीकार नहीं किया था?... यदि, वास्तव में, —

(b) यदि प्राचीन पादरियों का विश्वास था कि पवित्र आत्मा पुत्र से भी उत्पन्न होती है, तो वे बार-बार आत्मा को केवल पिता से उत्पन्न क्यों कहते हैं, पुत्र का उल्लेख किए बिना? यदि—

---

[833] पवित्र त्रिमूर्ति पर, अध्याय 19, क्रि. ख्रि. 1847, III, पृ. 39.

[834] पवित्र आत्मा पर, पुस्तक 1, अध्याय 3, संख्या 44, *पैट्रोलॉजिया कर्सस कम्प्लेटस*, खंड XVI, पृ. 715, पेरिस, 1845 में।

[835] De Trinit. पुस्तक VIII, संख्या 19, Patrologia Cursus Completus, खंड X, पृ. 250, उद्धृत संस्करण में।

[836] *Contra Sermon. Arian.*, अध्याय 21 और 29, *Patrolog. curs. compl.*, खंड XLI, पृष्ठ 698 और 703 में।

[837] पवित्र आत्मा पर, पुस्तक 1, अध्याय 10, *बिब्लि. पैट्रम*, खंड IX, पृ. 188, सं. डी ला बिगिने, पेरिस, 1644 में।

[838] *हैमो, हाल्बर्स्टैड के बिशप* — ईस्टर के बाद चौथे रविवार के लिए ग्रीष्मकालीन उपदेश, पृ. 125, कोलोन, 1535.

[839] *राबाणुस मॉरस* — होमीली 105, *Opp.*, खंड V, पृ. 653, कोलोन, 1626 में संपादित। और अन्यत्र: 'पिता दिव्यता का स्रोत हैं, क्योंकि जैसे पुत्र पिता से उत्पन्न हुए हैं, वैसे ही पवित्र आत्मा भी पिता से ही उत्पन्न होते हैं' (इक्लेसियास्टिकिस में, पुस्तक VI, अध्याय 2, खंड III, पृ. 456)।

[840] उपरोक्त टिप्पणी 745 देखें।

c) अब, जब पश्चिमी चर्च पवित्र आत्मा के पुत्र से निकलने में विश्वास रखती है, यदि उसके किसी सदस्य ने अपनी रचनाओं में यह दोहराना शुरू कर दिया कि पवित्र आत्मा पिता से निकलता है, जबकि पुत्र के बारे में मौन बना रहा, तो ऐसे लेखक के बारे में क्या कहा जाएगा? क्या उनके विश्वास को संदेह की दृष्टि से नहीं देखा जाता या यहां तक कि निंदा नहीं की जाती? तो फिर, प्राचीन ऑर्थोडॉक्स शिक्षकों को अपने समकालीनों और साथी विश्वासियों से इस पर थोड़ी भी आलोचना क्यों नहीं झेलनी पड़ी? मान लीजिए—

(d) अंत में, कि पश्चिमी लेखकों में से दो जिनका हमने उल्लेख किया है, गेमस और राबानस मॉरस, नौवीं शताब्दी में पहले से ही जीवित थे, जब 'पुत्र से' पवित्र आत्मा के प्रवाहन के प्रश्न को आचेन की परिषद में और बाद में स्वयं पोप द्वारा जानबूझकर परखा गया था — और फिर भी उन्होंने केवल 'पिता से' पवित्र आत्मा के प्रवाहन का उपदेश दिया, और पुत्र का कहीं भी उल्लेख नहीं किया: इसका क्या मतलब है? क्या यह सच नहीं है कि पश्चिमि में भी, नौवीं शताब्दी तक, हर कोई अभी तक आचेन के झूठे सिद्धांत को स्वीकार करने के लिए सहमत नहीं हुआ था, बल्कि कि कलीसिया की प्राचीन शिक्षा पर दृढ़ता से अड़े हुए थे?...

२) अन्य गवाहियाँ, जबकि पवित्र आत्मा के पिता से निकलने की बात करती हैं, पुत्र का भी उल्लेख करती हैं, लेकिन इस तरह से कि पवित्र आत्मा के संबंध में उसे कुछ और बताया जाता है, उदाहरण के लिए, कि पवित्र आत्मा उनसे प्रेषित किया जाता है, या उनके माध्यम से आता है, या उनसे एकसार है, और इसी तरह; और इस तरह वे और भी स्पष्ट रूप से यह प्रदर्शित करते हैं कि प्राचीन काल में लोग पवित्र आत्मा के पुत्र से भी निकलने में विश्वास नहीं करते थे। इसी तरह का दृष्टिकोण व्यक्त किया गया है:

पूर्वी शिक्षकों में —

a) *संत अथेनासियस:* "यदि (संप्रदायियों ने) पुत्र के बारे में सही तर्क किया होता, तो उन्होंने पवित्र आत्मा के बारे में भी ठोस तर्क किया होता, जो परमपिता से निकलता है, और, पुत्र के साथ एकसार (या एक ही सार का) होने के कारण, उसे शिष्यों और उन सभी पर प्रदान किया जाता है जो उस पर विश्वास करते हैं;"[841]

ख) *संत बेसिल द ग्रेट:* "कि आत्मा ईश्वर से है, इस बात का प्रेरित ने स्पष्ट रूप से प्रचार किया, कहते हुए: *'हमने इस संसार का आत्मा ग्रहण नहीं किया है, बल्कि ईश्वर से आत्मा ग्रहण किया है'* (1 कुरिन्थियों 2:12); और यह कि आत्मा पुत्र के माध्यम से प्रकट हुआ, इस बात को प्रेरित ने उन्हें 'पुत्र का आत्मा' कहकर स्पष्ट किया;"[842] और अन्यत्र।. "वह (पवित्र आत्मा) परमेश्वर से है, उसी तरह से नहीं जैसे बाकी सब कुछ परमेश्वर से है, बल्कि परमेश्वर से निकलने वाले के रूप में—पुत्र की तरह जन्म के माध्यम से नहीं, बल्कि परमेश्वर के मुख से निकले आत्मा के रूप में.... उन्हें मसीह का आत्मा भी कहा जाता है, क्योंकि वे स्वभाव से मसीह के साथ एक हैं—इसलिए, *जिसमें मसीह का आत्मा नहीं है, वह मसीह का नहीं है* (रोमियों 8:9);"[843]

ग) *नाइसा के संत ग्रेगरी:* "आइए हम सूर्य से एक किरण की कल्पना न करें, बल्कि अजन्मे सूर्य से एक और सूर्य की कल्पना करें, जो उससे जन्म लेकर पहले वाले के साथ चमकता है..., और फिर उसी जैसी एक और प्रकाश, और उसी तरह, उत्पन्न हुई प्रकाश से समय के अंतराल द्वारा पृथक नहीं, बल्कि उसके साथ चमकती हुई, और *अपनी अस्तित्व की वजह* आदमि प्रकाश से प्राप्त करती है;"[844] या: "जिसका (पवित्र आत्मा का) स्वयं ईश्वर, सभी चीजों के

---

[841] ... जो पिता से उत्पन्न होता है और पुत्र के समान सार का है, उसे उसी द्वारा दिया गया है... (एड सेरापियन, पत्र 1, संख्या 2, पृष्ठ 649, ओपस खंड 1, संपादित पेरिस, 1698)। जिस अर्थ में पवित्र आत्मा को पुत्र के समरूप कहा जाता है, उस पर संत अथेनासियस उसी पत्र में (संख्या 25, पृष्ठ 673) आगे स्पष्टीकरण देते हैं, कहते हैं: "यदि पुत्र, जो परमेश्वर (पिता) से उत्पन्न होता है, उसकी सत्ता (इडियोस टेस ओउसियास आउटोउ एस्टी) के समरूप है; तो यह निष्कर्ष निकलता है कि पवित्र आत्मा, जो परमेश्वर से भी है, पुत्र के *सह-सार है* (ίδιον κατ' ούσιαν τού Yίου)।"

[842] ... और उसने यह स्पष्ट कर दिया है कि यह पुत्र के माध्यम से है, जिसे वह 'पुत्र का आत्मा' कहता है... (Contra Eunom. Book V, in Opp. Vol. 1, पृ. 305, पेरिस, 1721; *द वर्क्स ऑफ़ द होली फ़ादर्स*, VII, पृ. 197–198)।

[843] ... लेकिन मसीह की आत्मा को भी उसकी अपनी प्रकृति के अनुरूप कहा गया है (De Spir. S. chap. 18, in Opp. Vol. III, pp. 38–39, ed. cit.; in "The Works of the Holy Fathers," VII, p. 301)।

[844] ... लेकिन जबकि यह इसके माध्यम से चमकता है, यह अपनी अस्तित्व का कारण आदमि प्रकाश से प्राप्त करता है (Contra Eimom. Book 1, in Opp. Vol. II, p. 396, ed. *Morel*, Paris, 1638)।

स्रोत, में होने का कारण है, जिससे एकमात्र उत्पन्न प्रकाश भी निकलता है, और जो सच्चे प्रकाश के साथ चमकता है, वह न तो दूरी से और न ही स्वभाव में किसी अंतर से, पिता या एकमात्र उत्पन्न से अलग है;"[845]

(घ) *अलेक्जेंड्रिया के संत सिरिल:* "परम दिव्यता के संबंध में एक सुदृढ़ और सत्य कथन तैयार करते हुए, हम कहते हैं कि परमेश्वर पिता से पुत्र का जन्म हुआ, जो समभाव वाला है..., और पवित्र आत्मा, जो सभी को जीवन देता है, उत्पन्न होता है—और, जैसा कि मैंने कहा है, जीवन-दायक आत्मा अकथनीय तरीके से पिता से उत्पन्न होता है, जबकि सृजित प्राणियों को वह पुत्र के माध्यम से दिया जाता है;"[846]

(ई) *यूलोगियस, अलेक्जेंड्रिया के पैट्रिआर्क* (6ठी सदी): "सचमुच, केवल एक ही ईश्वर है.... पुत्र पिता में और पिता पुत्र में जाने जाते हैं; पवित्र आत्मा, जो पिता से निकलता है और जिसका स्रोत पिता ही है, अपनी इच्छा से उन लोगों पर पुत्र के माध्यम से सृष्टि पर अवतरित होता है जो उसे ग्रहण करते हैं;"[847]

f) *संत जर्मैनस, कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क* (8वीं शताब्दी): "जिस प्रकार सूर्य किरण और प्रकाश का स्रोत और कारण है, और किरण के माध्यम से प्रकाश हम तक पहुँचता है, और यही हमें प्रकाशित करता है और हम इसे ग्रहण करते हैं—ठीक उसी प्रकार परमेश्वर पिता पुत्र और पवित्र आत्मा का स्रोत और कारण हैं, जबकि आत्मा, जो पिता से निकलती है, पुत्र के माध्यम से प्रदान और प्रकट की जाती है।"[848]

पश्चिमी परंपरा से —

क) *हिलारी:* "सत्य का आत्मा पिता से निकलता है, लेकिन पुत्र द्वारा पिता से भेजा जाता है;"[849]

ख) संत *एम्ब्रोज़:* "प्रभु ने सुसमाचार में कहा: *'जब सहायक आता है... सत्य का आत्मा, जो पिता से उत्पन्न होता है, वह मेरी गवाही* देगा—इसलिए, आत्मा पिता से उत्पन्न होता है और पुत्र की गवाही देता है,"[850] और अन्यत्र: "उसने (पुत्र ने) कहा: *'वह पिता से उत्पन्न होता* है'—यह उसकी अस्तित्व की शुरुआत को संदर्भित करता है; उन्होंने कहा: *'जिसे मैं भेजूँगा*—यह सहभागिता और स्वभाव की एकता को दर्शाता है;"[851]

ग) *धन्य जेरोम, 'आत्मा मेरे सामने मुरझा जाएगा* (यशायाह 57:16) शब्दों की व्याख्या में: 'कुछ लोग यहाँ पवित्र आत्मा को समझते हैं, जो आरंभ में जल के ऊपर मंडराया और सभी चीजों को जीवन दिया, जो पिता से उत्पन्न होता है, और पुत्र द्वारा स्वभाव के संचार के माध्यम से भेजा जाता है;'[852]

घ) *धन्य ऑगस्टीन:* "एक ईसाई के लिए यह विश्वास करना पर्याप्त है कि सभी सृजित चीजों, स्वर्गीय और सांसारिक, दृश्य और अदृश्य, का कारण सृष्टिकर्ता की भलाई है, जो स्वयं ही एकमात्र सच्चे ईश्वर हैं..., और यह कि

---

[845] ... परन्तु यह सर्व के ईश्वर से उत्पन्न होता है, और यही इसका अस्तित्व का कारण है; अतः यह एकमात्र-जन्मा प्रकाश है, जो सच्चे प्रकाश से प्रकाशमान होता है... (Contra Eunom. Book 1, p. 364, Vol. II, ed. cit.).

[846] ... जीवन-दायक पवित्र आत्मा पिता से उत्पन्न होता है, लेकिन पुत्र के माध्यम से सृष्टि पर प्रदान किया जाता है (Contra Julian, Book IV, towards the end, in Opp. *Cyrill.*, Vol. VI, p. 147, Paris, 1638).

[847] ... पवित्र आत्मा, जो पिता से उत्पन्न होता है, जिसका स्रोत पिता ही है, फिर भी पुत्र के माध्यम से सृष्टि तक पहुँचता है, उन लोगों के लाभ के लिए जो इसे ग्रहण करते हैं (ओरेट. V, इन *फोटियस*— बाइब्लियोथ. कोड. 230, पृ. 866, एड. ऑरेल. एलॉब्रोग. 1611)।

[848] ... और आत्मा, जो पिता से उत्पन्न होकर, पुत्र के माध्यम से प्रसारित होती है और प्रकट होती है (Theoria rerum sacr., खंड II, Patr. Graecor., सं. पेरिस, 1624, पृ. 155)। इस कृति की प्रामाणिकता के संबंध में, *ज़र्नकिवा* ऑन द होली स्पिरिट देखें, जैसा कि *इवजेनी बुल्गर* द्वारा ग्रीक में प्रकाशित, खंड I, पृ. 141, टिप्पणी 22 में है।

[849] क्योंकि सत्य का आत्मा पिता से उत्पन्न होता है, परन्तु पुत्र द्वारा पिता से भेजा जाता है (De Trinit. lib. VIII, n. 20, in Patrolog. curs. compl. X, p. 251, Paris, 1845).

[850] अतः पवित्र आत्मा न केवल पिता से उत्पन्न होता है, बल्कि पुत्र के द्वारा पिता से भेजा भी जाता है (De Spir. S. lib. I, cap. 1, n. 25, in Patrolog. curs. compl. Vol. XVI, p. 710).

[851] संत एम्ब्रोस के कार्यों के *रोमन* संस्करण में यह अंश इस प्रकार है (खंड IV, पृ. 94); जबकि हाल के *पेरिस* संस्करण में, यह कुछ अलग प्रकार से है, अर्थात्: 'पुत्र कहते हैं: *पवित्र आत्मा पिता से उत्पन्न होते हैं* (यूहन्ना 15:26); 'tamen propter societatem unitatemque naturae a Filio mittitur' (De Trinitate, या Symbol. Apostol. अध्याय X, Patrolog. curs. compl. खंड XVII, पृ. 520, उद्धृत संस्करण)। रोमन प्रकाशकों ने इस कृति को संत एम्ब्रोज़ की एक प्रामाणिक रचना के रूप में पहचाना; हाल के विद्वान उनसे सहमत नहीं हैं, बल्कि इसे छठी शताब्दी की रचना मानते हैं (उपरोक्त, पृ. 507)। तुलना करें टिप्पणी 752।

[852] … जो स्वभाव की एकता के कारण पिता से निकलता है और पुत्र द्वारा भेजा जाता है… (यशायाह पर भाष्य, पुस्तक XVI, अध्याय 57, पेट्रोलॉजिया कर्सस कम्प्लेटस, खंड XXIV, पृ. 558)।

वह त्रमिूर्तहै, अर्थात् पिता, और पिता से उत्पन्न पुत्र, और पवित्र आत्मा, जो उसी पिता से निकलता है, फिर भी पिता और पुत्र का एक ही आत्मा है;"[853]

(d) *पेलैजियस, रोम के पोप* (6वीं शताब्दी): "मैं पवित्र आत्मा, सर्वशक्तिमान, पिता और पुत्र दोनों के समान, उनके सह-शाश्वत और सह-सारभूत, जो शाश्वत रूप से पिता से उत्पन्न होते हैं और पिता और पुत्र के लिए विशिष्ट हैं, में विश्वास करता हूँ";[854]

(e) *संत ग्रेगरी महान:* "चूंकि यह ज्ञात है कि पवित्र आत्मा, सांत्वनादाता, पिता से निकलता है और पुत्र में वास करता है, तो पुत्र ने यह क्यों कहा कि उनके लिए प्रस्थान करना उचित था, ताकि वह आ सके जो कभी पुत्र से प्रस्थान नहीं करता!"[855]

3) गवाहियों का तीसरा समूह, जो और भी अधिक प्रभावशाली है, इस विचार को व्यक्त करता है कि ईश्वरत्व के भीतर केवल एक ही उत्पत्ति, एक ही स्रोत है—पिता—कि वही पुत्र को जन्म देते हैं और स्वयं से पवित्र आत्मा का प्रवाह करते हैं: या कि उनसे ही पुत्र और पवित्र आत्मा दोनों समान रूप से आते हैं। इस प्रकार की गवाहियाँ हमें प्रस्तुत की जाती हैं—

पूर्वी पादरियों से —

क) *संत डायोनिसियस द एरोपागाइट:* "पूर्व-शाश्वत ईश्वरत्व का एक ही स्रोत है—पिता—ताकि पुत्र पिता न हो और पिता पुत्र न हो, और दैवीय हाइपोस्टेसिस (अस्तित्वों) में से प्रत्येक के उचित शीर्षक अटूट रहें,"—और आगे: 'पवित्र शब्दों से हमने यह जाना है कि सच्ची दिव्यता पिता हैं, जबकि यीशु और आत्मा, यदि ऐसा कह सकते हैं, तो ईश्वर-जात दिव्यता की दैवी रूप से लगाई गई शाखाएँ हैं, और जैसे कि फूल और अलौकिक ज्योतियाँ हैं—लेकिन यह ऐसा कैसे है, इसे व्यक्त करना या कल्पना करना असंभव है;'[856]

ख) *ओरिजिन:* "यदि प्रेम का आत्मा है, प्रेम का पुत्र है, और ईश्वर प्रेम हैं, तो यह निश्चित रूप से समझा जाना चाहिए कि पुत्र और आत्मा दोनों ही पिता की दिव्यता के एक ही स्रोत से उत्पन्न होते हैं;"[857] या: "मूल सद्भाव को परमपिता ईश्वर में ही कल्पित किया जाना चाहिए, जिनसे उत्पन्न पुत्र और उत्पन्न होने वाली पवित्र आत्मा निस्संदेह उस स्रोत में विद्यमान सद्भाव के गुण को अपने भीतर बनाए रखते हैं, जिससे पुत्र का जन्म हुआ और पवित्र आत्मा उत्पन्न होती है;"[858]

c) संत *अथेनासियस:* "जो पिता में विश्वास करता है, उसने पिता में ही पुत्र और आत्मा को जान लिया है, न कि पुत्र से अलग—और इसलिए हम पुत्र और पवित्र आत्मा दोनों में विश्वास करते हैं, क्योंकि त्रिमूर्ति की एक ही ईश्वरता एक ही पिता के माध्यम से जानी जाती है;"[859]

---

[853] ... और पवित्र आत्मा, जो उसी पिता से उत्पन्न होता है, फिर भी पिता और पुत्र दोनों का एक ही आत्मा है (एनचिरीडि. एड लॉरेंट., अध्याय 9, उपर्युक्त पैट्रोलॉजी., खंड VI, पृ. 236)।

[854] ... जो सनातन काल से परमपिता से उत्पन्न होकर, परमपिता और पुत्र दोनों का आत्मा है (राजा गिल्डेबर्ट को पत्र, *हार्डुइन* में, *Concilia*, खंड III, पृ. 332, और *Patrologia Cursus Completus*, खंड L–XIX, पृ. 409; तुलना करें: *गार्नर की* *Dissertatio V* *Auctarium Theodoreti* में, पृ. 539)।

[855] ...पिता से निकलता है और पुत्र में वास करता है... (ग्रीक संस्करण के अनुसार, डायलॉग्स II, अंतिम अध्याय। कन्फ. *थियोफ. प्रोकोपोविच,* थियोलॉजी, खंड I, पृ. 1010)।

[856] 'पारलौकिक दिव्यता का एकमात्र स्रोत… क्योंकि पिता वास्तव में दिव्यता का स्रोत हैं…' (De divin. nomin., अध्याय 2, संख्या 5 और 7, Opp., खंड I, पृष्ठ 495 और 498, एंटवर्प, 1634)। संत डायोनिसियस द एरोपागाइट की रचनाओं को चाहे जो भी दृष्टिकोण से देखा जाए, फिर भी इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि वे ईसाई धर्म की प्रारंभिक शताब्दियों से संबंधित हैं।

[857] ... पुत्र और पवित्र आत्मा को पिता की दिव्यता के एक ही स्रोत से निकलते हुए समझा जाना चाहिए (रोमन्स की पत्री पर टीका, पुस्तक IV, अध्याय V, मध्य की ओर। ओरिजिन के कृत्यों का संस्करण देखें, रोम, 1759)।

[858] ... उसी स्रोत से जिससे पुत्र का जन्म हुआ या पवित्र आत्मा उत्पन्न हुआ (De princip., Book I, Chapter 2, towards the end)। यह बताना अनावश्यक होगा कि उपर्युक्त कृतियों से ओरिजिन के शब्दों को ग्रीक के बजाय लैटिन में क्यों उद्धृत किया गया है।

[859] ... त्रिमूर्ति या ईश्वरत्व में से एक, जो केवल पिता के माध्यम से जाना जाता है (एड सेरापियन, पत्र III, संख्या 6, पृष्ठ 695, इन ऑप., खंड I, पेरिस 1698)। संत अथेनासियस अन्य अंशों में भी इसी विचार को दोहराते हैं, उदाहरण के लिए: 'पिता, आरंभ और स्रोत के रूप में...' (वही, एड सेरापियन, पत्र 1, संख्या 28, पृष्ठ 677), और भी अधिक जोर देकर कहा गया है: 'देवत्व का एक ही आरंभ, और दो आरंभ नहीं (οὐ δύω ἀρχαί) — और यही कारण है कि एकैक-शाही (μοναρχία) है।' इसी सिद्धांत से, स्वभावतः पुत्र वचन हैं, और स्वयं में विद्यमान एक अलग सिद्धांत के

d) *संत बेसलि द ग्रेट:* "पिता हैं, जिनका अस्तित्व पूर्ण और आत्म-संतुष्ट है, जो पुत्र और पवित्र आत्मा की जड़ और स्रोत हैं,"[860] और आगे: "यद्यपि सभी वस्तुओं के बारे में कहा जाता है कि वे परमेश्वर से हैं, फिर भी सख्ती से कहें तो पुत्र परमेश्वर से है, और आत्मा परमेश्वर से है; क्योंकि पुत्र पिता से उत्पन्न हुआ और आत्मा पिता से निकलता है; लेकिन पुत्र पिता से जन्म के द्वारा, और आत्मा परमेश्वर से एक अनुपम तरीके से है;"[861]

(घ) *संत ग्रेगरी द थियोलोजियन:* "हम एकता (μοναρχία) का सम्मान करते हैं, परन्तु उस एकता का नहीं जो एक ही व्यक्ति की एकता से परिभाषित होती है (क्योंकि एक भी, यदि अपने आप में असंगत हो, तो एक भीड़ का निर्माण करता है), बल्कि उस एकता का जो समान सम्मान, एकसार इच्छाओं, और एक से उत्पन्न होने वालों के एक की ओर गति और दिशा की एकता का निर्माण करती है... एक, आरंभ से द्वैत में आकर, त्रिमूर्ति में विश्राम करता है । और यही हमारे पास है—पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा। पिता माता-पिता और प्रसवकर्ता हैं, जो बिना किसी भाव के, समय के परे और अदेह रूप में, जन्म देते और प्रकट करते हैं; पुत्र जन्मे हुए हैं; आत्मा जन्मे हुए हैं, या—मैं नहीं जानता कि जो सब दृश्यमान से मुंह मोड़ता है वह इसे क्या नाम देगा;"[862] अन्यत्र: "हमारा एक ईश्वर है, क्योंकि ईश्वरत्व एक है। और जो परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं, वे एक के प्रति उन्मुख हैं, यद्यपि हम तीन में विश्वास करते हैं… जब हम ईश्वरत्व, प्रथम कारण और एकमात्र उत्पत्ति को ध्यान में रखते हैं, तो हमारी कल्पना एक की होती है। लेकिन जब हम उन लोगों को ध्यान में रखते हैं जिनमें ईश्वरत्व निवास करता है—जो प्रथम कारण से उत्पन्न हुए हैं, और जो उससे एक साथ और समान रूप से अस्तित्व में हैं—तो जिनकी पूजा की जाती है वे तीन हैं;"[863] एक तीसरे अंश में: "स्वभाव तीन में एक है—ईश्वर; एकता, तथापि, पिता है, जिनसे अन्य उत्पन्न होते हैं, और जिनके पास वे उठाए जाते हैं, उनसे मिलकर एक नहीं होते बल्कि उनके साथ सह-अस्तित्व में रहते हैं, और समय, इच्छा या शक्ति द्वारा आपस में विभाजित नहीं होते;"[864] चौथे में: "मैं पिता को सबसे महान कहने के लिए तैयार रहूँगा, जिनसे समान वस्तुएँ अपनी समानता और अपना अस्तित्व प्राप्त करती हैं (इसमें

रूप में नहीं..., अन्यथा द्वैत-सिद्धांतवाद या बहु-सिद्धांतवाद उत्पन्न हो जाएगा... एक ही सिद्धांत है—और इसी कारण (κατά τοῦτο) एक ही ईश्वर है" (उपरोक्त, ओरेट. IV कॉन्ट्रा एरियन. संख्या 1, पृष्ठ 617; तुलना करें पृष्ठ 619)।

[860] 'पिता, वास्तव में, अपने अस्तित्व में पूर्ण और आत्म-संतुष्ट हैं, पुत्र और पवित्र आत्मा की जड़ और स्रोत हैं' (सेबेलीउस के विरुद्ध प्रवचन, एरियम एट एनोम. संख्या 4, पृ. 193, ओप. खंड II, पेरिस 1722; *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, खंड VIII, पृ. 383–384)।

[861] ... लेकिन मुख्य रूप से परमेश्वर से पुत्र और परमेश्वर से पवित्र आत्मा... (उसी में, n. 7, पृ. 196; "पवित्र पिताओं के कार्य," VIII, पृ. 389)। संत बेसिल निम्नलिखित अंश में इसी तरह की बात कहते हैं: "हम पवित्र आत्मा को न तो 'अजन्मा' कहते हैं—क्योंकि हम केवल एक ही अजन्मे और जो कुछ भी अस्तित्व में है, उसके एकमात्र स्रोत—हमारे प्रभु यीशु मसीह के पिता—को जानते हैं—और न ही 'जन्मा हुआ'—क्योंकि विश्वास की परंपरा से हम केवल एक ही 'एकमात्र जन्मे हुए' को जानते हैं; लेकिन सत्य के आत्मा के विषय में, यह सिखाए जाने पर कि वह पिता से उत्पन्न होते हैं, हम स्वीकार करते हैं कि वह ईश्वर द्वारा अकल्पित हैं" (विश्वास के स्वीकारोक्तियों की सूची..., "पवित्र पिताओं के कार्यों" में, X, पृ. 274)।

[862] ... καί πρός τό ἐν τών ἐξ ἀυτοῦ σύννευσίς (तीसरा धर्मशास्त्र पर प्रवचन, *पवित्र पिताओं के कार्य*, III, पृ. 53)। और आगे: "यदि पुत्र और आत्मा पिता के सह-शाश्वत हैं, तो वे तत्त्व में सह-शाश्वत क्यों नहीं हैं? क्योंकि वे पिता से हैं, यद्यपि पिता के बाद नहीं… पुत्र और आत्मा तत्त्व में सह-शाश्वत नहीं हैं, स्रोत के संबंध में" (पृ. 55)।

[863] ...καί πρός ἐν τά ἐξ αὐτού τήν ἀναφοράν ἐχει... (पवित्र पिताओं के कार्य, खंड III, पृ. 115–116 में धर्मशास्त्र पर पाँचवीं उपदेश)। निम्नलिखित अंश समान है: "यदि पिता किसी नीच और अयोग्य चीज़ की शुरुआत न होते, या, अधिक सटीक रूप से कहें तो, एक नीच और अयोग्य अर्थ में शुरुआत न होते, तो वे पुत्र और पवित्र आत्मा में निहित दिव्यता और अच्छाई की शुरुआत न होते—पहले में पुत्र और वचन के रूप में, और दूसरे में उत्पन्न होने वाले और अविभाज्य आत्मा के रूप में" (होमीली 3, *द वर्क्स ऑफ़ द होली फ़ादर्स*, I, 39); और आगे: "हमें न तो पिता को अधीनस्थ बनाने की शिक्षा दें (अन्यथा हम आदमी से भी अधिक आदमी कुछ लाएँगे, और इस प्रकार आदमी की सत्ता को विकृत कर देंगे), और न ही पुत्र या पवित्र आत्मा को आदमीहीन बनाने की (अन्यथा हम पिता को उनकी उचित विशेषता से वंचित कर देंगे)। क्योंकि वे आरंभहीन नहीं हैं, और फिर भी, एक निश्चित अर्थ में (जो कि ठिकाना है), वे आरंभहीन हैं। वे कारण के संबंध में आरंभ रहित नहीं हैं; क्योंकि जैसे प्रकाश सूर्य से निकलता है, वैसे ही वे ईश्वर से आते हैं, यद्यपि उसके बाद नहीं। लेकिन वे समय के संबंध में आरंभ रहित हैं" (होमीली 25 इन प्रेज़ ऑफ़ हेरॉन, *द वर्क्स ऑफ़ द होली फ़ादर्स*, II, पृ. 286)।

[864] ... 'पिता, जिनसे और जिनके प्रति निम्नलिखित बातें बताई जाती हैं' (दूसरी सार्वधर्मिक परिषद में एकत्रित बिशपों को संबोधन, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, IV, पृ. 38)। तुलना करें II, पृ. 168: 'पिता की गरिमा को कम नहीं करना चाहिए—कि वह पिता और उत्पन्नकर्ता के रूप में अपनी सभी विशेषताओं का स्रोत हैं। क्योंकि यदि वह पुत्र और आत्मा में निहित दिव्यता का कारण नहीं होते, तो वह किसी नीच और अयोग्य वस्तु का स्रोत होते।' — यह सब तब आवश्यक नहीं है जब एक ईश्वर में विश्वास बनाए रखने और तीन हाइपोस्टेसीज़, या तीन व्यक्तियों, में से प्रत्येक के अपने विशिष्ट गुणों की घोषणा करने, दोनों की आवश्यकता हो। मेरी दृष्टि में, एक ईश्वर में विश्वास तब संरक्षित रहता है जब हम पुत्र और आत्मा दोनों को एक ही कारण मानते हैं, लेकिन उन्हें उसके साथ विलय या भ्रमित नहीं करते" (बिशपों के अभिषेक और पवित्र त्रिमूर्ति के धर्मशास्त्र पर उपदेश)।

वे सहमत होंगे); लेकिन मुझे डर है कि मैं सिद्धांतों को छोटी चीजों की शुरुआत न बना दूँ, और प्राथमिकता दिखाकर अपराध करूँ। क्योंकि उनसे उत्पन्न होने वालों के अपमान में सिद्धांत का कोई गौरव नहीं है";[865]

e) *संत एपिफेनियस:* "त्रिमूर्ति के संपूर्ण मिलन को एक (परमपिता) से जोड़ना पर्याप्त है, और पुत्र, सच्चे ईश्वर, और सच्चे आत्मा को परमपिता से उत्पन्न होते हुए प्रस्तुत करना;"[866]

ग) *संत सेसारीयस:* "पुत्र और पवित्र आत्मा पिता से मानव अर्थ में, बहिर्विवाह, या पृथक्करण, या हटाने के माध्यम से नहीं, बल्कि एक नदी के स्रोत से जैसे निकलते हैं, वैसे ही उनसे, उनमें और उनके साथ विद्यमान हुए, और सूर्य की किरणों की तरह, जो उनमें, उनके साथ और उनसे विद्यमान हैं... पिता स्वभावतः अकथनीय रूप से, कालातीत रूप से, सभी युगों से पहले, पुत्र के माता-पिता और पवित्र आत्मा के स्रोत हैं;"[867]

(ग) *धन्य थियोडोरेट:* "हमें सिखाया गया है कि पवित्र आत्मा का अस्तित्व पिता से है...—क्योंकि प्रभु यीशु मसीह उनके बारे में निम्नलिखित कहते हैं: *'जब सहायक आएगा, जिसे मैं तुम्हारे पास पिता से भेजूँगा— —सत्य का आत्मा, जो पिता से निकलता है* (यूहन्ना 15:26)—*'पिता से निकलता है* शब्दों द्वारा, उन्होंने यह दिखाया कि पिता पवित्र आत्मा का स्रोत हैं;"[868]

(i) *सिनाई के संत अनास्तासियस:* "यद्यपि पुत्र और पवित्र आत्मा दोनों को पिता से निकलने वाला कहा जाता है, निकलना, सख्ती से कहें तो, पवित्र आत्मा का गुण है, ठीक वैसे ही जैसे जन्म पुत्र का गुण है;"[869] और आगे: "ऐसे सभी (सामान्य) पद प्रत्येक व्यक्ति पर सुविधापूर्वक लागू किए जाते हैं, साथ ही यह भी संरक्षित रखते हैं कि केवल पिता ही पिता हैं, क्योंकि वे *ही एकमात्र स्रोत* हैं; कि पुत्र ही पुत्र हैं, क्योंकि वे ही एकमात्र उत्पन्न हुए हैं; और कि परमप्रत्यक्षी ही पवित्र आत्मा हैं, क्योंकि वे अपने अधिकार से पिता से उत्पन्न होते हैं;"[870]

(j) *संत मैक्सिमिस द कन्फेशर:* "पुत्र पिता के सार से उत्पन्न हुआ है, और इसलिए वह एकमात्र पुत्र है, जबकि आत्मा उसी सार से उत्पन्न होता है;"[871]

(क) *दमास्कस के संत जॉन:* "केवल पिता अजन्मे हैं, क्योंकि उनका अस्तित्व किसी अन्य हाइपोस्टेसिस से उत्पन्न नहीं होता; केवल पुत्र ही उत्पन्न हुए हैं—वे पिता के सार से बिना किसी शुरुआत के और समय के बाहर जन्मे; पवित्र आत्मा केवल पिता के सार से उत्पन्न होते हैं, लेकिन जन्म के द्वारा नहीं, बल्कि प्रवाहन के द्वारा... पुत्र पिता

---

[865] ... जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि 'होना' 'समानों के बराबर' होने के समान है, और 'होना'... (पवित्र बपतिस्मा पर प्रवचन, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, III, पृ. 317)। तुलना करें II, पृ. 220–221: 'मैं आपसे पूछता हूँ, अजन्मे और आरंभहीन के प्रेमी: जो ईश्वर की अधिक निन्दा करता है—वह जो उन्हें ऐसे पुत्र और ऐसे आत्मा के स्रोत के रूप में सम्मानित करता है, जिन्हें आप स्वीकार करते हैं, या वह जो उन्हें ऐसे पुत्र और ऐसे आत्मा के स्रोत के रूप में नहीं, बल्कि उन लोगों के स्रोत के रूप में स्वीकार करता है जो स्वभाव से उनकी समानता और महिमा में उनके बराबर हैं, जैसा कि हमारा सिद्धांत उन्हें स्वीकार करता है?... क्या परमेश्वर के लिए वास्तव में पुत्र का पिता होने के सम्मान से बढ़कर कुछ है, जो उनकी महिमा को घटाने के बजाय बढ़ाता है, ठीक वैसे ही जैसे पवित्र आत्मा का स्रोत होना है? क्या आप यह नहीं समझते कि, स्रोत (मेरा मतलब पुत्र और आत्मा का स्रोत) को सृजित प्राणियों का स्रोत मानकर, आप स्वयं स्रोत का सम्मान करने में विफल रहते हैं और स्रोत से निकलने वालों का अपमान करते हैं? आप स्रोत का सम्मान करने में विफल रहते हैं क्योंकि आप इसे ऐसी चीज़ का स्रोत मानते हैं जो तुच्छ है और ईश्वरत्व के योग्य नहीं है। आप आरंभ से निकलने वालों का भी अपमान करते हैं, क्योंकि आप उन्हें छोटा बनाते हैं, और केवल प्राणी ही नहीं, बल्कि स्वयं प्राणियों से भी कम सम्माननीय कुछ बना देते हैं... लेकिन मैं, दिव्यता की आरंभ को कालातीत, सर्वव्यापी और असीम मानकर, आरंभ और आरंभ से निकलने वालों दोनों का सम्मान करता हूँ, — पहले वाले का, क्योंकि वह ऐसे उत्पन्न होने वालों की शुरुआत है, और बाद वालों का, क्योंकि वे उसी के ऐसे और उसी प्रकार उत्पन्न होते हैं; वे इससे समय में, न ही स्वभाव में, न ही उन्हें अर्पित की जाने वाली पूजा में अलग हैं; वे इसके साथ एक हैं" (दुनिया पर एक उपदेश, समान विचारधारा वाले लोगों की एक सभा में दिया गया)।

[866] क्योंकि एक का यह कर्तव्य है कि वह उस बंधन को धारण करे जो सभी चीजों में त्रिमूर्ति को एकजुट करता है, और पिता से... (एन्कोरैट. संख्या IV, पृ. 9, ओप. खंड II, संपादित *पेटावी*, पेरिस, 1622; तुलना करें हेरेस. 74, खंड I, पृ. 901)।

[867] ...पिता पुत्र के जनक हैं, और पवित्र आत्मा के प्राकृतिक स्रोत हैं (डाइयलॉग. 1 पोस्ट इनिटम, ग्रीक पैट्रिस्टिक कलेक्शन के खंड I में, पृष्ठ 549–550)।

[868] ... 'उन्होंने यह दिखाया कि पिता पवित्र आत्मा का स्रोत हैं' (एपिटोम. डिविनि. डिक्रीट., अध्याय 3, *क्रिश्चियन रीडिंग्स*, 1844, खंड IV, पृ. 190)।

[869] ... कहा जाता है कि वे पिता से उत्पन्न होते हैं... (De fide orthod. lib. I, Bibliotheca Patrum Coloniensis के खंड VI, पृष्ठ 693 में)। हालाँकि, फैब्रिसिस इस कृति का श्रेय सिनाई के अनास्तासियस को नहीं, बल्कि दूसरे अनास्तासियस, एंटिओक के बिशप को देते हैं, जिनकी मृत्यु 599 में हुई थी (Bibl. Graec. lib. V, cap. 35, vol. IX, pp. 312 और 332)।

[870] ... कि केवल वही आरंभ हैं (De fide orthod. lib. I, ibid. p. 694).

[871] De Trinit. dialog. III, पृ. 437, in Opp. खंड I, सं. पेरिस, 1675। ऊपर टिप्पणी 701 भी देखें।

से जन्म से है; पवित्र आत्मा, यद्यपि वह भी पिता से है, जन्म से नहीं बल्कि प्रवाहन से है। और यद्यपि हमें सिखाया गया है कि जन्म और प्रवाहन के बीच एक अंतर है, हम नहीं जानते कि यह अंतर किस बात में निहित है। केवल एक साथ ही हमारे पास पिता से, पुत्र का जन्म और पवित्र आत्मा का प्रवाहन दोनों हैं। इस प्रकार, जो कुछ भी पुत्र और आत्मा के पास है, वह सब उन्हें पिता से प्राप्त है, और उनका अस्तित्व ही... हम पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा को तीन देवता नहीं, बल्कि पवित्र त्रिमूर्ति में एक ईश्वर के रूप में स्वीकार करते हैं, ताकि हम पुत्र और आत्मा को एक ही कारण का मानते हुए, उन्हें उसके साथ न तो मिलाएं और न ही घोलें... जब हम ईश्वरत्व के भीतर प्रथम कारण, एकल स्रोत, ईश्वरत्व के भीतर गति और इच्छा की एकता और पहचान, तथा सार, शक्ति, क्रिया और प्रभुत्व की एकता को देखते हैं, तो हम एक ही वास्तविकता की कल्पना करते हैं। लेकिन जब हम उन (व्यक्तियों) को देखते हैं जिनमें ईश्वरत्व निवास करता है, या, अधिक सटीक रूप से कहें तो, जो स्वयं ईश्वरत्व ही हैं—पहले कारण से, उत्पन्न हुए, समान सम्मान वाले और अविभाज्य, अर्थात्, पुत्र और आत्मा के हाइपोस्टासिस (अस्तित्व-रूप) पर—तब हम तीन की पूजा करते हैं। पिता एक ही पिता हैं और उनकी कोई शुरुआत नहीं है, अर्थात्, वे निमित्तहीन हैं, क्योंकि उन्होंने अपना अस्तित्व किसी से प्राप्त नहीं किया है; पुत्र एक ही पुत्र हैं और उनकी शुरुआत है, अर्थात्, वे निमित्तहीन नहीं हैं, क्योंकि वे पिता से हैं...; पवित्र आत्मा एक ही आत्मा हैं, जो पिता से उत्पन्न होते हैं, यद्यपि पुत्रत्व द्वारा नहीं बल्कि प्रवाहन द्वारा।"[872]

पश्चिम से —

a) ब्रिक्सेन के बिशप *फिलिस्ट्रियस* (4ठी सदी): "तीन व्यक्ति (ईश्वर में) हैं, जो हमेशा के लिए जीवित हैं और महिमा और शक्ति में पूरी तरह से बराबर हैं—लेकिन पुत्र और पवित्र आत्मा, सख्ती से कहें तो, पिता से हैं;"[873]

ख) *धन्य ऑगस्टीन:* "आत्मा पिता से निकलता है, जिससे पुत्र भी निकलता है, क्योंकि इस त्रिमूर्ति में पुत्र पिता से उत्पन्न हुआ था, और पवित्र आत्मा पिता से निकलता है, जबकि एकमात्र पिता, न किसी से उत्पन्न और न ही किसी से निकला हुआ, एक है;"[874] अन्यत्र: "जब प्रभु कहते हैं: *'जिसे मैं तुम्हें पिता से भेजूँगा',* वह यह दिखाता है कि आत्मा पिता और पुत्र की आत्मा है—क्योंकि *'जो पिता से निकलता है* कहने के बाद, उसने जोड़ा: *'वह मेरी गवाही देगा'*; लेकिन उसने यह नहीं कहा, 'जिसे पिता *मुझसे* भेजेगा', जैसा उसने कहा: "*जिसे मैं तुम्हारे पास पिता से भेजूँगा,*" इस प्रकार यह दर्शाता है कि सभी दिव्यता, या यूँ कहें कि सम्पूर्ण ईश्वरत्व का स्रोत, पिता ही हैं;"[875] तीसरे में: "पुत्र पिता से है, और पवित्र आत्मा पिता से है; लेकिन पुत्र को जन्म दिया गया, जबकि आत्मा उत्पन्न होती है...; पवित्र आत्मा स्वयं से नहीं, बल्कि उससे (और *उन से* नहीं) उत्पन्न होता है, जिससे वह उत्पन्न होता है;"[876]

ग) *पाउलिनिस, इओलानियो के बिशप* (5वीं शताब्दी): "पवित्र आत्मा, परमेश्वर के वचन के समान, दोनों समान रूप से परमेश्वर हैं, एक ही सिर में वास करते हैं और एक ही स्रोत, यानी पिता से उत्पन्न होते हैं—पुत्र जन्म के द्वारा, और आत्मा प्रवाह के द्वारा—प्रत्येक अपनी व्यक्तिगत प्रकृति को बनाए रखता है, और एक दूसरे से पृथक होने से अधिक विशिष्ट है;"[877]

डी) *टौरिसि के बिशप मैक्सिमिस* (5वीं शताब्दी): "सुसमाचार की सच्चाई के अनुसार, जैसे पुत्र पिता से उत्पन्न हुए, वैसे ही पवित्र आत्मा भी पिता से उत्पन्न होते हैं; और जैसे एकमात्र पुत्र ईश्वर के हैं, वैसे ही पवित्र आत्मा भी ईश्वर के हैं;"[878]

---

[872] .... और जैसे पुत्र पिता से उत्पन्न हुए हैं, वैसे ही पवित्र आत्मा भी पिता से निकलते हैं; अत; जो कुछ भी पुत्र के पास है, वह आत्मा के पास भी पिता से है, और यही वह है... (De fide orthod. lib. 1, cap. 8, पृ. 136–140, Opp. खंड I में, पेरिस, 1712 में संपादित; रूसी अनुवाद में, पृ. 22–23, 25–26, 29 और 30, मॉस्को, 1844 में संपादित)।

[873] .... पुत्र और पवित्र आत्मा, तथापि, वास्तविक अर्थ में पिता से उत्पन्न होते हैं (हेरेसिस 51, पैट्रोलॉजिया कर्सस कम्प्लेटस, खंड XII, पृ. 1168)।

[874] पवित्र आत्मा पिता से उत्पन्न होता है, जिनसे पुत्र भी उत्पन्न होता है... (योहन पर प्रबंध, *पैट्रोलॉजिया कर्सस कम्प्लेटस*, खंड XXXV, पृ. 1893)।

[875] .... पिता संपूर्ण दिव्यता के, या, अधिक सटीक रूप से कहें तो, ईश्वरत्व के सिद्धांत हैं (De Trinit., पुस्तक IV, अध्याय 20, n. 29).

[876] Contra Maximinum, पुस्तक II, अध्याय XIV, संख्या 1:... परन्तु *उसी* से *जिससे वह* उत्पन्न होता है।

[877] ...एक ही प्रमुख में निवास करते हुए और *पिता के एक ही स्रोत से* प्रवाहित होते हुए, फिर भी पुत्र का जन्म हुआ, और पवित्र आत्मा ने प्रवाह किया... (एपिस्ट. III एड अमांडम, इन ओपी. *पॉलिनी,* खंड I, पृ. 113, सं. पेरिस, 1685, और मैक्स. बिब्लियोथ. पैट्र., खंड VI, सं. ल्यों)।

[878] ...जिस प्रकार पुत्र पिता से उत्पन्न हुए, उसी प्रकार पवित्र आत्मा भी पिता से निकलते हैं... (एक्सपोजिटि. समि्ब., बाइबलि. पैट्र. कोलोनिएन्स. के खंड V, भाग 1 में, पृ. 40)।

ई) *संत लियो, रोम के पोप:* "जो ईश्वर से उत्पन्न होता है वह स्वयं ईश्वर के समान है, और यह कोई और नहीं बल्कि पुत्र और पवित्र आत्मा हैं;"[879]

f) *प्रोस्पर ऑफ़ एक्वटिन,* रेइम्स के बिशप (5वीं शताब्दी): "पुत्र पिता से उत्पन्न हुए, और पवित्र आत्मा पिता से निकलते हैं, लेकिन पिता न तो किसी अन्य से उत्पन्न हुए हैं और न ही निकलते हैं... और पुत्र उनसे बराबर हैं जिनसे वे उत्पन्न हुए, और पवित्र आत्मा उनसे बराबर हैं (और *उनसे* नहीं) जिनसे वे निकलते हैं;"[880]

(g) अफ्रीका में रस्पेन के बिशप *फुलजेन्सियस* (6ठी सदी): "हम परमपिता को संपूर्ण ईश्वरत्व का नहीं, बल्कि पुत्र और पवित्र आत्मा का स्रोत मानते हैं, वह स्रोत जिससे एकमात्र-जन्मे पुत्र की शाश्वत जन्म की शुरुआत होती है, और पवित्र आत्मा की—शाश्वत उत्पत्ति होती है;"[881]

h) *थैलासियस,* एक अफ्रीकी भिक्षु (6ठी सदी): "हम सभी चीजों के एकमात्र स्रोत के रूप में पिता को स्वीकार करते हैं, और विशेष रूप से पुत्र और आत्मा को, एक माता-पिता और एक शाश्वत स्रोत के रूप में...," और आगे: "हम पिता को एक ओर तो बिना आरंभ के और दूसरी ओर आरंभ के रूप में मानते हैं—बिना आरंभ के, क्योंकि वे अजन्मे हैं, और आरंभ के रूप में, क्योंकि वे उन लोगों के जनक और दाता हैं जो उनसे उत्पन्न होते हैं, जिनसे मेरा तात्पर्य पुत्र और पवित्र आत्मा से है।"[882]

4) अंत में, ऐसी गवाहियाँ हैं जो पवित्र आत्मा के पिता से निकलने के बारे में इस तरह से बात करती हैं, लेकिन जो इस विचार को पूरी तरह से खारिज करती हैं कि पवित्र आत्मा पुत्र से निकलता है—चाहे अर्थ में या शाब्दिक रूप से भी। हमें ऐसी गवाहियाँ मिलती हैं:

पूर्वी शिक्षकों में—

क) *संत बेसिल द ग्रेट* में: "चूंकि पवित्र आत्मा... पुत्र के साथ एक है, जिसके साथ वह अविभाज्य रूप से प्रस्तुत है, और उसका अस्तित्व कारण—पिता पर निर्भर है, जिनसे वह उत्पन्न होता है; इसलिए, उसकी हाइपोस्टैटिक प्रकृति की विशिष्ट विशेषता यह है कि वह पुत्र के माध्यम से और पुत्र के साथ जाना जाता है, और अपना अस्तित्व पिता से प्राप्त करता है। पुत्र, जो स्वयं के साथ और स्वयं के द्वारा हमें पिता से प्रकट होने वाली आत्मा को जानने में सक्षम बनाता है—वह अकेला, एकमात्र उत्पन्न, अजन्मे प्रकाश से प्रकट हुआ है—ने अपनी विशिष्ट विशेषताओं द्वारा, पिता या पवित्र आत्मा के साथ कुछ भी साझा (οὐδεμίαν κοινωνίαν) नहीं किया है;"[883] या: "मैं पिता के साथ आत्मा को जानता हूँ, फिर भी आत्मा पिता नहीं है; मैंने पुत्र के साथ आत्मा को प्राप्त किया है, फिर भी वह आत्मा पुत्र नहीं है, जिसे पुत्र कहा जाता है, परन्तु मैं उसमें पिता के साथ एक समान गुण पहचानता हूँ, क्योंकि वह पिता से निकलता है, और पुत्र के साथ एक और समान गुण, क्योंकि मैं सुनता हूँ: *'यदि किसी के भीतर मसीह की आत्मा नहीं है, तो वह उसका नहीं है* (रोमियों 8:9);[884]

(b) *सेंट ग्रेगरी द थियोलोजियन* के अनुसार: "पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा में जो समानता है वह यह है कि वे अकल्पित और दिव्य हैं; पुत्र और पवित्र आत्मा में जो समानता है वह यह है कि वे पिता से उत्पन्न होते हैं; जबकि पिता की विशिष्ट विशेषता यह है कि वह अजन्मा है, पुत्र की यह कि वह उत्पन्न हुआ है, और पवित्र आत्मा की यह कि वह

---

[879] जो वस्तु उस से संबंधित है, अर्थात् वह स्वयं जो है, वह पुत्र और पवित्र आत्मा के सिवा और कुछ नहीं है (टुरबियिस को पत्र XV, अध्याय V, *पैट्रोलॉजिया कर्सस कम्प्लेटस*, खंड LIV, पृ. 682)।

[880] ... और पवित्र आत्मा *उस परमेश्वर* के समान है, *जिनसे* वे उत्पन्न होते हैं (लिबि. सेंटेंट. एक्ज़. ऑगस्टीन, सेंट. 370, इन पैट्रोलॉज. कर्स. कंपल. वॉल. LI, पृ. 488)।

[881] ... लेकिन हम पुत्र और पवित्र आत्मा को उस कर्ता के रूप में स्वीकार करते हैं *जिससे* वह उत्पन्न होता है... और पवित्र आत्मा को शाश्वत प्रवाह का स्रोत मानते हैं (Contra Fabian, Book VIII, in Biblioth. Pair. Colonien., Vol. VI, Part 1, p. 191).

[882] हम पिता को सभी चीजों की एकमात्र और अद्वितीय शुरुआत के रूप में, और वास्तव में पुत्र और पवित्र आत्मा को भी, उनके जनक और शाश्वत स्रोत के रूप में पहचानते हैं (हेकांटोन्ड IV, संख्या 92 और 99, बिब्ल. पैट्र. ग्रेक. खंड II, पृष्ठ 1199 और 1200)।

[883] .... पुत्र का अस्तित्व स्थापित है... जबकि पिता का अस्तित्व पिता के कारण से व्युत्पन्न है, जिससे वह भी उत्पन्न होते हैं (एपस्टि. 38 ब्रदर ग्रेगरी को, संख्या 4, पृ. 117, ओप. खंड III, पृ. 117, पेरिस. 1730; *द वर्क्स ऑफ़ द होली फ़ादर्स*, X, पृ. 96)।

[884] ... परन्तु मैं पिता के साथ संबंध को समझता हूँ क्योंकि वह पिता से उत्पन्न होता है, और पुत्र के साथ संबंध को क्योंकि मैं सुनता हूँ... (होमीली विरुद्ध सेबेलीउस..., Ar. et Anom. n. 6, in Opp. Vol. II, p. 194, ed. cit., in *The Works of the Holy Fathers*, Vol. VIII, pp. 385–386).

उत्पन्न होता है;"[885] या: "पुत्र में वह सब कुछ है जो पिता के पास है, सिवाय प्रथम कारण होने के; और जो कुछ पुत्र का है, वह सब पवित्र आत्मा में है, सिवाय पुत्रत्व के और उस गुण के जो मेरे मानवत्व और मेरे उद्धार के लिए, देह संबंधी दृष्टिकोण से पुत्र के बारे में कहा जाता है;"[886]

(ग) *सेंट ग्रेगरी ऑफ निस्सा* में: "सभी मानव व्यक्ति क्रमबद्ध रूप से एक ही व्यक्ति से अपनी अस्तित्व प्राप्त नहीं करते, बल्कि एक एक से और दूसरा दूसरे से, इस प्रकार इन कारणों से निकलने वालों के कारण भी भिन्न होते हैं: पवित्र त्रिमूर्ति में ऐसा नहीं है — क्योंकि यह पिता का एक ही व्यक्ति है जिससे पुत्र का जन्म होता है और पवित्र आत्मा निकलता है; यही कारण है कि हम कहते हैं कि, सत्य में, उन सभी के लिए एक प्रथम कारण है जो उन्हें अपना कारण मानते हैं, एक ईश्वर, जो उनके साथ अविभाज्य रूप से विद्यमान है;"[887] और आगे: "आत्मा पिता के साथ इस बात में एकजुट है कि दोनों अविनाशी हैं, लेकिन उनसे इस बात में भिन्न है कि वह पिता नहीं है, जैसा कि पिता हैं; वह पुत्र के साथ इस बात में एकजुट है कि दोनों अकल्पित हैं, और इस बात में कि दोनों का अस्तित्व सर्व के ईश्वर से प्राप्त होता है; फिर भी वह पुत्र से इस बात में भिन्न है कि वह परमपिता से केवल-जन्मा (μήτε μονογεννώς) के तरीके से भिन्न तरीके से उत्पन्न हुआ, और पुत्र के माध्यम से प्रकट हुआ;"[888]

(घ) *संत एपिफेनियस* के अनुसार: "एक परमेश्वर पिता और एक सच्चा परमेश्वर है, उन काल्पनिक और अस्तित्वहीन देवताओं की तरह नहीं जिन्हें मूर्तिपूजक देवता कहते थे; परन्तु एक सच्चा परमेश्वर: क्योंकि एक ही से एक ही एकलौता पुत्र और एक ही पवित्र आत्मा है;"[889] या: "पिता अविनाशी हैं, जिनसे पुत्र हैं, जो उनसे उत्पन्न हुए हैं और बनाए नहीं गए, और पवित्र आत्मा, जो उनसे (और *उनसे* नहीं) निकलते हैं, और इसी प्रकार अविनाशी हैं;"[890]

(e) *अलेक्जेंड्रिया के संत सिरिल* से: "जिस प्रकार एक उंगली हाथ में निहित होती है, न कि उससे अलग वस्तु के रूप में, बल्कि स्वाभाविक रूप से उससे एकजुट होती है, उसी प्रकार पवित्र आत्मा भी सार-तत्त्व में पुत्र के साथ एकजुट है, यद्यपि वह परमेश्वर पिता से उत्पन्न होता है";[891]

f) *धन्य थियोडोरेट और अन्य पूर्वी बिशपों* से, जिनके शब्दों का हमने पहले ही हवाला दिया है;[892]

(g) *सिनाई के अनास्तासियस* से: "जन्म और उत्पत्ति के बीच का अंतर स्वभाव में अंतर को इंगित नहीं करता है, क्योंकि यह स्वयं अस्तित्व को नहीं, बल्कि केवल होने के तरीके को दर्शाता है, जबकि वही सार जिसमें से वे हैं और उनमें जो विभिन्न तरीकों से उत्पन्न होते हैं, दोनों में बना रहता है; परिणामस्वरूप, अस्तित्व का तरीका, जैसा कि कहा गया है, अलग है, लेकिन सार एक और वही है: क्योंकि वे एक और उसी से हैं, हालांकि वे एक जैसे नहीं हैं; और इसलिए हमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए जब (मसीह) कहते हैं कि दोनों (पुत्र और पवित्र आत्मा) की उत्पत्ति पिता से है;"[893]

---

[885] क्योंकि यह पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा में यह सामान्य है कि उन्हें बनाया नहीं गया; और विशेषता पुत्र और पवित्र आत्मा में सामान्य है—जो पिता से है वह उनका अपना है... (ओरेट. इन लांडेम हेरोनिस नं. 32 इन ओप. खंड I, पृ. 422, पेरिस, 1630, *द वर्क्स ऑफ़ द होली फ़ादर्स*, II, 288 में)।

[886] 'पिता के पास जो कुछ भी है, वह पुत्र का है, सिवाय कारण के…' (उपरोक्त, ओरेट. इन एजिप्ट. एडवेंटम, संख्या 15, पृ. 429, *द वर्क्स ऑफ़ द होली फ़ादर्स*, III, 190)। इस प्रकार, संत ग्रेगरी के अनुसार, पुत्र को किसी भी अर्थ में पवित्र आत्मा के *कारण* या स्रोत के रूप में नहीं माना जा सकता: यह विशेष रूप से केवल पिता का ही है।

[887] ऊपर टिप्पणी 746 देखें।

[888] ... पुत्र के साथ अविनाशी संबंध और यह तथ्य कि उसकी अस्तित्व का कारण सर्वसृष्टिकर्ता, ईश्वर ही हैं... (Contra Eunom. lib. I, pp. 342–343, in Opp. Vol. II, Paris, 1638).

[889] ... क्योंकि केवल वही ही केवल पिता से उत्पन्न हुए हैं, और केवल पवित्र आत्मा ही (एन्कोरैट. सं. II, पृ. 7, ओप. खंड II, सं. *पेटावी*) /

[890] ... और पवित्र आत्मा, जो उनसे उत्पन्न होते हैं (एटियस के अध्याय VIII के विरुद्ध, वही। खंड I, पृ. 944; तुलना करें अध्याय XIV, खंड 2, पृ. 954 के विरुद्ध, अध्याय XXII, पृ. 967 के विरुद्ध, अध्याय XXII, पृ. 974 के विरुद्ध)।

[891] ... 'वह पुत्र के साथ एक है, यद्यपि वह परमेश्वर पिता से उत्पन्न होता है'। इस प्रकार संत सिरिल के इन शब्दों को पढ़ा जाता है — *कैटेना ग्रेकोर. पैट्र.*, जो *कोरडेरियो* द्वारा लैटिन में प्रकाशित, एंटवर्प 1628, पृ. 324 में है।

[892] ऊपर टिप्पणियाँ 807 और 810 देखें। पश्चिमी लेखक सर्वसम्मति से सहमत हैं कि धन्य थियोडोरेट ने पवित्र आत्मा को केवल पिता से उत्पन्न होने वाला माना, और अक्सर उन्हें इस सिद्धांत के पहले प्रस्तावक के रूप में भी नामित किया (देखें *गार्नर*, इन ऑक्टैरियो थियोडोरेटी, पृ. 194, सं. पेरिस, 1684; *Fabric.* Bibl. Graec. lib. V, vol. VII, cap. 2, p. 441)।

[893] ... और उस से, जिससे, और उनसे जो उससे हैं... क्योंकि चूंकि यह उसी स्रोत से है—चाहे उसी तरीके से हो या न हो—इसलिए हमें आश्चर्य नहीं करना चाहिए जब वह प्रत्येक के पिता से उत्पन्न होने का उल्लेख करता है (De fide orthod. lib. I, in T.VI Bibl. Patr. Colonien. p. 693; cf. note 869).

(h) *संत मैक्समिस द कन्फेसर* से: "एक ईश्वर, एक पुत्र के पिता और एक पवित्र आत्मा के स्रोत; एक अविभाज्य एकता और एक अविभाज्य त्रिमूर्ति; बिना आरंभ का मन, एक पुत्र के एकमात्र माता-पिता, जो स्वभाव से बिना आरंभ का है, और एकमात्र शाश्वत जीवन, अर्थात् पवित्र आत्मा का; स्रोत;"[894]

i) संत *जॉन ऑफ़ डमास्कस* से: "यह जानना आवश्यक है कि हम पिता को किसी से प्राप्त नहीं करते, बल्कि उन्हें पुत्र के पिता कहते हैं; न ही हम पुत्र को कोई कारण (कुछ के अनुसार, न ही बिना कारण के) कहते हैं, न ही पिता को, बल्कि हम कहते हैं कि वह पिता से है और पिता का पुत्र है; हम यह भी कहते हैं कि पवित्र आत्मा पिता से उत्पन्न होता है, और हम उसे पिता का आत्मा कहते हैं, लेकिन हम यह नहीं कहते कि आत्मा पुत्र से उत्पन्न होता है, फिर भी हम उसे पुत्र का आत्मा कहते हैं;"[895] अन्यत्र: "पिता पुत्र और पवित्र आत्मा के स्रोत और कारण हैं, लेकिन पिता केवल पुत्र के पिता हैं, जबकि वे पवित्र आत्मा के जनक हैं; पुत्र है, पुत्र, वचन, बुद्धि, सामर्थ्य, प्रतिमा, तेज, पिता का प्रतिनिधित्व; लेकिन पवित्र आत्मा पिता का पुत्र नहीं है, बल्कि पिता का आत्मा है, जो पिता से निकलता है: क्योंकि आत्मा के बिना कोई उत्पत्ति (ἕρμη) नहीं है; वह पुत्र का आत्मा है, परन्तु इसलिए नहीं कि वह उससे निकलता है, बल्कि इसलिए कि उसके द्वारा वह पिता से निकलता है, क्योंकि केवल पिता ही कारण हैं;"[896] तीसरी में: "हमारे एक परमेश्वर हैं, पिता, और उनका वचन, और उनकी आत्मा; वचन, जो सारभूत रूप से उत्पन्न हुआ है, और इसलिए उसे पुत्र कहा जाता है, और पवित्र आत्मा, जो सारभूत रूप से पिता से उत्पन्न हुआ है, पुत्र का आत्मा है, लेकिन पुत्र से नहीं;"[897] चौथे में: "हम पवित्र आत्मा, परमेश्वर पिता के आत्मा का सम्मान करते हैं, कि वह उसी से उत्पन्न होता है, जिसे पुत्र का आत्मा भी कहा जाता है, क्योंकि वह उसी के द्वारा प्रकट हुआ और सृष्टि तक पहुँचाया गया, लेकिन यह नहीं कि उसका अस्तित्व उसी से है।"[898]

पश्चिमी स्रोतों से —

(क) *धन्य ऑगस्टीन* से: "पिता ने स्वयं को कम नहीं किया कि वे स्वयं से पुत्र को उत्पन्न करें, बल्कि उन्होंने स्वयं से एक अन्य को इस प्रकार उत्पन्न किया कि वे स्वयं के भीतर पूर्ण रूप से बने रहते हैं और पुत्र में वैसे ही वास करते हैं जैसे वे अकेले हैं; इसी प्रकार पवित्र आत्मा, संपूर्ण से संपूर्ण (और *संपूर्ण* से नहीं), उससे नहीं दूर होता जिससे वह उत्पन्न होता है, बल्कि उसके साथ है जैसे वह उससे है (और *उन* से नहीं), न तो अपनी उत्पत्ति से उसे कम करता है और न ही उसमें निवास करने से उसे बढ़ाता है";[899] अन्यत्र, 'और (मसीह) ने पवित्र आत्मा के बारे में क्या कहा, *"मैं तुम्हें भेजूँगा"*—इससे वह इस मामले को निपटा देता है, कहीं ऐसा न सोचा जाए कि आत्मा, जैसे कि, कुछ चरणों के माध्यम से उससे उत्पन्न हुई है, ठीक वैसे ही जैसे वह स्वयं पिता से है, जब *दोनों* पिता से हैं—एक उत्पन्न हुआ, दूसरा उत्पन्न होने वाला—हालाँकि सच्चाई में दिव्य स्वभाव की ऊँचाइयों में दोनों के बीच अंतर करना कठिन है;"[900] तीसरे अंश में: "शायद कोई सोचे कि पवित्र आत्मा मसीह से उसी प्रकार उत्पन्न हुआ जैसे मसीह पिता से; क्योंकि उसने स्वयं के विषय में कहा: *'मेरी शिक्षा मेरी अपनी नहीं, परन्तु उसी की है जिसने मुझे भेजा है*; और पवित्र आत्मा के विषय में: *'वह अपनी ओर से नहीं बोलेगा,* परन्तु *जो कुछ मेरा है, वह वही लेगा और तुम्हें बता देगा';* फिर भी चूंकि उद्धारकर्ता ने यह स्पष्ट किया

---

894 ... और शाश्वत जीवन का एकमात्र स्रोत, अर्थात् पवित्र आत्मा (कैपिट. थियोलॉग. सेंचुरी 1, अध्याय 4, इन ऑप. *मैक्समि,* खंड I, पेरिस संस्करण, 1675)।

895 ... और न ही हम कहते हैं कि आत्मा पुत्र से उत्पन्न होती है (De fide orthod., Book 1, Chapter 8, p. 141, in Opp., Vol. I, Paris, 1721; रूसी अनुवाद, 1844, p. 31)।

896 ... और पुत्र का आत्मा, न कि उससे निकलने वाला, बल्कि उसके द्वारा पिता से... (उही, अध्याय 12, पृ. 148; रूसी अनुवाद में, पृ. 41–42)। यह अंश, तथापि, सेंट जॉन ऑफ़ डेमास्कस की *दिव्यशास्त्र* की सबसे प्रारंभिक ग्रीक पांडुलिपियों में नहीं मिलता, बल्कि केवल कुछ बाद की पांडुलिपियों में ही मिलता है (देखें वही, पृ. 146)।

897 ...पिता से, हाँ, और पुत्र से भी, परन्तु पुत्र से नहीं (एपिस्ट. डी हाइमो ट्राइसैगियो, संख्या 28, पृ. 497, खंड I में, उद्धृत संस्करण)।

898 ...जो पुत्र के विषय में भी कहा जाता है, कि वह उसके द्वारा प्रकट हुआ और सृष्टि को प्रदान किया गया, फिर भी अपनी अस्तित्व की प्राप्ति उससे नहीं करता (पवित्र सब्बाथ पर व्याख्यान, संख्या 4, पृ. 817, खंड II, उद्धृत संस्करण में)।

899 ... इसी प्रकार, पवित्र आत्मा, *जो संपूर्ण से संपूर्ण है, उस से* पूर्व नहीं है जिससे वह उत्पन्न होता है, परन्तु *वह* उतना ही *महान है* जितना *वह उससे है;* न ही वह उत्पन्न होकर उसे कम करता है, और न ही वह रहकर उसे बढ़ाता है (Epist. 170, al. 66, n. 5, in Patrolog. curs. compl. Vol. XXXIII, p. 750).

900 ... चूँकि *दोनों ही पिता से* उत्पन्न होते हैं—एक जन्म से, दूसरे प्रवाह से—इसलिए उनकी प्रकृति की उत्कृष्टता में इन दोनों के बीच अंतर करना अत्यंत कठिन है (Contra Serm. Arian., अध्याय 23, संख्या 19, Patrolog. curs. comp. में, खंड XLII, *Augustinus* VIII, पृ. 700)। तुलना करें टिप्पणी 761।

कि उन्होंने *'वह मेरी वस्तु लेगा'* क्यों कहा, यह जोड़कर: *'जो कुछ भी पिता के पास है, वह मेरा है; इसीलिए मैंने कहा कि वह जो मेरा है, उसे लेगा और तुम्हें बता* देगा'—इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि पवित्र आत्मा का अस्तित्व भी पिता से ही है, ठीक वैसे ही जैसे पुत्र का है," — और कुछ शब्दों बाद: "यदि, फिर, पुत्र पिता से है, और पवित्र आत्मा पिता से निकलता है, तो दोनों को पुत्र क्यों नहीं कहा जाता, दोनों को उत्पन्न क्यों नहीं कहा जाता...? हम इस पर, ईश्वर की इच्छा से, कहीं और चर्चा करेंगे;"[901]

(ख) *वजिलियस, मन्सी के बशिप* (5वीं शताब्दी): "मैं यह स्वीकार करता हूँ कि पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा एक ही सार और एक ही स्वभाव के हैं, और मैं मानता हूँ कि पुत्र न तो शून्य से और न ही किसी से उत्पन्न हुए, बल्कि पिता से उत्पन्न हुए, और यह कि पवित्र आत्मा पिता से निकलते हैं;"[902]

ग) *रुस्पेन के बशिप फुलजेन्टियस* (6ठी सदी) से: "प्रेरितिक विश्वास के नियम को दृढ़ता से थामे हुए, हम पवित्र आत्मा को परमेश्वर से भिन्न किसी अन्य के रूप में नहीं, बल्कि परमेश्वर के रूप में स्वीकार करते हैं, जो पुत्र और पिता से पृथक नहीं है, और न ही पुत्र और पिता के साथ संयुक्त है; क्योंकि वह पिता और पुत्र की एक ही आत्मा है, जो *पूरी तरह से* पिता से निकलती है, और पूरी तरह से दोनों में निवास करती है, न कि प्रत्येक में अलग-अलग, क्योंकि वह दोनों के लिए अविभाज्य रूप से साझा है;"[903]

(घ) रोमन चर्च के कार्डिनल-डीकन *रस्टिकस* (6ठी सदी) से: "पिता ने उत्पन्न किया, लेकिन उन्हें उत्पन्न नहीं किया गया, और न ही वे किसी और से हैं, ठीक वैसे ही जैसे अन्य उनसे हैं; पुत्र को उत्पन्न किया गया और उन्होंने किसी सह-शाश्वत को उत्पन्न नहीं किया; पवित्र आत्मा पिता से उत्पन्न होता है, और उससे कोई सह-शाश्वत वस्तु उत्पन्न नहीं होती है या उसकी द्वारा उत्पन्न नहीं की जाती है; हालाँकि, कुछ प्रारंभिक धर्मपितामहों ने इन गुणों में यह बात जोड़ी कि, जैसे आत्मा, पिता के साथ मिलकर, पुत्र को उत्पन्न नहीं करता है, वैसे ही आत्मा पुत्र से उस प्रकार उत्पन्न नहीं होता है जैसे वह पिता से उत्पन्न होता है;"[904]

(घ) मेडिओलानम (मिलान) के बिशप *मान्सुएटस* (7वीं सदी), जिन्होंने अन्य बिशपों की एक परिषद के साथ, छठी सार्वभौमिक परिषद में पढ़ी गई अपनी पत्रिका में सम्राट कॉन्स्टेंटिन को निम्नलिखित बातें बताईं: "जब हम शाश्वत पुत्र की बात करते हैं, तो हम उन्हें शाश्वत पिता के व्यक्तित्व के संबंध में रखते हैं; और जब हम पवित्र आत्मा की बात करते हैं, तो हम यह दर्शाते हैं कि वह शाश्वत पिता के *व्यक्तित्व* से उत्पन्न होते हैं;"[905]

ई) *अनास्तासियस द लाइब्रेरियन* (9वीं सदी): "हम पुत्र को पवित्र आत्मा का कारण या स्रोत नहीं कहते; लेकिन, पिता और पुत्र के सार की एकता को जानते हुए, हम यह स्वीकार करते हैं कि जैसे वह (पवित्र आत्मा) पिता से निकलता

---

[901] ... यह समझना बाकी है कि पवित्र आत्मा भी परमपिता से ही उत्पन्न होता है, ठीक वैसे ही जैसे पुत्र होता है... चूँकि, पुत्र परमपिता से है और पवित्र आत्मा परमपिता से ही उत्पन्न होता है, तो दोनों को 'पुत्र' क्यों नहीं कहा जाता, दोनों को 'जन्मजात' क्यों नहीं कहा जाता... (De Trinit. Book II, Chapter 3, in the same Patrolog. vol., p. 848).

[902] ... शून्य से नहीं, न ही *किसी भी वस्तु से,* बल्कि पुत्र पिता से जन्मा और आत्मा पिता से उत्पन्न... (Disput. cum Arrio, Book 1, n. 5, in Opp. *Athanasii*, Vol. II, p. 644, ed. Paris 1698).

[903] ... *जो पूर्णतः पिता से उत्पन्न होते हैं, और* दोनों में पूर्णतः विद्यमान हैं (एरियन आपत्तियों के उत्तर, *फुलजेन्टियस के* कार्यों में, वेनिस 1742 संस्करण, पृ. 32)।

[904] ... इसके अलावा, *आरंभिक कुछ धर्मपितामहों* ने इसे गुणों में यह जोड़कर शामिल किया कि जिस प्रकार पवित्र आत्मा ने पिता के साथ मिलकर पुत्र को शाश्वत रूप से जन्म नहीं दिया, उसी प्रकार *पवित्र आत्मा पुत्र से भी उस प्रकार उत्पन्न* नहीं *हुआ,* जैसे वह पिता से *उत्पन्न होता है* (Contra Acephal., disput. in Patrolog. curs. compl., vol. LXVII, p. 1237)। "लेकिन मैं," रस्टिकस तुरंत बाद कहते हैं, "यह स्वीकार करता हूँ कि आत्मा ने शाश्वत रूप से पुत्र को नहीं उत्पन्न किया (क्योंकि मैं दो पिताओं को स्वीकार नहीं करता); और जहाँ तक इस बात का सवाल है कि क्या वह पुत्र से उसी तरह उत्पन्न होता है जैसे पिता से, मैं इस पर अभी तक पूरी तरह से संतुष्ट नहीं हूँ (nondum perfecte habeo satisfactum)।".. यदि छठी शताब्दी में रोमन चर्च के सबसे विद्वान कार्डिनल डीकनों में से एक भी पवित्र आत्मा के प्रवाहन को एक निर्विवाद सत्य के रूप में स्वीकार नहीं करता था, तो क्या यह स्पष्ट नहीं है कि उस समय पश्चिम में भी इस सिद्धांत को विश्वास के एक धर्मप्रामाणिक सिद्धांत के रूप में नहीं माना जाता था? तो फिर यह दावा कैसे किया जा सकता है कि चर्च ने इसे आदिकाल से माना है?... कि रूस्टिकस को पुत्र से पवित्र आत्मा के प्रवाह पर संदेह था और उसने *केवल* पिता से प्रवाह को स्वीकार किया, यह पश्चिमी लेखकों द्वारा भी स्वीकार किया जाता है (देखें *पेटाविअस,* *डे ट्रिनिटिटे*, पुस्तक VII, अध्याय 8; तुलना करें *ज़ोरनकिव,* *डे प्रोसेसियोने स्पिरिटुस सैंक्टी*, प्रबंध IV, पृ. 355–357)।

[905] ... और जब हम पवित्र आत्मा की बात करते हैं, तो हम यह दर्शाते हैं कि वह पिता के शाश्वत *व्यक्ति* से उत्पन्न होता है (एपud *लैब्यूम,* कॉन्सिल., खंड VI, पृ. 604)। यदि, तथापि, पवित्र आत्मा शाश्वत पिता के *व्यक्तित्व* या हाइपोस्टेसिस से उत्पन्न होता है, और पिता का हाइपोस्टेसिस पुत्र के हाइपोस्टेसिस से पूरी तरह से अलग और पृथक है, यद्यपि वे सार में एक हैं; तो इसका अर्थ यह है कि आत्मा पुत्र से उत्पन्न नहीं होता है: अन्यथा, पिता और पुत्र के हाइपोस्टेसिस का विलय हो जाएगा।

है, वैसे ही वह पुत्र से भी निकलता है; अर्थात्, 'निकलना' का अर्थ दुनिया में भेजना समझकर: उन्होंने इसे इस प्रकार समझाया... वह (संत मैक्सिमस) हमें और यूनानियों को यह सिखाते हैं कि पवित्र आत्मा किस अर्थ में पुत्र से उत्पन्न होता है, और किस अर्थ में वह पुत्र से उत्पन्न नहीं होता है।"[906]

तो फिर, पश्चिमी लेखक इन सभी प्राचीन गवाहियों का जवाब कैसे देते हैं, जो यह कहती हैं कि पवित्र आत्मा केवल पिता से ही उत्पन्न होता है, कि पिता ही सम्पूर्ण ईश्वरत्व का एकमात्र स्रोत है, पुत्र और पवित्र आत्मा दोनों का एकमात्र उत्प्रेरक है, और यहाँ तक कि पवित्र आत्मा पुत्र से उत्पन्न नहीं होता? वे मजबूर हैं, आवश्यकता के कारण, विभिन्न कपटपूर्ण तर्कों और सूक्ष्मताओं का सहारा लेने के लिए, क्योंकि वे अपनी झूठी शिक्षा का खुलासा किए बिना, सीधे और सभी के समझ में आने वाले तरीके से जवाब देने में पूरी तरह से असमर्थ हैं। उनके उत्तर का सार इस प्रकार है: 'पिता पवित्र आत्मा का *अकारण कारण* हैं, या एक बिना कारण का कारण (causa improdueta); वह बिना आरंभ का आरंभ हैं (principium imprincipiatum); वह प्राथमिक स्रोत हैं (principalis); जबकि पुत्र पवित्र आत्मा का *कारण* है, यद्यपि अब वह *बिना कारण का कारण* (causa ex causa) *नहीं है*, बल्कि एक ऐसा आरंभ है जो मूल आरंभ—पिता—पर निर्भर है (principium principiatum)। इसलिए, जब प्राचीन शिक्षक कहते हैं कि पवित्र आत्मा केवल पिता से ही निकलता है, और पिता ही पवित्र आत्मा का स्रोत या आरंभ हैं, तो उनका तात्पर्य पिता को ही बिना कारण का कारण, प्रथम कारण के रूप में कहना होता है। इसी तरह, जब वे यह कहते हैं कि पवित्र आत्मा पुत्र से उत्पन्न नहीं होता है, तो उनका केवल यही अर्थ है कि पुत्र पवित्र आत्मा का अकारण कारण नहीं है। परिणामस्वरूप, दोनों ही मामलों में वे किसी भी तरह से इस विचार को खारिज नहीं करते कि पवित्र आत्मा पुत्र से भी उत्पन्न होती है, एक ऐसे कारण के रूप में जो बिना कारण के नहीं है, एक ऐसी शुरुआत के रूप में जो बिना शुरुआत के नहीं है।"[907] लेकिन —

a) यह व्याख्या पूरी तरह से मनमाना और निराधार है। प्रश्न उठता है: हमें कैसे पता चले कि, जब प्राचीन शिक्षकों ने कहा: 'पिता पवित्र आत्मा के कारण या स्रोत हैं', इसका अर्थ था: बिना कारण का कारण, बिना आरंभ का स्रोत; और जब उन्होंने पुत्र से पवित्र आत्मा के उत्पत्ति को अस्वीकार किया, तो क्या उन्होंने ऐसा केवल बिना आरंभ के स्रोत के रूप में ही किया, और किसी भी तरह से सामान्य अर्थ में नहीं? क्या शिक्षकों ने स्वयं कहा कि उन्हें इस तरह समझा जाना चाहिए और किसी अन्य तरह से नहीं? क्या उन्होंने अपनी रचनाओं में ऐसी व्याख्या का कोई संकेत भी दिया? निश्चित रूप से नहीं: ये रचनाएँ हमारे सामने हैं। तो फिर, दूसरों पर अपनी उलझी हुई व्याख्याएँ क्यों थोपी जाएँ? यह व्यर्थ है कि वे इस बात की ओर इशारा करते हैं कि कुछ प्राचीन पादरियों, विशेष रूप से यूनानी पादरियों ने, पिता से *पुत्र के माध्यम से* पवित्र आत्मा के प्रवाह को स्वीकार किया, जो कथित तौर पर *'पुत्र से'* अभिव्यक्ति के बराबर है।[908] नहीं, शिक्षकों ने स्वयं इन अभिव्यक्तियों के बीच सख्त अंतर किया और उन्हें एक समान नहीं माना: इसके विपरीत, जैसा कि हमने देखा है, दमास्कस के संत जॉन स्पष्ट रूप से कहते हैं कि पवित्र आत्मा पिता से पुत्र के माध्यम से उत्पन्न होती है, लेकिन पुत्र से नहीं; और हम समय आने पर ठीक से देखेंगे *कि 'पुत्र के माध्यम से' का* क्या अर्थ है। लैटिनों के लिए बाद के ग्रीक लेखकों—मैनुइल कालेकोस, डेमेट्रियस सिडोनियस, वसिलारियन और उनके जैसे अन्य, जो कथित तौर पर अपने प्राचीन गुरुओं की शिक्षाओं को बिल्कुल उसी तरह समझाते हैं: [909] इन लेखकों के विचार, बाद के लेखकों और विशेष रूप से ऑर्थोडॉक्सी से मुंह मोड़कर पापवाद के पक्ष में चले गए धर्मत्यागी होने के नाते, वर्तमान मामले में किसी भी तरह का वजन नहीं रखते।

ख) इस मनमाने व्याख्या को किसी भी तरह से साक्ष्य की दूसरी श्रेणी पर लागू नहीं किया जा सकता (पहली पर पहले ही अलग से चर्चा हो चुकी है)। यदि प्राचीन शिक्षकों ने वास्तव में यह विश्वास किया होता कि पवित्र आत्मा, जो मूल स्रोत के रूप में पिता से निकलता है, एक ऐसे स्रोत के रूप में पुत्र से भी निकलता है जिसकी शुरुआत है, तो क्या वे प्रश्न में दिए गए साक्ष्यों में इस तरह से अपनी बात व्यक्त कर सकते थे? क्या वे, उदाहरण के लिए, यह कह सकते थे—पवित्र आत्मा के परमपिता और पुत्र के साथ व्यक्तिगत संबंध को परिभाषित करने की इच्छा से—'पवित्र आत्मा

---

[906] वह, जैसा कि शब्दों से ही स्पष्ट है, प्राणियों के पास एक *लौकिक* प्रस्थान या संसार में एक प्रेषण के अर्थ में प्रस्थान करते हैं, और पिता से एक *शाश्वत* प्रस्थान के अर्थ में नहीं, जो स्वयं पवित्र आत्मा के एकमात्र कारण या स्रोत हैं (अनास्तासियस द बिब्लियोथेकेरियस के वास्तविक शब्दों के लिए, ऊपर टिप्पणी 702 देखें)।

[907] *पेरोन*— *प्रेलेक्ट. थियोल.* खंड II, पृ. 473, उद्धृत संस्करण। अन्य पश्चिमी धर्मशास्त्रियों के बारे में भी यही सत्य है।

[908] *पेरॉन*, *प्रेलेक्ट. थियोलॉज.*, उपरोक्त स्थान।

[909] *पेरोन*— उपरोक्त।

परमपिता से निकलता है, लेकिन स्वभाव की सहभागिता के द्वारा पुत्र के माध्यम से प्राणियों पर प्रदान किया जाता है'? या: 'पवित्र आत्मा परमपिता से निकलता है, लेकिन सार में पुत्र से अपरिचित नहीं है, और परमपिता और पुत्र की एक ही आत्मा है'? या: 'पवित्र आत्मा, यद्यपि वह पुत्र के द्वारा उपस्थित है, अपनी सत्ता पिता से प्राप्त करता है'? नहीं, विश्वास अनिवार्य रूप से उन्हें यह कहने के लिए विवश कर देगा: 'पवित्र आत्मा, यद्यपि वह प्रथम कारण के रूप में पिता से उत्पन्न होता है, फिर भी वह गैर-प्रथम कारण के रूप में पुत्र से भी उत्पन्न होता है'; या: 'पवित्र आत्मा पिता और पुत्र से निकलता है; इसीलिए वह पिता और पुत्र का आत्मा है;' या: 'पवित्र आत्मा पुत्र के माध्यम से सृष्टि पर प्रदान किया जाता है, लेकिन वह पुत्र से और, साथ ही, पिता से भी निकलता है,' और इसी तरह।

(ग) यह मनमाना व्याख्यान गवाहियों के तीसरे वर्ग पर और भी कम लागू होता है। इनमें से कुछ में, पिता को पवित्र आत्मा और पुत्र दोनों का बिना भेदभाव के कारण और स्रोत दोनों बताया गया है; तदनुसार, यदि 'कारण' शब्द से—पवित्र आत्मा के संबंध में—पिता का तात्पर्य प्राचीन शिक्षकों का, सख्ती से कहें तो, एक बिना कारण का कारण था, और 'स्रोत' शब्द से—मूल स्रोत, तो फिर यह मानना पड़ेगा कि, प्राचीन शिक्षकों के अनुसार, पुत्र, पवित्र आत्मा की तरह, फिर भी कोई ऐसा कारण है जो बिना कारण का नहीं है, कोई ऐसा स्रोत है जो पहला नहीं है। अन्य गवाहियों में, पिता को संपूर्ण ईश्वरत्व का *एकमात्र* स्रोत, पवित्र आत्मा का *एकमात्र* मूल कहा गया है, ठीक वैसे ही जैसे पुत्र का; लेकिन क्या प्राचीन पादरियों ने 'एकमात्र' शब्द का उपयोग किया होता यदि वे यह मानते कि पुत्र भी पवित्र आत्मा का मूल है, भले ही वह पहला नहीं है? और यह अभिव्यक्ति: 'पिता अन्य दिव्य व्यक्तियों के संबंध में एकमात्र स्रोत हैं'—क्या यह सीधे तौर पर यह संकेत नहीं देती कि दिव्यता के भीतर कोई अन्य स्रोत नहीं है, न तो कोई जो बिना आरंभ का हो और न ही कोई जिसका आरंभ हुआ हो?... गवाहियों के एक तीसरे समूह में, उन्हीं पिता को पुत्र के जनक और उत्पादक कहा गया है (προβολεύς) पवित्र आत्मा के, या यह कहा गया है कि पिता ने पुत्र को *स्वयं से* उत्पन्न किया और पवित्र आत्मा को *स्वयं से* उत्पन्न किया—तो क्या, फिर भी यह मानने की गुंजाइश रह जाती है कि पवित्र आत्मा का एक अन्य सह-उत्पादक है—पुत्र, जो उसे स्वयं से उत्पन्न भी करता है?

(d) अंत में, यह व्याख्या निश्चित रूप से शास्त्रीय साक्ष्य के चौथे वर्ग पर लागू नहीं की जा सकती, जो—चाहे अपने अर्थ में या शाब्दिक रूप से—पुत्र से पवित्र आत्मा के प्रवाह को अस्वीकार करता है। जो कोई भी यह मानता है कि पवित्र आत्मा न केवल पिता से, बल्कि पुत्र से भी उत्पन्न होता है, जबकि केवल पिता को पवित्र आत्मा का अकारण कारण और पुत्र को एक कारणयुक्त कारण मानता है, वह कभी भी संत ग्रेगरी द थियोलोजियन के साथ, बिना किसी और स्पष्टीकरण के, यह कहने पर सहमत नहीं होगा: "पुत्र को वह सब कुछ प्राप्त है जो पिता के पास है, *सिवाय कारणत्व* के...;" या, धन्य ऑगस्टीन और फुलजेन्सियस के साथ, कि "आत्मा संपूर्णतः पिता से (totus de Patre), संपूर्ण से संपूर्ण" (integer de integro); या, धन्य ऑगस्टाइन और नोलन के पॉल के इस कथन से कि "पुत्र और आत्मा दोनों (ambo) एक ही स्रोत—पिता—से हैं".... और भी अधिक, वह कभी भी संत ग्रेगरी ऑफ़ निसा, मैनस्वेटस और अन्य लोगों के शब्दों को दोहराने के लिए सहमत नहीं होता, कि 'पवित्र त्रिमूर्ति में पिता का एक ही व्यक्ति है, जिससे पुत्र का जन्म हुआ है और पवित्र आत्मा उत्पन्न होता है, ताकि, वास्तव में, पिता ही उन लोगों का कारण हैं जो उन्हें अपना कारण मानते हैं, कि पवित्र आत्मा पुत्र के साथ इस बात में एकजुट है कि न तो कोई सृजित है और न ही दोनों का अस्तित्व सर्व के ईश्वर से प्राप्त होता है, और पुत्र से केवल इस बात में भिन्न है कि वह पुत्र से अलग तरीके से पिता से उत्पन्न हुआ था।" अंत में, पुत्र से पवित्र आत्मा के प्रवाह में विश्वास करने वाले के लिए, धन्य थियोडोरेट, संत मैक्समिस द कन्फेशर, संत जॉन ऑफ़ डेमास्कस और अन्य, कहते हैं: 'आत्मा पिता से निकलती है, लेकिन पुत्र से नहीं'—लेकिन उन्हें अनिवार्य रूप से यह कहना होगा: 'यद्यपि आत्मा पिता से एक बिना कारण के कारण के रूप में निकलती है, फिर भी वह पुत्र से भी निकलती है, जो पिता पर निर्भर एक कारण है।'

नहीं, जब सत्य सूर्य से भी अधिक स्पष्ट हो, तो सत्य को छिपाने के लिए झूठ के सभी प्रयास व्यर्थ हैं।

§46. पवित्र आत्मा के पुत्र से भी उत्पन्न होने की शिक्षा की रक्षा के लिए पवित्र पिता और चर्च के शिक्षकों की रचनाओं से उद्धृत गवाहियों को हमें कैसे देखना चाहिए?

1) इनमें से कुछ गवाहियाँ पवित्र पिता और चर्च के शिक्षकों की बिल्कुल भी नहीं हैं, बल्कि झूठी रूप से उन पर थोपी गई हैं। इस प्रकार—

a) आचेन परषिद (809) के दूतों ने, पुत्र से पवत्रि आत्मा के प्रवाहति होने के लिए पोप लयिो तृतीय के समक्ष तर्क देते हुए, अन्य बातों के अलावा, धन्य से नम्निलखिति शब्दों का हवाला दयिा जेरोम ने अपने *धर्मवशि्वास की व्याख्या* से नम्निलखिति शब्द उद्धृत कएि: 'आत्मा, जो पतिा और पुत्र से उत्पन्न होती है, पतिा और पुत्र के समतुल्य है और सभी बातों में उनके समान है;'[910] लेकनि ये शब्द न केवल उपरोक्त धर्मवशि्वास की व्याख्या में, बल्कि एक पश्चमिी लेखक के शोध के अनुसार धन्य जेरोम की कसिी भी रचना में भी नहीं मलिते हैं;[911]

ख) फ्लोरेंस की परषिद में, प्रांतीय जॉन ने रोमन वधिर्म के बचाव में, पॉलनिस, एंटओक के बशिप को भेजे गए अपने *वशि्वास* की *स्वीकारोक्ति* से पोप दामासस की नम्निलखिति गवाही का हवाला दयिा: "हम वशि्वास करते हैं... और पवत्रि आत्मा में, जो न तो पतिा हैं और न ही पुत्र, बल्कि पतिा और पुत्र से उत्पन्न होते हैं—इसलिए, पतिा का जन्म नहीं हुआ, पुत्र का जन्म हुआ, और परम-प्रतापी (पवत्रि आत्मा) का उत्सर्जन पतिा और पुत्र से होता है;"[912] लेकनि उपरोक्त धर्म-सत्य में ऐसा कोई भी प्रमाण नहीं है,[913] इसके वपिरीत, जैसा कि हमने देखा है, यह स्पष्ट रूप से यह स्वीकार करता है कि पवत्रि आत्मा का उत्सर्जन केवल पतिा से होता है;[914]

ग) प्रसद्धि रोमन धर्मशास्त्री, थॉमस एक्वनिास, ने ग्रीकों के वरिुद्ध अपनी प्रबंध-रचना में, अलेक्जेंड्रयिा के संत अथेनासयिस के नाम से प्रचलति, नकियिा परषिद के एक प्रवचन से दस तक उद्धरणों का हवाला दयिा है, और उसी संत के सेरापयिन को लखिे पत्र से, — ऐसे अंश जनिमें पुत्र से पवत्रि आत्मा के नकिलने की बात स्पष्ट रूप से सखिाई गई है, लेकनि जो 'ऑर्थोडॉक्स के पतिा' की सभी रचनाओं में पूरी तरह से अनुपस्थति हैं;[915]

(d) थॉमस एक्वनिास, बेल्लार्माइन और अन्य, ऑर्थोडॉक्स का खंडन करते हुए, संत अथेनासयिस के सेरापयिन को लखिे पत्र से नम्निलखिति अतरिक्ति गवाही का हवाला देते हैं: *'एक मसीही वरिोधी को पहली और दूसरी चेतावनी के बाद त्याग दो'* (तीतुस 3:10); और इसलिए, भले ही आप कसिी को हवा में उड़ते हुए देखें, इल्याह की तरह हवा में उड़ते हुए, या पतरस और मूसा की तरह जल पर 'जैसे सूखी भूमि पर' चलते हुए, फरि भी, यदि ऐसे लोग, जैसा कि हम करते हैं, पवत्रि आत्मा ईश्वर की, जो सारतः पुत्र ईश्वर से वद्यिमान हैं, स्वीकार नहीं करते, ठीक वैसे ही जैसे एकमात्र प्रसव पुत्र ईश्वर अनंत काल से पतिा ईश्वर से वद्यिमान हैं — तो ऐसे लोगों को भी अस्वीकार कर दो।"[916] लेकनि हम संत अथेनासयिस के सेरापयिन को लखिे कसिी भी पत्र में इस अंश को व्यर्थ में खोजेंगे। हालाँकि, आइए अब ऐसी मलिावटों और जाली दस्तावेज़ों पर और अधकि समय न लगाएँ: असहमत लेखकों ने एक बार उनका उपयोग कयिा था, और शायद यह कसिी गलतफहमी या त्रुटि के कारण था...; वे अब ऐसा नहीं करते हैं।

2) अन्य गवाहयिाँ, यद्यपि वे चर्च के पवत्रि पतिाओं और शकि्षकों की हैं, वकि्रत हैं, या कम से कम वकि्रत रूप में उद्धृत की गई हैं। कसिी पर भी ऐसा गंभीर आरोप लगाना एक गंभीर मामला है, और यह सोचना कि ईसाइयों में ऐसे लोग थे जनि्होंने पतिाओं की रचनाओं को भी वकि्रत करने की हम्मित की; फरि भी हम इस आरोप को लगाने वाले पहले नहीं हैं। कई पश्चमिी वद्विानों ने, अपनी ओर से, लैटनिों को इसके लिए सार्वजनकि रूप से फटकारा है, और अपने दावों को कई उदाहरणों से प्रमाणति कयिा है।[917] हमारे अपने लेखकों में से, दो ने सौ से अधकि ऐसे अंश

---

[910] दूतों का यह भाषण *लायाबयिस* के *Concil.* खंड VII, पृ. 1199 और बाद के पृष्ठों में दर्ज है। बाद में, उन्हीं शब्दों को *ह्यूगो एटेरयिन* द्वारा जेरोम के नाम से उद्धृत कयिा गया है (*Bibl. Part. Coloniens. के खंड XII में, पुस्तक III, अध्याय 17)। भाग II, पृ. 412) और *कालेका* (ग्रंथ II, पृ. 288, उद्धृत पुस्तकालय के खंड XIV में) जेरोम के नाम से।

[911] *पीटर डामयिानी* — *ट्रैक्ट. डी प्रोसेस. स्परिटि. एस.*, अध्याय 5, *ऑप.*, खंड III, पृ. 288.

[912] फ्लोरेंस परषिद का कोल्लात. XIII, *लैब* कॉन्सलि., खंड XIII, पृ. 1108.

[913] यह स्वीकारोक्ति थयिोडोरेट — एन. ई., पुस्तक V, अध्याय II में, और पेट्रोलोजयिा कर्सस कम्प्लेटस, खंड XIII, पृष्ठ 358–364 में पाई जाती है।

[914] उपरोक्त टप्पिणी 797 देखें।

[915] इन अंशों का हवाला थयिोफान प्रोकपोवचि ने *Theolog.*, खंड 1, पृष्ठ 1081–1083 में दयिा है। और वास्तव में, अन्य वद्विानों ने यह प्रदर्शति कयिा है कि थॉमस एक्वनिास ने वास्तव में धर्मपतिामहों की गवाहयिों का पूरी तरह से गलत तरीके से हवाला देने की स्वतंत्रता ली, वशिेष रूप से यूनानयिों के वरिुद्ध उपरोक्त ग्रंथ में (देखें *कैसमि. ओउदनिी* — *डसिर्ट. डी स्क्रप्टिसि थॉम. एक्वनि.*, अध्याय 21)।

[916] *थॉर्न. एक्वनि.* ओपुस्. कॉन्ट्रा ग्रेकोस, अध्याय 32; *बेल्लार्मनि.* दे क्रसि्टो, पुस्तक II, अध्याय 28; *वास्क्वेज़* — डसि्पुट. 146 इन प्रमिं पार्टेम थोमे, अध्याय 5.

[917] उदाहरण के लिए: *फ्रांससि्कस ज्यूनयिस*, बेल्जयिम एक्सपर्जेशन्स के इंडेक्स की प्रस्तावना में, हाइडेलबर्ग 1584; *डैनयिल फ्रांसस* — *डसि्क्वजिशिन एकेडेमकिा डी पापसि्टारम इंडसिस लबि्रोम प्रोहबिटि, एट एक्सपर्ज...*, लेपज़गि 1684 (एक वशिेष रूप से उल्लेखनीय कृति);

संकलति कएि हैं जो वशिेष रूप से पवत्रि आत्मा की उत्पत्तति ( ) से संबंधति हैं, जन्हिें लैटनिों द्वारा इसी तरह वकि्रत कयिा गया है।[918] हमें यहाँ यह चर्चा करने की आवश्यकता नहीं है कि ये सभी परविर्तन वास्तव में कब हुए—चाहे पवत्रि पतिाओं की रचनाओं के प्रकाशन के दौरान, या प्रकाशन से पहले ही पांडुलपियिों में,[919] चाहे इनके पीछे अच्छे या बुरे इरादे हों, चाहे हमेशा जानबूझकर हों या कभी-कभी अनजाने में, — लेकनि हमें यह ध्यान देना चाहएि कि इन परविर्तनों का उपयोग न केवल पहले के असहमत धर्मशास्त्रयिों ने कयिा, बल्कि, हमारे आश्चर्य के लएि, कम से कम कुछ वर्तमान धर्मशास्त्रयिों द्वारा भी कयिा जाता है।

अतीत के असंख्य उदाहरणों में से, केवल कुछ का उल्लेख करना ही पर्याप्त है।

क) सेंट एथानसयिस के कार्यों के कुछ लैटनि संस्करणों में, एरयिनों के खलिाफ उनकी तीसरी (या, दूसरों के अनुसार, चौथी) प्रबंध में नम्निलखिति अंश शामलि है: "हम मार्सयिोनाइट्स और मनखियिों की तरह तीन सद्धिांतों या तीन पतिाओं को प्रस्तुत नहीं करते, क्योंकि हम तुलना के लएि तीन सूर्यों को नहीं लेते, बल्कि एक सूर्य, उसकी करिणें, और दोनों से एक प्रकाश को लेते हैं,"[920] — और वद्विान बेल्लारमाइन इस अंश की ओर वजियी रूप से इस बात के अकाट्य प्रमाण के रूप में इशारा करते हैं कि पवत्रि आत्मा दोनों से नकिलता है, अर्थात्, पतिा और पुत्र से।[921] लेकनि यूनानी पाठ में, लैटनिों द्वारा स्वयं प्रकाशति सेंट अथानासयिस की सभी रचनाओं के संस्करणों के अनुसार, उद्धृत अंश के अंतमि शब्द इस प्रकार हैं: … "लेकनि एक सूर्य, और उसकी करिणें, और *सूर्य* की करिणों से एक प्रकाश।"[922]

b) थॉमस एक्वनिास, अपनी रचना 'ग्रीकों के वरिुद्ध' में, संत अथानासयिस के सेरापयिन को लखिे पत्र से नम्निलखिति कथन का उद्धरण देते हैं: "प्रेरति *उनके* कारण—पुत्र—को वह *श्रेय* देते हैं जो आत्मा उनमें पूरा करता है, ठीक वैसे ही जैसे पुत्र ने अपने कारण—ईश्वर पतिा—को वह श्रेय दयिा जो उन्होंने स्वयं कयिा।"[923] लेकनि वास्तव में, सर्वश्रेष्ठ संस्करणों के अनुसार, यह कथन इस प्रकार है: "जसि प्रकार पुत्र ने उन कार्यों को जन्हिें उसने स्वयं कयिा, पतिा के कार्य कहा, उसी प्रकार पौलुस ने भी उन कार्यों को जन्हिें उसने पवत्रि आत्मा की शक्ति से कयिा, मसीह के कार्य कहा।"[924]

(c) पीटर लोम्बार्ड और पोपशाही के अन्य दृढ़ रक्षक संत एम्ब्रोज़ के पवत्रि आत्मा पर प्रबंध से नम्निलखिति उद्धृत करते हैं: "जो *कसिी से उत्पन्न* होता है, वह या तो *उसकी सत्ता* से या *उसकी शक्ति* से होता है; उसकी सत्ता से, जैसे पुत्र, जो पतिा से उत्पन्न होता है, और पवत्रि आत्मा, जो पतिा और पुत्र दोनों से उत्पन्न होता है।"[925] लेकनि आजकल, एम्ब्रोस की कृतयिों के सभी संस्करणों में इसे इस प्रकार प्रस्तुत कयिा जाता है: 'सार से, जैसे पुत्र, जसिने

कैस्पर लोएशेरस *डसिर्ट. डी लैट्रोसनिीज़, क्वाक इन स्क्रप्टिोर्स पब्लकि., पैट्रेस प्रेसप्यिूए, सोलेंट कमट्टिर* (वटिेनबर्ग, 1674); *गलि. केवयिस* *हस्टि. लटि. स्क्रप्टिोर. एक्लेस.*, खंड I, पृ. 21 और बाद के परचिय में।

[918] *एडम ज़र्नकिाउ*— *De process. Spir. S.*, Tract. II और III, *De corruptelis in scriptis Patrum*, पृ. 198–309, और *थयिोफान प्रोकपोवचि* *Theolog.*, पृ. 1071–1147 में: *Loca Patrum corrupta*.

[919] इस प्रकार के परविर्तन चर्च-पतिाजी के कार्यों के प्रकाशन से पहले भी आसानी से हो सकते थे, ठीक उसी क्षण से जब पवत्रि आत्मा की उत्पत्तति को लेकर तीव्र ववािद शुरू हुए, और वशिेष रूप से प्रकाशन प्रक्रयिा के दौरान, जसिकी देखरेख आम तौर पर पश्चमिी वद्विानों द्वारा की जाती थी। डैनयिल फ़्रैंक की गवाही उनके उपर्युक्त ग्रंथ — *De papistarum indicibus*, अध्याय 10, पृ. 145 में देखें।

[920] वशिेष रूप से, 1564 के बासेल संस्करण, पृ. 233; 1581 के पेरसि संस्करण, पृ. 155; और 1608 के एक अन्य पेरसि संस्करण, पृ. 118 में।

[921] *बेलारमनि,* *डे क्रस्टिो*, पुस्तक II, अध्याय 25: 'क्या आप यहाँ, सबसे स्पष्ट रूप से, तीन चीजें देखते हैं: सूर्य, तेज, और दोनों से नकिलने वाली रोशनी? और मुझे नहीं लगता कि इस बात में कोई संदेह हो सकता है कि अथेनासयिस ने पतिा को सूर्य, पुत्र को तेज, और पवत्रि आत्मा को प्रकाश समझा। *मैं पूछता हूँ, इस जवाब में क्या कहा जा सकता है?*'

[922] ... और सूर्य से, तेज से, प्रकाश... *अथानासयिस के* कार्यों के संस्करण देखें, हाइडेलबर्ग, 1601, पृ. 262; पेरसि, 1627, पृ. 467; और पेरसि, 1698, खंड 1, पृ. 564।

[923] *Opuscul. contra Graecos*, अध्याय 32, *Opp. *Aquinatis*, खंड XIX, पृ. 21, वेनसि 1754 संस्करण।

[924] जैसे पुत्र, जब भी वह कार्य करता था, कहता था कि पतिा कार्यरत हैं, वैसे ही, जब भी पौलुस आत्मा की शक्ति से कार्य करता था, वह कहता था कि ये कार्य मसीह के हैं। Epist. ad Serapion. 1, n. 19, in Opp. *Athan.* Vol. 1, p. 668. Paris, 1698.

[925] *पेत्रुस लोम्बार्डस*— *सेंटेंशयिाई,* पुस्तक III, डस्टिक्शिन 4; *ह्यूगो एथेरयिनस,* पुस्तक III, अध्याय 17, बब्लि. पैट्र. कोलोनएिन्ससि, खंड XII, भाग II, पृ. 412; *कैलेकास,* पुस्तक II, पृ. 288, उसी बब्लि. में, खंड XIV.

कहा: *"मैं* (प्रज्ञा) *सर्वोच्च के मुख से निकली"* (सरिक 24:3), जैसे आत्मा, जो पिता से निकलती है, और जिसके बारे में पुत्र ने कहा: *'वह मेरा महिमीकरण करेगा, क्योंकि वह जो मेरा है, उसे लेगा।'*[926]

(d) ऑर्थोडॉक्सी से दो धर्मत्यागी, वेक और कालेका, जिन्होंने रोमन विधर्म के बचाव में लिखा, संत ग्रेगरी ऑफ निसा की प्रभु की प्रार्थना पर तीसरी उपदेशिका से निम्नलिखित कथन का हवाला देते हैं: "पवित्र आत्मा को 'पिता से निकलने वाला आत्मा' कहा जाता है, और इस बात की गवाही है कि वह पुत्र से निकलने वाला आत्मा (ἐκ τοῦ Υἱοῦ) है।"[927] फिर भी, यसुई पादरी पेटावी को भी यह मानने के लिए मजबूर होना पड़ा कि यह अंश दूषित है, और इसे प्रवचन की संरचना के अनुसार इस प्रकार पढ़ा जाना चाहिए: "पवित्र आत्मा को पिता से निकलने वाला आत्मा कहा जाता है, और यह गवाही देता है कि वह पुत्र का आत्मा है — क्योंकि कहा गया है: *'यदि किसी के भीतर मसीह का आत्मा नहीं है, तो वह उसका नहीं है'* (रोमियों 8:9)।"[928]

(d) धन्य जेरोम की कृतियों के सभी संस्करणों में, संत सिरिल को लिखे गए धर्म-विश्वास की व्याख्या में, निम्नलिखित पाया जाता है: "पवित्र आत्मा वास्तव में और उचित रूप से पिता और पुत्र दोनों से उत्पन्न होता है।"[929] फिर भी, रोमन धर्मशास्त्री स्वयं, जिन्होंने जेरॉम की कृतियों का प्रकाशन से पहले ही उपयोग किया था, इस अंश को 'और पुत्र से' जोड़ने के बिना उद्धृत करते हैं,[930] और उनमें से एक (पीटर लोम्बार्ड), ने धन्य जेरॉम की उसी कृति से इस और दो अन्य समान अंशों का हवाला देते हुए जेरोम, हैरानी से पूछता है: जेरोम ने, यह कहने के बाद कि पवित्र आत्मा पिता से उत्पन्न होता है, 'और पुत्र से' क्यों नहीं कहा?[931]

e) परम पवित्र त्रिमूर्ति पर धन्य ऑगस्टीन की कृतियों से, पीटर लोम्बार्ड इन शब्दों का हवाला देते हैं: 'पवित्र आत्मा पिता और पुत्र का उपहार है, क्योंकि वह पिता और पुत्र दोनों से उत्पन्न होता है।'[932] लेकिन आजकल, सभी संस्करणों में, यह अंश इस प्रकार है: 'पवित्र आत्मा पिता और पुत्र का उपहार है, क्योंकि, जैसा कि प्रभु कहते हैं, *"मैं तुम्हें पिता से सत्य का आत्मा भेजूंगा"* (यूहन्ना 15:26), और क्योंकि प्रेरित का कहना है—*"यदि किसी में मसीह का आत्मा नहीं है, तो वह उसका नहीं है"* (रोमियों 8:9)—यह उसी आत्मा को संदर्भित करता है।'[933]

(g) जेसुइट एंटोनियस पोसेविनस, संत जॉन ऑफ़ डमास्कस की कृतियों के कुछ संस्करणों का अनुसरण करते हुए, अपने नाम से प्रसिद्ध कहानी, 'द स्टोरी ऑफ़ बरलाम एंड जोसाफेट' (अध्याय 19) से निम्नलिखित कथन का हवाला देते हैं: 'एक ही पवित्र आत्मा को स्वीकार करो, जो पिता और पुत्र से निकलता है।'[934] हालाँकि, सेंट डेमासेन की कृतियों के एक अधिक ईमानदार संपादक (जेकब बिलि), ने सबसे प्राचीन पांडुलिपियों का परामर्श करने के बाद, उक्त अंश में *'और पुत्र से'* वाक्यांश नहीं पाया, और इसलिए अपने संस्करण में इस वाक्यांश को छोड़ दिया।[935] बाद में, बेल्लार्माइन और ऑर्थोडॉक्स चर्च के सबसे क्रूर विश्वासघाती एवं शत्रु लियो अलाकियस दोनों को यह स्वीकार करना पड़ा कि बरलाम और जोसाफत की कथा से संबंधित उक्त अंश भ्रष्ट था।[936]

---

926 ... ठीक वैसे ही जैसे पवित्र आत्मा, जो पिता से निकलता है, जिसके बारे में पुत्र कहते हैं: *'वह मेरा महिमामंडन करेगा...'* (एम्ब्रोस, *De Spir. S.*, पुस्तक II, अध्याय 5, टिप्पणी 42, *Patrologia Cursus Completus*, खंड XVI, पृ. 751 में)।

927 *बेक्कस*, *Congerie Sentent.* में पवित्र आत्मा के प्रवाहन पर, रोम 1630 में प्रकाशित, पृ. 141; *कालेकास*, पुस्तक II, *Bibliotheca Patrum Coloniensis* के खंड XIV में, पृ. 275।

928 *पेटाविअस*, *डे ट्रिनिटेट*, पुस्तक VII, अध्याय 3, टिप्पणी 14.

929 उदाहरण के लिए, *Patrologia Cursus Completus*, खंड XXX, **Hieronymi* XI*, पृष्ठ 179 में देखें। हालाँकि, संपादक यह स्वीकार करते हैं कि धन्य जेरोम का यह कार्य एक जालसाजी है।

930 *पेट्रस डामियानी*— *ट्रैक्टेटस डी स्परिटु सैंक्टो*, अध्याय 2, *ओपेरा*, खंड III, पृ. 287। पेरिस, 1642; *पेट्रस अबैलार्डस*— *इंट्रोडक्शन इन थियोलॉजिया*, पुस्तक II, अध्याय 14।

931 जेरोम ने ऐसा क्यों कहा कि पवित्र आत्मा स्वयं पिता से उत्पन्न होता है, *लेकिन पुत्र को जोड़ दिया?* (सेंटेंटेईया, पुस्तक 1, विभिद 12)।

932 *लोम्बार्ड*, *सेंटेंशियाई*, पुस्तक 1, विभिद 18।

933 De Trinit. पुस्तक V, अध्याय II, संख्या 12, *Patrologia Cursus Completus*, खंड XLII, **Augustini* VIII, पृ. 919 में। सामान्यत; एडम जर्न्याकाव और थियोफान प्रोकपोविच धन्य ऑगस्टीन की रचनाओं में *दस* तक दूषित अंशों की पहचान करते हैं (देखें दोनों लेखकों द्वारा रचनाओं में नोट किए गए दूषण PP. Occident. XIII–XXII).

934 ओप. *दमास्केनी*, सं. कोलोन 1546, पृ. 319 और बेसल 1559, पृ. 607। कॉन्फ. *पोसेविनी*— अपरेटस सैकरी, खंड II।

935 पेरिस संस्करण, 1577, पृ. 584.

936 *बेलार्मिनि*, *लबि. दे स्क्रिप्टोर. एक्लेस.*; *लियो अल्लाटियस*, *डे कंसेंसू एक्लेसिया ओरिएंटलिस एट ऑक्सिडेंटलिस*, अध्याय 2, संख्या 8.

h) ऐसे भी लोग थे, जिन्होंने कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रआर्क फोटियस के बुल्गारियाई सम्राट माइकल को लिखे पत्र के मूल पाठ में ही अपनी पसंदीदा प्रविष्टि जोड़कर निकेन-कॉन्स्टेंटिनोपोलिटन धर्मसूत्र को सजाने में कोई संकोच नहीं किया, — फोटीयस, जिन्होंने, जैसा कि पूरी दुनिया जानती है, इस नवाचार के लिए लैटिनों की सबसे गंभीरता से और जोरदार तरीके से निंदा की, और साहसपूर्वक इतनी सारी विपत्तियों को सहन किया।[937]

लेकिन यहाँ उदाहरण हैं कि कैसे लैटिन अभी भी अपनी विधर्म की रक्षा के लिए इन दूषित अंशों का उपयोग करते हैं।

क) प्रसिद्ध रोमन धर्मशास्त्री पेरोन, ने जैसा कि वे मानते हैं, यह निर्विवाद रूप से साबित कर दिया है कि पश्चिमी चर्च *आदिकाल से ही* पवित्र आत्मा के पुत्र से प्रवाहित होने में विश्वास करती आई है: और किन आधारों पर? —

क) यह तथ्य कि *सातवीं* शताब्दी में कॉन्स्टेंटिनोपल के ग्रीक, जो कथित तौर पर मोनोफिसाइट थे, ने इस बात के लिए ऑर्थोडॉक्स लैटिनों को फटकारा;[938]

ख) क्योंकि *आठवीं* शताब्दी में पश्चिम में इस मामले पर यूनानियों—जिन्हें कथित तौर पर मूर्तिभंजक कहा जाता है—और ऑर्थोडॉक्स लैटिनों के बीच विवाद खड़ा हो गया, और पेपिन के अधीन गॉल में एक परिषद बुलाई गई;[939]

ग) यह तथ्य कि, *नौवीं* शताब्दी के अंत के करीब, कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रआर्क फोटियस ने—जिन्हें एक संप्रदायिक माना जाता है—इसलिए लैटिनों की कड़ी निंदा की, और —

(d) अंततः इस तथ्य से कि छठी से दसवीं शताब्दी तक, स्पेन, गॉल, जर्मनी और इटली में कुछ छोटे परिषदों ने धीरे-धीरे इस नवाचार ([940]) को यहाँ तक कि धर्मविश्वास में भी शामिल कर दिया: (क्या शानदार प्रमाण!)… — फिर वह पूर्वी चर्च की ओर मुड़ता है और कहता है: "यह भी उतना ही निश्चित है कि पूर्वी चर्च ने हमेशा बिल्कुल इसी तरह विश्वास किया है। वह पश्चिमी चर्च के इस विश्वास से पूरी तरह अवगत थी, क्योंकि वह 521 ईस्वी में पोप हॉर्मिस्दास द्वारा सम्राट जस्टिन को लिखे गए पत्र से परिचित थी, जिसमें, अन्य बातों के अलावा, यह कहा गया है: यह ज्ञात है कि विशिष्ट विशेषता (विशिष्टता) पिता की यह है कि वे पुत्र को उत्पन्न करते हैं; पुत्र की विशिष्टता यह है कि वे पिता से पिता के समान उत्पन्न हुए हैं; पवित्र आत्मा की विशिष्टता यह है कि वे परमपिता *और पुत्र* से, परमेश्वरत्व के एक ही सार के भीतर, निकलते हैं। और पेरोन आगे कहते हैं कि, ग्रीकों में से किसी ने भी इस पर आपत्ति नहीं जताई। इस प्रकार

---

[937] देखें *कनीशियस*— एंटीक्विटीज़ लेक्शन. खंड V, भाग 1, पृ. 184, इंगोलस्टाड 1604। कनीज़ियस के प्रमाणानुसार, यह परिवर्तन उस पांडुलिपि में पहले से ही मौजूद था जिसका उन्होंने अपने संस्करण के लिए उपयोग किया था। बाद में, फोटियस का उपर्युक्त पत्र 'फिलियोक्वे' के बिना प्रकाशित किया गया (उदाहरण के लिए, *मोंटाकुटी के* संस्करण एपिस्टोलारम फोटियि, लंदन 1651 में)।

[938] पेरोन, लोकेन के बाद इसे दोहराते हुए, संत मैक्सिमिस द कन्फैसर के साइप्रस के एक पादरी मारिनस को लिखे पत्र का उल्लेख करते हैं, जिससे हम पहले से ही परिचित हैं (*पेरोन.* *प्रेलेक्ट. थियोल.*, खंड 1, पृ. 418 और 422, उद्धृत संस्करण); लेकिन सेंट मैक्सिमिस यहाँ बिल्कुल भी ग्रीकों को *मोनोफिसाइट* नहीं कहते हैं, बल्कि यह कहते हैं कि, सामान्य रूप से, *शाही शहर* (οἱ τῆς Βασιλίδος) *के निवासियों ने* पुत्र से पवित्र आत्मा के प्रवाह के सिद्धांत के लिए लैटिनों को फटकारा (ऊपर टिप्पणी 701 देखें। Conf. *Labbei*, Concil., Vol. V, पृ. 1772 और Vol. XIII, पृ. 376)। तो फिर, केवल हमें—ऑर्थोडॉक्स को—इस तरह कोसने के लिए कि मानो हम संप्रदायियों के अनुसार विश्वास करते हों, स्वेच्छा से यह जोड़ना कि ये मोनोफिसाइट संप्रदायिक थे, क्यों? एक व्यर्थ प्रयास! यदि मोनोथेलिट्स वास्तव में ऐसा मानते थे, और यह विश्वास विधर्मी था, जबकि पूर्व और पश्चिम की मसीह की पूरी कलीसिया पवित्र आत्मा के पुत्र से निकलने में विश्वास करती थी, तो फिर, हम पूछते हैं, क्या मोनोफिज़िट्स को इसके लिए न तो इक्यूमेनिकल परिषद (छठी), जिसने उनकी सभी झूठी शिक्षाओं की जांच की और उन्हें निंदा किया, और न ही अन्य परिषदों और व्यक्तिगत शिक्षकों द्वारा, जिन्होंने इसी मामले से निपटा, निंदा नहीं किया गया था?... और आखिर कॉन्स्टेंटिनोपल के मोनोफिज़िट्स ने अपने ही पूर्वी भाइयों के बजाय, विशेष रूप से पश्चिमी ईसाइयों पर पुत्र से पवित्र आत्मा के निकलने के सिद्धांत के लिए ताना क्यों उछाला?... आखिरकार, क्या वे सभी यहाँ मोनोफिज़िट्स ही थे?!

[939] पेरॉन इन शब्दों को लेकिन (उपरोक्त संदर्भ में) के बाद दोहराते हैं, और इतिहासकार *एडो की* गवाही को साक्ष्य के रूप में उद्धृत करते हैं: 'अब एक धर्मसभा आयोजित की गई, और त्रिमूर्ति के संबंध में, तथा यह कि क्या पवित्र आत्मा पुत्र से भी उसी प्रकार उत्पन्न होता है जैसे वह पिता से होता है, और संतों की प्रतिमाओं के संबंध में, ग्रीकों और रोमनों के बीच इस प्रश्न पर बहस हुई।' लेकिन फिर, यहाँ यूनानियों को *मूर्तिभंजक (iconoclasts) के रूप में* कहाँ बताया गया है? क्या इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि गैलिक परिषद में यूनानियों ने ही विशेष रूप से प्रतिमाओं की पूजा को अस्वीकार किया था, जबकि लोकेन—जिनका पेरॉन संदर्भ देते हैं—स्वयं स्वीकार करते हैं कि उस समय गॉल (Gauls) स्वयं प्रतिमा पूजा की ओर झुकाव नहीं रखते थे (Dissert. Damascen. 1, n. 12)? तो फिर, हम पूछते हैं, ग्रीकों—जिन्होंने पुत्र से पवित्र आत्मा के प्रवाह को अस्वीकार कर दिया था—का इस मामले में, बिना किसी औचित्य के, विधर्मी मूर्तिभंजक के रूप में उल्लेख क्यों किया गया है? और यदि, वास्तव में, इस अस्वीकृति को विधर्म माना जाता है, तो सार्वभौमिक परिषद (सातवीं) और अन्य लोगों ने, जिन्होंने प्रतिमा-भंजकों को निंदित किया, यह भी उनके खिलाफ क्यों नहीं लगाया?

[940] ऊपर टिप्पणियाँ 814–826 और जिस पाठ का वे संदर्भ देते हैं, देखें।

पोप होर्मज्ड यह नहीं लखिते: 'यह *ज्ञात* है...' यदि उन्हें इस बात का विश्वास नहीं होता कि उस समय दोनों चर्च इस बात को सत्य मानते थे।"[941] लेकिन सवाल यह उठता है: इस पश्चिमी विद्वान ने एक अन्य पश्चिमी विद्वान, मन्ज़ी, द्वारा हॉर्मज्ड के पत्र से उद्धृत अंश की पांडुलिपियों से तुलना करने पर की गई एक बहुत ही महत्वपूर्ण टिप्पणी को क्यों नज़रअंदाज़ किया: *'मूल* लेखक ने इस अंश को इस प्रकार लिखा था: "यह भी ज्ञात है कि पवित्र आत्मा की विशिष्ट विशेषता क्या है..."' किसी पाठ को एक अन्य प्राचीन और लगभग समान रूप से प्रामाणिक हस्तलिपि द्वारा इस प्रकार *परिवर्तित किया गया*: 'यह ज्ञात है कि पवित्र आत्मा की विशिष्ट विशेषता यह है कि वह पिता और पुत्र से उत्पन्न होती है'?"[942] विद्वान एडम ज़र्नकिाउ की गवाही को ध्यान में रखने में क्यों विफल रहे, जिन्होंने हैम्बर्ग पुस्तकालय के एक कोडेक्स में अपनी आँखों से, ठीक उसी पुनर्निर्माण को देखा था, जो मैनसी से भी पहले किसी ने पांडुलिपियों के आधार पर उस अंश के मूल पाठ का किया था?[943] संक्षेप में: जब यह पहले ही सिद्ध हो चुका था कि यह भ्रष्ट है, तो विद्वान ने इस अंश को उसके भ्रष्ट रूप में क्यों उद्धृत किया?...

b) वही धर्मशास्त्री पवित्र आत्मा पर अलेक्जेंड्रिया के डिडिइमस के प्रबंध से निम्नलिखित शब्द उद्धृत करते हैं: "उद्धारकर्ता ने कहा: *'वह* (पवित्र आत्मा) *अपनी इच्छा से नहीं बोलेगा*, अर्थात् मेरी और पिता की अनुमति के बिना नहीं, क्योंकि वह मेरी और पिता की इच्छा से अलग नहीं है," — 'क्योंकि वह अपने आप से अस्तित्व में नहीं है, बल्कि पिता और मुझसे है; क्योंकि उसके अस्तित्व में होने और बोलने का तथ्य ही, वह पिता और मुझसे प्राप्त करता है।'[944] लेकिन यह ज्ञात है कि रैट्राम्नस, एक कोर्बियन भिक्षु जिसने पोप निकोलस प्रथम के निर्देश पर 9वीं शताब्दी में ही यूनानियों के खिलाफ लिखा था, ने डिडिमिस के उसी अंश का उल्लेख काफी अलग ढंग से किया है, अर्थात् दो बार दोहराए गए शब्दों: *'पिता से और मुझसे...' के* बिना, हालाँकि ये शब्द उसके उद्देश्य के लिए बहुत आवश्यक थे, और वह इन्हें जानबूझकर नहीं छोड़ सकता था; जिसका अर्थ है कि 9वीं शताब्दी में डिडिइमस के काम की पांडुलिपि प्रतियों में ये शब्द मौजूद नहीं थे।[945] इसी तरह, यह ज्ञात है कि पवित्र आत्मा पर डिडिमिस के प्रबंध के कुछ संस्करणों में, जो पश्चिमी विद्वानों द्वारा 16वीं सदी जितनी देर बाद भी प्रकाशित हुए, ये वही शब्द अनुपस्थित हैं;[946] जिसका अर्थ है कि 16वीं सदी में भी ऐसे पांडुलिपियाँ मौजूद थीं जिनमें ये शब्द शामिल नहीं किए गए थे। क्या अब ऐसे अंश को भ्रष्ट होने के अलावा कुछ और माना जा सकता है?

c) अंत में, पेरोन यूनोमियस के विरुद्ध सेंट बेसिल की तीसरी पुस्तक के शब्दों की ओर इशारा करते हैं: "कि वह (पवित्र आत्मा) पुत्र के बाद प्रतिष्ठा में दूसरे स्थान पर हैं, क्योंकि *वह अपना अस्तित्व उनसे प्राप्त करते हैं, उनसे प्राप्त करते हैं और हमारे लिए घोषित करते हैं, और इस कारण पर पूरी तरह से निर्भर* हैं—यह धर्मपरायणता की शिक्षा है; लेकिन यह कि वह स्वभाव से तीसरे स्थान पर है—यह वही नहीं है जो पवित्र शास्त्र हमें सिखाता है, न ही इसे पहले कही गई बातों से कठोर सुसंगतता के साथ निष्कर्ष निकाला जा सकता है।"[947] यह वही अंश है जिसकी प्रामाणिकता लैटिनों ने फ्लोरेंस परिषद में लगभग पूरे एक वर्ष तक ग्रीकों के खिलाफ बचाई, और जिसे वे बनाए रखने में असमर्थ रहे। क्योंकि मार्क ऑफ़ एफ़ेसस —

---

[941] उपरोक्त, पृ. 423। पेरोन यहाँ गोरमज्डा के पत्र के शब्दों को कलेक्ट. कांसलि. *लैबेई*, खंड IV, पृ. 1553 में मुद्रित पाठ के अनुसार उद्धृत करते हैं।

[942] *मन्सी* — *कलेक्ट. कॉन्सलिओरम एम्प्लसिमि*, खंड VIII, पृ. 521, पाठ के अंतर्गत: *'मूल* पांडुलिपि ने इस पाठ का अनुवाद इस प्रकार किया था: "यह भी ज्ञात है कि यह पवित्र आत्मा के लिए उचित है।"' 'लेकिन यह परमेश्वर के पुत्र के लिए उपयुक्त है, जैसा कि उस के अनुसार, आदि।' इस पाठ को एक प्राचीन और लगभग समान पांडुलिपि द्वारा इस प्रकार *सुधारा गया है*: 'यह भी ज्ञात है कि यह पवित्र आत्मा है, जो पिता और पुत्र से निकलता है!...'

[943] *ज़ोर्नकिाव* — पवित्र आत्मा के प्रवाह पर, पृ. 288, पश्चिमी पिताओं के लेखों में विकृति XXIX।

[944] *पेरोन*, उपरोक्त ग्रंथ, पृ. 426। यह अंश डिडिमोव के कार्य के नवीनतम संस्करण में, *Patrolog. curs. compl.*, खंड XXIII, पृ. 133 में भी इसी रूप में मुद्रित है।

[945] *रैट्राम्नस* — *ओपस्कुलम कॉन्ट्रा ग्रीकोस*, पुस्तक II, अध्याय 5, *डाचेरी के* *स्पेसलिगियम वेटरम स्क्रिप्टोरम* में, खंड 1, पृ. 78, पेरिस, 1723 में संपादित। यहाँ प्रश्नगत अंश इस प्रकार है: 'मसीहा कहते हैं: क्योंकि वह अपनी इच्छा से नहीं बोलते, अर्थात्, मुझसे और मेरे पिता की इच्छा के बिना नहीं, चूँकि वह मेरी इच्छा और पिता की इच्छा से अविभाज्य हैं: क्योंकि मैं, सत्य, उस के बारे में बोलता हूँ जो विद्यमान है और बोलता है, चूँकि वह सत्य का आत्मा है।'

[946] देखें *ज़ोर्नकिाव* — *De process. Spir. S.*, पृ. 213, और *थियोफान प्रोकोपोविच* — *Theolog.*, खंड 1, पृ. 1085–1086।

[947] *पेरॉन*, उद्धृत ग्रंथ, पृ. 427.

क) एक ओर, उन्होंने सही ढंग से उनके विरुद्ध अपने पास उपलब्ध बेसलि की रचना की सबसे प्राचीन ग्रीक पांडुलपि को प्रस्तुत कयि, जसिमें ववािदति अंश—लेटनिों के पक्ष में अनुकूल शब्दों के बनि—इस प्रकार था: "क आत्मा उचति रूप से पुत्र के बाद दूसरे स्थान पर है — यह, शायद (ίσως), भक्त के सद्धिांत को सखिाता है; लेकनि यह क वह स्वभाव से भी तीसरे स्थान पर है, यह पवत्रि धर्मग्रंथ हमें नहीं सखिाता... आद।" — साथ ही यह भी प्रमाणति करते हुए क कॉन्स्टेंटनिोपल में लगभग एक हजार ऐसे प्राचीन पांडुलपियिाँ हैं जनिमें बल्कुि वही पाठ है, हालांक चार या पाँच पांडुलपियिाँ एक भ्रष्ट पाठ रखती हैं, जसिका पालन लैटनि करते हैं;

ख) दूसरी ओर, उन्होंने लैटनि पाठ में हुई भ्रष्टता को स्पष्ट रूप से प्रदर्शति कयि, जो क उस संपूर्ण संदर्भ से भी स्पष्ट है जसिमें यह अंश सेंट बेसलि के प्रवचन में पाया जाता है, और साथ ही पवत्रि पति की अन्य कृतयिों के समानांतर अंशों से भी, जो इस बात की गवाही देते हैं क उन्होंने कभी भी पवत्रि आत्मा के पुत्र से उत्पन्न होने को स्वीकार नहीं कयि।[948] अब यह जोड़ा जा सकता है क मार्क द्वारा बचाई गई पाठ की प्रामाणकिता, और परणिामस्वरूप लैटनिों द्वारा अनुसरण कए जाने वाले पाठ की भ्रष्टता, आगे के साक्ष्यों द्वारा पुष्ट होती है:

(a) इस तथ्य से क पिश्चमिी वद्विानों ने स्वयं, ग्रीक और लैटनि अनुवाद में सेंट बेसलि की कृतयिों के लगभग सभी संस्करणों में, इस अंश को पूरी तरह मार्क के अनुसार पढ़ा,[949] जबक जिन्होंने सबसे हालयिा और सर्वश्रेष्ठ संस्करणों (1730 और 1839 में) पर काम कयि, उन्होंने यह भी नोट कयि क जनि सात पांडुलपियिों का उन्होंने उपयोग कयि, सभी में एक ही पाठ है, और केवल एक में ἴσως, *'शायद'* कण शामलि नहीं है;[950]

ख) यह तथ्य क मास्को में सनिोडल पुस्तकालय में रखे पांडुलपि में, जो 11वीं शताब्दी की है, सेंट बेसलि के उक्त अंश का बल्कुि वही पाठ है;[951] और —

c) क्योंक थिस्सालोनकिी के मेट्रोपॉलटिन, नकिति, जन्होंने 12वीं शताब्दी के अंत में यूनानयिों के खलिाफ ह्यूगो एटेरयिन के प्रबंध के खलिाफ एक खंडन लखिा था, ने सेंट बेसलि के इस अंश को इसके अपरविर्तति रूप में उद्धृत कयि है, भले ही उनका स्वयं पवत्रि आत्मा की प्रक्रयि पर एक गैर-ऑर्थोडॉक्स दृष्टकिोण था,[952] और भले ही एटेरयिन ने इसे पहले ही एक वकिृत रूप में लैटनि में उद्धृत कर दयि था।[953] तो फरि, एक वद्विान को ऐसे अंश पर क्यों भरोसा करना चाहए, जसिकी भ्रष्टता इतनी स्पष्ट है और जसि इतने लोग स्वीकार करते हैं, यहाँ तक क वे भी जो उसके वचिारों से सहमत हैं? या, भले ही यह भ्रष्टता स्पष्ट न हो, अपनी शक्षिा को एक ऐसे अंश पर आधारति करने की क्या आवश्यकता है जो ववािदास्पद और इतने ववािदों का वषिय हो? क्या ऐसे अन्य, बेहतर अंश नहीं हैं जनि पर ववािद नहीं कयि जा सकता? वहाँ—पूरे रहस्य की व्याख्या!

3) साक्ष्य का तीसरा वर्ग (सबसे व्यापक), हालांक चर्च फादर्स की रचनाओं से सही ढंग से उद्धृत कयि गया है, उन गवाहयिों से बना है जो सटीक नहीं हैं, अप्रत्यक्ष हैं, और आम तौर पर झूठी व्याख्याओं के माध्यम से उन पर आरोपति अर्थ को व्यक्त नहीं करती हैं। इनमें शामलि हैं:

क) प्राचीन शक्षिकों की रचनाओं से संदर्भ से हटकर उद्धृत कए गए अंश और उन्हें इस तरह समझाया गया है जो उनके प्रवचन के संदर्भ से पूरी तरह अलग है। उदाहरण के लए, वे इंगति करते हैं—

---

[948] यह सब ज़ोर्नकिाव द्वारा अत्यंत वस्तिार और गहनता के साथ प्रस्तुत कयि गया है। देखें Tract. II, corruptel. XII in Script. PP. Orient., वशिष रूप से यूजेनयिोस बुल्गारोस द्वारा ग्रीक संस्करण, पृष्ठ 233–261 में।

[949] वशिष रूप से नम्निलखिति संस्करणों में: वेनसि 1535, पृ. 87; बासेल 1551, पृ. 676; 1565, खंड I, पृ. 139; 1566, पृ. 339; पेरसि 1618, खंड II, पृ. 78; 1566, पृ. 280; और अंत में बेनेडक्टिाइन संस्करण, पेरसि, 1730 और 1839 में।

[950] यहाँ उनके शब्द इस प्रकार हैं: 'eaque (ववािदास्पद शब्द) hodie etiani in editis et in septem MSS. desnnt... Consentit cum libro Latinorum (regarding the particle — ίσως) onus tantum regius; consentiunt vero cum libro Graecorum tum editi, tum reliqui sex MSS., in quibus omnibus haec vox ίσως invenitur.'

[951] मैथ्यू की सूची के अनुसार, संख्या XXIII के अंतर्गत।

[952] इन दोनों बद्दिुओं की पुष्ट नीलस कावासलि द्वारा की गई है (देखें *एलैटयिस* का *De Nilis*: *peri tou agiou pneumaos logos Latinon*, और तुलना करें *फैब्रसियिस के* *Biblioth. Graec.*, पुराने संस्करण, खंड V के अंत में, पृष्ठ 65)।

[953] इसका साक्ष्य नकिया के वस्तिारयिन के यहाँ देखें — अपुड *अलाटयिस,* *De concens. Eccles. orient. et occid.*, पृ. 654, और *Max. Biblioth. Patrum*, खंड XXII में एथेरयिनस की अपनी कृत में।

(क) संत अथेनासियस के दो कथन, जिनमें वे पुत्र को पवित्र आत्मा के *स्रोत के रूप में* संदर्भित करते हैं;[954] लेकिन दोनों ही मामलों में पवित्र शिक्षक पुत्र के बारे में इस विशिष्ट अर्थ में बात करते हैं कि वह विश्वासियों की आत्माओं में पवित्र आत्मा को उंडेलता है या अपनी अनुग्रह-पूर्ण उपहार प्रदान करता है, क्योंकि दोनों ही मामलों में वह उद्धारकर्ता के शब्दों का हवाला देता है: *'जो कोई प्यासा है, वह मेरे पास आए और पिए* (यूहन्ना 7:37), उसके शब्दों का जो उसने प्रेरितों से कहा: *'पवित्र आत्मा ग्रहण करो* (यूहन्ना 20:22), सामरी स्त्री के साथ जीवित जल के विषय में उनकी वार्तालाप से उनके शब्द (यूहन्ना 4:10–15), इस जल को पवित्र आत्मा के रूप में समझते हुए, और पवित्र आत्मा के वरदानों के प्रवाह संबंधी अन्य समान ग्रंथ;[955] या —

bb) संत बेसिल द ग्रेट का कथन: 'जिस प्रकार पुत्र का संबंध पिता से है, उसी प्रकार आत्मा का संबंध पुत्र से है, बपतिस्मा में सिखाए गए शब्दों के संयोजन के अनुसार।'[956] लेकिन सेंट बेसिल के कथन का पूरा पाठ इस प्रकार है: 'यदि (ईश्वरद्रोही) यह मानते हैं कि अधीनता (ὑπαρίθμησις) केवल आत्मा से संबंधित है, तो उन्हें पता होना चाहिए कि आत्मा का नाम उसी प्रकार लिया जाता है जैसे प्रभु का, और पुत्र का नाम उसी प्रकार लिया जाता है जैसे पिता का। क्योंकि पिता का, पुत्र का, और पवित्र आत्मा का नाम एक ही प्रकार से सिखाया गया है (मत्ती 28:19)। इसलिए, बपतिस्मा में सिखाए गए सूत्र के अनुसार, जैसे पुत्र का संबंध पिता से है, वैसे ही आत्मा का संबंध पुत्र से है। और यदि आत्मा को पुत्र के समकक्ष रखा गया है, और पुत्र को पिता के समकक्ष रखा गया है, तो यह स्पष्ट है कि आत्मा को भी पिता के समकक्ष रखा गया है। क्या इसलिए यह कहना उचित है कि एक नाम प्राथमिक है और दूसरा गौण, जबकि दोनों एक ही संदर्भ में रखे गए हैं?"[957] तो फिर, यहाँ पुत्र से पवित्र आत्मा के शाश्वत उत्पत्ति का कोई संकेत भी कहाँ है?...

b) वे अंश जो बताते हैं कि पवित्र आत्मा पिता और पुत्र से, या दोनों से उत्पन्न होता है, जैसा कि संत एपिफेनीयस, हिलारी और अलेक्ज़ेंड्रिया के सिरिल की रचनाओं में पाया जाता है।[958] लेकिन —

ए) अभिव्यक्ति *'किसी से होना'* (τό ἐκ τινός εἶναι), जैसा कि मार्क ऑफ़ एफ़ेसस ने पहले ही फ्लोरेंस परिषद में उल्लेख किया था,[959] का अनिवार्य रूप से किसी से उत्पन्न होना या किसी से अपनी अस्तित्व प्राप्त करना, यह अर्थ नहीं है, लेकिन पवित्र भाषा में इसे अन्य अर्थों में भी प्रयुक्त किया जाता है, उदाहरण के लिए गुणों और स्वभाव की एकता के अर्थ में, किसी द्वारा भेजे जाने के अर्थ में, और किसी अन्य व्यक्ति से कुछ प्राप्त करने के अर्थ में, जैसे उद्धारकर्ता के शब्दों में: *'तुम इस संसार के हो; मैं इस संसार का नहीं हूँ'* (यूहन्ना 8:23; तुलना करें 47), या: *'मैं परमेश्वर से निकलकर आया हूँ और आया हूँ; क्योंकि मैं अपनी इच्छा से नहीं आया, बल्कि उन्होंने मुझे भेजा है'* (42), और फिर: *'वह मेरी ही बातें लेकर तुम्हें बताएगा* (यूहन्ना 16:14)। तदनुसार, यह कहना भी सही है कि पवित्र आत्मा दोनों, यानी पिता और पुत्र से हैं, लेकिन केवल अलग-अलग अर्थों में; वह पिता से उत्पन्न होते हैं, क्योंकि वे पिता के समान स्वभाव के हैं, और उनसे उत्पन्न होकर संसार में भेजे गए हैं; वे पुत्र से उत्पन्न होते हैं, क्योंकि वे पुत्र के समान स्वभाव के हैं, क्योंकि उन्होंने लोगों को उपदेश देने के लिए पुत्र से शिक्षा प्राप्त की है, और पुत्र द्वारा भेजे गए और विश्वासियों पर प्रदान किए गए हैं। और वास्तव में —

bb) उपर्युक्त पवित्र पिताओं ने पवित्र आत्मा के दोनों से, इन विभिन्न अर्थों में, उत्पन्न होने के बारे में बात की। जब भी संत एपिफानियस ने कहा कि आत्मा पिता और पुत्र या दोनों से उत्पन्न होती है, चाहे उच्चतर या निम्नतर अर्थ में, उन्होंने हमेशा अपने अर्थ को उद्धारकर्ता के शब्दों से स्पष्ट किया: *'वह पिता से उत्पन्न होता है* (यूहन्ना 15:26), और *'वह जो मेरा है उसे ग्रहण करेगा* (यूहन्ना 16:14)—उदाहरण के लिए: "पवित्र आत्मा, जो पिता और पुत्र के समान दिव्यता का है, पिता से उत्पन्न होता है, और हमेशा पुत्र से प्राप्त करता है,"[960] या: "आत्मा मसीह या दोनों से

---

954 ... पवित्र आत्मा का स्रोत। देखें *हेनरिकि क्ली* — *कैथोल. डॉग्मैटिकि*, खंड II, पृ. 185, मेनज़, 1835, और *पेनोने* — *ओप. सिट.*, पृ. 425।

955 *अथेनासियस* — *डी इंकर्नेशन* और *कॉन्ट्रा एरियनस*, खंड 9, *ऑप्स.* खंड 1, पृष्ठ 877, पेरिस, 1698, और साथ ही *डी ट्रिनिटिटे एट स्पिरितु सैंक्टो*, खंड 19, वही, पृष्ठ 978–979।

956 *पेरोन* — उद्धृत ग्रंथ, पृ. 425.

957 De Spirit. S., अध्याय 17, संख्या 43; *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, खंड VII, पृष्ठ 297–298 में।

958 इन अंशों का उल्लेख क्लोट (उपरोक्त, पृ. 185–186), पेरोन (उपरोक्त, पृ. 424–426) और अन्य लोगों ने किया है।

959 Synodi Florent. sess. XVIII.

960 पवित्र आत्मा, जो वास्तव में पिता और पुत्र के समान ही दिव्यता वाला है, जो पिता से उत्पन्न होता है, और पुत्र से अनंतकाल से प्राप्त होता है (Haeres. LXII, Sabellianorum, अध्याय 7; तुलना करें Haeres. LXXIV, Pneumatomach., अध्याय 10)।

उत्पन्न होता है, जैसा कि मसीह कहते हैं: ' ' जो *पिता से उत्पन्न होता है,* और *मेरी वस्तुओं में से लेगा।*[961] हिलारी ने एक स्थान पर कहा कि "पवित्र आत्मा को पिता और पुत्र दोनों का कारण माना जाना चाहिए,"[962] और एक अन्य स्थान पर वे बताते हैं कि वे पुत्र को पवित्र आत्मा का *कारण* इसलिए कहते हैं क्योंकि *वह* आध्यात्मिक वरदानों का *वितरक है,*[963] जबकि तीसरे स्थान पर वे कहते हैं: 'पवित्र आत्मा पुत्र से प्राप्त करता है, जिससे वह भेजा गया है, और पिता से उत्पन्न होता है,' यह ध्यान देते हुए कि उत्पन्न होना प्राप्त करने के समान नहीं है, और जो कुछ पवित्र आत्मा पुत्र से प्राप्त करता है वह केवल अधिकार, शक्ति या शिक्षा को ही दर्शाता है।[964] इसी प्रकार, अलेक्जेंड्रिया के संत सिरिल स्वयं इसे समझाते हैं, कहते हुए कि आत्मा दोनों से उत्पन्न होती है, उदाहरण के लिए: "आत्मा, जो स्वभावतः दोनों से उत्पन्न होती है, अर्थात् जो पिता से पुत्र के माध्यम से (विश्वासियों पर) उंडेल दी जाती है (या संप्रेषित की जाती है), वह परमेश्वर पिता की आत्मा है, और साथ ही पुत्र की भी।"[965]

(c) चर्च के पवित्र पिताओं और शिक्षकों, मुख्यतः यूनानी, के कथन कि पवित्र आत्मा पिता से पुत्र *के माध्यम से* उत्पन्न होता है, या है, या प्रवाहित होता है — διά υἱοῦ, per Filium। इन अभिव्यक्तियों की लैटिनों द्वारा इस प्रकार व्याख्या की गई है: 'यह कई उदाहरणों से ज्ञात है कि ग्रीक "*के माध्यम से*" (διά) और "*से*" (ἐκ) पवित्र धर्मग्रंथों और पितृ-लेखों में परस्पर विनिमय में उपयोग किए जाते हैं। इस प्रकार, सुसमाचार-लेखक के शब्दों में: "*सभी चीजें के माध्यम से* (δι' ἀυτού) *उसके द्वारा* सब *कुछ बनाया* गया...', या: '*संसार उसके द्वारा बनाया गया* था' (यूहन्ना 1:3, 10), शब्द '*द्वारा*' (δι' ἀυτού) निश्चित *रूप से* '*उससे*' (ἐξ ἀυτού) *का अर्थ* देता है। परिणामस्वरूप, यदि प्राचीन शिक्षकों ने कहा कि आत्मा पुत्र के *माध्यम* से पिता से उत्पन्न *होती है,* तो यह 'पुत्र से' *कहने के* बराबर है।"[966]

लेकिन, सबसे पहले, एक सामान्य अवलोकन: क्या इस तथ्य से यह संकेत मिलता है कि *कभी-कभी*—हम कहें तो अक्सर—परमेश्वर के वचन और चर्च के धर्मगुरुओं की रचनाओं में उपसर्ग 'διά' (*'के माध्यम से'*) का उपयोग उपसर्ग 'ἐκ' (*'से'*) के अर्थ में किया जाता है, इसका मतलब यह है कि वहाँ इसका उपयोग *हमेशा* उसी अर्थ में किया जाता है? निस्संदेह नहीं। इसके विपरीत, जिसने भी ईश्वर का वचन और धर्मपिताओं की रचनाएँ पढ़ी हैं, वह जानता है कि उनमें अनगिनत उदाहरण हैं जहाँ 'διά' कण का उपयोग इसके अन्य अर्थों में किया गया है, जैसे: *'के साथ', 'के बाद', 'की निरंतरता में'*, और इसी तरह।

दूसरा: क्या यह विशेष रूप से, किसी भी एक उदाहरण से, स्पष्ट रूप से और निर्णायक रूप से ज्ञात है, कि प्राचीन शिक्षकों ने, पुत्र के *माध्यम से* पवित्र आत्मा के प्रस्थान के बारे में बात करते समय, अपने शब्दों का अर्थ 'पुत्र *से*'

---

961 ... आत्मा मसीह से, या दोनों से निकलती है, जैसा कि मसीह कहते हैं: 'वह पिता से निकलती है, और यह मुझ से ग्रहण की जाती है' (इन एंकोराटो नं. 67)।

962 उसके बारे में बोलना आवश्यक नहीं है जिसे *पिता और पुत्र से* उत्पन्न माना जाना चाहिए (De Trinit. Book II, n. 29)। यही हाल के संपादकों ने प्राचीन पांडुलिपियों के आधार पर छापा है (Patrolog. curs. corp. खंड X, पृ. 69); जबकि प्रारंभिक संस्करणों में पाठ कुछ में: 'quia de Patre et Filio', और अन्य में: 'qui a Patre et Filio' था। नवीनतम संपादकों ने यहाँ 'cum' उपसर्ग का निहितार्थ निकाला है। फिर भी, इस उपसर्ग के साथ भी, ठीक वैसे ही जैसे इसके बिना, अर्थ अस्पष्ट बना रहता है।

963 ... कि अरिअन पुत्र की सृष्टि में ईश्वर की सहायता करें... तो क्या यह आश्चर्य की बात है, कि वे पवित्र आत्मा के बारे में भिन्न-भिन्न विचार रखते हैं, जिसने, उसे *प्रदान करते* हुए, सृजन किया... क्या लेखक इतने लापरवाह हैं? और इस प्रकार वे इस सबसे पूर्ण संस्कार की सच्चाई को कमजोर करते हैं: पिता को नकारकर, जबकि वे पुत्र को पुत्र होने का सार ही छीन लेते हैं; पवित्र आत्मा को नकारकर, जबकि वे इसके उपयोग और इसके *रचयिता* दोनों से अनभिज्ञ हैं (De Trinit. Book II, n. 4, in Patrolog. T. cit., p. 53)।

964 और मैं पूछता हूँ: क्या पुत्र से प्राप्त करना और पिता से उत्पन्न होना एक ही बात है? क्योंकि यदि यह माना जाता है कि पुत्र से प्राप्त करने और पिता से उत्पन्न होने में *अंतर है,* तो निश्चित रूप से यह माना जाएगा कि पुत्र से प्राप्त करना और पिता से प्राप्त करना एक ही और वही बात है। क्योंकि प्रभु स्वयं कहते हैं:... यूहन्ना 16:14,15. यह जो पुत्र ग्रहण करेंगे (चाहे वह *शक्ति* हो, *गुण* हो, या *शिक्षा* हो), उन्होंने कहा कि इसे स्वयं से ग्रहण किया जाना है: और फिर यही बात यह दर्शाती है कि इसे पिता से ग्रहण किया जाना है... और वे आगे दोहराते हैं: सत्य का आत्मा पिता से निकलता है; लेकिन पुत्र को पिता द्वारा भेजा जाता है (De Trinit. पुस्तक VIII, n. 20, Patrolog. ibid. पृ. 251 में)। और यह विशेष रूप से वही अंश है जिसे आज भी (*Perrone,* Op. cit., पृ. 424) इस बात के प्रमाण के रूप में उद्धृत किया जाता है कि हिलारी ने 'आत्मा पिता से *उत्पन्न होता है*' और 'पुत्र से *प्राप्त करता है*' इस अभिव्यक्ति को एक समान माना, जबकि हिलारी इसके बिल्कुल विपरीत कहते हैं! तथ्य यह है कि शुरुआती संस्करणों में, संपादकों ने जानबूझकर 'differre' शब्द से पहले *'nihil'* शब्द जोड़ा था, हालांकि बाद का पूरा अंश इस अनधिकृत जोड़ के बिल्कुल विपरीत है; हालाँकि, हाल के संपादकों ने प्राचीन पांडुलिपियों के अनुसार इस प्रविष्टि को हटा दिया है।

965 'आत्मा ईश्वर की है और पिता तथा पुत्र की, मूलतः दोनों से उत्पन्न, अर्थात् पिता से पुत्र के माध्यम से उत्पन्न' (De adorat. in spiritu et verit. lib. 1, p. 9, in Opp. खंड 1, सं. ऑबर्ट्टी, पेरिसि 1638)।

966 *पेरॉन,* उद्धृत ग्रंथ, पृ. 436; *क्ली,* उद्धृत ग्रंथ, पृ. 184.

लेना चाहा था? नहीं, बल्कुल नहीं। इसके वपिरीत, यह वश्वसनीय रूप से ज्ञात है कि इस मामले में उन्होंने कण 'διά' ('के माध्यम *से*') और कण 'ἐκ' *('से')* के बीच सख्त अंतर कयिा: क्योंकि अभव्यिक्ति *'पुत्र के माध्यम से* का उपयोग, उदाहरण के लिए, सेंट ग्रेगरी ऑफ नस्सिा द्वारा कयिा गया था, जन्हिोंने फरि भी पवत्रि आत्मा के बारे में इस प्रकार कहा: "उसके द्वारा प्रकाशमान (अर्थात्, उत्पन्न प्रकाश या पुत्र द्वारा), परन्तु अपनी अस्तत्वि की उत्पत्ति का कारण आदि प्रकाश से प्राप्त;"[967] का उपयोग संत मैक्समिस द कन्फेसर और संत जॉन ऑफ़ डेमास्कस द्वारा भी कयिा गया था, जन्हिोंने फरि भी स्पष्ट रूप से पवत्रि आत्मा *के पुत्र से* उत्पत्ति को अस्वीकार कयिा;[968] जबकि धन्य थयिोडोरेट ने *'पुत्र के माध्यम से* अभव्यिक्ति *को—'पुत्र से'* अर्थ में (कि पवत्रि आत्मा का अस्तत्वि है)—अपमानजनक और अधर्मी कहा।[969]

तीसरा, चर्च के पवत्रि पतिाओं और शक्षिकों की रचनाओं से यह ज्ञात है कि उन्होंने — δι' Ὑιοῦ—पवत्रि आत्मा के संदर्भ में *'पुत्र के साथ', 'पुत्र के* अनुगामी' और सबसे अधकि बार *'पुत्र के द्वारा* के अर्थ में,[970] अर्थात् पुत्र के साथ उसकी सत्ता पतिा से है, पवत्रि त्रमिूर्ति के व्यक्तयिों के क्रम में वह पुत्र का अनुगामी है, पुत्र के द्वारा संसार में भेजा जाता है, सृजति प्राणयिों के सामने स्वयं को प्रकट करता है, प्रदान कयिा जाता है, आदि। यहाँ कुछ उदाहरण हैं:

1) *संत बेसलि द ग्रेट* कहते हैं: 'चूंकि पवत्रि आत्मा... पुत्र के साथ एक है, जसिके साथ वह अवभिाज्य रूप से प्रस्तुत है, और जसिका अस्तत्वि कारण—पतिा पर नर्भिर है, जनिसे वह उत्पन्न होता है; इसलिए, उसकी हाइपोस्टैटकि प्रकृति की वशिष्टि वशिषता यह है कि वह *पुत्र के माध्यम से* (μετά) *और पुत्र के साथ* (σύν) जाना जाता है (γνωρίζεσθαι), और अपना अस्तत्वि पतिा से प्राप्त करता है। पुत्र, जो स्वयं *के साथ* (διά) और स्वयं के *द्वारा* (μετά) पवत्रि आत्मा को, जो पतिा से नकिलता है, जानने (γνωρίζων) में सक्षम बनाता है, अकेले ही अजन्मे प्रकाश से एकमात्र पुत्र के रूप में प्रकट हुआ है, अपनी वशिष्टि वशिषताओं के कारण, पतिा या पवत्रि आत्मा के साथ कुछ भी सामान्य नहीं रखता है।"[971] यहाँ —

a) पूर्वसर्गकि अव्यय διά स्पष्ट रूप से पूर्वसर्गकि अव्यय — σύν के स्थान पर रखा गया है: क्योंकि पुत्र के साथ आत्मा के संबंध के बारे में वही वचिार दो बार दोहराया गया है, और संबंधति कण एक-दूसरे से पूरी तरह मेल खाते हैं; और —

b) यद्यपि यह कहा गया है कि पवत्रि आत्मा 'día Ὑιοῦ' है, आत्मा का शाश्वत प्रवाह केवल पतिा से ही होता है।

2) *नस्सिा के संत ग्रेगरी* लखिते हैं: "पतिा बनिा आरंभ के और अजन्मे हैं, और हमेशा पतिा के रूप में प्रस्तुत कयि जाते हैं। और उनसे, एक अखंड क्रम (κατά τό προσεχές) में, एकमात्र पुत्र पतिा के साथ अवभिाज्य रूप से प्रस्तुत कयिा जाता है। पुत्र *के तुरंत बाद* (διά) और पुत्र *के बाद* (μετά), इससे पहले कि कोई भी खाली और अस्तत्विहीन स्थान की कल्पना कर सके, पवत्रि आत्मा को एक साथ एक संपूर्ण के रूप में समाहति कयिा जाता है; हालाँकि, वह अस्तत्वि में पुत्र से बाद में नहीं है, इस तरह से कि कोई कभी भी आत्मा के बनिा एकमात्र-जनति की कल्पना कर सके, — बल्कि स्वयं परमेश्वर में अपने अस्तत्वि का कारण होने के नाते, जो सभी चीजों का सृष्टकिर्ता है, जसिसे एकमात्र-जन्मा प्रकाश भी उत्पन्न होता है, *और* सच्चे प्रकाश *के तुरंत बाद* (διά) प्रकट होकर, वह न तो दूरी से और न ही स्वभाव में कसिी भन्निता से परमपतिा या एकमात्र-जनति से पृथक है।"[972] यहाँ —

---

967 ऊपर टप्पिणी 844 देखें।

968 ऊपर टप्पिणयिाँ 701, 894–898 देखें।

969 ऊपर टप्पिणी 807 देखें।

970 मार्क ऑफ़ एफ़ेसस ठीक इसी तरह अपने 'कन्फेशन ऑफ़ द ऑर्थोडॉक्स फेथ, सेट डाउन इन राइटगि इन फ्लोरेंस' में इस अभव्यिक्ति की व्याख्या करते हैं (देखें वोस्क्रसिेनयि चेतेनयि, खंड V, पृष्ठ 412–416, जहाँ इसे मॉस्को में रखे एक प्राचीन ग्रीक पांडुलपि से अनुवाद में मुद्रति कयिा गया है सनिाड पुस्तकालय संख्या 13 के अंतर्गत)। और पूर्वसर्ग διά, अपने अन्य अर्थों के अलावा, नश्चिति रूप से उन अर्थों को रखता है जो इंगति कए गए हैं (उदाहरण के लिए देखें, *अलेक्जेंड्रे* द्वारा डक्शिनन. ग्रीक-फ्रेंच... पेरसि. 1846)।

971 उपरोक्त टप्पिणी 883 देखें।

972 ऊपर टप्पिणी 845 देखें। टर्टुलयिन के शब्द, जनिका पापयिों द्वारा अक्सर उल्लेख कयिा जाता है, को उसी अर्थ में समझा जा सकता है: *Filium non aliunde deduco, sed do substantia Patris... Hoc mihi et in *tertium gradum* dictum sit, quia Spiritum non aliunde puto, quam a Patre *per* (nonne post)?* पुत्र। तो देखो, कहीं तुम *राजत्व को* नष्ट न कर बैठो... (Contra Prax., अध्याय IV, Patrolog. curs. compl., खंड II, पृ. 159)।

क) दैवी व्यक्तियों की व्यवस्था निस्संदेह चित्रित की गई है, और यह दर्शाने के लिए कि पवित्र आत्मा पुत्र के ठीक *बाद* आता है, पूर्वसर्गक 'διά' का उपयोग किया गया है;

b) यह कहा गया है कि यद्यपि पवित्र आत्मा पुत्र के (διά) बाद आता है, वह स्वयं अपना अस्तित्व परमेश्वर पिता से प्राप्त करता है, जिनसे पुत्र भी उत्पन्न होता है;

ग) अंत में, यह उल्लेख किया गया है कि यद्यपि पवित्र आत्मा पुत्र के बाद (διά) प्रकट होता है, वह *न तो दूरी से* और न ही स्वभाव में किसी भिन्नता से पिता से अलग है, ठीक उसी तरह जैसे वह पुत्र से नहीं है।

3) *अलेक्जेंड्रिया के संत सिरिल*, यह दर्शाते हुए कि परम पवित्र त्रिमूर्ति का रहस्य कुछ हद तक मूर्तिपूजक ऋषियों के लिए भी सुलभ था, अन्य बातों के अलावा लिखते हैं: "सभी का एक ही ईश्वर है, लेकिन उसकी अवधारणा, मानो, पवित्र और एकसार त्रिमूर्ति तक फैली हुई है, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, जिन्हें प्लेटो ने भी संसार की आत्मा कहा है: क्योंकि आत्मा जीवन देता है और जीवित *पिता* से *पुत्र के माध्यम से* उत्पन्न होता है," — और फिर, परम पवित्र त्रिमूर्ति के व्यक्तियों के संबंध में प्लेटो के कई विचार प्रस्तुत करने के बाद, निष्कर्ष निकालते हैं: "इस प्रकार वह उसे (पवित्र आत्मा को) जानता था, जो वास्तव में मौजूद है, जो सभी को जीवन देता है और सभी को धारण करता है, और जो, मानो, परमेश्वर पिता के पवित्र स्रोत से प्रवाहित होता है: क्योंकि *वह स्वभाव से पिता से उत्पन्न होता है, और पुत्र के माध्यम से सृष्टि पर प्रदान किया जाता है*।"[973] इस प्रकार, इन अंतिम शब्दों में, पवित्र शिक्षक उस वाक्यांश 'पुत्र के माध्यम से पिता से उत्पन्न होता है' के अपने अर्थ को स्पष्ट रूप से व्यक्त करते हैं, जिसे उन्होंने शुरुआत में बिना व्याख्या के कहा था।

4) *दमास्कस के संत जॉन*, जिन्होंने बार-बार यह भी कहा कि पवित्र आत्मा पिता से पुत्र के माध्यम से उत्पन्न होती है, इस अभिव्यक्ति को और भी स्पष्ट रूप से समझाते हैं: "हम पवित्र आत्मा, परमेश्वर पिता की आत्मा, का सम्मान करते हैं, जो उनसे उत्पन्न होती है, जिन्हें पुत्र की आत्मा भी कहा जाता है, क्योंकि वह उनके द्वारा (δι' αυτού) प्रकट हुई और सृष्टि को प्रदान की गई, लेकिन यह नहीं कि वह अपनी सत्ता उनसे प्राप्त करती है।"[974] हालांकि, हमने पहले ही कई समान उदाहरण देखे हैं जहाँ *'पुत्र के द्वारा'* अभिव्यक्ति का उपयोग पवित्र आत्मा के संदर्भ में सटीक रूप से यह इंगित करने के लिए किया गया है कि वह पुत्र के द्वारा या पुत्र के माध्यम से सृष्टि को दिया जाता है, कि वह उपस्थित है, भेजा गया है, और इसी तरह; उन्हें यहाँ दोहराना अनावश्यक होगा।[975]

(d) पवित्र पितरों और चर्च के शिक्षकों के कथन कि पवित्र आत्मा पुत्र में वास करता है, पुत्र पर विश्राम करता है, पुत्र से प्राप्त होता है, पुत्र की प्रतिमा है, आदि।[976] लेकिन—

क) पवित्र आत्मा पुत्र में वास करता है और उसी पर टिका रहता है, उसी कारण से कि पुत्र पिता में वास करता है और पिता पुत्र में (यूहन्ना 14:10), अर्थात् एकसारता द्वारा, उनके स्वभाव की पूर्ण अविभाज्यता द्वारा, और किसी भी तरह से पुत्र से उत्पन्न होने द्वारा नहीं: अन्यथा, उद्धारकर्ता के वचनों से: *'मैं पिता में हूँ और पिता मुझ में है'* — इससे यह निष्कर्ष निकाला जाना चाहिए कि वे एक दूसरे से उत्पन्न होते हैं;

(bb) विशेष रूप से, यह कहा गया है कि आत्मा पुत्र पर, एक ईश्वर-मानव के रूप में, भविष्यवक्ता के वचनों के अनुसार विश्राम करता है: *'और यहोवा का आत्मा उस पर विश्राम करेगा, ज्ञान और समझ का आत्मा, परामर्श और सामर्थ्य का आत्मा, ज्ञान और यहोवा के भय का आत्मा'* (यशायाह 11:2-3);

cc) आत्मा विश्वासियों द्वारा पुत्र से प्राप्त की जाती है, क्योंकि पुत्र हमारे उद्धारकर्ता और मध्यस्थ हैं, जिन्होंने हमें परमेश्वर से मिलाया है (इफिसियों 2:14–16) और, अपनी ही योग्यता के द्वारा, हमें *अपनी दिव्य शक्ति से... जीवन और भक्ति के लिए आवश्यक सब कुछ* प्रदान करने का अधिकार प्राप्त किया है (2 पतरस 1:3; तुलना करें। यूहन्ना 7:37), हमारे हृदयों में आत्मा का अनुग्रह डालने के लिए (तीतुस 3:6), जिसे इसलिए मसीह का अनुग्रह कहा जाता है (रोमियों 16:20);

---

[973] ... जीवित पिता से पुत्र के माध्यम से... क्योंकि वह (पिता) से स्वभाव से उत्पन्न होते हैं, और पुत्र के माध्यम से सृष्टि पर प्रदान किए जाते हैं (कॉन्ट्रा जूलियन, पुस्तक 1, पृ. 34-35, ओप. खंड I, सं. *ऑबर्टी*, पेरिस 1638)। पवित्र पिता आगे चलकर इसे फिर से दोहराते हैं (कॉन्ट्रा जूलियन, पुस्तक IV, पृ. 147, उद्धृत संस्करण)।

[974] ऊपर टिप्पणी 898 देखें।

[975] ऊपर टिप्पणियाँ 774, 842, 847, 848 और अन्य देखें।

[976] क्ले इन कथनों की ओर इशारा करते हैं (डॉग्मैटिक, खंड II, पृ. 183–184; डॉग्मेनशेचटे, खंड I, पृ. 217–218, मेनज़, 1837)।

gg) भले ही धर्मपिता कभी-कभी कहते हैं कि आत्मा पुत्र की प्रतिमा है, इससे यह निष्कर्ष नहीं निकलता कि आत्मा पुत्र से उत्पन्न होती है; क्योंकि कई ऐसी चीजें जो किसी अन्य से जन्म लेती हैं या निकलती हैं, वे उस चीज़ की प्रतिमा नहीं होतीं जिससे वे निकलती हैं (जैसे एक पेड़ से पैदा हुआ फल), और कोई केवल स्वभाव की एकता के कारण दूसरे की प्रतिमा हो सकता है, न कि उत्पत्ति के कारण (जैसे कभी-कभी दो लोग बिल्कुल एक जैसे पाए जाते हैं, भले ही वे संबंधित न हों)। पुत्र अदृश्य ईश्वर की प्रतिमा हैं, जो उनके समान सार के हैं और जिन्होंने उन्हें स्वयं में और स्वयं के द्वारा अपनी सृष्टियों के समक्ष शक्ति, अधिकार और अन्य दिव्य गुणों की समानता में प्रकट किया है और प्रकट करते रहते हैं (कुलु. 1:15; इब्रानियों 1:1-3); इसी प्रकार, पवित्र आत्मा को पुत्र की प्रतिमा कहा जा सकता है क्योंकि वह उससे एकसार है और क्योंकि वह अपनी बुद्धि, पवित्रता और संसार में अपने अन्य कार्यों के द्वारा पुत्र को—पिता का पुत्र के रूप में—प्रकट करता है। दूसरी ओर, ऐसा खिताब आत्मा के लिए इस तथ्य के अनुसार भी उपयुक्त है कि वह हम—विश्वासियों—को *अपने पुत्र की प्रतिमा के अनुरूप बनाने के लिए* कार्य करता है (रोमियों 8:29)।[977]

4) अंत में, गवाहियाँ हैं (हम इसे छिपाएंगे नहीं) जो चर्च के धर्मपिताओं की रचनाओं से सही ढंग से उद्धृत की गई हैं और जो वास्तव में स्पष्ट रूप से इस विचार को व्यक्त करती हैं कि पवित्र आत्मा (procedit) पिता और पुत्र से निकलता है। लेकिन—

सबसे पहले: इन लेखों में ये गवाहियाँ कहाँ पाई जाती हैं?

(क) पूर्वी चर्च के धर्मपिता और प्राचीन शिक्षकों में से, बिल्कुल भी नहीं: उनमें से किसी ने भी स्पष्ट रूप से यह नहीं कहा कि पवित्र आत्मा शाश्वत प्रवाह के अर्थ में पिता और *पुत्र* से *प्रवाहित होता है*। और उनके लेखों से उद्धृत अभिव्यक्तियाँ, जो अप्रत्यक्ष और अस्पष्ट हैं, इस विचार को बिल्कुल भी व्यक्त नहीं करती हैं।[978]

(b) न ही पश्चिमी चर्च के किसी भी पिता या शिक्षक ने, पाँचवीं शताब्दी तक—[979] —या धन्य ऑगस्टीन तक, जैसा कि उन्होंने स्वयं निम्नलिखित शब्दों में जोरदार ढंग से गवाही दी है: "जहाँ तक पवित्र आत्मा का प्रश्न है, *आज तक भी* विद्वानों और दिव्य शास्त्रों के महान व्याख्याकारों ने उनकी चर्चा इतनी गहनता और सावधानी से नहीं की है कि उनकी व्यक्तिगत प्रकृति को समझना आसान हो जाए, जिसके कारण हम उन्हें न तो पुत्र कहते हैं और न ही पिता, बल्कि ठीक पवित्र आत्मा कहते हैं... फिर भी, *वे* अपने उपदेश में यह मानते हैं कि पवित्र आत्मा पिता से उसी प्रकार उत्पन्न नहीं हुआ है जैसे पुत्र हुआ है—क्योंकि मसीह केवल एक ही है—और *न ही वह पुत्र से उत्पन्न हुआ है*, जैसे परम पिता (दादा) का पोता, बल्कि *यह कि* वह *अपनी अस्तित्व की ऋणी केवल पिता की है*, जिनसे सभी चीजें आती हैं — ताकि हम *दो* बिना आरंभ के *सिद्धांतों की* कल्पना करने से बच सकें, जो पूरी तरह से झूठा और बेतुका है, और कैथोलिक विश्वास की नहीं बल्कि कुछ विधर्मी लोगों की भूल की विशेषता है।"[980]

---

[977] संत बेसिल द ग्रेट भी इसे इसी तरह समझते हैं, कहते हुए: 'ईश्वर की प्रतिमा मसीह *हैं, जो,* जैसा लिखा है, *अदृश्य ईश्वर की प्रतिमा हैं* (कुलुस्सियों 1:15); जबकि पुत्र की प्रतिमा आत्मा है, और जो आत्मा में सहभागी होते हैं वे उसकी समानता में पुत्र बन जाते हैं, जैसा लिखा है: '*क्योंकि जिन्हें उसने पहले से जाना, उन्हें उसने पहले से यह निश्चित किया कि वे उसके पुत्र की प्रतिमा के अनुरूप हों, ताकि वह बहुत भाइयों में पहलौठा हो* जाए' (रोमियों 8:29)।" और आगे: "एक सृजित प्राणी दूसरे सृजित प्राणी को पवित्र नहीं करता, बल्कि सभी एक ही पवित्र जन द्वारा पवित्र किए जाते हैं, जो अपने विषय में कहते हैं, *'मैं पवित्र करता हूँ'* (यूहन्ना 17:19)। वह आत्मा के द्वारा पवित्र करते हैं। इसलिए, आत्मा एक सृजित प्राणी नहीं है, बल्कि ईश्वर की पवित्रता का प्रतिबिंब और सभी के लिए पवित्रता का स्रोत है। हमें आत्मा के पवित्रस्थान में बुलाया गया है, जैसा कि प्रेरित सिखाते हैं (2 थिस्स. 2:13)। वह हमें नवीनीकृत करता है और परमेश्वर के स्वरूप में पुनर्निर्मित करता है" (युनोमियस के विरुद्ध, पुस्तक V, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, VII, पृ. 190 और 192)।

[978] हमने ऐसे अभिव्यक्तियों या गवाहियों में से अधिक महत्वपूर्णों की जांच की है; अन्य सभी की विस्तृत जांच, जिन्हें चर्च के पूर्वी शिक्षकों से भी उद्धृत किया गया है और असहमत लोगों द्वारा गलत व्याख्या किया गया है, ज़र्नकिाव के *De process. Spir. I. Tract. XV*, पृष्ठ 693–856 में पाई जा सकती है।

[979] आमतौर पर टर्टुलियन, हिलारी और एम्ब्रोज़ की गवाहियों का हवाला दिया जाता है। लेकिन हम पहले ही पहले दो शिक्षकों की गवाहियों के महत्व को देख चुके हैं (देखें टिप्पणियाँ 962–964, 972)। जहाँ तक एम्ब्रोज़ की गवाही के महत्व का सवाल है, हम इसे बाद में देखेंगे (देखें टिप्पणी 987)।

[980] *De fide et symbolo*, अध्याय IX, संख्या 19, *Patrolog. curs. compl.*, खंड XXXVI, पृ. 191 में। यह भी जोड़ा जा सकता है कि धन्य ऑगस्टीन के ये शब्द न केवल पश्चिमी शिक्षकों पर बल्कि पूर्वी शिक्षकों पर भी लागू होते हैं।

c) पाँचवीं शताब्दी में ही, पश्चिमी धर्मशास्त्रियों के संकेतों के अनुसार,[981] ऐसी गवाहियाँ केवल धन्य ऑगस्टीन के कार्यों में ही मिलती हैं — तीन या चार,[982] एक संत लियो, रोम के पोप द्वारा, और एक जेनाडियस ऑफ मैसिलीया,[983] द्वारा, और फिर छठी शताब्दी के कुछ अल्पज्ञात लेखकों के कार्यों में: पास्कासियस, रोमन चर्च का डिकन; फुलजेंटियस, रुस्पेन के बिशप; फुलजेंटियस फेरैंडस; और वेनांटियस फॉर्चुनाटस।[984] बाद के लेखकों, अर्थात् सातवीं और आठवीं शताब्दियों के लेखकों का उल्लेख करना अनावश्यक होगा, जब पश्चिम में पवित्र आत्मा की प्रवासन को लेकर खुले विवाद पहले ही शुरू हो चुके थे।

दूसरा: तो इन गवाहियों के बारे में क्या कहा जा सकता है?

a) कोई उनकी प्रामाणिकता और अखंडता पर संदेह कर सकता है:

aa) क्योंकि वे केवल पश्चिमी लेखकों की कृतियों में ही पाए जाते हैं; और पश्चिम में ऐसी गवाहियों में हेरफेर करने, या उन्हें प्राचीनों की रचनाओं में डालने के मकसद हमेशा से रहे हैं, जब से वहाँ पुत्र से पवित्र आत्मा के प्रवाह को लेकर खुली बहस शुरू हुई, यानी 8वीं सदी से;

bb) क्योंकि पश्चिम में उनके पास न केवल ऐसी गवाहियों में छेड़छाड़ करने या प्राचीनों की रचनाओं में उन्हें डालने के कारण थे, बल्कि उन्होंने वास्तव में ऐसा किया भी — जैसा कि हमें कई उदाहरणों से निर्विवाद रूप से पता है, और जैसा कि पश्चिमी विद्वान स्वयं अब अक्सर स्वीकार करते हैं, धन्य की कृतियों के प्रकाशन में ऑगस्टाइन, हिलरी, प्रॉस्पर और अन्य;[985]

(ग) अंत में, क्योंकि वही लेखक जिनसे हमें ऐसी गवाहियाँ प्रस्तुत की जाती हैं, मानो पवित्र आत्मा पुत्र से उत्पन्न होता है—अर्थात्, पास्कासियस, फुलजेंटियस, लियो महान और ऑगस्टाइन—अपने लेखन के अन्य भागों में बिल्कुल अलग बात कहते हैं, जैसा कि हमने देखा है; वास्तव में, ऑगस्टाइन और विशेष रूप से फुलजेंटियस इस सिद्धांत को स्पष्ट रूप से अस्वीकार भी करते हैं।[986] इन सबके आधार पर, कम से कम, हम इन उपरोक्त गवाहियों पर तब तक विश्वास न करने के हकदार हैं, जब तक कि हम उनकी प्रामाणिकता और प्राचीन पांडुलिपियों की अखंडता से आश्वस्त न हो जाएँ, जो आठवीं या यहाँ तक कि सातवीं शताब्दी की हो सकती हैं।

b) यदि, तथापि, हम इन साक्ष्यों की प्रामाणिकता और अखंडता को स्वीकार करने के लिए तैयार हैं, तो इन्हें पश्चिम में वर्तमान में जिस प्रकार समझा जाता है, उससे भिन्न रूप में समझा जा सकता है। यह कल्पना की जा सकती है कि 5वीं, 6वीं और 7वीं शताब्दी के कुछ रोमन लेखकों ने, पुत्र से पवित्र आत्मा के निकलने की बात करते समय, क्रिया *'निकलना'* (procedit) का उपयोग केवल दुनिया में एक अस्थायी प्रस्थान या मिशन के अर्थ में किया। क्योंकि—

(aa) इसमें कोई संदेह नहीं है कि 'procedit' क्रिया का कभी-कभी इस अर्थ में उपयोग चौथी शताब्दी के प्रारंभ में ही लैटिन लेखकों द्वारा किया जाता था, जैसा कि स्वयं पश्चिमी विद्वानों और उनके सबसे हालिया संपादकों की स्वीकृत दृष्टि के अनुसार संत एम्ब्रोज़ के उदाहरण से स्पष्ट है;[987]

---

[981] *पेटाविय*— *De Trinit.*, पुस्तक VII, अध्याय 8; *Curs. Theolog. compl.*, खंड VIII, पृ. 635–637; *क्ली*— *Dogmatik*, खंड 11, पृ. 184–186; *पेरोन*, उद्धृत ग्रंथ, पृ. 424.

[982] De Trinit. पुस्तक IV, अध्याय 20, टिप्पणी 29; पुस्तक XV, अध्याय 17, टिप्पणी 29; अध्याय 26, टिप्पणी 47। धन्य ऑगस्टीन की रचनाओं में इस प्रकार के कुछ अन्य अंश दूषित हैं (ऊपर टिप्पणी 933 देखें)।

[983] *लियो,* एपिस्ट. XV एड टुरबिियम, एस्टोरगा के बिशप, अध्याय 1; *जेनाडियस*— चर्च संबंधी सिद्धांतों पर पुस्तक, अध्याय 1.

[984] *पास्कासियस*— *De Spiritus Sancto*, पुस्तक 1, अध्याय 12; *फुलजेन्टियस*— *De fide ad Petrum diac.*, अध्याय II, संख्या 52; *फेरेंडस* — *Epist. adv. Arian.*, अध्याय 2, **Mai* Collect.*, खंड III में; *फॉर्चुनाटस*— *Expos. fidei cathol.*

[985] *अगस्टीन।* मैक्सिमिस द फिजिशिन को पत्र 170, संख्या 3, *पैट्रोलॉजिया कर्सस कम्प्लेटस*, खंड XXXIII, पृष्ठ 749 सब टेक्स्टू में: "'*फिलियोक्वे' वाक्यांश* कॉर्ब., जर्म., रेजियो और विक्ट. के पांडुलिपियों में, साथ ही कुछ अन्य कोडीसेस, जैसे कि बाडेन, एम्स्टर्डम और एरफर्ट के संस्करणों में अनुपस्थित है; *जो* इस श्लोक को पूरी तरह से छोड़ देते हैं: *'परन्तु वह पिता और पुत्र से उत्पन्न हुआ, ताकि वह न तो पुत्र द्वारा, और न ही पिता द्वारा बनाया गया हो।*' इसी प्रकार — *Enchiridion ad Laurent.*, अध्याय 9, *Patrologia Cursus Completus*, खंड XXXVI, पृष्ठ 236, sub textu, n. 1 में; *हिलारियन,* *De Trinitate*, पुस्तक VIII, अध्याय 20, उपर्युक्त में पैट्रोलॉजी. खंड X, पृ. 251, पाठ के नीचे नोट b. d.; *प्रोस्पर,* सेंटेंस की पुस्तक, ऑगस्टीन के कार्यों से, सेंट. 370, उद्धृत पैट्रोलॉजी. खंड LI में, पाठ के नीचे नोट s; *निकेटास*— पवित्र आत्मा की शक्ति पर, अध्याय 5, उद्धृत पैट्रोलॉजी. खंड LII, पृ. 856, पाठ के नीचे नोट i.

[986] ऊपर टिप्पणियाँ 837, 875, 876, 899–901 और 903 तथा उन टिप्पणियों में उल्लिखित पाठ देखें।

[987] यहाँ संत एम्ब्रोज़ के शब्द हैं: 'आत्मा इसलिए किसी स्थान से प्रेषित नहीं किया जाता, न ही वह किसी स्थान से उत्पन्न होता है, जब वह पुत्र से उत्पन्न होता है, ठीक वैसे ही जैसे पुत्र स्वयं कहते हैं: "*मैं पिता से निकलकर संसार में आया हूँ*" (यूहन्ना 16:18)।' और आगे: 'न ही, जब पुत्र

bb) ठीक इसी अर्थ में, 'पवित्र आत्मा पुत्र से उत्पन्न होता है (procedit)' वाक्यांश का उपयोग पश्चिम में सातवीं शताब्दी तक भी कभी-कभी किया जाता था, जैसा कि संत मैक्सिमिस द कन्फेसर ने अपने समय में यूनानियों के बारे में गवाही दी थी, जिन्होंने इस बारे में विशेष रूप से रोमन शिक्षकों से पूछताछ की थी; cc) पश्चिम में, कुछ लोगों ने उपरोक्त अभिव्यक्ति को 9वीं शताब्दी तक भी इसी अर्थ में समझा, जैसा कि हमें अनास्तासियस द लाइब्रेरियन के वृत्तांत से पता चलता है।[988]

ग) अंत में, यदि हम इन गवाहियों की व्याख्या उसी तरह करने के लिए सहमत हैं जैसे पश्चिमी चर्च के ईसाई आज उन्हें समझते हैं—अर्थात्, कि धन्य अगस्टाइन, फुलजेंटियस और पाँचवीं तथा छठी शताब्दी के कुछ अन्य लोग पवित्र आत्मा के न केवल पिता से बल्कि पुत्र से भी शाश्वत रूप से निकलने में विश्वास रखते थे: उस स्थिति में, उनके विश्वास को केवल उनकी *निजी राय के रूप में* ही पहचाना जाना चाहिए, और कुछ भी नहीं। क्योंकि इसे किसी भी तरह से पूरी कलीसिया का विश्वास या कोई धर्मशास्त्र नहीं कहा जा सकता —

(क) वह जो अपनी उत्पत्ति को बिना किसी रुकावट के पवित्र प्रेरितों तक नहीं ट्रेस करता है और पहली चार शताब्दियों तक न तो पूर्व में और न ही पश्चिम में चर्च में ज्ञात था;

bb) कि जिसे, पाँचवीं शताब्दी के बाद से, केवल पश्चिम में बहुत कम लोगों ने कभी-कभी अपनी रचनाओं में व्यक्त किया, और तब भी इस तरह से कि अन्य, उनके अपने करीबी सह-विश्वासियों ने, इस नई शिक्षा को अविश्वसनीय,[989] या अलग तरह से समझा;[990]

cc) कि, धीरे-धीरे पैर पसारते हुए, यह आठवीं शताब्दी में पश्चिम में तीव्र विवादों का विषय बन गया, जिसमें कुछ लोग इसे मानने के लिए सहमत थे जबकि अन्य नहीं थे;[991]

(dd) अंत में, जिसका पुष्टि और प्रसार के लिए 9वीं शताब्दी की शुरुआत में कुछ पश्चिमी ईसाइयों के बीच आखेन में एक परिषद बुलाई गई थी, लेकिन मतभेद के कारण इसमें कोई निर्णय नहीं हुआ, और जिसे पोप लियो III ने बाद में स्वयं यह आदेश दिया कि सभी पर नहीं, बल्कि केवल उन लोगों पर विश्वास किया जाए जो इतने ऊँचे रहस्य को समझने में सक्षम हैं।[992]

§47. सभी जांचे गए पैट्रिस्टिक साक्ष्यों से निकाला गया निष्कर्ष।

इस निष्कर्ष को दो प्रस्तावाओं में संक्षेपित किया जा सकता है:

1. कि पवित्र आत्मा पिता से निकलता है—यह वही है जो पूरी ईसाई कलीसिया, पूर्वी और पश्चिमी दोनों, के पादरियों ने ईसाई धर्म की शुरुआत से ही सिखाया है; जबकि यह शिक्षा कि पवित्र आत्मा पुत्र से भी उत्पन्न होता है, केवल पाँचवीं शताब्दी के बाद ही (संबंधित गवाहियों की प्रामाणिकता और अखंडता को मानते हुए) दी जाने लगी, और वह भी केवल पश्चिम में, बहुत ही कम लोगों द्वारा और कई लोगों के विरोध के बीच, जब तक कि यह सिद्धांत वहाँ नौवीं शताब्दी से पहले स्थापित नहीं हो गया। परिणामस्वरूप

पिता से निकलते हैं, तो वे किसी स्थान से प्रस्थान करते हैं… न ही पवित्र आत्मा, जब वे पिता और पुत्र से निकलते हैं, पिता से पृथक होते हैं, न ही पुत्र से पृथक होते हैं' (ये वही शब्द हैं जिन्हें पश्चिमी विद्वान अपने झूठे सिद्धांत के समर्थन में एम्ब्रोस से उद्धृत करते हैं)। अब, उद्धृत दोनों अंशों पर संपादकों की एक टिप्पणी: 'यहाँ, एम्ब्रोस *"प्रस्थान"* शब्द का उपयोग आत्मा के *तात्कालिक मिशन को* दर्शाने के लिए करते हैं; इसलिए, यह आश्चर्यजनक है कि एस्टियस, अपनी *सेंटेंशियाई* की पुस्तक 1, डिस्ट. में 14: यह *ध्यान दिया जाना चाहिए कि चर्च-पिता (Patrons) के लेखों में ऐसा कोई उदाहरण खोजना आसान नहीं है जहाँ पवित्र आत्मा के मिशन को 'प्रस्थान' (procession) शब्द से सूचित किया गया हो, सिवाय बेडे* आदि के कार्यों के (**Ambros.* de Spirit. S. lib. 1, cap. 10, n. 119, 120 और उद्धृत पैट्रोलॉजी में पाठ के नीचे टिप्पणियाँ*). हम यह भी जोड़ सकते हैं कि संत एम्ब्रोस से उद्धृत दूसरी उद्धरण-वाक्य में 'दो बार' शब्द आता है — जबकि 'फिलियो' (Filio) का उल्लेख, बिना किसी कारण *के नहीं है*। खंड XVI, पृ. 732–733)। हम यह भी जोड़ सकते हैं कि संत एम्ब्रोज़ के उद्धृत अंशों में से दूसरे में, *'—a Filio'* की पुनरावृत्ति को, बिना किसी कारण के नहीं, एक अंतःस्थापन माना जाता है (ज़ोर्नकिॉव., *De process. Spir. S.*, Tract. III, corruptel. 7, पृ. 270)।

[988] ऊपर टिप्पणियाँ 701 और 702 देखें।

[989] आइए रोमन चर्च के कार्डिनल-डीकन, रस्टिकस के शब्दों को याद करें। देखें टिप्पणी 904।

[990] उन्होंने पुत्र से पवित्र आत्मा की प्रवाहिनी (प्रोसेसियो) को केवल *एक अस्थायी प्रवाहिनी के* अर्थ में समझा (टिप्पणियाँ 701 और 702)।

[991] ऊपर टिप्पणियाँ 819, 838 और 839 देखें।

[992] ऊपर टिप्पणियाँ 818–826 और उस पाठ को देखें जिसका वे संदर्भ देते हैं।

2. पवित्र आत्मा का पिता से उत्पन्न होने की धारणा को अनादि काल से चर्च और उसके सार्वभौमिक विश्वास के एक धर्मशास्त्र के रूप में माना जाता रहा है; जबकि पवित्र आत्मा का पुत्र से भी उत्पन्न होने की धारणा केवल पाँचवीं शताब्दी में कुछ लोगों द्वारा रखी गई एक निजी राय या विश्वास के रूप में उभरी, और नौवीं शताब्दी तक पश्चिम में भी इसे एक धर्मशास्त्र नहीं माना गया।

हम यहाँ पवित्र आत्मा ईश्वर की व्यक्तिगत प्रकृति की हमारी परीक्षा समाप्त कर सकते हैं। हालाँकि, चूंकि असहमति रखने वाले लेखक ईश्वर के वचन और चर्च की सकारात्मक शिक्षाओं पर आधारित धर्मशास्त्रीय मन के तर्कों के साथ अपने झूठे सिद्धांत को और अधिक मजबूत करने का प्रयास करते हैं, और दूसरी ओर, चूंकि ऑर्थोडॉक्स सिद्धांत के रक्षक प्राचीन काल से ही त्रुटिपूर्ण विचारों के खिलाफ उन्हीं हथियारों का उपयोग करते आए हैं,[993] हम इस विषय पर भी कुछ शब्द कहना अनावश्यक नहीं समझते।

§48. पवित्र आत्मा की उत्पत्ति के संबंध में धर्मशास्त्रीय तर्क के तर्कों पर एक विचार।

1. ऑर्थोडॉक्स धर्मशास्त्री आमतौर पर इस सिद्धांत की रक्षा के लिए कौन से तर्क प्रस्तुत करते हैं कि पवित्र आत्मा केवल पिता से ही निकलता है, और पुत्र से भी संयुक्त रूप से नहीं निकलता है?

इनमें से सबसे महत्वपूर्ण इस प्रकार हैं:

1.1. यह निर्विवाद सत्य, जिसे सभी ईसाइयों—पूर्वी और पश्चिमी दोनों चर्चों में—स्वीकार किया गया है, कि पवित्र त्रिमूर्ति में पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा सार में एक हैं लेकिन व्यक्तियों के रूप में अलग हैं, और इसलिए दो प्रकार के गुणों के अधिकारी हैं: आवश्यक, अविभाज्य गुण, जो सभी में सामान्य हैं, और व्यक्तिगत, विशिष्ट गुण, जो विशेष रूप से प्रत्येक में व्यक्तिगत रूप से पाए जाते हैं। अब प्रश्न उठता है: हमें पिता के किस पहलू को यह श्रेय देना चाहिए कि वह स्वयं से पवित्र आत्मा को उत्पन्न करते हैं (जैसे कि वह पुत्र को जन्म देते हैं)? तत्व से, या व्यक्तित्व से? यदि तत्व से, तो यह मानना पड़ेगा कि पवित्र आत्मा न केवल पिता और पुत्र से, बल्कि स्वयं से भी उत्पन्न होता है (एक ऐसी अव्यवहारिकता जिसे पश्चिमी ईसाई भी स्वीकार नहीं करते) — क्योंकि सभी दैवीय व्यक्तियों का तत्व एक और अविभाज्य है। हालाँकि, यदि यह किसी व्यक्ति से उत्पन्न होता है, तो यह स्वीकार करना होगा कि पवित्र आत्मा केवल परमपिता से ही उत्पन्न होता है — क्योंकि परमपिता, एक व्यक्ति के रूप में, पुत्र और पवित्र आत्मा से पूरी तरह से अलग हैं, और जो एक का है वह दूसरे का नहीं हो सकता।

1.2. यह एक निर्विवाद सत्य है, जिसे सभी ईसाई आदिकाल से स्वीकार करते आए हैं, कि पवित्र त्रिमूर्ति में, यद्यपि तीन व्यक्ति हैं, परन्तु सिद्धांत केवल एक ही है — μοναρχία।[994] और हम इस सत्य का पूर्णतःसमर्थन करते हैं और ईश्वरत्व में सिद्धांत की एकता की घोषणा करते हैं जब हम कहते हैं कि पुत्र की उत्पत्ति हुई है और पवित्र आत्मा एक ही पिता से उत्पन्न होता है। लेकिन पश्चिमी ईसाई इस सत्य का समर्थन नहीं करते हैं और ईश्वरत्व के भीतर एक नहीं बल्कि दो सिद्धांतों को स्वीकार करते हैं जब वे यह दावा करते हैं कि पवित्र आत्मा पिता और पुत्र दोनों से उत्पन्न होता है, क्योंकि पिता और पुत्र केवल सार में एक हैं; जबकि व्यक्तियों के रूप में, वे दो हैं, और उनके बीच सार में एकता के अलावा कोई अन्य एकता नहीं है, जो पवित्र आत्मा के लिए एकमात्र स्रोत का गठन करे — हालाँकि, यह मानना कि पवित्र आत्मा का उत्पत्ति करना पिता और पुत्र के सार से संबंधित है, जो पवित्र आत्मा स्वयं में भी सामान्य है, जैसा कि हमने देखा है, एक बेतुकापन स्वीकार करना है।

1.3. संपूर्ण ईसाई चर्च, पूर्वी और पश्चिमी दोनों, ने अनादि काल से यह सिखाया है और सिखाती आ रही है कि, पवित्र त्रिमूर्ति में, जैसे सार को विभाजित नहीं किया जाना चाहिए, वैसे ही हाइपोस्टेसिस को भी विलीन नहीं किया जाना चाहिए, यह सबेलीय संप्रदाय के विधर्मियों के विपरीत है। फिर भी पश्चिमी शिक्षक अब पिता और पुत्र के हाइपोस्टेसिस को एक-दूसरे में मिला देते हैं (और परिणामस्वरूप सेबेलीयनवाद में पड़ जाते हैं), कम से कम इस हद तक कि वे सार में एकता के अलावा, उनके बीच एक विशेष संघ को स्वीकार करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप ये दोनों व्यक्ति, एक ही और,

---

[993] उदाहरण के लिए, पैट्रिआर्क फोतिउस ने अपनी प्रसिद्ध परिपत्र पत्र में पूर्वी पैट्रिआर्कों को, और मार्क ऑफ़ एफ़ेसस ने अपनी विशेष ग्रंथ *पवित्र आत्मा की प्रक्रिया पर: लैटिनों को संबोधित तार्किक अध्याय* में, संपादित किया। पवित्र आत्मा की प्रक्रिया पर एडम ज़्रनिकाव के प्रबंध के यूनानी अनुवाद में यूजीन बुल्गर, खंड II, पृष्ठ 709–741,

[994] ऊपर देखें, टिप्पणियाँ 856, 862, 872 और 972।

जैसा कि वे कहते हैं, अविभाज्य कार्य द्वारा, स्वयं से पवित्र आत्मा को उत्पन्न करते हैं, और दो सिद्धांतों या कारणों के बजाय, उसके लिए एक सिद्धांत, एक कारण के रूप में कार्य करते हैं।

1.4. सार्वभौमिक चर्च की शिक्षा के अनुसार, पवित्र त्रिमूर्ति के तीनों व्यक्तियों का एकत्व *केवल* सार में है; परिणामस्वरूप, जो एकत्व पुत्र का पिता के साथ है, वही एकत्व पवित्र आत्मा का भी है। हालाँकि, पश्चिमी शिक्षक अब यह स्वीकार करते हैं कि पुत्र की पिता के साथ आत्मा की तुलना में अधिक एकता है, जब वे कहते हैं कि पिता और पुत्र उस संयुक्त कार्य के संबंध में भी एक हैं, जिसके द्वारा वे स्वयं से पवित्र आत्मा के रूप में प्रकट होते हैं; वे पवित्र आत्मा के एकल, शाश्वत रूप से अविभाज्य सिद्धांत के रूप में एक हैं।

1.5. सार्वभौमिक चर्च ने हमेशा ईश्वर में केवल सार में एकता और व्यक्तियों में त्रित्व को पहचाना है। लेकिन पश्चिमी शिक्षक न केवल अब ईश्वरत्व में एकता और त्रित्व को पहचानते हैं, बल्कि इसमें द्वैत को भी शामिल करते हैं। वे *एकता को* स्वीकार करते हैं: क्योंकि वे सिखाते हैं कि पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा सार में *एक* हैं; वे *त्रित्व को* स्वीकार करते हैं: क्योंकि वे सिखाते हैं कि पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा *तीन* व्यक्ति हैं; वे *द्वैत* लाते हैं: क्योंकि वे सिखाते हैं कि पिता और पुत्र पवित्र आत्मा के संबंध में *एक* शाश्वत अविभाज्य *इकाई* बनाते हैं , उसके स्रोत के रूप में, जबकि पवित्र आत्मा, उनके संबंध में, इस स्रोत से उत्पन्न होकर *एक अन्य इकाई* बनाता है।[995]

इस मामले पर ऑर्थोडॉक्स चर्च के सभी विचारों की निर्विवादता स्वयंसिद्ध है। वे सार्वभौमिक चर्च की निर्विवाद शिक्षा पर आधारित हैं, और स्वस्थ तर्क के नियमों के अनुसार, बिना किसी तनाव के रचे गए हैं।

2. पश्चिमी धर्मशास्त्री आमतौर पर इस विचार का समर्थन करने के लिए कौन से तर्क प्रस्तुत करते हैं कि पवित्र आत्मा पुत्र से भी निकलता है?

स्कॉलरियों द्वारा रचे गए उन सभी में से, आज केवल चार ही प्रचलित हैं और इसलिए उन्हें—सापेक्ष रूप से—सबसे अच्छे के रूप में मान्यता प्राप्त है:

2.1. "यदि पवित्र आत्मा पुत्र से उत्पन्न नहीं होता, तो वह वास्तव में उससे अलग नहीं होता; क्योंकि परम पवित्र त्रिमूर्ति के व्यक्तियों—पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा—जिनमें सब कुछ एक है, वे एक दूसरे से केवल एक व्यक्ति के दूसरे व्यक्ति के प्रति विपरीत संबंध के माध्यम से, एक कारण के रूप में और दूसरे से उत्पन्न होने वाले के रूप में, और इसके विपरीत, अलग किए जाते हैं।"[996] लेकिन ये दोनों विचार पूरी तरह से मनमाने हैं और न केवल इनमें प्राचीन चर्च की सकारात्मक शिक्षा का कोई आधार नहीं है, बल्कि वे सीधे तौर पर इसका खंडन भी करते हैं: क्योंकि—

a) चर्च ने अनादि काल से यह सिखाया है कि यद्यपि पुत्र और पवित्र आत्मा एक ही पिता से हैं, वे एक-दूसरे से इस प्रकार भिन्न हैं कि पुत्र पिता से उत्पन्न हुआ है, जबकि पवित्र आत्मा उनसे उद्भूत होता है, और —

b) सामान्यतः इसने दिव्य व्यक्तियों को उनके बीच किसी प्रकार के विरोधी संबंध के माध्यम से नहीं बल्कि इस विश्वास द्वारा अलग किया है कि पिता अजन्मे हैं, पुत्र पिता से उत्पन्न हुए हैं, और पवित्र आत्मा पिता से उत्पन्न होते हैं।[997]

2.2. "केवल पवित्र आत्मा के पुत्र से उत्पन्न होने को स्वीकार करने से ही हम उनके बीच सही संबंध की कल्पना कर सकते हैं। यह सच है कि इसके बिना भी, वे एक निश्चित तरीके से संबंधित हैं—पहले, एकता के संदर्भ में, क्योंकि दोनों एक ही पिता से उत्पन्न होते हैं; और दूसरे, भेद के संदर्भ में, क्योंकि दोनों अलग-अलग तरीकों से उत्पन्न होते हैं। लेकिन यह उनके बीच एक प्रत्यक्ष संबंध नहीं है, और परिणामस्वरूप, यह उच्चतम और सबसे पूर्ण संबंध नहीं है, जिसे पवित्र त्रिमूर्ति के भीतर समझा जाना चाहिए।"[998] एक बार फिर, ये विचार किसी भी तरह से चर्च की सकारात्मक शिक्षा पर आधारित नहीं हैं और मनमाने हैं; क्योंकि किसी आधार पर कोई यह दावा कर सकता है कि परम पवित्र त्रिमूर्ति के व्यक्तियों के बीच, अलग व्यक्तियों के रूप में, एक प्रत्यक्ष पारस्परिक संबंध होना चाहिए, जबकि उन सभी में से, पवित्र चर्च की शिक्षा के अनुसार, सार में एक या पूरी तरह से अविभाज्य हैं, और परिणामस्वरूप, क्या वे एक-दूसरे के साथ केवल प्रत्यक्ष से भी अधिक किसी संबंध में मौजूद हैं? दूसरी ओर, पुत्र और पवित्र आत्मा के बीच इंगित अन्य दो

---

[995] इस प्रकार के कई अन्य तर्क, जो ऑर्थोडॉक्स द्वारा लैटिनों के विरुद्ध प्रस्तुत किए गए हैं, उपरोक्त (टिप्पणी 993) में उल्लेखित मार्क ऑफ़ एफ़ेसस की कृति में, साथ ही ज़र्नकिव के *De process. Spir. S.*, Tract. VI, पृ. 431–460 में पाए जा सकते हैं।

[996] *Curs. Theolog. compl.* खंड VIII, पृ. 641; *Perrone,* op. cit., पृ. 441.

[997] ऊपर टिप्पणियाँ 743, 746, 844, 865, 872, 883, 885–888 देखें।

[998] क्लो इस तर्क को इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं — *डॉगमैटिक*, खंड 11, पृ. 187.

संबंधों—अर्थात् स्रोत की एकता और उस स्रोत से उत्पत्ति के भेद पर आधारित संबंधों—को सबसे परिपूर्ण क्यों न माना जाए?

2.3. 'यदि पवित्र आत्मा, पिता से निकलने के समान, पुत्र से नहीं निकलता है, तो पिता पुत्र से दो पहलुओं में भिन्न हैं: अर्थात्, स्वयं से पुत्र को जन्म देने में और स्वयं से आत्मा को भेजने में। लेकिन प्रत्येक दैवीय व्यक्ति के लिए केवल *एक ही* भेद, एक ही विशिष्ट लक्षण स्वीकार किया जाना चाहिए, क्योंकि उनकी पूर्णता उच्चतम संभव एकता में उतनी ही निहित है जितनी कि सबसे कम संभव संख्या में भेदों में, और परिणामस्वरूप इस तथ्य में कि प्रत्येक व्यक्ति को एक विशिष्ट या व्यक्तिगत गुण के अलावा कुछ और नहीं सौंपा जाता है।"[999] लेकिन हम में से किसके पास यह निर्धारित करने का अधिकार है कि परम पवित्र त्रिमूर्ति के प्रत्येक व्यक्ति की व्यक्तिगत प्रकृति में कितने विशिष्ट गुण होने चाहिए, जबकि यह रहस्य हमारी समझ से परे है, और जब प्राचीन चर्च की सकारात्मक शिक्षा स्पष्ट रूप से बताती है कि पिता की व्यक्तिगत प्रकृति में वास्तव में न केवल दो, बल्कि तीन विशिष्ट गुण शामिल हैं: कि वह स्वयं किसी से उत्पन्न नहीं हुए और किसी से उद्भूत नहीं हुए; कि वह पुत्र को उत्पन्न करते हैं; और कि वह स्वयं से पवित्र आत्मा को उद्भूत करते हैं? और, दूसरी ओर, यह कैसी धारणा है कि दैवीय व्यक्तियों की परम पूर्णता के लिए यह आवश्यक है कि उनमें से प्रत्येक के पास एक से अधिक विशिष्ट गुण न हो, और यह कि यदि हम उनके व्यक्तिगत स्वभाव को दो या तीन अलग-अलग विशेषताएँ प्रदान करें तो पिता पूर्ण रूप से पूर्ण नहीं रहेंगे?

2.4. "पुत्र पिता से सब कुछ प्राप्त करते हैं, सिवाय पितृत्व के, जो अकेला अविभाज्य है; परिणामस्वरूप, वह दिव्य, फलदायी (fruchtbaren) इच्छा भी प्राप्त करते हैं। और इसलिए, पुत्र, पिता के साथ और पिता के सदृश, अपनी इच्छा के द्वारा पवित्र आत्मा की उत्पत्ति में दिव्य रूप से (ist fruchtbar) सहभागी होते हैं।"[1000] लेकिन हमें यह कैसे पता चलता है कि केवल पिता के पास ही पितृत्व का गुण है, जबकि पवित्र आत्मा के उत्पन्न होने का गुण साझा है, जबकि इसके विपरीत, चर्च के प्राचीन शिक्षकों ने दोनों को समान रूप से पिता के एकल व्यक्तित्व से जोड़ा, और कहा कि पुत्र ने पिता से सब कुछ प्राप्त किया, सिवाय किसी अन्य व्यक्ति (हाइपोस्टेसिस) का कारण होने के गुण के, अर्थात् पुत्र को जन्म देने का गुण और पवित्र आत्मा के प्रकट होने का गुण दोनों?[1001] और, दूसरे, यह विचार कहाँ से उत्पन्न होता है कि पुत्र, पिता के साथ मिलकर, पवित्र आत्मा को स्वयं से, जैसे कि इच्छा के माध्यम से, प्रकट करता है?

§ 49. सामान्य निष्कर्ष।

चूंकि हमने, जहाँ तक संभव है, उन सभी बातों का सर्वेक्षण कर लिया है जिन्हें पूर्वी और पश्चिमी दोनों ईसाई, पवित्र आत्मा परमेश्वर की व्यक्तिगत प्रकृति पर अपनी शिक्षा के समर्थन में सबसे उल्लेखनीय के रूप में प्रस्तुत करते हैं, अब हम पूरी स्पष्टता से यह निर्णय कर सकते हैं कि सत्य किस पक्ष में है; हम निष्पक्ष रूप से विचार करने वाले किसी भी व्यक्ति से कह सकते हैं: *आओ और देखो।*

पूर्वी ऑर्थोडॉक्स चर्च पवित्र आत्मा के प्रवाहन के बारे में ठीक वैसे ही सिखाती है जैसे परमेश्वर का वचन स्वयं पूर्ण स्पष्टता के साथ सिखाता है, ठीक वैसे ही जैसे प्राचीन धर्मविश्वास और परिषदें—समस्त-चर्च और स्थानीय दोनों—सिखाती हैं, और ठीक वैसे ही जैसे सभी पवित्र पिता और चर्च के शिक्षक, पूर्वी और पश्चिमी दोनों, और अंत में, जैसा कि यह धर्मशास्त्रीय मन की विचारधाराओं के अनुसार तर्कसंगत और न्यायसंगत साबित होता है। तो फिर, दिल पर हाथ रखकर, कौन यह दावा करने की हिम्मत करेगा कि हम, पिता से पवित्र आत्मा के प्रवाह में विश्वास करके, सत्य से भटक गए हैं? कौन अच्छी अंतरात्मा के साथ, हमें भूल या विधर्म का दोषी ठहराने की हिम्मत करेगा, — जबकि हमें त्रुटि या विधर्म का दोषी ठहराना, चर्च के सभी पवित्र पिताओं और शिक्षकों को उसी बात का दोषी ठहराना है, सार्वभौमिक परिषदों—केवल स्थानीय परिषदों को नहीं—और वास्तव में पूरी प्राचीन कलीसिया को उसी बात का दोषी ठहराना है, और तो और स्वयं परमेश्वर के वचन को ही त्रुटि या विधर्म का दोषी ठहराना है? हम दोहराते हैं, कौन ऐसी ईश्वरनिंदा करने की हिम्मत करेगा?

इसके विपरीत, पवित्र आत्मा के 'और पुत्र से' प्रवाहित होने के बारे में पश्चिमी चर्च की शिक्षा परमेश्वर के वचन पर नहीं, बल्कि केवल उसमें मौजूद विभिन्न अंशों की एक विकृत व्याख्या पर आधारित है; न तो चर्च और

---

[999] क्लोए — वही, पृ. 187–188.

[1000] क्लोए — वही, पृ. 188.

[1001] ऊपर टिप्पणियाँ 746, 886–896 देखें।

सार्वभौमिक परिषदों के प्राचीन धर्म-सत्य पर, बल्कि केवल पाँचवीं शताब्दी के बाद से स्पेन में आयोजित कुछ छोटे स्थानीय परिषदों पर (यदि इसके अलावा, हम यह मान लें कि उनके कार्य अपरिवर्तित हैं) और आचेन की परिषद पर, जो नौवीं शताब्दी की शुरुआत में ही हुई थी; न तो चर्च के पवित्र पिताओं और शिक्षकों की सर्वसम्मत शिक्षा पर, बल्कि केवल उनकी गवाहियों की विकृत व्याख्या, या तोड़-मरोड़, या यहाँ तक कि जालसाजी पर, और पाँचवीं तथा छठी शताब्दी के कुछ शिक्षकों के बहुत कम प्रत्यक्ष बयानों पर, जिनकी प्रामाणिकता भी संदिग्ध है; अंत में, यह धर्मशास्त्रीय तर्क के दृष्टिकोण से भी निराधार और मनमाना साबित होता है। क्या ऐसे सिद्धांत को सत्य कहा जा सकता है? और क्या ऐसे सिद्धांत को एक धर्मसिद्धांत के रूप में प्रस्तुत करना और यहाँ तक कि उसे धर्मविश्वास-सूची में शामिल करना और भी अधिक उचित है, जबकि हर ईसाई धर्मसिद्धांत अनिवार्य रूप से ईश्वर के वचन पर आधारित होना चाहिए, अनिवार्य रूप से संपूर्ण सार्वभौमिक कलीसिया द्वारा माना जाना चाहिए और प्रेरितों के समय से ही उसमें मौजूद होना चाहिए, न कि किसी पाँचवीं या नौवीं शताब्दी में प्रकट हुआ हो? नहीं, यह पहले से ही एक त्रुटि है, और सबसे बड़ी त्रुटि है; यह एक ऐसे मामले में नवाचार है जिसमें न तो किसी विशेष चर्च को, और न ही सार्वभौमिक चर्च को ही, नवाचार करने का कोई अधिकार है: क्योंकि सभी धर्मसिद्धान्त हमें ईश्वर द्वारा प्रकट किए गए हैं। यह, इसलिए, एक निश्चित अर्थ में, स्वयं ईश्वर के अधिकारों पर एक अहंकारी अतिक्रमण है।

§ 50. धर्मसिद्धान्त का नैतिक अनुप्रयोग।

हालाँकि ईश्वर के व्यक्तिगत गुणों का सिद्धांत जितना भी अमूर्त क्यों न हो, फिर भी हम उससे अपने लिए नैतिक सबक निकाल सकते हैं।

1) परम पवित्र त्रिमूर्ति के सभी व्यक्तियों के पास, प्रकृति से उन सभी के स्वाभाविक सामान्य गुणों के अलावा, विशिष्ट गुण भी हैं जिनके द्वारा वे एक-दूसरे से भिन्न हैं, ताकि पिता, पिता ही हैं और दिव्य व्यक्तियों के क्रम में प्रथम स्थान पर हैं, पुत्र, पुत्र ही हैं और दूसरे स्थान पर हैं, पवित्र आत्मा पवित्र आत्मा ही हैं और तीसरे स्थान पर हैं, यद्यपि दिव्यता में वे सभी एक-दूसरे के प्रति पूर्ण रूप से समान हैं। और हम में से प्रत्येक को, मानव स्वभाव से हम सभी में मौजूद सामान्य गुणों के अलावा, सृष्टिकर्ता ने विशिष्ट गुण प्रदान किए हैं जो हमें एक-दूसरे से अलग करते हैं; उन्होंने विशिष्ट क्षमताएं और विशिष्ट प्रतिभाएं प्रदान की हैं, जो हमारे साथी मनुष्यों के बीच हमारी विशेष बुलावा और स्थान को निर्धारित करती हैं। अपने भीतर इन क्षमताओं और प्रतिभाओं को पहचानना और उनका उपयोग अपने तथा अपने पड़ोसियों के भले के लिए, और ईश्वर की महिमा के लिए करना, ताकि इस प्रकार अपनी नियति को पूरा किया जा सके, प्रत्येक मानव का निर्विवाद दायित्व है।

२) यद्यपि पवित्र त्रिमूर्ति के सभी व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत विशेषताओं में एक-दूसरे से भिन्न हैं, फिर भी, वे निरंतर एक-दूसरे के साथ पारस्परिक संचार में रहते हैं: पिता पुत्र और पवित्र आत्मा में वास करते हैं; पुत्र पिता और पवित्र आत्मा में; पवित्र आत्मा पिता और पुत्र में (यूहन्ना 14:10)।[1002] इसी प्रकार, हमें भी, अपनी व्यक्तिगत विशेषताओं में सभी मतभेदों के बावजूद, जहाँ तक हम सक्षम हैं, आपसी संचार और नैतिक एकता बनाए रखनी चाहिए, जो स्वभाव की एकता और भाईचारे के प्रेम के बंधन से बँधी हो।

3) विशेष रूप से, हमारे बीच के पुरखों को यह याद रखना सीखना चाहिए कि वे किसका महान नाम धारण करते हैं, ठीक वैसे ही जैसे सभी पुरखों के पुत्र या जो उनसे जन्मे हैं, करते हैं...,[1003] और, इसे ध्यान में रखते हुए, उन्हें इन नामों से जुड़े कर्तव्यों को निष्ठापूर्वक पूरा करके पिता या पुत्र के नामों को पवित्र करने का ध्यान रखना चाहिए।

[1002] क्योंकि पिता पुत्र और पवित्र आत्मा दोनों में हैं; उसी प्रकार, पुत्र और आत्मा पिता में और एक दूसरे में हैं। *अलेक्जेंड्रिया के सिरिल, *त्रित्व पर संवाद*, पुस्तक VII. इसी बात का उल्लेख निम्नलिखित में भी मिलता है: *डायोनिसियस द एरोपागाइट, *ऑन द डिवाइन नेम्स*, अध्याय II, संख्या 4; *अथेनासियस, *अगेंस्ट द एरियन्स*, भाषण III, संख्या 25; *जॉन ऑफ़ डेमास्कस, *ऑन द ऑर्थोडॉक्स फेथ*, पुस्तक 1, अध्याय 8, 14, रूसी अनुवाद में, पृष्ठ 29, 48 और अन्यत्र।

[1003] 'यह जानना आवश्यक है,' धर्मनिरपेक्ष जॉन ऑफ़ डमास्कस टिप्पणी करते हैं, विश्वास के कुछ अन्य शिक्षकों का अनुसरण करते हुए, 'कि "पितृत्व" और "पुत्रत्व" की संज्ञाएँ हमसे धन्य दिव्यता में स्थानांतरित नहीं होती हैं; इसके विपरीत, वे दिव्यता से हममें स्थानांतरित होती हैं, जैसा कि दिव्य प्रेरित कहते हैं: *'इसी कारण मैं हमारे प्रभु यीशु मसीह के पिता के सामने अपने घुटने टेकता हूँ, जिनके नाम पर स्वर्ग और पृथ्वी पर हर कुल का नाम रखा गया है* (इफिसियों 3:14–15)।" (ऑर्थोडॉक्स विश्वास की सटीक व्याख्या, पुस्तक 1, अध्याय 8, पृ. 23)।

4) अंत में, इस बात को ध्यान में रखते हुए कि पवित्र आत्मा परमेश्वर के व्यक्तिगत स्वभाव के बारे में पश्चिमी ईसाइयों की मनमाने अटकलों के कारण जो विनाशकारी परिणाम हुए हैं, आइए हम, जहाँ तक संभव हो, परमेश्वर के वचन और ऑर्थोडॉक्स चर्च की शिक्षा में निर्धारित आस्था के सिद्धांतों का अधिक कड़ाई से पालन करना सीखें, और कभी भी *उस प्राचीन सीमा को* न हटाएं *जिसे* हमारे *पूर्वजों ने* विश्वास में *स्थापित किया था* (नीतिवचन 22:28)।

अनुभाग 2.
ईश्वर पर, उनकी दुनिया और मानवता के साथ सामान्य संबंध में

क्योंकि उसी से और उसी के द्वारा और उसी के लिये सब वस्तुएँ हैं (रोमियों 11:36)।

§ 51. इस संबंध की चर्च की समझ और इस पर उसकी शिक्षा

एक त्रिएक ईश्वर, जिसमें सभी परम सिद्धियाँ हैं और जो फलस्वरूप परम महिमा और आनंद का आनंद लेते हैं, यद्यपि उन्हें किसी की या किसी भी चीज़ की आवश्यकता नहीं थी, फिर भी, अनंत रूप से दयालु होने के कारण, उन्होंने चाहा कि अन्य प्राणी अस्तित्व में आएं और उनकी दया में सहभागी बनें: उसने शून्य से ब्रह्मांड को अस्तित्व में बुलाया, और तब से ही उसकी परोपकारी देखभाल कर रहा है। ईश्वर के इन दो कार्यों—सृष्टि और परोपकार—में वह सामान्य संबंध निहित है जो ईश्वर का पूरे विश्व और विशेष रूप से मानवजाति के प्रति समान रूप से है, और जिस पर मानवजाति के बीच आदिम धर्म की स्थापना हुई थी।[1004] इसे 'सामान्य' कहा जाता है, उस दूसरे, विशेष, अलौकिक संबंध के विपरीत जो ईश्वर का केवल पतित मानवता के प्रति सीधे है — एक संबंध जिसे 'ओइकोनोमिया' (οἰκονομία) या हमारे उद्धार का रहस्य के रूप में जाना जाता है, और जो पुनर्स्थापित, वास्तविक ईसाई धर्म की नींव और सार है।[1005]

दुनिया और मानवता के साथ ईश्वर के सामान्य संबंध के संबंध में ऑर्थोडॉक्स चर्च की शिक्षा निकेन-कॉन्स्टेंटिनोपोलिटन धर्मविश्वास के शब्दों में संक्षेप में व्यक्त की गई है: 'मैं एक ईश्वर में विश्वास करता हूँ... सर्वशक्तिमान, स्वर्ग और पृथ्वी का, सभी दृश्य और अदृश्य चीजों का सृष्टिकर्ता"—और इसमें दो भाग होते हैं: सृष्टिकर्ता के रूप में ईश्वर का सिद्धांत, और Almighty[1006] (प्रबंधक) के रूप में ईश्वर का सिद्धांत।

अध्याय 2.
ईश्वर के सृष्टिकर्ता के रूप में

§ 52. चर्च की शिक्षा और इस शिक्षा की संरचना

ऑर्थोडॉक्स चर्च हमें सृष्टिकर्ता के रूप में ईश्वर के बारे में निम्नलिखित सिखाती है: "निस्संदेह, ईश्वर सभी दृश्य और अदृश्य प्राणियों का सृष्टिकर्ता है। सबसे पहले, उन्होंने अपने विचार से सभी स्वर्गीय शक्तियों को अस्तित्व

1004 देखें "ऑर्थोडॉक्स धर्मशास्त्र का परिचय", §§ 12–13: *धर्म की नींव और शर्तें।*

1005 देखें वही, §§ 46–49: *ईसाई धर्म का सार, आधार* और *शर्तें*, और वर्तमान कृति के § 5 की तुलना करें।

1006 'पैंटोक्रैटर', यरूशलेम के संत सिरिल कहते हैं, धर्म-विश्वास के इस शब्द की व्याख्या करते हुए, 'estin o panton krator, o panton exousiazōn', अर्थात्, 'सर्वशक्तिमान वही हैं जो सभी चीजों को धारण करते हैं और सभी चीजों पर अधिकार रखते हैं' (कैटेच. VIII, n. 1; रूसी अनुवाद में, n. 3, पृ. 145)।

में लाया, जो उनकी महमिा के उत्कृष्ट गायक हैं, और उस तर्कशील दुनयिा को बनाया जो उस पर प्रदान की गई कृपा से ईश्वर को जानती है और हमेशा और हर चीज़ में उनकी इच्छा के प्रतसिमर्पति है। इसके बाद, ईश्वर ने इस दृश्यमान और भौतकि दुनयिा को शून्य से बनाया। अंत में, ईश्वर ने मनुष्य को बनाया, जो एक अद्रव्य, तर्कशील आत्मा और एक भौतकि शरीर से मलिकर बना है, ताकइिस एक ही मनुष्य, जो इस प्रकार बना है, से यह पहले से ही स्पष्ट हो जाए कविह दोनों जगतों, अद्रव्य और भौतकि, का सृष्टकिर्ता है। इसी कारण से, मनुष्य को *'छोटी दुनयिा'* कहा जाता है: क्योंकविह अपने भीतर पूरी बड़ी दुनयिा की छवकिो समेटे हुए है" (ऑर्थोडॉक्स कन्फेशंस, भाग 1, प्रश्न 18 का उत्तर)।

यह शकि्षा स्पष्ट रूप से दो भागों में नहिति है: I) ईश्वर की सृष्टकिी एक सामान्य अवधारणा, और II) ईश्वर की सृष्टयिों के प्रमुख प्रकारों के संबंध में वशिष्टि अवधारणाएँ: अदृश्य या आध्यात्मकि जगत, दृश्य या भौतकि जगत, और सूक्ष्म जगत, अर्थात्, मानव।

1. सामान्य रूप से ईश्वर की सृष्टपिर

§ 53. ईश्वर की सृष्टकिी अवधारणा और इस सद्धिांत का संक्षप्तिि इतहिास

'सृष्ट'िशब्द से, सख्त अर्थ में, हमारा मतलब, बेशक, शून्य से कसिी चीज़ को अस्तत्वि में लाना है। और इसलए,ि जब हम कहते हैं कईश्वर ने संसार की सृष्टकिी, तो हम इस वचिार को व्यक्त कर रहे होते हैं कईश्वर के अलावा जो कुछ भी अस्तत्वि में है, वह उसी द्वारा शून्य से, या पूर्ण अस्तत्वि‌हीनता से अस्तत्वि में लाया गया।[1007]

यह सत्य दैवी प्रकटीकरण के वशिष्टि सत्यों में से एक है, जो न केवल साधारण मूर्तपिूजकों को बल्कउिनके सबसे बुद्धमिान ऋषयिों को भी ज्ञात नहीं था: क्योंकउिनमें से कुछ का मानना था कसिंसार शाश्वत है;[1008] अन्य ने स्वीकार कयिा कयिह ईश्वर से उत्पन्न हुआ;[1009] एक तीसरे समूह ने सखिाया कसिंसार अपनी मर्जी से, संयोग से, शाश्वत अव्यवस्था या परमाणुओं से उत्पन्न हुआ;[1010] एक चौथा समूह मानता था कईश्वर ने इसे स्वयं के सह-शाश्वत पदार्थ से रचा था,[1011] और कोई भी यह कल्पना नहीं कर सकता था कईश्वर की सर्वशक्तमिान शक्तसिे संसार शून्य से उत्पन्न हुआ हो। ईसाई चर्च ने, इस सत्य को—जो मानव मन की पहुँच से परे है—ईश्वर से प्राप्त कर, और इसे अपने बच्चों पर अधकि दृढ़ता से अंकति करने की इच्छा से, आरंभ से ही वश्विास की सार्वजनकि धर्मसूत्रों में नरिंतर सखिाया है।[1012] चर्च के पादरी और शकि्षकों ने इसे अपने स्वीकारोक्तयिों में भी शामलि कयिा[1013] और इसे अपने अनुयाययिों में सबसे मौलकि सत्यों में से एक के रूप में स्थापति करने का प्रयास कयिा।[1014] दुर्भाग्यवश, जल्द ही ईसाइयों के बीच भी ऐसे लोग उभर आए जन्हिोंने न केवल दुनयिा की उत्पत्तसिे संबंधति लगभग सभी प्राचीन त्रुटयिों को पुनर्जीवति कयिा, बल्कनिई त्रुटयिाँ भी पेश कीं। अर्थात्:

[1007] पवत्रि शास्त्र में, ईश्वर द्वारा सृजति और *संसार का* नरि्माण करने वाले इन प्राणयिों के समूह को आमतौर पर *स्वर्ग और पृथ्वी* (उत्पत्त1ि 1:1; 2:1) कहा जाता है, या *स्वर्ग और पृथ्वी, समुद्र और उनमें जो कुछ भी है* (भजन संहति 145:6; 113:11; 134:6; नेहेम्याह 9:6; प्रेरतिों के काम 4:24), साथ ही *दृश्यमान और अदृश्य* (कुलुस्सयिों 1:16)। दूसरी ओर, *'जगत'* शब्द कभी-कभी केवल पृथ्वी को संदर्भति करता है (मरकुस 16:15), कभी-कभी केवल मानव जातकिो (यूहन्ना 3:16), और कभी-कभी केवल अधर्मी लोगों को भी (1 यूहन्ना 5:5)।

[1008] हेराक्लटिस, ज़ेनोफेनेस, अरस्तू।

[1009] भारतीय दर्शन, नवप्लेटोवादी।

[1010] डेमोक्रटिस और एपकियूरस अपने अनुयाययिों के साथ।

[1011] अनाक्सगोरस, ज़ेनो, प्लेटो, सेनेका और अन्य।

[1012] इस प्रकार — (क) प्रेरतिकि संवधिानों में दए गए धर्मवश्विास में लखिा है: 'मैं वश्विास करता हूँ और एक, अजन्मे, एक सच्चे परमेश्वर, सर्वशक्तमिान, मसीह के पति, सभी चीजों के *सृष्टकिर्ता और नरि्माता* में बपतस्मिा लेता हूँ...; ख) यरूशलेम के चर्च के धर्म-सूत्र में: 'मैं एक ईश्वर, सर्वशक्तमिान पति, स्वर्ग और पृथ्वी के *सृष्टकिर्ता*, सभी दृश्य और अदृश्य चीजों के *सृष्टकिर्ता* में वश्विास करता हूँ।'...; ग) केसरयिा के चर्च के धर्म-सूत्र में: 'हम एक ईश्वर, सर्वशक्तमिान पति, सभी दृश्य और अदृश्य चीजों के सृष्टकिर्ता में वश्विास करते हैं।'... यही अन्य लोगों पर भी लागू होता है। *बगिम*— ओरजि. इक्कल्स. लबि. X, 4, पृ. 4 देखें। §§ VII–XV.

[1013] इरनेयस, ओरजिन, टर्टुलयिन, साइप्रयिन और अन्य के धर्मसूत्र; देखें वही, §§ I–VI.

[1014] *हर्म.* पास्ट. खंड II, आदेश 1: 'सबसे पहले, वश्विास करो कएिक ही ईश्वर है, जसिने सभी चीजों को बनाया, और उन्हें आकार दयिा, और उन्हें शून्य से अस्तत्वि में लाया: सभी चीजें?' *आइरेन.* कोंट्रा हेरेस. 1, 22, संख्या 1; *टर्टुलयिन,* *डी प्रेस्क्रप्शियोने हेरेसयिम*, अध्याय XIII; *ओरजिन,* *डी प्रसिपिसि*, प्रोलेगोमेना, संख्या 4.

a) हर्मोजेनेस और कई अन्य वधिर्मीयों ने उस पदार्थ की शाश्वतता का तर्क दयिा, जसिसे संसार का नर्िमाण हुआ;[1015]

b) साइमन द मैगस, मेनेन्डर, बेसलिडिस, कार्पोक्रैट्स और अन्य ने सखिाया कि दुनयिा स्वर्गदूतों द्वारा शाश्वत पदार्थ से बनी थी;[1016]

ग) सेरन्थिस ने सखिाया कि सर्वोच्च ईश्वर की जानकारी के बनिा कसिी नम्निन शक्ति द्वारा संसार का नर्िमाण हुआ;[1017]

d) ओफाइट्स, मनखियिों और प्रस्किलियिनयिों ने सखिाया कि दुनयिा एक दुष्ट सद्धिांत, शैतान द्वारा बनाई गई थी;[1018]

(e) ओरजिन ने दुनयिा को ईश्वर की सर्वशक्तमिानता का एक आवश्यक परणिाम माना, और इसलएि यह माना कि दुनयिा अनंतकाल से ही सृजति हुई थी।[1019] इन सभी त्रुटयिों को प्रारंभकि चर्च ने नंदिति कयिा और कई धर्मगुरुओं ने खंडति कयिा, वशिेष रूप से: आइरेनयिस, टर्टुलयिन, मेथोडयिस और ऑगस्टीन;[1020] हालांकि, इन सब के बावजूद, वे पूरी तरह से समाप्त नहीं हुए। मध्य युग में, पॉलशियिनों और बोगोमल्सि का वश्विास था कि दुनयिा शैतान या सैतान द्वारा बनाई गई थी।[1021] हाल के कुछ तथाकथति दार्शनकिों ने शाश्वत पदार्थ के सद्धिांत को पुनर्जीवति कयिा है, जसिसे दुनयिा की उत्पत्ति हुई,[1022] और ईश्वर से दुनयिा के उत्सर्जन या वकिास के सद्धिांत (उत्सर्जनवाद और सर्वनस्विाद),[1023] और इस धारणा को कि ईश्वर ने दुनयिा को पूर्ण आवश्यकता से अस्तत्वि में लाया, और परणिामस्वरूप इसे शाश्वत काल से बनाया।[1024]

उपरोक्त सभी वचिारों को, नष्पिक्षता से, वधिर्मी कहा जाना चाहए, क्योंकि वे सीधे तौर पर दुनयिा की उत्पत्ति के संबंध में परमेश्वर के वचन और ऑर्थोडॉक्स चर्च की शक्षिा का खंडन करते हैं।

§ 54. ईश्वर ने संसार की सृष्टि की

"ईश्वर दृश्य और अदृश्य प्राणयिों का स्रष्टा है," ऑर्थोडॉक्स चर्च सखिाती है (ऑर्थोडॉक्स कन्फेशन, भाग 1, प्रश्न 18 का उत्तर), और यहाँ ईश्वर-प्रेरति पुरुषों की नर्ववािद गवाही है:

(क) नबी मूसा: *'आरंभ में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की'* (उत्पत्ति 1:1);

ख) नबी दाऊद: *'धन्य है वह, जसिकी सहायता याकूब का परमेश्वर है, जसिकी आशा यहोवा उसके परमेश्वर में है, जसिने आकाश और पृथ्वी, समुद्र और उनमें जो कुछ भी है, उन्हें बनाया* (भजन संहति 145:5–6);

ग) नबी यशायाह: *'यहोवा, जसिने आकाशों को बनाया, वह, वह परमेश्वर जसिने पृथ्वी को गढ़ा और उसे बनाया; उसने उसे स्थरि कयिा, उसने उसे व्यर्थ नहीं बनाया; उसने उसे बसाने के लएि बनाया* (यशायाह 45:18; तुलना करें 42:5);

घ) भवष्यिवक्ता यर्मियाह: *उसने अपनी सामर्थ्य से पृथ्वी को बनाया, अपनी बुद्धि से संसार को स्थापति कयिा, और अपनी समझ से आकाशों को फैलाया* (यर. 10:12);

1015 *टर्तुल्लयिन,* हर्मोजेनेस के वरिुद्ध, अध्याय II; *यूसेबयिस,* चर्च का इतहिास, V, अध्याय 27.

1016 *टर्तुल्लयिन,* *डी प्रेस्क्राइप्शने हेरेसयिारम*, अध्याय 46; *आइरेनयिस,* *एडवर्सस हेरेसेस*, 1, अध्याय 24; *एपफिानयिस,* *हेरेसेस*, 22 और 24; *यूसेबयिस,* *चर्च का इतहिास*, IV, अध्याय 7.

1017 *इरनेयस,* *हरसियिों के वरिुद्ध*, पुस्तक III, अध्याय 11; *एपफिानयिस,* *हरसियिाँ*, 28; *ऑगस्टीन,* *हरसियिाँ*, 8.

1018 *इरनेयस,* वही, 1, 30; *टर्टुलयिन,* *डे प्रेस्क्रप्शियिो*, 47; *एपफिानयिस,* *हेरेसेस*, 37; *ऑगस्टीन,* *डे नेचुरा बोन*, अध्याय 42; *लयिो,* *एपस्टिोला XV एड टुरीब*।

1019 *ओरजिेन,* *डे प्रसिपियिस*, पुस्तक II, पृ. 1–3, और पुस्तक III, अध्याय 5। हालाँकि, कुछ लोगों ने ओरजिेन को इस आरोप से बरी करने का प्रयास कयिा है *(हयूटयिस*— *इन ओरजिनियिन*, पुस्तक II, प्रश्न 2 और 12)।

1020 *इरनेयस,* *वश्विासघातों के वरिुद्ध*, पुस्तक II, अध्याय 30; *टर्टुलयिन,* *हरमोजेनेस के वरिुद्ध*; *मेथोडयिस,* *माता-पति पर* (*फोटोइनस,* *पुस्तकालय*, कोडेक्स 235 में); *ऑगस्टीन,* *ईश्वर का नगर*, पुस्तक VII, 30; पुस्तक XI, 4–6; पुस्तक XII, 15–17.

1021 *फोटनिस,* मनीकयिों के वरिुद्ध, II, 5; *यूथमि. ज़गिाब.*, पैनोप्ली, अध्याय 27.

1022 वोल्टेयर, रूसो और अन्य।

1023 स्पनिोज़ा, जैकब बोमे और अन्य।

1024 शेलगि, हेगेल और उनके अनुयायी।

(e) एज्रा: *'हे प्रभु, आप एक हैं; आपने स्वर्गों, स्वर्गों के स्वर्गों और उनकी सारी सेना को, पृथ्वी और उस पर जो कुछ भी है, समुद्रों और उन में जो कुछ भी है, उसे बनाया है, और आप इन सभी चीज़ों को बनाए रखते हैं, और स्वर्गीय सेनाएँ आपकी आराधना करती हैं* (नेहेम्याह 9:6);

f) प्रेरितों ने, जब पतरस और यूहन्ना को यहूदी महापुजारियों द्वारा रिहा किया गया था, परमेश्वर से अपनी संयुक्त प्रार्थना इस प्रकार आरंभ की: *'हे सर्वशक्तिमान परमेश्वर, जिसने आकाश और पृथ्वी और समुद्र और उन सब में जो कुछ है, उसे बनाया* (प्रेरितों के काम 4:24); ग) विशेष रूप से प्रेरित पौलुस, जिन्होंने एथेन्स में एरेओपागस में यह प्रचार किया: *'ईश्वर, जिसने संसार और उसमें की सब वस्तुओं को बनाया, जो स्वर्ग और पृथ्वी का प्रभु है, वह मनुष्यों के बनाए हुए मंदिरों में नहीं रहता* (प्रेरितों के काम 17:24), और जिसने, अन्य बातों के अलावा, इब्रानियों को लिखा: *'हर मकान किसी ने बनाया है; परन्तु जिसने सब कुछ बनाया, वह परमेश्वर है* (इब्रानियों 3:4); जी) अंत में, धर्मशास्त्री प्रेरित यूहन्ना, जिन्होंने स्वर्गदूत को *उस सनातन परमेश्वर की शपथ खाते हुए* सुना, *जिसने स्वर्ग और उनमें जो कुछ भी है, पृथ्वी और उस पर जो कुछ भी है, और समुद्र और उसमें जो कुछ भी है, उसे बनाया* (प्रकाशितवाक्य 10:6; तुलना करें 14:7)।

इसके साथ हम यह जोड़ सकते हैं:

(क) कि पवित्र शास्त्रों में, केवल परमेश्वर को ही अनंत कहा गया है, और कहीं भी संसार को उनके साथ सह-अनंत के रूप में प्रस्तुत नहीं किया गया है: *अनंत प्रभु परमेश्वर, जिसने पृथ्वी की परिधि को बनाया है, न थकता है और न ही दुर्बल होता है* (यशायाह 40:28), या: *'तुमने परमेश्वर के बजाय राक्षसों को बलिदान चढ़ाकर अपने सृष्टिकर्ता को क्रोधित किया है'* (बरुख 4:7; तुलना करें भजन संहिता 92:2); और इसके अलावा: *सभी चीजें उसके द्वारा और उसके लिए बनाई गई थीं; और वह सभी चीजों से पहले है, और उसी में सभी चीजें एक साथ टिकी हुई हैं* (कुलुस्सियों 1:16–17);

ख) उन्हें प्रथम, आल्फा, सभी चीजों की शुरुआत कहा जाता है: *'मैं ही पहिला और मैं ही आखिरी हूँ। मेरे हाथ ने पृथ्वी की नींव डाली, और मेरे दाहिने हाथ ने आकाश को फैलाया* (यशायाह 48:12-13); *'मैं ही अल्फा और ओमेगा, आरंभ और अंत हूँ,' प्रभु कहते हैं, 'जो है, और जो था, और जो आने वाला है, सर्वशक्तिमान* (प्रकाशितवाक्य 1:8); *क्योंकि उसी से और उसी के द्वारा और उसी के लिए सब कुछ है* (रोमियों 11:36);

(ग) और यह कि संसार की सृष्टि को सच्चे परमेश्वर के विशिष्ट चिह्नों में से एक माना जाता है: *'हे मनुष्यों! तुम क्या कर रहे हो?'* पौलुस और बरनबास ने पुकारा, जब लिस्त्रिया के मूर्तिपूजकों ने उन्हें पृथ्वी पर आए अपने देवताओं समझकर, उनके लिए बलिदान करना चाहा, — *'हम भी तुम्हारे ही समान मनुष्य हैं, और हम तुम्हें यह शुभ समाचार सुना रहे हैं कि तुम इन झूठे देवताओं से मुड़कर जीवित परमेश्वर की ओर लौट आओ, जिसने स्वर्ग, पृथ्वी, समुद्र और उनमें की सब वस्तुओं को बनाया है* (प्रेरितों के काम 14:15; तुलना करें यशायाह 45:18)।

चर्च के पवित्र पिताओं और शिक्षकों ने, परमेश्वर के वचन के आधार पर विश्वासियों को इस सत्य को धार्मिक सिद्धांत के रूप में प्रचारित करने के अलावा, समय-समय पर इसे प्राकृतिक तर्क के प्रकाश में स्पष्ट करने का भी प्रयास किया। एक ओर, उन्होंने निर्णायक रूप से यह प्रदर्शित किया कि संसार की सृष्टि परमेश्वर ने की है। उदाहरण के लिए, संत जॉन ऑफ़ डेमास्कस कहते हैं, 'सभी प्राणी या तो सृजित हैं या असृजित। यदि वे सृजित हैं, तो निस्संदेह वे परिवर्तन के अधीन हैं: क्योंकि जो कुछ भी परिवर्तन के साथ अपना अस्तित्व शुरू करता है, वह अनिवार्य रूप से परिवर्तन के अधीन होना चाहिए, अर्थात्, या तो क्षय के या मनमाने परिवर्तन के।' यदि, तथापि, वे अकल्पित हैं, तो एक स्वाभाविक परिणाम के रूप में वे अपरिवर्तनीय होने चाहिए; क्योंकि अपने अस्तित्व में विपरीत प्राणी का अस्तित्व का एक विपरीत तरीका भी होता है, अर्थात्, विपरीत गुण। लेकिन कौन इस बात से असहमत होगा कि सभी प्राणी—न केवल वे जो हमारी इंद्रियों से बोधगम्य हैं, बल्कि स्वयं स्वर्गदूत भी—परिवर्तन के अधीन हैं, अलग हो जाते हैं, और विभिन्न प्रकार की गति से गुजरते हैं? आध्यात्मिक प्राणी—अर्थात् स्वर्गदूत, आत्माएँ और राक्षस—अपनी इच्छा से बदलते हैं, जैसे-जैसे उनका अच्छाई की ओर बढ़ना और उससे भटकना तीव्र या कमजोर होता है। हालाँकि, बाकी सब कुछ शारीरिक जन्म और क्षय, वृद्धि और कमी, और गुणों तथा स्थानिक गति में बदलाव के माध्यम से बदलता है। लेकिन जो परिवर्तनशील है, वह अनिवार्य रूप से सृजित होना चाहिए; और यदि वह सृजित है, तो उसे किसी ने बनाया होगा। हालाँकि, स्रष्टा स्वयं सृजित नहीं हो सकते, क्योंकि यदि वे भी सृजित होते, तो वे अनिवार्य रूप से किसी ने बनाए होते, और वह कोई दूसरे ने, और इसी तरह यह सिलसिला तब तक चलता रहता जब तक कि हम किसी ऐसी चीज़ पर न पहुँच जाएँ जो असृजित हो। इस

प्रकार, स्रष्टा अव्यक्त होना चाहिए, और परिणामस्वरूप अपरिवर्तनीय। लेकिन अगर ईश्वर नहीं, तो और क्या अपरिवर्तनीय हो सकता है?[1025] दूसरी ओर, प्राचीन पादरियों ने सभी विरोधी मतों का खंडन किया। इनमें—

क) यह दृष्टिकोण कि संसार अनंत काल से अस्तित्व में है — यह देखते हुए: "यदि ईश्वर एकमात्र शाश्वत सत्ता नहीं हैं और बाकी सब कुछ उनसे उत्पन्न नहीं हुआ है, तो वह ईश्वर नहीं हैं; और यदि संसार ईश्वर के सह-शाश्वत है, और परिणामस्वरूप अस्तित्व में उससे समान है, तो वह अचलता, अनंतता और हर मामले में ईश्वर के समान है; और इस प्रकार एक और ईश्वर है। लेकिन दो शाश्वत और सह-शाश्वत सिद्धांतों को स्वस्थ तर्क के निर्देशों के अनुसार स्वीकार नहीं किया जा सकता।"[1026]

(b) यह दृष्टिकोण कि संसार को देवदूतों या किसी अन्य निम्नतर शक्ति ने बनाया। "यदि देवदूतों या किसी अन्य ने ईश्वर की इच्छा के विरुद्ध संसार की रचना की, तो इसका अर्थ है कि वे ईश्वर से अधिक शक्तिशाली हैं; और यदि उन्होंने इसे उसकी इच्छा के अनुरूप बनाया, तो इसका मतलब होगा कि उसे उनकी सहायता की आवश्यकता थी।" लेकिन ईश्वर को किसी की या किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं है।[1027] इसके अलावा, कोई भी फरिश्ता दुनिया को बनाने में सक्षम नहीं है, ठीक वैसे ही जैसे वह स्वयं को बनाने में सक्षम नहीं है।[1028] फरिश्ते, सृजित प्राणी होने के नाते, सृष्टिकर्ता नहीं हो सकते।[1029]

c) यह दृष्टिकोण कि दुनिया संयोग से अस्तित्व में आई। "यदि सब कुछ संयोग से, बिना किसी तर्कसंगत कारण के हुआ होता, तो सब कुछ बिना किसी योजना या व्यवस्था के, अव्यवस्थित रूप से अस्तित्व में आ जाता। लेकिन वास्तव में हम कुछ अलग देखते हैं: पूरी दुनिया में एक अद्भुत व्यवस्था और सबसे बुद्धिमानी भरी व्यवस्था है। और यह अनिवार्य रूप से हमें यह निष्कर्ष निकालने के लिए प्रेरित करता है कि दुनिया को सर्वोच्च बुद्धिमत्ता वाले एक अस्तित्व ने व्यवस्थित किया है, यानी, ईश्वर ने।"[1030]

§ 55. ईश्वर ने शून्य से संसार की रचना की

"ईश्वर ने संसार को शून्य से बनाया," ऑर्थोडॉक्स चर्च सिखाती है (ऑर्थोडॉक्स कन्फेशन, भाग 1, प्रश्न 8.18 का उत्तर) — और यह सत्य स्पष्ट है:

1) पवित्र वंशावलीकार के शब्दों से: *'आरंभ में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की* (उत्पत्ति 1:1)। यद्यपि हिब्रू क्रिया *'बारा'* (אָרָב) — *'सृजित करना'* — का दोहरा अर्थ है, जो शून्य से किसी चीज़ की सृष्टि और पूर्व-मौजूदा पदार्थ से निर्माण, दोनों को व्यक्त करता है (उत्पत्ति 1:27);[1031] फिर भी यहाँ इसका उपयोग विशेष रूप से पहले अर्थ में किया गया है: क्योंकि मूसा तुरंत आगे कहते हैं कि *जो पृथ्वी* बनाई गई थी *वह आकारहीन और शून्य थी* (पद 2), और यह कि इसी आकारहीन पृथ्वी से परमेश्वर ने बाद में, चरण-दर-चरण, सभी दृश्यमान चीजों को बनाया (पद 6 और

[1025] सही आस्था का सटीक विवरण, पुस्तक 1, अध्याय 3, पृ. 5–6। "यह वही प्रमाण, यद्यपि अधिक संक्षिप्त रूप में, धन्य ऑगस्टीन द्वारा बार-बार प्रस्तुत किया गया है, उदाहरण के लिए: 'देखो, आकाश और पृथ्वी हैं: वे घोषणा करते हैं कि उन्हें बनाया गया था; क्योंकि वे परिवर्तन और भिन्नता के अधीन हैं। जो कुछ भी बनाया गया है, वह अब भी मौजूद है; उसमें ऐसा कुछ भी नहीं है जो पहले वहाँ नहीं था, जो परिवर्तन और भिन्नता के अधीन हो' (कन्फेशन्स, पुस्तक XI, अध्याय 4; द सिटी ऑफ गॉड, पुस्तक XI, अध्याय 4, टिप्पणी 2)।

[1026] *टर्तुल्लियन,* *एडवर्सस हर्मोजेस*, अध्याय 4–7; *एडवर्सस मार्सियोनेम*, 1, 16; *अलेक्जेंड्रिया के डायोनिसियस,* फ्रैगमेंट III, कार्य *एडवर्सस साबेलियनस* से (सं. *गॉटलैंड*), III, पृ. 494; *लैक्टैंटियस,* Instit. Divin. Book II, ch. 9; *Basil,* in Hexaëm. homil. II, n. 2 (in 'The Works of the Holy Fathers', V, p. 23); *Methodius,* apud *Phot.* Bibl. cod. 236.

[1027] *इरनेयस,* विरोधी मतों के विरुद्ध, पुस्तक II, अध्याय 2 और 4; *एम्ब्रोस,* हेक्सामेरोन पर, III, 7.

[1028] *ऑगस्टीन,* *डे जेनेसिस एड लिटेरम*, IX, 15, n. 28: 'कोई स्वर्गदूत प्रकृति को वैसे ही नहीं बना सकता जैसे वह स्वयं को नहीं बना सकता' (*कन्फेशन्स*, *डे सिविटाटे देई*, XII, c. 24)।

[1029] *डमास्कस,* *डे फाइड ऑर्थ.*, पुस्तक II, अध्याय 3: 'सृजित प्राणी (देवदूत) होने के नाते, वे सृष्टिकर्ता नहीं हैं...'

[1030] *एथनासियस,* ओरेट. डी इंकर्नाट. देई संख्या 2, इन ओपी. खंड 1, पृ. 48, सं. पेरिसि, 1698; *क्रिसोस्टोम,* उत्पत्ति पर होमीली IV, संख्या 4; *ग्रेगरी द थियोलोजियन,* होमीली 28, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, खंड III, पृ. 32–33; *जॉन ऑफ डेमास्कस,* *एक्जैक्ट एक्सपोजिशन ऑफ द ऑर्थोडॉक्स फेथ*, पुस्तक 1, अध्याय 3.

[1031] *डेविड किमची* — *रैडकि. हेब्रैक.*, आलेख אָרָב

आगे)।[1032] इसके अलावा, *'आरंभ में ईश्वर ने सृष्टि रची'* यह वाक्यांश अनविार्य रूप से इस वचिार को जन्म देता है कि उसने तब सृष्टि रची जब तक कुछ भी नहीं था।[1033]

2) पुराने नयिम की कलीसयिा में वास्तव में दुनयिा की उत्पत्ति शून्य से होने में वशि्वास था। इस प्रकार, एंटओिकस के अधीन उत्पीड़न के दौरान एक धर्मनष्ठि यहूदी महलिा, अपने पुत्र को पुरखों के वशि्वास के लिए मृत्यु का सामना करने के लिए मनाते हुए, उसने अन्य बातों के अलावा उससे कहा: *'मैं तुझसे वनिती करती हूँ, मेरे बच्चे, आकाश और पृथ्वी को देखो, और उन पर जो कुछ भी है, उसे देखकर यह मान लो कि परमेश्वर ने सब कुछ शून्य से बनाया है, और मानव जाति भी इसी प्रकार अस्तित्व में आई* (2 मक्काबीज़ 7:28) — अर्थात् *शून्य से*, यानी कुछ भी नहीं से।'[1034]

3) नए नयिम के उन अंशों से जो यह बताते हैं कि प्रभु ने *सभी चीज़ों को* बनाया (कुलु. 1:16; इफसियिों 3:9; इब्रानयिों 3:4; प्रकाशतिवाक्य 4:11), कि *सभी वस्तुएँ उससे हैं, उसके द्वारा हैं और उसके लिए हैं* (रोमयिों 11:36), कि *सभी वस्तुएँ उसके द्वारा उत्पन्न हुईं, और उसके सवािय जो कुछ भी उत्पन्न हुआ है, वह उत्पन्न नहीं हुआ* (यूहन्ना 1:3)। यदि पदार्थ सनातन काल से अपने आप अस्तित्व में होता, और यदि परमेश्वर ने पहले से मौजूद पदार्थ से संसार की रचना की होती, तो ये सभी कथन पूरी तरह से सटीक नहीं होते।

4) अंत में, प्रेरति सेंट पॉल की प्रत्यक्ष गवाही से, हम *वशि्वास द्वारा सीखते हैं कि युगों को परमेश्वर के वचन द्वारा स्थापति कयिा गया था, ताकि अदृश्य से दृश्यमान का अस्तित्व हुआ* (इब्रानयिों 11:3), और कि परमेश्वर *जो अस्तित्व में नहीं है, उसे ऐसा* पुकारता है *जैसे कि वह अस्तित्व में हो* (— τά μή όντα, ώς όντα रोम. 4:17).

चर्च के पवत्रि पति और लेखक —

1) ने लगातार शून्य से संसार की सृष्टि की गवाही दी है और इसका प्रचार कयिा है, जैसे कि: हरमास,[1035] टेटयिन,[1036] एथेनागोरस,[1037] आइरेनयिस,[1038] टर्टुलयिन,[1039] एफ्रेम द सीरयिन,[1040] जॉन क्रसिोस्टोम,[1041] ग्रेगरी द थयिोलोजयिन,[1042] ग्रेगरी ऑफ नस्सिा,[1043] ऑगस्टीन[1044] और अन्य। "क्या इतना महान होगा," उदाहरण के लिए एंटओिक के थयिोफलिस पूछते हैं, "यदि ईश्वर ने पहले से मौजूद पदार्थ से संसार की रचना की होती? आखरिकार, एक कलाकार, कसिी से सामग्री प्राप्त करके, उससे जो चाहे बना सकता है। लेकनि ईश्वर की शक्ति इस तथ्य में देखी जाती है कि उसने अपनी इच्छानुसार सब कुछ शून्य से अस्तित्व में लाया।"[1045] "इस प्रकार," एक अन्य चर्च पति टप्पिणी करते हैं, "कोई यह न पूछे कि ईश्वर ने ऐसी महान और अद्भुत प्राणयिों को कसि पदार्थ से उत्पन्न कयिा; उसने सब कुछ शून्य से उत्पन्न कयिा।"[1046]

[1032] एक यहूदी रब्बी कहते हैं: "परमप्रभु (धन्य हो वह!) ने सभी प्राणयिों को पूर्ण शून्यता से बनाया। कसिी भी चीज़ के बनिा प्राणयिों की इस सृष्टि को व्यक्त करने के लिए, हमारे पास पवत्रि भाषा में 'अरब' (ברא) के अलावा कोई और शब्द नहीं है।" *(मोशे नाचमाइड्स रम्बान,* उत्पत्ति पर भाष्य, फोलयिो 8 वर्सो, एड. वलि्मेनडॉर्फ)।

[1033] *क्रसिोस्टोम,* उत्पत्ति पर होमीलीज़, होमीली II, संख्या 4; *ऑगस्टीन,* *दे सवििटिे देई*, पुस्तक XI, अध्याय 6।

[1034] 'कि परमेश्वर ने इन (सभी चीज़ों) को शून्य से बनाया'। अलेक्जेंड्रयिाई कोडेक्स में लखिा है: 'मौजूदा चीज़ों से नहीं'।

[1035] उपरोक्त टप्पिणी 11 देखें।

[1036] ठीक उसी प्रकार जैसे वचन, जो आरंभ में उत्पन्न हुआ था, ने स्वयं के लिए पदार्थ की सृष्टि करके, जैसा कि हम जानते हैं, सृष्टि को उत्पन्न कयिा। *टेटयिन,* ग्रीकों के वरिुद्ध, अध्याय 5।

[1037] लेगेटस प्रो क्रसि्टो, अध्याय 4, 15, 19.

[1038] क्योंकि मनुष्य शून्य से कुछ भी नहीं बना सकते, बल्कि केवल पहले से मौजूद पदार्थ से ही बना सकते हैं; परन्तु परमेश्वर इस प्रथम मनुष्य से श्रेष्ठ हैं, इसलयि कि उन्होंने अपनी सृष्टि के लिए वह पदार्थ स्वयं ही रचा, जो पहले मौजूद नहीं था। *आइरेनयिस,* अगेंस्ट हेरेसीज़, पुस्तक II, अध्याय 10, टप्पिणी 4. कन्फेशन्स, पुस्तक IV, अध्याय 20, n. 8.

[1039] ... कि एक ईश्वर है, और संसार के सृष्टकिर्ता के सवि कोई और नहीं, जसिने शून्य से सभी चीजों को अस्तित्व में लाया। *टर्टुलयिन,* *De praescriptione haeresium*, अध्याय 13.

[1040] उत्पत्ति 1:1.

[1041] क्योंकि यह कहना कि सत्त्व पूर्व-موجود से उत्पन्न हुए, और यह स्वीकार न करना कि सभी चीज़ों के स्रष्टा ने उन्हें शून्य से उत्पन्न कयिा, परम मूर्खता का संकेत होगा। क्रसिोस्टोम, उत्पत्ति पर होमीली II, संख्या 2।

[1042] उपदेश 29, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, खंड पीआई, पृष्ठ 60–61 में।

[1043] पसल्म. ट्रैक्ट. II, अध्याय 8.

[1044] ओरोसयिस के वरिुद्ध प्रस्किलियिन, अध्याय 2.

[1045] ऑटोलाइकस को, पुस्तक II, अध्याय 14; कन्फेशन्स, अध्याय 10।

[1046] *लैक्टैंशयिस,* *दवि्य संस्थाएँ*, पुस्तक II, अध्याय 9.

2) उन्होंने उस सिद्धांत का खंडन किया कि ईश्वर ने शाश्वत पदार्थ से संसार की रचना की। सत्य के रक्षकों ने कहा कि इस विचार को स्वीकार करना ईश्वर को उस पदार्थ के अधीन करना है जिसकी उन्हें कथित रूप से सृष्टि के लिए आवश्यकता थी;[1047] यह ईश्वर को कमजोर मानना है।[1048] दूसरी ओर, यदि पदार्थ शाश्वत होता, तो वह अपरिवर्तनीय भी होता, और परिणामस्वरूप संसार कभी उससे निर्मित नहीं हो सकता था।[1049] यदि वह ईश्वर के साथ सह-शाश्वत होता, और परिणामस्वरूप उसकी तरह स्व-अस्तित्ववान होता, तो वह भी उससे पूरी तरह स्वतंत्र होता। तो फिर उसने उससे संसार कैसे रचा?[1050] "वे हमें उत्तर दें: ईश्वर की सक्रिय शक्ति और पदार्थ की निष्क्रिय प्रकृति कैसे एक साथ आईं; रूपहीन पदार्थ प्रदान करने वाला पदार्थ और बिना पदार्थ के रूपों का ज्ञान रखने वाला ईश्वर कैसे इस प्रकार एक साथ आए कि जहाँ एक में कमी है, वहाँ दूसरे से पूर्ति हो जाती है; ताकि सृष्टिकर्ता को वह वस्तु मिल सके जिस पर वह अपनी कला का प्रदर्शन कर सके, और पदार्थ को वह मिल सके जिससे वह अपनी निराकारता और आकारहीनता को दूर कर सके"?[1051]

3) उन्होंने इस धारणा को खारिज कर दिया कि ईश्वर ने संसार को स्वयं से उत्पन्न किया। संत बेसिल द ग्रेट लिखते हैं, 'ईश्वर शारीरिक हाथों से सृजन नहीं करता है, बल्कि वह स्वयं से प्राणियों को उत्पन्न करके नहीं, बल्कि अपनी ही गतिविधि के माध्यम से उन्हें अस्तित्व में लाकर सृजन करता है, ठीक वैसे ही जैसे कोई आदमी जो अपने हाथों से कुछ बनाता है, वह अपना काम स्वयं से उत्पन्न नहीं करता है।'[1052] इसी तरह, धन्य ऑगस्टीन ने अवलोकन किया: "ईश्वर ने सभी चीजों को शून्य से बनाया; लेकिन उसने स्वयं से नहीं बनाया, बल्कि उसने स्वयं के समान एक को उत्पन्न किया, जिसे हम ईश्वर का पुत्र कहते हैं, और अक्सर ईश्वर की शक्ति और ईश्वर की बुद्धि—क्योंकि इन्हीं के माध्यम से उसने वह सब कुछ बनाया जो शून्य से बनाया गया है।"[1053] और कहीं और: "ब्रह्मांड की सृष्टि हुई; ईश्वर ने इसे स्वयं से नहीं उत्पन्न किया, ताकि यह स्वयं ईश्वर के समान हो जैसा है। इसके विपरीत, उन्होंने इसे शून्य से बनाया, ताकि यह न तो उस ईश्वर के समान हो जिसने इसे बनाया, और न ही उसके पुत्र के समान, जिसके माध्यम से इसे बनाया गया।"[1054]

जहाँ तक प्राचीनों के उस कथन का सवाल है, जिसे वे अक्सर दोहराते थे: 'शून्य से कुछ नहीं उत्पन्न होता', यह कथन, एक अर्थ में, पूरी तरह से सच है: अर्थात्, कुछ भी कभी भी अपने आप शून्य से उत्पन्न नहीं हो सकता। लेकिन हम यह दावा नहीं करते कि ब्रह्मांड अपने आप शून्य से उत्पन्न हुआ; बल्कि, हमारा मानना है कि ईश्वर की *अनंत सर्वशक्तिमानता* ने इसे अस्तित्वहीनता से अस्तित्व में लाया, और परिणामस्वरूप, हम उस शक्ति की ओर इशारा करते हैं जो ऐसा करने में सक्षम थी, भले ही वह हमारे लिए अकल्पनीय तरीके से हो।[1055]

§ 56. ईश्वर ने संसार की सृष्टि शाश्वत से नहीं, बल्कि समय के साथ या समय के साथ-साथ की।

यदि संसार शून्य से बनाया गया था, तो यह एक समय पर मौजूद नहीं था; इसलिए, इसकी एक शुरुआत थी, और यह शाश्वत से नहीं, बल्कि समय में, या अधिक सटीक रूप से, समय के साथ बनाया गया था। क्योंकि समय परिवर्तन के अधीन सीमित प्राणियों और वस्तुओं के लिए अस्तित्व का आवश्यक रूप, यानी चीजों के अनुक्रम के अलावा और कुछ नहीं है।

1047 वह ईश्वर को पदार्थ के अधीन कर देता है, क्योंकि वह दावा करता है कि ईश्वर ने सब कुछ पदार्थ से ही बनाया है। क्योंकि यदि ईश्वर ने संसार की रचना के लिए इसका उपयोग किया, तो पदार्थ का एक श्रेष्ठ रूप अवश्य होना चाहिए जिसने उसे कार्य करने का साधन प्रदान किया, और ऐसा प्रतीत होता है कि ईश्वर उस पदार्थ के अधीन है जिससे उसका सार व्युत्पन्न हुआ है (*टर्टुलियन,* *एडवर्सस हर्मोजेस*, अध्याय 89)।

1048 क्योंकि वह स्वयं पदार्थ का कारण नहीं है, बल्कि, पूर्व-विद्यमान पदार्थ से पूरी तरह से प्राणियों को बनाते समय, वह दुर्बल पाया जाता है (*एथान.* वचन के अवतार पर, अध्याय 2; तुलना करें अध्याय 3)।

1049 *टर्टुलियन,* हरमोजेनेस के विरुद्ध, अध्याय 12; *लैक्टैंटियस,* दैवी संस्थान, पुस्तक II, अध्याय 9.

1050 *टर्तुल्लियन,* वही, अध्याय 9।

1051 *बेसिल द ग्रेट,* *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, खंड V, पृ. 26 में, द सिक्स डेज, प्रवचन 2।

1052 यूनोमियस का खंडन, पुस्तक V, *पवित्र पिताओं के कार्य*, VII, पृ. 199–200।

1053 स्वतंत्र इच्छा पर, पुस्तक 1, अध्याय 2 (वैकल्पिक रूप से 5)।

1054 मनीकियिों के विरुद्ध उत्पत्ति, पुस्तक 1, अध्याय 2।

1055 संत जॉन क्रिसोस्टोम (जेनेसिस होमलि. II, संख्या 4 में) दिखाते हैं कि केवल इस आधार पर इस सत्य को खारिज करना कितना अन्यायपूर्ण है कि शून्य से वस्तुओं का सृजन हमारे लिए अकल्पनीय है।

इसलिए, यह इन प्राणियों से पहले अस्तित्व में नहीं हो सकता था, बल्कि केवल उनके साथ ही अस्तित्व में आ सकता था—इस प्रकार दुनिया की शुरुआत एक ही समय में समय की शुरुआत है, और जब पहला बना, तो दूसरा भी उसी समय बना।[1056] ऑर्थोडॉक्स चर्च वास्तव में यह सिखाता है कि ईश्वर 'न केवल चीजों के, बल्कि स्वयं समय और उस युग के भी स्रष्टा हैं जिसमें चीजें अस्तित्व में आईं' (Orthodox Confession, भाग 1, प्रश्न 33 का उत्तर), कि 'सभी वस्तुओं के अस्तित्व से पहले ईश्वर में पूर्वज्ञान और पूर्वनिर्धारण विद्यमान थे' (ibid., प्रश्न 30 का उत्तर), और कि उन्होंने 'संसार की सृष्टि से पहले सभी वस्तुओं को जाना था' (ibid., प्रश्न 26 का उत्तर)। पवित्र शास्त्र भी पुष्टि करता है:

क) कि एक समय था जब संसार अस्तित्व में नहीं था। यह विचार भजनकार के शब्दों में व्यक्त किया गया है, जो परमेश्वर को संबोधित करते हुए कहता है: *'पहाड़ों के जन्म से पहले, तुम्हारे पृथ्वी और संसार को बनाने से पहले, सनातन से सनातन तक, तुम परमेश्वर हो* (भजन संहिता 89:3); स्वयं परमेश्वर के शब्दों में: *'और अब, हे पिता, संसार के आरंभ से पहले जो महिमा तेरे साथ मेरी थी, उसी से अपनी महिमा में मुझे अब गौरवान्वित कर* (यूहन्ना 17:5), और प्रेरित पौलुस के शब्दों में: *'धन्य हो परमेश्वर, हमारे प्रभु यीशु मसीह के पिता..., क्योंकि उसने हमें संसार की उत्पत्ति से पहले ही उसमें चुन लिया था, कि हम प्रेम में उसके सामने पवित्र और निर्दोष हों* (इफिसियों 1:3–4। देखें: कुलुस्सियों 1:17; सिरिख 23:29; नीतिवचन 8:23)।

ख) कि दुनिया की एक शुरुआत थी। *'सृजन की शुरुआत में, परमेश्वर ने उन्हें नर और नारी बनाया* (मरकुस 10:6)। यही बात इन ग्रंथों में भी देखी जा सकती है: *'आरंभ में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की* (उत्पत्ति 1:1); '[1057] ' *'आरंभ में, हे प्रभु, आपने पृथ्वी की नींव डाली, और आकाश आपके हाथों का काम है* (भजन संहिता 101:26), यद्यपि कभी-कभी पवित्र धर्मग्रंथ में *'आरंभ में'* अभिव्यक्ति का एक और अर्थ होता है, अर्थात्: सबसे पहले, संसार के अस्तित्व में आने से पहले, अनंत काल से (यूहन्ना 1:1; नीतिवचन 8:23)।

c) अंत में, समय स्वयं, दुनिया की तरह, हमेशा से मौजूद नहीं था और ईश्वर द्वारा बनाया गया था। *'मुझे प्राचीन काल से अभिषिक्त किया गया था,'* ईश्वर की प्रतिष्ठित बुद्धि कहती है, *'आरंभ से, पृथ्वी के अस्तित्व में आने से पहले। मेरा जन्म तब हुआ था जब गहरे जल का अस्तित्व नहीं था, जब पानी से परिपूर्ण झरने नहीं थे। मुझे पहाड़ों के स्थापित होने से पहले, पहाड़ियों से पहले जन्म दिया गया था* (नीतिवचन 8:23-25)। और पवित्र प्रेरित यह जोड़ते हैं कि इसी सारभूत बुद्धि के *द्वारा* परमेश्वर पिता *ने युगों की सृष्टि की* (इब्रानियों 1:2)।

इस सत्य की व्याख्या और रक्षा करते हुए, पवित्र पिताओं और शिक्षकों ने विशेष रूप से निम्नलिखित तर्कों का उपयोग किया:

क) यदि संसार का सृजन ईश्वर द्वारा हुआ है, तो इसका सृजन शाश्वत से नहीं हुआ है, क्योंकि कारण को अनिवार्य रूप से उस वस्तु से पहले अस्तित्व में होना चाहिए जो उससे उत्पन्न होती है;[1058]

ख) यदि संसार को शून्य से बनाया गया था, तो इसे शाश्वत रूप से नहीं बनाया गया था, क्योंकि यह एक समय पर मौजूद नहीं था;[1059]

c) संसार परिवर्तन के अधीन है और समय में अस्तित्व रखता है; परिणामस्वरूप, यह शाश्वत से नहीं बनाया गया था, क्योंकि परिवर्तन और समय—चाहे हम उन्हें उनकी शुरुआत तक कितनी भी पीछे तक ट्रेस करें—एक आरंभ के बिना

[1056] इस विषय पर धन्य ऑगस्टीन के शब्द उल्लेखनीय हैं: 'यह निस्संदेह स्पष्ट है कि दुनिया समय में नहीं, बल्कि *समय के साथ* बनाई गई थी / क्योंकि जो कुछ भी समय में बनाया जाता है, वह किसी अन्य चीज़ के बाद और किसी अन्य समय से पहले अस्तित्व में आता है; उसके बाद जो बीत चुका है, उससे पहले जो आने वाला है; फिर भी कोई अतीत नहीं हो सकता था, क्योंकि कोई ऐसा प्राणी नहीं था जिसकी परिवर्तनशील गतिविधियाँ इसे अस्तित्व में ला सकती थीं। लेकिन दुनिया समय के साथ बनाई गई थी।" (De civit. Dei, Book XI, Chapter 6).

[1057] "सर्वज्ञानी ने, हमें संसार के अस्तित्व को समझाते हुए, संसार पर प्रवचन देते हुए, बहुत ही उपयुक्त रूप से जोड़ा: *'आरंभ में उसने सृजन किया*, अर्थात् समय की शुरुआत में, तोउत एस्टनि, एन आर्के ताउते ते काटा क्रोनोन (देखें *बेसिल द ग्रेट*, *सिक्स-डे डिस्कोर्सेस*, 1, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, V, पृ. 9)। *संत एम्ब्रोज़* यह भी कहते हैं: 'इसलिए, आरंभ में, ईश्वर ने समय के भीतर स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की। क्योंकि समय इस संसार से है, संसार से पहले नहीं; और एक दिन समय का एक हिस्सा है, उसकी शुरुआत नहीं' (*हेक्साएम.*, पुस्तक 1, अध्याय 6)।

[1058] *एथेनागोरस,* लेगेटस प्रो क्रिश्चियान्स, अध्याय 16.

[1059] *अलेक्जेंड्रिया के सिरिल,* यूहन्ना के सुसमाचार पर पुस्तक 1, अध्याय 6; *ग्रेगरी महान,* योब की नैतिक व्याख्या की पुस्तक XVI, अध्याय 21, और पुस्तक XXVII, अध्याय 3.

कल्पना नहीं कि जा सकते।[1060] साथ ही, सत्य के रक्षकों ने उस समय इसके बारे में उठाए गए संदेहों और उलझनों को अनुत्तरित नहीं छोड़ा।

यह दावा करना कि, जैसा कि कुछ लोगों ने कहा है, संसार को ईश्वर ने अनंत काल से नहीं बल्कि समय के भीतर बनाया, यह मानना है कि संसार का विचार, ईश्वर के भीतर संसार को बनाने का इरादा भी शाश्वत नहीं है, बल्कि समय के किसी निश्चित क्षण में ही उत्पन्न हुआ; और परिणामस्वरूप, यह स्वीकार करना है कि ईश्वर परिवर्तन के अधीन हैं। इसके विरोध में, धन्य ऑगस्टीन ने कहा कि दुनिया को बनाने की ईश्वर की शाश्वत इच्छा और एक विशिष्ट समय पर दुनिया का निर्माण, इन दोनों में कोई विरोधाभास नहीं है; ईश्वर के पास दुनिया का विचार सदा से था, और सदा से ही उन्होंने इसे एक विशिष्ट समय पर बनाने का निश्चय किया था; अत; इस बात का कोई आधार नहीं है कि जब ईश्वर ने वास्तव में दुनिया को अस्तित्व में लाया तो वह किसी भी तरह से बदला।[1061]

अन्य लोगों ने परमेश्वर को सर्वोच्च सक्रिय सत्ता के रूप में मानते हुए इस अवधारणा पर ध्यान केंद्रित किया, और पूछा: यदि संसार सनातन से नहीं बना है, तो संसार की सृष्टि से पहले परमेश्वर क्या कर रहे थे? 'केवल परमेश्वर स्वयं ही इसका उत्तर दे सकते हैं,' संत आइरेनियस ने कहा, 'लेकिन पवित्र शास्त्र ने इस विषय में हमें कुछ भी प्रकट नहीं किया है।'[1062] 'मैं नहीं कहूँगा,' धन्य ने लिखा ऑगस्टीन, 'जैसा कि किसी ने इस प्रश्न को सुलझाते हुए कहा है, कि ईश्वर तब उन लोगों के लिए नरक तैयार कर रहे थे जो अकल्पनीय को समझने का प्रयास करते हैं; बल्कि, मैं कहूँगा: मुझे नहीं पता, मुझे नहीं पता।' और थोड़ा आगे: 'चूंकि स्वर्ग और पृथ्वी की सृष्टि से पहले अभी तक कोई समय नहीं था, तो यह पूछने की क्या बात है कि ईश्वर *तब* क्या कर रहे थे? जहाँ समय ही नहीं था, वहाँ *'तब' का* कोई अस्तित्व नहीं था।"[1063] सेंट ग्रेगरी द थियोलोजियन में इस विषय पर हम निम्नलिखित पढ़ते हैं: "मैं पूछता हूँ: यदि निष्क्रियता और अपूर्णता ईश्वर पर लागू नहीं की जा सकती, तो सर्वोच्च, जो युगों के शून्य में शासन कर रहे थे, ने ब्रह्मांड की रचना करने और उसे रूपों से सजाने से पहले ईश्वर का विचार किसमें मग्न था? — इसने उसकी भलाई के प्रति तेज, त्रिमूर्ति ईश्वरत्व की समान और समान रूप से परिपूर्ण प्रकाशमानता पर मनन किया, जैसा कि केवल एक ईश्वरत्व को ही ज्ञात है, और जिसे ईश्वर ने उसी को प्रकट किया है। संसार-सृजन करने वाले मन ने अपनी महान मानसिक दृष्टियों में, संसार की उन छवियों पर भी मनन किया जिन्हें उसने स्वयं रचा था—एक ऐसी दुनिया जिसे वह बाद में अस्तित्व में लाएगा, फिर भी जो उस समय भी ईश्वर के लिए वास्तविक थी। ईश्वर के साथ, सभी चीजें उसकी दृष्टि के सामने हैं: जो होगा, जो था, और जो अब है। मेरे लिए, ऐसा विभाजन समय द्वारा थोपा जाता है, ताकि एक चीज़ आगे हो और दूसरी पीछे; लेकिन ईश्वर के लिए, सब कुछ एक में मिल जाता है, और सब कुछ महान दैवी शक्ति के अधीन है।"[1064]

फिर भी अन्य लोगों ने तर्क दिया कि, चूँकि परमेश्वर सनातन काल से प्रभु और शासक रहे हैं, उस संसार का भी सनातन काल से अस्तित्व होना चाहिए जिस पर वह शासन करते हैं; या उन्होंने यह तर्क दिया कि, यदि परमेश्वर में सनातन काल से सर्वशक्तिमान होने की शक्ति है, तो उसने अनिवार्य रूप से सनातन काल से ही संसार की रचना की होगी। टर्टुलियन ने पहले दृष्टिकोण—जिसे मूल रूप से हर्मोजेनेस ने प्रस्तुत किया था—का जवाब यह तर्क देकर दिया कि *'प्रभु'* और *'शासक'* (डोमिनिस) की उपाधियाँ ईश्वर के सार या उनके किसी भी आंतरिक गुण को व्यक्त नहीं करती हैं, बल्कि केवल दुनिया के साथ उनके बाहरी संबंध को व्यक्त करती हैं, क्योंकि वह केवल समय में ही प्रभु और शासक बने, जब से संसार अस्तित्व में आया है।[1065] जहाँ तक ओरिजिन से जुड़े दूसरे तर्क की निराधार होने की बात है, संत मेथोडियस ने इस पर स्पष्ट रूप से प्रकाश डालते हुए यह दर्शाया कि यह तर्क यह मानता है कि यदि ईश्वर ने ब्रह्मांड की रचना नहीं की होती तो वह सर्वशक्तिमान नहीं होता, और परिणामस्वरूप, वह सर्वशक्तिमान और हर तरह से पूर्ण स्वयं में नहीं, अपनी स्वभाविक प्रकृति से नहीं, बल्कि चीजों पर निर्भर होकर है जिनकी उसने सृष्टि की है।[1066]

1060 *ऑगस्टीन,* *दे सिविटिटे देई*, पुस्तक XI, अध्याय 4, संख्या 2; पुस्तक XII, अध्याय 15, संख्या 2.

1061 *ऑगस्टीन,* *कन्फेशन्स*, पुस्तक XI, अध्याय 10 और 11; *द सिटी ऑफ गॉड*, पुस्तक XI, अध्याय 4, n. 2.

1062 हरेसेस के विरुद्ध, पुस्तक II, अध्याय 28, n. 3.

1063 स्वीकारोक्ति, पुस्तक XI, अध्याय 12, 13; क्योंकि *ऐसा कोई समय* नहीं था जहाँ समय नहीं था।

1064 संस्कारों पर भजन, उपदेश 4, *पवित्र पिताओं के कार्य*, खंड IV, पृ. 228–229 में।

1065 *टर्तुल्लियन,* *अगेंस्ट हर्मोजेनेस*, अध्याय 3। *ऑगस्टीन,* *कन्फेशन्स*, *ऑन द सिटी ऑफ गॉड*, पुस्तक XII, अध्याय 15।

1066 *मेथोडियस,* *ऑन द बिगिनिर्स*, *फोटियस* की *bibliotheca*, कोड CCXXXV, पृ. 935, जिनेवा, 1612.

§ 57. परम पवित्र त्रमिूर्त के सभी व्यक्तियों की सृष्टि के कार्य में सहभागिता

यह स्वीकार करते हुए कि ईश्वर ने संसार की रचना की, ऑर्थोडॉक्स चर्च इस महान कार्य को परम पवित्र त्रमिूर्त के किसी एक व्यक्ति को नहीं, बल्कि तीनों को एक साथ श्रेय देता है। इस प्रकार, स्वयं धर्मविश्वास-सूची में, यह ईश्वर पिता *को सृष्टिकर्ता* कहता है, पुत्र के बारे में कहता है: *'जिनके द्वारा सभी चीजें बनीं,* और पवित्र आत्मा *को जीवन-दाता* कहता है / यह बात पूर्वी धर्मगुरुओं के ऑर्थोडॉक्स विश्वास पर पत्र में अभी अधिक स्पष्ट रूप से व्यक्त की गई है: 'हम विश्वास करते हैं कि त्रमिूर्त परमेश्वर, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, सभी दृश्य और अदृश्य चीजों का सृष्टिकर्ता है' (लेख 4)[1067]

पवित्र धर्मग्रंथ में हमें इस शिक्षा के लिए स्पष्ट आधार मिलते हैं। क्योंकि, उन कई अंशों के अलावा जहाँ सृष्टि को सामान्य रूप से परमेश्वर से जोड़ा गया है (उत्प. 1:1; यशा. 45:7; यिर्म. 10:12; भजन 113:23; 133:3; प्रेरितों 14:15; 17:24; 1 कुरिन्थियों 11:12; इब्रानियों 3:4), ऐसे भी अंश हैं जहाँ सृष्टि विशेष रूप से उन्हें ही आरोपित बताई गई है:

क) **परमेश्वर पिता।** उदाहरण के लिए: *एकमात्र परमेश्वर पिता, जिनसे सब कुछ हुआ है* (1 कुरिन्थियों 8:6; इब्रानियों 2:10)। और प्रेरितों की प्रार्थना के शब्द: *'हे प्रभु परमेश्वर, जिसने आकाश और पृथ्वी और समुद्र और उनमें जो कुछ भी है,* उन्हें बनाया'—विशेष रूप से परम पवित्र त्रमिूर्त के प्रथम व्यक्ति को संबोधित हैं; क्योंकि हम आगे पढ़ते हैं: *'आपने हमारे पिता दाऊद, अपने दास, के मुख से पवित्र आत्मा के द्वारा कहा: "जाति क्यों क्रोधित होती है, और लोग व्यर्थ क्यों षड्यंत्र करते हैं? पृथ्वी के राजा खड़े हो गए हैं, और हाकिम प्रभु और उसके मसीह के विरुद्ध इकट्ठे हुए हैं। क्योंकि वास्तव में, इस नगर में, हेरोद और पोंतियस पिलातुस, अन्यजातियों और इस्राएल के लोगों के साथ, आपके पवित्र पुत्र यीशु के विरुद्ध इकट्ठा हुए हैं, जिसे आपने अभिषेक किया था, उस काम को करने के लिए जो आपके हाथ और आपकी योजना ने पहले से ही होने के लिए निर्धारित किया था* (प्रेरितों के काम 4:24–28)।

ख) **परमेश्वर पुत्र।** उदाहरण के लिए: *'सभी वस्तुएँ उसी के द्वारा बनीं, और जो कुछ भी बना है, वह उसके बिना कुछ भी नहीं बना* (यूहन्ना 1:3); या: *'क्योंकि उसी के द्वारा सब कुछ सृजित किया गया, जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर है... सब कुछ उसी के द्वारा और उसी के लिए सृजित किया गया* (कुलुस्सियों 1:16; तुलना करें इब्रानियों 1:3)।

ग) **परमेश्वर पवित्र आत्मा।** धर्मी अय्यूब उनके बारे में कहते हैं: *'परमेश्वर का आत्मा मुझे बनाया* (अय्यूब 33:4), और भजनकार: *'यहोवा के वचन से आकाश बने, और उन सब की सेना उसके मुख के साँस से'* (भजन संहिता 32:6; तुलना करें भजन संहिता 103:30); '[1068] ' और पवित्र वंशावलीकार दुनिया की सृष्टि के समय परमेश्वर की आत्मा को *जल के ऊपर मंडराते हुए,* मानो नए बनाए गए पदार्थ में जीवन फूँकते हुए, चित्रित करता है (उत्पत्ति 1:2)।[1069]

[1067] इसी प्रकार संस्कार संबंधी पुस्तकों में, उदाहरण के लिए: 1) 'सर्वशक्तिमान और शाश्वत परमेश्वर, हमारे प्रभु परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के पिता, संपूर्ण जगत के सृष्टिकर्ता और सभी सृष्टि के आशीर्वाद, हम पर अपनी दयालु दृष्टि डालें, आपके दीन और अयोग्य सेवकों पर।' — 2) "हे मसीह हमारे परमेश्वर, जिन्होंने अपनी बुद्धि से सभी चीज़ों को बनाया और उन्हें अस्तित्व में लाया, ग्रीष्मकाल के मुकुट को आशीष दें।".. 3) "पवित्र आत्मा के द्वारा, सभी चीज़ें जो होने वाली हैं, क्योंकि परमेश्वर सभी से पहले हैं, सभी के प्रभु हैं, अतुलनीय प्रकाश हैं, सभी का जीवन हैं।" (मृतकों के लिए प्रार्थना पुस्तक, फोलियो 124 वर्सो, मॉस्को 1814; ऑक्टोएकोस, भाग II, फोलियो 150 वर्सो, मॉस्को 1838; मृतकों के लिए सेवा, फोलियो 3 वर्सो, मॉस्को 1837)।

[1068] "लेकिन जैसा कि परमेश्वर के साथ है, जैसा कि संत बेसिल द ग्रेट इस पाठ पर देखते हैं, वचन ओठों से उच्चारित होने वाला नहीं है, बल्कि जीवित, स्व-अस्तित्वमान और सर्वशक्तिमान है; इस प्रकार ईश्वर के साथ आत्मा एक फैलने वाली साँस नहीं है, न ही एक बिखर जाने वाली हवा, बल्कि एक पवित्र करने वाली शक्ति है, जो स्व-अस्तित्वमान, स्व-निर्भर और स्वतंत्र है" (यूनोमियस के विरुद्ध, पुस्तक V, द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स, खंड VII, पृ. 181)।

[1069] "वचन: अनुवाद में *'मंडरा रहा था* शब्द-समूह के स्थान पर 'जलद्रव्य को *गर्म* और *जीवंत कर रहा था* वाक्यांश का प्रयोग किया गया है, ठीक वैसे जैसे कोई पक्षी अपने अंडों पर बैठकर उन्हें सेकता है और जिस पर वह गर्मी दे रहा है, उसमें कोई जीवन-दायक शक्ति डालता है। वे कहते हैं कि इसी तरह का एक विचार वर्तमान अंश में भी इस शब्द द्वारा व्यक्त किया गया है। आत्मा मंडरा रहा था, अर्थात् उसने जीवित प्राणियों के जन्म के लिए जलीय तत्त्व को तैयार किया। इस प्रकार, यह दूसरों द्वारा उठाए गए प्रश्न: 'क्या पवित्र आत्मा सृजन के कार्य में निष्क्रिय रहा?' का पर्याप्त रूप से स्पष्टीकरण देता है।" (*बेसिल द ग्रेट* ऑन द सिक्स डेज़ ऑफ क्रिएशन, प्रवचन 2, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, V, पृ. 33-34)।

चर्च के पवित्र पिता और शिक्षकों ने सामान्यतः संसार की सृष्टि ईश्वर को ही आरोपित माना,[1070] विशेषतः ईश्वर पिता को,[1071] ईश्वर पुत्र या वचन को,[1072] और ईश्वर पवित्र आत्मा को,[1073] यह उल्लेख करते हुए कि यह उनमें से प्रत्येक ने अलग-अलग नहीं, बल्कि सभी ने मिलकर ब्रह्मांड की रचना की।[1074] और यह स्पष्ट करने के लिए कि परम पवित्र त्रिमूर्ति के प्रत्येक व्यक्ति की सृष्टि के कार्य में भागीदारी क्या थी, पवित्र शिक्षकों ने इसे इस प्रकार व्यक्त किया कि 'पिता ने पुत्र के माध्यम से पवित्र आत्मा में संसार की सृष्टि की'; या: 'सभी वस्तुएँ पिता से पुत्र के माध्यम से पवित्र आत्मा में,'[1075] हालांकि इस अर्थ में नहीं कि पुत्र और पवित्र आत्मा ने सृष्टि में उपकरणों की तरह कोई भूमिका निभाई या सेवक-सा कार्य किया, बल्कि इस अर्थ में कि उन्होंने रचनात्मक रूप से पिता की इच्छा को पूरा किया।[1076] और यह शिक्षा स्वयं पवित्र शास्त्र ( ) में निहित है, जहाँ स्पष्ट रूप से कहा गया है कि सभी वस्तुएँ पिता से (1 कुरिन्थियों 8:6; 2 कुरिन्थियों 5:18) पुत्र के *माध्यम से* (यूहन्ना 1:3; Heb. 1:3 आदि) पवित्र आत्मा (Eph. 2:18) *में*, कि *सभी वस्तुएँ उनसे, उनके द्वारा और उनके लिए हैं*— ἐξ αὐτοῦ, καί δι' αὐτώ, καϊ ἐν αὐτώ τά πάντα (Rom. 11:36).[1077]

संत ग्रेगरी द थियोलोजियन इस विचार को और अधिक विशेष रूप से प्रस्तुत करते हैं, जब वे सृष्टि के क्रम का वर्णन करते हुए कहते हैं: 'ईश्वर (पिता) पहले दैवीय और स्वर्गीय शक्तियों की कल्पना करते हैं—और विचार एक कर्म बन गया, जिसे वचन ने पूरा किया और आत्मा ने सिद्ध किया।'[1078] संत बेसिल द ग्रेट निम्नलिखित शब्दों में इसे और भी स्पष्ट रूप से और अधिक विस्तार से व्यक्त करते हैं: 'उनकी (देवदूतों की) सृष्टि में, सृजित प्राणियों के प्राथमिक कारण (προκαταρκτική αίτία) — पिता, और रचनात्मक (δημιουργική) — पुत्र, और परिपूर्ण करने वाला कारण (τελειωτική) — आत्मा, ताकि सेवा करने वाले आत्माएं पिता की इच्छा से अपनी सत्ता प्राप्त करती हैं, पुत्र की क्रिया द्वारा अस्तित्व में आती हैं, और आत्मा की उपस्थिति से अपने अस्तित्व में परिपूर्ण होती हैं। हालांकि, स्वर्गदूतों का सार ही पवित्रता और पवित्रता में वास करना है। और कोई यह न सोचे कि मैं यह दावा कर रहा हूँ कि तीन प्रमुख हाइपोस्टासीस और पुत्र की क्रिया अपूर्ण हैं। क्योंकि सत्त्वों का एक ही सिद्धांत है, जो पुत्र के माध्यम से सृजन करता है और आत्मा में पूर्ण करता है। और पिता की क्रिया, जो सभी में सभी के माध्यम से कार्य करता है, अपूर्ण नहीं है, और न ही पुत्र का सृजन अपर्याप्त है, जब तक कि उसे आत्मा द्वारा पूर्ण न किया जाए। क्योंकि इस प्रकार न तो पिता, जो अपनी एकमात्र इच्छा से सृजन करते हैं, उन्हें पुत्र की कोई आवश्यकता होगी, फिर भी वे पुत्र के द्वारा इच्छा करते हैं; और न ही पुत्र, जो पिता के समान ही कार्य करते हैं, उन्हें सहायता की कोई आवश्यकता होगी, फिर भी वे भी पवित्र आत्मा के द्वारा वस्तुओं को पूर्ण करने की इच्छा करते हैं। *प्रभु के वचन से आकाश बने, और उसके होठों के साँस से—उनकी सारी सेना* (भजन संहिता 32:6)। परन्तु वचन केवल वाक्-यंत्रों द्वारा हवा में उत्पन्न एक ध्वनि नहीं है, और न ही आत्मा श्वसन

1070 *जस्टिन*, *अपोलॉजी* II, 4; *एथेनागोरस*, *लेगेट फॉर क्राइस्ट* XVI; *आइरेनियस*, *अगेंस्ट हेरेसीज़* II, अध्याय 2, संख्या 5, आदि।

1071 *रोम के क्लेमेंट*, कोरिन्थियों को पहली पत्रिका, खंड 19; *आइरेनियस*, विधर्मियों के विरुद्ध II, 2, खंड 6; IV, 20, खंड 1; V, 17, खंड 1; *एथनासियस*, विश्वास की व्याख्या, खंड 1।

1072 *जस्टिन*, *ग्रीकों के विरुद्ध* *कोहोर्ट*, संख्या 15; *आइरेनियस*, *संप्रदायों के विरुद्ध*, IV, 20, संख्या 1; V, 18, संख्या 2; *टर्तुल्लियन*, अगेंस्ट हरमोजेनेस, अध्याय 22; *ग्रेगरी थॉमटर्गस*, पैनेजिरिक ओरेशन ऑन ओरिजिन, 11.4; *अथानासियस*, एक्सपोजिशन ऑफ द फेथ, संख्या 2; *क्रिसोस्टोम*, होमीली ऑन हिब्रूज़, II, संख्या 3; *एपिफेनियस*, एन्कोराटस, 28; *ऑगस्टीन*, कमेंट्री ऑन Psalm 33.

1073 *थियोफिलिस*, एड ऑटोल्यकस 1, n. 7; *बेसिल द ग्रेट*, ऑन यूनोमियस, पुस्तक V, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स* में, VII, पृ. 181; *सिरिल अलेक्जेंड्रिया*, ऑन द होली ट्रिनिटी, अध्याय 22, *क्रिश्चियन रीडिंग्स* 1847 में, III, पृ. 42.

1074 *इरनेयस*, विधी मतों के विरुद्ध, पुस्तक IV, 20, n. 1; *ऑगस्टीन*, सच्चे धर्म पर, अध्याय 7, n. 13.

1075 *अथेनासियस*, प्रवचन III, संख्या 5: 'क्योंकि पिता, वचन के द्वारा, पवित्र आत्मा में सभी चीजों को बनाता है' (Conf. De communi Patr., Fil. et Spir. S. essentia संख्या 48); *एफ्रेम*, उत्पत्ति 1:1 पर टीका; *अलेक्जेंड्रिया के सिरिल*, राजा को विश्वास पर उपदेश, संख्या 51: क्या सब कुछ परमेश्वर पिता द्वारा पुत्र के माध्यम से पवित्र आत्मा में रचा जाता है? कोंट्रा जूलियन, पुस्तक III: क्या हम इसलिए यह मानते हैं कि परमेश्वर पिता, पुत्र के माध्यम से पवित्र आत्मा में, सभी चीजों का सृष्टिकर्ता है? *एपिफेनियस*, कैथोलिक विश्वास की व्याख्या, संख्या 14.

1076 *इरनेयस*, विधी मतों के विरुद्ध, पुस्तक V, 18, संख्या 2। *बेसिल*, पवित्र आत्मा पर, अध्याय 8, संख्या 19, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, खंड VII, पृ. 261 में।

1077 "इन शब्दों में: *'सभी वस्तुएँ उसी से हैं, उसी के द्वारा हैं और उसी के लिए हैं'*, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के विशिष्ट गुणों को एक ही नाम के अंतर्गत एक साथ लाया गया है। क्योंकि एक ही परमेश्वर है, जिससे सभी वस्तुएँ आती हैं; और एक ही प्रभु यीशु मसीह है, जिसके द्वारा सभी वस्तुएँ आती हैं; और एक ही पवित्र आत्मा है, जिसमें सभी वस्तुएँ हैं" *(बेसिल द ग्रेट*, ऑन यूनोमियस, बुक V, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, VII, पृ. 208)।

1078 वर्ड 38, *द वर्क्स ऑफ़ द होली फ़ादर्स*, खंड III, पृ. 240; तुलना करें खंड IV, पृ. 157: *kai to ennoema ergon hen, Logou sympleroumenon kai Pneumati teleoumenon*.

अंगों द्वारा निकिली होठों की वाष्प है; परन्तु वचन, जो *आरम्भ में परमेश्वर के साथ था और वही परमेश्वर है* (यूहन्ना 1:1), और परमेश्वर के मुख का आत्मा *सत्य का आत्मा है, जो पिता से निकलता है* (यूहन्ना 15:26)। अत; इन तीनों की कल्पना करो: आज्ञा देने वाले प्रभु, सृजन करने वाले वचन, और धारण करने वाले आत्मा।"[1079] अंत में, दमश्कि के संत जॉन पिता को न केवल दविय व्यक्तियों के संबंध में, बल्कि—बेशक, एक अलग अर्थ में—मौजूद सभी चीजों के संबंध में भी स्रोत और कारण (πηγή γεννητική καί προβλητική) कहते हैं, पुत्र को पिता की शक्ति के रूप में, जो सभी वस्तुओं की सृष्टि को पूर्व-निर्धारित (δύναμις προκαταρκτική) करती है, और पवित्र आत्मा को सभी सृष्टि का साकारकर्ता (τελεσιουργός) के रूप में।[1080]

यह भी जोड़ा जाना चाहिए कि—

क) परम पवित्र त्रिमूर्ति के सभी व्यक्तियों की सृष्टि के कार्य में सहभागिता का सिद्धांत, स्वभाव और सभी दविय गुणों में उनकी एकता और पूर्ण अविभाज्यता के सिद्धांत का एक आवश्यक परिणाम है, और —

ख) इस कार्य में उनमें से प्रत्येक की भागीदारी का क्रम और स्तर पूरी तरह से उनके व्यक्तिगत क्रम और उनके बीच के संबंधों के अनुरूप है।

§ 58. सृष्टि का तरीका

जिस प्रकार से ईश्वर ने ब्रह्मांड की रचना की, इस संबंध में ऑर्थोडॉक्स चर्च कभी-कभी यह बताती है कि उन्होंने सभी चीजों को *विचार द्वारा* बनाया (ऑर्थोडॉक्स कन्फेशन, भाग 1, प्रश्न 18 का उत्तर), कभी-कभी *अपनी इच्छा से* (वही, प्रश्न 14 का उत्तर), और कभी-कभी अपने वचन या *आज्ञा* से (वही, प्रश्न 22 का उत्तर)। इस मामले में भी, वह परमेश्वर के वचन का अनुसरण करती है, जो गवाही देता है कि परमेश्वर ने संसार को बनाया—

1) बुद्धि और विवेक के द्वारा: *यहोवा ने विवेक से पृथ्वी की नींव डाली और समझ से आकाशों को स्थिर किया* (नीतिवचन 3:19; तुलना करें भजन संहिता 135:5; यिर. 10:12), अर्थात्, उसने अपनी उन परम बुद्धिमान मानसिक छवियों (विचारों) के अनुसार सृष्टि की, जिनमें उसने प्राचीन काल से अपनी सभी भविष्य की रचनाओं पर मनन किया था: *परमेश्वर को उसकी सभी कृतियाँ अनंतकाल से ज्ञात हैं* (प्रेरितों के काम 15:18; तुलना करें दानिय्येल 13:42; सिरिक 23:29; 39:26)। *'मैं आदि से अभिषिक्त थी,'* ईश्वर की बुद्धि स्वयं कहती है, *'आरंभ से, पृथ्वी के उत्पन्न होने से पहले... 'जब उसने आकाशों की रचना की, तब मैं वहाँ थी... जब उसने समुद्र के लिए एक सीमा निर्धारित की, ताकि जल उसकी सीमाओं को न लांघे... जब उसने पृथ्वी की नींव डाली, तब मैं उसके पास थी'* (नीतिवचन 8:23, 27, 29)। इन शाश्वत दैवीय अवधारणाओं की वास्तविकता, जिनमें यह संसार वास्तविक (वास्तविक) रूप से अस्तित्व में आने से पहले ही मौजूद था, को चर्च के पिताओं और शिक्षकों,[1081] , द्वारा सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया था, जिन्होंने इन्हें सभी चीजों के आदर्श (πρωτότυπα), नमूने (παραδείγματα), पूर्व-निर्धारण कहा (προορισμοί) और इस प्रकार on[1082] "ईश्वर ने सभी

[1079] पवित्र आत्मा पर, अध्याय 16, *द वर्क्स ऑफ़ द होली फ़ादर्स*, VII, पृ. 288. अन्यत्र भी: 'दविय आत्मा हमेशा उस सब को पूर्ण करती है जो पुत्र के माध्यम से ईश्वर से उत्पन्न होता है' (एवनोमियस पर, पुस्तक V, *द वर्क्स ऑफ़ द होली फ़ादर्स*, VII, पृ. 193); और आगे: 'जो कोई पुत्र को अस्वीकार करता है, वह सभी चीजों की सृष्टि की शुरुआत को अस्वीकार करता है; क्योंकि सभी चीजों के स्व-अस्तित्व की शुरुआत परमेश्वर का वचन है, जिसके द्वारा *सभी चीजें अस्तित्व में आईं* जो आत्मा को अस्वीकार करता है, वह सृजित व्यवस्था की अंतिम परिपूर्णता को काट देता है; क्योंकि आत्मा के प्रेषण और संचार के द्वारा ही वह जो अस्तित्व की शुरुआत प्राप्त करता है, अस्तित्व में लाया जाता है" (उपरोक्त, पृ. 200)।

[1080] De fide orth. lib. 1, chap. 12; Conf. lib. II, chap. 2: κτίζει δέ (ο Θεός) έννοών καί τό έννοημα έργον ύφίσταται Λόγω συμπληροόμενον καί Πνεύματι τελειούμενον.

[1081] *इरनेयस,* विरोधी मतों के विरुद्ध, पुस्तक II, अध्याय 2; ओरजिन, सिद्धांतों पर, पुस्तक I, अध्याय 2; *यूसेबियस,* सुसमाचार के लिए तैयारियाँ, पुस्तक XI, अध्याय 10; *अथेनासियस,* अन्यजातियों के विरुद्ध, अध्याय 1; *जेरोम,* टीकाएँ, पुस्तक 1, एफसियों के नाम पत्र पर, अध्याय 1; *अलेक्जेंड्रिया के सिरिल,* यूहन्ना के सुसमाचार पर पुस्तक VII, अध्याय 16; *ऑगस्टीन,* उत्पत्ति की शाब्दिक व्याख्या पर, पुस्तक V, अध्याय 18: 'ये वस्तुएँ निश्चित रूप से अस्तित्व में आने से पहले मौजूद नहीं थीं; तो फिर, जब वे मौजूद नहीं थीं, तब वे परमेश्वर को कैसे ज्ञात थीं? क्योंकि उन्होंने कुछ भी तब तक नहीं बनाया जब तक वे इसके बारे में अनजान थे।' इसलिए उन्होंने उन्हें अस्तित्व में लाया नहीं, बल्कि उन्हें ज्ञात किया; परिणामस्वरूप, उनके अस्तित्व में आने से पहले, वे दोनों थे भी और नहीं भी थे। वे ईश्वर की ज्ञान में थे, लेकिन वे अपनी प्रकृति में नहीं थे।

[1082] हमारा मानना है कि इसके उदाहरण सभी प्राणियों के संबंध में ईश्वर के भीतर मौजूद आवश्यक और अपरिवर्तनीय पूर्व-अस्तित्व कारण हैं—जिन्हें धर्मशास्त्र 'उद्देश्य' कहता है—और दविय तथा सद् इच्छाएँ हैं, जो सत्ताओं के संबंध में परिभाषात्मक और सृजनात्मक दोनों हैं,

चीजों को उनके अस्तित्व में आने से पहले देखा," उदाहरण के लिए, सेंट जॉन ऑफ़ डेमास्कस लिखते हैं, "उन्हें शाश्वत काल से अपने मन में धारण करते हुए; और प्रत्येक वस्तु को एक विशिष्ट समय पर अपना अस्तित्व प्राप्त होता है, उनके शाश्वत विचार—जो उनकी इच्छा के साथ संयुक्त है—के परिणामस्वरूप, जो पूर्व-निर्धारण, प्रतिमा और डिजाइन है।"[1083] और कहीं और: "उन सभी चीजों के बारे में ईश्वर की अवधारणाएँ, जिन्हें उनसे अस्तित्व प्राप्त करना है, उनकी छवियाँ, ब्लूप्रिंट, या, जैसा कि संत डायोनिसियस उन्हें कहते हैं, पूर्वनिर्धारण हैं। क्योंकि उनके परामर्श में उन सभी चीजों की छवियाँ पहले से ही खींची हुई हैं, जिन्हें होने के लिए पूर्वनिर्धारित किया गया है और जो निश्चित रूप से अस्तित्व में आएँगी।"[1084]

2) उसकी इच्छा से, अर्थात् पूरी तरह से स्वतंत्र रूप से, और किसी भी आवश्यकता के परिणामस्वरूप नहीं। इसीलिए कहा गया है: *हमारा परमेश्वर स्वर्ग में [और पृथ्वी पर] है; वह जो चाहता है, वही करता है* (भजन संहिता 113:11); *प्रभु स्वर्ग में और पृथ्वी पर, समुद्रों में और सारी गहराइयों में जो चाहता है, वही करता है* (भजन संहिता 134:6); *हे प्रभु, आप महिमा और सम्मान और सामर्थ्य ग्रहण करने के योग्य हैं: क्योंकि आपने सब कुछ बनाया, और आपकी इच्छा से वे अस्तित्व में हैं और बनाए गए* (प्रकाशितवाक्य 4:11)। इसी कारण से, चर्च के प्राचीन शिक्षकों ने यह स्वीकार किया कि ईश्वर ने संसार को किसी आवश्यकता या बाध्यता से नहीं, बल्कि केवल अपनी इच्छा से बनाया;[1085] कि उन्होंने वही सब कुछ बनाया जो उन्होंने चाहा और जैसा उन्होंने चाहा;[1086] कि उनकी इच्छा ही सभी चीजों की नींव, शुरुआत और माप है,[1087] और यह स्वयं वह क्रिया है जिसे हम संसार कहते हैं।[1088]

3) वचन द्वारा। *और परमेश्वर ने कहा, 'प्रकाश हो।' और प्रकाश हो गया,* जैसा कि पवित्र वंशावलीकार बताता है — *और परमेश्वर ने कहा, 'जल के बीच में एक आकाशमण्डल हो, और वह जल को जल से अलग करे...', और परमेश्वर ने कहा, 'जल के बीच में एक आकाशमण्डल हो, और वह जल को जल से अलग करे,'* इत्यादि (उत्पत्ति 1:3, 6, 9 आदि)। परमेश्वर से प्रेरित भजनकार उद्घोष करता है, *'उसने [वचन कहा, और वे अस्तित्व में आए]; उसने आज्ञा दी, और वे सृजित हुए* (भजन संहिता 148:5)। लेकिन कलीसिया के पवित्र पिताओं का कहना है कि यहाँ 'ईश्वर का वचन' को हमारे अपने किसी स्पष्ट ध्वनित शब्द के समान नहीं समझना चाहिए; नहीं, यह सृजनात्मक वचन केवल ईश्वर की सर्वशक्तिमान इच्छा के एक इशारे या अभिव्यक्ति को दर्शाता है, जिसने शून्य से ब्रह्मांड को अस्तित्व में लाया (प्रकाशितवाक्य 4:11; यिर्मयाह 32:17)।

संत बेसिल द ग्रेट कहते हैं, 'ब्रह्मांड का सृष्टिकर्ता, जिसके पास न केवल इस एक दुनिया के लिए, बल्कि इससे अनंत रूप से श्रेष्ठ सृजनात्मक शक्ति है, ने अपनी इच्छा के एक ही इशारे से दृश्यमान दुनिया की सारी भव्यता को अस्तित्व में लाया... हालांकि, जब हम ईश्वर को एक वाणी, वाक्य और आज्ञा प्रदान करते हैं, तो हम 'ईश्वर के वचन' से तात्पर्य वाणी के अंगों द्वारा उत्पन्न ध्वनि से नहीं, न ही जीभ द्वारा कंपन में लाई गई वायु से करते हैं; बल्कि,

---

और जिनके माध्यम से अति-अस्तित्वमान ने सभी चीजों को पूर्व-निर्धारित भी किया और प्रकट भी किया। *डायोनिसियस द एरोपागाइट,* *ऑन द डिवाइन नेम्स*, अध्याय 5, संख्या 8; *कन्वर्सेशन्स*, अध्याय 7, संख्या 2।

[1083] ऑर्थोडॉक्स विश्वास की एक सटीक व्याख्या, पुस्तक 1, अध्याय 9, पृष्ठ 33, रूसी अनुवाद से।

[1084] De imaginibus, Oration III, n. 19, रूसी में *The Orthodox Confession of the Catholic and Apostolic Church of the East* के अंत में, पृ. 265। मॉस्को, 1838।

[1085] *इरेनेयस,* विरोधी मतों के विरुद्ध, पुस्तक II, अध्याय 1, संख्या 1: "न ही उसे किसी ने प्रेरित किया, बल्कि उसने सभी कार्य अपनी इच्छा से और स्वतंत्र रूप से किए, क्योंकि वह स्वयं ही परमेश्वर है"; *ऑगस्टाइन,* परमेश्वर का नगर, पुस्तक XI, अध्याय 24: "उसने यह अपनी स्वतंत्र इच्छा से किया।"..; *थियोडोरेट,* *इन जेनेसिस*, प्रश्न III; *दमास्कनी,* *ऑन द ऑर्थोडॉक्स फेथ*, पृ. 2।

[1086] *Theothil.* ad Autolyc. 11, 13: 'जैसा वह चाहता है'; *Hippolytus,* Against Noetus, nos. 10, 11: 'उसने बनाया, जैसा वह चाहता था'; *Irenaeus*, Against Heresies, III, 8, no. 3: 'ठीक वैसे ही जैसा वह चाहता था'...

[1087] *एम्ब्रोसियस,* हेक्साएमरोन, पुस्तक 1, पृ. 5, क. 19: 'सभी वस्तुओं के सार की शुरुआत और उत्पत्ति स्वयं उनसे ही है, अर्थात् उनकी इच्छा और शक्ति से...'; अध्याय 6: मैं सभी चीजों को उसकी इच्छा में स्थापित मानता हूँ, क्योंकि उसकी इच्छा ही ब्रह्मांड की नींव है; पुस्तक II, अध्याय 2, संख्या 4: उसकी इच्छा ही सभी चीजों का मापदंड है।

[1088] *अलेक्जेंड्रिया के क्लेमेंट:* 'क्योंकि ईश्वर कभी कमजोर नहीं है। क्योंकि उसकी इच्छा ही उसका कार्य है, और इसे ही संसार कहा जाता है' (पेडाग. पुस्तक 1, अध्याय 6)।

शिक्षार्थियों के लिए अधिक स्पष्टता के लिए, हम आज्ञा के रूप में इच्छा की स्वयं गति को चित्रित करना चाहते हैं।"[1089] संत एम्ब्रोज़,[1090] संत जॉन ऑफ़ डेमास्कस और अन्य इसी प्रकार तर्क करते हैं।[1091]

परिणामस्वरूप, संक्षेप में यह सारांशित करने के लिए कि पवित्र शास्त्र ब्रह्मांड की सृष्टि के तरीके के बारे में क्या सिखाता है, सिद्धांत इस प्रकार है: "ईश्वर ने ब्रह्मांड को इसके संबंध में अपनी शाश्वत विचारों के अनुसार, पूरी तरह से स्वतंत्र रूप से, इच्छा के एक ही कार्य द्वारा सृजित किया। ब्रह्मांड की योजना इन विचारों में अनंतकाल से पूर्वनिर्धारित थी; मुक्त इच्छा ने इस योजना को अंजाम देने का निर्णय लिया; और इच्छा के कार्य ने वास्तव में इसे साकार किया।" लेकिन सर्वशक्तिमान इच्छा का एक ही कार्य, एक ही सृजनात्मक वचन, शून्य से ब्रह्मांड को अस्तित्व में कैसे ला सकता है—इसे पवित्र शास्त्र एक रहस्य कहता है जिसे केवल विश्वास द्वारा ही समझा जा सकता है: *'विश्वास के द्वारा,'* पवित्र प्रेरित कहते हैं, *'हम समझते हैं कि संसार परमेश्वर के वचन द्वारा तैयार किए गए थे, ताकि जो देखा जाता है वह उस से बना हो जो नहीं देखा जाता था* (इब्रानियों 11:3)।

§ 59. सृष्टि के लिए प्रेरणा और इसका उद्देश्य

चूँकि परमेश्वर ने संसार को आवश्यकता से नहीं बल्कि पूरी तरह से अपनी स्वैच्छिक इच्छा से बनाया है, इसलिए यह निष्कर्ष निकलता है कि उसने इसे किसी उद्देश्य से बनाया है—क्योंकि वह उतनी ही आसानी से इसे न बनाने का विकल्प भी चुन सकता था। और चूँकि उसने इसे ज्ञान और विवेक के साथ बनाया है, इसलिए यह निष्कर्ष निकलता है कि उसने इसे किसी उद्देश्य के लिए बनाया है—क्योंकि ज्ञान बिना उद्देश्य के कार्य नहीं कर सकता।

ऑर्थोडॉक्स चर्च हमें इस विषय पर निम्नलिखित सिखाती है: "हमें यह विश्वास करना चाहिए कि ईश्वर..., जो स्वयं में पूर्ण और महिमामय होते हुए भी, दयालु और परम-सद्भावनापूर्ण हैं, ने संसार को शून्य से इस उद्देश्य के लिए बनाया कि अन्य प्राणी, उनकी महिमा करके, उनके आनंद में सहभागी हो सकें" (ऑर्थोडॉक्स कन्फेशन, भाग 1, प्रश्न 8 का उत्तर; तुलना करें: द सिम्पल कैटेकिज़्म, पृ. 35, मॉस्को 1845)। परिणामस्वरूप, चर्च का मानना है कि सृष्टि का एकमात्र उद्देश्य सृष्टिकर्ता की अनंत दयालुता थी, और सृष्टि का उद्देश्य एक ओर सृष्टिकर्ता की महिमा और दूसरी ओर उसकी सृष्टियों का आनंद था।

और जैसे-जैसे हम परमेश्वर के वचन में गहराई से उतरते हैं, हम आसानी से इस बात से सहमत हो जाते हैं कि सर्वोच्च को ब्रह्मांड की रचना करने के लिए प्रेरित करने वाला कोई अन्य उद्देश्य कल्पना नहीं किया जा सकता, सिवाय उनकी ही भलाई के। पवित्र शास्त्र हमें इस निष्कर्ष पर पहुँचाता है —

क) आंशिक रूप से, उन अंशों में जहाँ यह सिखाता है कि परमेश्वर पूर्ण सिद्धता (भजन संहिता 114:3; मत्ती 5:45) का एक सत्त्व है, और परिणामस्वरूप, सर्व-महिमा (भजन संहिता 23:10; 28:3) और परम भलाई (1 तीमुथियुस 1:11; भजन संहिता 15:11), कि उसे किसी और किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं है (प्रेरितों के काम 17:25, 26), कि वह केवल अनंत काल से, दुनिया के बिना अस्तित्व में है (भजन संहिता 89:3; एफ़ि. 1:3–4), और परिणामस्वरूप, सर्व-महिमामय (भजन संहिता 23:10; 28:3) और सर्व-सत् (1 तीमुथियुस 1:11;भजन संहिता 15:11), कि उसे किसी व्यक्ति या किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं है (प्रेरितों के काम 17:25, 26), कि वह प्राचीन काल से, अकेला और संसार के बिना अस्तित्व में है (भजन संहिता 89:3;(ख) उन स्थानों में तो और भी अधिक जहाँ, जब हम परमेश्वर की अपनी रचनाओं की ओर अपनी आँखें उठाते हैं, तो हम उद्घोषित करते हैं: 'यहोवा सभ पर मेहरबान है, और उसकी दया उसकी सभ रचनाओं पर है' (भजन संहिता 136:1), और परिणामस्वरूप, यदि उसने अन्य प्राणियों को अस्तित्व में लाने का चुनाव न

ख) और भी अधिक उन अंशों में जहाँ, हमारी दृष्टि को परमेश्वर की अपनी रचनाओं की ओर उठाते हुए, वह उद्घोषणा करता है: *'प्रभु सभ पर मेहरबान है, और उसकी दया उसकी सभ रचनाओं पर बनी रहती है'* (भजन संहिता 144:9; तुलना करें नीतिवचन 11:25–27); या हमसे सृष्टि के कार्य में प्रकट हुई उनकी दयाओं को स्वीकार करने का आह्वान करता है: *'प्रभु की स्तुति करो, क्योंकि वह भला है, क्योंकि उसकी दया सदा के लिए बनी रहती है। देवताओं के*

1089 *द वर्क्स ऑफ़ द होली फ़ादर्स* (रूसी अनुवाद) के खंड V में, द सिक्स डेज़, प्रवचन 1, पृ. 4, और वही, प्रवचन 11, पृ. 35।

1090 प्रकृति के स्रष्टा ने प्रकाश को वचन दिया, और उसे सृजित किया। ईश्वर का वचन इच्छा है, ईश्वर का कार्य प्रकृति है *(एम्ब्रोज़, हेक्साएमरोन, पुस्तक 1, अध्याय 9)*।

1091 '"*ओठ* और *वाणी*" से हमें ईश्वर की इच्छा की अभिव्यक्ति को समझना चाहिए; क्योंकि हम भी अपने हृदय के विचारों को अपने ओठों और वाणी के माध्यम से प्रकट करते हैं' (सही आर्थोडॉक्स विश्वास की व्याख्या, पुस्तक 1, अध्याय II, पृ. 36)।

परमेश्वर की स्तुति करो, क्योंकि उसकी दया सदा के लिए बनी रहती है। प्रभुओं के प्रभु की स्तुति करो, क्योंकि उसकी दया सदा के लिए बनी रहती है; जो अकेला बड़े चमत्कार करता है, क्योंकि उसकी दया सदा बनी रहती है; जिसने बुद्धि से आकाशों को बनाया, क्योंकि उसकी दया सदा बनी रहती है; जिसने जल पर पृथ्वी को स्थिर किया, क्योंकि उसकी दया सदा बनी रहती है; जिसने बड़े प्रकाशमानों को बनाया, क्योंकि उसकी दया सदा बनी रहती है; सूर्य को दिन पर शासन करने के लिए, क्योंकि उसकी दया हमेशा बनी रहती है; चंद्रमा और तारों को रात पर शासन करने के लिए, क्योंकि उसकी दया हमेशा बनी रहती है (भजन संहिता 135:1–9)। चर्च के पिता और शिक्षकों ने सर्वसम्मति से सृष्टिकर्ता की भलाई को सृष्टि का कारण माना। यहाँ, उदाहरण के लिए, शब्द हैं —

क) *संत ग्रेगरी द थियोलोजियन:* "चूंकि केवल अपने बारे में चिंतन करना ही भलाई के लिए पर्याप्त नहीं था, बल्कि यह उचित था कि भलाई फैले, और आगे और आगे बढ़े, ताकि लाभान्वित होने वालों की संख्या यथासंभव अधिक से अधिक हो सके (क्योंकि यह परम भलाई की विशेषता है), ईश्वर ने, सबसे पहले, दिव्य और स्वर्गीय शक्तियों—और विचार कर्म बन गया;"[1092]

ख) *संत अथेनासियस द ग्रेट:* "ईश्वर भला है, या यूँ कहें कि भलाई का स्रोत ही है; और चूँकि भलाई की प्रकृति में किसी भी चीज़ से घृणा करना नहीं है, इसलिए उन्होंने, किसी भी चीज़ से घृणा न करते हुए, अपने वचन, हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा, शून्य से सभी चीज़ों की रचना की";[1093]

ग) *धन्य थियोडोरेट:* "प्रभु परमेश्वर को उनकी स्तुति करने वालों की कोई आवश्यकता नहीं है, लेकिन अपनी एकमात्र भलाई के कारण उन्होंने स्वर्गदूतों, महादूतों और हर प्राणी को अस्तित्व प्रदान किया," और आगे: "परमेश्वर के पास कुछ भी कम नहीं है; लेकिन वह, भलाई की गहराई होने के नाते, उन लोगों को अस्तित्व प्रदान करने में प्रसन्न थे जो अस्तित्व में नहीं थे;"[1094]

घ) *दमास्कस के संत जॉन:* "सत् और सर्व-सत् ईश्वर स्वयं पर मनन करने में संतुष्ट नहीं थे, बल्कि अपनी सद्भावना की प्रचुरता से वे प्रसन्न थे कि ऐसे प्राणी अस्तित्व में आएं जो उनकी कृपाओं से लाभान्वित हो सकें और उनकी सद्भावना में सहभागी हो सकें।"[1095]

इसी तरह, पवित्र शास्त्र और उसके बाद, चर्च के पवित्र शिक्षक, सृष्टि के उद्देश्य के रूप में परमेश्वर की महिमा को सर्वप्रथम और सबसे महत्वपूर्ण मानते हैं। पहला इस विचार को व्यक्त करता है —

(a) सामान्य शब्दों में, जब यह कहा जाता है कि *प्रभु ने सभी चीजें अपने ही लिए बनाईं* (नीतिवचन 16:4), और यह कि *सभी चीजें उसी से हैं* (इब्रानियों 2:10);

ख) और भी अधिक स्पष्ट रूप से और सीधे, जब यह गवाही देता है कि *उसकी अदृश्य गुणधर्म—उसकी शाश्वत शक्ति और दिव्यता—को दुनिया की सृष्टि के समय से ही उसके कार्यों पर मनन करके स्पष्ट रूप से देखा गया है* (रोमियों 1:20), — और परमेश्वर की बाहरी महिमा इसी परम सिद्धताओं के प्रकाशन में निहित है — और वास्तव में *आकाश परमेश्वर की महिमा की घोषणा करते हैं* (भजन संहिता 19:1), और *सारी पृथ्वी* सेनाओं के यहोवा की *महिमा से* भरपूर है (यशायाह 6:3);

c) अंत में, परम स्पष्टता के साथ, जब वह हमें आज्ञा देते हैं: *'अपने शरीरों और अपनी आत्माओं में, जो परमेश्वर के हैं, परमेश्वर का गौरव करो* (1 कुरिन्थियों 6:20); *'चाहे तुम खाओ, चाहे पियो, या जो कुछ भी करो, सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिए करो* (1 कुरिन्थियों 10:31), और जब वह स्वर्ग और पृथ्वी को सृष्टिकर्ता की महिमा करने के लिए बुलाता है: *'स्वर्ग से प्रभु की स्तुति करो; ऊँचाइयों में उसकी स्तुति करो। उसके सब स्वर्गदूतों, उसकी सारी सेनाओं, उसकी स्तुति करो। हे सूर्य और चंद्रमा, उसकी स्तुति करो; हे चमकते सब तारों, उसकी स्तुति करो। हे आकाशों के आकाशों, और आकाशों के ऊपर के जल, उसकी स्तुति करो। वे यहोवा के नाम की स्तुति करें, क्योंकि उसने आज्ञा दी,*

[1092] प्रवचन 45, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, खंड IV, पृष्ठ 156–157।

[1093] De incarnat. Verbi n. 3, in Opp. Vol. 1, p. 49, पेरिस, 1698.

[1094] *Genes. quaest. 4* में, *Chr. Th. 1843*, खंड III, पृ. 324–325 में। तुलना करें: *क्रिसोस्टोम,* *Opp.*, खंड 1, पृ. 157–158, सं. *मॉन्टफ़ॉक।*

[1095] ऑर्थोडॉक्स विश्वास की सटीक व्याख्या, पुस्तक II, अध्याय 2। यही विचार सेंट डायोनिसियस द एरिओपाजेट (De Divinibus Nominibus, अध्याय 4) और धन्य ऑगस्टीन: 'इस कथन "*ईश्वर ने देखा कि यह अच्छा था*" में, यह पर्याप्त रूप से इंगित किया गया है कि ईश्वर ने जो कुछ भी बनाया वह अच्छा था—अर्थात्, यह किसी भी आवश्यकता से नहीं, न ही अपने स्वयं के लाभ की किसी आवश्यकता से, बल्कि *केवल अच्छाई* के कारण बनाया गया' (डे सिविटिटे देई, पुस्तक XI, अध्याय 24)।

और वे उत्पन्न हुए; उसने आज्ञा की, और वे सृजे गए; उसने उन्हें सदा के लिए स्थापित किया; उसने एक आज्ञा ठहराई जो कभी न टलेगी। पृथ्वी से प्रभु की स्तुति करो, बड़े मछली और सभी गहराइयों से, आग और ओले से, हिमपात और कुहरे से, तूफ़ानी हवा जो उसकी आज्ञा पूरी करती है, पहाड़ों और सभी पहाड़ियों से, फलदार वृक्षों और सभी देवदारों से, जंगली जानवरों और सभी पालतू जानवरों से, रेंगने वाली चीज़ों और पंखों वाले पक्षियों, पृथ्वी के राजाओं और सभी लोगों, राजकुमारों और पृथ्वी के सभी न्यायाधीशों, जवानों और कुंवारियों, बूढ़ों और युवकों—वे प्रभु के नाम की स्तुति करें, क्योंकि केवल उसका ही नाम उत्तम है; उसकी महिमा स्वर्ग में और पृथ्वी पर है (भजन संहिता 148:1–13)। चर्च के पवित्र पिताओं और शिक्षकों में, यह विचार इस प्रकार व्यक्त किया गया है: *पवित्र शहीद जस्टिन,* जो कहते हैं कि ईश्वर ने संसार की सृष्टि 'अपनी दिव्य शक्ति को प्रकट करने के लिए' की;[1096] *एंटिओक के थियोफिलस:* 'ईश्वर ने सभी चीजों को शून्य से अस्तित्व में लाया, ताकि उनकी सृष्टियों के माध्यम से उनकी महानता जानी और समझी जा सके';[1097] *टर्टुलियन:* '(ईश्वर) ने अपनी महानता की महिमा के लिए संसार को शून्य से सृजित किया';[1098] तथा एथेनागोरस, महान अथानासियस, लैक्टैंटियस, ऑगस्टीन, जेरोम और अन्य ने भी ऐसा ही कहा।[1099]

जहाँ तक संसार के दूसरे उद्देश्य, सृजित प्राणियों की परमानंद की बात है, यह—

1) यह उस उद्देश्य से स्वाभाविक रूप से उत्पन्न होता है, जिसके लिए ईश्वर संसार की रचना करने में प्रसन्न हुए। यदि परमेश्वर ने केवल अपनी अनंत भलाई के कारण ब्रह्मांड को अस्तित्व में लाया, यह इच्छा रखते हुए कि अन्य प्राणी भी अस्तित्व की मिठास का स्वाद चखें और उसकी भलाई में सहभागी हों, तो यह स्पष्ट रूप से दुनिया के उद्देश्यों में से एक है। इसी उद्देश्य के लिए परमेश्वर अपने प्राणियों पर निरंतर *अपनी कृपा* (प्रेरितों के काम 10:38) *प्रदान करते हैं, स्वयं सभी चीज़ों को जीवन और साँस देते हुए* (प्रेरितों के काम 17:25), और इसके अलावा *हमारे आनंद के लिए हमें सभी चीज़ें भरपूर मात्रा में देते हुए* (1 तीमुथियुस 6:17), सभी चीज़ों को *भलाई से* भरते हुए (भजन संहिता 103:28) और *अपनी कृपा से सभी जीवित प्राणियों को बनाए रखते हुए* (भजन संहिता 144:16)। इसी अर्थ में— —चर्च के प्राचीन शिक्षकों ने अक्सर यह विचार व्यक्त किया कि परमेश्वर ने सभी चीजों को अपने लिए नहीं बनाया—क्योंकि उसे किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं है—बल्कि हम, उसकी रचनाओं के लिए बनाया।[1100]

2) प्रथम लक्ष्य की प्राप्ति का एक आवश्यक परिणाम है। नैतिक प्राणी (चूँकि वे *ही* अपने आप से, अर्थात् स्वतंत्र रूप से, इस लक्ष्य की ओर प्रयास करने और उसे प्राप्त करने में सक्षम हैं, जबकि अन्य सभी प्राणी केवल अपने स्रष्टा की महिमा से परिपूर्ण हैं, केवल तर्कशील प्राणियों को उसकी महिमा प्रकट करते हैं, और स्वयं सचेत रूप से उसकी महिमा नहीं कर सकते), — नैतिक प्राणी, अपने स्रष्टा की सच्ची महिमा करके, इस प्रकार पहले ही अपनी परमानंद को प्राप्त कर लेते हैं। क्योंकि वे उद्धारकर्ता के आज्ञानुसार (मत्ती 5:16), केवल *अच्छे कर्मों* और एक ईश्वरीय जीवन के द्वारा ही परमेश्वर की सच्ची महिमा कर सकते हैं, और अच्छे कर्मों का परिणाम परम आनंद है, जो कि धन्यवचन पर उनकी अपनी शिक्षा (मत्ती 5:3–12) के अनुसार है, और *धार्मिकता,* जैसा कि प्रेरित कहते हैं, *हर बात के लिए लाभदायक है, जो अब और आने वाले जीवन का वादा रखती है* (1 तीमु. 4:8)।

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि, यद्यपि हम ईश्वर की महिमा और सृष्टि के प्राणियों के आनंद—जो एक-दूसरे से इतने घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं—को संसार का उद्देश्य मानते हैं, फिर भी हम इस विचार को किसी भी तरह से खारिज नहीं करते कि संसार को तर्कशील प्राणियों के नैतिक विकास और सद्गुणों में उनके क्रमिक पूर्णता के लिए बनाया गया था। भलाई में इस क्रमिक पूर्णता के बिना, वे न तो वास्तव में परमेश्वर की महिमा कर सकते हैं और न ही आनंद प्राप्त कर सकते हैं; परिणामस्वरूप, एक अर्थ में, इस पूर्णता को भी संसार का उद्देश्य कहा जा सकता है, यद्यपि

1096 ...उसकी दिव्य शक्ति के एक संकेत के रूप में। *जस्टिन,* अरास्टोटेलियन सिद्धांतों के विरुद्ध, पृ. 111.

1097 ... ताकि उनके कार्यों के माध्यम से उनकी महानता जानी और समझी जा सके। *थियोफिलस,* एड ऑटोल्यकस 1, अध्याय 4.

1098 उसने अपनी महिमा के आभूषण के रूप में शून्य से संसार की रचना की। *टर्टुलियन,* एपोलॉजी, अध्याय 17.

1099 *एथेनागोरस,* मृतकों के पुनरुत्थान पर, अध्याय 12: 'यह स्पष्ट है कि, पहले और सबसे सामान्य विवरण के अनुसार, ईश्वर ने मनुष्य को उसके अपने लिए और सभी सृष्टि में निहित भलाई और बुद्धिमत्ता के लिए बनाया...'; *एथनास.* कॉन्ट्रा एरियन. ओरेट. II, n. 81; *लैक्टैंट.* डिविनि. इंस्टिट्यूट. लिब. VII, सी. 6; *ऑगस्टिन,* डी लिब. आर्बिट्र. III, 11, n. 32; *हियरोनिमि.* इन एफेस. 1, 14.

1100 *टर्टुलियन,* अगेंस्ट मार्शन, 1, अध्याय 13: 'ईश्वर ने संसार की सृष्टि अपने लिए नहीं, बल्कि मनुष्य के लिए की'; *ग्रेगरी ऑफ निसा,* ओरेशन, कैटेकजिम, अध्याय 5; *हिलरी,* ट्रीटीज़ भजन संहिता II पर, संख्या 14: 'परमेश्वर, जिनसे सभी वस्तुएँ आती हैं, उन्हें उन लोगों की कोई आवश्यकता नहीं है जिन्हें उन्होंने वह अस्तित्व प्रदान किया है जो उनके पास है; बल्कि उन्होंने सभी वस्तुओं को उन लोगों के लाभ के लिए बनाया जो अस्तित्व में लाए जाने थे' (पैट्रोलॉज. कर्स. कॉम्प्ल. खंड IX, पृ. 269); *लियो*— प्रभु के जन्म पर प्रवचन II।

यह मुख्य और अंतमि उद्देश्य नहीं है, बल्कि, कह सकते हैं, मुख्य उद्देश्यों के संबंध में एक प्रारंभकि और मध्यवर्ती उद्देश्य है। हमें *मसीह यीशु में भले कामों के लिए बनाया गया है* (इफसियिों 2:10), ताकि इन कामों के द्वारा हम प्रभु की महमिा कर सकें और आनंद प्राप्त कर सकें।

§ 60. सृष्टि की पूर्णता और संसार में बुराई की उत्पत्ति

"ऑर्थोडॉक्स चर्च यह सखिाता है कि हमें सृष्टि के संबंध में इस प्रकार तर्क करना चाहिए: चूँकि इसे भले ने बनाया है, यह स्वयं अच्छी है, इस अंतर के साथ कि एक तर्कशील और स्वतंत्र प्राणी, जब ईश्वर से मुँह मोड़ता है, तो बुरा हो जाता है—इसलिए नहीं कि उसे उस तरह बनाया गया था, बल्कि अपने कर्मों के कारण, जो तर्क के वपिरीत हैं। हालांकि, अतर्कशील प्राणी, जनिके पास स्वतंत्र इच्छा नहीं है, स्वभाव से ही पूरी तरह से अच्छे हैं" (ऑर्थोडॉक्स कन्फेशन, भाग 1, प्रश्न 31 का उत्तर)। और कहीं और: "चूंकि सृष्टकिर्ता, अपनी प्रकृति से ही, अच्छे हैं, इसलिए उन्होंने जो कुछ भी बनाया है, उसे पूर्ण बनाया है, और वे कभी भी बुराई के सृष्टकिर्ता नहीं हो सकते। हालाँकि, यदि किसी मनुष्य या राक्षस में (क्योंकि हम स्वयं प्रकृति में बुराई के बारे में नहीं जानते) कोई बुराई है, यानी ईश्वर की इच्छा के वरिुद्ध पाप है, तो यह बुराई या तो मनुष्य से या तो शैतान से उत्पन्न होती है। क्योंकि यह पूरी तरह से सच है और इसमें कोई संदेह नहीं है कि ईश्वर बुराई का कारण नहीं हो सकते, और इसलिए पूर्ण न्याय की मांग है कि हम इसे ईश्वर से न जोड़ें' (ऑर्थोडॉक्स वशि्वास पर पूर्वी पैट्रआर्कों का पत्र, अनुच्छेद 4)।

पवत्रि शास्त्र वास्तव में पुष्टि करता है —

क) एक ओर, कि ईश्वर द्वारा सृजति हर चीज़ पूर्ण रूप से बनाई गई है। इस प्रकार, पवत्रि वंशावलीकार, सृजन के दनिों का वर्णन करते हुए, बार-बार यह अवलोकन करता है: *'और परमेश्वर ने देखा कि वह* (जो उसने बनाया था) *भला था* (उत्पत्ति 1:4; 10:12, 18, 21, 25), और नष्किर्ष में वह कहते हैं: *'और परमेश्वर ने सब कुछ जो उसने बनाया था, देखा, और देखो, वह बहुत भला था* (31)। बाद के लेखक इसी वचिार को वभिन्नि तरीकों से दोहराते हैं; उदाहरण के लिए, भजनकार: *'हे यहोवा, तेरे काम कतिने बहुतेरे हैं! तूने उन्हें सबको बुद्धि से बनाया* है' (भजन संहति 103:24); उपदेशक: *'उसने सब कुछ उसके समय पर सुन्दर बनाया* है' (उपदेशक 3:11; तुलना करें सभोपदेशक 11:25); सरिख के बुद्धमिान पुत्र: *'प्रभु के सभी कार्य अत्यंत लाभकारी* हैं' (सरिख 39:21); पवत्रि प्रेरति पौलुस: *'परमेश्वर की हर सृष्टि अच्छी है* (1 तीमुथयिुस 4:4)।

ख) दूसरी ओर — कि यदि कुछ तर्कशील प्राणयिों में, अर्थात् राक्षस और मनुष्य में, बुराई है, तो यह बुराई परमेश्वर से नहीं, बल्कि उन स्वयं से आती है। *'वह आरम्भ से हत्यारा था,'* उद्धारकर्ता ने शैतान के वषिय में कहा, 'और *सत्य में स्थरि नहीं रहता, क्योंकि उसमें सत्य नहीं है; जब वह झूठ बोलता है, तो अपनी ही प्रकृति से बोलता है, क्योंकि वह झूठा है और झूठ का पति* है' (यूहन्ना 8:44)। प्रेरति कहते हैं, *'एक मनुष्य के द्वारा पाप संसार में प्रवेश कयिा, और पाप के द्वारा मृत्यु; और इस प्रकार मृत्यु सब मनुष्यों में व्याप्त हो गई, क्योंकि सब ने उसमें पाप कयिा* (रोमयिों 5:12); या: *'जो कोई पाप करता है वह शैतान का है, क्योंकि शैतान ने पहले पाप कयिा* (1 यूहन्ना 3:8)। परणिामस्वरूप, हमें आज्ञा दी गई है: *'बुराई से मुँह फेर लो और भलाई करो* (भजन संहति 33:15); *'अपने को धोओ, शुद्ध हो जाओ; अपनी बुरी करतूतों को मेरी आँखों के सामने से हटा दो; बुरा करना बंद करो* (यशायाह 1:15), और इसी तरह।

चर्च के पवत्रि पतिाओं और शक्षिकों ने सृष्टि की पूर्णता और संसार में बुराई की उत्पत्ति से संबंधति इन सभी वचिारों पर, वशिेष रूप से दो अवसरों पर, प्रकाश डाला: पहले, जब उन्होंने ग्नॉस्टकि, मार्सयिोनाइट, मनखिीय और अन्य वधिर्मी लोगों की झूठी शक्षिाओं का खंडन कयिा, जो यह दावा करते थे कि संसार अपूर्ण और बुराई से भरा है, और इस बुराई का कारण स्वयं ईश्वर है, या अच्छाई के वपिरीत एक अलग, बुरा सद्धिांत है; और दूसरे, जब उन्होंने सृष्टि के छह दनिों पर टीकाएँ लखिीं। पहले मामले में, उनके मुख्य तर्क इस प्रकार थे: 'बुराई कोई ऐसी सत्ता नहीं है जसिकी वास्तवकि अस्तत्वि हो, जैसे ईश्वर द्वारा रचति अन्य प्राणी, बल्कि यह केवल प्राणयिों का अपनी प्राकृतकि अवस्था—जसिमें सृष्टकिर्ता ने उन्हें स्थापति कयिा था—से वपिरीत अवस्था में वचिलन है। इसलिए, ईश्वर बुराई का कारण नहीं है, बल्कि यह स्वयं प्राणयिों से उत्पन्न होती है, जो अपनी प्राकृतकि अवस्था और उद्देश्य से भटक जाते हैं। और चूँकि केवल नैतकि प्राणी ही अपनी प्राकृतकि अवस्था से अपनी इच्छा से भटक सकते हैं, इसलिए बुराई, सख्त अर्थ में, केवल नैतकि

है। दूसरी ओर, भौतिक बुराई को आंशिक रूप से नैतिक बुराई के परिणाम, आंशिक रूप से पापों के लिए ईश्वर द्वारा भेजी गई सजा, और आंशिक रूप से पापियों के सुधार के साधन के रूप में माना जाना चाहिए।[1101]

और सृष्टि के छह दिनों पर अपनी टीका-टिप्पणियों में, पवित्र शिक्षकों ने बारी-बारी से ईश्वर की उन सभी प्राणियों की प्रत्येक श्रेणी की जाँच की जो किसी न किसी दिन प्रकट हुई थीं, और उनके सबसे उत्तम डिज़ाइन में ईश्वर की अद्भुत बुद्धिमत्ता के निशानों को विस्तार से प्रदर्शित किया।[1102] केवल ईश्वर की अवधारणा पर आधारित सामान्य ज्ञान, सृष्टि की पूर्णता और संसार में बुराई की उत्पत्ति के संबंध में पवित्र धर्मग्रंथ और पवित्र पिताओं की शिक्षा से सहजता से सहमत होता है। ईश्वर परम बुद्धि और सर्वशक्तिमान सत्ता हैं; अतः उन्होंने संसार को अपूर्ण रूप में नहीं बनाया, और न ही उसमें ऐसा कोई तत्व सृजित किया जो अपने उद्देश्य के लिए अपर्याप्त हो या समग्र की पूर्णता में योगदान न दे। ईश्वर परम पवित्र और सर्व-सत्कार्यमय सत्ता हैं; अतः वे नैतिक या भौतिक, किसी भी प्रकार के दुष्टाचार के कारण नहीं हो सकते। और यदि उन्होंने एक अपूर्ण संसार बनाया होता, तो वह या तो इसलिए होता क्योंकि वे एक अधिक परिपूर्ण संसार बनाने में असमर्थ थे, या क्योंकि वे ऐसा नहीं चाहते थे। लेकिन ये दोनों ही धारणाएँ परम सत्ता की सच्ची कल्पना के साथ समान रूप से असंगत हैं।

§ 61. सिद्धांत के नैतिक निहितार्थ

ईश्वर की सृष्टि के सिद्धांत के अर्थ में गहराई से जाने पर, हम ईश्वर और उनकी सृष्टि दोनों के बारे में बहुत कुछ सीख सकते हैं।

1) ईश्वर ने ब्रह्मांड की रचना की, और उसके साथ ही हमारी भी, केवल अपनी अनंत भलाई और प्रेम से, उन्हें किसी की या किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं थी; इस प्रकार, जब हम अपने चारों ओर की प्रकृति को देखते हैं और अपनी अस्तित्व के प्रति सचेत होते हैं, तो हम में से प्रत्येक में सबसे पहले एक गहरी कृतज्ञता की भावना उत्पन्न होनी चाहिए।

2) शून्य से ब्रह्मांड की सृष्टि में, इसकी आश्चर्यजनक विशालता में, इसके बुद्धिमानी भरे डिज़ाइन में—समग्र रूप से और इसके हिस्सों में, सबसे छोटे विवरणों तक—इसमें रहने वाले जीवों की अद्भुत विविधता में, और उन गुणों में जिनसे ये जीव संपन्न हैं, ईश्वर ने अपनी अनंत सर्वशक्तिमत्ता, महिमा और बुद्धिमत्ता को प्रकट किया है, ताकि संपूर्ण संसार दिव्य पूर्णताओं का एक दर्पण बन जाए; अतः आइए हम इस दर्पण में यथासंभव अधिक बार झाँकें, ताकि हमारे प्रभु की प्रतिमा को अपने सामने देखकर, हम उनकी उपस्थिति में चलें और उनके पूर्ण गुणों का अनुकरण करें।

३) संसार की सृष्टि का मुख्य उद्देश्य सृष्टिकर्ता की महिमा है। और हमारे चारों ओर की दुनिया, जो ईश्वर की सिद्धियों को इतनी स्पष्ट रूप से प्रतिबिंबित करती है, वास्तव में एक भव्य मंदिर है जिसमें सभी निरंतर अपने सृष्टिकर्ता की स्तुति और महिमा करते हैं; हम भी, सभी सृष्टि की आवाज़ में अपनी स्तुति की आवाज़ मिलाना सीखें; हम सीखें कि परमेश्वर की महिमा करें, *अपने शरीरों में... और अपनी आत्माओं में..., जो परमेश्वर की हैं* (1 कुरिन्थियों 6:20), और *सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिए करें* (1 कुरिन्थियों 10:31)।

४) ईश्वर की सभी रचनाएँ पूर्ण हैं, और उनकी पूर्णता इस तथ्य में निहित है कि प्रत्येक उस उद्देश्य के लिए पूरी तरह से पर्याप्त है जिसके लिए उसे बनाया गया है; अतः आइए हम इन प्राणियों की इस पूर्णता का सम्मान करें, और कभी भी किसी वस्तु या प्राणी का उसके स्वभाव और उद्देश्य के विपरीत दुरुपयोग न करें।

5) ईश्वर की सभी रचनाएँ सुंदर हैं: आइए हम इस सुंदरता को हमारे प्रभु के हाथों के काम के रूप में प्रेम करना सीखें; परन्तु हमें इसे इस प्रकार प्रेम करना चाहिए कि सृष्टि के कारण, हम सृष्टिकर्ता को न भूलें; बल्कि दृश्यमान सौंदर्य पर मनन करके, हम परमेश्वर के अदृश्य, अविनाशी, परम सौंदर्य के मनन के लिए और भी ऊँचा उठाए जाएँ, और केवल उसी से हम अपनी पूरी आत्मा के साथ जुड़ें, उसमें अपना सच्चा आनंद खोजते हुए।

[1101] *डायोनिसियस द एरोपागाइट,* *ऑन द डिवाइन नेम्स*, अध्याय 4, संख्या 18–35; *थियोफिलस,* *टू ऑटोल्यकस*, 11, 27; *टेटियन,* *टू द ग्रीक्स*, XI; *आइरेनियस,* *अगेंस्ट हेरेसीज़*, IV, 29, संख्या 1; *टर्टुलियन,* *अगेंस्ट मार्कियन*, 1, 16, 25, 26; 11, 6, 14; *ओरिजन,* *Contra Celsum* IV, 54, 55; *अथेनासियस,* *Contra Gentiles*, अध्याय 7; *अथेनासियस,* *In Hexaemeron* 1, अध्याय 8; *ग्रेगरी द थियोलोजियन,* *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स* में, III, पृ. 320; *बेसिल द ग्रेट,* वही, VIII, पृ. 142–163; *ऑगस्टीन,* *Contra Manichaeos* 11, 29, n. 43; *De Civitate Dei* XII, 5, 6; *जॉन ऑफ़ डेमास्कस,* *Exact Exposition of the Orthodox Faith* III, अध्याय 20.

[1102] छह दिनों पर या उत्पत्ति की पुस्तक पर व्याख्याएँ देखें: बेसिल द ग्रेट, जॉन क्रिसोस्टोम, एम्ब्रोज़, ग्रेगरी ऑफ़ निस्सा, एफ्रेम द सीरियन, और अन्य द्वारा।

1. आध्यात्मिक जगत पर

§ 62. चर्च की शिक्षा और धर्मनिष्ठा के संबंध में झूठी रायों का संक्षिप्त अवलोकन

अदृश्य या आध्यात्मिक जगत के संबंध में ऑर्थोडॉक्स चर्च की शिक्षा, सख्ती से कहें तो ईश्वर की एक सृष्टि के रूप में, इस प्रकार संक्षेपित की जा सकती है: "देवदूत अदेह आत्माएँ हैं, जिन्हें बुद्धि, इच्छा और शक्ति प्रदान की गई है... उन्हें दृश्यमान जगत और मनुष्य से पहले बनाया गया था...; वे नौ आदेशों में विभाजित हैं..., और यहां तक कि दुष्ट स्वर्गदूत भी ईश्वर द्वारा अच्छे बनाए गए थे, लेकिन वे अपनी स्वतंत्र इच्छा से बुरे हो गए" (पहले अनुच्छेद पर विस्तारित ईसाई धर्मशास्त्र; ऑर्थोडॉक्स कन्फेशन, भाग 1, प्रश्न 19–21 के उत्तर)।

यह एक डॉगमैटिक शिक्षण है, जो जैसा कि हम देखेंगे, चर्च में हमेशा से ही संपूर्ण रूप से मौजूद रहा है, फिर भी इसके सभी भागों में विभिन्न विशिष्ट मतों के अधीन रहा है, या यहां तक कि अस्वीकार भी किया गया है। इस प्रकार, ऐसे लोग रहे हैं और आज भी हैं जिन्होंने स्वर्गदूतों, शुभ और दुष्ट दोनों, के *अस्तित्व को* ही अस्वीकार किया है और करना जारी रखा है, अपना दृष्टिकोण मुख्यतः इस विचार पर आधारित करते हुए कि स्वर्गदूतों से संबंधित पवित्र शास्त्र के अंशों को रूपकात्मक अर्थ में समझना चाहिए।[1103] ऐसे भी थे जिन्होंने स्वर्गदूतों की *प्रकृति* के बारे में अपनी निजी राय रखी—कई लोगों ने अच्छे और बुरे दोनों स्वर्गदूतों को शरीर वाला माना, हालांकि, अधिकांशतः ये सबसे महीन, अग्निमय या अलौकिक प्रकार के थे;[1104] कुछ लोगों ने स्वर्गदूतों को उनकी प्रकृति की गरिमा के मामले में मानवीय आत्मा की तुलना में निम्न माना।[1105] अन्य लोग स्वर्गदूतों की *उत्पत्ति* के संबंध में भ्रमित थे; सबसे पहले, उनकी उत्पत्ति के तरीके को लेकर, यह दावा करते हुए कि स्वर्गदूत ईश्वर द्वारा सृजित नहीं थे, बल्कि उनके सार से उत्पन्न हुए थे;[1106] दूसरा, उन्होंने उनके उद्भव के समय के संबंध में भूल की, यह मानते हुए कि स्वर्गदूत या तो पदार्थ की सृष्टि के तुरंत बाद लेकिन दृश्यमान जगत के बनने से पहले बनाए गए थे,[1107] या पहले दिन प्रकाश के साथ,[1108] या संपूर्ण भौतिक जगत और मानव की सृष्टि के बाद।[1109] कुछ अन्य यह सिखाते थे कि पतित आत्माएँ *स्वभावतः* और आरंभ से *ही दुष्ट थीं*, और वे अपनी स्वतंत्र इच्छा से दुष्ट नहीं बनीं।[1110] अच्छे और बुरे स्वर्गदूतों की *संख्या और पदक्रम*, स्वर्गदूतों के पतन का कारण और तरीका, उनका पहला पाप क्या था आदि विषयों पर कई विशिष्ट मत थे।

इन सभी मतों की योग्यता, चाहे वे यहाँ प्रस्तुत हों या न हों, समय आने पर ईश्वर की सृष्टि के रूप में शुभ और दुष्ट आत्माओं पर ऑर्थोडॉक्स शिक्षा की विस्तृत व्याख्या के माध्यम से स्पष्ट हो जाएगी।

1.1. शुभ आत्माओं या स्वर्गदूतों पर

[1103] *हॉब्स,* लेवियाथन, अध्याय 34; *सेमलर,* डिसिर्टेशन ऑन डेमोनियिक्स, हैले 1760; *शॉट,* एपिटोम ऑफ क्रिश्चियन थियोलॉजी, डॉगमैटिक्स, पृष्ठ 83, और अन्य।

[1104] *जस्टिन,* *डायलॉग विद ट्रायफो*, अध्याय 57; *अलेक्जेंड्रिया के क्लेमेंट,* *स्ट्रोमाटा*, IV, 3; *टाटियन,* *अगेंस्ट द ग्रीक्स*, XII.

[1105] *टर्तुल्लियन,* *अगेंस्ट मार्कियन*, II, 8, 9; *ओरिजिन,* *मैथ्यू पर टीका*, पुस्तक X, टिप्पणी 13; *जॉन पर टीका*, पुस्तक I, टिप्पणी 24.

[1106] सेरिन्थस, कार्पोक्रेट्स, सैटरनिनस और अन्य के विचार। *ऑगस्टीन,* *कॉन्ट्रा फाउसटस*, XV, 5, और *डे जेनेसी एड लिटेरम*, VII, 2, n. 3 में देखें।

[1107] *जेनाडियस,* *De dogmatis ecclesiae*, अध्याय X, *Patrologia Cursus Completus*, खंड LVIII, पृ. 983 में।

[1108] *एपिफेनियस,* *हेरेसियो* LXV, 4, 5; *ऑगस्टीन,* *डे सिविटिटे देई* XI, 7, 9.

[1109] यह दृष्टिकोण प्राचीन काल में कुछ लोगों द्वारा अपनाया गया था, जैसा कि धन्य ऑगस्टीन (De civit. Dei XI, पृ. 2) के शब्दों से स्पष्ट है, और हाल के समय में, उदाहरण के लिए, शुबर्ट *(Schubert,* Inst. theol. Dogmat. 1, पृ. 4, § 51) द्वारा।

[1110] अर्थात्: एबियोनाइट्स, नोस्टिक और, अधिक सामान्य रूप से, द्वैतवादी। देखें *क्लेमेंट ऑफ़ अलेक्जेंड्रिया,* होमलीज XIX, संख्या 12, 13।

§ 63. स्वर्गदूतों की अवधारणा और उनके अस्तित्व की निश्चितता

चर्च के प्राचीन शिक्षकों के अनुसार, *'दूत'* ('Ἄγγελος, מַלְאָךְ; 'संदेशवाहक', 'घोषक') नाम किसी स्वभाव की बजाय एक पद को दर्शाने वाला उपाधि है।[1111] इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं है कि पवित्र शास्त्र में यह उपाधि सर्वोच्च की विभिन्न संदेशवाहकों पर लागू की गई है, जिन्होंने उनकी इच्छा की घोषणा की है या कर रहे हैं। इस प्रकार, पुराने नियम में यह निम्नलिखित को दिया गया है: स्वयं मसीहा को, जिन्हें संयोगवश केवल एक स्वर्गदूत नहीं, बल्कि *वाचा का स्वर्गदूत* (मला. 3:1) कहा जाता है; मूसा को (गिनती 20:16); अन्य भविष्यवक्ताओं को (हग्गै 1:3; यशायाह 33:7), याजकों (मलाकी 2:7), और यहां तक कि उन निर्जीव वस्तुओं को भी जो प्रभु के वचन को पहुंचाती हैं (भजन संहिता 77:49); और नए नियम में — उद्धारकर्ता के अग्रदूत (मत्ती 11:10), उनके शिष्यों (लूका 9:52), अग्रदूत के शिष्यों (लूका 7:18–24) और कलीसियाओं के अगुवों (प्रकाशितवाक्य 1:20; 2:1) के लिए प्रयुक्त होता है। लेकिन सख्त और उचित अर्थ में, पवित्र शास्त्र में 'देवदूत' शब्द एक विशेष प्रकार के प्राणियों को संदर्भित करता है, जो ईश्वर और मनुष्य दोनों से भिन्न हैं; वे आध्यात्मिक प्राणी हैं, वास्तविक और काल्पनिक नहीं; और इसकी गवाही पुराने और नए नियम दोनों के अनगिनत अंशों में दी गई है, जिनकी व्याख्या पाठ के अर्थ को बुरी तरह से तोड़-मरोड़ने के बिना किसी भी तरह से रूपक रूप में नहीं की जा सकती।

यहाँ पुराने नियम से कुछ उदाहरण दिए गए हैं:

(क) पुरखों के पिता याकूब के बारे में वर्णित है: *'और उसने एक स्वप्न में देखा: देखो, एक सीढ़ी पृथ्वी पर रखी हुई थी, और उसकी चोटी स्वर्ग तक पहुँचती थी; और देखो, परमेश्वर के स्वर्गदूत उस पर चढ़ते और उतरते थे।' और देखो, यहोवा उसके ऊपर खड़ा हुआ और उसने कहा: 'मैं तेरे पिता इब्राहीम का परमेश्वर और इसहाक का परमेश्वर हूँ; [मत डर]। जिस भूमि पर तू लेटा है, मैं वह तुझे और तेरे वंशजों को दूँगा* (उत्पत्ति 28:12–13)। यहाँ स्वर्गदूत स्पष्ट रूप से परमेश्वर और मनुष्य से अलग हैं, और यद्यपि यह दर्शन एक सपने में हुआ था, फिर भी उन्हें निश्चित रूप से वास्तविक प्राणियों के रूप में पहचाना जाना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे परमेश्वर, जो उनके साथ प्रकट हुए, वास्तविक हैं—और भी अधिक इसलिए क्योंकि याकूब का स्वप्न स्वयं परमेश्वर की व्यवस्था से हुआ था।

ख) यशायाह की पुस्तक में हम पढ़ते हैं: *'क्या मनुष्य परमेश्वर से अधिक धर्मी हो सकता है? क्या कोई मनुष्य अपने बनानेवाले से अधिक शुद्ध हो सकता है?' देखो, वह अपने दासों पर भी भरोसा नहीं करता, और अपने स्वर्गदूतों में दोष निकालता है* (अय्यूब 4:17-18)। यहाँ भी, स्वर्गदूतों को परमेश्वर और मनुष्य दोनों से अलग दिखाया गया है, और उन्हें स्वभाव से ही मनुष्य से श्रेष्ठ बताया गया है; लेकिन क्या यह तुलना करना संभव होता यदि स्वर्गदूत वास्तव में मौजूद ही नहीं होते?

(ग) भजनकार मनुष्य और स्वर्गदूतों के बीच इसी प्रकार की तुलना करता है, केवल और भी प्रबल शब्दों में: *'मनुष्य क्या है कि तू उसकी सुधि रखता है, और मनुष्य का पुत्र कि तू उस पर ध्यान देता है? तूने उसे स्वर्गदूतों से कुछ ही कम बनाया; तूने उस पर महिमा और सम्मान का मुकुट पहनाया है* (भजन संहिता 8:5-6)।

घ) यद्यपि, जैसा कि हमने उल्लेख किया है, 'स्वर्गदूत' नाम कभी-कभी भविष्यद्वक्ताओं के लिए भी प्रयुक्त होता है, परन्तु सही अर्थ में स्वर्गदूत स्पष्ट रूप से भविष्यद्वक्ताओं से भिन्न हैं: क्योंकि वे परमप्रभु की ओर से उनके पास आते हैं और उनकी इच्छा की घोषणा करते हैं। इस प्रकार स्वर्गदूत एलिया (2 राजा 1:3, 15), दानिय्येल (दानिय्येल 3:49; 6:22), और जकर्याह (जकर्याह 1:14) के पास प्रकट हुआ।

हमें इस सत्य का और भी स्पष्ट और निर्णायक प्रमाण नए नियम में मिलता है: स्वयं उद्धारकर्ता और प्रेरितों दोनों के शब्दों में।

उद्धारकर्ता, उदाहरण के लिए, कहते हैं:

क) *उसने उत्तर दिया, 'जो अच्छा बीज बोता है वह मनुष्य का पुत्र है; खेत संसार है; अच्छे बीज राज्य के पुत्र हैं, और निन्दक दुष्ट के पुत्र हैं; वह शत्रु जिसने उन्हें बोया है, वह शैतान है; कटनी युग का अन्त है, और कटनी करने वाले स्वर्गदूत हैं* (मत्ती 13:37–39)। इस कथन में, स्वर्गदूतों को मनुष्य के पुत्र, संसार और राज्य के पुत्रों के ठीक उसी तरह अस्तित्व में प्रस्तुत किया गया है।

[1111] *ओरिजिन, *कॉन्ट्रा सेल्सस*, V, 4: 'इन्हें, अत; स्वर्गदूत कहा जाता है क्योंकि इन्हें अपने ही कर्मों द्वारा सिखाया गया है।' *हिलैरियन, *डे ट्रिनिटेट*, V, 22; *ऑगस्टीन/ भजन संहिता 103 पर प्रवचन 1, संख्या 15; *सेवरस गॅब.* होमलियाँ III, पृ. 103 (सं. *ऑचर*): 'देवदूत' नाम उनकी प्रकृति से नहीं आता, बल्कि यह उनकी सेवा को दर्शाने वाला नाम है।

ख) *सावधान रहो कि तुम इन छोटे लोगों में से किसी को भी तुच्छ न समझो; क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ कि उनके स्वर्ग के दूत स्वर्ग में मेरे पिता का मुंह सदा देखते हैं* (मत्ती 18:10)। यहाँ, स्वर्गदूतों को न केवल वास्तविक और व्यक्तिगत प्राणी के रूप में चित्रित किया गया है, बल्कि ईश्वर के साथ सबसे घनिष्ठ संबंध में भी दिखाया गया है।

(c) *मैं तुमसे यह कहता हूँ: जो कोई मनुष्यों के सामने मुझको स्वीकार करेगा, मनुष्य का पुत्र भी परमेश्वर के स्वर्गदूतों के सामने उसे स्वीकार करेगा; परन्तु जो कोई मनुष्यों के सामने मुझको नकार देगा, उसे परमेश्वर के स्वर्गदूतों के सामने नकार दिया जाएगा* (लूका 12:8–9)। इसका अर्थ है कि स्वर्गदूत मानव जाति से भिन्न एक विशिष्ट और विशेष वर्ग के प्राणी हैं।

(d) *परन्तु उस दिन या घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता—न स्वर्ग में दूत, न पुत्र—केवल पिता ही जानते हैं* (मरकुस 13:32)। यहाँ, स्वर्गदूतों को स्वर्ग के निवासी के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो मनुष्यों की तुलना में सबसे पूर्ण ज्ञान के अधिकारी हैं और उतनी ही निश्चित रूप से मौजूद हैं जितना कि पिता और पुत्र मौजूद हैं।

ई) *जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आएगा, और उसके साथ सब पवित्र स्वर्गदूत होंगे, तब वह अपनी महिमा के सिंहासन पर बैठेगा* (मत्ती 25:31; तुलना करें 16:27; लूका 9:26)। मनुष्य का पुत्र न्याय करने आएगा, निस्संदेह वास्तविक प्राणियों के साथ।

f) *पुनरुत्थान में, लोग न तो विवाह करते हैं और न ही विवाह के लिए दिए जाते हैं, बल्कि स्वर्ग में परमेश्वर के स्वर्गदूतों के समान रहते हैं* (मत्ती 22:30)। ये शब्द, जिनमें स्वर्गदूतों को इतनी निर्विवाद रूप से वास्तविक प्राणियों के रूप में स्वीकार किया गया है, और भी अधिक उल्लेखनीय हैं क्योंकि वे उद्धारकर्ता द्वारा सदूकीयों के सामने बोले गए थे, जो स्वर्गदूतों के अस्तित्व से इनकार करते थे (प्रेरितों के काम 23:8), और इस प्रकार इस बात की गवाही दी कि उन्होंने स्वर्गदूतों के सिद्धांत को अपने श्रोताओं की झूठी धारणाओं के अनुकूलन के रूप में बिल्कुल नहीं सिखाया, जैसा कि स्वतंत्र विचारक सुझाने का साहस करते हैं,[1112] बल्कि इस सिद्धांत के अटूट सत्य के आधार पर ही सिखाया।

पवित्र प्रेरितों में, केवल दो मुख्यों की गवाहियाँ सुनना ही पर्याप्त है:

क) संत पतरस कहते हैं: *'उन्हें* (नबियों को) *यह प्रकट किया गया था कि जो बात अब स्वर्ग से भेजे गए पवित्र आत्मा के द्वारा सुसमाचार का प्रचार करने वालों द्वारा आप लोगों को सुनाई जा रही है, वह उनके अपने लाभ के लिए नहीं, बल्कि हमारे लाभ के लिए थी—एक ऐसा संदेश जिस पर स्वर्गदूत भी झाँकने के लिए लालायित रहते हैं* (1 पतरस 1:12)। यहाँ स्वर्गदूतों को स्पष्ट रूप से परमेश्वर के अन्य संदेशवाहकों और प्रचारकों, अर्थात् भविष्यवक्ताओं और प्रेरितों से अलग दिखाया गया है, और उन्हें एक विशेष प्रकार के, श्रेष्ठ और स्वतंत्र इच्छा से संपन्न प्राणी के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

ख) संत पौलुस अपने प्रिय शिष्य तिमोथी को लिखते हैं: *'मैं तुझे ईश्वर और प्रभु यीशु मसीह और चुने हुए स्वर्गदूतों की उपस्थिति में आज्ञा देता हूँ कि इन बातों का पक्षपात रहित पालन करना* (1 तिमोथी 5:21)। इसलिए, यदि प्रेरित परमेश्वर पिता और प्रभु यीशु के साथ-साथ स्वर्गदूतों को गवाहों के रूप में बुलाते हैं, तो वे स्पष्ट रूप से उन्हें एक निर्विवाद अस्तित्व प्रदान करते हैं।

ग) और इब्रानियों के नाम पत्र में, वही प्रेरित, उद्धारकर्ता की तुलना स्वर्गदूतों से करते हुए कहते हैं: *'स्वर्गदूतों से कहीं श्रेष्ठ, क्योंकि उन्हें उनके नाम से भी अधिक उत्कृष्ट नाम विरासत में मिला है।' क्योंकि किसी स्वर्गदूत से परमेश्वर ने कभी कहा: 'तू मेरा पुत्र है, आज मैंने तुझे उत्पन्न किया है'... इसी प्रकार, प्रथमजन्मा को ब्रह्मांड में प्रस्तुत करते हुए, वह कहते हैं: 'परमेश्वर के सब स्वर्गदूत उसकी आराधना करें* (इब्रानियों 1:4-6)। इससे भी यह स्पष्ट है कि प्रेरित ने स्वर्गदूतों को वास्तविक प्राणियों के रूप में पहचाना, और इसके अलावा उन्हें अन्य प्राणियों में सर्वोच्च माना।

इस बात के अनगिनत प्रमाण हैं कि मसीह की पवित्र कलीसिया अपने अस्तित्व के आरंभ से ही स्वर्गदूतों के अस्तित्व में विश्वास करती आई है। ऐसे प्रमाण सभी प्राचीन धर्म-सूत्रों में मिलते हैं, जिनमें परमेश्वर को अन्य बातों के अलावा, *अदृश्य*, अर्थात्, आध्यात्मिक जगत का *सृष्टिकर्ता* कहा गया है।[1113] विशेष रूप से, चर्च फादर्स: जस्टिन द

[1112] ऊपर टिप्पणी 1103 देखें।

[1113] यरूशलेम के चर्च के धर्म-विश्वास में लिखा है: πιστεύω εἰς ἕνα Θεόν..., ὁρατῶν τε πάντων καί ἀοράτων ποιητήν; कैसियिन के ग्रंथ के अनुसार, अंताकिया के चर्च के धर्म-विश्वास में: credo in... creatorem omnium visibilium et *invisibilium* creaturarum; कैसरिया की कलीसिया

मार्टयिर, एथेनागोरस, यूसेबयिस, बेसलि द ग्रेट, ग्रेगरी द थयिोलोजयिन, ऑगस्टीन और कई अन्य की गवाहयिाँ हैं,[1114] जन्हिें हम यहाँ उद्धृत करना अनावश्यक समझते हैं, क्योंकि किसी ने भी कभी स्वर्गदूतों के अस्तत्वि में चर्च के वशि्वास पर संदेह नहीं कयिा है।

दव्यि प्रकटीकरण से यह अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के बाद कि दृश्यमान के अलावा एक आध्यात्मकि जगत भी है, और कि स्वर्गदूत मौजूद हैं, स्वस्थ मानव तर्क अपनी ही तरह से इस सत्य के कुछ हद तक नकिट पहुँच सकता है।

इतहिास हमें बताता है कि स्वर्गदूतों के अस्तत्वि में वशि्वास सभी युगों और सभी लोगों में, उनके धर्मों में सभी मतभेदों के बावजूद, मौजूद रहा है, और यह मानव जाति के बीच लगभग उतना ही सार्वभौमकि है जतिना कि ईश्वर के अस्तत्वि में वशि्वास।[1115] तो फरि, हमें इस घटना को कैसे देखना चाहयि? इसकी व्याख्या कैसे की जा सकती है? सबसे स्वाभावकि और सीधा-सादा स्पष्टीकरण यह है कि स्वर्गदूतों का सद्धिांत आदमि धर्म से वभिन्नि लोगों की सभी धार्मकि प्रणालयिों में प्रवेश कर गया है, और यह उस मूल प्रकटीकरण के अवशेषों में से एक है—हालांकि काफी वकिृत रूप में—जो ईश्वर ने स्वर्ग में मानव जाति के पूर्वजों पर प्रदान कयिा था, और बाद में उनसे उनके सभी वंशजों के बीच फैल गया।

भौतकि जगत में हम अस्वाभावकि बहुतायत और जीवों की ववििधिता देखते हैं; हम उनके बीच वभिन्नि स्तर और वर्ग देखते हैं, कुछ दूसरों से ऊँचे, कुछ दूसरों से अधकि पूर्ण; क्या हम, उपमा द्वारा, यह नष्किर्ष नहीं नकिाल सकते कि आध्यात्मकि जगत में भी कुछ इसी तरह का अस्तत्वि होना चाहयि, — कि, मानव आत्मा के अलावा, जसिे ही हम एक आत्मा के रूप में जानते हैं, अनगनित अन्य आत्माएं और आत्माओं के वर्ग भी मौजूद होने चाहयि, जो समान रूप से पूर्णता की वभिन्नि श्रेणयिों में एक-दूसरे से ऊपर उठती हैं और, मानो, एक नरिंतर सीढ़ी बनाती हैं, जो मानव आत्मा से शुरू होकर ईश्वर तक जाती है? कम से कम, यह पूरी तरह से अवशि्वसनीय है कि संपूर्ण आध्यात्मकि दुनयिा केवल मानव आत्माओं तक ही सीमति हो, जबकि भौतकि दुनयिा इतनी आश्चर्यजनक रूप से वशिाल और ववििधि है।

यदि संसार का उद्देश्य और सुदृढ़ तर्क एक ओर, सृष्टकिर्ता की महमिा, और दूसरी ओर, प्राणयिों के सुख और आनंद (§ 59) को स्वीकार करने के लयि ववश हैं, तो इस संबंध में भी आत्माओं का अस्तत्वि आवश्यक प्रतीत होता है। प्रभु ने भौतकि प्राणयिों की सृष्टि में अपनी कतिनी ही सद्धियिाँ प्रकट की हों, ये प्राणी स्वयं उनमें प्रकट हुई दैवी सद्धियिों को समझने या अपने स्रष्टा की महमिा करने में असमर्थ हैं। भले ही उसने उन पर जीवन का आशीर्वाद कतिनी भी प्रचुरता से प्रदान कयिा हो, भौतकि जगत के अधकिांश प्राणयिों में अपनी ही अस्तत्वि को जानने की क्षमता भी नहीं है, जबकि अन्य, यद्यपि अस्तत्वि को जानने में सक्षम हैं, उसे तर्कसंगत रूप से समझने या उससे सचेत रूप से आनंद लेने में असमर्थ हैं। केवल आध्यात्मकि और तर्कशील प्राणी ही अपने स्रष्टा की उन सद्धियिों को समझने में सक्षम हैं, जो स्वयं उनमें और भौतकि जगत की सृष्टि में प्रकट हुई हैं; केवल वे ही तर्कसंगत वाणी और दैवी जीवन के माध्यम से उनकी महमिा कर सकते हैं; केवल वे ही न केवल अस्तत्वि की सभी मठिास को महसूस करने, बल्कि उसे स्पष्ट रूप से साकार करने और सच्चे सुख और आनंद का आनंद लेने में सक्षम हैं।

§ 64. परमेश्वर से स्वर्गदूतों की उत्पत्ति और उनकी उत्पत्ति का समय

यह सर्वविदति है कि पवत्रि वंशावलीकार ने, संसार की सृष्टि का वर्णन करते हुए, स्वर्गदूतों की उत्पत्ति के बारे में स्पष्ट रूप से नहीं बताया। और यह, जैसा कि चर्च के पवत्रि पतिाओं का मानना था, दो कारणों से था: पहला, क्योंकि उस समय के यहूदयिों की अलौककि मामलों के स्तर तक उठने में असमर्थता के कारण, मूसा का इरादा अपने देशवासयिों के सामने केवल दृश्यमान दुनयिा का इतहिास प्रस्तुत करने का था, ताकि उन्हें कम से कम उनके लयि सुलभ वषियों की

के धर्म-वशि्वास में: 'मैं वशि्वास करता हूँ... सभी चीजों के स्रष्टा में, जो दृश्य और अदृश्य दोनों हैं' (देखें *बाइंगहम,* *ओरजिनि. इक्लेस.*, पुस्तक X, अध्याय 4)।

[1114] *जस्टनि,* एपोलॉजी 1, संख्या 6; *एथेनागोरस,* लेगेटस, संख्या 10; *यूसेबयिस,* डेमोंस्ट्रेशन ऑफ़ द गॉस्पेल III, अध्याय 5; बेसलि *द ग्रेट,* 'द वर्क्स ऑफ़ द होली फादर्स' V, 271; *ग्रेगरी द थयिोलोजयिन,* वही III, 240; *ऑगस्टीन,* प्रवचन 1, भजन संहति 103 पर: 'यद्यपि हम स्वर्गदूतों के साक्षात् रूप नहीं देखते हैं, फरि भी हम वशि्वास से जानते हैं कि स्वर्गदूत मौजूद हैं, और हम पढ़ते हैं कि वे कई लोगों के सामने प्रकट हुए हैं।'

[1115] इस बात की गवाही प्राचीनों ने दी है *(टर्टुलयिन,* *एपोलोजेटकिस*, पृ. 22; *साइप्रयिन,* *डी आइडोल. वैनटि.*, पृ. 226, एड. मॉर.; *एथेनागोरस* द लेगेट, *प्रो क्राइस्ट.*, खंड 23), और हाल के लेखकों ने भी इसकी पुष्टि की है *(रैमसे,* *वॉयेज डी साइरस*...; *कार्ली रुबी,* *लेट्रे अमेरकिैने*...)।

एक श्रृंखला के माध्यम से, सभी अस्तित्वमान चीजों के सच्चे कारण को पहचानना सिखाया जा सके;[1116] और दूसरा — क्योंकि ऐसे लोगों को, जो ईश्वर की एकता की सच्चाई में अभी पर्याप्त रूप से स्थापित नहीं थे, और बहुदेववाद तथा मूर्तिपूजा में पड़ने के लिए प्रवृत्त थे, उच्च, आध्यात्मिक प्राणियों के अस्तित्व के बारे में स्पष्ट रूप से बात करना सुरक्षित नहीं था।[1117] हालाँकि मूसा ने स्वर्गदूतों की ईश्वर द्वारा सृष्टि के बारे में मौन बनाए रखा, फिर भी यह सत्य निस्संदेह ईश्वर के वचन में उद्घोषित है। यह इस प्रकार व्यक्त किया गया है:

(क) उन अंशों में जहाँ यह कहा गया है कि ईश्वर के अलावा जो कुछ भी अस्तित्व में है, वह अपना अस्तित्व उसी से प्राप्त करता है। उदाहरण के लिए: *'सभी वस्तुएँ उसी के द्वारा सृजित हुईं, और उसके बिना कुछ भी सृजित नहीं हुआ जो सृजित हुआ है* (यूहन्ना 1:3); *क्योंकि उसी से और उसी के द्वारा और उसी के लिये सब वस्तुएँ हैं* (रोमियों 11:36); *हर घर किसी न किसी ने बनाया है; और जिसने सब वस्तुएँ बनाई हैं, वह परमेश्वर है* (इब्रानियों 3:4; तुलना करें इफिसियों 3:9; प्रकाशितवाक्य 4:11)।

ख) एज्रा के शब्द और भी अधिक प्रत्यक्ष और स्पष्ट हैं: *'हे यहोवा, तू अकेला है; तू ने आकाशों को, आकाशों के आकाशों को, और उन सब को, जो उन में हैं, पृथ्वी को और जो कुछ उस पर है, समुद्रों को और जो कुछ उन में है, सब कुछ बनाया है; और तू इन सब को धारण करता है, और स्वर्गदूत तेरी आराधना करते हैं* (नहे. 9:6)। यहाँ, *'उनकी सारी सेनाएँ'* (आकाशों की) शब्द, जो परमेश्वर द्वारा बनाई गई हैं, स्वर्गदूतों को संदर्भित करती हैं, जिन्हें पवित्र धर्मग्रंथ में वास्तव में इसी नाम से बुलाया गया है (लूका 2:13), और जिन्हें परमप्रभु के सिंहासन के चारों ओर उसे आराधित करते हुए चित्रित किया गया है (यशायाह 6:3; प्रकाशितवाक्य 7:11; भजन संहिता 96:7)।

ग) अंत में, अत्यंत स्पष्टता के साथ — प्रेरित के शब्दों में: *'क्योंकि उसी से सब वस्तुएँ सृजित हुईं, स्वर्ग में और पृथ्वी पर, दृश्य और अदृश्य, चाहे सिंहासन हों, चाहे प्रभुत्व, प्रधानताएँ या शक्तियाँ — सब वस्तुएँ उसी के द्वारा और उसी के लिए सृजित हुईं* (कुलुस्सियों 1:16)। यहाँ *'अदृश्य* से तात्पर्य आध्यात्मिक जगत से है, जो दृश्य, भौतिक जगत के विपरीत है, और *'सिंहासन, प्रभुत्व, प्रधानताएँ* और *शक्तियाँ'* स्वदूतों के पदों के नाम हैं, जैसा कि अन्य समान अंशों से स्पष्ट है (1 पतरस 3:22; इफिसियों 1:20-21)।

चर्च का यह विश्वास कि ईश्वर अदृश्य का सृष्टिकर्ता है, अर्थात् आध्यात्मिक जगत का सृष्टिकर्ता है, जैसा कि उसकी धर्मसूत्रों में निर्धारित है, चर्च के विभिन्न शिक्षकों द्वारा उनके लेखों में स्पष्ट रूप से व्यक्त किया गया है। उदाहरण के लिए—

क) *आइरेनियस:* "ईश्वर ने सभी चीज़ों को अपनी इच्छा से बनाया, और सभी को एक उपयुक्त संविधान, व्यवस्था और अस्तित्व की शुरुआत प्रदान की: आध्यात्मिक प्राणियों को—एक आध्यात्मिक और अदृश्य स्वभाव; स्वर्गीय प्राणियों को—एक स्वर्गीय स्वभाव; स्वर्गदूतों को—एक स्वर्गदूत स्वभाव; जानवरों को—एक पशु स्वभाव… और जो कुछ भी उसने बनाया, उसे उसने अपने सर्वशक्तिमान वचन द्वारा बनाया;"[1118]

ख) *यूसेबियस:* "जब ईश्वर ने अपनी संपदा के खजाने को कई लोगों के साथ साझा करने की इच्छा की, और प्रत्येक तर्कशील प्राणी को अस्तित्व में लाने का संकल्प लिया, तो उन्होंने विभिन्न अदेह, चिंतनशील और दैवीय शक्तियों की रचना की: देवदूत और महादेवदूत, आत्माएँ, जो पदार्थ में संलिप्त नहीं और पूरी तरह से शुद्ध हैं;"[1119]

ग) *एम्ब्रोज़:* "हम सहज ही स्वर्गदूतों, प्रभुत्वों और शक्तियों के स्रष्टा को उसी में पहचानते हैं, जिसने अपनी शक्ति की लहर से, शून्य से ऐसी सुंदर दुनिया को अस्तित्व में लाया, जो पहले अस्तित्व में नहीं थी;"[1120]

[1116] *क्रिसोस्टोम,* उत्पत्ति पर होमीली II, संख्या 2; भजन संहिता VIII, 4 पर; उत्पत्ति पर प्रवचन 1, संख्या 2।

[1117] *Athanas.* ad Antioch. quaest. IV; *Chrysost.* in Genes. hom. II, n. 2; *Theodoret.* in Genes. quaest. II: "जो लोग व्यवस्था के अधीन रहते थे, उनमें सद्गुणों में थोड़ी भी दृढ़ता या स्थिरता नहीं थी: क्योंकि कई और अकथनीय चमत्कारों के तुरंत बाद, उन्होंने सुनहरे बछड़े को देवता घोषित कर दिया। यदि तब, उन्होंने इतनी आसानी से पशुओं की मूर्तियों को देवता बना दिया, तो वे अदृश्य की प्रकृति का ज्ञान प्राप्त कर लेते तो क्या नहीं करते?" (क्रि. रीडिग्स 1843, III, पृ. 320)।

[1118] *Iren.* adv. haeres. II, पृ. 3.

[1119] *यूसेबियस,* डेमोंस्ट्र. इवैंग. IV, पृ. 1.

[1120] *एम्ब्रोस.* इन नेचयोम 1, पृ. 3, 4.

घ) *थियोडोरेट:* "हम धर्मग्रंथ की गवाही के आधार पर वशि्वास करते हैं कि स्वर्गदूत सर्वशक्तमिान परमेश्वर द्वारा बनाए गए थे;"[1121]

ई) *ऑगस्टीन:* "दविय प्रकटीकरण ने हमारे लिए यह बहुत स्पष्ट कर दिया है कि स्वर्गदूतों को भी ईश्वर ने बनाया था।"[1122]

लेकनि दविय प्रकाशन इस बारे में इतना स्पष्ट नहीं है कि परमेश्वर ने स्वर्गदूतों को ठीक-ठीक कब बनाया। इस वषिय पर ईसाइयों के बीच मौजूद सभी वचिारों में से, केवल एक ही परमेश्वर के वचन पर आधारति है—एक ऐसा दृष्टकिोण जसिे, इसी कारण से, चर्च के अधकिांश धर्म-पति और शकि्षकों द्वारा अपनाया गया था, और जसिे ऑर्थोडॉक्स चर्च स्वयं सत्य के रूप में स्वीकार करती है। इसमें नम्निलखिति शामलि हैं: 'देवदूतों को परमेश्वर ने सभी चीज़ों से पहले बनाया, और वास्तव में आध्यात्मकि जगत को भौतकि जगत से पहले बनाया गया था।'[1123] इस शकि्षा का आधार मलिता है:

क) एक ओर, पवत्रि उत्पत्तकि पुस्तक के आरंभकि शब्दों में: *'आरंभ में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टकि की* (उत्पत्तकि 1:1)... यहाँ, *'स्वर्ग'* शब्द का अर्थ केवल आकाशमंडल या, वास्तव में, जसिे सामान्यतः'स्वर्ग' कहा जाता है, नहीं लगाया जा सकता, क्योंकि दृश्यमान स्वर्ग, अपनी सभी वशिालताओं और खगोलीय पंडिों सहति, बाद में बनाए गए थे (उत्पत्तकि 1:6; 8:14–17)। और जैसे *'पृथ्वी' को* केवल पृथ्वी के रूप में ही नहीं, बल्कि उस पदार्थ के रूप में समझा जाना चाहिए जसिसे परमेश्वर ने बाद में, छह दनिों के दौरान, भौतकि दुनिया का नरि्माण कयिा ([1124]) — उसी तरह, इसके वपिरीत, *'स्वर्ग'* को स्वाभावकि रूप से स्वयं आत्माओं के रूप में समझा जाना चाहिए, जनि्हें आमतौर पर धर्मग्रंथों में स्वर्ग में रहने वाला बताया गया है (कुलु. 1:16)।[1125] यह अनुमान और भी अधकि वशि्वसनीय है क्योंकि मूसा स्वर्ग को उस अव्यवस्था का श्रेय बलि्कुल नहीं देते जो वे पृथ्वी या आदमि पदार्थ को देते हैं, और इस प्रकार वे उन्हें स्पष्ट रूप से एक-दूसरे से अलग और वपिरीत दर्शाते हैं। यदि यह सत्य है, तो इसका अर्थ है कि स्वर्गदूतों की सृष्टि सबसे पहले हुई थी, जब परमेश्वर के अलावा कुछ भी अस्तत्वि में नहीं था, और उन्होंने परमेश्वर की सभी सृष्टि की शुरुआत का कार्य कयिा।[1126]

b) दूसरी ओर, ईश्वर के यॉब से स्वयं कहे शब्दों में: *प्रातकाल के तारों के सामान्य उत्सव के बीच, जब सभी परमेश्वर के पुत्र आनंद से जयजयकार कर रहे थे* (यॉब 38:7)। इस अंश में 'देवदूत', या (हब्रिू पाठ के अनुसार) 'परमेश्वर के पुत्र', शब्द नसि्संदेह वास्तवकि अर्थ में देवदूतों, यानी अदेह आत्माओं, का संदर्भ देता है, क्योंकि उन्हें यरि्मयाह की इसी पुस्तक में पहले ही दो बार इसी नाम से उल्लेख कयिा जा चुका है (1:6; 2:1)। इस बीच, उन्हें यहाँ पहले से मौजूद और चौथे दनि, जब तारे बनाए गए थे, परमेश्वर की महमिा करते हुए स्वीकार कयिा गया है; यह दर्शाता है कि उन्हें पहले बनाया गया था।[1127]

[1121] *थियोडोरेट.* *Divin. decret. epitom.*, अध्याय V स्वर्गदूतों पर, *Chr. Readings* 1844, IV, पृ. 209–210 में; *in Genes. quaest.* II, *Chr. Readings* 1843, III, 321 में।

[1122] *ऑगस्टीन,* *De Civitate Dei* II, पृ. 9; *De Genesi ad litteram* VII, 2, n. 3.

[1123] ऑर्थोडॉक्स कन्फेशन, भाग 1, प्रश्न 18 का उत्तर; पहले अनुच्छेद पर ईसाई धर्मोपदेश की व्याख्या।

[1124] धन्य ऑगस्टीन कहते हैं, 'पृथ्वी को अदृश्य और आकारहीन बताया गया है, गहरे सागर पर छाए अंधकार के समान, क्योंकि यह आकारहीन थी, और इसे कसिी भी रूप में महसूस या संभाला नहीं जा सकता था...'; 'इसे जल कहा जाता है, क्योंकि यह लचीला और अनुकूलनीय था, जो सृष्टकिर्ता के हाथ के अधीन था, ताकि सभी चीजें इससे बन सकें'; फरि भी *इन सभी नामों के नीचे एक* अदृश्य और आकारहीन *पदार्थ था, जसिसे ईश्वर ने संसार की रचना की* (De Genesi contra Manicheos 1, अध्याय 5; तुलना करें: कन्फेशन्स XII, अध्याय 4, 8, 12)।

[1125] "स्वर्ग के नाम से, जसिके बारे में कहा जाता है कि उसे आरंभ में और सभी से पहले बनाया गया था, सभी आध्यात्मकि प्राणी अभपि्रेत हैं, जनि पर, एक सहिासन और एक आसन के रूप में, ईश्वर वरिाजमान होंगे" *(ओरजिन,* उत्पत्ति पर प्रवचन, प्रवचन 1)। यही वचिार, यद्यपि कम दृढ़ता के साथ, धन्य ऑगस्टीन द्वारा दोहराया गया है (De Civitate Dei XI, पृ. 9)।

[1126] जैसा कि चर्च के भजनों में गाया जाता है: 'हे स्वर्गदूतों के स्रष्टा, आपने *सृष्टि की शुरुआत में* एक नराकार प्राणी को स्थापति कयिा, जो आपके परम पवत्रि सहिासन को घेरे हुए, आपको पुकारता है: पवत्रि, पवत्रि, पवत्रि हैं आप, हे सर्वशक्तमिान ईश्वर' (महादूतों का कैनन, भजन 1)।

[1127] नम्निलखिति टीकाकारों ने यॉब की इस आयत का उल्लेख कयिा: *ओरजिन:* "जब तारे बनाए गए, तो सभी स्वर्गदूतों ने परमेश्वर की स्तुति की, जो न केवल मानवजाति में सबसे प्राचीन थे, जनि्हें बाद में बनाया गया था, बल्कि उनके लिए बनाई गई सारी सृष्टि में भी" (मैथ्यू पर व्याख्यान 10); *संत एपफिानियस:* "यदि स्वर्गदूतों को स्वर्ग और पृथ्वी के साथ नहीं बनाया गया होता, तो ईश्वर योब से यह नहीं कहते: *'क्या इसने बनाया...'* (Haeres. LXV); *सेवेरयिन* (डी मुंडी ओपफि., ओरेट. 4); *सीज़ेरयिस* (डायलॉग. 1, क्वेस्ट. 61); *धन्य ऑगस्टीन* (डी सविटि. देई XI, सी. 9) और अन्य।

चर्च के पवित्र पिताओं और शिक्षकों में, इस बात में कोई संदेह नहीं है कि स्वर्गदूतों को भौतिक दुनिया से पहले बनाया गया माना जाता था:

संत बेसिल द ग्रेट: 'संसार के अस्तित्व में आने से पहले भी, एक ऐसी अवस्था थी जो परलौकिक शक्तियों के अनुकूल थी, जो समय से परे, शाश्वत और अनंत थी। इसी अवस्था में सभी चीजों के स्रष्टा और निर्माता ने अपनी रचनाएँ प्रकट कीं—प्रभु से प्रेम करने वालों के आनंद के अनुरूप आध्यात्मिक प्रकाश, तर्कसंगत और अदृश्य स्वभाव, और चिंतनशील प्राणियों का सारा वैभव जो हमारी समझ से परे है, ताकि उनके लिए कोई नाम नहीं सोचा जा सकता। वे ही अदृश्य जगत के सार को भरते हैं, जैसा कि पौलुस हमें सिखाते हैं, कहते हुए: *'क्योंकि उन के द्वारा सब वस्तुएँ स्वर्ग में और पृथ्वी पर, दृश्य और अदृश्य, चाहे सिंहासन हों वा प्रभुताएँ वा प्रधानताएँ वा अधिकार'* (कुलुस्सियों 1:16), और दैवीय सेनाएँ, और महादूतों के पद। और जब इस संसार को पहले से मौजूद चीज़ों में जोड़ना आवश्यक हो गया—मुख्य रूप से मानव आत्माओं के लिए एक विद्यालय और शिक्षा का स्थान, और बाद में जन्म और विनाश के अधीन सभी के लिए एक निवास-स्थान के रूप में— तब समय की एक शृंखला को अस्तित्व में लाया गया, जो इस संसार और उसमें रहने वाले पशु और पौधों के समान है—जो लगातार आगे बढ़ती और बहती रहती है, और अपनी गति में कभी नहीं रुकती।"[1128]

संत ग्रेगरी द थियोलोजियन। "चूंकि केवल अपने ही पर चिंतन करना शुभता के लिए पर्याप्त नहीं था, बल्कि शुभता का फैलना आवश्यक था, और आगे और आगे बढ़े, ताकि लाभान्वित होने वालों की संख्या यथासंभव अधिक हो सके (क्योंकि यह परम सद्भाव का स्वभाव है), ईश्वर ने सर्वप्रथम (πρώτον) दैवीय और स्वर्गीय शक्तियों की रचना की, और विचार एक कर्म बन गया, जिसे वचन ने पूरा किया और आत्मा ने संपन्न किया... चूँकि प्रथम प्राणी उसे प्रिय थे, तब उसने एक अन्य संसार की कल्पना की—भौतिक और दृश्यमान; और यही स्वर्ग, पृथ्वी और उनके बीच स्थित सभी का सामंजस्यपूर्ण संयोजन है।"[1129]

संत जॉन क्राइसोस्टोम: '(ईश्वर) ने स्वर्गदूतों, महादूतों और अन्य अदेह प्राणियों की सृष्टि की, और उन्होंने उन्हें किसी अन्य कारण से नहीं बल्कि केवल शुद्ध भलाई के लिए ही बनाया... उन्हें बनाने के बाद, उन्होंने मनुष्य और इस संपूर्ण (अर्थात दृश्यमान) संसार की भी उसी कारण से सृष्टि की।'[1130]

संत अम्ब्रोज़: "देवदूत, प्रधानताएँ और शक्तियाँ, यद्यपि उनका एक आरंभ हुआ था, तथापि जब यह संसार बनाया गया था, तब वे पहले से ही मौजूद थे।" और अन्यत्र: "केरूबीम और सेराफिम, संसार की शुरुआत से भी पहले, एक मधुर स्वर में पुकार उठे: *पवित्र, पवित्र, पवित्र*..."[1131]

धन्य जेरोम: 'हमारी दुनिया अभी तक छह हज़ार साल भी नहीं पहुँची है (यानी, उस समय तक जब धन्य जेरोम जीवित थे)। और यह मानना होगा कि, उनसे पहले कितनी अनंत काल (aeternitates) बीत चुकी थीं, कितने युग, कितनी अनगिनत शताब्दियाँ, जिनके दौरान स्वर्गदूतों, सिंहासनों, प्रभुत्वों और अन्य शक्तियों ने प्रभु की सेवा की और उनकी इच्छा से अस्तित्व में रहे, समय के किसी भी माप या परिवर्तन के बिना।"[1132]

ये विचार संत डायोनिसियस द एरोपागाइट, ओरिजन, केसरियस, हिलेरी, संत ग्रेगरी द ग्रेट, सिनाई के अनास्तासियस, दमास्कस के संत जॉन, फोतिउस, रोस्तोव के संत डेमेट्रियस और अन्य लोगों के भी थे।[1133]

देवदूतों की उत्पत्ति के समय के संबंध में अन्य सभी विचार निराधार और मनमाने हैं। इस प्रकार—

क) इस दृष्टिकोण के अनुसार कि स्वर्गदूत आदि पदार्थ की सृष्टि के तुरंत बाद, उससे दृश्यमान जगत के बनने से भी पहले, अचानक अस्तित्व में आए, इस प्रकार है: "आरंभ में, परमेश्वर ने शून्य से स्वर्ग, पृथ्वी और जल की सृष्टि

[1128] छह दिनों पर प्रवचन 1, *द वर्क्स ऑफ़ द होली फ़ादर्स*, खंड V, पृ. 7–8.

[1129] होमीली 38, *द वर्क्स ऑफ़ द होली फ़ादर्स*, खंड III, पृष्ठ 240, 241।

[1130] ... और इनकी सृष्टि के बाद, उसने मनुष्य... और इस संपूर्ण संसार को भी बनाया। Ad Stagir. Book I, in Opp. Vol. I, pp. 157–158, ed. Montfauc.

[1131] *एम्ब्रोसियस,* हेक्साएमरोन, I, c. 5, n. 19; कन्फेशन्स, भजनों की प्रस्तावना, n. 2.

[1132] *जेरोम,* टाइटस को पहली पत्रिका में।

[1133] *डायोनिसियस द एरोपागाइट,* *दिव्य नामों पर*, अध्याय 5; *ओरिजिन,* *मत्ती पर व्याख्यान 10*; *सीज़र,* *संवाद*, 1, प्रश्न 61 और 123; *हिलेरी,* *त्रिमूर्ति पर*, XII, और प्रबंध *ऑक्सेंटियस के विरुद्ध*; *ग्रेगरी द ग्रेट,* *मोरलिया*, XXVIII, 14; *सीरिया के अनास्तासियस,* *ओडेइगौ*, अध्याय 4; *जॉन ऑफ डेमास्कस,* II, अध्याय 3; *फोटियस,* *bibliotheca*, फोलियो 473; *रोस्तोव के डेमेट्रियस,* *क्रॉनिकल*, खंड 1, पृ. 10। ये समान विचार — *कैसियन,* *कोलेशन्स*, 8, पृ. 7; द्वारा भी रखे गए थे। *इसीडोरस ऑफ सेविले,* *डे सुम्मो बोनो* 1, c. 10; *बेडे,* खंड VIII, क्वेस्ट. 9, फोल. 398; *जुनीलियस,* *डे पार्टिबस डिविनी लेगिस*, पुस्तक II, c. 2.

की, और जब तक अंधकार जल पर और जल पृथ्वी पर छाया हुआ था, तब तक स्वर्गदूतों और सभी स्वर्गीय शक्तियों की सृष्टि हो चुकी थी, ताकि सृष्टिकिर्ता की भलाई निष्क्रिय न रहे, बल्कि किई युगों (स्पेशिया) तक प्रकट होने के लिए कोई हो; और इसके बाद इस दृश्यमान संसार की सृष्टि और सजावट परमेश्वर द्वारा सृजित पदार्थ से की गई।"[1134] अर्थात्, यह दृष्टिकोण आधारित है:

क) इस विचार पर कि स्वर्ग और पृथ्वी की प्रारंभिक सृष्टि और उसके बाद छह दिनों में दृश्यमान संसार की सृष्टि के बीच बहुत समय बीत गया, और —

bb) इस तर्क पर कि यदि इस अंतराल के दौरान ईश्वर ने फरिश्तों को नहीं बनाया होता, तो उनकी सद्भावना निष्क्रिय रह जाती। लेकिन इस पहले विचार को कैसे प्रमाणित किया जा सकता है? हमें कैसे पता चले कि आदि पदार्थ लंबे समय तक अव्यवस्था की स्थिति में रहा या नहीं? और यदि ऐसा रहा भी, तो इस लंबे काल की अवधि उस अनंत काल की तुलना में क्या है जो दुनिया के अस्तित्व से पहले था, जब केवल ईश्वर का अस्तित्व था? क्या हमें वास्तव में यह कहना चाहिए कि उस समय उनकी सद्भावना निष्क्रिय रही? या, इस धारणा को दूर करने के लिए, क्या हमें यह मानना चाहिए कि दुनिया का सृजन ईश्वर द्वारा अनंत काल से ही किया गया था?

ख) यह दृष्टिकोण कि स्वर्गदूत पहले दिन अस्तित्व में आए, इस तथ्य पर आधारित है कि पहले दिन ईश्वर ने प्रकाश बनाया, और स्वर्गदूतों को अग्निमय या प्रकाशमय स्वभाव वाला माना जाता है।[1135] लेकिन यह आदमि प्रकाश मूर्त था, क्योंकि इसने उसी क्षण दिन को अस्तित्व में लाया; और स्वर्गदूतों की प्रकृति को अग्निमय मानना या उन्हें किसी भी प्रकार के शरीर, भले ही वह अतिसूक्ष्म हो, में धारण करना, जैसा कि हम देखेंगे, अनुचित है।

c) अंत में, यह दृष्टिकोण कि देवदूतों का अस्तित्व संपूर्ण जगत और मानव की सृष्टि के बाद ही हुआ, मोशे के वृत्तांत के अनुसार ईश्वर द्वारा सृष्टि के दौरान कम परिपूर्ण प्राणियों से अधिक परिपूर्ण प्राणियों की ओर की गई क्रमिक प्रगति से व्युत्पन्न माना जाता है।[1136] लेकिन हमें यह अधिकार किसने दिया है कि हम इस क्रमिक प्रगति के नियम को दृश्यमान जगत से आध्यात्मिक जगत तक बढ़ाएँ, जबकि इसके विपरीत, पवित्र वंशावलीकार स्पष्ट रूप से कहता है कि ईश्वर ने, प्रकृति के राजा—मनुष्य—की सृष्टि करने के बाद, *सातवें दिन अपने सभी कार्यों से विश्राम किया* (उत्पत्ति 2:2), और परिणामस्वरूप किसी और की सृष्टि नहीं की?

§ 65. स्वर्गदूतों का स्वभाव

अपनी स्वभाविक प्रकृति से, स्वर्गदूत अदेह आत्माएँ हैं, मानव आत्मा से अधिक परिपूर्ण, फिर भी स्थान और शक्ति में सीमित।

1) स्वर्गदूत आत्मा हैं। यही पवित्र शास्त्र सिखाता है—

क) जब यह सामान्य रूप से स्वर्गदूतों के बारे में बात करता है: *क्या वे सभी सेवा करने वाली आत्माएँ नहीं हैं, जिन्हें उन लोगों की सेवा के लिए भेजा गया है जो उद्धार के वारिस होने वाले हैं* (इब्र. 1:14);

ख) जब, विशेष रूप से, यह उन्हें एक आत्मा के आवश्यक गुणों: मन और इच्छा का श्रेय देता है, हमारे उद्धार के रहस्य को *समझने की* उनकी इच्छा (1 पतरस 1:12), दुनिया के अंतिम दिन के बारे में उनकी अनभिज्ञता (मरकुस 13:32) और उनकी पवित्रता (मत्ती 25:31) का उल्लेख करता है;

ग) जब वह उन्हें परमेश्वर को निहारते (मत्ती 18:10) और उसकी महिमा करते (यशायाह 6:3), उसकी इच्छा को पूरा करते (भजन संहिता 102:20), और पापियों के उद्धार पर आनन्द मनाते हुए चित्रित करता है (लूका 15:10), और सामान्यतः इस तरह से जीते और कार्य करते हैं जैसा केवल तर्कशील और स्वतंत्र प्राणी ही कर सकते हैं (गलातियों 1:8; 1 तीमुथियुस 5:21)। कलीसिया के प्राचीन शिक्षकों ने स्वर्गदूतों के बारे में उतनी ही सटीकता से सिखाया। उदाहरण के लिए, धन्य कहते हैं, 'क्या आप जानना चाहते हैं,' ऑगस्टीन कहते हैं, 'क्या आप उसकी (दूत की) प्रकृति का नाम जानना चाहते हैं? वह आत्मा है। क्या आप उसका पद जानना चाहते हैं? वह दूत है। अपनी सत्ता में वह आत्मा है, और अपनी

[1134] ऊपर टिप्पणी 1107 देखें।
[1135] ऊपर टिप्पणी 1108 देखें।
[1136] उपरोक्त टिप्पणी 1109 देखें।

गतविधि में वह दूत है।'[1137] हालाँकि, इस विषय पर चर्च के पिता की शिक्षा इतनी निस्संदेह है कि इसे साबित करना अनावश्यक होगा।

2) स्वर्गदूत अदेह आत्माएँ हैं। और यह विचार, यद्यपि पवित्र शास्त्र में स्पष्ट रूप से नहीं कहा गया है, कम से कम वहाँ के विभिन्न अंशों की तुलना करके प्रकट होता है। एक अंश में यह गवाही देता है th कि स्वर्गदूत आत्माएँ — πνεύματα (इब्रानियों 1:14) हैं, ठीक वैसे ही जैसे यह परमेश्वर के बारे में कहता है: *'परमेश्वर आत्मा है* — πνεύμα' (यूहन्ना 4:24)। अन्यत्र, यह बताया गया है कि *एक आत्मा* — πνεύμα — *में न हड्डी होती है और न ही मांस* (लूका 24:39), यहाँ तक कि उद्धारकर्ता मसीह का पुनरुत्थान के बाद का महिमामय मांस भी नहीं, जिसमें वह *बंद* दरवाजों *से होकर* अपने शिष्यों के पास जा सके (यूहन्ना 20:19)। तीसरे में, स्वर्गदूतों के संबंध में विशेष रूप से यह उल्लेख किया गया है कि, मांस में लिपटे मनुष्यों के विपरीत, वे *न तो विवाह करते हैं और न ही किसी के साथ विवाह किया जाता है* (मत्ती 22:30), और यह कि वे मर भी नहीं सकते (लूका 20:35-36)। और यदि स्वर्गदूत भी मनुष्यों की तरह किसी प्रकार के शरीर में लिपटे होते, तो कोई पूछ सकता है कि, परमेश्वर का वचन कहीं भी स्वर्गदूतों के शरीरों का स्पष्ट रूप से उल्लेख क्यों नहीं करता, बल्कि उन्हें आत्मा कहता है, जबकि यह मनुष्यों को कहीं भी स्पष्ट रूप से आत्मा नहीं कहता, बल्कि, उन्हें एक आत्मा या प्राण तो देता है, पर शरीर भी देता है?

यह सच है कि बाइबल में ऐसे वृत्तांत हैं कि स्वर्गदूत अक्सर लोगों के सामने मूर्त रूप में प्रकट हुए: लेकिन बाइबल के अनुसार, स्वयं परमेश्वर भी कभी-कभी मूर्त रूप में प्रकट हुए। इसका केवल यही अर्थ है कि परमेश्वर और स्वर्गदूत दोनों, उनकी इच्छा से, कभी-कभी मनुष्यों के देखने योग्य रूप धारण कर सकते हैं। लेकिन इससे यह निष्कर्ष निकालना कि स्वर्गदूत या ईश्वर निरंतर शरीर में लिपटे रहते हैं, निराधार होगा।[1138] धर्मग्रंथों में स्वर्गदूतों की भाषा का भी उल्लेख मिलता है, जिसमें वे ईश्वर की महिमा करते हुए उनके सिंहासन के चारों ओर घिरे रहते हैं (यशायाह 8:1–3; 1 कुरिन्थियों 13:1)। लेकिन जैसे 'परमेश्वर का सिंहासन' नाम को निस्संदेह इस अर्थ में नहीं समझा जा सकता कि यह एक भौतिक सिंहासन है जिस पर परमेश्वर कथित तौर पर पृथ्वी के राजाओं की तरह बैठे हैं, वैसे ही, बेशक, स्वर्गदूतों की भाषा और उनकी स्तुति को इंद्रियों के अर्थ में नहीं समझना चाहिए — यह सब केवल आध्यात्मिक वास्तविकताओं का एक रूपक प्रतिनिधित्व है जिसे मानव मन अन्यथा समझ नहीं सकता। यही कारण है कि हम पवित्र चर्च के साथ गाते हैं: 'अमूर्त ओठों और बुद्धिमान मुँहों से, दैवीय मंडली आपके अगम्य ईश्वरत्व को अखंड गीत अर्पित करती है, हे प्रभु।'[1139] स्वर्गदूतों की अमूर्तता का विचार पवित्र पिताओं और चर्च के शिक्षकों के बीच प्रमुख विचार था। हमें यह मिलता है:

a) *संत अथेनासियस* में: "एक देवदूत एक तर्कशील, अमूर्त (ἄϋλον), गीत-गाने वाला, अमर प्राणी है;"[1140]

ख) *सेंट ग्रेगरी ऑफ निस्सा* में: "सभी तर्कशील प्राणी एक अदेह (ἀσώματον) स्वभाव और एक मांस में लिपटे हुए स्वभाव में विभाजित हैं; अदेह स्वर्गदूतों का स्वभाव है; दूसरा प्रकार हम, मानव हैं;"[1141]

c) संत *जॉन क्रिसोस्टोम*: 'ईश्वर ने स्वर्गदूतों, महादूतों और अन्य अदेह प्रकृतियों की सृष्टि की;'[1142]

घ) *धन्य थियोडोरेट के* अनुसार: "यदि ईश्वर की प्रतिमा आत्मा की अदृश्यता में निहित होती, तो स्वर्गदूत, महादूत और सभी अदेह और पवित्र स्वभावों को ईश्वर की प्रतिमा कहना अधिक उचित होता, क्योंकि उनका कोई शरीर नहीं है और वे पूर्ण रूप से अदृश्य हैं;"[1143]

ई) *संत जॉन ऑफ़ डेमास्कस* के अनुसार: "एक देवदूत एक तर्कशील, स्वतंत्र, अदेह प्राणी है जो ईश्वर की सेवा करता है... बुद्धि (νόες) होने के नाते, स्वर्गदूत मन के क्षेत्र (νοητοϊς) में मौजूद हैं, शरीर से बंधे नहीं हैं, क्योंकि वे स्वभाव से मांस में लिपटे नहीं हैं और उनका कोई विस्तार नहीं है, बल्कि वे आध्यात्मिक रूप से (νοητώς) उपस्थित और

[1137] भजन संहिता 103 पर प्रवचन I, खंड 15।

[1138] "जब स्वर्गदूत, जैसा कि सेंट जॉन ऑफ़ डेमास्कस कहते हैं, ईश्वर की इच्छा से योग्य लोगों के सामने प्रकट होते हैं, तो वे वैसे नहीं प्रकट होते जैसे वे स्वयं में हैं, बल्कि एक निश्चित रूप (ἐν μετασχηματίσμω) में, ताकि जो उन्हें देखते हैं वे उन्हें देख सकें" (ऑर्थोडॉक्स विश्वास की सटीक व्याख्या, पुस्तक II, अध्याय 3)।

[1139] अमूर्त शक्तियों के लिए 8 नवंबर (नए कैलेंडर के अनुसार) की सेवा, संस्कारिक छंद पर, स्वर 2।

[1140] पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के सामान्य सार पर, संख्या 51.

[1141] ओरेट. IV इन ओरेट. डॉमिनि. तुलना करें: कॉन्ट्रा यूनोम. पुस्तक XII।

[1142] ... और अन्य अदेह सार। एड स्टैगिरि. पुस्तक 1, ओप. खंड VI, पृ. 86, सं. सैवलि.

[1143] जेनेसिस प्रश्नोत्तरी XX, में क्रिश्चियन रीडिंग्स 1843, III, 347; तुलना करें जेनेसिस प्रश्नोत्तरी XLVI; एक्सोडस प्रश्नोत्तरी XXIX में।

सक्रयि हैं जहाँ भी उन्हें आज्ञा दी जाती है।"[1144] हम यह वचिार बेसलि द ग्रेट, ग्रेगरी द थयिोलोजयिन, लैक्टैंटयिस, यूसेबयिस, डडिमिस, लयिो द ग्रेट, फुलजेंटयिस, ग्रेगरी द ग्रेट और अन्य लोगों द्वारा व्यक्त कयिा हुआ भी पाते हैं।[1145]

जहाँ तक उन पादरयिों के कथनों की बात है जनिमें स्वर्गदूतों को कसिी न कसिी रूप में भौतकि माना गया है, नम्निलखिति बात ध्यान देने योग्य है:

a) कुछ प्रारंभकि ईसाई शक्षिकों ने स्वर्गदूतों को देहधारी मानकर केवल यह कहना चाहा कि स्वर्गदूतों का वास्तवकि (वास्तवकि) अस्तत्वि है: इन शक्षिकों के लिए *'शरीर'* (σώμα, corpus) शब्द का अर्थ *सार* या *पदार्थ* (ούσία, substantia) था, और इसलिए वे कभी-कभी ईश्वर को भी देहधारी कहते थे, जैसे कि आदरणीय ऑगस्टीन टर्टुलयिन पर।[1146] यहाँ, इसलिए, वचिार सही है, और अशुद्धि केवल शब्द में है।

ख) अन्य लोगों ने स्वर्गदूतों का वर्णन इस अर्थ में देहधारी के रूप में कयिा कि, यद्यपि वे कसिी भी मांस में लपिटे नहीं हैं, उनकी प्रकृति की स्वयं आध्यात्मकिता की अपनी सीमाएँ हैं और, ईश्वर, परम सत्ता की प्रकृति की तुलना में, एक प्रकार से, घनी और भौतकि प्रतीत होती है। इस प्रकार, सेंट जॉन ऑफ़ डेमास्कस, एक देवदूत को एक अदेह प्राणी के रूप में परभिाषति करने के बाद, जोड़ते हैं: "हालांकि, एक देवदूत को केवल हमारे साथ तुलना में अदेह और अमूर्त कहा जाता है। क्योंकि ईश्वर, एक और अतुलनीय, की तुलना में, सब कुछ मोटा और भौतकि प्रतीत होता है; केवल दव्यि स्वभाव ही पूर्णतः (όντως) अमूर्त और अदेह है।"[1147] यह एक वशिष्टि, फरि भी धर्मपरायण दृष्टकिोण है, जो स्पष्ट रूप से ईश्वर की परम आध्यात्मकिता की अवधारणा से उत्पन्न होता है, और कसिी भी तरह से चर्च की उस डॉगमैटकि शक्षिा का खंडन नहीं करता कि देवदूत आत्मा हैं जो देह में लपिटे नहीं हैं।

c) एक तीसरे समूह ने स्वर्गदूतों को देहधारी माना, इस अर्थ में कि, सीमति प्राणी होने के नाते, वे अनविार्य रूप से एक वशिष स्थान तक सीमति हैं और एक साथ हर जगह नहीं हो सकते। "क्योंकि," धन्य ऑगस्टीन कहते हैं, "हम तर्कशील प्रकृतयिों को देहधारी कहते हैं क्योंकि वे स्थान से परभिाषति होती हैं, ठीक वैसे ही जैसे मानव आत्मा शरीर के भीतर संलग्न होती है।"[1148] इस प्रकार, यह दृष्टकिोण, जो स्वर्गदूतों को केवल रूपक अर्थ में देहधारी मानता है, स्वर्गदूतों की अदेहता के सद्धिांत की शुद्धता को अस्वीकार नहीं करता।

इन अवलोकनों के बाद, केवल कुछ ही प्राचीन शक्षिक बचे हैं, जन्हिोंने, ऐसा प्रतीत होता है, स्वर्गदूतों को शाब्दकि अर्थ में शरीर प्रदान कयिा—हालांकि वह सबसे सूक्ष्म, अलौककि या अग्नमिय प्रकृति का था—अर्थात्: जस्टनि द मार्टायर, ओरजिन, मेथोडयिस और थयिोग्नोस्टस।[1149] फरि भी, उनके दृष्टकिोण को केवल कुछ लोगों की *नजिी राय के रूप में* ही माना जाना चाहिए।

3) स्वर्गदूत मानव आत्मा से अधकि परपिूर्ण आत्माएँ हैं, फरि भी सीमति। सबसे परपिूर्ण, फरि भी सीमति:

[1144] सही आस्था की सटीक व्याख्या, पुस्तक II, अध्याय 3, पृ. 53–54।

[1145] *संत बेसलि द ग्रेट*, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, VIII, 153 में, इस तथ्य पर प्रवचन कि ईश्वर बुराई का कारण नहीं है; *ग्रेगरी* द थयिोलोजयिन, *मस्टिकिल हाइम्स*, भजन 6, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, IV, 335 में; *लैक्टैंटयिस*, *दव्यि संस्थाएँ*, VII, 21; *यूसेबयिस*, *सुसमाचार का बचाव*, III, 5; IV, 1: 'άϋλά τε καί πάντη καθαρά πνεύματα'; *डडिमिस*, *पवत्रि आत्मा पर*, पुस्तक 1; *लयिो*, दुरीबयिस को पत्र, अध्याय 6; *फुलजेन्टनिस*, वश्विास पर, अध्याय 3; *ग्रेगरी महान*, नैतकि प्रवचन, II, 4; XXVIII, 2; संवाद, IV, 29; *मार्टनि वक्रि्टर*, एरयिस के वरिुद्ध पुस्तक IV.

[1146] *ऑगस्टीन*, *डे हेरेससि*, अध्याय 86। इसके अलावा, यह टर्टुलयिन की अपनी रचनाओं से स्पष्ट है। एक अंश में वे कहते हैं: 'कौन यह इनकार करेगा कि ईश्वर का एक शरीर है, भले ही वह आत्मा है? क्योंकि आत्मा अपनी ही तरह का एक शरीर है, अपनी ही प्रतमिा में।' 'लेकनि वे अदृश्य चीजें भी, जो कुछ भी हों, ईश्वर में अपना शरीर और अपना रूप दोनों रखती हैं' (Contra Prax. अध्याय 7)। एक अन्य अंश में: 'चूंकि स्वयं पदार्थ ही हर चीज़ का शरीर है...' (Contra Hermogen. अध्याय 35)। तीसरे अंश में: 'जो कुछ भी अस्तत्वि में है, वह अपनी ही प्रकार का एक शरीर है...' (De carne Christi, ch. II)।

[1147] ऑर्थोडॉक्स वश्विास की सटीक व्याख्या, पुस्तक II, अध्याय 3। नम्निलखिति ने भी इस दृष्टकिोण को अपनाया: (क) *संत एम्ब्रोज़*: "मेरी राय में, परम पवत्रि त्रमिूर्ति के एकमात्र अस्तत्वि को छोड़कर कुछ भी पूरी तरह से जटलिता से रहति नहीं है, जो वास्तव में सबसे शुद्ध और सरल है" (डी अब्राह., पुस्तक II, पृ. 8); (ख) *संत ग्रेगरी महान*: 'एक देवदूत, जब हमारे शरीरों की तुलना में देखा जाए, तो वास्तव में एक आत्मा है, लेकनि जब परम और अनंत आत्मा की तुलना में देखा जाए, तो एक शरीर है' (Moral. Book II, p. 3), — और अन्य।

[1148] *ऑगस्टीन*. De Spir. et anima, अध्याय 18। यही वचिार हलिरी (Can. 5 in Matth.) और कैसयिन (Coll. VII, पृ. 13) में भी पाया जाता है।

[1149] *जस्टनि*. डायलॉग. कुम ट्रायफ. LVII; *ओरजिन*. ओरेट. 31; *मेथोडयिस*, इन बब्लियिोथ. *फोटोई*, कोड. CCXXXIV; *थयिोगनि*. आइबडि., कोड. CVI.

(क) अपनी प्रकृति से ही। यह विचार भजनकार के शब्दों में सीधे और स्पष्ट रूप से व्यक्त किया गया है, कि मनुष्य *स्वर्गदूतों से बहुत कम नहीं* है (भजन संहिता 8:6), जो इसलिए, यद्यपि मनुष्य से ऊँचे हैं, केवल थोड़े ही ऊँचे हैं... इसे प्रेरित पौलुस ने दो अवसरों पर निहित रूप से माना है: पहली बार, जब प्रेरित परमेश्वर के एकलौते पुत्र की दिव्य महानता को, अन्य बातों के अलावा, इस तथ्य से प्रदर्शित करते हैं कि वह *स्वर्गदूतों* से भी *श्रेष्ठ* है (इब्रानियों 1:4–14); और दूसरी बार, जब वह मानव जाति के उद्धारकर्ता की महिमा का वर्णन करता है—जिसमें वह स्वर्ग में आरोहण करने के बाद, अपने देहधारी दिनों के बाद प्रवेश किया—तो वह कहता है कि *स्वर्गदूत, प्रधानताएँ और शक्तियाँ उसके अधीन हो गई हैं* (1 पतरस 3:22), और कि परमेश्वर पिता *ने उन्हें स्वर्ग में अपनी दहिनी ओर* बिठाया है, *हर एक प्रधानता, और अधिकार, और सामर्थ्य, और प्रभुत्व, और हर एक नाम से बहुत ऊपर, जो न केवल इस युग में, बल्कि आने वाले युग में भी नाम रखा गया है* (इफिसियों 1:21)। दोनों ही मामलों में, प्रेरित स्पष्ट रूप से स्वर्गदूतों को परमेश्वर की सृष्टि में सबसे ऊँचा, परमेश्वर के सबसे निकट, फिर भी स्वयं परमेश्वर से नीचा मानते हैं।

ख) उनकी समझ के संदर्भ में। जब प्रेरितों ने उनसे दुनिया के अंतिम दिन के बारे में पूछा तो उद्धारकर्ता ने कहा: *'परन्तु उस दिन या घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग में दूत, न पुत्र, परन्तु केवल पिता'* (मरकुस 13:32)। इससे यह स्पष्ट है कि स्वर्गदूतों के पास मनुष्य की तुलना में अधिक ज्ञान है, और यह कि इस ज्ञान की सीमाएँ हैं। पवित्र धर्मग्रंथ के अन्य अंशों से हम विशेष रूप से यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि स्वर्गदूत—

(क) वे ईश्वर के सार को पूरी तरह से नहीं जानते: क्योंकि *परमेश्वर की आत्मा के सिवाय कोई भी परमेश्वर को नहीं जानता* (1 कुरिन्थियों 2:11);

bb) वे मानव हृदय के रहस्यों को नहीं समझते: *क्योंकि केवल आप ही मनुष्यों के सभी पुत्रों के हृदय को जानते हैं* (3 राजा 8:39; यिर्म. 17:9);

cc) वे भविष्य नहीं जानते, और न ही वे अपनी इच्छा से भविष्य बता सकते हैं, क्योंकि यह विशेषाधिकार केवल प्रभु परमेश्वर के लिए ही सुरक्षित है (यशायाह 44:7);

dd) वे हमारे उद्धार के महान रहस्य (इफिसियों 2:10) को पूरी तरह से नहीं जानते थे, और अब भी वे इसे समझने का प्रयास करते हैं (1 पतरस 1:12)।

ग) उनकी शक्ति और सामर्थ्य के मामले में। परमेश्वर का वचन सीधे गवाही देता है कि *स्वर्गदूत शक्ति और सामर्थ्य में* हमसे *श्रेष्ठ हैं* (2 पतरस 2:11; तुलना करें भजन संहिता 102:20), और उनकी आश्चर्यजनक शक्ति के विभिन्न उदाहरणों की गवाही देता है, जैसे, उदाहरण के लिए, एक ही रात में स्वर्गदूत द्वारा मिस्र के सभी पहलौठों को मार डालना, या एक ही रात में अस्सिरियाई सेना के 185,000 लोगों को मार डालना (2 राजा 19:35; तुलना करें प्रेरितों के काम 5:19; 12:7,11)। हालाँकि, स्वर्गदूतों की इस शक्ति की अपनी सीमाएँ हैं और यह उस बिंदु तक नहीं फैली है जहाँ वे अपनी इच्छा से चमत्कार कर सकें: *'धन्य हो प्रभु परमेश्वर, इस्राएल का परमेश्वर, जो अकेला ही चमत्कार करता है'* (भजन संहिता 71:18)।

चर्च के पवित्र पिताओं और शिक्षकों ने, एक या दो को छोड़कर,[1150] सर्वसम्मति से स्वर्गदूतों को मनुष्य से श्रेष्ठ प्राणी के रूप में मान्यता दी, और उन्हें अधिक ज्ञान और अधिक शक्ति प्रदान की।[1151] फिर भी, पवित्र शास्त्र के अनुसार, उन्होंने यह स्वीकार किया कि स्वर्गदूतों का ज्ञान और शक्ति दोनों सीमित हैं; कि स्वर्गदूत परमेश्वर को, न ही मानव हृदय को, न ही संभावित भविष्य को, न ही हमारे उद्धार के रहस्य को पूरी तरह से जानते हैं; और यह कि वे स्वयं चमत्कार करने में सक्षम नहीं हैं।[1152]

[1150] टर्तुल्लियन और ओरिजिन। ऊपर टिप्पणी 1105 देखें। हालाँकि, ओरिजिन का मानना था कि स्वर्गदूतों का गौरव केवल मसीह के सच्चे शिष्यों और संतों से ही कम है, न कि सामान्य रूप से मनुष्यों से।

[1151] *एथेनागोरस,* *डे रेसरेक्शियोने मॉर्टुओरम*, XVI; *क्लेमेंट,* *स्ट्रोमाटा*, III, 3; *जॉन क्रिसोस्टोम,* होमीली II ऑन द इनकॉम्प्रिहेन्सिबिल, अगेंस्ट एनोमियस, *क्रोनोलॉजिकल रीडिग्स* 1841, IV, 49 में; *ग्रेगरी द थियोलोजियन,* होमीली 6: 'आइए हम उन प्राणियों पर विचार करें *जो ईश्वर से पहले* और ईश्वर के चारों ओर हैं, अर्थात् दैवीय और स्वर्गीय शक्तियाँ, जो पहली प्रकाश में सबसे पहले सहभागी होती हैं' (*द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, I, 229), — और अन्यत्र: 'त्रिमूर्ति के बाद की *दूसरी श्रेणी के प्रकाश,* जिनके पास राजसी महिमा है, वे प्रकाशमान, अदृश्य स्वर्गदूत हैं' (उसी में IV, 235); *जॉन ऑफ़ डेमास्कस,* ऑर्थोडॉक्स विश्वास की सटीक व्याख्या, पुस्तक II, अध्याय 3.

[1152] *इसिडोर ऑफ़ पेलसियम,* पत्र 195; *ओरिजिन,* उत्पत्ति पर उपदेश VIII, संख्या 8; *जॉन क्रिसोम,* अविभाज्य पर, एनोमोईयों के विरुद्ध, पुस्तक III और IV, *क्रोनोलॉजिकल रीडिग्स* 1841, IV, पृष्ठ 105–206; *ग्रेगरी ऑफ निसिस,* होमीली 8 ऑन द सॉन्ग ऑफ सॉन्ग्स;

अंत में, हम स्वर्गदूतों की प्रकृति पर पादरियों की शिक्षा में पाई जाने वाली एक विशेष विशेषता को अनदेखा नहीं कर सकते। कुछ चर्च फादरों के अनुसार, स्वर्गदूत परमेश्वर के स्वरूप में बनाए गए हैं: '[1153] ' — यह एक ऐसी धारणा है जो पवित्र शास्त्र में स्पष्ट रूप से नहीं दी गई है, लेकिन फिर भी यह मान्य है। पूरे बाइबिल के शिक्षण से यह निष्कर्ष निकलता है कि स्वर्गदूत, अपनी प्रकृति से ही, आत्मा हैं, ठीक वैसे ही जैसे परमेश्वर, उनके सृष्टा, परम आत्मा हैं; कि उन्हें बुद्धि और स्वतंत्रता प्रदान की गई है, ठीक वैसे ही जैसे उनके सृष्टा के पास सबसे पूर्ण बुद्धि और उच्चतम स्वतंत्रता है; और यह कि, परिणामस्वरूप, वे अपनी प्रकृति में अपने सृष्टा की छवि को प्रतिबिंबित करते हैं।

§66. स्वर्गदूतों की संख्या और उनके पदक्रम: स्वर्गीय पदक्रम

1. पवित्र शास्त्र में दैवीय जगत को अत्यंत विशाल के रूप में प्रस्तुत किया गया है। पुरानी वाचा के एक द्रष्टा ने *एक स्वप्न और भविष्यसूचक दर्शन देखे* जिसमें, जब *सिंहासन स्थापित किए गए और प्राचीनकाल का धनी अपनी सीट पर विराजमान हुआ, तो हजारों-हजारों उसकी सेवा करते थे और असंख्य लोग उसके सामने खड़े थे* (दानिय्येल 7:1, 9-10)। नए नियम के एक अन्य द्रष्टा *ने* भी *सिंहासन के चारों ओर कई स्वर्गदूतों को देखा और उनकी आवाज़ सुनी... और उनकी संख्या अनगिनत करोड़ों थी* (प्रकाशितवाक्य 5:11)। *विशाल स्वर्गीय सेना* ने मानव जाति के उद्धार के लिए पृथ्वी पर परमेश्वर के पुत्र के आगमन की स्तुति की (लूका 2:13)। जब मसीह को गतशेमनियों के बगीचे में महापुजारी के दासों द्वारा गिरफ्तार किया गया, तो उन्होंने अपने शिष्यों से स्वयं *बारह* से अधिक *सेनाओं के स्वर्गदूतों* का उल्लेख किया (मत्ती 26:53)। *देखो, प्रभु अपने पवित्र स्वर्गदूतों के अनगिनत झुंड के साथ आ रहे हैं— सभ पर न्याय करने और उन में से सब दुष्टों को दोषी ठहराने के लिए* (यहूदा 14; तुलना करें मत्ती 16:27; 24:31; 25:31)। हर व्यक्ति जो मसीह उद्धारकर्ता में सच्चे मन से विश्वास करता है, वह भी *अनगिनत स्वर्गदूतों* के साथ सहभागिता में प्रवेश करता है (इब्रानियों 12:22)।

स्वर्गदूतों की बड़ी संख्या को समझाने के लिए, कई चर्च शिक्षकों ने उद्धारकर्ता की उस दृष्टांत का सहारा लिया है, जिसमें एक आदमी के पास सौ भेड़ें हैं और उनमें से एक खो जाती है, तो वह नब्बे-नौ को जंगल में छोड़कर *खोई हुई एक का पीछा करता है जब तक कि वह उसे नहीं ढूंढ लेता* (लूका 15:4; मत्ती 18:12)। "यह एक खोया हुआ भेड़," उन्होंने कहा, "सम्पूर्ण मानव जाति का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि वे नब्बे-नौ जो भटक नहीं गए, स्वर्गीय स्वर्गदूतों की भीड़ का प्रतिनिधित्व करते हैं।"[1154] हालांकि, अन्य लोगों का मानना था कि "परम बुद्धियों का एक अगणित और धन्य समूह" है, कि "यह उन संख्याओं की मामूली और अपर्याप्त गिनती से परे है जिनका हम उपयोग करते हैं";[1155] कि "हजारों-हजारों देवदूत, और सैकड़ों-हजारों महादूत हैं। उतने ही सिंहासन, प्रभुत्व, प्रधानताएँ और शक्तियाँ, और असीम संख्या में अदेह शक्तियाँ।"[1156] "कल्पना करो," कहते हैं यरूशलेम के संत सिरिल, "कि रोम के लोग कितने संख्या में हैं; कल्पना करो कि अन्य बर्बर लोग कितने संख्या में हैं, जो आज मौजूद हैं, और उनमें से पिछले सौ वर्षों में कितने मर गए हैं; कल्पना करो कि पिछले हजार वर्षों में कितने दफनाए गए हैं; आदम से लेकर आज के दिन तक के सभी लोगों की कल्पना करें: वे एक बहुत बड़ी भीड़ हैं, फिर भी वे स्वर्गदूतों की तुलना में बहुत कम हैं, जो संख्या में कहीं अधिक हैं। वे निन्यानवे भेड़ें हैं; और मानव जाति केवल एक भेड़ है; किसी स्थान की विशालता को उसके निवासियों की भीड़ का आकलन करते समय ध्यान में रखा जाना चाहिए। जिस पृथ्वी पर हम रहते हैं, वह मानो स्वर्गों के केंद्र में स्थित एक बिंदु मात्र है: इसलिए, इसके चारों ओर के स्वर्गों में जितनी अधिक उनकी जगह है, उतने ही अधिक उनके निवासी हैं; और स्वर्गों के स्वर्गों में उनकी संख्या

थियोडोरेट, कमेंटरी ऑन Psalm XXXII, 7; *सीज़र,* डायलॉग्स 1, प्रश्न 44; *जॉन ऑफ डेमास्कस,* एक्सैक्ट एक्सपोजिशन ऑफ द ट्रू फेथ, बुक II, चैप्टर 3.

[1153] *डायोनिसियस द एरोपागिट,* *दिव्य नामों पर*, पृ. 4; *जस्टिन,* एपोलॉजी 1, संख्या 6; *सिरिल ऑफ़ अलेक्जेंड्रिया,* अगेंस्ट द एंथ्रोपोमॉर्फिस्ट्स, अध्याय 4; *जॉन ऑफ़ डेमास्कस,* एक्सैक्ट एक्सपोज़िशन ऑफ़ द ऑर्थोडॉक्स फेथ, पुस्तक II, अध्याय 3: "ईश्वर स्वर्गदूतों के सृष्टिकर्ता और निर्माता हैं, जिन्होंने उन्हें अस्तित्वहीनता से अस्तित्व में लाया और उन्हें *अपनी ही छवि* में गढ़ा।"

[1154] *टिट. बोस्ट्र.* लूका 12:32 पर; *ग्रेग. निस्स.* यूनोमियस के विरुद्ध, भाषण XII, *Opp.*, खंड II, पृ. 711, सं. मोरेल.; *हिलार.* मत्ती पर, टीका, अध्याय 28, संख्या 6.

[1155] *डायोनिसियस द एरोपागिट,* *दिव्य पदानुक्रम पर*, अध्याय 14.

[1156] *जॉन क्राइसोस्टोम,* अनोमोएनों के विरुद्ध अवभाज्य वचन पर, पुस्तक II, क्रि. रीडिंग्स 1841, IV, 49 में। यही विचार *एथेनागोरस* (लेगैट. प्रो क्राइस्ट, पृ. 10) में भी पाया जाता है, — *ओरिजिन* (डी प्रिंसिपि., इन प्रोओम.), — *संत अथेनासियस* (कॉन्ट्रा एरियन., ओरेट. II, नं. 27), — *धन्य थियोडोरेट* (क्रॉन. रीडिंग्स 1844, IV, 208) और अन्य।

अपार है। यदि यह लिखा है: *'हजारों-हजारों उसकी सेवा करते थे, और लाखों-लाखों उसके सामने खड़े थे'* (दानिय्येल 7:10); तो इसका कारण यह नहीं है कि स्वर्गदूतों की संख्या ठीक इतनी ही थी, बल्कि इसलिए क्योंकि भविष्यवक्ता इससे अधिक संख्या व्यक्त नहीं कर सके।"[1157]

2. स्वर्गदूतों की इतनी बड़ी संख्या को देखते हुए, यह मानना स्वाभाविक है कि उनमें अंतर हैं और यह सोचना कि, जैसे भौतिक दुनिया में—जो ईश्वर द्वारा बुद्धिमानी से व्यवस्थित है—जीवों के अलग-अलग वर्ग हैं जो, प्रकृति में एकरूप होते हुए भी, अपने पूर्णता के स्तरों में एक-दूसरे से भिन्न हैं, वैसे ही स्वर्गदूतों की दुनिया में भी जीवों के अलग-अलग वर्ग और स्तर होने चाहिए। आध्यात्मिक: और पवित्र प्रेरित पौलुस इस बिंदु पर किसी संदेह की गुंजाइश नहीं छोड़ते। यह कहकर कि स्वर्गदूत परमेश्वर के पुत्र *द्वारा* बनाए गए थे, राष्ट्रों का यह शिक्षक इसे इस प्रकार व्यक्त करता है: *'क्योंकि उन के द्वारा सब वस्तुएँ आकाश में और पृथ्वी पर, दृश्य और अदृश्य, चाहे सिंहासन हों वा प्रभुताएँ वा प्रधानताएँ वा सामर्थ्य—सब वस्तुएँ उन के द्वारा और उन के लिए उत्पन्न हुईं* (कुलु. 1:16)। भाषण का स्वर ही, *'चाहे* (ε'ίτε) संयोजक के साथ, *जो* हमेशा समानता के बजाय एक भेद को दर्शाता है, इस बात की गवाही देता है कि यहाँ स्वर्गीय शक्तियों के विभिन्न वर्गों की गिनती की जा रही है। अन्यत्र, स्वर्ग में उनके आरोहण के बाद उद्धारकर्ता की महिमा का वर्णन करते हुए, यह उल्लेख किया गया है कि पिता ने उन्हें *स्वर्ग में अपने दाहिने हाथ पर* बैठाया है, *हर प्रधानता, और शक्ति, और सामर्थ्य, और प्रभुत्व, और हर नाम से बहुत ऊपर, जो न केवल इस युग में बल्कि आने वाले युग में भी नामित किया गया है।* (इफिसियों 1:20-21; तुलना करें 3:10; 1 पतरस 3:22)। तीसरे में, वह सच्चे मसीहियों के लिए गवाही देते हैं: *क्योंकि मैं इस बात का निश्चय रखता हूँ कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएँ, न सामर्थ्य, न वर्तमान, न भविष्य, न कोई ऊँचाई, न कोई गहराई, और न कोई सृजित वस्तु हमें हमारे प्रभु मसीह यीशु में परमेश्वर के प्रेम से अलग कर सकती है।* (रोमियों 8:38-39)यह मानना कि इन सभी मामलों में प्रेरित द्वारा स्वर्गदूतों को दिए गए विभिन्न नाम केवल एक ही नाम की पुनरावृत्ति हैं, और विभिन्न स्वर्गदूतों के पदों को इंगित नहीं करते हैं, प्रवचन के स्वर के विपरीत होगा और प्रेरित के अनुरूप नहीं होगा। इसके अलावा, स्वयं उन नामों से जिन्हें परमेश्वर का वचन स्वर्गदूतों की शक्तियों को देता है, हम उनके पदक्रम में अंतर का अनुमान लगा सकते हैं। उदाहरण के लिए, उनमें से कुछ को *स्वर्गदूत* (1 पतरस 3:22) कहा जाता है, जबकि दूसरों को *महादूत* (1 थिस्सलुनीकियों 4:15; यहूदा 9): बाद वाले स्पष्ट रूप से पहले वालों से श्रेष्ठ हैं और उनसे ऊपर हैं—अन्यथा, उन्हें ऐसा खिताब क्यों दिया गया होता?

ऑर्थोडॉक्स चर्च ने हमेशा स्वर्गदूतों के बीच अंतर और उनकी प्राकृतिक शक्तियों और सिद्धियों में अंतर के आधार पर उनकी श्रेणियों या पदों में विभाजन को पहचाना है। इसने इस विश्वास को पाँचवें सार्वभौमिक परिषद में गंभीरता से व्यक्त किया (553), जब उसने अन्य बातों के अलावा, ओरिजिन को इस बात के लिए निंदा किया कि वह यह सिखाता था कि स्वर्गदूत सार और शक्ति में एक-दूसरे के पूरी तरह से बराबर थे, और वे मूल रूप से वर्गों में विभाजित नहीं थे, बल्कि केवल बाद में विभाजित हुए, जब उनमें से कुछ गिर गए।[1158] चर्च के पिता-पुरुषों में, स्वर्गदूतों के पदों के बीच का अंतर

[1157] कैटेकेटिकल लेक्चर्स, XV, § 24, रूसी अनुवाद में पृष्ठ 332।

[1158] *कॉन्सिल. ओइक. V,* कॉन्ट्रा ओरिजिन. कैन. II और कैन. XIV। ओरिजिन की इस त्रुटि को पहले ही (ईस्वी 400 में) अलेक्जेंड्रिया के संत थियोफिलस द्वारा उनकी स्थानीय परिषद में निंदा किया जा चुका था; इसके अलावा, उन्होंने अपने लेखों में इसका खंडन करने का प्रयास किया। वह इस त्रुटि के सार को इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं: "ओरिजिन का मानना है कि प्रधानताएँ, शक्तियाँ, सामर्थ्य, सिंहासन और आधिपत्य प्रारंभ से इस प्रकार सृजित नहीं हुए थे, बल्कि, पहले से ही सृजित हो चुकने के बाद, उन्हें एक विशेष प्रकार से सम्मानित किया गया और ये नाम उसी समय दिए गए जब उनके जैसे अन्य लोग लापरवाही के कारण गिर गए थे; इसलिए यह ईश्वर नहीं था जिसने उन्हें प्रधानताओं और शक्तियों के रूप में बनाया, बल्कि दूसरों के पापों ने ही उन्हें महिमा प्रदान की।" इस त्रुटि का खंडन करने के लिए, वह कुलुस्सियों 1:16 में प्रेरित के शब्दों की ओर इशारा करते हैं, और कहते हैं: "यदि (ओरिजिन) ने शब्दों की पूरी ताकत को समझा होता: *जिसके द्वारा स्वर्ग में या पृथ्वी पर, दृश्य या अदृश्य, सब वस्तुएँ सृजित की गईं—चाहे वे सिंहासन हों, प्रभुत्व हों, प्रधानताएँ हों या* शक्तियाँ—तो वह जान जाता कि वे आरंभ से ही इस प्रकार *सृजित थे,* और यह कि दूसरों की लापरवाही या पतन ने परमेश्वर को उन्हें 'सिद्धांत', 'शक्तियाँ' और 'शक्तियाँ' नाम देने का कारण नहीं दिया" (पास्चाल., पुस्तक II)।

उनके लेखों में स्पष्ट रूप से इग्नाशियस द गॉड-बेयरर,[1159] , आइरेनियस, अलेक्जेंड्रिया के क्लेमेंट, ओरिजिन, यरूशलेम के सिरिल, बेसिल द ग्रेट, जॉन क्रिसोस्टोम और अन्य लोगों द्वारा व्यक्त किया गया था।[1160]

3. ये दैवीय आदेश वास्तव में कितने हैं, या दूसरे शब्दों में, स्वर्गीय पदानुक्रम में कितनी श्रेणियाँ हैं? ऑर्थोडॉक्स चर्च, सेंट डायोनिसियस द एरिओपाजेट का संदर्भ देते हुए, जिन्होंने इस विषय पर विस्तार से चर्चा की, कहती है कि 'देवदूत नौ आदेशों में विभाजित हैं, और ये नौ तीन श्रेणियों में विभाजित हैं। पहले क्रम में वे हैं जो ईश्वर के करीब हैं, अर्थात्: सिंहासन, स्वरूप और सेराफिम। दूसरे क्रम में: सामर्थ्य, प्रभुत्व और पुण्य। तीसरे में: स्वर्गदूत, महादूत और प्रधानताएँ' (ऑर्थोडॉक्स कन्फेशन, भाग 1, प्रश्न 20 का उत्तर)। यह विभाजन:

क) यह आंशिक रूप से पवित्र शास्त्र पर आधारित है, कम से कम इस हद तक कि पवित्र पुस्तकों में यहां सूचीबद्ध सभी दैवीय आदेशों के नामों का उल्लेख है, जैसे: करूब (उत्पत्ति 3:24; भजन संहिता 79:2; 98:1; यहेजकेल 1:5–14; 10:15–20), सेराफिम (यशायाह 6:1–8), शक्तियाँ (इफिसियों 1:21; रोमियों 8:38), सिंहासन, प्रधानताएँ, अधिपत्तियाँ और अधिकार (कुलुस्सियों 1:16; इफिसियों 1:21; 3:10), महादूत (1 थिस्सलुनीकियों 4:19; यहूदा 9) और स्वर्गदूत (1 पतरस 3:22; रोम 8:38)—और इन नौ के अलावा किसी अन्य दैवीय आदेश के नाम का उल्लेख नहीं किया गया है।[1161] दूसरी ओर, जैसा कि हमने पहले ही देखा है, उपरोक्त कुछ दैवीय आदेश वास्तव में प्रेरित द्वारा अलग-अलग पहचाने गए हैं।

(b) लेकिन यह मुख्य रूप से पवित्र परंपरा पर आधारित है। और संत डायोनिसियस द एरोपागिट इस परंपरा को ठीक-ठीक अपने दैवी गुरु, प्रेरित संत पौलुस के मुख से प्राप्त करते हैं, कहते हुए: 'ईश्वर के वचन ने सभी स्वर्गीय शक्तियों (वर्गों) को नौ भिन्न नामों से नामित किया है, और हमारे दैवी आध्यात्मिक गुरु ने उन्हें तीन त्रयीय श्रेणियों में विभाजित किया है।'[1162] इसके अलावा, स्वर्गदूतों का नौ आदेशों में यही विभाजन, या कम से कम ठीक नौ स्वर्गदूत आदेशों की गणना, एपोस्टोलिक संविधानों में, सेंट इग्नेशियस द गॉड-बेयरर के लेखों में,[1163] सेंट ग्रेगरी द थियोलोजियन के लेखों में,[1164] सेंट जॉन क्रिसोस्टोम के लेखों में,[1165] और यह बात सेंट ग्रेगरी द डायलॉजिस्ट, सेंट जॉन ऑफ़ डेमास्कस और अन्य लेखकों की रचनाओं में और भी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।[1166] संत ग्रेगरी द डायलॉजिस्ट के शब्द इस प्रकार हैं: 'हम नौ स्वर्गदूतों के आदेशों को स्वीकार करते हैं, क्योंकि परमेश्वर के वचन की गवाही से हम स्वर्गदूतों, महादूतों, शक्तियों, अधिकारों, प्रधानताओं, अधिपतियों, सिंहासनों, केरूबीम और सेराफिम के बारे में जानते हैं।' इस प्रकार, पवित्र शास्त्र का लगभग प्रत्येक पृष्ठ स्वर्गदूतों और महादूतों के अस्तित्व की गवाही देता है ; जैसा कि सर्ववदिति है, भविष्यद्वाणी की पुस्तकें अक्सर करूबों और सेराफों का उल्लेख करती हैं; प्रेरित पौलुस अपनी एफिसियों के नाम पत्र में चार और आदेशों के नाम सूचीबद्ध करते हैं, कहते हुए: *'हर एक प्रधानता, और शक्ति, और सामर्थ्य, और प्रभुत्व से बहुत ऊपर*; और अपनी कुलुस्सियों के नाम पत्र में वे लिखते हैं: *'चाहे सिंहासन हों, या प्रभुत्व, या प्रधानताएँ, या*

[1159] मैं, अपनी ओर से, स्वर्गीय क्षेत्रों और दैवीय आदेशों, तथा स्वर्गदूतों और उनकी सेनाओं के परिवर्तनों, साथ ही विभिन्न शक्तियों और अधिपत्तियों को ग्रहण करने और समझने में सक्षम, साथ ही सिंहासन और शक्तियों के विभिन्न रूप, युगों की महिमा, और करूबों तथा सेराफों की उत्कृष्ट प्रकृति *(इग्नाशियस,* पत्र II, ट्रैलियनस को)।

[1160] *इरेनेयस,* विरोधी मतों के विरुद्ध II, 30; *अलेक्जेंड्रिया के क्लेमेंट,* स्ट्रोमाटा VI, 7. 16; VII, 2; *ओरिजिन,* सिद्धांतों पर 1, 5; सेल्सस के विरुद्ध VI, 30; *यरूशलेम के सिरिल,* धर्मोपदेश व्याख्यान VI, n. 6; XI, n. 11, 12; XVI, 23; *बेसिल द ग्रेट,* अगेंस्ट यूनोमियस, बुक III, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, VII, 133; *क्रिसोस्टोम,* होमीली ऑन द इनकॉम्प्रिहेन्सिबिलिटी, IV, n. 4; *हिलरी,* कमेंट्री ऑन Psalm 118, लेटर 3, n. 10.

[1161] सही नामों को छोड़कर, जैसे: माइकल — 'जो *ईश्वर* के समान है' (दानियेल 12:1), राफेल — *'ईश्वर की औषधि'* (तोबित 3:25), गब्रियल — *'ईश्वर की शक्ति'* (दानियेल 8:16), उरियेल — *'प्रकाश, ईश्वर की अग्नि'* (4 एस्द्रास 4:1) और अन्य (3 एस्द्रास 4:36; 5:16).

[1162] De coelest. hierarch. ch. VI, n. 2.

[1163] कॉन्स्ट. अपोस्ट. VIII, 12, और ऊपर टिप्पणी 1156।

[1164] "देवदूत, महादूत, सिंहासन, प्रभुत्व, प्रधानताएँ, शक्तियाँ, वैभव (λαμπρότητας), आरोहण (ἀναβάσεις), बुद्धिमान शक्तियाँ या मन हैं" (शब्द 28, *द वर्क्स ऑफ़ द होली फ़ादर्स*, III, 50)। 'दीप्तिमान प्राणियों' से, पवित्र पिता का संभवतः तात्पर्य सेराफिम से है, *जो अग्नि से प्रज्वलित हैं,* और 'उन्नति' से कायरूबीम से, जो *ज्ञान से* परिपूर्ण हैं /

[1165] "यदि हम अदृश्य शक्तियों की ओर मुड़ें और स्वर्गदूतों, महादूतों, स्वर्गीय शक्तियों, सिंहासनों, प्रभुत्वों, प्रधानताओं, शक्तियों, करूबों और सेराफिमों की सेनाओं पर अपना ध्यान केंद्रित करें, तो उसकी (सृष्टिकर्ता की) अनुपम महानता को व्यक्त करने के लिए कौन सा शब्द पर्याप्त होगा?" (उत्पत्ति पर व्याख्यान IV में)।

[1166] *Gregor. Magn.* in Evang. lib. II, homil. XXXIV, n. 7; *जॉन ऑफ़ डेमास्कस,* एक्सैक्ट एक्सपोज़िशन ऑफ़ द ऑर्थोडॉक्स फेथ, बुक II, चैप्टर 3; *Isidor. Hispal.* de ordin. creatur., p. 2; *बेडे,* homil. in dom. III Pentec.

शक्तियाँ। इस प्रकार, जब हम इफसियों को दिए गए उनके चार उल्लेखों—अर्थात् प्रधानता, सामर्थ्य, शक्ति और अधिकार—में 'सिंहासन' जोड़ते हैं, तो हमारे पास एक-दूसरे से अलग पाँच आदेश होते हैं; और जब उनमें स्वर्गदूत, महादूत, करूब और सेराफिम को जोड़ा जाता है, तो निस्संदेह नौ स्वदूतिक आदेश होंगे।" हालाँकि, यदि किलीसिया के कुछ आरंभिक शिक्षकों ने अपने लेखों में स्वदूतों के आदेशों की एक छोटी संख्या का उल्लेख किया है, और कभी-कभी अलग-अलग नामों से भी, तो इसका कारण केवल यह है कि इन शिक्षकों ने स्वदूतों के आदेशों का संक्षेप में उल्लेख किया था, और उनका इरादा उन सभी को, उनके नामों सहित, विशेष सटीकता के साथ सूचीबद्ध करने का नहीं था।[1167]

सामान्य रूप से, प्राचीन पादरियों ने स्वर्गीय पदानुक्रम के सिद्धांत को रहस्यमय और मानव मन की समझ से परे माना। "स्वर्गीय प्राणियों के कितने क्रम हैं," संत डायोनिसियस द एरोपागिट तर्क करते हैं, "वे कैसे हैं, और उनके बीच पवित्र पदानुक्रम के रहस्य कैसे पूरे होते हैं — यह केवल ईश्वर को ही सटीक रूप से ज्ञात है, जो उनके पदानुक्रम के रचयिता हैं; वे स्वयं अपनी शक्तियों, अपनी प्रकाश, और अपने पवित्र और सर्वोच्च क्रम को भी जानते हैं। जहाँ तक हमारा सवाल है, हम इस बारे में केवल उसी हद तक बात कर सकते हैं, जितना कि ईश्वर ने इसे हमें उनके माध्यम से प्रकट किया है, जो स्वयं को जानते हैं।"[1168] संत ऑगस्टीन कहते हैं, "स्वर्गीय क्षेत्रों में सिंहासन, प्रभुत्व, प्रधानताएँ और शक्तियाँ क्या हैं, इस पर मेरा अटूट विश्वास है; और यह कि वे एक-दूसरे से भिन्न हैं, इस पर मैं बिना किसी संदेह के कायम हूँ; लेकिन वे क्या हैं और वे वास्तव में एक-दूसरे से किस बात में भिन्न हैं, यह मैं नहीं जानता।"[1169]

विभिन्न मतों में, सबसे उल्लेखनीय यह है कि स्वर्गदूतों का नौ श्रेणियों में विभाजन केवल उन नामों और पदों को समाहित करता है जो हमें ईश्वर के वचन में प्रकट हुए हैं, लेकिन इसमें स्वर्गदूतों के कई अन्य नाम और रूप शामिल नहीं हैं जो हमें इस वर्तमान जीवन में प्रकट नहीं हुए हैं, परन्तु आने वाले जीवन में ज्ञात होंगे। कुछ हद तक, यह विचार स्वयं डायोनिसियस द एरोपागिट में देखा जा सकता है, जिन्होंने पहले यह कहा था कि केवल ईश्वर ही ठीक-ठीक जानते हैं कि स्वर्गीय प्राणियों के कितने आदेश हैं, और हम उनके बारे में केवल वही कह सकते हैं जो हमें प्रकट किया गया है, बाद में वास्तव में केवल उन स्वर्गदूतों के नामों को सूचीबद्ध किया और नौ आदेशों में विभाजित किया जो हमें प्रकाशन की पुस्तक से ज्ञात हैं। लेकिन इस विचार को ओरिजिन, सेंट जॉन क्रिसोस्टोम, धन्य थियोडोरेट और थियोफिलैक्ट ने विशेष उत्साह के साथ विकसित किया है।[1170] क्रिसोस्टोम कहते हैं, "वास्तव में अन्य शक्तियाँ हैं जिनके नाम हम जानते भी नहीं हैं... स्वर्ग में केवल देवदूत, प्रधान दूत, प्रभुत्व, अधिकार, प्रधानताएँ और शक्तियाँ ही नहीं वास करतीं, बल्कि अनगिनत अन्य पद और एक अकल्पनीय विशाल संख्या में वर्ग भी वास करते हैं, जिनका वर्णन कोई भी शब्द करने में सक्षम नहीं है। और हमें कैसे पता चलता है कि उपरोक्त उल्लेखित शक्तियों से भी उच्चतर शक्तियाँ हैं, और ऐसी भी शक्तियाँ हैं जिनके नाम हम जानते भी नहीं? प्रेरित पौलुस, एक का उल्लेख करने के बाद, दूसरे का भी उल्लेख करते हैं जब वे मसीह के विषय में गवाही देते हैं: 'उसे (पिता ने) *स्वर्ग में अपनी दाहिनी ओर बिठाया है, हर एक प्रधानता, और शक्ति, और सामर्थ्य, और प्रभुत्व, और हर एक नाम से बहुत ऊपर, जो इस युग में और आने वाले युग में नाम लिया है* (इफसियों 1:21)। क्या आप देखते हैं कि कुछ नाम ऐसे हैं जो वहाँ जाने जाएँगे, परन्तु अभी तक अज्ञात हैं? इसीलिए उसने कहा: *'हर एक नाम जो नाम लिया जाता है, न केवल इस युग में बल्कि आने वाले युग में भी*' हालाँकि, हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि यहाँ प्रस्तुत दृष्टिकोण एक व्यक्तिगत है।

1.2. दुष्ट आत्माओं पर

[1167] इस प्रकार, अलेक्जेंड्रिया के संत अथेनासियस, सेरापियन को लिखे अपने पत्र के एक अंश में, सिंहासन को छोड़कर केवल आठ स्वर्गदूतों के क्रमों की सूची देते हैं; लेकिन बाद में उसी पत्र में वे सिंहासन का भी उल्लेख करते हैं (Opp. vol. I, p. 340; तुलना करें 354, 366, ed. Commel.)।

[1168] De coelest. hierarch. ch. VI, n. 1.

[1169] एड ओरोसियम, अध्याय XI; तुलना करें एन्चिरिडि., अध्याय LVII, संख्या 15।

[1170] *ओरिजिन,* *डी प्रिंसिपियस*, 1, अध्याय 5; *क्रिसोस्टोम,* *होमलीज ऑन द इनकंप्रिहेन्सिबिल*, IV; *क्रिश्चियंस रीडिंग्स*, 1841, IV, 195–196 में, और होमीली V, *क्रिश्चियंस रीडिंग्स*, 1842, I, 32 में; *थियोडोरेट.* एफिसियों को पत्र पर टीका 1, 21; *थियोफिलाक्ट.* उसी अंश पर टीका।

§ 67. दुष्ट आत्माओं के विभिन्न नाम और उनके अस्तित्व की निश्चितता

ईश्वर का वचन, जो शुभ आत्माओं की बात करता है, *दुष्ट आत्माओं* की भी बात करता है (लूका 7:21), जिन्हें *अशुद्ध आत्माएँ* (मत्ती 10:1), *दुष्टता की आत्माएँ* (इफसियों 6:12), और *शैतान* या दानव कहा जाता है (लूका 8:30, 33, 35)। विशेष रूप से, यह उनमें से एक प्रमुख आत्मा को अलग करता है, जिसे यह सबसे अधिक बार *शैतान* (1 पतरस 5:8), *' ' प्रलोभी* (मत्ती 4:3), *सैतान* (प्रकाशितवाक्य 20:2, 7), कभी-कभी *बेल्ज़ेबूब* (लूका 11:15), *बेलियिल* (2 कुरिन्थियों 6:15), *इस संसार का राजकुमार* (यूहन्ना 12:31), *जो आकाश में राज्य करता है उसका राजकुमार* (इफसियों 2:2), *दुष्टात्माओं का राजकुमार* (मत्ती 9:34) और इसी तरह; जबकि अन्य दुष्ट आत्माओं को, उसके संबंध में, शैतान के *दूत* (मत्ती 25:41) और सैतान के दूत (प्रकाशितवाक्य 12:7, 9) कहा जाता है।

कि इस शैतान और उसके स्वर्गदूतों को पवित्र शास्त्र में काल्पनिक प्राणियों के रूप में नहीं, बल्कि व्यक्तिगत और वास्तविक प्राणियों के रूप में माना जाता है, यह निम्नलिखित से स्पष्ट है —

1) पुराने नियम की पुस्तकों से। यहाँ यह वर्णित है कि एक से अधिक अवसरों पर, जब परमेश्वर के स्वर्गदूत परमेश्वर के सामने प्रकट हुए, तो शैतान भी उनके साथ प्रकट हुआ; और फिर उन विभिन्न विपत्तियों का वर्णन विस्तार से किया गया है, जिनसे शैतान ने सर्वशक्तिमान की अनुमति से, धर्मी अय्यूब को परीक्षा में डाला (अय्यूब 1:6; 2:2 ff.). यह भी वर्णित है कि जब *यहोवा का आत्मा* सऊल से *दूर हो गया था,* तो *एक दुष्ट आत्मा ने* सऊल को *सताया* (1 शमूएल 16:14), कि *शैतान ने इस्राएल के विरुद्ध उठ खड़ा हुआ, और दाऊद को इस्राएलियों की जनगणना करने के लिए उकसाया* (1 इतिहास 21:1)। ज़ेकार्याह की भविष्यद्वाणी की दृष्टि में, महायाजक यीशु को प्रभु के दूत के सामने खड़े हुए चित्रित किया गया है, और शैतान यीशु के दाहिने हाथ पर उनका अभियोक्ता बनकर खड़ा है (ज़ेकार्याह 3:1)। अंत में, बुद्धि की पुस्तक गवाही देती है: *'शैतान के ईर्ष्या से मृत्यु संसार में आई* (बुद्धि 2:24)। इन सभी उदाहरणों में, विशेष रूप से पहले और आखिरी दो में, शैतान को एक व्यक्तिगत और वास्तविक प्राणी के रूप में न समझना, पाठ के अर्थ को पूरी तरह से विकृत करना होगा।

2) नए नियम की पुस्तकों से तो और भी अधिक। इसे साबित करने के लिए, कुछ उदाहरणों का उल्लेख करना पर्याप्त है:

क) उद्धारकर्ता, गेहूँ और कुचैरियों की दृष्टान्त की व्याख्या करते हुए कहते हैं: *'जो अच्छा बीज बोता है, वह मनुष्य का पुत्र है; खेत संसार है; अच्छा बीज राज्य के पुत्र हैं, और कुचैरियां दुष्ट की सन्तान हैं; जो शत्रु उन्हें बो गया, वह शैतान है; फसल युग के अंत को दर्शाती है, और कटनी करने वाले स्वर्गदूत हैं* (मत्ती 13:37–39)। यहाँ शैतान को मनुष्य के पुत्र, स्वर्गदूतों, राज्य के पुत्रों और विरोधी के पुत्रों की ही तरह वास्तविक और व्यक्तिगत प्राणी के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

ख) जब फरीसियों ने उद्धारकर्ता पर यह आरोप लगाया कि वह *बीएलज़ेबूब, यानी दुष्टात्माओं के सरदार, की शक्ति के अलावा किसी अन्य साधन से दुष्टात्माओं को नहीं निकालते* (मत्ती 12:24): उद्धारकर्ता ने न केवल यह नहीं कहा कि बेल्ज़बूब और उसके दानव वास्तविक प्राणी नहीं थे—जो फरीसियों की इस हास्यास्पद धारणा का खंडन करने का सबसे अच्छा तरीका होता—बल्कि, इसके विपरीत, उन्होंने ऐसे शब्दों में उत्तर दिया जो स्पष्ट रूप से शैतान और उसके राज्य की वास्तविकता की गवाही देते थे। *और यदि शैतान शैतान को निकालता है, तो वह अपने ही विरुद्ध विभाजित हो गया: तो फिर उसका राज्य कैसे टिक सकता है? और यदि मैं बेल्ज़बूल की शक्ति से दुष्टात्माओं को निकालता हूँ, तो तुम्हारे पुत्र उन्हें किस शक्ति से निकालते हैं? इसलिए, वे तुम्हारे न्यायकर्ता होंगे। परन्तु यदि मैं परमेश्वर की आत्मा से दुष्टात्माओं को निकालता हूँ, तो परमेश्वर का राज्य निश्चय ही तुम पर आ पहुँचा है। या कोई कैसे एक बलवन्त मनुष्य के घर में घुसकर उसके सामान को लूट सकता है, यदि वह पहिले उस बलवन्त मनुष्य को न बाँधे? तब वह उसका घर लूट लेगा* (26–29)।

ग) जब प्रेरितों ने एक बार उद्धारकर्ता से निजी तौर पर पूछा कि वे एक मनुष्य से अशुद्ध आत्मा को क्यों नहीं निकाल सके, तो प्रभु ने न केवल यह नहीं बताया कि वह अशुद्ध आत्मा बिल्कुल भी नहीं थी, और अशुद्ध आत्माएं वास्तव में मौजूद नहीं हैं, बल्कि इसके विपरीत, उन्होंने उन्हें दुष्ट आत्माओं को निकालने का तरीका सिखाया: *इस प्रकार का तो केवल प्रार्थना और उपवास से ही निकलता है* (मरकुस 9:29)।

(d) उस भयानक न्याय में जो धर्मी न्यायी पापियों पर सुनाएंगे: *'मेरे पास से चले जाओ, हे श्रापितों, उस अनंत आग में जो शैतान और उसके स्वर्गदूतों के लिए तैयार की गई है'* (मत्ती 25:41), शैतान और उसके स्वर्गदूतों को दुष्ट लोगों से स्पष्ट रूप से अलग किया गया है और उन्हें अनंत दंड के लिए नियत वास्तविक प्राणी के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

ई) प्रेरित याकूब कहते हैं: *'तो भी दुष्टात्माओं को विश्वास होता है, और कांपती हैं* (याकूब 2:19)। इसका अर्थ है कि वे तर्कशील, सोचने वाले प्राणी हैं।

f) प्रेरित यूहन्ना गवाही देते हैं कि *जो कोई पाप करता है वह शैतान का है, क्योंकि शैतान ने पहले पाप किया था। इसी कारण से पुत्र परमेश्वर प्रकट हुआ, कि वह शैतान के कामों को नाश करे* (1 यूहन्ना 3:8)। क्या कोई यह स्वीकार कर सकता है कि यहाँ 'शैतान' शब्द किसी वास्तविक प्राणी को नहीं, बल्कि केवल एक काल्पनिक को संदर्भित करता है?

(g) प्रेरित पौलुस लिखते हैं: *'ताकि शैतान हम पर हावी न हो, क्योंकि हम उसकी युक्तियों से अनभिज्ञ नहीं हैं* (2 कुरिन्थियों 2:11), और इस प्रकार शैतान को एक सोचने वाला प्राणी चित्रित करते हैं; और अन्यत्र वह यह इच्छा व्यक्त करता है *कि* जो सत्य का विरोध करते हैं, *वे शैतान के फंदे से छुड़ाए जाएँ, जिसने उन्हें अपनी इच्छा के अनुसार कैदी बना लिया है* (2 तीमुथियुस 2:26), और इस प्रकार यह सिखाता है कि शैतान एक व्यक्तिगत सत्ता है जिसके पास अपनी इच्छा है।

ईसाई चर्च ने हमेशा और निस्संदेह शैतान और उसके स्वर्गदूतों के अस्तित्व को स्वीकार किया है, जैसा कि सर्ववदिति है —

क) इसके शिक्षकों: जस्टिन द मार्टिर, टेटियन, आइरेनियस, एथेनागोरस, ओरिजिन, एम्ब्रोज़ और अन्य सभी के लेखों से;[1171]

ख) चर्च में बपतिस्मा के उस प्राचीन अनुष्ठान से, जो आज भी प्रचलित है, जहाँ संस्कार प्राप्त करने वाले व्यक्ति को अन्य बातों के अलावा, शैतान और उसके सभी कार्यों से इनकार करने के लिए कहा जाता है;

ग) उन सभी पवित्र तपस्वियों के पूरे इतिहास से, जिन्होंने संसार को त्यागकर रेगिस्तानों में जाकर अपना पूरा जीवन आकाश के अधीन दुष्ट आत्माओं के खिलाफ एक भयंकर लड़ाई लड़ते हुए बिताया, जो अक्सर उनके सामने मूर्त रूप में भी प्रकट होती थीं।

यह ध्यान देने योग्य है कि दुष्ट आत्माओं के अस्तित्व में विश्वास मानव जाति के बीच हमेशा सार्वभौमिक रहा है, ठीक उसी तरह जैसे अच्छे स्वर्गदूतों के अस्तित्व में विश्वास और स्वयं ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास रहा है।[1172] इसलिए इसे सही मायने में मूल, दैवीय रूप से प्रकट धर्म की परंपराओं में से एक माना जा सकता है, जिसे बाद में कुलपतियों द्वारा मानव जाति के प्रसार के साथ-साथ सभी लोगों के बीच फैलाया गया, यद्यपि इसमें धीरे-धीरे विभिन्न परिवर्तन और विकृतियाँ आई हैं।

§ 68. दुष्ट आत्माओं को ईश्वर ने अच्छा बनाकर रचा था, लेकिन वे अपनी इच्छा से दुष्ट हो गए।

यह सत्य, जिसे स्वस्थ तर्क ईश्वर को सर्वोत्तम पूर्ण प्राणी के रूप में अपनी अंतर्निहित धारणा के आधार पर स्वीकार किए बिना नहीं रह सकता, स्वयं मसीहा द्वारा तथा पवित्र प्रेरितों द्वारा स्पष्ट रूप से प्रमाणित किया गया था। मसीह उद्धारकर्ता ने यहूदियों की दुष्टता के लिए उन्हें फटकारते हुए, अन्य बातों के अलावा, उनसे कहा: *'तुम्हारा पिता शैतान है; और तुम अपने पिता की इच्छाओं को पूरा करना चाहते हो।' वह आरंभ से ही एक हत्यारा था और सत्य में स्थिर नहीं रहा* — ἐν τῇ ἀληθείᾳ οὐχ ἑστηκεν (यूहन्ना 8:44)। यदि तब, शैतान सत्य में नहीं बना रहा, तो इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि उसे सत्य में स्थापित किया गया था, और यह उस पर निर्भर था कि वह उसमें बना रहे या नहीं। प्रेरित पतरस कहते हैं कि परमेश्वर ने *पाप करने वाले* (ἁμαρτησάντων) *स्वर्गदूतों को नहीं बख्शा, बल्कि उन्हें नरकीय अंधकार की बेड़ियों से बाँधकर, दंड के न्याय तक हिरासत में रखने के लिए सौंप दिया* (2 पतरस 2:4) — यह इस विचार की एक सीधी अभिव्यक्ति है कि पतित आत्माएँ निर्दोष बनाकर बनाई गई थीं, लेकिन उन्होंने अपनी इच्छा से पाप किया,

---

[1171] *जस्टिन,* *अपोलॉजी*, 1, पृ. 28; *टेटियन,* *अगेंस्ट द ग्रीक्स*, पृ. 7; *आइरेनियस,* *अगेंस्ट हेरेसीज़*, III. 20, n. 1; *एथेनागोरस,* लेगेटस प्रो क्रिस्टो, अध्याय 24; *ओरिजिन,* अगेंस्ट सेल्सस, IV, 32; *एम्ब्रोस,* एपिस्टल LXXXIV; *ऑगस्टीन,* द सिटी ऑफ गॉड, VIII, अध्याय 22; *लैक्टैंटियस,* डिविाइन इंस्टिट्यूशंस, II, अध्याय 9; *यूसेबियस,* डेमॉन्स्ट्रेशन ऑफ द गॉस्पेल, III, अध्याय 5.

[1172] उपरोक्त टिप्पणी 1115 देखें।

जसिके लिए उन्हें दंडति कयिा गया। अपोस्तल यहूदा भी लखिते हैं कि परमेश्वर *उन स्वर्गदूतों को, जिन्होंने अपनी महिमा को बनाए नहीं रखा, परन्तु अपनी वास-स्थली को छोड़ दिया, अनन्त बेड़ियों में, अंधकार में रखता है* (यहूदा 6) — *जिन्होंने अपनी महिमा को बनाए नहीं रखा* — τούς μή τηρήσαντας τήν έαυτών έρχήν: अर्थात्, जिन्होंने अपनी उत्पत्ति, अपनी मूल रूप-रंग, अपनी मूल अवस्था को संरक्षति नहीं रखा; *बल्कि जिन्होंने अपने निवास-स्थान* — οίκητήριον, अर्थात् वह निवास-स्थान जो उनकी मूल अवस्था के अनुरूप था — *को त्याग दिया*।

ऑर्थोडॉक्स चर्च ने, अपने पादरियों और शिक्षकों के शब्दों के माध्यम से, हमेशा एक निर्विवाद सत्य के रूप में प्रचार कयिा है कि पतति आत्माएं अच्छी बनाई गई थीं, और वे स्वयं बुरी हो गईं।[1173] उदाहरण के तौर पर, हम इन शब्दों का हवाला देते हैं:

a) *संत आइरेनियस:* "चूंकि सभी चीजें ईश्वर द्वारा बनाई गई थीं, और शैतान स्वयं अपने और दूसरों के लिए (ईश्वर से) धर्मत्याग का कारण बना, इसलिए धर्मग्रंथ सही रूप से उन लोगों को जो धर्मत्याग में बने रहते हैं, शैतान की संतान और दुष्ट की स्वर्गदूत कहते हैं।"[1174]

b) *टेटियन:* "प्रथमजात (देवदूतों का), नियम के उल्लंघन और अज्ञानता के कारण, एक राक्षस बन गया, और जो उसके व्यर्थ उदाहरण का अनुसरण करते थे, वे राक्षसों की सेना बन गए, और अपनी स्वतंत्र इच्छा से उन्होंने स्वयं को अपने पागलपन के हवाले कर दिया;"[1175]

ग) *यरूशलेम के संत सिरिल:* "शैतान से पहले, किसी ने पाप नहीं कयिा था; उसने पाप इसलिए नहीं कयिा क्योंकि वह जन्मजात रूप से पाप की प्रवृत्ति के साथ पैदा हुआ था (अन्यथा पाप का दोष उसे बनाने वाले पर आता) — बल्कि, अच्छा बनाए जाने के बाद, वह अपनी ही इच्छा से शैतान बन गया;"[1176]

d) *संत बेसिल द ग्रेट:* "दुष्ट आत्माओं को अपनी प्रकृति से ही अच्छाई का विरोध करने का भाग्य प्राप्त नहीं हुआ (क्योंकि उस स्थिति में दोष स्रष्टा पर आता), बल्कि उन्होंने अपनी स्वतंत्र इच्छा से, अच्छाई से वंचित होकर, पाप की ओर मुड़ गए;"[1177]

ई) *धन्य ऑगस्टीन:* "शैतान एक अशुद्ध आत्मा है; वह एक आत्मा के रूप में अच्छा है, और एक अशुद्ध आत्मा के रूप में बुरा है; वह स्वभाव से एक आत्मा है, और पाप के कारण अशुद्ध है; इन दो गुणों में से, पहला ईश्वर से आता है, दूसरा स्वयं शैतान से;"[1178]

f) *धन्य थियोडोरेट:* "हम यह नहीं कहते कि दुष्टात्माओं को सर्व के प्रभु द्वारा आरंभ से ही दुष्ट बनाया गया था, न ही यह कि उन्हें ऐसी प्रकृति प्रदान की गई थी; बल्कि यह कि उन्होंने स्वयं, इच्छा के विकृत हो जाने के कारण, बेहतर से बदतर की ओर मुंह मोड़ लिया।"[1179]

[1173] *एथेनाग.* लेगैट. प्रो क्रिस्ट. XXIV; *क्लेम. एलेक्स.* स्ट्रोम. VII, 7; *ओरिजिन.* डी प्रिंसि. प्रो. नं. 6; *टर्टुल.* एडव मार्क. II, 10; *लैक्टैंट.* डिविनि. इंस्ट. II, 9; *अथानास.* डी सिनाड. नं. 48; *एंटोन.* ओरैट. एड मोनाच. नं. VII; *एपिफेनियस,* हेरेस. LXIV, नं. 22; *यूसेबियस,* डेमोंस्ट्र. इवैंग. IV, 9; *डिडिमस,* कॉन्ट्र. मैनिकि. नं. XIII; *कैसियन,* कॉल्. VIII, 8; *जॉन ऑफ़ डेमास्कस,* एक्सैक्ट एक्सपोज़िशन ऑफ़ द ऑर्थोडॉक्स फेथ, बुक II, चैप्टर 4.

[1174] विश्वास-भ्रष्टताओं के विरुद्ध IV, 41; तुलना करें V, 25, टिप्पणी 4.

[1175] एडव. ग्रीक, अध्याय 7.

[1176] कैटेकेटिकल लेक्चर्स II, § 4, रूसी अनुवाद में पृष्ठ 27।

[1177] यूनोमियस के विरुद्ध, पुस्तक II, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स* VII, 112 में। अन्यत्र, पवित्र पिता इस पर और अधिक विस्तार से चर्चा करते हैं: 'मनुष्य कपटी क्यों है? अपनी स्वतंत्र इच्छा से। शैतान दुष्ट क्यों है? उसी कारण से; क्योंकि उसे भी स्वतंत्र जीवन मिला था, और उसे या तो ईश्वर के साथ रहने या भलाई से मुंह मोड़ने की शक्ति दी गई थी। गब्रियल एक स्वर्गदूत है और हमेशा ईश्वर के सामने खड़ा रहता है। शैतान एक स्वर्गदूत है, और वह अपनी ही पदवी से पूरी तरह गिर गया है। पहला अपनी स्वतंत्र इच्छा से स्वर्ग में संरक्षित रहा, और दूसरा अपनी स्वतंत्र इच्छा से नीचे फेंका गया। पहला धर्मत्यागी बन सकता था, और दूसरा वफादार रह सकता था। लेकिन एक ईश्वर के प्रति अतृप्त प्रेम से बचा, जबकि दूसरे को ईश्वर से अलगाव के कारण बाहर फेंक दिया गया। और ईश्वर से यह अलगाव ही बुराई है। आँख का एक हल्का सा मुड़ना यह निर्धारित करता है कि हम सूर्य की ओर हैं या अपने शरीर की छाया की ओर। और वहाँ, जो सीधे आगे देखता है, उसके लिए ज्ञान की प्राप्ति प्रतीक्षा कर रही है; जबकि जो अपनी दृष्टि छाया की ओर मोड़ता है, उसके लिए अंधकार अवश्यंभावी है। इस प्रकार शैतान चालाक है, जो अपनी चालाकी अपनी ही इच्छा से प्राप्त करता है, और उसका स्वभाव अच्छाई का विरोधी नहीं है" (उपरोक्त, VIII, 157)।

[1178] कॉन्ट्र. जूलियन, अध्याय 9; तुलना करें कॉन्ट्र. डोनेट. IV, 9, टिप्पणी 13; डी जेनेस. एड लिट्. XI, 21, टिप्पणी 28।

[1179] Contr. Graec. serm. III; तुलना करें Divin. decret. epitom. c. VIII, in Chr. Th. 1844, IV, 211–215.

इस प्रकार स्वर्गदूतों के पतन की सच्चाई को विश्वास के एक सिद्धांत के रूप में प्रस्तुत करते हुए, ईसाई शिक्षकों ने एक ही समय में, इसे स्पष्ट करने के लिए, पतन की परिस्थितियों से संबंधित कुछ संबंधित प्रश्नों को हल करने का प्रयास किया, यद्यपि उन्होंने अपने उत्तरों को केवल निजी राय के रूप में प्रस्तुत किया। ये प्रश्न इस प्रकार हैं:

1) क्या स्वर्गदूतों ने ईश्वर से अपना अस्तित्व प्राप्त करने के तुरंत बाद पतन किया? जो लोग यह मानते थे कि स्वर्गदूतों को मानवजाति की सृष्टि से थोड़ी ही पहले बनाया गया था, उन्हें स्वाभाविक रूप से यह मानना पड़ा कि शिक्षसों ने अपनी सृष्टि के तुरंत बाद पतन किया,[1180] और यहाँ तक कि, जैसे ही वे बनाए गए, अचानक ही,[1181] क्योंकि, थोड़ी ही देर बाद, शैतान को पहले से ही मानवजाति का प्रलोभक के रूप में चित्रित किया गया है। लेकिन जो लेखक दृश्यमान जगत से बहुत पहले स्वर्गदूतों के उद्भव के सिद्धांत का पालन करते थे, उन्होंने यह स्वीकार किया कि पतित आत्माएँ काफी समय तक अनुग्रह की अवस्था में रहीं।[1182] इस दृष्टिकोण के समर्थन में, कुछ लोगों ने टायर के राजकुमार को संबोधित नबी यहेजकेल के शब्दों की ओर इशारा किया: *'तुम एदन में, परमेश्वर के बगीचे में थे; तुम्हारे वस्त्र हर प्रकार के कीमती पत्थर से सजे हुए थे...'; तू सृजित होने के दिन से अपने मार्गों में निर्दोष था, जब तक तुझमें अधर्म पाया गया* (यहे. 28:13, 15) — यह ध्यान देते हुए कि तिरि के राजकुमार का भाग्य रहस्यमयी रूप से पतित प्रातःतारे के भाग्य का प्रतिबिंब और प्रतिध्वनि था।[1183]

२) दुष्ट आत्माएं कैसे गिरीं: क्या वे सभी एक ही समय में गिरीं? नहीं, चर्च के शिक्षक आमतौर पर जवाब देते थे। पहले, एक गिरा—मुख्य वाला—और फिर उसने अपने साथ बाकी सभी को नीचे खींच लिया।[1184] यह मुख्य वाला, कुछ लोगों के अनुसार, अपने पतन से पहले, सभी सृजित आत्माओं में सबसे पहला और सबसे परिपूर्ण था,[1185] सभी दैवीय सेनाओं से श्रेष्ठ;[1186] जबकि, अन्य लोगों की राय में, वह कम से कम प्रमुख आत्माओं (ταξιάρχων) में से एक था, जिनके नेतृत्व के अधीन निम्नतर दैवीय आदेश होते हैं,[1187] और विशेष रूप से उन लोगों में से एक था जिनके बीच प्रभु ने दुनिया के हिस्सों के शासन को बाँटा था।[1188] जहाँ तक अन्य लोगों का प्रश्न है जिन्हें उस पतित प्रातःतारे ने उसके पीछे भटकाया—वे उसके अधीन, उसके अधिकार के अधीन स्वर्गदूत थे, जो इसलिए उसके उदाहरण, या उसकी मनाओ, या उसके छल से भटक सकते थे।[1189] वे शास्त्र-अंश जो शैतान को *झूठ का पिता* कहते हैं (यूहन्ना 8:44), इस तथ्य को कि *शैतान ने पहले पाप किया* (1 यूहन्ना 3:8), और इसी प्रकार *उसके स्वर्गदूतों* के बारे में (मत्ती 25:41; प्रकाशितवाक्य 12:7, 9) इस दृष्टिकोण का आधार हो सकते हैं।

3) पतित आत्माएँ किस पाप के कारण पतित हुईं? इस पर तीन मुख्य दृष्टिकोण थे:

1180 *ऑगस्टीन,* *De Genesi ad litteram* XI, पृ. 20, 23; *De Civitate Dei* XI, अध्याय 15.

1181 *ह्यूगो विक्टोरिन.* *सम. सेन्ट. ट्रैक्ट.* II, अध्याय 3.

1182 ऊपर टिप्पणी 1133 देखें।

1183 *ओरिजेन,* इज़ेकीएल पर टीका, अध्याय XII; *जेरूसलम के सिरिल,* शिक्षाओं का सारांश, पुस्तक II, खंड 4, रूसी अनुवाद में पृष्ठ 27–28; *थियोडोरेट.* द ब्रीफ एक्सपोजिशन ऑफ द डिवाइन डॉग्माज़, अध्याय 8, क्रिश्चियन रीडिंग्स 1844, IV, 213–214 में: 'नबी यहेज़केल, तिरि के राजकुमार के नाम पर, पतित राजकुमार, शैतान का वर्णन करते हैं, जिसने उसकी सहायता की'..

1184 *ग्रेगरी द थियोलोजियन,* *हाइमनल एंड मिस्टिकिल लेक्सिकन*, VI, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स* में, IV, 238: *सिरिल ऑफ जेरूसलम,* *पब्लिक प्रवचन*, II, खंड 4, रूसी अनुवाद में पृष्ठ 28।

1185 *ग्रेगरी द थियोलोजियन,* *हाइम्स एंड मिस्टिकिल डिस्कोर्सेस*, पुस्तक IV, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, IV, 228 में: 'स्वर्गीय प्रकाशमानों में अग्रणी, जिसने अपने अहंकार के कारण अपना प्रकाश और महिमा खो दी थी, मानव जाति का अथक घृणा से पीछा करता है।' तुलना करें *डिस्कोर्सेस*, पुस्तक VI, वही, पृ. 237।

1186 *टर्तुल्लियन,* अगेंस्ट मार्कियन, II, पृ. 10; *ग्रेगरी द ग्रेट,* मोरल डिस्कोर्स, IV, पृ. 13: 'वह धर्मत्यागी दूत, जिसे स्वर्गदूतों की अन्य सेनाओं से श्रेष्ठ होने के लिए बनाया गया था, अपने घमंड के कारण गिर गया, ताकि वह अब उन स्वर्गदूतों के अधिकार के अधीन हो जो डटे रहे हैं।'

1187 *अनास्तासियस,* *ओडिगोस*, अध्याय 4.

1188 *निसिबिस के ग्रेगरी,* *कैटेकिज़्म*, अध्याय 6; *दमास्कस के जॉन,* *एक्ज़ैक्ट एक्सपोज़िशन ऑफ़ द ऑर्थोडॉक्स फेथ*, पुस्तक II, अध्याय 4: "स्वर्गीय व्यवस्था की दैवीय शक्तियों का प्रमुख, जिसे ईश्वर ने पृथ्वी की संरक्षकता सौंपी थी, स्वभाव से दुष्ट नहीं बनाया गया था।"

1189 *ग्रेगरी द थियोलोजियन,* होमीली 38, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, III, 241 में: "अपनी चमक के कारण भोर का तारा, परन्तु अपने घमंड के कारण अंधकार बन गया और कहा जाने लगा, अपने अधीन अधर्मी शक्तियों के साथ...;" अनास्तासियस, *ऑन द गाइड*, अध्याय 4; जॉन ऑफ़ डेमास्कस, सच्चे विश्वास की सटीक व्याख्या, पुस्तक II, अध्याय 4: "बहिष्कृत किए जाने के बाद, उसका अनुसरण किया गया और उसके साथ-साथ उसके अधीन अनगिनत स्वर्गदूत भी गिर गए।"

कुछ का मानना था कि स्वर्गदूतों का पाप मनुष्यों की बेटियों के साथ उनके अस्वाभाविक संबंधों में था, जो पवित्र वंशावलीकार के शब्दों की ओर इशारा करता है: *'तब परमेश्वर की संतान ने मनुष्यों की बेटियों को सुंदर देखा, और उन्होंने उन्हें अपनी पत्नियाँ बना लिया, जिन्हें भी उन्होंने चुना'* (उत्पत्ति 6:2)।[1190] लेकिन—

a) इसके बाद स्वयं परमेश्वर के वचन: *'मेरी आत्मा मनुष्य के साथ सदा विवाद नहीं करेगी, क्योंकि वह भी देह है; उसके दिन एक सौ बीस वर्ष के हों'* (3) — यह दर्शाते हैं कि ये मनुष्य थे;

ख) जिस घटना का मूसा उल्लेख करते हैं वह प्रलय से पहले हुई थी, जबकि स्वर्गदूत बहुत पहले ही गिर चुके थे, क्योंकि शैतान पहले मनुष्य का ही परीक्षाकर्ता था;

ग) उद्धारकर्ता के वचन के अनुसार, स्वर्गदूत *न तो विवाह करते हैं और न ही किसी का विवाह होता है* (मत्ती 22:30) और, सामान्य रूप से, अदेह आत्माएं होने के नाते, वे शारीरिक वासनाओं से भटकने में असमर्थ हैं;

घ) पवित्र शास्त्र में, न केवल स्वर्गदूतों को 'परमेश्वर के पुत्र' कहा जाता है, बल्कि अक्सर धर्मी लोगों को भी, जो सच्चे परमेश्वर की उपासना करते हैं (व्यव. 14:1; नीतिव. 14:26; यूहन्ना 1:12)। इसलिए, धर्मनिष्ठ सेथ की संतान, जिन्होंने *यहोवा [परमेश्वर] के नाम का आह्वान करना आरंभ किया* (उत्पत्ति 4:26), उन्हें मनुष्यों के पुत्र-पुत्रियों के विपरीत, अर्थात् दुष्ट काइन की संतान के विपरीत, परमेश्वर के पुत्र कहा जा सकता था, जिन्होंने परमेश्वर को भूलकर केवल मानव हृदय की वासनाओं का अनुसरण किया। बाढ़ से पहले पृथ्वी पर सर्वव्यापी दुष्टता का कारण इन्हीं परमेश्वर के पुत्रों का मनुष्यों की बेटियों के साथ मिलना-जुलना था, जिससे उस पर स्वर्गीय दंड आ पड़ा।[1191]

दूसरे दृष्टिकोण के अनुसार, पतित आत्माओं का पाप ईर्ष्या में निहित था: *'शैतान की ईर्ष्या से,'* बुद्धिमान कहते हैं, *'मृत्यु संसार में आई'* (बुद्धि 2:24)।[1192] लेकिन यहाँ संदर्भ पृथ्वी की, मानव की वास्तविक दुनिया का है, जैसा कि बुद्धिमान की तर्क-शैली से स्पष्ट है: *ईश्वर ने मनुष्य को अमरत्व के लिए बनाया और उसे अपनी शाश्वत सत्ता की प्रतिमा में ढाला; लेकिन शैतान की ईर्ष्या के कारण, मृत्यु संसार में प्रवेश कर गई* (Wisdom 2:23–24)। "शैतान की ईर्ष्या के कारण," संत ग्रेगरी महान ने कहा, "मृत्यु ने सांसारिक दुनिया में प्रवेश किया: जब दुष्ट आत्मा, हमारा विरोधी, स्वयं स्वर्ग से वंचित हो गया, तब वह उस मनुष्य से ईर्ष्या करने लगा, जिसे स्वर्ग के लिए बनाया गया था।"[1193]

अंत में, तीसरा दृष्टिकोण—कि शैतान, अन्य सभी दुष्ट आत्माओं को अपने पीछे खींचते हुए, गर्व के कारण गिर पड़ा—एक ऐसा दृष्टिकोण है जिसकी परमेश्वर के वचन में वास्तविक आधार है। प्रेरित पौलुस, यह नियम निर्धारित करते हुए कि हाल ही में बपतिस्मा प्राप्त कोई व्यक्ति बिशप के पद पर नियुक्त न किया जाए, जोड़ते हैं: *ताकि वह घमंडी न हो जाए और शैतान के साथ दण्ड* (εἰς κρῖμα) *में न पड़ जाए* (1 तीमुथियुस 3:2–6), अर्थात्, ताकि वह घमंडी होकर शैतान के समान दण्ड का पात्र न बन जाए। यदि, तथापि, धार्मिकता के विधान के अधीन समान दण्ड समान दोष को पूर्व-मान्य करता है, तो प्रेरित के शब्दों से स्वाभाविक रूप से यह निष्कर्ष निकलता है कि शैतान घमण्ड के कारण गिरा।[1194] और सिराख के बुद्धिमान पुत्र ने सामान्य रूप से पाप के बारे में कहा है: *पाप की शुरुआत अहंकार है* (सिराख 10:15); अतः इसे

[1190] *एथेनागोरस,* लेगेटस प्रो क्रिस्टो, XXVI; *टर्तुलियन,* डी वर्जिनि वेलाटा, VII; *लैक्टैंटियस,* डिविाइन इंस्टिट्यूट्स, II, 15; *हिलरी,* कमेंट्री ऑन Psalm CXXXII, 2, और अन्य।

[1191] इस दृष्टिकोण का खंडन *जॉन क्रिसोस्टोम* (इन जेनेस होमलि. XXII, n. 2–3); *थियोडोरेट* (इन जेनेस. क्वेस्ट. 46, इन क्रि. खरि. 1843, III, 377–380; Divin. decret. epit. c. VII, in Chr. Ch. 1844, IV, 206–208); *ऑगस्टीन* (De civitate Dei XV, 22, 23, n. 2, 3); *फोटियस* (Epist. 172) और अन्य।

[1192] *जस्टिन,* *डायलॉग्स विद ट्रायफो*, अध्याय XXIV; *आइरेनियस,* *अगेंस्ट हेरेसीज़*, III, 33, n. 8; IV, 40; *टर्टुलियन,* *अगेंस्ट मार्कियन*, II, 10.

[1193] Lib. Pastoral. भाग III, अध्याय 11: यही विचार धन्य ऑगस्टीन में भी पाया जाता है — De Genes. ad litt. XI, अध्याय 14.

[1194] इस प्रकार संत बेसिल द ग्रेट (यशायाह पर भाष्य, अध्याय 2, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, VI, 117); धन्य जेरोम (यहेजकेल के अध्याय 16 में); और धन्य थियोडोरेट: 'वे (दुष्ट आत्माएँ) अन्य अदेह आत्माओं के साथ बनाई गई थीं, लेकिन उन्होंने उनके साथ मिलकर प्रभु परमेश्वर के प्रति स्वेच्छा से आज्ञाकारिता नहीं करना चाही; इसके विपरीत, अहंकार और घमंड से वशीभूत होकर, वे बुराई की ओर मुड़ गए और अपनी अवस्था से गिर गए। यह बात दिव्य प्रेरित द्वारा तब प्रकट की गई जब उन्होंने एपिस्कोपेट (बिशप) के पद के लिए नियम निर्धारित किया: वे कहते हैं, *'उसे हाल ही में धर्मांतरित नहीं होना चाहिए, कहीं ऐसा न हो कि वह घमंड से भर जाए और शैतान की तरह उसी दंड में पड़ जाए* (1 तीमु. 3:6)। इन शब्दों से वह यह संकेत देते हैं कि शैतान के पतन का कारण अहंकार था" (ए ब्रीफ एक्सपोजिशिन ऑफ डिविाइन डॉगमाज़ इन द क्रिश्चियन रीडर, 1844, IV, 212–213)।

संसार के प्रथम पाप पर भी लागू कयिा जा सकता है, जो सभी आगामी पापों की शुरुआत था, अर्थात् शैतान का पाप।[1195] पवत्रि पतिाओं में, नम्निलखिति ने यह दृष्टकिोण अपनाया:

a) *संत ग्रेगरी द थियोलोजयिन:* "प्रकाश का सबसे पहला वाहक, गौरवान्वति होकर, जब—उत्कृष्ट महमिा से वशिष्टि—उसने स्वयं को महान ईश्वर के राजसी सम्मान के योग्य समझा, तो उसने अपनी ही करिणों को नष्ट कर दयिा, अपमान में यहाँ गरि पड़ा, और, देवता बनने की इच्छा से, पूरी तरह अंधकार बन गया;"[1196]

ख) *संत अथेनासयिस महान:* "शैतान को स्वर्ग से व्यभचिार या परस्त्रीगमन, या कसिी गुप्त अवैध संबंध के लिए नहीं नकिाला गया, बल्कि घमंड ने उसे पाताल की गहराइयों में धकेल दयिा—उसने ये शब्द कहे: *'मैं स्वर्ग पर चढ़ूंगा; मैं अपनी सहिासन को परमेश्वर के तारों से ऊपर उठाऊंगा; मैं* सर्वोच्च *के समान होऊंगा*" (यशायाह 14:13–14);[1197]

ग) *संत एम्ब्रोज़:* "अहंकार की उत्पत्ति शैतान से हुई, जो सृष्टकिर्ता द्वारा प्रदान की गई अपनी शक्ति और गरमिा से मोहति हो गया, और स्वयं को अपने सृष्टकिर्ता के समान महमिा का भागी समझने लगा, और उसे उन स्वर्गदूतों सहति स्वर्ग की ऊँचाइयों से नीचे फेंक दयिा गया, जन्हिें उसने अपनी दुष्टता में भटका दयिा था;"[1198]

d) *संत लयिो, रोम के पोप:* "शैतान पहले अभमिानी हुआ, ताकि वह गरि सके, और फरि ईर्ष्यालु हुआ, ताकि वह हमें नुकसान पहुँचा सके।"[1199] सामान्य रूप से, यह दृष्टकिोण चर्च के प्राचीन शक्षिकों के बीच लगभग सार्वभौमकि रूप से स्वीकार कयिा गया था, और यह ओरजिन, बेसलि द ग्रेट, जॉन क्रसिोस्टोम, सरिील ऑफ़ अलेक्जेंड्रयिा, थयिोडोरेट, जेरोम, ऑगस्टीन, जॉन ऑफ़ डेमास्कस और अन्य के लेखों में पाया जाता है।[1200]

जहाँ तक गरि हुए आत्मा के गर्व की बात है—जो उसका पहला पाप था—वचिार भन्नि थे। कुछ लोगों ने यशायाह 14:13–14 के शब्दों के आधार पर माना कि शैतान ने अपनी प्रकृति में ईश्वर के बराबर होने और उसी सहिासन पर बैठने का अतक्रिमण कयिा, '[1201] ' या उसने स्वयं को ईश्वर से भी ऊँचा समझा, और इसीलिए *वह वद्रिोही* बन गया *तथा स्वयं को हर उस वस्तु से ऊपर उठा लयिा जसिे ईश्वर या पवत्रि कहा जाता है।* (2 थस्सि. 2:4).[1202] हालांकि अन्य का मानना था कि पतति प्रातःतारा ने परमेश्वर के पुत्र की उपासना करने से इनकार कर दयिा, उसकी श्रेष्ठता से ईर्ष्या करते हुए,[1203] या, प्रकटोक्ति द्वारा यह देखकर कि परमेश्वर का यह पुत्र एक दनि पीड़ति होगा, उसकी दव्यिता पर संदेह कयिा और उसे परमेश्वर के रूप में स्वीकार करने से मना कर दयिा।[1204]

4) दुष्ट आत्माएँ कतिनी नीचें गरि गई हैं? इतनी नीचें कि वे फरि कभी नहीं उठेंगी — यह चर्च के शक्षिकों की सामान्य प्रतक्रियिा थी।[1205] और परमेश्वर का वचन गवाही देता है कि गरि हुए स्वर्गदूतों को *महान दनि के न्याय के लिए, अंधकार में, शाश्वत बेड़ियों में* रखा गया है (यहूदा 6) और उनके लिए *शाश्वत आग* तैयार की गई है (मत्ती 25:41)। तो फरि, वे पश्चाताप क्यों नहीं कर सकते? क्योंकि, शुद्ध आत्माएँ होने के नाते, कसिी भी भौतकि आवरण से और

[1195] संत ऑगस्टीन, यह साबति करते हुए कि शैतान ईर्ष्या से नहीं बल्कि अहंकार से गरि, वशिेष रूप से इसी ग्रंथ का उल्लेख करते हैं: 'पवत्रिशास्त्र ने सभी पापों की शुरुआत को अहंकार के रूप में परभिाषति कयिा है, यह कहते हुए: "*सभी पापों की शुरुआत अहंकार* है"' (De Genesi ad lit., XI, c. 14; तुलना करें De Civitate Dei, XIV, c. 13)।

[1196] सक्रामेंटों के लिए भजन, पुस्तक VI, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, IV, 237 में। तुलना करें टप्पिणयिाँ 1186 और 1189।

[1197] ओरैट. डी वर्जनिटि. इन ओप. वॉल. I, पृ. 824, एड. कोमेल.

[1198] पत्र ८४।

[1199] De coll. serm. IV.

[1200] *ओरजिन,* यहेजकेल पर प्रवचन IX, 2; *बेसलि द ग्रेट,* *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स* में यशायाह के अध्याय 2 पर, खंड VI, पृ. 116–118, — और यशायाह के अध्याय 10 पर, वही, पृ. 341; *क्रसिोस्टोम,* उत्पत्ति पर होमीली XXII (ओपी., खंड II, पृ. 216); *अलेक्जेंड्रयिा के सरिलि,* एंट्रॉपोमॉर्फसि्टों के वरिुद्ध, अध्याय 17; *थयिोडोरेट और जेरोम (*देखें ऊपर टप्पिणी 1194); *ऑगस्टीन* (— नोट 1195); *जॉन ऑफ़ डेमास्कस,* एक्सैक्ट एक्सपोज़िशन ऑफ़ द ऑर्थोडॉक्स फेथ, बुक II, चैप्टर 4; *कैसयिन,* कॉलि. VIII, पृ. 20, 21; *डेमेट्रयिस ऑफ़ रोस्टोव,* कलेक्टडि वर्क्स, पार्ट I, पृ. 56.

[1201] *अलेक्जेंड्रयिा के सरिलि,* जॉन पर भाष्य, पुस्तक V, पृ. 507, पेरसि 1638 संस्करण।

[1202] *इसडिोरो,* *सर्वोच्च भलाई पर*, 1, अध्याय 12.

[1203] *लैक्टैंशयिस,* *डविाइन इंस्टट्यिूट्स*, पुस्तक II, अध्याय 8।

[1204] *ग्रेगरी द ग्रेट,* *मॉरल.*, II, अध्याय 17.

[1205] *जस्टनि,* *अपोलॉजी*, 1, 28; II, 8; *टेटयिन,* *एड ग्रीक.* XIV, XV; *आइरेनयिस,* 1, 10; *टर्टुलयिन,* *एडवर्सस मार्शयिोनेम*, II, 10; *ओरजिन,* *एपस्टिल टू फैबयिन*, n. 6 (सं. *डी ला रू* खंड 1, पृ. 5); *हलिारयिन,* भजन संहति CXLVIII पर टीका, टप्पिणी 7; *ऑगस्टीन,* *दे सवितिाटे देई* XXI, 17; *जेरोम,* *एडवर्सस रूफनिस*, I, टी. II, भाग II, पृ. 379, सं. मार्ट.

परिणामस्वरूप शरीर की सभी प्रलोभनों से मुक्त, यदि वे गिरे, तो वे केवल अपनी इच्छा के जानबूझकर निर्णय और बुराई की ओर शुद्ध प्रवृत्ति के कारण गिरे;[1206] और इसके अलावा, वे ठीक-ठीक स्वयं ईश्वर के विरुद्ध एक अवज्ञाकारी विद्रोह के कारण गिरे, एक ऐसा विद्रोह जो जिद्दी और उग्र था।[1207] "पतनशील स्वर्गदूत," हमारे पवित्र पिता ने कहा, "इतने *कटु* हो गए हैं कि उनके लिए पश्चाताप करना पूरी तरह असंभव हो गया है।"[1208]

5) क्या ईश्वर ने उन्हें पश्चाताप के लिए समय दिया, या जैसे ही वे गिरे, उन्हें तुरंत दंडित कर दिया? कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि उन्होंने उन्हें समय दिया,[1209] और केवल तब, जब इन अहंकारी आत्माओं ने ईश्वर की दया का लाभ उठाने से इनकार कर दिया, तब उन्हें स्वर्ग से नीचे फेंका गया और, वास्तव में, *गिरिया* या *फेंका गया*: यह पतन (ἔκπτωσις) उनके लिए पूर्ण मृत्यु है, जिसके बाद पश्चाताप की कोई गुंजाइश नहीं रहती, ठीक वैसे ही जैसे हमारी शारीरिक मृत्यु के बाद हमारे लिए नहीं रहती।[1210] लेकिन नेमेसियस लिखते हैं, 'पतन से पहले (यानी स्वर्ग से)' उन्हें क्षमा का अवसर प्रदान किया गया था, ठीक वैसे ही जैसे जीवित लोगों को मिलता है। और चूंकि उन्होंने इसका उपयोग नहीं किया, इसलिए उन्हें न्यायसंगत रूप से एक उपयुक्त, शाश्वत और अपरिवर्तनीय निदा के अधीन किया गया।"[1211] सेंट बेसिल द ग्रेट ने सुझाव दिया कि, स्वर्गदूतों के पतन के बाद भी, उनके लिए पश्चाताप और शुद्धिकरण अभी भी संभव था, जब तक कि शैतान ने मनुष्य को प्रलोभित नहीं किया। "शायद," पवित्र पिता तर्क देते हैं, "मनुष्य की सृष्टि से भी पहले, शैतान के लिए भी पश्चाताप की कुछ गुंजाइश बची हुई थी। और यह अहंकार, चाहे पीड़ा कितनी भी गहरी क्यों न रही हो, फिर भी पश्चाताप के माध्यम से अपने भीतर की पीड़ा को ठीक करके अपने मूल स्वरूप में लौट सकता था। लेकिन जैसे ही संसार की सृष्टि, एडेन के बगीचे का रोपण, बगीचे में मनुष्य, ईश्वर की आज्ञा, शैतान की ईर्ष्या, और उत्तम प्राणी की हत्या घटित हुई, उस समय से शैतान के लिए पश्चाताप की कोई गुंजाइश नहीं बची। क्योंकि यदि एसाव ने अपना जन्मसिद्ध अधिकार बेचकर पश्चाताप का कोई मार्ग नहीं पाया, तो क्या उस के लिए पश्चाताप की कोई गुंजाइश बची है जिसने पहले मनुष्य को मार डाला और उसके द्वारा मृत्यु को लाया? हालाँकि, यह कहा जाता है कि किसी घाव से निकले मानव रक्त से कपड़ों पर लगा दाग बिल्कुल भी नहीं धुल सकता, बल्कि खून से हुई रंगत बदली कपड़े के साथ ही पुरानी पड़ती जाती है। इसलिए, शैतान के लिए अपने ऊपर से खून का दाग धोना और शुद्ध होना असंभव है।"[1212]

§ 69. दुष्ट आत्माओं का स्वभाव, उनकी संख्या और पदक्रम

1) चूँकि पतित आत्माएँ अपने पतन से पहले स्वर्गदूत थीं, इसलिए स्वाभाविक रूप से यह निष्कर्ष निकलता है कि, अपनी प्रकृति के अनुसार, वे स्वर्गदूतों की तरह, अदेह आत्माएँ हैं—सीमित होने के बावजूद श्रेष्ठ मानवीय आत्माएँ। पवित्र धर्मग्रंथ, वास्तव में, और—

(a) वह उन्हें आत्माएँ या अशुद्ध आत्माएँ कहता है। सुसमाचारकार कहता है कि *बाद में, कई जो आत्माओं से ग्रस्त थे, उन्हें उसके* (यीशु मसीह) *पास लाया गया, और उसने एक ही वचन से आत्माओं को निकाल दिया और सभी बीमारों को चंगा किया* (मत्ती 8:16)। और आगे: *'और उसने अपने बारह चेलों को पास बुलाकर, उन्हें अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार दिया, कि वे उन्हें निकाल सकें'* (10:1)। इसी प्रकार, जब सत्तर शिष्य आनंदित होकर उनके पास लौटे, तो उन्होंने कहा: *'हे प्रभु, दुष्टात्माएँ भी तेरे नाम से हमारे वश में हो जाती हैं।'* उन्होंने कहा: *'तथापि इस बात पर आनन्द मत करो कि आत्माएँ तुम्हारे वश में हो जाती हैं, बल्कि इस बात पर आनन्द करो कि तुम्हारे नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं* (लूका 10:17, 20; तुलना करें मत्ती 12:43–45; मरकुस 9:20; लूका 11:24; इफिसियों 2:2).

ख) वह उन्हें मन और इच्छा का श्रेय देते हैं। प्रेरित पौलुस, एक अंश में, ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों को चेतावनी देते हैं: *'कि कहीं शैतान हम पर हावी न हो जाए, क्योंकि हम उसकी युक्तियों* (noēmata) *से अनभिज्ञ नहीं हैं* (2 कुरिन्थियों 2:11); जबकि एक अन्य स्थान पर वह यह आशा व्यक्त करते हैं कि जो लोग मसीह की सच्चाई से भटक

1206 *नेमेस.* *डे होमनि. ओपिफ.* c. 1; *कैसियन.* *कोल.* IV, 14; *ग्रेगरी ऑफ़ निस्सा,* *इन जॉब.* IX, 50, n. 76; *जॉन ऑफ़ डेमास्कस,* *एक्जैक्ट एक्सपोज़िशन ऑफ़ द ऑर्थोडॉक्स फेथ* II, अध्याय 3.

1207 *ऑगस्टीन,* *De Civitate Dei*, XIV, 27; *In Epist. ad Galat.*, n. 24; देखें टिप्पणियाँ 1104–1105।

1208 केलीन क्रॉनिकल, पृ. 12.

1209 नेमेसियस उनका उल्लेख करते हैं (De hom. opific., c. 1)।

1210 *जॉन ऑफ़ डेमास्कस,* सटीक व्याख्यान ऑफ़ द ऑर्थोडॉक्स फेथ, पुस्तक II, अध्याय 4, पृ. 59.

1211 *De hom. opific.* c. 1.

1212 यशायाह की पुस्तक के अध्याय 14 पर भाष्य, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, VI, 397–398 में।

गए हैं, *वे शैतान के जाल से मुक्त हो जाएँ, जिसने उन्हें अपनी इच्छा* (θέλημα) *के कैदी बना लिया है* (2 तीमु. 2:26; तुलना करें यूहन्ना 8:44; याकूब 2:19; 3:15)।

ग) यह निष्कर्ष निकालने का आधार प्रदान करता है कि वे किसी भी भौतिकता या देहधारीपन से रहित हैं। ये आधार इस प्रकार हैं:

(क) आंशिक रूप से, यह तथ्य कि उन्हें 'आत्मा' कहा जाता है, और परमेश्वर के वचन में पाई जाने वाली आत्मा की सामान्य अवधारणा, अर्थात् कि *एक आत्मा में न तो मांस होता है और न ही हड्डियाँ* (लूका 24:39);

बीबी) सुसमाचार में उल्लिखित उदाहरण जो दिखाते हैं कि कई दुष्टात्मा एक ही व्यक्ति पर एक साथ अधिकार कर सकती हैं; उदाहरण के लिए, उद्धारकर्ता ने मरियम मग्दलीनी से *सात दुष्टात्मा* निकाल दीं (मरकुस 16:9); एक दूसरे व्यक्ति में उनकी *एक* पूरी *सेना* थी, इसलिए जब वे उस व्यक्ति से निकलकर सूअरों में प्रवेश कर गए, तो पूरा *झुंड* झील में कूद गया (लूका 8:30, 33);

(cc) अंत में, पवित्र प्रेरित पौलुस के स्पष्ट शब्द: 'क्योंकि *हमारा संग्राम मनुष्यों से नहीं, परन्तु हाकिमों और अधिकारों और इस संसार के अंधकार के हाकिमों और आकाशी कुरसियों में बुराई की आत्मिक सेनाओं से है* (इफिसियों 6:12)।

d) वह उन्हें मनुष्य से शक्ति में श्रेष्ठ, फिर भी सीमित प्राणी के रूप में प्रस्तुत करता है। यह, सबसे पहले, शैतान के कार्यों से स्पष्ट है, जब उसने परमेश्वर की अनुमति से, धर्मी अय्यूब (अय्यूब, अध्याय 1, 2) को, और बाद में स्वयं उद्धारकर्ता मसीह (मत्ती 4:1–11) को प्रलोभित किया; दूसरे, उस आज्ञा से जो प्रेरित ने ईसाइयों को आध्यात्मिक युद्ध के संबंध में दी है: *'हे मेरे भाइयो, प्रभु में और उसकी सामर्थ्य की शक्ति में दृढ़ हो जाओ। परमेश्वर का सम्पूर्ण हथियार पहिन लो, ताकि तुम शैतान की युक्तियों के विरुद्ध खड़े हो सको* (इफिसियों 6:10–13; तुलना करें 1 पतरस 5:8)। अंत में, उसी प्रेरित के प्रतिमिसीह के विवरण से यह स्पष्ट है, *जिसका आगमन शैतान के काम द्वारा, सभी शक्ति और झूठे चिह्नों और अद्भुत कार्यों के साथ होगा* (2 थिस्स. 2:9), *जिसे प्रभु यीशु अपने मुंह के निश्वास से नष्ट कर देंगे और अपने आगमन की उपस्थिति से भस्म कर देंगे* (8).

चर्च के प्राचीन शिक्षकों में, यद्यपि कुछ ने दानवों को, स्वर्गदूतों की तरह, सूक्ष्म शरीरों—[1213] —वाला माना—फिर भी बहुमत ने दुष्ट आत्माओं को, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने अच्छे आत्माओं को, अदेह आत्माओं के रूप में पहचाना। उदाहरण के लिए—

a) *संत बेसिल द ग्रेट* लिखते हैं: 'शैतान का स्वभाव निराकार है, प्रेरित के शब्दों के अनुसार, जिन्होंने कहा: "क्योंकि *हमारा संग्राम शरीर और रक्त से नहीं, बल्कि... स्वर्गीय ठिकानों में दुष्टात्माओं से है*";'[1214]

b) *संत एपिफेनियस* एक राक्षस को 'एक अशुद्ध और अदेह आत्मा' के रूप में संदर्भित करते हैं;[1215]

c) *संत जॉन क्रिसोस्टोम* राक्षसों को 'अदेह शक्तियों' के रूप में संदर्भित करते हैं; [1216]

d) *यूसेबियस* उन्हें 'अदृश्य और अमूर्त दुश्मन' के रूप में संदर्भित करते हैं;[1217]

e) *संत ग्रेगरी द ग्रेट*, यह प्रश्न पूछे जाने पर कि क्या पतित आत्माएं देहधारी हैं या अदेह, पूछते हैं: 'कौन सा विवेकशील व्यक्ति कहेगा कि आत्माएं देहधारी हैं?'[1218] और अन्यत्र स्वर्गदूतों और राक्षसों को 'एक आध्यात्मिक स्वभाव, जो दो भागों, आत्मा और शरीर से मिलकर नहीं बना है' के रूप में संदर्भित करते हैं;[1219]

e) *धन्य थियोडोरेट* निर्देश देते हैं: 'जब हम पवित्र धर्मग्रंथ में सुनते हैं कि *परमेश्वर के पुत्रों ने मनुष्यों की बेटियों को देखा और उन्हें अपनी पत्नियाँ बना लिया* (उत्पत्ति 6:2), तो हमें इसके लिए (पतित) स्वर्गदूतों को दोष नहीं देना चाहिए, क्योंकि उनके पास बिल्कुल भी शरीर नहीं हैं;'[1220]

[1213] *टाटियन,* ग्रीकों के विरुद्ध, XII; *ओरिजिन,* सेल्सस के विरुद्ध, IV, 32; VIII, 35.

[1214] ईश्वर बुराई का कारण नहीं है, इस तथ्य पर प्रवचन IX, *पवित्र पिताओं के कार्य*, VIII, 161 में।

[1215] हैरेस. XXVI, n. 3: πνεύμα ἀκάθαρτον καί ἀσώματον.

[1216] Homil. LXXXVIII, in Opp. खंड V, पृ. 604: ἀσωμάτους δυνάμεις.

[1217] Demonstr. Evang. VIII: … अदृश्य और बोधगम्य शत्रुओं के …

[1218] संवाद IV, पृ. 29.

[1219] नैतिक. II, पृ. 5.

[1220] Divin. decret. epit. c. VII, in *Hrist. Chten.* 1844, IV, 207. Cf. note 1194.

(g) *सेंट जॉन ऑफ़ डेमास्कस* कहते हैं: "कि राक्षस अदेह हैं, यह सभी को ज्ञात है, यहाँ तक कि उन लोगों को भी जिनकी मानसिक दृष्टि धुंधली है," अर्थात्, मूर्तिपूजकों को।[1221] और यह विचार कि दुष्ट आत्माएँ मानव आत्मा से प्राकृतिक शक्ति में श्रेष्ठ हैं, जबकि साथ ही सीमित भी हैं, यह पादरियों की इस शिक्षा से स्वाभाविक रूप से follows कि, अपने पतन से पहले, राक्षसों को स्वर्गदूतों में गिना जाता था, और उनका नेता, शैतान, यहाँ तक कि उच्चतम-श्रेणी की आत्माओं में से एक था; इसी तरह, कि दुष्ट आत्माएँ ईश्वर की अनुमति के अलावा दुनिया में कुछ भी नहीं कर सकतीं।[1222]

2) पवित्र शास्त्र गिरे हुए आत्माओं की संख्या निर्दिष्ट नहीं करता, लेकिन जब यह दानवों और अशुद्ध आत्माओं के बारे में बोलता है — बहुवचन में (लूका 10:17, 20; इफिसियों 6:12 आदि) गवाही देते हैं कि गादारा के प्रदेश में उद्धारकर्ता ने एक ही मनुष्य से कई राक्षसों को निकाला—*एक सेना* (लूका 8:30)—और उद्धारकर्ता का कथन प्रस्तुत करते हैं: *'यदि शैतान अपने ही विरुद्ध विभाजित हो जाए, तो उसकी राजशाही कैसे टिक सकती है?'* (लूका 11:18)। इसका अर्थ यह है कि अशुद्ध आत्माएँ एक संपूर्ण राज्य बनाती हैं। कलीसिया के कुछ शिक्षकों ने, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के शब्दों के आधार पर: *'उसकी पूँछ ने स्वर्ग के एक तिहाई तारों को झाड़ दिया* (प्रकाशितवाक्य 12:4), यह अनुमान लगाया कि शैतान ने स्वदूतों की दुनिया का एक तिहाई हिस्सा अपने साथ ले गया था।[1223] लेकिन अन्य, बहुमत, इस विचार पर कायम रहे कि 'उन्हें बाहर फेंक दिया गया; वे उसका अनुसरण करने लगे, और उसके साथ-साथ उसके अधीन असंख्य आत्माओं की भीड़ भी गिर पड़ी' ([1224]), यह बताए बिना कि वे ठीक कितनी थीं।

3) क्या पतित आत्माओं में कोई भेद या पदानुक्रम है? ऐसा मानना ही होगा। क्योंकि उद्धारकर्ता एक अशुद्ध आत्मा का भी उल्लेख करते हैं, जो एक मनुष्य से निकलकर बाद में *उससे भी अधिक दुष्ट* सात अन्य *आत्माओं को* उसके भीतर ले आता है (लूका 11:26), *बीलज़ेबूब, राक्षसों के राजकुमार* (मत्ती 12:24; मरकुस 3:2; लूका 11:15, 18), *शैतान और उसके स्वर्गदूतों* (मत्ती 25:41); और पवित्र प्रेरित उनमें *इस युग के अंधकार के प्रधानताओं, शक्तियों और हाकिमों के* बीच अंतर करते हैं (कुलुस्सियों 2:15; एफिसियों 6:12), अर्थात्, वह उन्हें अन्य बातों के अलावा, स्वदूतों के क्षेत्र के विभिन्न पदों को दर्शाने के लिए उपयोग किए जाने वाले नामों से ही बुलाते हैं। तो गिरे, दुष्ट आत्माओं के उनके रैंकों और रैंकों के बीच ऐसा अंतर किस पर आधारित है? चर्च के एक पिता का मानना है कि यह या तो उस भेद और पदानुक्रम का अवशेष है जिसमें पतित आत्माएं अपने पतन से पहले एक-दूसरे के संबंध में खड़ी थीं, या यह उन अपेक्षाकृत अलग-अलग डिग्रीओं पर आधारित है जिन तक उनमें से प्रत्येक ने बुराई में उत्कृष्टता हासिल की है।[1225]

§ 70. निर्धारित सिद्धांत का नैतिक अनुप्रयोग

1) ईश्वर द्वारा रचित एक अदृश्य दुनिया है, शुद्ध आत्माओं की एक दुनिया, जो किसी भी शरीर में आच्छादित नहीं हैं; अत; यह अनुमान निकलता है कि एक आत्मा के लिए शारीरिक आवरण के बिना अस्तित्व में रहना संभव है, और यह कि उसके लिए भौतिक दुनिया के बाहर अस्तित्व में रहना संभव है। क्या यह विचार हमारी आत्मा की अमरता में हमारे विश्वास को मजबूत करे! मानव आत्मा, एक आत्मा के रूप में, शरीर से अलग होने के बाद भी अस्तित्व में रह सकती है, और परलोक में प्रवेश कर सकती है।

2) ईश्वर द्वारा रचित अमरित आत्माएँ, स्वभावतःही हमसे श्रेष्ठ हैं; वे हमारी अपनी आत्माओं की तुलना में अधिक पूर्णताओं और गुणों से युक्त हैं, और केवल इसी कारण से हम ईश्वर के स्वर्गदूतों का सम्मान करने के लिए बाध्य हैं, क्योंकि पूर्णता स्वाभाविक रूप से श्रद्धा को प्रेरित करती है, और यहाँ तक कि मनुष्यों के बीच भी हम स्वाभाविक रूप से उन लोगों का सम्मान करते हैं जो अपनी प्रतिभा और क्षमताओं में हमसे बेहतर हैं।

3) ईश्वर के दूत स्वभाव से सभी एक-दूसरे के बराबर हैं, लेकिन अपनी शक्तियों और सिद्धियों में भिन्न हैं; परिणामस्वरूप, उनमें से कुछ निम्न और कुछ उच्च हैं; कुछ अधीनस्थ हैं और कुछ अधिकार में हैं; ईश्वर द्वारा स्वयं स्थापित एक अपरिवर्तनीय पदानुक्रम है। तो हमारे बीच भी ऐसा ही होना चाहिए: यद्यपि हम सभी स्वभाव से एक हैं, फिर

[1221] इन डॉर्मिट. मारियाए वर्ज. होमिल. II, नं. 15, ओप. खंड II, पृ. 877, सं. *ले क्वीन.*

[1222] ऊपर टिप्पणियाँ 1185–1189 देखें।

[1223] देखें *सेंट डेमेट्रियस ऑफ रोस्टोव,* क्रॉनिकल 1, 12।

[1224] *जॉन ऑफ़ डेमास्कस,* सच्चे विश्वास की सटीक व्याख्या, पुस्तक II, अध्याय 4।

[1225] *कैसियन,* कोल. VIII, अध्याय 8.

भी सृष्टकिर्ता की इच्छा से वभिन्नि क्षमताओं और गुणों के द्वारा हम एक-दूसरे से अलग हैं; और स्वाभावकि रूप से हमारे बीच कुछ नीच और कुछ ऊँच, कुछ अधीनस्थ और कुछ अधकिार रखने वाले होने चाहएि, और हमारे समाजों में स्वयं परमेश्वर व्यवस्था और पदक्रम स्थापति करते हैं, अपने अभषिति लोगों को सहिासन पर बठिाते हैं (नीतवचिन 8:15), सभी नम्नि अधकिारों को प्रदान करता है (रोमयिों 13:1) और प्रत्येक मानव को उनकी अपनी सेवा और स्थान प्रदान करता है।

४) परमेश्वर द्वारा रचति सबसे उच्च और सबसे सद्धि आत्माओं में से एक अपने पद पर बने रहने में असफल रहा, अपने सृष्टकिर्ता के वरिुद्ध वद्रिोह कर गया, ने स्वयं को उसके समकक्ष समझा, और अपने साथ कई लोगों को वनिाश की खाई में ले गया — सभी तर्कशील प्राणयिों के लएि यह एक सबक है कि सर्वशक्तमिान की इच्छा का वरिोध करना, उस व्यवस्था और वन्यिास के वद्रिोह करना जो वह स्वयं स्वर्ग और पृथ्वी पर स्थापति करते हैं, कतिना खतरनाक है, क्योंकि वह संसार का शासन करते हैं!

5) जसि पाप के कारण पतति आत्माएँ गरिीं, वह अहंकार था — अतःआइए हम स्वयं को इस भयानक पाप से बचाने का तरीका सीखें, जो सभी अन्य अधर्मों का जनक है; आइए हम यह सीखें कि अपने सभी लाभों, यदि हमें कोई मलिे हों, का श्रेय स्वयं को न दें, बल्कि ईश्वर—हमारे स्रष्टा—को दें, जनिसे *हर उत्तम वरदान* हम तक पहुँचता है (याकूब 1:17)—और यह दृढ़ता से मन में रखें कि, उनकी कृपापूर्ण सहायता के बनिा, हम वास्तव में कुछ भी अच्छा और उत्तम न तो सोच सकते हैं और न ही पूरा कर सकते हैं।

२. भौतकि जगत पर

§71. चर्च की शकि्षा और धर्मसद्धिान्त पर झूठे वचिारों का संक्षप्ति अवलोकन

ईश्वर से भौतकि जगत की उत्पत्ति के संबंध में, ऑर्थोडॉक्स चर्च नम्नि लखिति शकि्षा देती है: "आरंभ में, ईश्वर ने शून्य से स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की। पृथ्वी आकारहीन और सूनी थी। फरि ईश्वर ने क्रमशः सृजन कयिा: संसार के पहले दनि—प्रकाश; दूसरे दनि—गगनमंडल या दृश्यमान स्वर्ग; तीसरे दनि—पृथ्वी पर जल, सूखी भूमि और पौधे; चौथे दनि—सूर्य, चंद्रमा और तारे; पांचवें दनि—मछलयिाँ और पक्षी; छठे दनि—सूखी भूमि पर रहने वाले चार पैरों वाले जानवर..." (पहले अनुच्छेद पर वस्तिारति ईसाई धर्मशकि्षा)।

इस शकि्षा के संबंध में, जो पूरी तरह से पवत्रि वंशावलीकार मूसा से ली गई है, तीन त्रुटपिूर्ण वचिार रहे हैं—और वशिेष रूप से अब हैं। कुछ लोग छह दनिों में सृष्टि के मूसा के वृत्तांत को इतहिास के रूप में स्वीकार नहीं करते हैं, बल्कि इसे रूपकात्मक, रहस्यमय अर्थ में समझने का प्रयास करते हैं।[1226] अन्य लोग, इस वृत्तांत को इतहिास के रूप में स्वीकार करते हुए, इसे मनमाने ढंग से व्याख्यायति करते हैं, या इस बात से हैरान हैं कि मूसा वास्तव में यहाँ कसि बारे में बात कर रहे हैं: क्या यह पूरी दुनयिा की सृष्टि है, या केवल पृथ्वी की सृष्टि; और इसके अलावा, क्या यह पृथ्वी की मूल उत्पत्ति है, या केवल इसका रूपांतरण, और इसी तरह।[1227] अंत में, एक तीसरा समूह, इस ववरिण को एक ऐतहिासकि वृत्तांत मानते हुए भी, यह दावा करता है कि इसमें कई असंगतताएँ हैं और यह प्राकृतकि वज्ञिानों के नष्किर्षों का खंडन करता है, और इसलएि यह वश्विसनीयता का पात्र नहीं है।[1228] ये त्रुटपिूर्ण दृष्टकिोण स्पष्ट रूप से उन दृष्टकिोणों को इंगति करते हैं जनिसे पदार्थगत जगत की उत्पत्ति के संबंध में ऑर्थोडॉक्स चर्च द्वारा समर्थति प्रकटति शकि्षा की समीक्षा की जानी चाहएि।

[1226] *क्लेमेंट ऑफ एलेक्जेंड्रयिा,* *स्ट्रोमाटा*, VI, 16; *ओरजिन,* *ऑन द प्रसिपिल्स*, III, 5; *ऑगस्टीन,* *ऑन जेनेससि अकॉर्डगि टू द लेटर*, IV, 22; *ऑन जेनेससि अगेंस्ट मनीकेइज्म*, II, 3; *प्रोकॉपयिस,* *कमेंटरी ऑन द ऑक्टेच्यूक*, जेनेससि पर टप्पिणी, अध्याय 1. Conf. *Natal. Alex.* चर्च का इतहिास, खंड 1, प्रबंध 1, अनुच्छेद 8, प्रस्ताव 1।

[1227] देखें *एक्स्ट्रमन,* *हैंडबुक डेर क्रसि्टलीचर ग्लाउबेंसलेह्रे*, II, 11।

[1228] *रोजेनमुलर,* स्कॉलयिा ऑन द ओल्ड टेस्टामेंट, खंड 1, अध्याय 1, उत्पत्ति, लेइपज़गि 1821।

§72. *मोशे का भौतिक जगत की उत्पत्ति का विवरण एक कहानी है*

हम मोशे के भौतिक जगत की उत्पत्ति के वृत्तांत को इतिहास के रूप में स्वीकार करने के लिए बाध्य हैं क्योंकि —

1. मूसा स्वयं इसे एक ऐतिहासिक विवरण मानते थे। उन्होंने इस वृत्तांत को अपनी ऐतिहासिक पुस्तक की नींव के रूप में बिल्कुल शुरुआत में रखा, जिसमें उनका इरादा इस्राएलियों को दुनिया और मानवता के स्रष्टा के रूप में ईश्वर की सच्ची और सटीक अवधारणाएँ पहुँचाना था; परिणामस्वरूप, यदि उन्होंने यहाँ कोई रहस्यमय अर्थ छिपाया होता जो किसी के लिए भी समझ से परे हो, तो उन्होंने अपने ही इरादे के विपरीत कार्य किया होता। सबसे बढ़कर, इसी आधार पर मूसा ने इस्राएलियों को दिया गया सब्त का विधान बनाया; इसे अत्यंत स्पष्टता से रखते हुए, वह कहते हैं, उन्होंने छह दिनों की सृष्टि पर अपने विचार प्रकट किए। *'सातों दिन का सब्त याद रखना, उसे पवित्र रखना; छह दिन परिश्रम करके अपना सब काम करना, परन्तु सातवाँ दिन तेरे परमेश्वर के लिये सब्त का दिन है: क्योंकि छह दिन में यहोवा ने आकाश, पृथ्वी, समुद्र और उन में जो कुछ भी है, सब कुछ बनाया, और सातवें दिन विश्राम किया; ... इसलिए यहोवा ने सब्त के दिन को आशीष दी और उसे पवित्र किया* (निर्ग. 20:8–11)। और एक अन्य अंश में: *'इस्राएलियों को सब्त का पालन करना चाहिए, और अपनी पीढ़ियों में सब्त को एक अनंतकालिक वाचा के रूप में मानना चाहिए; ... क्योंकि छह दिनों में यहोवा ने आकाश और पृथ्वी को बनाया, और सातवें दिन वह विश्राम करने लगा और सुस्त पड़ा रहा'* (निर्गमन 31:16–17)। मोशे के वृत्तांत को ऐतिहासिक रूप में देखने का यह एकमात्र कारण ही हमारे उद्देश्य के लिए पूरी तरह से पर्याप्त है, भले ही कोई अन्य कारण न भी हो, क्योंकि इसमें कोई संदेह नहीं है कि किसी भी लेखक के शब्दों को ठीक उसी अर्थ में समझा जाना चाहिए जिसमें उसने स्वयं उन्हें समझा था।

२. अन्य पवित्र लेखकों ने मूसा के वृत्तांत को इतिहास माना। उदाहरण के लिए, मूसा अपने वृत्तांत में बताते हैं कि परमेश्वर ने अपने वचन से संसार की रचना की, और परमेश्वर का आत्मा आदिम, अभी तक अव्यक्त पदार्थ (उत्पत्ति 1:2) पर मंडरा रहा था — और भजनकार उद्घोषणा करता है: *'यहोवा के वचन से आकाश बने, और उन सब की सेना उसकी जीभ के साँस से* (भजन संहिता 32:6), और आगे: *'उसने कहा, और वह हो गया; उसने आज्ञा दी, और वह प्रगट हुआ* (9)। मूसा बताते हैं कि आरंभ में सृजित सभी पर अंधकार छाया हुआ था, और *परमेश्वर ने कहा: 'प्रकाश हो।' और प्रकाश हुआ* (3)—और पवित्र प्रेरित पौलुस इसे एक अंश में इस प्रकार व्यक्त करते हैं: *'परमेश्वर, जिसने अंधकार से प्रकाश को चमकने की आज्ञा दी, ने यीशु मसीह के मुख में परमेश्वर की महिमा के ज्ञान का प्रकाश देने के लिए हमारे हृदयों में चमक दी है* (2 कुरिन्थियों 4:6)... मोशे बताता है कि *उसने आकाशमण्डल के नीचे के जल को आकाशमण्डल के ऊपर के जल से अलग किया* (7): भजनकार भी आकाशमण्डल के ऊपर इन जलों का उल्लेख करता है, जब वह अपने सृष्टिकर्ता की महिमा करने के लिए परमेश्वर के विभिन्न कार्यों को बुलाते हुए कहता है: *हे आकाशों के आकाशो, उसकी स्तुति करो, और हे आकाशों के ऊपर के जलो* (भजन संहिता 148:4)। मोशे बताते हैं कि परमेश्वर ने स्वर्गीय पिंड—सूर्य, चंद्रमा और तारे—*को 'आकाशमंडल में प्रकाश देने के लिए [पृथ्वी को प्रकाश देने और] दिन और रात को अलग करने के लिए, और संकेतों, और ऋतुओं, और दिनों, और वर्षों के लिए' बनाया* (14)—और वही भजनकार उद्घोषणा करता है: *'उसने ऋतुओं के चिन्ह के लिए चंद्रमा को बनाया'* (भजन संहिता 103:19)। मोशे बताते हैं कि परमेश्वर ने छह दिनों में संसार की रचना की, और *सातवें दिन अपनी की हुई सभी कृत्यों से विश्राम किया* (उत्पत्ति 2:2), — और संत पौलुस लिखते हैं: *'परन्तु हम जिन्होंने विश्वास किया है, उस विश्राम में प्रवेश करते हैं, क्योंकि उसने कहा है: 'मैंने अपने क्रोध में शपथ खाई कि वे मेरी विश्राम-स्थली में प्रवेश नहीं करेंगे', यद्यपि उसकी सृष्टियाँ संसार की आरम्भ में ही पूरी हो चुकी थीं। क्योंकि सातवें दिन के विषय में कहीं भी यह नहीं लिखा है: 'और परमेश्वर ने सातवें दिन अपनी सारी सृष्टि से विश्राम किया* (इब्रानियों 4:3-4)।

3. चर्च के पवित्र पिताओं और शिक्षकों ने मूसा के वृत्तांत को ऐतिहासिक माना, अर्थात्: एंटिओक के थियोफिलस, हिप्पोलिटस, बेसिल द ग्रेट, जॉन क्रिसोस्टोम, अथेनासियस द ग्रेट, एम्ब्रोस, निस्सा के ग्रेगरी, एपिफेनियस, थियोडोरेट और अन्य।[1229] "सारी प्रकृति," उदाहरण के लिए, संत अथानासियस द ग्रेट कहते हैं,

---

[1229] *थियोफिलस,* ऑटोलिकस को पत्र, II, 12–18; *हिप्पोलिटस,* उत्पत्ति पर टीका, I, 6; *बेसिल द ग्रेट,* सृष्टि पर प्रवचन; *क्रिसोस्टोम,* उत्पत्ति पर धर्मोपदेश, III, n. 3; उपदेश 1, n. 3; *अथेनासियस,* एरियनों के विरुद्ध भाषण III; *एम्ब्रोस,* हेक्साएमरोन पर टीका; *ग्रेगरी ऑफ निस्सा,* हेक्साएमरोन पर भाष्य; *एपिफेनियस,* धर्मनिष्ठाओं पर, LXV, क्रमांक 4, 5; *थियोडोरेट,* उत्पत्ति पर प्रश्न, XXI, इन क्र. च., 1843, III, 353। तुलना करें टिप्पणी 1226।

"छह दिनों में बनाई गई थी: पहले दिन परमेश्वर ने प्रकाश बनाया; दूसरे दिन, आकाशमण्डल; तीसरे दिन, जल को एकत्र करके, उन्होंने सूखी भूमि बनाई; चौथे दिन, उन्होंने सूर्य, चंद्रमा और अन्य तारों को बनाया; पांचवें दिन, उन्होंने पानी में रहने वाले और हवा में उड़ने वाले जानवरों को उत्पन्न किया; छठे दिन, पृथ्वी पर चार-पांव वाले जीव; और अंत में, उन्होंने मनुष्य की रचना की।"

४. मूसा के वृत्तांत के ऐतिहासिक अर्थ से हटने का कोई कारण नहीं है, क्योंकि इस अर्थ में भी, जैसा कि हम देखेंगे, इसमें सत्य के विपरीत कुछ भी नहीं है और इसलिए यह दैवीय रूप से प्रेरित लेखक की गरिमा के अनुरूप है।

§73. छः दिनों में सृष्टि के मूसा के वृत्तांत का अर्थ

भौतिक जगत की उत्पत्ति के बारे में मूसा के वृत्तांत के अर्थ पर अधिक बारीकी से विचार करने पर, हम यह ध्यान देने से नहीं बच सकते कि—

1. मूसा सृष्टि के दो मुख्य प्रकारों के बीच अंतर करते हैं, जो एक के बाद एक हुए। शब्द के सच्चे अर्थ में *पहली* सृष्टि बिल्कुल आरंभ में हुई, जब सृष्टिकर्ता ने शून्य से सभी जीवित प्राणियों को उत्पन्न किया: *'आरंभ में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि* की' (उत्पत्ति 1:1), जिससे संसार की वह मूलभूत सत्ता अस्तित्व में आई, जिसमें स्वयं में इसकी सभी प्राणियों की शुरुआत या बीज निहित थे। इसी अर्थ में सिराख के बुद्धिमान पुत्र ने कहा: *'जो अनन्तकाल तक जीवित रहता है, उसने सभी चीजों को बनाया'* (सिराख 18:1), — और कलीसिया के शिक्षकों ने भी कहा: 'यह ज्ञात है कि सृजित वस्तुओं में से कोई भी दूसरों से पहले अस्तित्व में नहीं था, बल्कि सभी प्रकार के प्राणी एक साथ, बिल्कुल एक ही क्षण में (1230) अस्तित्व में आए; और, यह स्पष्ट रूप से कहने की इच्छा से कि परमेश्वर ने सब कुछ एक साथ (ἀθρόως πάντα) बनाया, वंशावली लेखक ने कहा: *'आरंभ में,* या संपूर्ण में' (ἐν κεώαλαίω), *ईश्वर ने स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की।* क्योंकि दोनों शब्दों का अर्थ एक ही है: 'आरंभ' और 'संपूर्ण' एक ही बात व्यक्त करते *हैं—'एक* साथ'।"[1231] जहाँ तक *दूसरी* सृष्टि का प्रश्न है—पूर्व-अस्तित्व वाली, आदिम और अभी तक आकारहीन पदार्थ से हुई सृष्टि, जो छह दिनों में हुई—निश्चित रूप से यही सृष्टि थी जिसे सुलैमान ने ध्यान में रखा था जब उसने लिखा कि परमेश्वर के *सर्वशक्तिमान हाथ ने आकारहीन पदार्थ से संसार की रचना की* (Wisdom 11:18), और पवित्र शहीद जस्टिन ने भी ऐसा ही किया जब उन्होंने सुलैमान के शब्दों को दोहराया: 'हम मानते हैं कि परमेश्वर ने आरंभ में सभी वस्तुओं को रूपहीन पदार्थ से सृजित किया, ἐξ ἀμόρφου ὑλης।'[1232] चर्च के प्राचीन शिक्षकों ने इन दो प्रकार की सृष्टि के बीच अंतर किया:

a) *हिप्पोलीटस:* 'पहले दिन, परमेश्वर ने जो कुछ भी बनाया, वह शून्य से बनाया; लेकिन अन्य दिनों में उसने शून्य से नहीं बनाया, बल्कि पहले दिन बनाई गई चीज़ों से आकार दिया;'[1233]

ख) *टेटियन* (चर्च से उनके फूट से पहले): "यह ज्ञात है कि दुनिया की पूरी व्यवस्था, और उसमें मौजूद हर चीज़, पदार्थ से बनी है, लेकिन पदार्थ स्वयं ईश्वर द्वारा बनाया गया था;"[1234]

ग) *ऑगस्टीन:* "प्रारंभ में, एक मिश्रित और अव्यवस्थित पदार्थ बनाया गया था, जिससे बाद में जो कुछ भी प्रकट हुआ—विभाजित और व्यवस्थित—उभरकर आया।" मेरा मानना है कि यूनानी इस पदार्थ को 'अराजकता' (chaos) कहते हैं, जैसा कि हम कहीं और पढ़ते हैं: 'आपने *इस दुनिया को रूपहीन पदार्थ से* बनाया' (Wisdom 11:18), या, अन्य पांडुलिपियों के अनुसार, *'अदृश्य पदार्थ* से'।

इस आकारहीन पदार्थ, जिसे ईश्वर ने शून्य से बनाया, को स्वर्ग और पृथ्वी कहा जाता है; और कहा गया है: *'आरंभ में ईश्वर ने स्वर्ग और पृथ्वी की सृष्टि* की'—इसलिए नहीं कि वे वास्तव में उसी क्षण अस्तित्व में आए, बल्कि इसलिए कि वे अस्तित्व में आने में सक्षम थे; जैसे ही हम एक पेड़ के बीज को देखकर कहें कि यहाँ जड़ें, ताकत, तना, फल और पत्तियाँ हैं; हम यह बात, बेशक, इसलिए नहीं कहेंगे कि ये सभी चीजें पहले से मौजूद हैं, बल्कि इसलिए कहेंगे कि ये

1230 *एथान.* कॉन्ट्रा एरियन. ओरेट. III.

1231 *ग्रेगरी ऑफ़ निसा,* हेक्सामेरोन पर भाष्य, खंड 1, पृ. 7, सं. *मोरेल।*

1232 *जस्टिन,* *एपोलॉजेटिकस*, 1, अध्याय 10.

1233 *हिप्पोलीटस,* उत्पत्ति पर भाष्य 1, 6।

1234 *टैटियन,* ग्रीकों को भाषण, अध्याय 7।

सभी चीजें अस्तित्व में आने वाली हैं।"[1235] सेंट जॉन क्राइसोस्टोम, हलिरी, एपफिनेयिस,[1236] एम्ब्रोस,[1237] सेवेरयिन, ग्रेगरी द ग्रेट और अन्य ने इसी प्रकार तर्क कयिा।[1238]

2. मूसा ने संपूर्ण भौतकि जगत (ब्रह्मांड उत्पत्त) की उत्पत्त का वर्णन कयिा है, न कि केवल पृथ्वी (भू-उत्पत्त) की। क्योंकि वह सबसे पहले कहते हैं कि ईश्वर ने *स्वर्ग और पृथ्वी की* रचना की, अर्थात् संपूर्ण जगत की; फरि वह *प्रकाश की* सृष्ट, *आकाशमंडल की* सृष्ट और *स्वर्गीय* पंडिों—सूर्य, चंद्रमा और तारों—की सृष्ट का उल्लेख करते हैं। दूसरी ओर, यह स्पष्ट है कि मूसा मुख्य रूप से और वशिेष वस्तिार से पृथ्वी की उत्पत्त और उसके वभिन्नि नविासयिों का वर्णन करते हैं, जबकि वे स्वर्ग और खगोलीय पंडिों का उल्लेख केवल संक्षेप में करते हैं, जहाँ तक वे पृथ्वी से संबंधति हैं। इसीलिए, सृष्ट के तीसरे, पांचवें और छठे दनि के अपने ववरिण में, वह केवल उस बात का उल्लेख करते हैं जो परमेश्वर ने पृथ्वी पर बनाई, और इस बात का कोई उल्लेख नहीं करते कि उसी समय स्वर्ग में या खगोलीय पंडिों पर क्या बनाया गया था, हालांकि, पूरी संभावना है कि उन दनिों में सृजनात्मक शक्त का कार्य केवल पृथ्वी तक ही सीमति नहीं था।[1239] इसी कारण से, जब वे खगोलीय पंडिों की सृष्ट का वर्णन करते हैं, तो वे केवल पृथ्वी के संबंध में उनके वशिष्टि उद्देश्य का उल्लेख करते हैं, उन्हें नाम देते हैं, और उन्हें ऐसी गुण प्रदान करते हैं जो केवल पृथ्वी से ही दए और जोड़े जा सकते हैं।

3. मूसा ने संसार और पृथ्वी की मूल सृष्ट का वर्णन कयिा है, न कि उनके रूपांतरण का। क्योंकि वे लखिते हैं: *'आरंभ में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्ट की'*, अर्थात् उन्होंने उन्हें तब बनाया जब अभी तक कुछ भी नहीं था। इसके अलावा: *'और परमेश्वर ने कहा, "प्रकाश हो।" और प्रकाश हो गया... "एक फैला आकाश हो"... "आकाश के फैले आकाश में दीपक हों"...'*: ऐसे सभी वाक्यांश स्पष्ट रूप से अस्तित्वहीनता की एक पूर्ववर्ती अवस्था की पूर्वधारणा करते हैं। अंत में, वह अपने वृत्तांत को इन शब्दों के साथ समाप्त करते हैं: *'इस प्रकार आकाश और पृथ्वी और उनकी सारी सेना पूरी* हुई' (उत्पत्त 2:1); जसिका अर्थ है कि वे अब ही पूर्ण और समाप्त हुए हैं, और पहले अस्तित्व में नहीं थे। यह जोड़ना चाहए कि यहूदयिों और शुरुआती सदयिों के सभी ईसाइयों ने सर्वसम्मत से यह स्वीकार कयिा कि यहाँ मूसा दुनयिा और पृथ्वी की ईश्वर द्वारा सृष्ट का वर्णन कर रहे हैं, न कि किसी रूपांतरण का।

४. मूसा गवाही देते हैं कि परमेश्वर ने स्वयं, अपनी ही शक्त के द्वारा, न केवल *पहली* सृष्ट के समय, जब उन्होंने शून्य से सब कुछ अस्तित्व में लाया, बल्कि छह दनिों के दौरान भी, जब उन्होंने पहले से मौजूद पदार्थ से संसार के वभिन्नि भागों और जीवों को अस्तित्व में लाया। *और परमेश्वर ने कहा, 'प्रकाश हो।' और प्रकाश हुआ...; और परमेश्वर ने कहा, 'जल के बीच में एक आकाशमण्डल हो...' और ऐसा ही हुआ...; और परमेश्वर ने कहा, 'आकाश के नीचे का जल एक जगह इकट्ठा हो जाए, और सूखी भूम प्रकट हो।' और ऐसा ही हुआ...; और परमेश्वर ने कहा, 'पृथ्वी से वनस्पत नकिलने पाए...' और ऐसा ही हुआ...; और परमेश्वर ने कहा, 'आकाशमण्डल में दीपक हों...' और ऐसा ही हुआ...; और परमेश्वर ने कहा, 'जल जीव-जंतुओं से भर जाएं, और आकाशमंडल में पृथ्वी के ऊपर पक्षी उड़ें।' [और ऐसा ही हुआ।]...; और परमेश्वर ने कहा: 'पृथ्वी से जीवति प्राणी उनकी जातयिों के अनुसार नकिलें...' और ऐसा ही हुआ।* परणिामस्वरूप, दुनयिा और पृथ्वी के मूल नरि्माण की व्याख्या प्रकृत के बलों और नयिमों द्वारा करना अनुचति है; ये बल और नयिम दुनयिा में

[1235] *ऑगस्टीन,* *मनीकयिों के वरिुद्ध उत्पत्त पर*, 1, पृ. 5, 7.

[1236] *क्रसिोस्टोम,* उत्पत्त पर होमीलीज़, होमीली III, क्रमांक 1, 2; *हलिरी,* त्रमिूर्त पर, XII, अध्याय 40; *एपफिेनयिस,* संप्रदायों पर, LXV, क्रमांक 4, 5.

[1237] 'इसलिए परमेश्वर ने *पहले* सृजन कयिा, *और बाद में* व्यवस्थति कयिा, ताकि हम यह वशि्वास करें कि जसिने बनाया उसने भी सुशोभति कयिा, और जसिने सुशोभति कयिा उसने भी बनाया; कहीं ऐसा न हो कि हम सोचें कि एक ने सुशोभति कयिा जबकि दूसरे ने बनाया; बल्कि यह कि एक ही ने दोनों कार्य कए, *पहले* सृजन कयिा और *बाद में* व्यवस्थति कयिा' *(एम्ब्रोस,* नेहेम्याह 1 पर, अध्याय 7)।

[1238] *सेवेरयिन*। ओरेशन 1 ऑन द क्रएिशन ऑफ द वर्ल्ड, अध्याय 3; *मेथोडयिस* (इन *फोटनिस,* *ब्राइबलियिोथेका*, कोडेक्स CCXXIV); *ग्रेगरी द ग्रेट*, *मोरलटिए*, XXXII, 12, n. 16: 'चीजों का पदार्थ एक साथ बनाया गया था, लेकनि उनका रूप एक साथ नहीं बना था; और जो पदार्थ के माध्यम से एक साथ अस्तित्व में है, वह रूप के माध्यम से एक साथ प्रकट नहीं हुआ।'

[1239] "यह देखते हुए कि दूसरे और चौथे दनिों के वृत्तांत संपूर्ण ब्रह्मांड के सृजन में सृष्टा के कार्य का वर्णन करते हैं, और यह कि पृथ्वी इस संपूर्ण का सबसे छोटा हसि्सा है, यह नरि्धारति करना कठनि है कि सृजन का तीसरा दनि केवल इसी के लिए समर्पति था। कोई यह मान सकता है कि इस दनि, स्वर्ग में अन्य पंडिों ने, जो पृथ्वी के समान स्वभाव के हैं—अर्थात्, खगोलीय क्षेत्र के अंधेरे पंडिों ने—एक अधकि नश्चिति रूप प्राप्त कयिा जो उनके लिए वशिष्टि था; लेकनि चूँकि हम उनकी वर्तमान स्थति का ववरिण नहीं जानते हैं, इसलिए उनकी उत्पत्त के बारे में बात करना अनुचति होगा" (नोट्स ऑन द बुक ऑफ जेनेससि, पृ. 20–21, सेंट पीटर्सबर्ग, 1816)।

केवल तब काम करना शुरू हुए जब दुनिया ने अपनी पूर्ण अस्तित्व प्राप्त कर लिया था, और ये दुनिया को परमेश्वर द्वारा प्रदान किए गए थे। लेकिन जब परमेश्वर स्वयं स्वर्ग और पृथ्वी की सृष्टि कर रहे थे और अपनी सर्वशक्तिमान शक्ति से विभिन्न प्रकार के जीवों को उत्पन्न कर रहे थे, तो वे स्वयं किसी भी तरह से इनके अधीन नहीं थे। इस प्रकार, उन्होंने पहले मनुष्यों (और वास्तव में सभी स्थल-निवासी जानवरों) को सीधे परिपक्व अवस्था में बनाया, जबकि प्रकृति के शक्तियों और नियमों के अनुसार, पहले मनुष्यों के परिपक्व होने में कई वर्षों का जीवन लग जाता। ठीक उसी तरह, सर्वशक्तिमान एक ही दिन में, या एक ही क्षण में, पृथ्वी की संपूर्ण आंतरिक संरचना को, जैसा कि हम अब इसे देखते हैं, अस्तित्व में ला सकते थे, इसके सभी विविध स्तरों के साथ इसके पहाड़ों को बना सकते थे, समुद्रों को व्यवस्थित कर सकते थे, नदियाँ और अन्य विशेषताएँ; जबकि, यदि यह सब प्रकृति में वर्तमान में कार्यरत शक्तियों और नियमों के अनुसार पूरा किया जाना था, तो इसमें शायद न केवल सदियाँ बल्कि सहस्राब्दियाँ लग जातीं।

5. 'सृजन के छह दिन' शब्द से मूसा का तात्पर्य सामान्य दिनों से है। क्योंकि उनमें से प्रत्येक को साँझ और भोर *द्वारा* परिभाषित *किया गया है: 'और साँझ हुई, और भोर हुई—पहला दिन...'; 'और साँझ हुई, और भोर हुई—दूसरा दिन...',* और इसी तरह। इसके अलावा, जैसा कि हम पहले ही उल्लेख कर चुके हैं, इन छह दिनों के अनुसार, जिनमें परमेश्वर ने अपनी सारी कृतियाँ सृजित कीं, और जिनके अंत में उन्होंने विश्राम किया और सातवें दिन को पवित्र किया, वह इस्राएलियों को यह आज्ञा देने में सक्षम थे कि वे भी सप्ताह के छह दिन काम करें, और सातवें दिन, सब्बाथ, को अपने परमेश्वर यहोवा के लिए पवित्र रखें (निर्ग. 20:8–11; 31:16–17)।

6. मूसा ने संसार की छह-दिवसीय सृष्टि का वर्णन इस तरह किया है कि वह सभी के लिए समझ में आ सके—वह इसका वर्णन एक प्राकृतिक दार्शनिक के रूप में नहीं, बल्कि विश्वास के एक बुद्धिमान और ईश्वर-प्रकाशित शिक्षक के रूप में करते हैं।

इसलिए, यद्यपि वह केवल सत्य अवधारणाओं को संप्रेषित करता है, वह उन्हें इस तरह व्यक्त करता है जो सामान्य मानवीय समझ को आकर्षित करती हैं: वह सृष्टिकर्ता के उत्कृष्ट कार्यों के बारे में, जहाँ तक संभव हो, उनकी गरिमा के अनुरूप, फिर भी एक मूर्त और मानवीय तरीके से बात करता है; और वह भौतिक दुनिया की विभिन्न वस्तुओं को इस रूप में प्रस्तुत करता है जैसा वे एक अनभिज्ञ पर्यवेक्षक की आँखों को दिखाई देती हैं, न कि इस रूप में जैसा कि वैज्ञानिक उन्हें जानते हैं।

मूसा के छह-दिनों के सृजन के वृत्तांत के अर्थ के संबंध में इन अवलोकनों को प्रस्तुत करने के बाद, अब इसके विरुद्ध उठाए गए आपत्तियों को संबोधित करना उचित है।

§74. मूसा के वृत्तांत के विरुद्ध उठाए गए आपत्तियों का एक उत्तर

ये आपत्तियाँ इस प्रकार हैं:

1. "मोशे पहले दिन प्रकाश और चौथे दिन सूर्य की सृष्टि का उल्लेख करते हैं, जबकि प्रकाश सूर्य से निकलता है: अत;.." लेकिन —

क) मान लीजिए कि प्रकाश वास्तव में सूर्य और अन्य खगोलीय पिंडों से निकलने वाली पदार्थ का एक रूप है: ऐसा क्यों नहीं हो सकता कि ईश्वर ने पहले इस प्रकाश-वाहक पदार्थ को बनाया हो, और फिर, चौथे दिन, इसे स्थायी रूप से विशिष्ट पात्रों, अर्थात् दिव्य पिंडों में केंद्रित किया हो, ठीक वैसे ही जैसे पानी को उसके पात्रों से पहले बनाया गया था, और उसे तीसरे दिन पहले से ही उस सूखी भूमि से अलग कर दिया गया था जिसे उसने अब तक ढका हुआ था?

ख) हाल के समय में, एक और दृष्टिकोण उभरा है, जिसे विद्वानों द्वारा लगभग सार्वभौमिक रूप से स्वीकार किया गया है, अर्थात् कि प्रकाश सूर्य से निकलने वाली किरण नहीं है, बल्कि एक अत्यंत सूक्ष्म द्रव है जो पूरे अंतरिक्ष में फैला हुआ है, जो सूर्य और अन्य खगोलीय पिंडों से पूरी तरह स्वतंत्र है, जिन्हें केवल इसे कंपनशील गति में लाने और इस प्रकार इसे दृश्यमान बनाने की क्षमता प्राप्त है। यदि ऐसा है, तो यह पूछना भी अनावश्यक है कि क्या प्रकाश को खगोलीय पिंडों से पहले बनाया जा सकता था?

2. "मोशे कहते हैं कि पौधे भी सूर्य से पहले बनाए गए थे, जबकि वे सूर्य के बिना मौजूद नहीं रह सकते"... लेकिन —

(क) मूसा स्पष्ट रूप से कहते हैं कि पौधों को ईश्वर ने बनाया, और वे प्रकृति की शक्तियों और नियमों के माध्यम से अस्तित्व में नहीं आए। परिणामस्वरूप, भले ही यह सच हो कि पौधे अब सूर्य के प्रकाश के बिना मौजूद नहीं रह सकते,

इसका यह निष्कर्ष बिल्कुल नहीं निकाला जा सकता कि आरंभ में, वे ईश्वर के सर्वशक्तिमान वचन द्वारा सूर्य से पहले अस्तित्व में नहीं आ सकते थे। आजकल, प्रकृति के नियमों के अनुसार, पौधे एक बीज में जड़ पकड़ते हैं और धीरे-धीरे बढ़ते हैं, जबकि मूसा के विवरण से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि आरंभ में परमेश्वर ने उन्हें पहले से ही पूरी तरह से विकसित बनाया था (उत्पत्ति 1:12)।

ख) हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि, मूसा के अनुसार, पौधे सूर्य से पहले बनाए गए थे, लेकिन प्रकाश से पहले नहीं, जो पहले दिन से ही मौजूद था। परिणामस्वरूप, भले ही पौधों की सृष्टि के लिए प्रकाश आवश्यक था, वह मौजूद था।

3. 'मोशेह सूर्य के सृजन से पहले के तीन दिनों का उल्लेख करते हैं, जबकि हर कोई जानता है कि सूर्य के बिना दिन नहीं हो सकते।' आजकल, वास्तव में, सूर्य के बिना कोई दिन नहीं हो सकता, लेकिन उस समय हो सकता था। इसके लिए केवल दो शर्तों की आवश्यकता थी:

क) कि पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमे, और —

ख) कि उस समय पहले से मौजूद प्रकाशमान पदार्थ को कंपनशील गति में सेट किया गया हो। लेकिन यह भी इनकार नहीं किया जा सकता कि पृथ्वी सृष्टि के पहले ही दिन से अपनी धुरी पर घूमने लगी थी; और न ही यह कि सृष्टिकर्ता पहले तीन दिनों के दौरान अपनी ही शक्ति से प्रकाशमान पदार्थ को सीधे कंपन की गति में ला सकते थे—ठीक वैसे ही जैसे अब, चौथे दिन से, इसे स्वर्गीय पिंडों द्वारा गति दी जाती है, जिन्हें यह क्षमता ईश्वर से प्राप्त हुई है।[1240]

४. 'आकाशीय पिंडों की सृष्टि का वर्णन करते समय, मूसा दोहरी गलती करते हैं:

क) वह यह सुझाव देते हैं कि सूर्य, चंद्रमा और तारे विशेष रूप से पृथ्वी के लिए बनाए गए थे, ताकि वे उसे प्रकाशित करें और संकेतों तथा ऋतुओं के रूप में काम करें;

ख) वह सूर्य और चंद्रमा को 'महान प्रकाश' कहता है, जबकि चंद्रमा न केवल सूर्य और तारों से, बल्कि पृथ्वी से भी अतुलनीय रूप से छोटा है।" क्रायोनकिलर के शब्दों में कोई त्रुटि नहीं है।

क) वह यह नहीं कहते कि सूर्य, चंद्रमा और तारे केवल पृथ्वी के लिए बनाए गए थे; और यदि वह पृथ्वी के संबंध में उनके एक विशेष उद्देश्य का उल्लेख करते हैं और अन्य उद्देश्यों को छोड़ देते हैं, तो ऐसा इसलिए है क्योंकि, जैसा कि हमने पहले ही उल्लेख किया है, पृथ्वी की उत्पत्ति का वर्णन करने को मुख्य रूप से अपना उद्देश्य बनाकर, वह अन्य खगोलीय पिंडों का उल्लेख केवल इस हद तक करते हैं जहाँ तक वे हमारे ग्रह से संबंधित हैं।

ख) इसी तरह, वह सूर्य और चंद्रमा को 'महान प्रकाशमान वस्तुएँ' कहता है, उनके सापेक्ष आकार के कारण नहीं, बल्कि इसलिए कि वे पृथ्वी से कैसे दिखाई देते हैं; इसके अलावा, इस संबंध में भी, वह चंद्रमा को 'महान प्रकाशमान वस्तु' केवल रात में तारों की तुलना में कहता है, जबकि सूर्य की तुलना में वह इसे *'छोटी* प्रकाशमान वस्तु' कहता है।

5) "मूसा कहते हैं कि दुनिया, और विशेष रूप से हमारा ग्रह, छह दिनों के दौरान अस्तित्व में आया और पूरी तरह से बन गया। लेकिन पृथ्वी की संरचना के अध्ययन से संबंधित विज्ञान (भूविज्ञान) को, सतह पर और विशेष रूप से इसके आंतरिक भाग में, कई ऐसी विशेषताएँ मिलती हैं जो छह दिनों के बजाय सदियों या सहस्राब्दियों के दौरान ही बन सकती थीं।" इस आपत्ति के विवरण में जाए बिना, हम स्वयं को सामान्य टिप्पणियों तक सीमित रखेंगे:

क) मूसा, जैसा कि पहले ही कहा जा चुका है, लिखते हैं कि दुनिया और पृथ्वी छह दिनों में अस्तित्व में आईं और बनीं, प्रकृति में वर्तमान में काम करने वाली शक्तियों और कानूनों द्वारा नहीं, बल्कि ईश्वर के प्रत्यक्ष वचन द्वारा। लेकिन सर्वशक्तिमान निस्संदेह, सबसे कम संभव समय में, या यहां तक कि क्षण भर में, वह कर सकते थे, जिसे प्रकृति के बलों और नियमों द्वारा बनने में सदियाँ या सहस्राब्दियाँ लग जातीं। ये शक्तियाँ और नियम प्रकृति में केवल उसी क्षण से काम करने लगे जब प्रकृति स्वयं, अस्तित्व के साथ, ईश्वर से अपनी पूर्ण रचना प्राप्त कर चुकी थी — और यह अन्याय है कि उनके प्रभाव को पिछले समय तक बढ़ाया जाए, या स्वर्ग और पृथ्वी की प्रारंभिक सृष्टि के दौरान स्वयं सृष्टिकर्ता की सर्वशक्तिमानता को उनके अधीन किया जाए।

(b) उपरोक्त विज्ञान, जो हमारे ग्रह की संरचना का अध्ययन करता है, के पास पृथ्वी के प्रारंभिक निर्माण के संबंध में कोई विश्वसनीय और अविवादित निष्कर्ष निकालने के लिए बहुत कम डेटा है। इसलिए यह केवल अनुमान और

[1240] इस संदर्भ में, स्वयं पहले दिन के बारे में सेंट बेसिल द ग्रेट के शब्दों को याद किए बिना नहीं रहा जा सकता: 'मोसेस, मानो, यह कहा: चौबीस घंटे की अवधि एक ही दिन की अवधि है, या आकाश का एक राशि से दूसरी राशि में और फिर उसी राशि में लौटना एक ही दिन में होता है। ऐसा क्यों है कि जब भी सूर्य के मार्ग के परिणामस्वरूप संसार में साँझ और भोर आती है, तो यह चक्र किसी लंबे काल में नहीं, बल्कि एक ही दिन की अवधि के भीतर पूरा होता है?" (हेक्सामेरॉन पर प्रवचन, II, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, V, 37–38)।

कल्पना तक ही सीमति है, वभिन्नि सद्धिांतों और प्रणालयिों का आवष्किार करता है जन्हिें लगभग उतनी ही जल्दी भुला दयिा जाता है जतिनी जल्दी वे उत्पन्न होती हैं। ऐसी दर्जनों प्रणालयिाँ रही हैं, जन्हिें अब झूठा माना जाता है,[1241] और, इस वज्ञिान के सबसे नष्पिक्ष प्रतनिधियिों (कुवयिर) के अनुसार, एक सच्ची भूवैज्ञानकि प्रणाली भी संभव नहीं है। तो क्या यह उचति है कि ऐसे वज्ञिान के नष्किर्षों को पवत्रि वंशावलीकार के ववरिण के वरिुद्ध रखा जाए और बाद वाले की तुलना में पहले वाले को प्राथमकिता दी जाए?

ग) हालाँकि, इस वज्ञिान की योग्यता को नकारे बनिा, प्रकाशन के रक्षकों ने मूसा के वृत्तांत को इसके नष्किर्षों के साथ सुसंगत बनाने के कई तरीके प्रस्तुत कयि हैं, और ये तरीके नष्पिक्ष वशिेषज्ञों के नर्णिय में अधकि या कम संतोषजनक हैं।[1242]

d) भूवज्ञिानयिों के बीच ही, कई—और वास्तव में अत्यधकि वद्विान—[1243] गवाही देते हैं कि मूसा का छह-दविसीय सृजन का ववरिण उनके वज्ञिान के सबसे वश्विसनीय सद्धिांतों के साथ पूरी तरह से सुसंगत है, हालांकि इनमें से कुछ वद्विान सृजन के दनिों को सामान्य दनि मानते हैं, जबकि अन्य उन्हें संपूर्ण कालखंड मानते हैं।

e) जैसे-जैसे भूवज्ञिान आगे बढ़ रहा है, जो पहले मूसा के ववरिण का खंडन माना जाता था, उसका अधकिांश भाग अब झूठा साबति हो रहा है और इसलयि कसिी भी ध्यान के योग्य नहीं है।[1244] इससे यह नष्किर्ष नकिाला जा सकता है कि इस वज्ञिान में और अधकि प्रगति के साथ, इससे उत्पन्न होने वाले मूसा के ववरिण के सभी अन्य आपत्तयिाँ अपने आप दूर हो जाएँगी।

§75. सद्धिांत का नैतकि अनुप्रयोग

मूसा ने स्वयं परमेश्वर की छह-दविसीय सृष्टि के सद्धिांत के नैतकि अनुप्रयोग का प्रदर्शन तब कयि जब उन्होंने इस्राएलयिों को आज्ञा दी: *'सब्बाथ के दनि को स्मरण करना, उसे पवत्रि रखना; छह दनि परश्रिम करके अपने सब काम करना, परन्तु सातवाँ दनि यहोवा तुम्हारे परमेश्वर के लयि सब्बाथ है... छह दनिों में यहोवा ने आकाश और पृथ्वी, समुद्र और उन में जो कुछ भी है, उसे बनाया, और सातवें दनि वह वश्रिाम कयि; इसलयि यहोवा ने सब्त के दनि को आशीष दी और उसे पवत्रि कयि* (नर्गिमन 20:8–11)। इस आज्ञा में दो अन्य, अधकि वशिष्टि आज्ञाएँ शामलि हैं।

1. परमेश्वर स्वयं छह दनि तक काम करते रहे, *अपने कार्यों को करते हुए* (उत्पत्ति 2:2), यद्यपि वे संसार को एक क्षण में बना सकते थे: इसी प्रकार हमें भी, हमारे सृष्टकिर्ता के उत्तम उदाहरण का अनुसरण करते हुए, हर सप्ताह के छह दनि काम और परश्रिम करना चाहए; हमें उन शक्तयिों और क्षमताओं को वकिसति और मजबूत करना चाहए जो उन्होंने हमें प्रदान की हैं, उस समय का उपयोग करना चाहए जो उन्होंने हमें अपने और अपने पड़ोसयिों के भले के लए दयिा है, और इस प्रकार अपने सभी कार्य छह दनिों में पूरे करने चाहए।

२. सर्वोच्च स्वयं सृष्टि के कार्य से सातवें दनि वश्रिाम हुए, *'और परमेश्वर ने सातवें दनि को आशीष दी, और उसे पवत्रि कयि* (उत्पत्ति २:३); इसी प्रकार, छह दनि की मेहनत के बाद, हमें अपने श्रम से वश्रिाम करना चाहए और हर सप्ताह के सातवें दनि को पवत्रि करना चाहए—अर्थात्, वशिेष रूप से हमारे प्रभु की सेवा के लए समर्पति करना चाहए—जो पुराने नयिम में सब्बाथ था, और जो अब, जी उठे जीवन दाता द्वारा संसार के पुनर्नर्मिाण के बाद, रवविार बन गया है; हमें, इस उदाहरण का अनुसरण करते हुए, उन सभी अन्य दनिों को भी पवत्रि करना और परमेश्वर की सेवा के लए समर्पति करना चाहए जन्हिें उन्होंने स्वयं मानव जाति पर अपनी वशिेष आशीर्वादों द्वारा पवत्रि कयि

[1241] और इनमें से, अस्सी से अधकि मोशे की ब्रह्मांड-रचना का खंडन करते प्रतीत हुए। देखें *फ़रेसीनस* — *Défense du Christian, ou conférences sur la religion*, खंड II, व्याख्यान VI; *क्यूवयिर* — *Rapport de l'Institut national*, जो कृति के अंत में प्रकाशति हुआ: *Théorie de la surface actuelle de la terre par *M. André**, पेरसि 1806; *Annales de philosophie chrétienne*, 1831, संख्या 9, पृ. 195: **Analyse des différents systèmes géologiques**.

[1242] इन *सामंजस्य के* तरीकों या *प्रणालयिों* में से पाँच की वस्तिृत जांच और मूल्यांकन तीसरे खंड — *Sacrae Script.* में कयि गया है। Curs. Complet., संपादति पेरसि, 1842, 'जेनेससि पर भूवैज्ञानकि टीकाएँ' (Geological Annotations to Genesis) शीर्षक वाले लेख में, पृष्ठ 1583 ff. एक अन्य वधि *ग्लैयर* की पुस्तक: *लेस ववि्रे सेंट वेंजे* (Les livres saints vengés), खंड 1, पृष्ठ 2–98, पेरसि, 1845 में वस्तिार से दी गई है।

[1243] ऐसे कार्यों में, उदाहरण के लए, *डी ल्यूक*, *लेट्रेस सुर ल'हस्टि. फज़ि. दे ला टेर*, पेरसि 1798; *आंद्रे*, *थ्योरी दे ला सर्फ़. एक्ट. दे ला टेर*, पेरसि 1806; *बकेलैंड*, *दे ला जयिोलॉजी एट दे ला मनिरैलॉजी डैंस लेउर रापोर्त्स अवek ला थयिोलॉजी नेचुरेल*, पेरसि 1838 शामलि हैं।

[1244] *अमी ब्यूए*, *गाइड फॉर द ट्रैवलगि जयिोलॉजस्टि*, खंड II, पृ. 224, पेरसि 1836.

है, और जिन्हें, उनके द्वारा प्रदान किए गए अधिकार से, पवित्र चर्च ने अन्य दिनों से अलग करके उन्हें और उनके संतों की सेवा के लिए समर्पित किया है।

३. सूक्ष्म रूप—मनुष्य

§76. पिछले भाग से संबंध। चर्च की शिक्षा और इस शिक्षा की संरचना

शून्य से आध्यात्मिक जगत और फिर भौतिक जगत को उत्पन्न करने के बाद, प्रभु परमेश्वर ने सृष्टि के समापन पर मनुष्य को उत्पन्न किया, जो अपनी आत्मा के कारण समान रूप से आध्यात्मिक जगत और अपने शरीर के कारण भौतिक जगत से संबंधित है; और इसलिए वह, एक प्रकार से, दोनों जगतों का संश्लेषण है,[1245] और उसे सही मायने में 'लघु जगत' कहा जाता है।[1246]

ईश्वर की इस सृष्टि के मुकुट पर ऑर्थोडॉक्स शिक्षण की मुख्य विशेषताएँ इस प्रकार हैं: *'और परमेश्वर ने कहा, "आओ हम मनुष्य को अपनी प्रतिमा [और] अपनी समानता में बनाएँ"* (उत्पत्ति 1:26)। और परमेश्वर ने पहले मनुष्य, आदम, का शरीर मिट्टी से बनाया, और उसके नाकों में जीवन की श्वास फूँकी; उन्होंने आदम को एडेन के बगीचे में लाया; उन्होंने उसे भोजन दिया, जिसमें बगीचे के अन्य फलों के अलावा, जीवन के वृक्ष का फल भी शामिल था; अंत में, जब आदम सो रहा था, तो उन्होंने उसकी एक पसली निकाली और उससे पहली महिला, हव्वा को बनाया... ईश्वर ने मनुष्य को इसलिए बनाया ताकि वह ईश्वर और उसके द्वारा बनाए गए ब्रह्मांड को जान सके, उससे प्रेम कर सके और उसकी महिमा कर सके, और इस प्रकार शाश्वत आनंद का अनुभव कर सके।... लेकिन चूँकि मनुष्य ने निर्दोष होने पर स्वर्ग में ईश्वर की आज्ञा का पालन नहीं किया, बल्कि निषिद्ध फल को लेकर उसका स्वाद चखा, उसने इस प्रकार अपनी गरिमा और उस स्थिति को खो दिया जिसका उसने अपनी निर्दोषता में आनंद लिया था... और चूँकि, निर्दोषता की अवस्था में, सभी लोग आदम में थे, जैसे ही उसने पाप किया, सभी ने उसमें पाप किया और पाप की अवस्था में आ गए। और इसलिए वे न केवल पाप के अधीन हैं, बल्कि अपने पापों के लिए दंड के भी अधीन हैं".. (पहले अनुच्छेद और ऑर्थोडॉक्स कन्फेशन पर सरलीकृत ईसाई धर्मशास्त्र, भाग 1, प्रश्न 22 और 24 के उत्तर)।

इस प्रकार, ईश्वर की सृष्टि के रूप में मनुष्य के बारे में ऑर्थोडॉक्स चर्च की शिक्षा, विशेष रूप से, निम्नलिखित शिक्षाओं से मिलकर बनी है: 1) मानव स्वभाव की उत्पत्ति पर; 2) मनुष्य के उद्देश्य और निर्दोष अवस्था पर; 3) मनुष्य के स्वेच्छा से पतन और उसके पतन के परिणामों पर।

3.1. मानव की उत्पत्ति और स्वभाव

§77. मूसा के वृत्तांत में प्रथम मनुष्यों, आदम और हव्वा, की उत्पत्ति का सार और अर्थ

पवित्र वंशावलीकार गवाही देते हैं कि ईश्वर ने पहले मनुष्यों, आदम और हव्वा को, एक विशेष तरीके से बनाया, जो उस तरीके से अलग था जिससे उन्होंने पहले अपनी अन्य सभी सृष्टियों को उत्पन्न किया था; इसके अलावा, उन्होंने पुरुष को एक तरीके से और महिला को दूसरे तरीके से बनाया। मानव जाति की सृष्टि के संबंध में, विशेष रूप से, इतिहासकार निम्नलिखित कहता है: *'और परमेश्वर ने कहा, "आओ हम मनुष्य को अपनी प्रतिमा में, अपनी समानता के अनुसार बनाएँ..." — और परमेश्वर ने मानव जाति को बनाया; परमेश्वर की प्रतिमा में उसने उन्हें बनाया; नर और नारी परमेश्वर ने उन्हें बनाया'* (उत्पत्ति 1:26–27)। विशेष रूप से मनुष्य की सृष्टि के संबंध में: *'और यहोवा परमेश्वर ने मनुष्य को मिट्टी की धूल से बनाया, और उसके नाकों में जीवन की श्वास फूँकी; और मनुष्य जीवित प्राणी बन गया* (उत्पत्ति 2:7)। स्त्री

[1245] *प्रेरितिक संविधान* 7:34; *मेथोडियस, एपिकिनियस* में उद्धृत, विधर्मों पर 64, 18; ऑगस्टीन, ओरोसियस के विरुद्ध, प्रिस्किलियन और ओरिजन के विरुद्ध, खंड II: 'मनुष्य में ऐसा कोई भी प्राणी नहीं है जिसे पहचाना नहीं जा सकता।'

[1246] *ग्रेगरी द थियोलोजियन,* होमीली 38, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स* III, 242 में; *जॉन ऑफ़ डेमास्कस,* सटीक व्याख्यान ऑफ़ द ऑर्थोडॉक्स फेथ, पुस्तक II, अध्याय 12: "ईश्वर ने मनुष्य को निर्दोष, धर्मी, अच्छाई से प्रेम करने वाला, दुख और चिंताओं से मुक्त, हर पूर्णता से दीप्तिमान, हर आशीर्वाद से परिपूर्ण, मानो एक दूसरी दुनिया—बड़ी के भीतर छोटी—के रूप में बनाया।"

की सृष्टि के विषय में: 'और *यहोवा परमेश्वर ने आदम पर गहरी नींद डाली; और वह सोया। तब उसने उसकी एक पसली निकाल ली और उस जगह को मांस से भर दिया। और यहोवा परमेश्वर ने उस पसली को, जो वह मनुष्य से निकाल चुका था, स्त्री बनाई और उसे आदम के पास ले आया* (21-22)।

मोशे द्वारा इस वृत्तांत को इतिहास के रूप में समझा जाना चाहिए, न कि कल्पना या मिथक के रूप में,[1247] क्योंकि इसे ऐतिहासिक अर्थ में निम्नलिखित लोगों द्वारा समझा गया था:

1. स्वयं मूसा, जैसा कि उनकी पूरी पुस्तक की प्रकृति से अनुमान लगाया जा सकता है—जो पूरी तरह से ऐतिहासिक है—और विशेष रूप से उन शब्दों से जो, उनके विवरण के अनुसार, आदम ने तब बोले जब हव्वा को उसके पास लाया गया: *'यह मेरी हड्डियों में से हड्डी और मेरे मांस में से मांस है; 'उसे "नारी" कहा जाएगा, क्योंकि वह अपने पति से निकाली गई है'* (उत्पत्ति 2:23), और बाद में उन शब्दों से जो परमेश्वर ने गिरे हुए आदम से कहे: *'अपने माथे के पसीने से तू अपना भोजन खाएगा, जब तक कि तू उस मिट्टी में वापस नहीं चला जाता, जिससे तू निकाला गया है; क्योंकि तू धूल है, और धूल में ही फिर लौट जाएगा* (उत्पत्ति 3:19)।

2. बाद के पुराने नियम के लेखक। उदाहरण के लिए, सोलोमन की बुद्धि की पुस्तक में हम पढ़ते हैं: *'ईश्वर ने मनुष्य को अमरत्व के लिए बनाया और उसे अपनी अनंत सत्ता की प्रतिमा में गढ़ा'* (2:23); इसी प्रकार सिरिक के पुत्र यीशु की पुस्तक में: *'प्रभु ने मनुष्य को पृथ्वी से बनाया, और उसे फिर उसी में लौटा देता है। उसने उन्हें निश्चित दिन और समय दिया है, और उन पर जो कुछ भी है, उस पर अधिकार दिया है। उनकी प्रकृति के अनुसार, उसने उन्हें शक्ति से सुसज्जित किया है और उन्हें अपनी ही छवि में बनाया है* (17:1–3; सभो. 12:7; भजन 8:5–10; तोब. 8:8)।

३. मसीह उद्धारकर्ता। विवाह की अटूटता को साबित करते हुए, उन्होंने फरीसियों से कहा: *'सृष्टि की शुरुआत से, परमेश्वर ने उन्हें नर और नारी बनाया। इसी कारण एक पुरुष अपने पिता और माता को छोड़ देगा और अपनी पत्नी से जुड़ जाएगा, और दोनों एक शरीर बन जाएंगे; ताकि वे अब दो न रहें, बल्कि एक शरीर हों'* (मरकुस 10:6–8; मत्ती 19:4–6)। इन शब्दों के साथ, प्रभु ने स्पष्ट रूप से उस सब की सच्चाई की पुष्टि की जो मूसा पहले मानव जोड़े की उत्पत्ति के बारे में बताता है (उत्पत्ति 2:18–24)।

४. पवित्र प्रेरित पौलुस। वह गवाही देते हैं कि मनुष्य पहले बनाया गया, फिर स्त्री: *आदम पहले बनाया गया, और फिर हव्वा* (१ तीमु. २:१३)। मनुष्य की सृष्टि के बारे में बात करते हुए, वह कहते हैं: *पहला मनुष्य, आदम, एक जीवित प्राणी बन गया... पृथ्वी की धूल से पहला मनुष्य* (1 कुरिन्थियों 15:45…47); स्त्री की सृष्टि के संबंध में: *'स्त्री पुरुष से उत्पन्न नहीं हुई, परन्तु पुरुष स्त्री से; और न पुरुष स्त्री के लिए बनाया गया, परन्तु स्त्री पुरुष के* लिए' (1 कुरिन्थियों 11:8–9; तुलना करें 6:16; इफिसियों 5:31)।

5. चर्च के पवित्र पिता और शिक्षक। उदाहरण के लिए

क) *एंटिओक के थियोफिलस*: 'ईश्वर ने केवल एक चीज़ को अपने हाथों से बनाने के योग्य समझा—मनुष्य की सृष्टि...' और आगे: 'ईश्वर ने आदम के लिए उसकी पसली से एक पत्नी बनाई।'[1248]

ख) *संत बेसिल द ग्रेट*: 'मनुष्य की उत्पत्ति अन्य सभी की उत्पत्ति से श्रेष्ठ है, क्योंकि कहा गया है कि परमेश्वर ने भूमि से मिट्टी ली और मनुष्य को बनाया (उत्पत्ति 2:6); वह स्वयं अपने हाथ से हमारे शरीर को गढ़ने की कृपा करते हैं; सृष्टि के लिए किसी स्वर्गदूत को नियोजित नहीं किया गया था, न ही पृथ्वी ने हमें अपनी इच्छा से, टिड्डियों की तरह, उत्पन्न किया; उन्होंने सेवक आत्माओं को यह या वह करने की आज्ञा नहीं दी, बल्कि, पृथ्वी से मिट्टी लेकर, उन्होंने उसे अपने हाथ से आकार दिया।"[1249]

ग) *संत ग्रेगरी द थियोलोजियन*: "ईश्वर, पहले से रचे गए पदार्थ से एक शरीर लेकर, और उसमें स्वयं से जीवन फूँककर (जिसे ईश्वर के वचन में आत्मा या ईश्वर की प्रतिमा कहा जाता है), एक प्रकार से एक दूसरा संसार रचता है, जो छोटे में महान है; वे पृथ्वी पर एक और देवदूत, दृश्यमान प्रकृति का साक्षी, सृष्टि के चिंतनशील क्रम का संरक्षक नियुक्त करते हैं";[1250]

[1247] जैसा कि पश्चिमी के तर्कवादी धर्मशास्त्रियों द्वारा व्याख्या किया गया है।

[1248] एड ऑटोल. II, अप. 18 और 28.

[1249] मनुष्य के संविधान पर उपदेश, क्रि. रीडिंग्स 1841, IV, 5 में।

[1250] होमीली 45, *द वर्क्स ऑफ़ द होली फ़ादर्स*, IV, 157 में।

घ) *संत एम्ब्रोस:* "यह व्यर्थ नहीं है कि स्त्री को उसी धूल से नहीं बनाया गया जिससे आदम का निर्माण हुआ था, बल्कि आदम की अपनी पसली से बनाया गया: ताकि हम जान सकें कि पति और पत्नी में एक ही शारीरिक स्वभाव है, कि मानव जाति का एक ही स्रोत है, और इसलिए शुरुआत में दो नहीं बनाए गए थे—पति और पत्नी—न ही दो पत्नियाँ, बल्कि पहले पति, और फिर उससे पत्नी";[1251]

ई) *सेंट जॉन ऑफ डेमास्कस:* "दृश्य और अदृश्य स्वभावों से, ईश्वर ने अपने हाथों से अपनी ही छवि और समानता में मनुष्य की रचना की; उन्होंने पृथ्वी से शरीर का निर्माण किया, और उन्होंने अपनी श्वास द्वारा मनुष्य में एक तर्कसंगत और बुद्धिमान आत्मा (λογικήν καί νοεράν) प्रदान की।"[1252]

दूसरी ओर, यह ध्यान में रखना चाहिए कि, सामान्य रूप से दुनिया की उत्पत्ति के अपने विवरण में और पहले मनुष्यों की सृष्टि के विवरण में, पवित्र वंशावलीकार, सभी द्वारा समझा जाना चाहकर, अक्सर सामान्य अर्थ के अनुसार, ईश्वर के बारे में इंद्रिय और मानवाकार रूपों में बात करते हैं; क्योंकि, यद्यपि इस विवरण में सब कुछ ऐतिहासिक अर्थ में समझा जाना है, परन्तु सब कुछ शाब्दिक रूप में नहीं लिया जाना है।

संत जॉन क्राइसोस्टोम कहते हैं, "कुछ लोग, उस पाठ को सुनकर जिसमें कहा गया है: *'मैं उसकी नाक में श्वास फूँकूँगा'*, यह दावा करते हैं कि आत्मा ईश्वर के सार (ἐκ τής ούσίας) से उत्पन्न होती है... ऐसी मूर्खता से बदतर और क्या हो सकता है? यदि वे धर्मग्रंथ के शब्दों: *'मैं उसके मुँह में श्वास फूँकूँगा* के आधार पर, ईश्वर को एक मुँह देना चाहते हैं, तो जब कहा जाता है: *'उसने* मनुष्य को *बनाया* (έπλασε)', तो उनके लिए ईश्वर को हाथ भी देना आवश्यक है। तो, जब आप धर्मग्रंथ के वचनों को सुनते हैं: *'ईश्वर ने मनुष्य को बनाया*, तो ऐसी शक्ति की कल्पना करें: *'हो जाए* (τήν άυτήν νόει δύναμιν τώ γνηθήτω); और जब आप सुनें: *'उसने उसके नासिका में जीवन का श्वास फूँका'*, तो यह कल्पना करें कि जिस प्रकार उसने निराकार शक्तियों को उत्पन्न किया, उसी प्रकार उसे यह भी उचित लगा कि यह शरीर, जो धूल से बना है, उसमें भी एक तर्कशील आत्मा हो जो शरीर के अंगों का उपयोग करने में सक्षम हो।"[1253]

धन्य थियोडोरेट ने इसी प्रकार तर्क दिया: "जब हम मूसा के वृत्तांत में सुनते हैं कि परमेश्वर ने मिट्टी से मिट्टी ली और मनुष्य को बनाया (उत्पत्ति 2:7), और इस कथन का अर्थ खोजते हैं, तो हमें इसमें मानव जाति के प्रति परमेश्वर द्वारा दिखाई गई एक विशेष कृपा मिलती है। क्योंकि, सृष्टि का वर्णन करते हुए, महान पैगंबर यह देखते हैं कि ईश्वर ने अपने वचन से अन्य सभी प्राणियों को बनाया, लेकिन मनुष्य को अपनी ही हाथों से गढ़ा। लेकिन जैसे वहाँ हम वचन को आज्ञा के रूप में नहीं बल्कि इच्छा के एक मात्र कार्य के रूप में समझते हैं, वैसे ही यहाँ, शरीर के निर्माण में, हमारा तात्पर्य हाथों की क्रिया से नहीं, बल्कि इस मामले में बरती गई परम सावधानी से है। क्योंकि जैसे अब, उनकी इच्छा से, माँ के गर्भ में एक भ्रूण बनता है, और प्रकृति उन नियमों का पालन करती है जो उसने शुरू से ही उसके लिए निर्धारित किए हैं, वैसे ही उस समय भी मानव शरीर उनकी इच्छा से ही पृथ्वी से बना, और धूल मांस बन गई।" और थोड़ा आगे: "दिव्य मूसा कहते हैं कि आदम का शरीर पहले बना, और फिर ईश्वर ने उसमें आत्मा फूंकी: *'और प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य को मिट्टी की धूल से बनाया, और उसके नाकों में जीवन की श्वास फूंकी; और मनुष्य एक जीवित प्राणी बन गया* (उत्पत्ति 2:7)। यहाँ 'श्वास' शब्द का अर्थ दिव्य सत्ता के किसी अंग से नहीं है, जैसा कि केड्रोन और मार्शियन ने सोचा था, बल्कि यह शब्द एक तर्कशील प्राणी के रूप में आत्मा के एक गुण को दर्शाता है।[1254]

अन्यत्र वे एक सामान्य अवलोकन करते हैं: 'हम यह नहीं कहते कि ईश्वरत्व के हाथ हैं या उसे सृष्टि को एक पूर्वनिर्धारित विचार के अनुसार आकार देने के लिए किसी परामर्श या पूर्व विचार-विमर्श की आवश्यकता है, जैसा कि प्लेटो ने सोचा था; परन्तु हम यह मानते हैं कि इन अभिव्यक्तियों में से प्रत्येक (जिनमें मनुष्य की सृष्टि का वर्णन किया

[1251] Lib. De parad., अध्याय 10. *आइरेनियस ने* भी मनुष्य की सृष्टि के बारे में मूसा के वृत्तांत की इस प्रकार व्याख्या की (Adv. Haeres., IV, 37). *टर्तुल्लियन* (Contra Marcion, अध्याय 4) और *ऑगस्टीन:* 'और ईश्वर ने मनुष्य को पृथ्वी की धूल से बनाया: वही पृथ्वी और सभी सांसारिक पदार्थ पूरी तरह से शून्य से हैं, और उसने शरीर को एक आत्मा दी जो शून्य से बनी थी, जब मनुष्य का सृजन हुआ' (De Civitate Dei, XIV, अध्याय 2);

[1252] सही आस्था की व्याख्या, पुस्तक XII, अध्याय 12, पृ. 90.

[1253] उत्पत्ति पर उपदेश XIII, कृतियाँ, खंड IV, पृ. 101, वेनिस 1740।

[1254] Divin. decret. epit. अध्याय 9, Chr. Cht. 1844, पृ. 216, 221 में। नोट में धन्य ऑगस्टीन के समान शब्दों को देखें

गया है और उदाहरण के लिए, ईश्वर की पूर्व परामर्श और इसी तरह का उल्लेख किया गया है) केवल यह प्रदर्शित करती हैं कि मनुष्य के प्रति ईश्वर की देखभाल अन्य प्राणियों की तुलना में अधिक है।[1255]

§78. समस्त मानव जाति का आदम और हव्वा से वंशज होना

इस सत्य के दो प्रकार के विरोधी हैं: प्रथम, वे जो मानते हैं कि आदम से पहले भी पृथ्वी पर लोग थे (पूर्व-आदमी), और परिणामस्वरूप आदम मानव जाति का पूर्वज नहीं है; दूसरे, वे जो स्वीकार करते हैं कि आदम के साथ-साथ मानव जाति के कई पूर्वज (सह-आदमवादी) थे, और परिणामस्वरूप, मानव जाति एक ही स्रोत से नहीं आती है।[1256] इसलिए, इस सत्य को पूरी तरह से प्रस्तुत करने के लिए, आइए हम न केवल इसके पक्ष में मौजूद साक्ष्यों पर, बल्कि विरोधी विचारों पर भी विचार करें।

1. आदम और हव्वा से संपूर्ण मानव जाति की उत्पत्ति के संबंध में सत्य परमेश्वर के वचन में बहुत स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया गया है। इस प्रकार—

क) पवित्र वंशावलीकार बताते हैं कि, आदम के पृथ्वी पर आने से पहले, *भूमि जोतने के लिए कोई मनुष्य नहीं था* (उत्पत्ति 2:5), और, हव्वा के बनाए जाने से पहले, *मनुष्य के लिए कोई उपयुक्त सहायक नहीं मिला* (20); *आदम ने अपनी पत्नी का नाम हव्वा रखा, क्योंकि वह सभी जीवित प्राणियों की माता बनी* (उत्पत्ति 3:20)। परिणामस्वरूप, मूसा *मानव अस्तित्व की वंशावली* ठीक इसी पहले जोड़े से शुरू करते हैं (उत्पत्ति 5:1-2), जिन्हें परमेश्वर ने इस आज्ञा के साथ आशीष दी: *'फलो-फूलो, और पृथ्वी को भर दो'* (उत्पत्ति 1:28)।

ख) बाद के पुराने नियम के लेखकों में, तोबित परमेश्वर से अपनी प्रार्थना में कहते हैं: *'आपने आदम को बनाया, और उसे सहायक, अपनी पत्नी के लिए एक सहारा के रूप में हव्वा दी। उनसे मानव जाति की उत्पत्ति हुई* (तोबित 8:6); और बुद्धिमान व्यक्ति आदम को *संसार का पहला पिता* कहते हैं (बुद्धि 10:1)।

ग) पवित्र सुसमाचार लेखक लूका, उद्धारकर्ता मसीह की वंशावली का पता मानव वंश के अनुसार आदम से आगे नहीं लगाते, और फिर यीशु को *परमेश्वर का पुत्र* कहते हैं (लूका 3:38)।

d) अंत में, पवित्र प्रेरित पौलुस अत्यंत स्पष्टता के साथ गवाही देते हैं कि *प्रभु ने संपूर्ण मानव जाति को एक ही रक्त से बनाया ताकि वे सारी पृथ्वी पर बसें* (प्रेरितों के काम 17:26), और इस सत्य पर वह पतित प्रथम माता-पिता से संपूर्ण मानव जाति तक मूल पाप के संचरण के संबंध में एक और, सबसे महत्वपूर्ण ईसाई सत्य की स्थापना करते हैं (रोमियों 5:12)।

ईश्वर के वचन के अनुसार, मसीह की कलीसिया ने हमेशा संपूर्ण मानव जाति के एक ही आदि दंपति से उत्पन्न होने में विश्वास किया है: इसका प्रमाण इस तथ्य से पर्याप्त रूप से मिलता है कि इसने हमेशा आदि पाप के सिद्धांत और आदम और हव्वा से संपूर्ण मानव जाति तक इसके संचरण का समर्थन किया है।[1257]

यह अत्यंत उल्लेखनीय है कि सभी लोगों की परंपराओं में, प्राचीन[1258] और आधुनिक दोनों में,[1259] मानव जाति की उत्पत्ति एक ही जोड़े से बताई गई है, और पहले माता-पिता को अक्सर लगभग उन्हीं नामों से संदर्भित किया जाता है जो पवित्र वंशावलीकार द्वारा उपयोग किए गए नामों के समान हैं।

2. जो लोग आदम से पूर्व के लोगों के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं, और परिणामस्वरूप आदम को मानव जाति का पूर्वज नहीं मानते, वे अपने दृष्टिकोण के समर्थन में निम्नलिखित प्रमाण प्रस्तुत करते हैं:

[1255] उत्पत्ति, प्रश्न 19; स्वीकारोक्ति, प्रश्न 23, *क्रिश्चियन रीडिंग्स* 1843, खंड III, पृ. 346, 354.

[1256] कुछ स्वतंत्र विचारकों ने ईसाई धर्म के आरंभिक दिनों से ही पहले दृष्टिकोण को माना था, उदाहरण के लिए, जूलियन द एपोस्टेट [Opp. ejus. p. 181, ed. ए. स्पैनहेमियो]; लेकिन यह आइज़ैक पेरेरियस थे जिन्होंने 17वीं शताब्दी में 1655 में प्रकाशित अपनी कृति **प्रीएडामिटाई** में इसे पूरी विस्तार से प्रस्तुत किया। जहाँ तक बाद वाले का सवाल है, कुछ प्राकृतिक दार्शनिकों ने अतीत में और, कुछ हद तक, इस शताब्दी में इसे साबित करने का प्रयास किया।

[1257] जैसा कि हम समय आने पर देखेंगे।

[1258] *फोरमोंट* – *प्राचीन लोगों की उत्पत्ति, इतिहास और उत्तराधिकार पर प्रतिबिंब*, खंड 1, पुस्तक 1, अनुभाग 2, अध्याय 1 और बाद के। पेरिस 1747.

[1259] *क्लैप्रोथ* — *Tableaux historiques de l'Asie*, पेरिस 1814; **Annales de Philosophie Chrétienne**, खंड VIII, संख्या 43, पेरिस 1834: *Voyage et traditions, croyances, superstitions et restes des traditions primitives, observées par M. *Dumont d'Orville* dans son voyage autour du monde*...

(क) मूसा स्वयं, उत्पत्ति की पुस्तक के पहले अध्याय में, पहले मानव जोड़े की उत्पत्ति का वर्णन उस तरह से अलग करते हैं, जैसे वे बाद में दूसरे अध्याय में आदम और हव्वा की उत्पत्ति का वर्णन करते हैं: पहले अध्याय में, वे बताते हैं कि एक पुरुष और एक महिला को एक साथ बनाया गया था, और ईश्वर की छवि में बनाया गया था; जबकि दूसरे अध्याय में वे लिखते हैं कि पहले केवल आदम को ही मिट्टी से बनाया गया था, और कुछ समय बाद हव्वा को उसकी पसली से बनाया गया था, और उन्हें ईश्वर की प्रतिमा का वाहक नहीं बताया गया है।" लेकिन मूसा दो अलग-अलग सृजनों के बारे में नहीं, बल्कि एक ही घटना के बारे में बता रहे हैं: केवल पहले अध्याय में वे सामान्य शब्दों में कहते हैं कि परमेश्वर ने मनुष्य को अपनी समानता में *बनाया—मनुष्य और स्त्री दोनों को बनाया*—यह बताए बिना कि उन्हें एक साथ बनाया गया या अलग-अलग; जबकि दूसरे अध्याय में वे विस्तार से बताते हैं कि परमेश्वर ने मनुष्य और स्त्री को कैसे बनाया। संत बेसिल द ग्रेट ने इन दो वृत्तांतों की इस प्रकार व्याख्या की: 'कभी-कभी हमें सामान्य शब्दों में बताया जाता है, और कभी-कभी विस्तार से बताया जाता है कि कुछ कैसे हुआ। और इस प्रकार, ऊपर उल्लेखित पहले अध्याय में, केवल यह कहा गया है कि ईश्वर ने रचा, लेकिन प्रतिमा का उल्लेख बिल्कुल नहीं है; जबकि यहाँ, दूसरे अध्याय में, यह भी दिखाया गया है कि उन्होंने कैसे रचा। क्योंकि यदि केवल यह कहा गया होता: *'उसने (मनुष्य) को रचा*, तो कोई यह सोच सकता था कि उसने उसे उसी तरह रचा जैसे जानवरों या घास को रचा है। इसलिए, जानवरों के संबंध में आपके द्वारा इस तरह का सामान्यीकरण करने से रोकने के लिए, वचन ने यह बताया है कि परमेश्वर ने विशेष रूप से आपको कैसे बनाने का विकल्प चुना: परमेश्वर ने भूमि की धूल ली। वहाँ केवल यह कहा गया है कि उसने बनाया, लेकिन यहाँ यह भी बताया गया है कि उसने कैसे बनाया: उसने भूमि की धूल ली और उसे अपने हाथों से गढ़ा।"[1260] पूरी स्पष्टता के लिए कि पहला अध्याय आदम और हव्वा की सृष्टि के बारे में बात करता है, और किसी और के बारे में नहीं, यह पर्याप्त है कि इस वृत्तांत की तुलना उत्पत्ति के पांचवें अध्याय के आरंभिक शब्दों से की जाए: *'यह आदम का वृत्तांत है: जब परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया, तब उसने उसे परमेश्वर के स्वरूप में बनाया; नर और नारी, उन्हें बनाया।'*

b) "काइन और हेबल के विषय में लिखा है कि पहला *एक किसान* था, जबकि दूसरा *भेड़ों का चरवाहा* था (उत्पत्ति 4:2)। लेकिन भूमि की खेती के लिए विभिन्न औजारों की आवश्यकता होती है, जो, परिणामस्वरूप, उस समय पहले से ही आविष्कृत हो चुके होने चाहिए थे...; किसने, यदि उनके पूर्वजों ने नहीं, तो?" और हाबिल अपनी भेड़ों को चोरों से ही बचा सकता था: किससे, अगर उसके पिता, माता और भाई के अलावा, उस समय कोई अन्य लोग नहीं थे—कोई आदम से पहले के लोग नहीं?" आदम स्वयं, या काइन ने भी, कृषि उपकरणों का आविष्कार किया होगा, और भी इसलिए क्योंकि उस समय पृथ्वी की अभी-अभी अछूती मिट्टी की खेती के लिए, विशेष रूप से पूर्व में, आज के जैसे कृत्रिम और जटिल उपकरणों की आवश्यकता नहीं थी। और भेड़ों को चराने का उद्देश्य केवल उन्हें मानव अपहरणकर्ताओं से बचाना ही नहीं है, बल्कि भेड़ों को एक चरागाह से दूसरे—बेहतर—चरागाह में ले जाना, यह सुनिश्चित करना कि कोई भेड़ भटक न जाए, उन्हें शिकारी जानवरों से बचाना, और इसी तरह अन्य कार्य करना भी है।

(ग) हाबिल और काइन की बाद की कहानी इस निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए कई आधार प्रदान करती है कि आदम और हव्वा और उनके दो बेटों के अलावा, उस समय पहले से ही काफी अन्य लोग मौजूद थे। इस प्रकार, अपने भाई को मारने का निश्चय करने के बाद, काइन उससे कहता है: "*आओ, हम खेत में चलें*" (उत्पत्ति 4:8)। यहाँ *'मैदान'* शब्द का स्पष्ट रूप से 'शहर', या वास्तव में लोगों द्वारा बसी किसी भी जगह से विरोधाभास किया गया है। भाई की हत्या करने के बाद, काइन, अन्य बातों के अलावा, घोषणा करता है: 'और *जो कोई मुझे पाएगा, वह मुझे मार डालेगा* (14)। तो फिर, वह किससे डरता था? अपने पिता से या अपनी माँ से? और स्वयं परमेश्वर काईन पर एक निशान लगा देता है *ताकि उससे मिलने वाला कोई भी उसे न मार सके* (15)। इसके बाद, काईन नोद की भूमि में जाता है, एक पत्नी लेता है और एक नगर बसाता है (16–17)। तो फिर, उसने अपनी पत्नी कहाँ से पाई, और उसने नगर को किसके साथ बसाया?" उल्लेख किए गए सभी मामलों से यह तो निश्चित रूप से पता चलता है कि उस समय पृथ्वी पर पहले से ही काफी संख्या में लोग मौजूद थे; लेकिन इससे यह नहीं पता चलता कि वे आदम के वंशज होने के बजाय आदम से पहले के लोग थे। लगभग 129 साल बाद, या 70 के कालक्रम के अनुसार, लगभग 229 साल बाद काइन ने अपने भ्राता एबेल की हत्या क र की (तुलना करें उत्पत्ति 4:25; 5:3) आदम और हव्वा की सृष्टि के समय से; और उस समय तक उनके न केवल कई पुत्र और पुत्रियाँ, बल्कि कई पोते-पोतियाँ भी हो सकते थे, विशेष रूप से यदि हम उनकी सृष्टि के तुरंत बाद हमारे प्रथम माता-पिता को परमेश्वर द्वारा दिया

[1260] मनुष्य के संविधान पर एक ग्रंथ, क्रिश्चियन रीडिंग्स 1841, IV, 7, तुलना करें 22–23।

गया आज्ञा याद करें: 'फलो और बढ़ो, और पृथ्वी को भर दो' (उत्पत्ति 1:28)। इस तथ्य से यह निष्कर्ष निकालना अनुचित होगा कि मूसा आदम की इन संतानों का कोई उल्लेख नहीं करते, इसलिए उनका अस्तित्व ही नहीं था, जबकि यह अच्छी तरह से ज्ञात है कि मूसा आम तौर पर सबसे शुरुआती, प्रलय-पूर्व समय के बारे में बहुत संक्षेप में और कम ही बात करते हैं। यदि ऐसा है, तो

क) यहाँ तक कि काईन के दिनों में, जब उसने अपने भाई की हत्या की, तब भी पहले से ही लोगों द्वारा बसी हुई जगहें हो सकती थीं, या कम से कम एक ऐसी जगह;

ख) ऐसे लोग थे जिनसे काइन को डर लगता था: वह अपने भाई के खून का बदला लेने से, अपने भाइयों और उनके वंशजों दोनों से डर सकता था;

ग) ऐसे लोग थे जिनमें से काईन को अपनी पत्नी मिल सकती थी,[1261] और जिनके साथ वह अपने शहर को बसा सकता था, जो निस्संदेह आज के शहरों जैसा नहीं था, बल्कि कुछ तंबुओं या अन्य समान संरचनाओं से बना था, जो एक दीवार या किलेबंदी से घिरा हुआ था।

d) "आदम की उत्पत्ति के समय से, लगभग छह या, 70 के घात 7 पर, लगभग सात हजार वर्ष और थोड़ा अधिक समय बीत चुका है। इस बीच, प्राचीन मिस्रवासियों ने भी अपनी राजनीतिक अस्तित्व के दसियों हज़ार वर्षों की गिनती की, जबकि भारतीय और चीनी लाखों की गिनती करते हैं। इसके अलावा, अलेक्ज़ेंडर महान के समय से ही, काल्दीयों के पास 472,000 वर्षों तक फैले खगोलीय अभिलेख थे, जबकि भारतीयों और चीनी लोगों के पास लाखों वर्षों तक फैले खगोलीय अभिलेख हैं।"[1262] हालाँकि, नवीनतम शोध के अनुसार, ये सभी आंकड़े झूठे और पूरी तरह से अविश्वसनीय साबित हुए हैं।

(क) मिस्रवासियों और खलदीयियों द्वारा गर्व से बताई गई दसियों हज़ार सालों की अवधि को प्राचीन लेखकों ने भी सही ठहराकर खारिज कर दिया था, जिन्होंने उनमें व्यर्थ आत्म-प्रशंसा और कथाओं के अलावा कुछ नहीं देखा;[1263]

b) भारतीय और चीनी इतिहास के लाखों वर्ष समान रूप से काल्पनिक हैं: भारत में राजनीतिक संगठन की सबसे पुरानी ऐतिहासिक अवधि अब्राहम के समय तक जाती है; और चीनी इतिहास की विश्वसनीयता मसीह के जन्म से दो हजार साल से थोड़ा अधिक पीछे तक ही जाती है;[1264]

ग) खलदीयियों और मिस्रवासियों के खगोलीय अवलोकन मसीह के जन्म से मुश्किल से आठ सौ साल पहले के हैं, जबकि भारतीयों और चीनी लोगों की खगोलीय तालिकाएँ और भी हाल की हैं।[1265] आम तौर पर, वे सभी ऐतिहासिक स्मारक जिनके बारे में कुछ लोगों ने उल्लेखनीय प्रामाणिकता बताई थी, अब वे किसी भी तरह से इतने पुराने नहीं पाए गए हैं, और वे महाप्रलय के बाद की अवधि के हैं।[1266]

3. जो लोग दावा करते हैं कि मानव जाति की उत्पत्ति एक ही स्रोत से नहीं हुई बल्कि इसके कई पूर्वज थे, वे अपना प्रमाण निम्नलिखित से लेते हैं:

[1261] 'काइन ने अपनी पत्नी के रूप में किसे लिया?' धन्य थियोडोरेट पूछते हैं, और उत्तर देते हैं: 'स्पष्ट रूप से अपनी बहन को। उन दिनों यह कोई अपराध नहीं था, क्योंकि उस समय ऐसी संयुक्ति पर कोई कानून मनाही नहीं करता था। अन्यथा, मानव जाति का प्रसार शुरू से ही असंभव हो जाता' (जेनेसिस क्वेस्ट. 42, क्रि. खेत. 1843, III, 374)। *सेंट जॉन क्रिसिस्टम* (होमिल. XX इन जेनेस.), *सेंट एपिफेनियस* (हेरेस. XIX, n. 6) और *धन्य ऑगस्टीन* (डे सिविटाटे देई XV, 16) ने भी यही दृष्टिकोण अपनाया था।

[1262] *हेरोडोटस*, पुस्तक II, पृ. 55, 64, सं. स्टेफनी, 1566; *डायोडोरस सिकुलस*, *बibliotheca*, पुस्तक II, पृ. 118, हैनोवर, 1604; *बैली*, *ट्रेटे डे ल'एस्ट्रोनॉमी इंडियन एट ओरिएंटल*, पृ. 110, 129 ff., पेरिस, 1787.

[1263] *सिसेरो*, *दे डिविनिबस*, 1.1, §19; *डायोजनीस लार्टियस*, पुस्तक IX, अनुभाग 35.

[1264] *वोल्टेयर जोन्स। *De la chronologie des Hindous* (Recherches sur l'Asie, खंड 2)। *एबेल रेमुसेट*, *Nouveaux mélanges asiatiques*, खंड 1, पृ. 61, पेरिस 1829; *ओ. इओकिमिफा*— स्टेटिस। चीनी साम्राज्य का वर्णन, भाग 1, पृ. 159, 161, सेंट पीटर्सबर्ग 1842। बाद वाले के अनुसार, उनके अतीत के लाखों वर्षों के अस्तित्व से संबंधित चीनी परंपराएं, आधारहीन होने के साथ-साथ, और भी, बकवासों से भरी होने के कारण, चीनी इतिहासकारों द्वारा स्वयं स्पष्ट रूप से खारिज कर दी गई हैं।

[1265] *ला प्लेस*, *एक्सपोज़िशन डे सिस्टेम डू मोंडे*, पुस्तक V, अध्याय 1, पृ. 291, 294; *क्लैप्रोथ*, *मेमोयर रिलेटिफ्स ए एल'एशी*, पृ. 397, पेरिस 1824.

[1266] अधिक विस्तृत विवरण के लिए, ग्लेयर देखें: *लेस लिव्रे सेंट वेंजे*, खंड I, पृ. 127–239; यहाँ लेखक सबसे पहले खलदीयों, मिस्रवासियों, भारतीयों और चीनी लोगों के इतिहासकारों, और इन लोगों के बीच खगोल विज्ञान की स्थिति पर चर्चा करते हैं; फिर वे क्रम से, इन लोगों में से प्रत्येक के इतिहास-वृत्तों, खगोलीय आंकड़ों और कलाकृतियों की जांच करते हैं; अंत में, वे उस सत्य के खिलाफ उठाए गए आपत्तियों का खंडन करते हैं, जिनका वे बचाव करते हैं, जो प्राकृतिक इतिहास से ली गई हैं।

a) शारीरकि रचना वज्ञिान, या मानव शरीर के गुणों का अध्ययन करने वाले वज्ञिान से, और मुख्य रूप से लोगों की त्वचा के रंग में स्पष्ट अंतर की ओर इशारा करते हैं, जो उदाहरण के लिए यूरोपीय लोगों में सफेद और अश्वेत लोगों में पूरी तरह से काला होता है; और चेहरे के कोण में समान रूप से स्पष्ट अंतर की ओर, जो कुछ में 85 डग्रिी तक फैला होता है, जबकि दूसरों में 60 तक उतर जाता है। हालाँकि, इनके साथ-साथ मानव जातयिों के बीच देखे गए सभी अन्य अंतरों की व्याख्या करने के लिए, यह मान लेना कसिी भी तरह से आवश्यक नहीं है कि उनक , उनकी उत्पत्ति में अंतर है — उत्कृष्ट प्राकृतकि वज्ञिानी की गवाही के अनुसार, ये अंतर आकस्मकि कारणों से उत्पन्न होते हैं, जैसे: जलवायु में अंतर और, वशिेष रूप से, तापमान की वभिन्नि डग्रिी, जंगलों और दलदलों से वाष्पीकरण, समुद्र तल से मट्टिी की ऊँचाई, पहाड़ों की संख्या, ऊँचाई और व्यवस्था, और हवाओं की दशिा; साथ ही आहार, पेय, जीवन शैली और व्यवसाय में अंतर; माता-पतिा से दूर के वंशजों को संक्रामति होने वाली बीमारयिाँ, जनजातयिों का मश्रिण, और इसी तरह। वशिेष रूप से, त्वचा के रंग में अंतर मुख्य रूप से जलवायु में अंतर और, सबसे बढ़कर, तापमान पर नर्भिर करता है। इस प्रकार, दुनयिा के वभिन्नि हस्सिों में बखिरे हुए एक ही यहूदी लोगों में, रंगों की पूरी श्रृंखला पाई जाती है, सबसे गोरे रंग से लेकर, जो उनमें से कई के अफ्रीका में होता है। चेहरे के कोणों में अंतर वभिन्नि मानव पीढ़यिों में मानसकि क्षमताओं के भन्नि वकिास पर नर्भिर करता है: जैसे-जैसे व्यक्तयिों और लोगों में बौद्धकि क्षमताएं वकिसति होती हैं और आगे बढ़ती हैं, वे मस्तष्कि के वकिास को प्रभावति करती हैं, जो वचिार का प्रत्यक्ष अंग है; और मस्तष्कि का वकिास खोपड़ी के नर्मिाण को प्रभावति करता है, जसिके परणिामस्वरूप चेहरे के कोणों में अंतर उत्पन्न होता है। इस बात की पुष्टि अश्वेत लोगों पर कए गए कई प्रयोगों से होती है, जनिकी मानसकि शक्तयिाँ सुप्त हैं और जनिके चेहरे का कोण सबसे कम डग्रिी का होता है। जब इनमें से कुछ जंगली लोगों को सभ्य समाज में स्वीकार कयिा जाता है और दूसरों की सहायता से, वे धीरे-धीरे अपनी संज्ञानात्मक क्षमताओं का उपयोग करने, उन्हें वकिसति करने और परष्कृित करने लगते हैं, तो बाद में उनकी खोपड़ी की संरचना धीरे-धीरे बदल जाती है, और उनका चेहरे का कोण बढ़ जाता है। हालांकि यह स्वयं व्यक्तयिों में अभी तक बहुत ध्यान देने योग्य नहीं हो सकता है, लेकनि यह उनके बच्चों, पोते-पोतयिों और परपोते-परपोतयिों में काफी स्पष्ट हो जाता है। संयुक्त राज्य अमेरकिा और वेस्ट इंडीज में, इस तरह के उदाहरण बहुत बार देखने को मलिते हैं। इसके अलावा, यह ज्ञात है कि अमेरकिा के कई स्वदेशी लोग, सुमात्रा द्वीप और अन्य पूर्वी भारतीय द्वीपों के नविासी, कैरबि, एंटलि के अश्वेत और अन्य लोग लंबे समय से अपने बच्चों की खोपड़ी को मनमाना, पसंदीदा आकार देने की आदत में रहे हैं, और वभिन्नि कृत्रमि साधनों द्वारा पालने में ही शशिु के सरि को वकिृत कर देते हैं।[1267]

ख) भाषा वज्ञिान से , जो भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन से संबंधति वज्ञिान है। वे कहते हैं, 'यह नहीं हो सकता कि इतहिास और सांख्यकिी से हमें ज्ञात इतनी बड़ी संख्या और इतनी ववििधिता वाली भाषाएँ और बोलयिाँ, मानव जाति के एक ही पूर्वज, एक ही व्यक्ति की भाषा से उत्पन्न हुई हों।' लेकनि अब सबसे उत्कृष्ट भाषावद्, लंबे और परश्रिमी शोध के बाद, इस नष्किर्ष पर पहुँचे हैं कि सभी भाषाएँ और सभी मानव बोलयिाँ तीन मुख्य वर्गों से संबंधति हैं: इंडो-यूरोपीय, सेमटिकि और मैलायो-पॉलनिेशयिन, और उनकी उत्पत्ति एक ही मूल से होती है, जसिे वे हब्रिू भाषा में पहचानते हैं, जबकि अन्य इसे नर्दिष्टि नहीं करते हैं।[1268] जहाँ तक इस बात का सवाल है कि एक ही पूर्वज की संतानों के बीच आरंभ में वभिन्नि बोलयिाँ कैसे उत्पन्न हुईं, पवत्रि वंशावलीकार ने जीभों के चमत्कारकि भ्रम (उत्पत्ति 11:1–10) के अपने वृत्तांत में इसका स्पष्टीकरण दयिा है।

c) भूगोल से । कहा जाता है कि अमेरकिा महासागरों द्वारा पुराने वशि्व से पूरी तरह अलग था, और 15वीं सदी तक उस वशि्व के नविासयिों के लिए अज्ञात रहा। हालांकि, जब 15वीं सदी में कोलंबस ने इसकी खोज की, तो पाया गया कि यह काफी घनी आबादी वाला था। तो फरि, स्वदेशी अमेरकिी कहाँ से आए, यदि उनके अपने कसिी वशिष्टि पूर्वज, जो कई में से एक था, नहीं था?" लेकनि अब इस बात में कोई संदेह नहीं है कि प्राचीन लोग अमेरकिा के अस्तत्वि से अवगत थे, जैसा कि प्लेटो, डायोडोरस सकिुलस, प्लूटार्क, जोसेफस, वर्जलि, प्लनिी, सेनेका, रोम के संत क्लेमेंट और अन्य के

1267 *ब्लूमेनबैक*, *मैनुअल डी'हस्टि. नेचुरेले*, जर्मन से अनुवादति, खंड 1, पृष्ठ 77–80, मेट्ज़ 1803; *प्रचिर्ड*, *Histoire naturelle de l'homme et des différentes races humaines*, खंड 1, पृ. 139, 176, पेरसि 1843; *वाइज़मैन*, *Discours sur les rapports entre la science et la religion révélée*, पृ. 96–141, पेरसि 1843.

1268 *वाइज़मैन*। पूर्वोक्त, पृ. 1–96।

वृत्तांतों से स्पष्ट है।[1269] यह भी सद्धि हो चुका है कि कोलंबस से कई शताब्दियों पहले, अमेरिका न केवल ज्ञात था बल्कि फिनिशियाई, मिस्रवासियों, कार्थेजवासियों, चीनी, तातार, कामचादल, कोरियाक, कल्मिक और स्कैंडिनेवियाई लोगों द्वारा भी यहाँ आकर बस्तियाँ बसाई गईं। वे उन मार्गों की भी पहचान करते हैं जिनसे पुरातन विश्व के निवासी बहुत आसानी से अमेरिका पहुँच सकते थे, जैसे कि कुक जलडमरूमध्य और बेरिंग जलडमरूमध्य जैसे संकरे मार्ग, जिन्हें चुक्ची लोग अमेरिका के उत्तर-पूर्वी तटों के निवासियों के साथ युद्ध करने (जो लगभग हर साल होता है) के लिए अभी भी आसानी से पार कर लेते हैं; या उन द्वीपों की शृंखला की ओर जो कामचटका से लेकर उत्तर-पश्चिमी अमेरिका में अलास्का प्रायद्वीप तक अखंड रूप से फैली हुई है, और इसी तरह। इस बात का स्पष्ट प्रमाण कि अमेरिका के निवासी स्वदेशी नहीं हैं, बल्कि पुरानी दुनिया से वहां प्रवास करके आए हैं, एशिया और यूरोप के लोगों की कई मान्यताओं और रीति-रिवाजों से मिलता है जो आज भी उनके बीच मौजूद हैं — उदाहरण के लिए: महाप्रलय का किंवदंती, उसमें एक ही परिवार के उद्धार की कथा, शिशुओं का खतना, सब्बाथ का पालन, हर पचासवें वर्ष एक जubilee का उत्सव; साथ ही बेबीलोनियन वास्तुकला के मंदिर और मीनारें, तातार राशि चक्र के चिन्ह, कलमीक्स की चेहरे की बनावट, नॉर्मन रूनस, कोरियाक्स की बोलियाँ, और इसी तरह की अन्य बातें।[1270]

[1271]आधुनिक विज्ञान के श्रेय के लिए, यह सामान्य रूप से ध्यान देने योग्य है कि आजकल यह भी, अपने सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधियों के माध्यम से, मानव जाति की संपूर्ण समान उत्पत्ति को सहजता से स्वीकार करता है।

§79. प्रत्येक मानव का मूल और, विशेष रूप से, आत्माओं का मूल

यद्यपि इस प्रकार सभी लोग प्राकृतिक जन्म के माध्यम से प्रथम माता-पिता से उत्पन्न हुए हैं, फिर भी ईश्वर प्रत्येक मानव का स्रष्टा है। एकमात्र अंतर यह है कि उसने आदम और हव्वा को सीधे सृजित किया, जबकि वह उनके सभी वंशजों को अप्रत्यक्ष रूप से—अपने *आशीर्वाद की* शक्ति द्वारा सृजित करता है, जो उसने हमारे पूर्वजों को उनके सृजन के तुरंत बाद प्रदान किया, यह कहते हुए: *'फलो-फूलो और बढ़ो, और पृथ्वी को भर* दो' (उत्पत्ति 1:28), और जो एक बार सर्वशक्तिमान के वचन के रूप में कहा गया है, वह समय के अंत तक अपनी प्रभावशीलता नहीं खोएगा। इसीलिए पवित्र शास्त्र कहता है कि ईश्वर ने न केवल हमारे प्रथम माता-पिता को बनाया, बल्कि—

क) *एक ही रक्त से उसने संपूर्ण मानव जाति को संसार के समस्त चेहरे पर बसने के लिए उत्पन्न किया* (प्रेरितों के काम 17:26), *और उसने स्वयं सभी को जीवन और श्वास दिया* (25)।

ख) वह प्रत्येक मानव को बनाता है। *'तेरे हाथों ने मुझे बनाया और मुझे पूरी तरह से आकार दिया है,'* इयोब और भजनकार उद्घोष करते हैं (इयोब 10:8; भजन 118:73) और अन्य अंशों में: *'ईश्वर की आत्मा ने मुझे बनाया* (इयोब 33:4); 'आप मेरे पीछे और मेरे सामने से घेरे हुए हैं' (भजन संहिता 138:5)। परमेश्वर स्वयं यिर्मयाह से कहते हैं: *'मैंने तुम्हें गर्भ में बनाने से पहले ही तुम्हें जाना, और तुम्हारे जन्म से पहले ही मैंने तुम्हें अलग कर रखा था; मैंने तुम्हें राष्ट्रों के लिए भविष्यवक्ता नियुक्त किया* (यिर्म. 1:5)।

ग) वह मानव शरीर का निर्माण करता है: *'तू ने मुझे चमड़ी और मांस से ढाया, और हड्डियों और स्नायुओं से मुझे जोड़ दिया* (अय्यूब 10:11); *'जब मैं गुप्त में बन रहा था, तब मेरी हड्डियाँ तुझ से छिपी नहीं थीं* (भजन संहिता 138:15; तुलना करें भजन संहिता 32:15), — इसलिए ये ही पवित्र लेखक परमेश्वर के सामने यही पुकार लगाते हैं।

[1269] *प्लेटो* के संवाद: *टायमेयस और क्रिटियास; डायोडोरस सिकुलस,* पुस्तक III, अध्याय 55; पुस्तक V, अध्याय 19–20; चंद्र की डिस्क की उपस्थिति पर पुस्तक; *जोसेफस,* द ज्यूइश वॉर, पुस्तक II, अध्याय 16; *वर्जिल,* एनीड, पुस्तक VI, पंक्ति 796; *प्लिनी* द एल्डर, पुस्तक II, अध्याय 67; *सेनेका,* *मेडिया*; *होरेस,* *ओड्स*, पुस्तक 1, पंक्तियाँ 21 और बाद की; *टिबुलस,* पुस्तक IV, कविता 1, पंक्तियाँ 147 और बाद की; *ओपेरा एसएस. पैट्रम, क्वि टेम्पोर. एपोस्टोल. फ्लोरुएरंट*, सं. *कोटेलर,* 1700, खंड 1, पृ. 158.

[1270] देखें *ड्यूबर की* *Geschichte der Schiffahrt im Atlantischem Ocean*, बाम्बर्ग 1814; *Antiquités Mexicaines*, पेरिस, 1834, विशेष रूप से भाग II: *Recherches sur les peuples primitifs de l'Amérique*; *हम्बोल्ट,* *Vues des Cordillères*… खंड 1, पृ. 235–240; *क्रैशेनिनिकोव,* *इतिहास ऑफ़ कामचटका*, भाग I, अध्याय 21, और भाग II, अध्याय 10; *मालते ब्रून,* *प्रसिद्धि डे ला जियोग्राफी यूनिवर्सले*, खंड V, पृ. 107, 572, सं. 1821; *एंटिक्विटिटिस अमेरिकानाए*, हौनयि 1837।

[1271] अर्थात्: लासेपेड (बफ़ोन की मृत्यु के बाद से प्राकृतिक विज्ञान की कई शाखाओं की प्रगति का एक सामान्य अवलोकन, पेरिस, 1822; पृ. 84), प्रिचर्ड (उपरोक्त टिप्पणी 1267 देखें) और *अलेक्जेंडर वॉन हम्बोल्ट* (उनका **कोसमॉस** देखें, जिसका रूसी में एन. फ्लोरोव द्वारा अनुवाद, सेंट पीटर्सबर्ग, 1848 में किया गया)।

(d) वह मानव आत्मा का सृजन करता है। यह वचिार व्यक्त कयिा गया है: उपदेशक: *'और मट्टिी फरि उसी पृथ्वी पर लौट जाएगी, जैसी वह थी, और आत्मा उस परमेश्वर के पास लौट जाएगी जसिने उसे दयिा* था' (उपदेशक 12:7); और भवषि्यवक्ता यशायाह: *'इस प्रकार परमेश्वर यहोवा कहता है, जसिने आकाशों और उनकी वसि्तार को बनाया, जसिने पृथ्वी और उस पर की सब वस्तुओं को फैलाया, जो उस पर रहने वालों को प्राण और उस पर चलने वालों को आत्मा देता है* (यशायाह 42:5, तुलना करें 57:16); नबी ज़कार्याह: *'यहोवा यों कहता है, जसिने आकाश को ताना, पृथ्वी की नींव डाली, और मनुष्य के भीतर उसकी आत्मा बनाई'* (ज़कार्याह 12:1)। फरि भी, पुराने नयिम की कलीसयिा का यह वश्विास एक धर्मनषि्ठ यहूदी महलिा द्वारा अत्यंत स्पषि्टता के साथ व्यक्त कयिा गया था, जसिने एंटओिकस के उत्पीड़न के दौरान, अपने बच्चों को परमेश्वर के कानून के लिए मृत्यु का सामना करने के लिए प्रोत्साहति करते हुए, उनसे कहा: *'मैं नहीं जानती कि तुम मेरी कोख में कैसे आए: यह मैं नहीं थी जसिने तुम्हें प्राण और जीवन दयिा; यह मैं नहीं थी जसिने तुम में से प्रत्येक की रचना की। इसलिए, संसार का सृषि्टकिर्ता, जसिने मानव स्वभाव को गढ़ा और सभी चीजों की उत्पत्ति को नरि्धारति कयिा, अपनी दया में आपको फरि से श्वास और जीवन प्रदान करेगा, क्योंकि आप अब उसके नयिमों के लिए अपनी जान भी बख्शते नहीं हैं'* (2 मक्काबी 7:22-23)।

वशिेष रूप से, मानव आत्माओं की उत्पत्ति के प्रश्न के संबंध में, ऑर्थोडॉक्स चर्च ने, उपर्युक्त ग्रंथों के आधार पर, हमेशा यह माना है—और मानता आ रहा है (ऑर्थोडॉक्स कन्फेशन, भाग 1, प्रश्न 28 का उत्तर)—कि वे ईश्वर द्वारा रचति हैं। इस बात की पुषि्ट नसि्संदेह पाँचवें सार्वभौमकि परषिद, , द्वारा की गई थी, जब उसने मानव आत्माओं की पूर्व-अस्तति्व पर ओरजिन के वचिार[1272] की नदिा करते हुए कहा: "चर्च, दैवीय वचनों का अनुसरण करते हुए, पुषि्ट करती है कि आत्मा शरीर के साथ ही बनाई जाती है, और इस तरह नहीं कि एक पहले बनाई जाती है और दूसरी बाद में, ओरजिन की झूठी शकि्षा के अनुसार।"[1273] पूर्वी चर्च के संबंध में, कम से कम, इस बात की पुषि्ट धन्य थयिोडोरेट ने गवाही दी: "पवत्रि चर्च, दव्यि धर्मग्रंथों में वश्विास करते हुए, यह सखिाती है कि आत्मा शरीर के साथ ही बनाई जाती है, लेकनि इस तरह से नहीं कि वह उसी बीज से उत्पन्न होती है जसिसे शरीर का नरि्माण होता है, बल्कि यह कि, सृषि्टकिर्ता की इच्छा से, यह उसके नरि्माण के तुरंत बाद शरीर में प्रकट हो जाती है।"[1274]

पश्चमिी चर्च की ओर से, इसकी पुषि्ट रोम के पोप संत लयिो और धन्य जेरोम ने की थी। पहले वाले कहते हैं, "कैथोलकि धर्म यह स्वीकार करता है कि प्रत्येक मानव, शरीर और आत्मा में, सभी चीजों के स्रषि्टा द्वारा गर्भ में नरि्मति और जीवंत कयिा जाता है, हालांकि, इस तरह से कि पाप और मृत्यु का दाग, जो पहले माता-पति से उनकी संतान में चला आता है, बना रहता है।"[1275] और धन्य जेरोम पूछते हैं: "सभी लोगों की आत्माएँ कहाँ से आती हैं? क्या वे उनके माता-पति से (ex traduce), अतर्कशील जानवरों की तरह आती हैं, ताकि जैसे शरीर शरीर से जन्म लेता है, वैसे ही आत्मा आत्मा से जन्म लेती है? या क्या तर्कशील प्राणी, शरीरों के प्रति प्रेम से पृथ्वी पर उतरकर, मानव शरीरों के साथ स्वयं को जोड़ते हैं? या वास्तव में, जैसा कि चर्च उद्धारकर्ता के शब्दों के आधार पर सखिाती है: *'मेरा पति अब भी कार्यरत है, और मैं भी कार्यरत हूँ'* (यूहन्ना 5:17); और जकर्याह के शब्दों के आधार पर: 'प्रभु, *जसिने मनुष्य के भीतर उसकी आत्मा को बनाया* (जकर्याह 12:1); और भजनकार के वचन: *'वह उन सब के हृदय बनाता* है' (भजन संहति 32:15)—क्या ईश्वर, जसिकी इच्छा पहले से ही एक करम है, और जो सृषि्टकिर्ता बने रहना कभी बंद नहीं करते, प्रतदिनि आत्माओं

[1272] इस दृषि्टकोण के अनुसार सभी मानवीय आत्माएँ आरंभ में एक साथ बनाई गई थीं, और बाद में, जब उन्होंने पाप कयिा, तो उन्हें दंड के रूप में और पाप से शुद्धकिरण के लिए मानव शरीरों में भेजा गया। ओरजिन के अलावा, यह दृषि्टकोण *मेथोडयिस* (*Compefis*. Auct. PP. noviss, p. 97) द्वारा भी अपनाया गया था; *मैकारयिस वक्टिोरनिस* (इन एफेस. (I, 4,7)); *सनिेसयिस* (हाइमन. I, 89 ff.; III, 558); साथ ही *मनखियिों* (अपुड हएिरॉन. एपसि्ट. XXXVIII); *प्रसिलियिनवादयिों* (अपुड *ऑगस्टनि. हेरेस.* एपसि्ट. LXX) और अन्य।

[1273] चर्च, दैवीय शकि्षाओं का अनुसरण करते हुए, यह मानती है कि आत्मा शरीर के साथ सह-सृजति है, और इनमें से कोई भी दूसरे से पूर्व नहीं है, जो ओरजिन के भ्रम (apud *Mansi* IX, p. 396 ff.) के वपिरीत है।

[1274] दव्यि सदि्धांतों का सारांश, अध्याय IX, *क्रशि्चयिंस रीडगि्स* 1844, IV, 221 में।

[1275] कि प्रसि्कलियिन की यह त्रुटि *कैथोलकि वश्विास* के वपिरीत और उससे असंगत है, जो यह स्वीकार करता है कि हर मानव को गर्भ में ही ब्रह्मांड के स्रषि्टा द्वारा शरीर और आत्मा की सत्ता से आरंभ से ही आकार दयिा जाता है और उसमें प्राण डाले जाते हैं — बेशक, पाप और मृत्यु के संक्रामण के बावजूद जो प्रथम माता-पति से संतान में जाता है (पैट्रोलॉजयिा कर्सस कम्प्लेटस, खंड LIV, पृ. 684 में, प्रसि्कलियिन की त्रुटयिों पर तुर्रबिस को पत्र XV, अध्याय 9)।

का सृजन करते हैं?"[1276] हमें चर्च के व्यक्तिगत शिक्षकों का उल्लेख करने की भी आवश्यकता नहीं है: लैक्टैंटियस,[1277] एम्ब्रोस, एफ्रेम द सीरियन, अलेक्जेंड्रिया के सिरिल, जेनाडियस[1278] और अन्य, जो अपने लेखों में स्पष्ट रूप से घोषणा करते हैं कि मानव आत्माएँ ईश्वर द्वारा रची जाती हैं।

तो, हम आत्माओं की इस रचना को कैसे समझें? चर्च स्वयं इसे सटीक रूप से परिभाषित नहीं करती है; लेकिन, पाँचवें सार्वभौमिक परिषद, धन्य थियोडोरेट और, विशेष रूप से, संत लियो द्वारा प्रस्तुत साक्ष्यों के आधार पर, और चर्च के अन्य धर्मसिद्धान्तों के अनुसार, यह मानना चाहिए कि यहाँ जिसका अर्थ है वह ईश्वर की प्रत्यक्ष सृष्टि नहीं है, बल्कि एक अप्रत्यक्ष सृजन है — कि ईश्वर मानव आत्माओं को उसी आशीर्वाद — *'फलो-फूलो और बढ़ो* — के अंतर्गत सृजित करता है, जो उसने आरंभ से ही हमारे प्रथम माता-पिता को प्रदान किया था; वह उन्हें शून्य से नहीं, बल्कि माता-पिता की आत्माओं से सृजित करता है। क्योंकि, चर्च की शिक्षा के अनुसार, यद्यपि मानव आत्मा सृष्टि के माध्यम से अस्तित्व में आती है, यह इस तरह से होता है कि मूल पाप का दाग उनके माता-पिता से उन पर منتقل हो जाता है—और ऐसा नहीं हो सकता था यदि ईश्वर ने उन्हें शून्य से बनाया होता। क्या यह कहा जाएगा कि माता-पिता की आत्माओं से आत्माओं का ऐसा सृजन हमारे लिए पूरी तरह से अकल्पनीय है, जबकि मानव आत्मा एक सरल सत्ता है? यह सच है। लेकिन यह भी हमारे लिए पूरी तरह से अकल्पनीय है कि ईश्वर, जो परम आत्मा हैं, बिना किसी विभाजन के अपनी ही सत्ता से अपने पुत्र को जन्म दे सकें और पवित्र आत्मा का प्रवाह कर सकें... इसीलिए चर्च के प्राचीन शिक्षकों ने भी बार-बार कहा कि हमारी आत्माओं के सृजन का रहस्य केवल ईश्वर ही जानता है।[1279] यह मानकर कि मानव आत्माएँ उनके माता-पिता की आत्माओं से उत्पन्न होती हैं, हम स्वाभाविक रूप से निम्नलिखित को अस्वीकार करते हैं:

(क) यह दृष्टिकोण कि आत्मा माता-पिता के बीज से उत्पन्न होती है, जिससे शरीर भी उत्पन्न होते हैं — एक ऐसा दृष्टिकोण जो स्पष्ट रूप से मानव आत्मा की भौतिकता और शरीर के साथ उसकी नश्वरता को दर्शाता है;[1280]

b) यह दृष्टिकोण कि आत्माएँ अपने माता-पिता की आत्माओं से अपने आप उत्पन्न होती हैं, ठीक वैसे ही जैसे शरीर शरीरों से उत्पन्न होते हैं—एक ऐसा दृष्टिकोण जो अनिवार्य रूप से आत्मा की विभाज्यता और, परिणामस्वरूप, उसकी भौतिकता और नश्वरता का संकेत देता है, क्योंकि एक ऐसा अस्तित्व जो पूरी तरह से अद्रव्य है, वह बिना किसी विशेष सृजनात्मक सर्वशक्तिमान शक्ति के, स्वयं से कोई अन्य अस्तित्व उत्पन्न नहीं कर सकता;[1281]

ग) अंत में, यह दृष्टिकोण कि मानव आत्माएँ ईश्वर द्वारा शून्य से बनाई जाती हैं और ईश्वर द्वारा शरीरों में भेजी जाती हैं, जिसे प्राकृतिक जन्म के माध्यम से माता-पिता से बच्चों में मूल पाप के संचरण से संबंधित ऑर्थोडॉक्स चर्च के सिद्धांत के साथ सामंजस्य स्थापित करना मुश्किल है।[1282]

[1276] ...और वास्तव में (जैसा कि उद्धारकर्ता के वचनों के अनुसार *चर्च की शिक्षा है*...) ईश्वर प्रतिदिन आत्माओं का सृजन करता है; क्योंकि जो सृजन करना चाहता है, वह स्रष्टा होना कभी बंद नहीं करता (Contra Joan. Hierosolym. ad Pammach., अध्याय 22, Patrolog. curs. compl., खंड XXIII, पृष्ठ 372–373)।

[1277] एक शरीर शरीरों से उत्पन्न हो सकता है… लेकिन एक आत्मा आत्माओं से उत्पन्न नहीं हो सकती, क्योंकि उस चीज़ से कुछ भी उत्पन्न नहीं हो सकता जो शाश्वत और अगोचर है। अत; आत्माओं की उत्पत्ति केवल ईश्वर के अधीन है (Div. Instit. III, 18; cf. 11, 12 और De Opif. Dei, chap. 19)

[1278] *एम्ब्रोसियस*, *डी नोए*: मनुष्य आत्मा का सृजन नहीं कर सकता; *हिलरी*, *डी ट्रिनिटेट* X, 20: हर आत्मा ईश्वर का कार्य है; शरीर का जन्म हमेशा शरीर से ही होता है; *एफ्रेम*, *डी इंस्पीरेट.*; *सिरिल ऑफ़ अलेक्जेंड्रिया*, *एडवर्सस नेस्टोरियम*, पुस्तक I, *ऑप.*, खंड VI, पृ. 18, लुट. 1638; *जेनाडियस*, *डे एक्लेसियाई डॉग्मैटिसि*, अध्याय XIV, XVIII।

[1279] *अलेक्जेंड्रिया के सिरिल*, *एडवर्सस नेस्टोरियम*, पुस्तक 1: 'यह निस्संदेह मांस से उत्पन्न होता है, या मांस के रूप में स्वीकार किया जाता है; लेकिन सभी चीजों का सृष्टिकर्ता, उस तरीके और उस वचन से जिसे वह जानता है, आत्मा को अस्तित्व में लाता है।' *जेनाडियस*, *डे इक्लेसिया*, Dogmat., अध्याय XIV: हम कहते हैं कि केवल सभी वस्तुओं का स्रष्टा ही आत्मा की सृष्टि को जानता है; *Hilar*. on Psalm CXI:3: प्रतिदिन आत्माओं की उत्पत्तियाँ हमारे लिए छिपी और अज्ञात रूप से दिव्य शक्ति के कार्य द्वारा होती हैं।

[1280] यह दृष्टिकोण लुसिफेरियन विधर्मियों (*ऑगस्टीन*, *Haeres.* LXXXI; *जेनाडियस*, *De dogm. eccles.*, अध्याय XVI): 'यदि आत्मा,' पूर्वी कैथोलिक और प्रेरित चर्च की रूढ़िवादी व्याख्या में कहा गया है, 'उसी बीज से उत्पन्न होती जिस बीज से शरीर उत्पन्न होता है, तो वे साथ में मर जाते,' भाग 1, प्रश्न 28 का उत्तर।

[1281] धन्य जेरोम की गवाही के अनुसार, यह दृष्टिकोण टर्टुलियन, विधर्मी अपोलिनारिस, और कई पश्चिमी ईसाइयों द्वारा अपनाया गया था (एपिस्ट. 78 एड मार्सेल. एट एनाप्साइको., एड. *मार्ट.*)। *ओरिजिन* (इन मैथ. टी. XV, एन. 35); *जेरोम* (इन एक्लेस. XII, 7); *लैक्टैंटियस* (डिवि. इंस्टिट्यूट. III, 18); *जेनाडियस* (डे डॉग्म. इक्लेस. सी. XIV), और अन्य।

[1282] स्टीफन यावोर्स्की द्वारा लेख: *'एक्सपोजिशन ऑफ थियोलॉजिकल क्वेश्चंस*, क्रि. ख्त. 1844, 400–413 में प्रस्तावित सुलह की विधि देखें, और तुलना करें *थियोफ. प्रोकोपोव*, ऑर्टोड. थियोलॉग., खंड II, पृ. 37–45।

तो फरि, मानव आत्माएँ कब सृजति होती हैं और शरीरों के साथ एकीकृत होती हैं? एक भौतकि इकाई के रूप में शरीर का नरि्माण माँ के गर्भ में धीरे-धीरे होता है; जबकि आत्मा, एक सरल इकाई होने के कारण, केवल क्षण भर में ही बनाई जा सकती है, और वास्तव में, ऑर्थोडॉक्स चर्च की शकि्षा के अनुसार, 'उस समय बनाई और प्रदान की जाती है जब शरीर पहले से ही बन चुका होता है और उसे ग्रहण करने में सक्षम हो जाता है' (ऑर्थोडॉक्स कन्फेशन, भाग 1, प्रश्न 28 का उत्तर)। यह चर्च के प्राचीन शकि्षकों: अलेक्जेंड्रिया के सरिलि, ऑगस्टीन, थियोडोरेट, जेनाडियस और अन्य की भी शकि्षा थी,[1283] और उनके शब्दों के समर्थन में उन्होंने भवषि्यवक्ता मूसा के शब्दों की ओर इशारा कयिा: नरि्गमन 21:22-24। यहाँ, उदाहरण के लिए, यह देखा जा सकता है कि धन्य थियोडोरेट ने अपने वचिार को कैसे समझाया है: 'वही भवषि्यवक्ता (मोशे) अपने कानूनों में और भी स्पष्ट रूप से सखिाते हैं कि शिरीर पहले बनता है, और फरि उसमें आत्मा प्रवषि्ट होती है। क्योंकि एक गर्भवती महलिा को मारने वाले के बारे में बात करते हुए, वह यह कानून नरि्धारति करता है: *यदि कोई एक गर्भवती महलिा को मारता है और उसका बच्चा अभी तक आकार नहीं ले पाया है, तो दोषी पक्ष से जुर्माना वसूला जाएगा; उसे हुए नुकसान की भरपाई करनी होगी। लेकनि यदि भ्रूण पूरी तरह से वकिसति हो चुका है, तो वह जीवन के बदले जीवन, आँख के बदले आँख,* और इसी तरह *देगा* (नरि्गमन 21:22-24)। इससे वह यह स्पष्ट करता है कि *एक अवकिसति* या अपूर्ण भ्रूण में अभी तक आत्मा नहीं होती है, जबकि एक पूरी तरह से वकिसति भ्रूण में होती है।"[1284] दूसरी ओर, पवत्रि धर्मग्रंथ के अन्य अंशों की ओर भी इशारा कयिा जा सकता है जो दखिाते हैं कि शशिु, अपनी माँ के गर्भ में रहते हुए और जन्म से पहले ही, आत्मा रखते हैं। उदाहरण के लिए, रेबेका के बारे में यह उल्लेख है: 'उसके गर्भ में बच्चों ने संघर्ष करना शुरू कर दयिा' (उत्पत्ति 25:22); संत एलजिाबेथ परम पवत्रि कुंवारी मरयिम के सामने अपने बारे में कहती हैं: *'जैसे ही आपके अभविादन की ध्वनि मेरे कानों तक पहुँची, मेरा बच्चा मेरी गर्भ में आनंद से उछल पड़ा* (लूका 1:44); तुलना करें यरि्मयाह 1:5.

§80. मनुष्य की संरचना

ऑर्थोडॉक्स चर्च की शकि्षा के अनुसार, मनुष्य 'एक अद्रव्य और तर्कशील आत्मा और एक भौतकि शरीर से मलिकर बना है' (ऑर्थोडॉक्स कन्फेशन, भाग 1, प्रश्न 18 का उत्तर); परणिामस्वरूप, वह दो भागों से बना है। और यह शकि्षा पुराने और नए दोनों नयिमों में पाई जाती है।

पुरानी वाचा में, मूसा, मनुष्य की उत्पत्ति का वर्णन करते हुए, उसके भीतर दो भागों को स्पष्ट रूप से अलग करते हैं: एक जो मट्टिी से बना है, और दूसरा जसिे परमेश्वर ने उसमें फूँका है: *'और यहोवा परमेश्वर ने मनुष्य को भूमि की धूलि से रचा, और उसके नाकों में जीवन की श्वास फूँकी* (उत्पत्ति 2:7)। इयोब अपने सांत्वना देने वाले मत्रिों से कहता है, अन्य बातों के अलावा: *'मेरे सामने चुप रहो, और मैं बोलूँगा, चाहे मुझे जो कुछ भी क्यों न हो। मैं अपने दाँतों से अपने शरीर को क्यों सताऊँ और अपनी आत्मा को अपने ही हाथों में क्यों सौंपूँ?'* (यशायाह 13:13–14)। भजनकार परमेश्वर के सामने पुकारता है: *'मेरी देह आशा में वशि्राम करेगी, क्योंकि आप मेरी आत्मा को अधोलोक में नहीं छोड़ेंगे, और न ही आप अपने पवत्रि जन को क्षय देखने देंगे* (भजन संहति 15:9–10)। उपदेशक, पवत्रि वंशावलीकार के मानव की उत्पत्ति के बारे में कहे अनुसार, उसकी मृत्यु के बारे में कहता है: *'और धूल फरि मट्टिी ही में लौट जाती है, और आत्मा उसी परमेश्वर के पास लौट जाती है जसिने उसे दयिा है* (उपदेशक 12:7)।

नए नयिम में हम पढ़ते हैं:

क) स्वयं मसीह के शब्दों को प्रेरतिों से कहते हुए: *'उनसे मत डरो जो शरीर को मारते हैं पर आत्मा को नहीं मार सकते; बल्कि उससे डरो जो आत्मा और शरीर दोनों को गेहेन्ना में नष्ट कर सकता है* (मत्ती 10:28); जहाँ यह पूर्ण नश्चितिता के साथ कहा गया है कि मनुष्य केवल शरीर और आत्मा से मलिकर बना है;

[1283] अलेक्जेंड्रिया के *सरिलि,* मस्रि के भक्षिुओं को प्रथम पत्र; *थियोडोरेट,* *इन एक्सोड.*, प्रश्न XLVIII; *ऑगस्टीन,* *एन एक्सोड.*, प्रश्न 80: 'कानून हत्या पर लागू नहीं होना चाहता था, क्योंकि एक जीवति आत्मा को उस शरीर में नहीं कहा जा सकता जो इंद्रयिहीन है, यदि ऐसी आत्मा अभी तक नरि्मति न हुए मांस में है और इसलिए उसे अभी तक इंद्रयि प्रदान नहीं की गई हैं'; *जॉन. फलिोपोन.* *डी मुंडी क्रीट.* VI, 25; *जेनाड.* *डी डॉग्म. इक्लेस.* अध्याय XIV: हम कहते हैं... कि आत्मा का सृजन होता है और उसे शरीर में तब प्रवाहति कयिा जाता है जब वह बन चुका होता है, ताकि आत्मा और शरीर से मलिकर बना एक मानव, गर्भ में जीवति रह सके और मानव तत्व से पूर्ण होकर गर्भ से जीवति बाहर आ सके। तुलना करें अध्याय XVIII।

[1284] ईश्वरीय सद्धिांतों का संक्षप्ति प्रतपिादन, अध्याय IX, द क्रश्चियिन रीडर, 1844, VI, 221–222.

ख) प्रेरति याकूब का कथन: *'जैसे आत्मा के बिना शरीर मृत है, वैसे ही कर्म के बिना विश्वास भी मृत है* (2:26);

ग) प्रेरति पौलुस के कथन में: *'अपने शरीरों और अपनी आत्माओं में परमेश्वर का गौरव करो, जो परमेश्वर के हैं* (1 कुरिन्थियों 6:20); दूसरा: *'कुँवारी स्त्री प्रभु के कामों में लगी रहती है, कि वह प्रभु को कैसे प्रसन्न करे, ताकि वह शरीर और आत्मा दोनों में पवित्र हो; परन्तु विवाहिता स्त्री संसार के कामों में लगी रहती है, कि वह अपने पति को कैसे प्रसन्न करे* (7:34); तीसरा: *'और मैं, यद्यपि शरीर से अनुपस्थित हूँ परन्तु आत्मा से तुम्हारे साथ उपस्थित हूँ और जैसे मैं तुम्हारे साथ उपस्थित हूँ वैसे ही मैं पहले से ही निर्णय कर चुका हूँ कि जिसने ऐसा काम किया है, उसे तुम्हारी सभा में, हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम पर, मेरी आत्मा के साथ, हमारे प्रभु यीशु मसीह की सामर्थ्य से, शरीर के नाश के लिए शैतान के हवाले कर दिया जाए, ताकि आत्मा हमारे प्रभु यीशु मसीह के दिन बचाई जाए* (5:3–5)।

उद्धृत धर्मग्रंथों के अंशों से यह स्पष्ट है कि कभी-कभी किसी व्यक्ति को शरीर और आत्मा (ἡ ψυχή) वाला बताया गया है, जबकि अन्य समयों में उसे शरीर और आत्मा (τό πνεῦμα) वाला बताया गया है। अतःयह निष्कर्ष निकलता है कि आत्मा और आत्मा (πνεῦμα) एक ही अंश के केवल भिन्न नाम हैं। इसके समर्थन में और उदाहरण दिए जा सकते हैं। मनुष्यों के लिए अपनी मृत्यु के समय अपनी मानव आत्मा का अपने शरीर से अलग होने की भविष्यवाणी करते हुए, उद्धारकर्ता ने कहा: *'जिस प्रकार पिता मुझे जानता है, वैसे ही मैं भी पिता को जानता हूँ; और मैं भेड़ों के लिए अपनी आत्मा* (ἡ ψυχή μοῦ) *त्यागता हूँ...' 'इसीलिए पिता मुझसे प्रेम करते हैं, क्योंकि मैं अपनी जान देता हूँ ताकि मैं उसे फिर से प्राप्त करूँ* (यूहन्ना 10:15, 17), और सूली पर अपनी पीड़ा शुरू होने से पहले, उन्होंने गेथ्सेमनी के बगीचे में अपने शिष्यों से कहा: *'मेरी आत्मा* (ἡ ψυχή μοῦ) *बहुत दुखी है* (मत्ती 26:38)। और सूली पर उसकी मृत्यु के उसी क्षण, यीशु ने ऊँचे स्वर में पुकार कर कहा: *'पिता! मैं अपनी आत्मा* (τό πνεῦμα μοῦ, लूका 23:46), और सुसमाचार लेखक, इस क्षण का वर्णन करते हुए लिखते हैं: *'और यीशु, फिर से ऊँचे स्वर से पुकार कर, अपनी आत्मा दे दी* (τό πνεῦμα, मत्ती 27:50), या: *'अपना सिर झुकाकर, उन्होंने अपनी आत्मा दे दी'* (τό πνεῦμα, यूहन्ना 19:30)। संत पौलुस, यूतीखुस नामक जवान को मृतकों में से जिलाने के बाद, उपस्थित लोगों से कहते हैं: *'घबराओ नहीं, क्योंकि उसकी आत्मा उसमें है* (प्रेरितों के काम 20:10); और संत लूका, उद्धारकर्ता द्वारा छोटी लड़की को जिलाने का वर्णन करते हुए कहते हैं: *'और उसकी आत्मा लौट आई, और वह तुरंत उठ खड़ी हुई* (लूका 8:55)।

हालांकि, यह सच है कि संत पौलुस के दो कथन हैं जिनमें आत्मा को स्पष्ट रूप से भावना से अलग किया गया है, और जिनमें मनुष्य को आत्मा, भावना और शरीर से मिलकर बना हुआ बताया गया है। पहला अंश इब्रानियों के नाम पत्र में मिलता है: *'ईश्वर का वचन जीवित और सक्रिय है, किसी भी दोधारी तलवार से अधिक तीक्ष्ण है: यह आत्मा और मन, जोड़ों और मज्जा तक प्रवेश करता है, और हृदय के विचारों और इरादों का न्याय करता है* (4:12); दूसरी थिस्सलुनीकियों को लिखी पत्री में मिलती है: *'शांति का परमेश्वर आप ही आपको पूरी तरह से पवित्र बनाए, और हमारी प्रभु यीशु मसीह के आने पर आपकी आत्मा, प्राण और शरीर निर्दोष रहे'* (1 थिस्स. 5:23)। लेकिन अगर परमेश्वर का वचन स्वयं का खंडन नहीं कर सकता; अगर यह मनुष्य में केवल दो भागों के बारे में इतनी बार और इतनी स्पष्ट रूप से बात करता है; अगर प्रेरित पौलुस स्वयं मनुष्य को इतनी स्पष्टता से केवल दो भागों का बना हुआ दर्शाते हैं (1 कुरिन्थियों 5:3–5; 6:20; 7:34)): तो यह नहीं हो सकता कि इन दो उल्लेखित अंशों में, आत्मा और मनुष्य में आत्मा को अलग, स्वतंत्र भागों के रूप में अलग किया गया हो, न कि किसी अन्य अर्थ में। वास्तव में, पहले अंश में, उन्हें केवल मनुष्य के एक ही आध्यात्मिक स्वभाव के दो पहलुओं या शक्तियों के रूप में ही अलग किया गया है: क्योंकि प्रेरित कहते हैं कि परमेश्वर का वचन *आत्मा और प्राण के विभाजन तक,* ठीक वैसे ही जैसे *जोड़ों और मज्जा तक, प्रवेश करता है;* लेकिन जोड़ों और मज्जा केवल एक ही मानव शरीर के अंग हैं, न कि मनुष्य के अलग-अलग हिस्से। इसी अंश के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अपने दूसरे कथन में, संत पौलुस भी मनुष्य में आत्मा और प्राण के बीच केवल उसके एक ही आध्यात्मिक स्वभाव के दो पहलुओं के रूप में अंतर करते हैं, या विशेष रूप से प्राण के भीतर की आत्मा को उसकी उच्चतम क्षमता के रूप में नामित करते हैं। या शायद, जैसा कि कुछ प्राचीन लोग मानते थे, यहाँ 'आत्मा' शब्द से प्रेरित का वास्तव में तात्पर्य सभी विश्वासियों में निवास करने वाले पवित्र आत्मा की कृपा से है, जिसके बारे में उन्होंने स्वयं अभी-अभी बात की थी: *'आत्मा को बुझाओ नहीं* (1 थिस्स. 5:19; तुलना करें 23)।[1285]

[1285] तीसरे को, जिसका उल्लेख प्रेरित (1 थिस्स. 1:23) आत्मा और शरीर के साथ किया गया है, हम पवित्र आत्मा की *कृपा* के रूप में समझें, जिसके लिए प्रेरित प्रार्थना करते हैं कि यह हम में पूर्ण बनी रहे, कहीं यह हमारी अपनी गलती से कम न हो जाए या हमसे भाग न जाए (*जेनाडियस,* *चर्च के धर्मसिद्धान्तों पर*, अध्याय XX)।

चर्च के पिता और शिक्षकों में, मानव व्यक्ति की द्वैत प्रकृति को — द्वारा स्पष्ट रूप से स्वीकार किया गया था।

क) *यरूशलेम के संत सिरिल*: 'अपने आप को जानो, तुम क्या हो; जानो कि तुम दो भागों, आत्मा और शरीर, के मानव हो, और वही ईश्वर आत्मा और शरीर दोनों का स्रष्टा है';[1286]

ख) *संत बेसिल द ग्रेट*: 'मनुष्य आत्मा और शरीर से मिलकर बना है; शरीर पृथ्वी से लिया गया है, और इसलिए वह उसी धूल की ओर आकर्षित होता है जिससे वह बना है; लेकिन आत्मा ईश्वर की श्वास है, और हमेशा स्वर्गीय है';[1287]

ग) *संत ग्रेगरी द थियोलोजियन*: "मेरे भीतर एक दोहरी प्रकृति है; शरीर पृथ्वी से बना है, और इसलिए वह उसी धूल की ओर झुकता है जिससे वह आया है; लेकिन आत्मा ईश्वर की श्वास है, और हमेशा स्वर्गीय प्राणियों के बीच एक बेहतर भाग की इच्छा करती है";[1288]

d) *संत जॉन क्रिसोस्टोम*: "यह एक द्वैध प्राणी है—मैं मनुष्य की बात कर रहा हूँ, जो दो स्वभावों से मिलकर बना है: एक आत्मा जो महसूस करती है और सोचती है, और एक शरीर";[1289] *धन्य ऑगस्टीन*: "मनुष्य केवल शरीर ही नहीं, न ही केवल आत्मा है, बल्कि आत्मा और शरीर से मिलकर बना है";[1290] *सेंट जॉन ऑफ़ डेमास्कस*: "दृश्य और अदृश्य स्वभावों से, ईश्वर ने मनुष्य को अपने हाथों से बनाया.... उसने उसे दो स्वभावों के संयोजन के रूप में बनाया, दृश्य सृष्टि का चिंतक, बोधगम्य सृष्टि का मध्यस्थ...; उन्होंने उसे आत्मा के साथ और, साथ ही, देह के साथ बनाया: आत्मा को अनुग्रह प्राप्त करने के लिए, देह को घमंड से बचाने के लिए।"[1291] *सेंट ग्रेगरी ऑफ़ निस्सा, ब्लेस्ड जेरोम,* और वास्तव में चर्च के सभी फादर्स और शिक्षकों ने भी यही सिखाया जब उन्होंने कहा कि मानव जीवन आत्मा का देह के साथ मिलन के अलावा और कुछ नहीं है, और मृत्यु आत्मा का देह से अलगाव है।[1292]

हालांकि, यदि चर्च के कुछ प्राचीन शिक्षकों ने मनुष्य में आत्मा, प्राण और शरीर के बीच अंतर किया, तो यह किसी भी तरह से इस अर्थ में नहीं था कि प्राण और आत्मा अलग, स्वतंत्र भाग हैं। इसके विपरीत—

क) कुछ लोगों ने, निस्संदेह, इस संदर्भ में आत्मा और पवित्र आत्मा को केवल मनुष्य के एक ही आध्यात्मिक स्वभाव के दो पहलुओं या शक्तियों, निम्न और उच्च, के रूप में माना; क्योंकि अपने लेखों के अन्य अंशों में वे स्वयं स्पष्ट रूप से कहते हैं कि मनुष्य दो भागों से बना है, तीन से नहीं। इस प्रकार, संत जस्टिन एक अंश में यह विचार व्यक्त करते हैं कि 'शरीर आत्मा का निवास-स्थान है, और आत्मा पवित्र आत्मा का निवास-स्थान है',[1293] जबकि एक अन्य अंश में वे मनुष्य में केवल दो भागों को स्वीकार करते हैं: आत्मा और शरीर।[1294] इसी तरह, टर्टुलियन, एक अंश में, एक मनुष्य में आत्मा, प्राण और शरीर के बीच अंतर करते प्रतीत होते हैं,[1295] जबकि दूसरे में वे सिखाते हैं कि एक मनुष्य में दो स्वभाव होते हैं, कि प्राण और आत्मा किसी भी तरह से एक दूसरे से अलग नहीं हैं और केवल एक ही अदृश्य सार के दो कार्यों को दर्शाते हैं, जो मानव शरीर को सोचने और जीवंत करने का कार्य करता है।[1296] एलेक्जेंड्रिया के क्लेमेंट भी, एक अंश में,

---

[1286] कैटेकेटिकल लेक्चर्स, IV, 18, रूसी अनुवाद में पृष्ठ 69।

[1287] यशायाह पर टीका, 1, 3, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स* VI, 20 में।

[1288] Sacrament पर भजन, प्रवचन II, *पवित्र पिताओं के कार्यों* में, IV, 270।

[1289] On the Obscure Passages of the Prophets, II, n. 5; Homily on Genesis, XXI, n. 6.

[1290] *डे सिविट. देई* XIII, 24, n. 2; तुलना करें XXI, 3, n. 2.

[1291] ऑर्थोडॉक्स विश्वास की सटीक व्याख्या, पुस्तक 2, अध्याय 12, पृष्ठ 90–91, रूसी अनुवाद से।

[1292] *इरनेयस,* *विरुद्ध संप्रदाय*, V, 8, n. 2; हमारा सार, अर्थात् आत्मा और शरीर का मिलन; *क्लेमेंट ऑफ अलेक्जेंड्रिया,* *स्ट्रोमाटा*, VII, 12; 'मृत्यु आत्मा का शरीर से पृथक्करण है'; *ओरिजिन,* *रोमियों के नाम पत्र पर टीका*, पुस्तक VI, n. 6; *टाइटस बोस्ट्रासियस,* *मनीकियों के विरुद्ध*, II, 12.

[1293] *ग्रैब.* स्पेसिलिफ़. II, 188 में लिब. दे रेसुर्र.।

[1294] एपोलॉजी 1, संख्या 8, 20; डायलॉग. कुम ट्रायफ. अध्याय IV, 5.

[1295] मार्सियन के विरुद्ध, पुस्तक V, अध्याय 15: 'क्योंकि मैं आत्मा और प्राण के अलावा मनुष्य में कोई दूसरा ऐसा हिस्सा नहीं देखता, जिस पर "शरीर" शब्द लागू हो सके, सिवाय मांस के।'

[1296] चूंकि (मनुष्य) दो ठोस तत्त्वों, शरीर और आत्मा से मिलकर बना है... (Adv. Marcion. IV, 37, cf. De resurr. carn. XXXIV; Adv. Gnost. Scorp. 9; De poenit. chap. III) कुछ का मानना है कि उसके (मनुष्य) भीतर एक और प्राकृतिक पदार्थ है, अर्थात् आत्मा; जैसे कि जीना एक चीज़ है, जो आत्मा से आती है, और सांस लेना दूसरी चीज़ है, जो आत्मा द्वारा किया जाता है... फिर भी, जीना सांस लेना है, और सांस लेना जीना है। अतः यह सब—सांस लेना और जीना दोनों...—आत्मा का है.... यदि दो हैं, आत्मा और पवित्र आत्मा, तो वे विभाजित हो सकते हैं... लेकिन ऐसा

आत्मा को, जो शारीरकि जीवन का सद्धिांत है, पवत्रि आत्मा से, जो चतिनशील और स्वतंत्र सद्धिांत है, के रूप में अलग करते हैं,[1297] जबकि अन्यत्र वे यह दावा करते हैं कि एक मानव के घटक केवल शरीर और आत्मा ही हैं, कि आत्मा मानव के भीतर चतिनशील और स्वतंत्र सद्धिांत है, और कि आत्मा और पवत्रि आत्मा एक ही मानव के अदृश्य सार के दो नाम हैं, और यदि कभी-कभी इन्हें अलग बताया जाता है, तो यह केवल इस सार के वभिन्नि कार्यों और अवस्थाओं को दर्शाने के लिए है।[1298]

(b) अन्य लोगों ने मनुष्य में 'आत्मा' शब्द का अर्थ ईश्वर की आत्मा या वह दव्यि अनुग्रह माना जो मनुष्य को जीवन प्रदान करता है। उदाहरण के लिए, संत आइरेनयिस कहते हैं कि मनुष्य, एक मानव प्राणी के रूप में, मूलतः आत्मा और शरीर से मलिकर बनता है,[1299] लेकनि उसकी आत्मा परमेश्वर की आत्मा को उच्चतम पूर्णता के स्रोत के रूप में प्राप्त करती है,[1300] और इसलिए आत्मा (πνεῦμα) केवल धार्मकि लोगों में पाई जाती है, जबकि अधार्मकि लोग इससे वंचति हैं और उनके पास केवल दो भाग होते हैं, आत्मा और शरीर।[1301] इसी अर्थ में, टाटयिन ने भी आत्मा को केवल धार्मकि लोगों तक सीमति माना।[1302]

c) अन्य लोगों ने मानव की आध्यात्मकि प्रकृति में आत्मा और पवत्रि आत्मा के बीच अंतर कयिा, और पवत्रि आत्मा को मानव का तीसरा भाग माना (बेशक, सख्त अर्थ में नहीं), जसिका उद्देश्य मानव में पवत्रि त्रमिूर्ति की छवि देखना था। उदाहरण के लिए, संत एफ्रेम कहते हैं कि पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा के त्रगिुण आह्वान के माध्यम से हम शरीर, आत्मा और आत्मा में पवत्रि कए जाते हैं, ताकि हमारी त्रमिूर्ति पूर्ण हो जाए;[1303] और अन्यत्र वे स्पष्ट रूप से सखिाते हैं कि हमारे भीतर एक ही आत्मा है जो शरीर को जीवति करती है और सोचती है।[1304]

आम तौर पर, यह ध्यान दयिा जाना चाहिए कि यद्यपि प्राचीन शक्षिक अक्सर मनुष्य में आत्मा, प्राण और शरीर का उल्लेख करते हैं, वे ऐसा सख्त सटीकता के बनिा करते हैं, यह नर्दिष्टि कए बनिा कि क्या वे हमारे भीतर प्राण और आत्मा को दो अलग-अलग भागों के रूप में अलग करते हैं, या केवल एक ही आध्यात्मकि स्वभाव के दो पहलुओं के रूप में; और भले ही कुछ लोगों ने स्पष्ट रूप से मनुष्य में तीन भागों की अवधारणा व्यक्त की हो, उन्होंने ऐसा एक व्यक्तगित राय के रूप में कयिा, जसिे उन्होंने स्वयं अपनी रचनाओं के अन्य हस्सिों में संशोधति कयिा। वशिेष रूप से अपोलनिारयिंस और मनखियिों के उदय के बाद—जन्हिोंने, संयोग से, मानव की त्र-िभागी प्रकृति का उपदेश दयिा, और उसके भीतर दो आत्माओं का तर्क दयिा—[1305] , चर्च ने और भी स्पष्ट रूप से इस सद्धिांत को व्यक्त करना शुरू कर दयिा कि मानव केवल दो भागों से बना है। "अपोलीनारसि की शक्षिा के अनुसार," धन्य थयिोडोरेट लखिते हैं, "मनुष्य में तीन घटक होते हैं: शरीर, पशु आत्मा और तर्कशील आत्मा, जसिे वह मन कहता है। लेकनि दव्यि शास्त्र केवल एक आत्मा को ही मान्यता देता है, दो को नहीं। यह पहले मनुष्य की सृष्टि के वृत्तांत से स्पष्ट रूप से दखिाया गया है।"[1306] और अन्यत्र: "उसने (यीशु मसीह ने) स्वयं पर शरीर और तर्क-सम्पन्न आत्मा दोनों को धारण कयिा। क्योंकि पवत्रि शास्त्र मनुष्य को तीन भागों में वभिाजति नहीं करता, बल्कि यह बताता है कि यह जीवति प्राणी आत्मा और शरीर से मलिकर बना है। ईश्वर ने शरीर को धूल से बनाकर और उसमें आत्मा फूँककर यह दखिाया कि मनुष्य में दो स्वभाव हैं, तीन नहीं। लेकनि प्रभु स्वयं सुसमाचार में कहते हैं: *'उनसे मत डरो जो शरीर को मारते हैं पर आत्मा को नहीं मार सकते; बल्कि उससे डरो जो आत्मा और शरीर दोनों को गेहन्ना में नाश कर सकता है*' (मत्ती 10:28), और धर्मग्रंथ में इसी प्रकार की बहुत सी बातें पाई जा

कसिी भी तरह से नहीं होगा... इस प्रकार, जब आत्मा और पवत्रि आत्मा की बात की जाती है, तो आत्मा स्वयं ही पवत्रि आत्मा है (लबि. डी एनमिा, अध्याय X.)

[1297] स्ट्रोम. VII, 12.

[1298] स्ट्रोम. IV, 3, 25, 26; V, 12; VII, 12.

[1299] ऊपर टप्पिणी 1292 देखें।

[1300] एक पूर्ण मानव आत्मा का मश्रिण और संघ है, जसिमें पति की आत्मा प्राप्त हुई है, और मांस जो उससे मलिा हुआ है... (Adv. Haer. V, 6, n. 1; तुलना करें n. 1; 12, n. 1)।

[1301] एडवर. हेरेस. II, 33, n. 5; V, 12, n. 2.

[1302] Contr. Graec. XII, XIII.

[1303] स्क्राउटेटरों के वरिुद्ध, प्रवचन XVIII।

[1304] De inspirat., पृ. 323, खंड II, ग्रीक संस्करण।

[1305] *ऑगस्टीन,* *De duab. anim. contra Manich.*; *नेमेसयिस,* *De natur. homin.*, अध्याय 1.

[1306] मसीही पठन 1846, भाग 1, पृ. 337, में मसीह में स्वभावों के अवभिाज्य मलिन पर एरानस्टि और प्रव. के बीच एक संवाद।

सकती हैं।"[1307] "हम यह मानते हैं," जैसा कि जेनाडियस ने चर्च के धर्मसद्धिातों की अपनी व्याख्या में भी गवाही दी है, "कि एक ही मानव के भीतर दो आत्माएँ होती हैं, जैसा कि जेम्स और अन्य सीरियाई धर्मशास्त्री लखिते हैं: एक वह 'आत्मा' है जो शरीर को जीवति रखती है और रक्त में मश्रिति होती है, जबकि दूसरी वह 'आत्मा' है जो मन को नयिंत्रति करती है। लेकनि हम कहते हैं कि मनुष्य में केवल एक ही आत्मा होती है, जो शरीर के साथ अपने मलिन द्वारा उसे जीवंत करती है और अपनी ही बुद्धि के अनुसार स्वयं का शासन करती है, तथा वचिार के माध्यम से जो कुछ भी चाहती है उसे चुनने की स्वतंत्र इच्छा अपने भीतर रखती है।" और आगे: "मनुष्य केवल दो भागों से मलिकर बना है, आत्मा और शरीर... आत्मा मानव का तीसरा भाग नहीं है, जैसा कि डिडिाइमस सोचता है; बल्कि आत्मा ही अपनी आध्यात्मकि प्रकृति के कारण स्वयं आत्मा है।"[1308]

§81. मानव आत्मा के गुण

आत्मा, मनुष्य का सर्वोच्च और सबसे उत्कृष्ट भाग, है—

1. *शरीर से अलग, एक स्वतंत्र सत्ता।* यह सत्य धर्मग्रंथ के कई अंशों से स्पष्ट है (उत्प. 2:7; भजन 15:9–10; नीतविचन 9:15; प्रेरतिों के काम 7:59; 1 कुरन्थियिों 5:3–5), और वशिेष रूप से —

(a) सभोपदेशक के वचन: *'और मट्टिी पृथ्वी पर लौट जाएगी, जैसी वह थी, और आत्मा उस परमेश्वर के पास लौट जाएगी जसिने उसे दयिा है* (सभो. 12:7), और

ख) उद्धारकर्ता के वचनों से: *'उनसे मत डरो जो शरीर को मारते हैं पर आत्मा को नहीं मार सकते; बल्कि उससे डरो जो आत्मा और शरीर दोनों को आग की गेहन्ना में नाश कर सकता है* (मत्ती 10:28); *'आत्मा तो इच्छुक है, पर शरीर दुर्बल है* (मत्ती 26:41)। आत्मा की स्वतंत्रता का चर्च में इसके आरंभ से ही प्रचार कयिा गया है,[1309] और वश्विास के प्राचीन शकि्षकों द्वारा आत्मा पर रचति सभी ग्रंथों में स्पष्ट रूप से प्रचारति कयिा गया है।[1310] वशिेष रूप से, इस सत्य को यूसेबियस[1311] ने प्रदर्शति कयिा, और धन्य थयिोडोरेट और नेमेसयिस ने कुछ ऐसे पैगनों के खलिाफ इसका बचाव कयिा, जन्होंने दावा कयिा कि आत्मा केवल शरीर के घटक भागों का एक रूप या सामंजस्य, या उसका एक गुण है।[1312]

2. *एक अदर्व्य, सरल सत्ता।* यही बात परमेश्वर का वचन सखिाता है जब वह आत्मा को एक आत्मा कहता है, और ऐसा बहुत बार करता है: पहले उद्धृत उदाहरणों के अलावा (Eccl. 12:7; John 10:15; Matt. 26:36; cf. Luke 23:46; Matt. 27:50; यूहन्ना 19:30; प्रेरतिों के काम 7:59)), हम प्रेरति पौलुस के इस कथन की ओर भी संकेत करेंगे: *'यह वही आत्मा हमारे आत्मा के साथ गवाही देती है कि हम परमेश्वर की संतान हैं* (रोमयिों 8:16); *'मनुष्यों में कौन उस मनुष्य के भीतर का जानता है, सवािय उस मानव आत्मा के जो उसमें वास करती है?'* (1 कुरन्थियिों 2:11), और उद्धारकर्ता के वषिय में प्रेरति पौलुस की इस गवाही की ओर भी कि वह, *आत्मा में कैदखाने में रहने वालों के पास उतर आए, और उन लोगों को प्रचार कयिा जो नूह के दनिों में परमेश्वर की धीरज की प्रतीक्षा करते हुए एक समय अवज्ञाकारी थे* (1 पतरस 3:19–20)।

[1307] ईश्वरीय सद्धिांतों की संक्षप्ति व्याख्या, अध्याय XI, क्रश्चियिन रीडग्सि 1844, खंड IV, पृ. 314–315।

[1308] चर्च संबंधी धर्मशास्त्र, अध्याय XV, XIX, XX।

[1309] ओरजिन के अनुसार। प्रॉओम. इन प्रसिपि. संख्या 5.

[1310] *जस्टनि*, *आत्मा पर*; *टर्टुलयिन*, *डे एनमिा*; *नाइसा के ग्रेगरी*, *आत्मा पर*; *ऑगस्टीन*, *डे एनमिा एट एयस ओरगि.*; *नेमेसयिस*, *डे नाट. होमनि.*; *मैक्समिस*, *डे एनमि.*, आदि।

[1311] डे इंकॉर्पोरेली, पुस्तक 1, *गैलैंड*, IV, पृ. 503 ff. में।

[1312] *थयिोडोरेट.* दव्यि सद्धिांतों की एक संक्षप्ति व्याख्या, अध्याय IV, क्र. रीडग्सि 1844, IV, 219 में। *नेमेस.* मनुष्य की प्रकृति पर, अध्याय II।

चर्च के प्राचीन और प्रसद्धि पादरयिों ने भी आत्मा की प्रकृति के बारे में इसी प्रकार सखिाया है: ग्रेगरी ऑफ नसिा,[1313] जॉन क्रसिस्टम,[1314] बेसलि द ग्रेट,[1315] ऑगस्टीन,[1316] थयिोडोरेट,[1317] जॉन ऑफ डेमास्कस,[1318] और अन्य।[1319] दूसरी ओर, यदि कुछ लोगों ने आत्मा को एक नश्चिति देहबद्धता या भौतकिता प्रदान की, तो उन्होंने ऐसा उसी अर्थ में कयिा जैसा उन्होंने स्वर्गदूतों को प्रदान कयिा।[1320]

3. *एक स्वतंत्र सत्ता।* मानव आत्मा की स्वतंत्रता का वचिार पवत्रि शास्त्र के अनगनित अंशों में या तो स्पष्ट रूप से व्यक्त कयिा गया है या नहिति है, और — सबसे पहले, उन सभी में जहाँ मनुष्य को आज्ञाएँ दी गई हैं और उसे परमेश्वर के वधिान का पालन करने के लिए कहा गया है; दूसरे, जहाँ आज्ञाओं का पालन करने के लिए मनुष्य को वभिन्नि पुरस्कार, और वशिष रूप से शाश्वत आनंद की पेशकश की जाती है; और अंत में, जहाँ आज्ञाओं को तोड़ने वाले दोषी पक्ष के लिए वभिन्नि दंड, दोनों सांसारकि और शाश्वत, की भवष्यिवाणी की गई है। वशिष रूप से, यह वचिार द्वारा व्यक्त कयिा गया है:

(क) मूसा, इस्राएलयिों से कहते हुए: *'मैं आज आकाश और पृथ्वी को तुम्हारे वरिुद्ध गवाह ठहराता हूँ: मैंने तुम्हारे सामने जीवन और मृत्यु, आशीर्वाद और शाप रख दयिा है। जीवन को चुनो, ताकि तुम और तुम्हारी संतान जीवति रहो* (व्यवस्थाववरिण 30:19); तुलना करें पद 15-18);

ख) यहोशू: *'यदि तुम यहोवा की सेवा करने के इच्छुक नहीं हो, तो आज ही चुन लो कि तुम कसिकी सेवा करोगे* (24:15);

c) भवष्यिवक्ता यशायाह: *'यदि तुम इच्छुक और आज्ञाकारी हो, तो तुम इस देश की अच्छी वस्तुएँ खाओगे; परन्तु यदि तुम इनकार करोगे और वद्रिोह करोगे, तो तलवार तुम्हें खा जाएगी: क्योंकि यहोवा का मुख बोल चुका है* (1:19–20);

घ) सरिाख के बुद्धमिान पुत्र: *'प्रारंभ में उसने मनुष्य को बनाया और उसे उसकी अपनी स्वतंत्र इच्छा पर छोड़ दयिा। यदि वह चाहे, तो वह आज्ञाओं का पालन करेगा और एक सुखद संयम बनाए रखेगा* (15:14–15);

ई) स्वयं उद्धारकर्ता: *'यदि तुम अनन्त जीवन में प्रवेश करना चाहते हो, तो आज्ञाओं का पालन करो* (मत्ती 19:17; तुलना करें 23:37; यूहन्ना 7:17);

f) प्रेरति पौलुस: *जो कोई अपने मन में दृढ़ नश्चिय करता है, और न तो आवश्यकता से बाध्य होकर और न ही अपनी इच्छा से बँधकर, अपने मन में अवविाहति रहने का नर्णिय लेता है—वह भला करता है* (1 कुरन्थियिों 7:37; तुलना करें रोमयिों 1:21; 1 थस्सि. 5:21; इफसियिों 5:10, 15–17)।

चर्च के पति और शक्षिकों ने, मूर्तपिूजकों, ग्नॉस्टकिों और मनखियिों के वरिोध में, मानव आत्मा की स्वतंत्रता का प्रदर्शन कयिा, जैसे: जस्टनि,[1321] एंटओिक के थयिोफलिस,[1322] आइरेनयिस, टर्टुलयिन, अलेक्जेंड्रयिा के क्लेमेंट,

---

[1313] 'कि यह अदेह और शरीर रहति है, अपनी प्रकृति के अनुसार कार्य करता और गति करता है … *De anim. et ressurr.* पृ. 189, खंड III, सं. मोरेल.

[1314] उपरोक्त टप्पिणी 1289 देखें; इसी प्रकार होमलि. इन इलud: 'Ego Dominus feci lumen', n. 1.

[1315] "हमारा अस्तत्वि क्या है? यह आत्मा है जसिसे हम जीते हैं, एक सूक्ष्म और आध्यात्मकि सत्ता, जसि बोझ बन सकने वाली कसिी भी चीज़ की आवश्यकता नहीं है; यह शरीर है, जसि सृष्टकिर्ता ने आत्मा को जीवन के लिए एक रथ के रूप में दयिा है" (*Sermon 21 on not clinging to worldly things...*, in *The Works of the Holy Fathers* VIII, 330)।

[1316] केवल यह अनुमान न लगाएँ कि आत्मा देहयुक्त नहीं है, बल्कि इसे नश्चिति रूप से जानें; मैं यह घोषणा करने का साहस करता हूँ, (*De genes. ad litt.* XII, 33, n. 62; तुलना करें VII, 15 n. 21)।

[1317] "हमारी आत्मा एक सरल सत्ता है, जो तर्क से युक्त और अमर है।" (ईश्वरीय सद्धिांतों का एक संक्षप्ति ववरिण, अध्याय IX, क्रश्चियिन रीडर 1844, IV, 218 में)।

[1318] "आत्मा एक जीवति, सरल, अदेह सत्ता है"... (प्रेसीज़ एक्सपोज़शिन ऑफ़ द ऑर्थोडॉक्स फेथ, II, 12, पृ. 92)।

[1319] *यूसेबयिस,* लूका XII, 24; सुसमाचार की तैयारयिाँ XI, 27; *नेमेसयिस,* मनुष्य की प्रकृति पर, अध्याय 2; बोस्टन के *टाइटस,* मनखियिवाद पर 1, 26; *अनास्तासयिस, माई* 7, 1, पृ. 179; *मैक्सिमस,* आत्मा पर।

[1320] उपरोक्त टप्पिणयिाँ 1146 और 1147 देखें।

[1321] ईश्वर ने मानव जाति को एक तर्कशील प्राणी के रूप में बनाया, जो सत्य को पहचानने और सही ढंग से कार्य करने में सक्षम है (Apolog. 1, अध्याय 28; तुलना करें: Dialog. cum Thryph. CII).

[1322] क्योंकि ईश्वर ने मनुष्य को स्वतंत्र और आत्म-शासति बनाया (Ad Autol. II, 27).

ओरजिन,[1323] यरूशलेम के सरिील, दमास्कस के जॉन[1324] और कई अन्य।[1325] उन्होंने तर्क दयिा कि हम अपनी स्वतंत्रता के प्रतसिचेत हैं;[1326] कि स्वतंत्रता एक तर्कशील प्राणी का अवभिाज्य गुण है[1327] और यह मनुष्यों को नम्निनतर जानवरों से अलग करती है,[1328] कि केवल स्वतंत्र आज्ञाकारति और सेवा के माध्यम से ही हम ईश्वर को प्रसन्न कर सकते हैं;[1329] और यह कि स्वतंत्रता के बनि न तो धर्म है, न नैतकिता,[1330] न ही कोई पुण्य।[1331] इसके अलावा, ईश्वर हमें आज्ञाएँ देता है और हमें धार्मकिता के लिए प्रेरति करता है, ठीक वैसे ही जैसे उसने एक बार हमारे पूर्वज आदम को प्रेरति कयिा था,[1332] और जो लोग मानवीय स्वतंत्रता से इनकार करते हैं, वे अपने ही कार्यों के माध्यम से स्वयं का खंडन करते हैं, जब, उदाहरण के लिए, वे अपने अधीनस्थों को उनके अपराधों के लिए जवाबदेह ठहराते हैं।[1333]

4. *अमर अस्तत्वि*। आत्मा की अमरता में वश्विास पुराने नयिम में पहले से ही ज्ञात था। इसे नम्निलखिति ने स्वीकार कयिा था:

क) उपदेशक: *'और धूल फरि मट्टिी ही में लौट जाती है, और आत्मा उसी परमेश्वर के पास लौट जाती है जसिने उसे दयिा है'* (12:7); *'क्योंकि परमेश्वर हर एक काम का, और हर एक गुप्त काम का, चाहे वह भला हो या बुरा, न्याय करेगा* (—14);

ख) भजनकार: *'परन्तु परमेश्वर मेरी आत्मा को कब्र की शक्ति से छुड़ाएगा, जब वह मुझे ग्रहण करेगा* (48:16; तुलना करें 16:15);

ग) बुद्धमिान व्यक्ति: *धर्मी लोगों की आत्माएँ परमेश्वर के हाथ में हैं, और कोई यातना उन्हें छू नहीं सकती* (3:1); *धर्मी लोग हमेशा जीते हैं; उनका प्रतफिल प्रभु के पास है, और सर्वोच्च उनकी परवाह करते हैं* (5:15; तुलना करें 4:7, 10:14);

d) यह सभी पुराने नयिम के धर्मी लोगों द्वारा भी स्वीकार कयिा गया था, जन्हिोंने सांसारकि जीवन को अपने स्वर्गीय स्वदेश के रास्ते में एक अस्थायी प्रवास माना (उत्पत्ति 47:9; इब्रानयिों 11:13-16), और मृत्यु को अपने पूर्वजों के पास जाने के रूप में माना (उत्पत्ति 25:8; 35:29; 49:29). यह सत्य नए नयिम में और भी स्पष्ट रूप से प्रस्तुत कयिा गया है। मसीहा कहते हैं: *'उनसे मत डरो जो शरीर को मारते हैं पर आत्मा को नहीं मार सकते; बल्कि उससे डरो जो आत्मा और शरीर दोनों को गेहन्ना में नाश कर सकता है'* (मत्ती 10:28); *'जो अपना प्राण प्रेम करता है, वह उसे खोएगा, और जो इस संसार में अपना प्राण बैर करता है, वह उसे अनंत जीवन के लिए रखेगा* (यूहन्ना 12:25); और धनी मनुष्य और लाजरूस की दृष्टान्त में: *भखिारी मर गया और स्वर्गदूतों द्वारा अब्राहम की गोद में ले जाया गया; धनी मनुष्य भी मर गया और दफनाया गया; और नरक में, पीड़ा में रहते हुए, उसने अपनी आँखें उठाईं और दूर से अब्राहम और उसकी गोद में लाजरूस को देखा* (लूका 16:22–23, तुलना करें 23:43)। प्रेरति पौलुस लखिते हैं: *हम जानते हैं कि जब हमारा पृथ्वी पर का नविास, यह तम्बू, टूट जाएगा, तो हमारे पास स्वर्ग में परमेश्वर की ओर से एक नविास है, एक ऐसा घर जो हाथों से नहीं बना, बल्कि शाश्वत है* (2 कुरन्थियिों 5:1); *हमारा यहाँ कोई स्थायी नगर नहीं है, बल्कि हम उस नगर की खोज में हैं जो*

[1323] *इरनेयस,* वरिोधी मतों के वरिुद्ध IV, 37, n. 2, और बाद में; 39, n. 17 और बाद में; *टर्टुलयिन,* मार्सयिन के वरिुद्ध II, 5, 6; आत्मा पर XXI, XXII; *अलेक्जेंड्रयिा के क्लेमेंट,* स्ट्रोमाटा II, 4; III, 9; IV, 23; V, 13; VI, 12; *ओरजिन,* *डी प्रसिपियिस* II, 9, n. 6; *इन मैथ्यूम* X, n. 2.

[1324] *यरूशलेम के सरिलि,* होमलीज IV, 18: 'जानो कि तुममें एक स्वतंत्र आत्मा है...'; *दमास्कस के जॉन,* एक्सपोजशिन ऑफ द ऑर्थोडॉक्स फेथ II, 12: 'आत्मा एक स्वतंत्र सत्ता है, जसिे इच्छा करने और कार्य करने की क्षमता प्रदान की गई है।'

[1325] *टाटयिन,* ग्रीकों के वरिुद्ध 7; *बोस्टन के टाइटस,* मनख्यिवाद के वरिुद्ध II, 3; *क्रसिोस्टोम*। उत्पत्ति पर उपदेश, XIX, n. 20, n. 3; XXII, n. 1; *ऑगस्टीन,* स्वतंत्र इच्छा पर, II, 3; *एफ्रेम,* स्वतंत्रता पर, खंड III, पृ. 434, ग्रीक संस्करण; *अलेक्जेंड्रयिा के सरिलि,* मानव-रूपवाद के वरिुद्ध, अध्याय II; पत्र LV; *नेमेसयिस,* मनुष्य की प्रकृति पर, अध्याय XXIX.

[1326] *टटि. बोस्ट्र.* *एडव. मैनचि.* II, 5, 6.

[1327] *ओरजिन,* *डी प्रसिपि.* III, n. 5; *ग्रेगरी ऑफ नस्सिा,* *ओरेट. कैथ.* XXXI; *जॉन ऑफ डेमास्कस,* *एक्जैक्ट एक्सपोजशिन ऑफ द ऑर्थोडॉक्स फेथ* III, 18.

[1328] *ऑगस्टीन,* भजन संहति CI, प्रवचन 1, संख्या 2।

[1329] *क्रसिोस्टोम,* मत्ती पर होमली, होम. XXII, n. 6; *ऑगस्टीन,* सच्चे धर्म पर, अध्याय XIV, n. 27.

[1330] *ओरजिन,* अगेंस्ट सेल्सस, पुस्तक IV, 3; *ग्रेगरी ऑफ नसि,* ऑन द ओरजिनि ऑफ मैन, अध्याय XVI; कैटेकेटकिल ओरेशन XXXI; *क्रसिोस्टोम,* सेरमॉन ऑन अन्ना, 1, n. 2.

[1331] *जस्टनि,* *अपोलाजी*, 1, टप्पिणी 43; *आइरेनयिस,* *एगेंस्ट हेरेसीज़*, IV, 37, टप्पिणी 2, 6, 7; *इसडिोरे,* पुस्तक II, पत्र 129.

[1332] *इरनेयस,* IV, 37, n. 3; *टर्टुलयिन,* मार्सयिन के वरिुद्ध, II, 5.

[1333] *ऑगस्टीन,* पत्र CCXLVI।

आने वाला है (इब्रानियों 13:14); 'हमारी नागरकिता स्वर्ग में है, जहाँ से हम एक उद्धारकर्ता, प्रभु यीशु मसीह की प्रतीक्षा कर रहे हैं' (फलि. 3:20)। पवित्र पिता और चर्च के शिक्षकों, जैसे कि सेंट जॉन ऑफ़ क्रॉस ( ), ने एक स्वर में आत्मा की अमरता का प्रचार किया,[1334] , एकमात्र अंतर यह था कि कुछ ने इसे स्वभाव से अमर माना,[1335] जबकि अन्य ने इसे ईश्वर की कृपा से ऐसा माना।[1336]

§82. मनुष्य में ईश्वर की प्रतिमा और समानता

1. ईश्वर की अन्य सभी रचनाओं में सबसे महत्वपूर्ण अंतर इस तथ्य में निहित है कि सृष्टिकर्ता मनुष्य को अपनी ही छवि और समानता से सजाने के लिए प्रसन्न हुए। *और ईश्वर ने कहा,* जैसा कि पवित्र वंशावलीकार बताता है: *'आओ हम मनुष्य को अपनी छवि में, अपनी समानता के अनुसार बनाएँ...' और ईश्वर ने मनुष्य को अपनी ही छवि में बनाया; ईश्वर की छवि में उसने उसे बनाया; नर और नारी, उन्हें बनाया* (उत्पत्ति 1:26–27; तुलना करें 5:1)। ईश्वर स्वयं बाद में इस भेद की गवाही देते हैं, नूह से कहते हुए: *'जो किसी मनुष्य का रक्त बहाएगा, उसका रक्त मनुष्यों के हाथों बहाया जाएगा; क्योंकि मनुष्य को ईश्वर की प्रतिमा में बनाया गया है* (उत्पत्ति 9:6)।

और नए नियम में, प्रेरित याकूब हमारी जीभ के बारे में गवाही देते हुए कहते हैं: *'इसी से हम परमेश्वर पिता का धन्यवाद करते हैं, और इसी से हम परमेश्वर की समानता में बनाए गए लोगों को शाप देते हैं* (3:9). पवित्र चर्च ने हमेशा पवित्र शास्त्र की स्पष्ट शिक्षा का अनुसरण करते हुए मनुष्य में ईश्वर की प्रतिमा की वास्तविकता को स्वीकार किया है।[1337] कुछ हद तक यह सत्य मूर्तिपूजकों को भी ज्ञात था।[1338]

2. तो फिर, हमारे भीतर ईश्वर की प्रतिमा किसमें निहित है? संत एपिफानियस उत्तर देते हैं, 'चर्च की शिक्षा मानती है कि मनुष्य सामान्य रूप से ईश्वर की प्रतिमा में बनाया गया है, लेकिन यह निर्दिष्ट नहीं करती कि प्रतिमा में वह कौन सी विशेष भाग में पाया जाता है।'[1339] ऐसा इसलिए है क्योंकि चर्च के पिता और शिक्षकों ने स्वयं इस प्रश्न को अलग-अलग तरीकों से संबोधित किया, हालांकि उनके विचार एक-दूसरे का खंडन नहीं करते हैं, बल्कि केवल विषय के विभिन्न पहलुओं को छूते हैं। इसके विपरीत, यदि हम इन विचारों को एक साथ लाते हैं और उन्हें ईश्वर, हमारे आदर्श, की सही समझ के प्रकाश में देखते हैं, तो यह पूरी तरह से स्पष्ट हो जाएगा कि हमारे भीतर ईश्वर की प्रतिमा क्या है।

a) ईश्वर, अपनी स्वभाविक प्रकृति से, परम शुद्ध आत्मा हैं, जो किसी भी शरीर में आवेष्टित नहीं हैं और किसी भी भौतिकता में संलग्न नहीं हैं। इस प्रकार, ईश्वर की प्रतिमा मानव शरीर में नहीं, बल्कि मानव आत्मा में खोजी जानी चाहिए, जो अद्रव्य है: यह वही विचार है जिसे क्लेमेंट ऑफ अलेक्जेंड्रिया, ओरिजिन,[1340] और, बाद में, मानव-रूपवादियों

1334 *जस्टिन,* एपोलॉजी 1, क्रमांक 17, 18, 63; *टेटियन,* अगेंस्ट द ग्रीक्स XVI; *आइरेनियस,* अगेंस्ट हेरेसीज़ II, 34, क्रमांक 2; V, 13, क्रमांक 3; *एथेनागोरस,* लेगेटस XXVII; *क्लेमेंट ऑफ़ अलेक्जेंड्रिया,* स्ट्रोमाटा V, 15; *ओरिजिन,* अगेंस्ट सेल्सस III, 22; *टर्टुलियन,* *डे रेसरेक्शियोने कार्न्स* XXXIV; *यूसेबियस,* *डेमोंस्ट्रैटियो इवैन्गेली* 3, 3; *एथनासियस,* *कॉन्ट्रा जेंटेस* XXXIII; *ग्रेगरी ऑफ निसा,* *डे ईओ, क्वडि सटि एड इमेज. देई*, 25, वॉल्यूम II, एड. मोरेल.; *एपिफेनियस,* *हेरेसेस* 64, n. 36 और अन्य।

1335 *टर्तुल्लियन,* *डी एनिमा* XI, XIV, XV; *ओरिजिन,* *डी प्रिंसिपियस* II, 2, n. 4; III, 1, n. 13.

1336 *जस्टिन,* *डायलॉग्स विद ट्रायफो*, खंड VI; *टेटियन,* *अगेंस्ट द ग्रीक्स*, XIII; *आइरेनियस,* *अगेंस्ट हेरेसीज़*, II, 34, खंड 4; *अरनोबियस,* *अगेंस्ट द जेंटिल्स*, II, 14, 18, 32, 35; *थियोफिलस,* *टू ऑटोलायकस*, II, 34, 36; *यरूशलेम के सिरिल,* कैटेकेटिकल लेक्चर IV, 69: "जान लो कि तुममें एक स्वतंत्र आत्मा है, जो ईश्वर की एक अद्भुत रचना है, सृष्टिकर्ता की प्रतिमा पर निर्मित, उस ईश्वर की कृपा से अमर जो इसे अमर बनाता है, एक जीवित, तर्कशील और अविनाशी सृष्टि, उस की भलाई से जो इस उपहार को प्रदान करता है।"

1337 *आइरनेयस,* विधी मतों के विरुद्ध, V, 6; *टर्तु□□□□यन,* पवित्रता पर अनुनय, 1; *अलेक्जेंड्रिया के क्लेमेंट,* स्ट्रोमाटा, V, 4; VII, 3; *ओरिजिन,* सेल्सस के विरुद्ध, VI, 63; *अथेनासियस,* एरियन के विरुद्ध भाषण, 1, n. 49; *एम्ब्रोसियस,* *डी फेडे*, II, 4; *इसिडोर,* पुस्तक III, पत्र 95; *ऑगस्टीन,* *डी ट्रिनिटिटे*, XIV, n. 6, और अन्य।

1338 *अरिस्टोटल,* *डी एनिमा* 1, 2; *सिसेरो,* *डी लेगिबस* 1, 7, 8; *ओविड,* *मेटामॉर्फोसिस* 1, 76 ff.; *सेनेका,* *प्रोवर्बिया* अध्याय 1। तुलना करें *लैक्टैंटियस,* *इंस्टिट्यूट्स ऑफ द डिवाइन* II, 10।

1339 *एपिफेनियस,* *हेरेसिया*, LXX, n. 2, 3 ff.; *एन्कोराटा*, n. 55.

1340 *क्लेम. एलेक्स.* स्ट्रॉम. II, 19; क्योंकि 'प्रतिमा और समानता' से अभिप्रेत भौतिक रूप नहीं है—चूंकि एक नश्वर को अमर के समान मानना उचित नहीं है—बल्कि मन और बुद्धि? *ओरिजिन,* अगेंस्ट सेल्सस VI, 63; VIII, 49; *De Principiis* IV, 37.

के विरोध में, एपफिनियस, यूसेबियस, ग्रेगरी ऑफ नसिा,[1341] एम्ब्रोज़, ऑगस्टीन,[1342] थियोडोरेट और अन्य लोगों ने स्पष्ट करने का प्रयास कयिा।[1343]

b) परमेश्वर, आत्मा के रूप में, आत्मा के आवश्यक गुणों—बुद्धि और स्वतंत्रता—का स्वामी है, और अपनी स्वभावकि प्रकृति से अमर है: अत; वशिष रूप से, कोई चर्च के कुछ शकि्षकों के अनुसार, मानव मन में परमेश्वर की प्रतमिा की कल्पना कर सकता है;[1344] के अनुसार अन्य में—मानव स्वतंत्र इच्छा में;[1345] के अनुसार अन्य में—मानव आत्मा की अविनाशीता और उसकी अमरता में।[1346]

c) ईश्वर, जो परम आत्मा हैं, स्वभाव में एक हैं परन्तु व्यक्तियों में त्रमिूर्ति हैं; और इस संबंध में, चर्च के शकि्षकों का अनुसरण करते हुए, हम अपनी आत्मा की एकता में, उसकी आवश्यक शक्तियों की त्रैतात्मकता के बीच, ईश्वर की एक मद्धम छवि पा सकते हैं, चाहे उन्हें कोई भी नाम दे: चाहे स्मृति, तर्क और इच्छा के रूप में; या मन, वचन और आत्मा के रूप में; या मन, इच्छा और अनुभूति के रूप में। "परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र, परमेश्वर पवित्र आत्मा," उदाहरण के लिए, संत एम्ब्रोस कहते हैं, "लेकनि तीन परमेश्वर नहीं, बल्कि एक परमेश्वर जनिके तीन व्यक्तित्व हैं: ठीक उसी तरह जैसे आत्मा मन है, आत्मा इच्छा है, आत्मा स्मृति है; लेकनि एक शरीर में तीन आत्माएँ नहीं, बल्कि एक आत्मा जसिमें तीन शक्तियाँ (dignitates) हैं, और इन्हीं तीन शक्तियों में हमारा आंतरकि मनुष्य, अपनी प्रकृति के अनुसार, अद्भुत ढंग से ईश्वर की छवि को प्रतबिंबिति करता है।"[1347] "जसि प्रकार ईश्वर तीन व्यक्तियों में वद्यिमान हैं," रोस्तोव के संत डेमेट्रयिस तर्क देते हैं, "उसी प्रकार मानव आत्मा भी तीन शक्तियों—मन, वचन और आत्मा—से मलिकर बनी है। और जसि प्रकार वचन मन से उत्पन्न होता है, और आत्मा मन से उत्पन्न होती है, उसी प्रकार पुत्र और पवित्र आत्मा भी पिता से उत्पन्न होते हैं। जसि प्रकार मन वचन और आत्मा के बनि अस्तित्व में नहीं रह सकता, उसी प्रकार पिता कभी भी पुत्र और पवित्र आत्मा के बनि अस्तित्व में नहीं रहे और न ही रह सकते हैं। और जसि प्रकार मन, वचन और आत्मा आत्मा की तीन अलग-अलग शक्तियाँ हैं, फरि भी एक ही आत्मा है, तीन आत्माएँ नहीं, उसी प्रकार पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा ईश्वर के तीन व्यक्ति हैं, तीन ईश्वर नहीं, बल्कि एक ईश्वर हैं।"[1348]

(d) सभी अन्य प्राणियों के संबंध में, ईश्वर उनका प्रभु, राजा और शासक है; इस अर्थ में, संत जॉन क्राइसोस्टोम, ग्रेगरी ऑफ नस्सिा और अन्य लोगों के साथ सहमति में, कोई भी ईश्वर की प्रतमिा को सृष्टि के समय मनुष्य को प्रदान की गई के रूप में कल्पना कर सकता है, सभी सांसारकि प्राणियों पर राजसी अधकिार और प्रभुत्व के रूप में—और भी अधकि क्योंकि यह धारणा स्वयं सृष्टकिर्ता के शब्दों के अनुरूप है, जन्हिोंने केवल घोषणा की: *'आओ हम मनुष्य को*

[1341] *एपफिनियस,* **हेरेसयि** XC; *यूसेबयिस,* *इन सल. 8:5*; *ग्रेग. नस्सि.* ओरेट. इन इलड: 'आओ मनुष्य बनाएं', क्रि. ख्री. 1840, III, 303–305: 'हममें ईश्वर की प्रतमिा शारीरकि रूप में नहीं नहिति है...; जो क्षणभंगुर है वह अपरविर्तनीय की प्रतमिा कैसे हो सकता है, और जसिका रूप है—उसकी प्रतमिा कैसे हो सकता है जसिका कोई रूप नहीं है?'

[1342] *एम्ब्रोसयिस,* हेक्साएम. VI, अध्याय 8: 'इसलिए, यह मांस नहीं है जो परमेश्वर की प्रतमिा हो सकता है, बल्कि हमारी आत्मा है, जो स्वतंत्र है... आदि।'; *ऑगस्टीन,* *डी ट्रनिटिे*, XII, अध्याय 7: 'जैसा कि न केवल सबसे सत्यपूर्ण तर्क, बल्कि स्वयं प्रेरति के अधकिार की घोषणा करती है, मनुष्य को ईश्वर की छवि में शारीरकि रूप के अनुसार नहीं, बल्कि एक तर्कसंगत मन के अनुसार बनाया गया था।'

[1343] *थियोडोरेट,* *हस्टि. इक्ल.* 4, अध्याय 9; *दमित्रिी ऑफ रोस्तोव,* *संग्रहति कृतियाँ*, खंड 1, पृ. 62.

[1344] *क्लेमेंट ऑफ एलेक्जेंड्रयिा,* स्ट्रोमाटा VI, 14; *ऑगस्टीन,* जॉन पर टप्पिणी, प्रबंध III: 'आप पशुओं से केवल बुद्धि में भन्नि हैं... तो आप कसि बात में श्रेष्ठ हैं? ईश्वर की छवि में। ईश्वर की छवि कहाँ है? मन में, बुद्धि में।'

[1345] *टर्तुल्लयिन,* *अगेंस्ट मार्शयिन*, II, अध्याय 5, 6; *जेरोम,* *एपस्टिल्स*, 146; *मकारयिस,* *होमलीज*, 15; *जॉन ऑफ़ डेमास्कस,* सच्चे वशि्वास की सटीक व्याख्या, पुस्तक III, अध्याय 14, पृ. 175: 'यदि मनुष्य को धन्य और अनादि ईश्वरत्व की प्रतमिा में बनाया गया है, और ईश्वर का स्वभाव स्वतंत्र है और स्वभाव से ही इच्छाशक्ति रखता है, तो मनुष्य, ईश्वर की प्रतमिा के रूप में, स्वाभावकि रूप से स्वतंत्र है और इच्छाशक्ति रखता है।'

[1346] *टर्तुल्लयिन,* *डी बैपटस्मिसि*, V; *ऑगस्टीन,* *डी ट्रनिटिे*, XIV, nos. 4, 6; *मैक्समिस,* *सेंटुरयिोस*, III, अध्याय 25.

[1347] Lib. de dignit. condit. human., chap. 2.

[1348] वर्क्स, खंड 1, पृ. 62; रोझकि, पृ. 292–294। नम्निलखिति ने भी इसी प्रकार तर्क दयिा है: *ऑगस्टीन,* *डी ट्रनिटिटे*, पुस्तक IX, अध्याय 4, 11, और पुस्तक XII, लगभग संपूर्ण; *थियोडोरेट,* *इन जेनेससि*, प्रश्न XX, *क्रॉन. क्वार्ट.* में। 1843b III, 351–352. "मानव आत्मा में भी ईश्वर के सबसे सटीक समान गुण मलि सकते हैं। इस प्रकार, उसमें बुद्धि और जीवन है; (मानव) मन शब्द को जन्म देता है; शब्द के साथ ही प्राण आता है, जो शब्द की तरह जन्म नहीं लेता, बल्कि हमेशा उसका साथ देता है, और जब शब्द का जन्म होता है, तो वह उसके साथ ही उत्पन्न होता है। लेकनि इस संबंध में भी, मनुष्य केवल एक प्रतमिा के रूप में ईश्वर के समान है; क्योंकि न तो उसका वचन और न ही उसकी श्वास का कोई स्वतंत्र अस्तित्व है।" "और पवित्र त्रमिूर्ति में हम तीन हाइपोस्टेससि (अस्तित्व-रूप) की स्वीकारोक्ति करते हैं, जो वलिीन हुए बनि एकजुट हैं, ताकि प्रत्येक का एक स्वतंत्र अस्तित्व हो।"

अपनी प्रतिमा में, अपनी समानता के अनुसार बनाएँ,' और तुरंत जोड़ा: *'और उसे समुद्र की मछलियों, आकाश के पक्षियों, पशुओं, और सारी चौपायों, और सारी पृथ्वी, और पृथ्वी पर रेंगने वाले हर रेंगने वाले जीव पर अधिकार दिया जाए* (उत्पत्ति 1:26)।[1349] लेकिन यह स्पष्ट है कि पृथ्वी के प्राणियों पर मनुष्य का प्रभुत्व केवल ईश्वर की प्रतिमा का एक परिणाम और बाहरी अभिव्यक्ति है, जो मनुष्य की आत्मा में, उसकी बुद्धि और उसकी स्वतंत्रता में पाई जाती है—जो ही हमें सभी अतर्कशील जानवरों पर पूर्ण श्रेष्ठता प्रदान करती है। और इसी प्रकार, चर्च के कुछ शिक्षकों के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, ईश्वर की प्रतिमा का प्रतिबिंब मानव शरीर में भी पाया जा सकता है, क्योंकि अपनी सबसे उत्कृष्ट संरचना और भव्य रूप में, ऊपर की ओर उन्मुख, तर्कशील और स्वतंत्र आत्मा के गुण और पृथ्वी के सभी प्राणियों में मनुष्य की राजसी गरिमा बहुत स्पष्ट रूप से व्यक्त होती है।[1350]

तदनुसार, यह कहा जा सकता है कि ईश्वर की प्रतिमा किसी विशेष भाग, शक्ति या क्षमता में नहीं, बल्कि पूरे व्यक्ति में, अधिक या कम मात्रा में, प्रतिबिंबित होती है।

[1351]3. क्या मनुष्य में ईश्वर की प्रतिमा और समानता के बीच कोई अंतर है, या नहीं? चर्च के अधिकांश पिता और शिक्षकों ने उत्तर दिया कि ऐसा है, और कहा कि ईश्वर की प्रतिमा हमारी आत्मा के स्वभाव में, उसकी बुद्धि में, उसकी स्वतंत्रता में पाई जाती है; जबकि समानता मनुष्य द्वारा इन क्षमताओं के उचित विकास और पूर्णता में निहित है, विशेष रूप से — उसकी बुद्धि[1352] और स्वतंत्र इच्छा[1353] की पूर्णता में, या दोनों में एक साथ,[1354] सद्गुण और पवित्रता में,[1355] और पवित्र आत्मा के वरदानों के अधिग्रहण में।[1356] परिणामस्वरूप, हम अपनी अस्तित्व की प्राप्ति के साथ ही ईश्वर की प्रतिमा ईश्वर से प्राप्त करते हैं, जबकि समानता हमें स्वयं अर्जित करनी होती है, क्योंकि ईश्वर ने हमें केवल ऐसा करने की क्षमता प्रदान की है। मानव में ईश्वर की प्रतिमा और समानता के बीच इस भेद का यह दृष्टिकोण भी पवित्र शास्त्रों में निहित है। इस प्रकार—

a) मानव की सृष्टि के संबंध में त्रिमूर्ति की परामर्श का वर्णन करते हुए, मूसा गवाही देते हैं: *'और परमेश्वर ने कहा, "आओ हम मनुष्य को अपनी प्रतिमा में, अपनी समानता के अनुसार बनाएँ"* (उत्पत्ति 1:26); और बाद में स्वयं सृष्टि के बारे में बोलते हुए, वे कहते हैं: *'और परमेश्वर ने मनुष्य को सृजित किया; परमेश्वर की प्रतिमा में उसने उसे सृजित किया* (27). संत ग्रेगरी ऑफ निसा पूछते हैं, 'तो फिर, जो अभिप्रेत था वह पूरा क्यों नहीं हुआ? ऐसा क्यों नहीं कहा गया: *"और ईश्वर ने मनुष्य को ईश्वर की प्रतिमा में और उसकी समानता में बनाया"*? क्या सृष्टिकर्ता के पास शक्ति की कमी थी? लेकिन इस तरह बोलना अधार्मिक है। क्या जिसने विचार किया था, उसने अपना मन बदल लिया? लेकिन ऐसा सोचना भी अधार्मिक है। क्या उसने कहा और फिर अपना उद्देश्य बदल दिया? — नहीं। न तो धर्मग्रंथ ऐसा कहता है, न ही सृष्टिकर्ता शक्तिहीन हो गया है, और न ही उद्देश्य अधूरा रहा है। तो, इस छूट का कारण क्या है? *'आओ, हम मनुष्य को अपनी प्रतिमा और अपनी समानता में बनाएँ'* पहला (κατ' εικόνα) हमें सृष्टि द्वारा प्राप्त है; जबकि दूसरा (καθ' ομοίωσιν) हम अपनी स्वतंत्र इच्छा से स्वयं साकार करते हैं। ईश्वर की प्रतिमा में होना हमारी सृष्टि से ही

1349 *क्रिसोस्टोम,* होमलीज ऑन जेनेसिस, XVIII, n. 3; XXI, n. 2; *ग्रेगरी ऑफ निस्सा,* ऑन द क्रिएटर, अध्याय III, IV; *यूसेबियस,* ऑन द इनकार्नेशन एंड इनविजिबिलिटी ऑफ गॉड, गैलंड, IV, 498 में; *एपिफेनियस,* होमलीज ऑन जेनेसिस, 1, 26; *थियोडोरेट,* क्वेश्चंस ऑन जेनेसिस, XX.

1350 *जस्टिन,* *डे रेसरेक्शियोने*, *ग्रैब.* *स्पेसलिगि.* खंड 2, पृ. 187; *आइरेनियस,* *एडवर्सस हेरेसेस* V, 6; *ग्रेगरी ऑफ़ निस्सा,* *डे होमिनी ओपिफि.* अध्याय 8; *ऑगस्टीन,* *डे जेनेसी कोंट्रा मनिचियस* अध्याय 17; *डे क्वेस्ट. LXXXIII*, प्रश्न LI.

1351 *क्लेम. एलेक्स.* *स्ट्रोम.* 2, 22: 'क्या ऐसा है कि मनुष्य को बिल्कुल शुरुआत में ही ईश्वर की छवि में बनाया गया था, जबकि समानता बाद में, पूर्णता प्राप्त करने पर हासिल की जानी है?' *ओरिजिन,* *डे प्रिंसिपियस* III, 6, n. 1; *एम्ब्रोसियस,* *De dignitate conditio humana*, अध्याय II, III; *ग्रेगरी ऑफ़ निसा,* *Oratio in verba: faciamus hom.*, *Chron. Ch. 1840*, III, 320 ff. में; *जॉन ऑफ़ डेमास्कस,* एक्सैक्ट एक्सपोज़िशन ऑफ़ द ऑर्थोडॉक्स फेथ II, 12, पृ. 90: "*वचन—'प्रतिमा' के अर्थ* में—मन की शक्ति और स्वतंत्रता की शक्ति (αὐτεξούσιον) को दर्शाता है, जबकि *वचन—'सादृश्यता' के* अर्थ में—गुणों में समानता (ईश्वर के समान) को दर्शाता है, जहाँ तक यह संभव है।"

1352 *टर्तु□□□□यन,* अगेंस्ट प्रैक्स. 5; *क्लेमेंट ऑफ एलेक्जेंड्रिया,* स्ट्रोम. V, 14; VI, 14; *एम्ब्रोस,* हेक्सामेरॉन पर टिप्पणी VI, 8; *ऑगस्टीन,* ऑन द ट्रिनिटी XII, 7, 8, 12.

1353 *टर्तुल्लियन,* अगेंस्ट मार्शियन, II, 5, 6; *टाइटस बोस्ट्रसियस,* अगेंस्ट मनीकेइज्म, II, 5; *जेरोम,* एपिस्टल CXLVI.

1354 *नोवाटियन,* *डी ट्रिनिटिटे*, अध्याय 1; *निकिस के ग्रेगरी,* *ओराटियो कैटेकेटिका*, VI।

1355 *क्लेम. अलेक्ज.* *स्ट्रोम. II, 22*; *ओरिजिन,* *एडव. सेल्स.* VI, 63; *एम्ब्रोज़,* *डे बोना मोर्ट.* अध्याय V; *सिरिल,* *कॉन्ट्रा एंथ्रोपोम.* अध्याय II, III; *पीटर क्रिसोलोगस,* *सर्म. CXX*.

1356 *अलेक्जेंड्रिया के सिरिल,* थिसॉरस, XXXIV; संवाद, VI.

स्वाभाविक है; लेकिन ईश्वर के समान बनना हमारी इच्छा पर निर्भर करता है। और यह पहलू, जो हमारी इच्छा पर निर्भर करता है, हमारे भीतर केवल एक संभावना के रूप में मौजूद है; इसे वास्तव में हम अपनी ही गतिविधि के माध्यम से प्राप्त करते हैं। यदि प्रभु, हमें बनाने के इरादे से, पहले से यह न कहते: 'आओ, हम मनुष्य को अपनी समानता पर बनाएं', और यदि उन्होंने हमें अपनी समानता में होने की क्षमता न दी होती, तो हम अपनी शक्ति से ईश्वर की समानता में नहीं हो सकते थे। अब, हालाँकि, हमारी सृष्टि में हमें ईश्वर के समान होने की क्षमता प्राप्त हुई है। लेकिन, हमें यह क्षमता देने के बाद, ईश्वर ने यह हमारे ऊपर छोड़ दिया है कि हम स्वयं अपनी समानता के कर्ता बनें, ताकि वह हमारे कर्म के लिए हमें एक सुखद पुरस्कार प्रदान कर सकें; ताकि हम चित्रकारों द्वारा बनाई गई निर्जीव मूर्तियों की तरह न हों।[1357]

B) धर्मग्रंथ के कुछ अंशों में यह निहित है कि पतित मानवता में भी परमेश्वर की प्रतिमा मौजूद है, जैसा कि उदाहरण के लिए, बाढ़ के बाद नूह से परमेश्वर के वचनों में स्पष्ट है: *'जो किसी मनुष्य का रक्त बहाएगा, उसका रक्त मनुष्यों के हाथों बहाया जाएगा, क्योंकि मनुष्य परमेश्वर की प्रतिमा में बनाया गया है* (उत्पत्ति 9:6; याकूब 3:9)—और फिर भी मसीहियों को आज्ञा दी गई है कि *वे नया स्वभाव धारण करें, जो परमेश्वर के स्वरूप के अनुसार धार्मिकता और सच्चाई की पवित्रता में बनाया गया है* (इफिसियों 4:24)। तो इसका क्या मतलब है, अगर यह कि पहली बात में यह विशेष रूप से परमेश्वर की उसी प्रतिमा को संदर्भित करता है, जो हमारी प्रकृति में अंतर्निहित है, उससे अविभाज्य है और, उसकी तरह, अपरिवर्तनीय है; जबकि दूसरे मामले में, केवल ईश्वर के सदृश होने या ईश्वर के समान बनने का अर्थ है—एक ऐसी अवस्था जो हमारी इच्छा पर निर्भर करती है, जिसे हम इसलिए प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन जिसे हम अपने पापों के कारण खो भी सकते हैं? "ईश्वर की प्रतिमा," रोस्तोव के संत दिमित्री कहते हैं, "एक अविश्वासी की आत्मा में भी मौजूद है, जबकि समानता केवल एक सदाचारी ईसाई में पाई जाती है; और जब एक ईसाई घातक पाप करता है, तो वह केवल ईश्वर की समानता से वंचित हो जाता है, प्रतिमा से नहीं। और भले ही वह अनंतकालिक यातनाओं के लिए दंडित हो जाए, परमेश्वर की प्रतिमा उसके भीतर हमेशा के लिए वही रहती है, जबकि समानता अब और मौजूद नहीं रह सकती।"[1358] "मेरी सृष्टि के समय ही," सेंट ग्रेगरी ऑफ निसा तर्क देते हैं, "मुझे *प्रतिमा* प्राप्त हुई, जबकि अपनी इच्छा से मैं *समानता में* मौजूद हूँ... एक चीज़ दी गई है, जबकि दूसरी अधूरी छोड़ दी गई है, ताकि आप स्वयं को परिपूर्ण करके ईश्वर से पुरस्कार पाने के योग्य बन सकें। तो फिर, हम *उसकी तरह* कैसे बनें? सुसमाचार के माध्यम से। ईसाई धर्म क्या है? ईश्वर के समान बनना, जितना कि मानव स्वभाव के लिए संभव है। यदि आपने ईसाई बनने का संकल्प लिया है, तो ईश्वर के समान बनने का प्रयास करें, स्वयं को मसीह में परिधानित करें।"[1359]

3.2. मनुष्य के उद्देश्य और मूल स्थिति पर

§83. मानव जाति का उद्देश्य

मनुष्य को सभी सांसारिक प्राणियों से ऊपर उठाकर, उसे तर्क और स्वतंत्रता प्रदान करके, और उसे अपनी ही छवि से सुशोभित करके, सृष्टिकर्ता ने उसके लिए एक विशेष और उत्कृष्ट उद्देश्य निर्धारित किया। और —

1. परमेश्वर के संबंध में, मनुष्य का उद्देश्य उस उत्कृष्ट वाचा या परमेश्वर के साथ एकता के प्रति दृढ़ता से वफादार बने रहना है (धर्म), जिसके लिए सर्व-सत्पुरुष ने उसे सृष्टि के क्षण में ही बुलाया, उस पर अपनी छवि अंकित की, ताकि इस बुलावे के परिणामस्वरूप, वह अपनी तर्कशील और स्वतंत्र आत्मा की सभी शक्तियों के साथ अपने मूल आदर्श की ओर लगातार प्रयत्नशील रहे; अर्थात्, वह अपने स्रष्टा को जाने और उसकी महिमा करे, उसके लिए और उसके साथ नैतिक एकता में जिए। सीराख के बुद्धिमान पुत्र के अनुसार, ईश्वर ने *उन्हें 'मन की अंतर्दृष्टि से युक्त किया,'* और *'उनके हृदयों पर अपनी दृष्टि टिकाई, ताकि वे उनके कार्यों की महानता को देख सकें, और वे उनके पवित्र नाम की महिमा करें तथा उनके कार्यों की महानता का प्रचार करें।' उन्होंने उन्हें ज्ञान प्रदान किया और उन्हें जीवन का विधान विरासत में दिया; उन्होंने उनके साथ एक अनंतकालिक वाचा स्थापित की और उन्हें अपने निर्णय प्रकट किए* (सिर. 17:6–10)। इसके अनुसार, उद्धारकर्ता ने हमें भी आज्ञा दी: *'तुम्हारा प्रकाश मनुष्यों के सामने चमके, ताकि वे तुम्हारे*

[1357] ओरेट. इन वर्बा: *'फेसिएमस होमोनेम'*, इन क्रि. खं. 1840, III, 320–322.

[1358] सूची. पृ. 293–294.

[1359] क्रि. खं. 1840, III, 324।

भले काम देखकर तुम्हारे स्वर्गीय पिता की महिमा करें (मत्ती 5:16)। पवित्र प्रेरितों ने भी आज्ञा दी: *'अपने शरीरों और अपनी आत्माओं में, जो परमेश्वर की हैं, परमेश्वर की महिमा करो'* (1 कुरिन्थियों 6:20); *'चाहे तुम खाओ या पियो, या जो कुछ भी करो, सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिए करो* (1 कुरिन्थियों 10:31)। चर्च के प्राचीन और प्रसिद्ध शिक्षकों और लेखकों ने भी मनुष्य के इस उद्देश्य को सबसे महत्वपूर्ण बताया है:

लैक्टैंटियस: 'हम इस शर्त पर पैदा होते हैं कि हम अपने प्रभु, जिन्होंने हमें जन्म दिया, को न्यायसंगत और उचित आज्ञाकारिता दें, कि हम केवल उसी को जानें, और कि हम उसका अनुसरण करें। इस *भक्ति के बंधन से* बँधे होकर, हम ईश्वर के साथ एक हो जाते हैं, जिससे धर्म स्वयं अपना नाम प्राप्त करता है... इस प्रकार, 'धर्म' नाम का व्युत्पन्न उस भक्ति के बंधन से होता है, जिससे परमेश्वर ने मनुष्य को स्वयं से जोड़ दिया है और उसे भक्ति के द्वारा बाँध दिया है: क्योंकि हमारे लिए यह आवश्यक है कि हम प्रभु के रूप में उसकी सेवा करें और पिता के रूप में उसकी आज्ञा मानें।"[1360]

बेसिल द ग्रेट: "तुम ईश्वर द्वारा सृजित एक सुव्यवस्थित पात्र हो: अपने स्रष्टा की महिमा करो। क्योंकि तुम्हें ईश्वर की महिमा का एक योग्य साधन बनने के अलावा किसी अन्य उद्देश्य से नहीं बनाया गया है; और यह संपूर्ण विश्व, मानो, तुम्हारे लिए एक जीवित पुस्तक है, जो ईश्वर की महिमा का घोषणा करती है और तुम्हें, जो तर्क के स्वामी हो, ईश्वर की छिपी और अदृश्य महानता को प्रकट करती है, ताकि तुम सत्य के ईश्वर को जान सको। मेरी कही हुई बात को दृढ़ता से मन में रखो।"[1361]

ग्रेगरी द थियोलोजियन: "यह उचित था कि ईश्वर की उपासना केवल स्वर्गीय क्षेत्रों तक ही सीमित न रहे, बल्कि पृथ्वी पर भी कुछ उपासक होने चाहिए, और यह कि सभी ईश्वर की महिमा से भर जाएँ (क्योंकि सभी चीजें ईश्वर की हैं): इस उद्देश्य के लिए मनुष्य को बनाया गया है, जिसे ईश्वर के हाथों के काम और उसकी प्रतिमा के रूप में सम्मानित किया गया है।"[1362]

जॉन क्रिसोस्टोम: "ईश्वर ने हमें दृष्टि, वाणी और श्रवण शक्ति दी है ताकि हमारे सभी अंग उनकी सेवा कर सकें, ताकि हम उनके अनुकूल तरीके से बोलें और कार्य करें, उनके लिए अखंड गीत गाएं, और उन्हें धन्यवाद अर्पित करें।"[1363]

एम्ब्रोस: "किसी ने सही कहा है: *'हम उसकी संतान हैं'* (प्रेरितों के काम 17:28)। क्योंकि सृष्टिकर्ता ने हमें अपनी स्वभाविक प्रकृति, अर्थात् एक तर्कशील स्वभाव, प्रदान किया है, ताकि हम उस दिव्य की खोज कर सकें जो *हम में से किसी से भी दूर नहीं* है (27), और जिसमें *हम जीते हैं, और गति करते हैं, और हमारा अस्तित्व है* (28)।[1364]

मैकैरियस द ग्रेट: "प्रभु ने आत्मा को इस प्रकार बनाया कि वह उनकी दुल्हन और साथी बन सके, जिसके साथ वह एक हो सकें, ताकि वह उनके साथ एक आत्मा बन सके, जैसा कि प्रेरित कहते हैं: *'जो प्रभु के साथ एक है, वह प्रभु के साथ एक आत्मा है* (1 कुरिन्थियों 6:17)।"[1365]

२. एक व्यक्ति के अपने संबंध में, उसका उद्देश्य यह है कि, नैतिक शक्तियों के साथ ईश्वर की छवि में बनाए गए होने के नाते, उन्हें इन शक्तियों को अच्छे कर्मों में लगाकर निरंतर विकसित और परिपूर्ण करने का प्रयास करना चाहिए, और इस प्रकार वे अपने मूल आदर्श के अधिक से अधिक समान बन जाएँ। इसीलिए, पुराने नियम में, प्रभु ने लोगों से बार-बार आज्ञा दी: *'पवित्र बनो, क्योंकि मैं, प्रभु तुम्हारा परमेश्वर, पवित्र हूँ'* (लैव्य. 11:44; 19:2; 20:7), और अब नए नियम में हम अपने उद्धारकर्ता से सुनते हैं: *'पूर्ण बनो, जैसे तुम्हारा स्वर्गीय पिता पूर्ण है* (मत्ती 5:48)। हालाँकि, मानव का यह उद्देश्य पहले वाले से मौलिक रूप से भिन्न है; इसके विपरीत, यह उसी के भीतर निहित है और उसकी प्राप्ति के लिए एक आवश्यक शर्त के रूप में कार्य करता है: क्योंकि हम मुख्य रूप से अच्छे कर्मों के माध्यम से परमेश्वर का सम्मान और महिमा कर सकते हैं (मत्ती 5:16), और अच्छे कर्मों के बिना, पूजा का कोई भी अन्य रूप उसे

[1360] Instit. Divin. IV, 28। तुलना करें: De falsa sapient. III, c. 10; de vita beat. VII, c. 5।

[1361] ओरेट. II दे होमिन. स्ट्रक्चरा, इन ओप. वॉल. I, पृ. 338, एड. *गार्नियर*, इन क्र. च. 1841, IV, 6। यह उपदेश उनके ग्रंथों के संपादक, मोरेल (ओप. वॉल. I, पृ. 153–166) द्वारा संत ग्रेगरी ऑफ़ निसा का भी माना जाता है।

[1362] प्रभु के प्रकटोत्सव के पवित्र पर्वों पर उपदेश, *पवित्र पिताओं के कार्यों* में, III, 262–263।

[1363] संत मत्ती पर एक प्रवचन, 2:4, पृ. 33, मॉस्को 1843.

[1364] एपिस्ट. 43 होरोन्टियानो, संख्या 10, पैट्रोलॉजिया कर्सस कम्प्लेटस, खंड XVI, पृष्ठ 1132 में।

[1365] आत्मा के ईश्वर की ओर मोड़ और उनके साथ एकता पर एक प्रवचन, *क्रॉनिकल ऑफ रीडिंग्स* 1837, II, 119 में।

अप्रयि है (यशायाह 1:11, 20)। चर्च के पवत्रि पतिाओं और लेखकों ने मनुष्य के इस उद्देश्य के बारे में स्पष्ट रूप से बात की है:

क) *ग्रेगरी द थियोलोजयिन:* 'हमें अच्छे कर्मों के लिए बनाया गया है, ताकि हम सृष्टकिर्ता की महमिा और प्रशंसा कर सकें और, यथासंभव, ईश्वर का अनुकरण कर सकें';[1366]

ख) *लैक्टैंटियस:* "यदि कोई स्वस्थ दमिाग वाले व्यक्ति से पूछे कि वे क्यों पैदा हुए हैं, तो वह व्यक्ति साहसपूर्वक और तुरंत उत्तर देगा: 'मैं ईश्वर का सम्मान करने के लिए पैदा हुआ था, जिन्होंने हमें इसी उद्देश्य के लिए बनाया है, कि हम उनकी सेवा करें; और ईश्वर की सेवा करने का अर्थ सत्य को बनाए रखना और उसे अच्छे कर्मों के माध्यम से संरक्षति करना है'";[1367]

ग) *बेसलि द ग्रेट:* "आपके शरीर की बनावट उस उद्देश्य के बारे में आपके लिए एक सबक है जिसके लिए आपको बनाया गया है: आपको सीधा बनाया गया है ताकि आप अपना जीवन पृथ्वी पर न घसीटें, बल्कि स्वर्ग और वहाँ रहने वाले ईश्वर की ओर देखें, और ताकि आप पशुवत सुखों का पीछा न करें, बल्कि, आपको दी गई बुद्धि के अनुसार, एक स्वर्गीय जीवन जिएँ";[1368]

घ) *बोस्ट्रयिा के टाइटस:* "यह कहा जाना चाहिए कि मनुष्य को सृष्टकिर्ता द्वारा जीवन के लिए बुलाया गया है ताकि वह केवल धार्मकिता और सदाचार में ही अपना मन लगाए: क्योंकि, इन्हें प्राप्त करके, वह वास्तव में जीवन भी प्राप्त करेगा";[1369]

ई) *जॉन क्रसिोस्टोम:* "हम खाने, पीने और कपड़े पहनने के लिए नहीं पैदा हुए हैं, बल्कि इसलिए कि, दविय ज्ञान प्राप्त करके, हम बुराई से बचें और सद्गुण के लिए प्रयास करें...; क्योंकि मनुष्य को बनाते समय, ईश्वर ने कहा: *'आओ हम मनुष्य को अपनी प्रतमिा और समानता में बनाएँ*—और हम ईश्वर के समान तब नहीं बनते जब हम खाते, पीते और अपने लिए कपड़े पहनते हैं (क्योंकि ईश्वर न खाते हैं, न पीते हैं, न ही स्वयं को कपड़े पहनाते हैं), बल्कि तब बनते हैं जब हम धार्मकिता का पालन करते हैं, अपने पड़ोसी से प्रेम करते हैं, वनिीत और नम्र होते हैं, अपने पड़ोसी पर दया दखिाते हैं, और हर सद्गुण से स्वयं को सजाते हैं।"[1370]

लेकनि चूँकि, जैसे-जैसे कोई व्यक्ति सद्गुणों में प्रगति करता है, वह परमानंद प्राप्त करता है, जो अच्छे कर्मों का परणिाम और उनका पुरस्कार है, उद्धारकर्ता की स्वयं धन्यवचन पर शकि्षा के अनुसार (मत्ती 5:16); और चूँकि *धार्मकिता*, अपनी प्रकृति से ही, *सभी चीजों के लिए उपयोगी है, जो वर्तमान और भवषि्य दोनों जीवन का वादा रखती है* (1 टमिोथी 4:8): कहा जा सकता है कि मनुष्य, *जो भले कामों के लिए बनाया गया है* (इफसियिों 2:10), एक ही समय में आनंद के लिए भी बनाया गया है, और इसलिए, आनंद स्वयं के संबंध में मनुष्य के उद्देश्यों में से एक है। और पवत्रि पतिाओं ने कभी-कभी इस उद्देश्य की ओर इशारा कयिा—

क) ग्रेगरी द थियोलॉजसि्ट: "हमें फलने-फूलने के लिए बनाया गया था: और हमें बनाया जाने के बाद हम फलते-फूलते थे; स्वर्ग का आनंद लेने के लिए हमें सौंपा गया था; हमें एक आज्ञा दी गई ताकि, उसका पालन करके, हम महमिा के पात्र बन सकें";[1371]

ख) नसि्सा के ग्रेगरी: 'यह उचति था कि दविय आशीर्वादों का आनंद लेने के लिए बनाया गया मनुष्य, अपनी प्रकृति में उस चीज़ के समान कुछ रखे जिसका वह आनंद लेने वाला है; इसीलिए उसे जीवन, तर्क, ज्ञान और सभी ईश्वर-समान गुणों से संपन्न कयिा गया है';[1372]

ग) दमास्कस के जॉन: "एक दयालु ईश्वर के रूप में, उन्होंने हमें दंडति करने के लिए नहीं बनाया, बल्कि इसलिए बनाया कि हम उनकी भलाई में सहभागी हो सकें।"[1373]

[1366] प्रभु के प्रकट होने के पवत्रि पर्वों पर प्रवचन, *पवत्रि पतिाओं के कार्य*, III, 257 में।
[1367] *डे फाल्सा सापएिंटयिा*, III, अध्याय 10.
[1368] क्रॉनकिल ऑफ रीडगि्स 1841, IV, 29, टपि्पणी 1361।
[1369] *दामास्कस* के पास, *सैक्रामेंटेलसि पैरेलेलाए*, *ओपेरा* में, खंड 2, पृष्ठ 747, संपा. *ले क्वएिन*।
[1370] तुलना करें: *दमास्कनिस,* उद्धृत ग्रंथ, पृ. 313.
[1371] पवत्रि ईस्टर के लिए उपदेश, *पवत्रि पतिाओं के कार्यों* में, IV, 182.
[1372] धर्मप्रश्नोत्तर, अध्याय 5.
[1373] ऑर्थोडॉक्स वशि्वास की सटीक व्याख्या, पुस्तक II, अध्याय 29, पृ. 128, रूसी अनुवाद से।

3. अंत में, अपने चारों ओर की सभी प्रकृति के संबंध में मनुष्य का उद्देश्य स्वयं त्रिमूर्ति सृष्टिकर्ता के शब्दों में स्पष्ट रूप से परिभाषित है: 'आओ हम मनुष्य को अपनी प्रतिमा में, अपनी समानता के अनुसार बनाएँ; और उन्हें समुद्र की मछलियों, आकाश के पक्षियों, और पशुओं, और सारी चौपायों, और सारी पृथ्वी पर, और पृथ्वी पर रेंगने वाले हर रेंगने वाले जीव पर अधिकार दें' (उत्पत्ति 1:26)। ईश्वर की प्रतिमा के रूप में, स्वर्गीय पिता के घर में एक पुत्र और वारिस के रूप में, मनुष्य को, मानो, सृष्टिकर्ता और सांसारिक सृष्टि के बीच एक मध्यस्थ के रूप में नियुक्त किया गया है; विशेष रूप से, वह, मानो, इसका भविष्यवक्ता होने के लिए नियत है, ताकि वह वचन और कर्म के द्वारा इसके बीच ईश्वर की इच्छा का प्रचार कर सके; एक महायाजक, जो पृथ्वी पर जन्मे सभी के लिए परमेश्वर को स्तुति और धन्यवाद का बलिदान चढ़ाए और पृथ्वी पर स्वर्गीय आशीर्वाद लाए; एक प्रमुख और एक राजा, ताकि, सभी दृश्यमान प्राणियों के अस्तित्व के उद्देश्य को अपने भीतर केंद्रित करके, वह सभी चीजों को अपने माध्यम से ईश्वर के साथ जोड़ सके, और इस प्रकार पृथ्वी की सृष्टि की पूरी शृंखला को सामंजस्यपूर्ण व्यवस्था और एकता में बनाए रख सके। चर्च के पवित्र पिताओं और शिक्षकों ने मनुष्य के इस आह्वान—अपने चारों ओर की प्रकृति का राजा और स्वामी बनने—के बारे में बहुत बार बात की, विशेष रूप से इस प्रश्न पर कि मनुष्य को आखिर में क्यों बनाया गया। उदाहरण के लिए, यहाँ शब्द हैं—

क) *संत एम्ब्रोज़:* 'अपने गौरव के कारण, मनुष्य अंतिम रूप से प्रकट हुआ, प्रकृति के उद्देश्य के रूप में, धार्मिकता के लिए बनाया गया, अन्य जानवरों के बीच धार्मिकता का निर्णायक बनने के लिए...; वह सही ही अंतिम रूप से प्रकट हुआ, सभी सृष्टि के मुकुट के रूप में, दुनिया के कारण के रूप में, जिसके लिए सभी चीजें बनाई गई थीं;[1374]

ख) *संत ग्रेगरी द थियोलोजियन:* 'यदि मनुष्य, जिसे ईश्वर की कृति और प्रतिमा के रूप में सम्मानित किया गया है, दुनिया में सबसे अंत में प्रकट हुआ, तो यह किसी भी तरह से आश्चर्य की बात नहीं है: क्योंकि उसके लिए, एक राजा के लिए, एक शाही निवास तैयार करना उचित था, और केवल तभी सभी प्राणियों के साथ राजा को उसमें लाना था';[1375]

ग) *धन्य थियोडोरेट:* "सभी का ईश्वर, दृश्य और अदृश्य प्राणियों की सृष्टि करने के बाद, अंत में मनुष्य को लाया, उसे निर्जीव और सजीव प्राणियों, दृश्य और अदृश्य प्राणियों के बीच, अपनी ही प्रतिमा के रूप में स्थापित किया, ताकि निर्जीव और सजीव प्राणी उसकी सेवा कर सकें, एक प्रकार के श्रद्धांजलि के रूप में, जबकि अदृश्य स्वभाव, मनुष्य की देखभाल करके, सृष्टिकर्ता के प्रति अपने प्रेम की गवाही दे सकते थे।"[1376]

§84. प्रथम मानव की अपनी प्रयोजन, या पूर्णता के लिए क्षमता

इतने ऊँचे उद्देश्य के लिए मनुष्य को नियुक्त करते हुए, प्रभु परमेश्वर ने उसे इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए पूरी तरह से सक्षम, अर्थात्, पूर्ण बनाया। यह विचार —

क) यह मूसा की गवाही से निकलता है, जिन्होंने मनुष्य की सृष्टि के बारे में अभी-अभी बात करने के बाद, अचानक एक सामान्य अवलोकन किया: *'और परमेश्वर ने जो कुछ भी बनाया था, उसे देखकर देखा, और देखो, यह बहुत अच्छा था* (उत्पत्ति 1:31);

ख) ईश्वर को एक अनंत रूप से बुद्धिमान प्राणी मानने की अवधारणा के आधार पर यह स्वस्थ तर्क द्वारा अनिवार्य रूप से स्वीकार किया जाता है, जो किसी को भी अपूर्ण, अर्थात् उद्देश्य के लिए अपर्याप्त, नहीं बना सकता था। विशेष रूप से—

1. मनुष्य अपने स्रष्टा के हाथों से आत्मा में, बौद्धिक और नैतिक रूप से पूर्ण होकर उत्पन्न हुआ (पश्चाताप के नियम, भाग 1, प्रश्न 23 का उत्तर)। आदम की बुद्धि के प्रमाण के रूप में, यह उचित है कि उन नामों की ओर इशारा किया जाए जो उसने जानवरों को दिए: *'और मनुष्य ने सब पशुओं, आकाश के पक्षियों और मैदान के हर जीव को नाम दिए* (उत्पत्ति 2:20)। यहाँ सबसे पहले यह ध्यान देने योग्य है कि परमेश्वर स्वयं *जानवरों को आदम के पास यह देखने के लिए लाए कि वह उन्हें क्या नाम देगा: 'और वह उन्हें मनुष्य के पास यह देखने के लिए लाया कि वह उन्हें क्या नाम देगा* (19); दूसरी बात, कि आदम ने जानवरों को जो भी नाम दिए, ईश्वर ने उन्हें बिना किसी परिवर्तन के स्वीकार कर लिया, और परिणामस्वरूप उन्हें विभिन्न जानवरों की प्रकृति के लिए अच्छा और उपयुक्त माना, या कम से कम, उनकी प्रमुख

[1374] पत्र XLIII, क्रमांक 13, 19, *पैट्रोलॉजिया कर्सस कम्प्लेटस*, खंड XVI, पृ. 1133, 1135 में।

[1375] नए सप्ताह के लिए एक वचन, *पवित्र पिताओं के कार्य*, खंड IV, पृ. 144 में।

[1376] उत्पत्ति की पुस्तक पर, प्रश्न 20, क्रि. रीडिग्स 1843, खंड III, पृ. 348 में। सेंट ग्रेगरी ऑफ निस्सा ने भी यही विचार प्रस्तुत किया है (De homin. opific., अध्याय 2, खंड 1, पृ. 50–51, सं. *मोरेल.*).

विशेषताओं के लिए: *'जिसे-जिसे जीवित प्राणी को मनुष्य ने नाम दिया, वही उसका नाम था* (19); अंत में — कि ये नाम, जो विभिन्न जानवरों की प्रकृति के अनुरूप थे, आदम ने उन जानवरों पर एक ही नज़र में, तुरंत ही रचे थे, न कि उनकी विशेषताओं के दीर्घकालिक अध्ययन के परिणामस्वरूप।

संत जॉन क्रिसोस्टोम कहते हैं, "विचार करो, मेरे प्रिय, आदम में विद्यमान इच्छा की स्वतंत्रता और ज्ञान की प्रचुरता पर, और यह न कहो कि वह नहीं जानता था कि क्या अच्छा था और क्या बुरा। वह जिसने मवेशियों, आकाश के पक्षियों और जंगली जानवरों को उपयुक्त नाम दिए, और ऐसा करते हुए व्यवस्था में भ्रम नहीं डाला—ना तो उसने नरम स्वभाव वाले जानवरों को उग्र जानवरों के नाम दिए, और ना ही उग्र जानवरों को नरम स्वभाव वालों के नाम दिए—बल्कि, इसके विपरीत, प्रत्येक को उसका अपना नाम दिया—क्या वह सभी ज्ञान और बुद्धि से परिपूर्ण नहीं था?... ईश्वर ने स्वयं इन नामों को इतनी हद तक स्वीकार किया कि उन्होंने उनमें थोड़ा भी परिवर्तन नहीं किया, और न ही उन्हें समाप्त करना चाहा, भले ही आदम से किसी भी मामले में चूक हुई हो।"[1377]

हालाँकि, आदम की बुद्धिमत्ता को किसी प्रकार की सर्व-व्यापी पूर्णता के रूप में नहीं माना जाना चाहिए, जो केवल ईश्वर की है — प्रथम मनुष्य का मन निस्संदेह शुद्ध, स्पष्ट था, स्वस्थ, पूर्वाग्रह और त्रुटि से मुक्त, और चीजों को बहुत आसानी से समझने में सक्षम था; फिर भी, साथ ही, यह सीमित था, एक बार में सब कुछ आत्मसात करने या सब कुछ भेदने में असमर्थ था, जैसा कि हमारे माता-पिता के पतन के समय (उत्पत्ति 3:1–7) में जल्द ही प्रमाणित हुआ। पहले मनुष्य का मन और अधिक विकसित होने तथा परिपूर्ण होने के लिए था, ठीक उसी तरह जैसे स्वर्गदूतों के मन स्वयं परिपूर्ण होते हैं—यह एक ऐसा विचार है जो चर्च फादर्स की रचनाओं में अक्सर मिलता है।[1378]

हालांकि, इस बात का प्रमाण कि पहला मनुष्य नैतिक दृष्टि से पूरी तरह शुद्ध और निर्दोष था, एक ओर, पवित्र वंशावलीकार के इस अवलोकन से मिलता है: *'आदम और उसकी पत्नी दोनों नग्न थे, और उन्हें कोई लज्जा नहीं हुई* (उत्पत्ति 2:25)। 'यह,' सेंट जॉन ऑफ़ डेमास्कस कहते हैं, 'निष्काम भाव की चरम सीमा है।'[1379] और दूसरी ओर, उपदेशक की प्रत्यक्ष गवाही है: *'मैंने केवल यही पाया है: कि परमेश्वर ने मनुष्य को सीधा बनाया है* (उपदेशक 7:29)। हालांकि, पहले मनुष्यों की धार्मिकता, जिसकी पवित्र चर्च ने हमेशा घोषणा की है,[1380] का यह अर्थ नहीं लगाया जाना चाहिए कि उनमें शुरू से ही सभी सद्गुण मौजूद थे और उन्हें पूर्ण करने के लिए कुछ भी शेष नहीं था; नहीं, यद्यपि आदम और हव्वा सृष्टिकर्ता के हाथों से पूरी तरह शुद्ध और निर्दोष होकर निकले थे, फिर भी उन्हें अपनी अच्छाई को स्थापित करना था और ईश्वर की मदद से, अपने स्वयं के प्रयासों से, स्वयं को परिपूर्ण बनाना था। संत आइरेनियस तर्क देते हैं, "ईश्वर द्वारा रचित और निर्मित मनुष्य, अनंत ईश्वर की *प्रतिमा और समानता में*, पिता की इच्छा और आज्ञा से, पुत्र की क्रिया और रचनात्मकता के माध्यम से बनाया गया था, जबकि वह स्वयं आत्मा द्वारा पोषित और सुदृढ़ किया जा रहा था, ठीक उसी तरह जैसे वह स्वयं धीरे-धीरे प्रगति करता और पूर्णता की ओर बढ़ता गया। यह उचित था कि मनुष्य सबसे पहले अस्तित्व में आए, और अस्तित्व में आने के बाद, उसे बढ़ना चाहिए; जैसे-जैसे वह बढ़ा, उसे परिपक्व होना चाहिए; जैसे-जैसे वह परिपक्व हुआ, उसे बल मिलना चाहिए; जैसे-जैसे उसे बल मिला, उसे पूर्ण किया जाना चाहिए; जैसे-जैसे वह पूर्ण हुआ, उसे महिमामय किया जाना चाहिए; और जैसे-जैसे वह महिमामय हुआ, उसे ईश्वर को देखने के योग्य समझा जाना चाहिए।"[1381]

2. मनुष्य अपने सृष्टिकर्ता के हाथों से शरीर में भी परिपूर्ण होकर उत्पन्न हुआ। अनंत बुद्धिमान के एक सृजन के रूप में, उसने—अपने अद्भुत संविधान के साथ, जिसे वह आज तक बनाए हुए है—निस्संदेह सृष्टिकर्ता से कोई भी दोष नहीं पाया, न तो आंतरिक और न ही बाहरी; और, *शक्ति से संपन्न* होकर (सीर. 17:3), उसमें नई और अक्षुण्ण शक्तियाँ

[1377] होमलि. इन जेनेस. XIV, n. 5; सेर्म. इन जेनेस. VI, n. 1, इन ओप. वॉल्यूम IV, पीपी. 113, 672, एड. *मॉन्टफॉक.*

[1378] *इरनेयस,* *वरिद्ध संप्रदाय* IV, 39, n. 1; *थियोफिलिस,* *एड ऑटोलुयकस* 11, 15; *क्लेमेंट ऑफ एलेक्जेंड्रिया,* *कोहॉर्ट* 11; *स्ट्रोमाटा* IV, 25; *डायोनिसियस* ऑफ एलेक्जेंड्रिया, *अपुड *नकिटियनस**, *जॉब* पर *कैटलॉग* (*राउथ,* *रेलिजिन सैक्रा* 11, पृ. 396); *ऑगस्टीन,* *डे जेनेसिस एड लिटिरम* VI, 20; n. 31.

[1379] रूसी अनुवाद के अनुसार, *सही आस्था की व्याख्या*, पुस्तक II, अध्याय 2, पृष्ठ 86।

[1380] *इरनेयस,* *एगेंस्ट हेरेसीज़*, III, 23, n. 5; *ट्रटुलियन,* *ऑन पेशेंस*, अध्याय 5; *क्लेमेंट,* *कोहॉर्ट*, XI; *बेसिल* द ग्रेट, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स* में, 'ईश्वर बुराई का कर्ता नहीं है' पर प्रवचन, VIII, 155; *क्रिसोस्टोम,* उत्पत्ति पर उपदेश, उपदेश XV, टिप्पणी 4; *एम्ब्रोस,* इसहाक और आत्मा पर, अध्याय 5; *ऑगस्टीन,* ईश्वर का नगर, XIV, 26; *जेरोम,* जुवेनल के विरुद्ध, पुस्तक 1, खंड IV, पृ. 171, भाग II, (*मृत्यु*); - *ग्रेगरी* द ग्रेट, *इन जॉब* VIII, 19, n. 35; *जॉन ऑफ़ डेमास्कस,* *एक्ज़ैक्ट एक्सपोज़िशन ऑफ़ द ऑर्थोडॉक्स फेथ*, बुक II, चैप्टर 12.

[1381] *इरनेयस,* *एगेंस्ट हेरेसीज़* 4, अध्याय XXXVIII, संख्या 3, पृष्ठ 285, संस्करण *मैसूएट।*

थीं, उसके भीतर सबसे छोटी गड़बड़ी भी नहीं थी, और इसलिए वह सभी बीमारियों और पीड़ाओं से पूरी तरह मुक्त था—इसीलिए मूसा द्वारा पहले से ही बीमारी और पीड़ा को हमारे प्रथम माता-पिता के पतन के परिणाम और पाप के दंड के रूप में प्रस्तुत किया गया है (उत्पत्ति 3:16)। संत जॉन क्राइसोस्टोम आदम से ईश्वर को इस प्रकार बोलते हुए चित्रित करते हैं: 'तुम्हें संसार में लाते समय, मैंने चाहा था कि तुम बीमारी, परिश्रम, दुर्बलता और दुःख से मुक्त, सुख और समृद्धि में जीवन जियो; कि तुम शारीरिक आवश्यकताओं के अधीन न रहो, बल्कि उन सभी से ऊपर उठकर, पूर्ण स्वतंत्रता में निवास करो'; और इसी तरह हव्वा से कहते हैं: 'मैं चाहता था कि तुम्हारा जीवन पीड़ा-रहित हो और एक ऐसा जीवन हो जो अभाव से मुक्त हो, सभी दुःख और शोक से परे हो, और हर आनंद से परिपूर्ण हो।'[1382] 'यदि हम अभी भी आनंद के स्वर्ग में रह रहे होते,' चर्च के एक अन्य पवित्र पिता लिखते हैं, 'तो हमें कृषि संबंधी आविष्कारों और श्रम की कोई आवश्यकता नहीं होती; और यदि हम सृष्टि के समय हमें प्रदान किए गए और पतन तक हमारे द्वारा संरक्षित वरदान के कारण दुःख-दर्द के अधीन न होते, तो हमें अपनी राहत के लिए चिकित्सा विज्ञान की सहायता की कोई आवश्यकता न होती।"[1383]

ईश्वर से प्राप्त ऐसी प्राकृतिक शक्तियों, और मन, इच्छाशक्ति और स्वयं शरीर की ऐसी अवस्था के साथ, पहला मनुष्य निस्संदेह अपने उद्देश्य को पूरा करने में सक्षम था, अर्थात् ईश्वर को जानना और उसकी महिमा करना, अच्छे कर्म करना और आनंद प्राप्त करना, और अपने अधीन प्राकृतिक जगत का स्वामी बनना। लेकिन मनुष्य की प्राकृतिक शक्तियाँ चाहे कितनी भी परिपूर्ण क्यों न रही हों, वह, एक सीमित प्राणी होने और स्वयं में जीवन के अभाव के कारण, सभी सृजित प्राणियों की तरह, तब भी ईश्वर से निरंतर पोषण का आदी था, जो अकेले ही अपने प्राणियों के लिए—शारीरिक और आध्यात्मिक दोनों रूप से—जीवन का स्रोत हैं। और अनंत रूप से भले सृष्टिकर्ता ने वास्तव में उसी क्षण प्रथम मानव के प्रति अपनी विशेष व्यवस्था का प्रदर्शन किया, और उसी क्षण उसे अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में अपनी प्रत्यक्ष सहायता प्रकट की।

§85. प्रथम मानव को उसकी नियति पूरी करने में ईश्वर की विशेष सहायता

यह सहायता निम्नलिखित में निहित थी:

1. *यहोवा परमेश्वर ने पूर्व में एदन में एक बगीचा लगाया, और उस मनुष्य को वहाँ बसाया जिसे उसने बनाया था* (उत्पत्ति 2:8)। "यह, सेंट जॉन ऑफ़ डेमास्कस के शब्दों में, एक शाही महल के समान था, जहाँ रहते हुए, मनुष्य एक सुखद और आनंदमय जीवन जीता...; यह सभी सुखों और आनंदों का भंडार था: क्योंकि *ईडन* का अर्थ आनंद था... उसके भीतर पूर्ण सामंजस्य था। यह प्रकाश से परिपूर्ण, सबसे उत्तम और शुद्ध हवा से घिरा हुआ था; हमेशा खिलने वाले पौधों से सुसज्जित, सुगंध और प्रकाश से परिपूर्ण, और सुंदरता और अच्छाई की किसी भी इंद्रियात्मक कल्पना से परे था। यह वास्तव में एक दिव्य भूमि थी, एक ऐसी निवास-स्थली जो ईश्वर की छवि में बनाए गए व्यक्ति के योग्य थी।"[1384]

अनादि काल से, स्वर्ग के अर्थ के बारे में कई राय रही हैं, लेकिन तीन मुख्य थीं।[1385] कुछ ने इसे इंद्रियात्मक अर्थ में समझा और पृथ्वी पर इसकी तलाश की;[1386] दूसरों ने इसे आध्यात्मिक अर्थ में समझा, और अक्सर इसकी तलाश दुनिया के उच्च क्षेत्रों में, या मानव हृदय में की;[1387] एक तीसरे समूह ने अंततः इसे संवेदी और आध्यात्मिक दोनों अर्थों में समझा: यह बाद वाला दृष्टिकोण चर्च के प्राचीन शिक्षकों के बहुमत का था,[1388] — और अन्य लोगों में,

---

[1382] उत्पत्ति पर व्याख्यान XVII, क्रमांक 7, 9, पृ. 144, 147, खंड IV, संपादक मोंटफौक।

[1383] *बेसिल द ग्रेट,* *द वर्क्स ऑफ़ द होली फ़ादर्स*, X, 202 में, 'नियमों की संक्षिप्त व्याख्या', प्रश्न 55 का उत्तर।

[1384] ऑर्थोडॉक्स विश्वास की सटीक व्याख्या, पुस्तक II, अध्याय II, पृ. 85।

[1385] "मैं जानता हूँ," धन्य ऑगस्टीन लिखते हैं, "कि कई लोगों ने स्वर्ग के बारे में बहुत कुछ कहा है; लेकिन इस पर तीन मुख्य दृष्टिकोण हैं: पहला उन लोगों का है जो स्वर्ग को केवल इंद्रियात्मक अर्थ में समझना चाहते हैं; दूसरा उन लोगों का है जो इसे केवल आध्यात्मिक अर्थ में समझते हैं; और तीसरा उन लोगों का है जो स्वर्ग को दोनों अर्थों में, इंद्रियात्मक और आध्यात्मिक रूप से समझते हैं" (De Genes. ad litt. अध्याय 1)।

[1386] *थियोफिलस,* एड ऑटोलाइकस II, 20, 24; *हिप्पोलीटस,* नेचाइम में, खंड, *डमास्कन* में, सैक्रामेंटम पैरेलियम में, खंड II, पृ. 787; *एपिफेनियस,* एन्कोराटा, LVII।

[1387] *एफ्रेम,* *De paradiso ad hominem*, प्रवचन; *ग्रेगरी द थियोलोजियन,* *Hymn on the Mystical Words*, 7, *The Works of the Holy Fathers*, IV, 244–245 में।

[1388] *एम्ब्रोस,* *डे पैराडिसो*; *ऑगस्टीन,* *डे जेनेसी कॉन्ट्रा मैनिकिओस*, II, 2; *डे जेनेसी एड लिटिरम*, VIII, 1 ff. एंटिओक के अनास्तासियस कई अन्य प्राचीन शिक्षकों का हवाला देते हैं जो इस दृष्टिकोण को मानते थे (*हेक्साएम*, पुस्तक VII में)। तुलना करें *ले क्वेन,* *ओप. *जोह. डैमस.**, खंड I, पृ. 174, टिप्पणी I)।

दमास्कस के संत जॉन, जिन्होंने अपने विचारों को बहुत स्पष्ट और विस्तार से प्रस्तुत किया। "स्वर्ग," वे कहते हैं, "कुछ लोगों द्वारा इंद्रियात्मक रूप में, और अन्य लोगों द्वारा आध्यात्मिक रूप में कल्पित किया गया है; लेकिन मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि, जैसे मनुष्य को इंद्रियात्मक और आध्यात्मिक दोनों रूपों में बनाया गया था, वैसे ही उसका सबसे परिपूर्ण मंदिर भी इंद्रियात्मक और आध्यात्मिक दोनों था, और इस प्रकार उसकी दोहरी प्रकृति थी। अपने शरीर के साथ, मनुष्य एक दिव्य और सुंदर भूमि में रहता था, जबकि अपनी आत्मा के साथ वह एक अतुलनीय रूप से उच्च और सबसे सुंदर स्थान में रहता था, जहाँ ईश्वर उसका घर और उसका तेजस्वी वस्त्र थे; वह उसकी कृपा से सुसज्जित था, और ईश्वर के सबसे मधुर चिंतन में मग्न था, मानो वह एक और देवदूत हो... मैं इसलिए मानता हूँ कि दिव्य स्वर्ग दोहरा था; और इसी कारण, ईश्वर-वाहक पितरों द्वारा प्रदत्त शिक्षा—जिनमें से कुछ ने स्वर्ग को भौतिक बताया, जबकि अन्य ने इसे आध्यात्मिक बताया—सही है।"[1389]

2. मनुष्य की बौद्धिक शक्तियों को विकसित करने के लिए, और विशेष रूप से उसे आस्था के सत्यों की शिक्षा देने के लिए, ईश्वर ने उसे अपने प्रत्यक्ष प्रकटीकरणों से अनुग्रहित किया; और इस उद्देश्य के लिए, उन्होंने स्वयं हमारे पूर्वजों के सामने प्रकट हुए, उनसे संवाद किया, और उन्हें अपनी इच्छा प्रकट की, जैसा कि पवित्र वंशावलीकार के वृत्तांत (उत्पत्ति, अध्याय 2) से स्पष्ट है, और जैसा कि सिरिख के सबसे बुद्धिमान पुत्र की गवाही है: *उन्होंने उन्हें मन की विवेक-शक्ति प्रदान की और उन्हें अच्छा और बुरा दिखाया... उन्होंने उन्हें ज्ञान प्रदान किया और जीवन का विधान विरासत में दिया; उन्होंने उनके साथ शाश्वत विधान स्थापित किया और उन्हें अपने निर्णय प्रकट किए* (सिरिकस 17:6, 9-10)। इस प्रकार, ईश्वर स्वयं हमारे प्रथम माता-पिता के पहले मार्गदर्शक और शिक्षक थे। हमारे पूर्वजों को ईश्वर द्वारा भविष्यवाणी का वरदान भी दिया गया था—जैसा कि संत जॉन क्राइसोस्टोम आदम द्वारा कही गई इन बातों के माध्यम से दर्शाते हैं, जो उसने अपनी पत्नी, हव्वा, जिसे ईश्वर ने बनाया था, के पास लाए जाने पर तुरंत कहीं: *'देखो, यह मेरी हड्डियों में से हड्डी और मेरे मांस में से मांस है; उसे "नारी" कहा जाएगा, क्योंकि उसे उसके पति से निकाला गया है।' 'इसलिये पुरुष अपने पिता और अपनी माता को छोड़कर अपनी पत्नी से जुड़ जाएगा, और वे दोनों एक तन बन जाएंगे* (उत्पत्ति 2:23-24)। यहाँ आदम ने स्पष्ट रूप से परिभाषित किया कि हव्वा को कैसे और किससे बनाया गया था, भले ही उसे तब बनाया गया था जब वह गहरी नींद में था, और उसने भविष्यवाणी की कि मानव जाति पृथ्वी पर बढ़ेगी, कि उसके भीतर परिवार बनेंगे, और *एक पुरुष अपने पिता और माता को छोड़कर अपनी पत्नी से जुड़ जाएगा*। आदम के लिए केवल प्राकृतिक तर्क के आधार पर, और वह भी इतनी अचानक और बिना किसी संदेह के, इन सब बातों को समझना और समझाना असंभव था।[1390]

3. पहले मनुष्य की सद्गुणों में इच्छाशक्ति को मजबूत करने और, सामान्य रूप से, आध्यात्मिक जीवन में उसकी सफलता सुनिश्चित करने के लिए, परमेश्वर ने आरंभ से ही उस पर अपनी कृपा प्रदान की; और यह कृपा हमारे पहले माता-पिता के भीतर लगातार निवास करती थी, जो उनके लिए, एक तरह से, स्वर्गीय वस्त्र के रूप में काम करती थी, जैसा कि पवित्र पिताओं के शब्दों में है, '[1391] '; और यह इसी कृपा के द्वारा था कि आदम और हव्वा परमेश्वर के साथ निरंतर संवाद में रहे (देखें द क्रिश्चियन कैटेकिज्म, अनुच्छेद 1, प्रश्न का उत्तर: 'क्या वह स्वर्ग जहाँ पहले मनुष्य रहते थे, भौतिक था या आध्यात्मिक?')। "सृष्टिकर्ता, मनुष्य को बनाने के बाद," संत जॉन ऑफ़ डेमास्कस कहते हैं, "उस पर अपनी दिव्य कृपा प्रदान की, और उसके माध्यम से उसे स्वयं के साथ संचार में लाया।"[1392] "ईश्वर की सहायता (sine adjutorio) के बिना," धन्य ऑगस्टीन तर्क देते हैं, "मनुष्य स्वर्ग में भी धार्मिक रूप से नहीं जी सकता था";[1393] और अन्यत्र: "ईश्वर ने मनुष्य को एक सद्भावना प्रदान की, क्योंकि उसने उसे धर्मी बनाया; लेकिन उसने उसे वह क्षमता भी प्रदान की जिसके बिना वह उसमें बना नहीं रह सकता था, भले ही वह चाहता; जबकि इच्छा करने का कार्य उसने

[1389] सही आस्था की सटीक व्याख्या, पुस्तक II, अध्याय II, पृ. 87, 88।

[1390] *क्रिसोस्टोम,* उत्पत्ति पर होमीली XV, संख्या 4. खंड IV, पृ. 120.

[1391] *आइरनेयस,* विरोधी मतों के विरुद्ध, पुस्तक IV, 23, n. 5; *क्रिसोस्टोम,* स्टैगिरा को, पुस्तक 1, n. 2; उत्पत्ति पर उपदेश XVI, n. 5; *ऑगस्टाइन,* जूलियन के विरुद्ध, पुस्तक IV, अंतिम अध्याय, n. 82; *जॉन ऑफ़ डेमास्कस,* ऑर्थोडॉक्स विश्वास की सटीक व्याख्या, पुस्तक II, अध्याय II, पृ. 87.

[1392] सही व्याख्या ऑर्थोडॉक्स विश्वास की, पुस्तक II, अध्याय 30, पृ. 132। टर्टुलियन यह भी कहते हैं कि, जैसे ही मनुष्य का पतन हुआ, वह *'स्वर्ग की कृपा और ईश्वर के साथ उस घनिष्ठता से* वंचित हो गया, जिसके माध्यम से वह ईश्वर की सभी बातें जान पाता, यदि वह आज्ञाकारी होता' (एडव. मार्सियन. II, अध्याय 2)।

[1393] *De civit. Dei* XIV, 27.

उसकी अपनी स्वतंत्र इच्छा पर छोड़ दिया। इस प्रकार, मनुष्य यदि चाहता तो भले में बना रह सकता था, क्योंकि उसके पास वह क्षमता थी जिससे यह संभव था।"[1394]

प्राचीन शिक्षकों ने एक ओर, इन प्राणियों की स्वभाविक प्रकृति से ही, प्रथम मनुष्य के लिए, और वास्तव में सभी तर्कशील प्राणियों के लिए, अनुग्रह की आवश्यकता का निष्कर्ष निकाला, जो अपनी सीमाओं के कारण स्वयं को बनाए नहीं रख सकती, बल्कि उसे ईश्वर से आवश्यक सब कुछ प्राप्त करना ही पड़ता है; और, दूसरी ओर, उनकी सीमित स्वतंत्रता की प्रकृति से, जो समान रूप से अच्छा और बुरा चुनने में सक्षम है, और जिसे अच्छा चुनने और करने के लिए अनुग्रह की सहायता की आवश्यकता होती है।

पहले विचार की व्याख्या इस प्रकार की गई है:

संत मकरियस महान: 'ईश्वर ने शरीर को रचने के बाद यह विधान नहीं बनाया कि उसे जीवन, भोजन, पेय, वस्त्र और जूते; बल्कि, उसने यह विधान किया कि जीवन को बनाए रखने के लिए आवश्यक सभी चीजें बाहरी स्रोतों से प्राप्त हों, ताकि शरीर, जो नग्न बनाया गया है, अपने आप बाहरी सहायता के बिना—अर्थात् भोजन, पेय और वस्त्र के बिना—जीवित न रह सके—और यदि उसे अपने ही भरोसे पर छोड़ दिया जाए, बिना किसी बाहरी सहारे के, तो वह जल्द ही क्षीण हो जाएगा और नष्ट हो जाएगा; इसी प्रकार आत्मा भी, यद्यपि अपने भीतर दिव्य प्रकाश की स्वामिनी नहीं है, फिर भी ईश्वर की प्रतिमा में रची गई होने के कारण, आध्यात्मिक भोजन और पेय, न ही स्वर्गीय वस्त्र—अर्थात् अपना सच्चा जीवन—अपने अस्तित्व से प्राप्त करती है, बल्कि ईश्वर से, उनकी आत्मा से और उनके प्रकाश से प्राप्त करती है। क्योंकि ईश्वर की प्रकृति में स्वयं में रोटी और जीवन दोनों निहित हैं—वही जिन्होंने कहा: *'मैं जीवित रोटी हूँ'* (यूहन्ना 6:51), और *जीवित जल*, और *वह दाखमधु जो मानव हृदय को प्रसन्न करता है* (यूहन्ना 4:10; भजन संहिता 103:15), और आनन्द का तेल, और बहुविध आध्यात्मिक पोषण, और प्रकाश का स्वर्गीय वस्त्र, जो स्वयं परमेश्वर से निकलता है। इसी में आत्मा का अनन्त जीवन निहित है। उस देह के लिए विनाश है जब उसे अपनी ही इच्छाओं पर छोड़ दिया जाता है: वह क्षीण हो जाता है और मर जाता है। आत्मा के लिए भी विनाश है यदि वह केवल स्वयं तक सीमित रहती है, केवल अपने कर्मों पर भरोसा करती है, और परमेश्वर की आत्मा के साथ उसका कोई संगत नहीं है: वह मर जाती है, शाश्वत, दिव्य जीवन से वंचित रह जाती है।[1395]

संत ग्रेगरी द थियोलोजियन: 'सद्गुण केवल महान ईश्वर का एक उपहार नहीं है, जिसने अपनी ही प्रतिमा को सम्मानित किया है; क्योंकि इसके लिए व्यक्ति के अपने प्रयास की भी आवश्यकता होती है। यह केवल आपके हृदय का काम नहीं है, क्योंकि इसके लिए सबसे उत्कृष्ट शक्ति की आवश्यकता होती है। यद्यपि मेरी दृष्टि बहुत तीक्ष्ण है, फिर भी वह अपनी इच्छा से दृश्यमान वस्तुओं को नहीं देखती, और न ही उस महान प्रकाशमान के बिना जो मेरी आँखों को प्रकाशित करता है और स्वयं आँखों के सामने दृश्यमान है। और मेरी सफलता के लिए, मुझे महान ईश्वर से केवल दो भागों—अर्थात्, पहला और अंतिम—की ही नहीं, बल्कि स्वयं से भी एक भाग की आवश्यकता है। ईश्वर ने मुझे सद्गुणों के प्रति ग्रहणशील बनाया; ईश्वर मुझे शक्ति प्रदान करते हैं, जबकि मेरे हृदय में मैं स्वयं ही दौड़ लगा रहा हूँ।"[1396]

संत बेसिल द ग्रेट: "एक प्राणी का पोषण होता है, वह जीता है और मौजूद रहता है, बेशक, एक ऐसे प्राणी के रूप में नहीं जो स्वयं सृष्टिकर्ता की शक्ति द्वारा सहारे की आवश्यकता में हो; निश्चित रूप से, यह प्राणी के अपने कर्म से नहीं है कि परमेश्वर की महिमा होती है, जब उनके बारे में स्वयं कहा गया है कि उसमें हम जीते हैं, और चलते हैं, और हमारा अस्तित्व है; बल्कि वास्तव में दिव्य आत्मा परमेश्वर और पुत्र के माध्यम से जो कुछ भी है, उसे अस्तित्व में बनाए रखती है। इसलिए, जो लोग उसमें सहभागी होते हैं, उन्हें वह अस्तित्व की निरंतरता प्रदान करता है। और उसी में हम एक बार फिर जीवित हैं, हम जो पहले उससे हमारे अलगाव के कारण भ्रष्ट हो गए थे।"[1397] "पवित्रता आत्मा के बिना असंभव है। न ही स्वर्गीय शक्तियाँ स्वभाव से पवित्र हैं — अन्यथा वे पवित्र आत्मा से भिन्न नहीं होतीं। इसके विपरीत, एक के दूसरे पर श्रेष्ठता के अनुसार, वे आत्मा से पवित्रता का एक निश्चित माप रखती हैं।"[1398]

[1394] *De corrept. et grat.*, अध्याय XI, संख्या 32.

[1395] संवाद 1, §§ 10, 11.

[1396] पवित्र संस्कारों पर भजन, खंड IX, *पवित्र पिताओं के कार्य*, खंड IV, पृ. 255 में।

[1397] यूनोमियस के विरुद्ध, पुस्तक V, *पवित्र पिताओं के कार्य*, VII, 208.

[1398] पवित्र आत्मा पर, अध्याय 16, *पवित्र पिताओं के कार्य*, VII, 289.

धन्य ऑगस्टीन: "यदि एक स्वर्गदूत या मनुष्य को, उनके सृजन के क्षण में ही, ईश्वर की सहायता प्रदान नहीं की गई होती: तो वे (चूँकि उनकी प्रकृति ऐसी नहीं है कि वे ईश्वर की सहायता के बिना भलाई में बने रह सकें, भले ही वे ऐसा चाहें) अपनी किसी गलती के बिना ही गिर जाते: क्योंकि उनके पास वह सहायता नहीं होती, जिसके बिना उनके लिए भलाई में बने रहना असंभव है।"[1399]

हमें यह अंतिम विचार मिलता है:

क) *संत बेसिल द ग्रेट* में: "अदृश्य शक्तियाँ स्वतंत्र हैं; परिणामस्वरूप, वे समान रूप से सद्गुण और दुर्गुण दोनों की ओर झुकाव रखती हैं, और इसलिए उन्हें आत्मा की सहायता की आवश्यकता है";[1400]

ख) *संत जॉन ऑफ़ डमास्कस* में: "ईश्वर ने मनुष्य को स्वभाव से पाप रहित और इच्छा से स्वतंत्र बनाया; पाप रहित, मैं कहता हूँ, इसलिए नहीं कि वह पाप से प्रतिरक्षित था—क्योंकि केवल दिव्य स्वभाव ही पाप नहीं कर सकता—बल्कि इसलिए कि पाप करने की संभावना उसके स्वभाव में नहीं बल्कि उसकी स्वतंत्र इच्छा में थी। वास्तव में, ईश्वर की कृपा की सहायता से, वह अच्छाई में बने रहने और उसमें समृद्धि प्राप्त करने में सक्षम था; और इसी तरह, अपनी स्वतंत्र इच्छा से, ईश्वर की अनुमति से, वह अच्छाई से मुड़कर बुराई में जा सकता था।"[1401]

4. पहले मनुष्य की शारीरिक शक्ति को लगातार बनाए रखने और नवीनीकृत करने, और उसके जीवन को हमेशा के लिए संरक्षित करने के लिए, परमेश्वर *ने एदन के बगीचे के बीच में जीवन का वृक्ष लगाया* (उत्पत्ति 2:9); इसके फल को खाने से, मनुष्य बीमारी से मुक्त और शरीर से अमर हो जाता। (विस्तारित ईसाई धर्मशिक्षा, अनुच्छेद 1, प्रश्न: *'जीवन का वृक्ष क्या है?'* का उत्तर)। इसीलिए पवित्र शास्त्र गवाही देता है कि *परमेश्वर ने मृत्यु की सृष्टि नहीं की* (ज्ञान 1:13), कि उसने *मनुष्य को अविनाशी बनाया* (— 3:23), *और कि एक मनुष्य के द्वारा पाप संसार में प्रवेश किया, और पाप के द्वारा मृत्यु, और इस प्रकार मृत्यु सब मनुष्यों में व्याप्त हो गई, क्योंकि सबने उसी में पाप किया* (रोमियों 5:12)इसी प्रकार, पवित्र पिताओं ने सर्वसम्मति से यह सिखाया है कि मनुष्य को अमर या अमरत्व के लिए बनाया गया था;[1402] और ऑर्थोडॉक्स चर्च ने कार्थेज की परिषद में यह आदेश दिया: 'यदि कोई कहता है कि आदम, पहला मनुष्य, नश्वर बनाया गया था, ताकि उसने पाप किया हो या नहीं, वह शारीरिक रूप से मर जाता, यानी अपने शरीर से अलग हो जाता, पाप की सजा के रूप में नहीं बल्कि अपनी प्रकृति की आवश्यकता के कारण: तो वह अनथमा हो' (कैनन 123). फिर भी, दूसरी ओर, पवित्रशास्त्र स्वयं से यह स्पष्ट है कि मनुष्य की यह अमरता, शरीर में भी, उसके शरीर की प्रकृति—जो पृथ्वी से बनाई गई थी—पर निर्भर नहीं थी, बल्कि दिव्य अनुग्रह पर निर्भर थी; और इस अनुग्रह का साधन स्वर्ग में लगाया गया जीवन का वृक्ष था: *और अब*, हमारे प्रथम पिता के पतन के बाद प्रभु ने कहा, *जब तक वह अपना हाथ बढ़ाकर जीवन के वृक्ष से नहीं लेता, और नहीं खाता, और हमेशा के लिए जीवित नहीं रहता* (उत्पत्ति 3:22)। चर्च के प्राचीन शिक्षकों ने आदम की अमरता को, यहाँ तक कि शरीर में भी, इस अर्थ में नहीं समझा कि वह अपने शारीरिक स्वभाव के कारण *मर नहीं सकता था*, बल्कि इस अर्थ में समझा कि वह केवल अमरता के लिए नियत था,[1403] कि यदि वह ईश्वर के प्रति विफादार रहता, तो ईश्वर की विशेष कृपा से *नहीं मरता*, उसकी आज्ञाकारिता के पुरस्कार के रूप में,[1404] और स्वर्ग में जीवन का वृक्ष इस दैवीय कृपा शक्ति का माध्यम था।

"संत ग्रेगरी द थियोलोजियन कहते हैं, 'यदि हम वैसे ही बने रहते जैसे हम थे और आज्ञा का पालन करते, तो हम वह बन जाते जो हम नहीं थे, और ज्ञान के वृक्ष से जीवन के वृक्ष पर पहुँच जाते। तो फिर, हम क्या बने? अमर और ईश्वर के करीब।'"[1405]

1399 पाप और अनुग्रह पर, अध्याय XI, संख्या 32.

1400 पवित्र आत्मा पर, अध्याय 16, *पवित्र पिताओं के कार्य*, VII, 290 में।

1401 ऑर्थोडॉक्स विश्वास की सटीक व्याख्या, पुस्तक II, अध्याय 12, पृष्ठ 91–92।

1402 *जस्टिन*, *डायलॉग विद ट्रायफो*, CXXIV; *टेटियन*, *अगेंस्ट द ग्रीक्स*, VII; *क्लेसिलॉस*, *स्ट्रोमाटा*, VI; *साइप्रियन*, *ऑन पेशेंस*; *हिलारियन*, भजन संहिता 1 पर टीका, टिप्पणी 13; *बेसिल द ग्रेट*, *द वर्क्स ऑफ़ द होली फ़ादर्स* में, ईश्वर बुराई का कर्ता नहीं है इस तथ्य पर प्रवचन, VIII, 155; *ऑगस्टीन*, *द सिटी ऑफ़ गॉड*, XIII, 15.

1403 *थियोफिलस टू ऑटोलाइकस* II, 27; क्लेमेंट, स्ट्रोमाटा II, 19; *लैक्टैंटियस*, इंस्टिट्यूट्स ऑफ द डिविइन II, 13; *एफ्रेम*, कमेंटरी ऑन जेनेसिस II, वॉल्यूम 1, पृष्ठ 28, सिरियाई संस्करण; *नेमेसियस*, ऑन द नेचर ऑफ मैन, अध्याय 1.

1404 *टैटियन*, *Contr. Graec.* VII; *आइरेनियस*, *Adversus Haereses* III, 20, n. 1; V, 3, n. 1; *अथेनासियस*, *De Incarnatione Verbi Dei*, n. 4–6; *ऑगस्टीन*, *De Genesi ad Litt.* VI, 25, n. 36; *De Civitate Dei* XIII, 23.

1405 नए सप्ताह के लिए एक उपदेश, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स* में, IV, 144.

धन्य ऑगस्टीन कहते हैं, "पतन से पहले मानव शरीर को एक ओर से नश्वर और दूसरी ओर से अमर कहा जा सकता था: नश्वर, क्योंकि यह मर सकता था; अमर, क्योंकि यह न मरने का चुनाव कर सकता था। यह एक बात है कि कोई *मर नहीं सकता*, जैसा कि ईश्वर ने कुछ अमर प्राणियों को बनाया, और एक बिल्कुल दूसरी बात है कि कोई *मरने का विकल्प चुन सकता है*: इसी अर्थ में पहले मनुष्य को अमर बनाया गया था। यह बात उन्हें जीवन के वृक्ष के माध्यम से बताई गई थी, न कि उनके अस्तित्व की प्रकृति से; इसलिए, जैसे ही उन्होंने पाप किया और जीवन के वृक्ष से अलग हो गए, वे मरने के योग्य हो गए; जबकि, यदि उन्होंने पाप न किया होता, तो वे अमर रह सकते थे। इस प्रकार, वे अपने आध्यात्मिक शरीर की प्रकृति से नश्वर थे, और सृष्टिकर्ता की कृपा (beneficio) से अमर थे।"[1406]

5. इसके अलावा, उसकी शारीरिक शक्तियों के अभ्यास और विकास के लिए, परमेश्वर ने आदम को *एदेन के बगीचे की खेती करने और उसकी रखवाली करने की* आज्ञा दी (उत्पत्ति 2:15); उसकी मानसिक क्षमताओं और वाक्-पटुता के उपहार के अभ्यास और विकास के लिए, *उसने* स्वयं *सभी जानवरों को मनुष्य के पास यह देखने के लिए लाया कि वह उन्हें क्या नाम देगा* (उत्पत्ति 2:19); अच्छाई में उसकी नैतिक क्षमताओं के अभ्यास और सुदृढ़ीकरण के लिए, उसने आदम को एक विशेष आज्ञा दी—अच्छाई और बुराई के ज्ञान के वृक्ष का फल न खाने की: *और यहोवा परमेश्वर ने मनुष्य को आज्ञा दी, 'तुम बगीचे में किसी भी वृक्ष का फल खा सकते हो, पर भलाई और बुराई का ज्ञान देने वाले वृक्ष का फल नहीं खाना; क्योंकि जिस दिन तुम उसे खाओगे, उसी दिन निश्चय ही मरोगे* (उत्पत्ति 2:16-17)।

§86. परमेश्वर द्वारा पहले मनुष्य को दिया गया आज्ञा, इसकी आवश्यकता और महत्व

मानव जाति के लिए ईश्वर की इस पहली आज्ञा की उचित समझ प्राप्त करने के लिए, मनुष्य को विचार करना चाहिए:

1. वह व्यक्ति जिसे यह आज्ञा दी गई थी। पहला मनुष्य —

क) एक आज्ञा, और वह भी एक विशिष्ट आज्ञा, अनिवार्य रूप से आवश्यक थी। उसे ईश्वर से नैतिक क्षमताएँ प्राप्त हुईं और वह स्वभाव से अच्छा बनाया गया था; लेकिन फिर भी यह उसकी जिम्मेदारी थी कि वह ईश्वर की मदद से इन क्षमताओं को विकसित और मजबूत करे; यह उसकी जिम्मेदारी थी कि वह अपनी स्वतंत्र इच्छा से अच्छा बने। और मानवीय स्वतंत्रता किसी भी मामले में केवल एक ही, विशिष्ट नियम के अनुसार बहुत लंबे समय तक कार्य करने से ही मजबूत और स्थापित होती है, जब तक कि कोई चुने हुए कार्य-पथ में गहरी प्रवीणता प्राप्त नहीं कर लेता। इस दृष्टिकोण से, यह विचार कि प्रथम मानव को आज्ञाओं की आवश्यकता थी, को टर्टुलियन ने विधर्मी मार्सियन के विरुद्ध अपनी रचनाओं में, और अलेक्जेंड्रिया के डिडिमस ने मनिचियों के विरुद्ध विस्तार से समझाया है।[1407]

ख) उसे एक बाहरी, सकारात्मक आज्ञा की आवश्यकता थी। यद्यपि संपूर्ण नैतिक कानून मनुष्य के अंतरात्मा में निहित था, यह सर्वविदित है कि हमारे जीवन में हम इसे तब तक पूरा नहीं कर सकते जब तक कि बार-बार अवसर न आएं और विशिष्ट मामले इंगित न हों जिन पर इस कानून की सामान्य आवश्यकता को लागू किया जा सके। ईश्वर द्वारा हमारे प्रथम माता-पिता को दिए गए आज्ञा में ठीक ऐसा ही एक अवसर और ऐसा ही एक विषय इंगित किया गया था। संत ग्रेगरी द थियोलोजियन कहते हैं, 'ईश्वर ने मनुष्य को उसकी स्वतंत्र इच्छा (ὕλην τὼ αὐτεξουσίω) के लिए विषय के रूप में कानून दिया — और वह आज्ञा यह थी कि उसे किन पौधों का उपयोग करना चाहिए और किन पौधों को छूना नहीं चाहिए।'[1408]

ग) उसे ईश्वर से एक आज्ञा की आवश्यकता थी—ताकि, उसकी स्वैच्छिक पालन के माध्यम से, वह किसी न किसी प्रकार उन आशीर्वादों का पात्र बन सके जिनका वह आनंद ले रहा था और जिन्हें वह अभी लेना बाकी था; और ताकि, बिना अपनी किसी योग्यता के इतने सारे आशीर्वादों का स्वामी होकर, वह अपने बारे में बहुत बड़ा न सोचने लगे या घमंड में न पड़ जाए।

"किसी व्यक्ति (सेंट जॉन ऑफ़ डेमास्कस) के लिए प्रलोभन और परीक्षा से गुज़रने से पहले अमरत्व प्राप्त करना कोई लाभ नहीं होगा; उस स्थिति में, वह घमंडी हो सकता है और शैतान के समान ही दंड के अधीन हो सकता है (1 टिम. 3:6), जो अपनी स्वैच्छिक इच्छा से गिर गया, अपनी अमरता के कारण दुष्टता में अडिग और पश्चाताप रहित रूप से

1406 *डे जेनेसी एड लिटेरम* VI, 25, n. 36.

1407 *टर्तुल्लियन, *अगेंस्ट मार्शियन*, II, अध्याय 6; *डिडिमस, *अगेंस्ट मनीकेइज्म*, *बिब्लियोथेका पैट्रम* के खंड IV, पृ. 871 में।

1408 एपिफेनी पर व्याख्यान, *द वर्क्स ऑफ़ द होली फ़ादर्स*, III, 243 में।

जकड़ गया, जबकि स्वर्गदूत, जिन्होंने स्वैच्छिक रूप से सद्गुण को चुना, अनुग्रह से भलाई में अटूट रूप से स्थापित हैं। इसलिए यह महत्वपूर्ण था कि मनुष्य का पहले परीक्षण किया जाए, क्योंकि एक अपरीक्षित और अजमाए हुए मनुष्य का ध्यान देने योग्य नहीं है (सिरिक 34:10); और यह कि, जब वह परीक्षण के दौरान आज्ञा का पालन करके स्वयं को सिद्ध कर लेता है, तो वह अपने सद्गुण के पुरस्कार के रूप में अमरत्व प्राप्त कर सकता है।"[1409]

संत जॉन क्राइसोस्टोम ने इससे भी पहले एक समान विचार व्यक्त किया था: "हमारे प्रभु ने, जब उन्होंने सभी दृश्यमान चीजों को मनुष्य को सौंपा, उसे स्वर्ग में बसाया और उसे स्वर्ग में जो कुछ भी था उसका आनंद लेने दिया, फिर उसे एक वृक्ष का फल न खाने की आज्ञा दी, और आज्ञा तोड़ने पर एक कठोर दंड निर्धारित किया। ऐसा इसलिए था ताकि मनुष्य, जैसे-जैसे उसके विचार धीरे-धीरे ऊँचे होते जाएँ, यह कल्पना न करे कि सभी दृश्यमान चीजें अपने आप अस्तित्व में हैं, न ही अपनी योग्यता के बारे में बड़े-बड़े विचार रखे; बल्कि, वह यह याद रखे कि उसका भी एक प्रभु है, जिसकी दया से वह इन सभी आशीर्वादों का आनंद लेता है।"[1410]

२. स्वयं आज्ञा पर। प्रथम मनुष्य को दी गई आज्ञा विशिष्ट थी, अर्थात्, यह एक विशेष मामले से संबंधित थी; और इसलिए, पहली नज़र में, यह बहुत महत्वपूर्ण नहीं लगती। लेकिन—

(a) यह वास्तव में उस पूरे कानून को व्यक्त करता है जो हमारे और ईश्वर के बीच संबंध को नियंत्रित करता है और हमारे प्रभु के प्रति हमारी पूर्ण आज्ञाकारिता की मांग करता है: 'इस एक छोटे से आज्ञा के माध्यम से, ईश्वर ने मनुष्य पर अपना प्रभुत्व दिखाना चाहा (सेंट जॉन क्राइसोस्टोम)।'[1411]

b) एक अर्थ में, इसमें संपूर्ण नैतिक विधान भी समाहित था, जो परमेश्वर की इच्छा के सिवा कुछ नहीं है, और व्यापक अर्थ में यह हमसे केवल परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता की मांग करता है।

'आदम को दिए गए कानून में, हमें वे सभी आज्ञाएँ शामिल मिलती हैं जो बाद में मूसा के माध्यम से प्रकट की गई थीं, अर्थात्: "*तुम अपने प्रभु परमेश्वर से अपने पूरे हृदय और अपनी पूरी आत्मा से प्रेम करोगे*" (व्यव. 6:5); *'तुम अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करोगे* (लैव्य. 19:18); *'तुम हत्या न करना; तुम चोरी न करना; तुम अपने पड़ोसी के विरुद्ध झूठी गवाही न देना'* (निर्ग. 20:13–14); *अपने पिता और अपनी माता का सम्मान करो* (12), *अपने पड़ोसी की संपत्ति की लालसा न करो* (Deut. 5:20), इस प्रकार एडेन के बगीचे में आदम और हव्वा को दिया गया पहला कानून, एक तरह से, परमेश्वर की सभी अन्य आज्ञाओं की जननी है। निस्संदेह, यदि आदम और हव्वा ने अपने प्रभु परमेश्वर से प्रेम किया होता, तो वे उसकी आज्ञा के विरुद्ध नहीं करते; यदि उन्होंने अपने पड़ोसी, अर्थात् एक दूसरे से प्रेम किया होता, तो वे सांप के बहकावे में नहीं आते, और परिणामस्वरूप आज्ञा के उल्लंघन के द्वारा अपनी अमरत्व खोकर अपने ही विरुद्ध हत्या नहीं करते; वे वृक्ष के फल को चुपके से चखकर और परमेश्वर के सामने से वृक्ष के नीचे छिपकर चोरी नहीं करते; वे शैतान के साथी नहीं बनते, जो झूठी गवाही देता है, यह मानकर कि वे देवताओं के समान हो जाएँगे (उत्पत्ति 3:8) और इस प्रकार, वे अपने पिता—ईश्वर का अपमान नहीं करते, जिसने उन्हें पृथ्वी की धूल से, मानो उनकी माँ के गर्भ से ही, बनाया था; अंत में, यदि उन्होंने दूसरे की चीज़ की लालसा न की होती, तो वे निषिद्ध फल को न खाते। इस प्रकार, ईश्वर के इस सामान्य और मौलिक कानून में, विशेष रूप से, बाद के कानून की सभी आज्ञाएँ निहित थीं, जो उचित समय पर प्रकट हुईं और बाध्यकारी थीं (टर्टुलियन)।[1412]

3. परमेश्वर के विषय में, जिसने प्रथम मनुष्य को यह आज्ञा दी। यह विधि-दाता की भलाई और बुद्धि दोनों को प्रकट करता है। मनुष्य की सृष्टि के तुरंत बाद, प्रभु—

क) स्वयं उसे अच्छाई में प्रशिक्षित और मजबूत करने के लिए एक विशिष्ट आज्ञा दी, और इस प्रकार स्वयं उसके शिक्षक बने।

[1409] सही आस्था की व्याख्या, पुस्तक II, अध्याय 30, पृ. 133–134।

[1410] होमिलिज़ ऑन जेनेसिस, XVI, n. 6, खंड IV, पृ. 131, एड. मॉन्टफ़ॉक.

[1411] पिछली टिप्पणी देखें।

[1412] *Adv. Judaeos*, अध्याय 2, *Patrologia Cursus Completus*, खंड II, पृ. 599 में।

B) एक सकारात्मक आज्ञा देता है, ताकि पहले ही दिनों से वह मनुष्य को उसके संपूर्ण भविष्य के जीवन के लिए सबसे आवश्यक और लाभकारी बात सिखा सके, अर्थात् अपने सृष्टा के प्रति पूर्ण और निश्चित समर्पण, जो (धन्य ऑगस्टीन) "मनुष्यों और हर तर्कशील प्राणी में भक्ति की शुरुआत और शिखर है।"[1413]

C) वह एक बहुत ही आसान आज्ञा देता है: सबसे पहले, यह मनुष्य की इच्छा के अनुकूल है, जिसे स्वाभाविक रूप से, पहले आसान कामों को पूरा करना सिखाया जाना था, और तभी धीरे-धीरे अधिक कठिन कामों की ओर बढ़ना था; दूसरी बात, ताकि मनुष्य उस प्रलोभन के समय अधिक आसानी से दृढ़ खड़ा रह सके जिसकी प्रभु ने पूर्वदृष्टि की थी, और ताकि, गिर जाने पर, उसके पास आज्ञा की कठिनाई के आधार पर अपना बचाव करने या विधि-प्रदाता के विरुद्ध शिकायत करने का कोई आधार न हो।

D) इस आज्ञा के साथ इसके उल्लंघन के विरुद्ध एक भयंकर चेतावनी भी दी गई है: यह इसलिए है कि, यदि किसी व्यक्ति का सृष्टिकर्ता के प्रति प्रेम और कृतज्ञता परीक्षा के क्षणों में डगमगाए, तो भय कम से कम उन्हें परमेश्वर की आज्ञा तोड़ने से रोके और उनके उद्धार का काम करे।

अंत में, जहाँ तक भलाई और बुराई के ज्ञान के उस वृक्ष का प्रश्न है, जिससे पहले मनुष्य को खाने से मना किया गया था, तो—

क) यद्यपि कुछ प्राचीनों ने कभी-कभी इस वृक्ष की व्याख्या आध्यात्मिक अर्थ में की, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने जीवन के वृक्ष और पूरे स्वर्ग की की—[1414] —चर्च के अधिकांश शिक्षकों ने इसे इंद्रियात्मक अर्थ में समझा, क्योंकि मूसा स्पष्ट रूप से कहते हैं कि परमेश्वर ने हर पेड़ को मिट्टी से उगाया, 'आँखों को सुखद और खाने के लिए अच्छा', और बगीचे के बीच में जीवन का वृक्ष, और भलाई और बुराई के ज्ञान का वृक्ष (उत्पत्ति 2:9), और इस प्रकार पृथ्वी पर बगीचे के सटीक स्थान को परिभाषित करता है, और उससे निकलने वाली नदियों का नाम बताता है (10–14)।[1415]

"दिव्य शास्त्र कहता है (धन्य थियोडोरेट) कि जीवन का वृक्ष और भलाई और बुराई के ज्ञान का वृक्ष दोनों पृथ्वी से उगे थे; परिणामस्वरूप, वे अपनी प्रकृति से ही अन्य पौधों के समान हैं। जिस प्रकार क्रूस एक साधारण वृक्ष है, फिर भी उस पर क्रूसित हुए एक के प्रति विश्वास के द्वारा प्राप्त उद्धार के कारण, इसे उद्धार का वृक्ष कहा जाता है, उसी प्रकार ये दो वृक्ष भी पृथ्वी से उगे साधारण पौधे हैं; लेकिन, दैवीय विधान द्वारा, उनमें से एक को जीवन का वृक्ष कहा जाता है, जबकि दूसरे को — पाप के ज्ञान के लिए एक साधन के रूप में काम करने के बाद — अच्छाई और बुराई के ज्ञान का वृक्ष कहा जाता है। बाद वाला आदम को एक परीक्षा के अवसर के रूप में दिया गया था, जबकि जीवन का वृक्ष आज्ञा का पालन करने के लिए एक प्रकार के पुरस्कार के रूप में दिया गया था।"[1416]

ख) इस वृक्ष को भलाई और बुराई के ज्ञान का वृक्ष इसलिए नहीं कहा जाता कि उसमें कथित तौर पर हमारे प्रथम माता-पिता को भलाई और बुराई का वह ज्ञान प्रदान करने की शक्ति थी जो उनके पास पहले नहीं था, बल्कि इसलिए कहा जाता है कि निषिद्ध वृक्ष का फल खाने से, उन्होंने अनुभव के माध्यम से भलाई के बीच के पूर्ण अंतर को जाना, जैसा कि धन्य ने उल्लेख किया है अगस्टीन, जिससे वे गिर गए थे, और उस बुराई में जिसमें वे गिर गए थे"[1417] — यह एक ऐसा दृष्टिकोण है जिसे चर्च के प्राचीन शिक्षकों ने सर्वसम्मति से सिखाया था।[1418]

[1413] प्रेरित पौलुस के पत्रों की व्याख्या, खंड 71। धन्य ऑगस्टीन इसे अन्यत्र भी दोहराते हैं: 'जिस वृक्ष से मनुष्य को मना किया गया था, ताकि आज्ञाकारिता की प्रशंसा की जा सके—जो सबसे बड़ी सद्गुण है और, कह सकते हैं, सभी सद्गुणों का मूल और जननी है—उस स्वभाव में जिसे स्वतंत्र इच्छा प्रदान की गई है, फिर भी जिसे एक उच्चतर शक्ति के अधिकार के अधीन रहना ही चाहिए।' (Contr. Adversar. legis et prophet. 1, अध्याय 14)।

[1414] *ग्रेगरी द थियोलोजियन,* होमीली ऑन द एपिफेनी, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, III, 243; *जॉन ऑफ डेमास्कस,* *एक्ज़ैक्ट एक्सपोज़िशन ऑफ द ऑर्थोडॉक्स फेथ*, बुक II, चैप्टर II, पृ. 87, 89।

[1415] उपरोक्त टिप्पणियाँ 1386 और 1388 देखें। "इसी कारण," जॉन क्रिसोस्टोम टिप्पणी करते हैं, "धन्य मूसा ने उस स्थान का वास्तविक नाम दर्ज किया (जहाँ स्वर्ग स्थित था), ताकि व्यर्थ की बातें करने वाले सरल-स्वभाव लोगों को धोखा न दें और यह दावा न करें कि स्वर्ग पृथ्वी पर नहीं बल्कि स्वर्ग में है, और ऐसी कल्पनाएँ फैलाएँ" (जेनेसिस होम. XIII, n. 3)।

[1416] जेनेसिस क्वेस्ट. 26, क्रिश्चियन रीडिंग्स 1843, III, 356 में।

[1417] De civit. Dei XIV, 17.

[1418] *क्रिसोस्टोम,* उत्पत्ति पर होमीलीज़, XVI, क्रमांक 5, 6; *सेलेउकिया के बेसिल,* आदम पर भाषण II; *सेवेरियन,* भाषण VI, संसार की सृष्टि पर; *थियोडोरेट,* उत्पत्ति पर प्रश्न 26 *क्रिश्चियन रीडिंग्स* 1843, III, 357 में। उद्धृत अंश में, संत जॉन क्राइसोस्टोम इस धारणा का जोरदार खंडन करते हैं कि इस वृक्ष में अपनी प्रकृति से ही हमारे प्रथम माता-पिता को भलाई और बुराई का ज्ञान प्रदान करने की क्षमता थी, और यह प्रदर्शित करते हैं कि वृक्ष का सेवन करने से पहले ही, आदम अपने मन से समझता था कि क्या अच्छा था और क्या बुरा।

ग) कुछ चर्च फादरों की राय में, यह पेड़ अपनी प्रकृति से किसी भी तरह से हानिकारक या जहरीला नहीं था,[1419] बल्कि, यह ईश्वर की अन्य सभी रचनाओं की तरह ही *लाभदायक* था। और इसे ईश्वर ने केवल मनुष्य की परीक्षा के लिए एक साधन के रूप में चुना था और मना किया था, शायद इसलिए क्योंकि पहले मनुष्य के लिए इसके फल को खाने का समय अभी बहुत जल्दी था।

संत ग्रेगरी द थियोलोजियन कहते हैं: 'भले और बुरे के ज्ञान का वृक्ष आरंभ में दुर्भावनापूर्ण इरादे से नहीं लगाया गया था, और न ही इसे ईर्ष्या के कारण मना किया गया था (ईश्वर-विरोधी इसके बारे में कुछ न बोलें, और न ही सांप का अनुकरण करें); इसके विपरीत, यह उन लोगों के लिए अच्छा था जिन्होंने इसका सही समय पर उपयोग किया (क्योंकि मेरे विचार में, यह वृक्ष चिंतन का एक रूप था जिसके पास केवल वे ही सुरक्षित रूप से जा सकते थे जो अनुभव से परिपूर्ण हो चुके थे), लेकिन उन लोगों के लिए अच्छा नहीं था जो अभी भी सरल थे और जो अपनी इच्छा में असंयमी थे, ठीक उसी तरह जैसे पूर्ण भोजन कमजोर और उन लोगों के लिए फायदेमंद नहीं होता जिन्हें अभी भी दूध की आवश्यकता होती है।"[1420] "वृक्ष अच्छा है," धन्य ऑगस्टीन कहते हैं, ईश्वर की ओर से बोलते हुए—जो पहले से ही निषिद्ध वृक्ष को इंद्रियात्मक रूप में समझ चुके थे—"लेकिन उसे छूना नहीं। क्यों? क्योंकि मैं प्रभु हूँ, और तुम सेवक हो: यही पूरा कारण है। यदि आप इसे एक छोटी बात मानते हैं, तो आप परमेश्वर के सेवक नहीं बनना चाहते। और प्रभु के अधिकार के अधीन होने से अधिक आपके लिए और क्या लाभदायक हो सकता है? तो फिर, यदि आप उसकी आज्ञा का पालन नहीं करते हैं, तो आप प्रभु के अधिकार के अधीन कैसे होंगे?"[1421]

§87. प्रथम मनुष्य का आनंद

हमारे प्रथम माता-पिता की मूल स्थिति के बारे में कही गई बातों के आधार पर, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि यह सबसे आनंदमय अवस्था थी। आदम और हव्वा आत्मा और शरीर में पूर्ण थे। उनके शरीर न तो बीमारी जानते थे और न ही थकान; इसके विपरीत, वे निरंतर ऊर्जा और स्वास्थ्य में फलते-फूलते थे। उनकी आत्माएँ शुद्ध और निर्दोष थीं, जिनमें नई और सक्रिय शक्तियाँ थीं, और वे एक ऐसी अंतरात्मा की शांति का आनंद लेते थे जिसे किसी भी चीज़ से कोई बाधा नहीं थी।

बाहरी जगत, अपने सभी राज्यों—पशु, पौधा और खनिज—के साथ, मनुष्य के अधीन था; इसने उसे अपने राजा और स्वामी के रूप में सेवा दी, और, समग्र रूप से और अपने हिस्सों में सुंदर होने के कारण, अपनी सुंदरता के कारण ही उसे बहुत आनंद दिया।

निवास स्थान के रूप में, मनुष्य को *आनंद का एक स्वर्ग* प्रदान किया गया (उत्पत्ति 2:15), पृथ्वी पर सबसे अच्छी जगह, जो हर तरह के पौधों से भरी थी, *जो देखने में मनभावन और खाने के लिए अच्छी थीं* (उत्पत्ति 2:9), और जिसमें वह सब कुछ था जो एक संवेदनशील और तर्कशील प्राणी की जरूरतों को पूरा कर सकता था, और उसमें पूर्ण आनंद की भावना को जगाती और उसे अविराम रूप से बनाए रखती थी।

लेकिन हमारे प्रथम माता-पिता के लिए आनंद का पहला और सबसे महत्वपूर्ण स्रोत प्रभु परमेश्वर थे; वह उनके साथ एकता थी।[1422] वह अपनी कृपा से लगातार उनमें वास करते थे; वह अक्सर उनके पास प्रकट हुए और उनसे प्रत्यक्ष रूप से बोले, जैसे एक पिता अपने प्रिय बच्चों से बात करता है; उन्होंने उनके साथ संवाद किया, उनका मार्गदर्शन किया, और असाधारण प्रेम और कोमलता के साथ उन्हें आध्यात्मिक जीवन की ओर पोषित करने का प्रयास किया, और उन्हें उन सभी चीजों से घेर लिया जो उनके सुख की पूर्णता में योगदान दे सकती थीं।

[1419] जैसा कि कुछ आधुनिक विद्वान मानते हैं। *श्वार्स,* *हैंडबुख डेर क्रिस्ट्ल. रेलीग.*, खंड II, § 148; *डोब्मेयर,* *सिस्टेमा थियोलॉग. कैथोल.*, खंड VI, § 10, और अन्य।

[1420] एपिफेनी पर व्याख्यान, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, III, 243 में। इसी विचार *को जॉन ऑफ डेमास्कस,* *एक्जैक्ट एक्सपोजिशन ऑफ द ऑर्थोडॉक्स फेथ*, पुस्तक II, अध्याय II, पृ. 87 *में* देखें।

[1421] ट्रैक्टेटस इन स् psalm LXX. तुलना करें: डी सिविटाटे देई XIII, 20; XIV, 12; *थियोफिलस टू ऑटोल्यकस* II, 25, 34.

[1422] संत बेसिल द ग्रेट कहते हैं, 'आत्मा के लिए परम भलाई क्या थी? ईश्वर के साथ वास करना और प्रेम के माध्यम से उनके साथ एकता। उनसे दूर हो जाने के बाद, यह विभिन्न और अनेक कष्टों से पीड़ित होने लगी' (*द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, VIII, 154 में, 'ईश्वर बुराई का कारण नहीं है' पर प्रवचन)।

और इसमें कोई संदेह नहीं है कि प्रथम मनुष्यों का आनंद न केवल समय के साथ अपरिवर्तित रहता, बल्कि जैसे-जैसे वे स्वयं को परिपूर्ण बनाते, वह और भी अधिक बढ़ता, यदि वे उस आज्ञा के प्रति विफादार रहते जो प्रभु ने उन्हें आरंभ में दी थी। दुर्भाग्यवश, हमारे प्रथम माता-पिता और उनके सभी वंशजों के लिए, उन्होंने इस आज्ञा का उल्लंघन किया और इस प्रकार अपनी परम आनंद को नष्ट कर दिया।

3.3. स्वैच्छिक पतन और इसके परिणामों पर x मानव के पतन के

§88. हमारे प्रथम माता-पिता के पतन का स्वभाव

मोशे बताते हैं कि हमारे प्रथम माता-पिता का पतन कैसे हुआ। प्रथम मानव के आनंदमय निवास, स्वर्ग में ईश्वर द्वारा उसे दिए गए आज्ञा, आदम द्वारा जानवरों का नामकरण, ईश्वर द्वारा उसके लिए एक सहायक की सृष्टि, और उनकी निर्दोष अवस्था के बारे में कहने के बाद, पवित्र वंशावलीकार आगे कहते हैं: *साँप प्रभु परमेश्वर द्वारा बनाए गए किसी भी जंगली जानवर से अधिक चालाक था। और साँप ने स्त्री से कहा, 'क्या परमेश्वर ने सचमुच कहा था, "तुम बगीचे के किसी भी वृक्ष का फल नहीं खा सकतीं"?' और स्त्री ने साँप से कहा, 'हम वृक्षों का फल तो खा सकते हैं, पर परमेश्वर ने कहा, "तुम बगीचे के बीच में जो वृक्ष है, उसका फल नहीं खा सकतीं, और न ही उसे छू सकतीं, नहीं तो तुम्हारी मृत्यु हो जाएगी।"' तब साँप ने स्त्री से कहा, 'नहीं, तुम मरोगी नहीं; पर परमेश्वर जानता है कि जिस दिन तुम इसका खाओगी, उसी दिन तुम्हारी आँखें खुल जाएँगी, और तुम परमेश्वर के समान हो जाओगी, और भलाई और बुराई जानोगी।' और स्त्री ने देखा कि वह वृक्ष खाने के लिए अच्छा, और आँखों के देखने में मनोहर, और मनुष्य को बुद्धिमान बनाने के लिए वांछनीय था; और उसने उसका फल तोड़कर खाया, और अपने पति को भी दिया, और उसने भी खाया* (उत्पत्ति 3:1–6)। इस वृत्तांत से यह स्पष्ट है कि—

1. हमारे प्रथम माता-पिता के पतन का प्राथमिक कारण, या उनके पतन का अवसर, साँप था। तो, यहाँ 'साँप' नाम से किसे अभिप्रेत है? मूसा इसे *पृथ्वी पर मौजूद सभी जानवरों में सबसे बुद्धिमान* कहता है; परिणामस्वरूप, वह इसे सांसारिक जानवरों में वर्गीकृत करता है। हालाँकि, इस तथ्य से कि यह साँप बोलता है, तर्क करता है, परमेश्वर की निंदा करता है, और हव्वा को बुराई में लुभाने का प्रयास करता है, हम देखते हैं कि प्राकृतिक साँप के भीतर छिपा हुआ आध्यात्मिक साँप, शैतान, परमेश्वर का शत्रु है। और पवित्र शास्त्र इस मामले में किसी भी प्रकार का संदेह नहीं छोड़ता है। ज्ञानी कहते हैं कि *शैतान की ईर्ष्या के द्वारा मृत्यु* (और पाप) मानव *जगत में प्रवेश किया* (ज्ञान 2:24); उद्धारकर्ता स्वयं शैतान को *आरंभ से हत्यारा* और *झूठ का पिता* कहते हैं, और सभी पापियों को *शैतान की संतान* कहते हैं (यूहन्ना 8:44); अंत में, धर्मविज्ञानी संत योहन दो बार और पूरी स्पष्टता के साथ गवाही देते हैं कि *महान अजगर, प्राचीन साँप,* कोई और नहीं बल्कि *शैतान और सैतान है, जो सारी दुनिया को धोखा देता है* (प्रकाशितवाक्य 12:9; 20:2)।

इस प्रकार पवित्र संतों और कलीसिया के शिक्षकों ने लगातार सांप को प्रलोभक के रूप में देखा; उदाहरण के लिए:

क) *आइरेनियस*: "शैतान, एक पतित स्वर्गदूत होने के नाते, वह कुछ भी नहीं कर सकता सिवाय उस काम के जो उसने शुरुआत में किया था, अर्थात् मानव मन को उकसाना और प्रलोभित करना ताकि वह ईश्वर की आज्ञाओं का उल्लंघन करे और, धीरे-धीरे, उसके हृदय को अंधकारमय बना दे";[1423]

ख) *जॉन क्रिसोस्टोम*: "जो धर्मग्रंथ का अनुसरण करते हैं उन्हें यह जानना चाहिए कि (साँप, प्रलोभक के) शब्द शैतान के शब्द हैं, जो अपनी ही ईर्ष्या से ऐसे धोखे तक प्रेरित हुआ, और उसने इस प्राणी का उपयोग केवल एक उपयुक्त उपकरण ('όργάνω) के रूप में किया";[1424]

ग) *ग्रेगरी द थियोलॉजिस्ट*: "शैतान की ईर्ष्या और महिला के प्रलोभन के माध्यम से—जिसके आगे वह स्वयं, कमजोर होने के कारण, झुक गई, और जिसे उसने अपनी मनाने की कुशलता से संभव बनाया (हे मेरी कमजोरी! क्योंकि

[1423] Contr. haeres. V, c. 24; तुलना करें c. 23.
[1424] जेनेसिस होमिलि. XVI, n. 2 में।

पहले माता-पिता की कमजोरी भी मेरी अपनी है)—मनुष्य ने उसे दिया गया आज्ञा भूल गया और कड़वे स्वाद से अभिभूत हो गया";[1425]

घ) *ऑगस्टीन:* "इस प्रकार सांप को 'सबसे चालाक' कहा जाता है, शैतान की चालाकी के कारण, जिसने इसमें और इसके माध्यम से अपना धोखा किया";[1426]

ई) *दमास्कस के जॉन:* "मनुष्य शैतान की ईर्ष्या से पराजित हुआ; क्योंकि अच्छाई का ईर्ष्यालु घृणक—दानव, जो अपने अहंकार के कारण गहराइयों में फेंका गया था—यह सहन नहीं कर सका कि हमें स्वर्गीय आशीर्वादों के योग्य बनाया जाए,"[1427] और अन्य।[1428]

2. हमारे प्रथम माता-पिता के पतन का **दूसरा कारण**—शब्द के सच्चे अर्थ में कारण—स्वयं वे ही थे। प्रलोभी पत्नी को संबोधित करता है (शायद इसलिए कि उसने आज्ञा सीधे ईश्वर से नहीं, बल्कि अपने पति से सुनी थी, और इसलिए वह अधिक आसानी से प्रभावित हो सकती थी), और अपनी बात ईश्वर के खिलाफ निंदा से शुरू करता है: *'ईश्वर ने कहा है, "तुम बगीचे के किसी भी वृक्ष का फल नहीं खा सकते"* (उत्पत्ति 3:1)। केवल इसी शुरुआत से ही (जॉन क्राइसोस्टोम), पत्नी को पहले ही यह महसूस कर लेना चाहिए था कि यहाँ धोखा हो रहा था; उसे सांप से मुंह मोड़ लेना चाहिए था, जो ईश्वर की आज्ञा के विपरीत बोल रहा था, और अपने पति की ओर मुड़कर एक प्रश्न करना चाहिए था, जिसके लिए उसे बनाया गया था। लेकिन, केवल लापरवाही (ἀπροσεξίαν) के कारण, हव्वा न केवल साँप से मुंह मोड़ने में असफल रही, बल्कि उसने अपने विनाश के लिए ईश्वर की आज्ञा ही उसे बता दी। *और उस स्त्री ने साँप से कहा: 'बाग के हर पेड़ का फल हम खा सकते हैं; परन्तु बाग के बीच में जो पेड़ है, उसका फल परमेश्वर ने कहा है, "तुम उसे न खाना, और न उसे छूना, कहीं ऐसा न हो कि तुम मर जाओ"* (2:3)। तब प्रलोभक ने, और भी अधिक धृष्टता से, परमेश्वर के वचन के ठीक विपरीत बात कहनी शुरू कर दी, और परमेश्वर को स्वयं, मानो, मानव जाति के प्रति ईर्ष्यालु और शत्रु के रूप में चित्रित करने का प्रयास किया। *और साँप ने स्त्री से कहा: 'नहीं, तुम मरोगी नहीं; पर परमेश्वर जानता है कि जिस दिन तुम इसे खाओगी, उसी दिन तुम्हारी आँखें खुल जाएँगी और तुम परमेश्वर के समान हो जाओगी, जो भलाई और बुराई को जानती हो* (4:5)। इससे उस स्त्री के लिए धोखेबाज़ को पहचानना और भी आसान हो गया और उसके शब्दों पर विश्वास न करने का और भी अधिक कारण मिल गया। फिर भी उसने अपने सृष्टिकर्ता और प्रभु की अपेक्षा साँप पर अधिक विश्वास किया; वह ईश्वर के बराबर बनने के सपने में बहक गई, और इसके बाद उसके भीतर एक त्रैगुणिक वासना उत्पन्न हुई, जो सभी अधर्म की जड़ है (1 यूहन्ना 2:16): *और स्त्री ने देखा कि वह वृक्ष खाने के लिए अच्छा* (मांस की लालसा), *और आँखों के देखने में मनोहर* (आँखों की लालसा), *और मनुष्य को बुद्धिमान बनाने के लिए वांछनीय* (लौकिक गर्व) *था; और उसने उसके फल में से लेकर खाया* (6)।[1429] इस प्रकार, यद्यपि हव्वा शैतान के प्रलोभन में पड़ गई, वह आवश्यकता से नहीं, बल्कि पूरी तरह से अपनी स्वैच्छिक इच्छा से गिरी: प्रलोभी के शब्द ऐसे नहीं थे जो उसे अनैच्छिक रूप से पाप में ले जाएँ; इसके विपरीत, उनमें बहुत कुछ ऐसा था जो उसे होश में लाना चाहिए था और उसे अपराध करने से रोकना चाहिए था। तो फिर आदम कैसे गिरा? मूसा इस बिंदु पर चुप हैं; लेकिन न्यायाधीश परमेश्वर के पति आदम से कहे शब्दों से: *'क्योंकि तूने अपनी पत्नी की बात सुनी और उस वृक्ष से खाया, जिस पर मैंने तुझे आज्ञा दी थी, यह कहते हुए, "तू इससे नहीं खाएगा"* (17)', यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि आदम अपनी पत्नी के मनाने और उससे अपने लगाव के परिणामस्वरूप गिरा — जिसका अर्थ है कि वह भी आवश्यकता से नहीं, बल्कि अपनी स्वैच्छिक इच्छा से गिरा। उसकी पत्नी का खतना भी आग्रह रहा हो और उससे उसका खतना भी प्रेम रहा हो, आदम को परमेश्वर की आज्ञा याद

[1425] पवित्र ईस्टर पर उपदेश, *द वर्क्स ऑफ़ द होली फ़ादर्स*, IV, 160 में।

[1426] डी जेनेस. एड लिट. XI, पृ. 29.

[1427] सही व्याख्या ऑर्थोडॉक्स विश्वास की, पुस्तक II, अध्याय 30, पृ. 134. उसी कृति में आगे, दमिश्क के संत जॉन यह अनुमान प्रस्तुत करते हैं कि शैतान ने विशेष रूप से साँप को अपना उपकरण क्यों चुना: 'पतन से पहले,' वे कहते हैं, 'हर चीज़ मनुष्य के अधीन थी; क्योंकि परमेश्वर ने उसे पृथ्वी और जल में जो कुछ भी है, उस सब पर शासक नियुक्त किया था। यहाँ तक कि सर्प भी मनुष्य के निकट था, और किसी भी अन्य जानवर की तुलना में उसके और करीब आ गया, और अपनी मनोहर गति से उसके साथ संवाद करता प्रतीत होता था। इसीलिए शैतान, जो बुराई का राजकुमार है, ने हमारे प्रथम माता-पिता के मन में सबसे हानिकारक सलाह डालने के लिए इसका उपयोग किया" (पुस्तक II, अध्याय 10, पृष्ठ 83)।

[1428] *जस्टिन,* *डायलॉग्स विद ट्रायफो*, पृ. 103, 124; *टर्टुलियन,* *ऑन पेशेंस*, अध्याय 5; *ओरिजिन,* *कमेंटरी ऑन जॉन*, खंड XX, टिप्पणी 21; *लैक्टैंटियस,* *इंस्टिट्यूट्स ऑफ द डिविइन*, 11, 13; *यूसेबियस,* *प्रेप. इवैंग.* VII, 10; *एम्ब्रोस,* *डे पैराडिसो*, अध्याय 11, खंड 9; *ग्रेगरी ऑफ निसिया,* *इन सैल्म. ट्रैक्ट.* II, अध्याय 16; *थियोडोरेट,* *क्वेस्ट. इन जेनेस.* XXXI, *क्रॉन. क्वार्ट.* 1843, III, 361 में।

[1429] जेनेसिस होमलि. XVI, n. 2, 3 में। यहाँ हमने संत जॉन क्राइसोस्टोम के विचारों का संक्षिप्त संस्करण प्रस्तुत किया है।

रखनी चाहिए थी; उसके पास यह निर्णय लेने की बुद्धि थी कि किसकी आज्ञा माननी है—अपनी पत्नी की या परमेश्वर की—और अपनी पत्नी की बात मानने के लिए वह स्वयं दोषी है।[1430]

इसलिए, यह निष्कर्ष निकलता है कि हमारे प्रथम माता-पिता के पतन का दोष ईश्वर पर बिल्कुल भी नहीं है। मनुष्य को स्वतंत्र बनाकर, ईश्वर ने उसे एक आज्ञा दी—और, वह भी सबसे आसान आज्ञा—उसे अत्यंत स्पष्टता से व्यक्त किया, उसके साथ भयानक धमकियों का समर्थन किया, और उसे उसे पूरा करने के लिए सभी साधन प्रदान किए (क्योंकि, पहले मनुष्य की प्राकृतिक क्षमताओं की पूर्णता के अलावा, ईश्वर की कृपा भी उसमें लगातार निवास करती थी) — फिर भी मनुष्य ने अपने स्रष्टा और कल्याणकर्ता की इच्छा पूरी करने से इनकार कर दिया; उसने प्रलोभक की पहली आवाज़ पर ध्यान दिया...

लेकिन वे पूछते हैं, 'ईश्वर ने आदम को यह आज्ञा क्यों दी, जबकि उन्होंने पहले से ही जान लिया था कि वह इसे तोड़ देगा?' क्योंकि यह या कोई अन्य आज्ञा (और इससे आसान कोई आज्ञा सोची नहीं जा सकती थी) — लेकिन एक विशिष्ट आज्ञा, जैसा कि हमने पहले ही देखा है — पहले मनुष्य के लिए अच्छाई में अपनी इच्छा का अभ्यास करने और उसे मजबूत करने के लिए आवश्यक थी, और ताकि वह स्वयं महिमा अर्जित कर सके और परम आनंद प्राप्त कर सके।[1431] "ईश्वर ने आदम के गिरने को क्यों नहीं रोका, और जब उन्होंने दोनों की पूर्वज्ञान था, तो शैतान ने उसे क्यों प्रलोभित किया?" क्योंकि ऐसा करने के लिए उन्हें उनकी स्वतंत्रता सीमित करनी पड़ती, या उन्हें उससे वंचित करना पड़ता; लेकिन ईश्वर, जो अनंत बुद्धिमान और अपने निर्णयों में अपरिवर्तनीय हैं, एक बार किसी भी प्राणी को स्वतंत्रता प्रदान करने के बाद, न तो उसे सीमित कर सकते हैं और न ही उससे छीन सकते हैं।[1432]

"ईश्वर ने मनुष्य को उसकी प्रकृति में ही पापहीनता से क्यों नहीं युक्त किया, ताकि वह सभी प्रलोभनों के बीच भी, यदि वह चाहे, तो गिर न सके? इसी कारण से, आइए हम बेसिल द ग्रेट के साथ कहें, कि आप सेवकों को अच्छा तब नहीं मानते जब आप उन्हें बंधा हुआ रखते हैं, बल्कि तब मानते हैं जब आप देखते हैं कि वे स्वेच्छा से अपने कर्तव्यों का पालन करते हैं। इसीलिए ईश्वर को यह पसंद है कि सद्गुण जबरदस्ती थोपा न जाए, बल्कि उसे सद्भावपूर्वक अभ्यास किया जाए। सद्गुण, हालांकि, स्वतंत्र इच्छा से उत्पन्न होता है, आवश्यकता से नहीं; और स्वतंत्र इच्छा इस बात पर निर्भर करती है कि हम क्या हैं; अर्थात्, यह स्वतंत्र है। इसलिए, जो कोई भी सृष्टिकर्ता को इस बात के लिए दोष देता है कि उन्होंने हमें स्वभाव से पापरहित नहीं बनाया, वह तर्कसंगत स्वभाव की बजाय एक अतर्कसंगत स्वभाव को प्राथमिकता देने के अलावा कुछ नहीं करता—एक ऐसा स्वभाव जो स्वतंत्र इच्छा और आत्म-निर्णय से संपन्न है—उस स्वभाव के बजाय जो अचल और किसी भी आकांक्षा से रहित है।"[1433]

"भगवान ने हमें बनाया ही क्यों, जबकि उन्हें पहले से पता था कि हम गिरेंगे और नष्ट हो जाएँगे? क्या यह बेहतर नहीं होता अगर उन्होंने हमें न तो अस्तित्व दिया होता और न ही स्वतंत्रता?" लेकिन अनंत बुद्धिमान की योजनाओं को समझने का साहस कौन कर सकता है? हममें से कौन यह समझा सकता है कि संसार में इंसान की रचना, जो इंद्रियों और आत्मा दोनों वाला प्राणी है, आवश्यक नहीं थी? इसके अलावा, यदि ईश्वर को हमारे पतन का पूर्वज्ञान था, तो उन्हें

1430 सेंट जॉन क्रिसिस्टम ईश्वर को आदम से इस प्रकार बोलते हुए चित्रित करते हैं: 'तुम क्या दया के पात्र हो, तुमने मेरी आज्ञा भुला दी और मेरी बातों की अपेक्षा पत्नी के उपहार को प्राथमिकता देने की हिम्मत की? क्योंकि यद्यपि यह पत्नी *ने तुम्हें दिया था,* मेरी आज्ञा और दंड का भय तुम्हें इसे चखने से रोकने के लिए पर्याप्त थे।' क्या तुम्हें पता नहीं था, या तुम अनभिज्ञ थे? इसीलिए, तुम्हारी चिंता के कारण, मैंने पहले ही कह दिया था कि तुम्हें इसके अधीन नहीं होना चाहिए—ताकि, यद्यपि तुम्हारी पत्नी ने तुम्हें आज्ञा तोड़ने के लिए उकसाया, तुम दोष से रहित न रहो। तुम्हें मेरी आज्ञा में और भी अधिक विश्वास रखना चाहिए था और न केवल इस बात का ध्यान रखना चाहिए था कि तुम स्वयं न खाओ, बल्कि अपनी पत्नी को इस अपराध की गंभीरता भी समझानी चाहिए थी, क्योंकि तुम अपनी पत्नी के सिर हो और वह तुम्हारे लिए बनाई गई थी। फिर भी तुमने व्यवस्था को उलट दिया, और न केवल उसे सुधारने में असफल रहे, बल्कि स्वयं भी उसके साथ गिर पड़े।" और वह अपनी ओर से आगे कहते हैं: "पति के शब्दों पर भी विचार करें: *'उस स्त्री ने जो तूने मुझे दी है—उसने मुझे उस वृक्ष का फल दिया, और मैंने खा* लिया' (उत्पत्ति 3:12)। यहाँ न तो कोई आवश्यकता है, न कोई बाध्यता, बल्कि विकल्प और स्वतंत्रता है: उसने केवल *मुझे दे दिया,* उसने मुझे मजबूर नहीं किया, न ही मुझ पर जबरदस्ती की" (जेनेसिस होमलि. XVII, n. 4, 5)।

1431 उपरोक्त टिप्पणियाँ 1407–1410 देखें।

1432 धन्य ऑगस्टीन कहते हैं: 'कौन यह कहने या मानने की हिम्मत करेगा कि ईश्वर में एक स्वर्गदूत या मनुष्य के पतन को रोकने की शक्ति की कमी थी? लेकिन ईश्वर ने इसके बजाय इसे उनकी अपनी स्वतंत्र इच्छा पर छोड़ना चुना' (De Civitate Dei XIV, 26). और अन्यत्र, मानव के पतन की अनुमति ईश्वर ने क्यों दी, इसी प्रश्न को संबोधित करते हुए, वे उत्तर देते हैं: 'मैं उनके इरादों की गहराई को नहीं समझ सकता, और मैं स्वीकार करता हूँ कि ये मामले मेरी क्षमता से परे हैं' (डे जेनेसिस एड लिटिरेम, पुस्तक II)।

1433 इस तथ्य पर एक चर्चा कि ईश्वर बुराई का कारण नहीं है, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, VIII, 156 में पाई जा सकती है।

हमारे उद्धार का भी पूर्वज्ञान था। और जिस प्रकार उन्होंने इंसान को बनाने का निश्चय किया, जिसका पतित होना निश्चित था, उसी प्रकार उन्होंने अपने एकमात्र पुत्र के माध्यम से पतित को पुनर्स्थापित करने का भी निश्चय किया।

'ईश्वर ने न केवल (जॉन क्रिसोस्टोम) यह पूर्वानुमान लगाया था कि आदम पाप करेगा, बल्कि यह भी कि वह अवतार के माध्यम से पतित को पुनर्स्थापित करेगा। और उन्होंने पुनरुत्थान का पूर्वानुमान लगाने से पहले पतन के बारे में नहीं जाना था। वह जानते थे कि मनुष्य गिर जाएगा, फिर भी उन्होंने उसके पुनर्स्थापन के लिए उपचार तैयार किया, और मनुष्य को मृत्यु का अनुभव करने की अनुमति दी, ताकि वह सीख सके कि वह अपनी स्वयं की कोशिशों से क्या हासिल कर सकता है, और सृष्टिकर्ता की कृपा से उसे क्या प्राप्त हुआ था। वह जानता था कि आदम गिर जाएगा; फिर भी उसने देखा कि उससे हाबिल, एनोश, हनोक, नूह, एलियाह, भविष्यद्वक्ता, अद्भुत प्रेरित—मानव जाति का आभूषण—और शहीदों के ईश्वर-वाहक बादल, जो धार्मिकता का प्रकाश बिखेरते थे, आएँगे।"[1434]

§89. हमारे प्रथम माता-पिता के पाप की गंभीरता

आदम और हव्वा का पाप, जो ईश्वर द्वारा निषिद्ध वृक्ष का फल खाने में निहित था,[1435] तुच्छ प्रतीत हो सकता है। लेकिन हम इसकी पूरी महत्ता और विशालता को समझेंगे यदि हम इस पर विचार करें:

क) हमारे प्रथम माता-पिता ने जो आज्ञा तोड़ी, वह बाहरी रूप पर नहीं, बल्कि आज्ञा की आत्मा पर थी। इस आज्ञा में उनसे क्या अपेक्षित था? यह एक कृत्रिम आज्ञा थी, प्राकृतिक नहीं; अर्थात्, हमारे प्रथम माता-पिता अपनी इच्छा से, अपने अंतःकरण पर अंकित प्राकृतिक कानून की आवाज़ द्वारा, इस बात का एहसास नहीं कर सकते थे कि उन्हें भलाई और बुराई के ज्ञान के वृक्ष का फल नहीं खाना चाहिए, न ही वे स्वयं को यह समझा सकते थे कि उन्हें ऐसा क्यों नहीं करना चाहिए, — लेकिन उन्होंने यह आज्ञा परमेश्वर से बाहरी रूप से प्राप्त की थी और इसे केवल इसलिए पूरा करने का संकल्प लिया था क्योंकि परमेश्वर ने ऐसा आज्ञा दी थी। परिणामस्वरूप, अपने सार में, इसने परमेश्वर के प्रति उनके बिना शर्त आज्ञाकारिता की मांग की; यह उनकी आज्ञाकारिता की परीक्षा के लिए दी गई थी।[1436] इस प्रकार, इसे तोड़कर, वे परमेश्वर के प्रति अवज्ञा या *विद्रोह के* पाप में पड़ गए, जैसा कि प्रेरित कहते हैं (रोमियों 5:19), और ऐसा करके उन्होंने संपूर्ण नैतिक कानून का मौलिक रूप से उल्लंघन किया, जो सार में परमेश्वर की इच्छा के अलावा और कुछ नहीं है, और मनुष्य से केवल उसी इच्छा के प्रति आज्ञाकारिता की मांग करता है। यही कारण है कि धन्य ऑगस्टीन: 'कोई यह न सोचे कि (प्रथम मनुष्यों का) पाप छोटा और तुच्छ था केवल इसलिए कि यह वृक्ष से खाने में ही था—और, इसके अलावा, वह वृक्ष बुरा या हानिकारक नहीं था, बल्कि केवल निषिद्ध था—क्योंकि आज्ञा पालन की मांग करती थी, एक गुण जो तर्कशील प्राणियों में, मानो, सभी गुणों की माता और संरक्षक है।'[1437]

ख) इस आज्ञा की सादगी पर। संत जॉन क्राइसोस्टोम पूछते हैं, 'इससे सरल और क्या हो सकता था?' ईश्वर ने मनुष्य को स्वर्ग में रहने, दिखाई देने वाली सभी चीजों की सुंदरता का आनंद लेने, स्वर्ग के सभी पेड़ों के फलों का सेवन करने की अनुमति दी, और उसे केवल एक से खाने से मना किया: और मनुष्य ने इसे भी पूरा करने की इच्छा नहीं की... यही कारण है कि पवित्र शास्त्र कहते हैं: 'प्रभु परमेश्वर ने भूमि से हर प्रकार का वृक्ष उगाया, जो देखने में मनोहर और

[1434] अपुद *फोत.* पुस्तकालय. कोड. CCXXIX, पृ. 1548। यही विचार सेंट एम्ब्रोज़ (डे पैराड. अध्याय VIII, संख्या 41) में भी पाया जाता है।

[1435] हम पहले ही यह नोट कर चुके हैं कि हमारे प्रथम माता-पिता की आदिम स्थिति और पतन के बारे में मूसा के वृत्तांत के शाब्दिक अर्थ से हटने का कोई आधार नहीं है। परिणामस्वरूप, एनक्रैटाइट्स (अपud *Clem.* Strom. III, 12, 13), मनिखियों (अपud *Augustin.* de morib. मनीक. c. XIX) और बाद के समय के अन्य विधर्मी, कि आदम और हव्वा को परमेश्वर की आज्ञा विशेष रूप से उन्हें विवाह करने से रोकने में थी, और उनका पाप इस आज्ञा के विपरीत कार्य करने में था—जबकि इसके विपरीत, यह ज्ञात है कि परमेश्वर ने, जैसे ही पहले मनुष्यों, *एक पुरुष और एक महिला,* को बनाया / *और परमेश्वर ने उन पर आशीर्वाद किया, और परमेश्वर ने उनसे कहा: 'फल-फूलो और बढ़ो, और पृथ्वी को भर दो* (उत्पत्ति 1:28), और ठीक उसी क्षण उन्हें विवाह का विधान सिखाया गया: *'एक पुरुष अपने पिता और अपनी माता को छोड़कर अपनी पत्नी से जुड़ जाएगा; और वे दोनों एक तन हो जाएंगे* (उत्पत्ति 2:24)। यह सब साँप द्वारा प्रलोभन से भी पहले हुआ था।

[1436] "लोग पूछते हैं: स्वर्ग में वह वृक्ष क्यों था जिसके द्वारा शैतान हमारे विरुद्ध अपनी दुष्ट योजना को अंजाम दे सका? क्योंकि यदि उसके पास वह धोखेबाज़ी भरी चारा न होती, तो वह अवज्ञा के द्वारा हमें मृत्यु की ओर कैसे ले जा सकता था? यह वहाँ इसलिए था क्योंकि हमारी आज्ञाकारिता की परीक्षा के लिए एक आज्ञा की आवश्यकता थी" *(बेसिल द ग्रेट,* डिस्कोर्स ऑन द फैक्ट दैट गॉड इज़ नॉट द ऑथर ऑफ इविल, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, VIII, 158–159)।

[1437] De civil. Dei XIV, 12.

खाने में उत्तम था' (उत्पत्ति 2:9), ताकि हम यह जान सकें कि जिसि प्रचुरता का उसने आनंद लिया, उसी से यह पता चलता है कि मनुष्य ने अपनी बड़ी अनुशासनहीनता और लापरवाही के कारण, उसे दिए गए आज्ञा का उल्लंघन किया।"[1438]

(ग) इस आज्ञा को पूरा करने के लिए प्रेरणाएँ। एक ओर, ऐसी प्रेरणाएँ रचयिता द्वारा मनुष्य पर प्रदान की गई सबसे बड़ी और सबसे विशेष आशीर्वाद थीं, और होनी भी चाहिए थीं, जिसने उसे अपने हाथों से गढ़ा, उसे अपनी ही प्रतिमा में सुशोभित किया, उसे पृथ्वी की सभी प्राणियों का शासक बनाया, उसे आनंद के स्वर्ग में बसाया, उसे अपने साथ सहभागिता के लिए बुलाया, उसे आत्मा और शरीर की अमरता प्रदान की, और उसे शाश्वत आनंद के लिए नियत किया — और इन सभी अनुग्रहों के लिए, उसने लाभार्थी से केवल एक चीज की मांग की: आज्ञाकारिता। दूसरी ओर, आज्ञा को तोड़ने के लिए भयानक धमकियाँ थीं: *'जिसि दिनि तुम इसे खाओगे,'* ईश्वर ने हमारे प्रथम माता-पिता को यह देते हुए कहा, *'तुम निश्चिति रूप से मर जाओगे* (उत्पत्ति 2:17)। क्या कोई इससे भी मजबूत प्रोत्साहन की कल्पना कर सकता है, और वह भी इतनी आसान आज्ञा के पालन के लिए?[1439]

(ग) इसे पूरा करने के साधनों के बारे में। हमें याद रखना चाहिए कि आदम और हव्वा अभी भी पूरी तरह से शुद्ध और मासूम थे, जिनमें ताज़ा, मजबूत शक्तियाँ थीं, जो पाप से अछूती थीं, और यह भी कि सर्वशक्तिमान ईश्वर की कृपा हमारे प्रथम माता-पिता के भीतर लगातार वास करती थी। परिणामस्वरूप, उन्हें बस प्रलोभक का विरोध करने और अच्छाई पर दृढ़ रहने की इच्छा करनी थी, और वे दृढ़ रहते: सब कुछ केवल उनकी इच्छा पर निर्भर था, जबकि उनकी शक्ति पर्याप्त से अधिक थी।

ग) हमारे प्रथम माता-पिता के पाप में निहित विशिष्ट पापों की संख्या। ये थे:

1. अहंकार: क्योंकि हमारे प्रथम माता-पिता, सबसे बढ़कर, सांप के इस वादे से लुभाए गए थे: *'तुम ईश्वर के समान हो जाओगे'*;[1440]

2. अविश्वास: क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के वचन पर विश्वास नहीं किया: *'तुम निश्चिति रूप से मरोगे'*;

3. ईश्वर से धर्मत्याग और उनके शत्रु, शैतान के पक्ष में पलायन: क्योंकि, ईश्वर की अवज्ञा करने के बाद, उन्होंने धोखेबाज़ की आज्ञा मानी और उसकी दुस्साहसी बदनामी पर विश्वास किया, मानो ईश्वर ने ईर्ष्या या द्वेष के कारण उन्हें उस वृक्ष का फल खाने से मना किया हो;

४. परमेश्वर की सभी असाधारण दया और अनुग्रह के प्रति सबसे बड़ी कृतघ्नता। या, धन्य ऑगस्टीन के शब्दों में कहें तो: "अहंकार यहीं निहित है: क्योंकि मनुष्य ने ईश्वर की शक्ति के बजाय अपनी शक्ति के अधीन होने की इच्छा की; और पवित्रता का अपमान: क्योंकि उसने ईश्वर पर विश्वास नहीं किया; और हत्या: क्योंकि उसने स्वयं को मृत्यु के लिए उजागर कर दिया; और आध्यात्मिक व्यभिचार: क्योंकि सांप के प्रलोभन द्वारा मानव आत्मा की पवित्रता का उल्लंघन किया गया; और चोरी: क्योंकि उसने निषिद्ध वृक्ष से लिया; और लालच: क्योंकि वह उससे अधिक की इच्छा करता था जिससे उसे संतुष्ट रहना चाहिए था।"[1441] टर्टुलियन ने, अपनी ओर से, हमारे प्रथम माता-पिता द्वारा प्रथम आज्ञा के उल्लंघन में संपूर्ण दश आज्ञाओं के उल्लंघन को देखा।[1442]

[1438] *Genes. homil. XIV, n. 3* में। यही विचार धन्य ऑगस्टीन (*De civit. Dei* XIV, 12) और धन्य थियोडोरेट (*in Genes. quaest. XXXVII*, *Chron. Quart. 1843*, III, 370) में भी मिलता है। बाद वाले कहते हैं: 'क्या पाप तुम्हें तुच्छ नहीं लगता?' प्रभु ने आदम को सभी पेड़ों पर पूर्ण अधिकार दिया, केवल एक से खाने से मना किया; फिर भी उसने, बाकी सभी को छोड़कर, उसी एक निषिद्ध वृक्ष का फल तोड़ लिया। इसी कारण प्रभु परमेश्वर ने उसे फटकारते हुए कहा: *'तुम्हें किसने बताया कि तुम नग्न हो? क्या तुमने उस वृक्ष का फल खाया है, जिसे मैंने तुम्हें खाने से मना किया था?* (उत्पत्ति 3:11)? यही बात हव्वा से शैतान के शब्दों से भी स्पष्ट होती है: *'क्या परमेश्वर ने सचमुच कहा था, "तुम बगीचे के किसी भी वृक्ष का फल नहीं खा सकतीं?"'* (उत्पत्ति 3:1)। इस प्रकार, यह उल्लंघन किसी भी तरह से तुच्छ नहीं है। उन्हें केवल एक ही वृक्ष से खाने की मनाही थी; फिर भी उन्होंने उसी वृक्ष का फल पहले खाया।"

[1439] इन प्रेरणाओं को संत जॉन क्राइसोस्टोम (जीनेसिस होमलि. XVII, n. 4) और धन्य ऑगस्टीन (डी सिविटिटे देई, XVI, 15) द्वारा विशेष रूप से प्रबलता से चित्रित किया गया है।

[1440] "ईश्वर घमंड से बढ़कर किसी चीज़ से घृणा नहीं करता। इसीलिए, शुरू से ही, उसने हमारे भीतर इस जुनून को जड़ से मिटाने के लिए सब कुछ इस तरह से व्यवस्थित किया। इसी कारण हम नश्वर हो गए हैं, दुख और शोक में जीते हैं; इसी कारण हमारा जीवन निरंतर परिश्रम के बोझ तले, कष्ट और थकान में बीतता है। क्योंकि पहला मनुष्य गर्व के कारण पाप में गिर गया, ईश्वर के समान होने की इच्छा रखकर" (*जॉन क्रिसोस्टोम,* होमीली ऑन द गॉस्पेल ऑफ मैथ्यू LXV, n. 6, भाग III, पृ. 129, मॉस्को, 1843)।

[1441] एनचिरिडि., अध्याय XLV.

[1442] उपरोक्त टिप्पणी 1412 देखें।

ई) अंत में, हमारे प्रथम माता-पिता के पाप से उत्पन्न परिणाम। यदि यह पाप गंभीर नहीं होता, तो इससे वे भयानक परिणाम नहीं होते जो इसके परिणामस्वरूप हुए; और ईश्वर, जो न्यायी न्यायाधीश हैं, हमारे प्रथम माता-पिता को ऐसी सजा नहीं देते। "ईश्वर की आज्ञा," धन्य ऑगस्टीन कहते हैं, "ने केवल इतना मना किया था कि वे उस वृक्ष का फल न खाएं, और इसलिए यह पाप एक मामूली पाप प्रतीत होता है; लेकिन जिसने कभी गलती नहीं की, उसने इसे कितना बड़ा माना, यह दंड की कठोरता से पूरी तरह स्पष्ट है।[1443]

§90. हमारे प्रथम माता-पिता के पतन के परिणाम

ये परिणाम सबसे पहले हमारे प्रथम माता-पिता की आत्माओं में प्रकट हुए, फिर उनके शरीरों और उनकी सभी बाहरी भलाई तक फैल गए।

आत्मा में परिणाम: ये हैं—

1) ईश्वर के साथ वाचा (धर्म) का टूटना, अनुग्रह का ह्रास, और आध्यात्मिक मृत्यु। आदम और हव्वा के पाप में गिरते और कलंकित होते ही, परमेश्वर के साथ उनका संगत तुरंत और अनिवार्य रूप से टूट गया, और पवित्र आत्मा की अनुग्रह, जो उनके हृदयों में वास करता था, उनसे दूर हो गया: क्योंकि *प्रकाश और अंधकार के बीच,* एक क्षण के लिए भी, कोई *सामान्य आधार* नहीं है (2 कुरिन्थियों 6:14)। और ठीक उसके बाद, विधि-दाता परमेश्वर की चेतावनी उन पर पूरी हुई: *'जिस दिन तुम इसे खाओगे, उसी दिन तुम निश्चय ही मर जाओगे* (उत्पत्ति 2:17)। तब वे अपनी आत्मा में मर गए, जो जीवन के स्रोत परमेश्वर से अलग नहीं रह सकती, और न ही वे अनुग्रह के बिना जी सकती हैं, ठीक वैसे ही जैसे शरीर हवा और भोजन के बिना नहीं जी सकता।[1444] चर्च पिताओं ने सर्वसम्मति से आदम के पतन के इस परिणाम की ओर इशारा किया, उदाहरण के लिए[1445] :

a) *टाटियन* (उनके धर्मत्याग से पहले): "जब लोगों ने सबसे धूर्त धोखेबाज का अनुसरण किया और, यद्यपि उसने ईश्वर की आज्ञा का विरोध किया, उसे एक देवता के रूप में माना, तब ईश्वर ने, अपने वचन की शक्ति से, ऐसे मूर्खता के प्रेरक और उसके अनुयायियों दोनों को स्वयं के साथ सहभागिता से वंचित कर दिया; और ईश्वर की प्रतिमा में सृजित मनुष्य, सर्वशक्तिमान आत्मा से अलग होकर, मृत हो गया";[1446]

ख) *बेसिल द ग्रेट*: "जिस प्रकार आदम ने अपनी दुष्ट स्वतंत्र इच्छा के कारण पाप किया, उसी प्रकार वह पाप के कारण मरा: *पाप का वेतन मृत्यु है* (रोमियों 6:23); जिस हद तक वह जीवन से दूर हुआ, उसी हद तक वह मृत्यु के करीब आया: क्योंकि ईश्वर जीवन हैं, और जीवन से वंचित होना ही मृत्यु है; इसलिए आदम ने ईश्वर से दूर होकर अपने ऊपर मृत्यु ला दी, जैसा लिखा है: *'जो तेरे से मुंह मोड़ते हैं, वे नाश हो जाते* हैं' (भजन संहिता 72:27)";[1447]

ग) *निस्सा के ग्रेगरी*: "अपने पतन के बाद, पहला मनुष्य कई सौ वर्षों तक जीवित रहा; फिर भी परमेश्वर ने झूठ नहीं बोला जब उन्होंने कहा: *'जिस दिन तू इसको खाएगा, उसी दिन तू निश्चय मर जाएगा* (उत्पत्ति 2:17) — क्योंकि, मनुष्य के सच्चे जीवन से अलगाव के परिणामस्वरूप, मृत्यु की सज़ा उसी दिन उस पर पूरी हो गई, और कुछ समय बाद, शारीरिक मृत्यु भी आदम पर आ गई";[1448]

(d) *ऑगस्टीन*: "जैसे ही आज्ञा का उल्लंघन हुआ, परमेश्वर का अनुग्रह तुरंत प्रथम माता-पिता से दूर हो गया, और वे अपने शरीरों के नग्न होने पर लज्जित हुए।"[1449]

[1443] ओप. इम्पर्फ. कॉन्ट्रा जूलियन. VI, पृ. 23, इन पैट्रोलॉज. कर्स. कॉम्प्ल. खंड XLV, पृ. 1567.

[1444] "आदम के पाप से किस प्रकार की मृत्यु हुई? दो प्रकार की: शारीरिक, जब शरीर उस आत्मा से वंचित हो जाता है जिसने उसे जीवन दिया, और आध्यात्मिक, जब आत्मा ईश्वर की कृपा से वंचित हो जाती है, जिसने उसे एक उच्च आध्यात्मिक अस्तित्व के माध्यम से जीवन दिया" (विस्तारित ईसाई धर्मशिक्षा पर अनुच्छेद III, पृ. 43, मॉस्को, 1840)।

[1445] *इरनेयस,* *एगेंस्ट हेरेसीज़*, V, 23, n. 2; *अथेनासियस,* *एगेंस्ट द एरियन्स*, ओरेटेशन 1, n. 59; *हिलरी,* *कमेंटरी ऑन Psalm XXXVII*, n. 12; *थियोडोरेट,* *कमेंटरी ऑन रोमन्स*, V, 14; पीटर *क्रिसोस्टोम,* *Sermon LXX*; *सिरिल,* *एगेंस्ट जूलियन*, ओरेटेशन VIII.

[1446] ओरेट. एड ग्रीक. सी. II.

[1447] ईश्वर बुराई का कारण नहीं है, इस तथ्य पर एक प्रवचन, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, VIII, 155 में। इसकी तुलना तपस्या पर दिए गए अंश, वही, IX, 68 से करें।

[1448] एडव. यूनोम. ओरेट. II, पृ. 482, खंड II, सं. *मोरेल.*

[1449] De civit. Dei XIII, 13.

2) मन का मुरझा जाना (ऑर्थोडॉक्स कन्फेशन्स, भाग 1, प्रश्न 23 और 27 के उत्तर)। यह आदम और हव्वा के पतन के तुरंत बाद स्पष्ट हो गया, जब उन्होंने *एदन के बगीचे में चलते हुए परमेश्वर की आवाज़ सुनी, तो* उन्होंने *बगीचे के पेड़ों के बीच* उससे छिपने की सोची (उत्पत्ति 3:8)। "पाप से बुरा कुछ भी नहीं है," (*जॉन क्रिसोस्टोम*); "एक बार जब यह हममें प्रवेश कर जाता है, तो पाप न केवल हमें शर्मिंदगी से भर देता है, बल्कि उन लोगों को भी—जो कभी समझदार और महान बुद्धिमत्ता से विशिष्ट थे—पागलपन की ओर धकेल देता है। देखो, अब वह कितना मूर्खतापूर्ण व्यवहार कर रहा है, जो अब तक ज्ञान के एक हिस्से के लिए विशिष्ट था, जिसने अपने ही कर्मों से उस पर ज्ञान प्रदान करने वाले को प्रदर्शित किया था, और यहाँ तक कि भविष्यवाणी भी की थी... सर्वव्यापी परमेश्वर से, उस सृष्टिकर्ता से छिपने का उनका प्रयास कितनी मूर्खतापूर्ण है, जिसने शून्य से सभी चीजों को अस्तित्व में लाया, जो जानता है कि क्या छिपा है, जिसने सभी लोगों के हृदयों को बनाया और उनके सभी कर्मों की जाँच करता है (भजन संहिता 32:15), जो हृदयों और मन की गहरी बातों की परीक्षा करता है (भजन संहिता 7:10), और जो हृदय की सबसे गुप्त प्रेरणाओं को जानता है![1450]

3) निर्दोषता का नुकसान, इच्छा का पतन, और उसका अच्छाई की तुलना में बुराई की ओर अधिक झुकाव (ऑर्थोडॉक्स कन्फेशन, भाग 1, प्रश्न 23 और 27 के उत्तर)। यह स्पष्ट है:

क) इस तथ्य से कि जैसे ही *हमारे प्रथम* माता-पिता ने पाप किया, *उनकी आँखें खुल गईं, और उन्हें एहसास हुआ कि वे नग्न थे* (उत्पत्ति 3:7), कुछ ऐसा जो उन्होंने पहले महसूस नहीं किया था;

ख) इस तथ्य से कि, उनके पिता और कल्याणकर्ता परमेश्वर के प्रति, अपने पूर्व पुत्रवत प्रेम के बजाय, उन्होंने अचानक एक दास जैसा भय महसूस किया: *'और यहोवा परमेश्वर ने आदम को पुकारा और उससे कहा, "हे आदम, तू कहाँ है?" और उसने उससे कहा, "मैंने स्वर्ग में तेरी वाणी सुनी, और मैं डर गया, क्योंकि मैं नग्न था; और मैं छिप गया"* (9, 10);

ग) अंत में, इस तथ्य से कि जब उन्होंने अपने पाप का ईश्वर के समक्ष हिसाब दिया, तो उन्होंने पश्चाताप के बजाय एक कपटी बहाना पेश करना चुना। आदम ने दोष अपनी पत्नी पर और यहाँ तक कि उस ईश्वर पर भी मढ़ दिया, जिन्होंने उसे उसे दिया था: *आदम ने कहा, 'उस स्त्री ने, जिसे तूने मेरे साथ रहने के लिए दिया था—उसने मुझे वृक्ष का फल दिया, और मैंने खा लिया* (12); जबकि उसकी पत्नी ने दोष सर्प पर मढ़ दिया: *स्त्री ने कहा, 'सर्प ने मुझे धोखा दिया, और मैंने खा लिया* (13)।

चर्च के पवित्र पिताओं और शिक्षकों ने कहा कि पतन के माध्यम से, आदम ने पवित्रता का वस्त्र खो दिया, दुष्ट हो गया, अन्य विचारों की ओर मुड़ गया, और शैतान ने उसकी प्रकृति के भीतर पाप का नियम स्थापित कर दिया। हमें ऐसे वाक्यांश मिलते हैं, उदाहरण के लिए:

क) *इरेनियस* में: 'और आदम ने कहा: "अवज्ञा के द्वारा मैंने पवित्रता का वह वस्त्र खो दिया है जो मुझे पवित्र आत्मा से मिला था";'[1451]

ख) *बेसिल द ग्रेट* में: 'जल्द ही आदम ने खुद को स्वर्ग के बाहर, उस धन्य जीवन के बाहर पाया, जो आवश्यकता से नहीं बल्कि मूर्खता के कारण दुष्ट हो गया था';[1452]

ग) *अथेनासियस द ग्रेट* में: "ईश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करने के बाद, आदम पापी विचारों के आगे झुक गया, इसलिए नहीं कि ईश्वर ने हमें फँसाने वाले ये विचार बनाए थे, बल्कि इसलिए कि शैतान ने उन्हें धोखे से मनुष्य की तर्कशील प्रकृति में बो दिया था, जो अवज्ञा में गिर चुकी थी और ईश्वर से मुंह मोड़ चुकी थी, ताकि शैतान ने मानव स्वभाव में पाप और मृत्यु का कानून दोनों स्थापित कर दिया, जो पाप के माध्यम से राज करता है।"[1453]

४) ईश्वर की छवि का विकृतिकरण। यदि ईश्वर की छवि मानव आत्मा पर, और विशेष रूप से उसकी शक्तियों, बुद्धि और स्वतंत्र इच्छा में अंकित है, और इन शक्तियों ने अपनी बहुत सी पूर्णता खो दी है और आदम के पाप से विकृत हो गई हैं, तो मनुष्य में ईश्वर की छवि भी उसी प्रकार विकृत हो गई है। इस दृष्टिकोण की पुष्टि करते हैं:

[1450] उत्पत्ति पर होमीली XVII, खंड 2।

[1451] *विरुद्ध संप्रदाय*, III, 37.

[1452] *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, खंड VIII, पृ. 155 में इस तथ्य पर एक चर्चा कि ईश्वर बुराई का कारण नहीं है।

[1453] कॉन्ट्र. अपोलिन. पुस्तक II, संख्या 6.

क) *बेसलि द ग्रेट*: "मनुष्य को परमेश्वर के स्वरूप और समानता में बनाया गया था; लेकिन पाप ने स्वरूप की सुंदरता को विकृत (ἠχρείωσεν) कर दिया है, जो आत्मा को कामुक इच्छाओं में खींचती है";[1454]

ख) *मकरियुस महान*: "यदि किसी राजा की छवि वाला सिक्का बिगड़ जाए, तो सोने का मूल्य समाप्त हो जाता है और छवि का कोई उद्देश्य नहीं रह जाता: आदम ने भी यही अनुभव किया";[1455]

ग) *थियोडोरेट*: "आदम, ईश्वर बनना चाहकर, इस प्रकार ईश्वर की छवि होने का विशेषाधिकार भी खो बैठा।"[1456]

शरीर के लिए परिणाम:

1) बीमारी, दुःख और थकान (सच्चे विश्वास पर पूर्वी पितरों का पत्र, अध्याय 6)। आत्मा की सभी शक्तियों को भ्रष्ट करने के बाद, हमारे प्रथम माता-पिता का पाप, एक अस्वाभाविक कृत्य के रूप में, अनिवार्य रूप से उनके शरीरों में भी इसी तरह का असंतुलन पैदा कर दिया, और उनमें हर तरह की बीमारी, श्रम में थकान, कमजोरी और पीड़ा के बीज बो दिए। *स्त्री से उसने कहा: 'मैं तेरे कष्ट को बहुत बढ़ा दूँगा; तू पीड़ा में संतान को जन्म देगी* (उत्पत्ति 3:16)। *और आदम से उसने कहा: 'क्योंकि तूने अपनी पत्नी की बात सुनी और उस वृक्ष का फल खाया, जिस पर मैंने तुझे आज्ञा दी थी, यह कहते हुए, "तू इसका नहीं खाएगा," तेरे कारण भूमि शापित है; तुम जीवन भर दुख के साथ इस भूमि का अन्न खाओगे* (उत्पत्ति 3:17)। 'अपने माथे के पसीने से अपनी रोटी खाओगे' (19)। चर्च के शिक्षकों, उदाहरण के लिए ई.सी.ए. ([1457]), ने इन सभी को मूल पाप के परिणामों के रूप में पहचाना:

क) *थियोफिलिस ऑफ़ एंटीओक*: 'पाप से, एक झरने की तरह, बीमारियाँ, दुख और कष्ट मनुष्य पर बरसे;[1458]

ख) *आइरेनियस*: "पाप की सजा के रूप में, मनुष्य ने दुख और सांसारिक परिश्रम, और अपनी ललाट के पसीने से अपनी रोटी खाने की आवश्यकता को स्वीकार किया...; इसी तरह, स्त्री ने दुख और श्रम, और आहें, और प्रसव के दर्द को स्वीकार किया..."[1459]

२. मृत्यु (विस्तारित ईसाई धर्मशिक्षा, अनुच्छेद ३, पृ. ४३)। *'अपने माथे के पसीने की कमाई से,'* परमेश्वर ने आदम से कहा, *'तू तब तक अपनी रोटी खाएगा जब तक तू उस मिट्टी में नहीं लौट जाता जिसमें से तुझे निकाला गया है; क्योंकि तू धूल है, और धूल में ही लौट जाएगा* (उत्पत्ति ३:१९)। शारीरिक मृत्यु हमारे प्रथम माता-पिता के पतन का एक अपरिहार्य परिणाम बन गई, एक ओर इसलिए क्योंकि पाप ने उनके शरीरों में बीमारी और थकान के विनाशकारी सिद्धांत को प्रवेश कराया; और दूसरी ओर, क्योंकि परमेश्वर ने पतन के बाद उन्हें जीवन के वृक्ष से हमेशा के लिए बहिष्कृत कर दिया: *और यहोवा परमेश्वर ने कहा: 'देखो, आदम हम में से एक के समान हो गया है, जो भला और बुरा जानता है; और अब, यदि वह अपना हाथ बढ़ाकर जीवन के वृक्ष से भी न ले लेता और उसका स्वाद न चख लेता, तो वह अनंत काल तक जीवित न रहता* (22)। इस प्रकार कलीसिया के पवित्र पिताओं और शिक्षकों ने मृत्यु को देखा, विशेष रूप से[1460] ने:

क) *एम्ब्रोज़*: "मृत्यु का कारण अवज्ञा थी; अतः मनुष्य स्वयं अपनी मृत्यु के लिए दोषी है, न कि ईश्वर";[1461]

(ख) *जॉन क्रिसिस्टम*: "यद्यपि हमारे प्रथम माता-पिता बाद में कई वर्षों तक जीवित रहे, जैसे ही उन्होंने सुना, *'तू धूल है, और धूल में ही लौट* जाएगा', उन्होंने मृत्यु की सज़ा स्वीकार कर ली — वे नश्वर हो गए, और उस क्षण से, कहा जा सकता है, वे मर गए; इसका संकेत करने के लिए, पवित्रशास्त्र कहता है: *'जिस दिन तुम इसे खाओगे, उसी दिन तुम निश्चय ही मरोगे*, अर्थात्, तुम वह निर्णय सुनोगे कि अब से तुम नश्वर हो';[1462]

[1454] संयम पर एक उपदेश, *पवित्र पिताओं के कार्य*, IX, 68 में।

[1455] होमीली XII।

[1456] 2 Paralipom., प्रश्न 1 में।

[1457] *टर्टुलियन, *एड ग्रीक.* VII; *टर्टुलियन, *एडवर्सस मार्सियोनेम* II, 9; V, 25; *क्रिसोस्टोम, *होमलीज ऑन जेनेसिस* XVII, n. 7, 9.

[1458] *थियोफिलिस, *एड ऑटोल्यकस*, 11, 25.

[1459] *Adv. haeres.* III, 35; तुलना करें V, 23.

[1460] *थियोफिलिस, ऑन ऑटोल्यकस 11, 25; *मेथोडियस, डिक्री ऑन वर्जिनिस, ओरेशन III, n. 6; *आइरेनियस, अगेंस्ट हेरेसीज़ V, 23; *यूसेबियस, एक्लेसियास्टिकल हिस्ट्री 1, 2; *थियोडोरेट, कमेंट्री ऑन Psalms XV, 5; *लैक्टैंटियस, डिविइन इंस्टिट्यूट्स 11, 13.

[1461] *डी पैराडिसो*, अध्याय 7; तुलना करें *इन हेक्साएम.* V, 7; *इन प्स.* 36.

[1462] उत्पत्ति, व्याख्यान XVII, संख्या 9; तुलना करें व्याख्यान XVI, संख्या 6।

ग) *धन्य ऑगस्टीन:* 'सच्चा कैथोलिक विश्वास रखने वाले ईसाइयों के बीच, यह निस्संदेह स्वीकार किया जाता है कि शारीरिक मृत्यु भी हमें प्रकृति के नियम से नहीं मिली है—क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्य के लिए मृत्यु नहीं बनाई—बल्कि पाप के परिणामस्वरूप मिली है।'[1463]

मानव की बाहरी स्थिति के संबंध में परिणाम:

1. स्वर्ग से निष्कासन। स्वर्ग निर्दोष मनुष्य के लिए एक आनंदमय निवास था, और यह केवल सृष्टिकर्ता की अनंत दयालुता के द्वारा उसके लिए तैयार किया गया था; अब जब मनुष्य ने पाप किया है और अपने प्रभु और कल्याणकर्ता के क्रोध को भड़काया है, तो दोषी व्यक्ति ऐसे निवास का अयोग्य हो गया है और *उसे* न्यायसंगत रूप से स्वर्ग से निष्कासित कर दिया गया है: *और प्रभु परमेश्वर ने उसे एडेन के बगीचे से उस भूमि को जोतने के लिए निर्वासित कर दिया जिससे उसे लिया गया था* (उत्पत्ति 3:23), — एक ऐसा विचार जिसे चर्च के शिक्षकों ने अक्सर दोहराया है।[1464]

२. पशुओं पर प्रभुत्व का ह्रास या कमी (द राइट बिलीवर, भाग १, प्रश्न २२ का उत्तर)। यह प्रभुत्व इस तथ्य पर आधारित था कि मनुष्य को परमेश्वर के स्वरूप में बनाया गया था (उत्पत्ति 1:26); परिणामस्वरूप, जैसे ही मनुष्य में पाप के द्वारा परमेश्वर का स्वरूप कलंकित हुआ, जानवरों पर उसका प्रभुत्व कमजोर होना ही था।

संत जॉन क्राइसोस्टोम कहते हैं, "जब आदम ने अभी तक पाप नहीं किया था, तब जानवर उसके सेवक थे और उसकी आज्ञा मानते थे, और वह, सेवकों की तरह, उन्हें नाम देता था; लेकिन जब उसने पाप के द्वारा अपनी प्रकृति को कलंकित कर दिया, तो जानवरों ने उसे अब और नहीं पहचाना, और सेवक उसके दुश्मन बन गए... जब तक आदम ने अपनी प्रकृति को शुद्ध रखा, जो ईश्वर की छवि में बनाई गई थी, तब तक जानवर उसकी आज्ञा मानते थे जैसे सेवक; लेकिन जब उसने अवज्ञा के द्वारा उस प्रकृति को कलंकित किया, तो वे, अपने स्वामी को अब पहचानते हुए नहीं, उससे एक अजनबी की तरह नफरत करने लगे।"[1465] "हालांकि," वह आगे कहते हैं, "यद्यपि आदम ने हर आज्ञा तोड़ी और पूरे कानून का उल्लंघन किया, परमेश्वर ने उससे सारा सम्मान नहीं छीन लिया और न ही उसका सारा अधिकार छीन लिया, बल्कि उसके प्रभुत्व से केवल उन जानवरों को हटा दिया जो जीवन की आवश्यकताओं के लिए उसके लिए विशेष रूप से उपयोगी नहीं थे; लेकिन जो आवश्यक और उपयोगी हैं, और जो जीवन में हमारे लिए अत्यधिक सहायक हो सकते हैं, उन्हें उसने हमारी सेवा में ही छोड़ दिया।"[1466]

3. मानव मामलों के संबंध में पृथ्वी का शाप: *'तू पर पृथ्वी शापित है... वह तेरे लिये काँटे और झाड़ी उगाएगी'* (उत्पत्ति 2:17–18)। "और यह शाप न्यायसंगत है (जॉन क्रिसोस्टोम), क्योंकि जिस प्रकार मनुष्य के लिए पृथ्वी की सृष्टि इस प्रकार की गई थी कि वह उससे निकलने वाली सभी चीजों का आनंद ले सके, उसी प्रकार अब, पाप करने वाले मनुष्य के कारण, इसे एक शाप के अधीन कर दिया गया है, ताकि उसका शाप मनुष्य की भलाई और शांति को नुकसान पहुँचाने का काम करे।"[1467] क्रॉनिकल लेखक के शब्दों से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि यह शाप मुख्यतः पृथ्वी की उपज से संबंधित है: *यह तुम्हारे लिए काँटे और बिच्छू-बेल उगाएगी;* लेकिन प्रेरित ने अपने शाप को कहीं अधिक व्यापक कर दिया है: *सृष्टि अपनी इच्छा से व्यर्थता के अधीन नहीं की गई, बल्कि उस एक की इच्छा से की गई जिसने इसे अधीन किया; हम जानते हैं कि सारी सृष्टि आज भी एक साथ कराहती और पीड़ित है* (रोमियों 8:20–22)। हम सटीक रूप से यह निर्धारित नहीं कर सकते कि मानव के पतन के परिणामस्वरूप सृष्टि जिसे व्यर्थता के अधीन की गई, वह वास्तव में क्या है।[1468]

1463 *De civit. Dei* XIII, 15.

1464 *टैटियन,* *एड ग्रीक.* अध्याय 34; *टर्तुल्लियन,* *एडवर्सस मार्सियोनम* 11, 2; *हिलारी,* *कमेंटरी ऑन Psalm 68*; *सिरिफ़ जेरूसलम,* *कैटेकेटिकल ऑरेशन्स* II, 4, पृ. 28; *बेसिल द ग्रेट,* *डिस्कोर्स ऑन द फैक्ट दैट गॉड इज़ नॉट द ऑथर ऑफ इविल*, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स* में, VIII, 155.

1465 एक्सपोजिटियो इन साल्मोस III, ओपी. वॉल्यूम V, पृ. 3–4, एड. *मॉन्टफॉकॉन.*

1466 जेनेस. सेरम. III, संख्या 2 में। इसी प्रकार के विचार अन्य चर्च फादरों की रचनाओं में भी पाए जाते हैं: *थियोडोरेट,* में पास्. XV, 5; *ऑगस्टीन,* डी सिविटाटे देई XXII, 22, संख्या 3; *जॉन ऑफ़ डेमास्कस,* एक्सैक्ट एक्सपोज़िशन ऑफ़ द ऑर्थोडॉक्स फेथ, पुस्तक II, अध्याय 10, पृष्ठ 83।

1467 जीनेस. होमलि. XVII, n. 9.

1468 कुछ प्रारंभिक चर्च पिताओं के इस विषय पर अपने विशेष विचार थे। उदाहरण के लिए, टेटियन ने कुछ पौधों के विषैले स्वभाव को आदम के पतन के परिणामों में से एक माना (ad Graec. c. XII); एंटिओक के थियोफिलस — जंगली जानवरों की क्रूरता (ad Autol. 11, 17); ऑगस्टीन—

§91. मानव जाति में हमारे प्रथम माता-पिता के पाप का संचरण: प्रारंभिक टिप्पणियाँ

स्वर्ग में हमारे प्रथम माता-पिता द्वारा किया गया पाप, अपने सभी परिणामों सहित, उन से उनके सभी वंशजों तक पहुँचा, और चर्च की भाषा में इसे मूल पाप या प्रथम माता-पिता का पाप के रूप में जाना जाता है (ऑर्थोडॉक्स चर्च का धर्मोपदेश, भाग 1, प्रश्न 24 का उत्तर)।

1. आदि पाप का सिद्धांत, जो आदम और हव्वा से पूरे मानव जाति में फैल गया है, ईसाई धर्म में अत्यंत महत्व रखता है। यदि मनुष्यों में आदि पाप नहीं होता और उनकी प्रकृति भ्रष्ट नहीं होती, यदि वे परमेश्वर के सामने शुद्ध और निर्दोष पैदा होते, ठीक वैसे ही जैसे पहला मनुष्य सृष्टिकर्ता के हाथों से निकला था — तो उस स्थिति में, उनका उद्धार अनावश्यक होता; ईश्वर का पुत्र व्यर्थ में पृथ्वी पर आता और मृत्यु का स्वाद चखता, और ईसाई धर्म अपने ही बुनियादों से कमजोर हो जाता। इसीलिए धन्य ऑगस्टीन ने तर्क दिया कि आदम का पाप और उद्धारकर्ता मसीह द्वारा पूर्ण किया गया प्रायश्चित, एक तरह से, दो केंद्र बिंदु हैं जिनके चारों ओर संपूर्ण ईसाई धर्म घूमता है।[1469]

2. मूल पाप पर अपने शिक्षण में, ऑर्थोडॉक्स चर्च, सबसे पहले, स्वयं पाप को, और दूसरे, हमारे भीतर इसके परिणामों को अलग करती है। 'मूल पाप' शब्द से विशेष रूप से ईश्वर की आज्ञा के उस उल्लंघन, मानव स्वभाव के ईश्वर के कानून से—और परिणामस्वरूप अपने ही उद्देश्य से—उस विचलन का तात्पर्य है, जो हमारे प्रथम माता-पिता द्वारा स्वर्ग में किया गया था और जो उनसे हम सभी में संचारित हुआ है। 'मूल पाप,' हम पूर्वी कैथोलिक और प्रेरित चर्च के ऑर्थोडॉक्स धर्मोपदेश में पढ़ते हैं, 'स्वर्ग में हमारे पूर्वज आदम को दिए गए ईश्वर के कानून का उल्लंघन है। यह मूल पाप आदम से संपूर्ण मानव स्वभाव में चला गया, क्योंकि हम सभी तब आदम में थे; और इस प्रकार, एक आदम के माध्यम से, पाप हम सभी में फैल गया। इसलिए, हम इस पाप के साथ गर्भ में आते हैं और पैदा होते हैं" (भाग 3, प्रश्न 20 का उत्तर)। एकमात्र अंतर यह है कि आदम के मामले में ईश्वर के कानून और उसके उद्देश्य से यह विचलन स्वैच्छिक और स्वेच्छा से था, जबकि हम में यह आनुवंशिक और अपरिहार्य है—हम एक ऐसी प्रकृति के साथ पैदा होते हैं जो ईश्वर के कानून से भटक चुकी है; आदम में यह एक व्यक्तिगत पाप था, शब्द के सख्त मायने में एक पाप; हम में यह एक व्यक्तिगत पाप नहीं है, न ही यह वास्तविक पाप है, बल्कि केवल स्वभाव की पापी प्रवृत्ति है, जो हमें हमारे माता-पिता से प्राप्त होती है; आदम ने पाप किया, अर्थात् उसने स्वतंत्र रूप से परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया, और इस प्रकार वह एक पापी बन गया, अर्थात् उसने अपनी पूरी प्रकृति को परमेश्वर के कानून से हटा दिया—लेकिन हमने आदम के साथ व्यक्तिगत रूप से पाप नहीं किया, फिर भी हम उसमें और उसके द्वारा पापी बन गए (*एक मनुष्य की अवज्ञा से कई पापी बन गए,* रोम. 5:19), क्योंकि हमने उनसे एक पापी स्वभाव प्राप्त किया है, और हम *स्वभाव से क्रोध की संतान के रूप में* पैदा होते हैं (इफिसियों 2:3)। संक्षेप में, प्रथम माता-पिता में 'मूल पाप' शब्द का तात्पर्य उनके अपने पाप और उस स्वभाव की पापी अवस्था, दोनों से है, जिसके साथ और जिसमें हम पैदा होते हैं। यह वही समझ है जिसे ऑर्थोडॉक्स चर्च अपने धर्म-स्वीकार में सिखाती है, जब वह कहती है: 'चूंकि सभी लोग आदम में निर्दोषता की अवस्था में थे, जैसे ही उसने पाप किया, सभी ने उसमें पाप किया और *एक पापी अवस्था में* आ गए' (भाग 1, प्रश्न 24 का उत्तर)।

मूल पाप के परिणामों से, चर्च का तात्पर्य ठीक उन परिणामों से है जो पाप ने सीधे उनमें उत्पन्न किए, और जो उनसे हम तक पहुँचते हैं, अर्थात्: मन का अंधकार, इच्छाशक्ति का विक्षेप और उसका बुराई की ओर झुकाव, शारीरिक दुर्बलताएँ, मृत्यु और इसी तरह की अन्य बातें। "और पतन के भार और परिणाम से," पूर्वी पैट्रिआर्क अपने ऑर्थोडॉक्स विश्वास पर पत्र में कहते हैं, "हमारा तात्पर्य स्वयं पाप से नहीं है..., परन्तु पाप की ओर झुकाव, और वे विपत्तियाँ जिनसे दैवीय न्याय ने मनुष्य को उसकी अवज्ञा के लिए दंडित किया है, जैसे: थका देने वाले श्रम, दुख, शारीरिक दुर्बलताएँ, जन्म-संबंधी रोग, पृथ्वी पर एक यात्री के रूप में कुछ समय के लिए कठिन जीवन, और, अंत में, शारीरिक मृत्यु" (अनुच्छेद 6)। "यद्यपि मानवीय इच्छा, जैसा कि ऑर्थोडॉक्स कन्फेशन में भी कहा गया है, मूल पाप से दूषित है, फिर भी अब भी प्रत्येक मानव की इच्छा के अधिकार में है कि वह या तो ईश्वर की एक अच्छी संतान बने या एक दुष्ट और शैतान की संतान" (भाग 1, प्रश्न 27 का उत्तर); और यहाँ इच्छा का भ्रष्टाचार—अर्थात्, बुराई की ओर उसका झुकाव—मूल पाप से अलग किया गया है और हमारे भीतर उसके परिणाम के रूप में पहचाना गया है।

विकृतियों का अस्तित्व (contr. Julian, op. imperf. V, 8), स्पेन के इसिडोर—सूर्य और चंद्रमा की रोशनी का मद्धिम पड़ना (ord. creat. c. V), और इसी तरह।

[1469] एपिस्ट. CXC एड ऑप्टैट., अध्याय 1, 2, 3, पेट्रोलोजिया कर्सस कम्प्लेटस, खंड XXXIII, पृष्ठ 857–861।

मूल पाप और उसके परिणामों के बीच इस अंतर को, ऑर्थोडॉक्स चर्च की शिक्षा को सही ढंग से समझने के लिए, विशेष रूप से कुछ मामलों में, दृढ़ता से ध्यान में रखना चाहिए। उदाहरण के लिए, चर्च यह सिखाती है कि बपतिस्मा हमारे भीतर मूल पाप को मिटा देता है और नष्ट कर देता है: इसका अर्थ है कि यह हमारी प्रकृति के पाप को शुद्ध करता है, जो हमारे प्रथम माता-पिता से विरासत में मिला है; कि बपतिस्मा के द्वारा हम एक पापी अवस्था से बाहर निकलते हैं, स्वभाव से परमेश्वर के क्रोध के बच्चे होना बंद कर देते हैं—अर्थात्, परमेश्वर के सामने दोषी होना—और हमारे उद्धारकर्ता के पुण्यों के परिणामस्वरूप, पवित्र आत्मा की कृपा से, उनके सामने पूरी तरह से शुद्ध और निर्दोष बन जाते हैं; लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि बपतिस्मा हमारे भीतर आदि पाप के स्वयं परिणामों को समाप्त कर देता है: अच्छाई की तुलना में बुराई की ओर अधिक प्रवृत्ति, बीमारी, मृत्यु और ऐसी ही अन्य चीजें — क्योंकि ये सभी परिणाम बने रहते हैं, जैसा कि अनुभव और परमेश्वर का वचन (रोमियों 7:23) गवाही देते हैं, यहाँ तक कि उन लोगों में भी जो नए सिरे से जन्मे हैं।

3. हालाँकि, मूल पाप को कभी-कभी एक व्यापक अर्थ में समझा जाता है, उदाहरण के लिए, जब इस पाप की वास्तविकता और इसकी सार्वभौमिकता के सिद्धांत की व्याख्या की जाती है। और यह विशेष रूप से मूल पाप के नाम से ही है कि स्वयं पाप और हमारे भीतर इसके परिणाम दोनों को समझा जाता है: हमारी सभी शक्तियों का भ्रष्टाचार, अच्छाई की बजाय बुराई की ओर हमारा झुकाव, और इसी तरह।[1470] ऐसा इसलिए है क्योंकि, पवित्र धर्मग्रंथ में ही, मूल पाप और उसके परिणामों का सिद्धांत, अधिकांशतः अविभाज्य रूप से प्रस्तुत किया गया है; और, दूसरी ओर, क्योंकि जब मूल पाप की वास्तविकता, या उसकी सर्वव्यापकता, प्रदर्शित की जाती है, तो उसके परिणामों की वास्तविकता या सर्वव्यापकता भी उसी समय प्रदर्शित हो जाती है।

4. मूल पाप के संबंध में दो ज्ञात मिथ्या सिद्धांत हैं।

एक मत उन लोगों का है जो इस पाप की वास्तविकता को पूरी तरह से अस्वीकार करते हैं, यह दावा करते हुए कि सभी आदम की रचना की तरह शुद्ध और निर्दोष पैदा होते हैं, और बीमारी तथा मृत्यु मानव स्वभाव के स्वाभाविक परिणाम हैं, न कि मूल पाप के परिणाम—यह प्राचीन काल में पेलैजियनों द्वारा,[1471] और हाल के समय में सोसिनियनों तथा सामान्यतः तर्कवादियों द्वारा सिखाया गया था।[1472]

एक अन्य सिद्धांत सुधारकों का है, जो विपरीत चरम पर चले जाते हैं, और हम में मूल पाप के परिणामों को अत्यधिक बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत करते हैं: इस सिद्धांत के अनुसार, हमारे प्रथम माता-पिता के पाप ने मनुष्य में उसकी स्वतंत्रता, परमेश्वर के स्वरूप और सभी आध्यात्मिक शक्तियों को पूरी तरह से नष्ट कर दिया है, ताकि मानव स्वभाव स्वयं ही पाप बन गया है; जो कुछ भी कोई व्यक्ति चाहता है या करता है वह पाप है; यहाँ तक कि उसके गुण भी पाप हैं; और वह किसी भी अच्छे काम के लिए पूरी तरह से अक्षम है।[1473] ऑर्थोडॉक्स चर्च इन झूठे विचारों में से पहले को हमारे भीतर मूल पाप की वास्तविकता पर अपनी शिक्षा के माध्यम से खारिज करती है, जिसके सभी परिणामों सहित (यानी मूल पाप को व्यापक अर्थ में समझा गया); यह बाद वाले को परिणामों पर अपनी शिक्षा के माध्यम से खारिज करती है।

§92. मूल पाप की वास्तविकता, इसकी सार्वभौमिकता और इसके संचरण का तरीका

ऑर्थोडॉक्स चर्च यह सिखाती है कि प्रथम माता-पिता का पाप, अपने परिणामों के साथ, आदम और हव्वा से उनके सभी वंशजों तक प्राकृतिक जन्म के माध्यम से पहुँचा है, और परिणामस्वरूप, यह निस्संदेह मौजूद है।

1). इस सिद्धांत का पवित्र शास्त्र में दृढ़ आधार है। शास्त्र के प्रासंगिक अंशों को दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है: कुछ मुख्य रूप से मानवों में मूल पाप की वास्तविकता और सार्वभौमिकता की अवधारणा व्यक्त करते हैं; जबकि अन्य मुख्य रूप से इसकी वास्तविकता और इसके संचरण के तरीके की अवधारणा व्यक्त करते हैं।

[1470] देखें *थ. प्रोकोपोविच,* *क्रिस्ट. ऑर्थोडॉक्स. थियोलॉग.*, खंड II, पृ. 483; तुलना करें पृ. 458, लाइपज़िग, 1782.

[1471] *ऑगस्टीन* में, *Gesta Pelag.*, अध्याय XI; *Contr. Julian*, *op. imperf.* II, 64; *De natur. et grat.*, अध्याय XIX, n. 21.

[1472] रेकोव का धर्मोपदेश, प्रश्न 423; *क्लेरिकस,* चर्च का इतिहास, एड एन. 180, §§ 30, 34.

[1473] *ऑगस्टीन,* *कन्फेशन्स*, अध्याय XVIII; सॉलिडिस, *फ्री विल* पर *घोषणा* 1, क्रमांक 1, 2, 3; *कैल्विन,* *इंस्टिट्यूट्स*, 11, 1, क्रमांक 8, 9; 2, क्रमांक 1; *लूथर,* *ऑन द सर्वाइड ऑफ द विल* (एरास्मस के जवाब में), फोलियो 178, खंड III, जेना संस्करण; *मेलान्खथन,* पाप के कृत्य और पापों के भेद पर सामान्य टिप्पणी।

पहली श्रेणी से:

1.1. सबसे महत्वपूर्ण और स्पष्ट अंश संत पौलुस के रोमियों के नाम पत्र के पांचवें अध्याय में पाया जाता है। यहाँ मानव जाति के संबंध में आदम और प्रभु यीशु मसीह के बीच तुलना करते हुए, प्रेरित अन्य बातों के अलावा लिखते हैं: *'जिस प्रकार एक मनुष्य के द्वारा पाप और एक के द्वारा मृत्यु संसार में प्रवेश किया, उसी प्रकार मसीह यीशु के द्वारा भी अनुग्रह और एक मनुष्य के अनुग्रह-दान में बहुतायत हुई* (12)। *क्योंकि यदि एक के अपराध के कारण बहुतेरे मर गए, तो एक मनुष्य यीशु मसीह के अनुग्रह और अनुग्रह के वरदान के द्वारा बहुतेरों पर कितनी अधिक कृपा हुई* (15)। *क्योंकि यदि एक के अपराध के कारण मृत्यु उसी एक के द्वारा राज्य करती है, तो जो लोग अनुग्रह और धार्मिकता का वरदान उस एक मनुष्य, यीशु मसीह के द्वारा प्राप्त करते हैं, वे जीवन में कितने ही अधिक राज्य करेंगे। इसलिए, जैसे एक के अपराध के कारण सब लोग दोषी ठहराए गए, वैसे ही एक के धार्मिक होने के कारण सब लोग जीवन के लिए धर्मी ठहराए गए। क्योंकि जैसे एक मनुष्य की अवज्ञा के कारण बहुत से लोग पापी बन गए, वैसे ही एक की आज्ञाकारिता के कारण बहुत से लोग धर्मी बन गए* (17–19)।

इन शब्दों से यह स्पष्ट है:

(क) कि पाप एक मनुष्य के द्वारा, अर्थात् आदम के द्वारा, संसार में प्रवेश किया, और पाप के द्वारा मृत्यु भी परिणामस्वरूप आई: *एक* (δι' ἑνός) *मनुष्य के द्वारा पाप संसार में प्रवेश किया, और पाप* (διά τῆς ἁμαρτίας) *के द्वारा मृत्यु;*

ख) कि मृत्यु सभी लोगों पर ठीक उसी एक के पाप के कारण आई, न कि उनके अपने पापों के कारण: *इस प्रकार* (οὕτως) *मृत्यु सभी मनुष्यों पर छा गई; क्योंकि उनमें सभी ने पाप* किया है...; *एक के उल्लंघन के कारण, बहुत से लोग मृत्यु के अधीन हो* गए... *एक के उल्लंघन के कारण, मृत्यु एक के द्वारा* (διά τοῦ ἑνός) *राज करती रही;*

ग) कि, मृत्यु—जो पाप का परिणाम है—के साथ ही एक मनुष्य के पाप ने भी सभी मानवजाति में प्रवेश किया, और यह ठीक इसी पाप के कारण था, उनके अपने पापों से पहले, *कि* लोग पापी बन गए: *उसमें सभी ने पाप किया है; एक मनुष्य की अवज्ञा* (διά τῆς παρακοῆς) *के द्वारा, कई पापी बन गए* (κατεστάθησαν — बन गए, बनाए गए);

घ) अंत में, कि यह ठीक एक के पाप के कारण ही था कि पाप का एक और परिणाम—दंड—सम्पूर्ण मानव जाति में प्रवेश कर गया, इससे पहले कि उन्होंने स्वयं पाप करना शुरू किया: *एक के उल्लंघन* (δι' ἑνός) के द्वारा, *दंड सभी मनुष्यों पर आ पड़ा*। तदनुसार, जो लोग प्रथम माता-पिता से संपूर्ण मानव जाति तक मूल पाप के संचरण को अस्वीकार करते हैं, वे यह दावा करने में गलत हैं कि विचाराधीन प्रेरित के शब्द ऐसा अर्थ व्यक्त करते हैं। 'आदम ने पहले पाप किया और इसलिए मरा; अन्य सभी लोग उसके उदाहरण का अनुसरण करके पाप करते हैं, और इसलिए अपने ही पापों के परिणामस्वरूप मरते हैं — और, परिणामस्वरूप, आदम का पाप केवल अनुकरण के माध्यम से ही संसार में प्रवेश किया, और जन्म के माध्यम से लोगों को नहीं दिया जाता है।' हमारे द्वारा प्रस्तुत अवलोकनों के अलावा, जो स्पष्ट रूप से ऐसी व्याख्या को खंडन करते हैं, हम कुछ और प्रस्तुत करेंगे:

(क) जैसे कि इस व्याख्या से बचने के लिए, प्रेरित ने रोमियों के नाम पत्र के उसी अध्याय में जानबूझकर कहा: *'आदम से लेकर मूसा तक मृत्यु का राज्य था, यहाँ तक कि उन लोगों पर भी जिन्होंने आदम के उल्लंघन के तरीके से पाप नहीं किया था* (14);

ख) प्रेरित के अनुसार, पाप के द्वारा *मृत्यु सभी मनुष्यों पर आई*, और वास्तव में सभी लोग मरते हैं, यहाँ तक कि शिशु भी; लेकिन शिशुओं के अपने कोई पाप नहीं होते हैं, और वे आदम के उदाहरण का अनुसरण करके पाप नहीं कर सकते;

ग) "यदि प्रेरित (सेंट ऑगस्टीन) का इरादा अनुकरण के पाप के बारे में बात करने का होता, तो वह उद्धारकर्ता (यूहन्ना 8:41–44) का अनुसरण करते हुए यह कहते कि पाप एक स्वर्गदूत के माध्यम से दुनिया में प्रवेश किया, क्योंकि स्वर्गदूत ने पहले पाप किया था";[1474]

d) "कई लोग अपने कर्मों द्वारा ही पाप करते हैं, आदम के पाप के बारे में बिल्कुल भी सोचे बिना: तो फिर आदम का पाप अपने उदाहरण से उन्हें कैसे हानि पहुँचाता है?";[1475]

[1474] *ऑगस्टीन,* *पापों के प्रतिफल और क्षमा पर*, 1, अध्याय 9.

[1475] *ऑगस्टाइन,* *जूलियन के विरुद्ध*, VI, अध्याय 12.

(d) प्रेरित कहते हैं कि एक मनुष्य, अर्थात् प्रथम मनुष्य, के द्वारा *पाप संसार में प्रवेश किया* (εἰσήλθεν), जिसका अर्थ है कि यह पाप अपने स्रोत तक सीमित नहीं रहा, बल्कि फैलकर सभी मनुष्यों तक पहुँच गया, इस प्रकार प्रथम पापी ने ऐसे पापियों को जन्म दिया जो मृत्यु के अधीन थे।[1476] विचाराधीन अंश में निहित वही विचार प्रेरित के शब्दों में *भी* निहित है: *जैसे आदम में* (ἐν τῷ Ἀδάμ) *सभी मरते हैं, वैसे ही मसीह में सभी जीवित किए जाएंगे* (1 कुरिन्थियों 15:22)। यदि सभी लोग आदम में मरते हैं, तो इसका अर्थ है कि वे उसी मृत्यु को भोगते हैं जो पाप के परिणामस्वरूप हुई थी।

1.2. एक और, कम स्पष्ट अंश यशायाह की पुस्तक में मिलता है। मानव जीवन की दुर्भाग्यपूर्ण परिस्थितियों का वर्णन करते हुए, वह पवित्र पुरुष अन्य बातों के अलावा कहते हैं: *'अशुद्ध से शुद्ध कौन जन्म लेता है? कोई नहीं, यदि उसके दिन गिने हुए हैं* (यशायाह 14:4–5)। यहाँ, स्पष्ट रूप से, चर्चा किसी प्रकार की अशुद्धता से संबंधित है जिससे कोई भी मानव मुक्त नहीं है, और वास्तव में जन्म के क्षण से ही। तो, यह अशुद्धता क्या है? चूंकि, योब के अनुसार, यह मानव जीवन की दुर्भाग्यपूर्ण परिस्थितियों का कारण है (पद 1-2) और एक व्यक्ति को परमेश्वर के न्याय के अधीन कर देता है (पद 3), हमें यह मानना चाहिए कि यहाँ का तात्पर्य शारीरिक अशुद्धि से नहीं, बल्कि नैतिक अशुद्धि से है—क्योंकि बाद वाली केवल पहली की एक परिणति है और अपने आप में किसी व्यक्ति को परमेश्वर के सामने उत्तरदायी नहीं ठहरा सकती— — अर्थात्, हमारी प्रकृति का पापीपन, जो हमारे प्रथम माता-पिता से सभी में संचारित होता है।

दूसरे प्रकार के अंशों में शामिल हैं:

1. निकोदेमस के साथ उद्धारकर्ता का संवाद: *'मैं तुझ से सच कहता हूँ, जब तक कोई ऊपर से न जन्मे, तब तक परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता... जो देह से जन्मा है, वह देह है, और जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है'* (यूहन्ना 3:5-6)। इन शब्दों का अर्थ यह है कि प्राकृतिक रूप से जन्मा कोई भी व्यक्ति—चाहे वह यहूदी हो या अन्यजाति—किसी भी प्रकार से परमेश्वर के राज्य, अनुग्रह के राज्य और बाद में महिमा के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता, जब तक कि वह बपतिस्मा के संस्कार के द्वारा ऊपर से नया जन्म न ले। इसका अर्थ है कि—

(क) सभी लोग, अपनी प्रकृति के अनुसार, अब एक निश्चित अशुद्धता, अर्थात् नैतिक अशुद्धता, के अधीन हैं, क्योंकि यह मसीह के नैतिक राज्य में उनके प्रवेश के लिए एक बाधा के रूप में कार्य करती है; और —

ख) यह अशुद्धता उनके प्राकृतिक जन्म के माध्यम से सभी लोगों तक फैली हुई है। इस अंश की व्याख्या करने के लिए, हम प्रेरित के शब्दों को याद कर सकते हैं कि हम *स्वभाव से परमेश्वर के क्रोध के बच्चे थे* (इफिसियों 2:3)।

2. भजन रचयिता के प्रायश्चित्त के भजन में वचन: *'देख, मैं अधर्म में गर्भ में लिया गया, और मेरी माता ने मुझे पाप में जन्म दिया* (भजन संहिता 50:7)। यहाँ, राजा-भविष्यवक्ता की ओर से किसी व्यक्तिगत पाप का कोई अनुमान नहीं लगाया जा सकता, क्योंकि, जैसा कि वह कहते हैं, 'मैं इसी पाप में गर्भ में लिया गया और जन्म लिया'; इसलिए, यह पाप उसमें उस समय से ही अंतर्निहित था जब उसने अभी तक कोई व्यक्तिगत गतिविधि नहीं की थी। न ही इसे दाऊद के माता-पिता के पाप के रूप में समझा जा सकता है, जैसे कि वह अवैध रूप से गर्भ में आया हो—यह ज्ञात है कि दाऊद किसी अपराध का फल नहीं था, कि यहोया, उसके पिता, ने एक धर्मी व्यक्ति का जीवन जिया, और कि उसकी माँ यहोया की वैध पत्नी थी। इसलिए, 'अधर्म' शब्द, जिसमें दाऊद का जन्म हुआ था, का अर्थ कुछ और ही समझना चाहिए—वह पाप जो आदम की पहली अवज्ञा से उत्पन्न हुआ, और जो उससे उसके सभी वंशजों तक पहुँचता है। गर्भाधान और जन्म का प्राकृतिक नियम सभी लोगों के लिए समान है; परिणामस्वरूप, यह निर्दिष्ट करना असंभव है कि केवल इस्राएल का राजा ही मूल पाप में गर्भ में आया और पैदा हुआ, जबकि अन्य सभी लोग इससे मुक्त रहे।

2). पवित्र शास्त्र में इतनी दृढ़ नींव होने के कारण, मूल पाप का सिद्धांत पवित्र परंपरा में भी उतनी ही दृढ़ नींव पर आधारित है।

इस परंपरा के लिए प्रमाण इस प्रकार हैं:

2.1. चर्च की शिशुओं का बपतिस्मा देने की प्रथा, जो प्रेरितों के समय से ही उसमें विद्यमान है, जैसा कि प्राचीन शिक्षकों: आइरेनियस, ओरिजिन, साइप्रियन और कई अन्य लोगों द्वारा प्रमाणित है।[1477] और उसने

[1476] *ऑगस्टीन,* प्रेरितों के वचन पर उपदेश CLIII, रोमियों VII, 5–13, अध्याय XI, पेट्रोलॉजिया कर्सस कम्प्लेटस, खंड XXXVIII, पृ. 832.

[1477] *इरनेयस,* विरोधी धर्म 11, 22, और 39, संख्या 4; *ओरिजिन,* रोमियों को पत्र की पुस्तक V, अध्याय VI, संख्या 9; लेवियों पर व्याख्यान VIII, संख्या 3; *साइप्रियन,* धर्मत्याग पर फिडिस को पत्र LIX, पृष्ठ 98, संपादक मॉर.; *एम्ब्रोसियस,* *डे अब्राहम* II, संख्या 81; *ऑगस्टीन,* *Sermon* CXV, संख्या 10; *कॉन्ट्रा डोनाटिस्टास* IV, 23, संख्या 30.

हमेशा इस बपतस्मिा को, उन्हीं शक्षिकों और अपने धर्मवशि्वासों की गवाही के अनुसार, *पापों की क्षमा के लिए* कयिा है। लेकनि कौन से पाप, जब शशिु अभी तक अपनी इच्छा से पाप करने में सक्षम नहीं होते? ओरजिन कहते हैं: 'शशिुओं का बपतस्मिा पापों की क्षमा के लिए दयिा जाता है। तो फरि कौन से पाप? या उन्होंने कब पाप कयिा? और यदि उस अर्थ में नहीं, जैसा हमने अभी उल्लेख कयिा है, तो उनके लिए बपतस्मिा का कुंड कैसे आवश्यक हो सकता है: *यदि उनके पृथ्वी पर जीवन का एक भी दनि शेष रहता है, तो कोई भी कलंक से मुक्त नहीं होगा?* और चूँकि जन्म के दोष इस बपतस्मिा संस्कार के द्वारा शुद्ध कए जाते हैं, इसलिए शशिुओं का भी बपतस्मिा कयिा जाता है।"[1478] यही कारण है कि धन्य ऑगस्टीन ने पेलैजयिनों के सामने शशिुओं के बपतस्मिा की ओर साहसपूर्वक इस वचिार की पुष्टि के लिए इशारा कयिा कि चर्च ने हमेशा से ही मनुष्यों में आदि पाप की वास्तवकिता को स्वीकार कयिा है।[1479] यह भी जोड़ा जाना चाहिए कि, शशिुओं के बपतस्मिा में, ठीक वैसे ही जैसे वयस्कों के बपतस्मिा में, चर्च ने अनादि काल से मंत्रों का उपयोग कयिा है ताकि नव-बपतस्मिति व्यक्ति से "हर बुराई और अशुद्ध आत्मा, जो उसके हृदय में छपिी और वास करती है" को भगाया जा सके।[1480] तो ये मंत्र क्या अर्थ रखते यदि चर्च शशिुओं को शुद्ध और मूल पाप में अप्रभावति मानती? इसके अलावा, पेलैजयिनों ने स्वयं इन मंत्रों की प्राचीनता को नकारा नहीं था।[1481]

2.2. पेलगयिन वधिर्म के जवाब में पाँचवीं शताब्दी में आयोजति परषिदें। यह ज्ञात है कि 412 से 431 तक, ईसाई जगत के वभिन्नि हस्सिों में—पूर्व में और वशिेष रूप से पश्चमि में—बीस से अधकि परषिदें हुईं जन्हिोंने इस वधिर्म की जाँच की, और सभी ने सर्वसम्मति से इसकी नदिा की।[1482] तब, पेलगयिन वधिर्म के वरिुद्ध ऐसी सर्वसम्मत नदिा की व्याख्या कैसे की जा सकती है, यदि आदि-पाप का सद्धिांत प्रेरतिों के समय से ही मसीह की कलीसयिा में व्यापक और गहराई से स्थापति नहीं था? इन सभी परषिदों के पेलगयिनों के वरिुद्ध नर्णियों का उद्धरण करना अनावश्यक होगा; केवल सबसे महत्वपूर्ण, कार्थेज परषिद (418) के शब्दों का उद्धरण पर्याप्त है, जसिे ऑर्थोडॉक्स चर्च नौ सार्वभौमकि परषिदों में से एक के रूप में मान्यता देती है।

'जो कोई भी शशिुओं और गर्भ से नवजात बच्चों का बपतस्मिा देना आवश्यक नहीं मानता, या कहता है कि यद्यपि उन्हें पापों की क्षमा के लिए बपतस्मिा दयिा जाता है, फरि भी वे आदम के मूल पाप से कुछ भी वरिासत में नहीं पाते हैं जसिे पुनर्जन्म के स्नान से धोया जाना चाहिए (जसिसे यह नष्किर्ष नकिलता है कि पापों की क्षमा के लिए बपतस्मिा का संस्कार उन पर अपने वास्तवकि अर्थ में नहीं, बल्कि एक झूठे अर्थ में लागू होता है), तो वह अनाथेमा हो। क्योंकि प्रेरति के वचन: 'जसि प्रकार एक मनुष्य के द्वारा पाप संसार में प्रवेश कयिा, और पाप के द्वारा मृत्यु, उसी प्रकार मृत्यु सब मनुष्यों पर छा गई, क्योंकि सब ने उसी में पाप कयिा' (रोमयिों 5:12), को उसी प्रकार समझा जाना चाहिए जैसे सर्वत्र फैली कैथोलकि कलीसयिा ने हमेशा उन्हें समझा है। क्योंकि वशि्वास के इस नयिम के अनुसार, शशिुओं को भी, जो अपनी इच्छा से कोई पाप करने में असमर्थ होते हैं, वास्तव में पापों की क्षमा के लिए बपतस्मिा दयिा जाता है, ताकि पुनर्जन्म के माध्यम से उनमें वह शुद्ध हो जाए जो उन्हें उनके पूर्व जन्म से वरिासत में मलिा है।"

2.3. पेलगयिन वधिर्म के उदय से पहले रहे चर्च के व्यक्तगित शक्षिकों के कथन, जैसे:

(क) *जस्टनि*: "मसीह ने जन्म लेने और मृत्यु का स्वाद चखने का चुनाव इसलिए नहीं कयिा क्योंकि उसे स्वयं इसकी कोई आवश्यकता थी, बल्कि मानव जाति के लिए कयिा, जो आदम (ἀπό τοϋ Ἀδαμ) के माध्यम से मृत्यु और सर्प के प्रलोभन के अधीन हो गई थी";[1483]

ख) *आइरेनयिस*: "पहले आदम में हमने परमेश्वर की आज्ञा का पालन न करके उससे अपराध कयिा; दूसरे आदम में हम मृत्यु तक आज्ञाकारी होकर उससे मेल-मलिाप कर गए; हम कसिी और के ऋणी नहीं थे, सवािय उसी के जसिकी आज्ञा हमने आरंभ से तोड़ी थी";[1484]

[1478] लूका पर होमीली XIV।

[1479] पाप, योग्यता और क्षमा पर, पुस्तक III, n. 9, 5, n. 10.

[1480] और धन्य ऑगस्टीन ने इसे पेलैजयिनों के वरिुद्ध इंगति कयिा। *Contr. Julian.* II, पृ. 2.

[1481] जैसा कि धन्य जेरोम द्वारा प्रमाणति है। *Dialog.* III, n. 17, *Opp.* Vol. II, p. 788, ed. Vallars.

[1482] इन सभी परषिदों की कार्यवाही *Collect. Concil.* खंड I, सं. Harduin में प्रकाशति है।

[1483] डायलॉग. कुम ट्रायफोन, संख्या 88.

[1484] Contr. haeres. V, 16. अन्य अंश: 'धर्मशास्त्र कहता है कि मनुष्य सांप द्वारा लगाई गई प्राचीन चोट से केवल तभी चंगा होता है जब वह उस पर वशि्वास करता है जो… सभी चीजों को अपनी ओर खींचता है और मृतकों को जीवन देता है' (Contr. haeres. IV, 5), 'जसि प्रकार वृक्ष के द्वारा हम परमेश्वर के ऋणी बने, उसी प्रकार वृक्ष के द्वारा हमें हमारे ऋण की क्षमा प्राप्त होती है' (V, 17).

ग) *टर्तुल्लियन:* "मनुष्य को शुरू से ही शैतान ने धोखा देकर ईश्वर की आज्ञा तोड़ने के लिए प्रेरित किया, और इसलिए उसे मृत्युदंड दिया गया; परिणामस्वरूप, उसकी संतान से उत्पन्न संपूर्ण मानव जाति, उसकी नदिा में शामिल (traducem) हो गई";[1485]

(d) *साइप्रियन:* 'यदि महान पापी भी, जिन्होंने पहले ईश्वर के विरुद्ध बड़े पाप किए हैं, जब वे विश्वास में आते हैं तो उन्हें पापों की क्षमा दी जाती है, और किसी को भी बपतिस्मा और अनुग्रह से वंचित नहीं किया जाता, इस शिशु को तो और भी अधिक इस (बपतिस्मा) से वंचित नहीं किया जाना चाहिए, जिसने मुश्किल से जन्म लिया है और जिसने किसी भी तरह से पाप नहीं किया है, सिवाय इसके कि आदम के शरीर से उत्पन्न होने के कारण, उसने स्वयं जन्म के माध्यम से प्राचीन मृत्यु के संक्रामण को ग्रहण कर लिया है, और जो पापों की क्षमा प्राप्त करने के लिए और भी अधिक योग्य है, क्योंकि उसे अपने नहीं बल्कि दूसरों के पापों के लिए क्षमा दी जा रही है;[1486]

घ) *हिलरी:* 'एक आदम की भूल के कारण, संपूर्ण मानव जाति भटक गई... एक से, मृत्यु का दंड और जीवन की कठिनाई सभी तक फैल गई';[1487]

f) *बेसिल द ग्रेट:* "भोजन के उपहार से मूल पाप को मोचन दें—क्योंकि जैसे आदम ने अपनी दुर्भाग्यपूर्ण भोजन क्रिया से हम तक पाप पहुँचाया, वैसे ही हम इस हानिकारक भोजन क्रिया को मिटा देंगे यदि हम अपने भाई की आवश्यकता और भूख को पूरा करें";[1488]

ग) *ग्रेगरी द थियोलोजियन:* "यह नव-प्रतिरोपित पाप पहले माता-पिता से दुखी लोगों तक पहुँचा... हम सभी उसी आदम में सहभागी थे, साँप द्वारा धोखा खाए, पाप से मारे गए, और स्वर्गीय आदम द्वारा बचाए गए";[1489]

h) *एम्ब्रोज़:* "हम सभी ने प्रथम मानव में पाप किया है, और प्रकृति की उत्तराधिकारिता के माध्यम से, पाप का उत्तराधिकार एक से सभी में फैल गया है...; इस प्रकार आदम हम में से प्रत्येक में है: उसमें मानव स्वभाव ने पाप किया, क्योंकि एक मनुष्य के द्वारा पाप सभी में प्रवेश कर गया।"[1490] i) *जॉन क्रिसिस्टम:* "मृत्यु कैसे प्रवेश हुई और राज करने लगी? एक के पाप के द्वारा: क्योंकि 'उसमें सभी ने पाप किया' का और क्या अर्थ है? आदम के पतन के बाद, वे भी जो वृक्ष का फल नहीं खाए, वे भी उस समय से सभी नश्वर हो गए... इस पाप ने सार्वभौमिक मृत्यु को जन्म दिया।"[1491]

हम उसी काल में रहे चर्च के कई अन्य शिक्षकों के समान कथनों का हवाला नहीं देते हैं;[1492] और जिनका हवाला दिया गया है, वे प्राचीन और आधुनिक, दोनों तरह के पेलगियनों की उस पूर्ण मूर्खता को देखने के लिए काफी हैं, जो यह दावा करते हैं कि ऑगस्टीन ने मूल पाप के सिद्धांत का आविष्कार किया था, और, दूसरी ओर, धन्य के शब्दों की पूर्ण सच्चाई को पहचानने के लिए पेलगियनों में से एक को संबोधित करते हुए ऑगस्टीन ने कहा: 'मूल पाप का आविष्कार मैंने

[1485] De testim. animae, अध्याय III। अन्यत्र: "हर आत्मा आदम की मानी जाती है जब तक कि उसे मसीह की न माना जाए; जब तक वह ऐसी मानी जाती है, तब तक वह अशुद्ध रहती है, और पापी है क्योंकि वह अशुद्ध है" (De anim., अध्याय 40)। आत्मा का दुराचार, दुष्ट आत्मा के प्रभाव से उत्पन्न होने वाले दोष के अलावा, एक प्रकार से *आरम्भ से ही एक* स्वाभाविक *दोष* से पूर्व निर्धारित होता है (उसी में, अध्याय 16)।

[1486] फिडिस को पत्र LIX, *पैट्रोलॉजिया कर्सस कम्प्लेटस*, खंड III, पृ. 1013 में।

[1487] मत्ती, अध्याय XVIII, टिप्पणी 16; भजन संहिता LIX, टिप्पणी 4। अन्यत्र: 'क्योंकि सारी देह पाप की है, अर्थात् पाप के द्वारा पिता आदम से उत्पन्न हुई है; मसीह को देह के पाप के सदृश भेजा गया था, उसमें पाप में नहीं, बल्कि देह के पाप के सदृश अस्तित्व में था' (ओपेर. इंकर्टि फ्रैग्म. VIII)।

[1488] अकाल और सूखे के दौरान एक प्रवचन, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, VIII, 137–138 में।

[1489] संस्कारों पर भजन, पुस्तक VII, *पवित्र पिताओं के कार्य*, IV, 245; एरियिनवादियों के विरुद्ध प्रवचन, वही, III, 173–174।

[1490] एपोल. डेवडि. II, अध्याय 12, संख्या 71; तुलना करें एपोल. डेवडि. टी, अध्याय II, संख्या 56; एपिस्ट. LXXIII, संख्या 8; डी मिस्ट. अध्याय VI, संख्या 32; एपिस्ट. डी फडि एड हायर (इन *मेज.* VII, 1, पृ. 159). बाद वाले अंश में, यह विचार विशेष रूप से स्पष्ट रूप से व्यक्त किया गया है: 'सभी नश्वर प्राणियों की मृत्यु का कारण, जैसा कि उनके प्रथम माता-पिता द्वारा निर्धारित किया गया था, यह था कि, *मूल पाप के* उनके वंशजों तक पहुँचने के कारण, कोई भी शापित होने की सजा से नहीं बच पाता, जब तक कि विचन देहधारी न हो और हमारे बीच न वास करे।'

[1491] रोमियों के नाम पत्र पर होमीली X, अध्याय 5। तुलना करें: यशायाह पर होमीली VII, संख्या 7।

[1492] *क्लेम. एलेक्स.* स्ट्रॉम. III, 16; *ओरिजिन.* होमलि. VIII ऑन जेरेम., n. 1; होमलि. VIII ऑन द सॉन्ग ऑफ सॉन्ग्स, n. 6; होमलि. VIII ऑन लेव., n. 3; *अथेनासियस,* ओरेशन 1 अगेंस्ट द एरियिन्स, nn. 51, 61; *ग्रेगरी ऑफ़ निसा,* *ऑन व्हाट इट मीन्स टू बी इन द इमेज एंड लाइकेनस ऑफ़ गॉड*, खंड II, पृ. 29, सं. मोरेल.; *ट्रीटीज़ ऑन द सॉग्स*, II, अध्याय 13; मकारियस, *ऑन द फ्रीडम ऑफ़ द माइंड*, खंड II; *ऑन द नेचर एंड डिस्क्रिनमेंट*, अध्याय IX; *होमलीज*, V, 1, 2, 3; *अलेक्जेंड्रिया के डिडिमिस,* 1 यूहन्ना 5:19 पर भाष्य; *सिरिल,* देहधारण पर, अध्याय 12, *मेज.* VIII, II, पृ. 72; *थियोडोरेट,* भजन संहिता 50:7 पर भाष्य.

नहीं कयिा है, जसि पर कैथोलकि धर्म का अनादकिाल से वशि्वास रहा है; बल्कआिप, जो इस सद्धिांत को अस्वीकार करते हैं, नसि्संदेह एक नए वधिर्मी हैं।'[1493]

3). अंत में, हम सुदृढ़ तर्क और नरि्वविाद अनुभव के आधार पर, हमारे प्रथम माता-पतिा से हम सभी में वरिासत में मलिी आदि-पाप की वास्तवकिता से आश्वस्त हो सकते हैं।

3.1. जो कोई भी पूर्ण ध्यान से अपने भीतर झाँकता है और अपनी आत्मा में गहराई तक उतरता है, वह पवत्रि प्रेरति पौलुस के साथ यह कहे बनिा नहीं रह सकता: *'मैं जानता हूँ कमिुझ में, अर्थात् मेरे शरीर में, कोई भलाई वास नहीं करती, क्योंकभिलाई करने की इच्छा तो मुझ में है, परन्तु उसे करने की शक्तमिुझे नहीं मलिती। जो भलाई मैं करना चाहता हूँ, वह मैं नहीं करता; परन्तु जो बुराई मैं नहीं करना चाहता, वही मैं करता हूँ। अब यदमिैं वह करता हूँ जो मैं नहीं करना चाहता, तो अब मैं ही नहीं हूँ जो यह करता है, बल्कपिाप जो मुझ में बसता है। इसलिए मैं इस व्यवस्था को कार्य करते हुए पाता हूँ: कजिब मैं भलाई करना चाहता हूँ, तो बुराई मेरे साथ मौजूद है। क्योंकमिैं अपने भीतरी मनुष्य में परमेश्वर की व्यवस्था में आनंदति होता हूँ; परन्तु मैं अपने अंगों में एक दूसरी व्यवस्था देखता हूँ, जो मेरे मन की व्यवस्था से लड़ती है और मुझे मेरे अंगों में कार्य करने वाली पाप की व्यवस्था का कैदी बना देती है* (रोमयिों 7:18-23)। वशिेष रूप से, जो कोई भी स्वयं और अपने पड़ोसयिों का बारीकी से अवलोकन करता है, वह नम्निलखिति सच्चाइयों को स्वीकार कए बनिा नहीं रह सकता:

(क) हमारे भीतर आत्मा और शरीर, तर्क और वासनाओं, अच्छाई की इच्छा और बुराई की प्रवृत्तकि बीच एक नरिंतर संघर्ष चलता रहता है;

ख) इस संघर्ष में, जीत लगभग हमेशा बाद वालों की होती है: हमारे भीतर आत्मा पर शरीर हावी हो जाता है, वासनाएँ तर्क पर शासन करती हैं, और बुराई की ओर झुकाव अच्छाई की इच्छा पर काबू पा लेते हैं; हम स्वभाव से ही भलाई से प्रेम करते हैं, हम इसकी इच्छा करते हैं, हम इसमें आनंद लेते हैं — फरि भी हम भलाई करने के लए अपने भीतर शक्तनिहीं पाते; हम स्वभाव से बुराई से प्रेम नहीं करते, और फरि भी हम अनविार्य रूप से इसकी ओर आकर्षति हो जाते हैं;

(ग) जो कुछ भी अच्छा और पवत्रि है, उसकी आदत हम बहुत प्रयास और बहुत धीरे-धीरे प्राप्त करते हैं; जबकबिुराई की आदत बनिा कसिी प्रयास के और बहुत जल्दी पड़ जाती है — और इसके वपिरीत —

d) हमारे लए कसिी भी बुराई की आदत को तोड़ना या अपने भीतर के कसिी भी जुनून पर काबू पाना, भले ही वह सबसे तुच्छ क्यों न हो, अत्यंत कठनि है; जबकहिमने कई कठनि प्रयासों से अर्जति की गई कसिी सद्गुण को कमजोर करने के लए बस कसिी तुच्छ प्रलोभन का ही पर्याप्त है। मानव जातमिें अच्छाई पर बुराई के इसी वर्चस्व को, जसिे हम अब देखते हैं, युगों-युगों से अन्य लोगों ने भी नोट कयिा है। मूसा बाढ़ से पहले के लोगों के बारे में लखिते हैं: *'उनके हृदय के वचिारों का हर एक अभप्रिाय नरि्न्तर बुरा ही था* (उत्पत्ति 6:5), और बाद में बाढ़ के बाद के लोगों के बारे में: *'मानुषी हृदय का झुकाव जवानी से ही बुरा है'* (उत्पत्ति 8:21)। दाऊद गवाही देते हैं कि *सब भटक गए हैं, समान रूप से भ्रष्ट हो गए हैं; कोई भी भला नहीं करता, एक भी नहीं* (भजन संहति 13:3; तुलना करें 25:4)। सुलैमान कहते हैं कि *'पृथ्वी पर ऐसा कोई भी धर्मी मनुष्य नहीं है जो भलाई करता हो और पाप न करता हो'* (उपदेशक 7:20); कि धर्मी लोग भी दनि में *सात बार* गरिते हैं (नीतवचिन 24:16)। नबयिों की रचनाएँ आम तौर पर अपने समकालीनों के अधर्म के खलिाफ शकिायतों और फटकारों से भरी हैं। प्रेरतिों ने प्रचार कयिा कि *संसार दुष्टता में पड़ा है* (1 यूहन्ना 5:19); कि *सभी ने पाप कयिा है और परमेश्वर की महमिा से रह गए हैं* (रोमयिों 3:23)। यहाँ तक कि मूरतपिूजक ऋषयिों ने भी वलिाप कयिा कि संपूर्ण मानव जाति भ्रष्ट है, और कोई अप्रतरिोध्य, जन्मजात मानवीय प्रवृत्तमिनुष्य को बुराई की ओर खींचती है।[1494] तो फरि, मानव स्वभाव में ऐसी अव्यवस्था कहाँ से आती है? यह शक्तयिों और प्रवृत्तयिों का अस्वाभावकि संघर्ष, आत्मा पर शरीर का, और वविेक पर भावनाओं का यह अस्वाभावकि प्रभुत्व, बुराई की ओर यह अस्वाभावकि झुकाव जो भलाई की स्वाभावकि प्रवृत्तपिर हावी हो जाता है, कहाँ से आता है?

[1493] De nupt et concup. II, c. 12. पेलैजयिनों ने, अपने झूठे सद्धिांत की रक्षा में, प्राचीन धर्मपति, जैसे साइप्रयिन, हलिरी, क्रसिोस्टोम और, वशिेष रूप से, एम्ब्रोज़ की रचनाओं से कुछ अंश उद्धृत कए; लेकनि इन सभी उद्धरणों की भ्रांतपिहले ही धन्य द्वारा प्रदर्शति की जा चुकी थी ऑगस्टीन (पेलैजयिस के दो पत्रों के वरिुद्ध IV, 8; प्रकृतऔिर अनुग्रह पर, पेलैजयिस के वरिुद्ध LXIII; जूलयिन के वरिुद्ध 1, 6; मसीह के अनुग्रह और मूल पाप पर, पेलैजयिस के वरिुद्ध XLIII, n. 47; ववािह और वासना पर 1, c. 35, n. 40)।

[1494] *प्लेटो,* *डे लेगबिस* IX; *ससिरो,* *क्वेस्टयिोनेस तुस्कुलाने* III, n. 1; *सेनेका,* *डे एलमिेंटसि* 1, c. 6; *डे इरा* III, c. 26; *होरेस,* *सैटायर्स* 1, 13, 16.

3.2. इसके लिए लोगों द्वारा रची गई सभी व्याख्याएँ निराधार या अतार्किक हैं; एकमात्र पूर्णतः संतोषजनक व्याख्या वह है जो प्रकाशन ने हमारे प्रथम माता-पिता के मूल पाप पर अपनी शिक्षा के माध्यम से प्रस्तुत की है। और —

क) हम प्राचीनों के विचारों को स्वीकार नहीं कर सकते, जैसे कि मनुष्य में मौजूद सभी बुराइयों का स्रोत उसके शरीर में निहित हो, जैसे कि वह पदार्थ जिसमें मानव आत्मा लिपटी होती है, अपनी प्रकृति से ही उसकी सभी आध्यात्मिक आकांक्षाओं का विरोधी हो, उसके विवेक को धूमिल करे, उसकी इच्छा और हृदय में अव्यवस्था पैदा करे, और, भ्रम के माध्यम से, उसे अनिवार्य रूप से दुराचार की ओर ले जाए। यह दृष्टिकोण, सबसे पहले, सबसे विनाशकारी परिणामों को जन्म देता है, जो सामान्य ज्ञान का खंडन करते हैं। यदि पदार्थ पाप का स्रोत है, तो पाप के लिए ईश्वर दोषी है; क्योंकि वह पदार्थ का स्रष्टा है; उसने हमारे शरीर को बनाया, ठीक उसी तरह जैसे उसने हमारी आत्मा को बनाया, और उन्हें एक साथ मिलाया। तब, इसका यह परिणाम निकलता है कि हम पर किसी भी प्रकार की कोई ज़िम्मेदारी नहीं है; जब हम बुराई करते हैं तो हम निर्दोष होते हैं, क्योंकि हम उस स्वभाव के अनुसार कार्य करते हैं जो ईश्वर ने हमें दिया है। अतः इसका यह परिणाम निकलता है कि अच्छाई और बुराई में कोई अंतर नहीं है, और नैतिक कानून का हमारे लिए कोई महत्व नहीं होना चाहिए। दूसरी बात, यह दृष्टिकोण अनुभव का खंडन करता है, जबकि कुछ भी स्पष्ट नहीं करता। यदि वास्तव में हमारे भीतर आत्मा और शरीर स्वभाव से ही संघर्ष में हैं; यदि, जबकि आत्मा स्वाभाविक रूप से हमें अच्छे की ओर खींचती है, शरीर भी स्वाभाविक रूप से हमें बुरे की ओर खींचता है—तो ऐसा क्यों नहीं है कि हमारे भीतर की आत्मा शरीर से अधिक शक्तिशाली हो, बल्कि इसके विपरीत, शरीर आत्मा से अधिक शक्तिशाली है, जबकि स्वाभाविक रूप से इसके विपरीत की ही उम्मीद की जाती है? आम अनुभव के अनुसार, हमारे भीतर बुराई की प्रवृत्ति अच्छाई की प्रवृत्ति पर क्यों हावी हो जाती है, इस हद तक कि *मैं वह अच्छा नहीं करता जो मैं करना चाहता हूँ, बल्कि वह बुरा करता हूँ जो मैं नहीं करना चाहता* (रोमियों 7:19)? कम से कम, हमारे भीतर अच्छाई की प्रवृत्ति और बुराई की प्रवृत्ति समान रूप से मजबूत क्यों नहीं हैं? दूसरी ओर, जबकि यह सच है कि कुछ भाव और दुर्गुणों का आधार हमारी शारीरिक संरचना में होता है—उदाहरण के लिए, क्रोध, जिसके प्रति चिड़िचिड़े स्वभाव के लोग विशेष रूप से प्रवृत्त होते हैं, और इसी तरह के अन्य—हालाँकि, अन्य जुनून और दुर्गुण भी हैं—जैसे आत्म-स्नेह, अहंकार, ईर्ष्या और महत्वाकांक्षा—जिन्हें स्वभाव का परिणाम नहीं कहा जा सकता, बल्कि जो सीधे आत्मा में उत्पन्न और विकसित होते हैं, और परिणामस्वरूप वहीं जड़ जमाते हैं, और किसी भी तरह से शरीर में नहीं।

(b) यह विचार रखना अन्यायपूर्ण है, जिसे कुछ नवीनतम विचारकों ने भी अपनाया है, कि मनुष्य में बुराई उसकी सीमाओं का अपरिहार्य परिणाम है। "मनुष्य," वे कहते हैं, "स्वभावतः सीमित है, और एक सीमित प्राणी अनिवार्य रूप से अपूर्ण होता है; मनुष्य की सभी शक्तियों में इस अपूर्णता से उसकी त्रुटियाँ उत्पन्न होती हैं, और इन त्रुटियों से बुराई स्वाभाविक रूप से जन्म लेती है।" यह सच है कि प्रत्येक सीमित प्राणी उस दूसरे प्राणी की तुलना में अपूर्ण है जो कम सीमित है, और सभी सीमित प्राणी अनंत प्राणी की तुलना में अपूर्ण हैं; लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि प्रत्येक सीमित प्राणी अपने आप में अपूर्ण है, या कि वह अपने उद्देश्य के लिए अपर्याप्त है, या उन कानूनों को पूरा करने में असमर्थ है जिनके अधीन उसकी प्रकृति है। इस प्रकार, स्वर्गदूत भी ईश्वर की तुलना में सीमित और अपूर्ण हैं; फिर भी, वे अपने क्रम के भीतर, प्रत्येक अपनी जगह पर, पूर्ण हैं; वे निर्दोष हैं क्योंकि वे अपनी सीमाओं के अनुसार जहाँ तक संभव हो, अपने उद्देश्य को पूरा करते हैं और नैतिक कानून का पालन करते हैं; क्योंकि वे अपने स्रष्टा से उन्हें प्रदान की गई प्रेम की पूरी शक्ति के साथ प्रेम करते हैं। इसी प्रकार, यद्यपि मनुष्य स्वर्गदूतों की तुलना में ईश्वर की तुलना में और भी अधिक सीमित और अपूर्ण हैं, फिर भी वे अपने उद्देश्य के संबंध में अपने क्रम के भीतर पूर्ण रह सकते थे; वे अपनी सीमाओं की हद तक नैतिक आज्ञाओं का पालन कर सकते थे; वे अपनी पूरी मानवता से ईश्वर से प्रेम कर सकते थे; वे स्वर्गदूतों की तुलना में पवित्रता की निम्नतर डिग्री पर रह सकते थे, फिर भी इसके बावजूद, ईश्वर के सामने निर्दोष और पापरहित रह सकते थे। अपूर्ण होना उन गुणों का स्वामी होने का अर्थ है जो अस्तित्व की सीढ़ी पर ऊँचा स्थान रखने वाली किसी अन्य सत्ता के गुणों से कम उत्कृष्ट हैं; लेकिन पापी होने का अर्थ है, स्वतंत्रता के दुरुपयोग के माध्यम से, सृष्टिकर्ता और एक तर्कशील प्राणी के बीच मौजूद होने वाले संबंधों का उल्लंघन करना; इसका अर्थ है दिव्य आज्ञाओं के मार्ग से जानबूझकर भटकना और अपने ही उद्देश्य के विपरीत कार्य करना। ईश्वर हमसे ऐसी सद्गुणों की मांग नहीं करते जो हमारी क्षमता से परे हों; वह हमें ऐसी पवित्रता के लिए बाध्य नहीं करते जो हमारी प्रकृति से परे हो; वह केवल वही मांग करते हैं जो हमारे लिए पूरी तरह से स्वाभाविक है, और जिसे हम अपनी शक्तियों के भीतर

करने में सक्षम हैं। और यदि ऐसा है, तो ईश्वर के कानून का मानव द्वारा उल्लंघन अब उसकी सीमाओं और सापेक्ष अपूर्णता के मात्र परिणाम के रूप में नहीं माना जा सकता: नहीं, यह एक वास्तविक बुराई है, जो उसके स्वभाव के भ्रष्ट होने का प्रमाण है।

(ग) उतना ही अन्यायपूर्ण वह दृष्टिकोण है जो हाल के समय में उन लोगों के बीच उभरा है जो यह दावा करते हैं कि मानव दुष्टता का स्रोत मानव स्वभाव में नहीं बल्कि किसी के पालन-पोषण की कमियों में निहित है; कि हर व्यक्ति शुद्ध और मासूम पैदा होता है, जैसे आदम को बनाया गया था, लेकिन खराब पालन-पोषण, बुरे उदाहरणों और इसी तरह की चीजों के परिणामस्वरूप दुष्ट और भ्रष्ट हो जाता है। यदि यह सच होता, तो—

(क) कोई भी यह सोचे बिना नहीं रह सकता कि कैसे, सात सहस्राब्दियों से अधिक की अवधि में, अपनी परवरिश में सुधार के लिए लगातार प्रयास करते हुए भी, मानवता ने उस आदिम पवित्रता और मासूमियत को संरक्षित करना अभी तक नहीं सीखा है, जिसके साथ कथित तौर पर हर कोई पैदा होता है; यह समझ से परे है कि किसी कड़वी आवश्यकता के कारण सभी लोग ठीक इसी खराब परवरिश को प्राप्त करते हैं और दूसरों को भी देते हैं। इसके विपरीत, यह सर्वविदित है कि—

bb) हाल के समय में, कई सभ्य राज्यों में, उन सार्वजनिक संस्थानों में सुधार के लिए हर संभव उपाय किया गया है जहाँ युवाओं को शिक्षित किया जाता है; छात्रों को दुराचार से बचाने और उन्हें सद्गुणों का आदी बनाने के लिए सबसे प्रभावी साधनों का उपयोग किया जाता है — और फिर भी बुराई की शक्ति बनी हुई है; दुर्गुण की प्रवृत्ति स्पष्ट रूप से लोगों में सदा की तरह सद्गुण की प्रवृत्ति पर हावी रहती है, और अक्सर तो ऐसे नए अपराध भी सामने आते हैं जो पहले अज्ञात थे। यदि हम यह मान लें कि मनुष्य अच्छा पैदा होता है, और हमें अपने पालन-पोषण में हमारे भीतर पहले से मौजूद दोषों को—जिनके साथ हम पैदा हुए थे—ठीक करने के बजाय केवल अपनी जन्मजात मासूमियत को बनाए रखने की चिंता करनी चाहिए, तो यह सब एक अनसुलझी पहेली बनी रहती है। अंत में, यह कहना होगा कि—

(bb) यद्यपि खराब पालन-पोषण वास्तव में हमारे भीतर बुराई को बढ़ावा दे सकता है और उसके विकास को गति दे सकता है, ठीक उसी तरह जैसे अच्छा पालन-पोषण आमतौर पर उसकी शक्ति को कमजोर करता है और शुरू में ही इसे आंशिक रूप से दबा सकता है, फिर भी बुराई हमारे भीतर किसी भी पालन-पोषण के होने से पहले ही मौजूद होती है। इस बात से आश्वस्त होने के लिए, किसी को केवल एक ऐसे शिशु का सरल अवलोकन करना है जो अभी तक किसी भी पालन-पोषण की प्रणाली के प्रभाव में नहीं आया है, और जिस पर उसकी क्षमताओं के विकास और सुधार के लिए चुनी गई किसी भी विधि के लाभ या कमियों का अभी तक प्रतिबिंबित होने का मौका नहीं मिला है। यहाँ तक कि सबसे आम आदमी भी यह देखने से चूक नहीं सकता कि शिशु में क्रोध, ढोंग, झूठ और अवज्ञा की प्रवृत्ति पहले से ही स्पष्ट रूप से दिखाई देती है — इसलिए नहीं कि उसने ये सभी दोष अपने माता-पिता में देखे हैं और नकल के माध्यम से उन्हें अपना लिया है, बल्कि इसलिए कि वह जन्मजात प्रवृत्ति से इनकी ओर आकर्षित होता है। एक भ्रष्ट व्यक्ति पर बुरे उदाहरणों के प्रभाव के संबंध में भी यही कहा जाना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति अच्छा पैदा होता है, बुराई की ओर किसी पूर्वप्रवृत्ति या झुकाव के बिना, तो फिर वह हमेशा बुरे उदाहरणों द्वारा भटकने की अनुमति क्यों देता है, और उन पर काबू पाने के लिए अपने भीतर पर्याप्त शक्ति क्यों नहीं पाता? बुरे उदाहरणों का हम पर अच्छे उदाहरणों की तुलना में अधिक प्रभाव क्यों डालते हैं? हमारे लिए अच्छा करने की तुलना में बुरा करना कहीं अधिक आसान क्यों है? बुराई के बीज उन शिशुओं में भी क्यों प्रकट होते हैं, जिन्होंने अभी तक आत्म-जागरूकता प्राप्त नहीं की है और दूसरों की नकल नहीं कर सकते?

(घ) मन के लिए इन सभी प्रश्नों का सबसे संतोषजनक समाधान, और मानव जाति में मौजूद बुराई की सबसे न्यायसंगत व्याख्या, दिव्य प्रकटीकरण द्वारा प्रस्तुत की गई है, जो कहता है कि पहला मनुष्य वास्तव में अच्छा और निर्दोष बनाया गया था, लेकिन उसने ईश्वर के विरुद्ध पाप किया, और इस प्रकार उसने अपनी पूरी प्रकृति को भ्रष्ट कर दिया; परिणामस्वरूप, उससे उत्पन्न सभी लोग स्वाभाविक रूप से मूल पाप, एक भ्रष्ट प्रकृति और बुराई की प्रवृत्ति के साथ पैदा होते हैं। इसमें कुछ भी अविश्वसनीय या अतार्किक नहीं है। हम अनुभव से देखते हैं कि बच्चे अपने माता-पिता की बीमारियों को विरासत में पाते हैं, और अक्सर ये बीमारियाँ लंबे समय तक जड़ें जमाए रखती हैं और कुछ परिवारों में पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आती हैं। हम अनुभव और सरल तर्क से जानते हैं कि *एक बुरे पेड़ से अच्छा फल नहीं हो सकता* (मत्ती 7:18), कि एक दूषित झरना स्वाभाविक रूप से दूषित पानी ही देता है, और जब किसी पेड़ की जड़ सड़ जाती है, तो उसका तना भी अछूता नहीं रह सकता। परिणामस्वरूप, जड़ में ही भ्रष्ट मानवता की शाखाओं में भी अनिवार्य रूप से भ्रष्टता

होनी ही है। और यदि पहला मनुष्य पापी हो गया और उसने अपनी संपूर्ण प्रकृति को भ्रष्ट कर दिया, तो उसके वंशज इसी पापी और भ्रष्ट प्रकृति को विरासत में पाए बिना नहीं रह सकते।

§93. हम में आदि पाप के परिणाम

इस प्रकार हमारे प्रथम माता-पिता से संपूर्ण मानव जाति तक पहुँचते हुए, मूल पाप अनिवार्य रूप से हमारे लिए वे सभी परिणाम लाता है जो उसने स्वयं प्रथम माता-पिता में उत्पन्न किए थे। इन परिणामों में सबसे महत्वपूर्ण हैं:

1. मन का अंधकारमय हो जाना और विशेष रूप से, विश्वास के क्षेत्र से संबंधित आध्यात्मिक मामलों को समझने में इसकी अक्षमता। *प्राकृतिक मनुष्य परमेश्वर की आत्मा से आने वाली बातों को स्वीकार नहीं करता, क्योंकि वह उन्हें मूर्खता समझता है; और न ही वह उन्हें समझ सकता है, क्योंकि ऐसी बातों का आध्यात्मिक रूप से परखा जाना आवश्यक है* (1 कुरिन्थियों 2:14)। और इसलिए, नए विश्वासियों के लिए वांछित पहली आशीर्वादों में से एक *यह है कि हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर, महिमा के पिता, आपको उस के ज्ञान में बुद्धि और प्रकटवाणी की आत्मा दे* (इफिसियों 1:17)। हालाँकि, किसी को मन के इस अँधेरा होने की कल्पना अतिशयोक्तिपूर्ण ढंग से नहीं करनी चाहिए और यह सोचना चाहिए कि, मूल पाप के परिणामस्वरूप, लोग आध्यात्मिक बातों को समझने में पूरी तरह से असमर्थ हो गए हैं; इसके विपरीत, वही प्रेरित स्वयं मूर्तिपूजकों के विषय में गवाही देता है कि *परमेश्वर के बारे में जो कुछ जाना जा सकता है, वह उनके लिए स्पष्ट है, क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें यह ज्ञात कर दिया है। क्योंकि उसकी अदृश्य गुणधर्म, उसकी अनन्त शक्ति और दिव्य स्वभाव, संसार की सृष्टि के समय से ही सृजित वस्तुओं के द्वारा स्पष्ट रूप से देखे गए हैं;* और इसी कारण से वे बहाना नहीं कर सकते: *क्योंकि यद्यपि उन्होंने परमेश्वर को जाना, फिर भी उन्होंने उसकी महिमा नहीं की* (रोमियों 1:19–20)। और यदि पतित मनुष्य में विश्वास के मामलों को समझने की कोई क्षमता शेष न रहती, तो उसके लिए दिव्य प्रकाशन को संप्रेषित करना असंभव हो जाता, जिसे वह न तो पहचान पाता और न ही आत्मसात कर पाता। कलीसिया के पिता भी इसे हमारे भीतर के मूल पाप का परिणाम मानते थे।[1495]

२. स्वतंत्र इच्छा का पतन और उसका भलाई की ओर न होकर बुराई की ओर झुकाव। पवित्र प्रेरित हमारी इस सक्रिय क्षमता की इस दयनीय स्थिति का वर्णन विस्तार से करते हैं जब वे कहते हैं: *'मैं जानता हूँ कि मुझ में, अर्थात् मेरे शरीर में, कोई भलाई वास नहीं करती; क्योंकि मुझ में तो इच्छा है, परन्तु मैं उसे पूरा नहीं कर सकता। जो अच्छा मैं करना चाहता हूँ वह मैं नहीं करता; पर जो बुरा मैं नहीं करना चाहता, वही मैं करता हूँ। अब यदि मैं वह करता हूँ जो मैं नहीं करना चाहता, तो अब मैं ही उसे करने वाला नहीं हूँ, बल्कि वह पाप है जो मुझ में वास करता है। इसलिए मैं इस व्यवस्था को कार्यरत पाता हूँ: कि जब मैं भलाई करना चाहता हूँ, तो बुराई मेरे साथ मौजूद रहती है। क्योंकि मैं अपने भीतरी मनुष्य में परमेश्वर की व्यवस्था में आनंदित होता हूँ; परन्तु मैं अपने अंगों में एक दूसरी व्यवस्था देखता हूँ, जो मेरे मन की व्यवस्था से युद्ध करती है और मुझे मेरे अंगों में कार्यरत पाप की व्यवस्था का कैदी बना देती है* (रोमियों 7:18–23)। दूसरी ओर, हालांकि, यह कहना अनुचित है कि मूल पाप ने हमारी स्वतंत्रता को पूरी तरह से नष्ट कर दिया है, ताकि हम कुछ भी अच्छा चाह भी न सकें, और हमारा पूरा स्वभाव बुरा हो गया है (ऑर्थोडॉक्स कन्फेशन, भाग 1, प्रश्न 27 का उत्तर; ईस्टर्न पैट्रिआर्क्स का ऑर्थोडॉक्स विश्वास पर पत्र, अनुच्छेद 14)। यह विचार के विपरीत है

a) अभी उद्धृत पवित्र प्रेरित के वचन, जहाँ कहा गया है कि, कम से कम, *हम पर अच्छा चाहने का दायित्व है,* भले ही हम उससे घृणा करें (रोमियों 7:17), और यह कि हमारे भीतर के मनुष्य में अच्छाई का एक अवशेष अभी भी शेष है, जो परमेश्वर के वचन में आनंदित होता है। यह इसके विपरीत है —

ख) वे सभी बहुत सारे अंश जिनमें पतित मानवता को आज्ञाएँ, उपदेश, उत्साहवर्धन, वचन और धमकियाँ दी गई हैं—जैसे, उदाहरण के लिए, संपूर्ण दस आज्ञाएँ (निर्गमन 20:3 आदि) और व्यवस्थाविवरण (28–32) के अंतिम अध्यायों में इस्राएल के लोगों के लिए दिए गए सभी वचन और धमकियाँ; यदि मनुष्य में स्वतंत्रता का एक अवशेष पूर्व-मान्य न माना जाता, तो इन अंशों का कोई भी महत्व नहीं होता। इसके विपरीत —

(c) धर्मग्रंथ के लगभग उतने ही अधिक संख्या में पाए जाने वाले अंश जो न केवल संकेत करते हैं बल्कि स्पष्ट रूप से कहते हैं कि पतित मनुष्य के पास स्वतंत्र इच्छा है, विशेष रूप से आध्यात्मिक जीवन के संबंध में; कि वह अपने

[1495] *टैटियन,* *एड ग्रीक.* XIII, XIV, XXX; *मैकारियस,* *होमलीज* XXV, n. 2; *मन की स्वतंत्रता पर*, n. 21; *ऑगस्टीन,* *द सिटी ऑफ गॉड* XXII, 22, n. 1; *ग्रेगरी,* *कमेंटरी ऑन जॉब* V, 34, n. 61.

कर्मों का स्वामी है, और वह या तो ईश्वर की इच्छा का पालन कर सकता है या उसका विरोध कर सकता है। उदाहरण के लिए: *'यदि कोई मेरे पीछे आना चाहता है, तो वह स्वयं को इन्कार करे और अपना क्रूस उठाए और मेरे पीछे चले'* (मत्ती 16:24); *'यदि तुम अनन्त जीवन में प्रवेश करना चाहते हो, तो आज्ञाओं का पालन करो* (मत्ती 19:17); *'यदि तुम सिद्ध होना चाहते हो, तो जाओ, अपनी संपत्ति बेचकर गरीबों को दे दो... और मेरा अनुसरण करो* (21); *जो कोई उसकी इच्छा करने के लिए इच्छुक है, वह जान लेगा कि यह शिक्षा परमेश्वर की ओर से है, या मैं अपनी ओर से बोलता हूँ* (यूहन्ना 7:17); *हे यरूशलेम, हे यरूशलेम, तू जो भविष्यद्वक्ताओं को मार डालता है, और जो तेरे पास भेजे गए हैं, उन्हें पत्थरवाह करता है! कितनी बार मैं तुम्हारे बच्चों को एक साथ इकट्ठा करना चाहता था, जैसे एक माँ अपनी चूजों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठा करती है, परन्तु तुमने न चाहा* (मत्ती 23:37); *जो कोई भी अपने हृदय में दृढ़ संकल्प करता है, और आवश्यकता से बाध्य न होकर, बल्कि अपनी इच्छा का स्वामी होकर, अपने हृदय में अपनी कुँवारी अवस्था बनाए रखने का निश्चय करता है, वह भला करता है* (1 कुरिन्थियों 7:37)। इसके विपरीत है—

(d) पवित्र पिताओं और चर्च के शिक्षकों की सर्वसम्मत शिक्षा, जिन्होंने, यह स्वीकार करते हुए कि पतित मनुष्य में स्वतंत्रता सीमित है, फिर भी यह पुष्टि की कि आदि पाप ने हमारे भीतर इसे किसी भी तरह से नष्ट नहीं किया है,[1496] और अब हमारे प्रत्येक की इच्छा में है कि हम बुरे या भले का चुनाव करें, हमारे चारों ओर मौजूद सभी प्रलोभनों के बावजूद,[1497] और इसलिए उन्होंने अपने लेखों को ईसाइयों के लिए अनगिनत निर्देशों और प्रोत्साहनों से भर दिया, ताकि वे अपनी ओर से, ईश्वर की कृपा की सहायता से, पाप के विरुद्ध लड़ने और सद्गुणों में उत्कृष्टता प्राप्त करने का प्रयास करें।[1498] अंत में, यह इसके विपरीत है —

d) प्रत्येक मानव की अंतरात्मा और सभी राष्ट्रों का विश्वास। हम सभी महसूस करते हैं कि हम अक्सर विभिन्न संभावित कार्यों में से चुनते हैं, और यदि हम किसी एक का निर्णय लेते हैं, तो हम ऐसा बिना किसी बाध्यता के, अपनी स्वतंत्र इच्छा से करते हैं; यह हमारे ऊपर निर्भर करता है कि हम चुने हुए कार्य को किसी भी तरह से पूरा करें, कि हम इसे अधूरा छोड़कर इसके स्थान पर कोई और कार्य चुन लें, और इसी तरह। इसीलिए सभी लोगों के पास हमेशा उनके कार्यों को नियंत्रित करने वाले कुछ कानून रहे हैं; सभी ने अच्छे और बुरे कर्मों के बीच अंतर की धारणा को माना है, और दोनों को लोगों के प्रति जिवाबदेह ठहराया गया है।

3. ईश्वर की प्रतिमा का अस्पष्ट होना, परन्तु उसका विनाश नहीं। मानवों में तर्क के अस्पष्ट होने और स्वतंत्रता के विकृत होने के परिणामस्वरूप ऐसा अस्पष्ट होना अपरिहार्य है। लेकिन इसका विनाश असंभव है, क्योंकि प्रथम माता-पिता के पाप से मनुष्य में सत्य और अच्छाई की ओर उसके स्वाभाविक झुकाव के साथ न तो तर्क और न ही स्वतंत्रता का विनाश हुआ था। और पवित्र धर्मग्रंथ वास्तव में इस बात की गवाही देता है कि पतन के बाद भी हम में परमेश्वर की प्रतिमा बनी रहती है। इस प्रकार, स्वयं परमेश्वर, प्रलय के बाद नूह और उसके बेटों को आशीष देते हुए, अन्य बातों के अलावा, सभी जानवरों पर उसके प्रभुत्व की पुष्टि करते हैं (उत्पत्ति 9:1– 2), जो, जैसा कि हमने देखा है, मनुष्य में परमेश्वर के स्वरूप की एक आवश्यक विशेषता के रूप में कार्य करता था; और इसके अलावा,

---

[1496] *जस्टिन,* *अपोलॉजी* 1, 24; *एथेनागोरस,* *लॉज़* XXIV; *क्लेमेंट,* *स्ट्रोमाटा* II, 4; III, 9; IV, 20; *ओरिजिन,* *ऑन द प्रिंसिपिल्स*, प्रस्तावना, n. 5; *टर्टुलियन,* *अगेंस्ट मार्कियन* II, 5; *साइप्रियन,* *एपिस्टल* LV; *एक्साहर्टेशन ऑन कास्टिटी*, अध्याय II.

[1497] *साइरिल ऑफ़ जेरूसलम,* पब्लिकि सरमन्स, IV, 21; *बेसिल द ग्रेट,* डिस्कोर्स ऑन द फैक्ट दैट गॉड इज़ नॉट द कॉज़ ऑफ़ इविल, *द वर्क्स ऑफ़ द होली फादर्स*, VIII, 154; *एम्ब्रोस,* *इन हेक्साएम*, 1, पृ. 8। पहला विशेष रूप से कहता है: 'आत्मा स्व-शासित है; इसलिए, शैतान उकसा तो सकता है, लेकिन किसी की इच्छा के विरुद्ध उसे बाध्य करने की उसकी कोई शक्ति नहीं है। वह आपके मन में व्यभिचार का विचार डालता है; यदि आप चाहें, तो आप उसे स्वीकार कर लेंगे; लेकिन यदि आप नहीं चाहेंगे, तो आप उसे स्वीकार नहीं करेंगे। क्योंकि यदि आप आवश्यकता के कारण व्यभिचार करते, तो ईश्वर ने गेहेना (नरक) क्यों तैयार किया होता? यदि आप स्वैच्छिक इच्छा के बजाय स्वभाव से ही भलाई करते, तो ईश्वर ने अकथनीय मुकुट क्यों तैयार किए होते? एक भेड़ नम्र होती है, फिर भी उसे उसकी नम्रता के लिए कभी मुकुट नहीं दिया जाता, क्योंकि उसकी नम्रता स्वैच्छिक इच्छा से नहीं बल्कि स्वभाव से होती है" (पृ. 71–72, रूसी अनुवाद)। ऊपर टिप्पणियाँ 1326–1333 और जिन ग्रंथों का वे संदर्भ देते हैं, उन्हें भी देखें।

[1498] उदाहरण के लिए, धन्य ऑगस्टीन ने अपने श्रोताओं को इस प्रकार समझाया: 'निश्चित रूप से जान लो कि तुम अपनी स्वतंत्र इच्छा से कार्य करते हो। चूँकि तुम जीवित हो, इसलिए तुम कार्य भी करते हो। यदि तुम स्वयं कुछ नहीं करते हो तो वह (ईश्वर) तुम्हारा सहायक नहीं है; और यदि तुम कोई प्रयास नहीं करते हो तो वह तुम्हारा समर्थक नहीं है... ईश्वर अपना मंदिर आपसे उसी तरह नहीं बनाता जैसे वह उन पत्थरों से बनाता है जिनमें अपनी कोई गति नहीं होती, जिन्हें निर्माता लेता और रखता है। जीवित पत्थर ऐसे नहीं होते; और आप, जीवित पत्थरों के रूप में, स्वयं को ईश्वर के मंदिर में बनाना चाहिए। 'आपको मार्गदर्शन दिया जाता है, लेकिन आपको स्वयं भी आगे बढ़ना चाहिए; आपको मार्गदर्शन दिया जाता है, लेकिन आपको स्वयं ही अनुसरण करना चाहिए' (Serm. CLVI, alias XIII, n. 13)।

मानव रक्त का बहाव निषिध करते हुए, वह निम्नलिखित शब्दों में अपनी इच्छा व्यक्त करते हैं: 'जो कोई मनुष्य का रक्त बहाएगा, उसका रक्त मनुष्यों के हाथों बहाया जाएगा' (6)। चर्च के धर्मगुरुओं ने भी हमेशा पतित मनुष्य में ईश्वर की प्रतिमा के अवशेषों को स्वीकार किया है,[1499] और उन्होंने ओरिजिनिस्टों को उनकी इस झूठी शिक्षा के लिए फटकारा है कि आदि पाप ने हमारे भीतर इस प्रतिमा को पूरी तरह से मिटा दिया है।[1500] और यदि ईश्वर की प्रतिमा, जो ईश्वर के साथ हमारे मिलन (धर्म) - हमारे मूल आदर्श - का एकमात्र आधार है, हमारे भीतर पूरी तरह से नष्ट हो जाती, तो हम उससे पुनर्मिलन करने में असमर्थ होते - और ईसाई धर्म का कोई अर्थ ही नहीं रह जाता।

4. मृत्यु, इसके सभी पूर्वसूचक: बीमारी और पीड़ा। पवित्र प्रेरित इस बात की गवाही देते हैं जब वे कहते हैं: *'एक मनुष्य के द्वारा पाप संसार में प्रवेश किया, और पाप के द्वारा मृत्यु, और इस प्रकार मृत्यु सभी मनुष्यों में फैल गई* (रोमियों 5:12), और एक अन्य अंश में: *'जैसे मृत्यु एक मनुष्य के द्वारा आई, वैसे ही मृतकों का पुनरुत्थान भी एक मनुष्य के द्वारा होता* है' (1 कुरिन्थियों 15:21). चर्च के प्राचीन शिक्षकों ने भी इस बात की सर्वसम्मत गवाही दी है:

क) *टेटियन*: 'हमें मृत्यु के लिए नहीं बनाया गया था, लेकिन हम अपनी इच्छा से मरते हैं; हमारी अपनी इच्छा ने हमारा विनाश किया है';[1501]

ख) *थियोफिलिस*: 'अवज्ञा के द्वारा, मनुष्य बीमारी, दुख और पीड़ा के अधीन हो गया, और अंततः मृत्यु का शिकार हो गया';[1502]

ग) *बेसिल द ग्रेट*: "आदम ने ईश्वर से मुंह मोड़कर अपने ऊपर मृत्यु ला दी...; इस प्रकार मृत्यु का स्रष्टा ईश्वर नहीं था, बल्कि हमने इसे अपनी ही कपटी सहमति से अपने ऊपर लाया";[1503]

घ) *ग्रेगरी द थियोलोजियन*: "मैंने जितनी भी विपत्तियाँ देखी हैं—ऐसी विपत्तियाँ जो किसी भी तरह से कम नहीं हुईं—उतनी ही मैंने एक भी ऐसी कृपा नहीं देखी जो पूरी तरह से दुख से मुक्त हो, जब से उस घातक निवाले और शत्रु की ईर्ष्या ने मुझे कड़वी कलंक से दाग दिया है";[1504]

e) *एम्ब्रोज़*: "आदम के उल्लंघन के माध्यम से हम मृत्यु के अधीन हो गए हैं,"[1505] और अन्य।[1506]

§94. धर्मसिद्धान्त का नैतिक अनुप्रयोग

मनुष्य की उत्पत्ति और स्वभाव, उसके उद्देश्य और मूल स्थिति, उसके पतन और उस पतन के परिणामों पर चिंतन करके, हम बहुत कुछ सीख सकते हैं।

1) प्रभु मनुष्य को उसके सृजन के क्षण से ही अलग करना पसंद करते थे—मनुष्य को बनाने से पहले, उन्होंने पवित्र त्रिमूर्ति के रहस्य में परामर्श किया; इसलिए, उन्होंने मनुष्य का शरीर अपने हाथों से बनाया, और व्यक्तिगत रूप से उसकी नाक में जीवन का श्वास फूँका, जबकि दृश्य दुनिया में बाकी सब कुछ उन्होंने केवल अपने वचन और अपने आदेश से बनाया। यह हमें एक ओर, पृथ्वी के सभी अन्य प्राणियों पर अपनी श्रेष्ठता की सराहना करना सिखाता है,[1507]

1499 *एपिफेनियस*, *हेरेसिया LXX*, संख्या 3; *ग्रेगरी ऑफ़ निस्सा*, *क्रिश्चियंस रीडिंग्स* 1840, III, 322 में *'आओ मनुष्य को अपनी प्रतिमा में बनाएँ...'* शब्दों पर *टिप्पणी* 1: *'प्रतिमा* में, वह जो मुझे तर्क से युक्त करता है, मेरे भीतर बनता है; और *समानता* में, मैं स्वयं एक ईसाई बनकर ऐसा बन जाता हूँ'; *सिरिल*, *एड* एन्थ्रोप., पृ. 5. 10; *ऑगस्टीन*, *डे स्पिरिटु एट लिटेरा*, पृ. 28; *रिट्रैक्शन्स*, II, 24; *डेमेट्रियस ऑफ रोस्टोव*, *रोज़िक*, पृ. 293–294.

1500 *एपिफेनियस*, यरूशलेम के योहन के विरुद्ध पत्र; *जेरोम*, पमाकियस को पत्र XXXVIII, यरूशलेम के योहन की त्रुटियों पर।

1501 ओरेट. एड ग्रीक. c. XI; तुलना करें c. VII.

1502 एड ऑटोल. II, 25.

1503 ईश्वर बुराई का कारण नहीं है, इस तथ्य पर एक प्रवचन, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, VIII, 155 में।

1504 रहस्यमय शब्दों 10 पर गीत, *पवित्र पिताओं के कार्य*, खंड IV, 260 में।

1505 प्रवचन XLVII; तुलना करें *गैर-यहूदियों के बुलावे पर*, 1, अध्याय 3; *लूका पर*, VII, अध्याय 15.

1506 *जस्टिन*, *डायलॉग विद ट्रायफो*, नं. 88; *आइरेनियस*, *अगेंस्ट हेरेसीज़*, V, 12, नं. 3; *टर्टुलियन*, *अगेंस्ट मार्शन*, II, 9; V, 25; *लैक्टैंशियस*, *दिव्य संस्थाएँ*, II, 13; *हिलारी*, *भजन संहिता LXII पर टिप्पणी*, n. 6; *ग्रेगरी ऑफ निसा*, *कुँवारीपन पर*, c. 13; *ऑगस्टीन*, *ईश्वर का नगर*, XIII, 15.

1507 संत ग्रेगरी ऑफ निसा का तर्क है, 'प्रकाश एक ही आज्ञा से बनाया गया था: *ईश्वर ने कहा, "प्रकाश हो।"* स्वर्ग बनाया गया था; फिर भी स्वर्ग भी बिना परामर्श के बनाया गया था। स्वर्गीय पिंड बनाए गए थे; फिर भी उनके संबंध में भी कोई पूर्व परामर्श नहीं था। अनगिनत महासागर और समुद्र बनाए गए; फिर भी वे भी एक ही आज्ञा से अस्तित्व में आए। हर तरह की मछलियाँ बनाई गईं; फिर भी वे एक आज्ञा से बनाई गईं।

और दूसरी ओर, हमारे सृष्टकिर्ता का धन्यवाद करना सखिाता है, जन्हिोंने हमारे अस्तत्वि में आने से पहले ही, अपनी अनंत भलाई के कारण, हमसे इतना प्रेम कयिा।

2) पहली महलिा को उसके पतकिी पसली से बनाया गया था। अतः—

क) पतऔिर पत्नी दोनों के लिए एक सबक—एक दूसरे के साथ पारस्परकि प्रेम और सामंजस्य में रहना: क्योंकि दोनों का स्वभाव बल्कुिल एक जैसा है;

ख) वशिेष रूप से पत्नी के लिए एक सीख — अपने पतकि अधीन रहना: *क्योंकि 'पत पित्नी से नहीं, बल्कि पित्नी पत से है',* जैसा कि प्रेरति कहते हैं (1 कुरन्थियिों 11:8)।

3) संपूर्ण मानव जातएिक ही मूल जोड़े, आदम और हव्वा, से उत्पन्न हुई है। इस प्रकार, पृथ्वी पर रहने वाली मानव जनजातयिों की बड़ी संख्या और ववििधिता के बावजूद, हम सभी एक-दूसरे के भाई और बहन हैं, सभी एक ही स्वभाव के हैं। तब प्रभु के वचन हमारे प्रत्येक हृदय में कतिने स्पष्ट होने चाहिए: *'अपने पड़ोसी से स्वयं के समान प्रेम करो* (मरकुस 12:31)!

४) प्रभु परमेश्वर ने न केवल आरंभ में हमारे प्रथम माता-पतिा को सीधे सृजति कयिा, बल्कि वह हम में से प्रत्येक को अप्रत्यक्ष रूप से भी बनाता है — वह न केवल हमारी माँ के गर्भ में हमारे शरीर को आकार देता है, बल्कि वह हमें एक आत्मा भी प्रदान करता है। और इसलिए, यदि हम स्वभाव की प्रवृत्ति से ही अपने माता-पतिा, अपने पतिा और माता का सम्मान और प्रेम करते हैं, तो क्या हमें अपने सृष्टकिर्ता का और भी अधकि सम्मान और प्रेम नहीं करना चाहिए, जो एक और भी सच्चे अर्थ में हमारे पतिा और माता हैं?[1508]

5) प्रभु को यह अच्छा लगा कि हम, अपनी प्रकृति के अनुसार, दो भागों से मलिकर बनें: आत्मा और शरीर। पवत्रि प्रेरति हमें आज्ञा देते हैं: *'अपने शरीरों में और अपनी आत्माओं में परमेश्वर की महमिा करो, जो परमेश्वर के हैं* (1 कुरन्थियिों 6:20)।

6) आत्मा हमारे अस्तत्वि का सबसे उत्कृष्ट भाग है; यह पूरी तरह से आध्यात्मकि है, जसिमें तर्क, स्वतंत्रता और अमरत्व की क्षमता है, जबकि शरीर धूल से लयिा गया है और कसिी भी समय धूल में लौट सकता है। इसलिए, आत्मा हमारे भीतर शासक सद्धिांत होना चाहिए, जबकि शरीर इसके अधीन होना चाहिए; हमें सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से आत्मा की देखभाल करनी चाहिए, और केवल उसके बाद शरीर की।

7) सृष्टकिर्ता हमें अपनी समानता और प्रतमिा में बनाने में प्रसन्न हुए: उद्धारकर्ता हमसे कहते हैं, 'परपिूर्ण बनो, जैसे तुम्हारा स्वर्गीय पतिा परपिूर्ण है' (मत्ती 5:48); इस प्रकार जयिो कि ईश्वर की प्रतमिा तुम में सच्चे अर्थ में चमक सके।

8) मनुष्य का आह्वान ऊँचा है: उसे ईश्वर के साथ धार्मकि एकता में रहने, ईश्वर के लिए जीने और उन्हें प्रसन्न करने के लिए बुलाया गया है; उसे धीरे-धीरे अपनी आध्यात्मकि शक्तयिों को प्रकट करने और उन्हें अथक रूप से परपिूर्ण करने के लिए बुलाया गया है, और इस प्रकार आनंद की वभिन्नि श्रेणयिों को प्राप्त करने के लिए; उसे अपने अधीन प्रकृति के सभी पर राजा और स्वामी बनने के लिए बुलाया गया है — यह उच्च लक्ष्य, जसिके लिए हमें प्रयास करना है,

---

जंगली जानवर, मवेशी और मछलयिाँ बनाई गईं; फरि भी—उसने कहा, और वह हो गया। हालाँकि, यहाँ स्थति अलग है: मनुष्य अभी तक मौजूद नहीं है, और मनुष्य के संबंध में एक परषिद आयोजति की जा रही है। जैसा कि अन्य प्राणयिों के लिए कहा गया था, ऐसा नहीं कहा गया: *'आदमी हो जाए!'* तो, अपनी श्रेष्ठता को पहचानें; आपकी सृष्टि संयोग पर नहीं छोड़ी गई थी; बल्कि ईश्वर में इस पर एक परामर्श हो रहा है कि इस श्रेष्ठ प्राणी को कैसे अस्तत्वि में लाया जाए" (क्रसिमस रीडगि्स 1840, III, 300–301 में, *'उसने मनुष्य* को बनाया...' शब्दों पर प्रवचन I)।

[1508] "हे प्रयि," रोस्तोव के संत डेमेट्रयिस लखिते हैं, "आपका पतिा, जसिने आपको देह में जन्म दयिा, वह आपका सच्चा पतिा नहीं है: क्योंकि उसने केवल नश्वर देह को जन्म दयिा, जो जल्द ही मर जाता है। लेकनि सर्वशक्तमिान परमेश्वर, आपके पतिा, ही वास्तव में आपके पतिा हैं: क्योंकि उन्होंने आपकी अमर आत्मा की रचना की, उसे आपके शरीर में स्थापति कयिा, जो उनकी आज्ञा से गर्भ में आया था; क्योंकि आपके दृश्यमान पतिा एक हैं, और आपके अदृश्य पतिा दूसरे। दृश्यमान पतिा नश्वर, अस्थायी है...; लेकनि अदृश्य पतिा अमर, शाश्वत, सर्वशक्तमिान और सर्व-धारणकर्ता हैं। उन्होंने कहा, और आप अपनी माँ के गर्भ में बन गए; उन्होंने आज्ञा दी, और आप अपनी माँ के गर्भ से बाहर आए; और यदि बच्चों को अपने सांसारकि माता-पतिा का सम्मान करना चाहिए, तो उस का कतिना अधकि सम्मान करना चाहिए जसिने हमें अपनी ही छवि और समानता में बनाया, और हमें इंद्रयिां और बुद्धि दी, और हमें अपने हाथों के कार्यों पर शासन करने के लिए नयिुक्त कयिा, और जसिने, यद्यपि हम उसके सेवक हैं, हमें अपनी कृपा से अपना पुत्र और भाई बना दयिा है।" (डॉगमैटकि टीचगि्स, सेंट डेमेट्रयिस ऑफ रोस्तोव के कार्यों से चयनति, *क्रॉनकिल*, 1842, खंड 4, पृष्ठ 370-371।)

हमेशा हमारी आँखों के सामने रहे, और यह हमारे लिए, मार्गदर्शक सितारों की तरह, जीवन के पूरे अंधेरे रास्ते को रोशन करे।

९) प्रभु ने मनुष्य को आत्मा और शरीर से परिपूर्ण बनाया, और उसे बनाने के बाद, पृथ्वी पर उसके लिए सबसे आनंदमय निवास, स्वर्ग तैयार किया; उन्होंने स्वयं मानव की आध्यात्मिक शक्तियों के विकास और सुदृढ़ीकरण में सहायता की, उसे अपने प्रत्यक्ष प्रकटीकरणों से सम्मानित किया, अपनी कृपा से उसमें निवास किया, उसे देह में भी जीवन और अमरत्व का वृक्ष प्रदान किया, और, उसके लिए कर्म और पुण्यों का क्षेत्र खोलने के लिए, उसे अपना आज्ञा-विधान दिया। लेकिन मनुष्य ने ईश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया, अपने सृष्टिकर्ता को क्रोधित किया, और अपनी मूल महिमा खो दी; वह अपने अस्तित्व में ही अपूर्ण और भ्रष्ट हो गया, और बीमारी, विपत्तियों और मृत्यु के अधीन हो गया। यह सबसे स्पष्ट प्रमाण है कि परमेश्वर की इच्छा की अवज्ञा करना कितना खतरनाक है, पाप अपने आप में कितना विनाशकारी और विनाश-कारी है, और जीवित और धर्मी परमेश्वर के हाथों में पड़ना कितना भयानक है!

10) हमारे प्रथम माता-पिता का पाप, अपने सभी परिणामों सहित, संपूर्ण मानव जाति में चला गया है, ताकि हम सभी अधर्म में गर्भ में बनें और जन्म लें, आत्मा और शरीर से कमज़ोर, और परमेश्वर के सामने दोषी हैं। यह हमारे लिए एक जीवित, सदा-मौजूद पाठ बने, जो हमें विनम्रता और अपनी कमजोरियों और खामियों के प्रति जागरूकता की ओर ले जाए; और यह हमें प्रभु परमेश्वर की अनुग्रहपूर्ण सहायता माँगना, और मसीही धर्म में हमें प्रदान किए गए उद्धार के साधनों का कृतज्ञतापूर्वक उपयोग करना भी सिखाए।

अध्याय 2.
प्रदाता के रूप में परमेश्वर

§ 95. चर्च की शिक्षा और इस अध्याय की संरचना

प्रदाता के रूप में ईश्वर पर ऑर्थोडॉक्स चर्च की शिक्षा, ऑर्थोडॉक्स विश्वास पर पूर्वी पैट्रिआर्कों के पत्र में इस प्रकार व्यक्त की गई है: 'हम विश्वास करते हैं कि जो कुछ भी अस्तित्व में है, चाहे वह दृश्यमान हो या अदृश्य, वह दैवीय प्रबंध द्वारा शासित है; हालाँकि, बुराई को, बुराई के रूप में, ईश्वर केवल पूर्वदर्शी है और अनुमति देता है, लेकिन वह इसे इच्छित नहीं करता, क्योंकि उसने इसे नहीं बनाया है। और जो बुराई पहले से ही घटित हो चुकी है, उसे परम भलाई द्वारा किसी लाभकारी चीज़ की ओर निर्देशित किया जाता है, जो स्वयं बुराई पैदा नहीं करती, बल्कि केवल इसे बेहतर की ओर निर्देशित करती है, जहाँ तक संभव हो" (अनुच्छेद 5)। और पूर्व की कैथोलिक और प्रेरित चर्च के ऑर्थोडॉक्स धर्मोपदेश में, 'ईश्वर सब कुछ, सबसे छोटे से लेकर सबसे बड़े तक, सटीक रूप से जानता है (γνωρίζει) और प्रत्येक प्राणी के लिए विशेष रूप से प्रबंध करता है' (अनुच्छेद 1, प्रश्न 29 का उत्तर)।

जिस क्रम में हमने संसार के स्रष्टा के रूप में ईश्वर पर चर्च की शिक्षा को प्रस्तुत किया है, उसी क्रम में अब हम प्रदाता के रूप में ईश्वर पर शिक्षा को प्रस्तुत करेंगे; अर्थात्, हम पहले सामान्य रूप से ईश्वर की दिव्य व्यवस्था के बारे में बात करेंगे, और फिर ईश्वर की रचनाओं के प्रमुख प्रकारों के संबंध में विशेष रूप से ईश्वर की दिव्य व्यवस्था के बारे में बात करेंगे: आध्यात्मिक जगत, भौतिक जगत और सूक्ष्म जगत—मानव।

1. सामान्य रूप से दैवीय प्रबंध पर

§ 96. दैवीय व्यवस्था का सिद्धांत, इसके कार्य और रूप, और इस सिद्धांत पर गलत विचारों का एक अवलोकन

अनादि काल से, 'दिव्य प्रबंध' शब्द का अर्थ दुनिया में सभी प्राणियों पर ईश्वर द्वारा की जाने वाली देखभाल के रूप में समझा जाता रहा है;[1509] या, जैसा कि इस विचार को विस्तृत ईसाई धर्मशास्त्र में अधिक पूर्ण रूप से व्यक्त किया गया है: "दिव्य प्रबंध ईश्वर की सर्वशक्तिमत्ता, बुद्धि और भलाई का अनवरत कार्य है, जिसके द्वारा ईश्वर प्राणियों के अस्तित्व और शक्तियों को संरक्षित करता है, उन्हें अच्छे उद्देश्यों की ओर निर्देशित करता है, हर भलाई में सहायता करता है, और उस बुराई को सीमित करता है जो भलाई से मुंह मोड़ने से उत्पन्न होती है, या उसे सुधारता है और उसे अच्छे परिणामों की ओर मोड़ देता है।" (लेख 1, पृ. 36, मॉस्को 1840 पर)।

इस प्रकार, ईश्वर की व्यवस्था की सामान्य अवधारणा के भीतर, उनके तीन विशिष्ट कार्यों को प्रतिष्ठित किया गया है: प्राणियों का संरक्षण, उनका संवर्धन या सहायता, और उनका शासन।

सृष्टियों का संरक्षण ईश्वर का वह कार्य है, जिसके द्वारा सर्वशक्तिमान संपूर्ण विश्व और उसमें निहित सभी व्यक्तिगत प्राणियों को उनकी शक्तियों, नियमों और गतिविधियों सहित अस्तित्व में बनाए रखते हैं।

ईश्वर का प्राणियों की सहायता या समर्थन वह क्रिया है, जिसके द्वारा सर्व-सत्कर्मी, उन्हें अपनी शक्तियों और नियमों का उपयोग करने की अनुमति देते हुए, साथ ही उनकी गतिविधियों के दौरान उन्हें अपनी सहायता और समर्थन प्रदान करते हैं। यह विशेष रूप से तर्कशील और स्वतंत्र प्राणियों के संबंध में स्पष्ट है, जिन्हें आध्यात्मिक जीवन में समृद्धि के लिए निरंतर ईश्वर की कृपा की आवश्यकता होती है। हालाँकि, नैतिक प्राणियों के संबंध में, ईश्वर की सक्रिय सहायता केवल तभी होती है जब वे स्वतंत्र रूप से अच्छाई का चुनाव करते हैं और उसे करते हैं; उन सभी मामलों में जहाँ वे अपनी स्वतंत्र इच्छा से बुराई का चयन करते हैं और उसे करते हैं, वहाँ केवल ईश्वर की *अनुमति* होती है, और किसी भी तरह से उनका सहयोग नहीं, क्योंकि ईश्वर बुराई को उत्पन्न नहीं कर सकते, और न ही वे नैतिक प्राणियों से उस स्वतंत्रता को छीनना चाहते हैं जो उन्होंने स्वयं उन्हें प्रदान की है।

अंत में, प्राणियों का शासन ईश्वर की वह क्रिया है, जिसके द्वारा अनंत बुद्धिमान उन्हें उनके पूरे जीवन और कार्यों में, उनके लिए निर्धारित लक्ष्यों की ओर निर्देशित करता है, और जहाँ तक संभव हो, उनके सबसे बुरे कर्मों को भी सुधारकर और मोड़कर उन्हें सद्परिणामों की ओर ले जाता है।

इससे यह स्पष्ट है कि ईश्वर की पूर्वोक्त सभी दिव्य कृपाएँ एक-दूसरे से भिन्न हैं। *संरक्षण* में प्राणियों का अस्तित्व, उनकी शक्तियाँ और उनकी गतिविधियाँ, तीनों शामिल हैं; *सहायता* विशेष रूप से उनकी शक्तियों से संबंधित है; *शासन* प्राणियों की शक्तियों और उनके कार्यों, दोनों से संबंधित है। ईश्वर दुनिया के सभी प्राणियों को संरक्षित करता है; वह अच्छे लोगों की सहायता करता है, जबकि दुष्टों को उनके बुरे कर्म करने की केवल अनुमति देता है; वह उन सभी का शासन भी करता है। और इनमें से कोई भी कार्य दूसरे में समाहित नहीं है—किसी प्राणी को उसकी सहायता या शासन किए बिना संरक्षित करना संभव है; किसी प्राणी को संरक्षित या शासित किए बिना उसकी सहायता करना संभव है; किसी प्राणी को संरक्षित या सहायता किए बिना उसका शासन करना संभव है। लेकिन, दूसरी ओर, यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि ईश्वर की दिव्य व्यवस्था के तीनों कार्य केवल हमारे द्वारा ही अलग और पृथक किए जाते हैं, यह इस बात के विभिन्न तरीकों के अनुसार है जिनसे वह स्वयं को दुनिया के सीमित और विविध प्राणियों में प्रकट करता है और हमारे तर्क की सीमाओं के परिणामस्वरूप; जबकि स्वयं में वे अविभाज्य हैं और ईश्वर की एक ही असीम क्रिया का निर्माण करते हैं: क्योंकि जैसे ईश्वर 'एक साथ सभी को और प्रत्येक को विशेष रूप से देखते हैं' ([1510]), वैसे ही वह सब कुछ एक ही सरल, सहज क्रिया के माध्यम से पूरा करते हैं। वह अपने सभी प्राणियों को अविभाज्य रूप से संरक्षित करते हैं, उनकी सहायता करते हैं, और उनका शासन करते हैं।

[1509] निम्नलिखित उदाहरण हैं कि दिव्य अनुग्रह का वर्णन कैसे किया गया है: a) *बेसिल द ग्रेट*: 'प्रत्येक सृजित प्राणी, चाहे वह दृश्यमान हो या कल्पनीय, अपने अस्तित्व के लिए ईश्वर की देखभाल (ἐπιμελείας) की आवश्यकता रखता है' (पवित्र आत्मा पर, अध्याय 8, II. 19, *द वर्क्स ऑफ़ द होली फ़ादर्स*, VII, पृ. 259); b) *नेमेसियस*: *pronoia estin ek Theou eis ta onta ginomeni epimeleia* (de nat. hom. cap. 43, apud *Gotland.* खंड VII, पृ. 419), और — ख) *दमास्कस के जॉन,* जिन्होंने नेमेसियस के शब्दों को दोहराया: "परोपकार प्राणियों के लिए ईश्वर की देखभाल है" (*विश्वास की सटीक व्याख्या*, पुस्तक II, अध्याय 29, पृ. 124)। हालांकि, यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि ईश्वर की दिव्य व्यवस्था का वर्णन उसकी प्राणियों के प्रति देखभाल के रूप में करते समय, हम अधिक सटीक शब्दों की कमी के कारण ईश्वर के बारे में मानवीय रूपक (anthropomorphic terms) में बात करते हैं: ईश्वर की दिव्य व्यवस्था उस प्रकार की चिंता, बेचैनी और परिश्रम से पूरी तरह मुक्त है जिसे हम आमतौर पर किसी भी चीज़ की देखभाल करने से जोड़ते हैं।

[1510] जैसा कि अलेक्जेंड्रिया के क्लेमेंट (स्ट्रॉम. VI, 17) ने उल्लेख किया है।

दैवीय व्यवस्था को आमतौर पर दो प्रकारों में वभिाजति कयिा जाता है: सामान्य व्यवस्था और वशिेष व्यवस्था। सामान्य व्यवस्था वह है जो सामान्य रूप से पूरी दुनयिा, सभी वर्गों और प्रजातयिों के प्राणयिों को अपने में समाहति करती है; वशिेष व्यवस्था वह है जो दुनयिा में सबसे वशिेष प्राणयिों और प्रत्येक अवभिाज्य तक फैली हुई है, चाहे वे कतिने भी छोटे क्यों न लगें। और ऑर्थोडॉक्स चर्च, यह मानते हुए कि ईश्वर 'सब कुछ सटीक रूप से जानता है, सबसे छोटे से लेकर सबसे बड़े तक, और प्रत्येक प्राणी के लिए वशिेष रूप से प्रदान करता है' (ऑर्थोडॉक्स कन्फेशन, भाग 1, प्रश्न 29 का उत्तर), स्पष्ट रूप से इन दोनों प्रकार की दव्यि व्यवस्था को स्वीकार करता है।

ऊपर बताई गई दैवीय व्यवस्था की अवधारणाएँ पूरी तरह से खारजि करती हैं—

क) ग्नोस्टकि, मनचिैन और अन्य वधिर्मीयों की झूठी शकि्षाएँ, जन्हिोंने सब कुछ भाग्य के अधीन करके, या दुनयिा को एक दुष्ट सद्धिांत का उत्पाद मानकर, या दुनयिा के लिए ईश्वर की देखभाल को अनावश्यक समझकर, ईश्वर की सर्वव्यापी व्यवस्था और उसके सभी कार्यों को पूरी तरह से अस्वीकार कर दयिा;[1511]

ख) पेलैजयिनों की झूठी शकि्षाएँ, जन्हिोंने अतार्ककि और तार्ककि दोनों प्राणयिों के साथ ईश्वर के वास्तवकि सहयोग को अस्वीकार कर दयिा, इसे उनके पूर्णत्व और स्वतंत्रता के साथ असंगत मानते हुए;[1512]

c) वभिन्नि संप्रदायकिों का वरिोधी संप्रदाय, जो ईश्वर की नश्चिरत पूर्वनरि्धारण (praedestinationismus) में वश्विास करते हुए, तर्कशील प्राणयिों के साथ ईश्वर के सहयोग को इस हद तक बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत करते हैं कि वे उनकी स्वतंत्रता को लगभग समाप्त कर देते हैं, और ईश्वर को उनके सभी कार्यों, अच्छे और बुरे दोनों का, वास्तवकि कारण मानते हैं;[1513]

d) अंत में, कुछ प्राचीन और आधुनकि वचिारकों का झूठा सद्धिांत, जो केवल सामान्य दव्यि व्यवस्था को स्वीकार करते हैं और वशिेष दव्यि व्यवस्था को अस्वीकार करते हैं, और बाद वाले को ईश्वर के अनुरूप नहीं मानते।[1514]

§ 97. दैवीय अनुग्रह की वास्तवकिता

कि ईश्वर वास्तव में दव्यि-प्रबंध द्वारा संसार का शासन करते हैं और अपनी सभी रचनाओं की देखभाल करते हैं, यह पवत्रि धर्मग्रंथ के अनगनित अंशों में सखिाया गया है। उदाहरण के लिए:

(क) यशायाह की पुस्तक में: *'क्योंकि वह* (ईश्वर) *स्वयं पृथ्वी के छोर तक दृष्टि डालता है और आकाश के नीचे सब कुछ देखता है* (28:24), या: *'उसके हाथ में हर जीवति प्राणी की आत्मा और मनुष्य के सब शरीर की आत्मा है'* (12:10);

ख) भजन संहति की पुस्तक में: *'आपने पृथ्वी की स्थापना की है, और वह स्थरि बनी हुई है। तेरी आज्ञाओं के अनुसार आज भी सब कुछ स्थरि है, क्योंकि सब कुछ तेरी सेवा करता है* (118:90–91); *सभी की आँखें तुझ पर टकिी हैं, और तू उन्हें समय पर उनका भोजन देता है; तू अपना हाथ खोलता है और अपनी कृपा के अनुसार हर जीवति प्राणी को तृप्त करता है* (144:15–16);

ग) नीतवचिन की पुस्तक में: *यहोवा की आँखें सर्वत्र हैं; वे दुष्टों और धर्मी दोनों पर दृष्टि रखते हैं* (15:3);

घ) नेहेमायाह की पुस्तक में: *[और एज्रा ने कहा:] 'हे प्रभु, तू एक है; तू ने स्वर्गों को, स्वर्गों के स्वर्गों को और उनकी सारी सेना को, पृथ्वी को और उस पर जो कुछ भी है, समुद्रों को और उन में जो कुछ भी है, सृजति कयिा है, और तू इन सब वस्तुओं को धारण करता है, और स्वर्गीय सेना तेरी आराधना करती है* (9:6);

ई) सोलोमन की बुद्धि की पुस्तक में: *'उसने छोटे और बड़े दोनों को बनाया, और उन सभी की समान रूप से परवाह करता है* (6:7); *'क्योंकि तेरे सवािय कोई दूसरा ईश्वर नहीं जो सभी की परवाह करता हो* (12:13);

f) मत्ती के सुसमाचार में: *ताकि तुम स्वर्ग में अपने पति के पुत्र बनो, क्योंकि वह अपने सूर्य को दुष्टों और भलों पर उदय करता है, और धर्मी और अधर्मी दोनों पर वर्षा भेजता है* (5:45);

[1511] देखें *टर्टुलयिन,* *एडवर्सस मार्शयिोनेम* II, 24; *टाइटस बोस्ट्रन,* *एडवर्सस मनचियिोस*; *ऑगस्टीन,* *डे हेरेससि* 70; *मोनेट,* *एडवर्सस कैथारोस* V, 11, § 6।

[1512] *हायरोन्यमस,* एपस्टि. LXIII (जसि XXXIII भी कहा जाता है), खंड 7, में, पेलैजयिस के वरिुद्ध क्तेसफिोन को।

[1513] *ज़्वगिली,* *डे प्रॉवडि.*, अध्याय 5, 6; *कैल्वनि,* *इंस्ट.*, 1, 18, टप्पिणी 1.

[1514] *सरिील ऑफ़ अलेक्जेंड्रयिा,* *थेसॉरस*, पुस्तक XV, पृ. 150 और बाद में।

g) प्रेरितों के काम में: (ईश्वर) *ने अपने शुभ कार्यों के द्वारा स्वयं की गवाही देना बंद नहीं किया है, हमें स्वर्ग से वर्षा और फलदायी मौसम प्रदान करते हुए, और हमारे हृदयों को भोजन और आनंद से भरते हुए (*14:17)।[1515]

चर्च के पवित्र पिताओं और शिक्षकों ने, मूर्तिपूजक दार्शनिकों[1516] और विधर्मी[1517] के विरुद्ध दैवीय व्यवस्था के ईसाई सिद्धांत का बचाव करते हुए, ठोस तर्क के माध्यम से व्यवस्था के अस्तित्व को प्रदर्शित किया, जो एक ओर, ईश्वर को संसार का सृष्टिकर्ता और दूसरी ओर, संसार को ईश्वर की सृष्टि की अवधारणाओं पर आधारित था।

सबसे पहले, उन्होंने इंगित किया:

1) सृष्टिकर्ता की अनंत भलाई, जिसके कारण वह अपनी ही रचनाओं—जिन्हें उसने केवल भलाई के लिए बनाया है—को उनके भरोसे पर नहीं छोड़ सकता। "कौन सा कारीगर," संत एम्ब्रोज़ पूछते हैं, "अपनी ही रचना की उपेक्षा करेगा?" वह जिसे स्वयं बनाना चाहता था, उसे कौन त्यागेगा और अस्वीकार करेगा? यदि किसी चीज़ की व्यवस्था करना अनुचित है, तो बनाना तो और भी अधिक अनुचित है, जब किसी भी चीज़ को बनाने में कोई अन्याय नहीं है, जबकि जो बनाया है उसकी देखभाल न करना निर्दयता की पराकाष्ठा है।"[1518] "कैसे," चर्च के एक अन्य शिक्षक पूछते हैं, "वह जो अपनी दया की प्रचुरता से अपनी रचनाओं को बनाया है, उनकी देखभाल करने में विफल हो सकता है?"[1519] "केवल ईश्वर," हम संत जॉन ऑफ़ डेमास्कस में पढ़ते हैं, "स्वभाव से ही अच्छा और बुद्धिमान है। एक सद्गुणी के रूप में, वह उनकी देखभाल करता है, क्योंकि जो देखभाल नहीं करता वह अच्छा नहीं होता; (मनुष्य और मूक पशु स्वाभाविक रूप से अपने बच्चों की देखभाल करते हैं, और जो उनकी देखभाल नहीं करता वह निंदा का पात्र होता है); और सर्व-प्रज्ञावान के रूप में, वह अपने प्राणियों के लिए जो सर्वोत्तम है उसकी परवाह करता है।"[1520]

२) सर्वव्यापी सृष्टा पर। जो कुछ भी अस्तित्व में है, उसे अपनी उपस्थिति से भरते हुए, वह प्रत्यक्ष रूप से प्रत्येक प्राणी, प्रत्येक वस्तु, प्रत्येक जीव में उपस्थित है; वह प्रत्यक्ष रूप से उनकी स्थिति और जरूरतों को जानता है; और परिणामस्वरूप, वह दुनिया के लिए प्रदान करने में केवल तभी असफल हो सकता है जब वह या तो अच्छा न हो, या निष्क्रियता और आलस्य में डूबा हो।[1521] धन्य ऑगस्टीन कहते हैं, "दुनिया को भरते हुए, ईश्वर कार्य करते हैं, और कहीं भी पीछे नहीं हटते; वे, ऐसा नहीं है कि, केवल इस विशाल संरचना को चलाते हैं जिसे उन्होंने बनाया है; अपनी महिमा की उपस्थिति से वे जो करते हैं, वह करते हैं; अपनी उपस्थिति से वे उस सब का शासन करते हैं जिसे उन्होंने बनाया है।"[1522]

3) सृष्टिकर्ता का सर्वशक्तिमानपन, जिसके कारण उन्हें संसार का पालन-पोषण करने के लिए अपने हिस्से में थोड़ी भी मेहनत नहीं करनी पड़ती। संत जॉन क्राइसोस्टोम कहते हैं, "भले ही ऐसे दसियों हज़ार संसारों की आवश्यकता हो, या यहाँ तक कि उनकी अनंत संख्या भी हो, ईश्वर फिर भी उन सभी के लिए पर्याप्त होंगे, न केवल उन्हें बनाने के लिए, बल्कि उनके बनाए जाने के बाद उनका पालन-पोषण करने के लिए भी।"[1523] "उसने सभी चीज़ों को बनाने की इच्छा की," एक अन्य चर्च पिता लिखते हैं, "और वे बन गईं; वह चाहता है कि संसार का अस्तित्व बना रहे, और यह बना रहता है, और सभी चीज़ें उसकी इच्छा के अनुसार घटित होती हैं।"[1524]

[1515] अन्य प्रासंगिक ग्रंथ: भजन संहिता 103:5–28; 134:6, 7; 146:4; यशायाह 10:13; 40:26; सभोपदेशक 5:22; 23:23, 24; 31:36, 37; सिराख 42:21–24, 26; प्रेरितों के काम 17:25, 28; रोमियों 11:36; 1 तीमुथियुस 6:13.

[1516] विचारधाराओं के अनुयायी कौन थे: अरस्तूवादी *(ओरिजिन,* पा. XXXV, 6), एपिक्यूरियन *(लुक्रेटियस,* डे रेरम नेचुरा V, 196; VI, 389; *प्लिनी* द एल्डर, नेचुरल हिस्ट्री II, 7) और स्टोइक (तुलना करें *मार्कस ऑरेलियस,* मेडिटेशन्स, VII, 7)।

[1517] नोस्टिक, मनिखीय और अन्य। ऊपर टिप्पणी 1511 देखें।

[1518] डे ऑफ़िसि. 1, पृ. 13.

[1519] *थियोडोरेट,* *कॉन्ट्रा हेरेसेस*, पुस्तक V, पृ. 10, *क्रिश्चियन रीडिंग्स* 1844, खंड IV, पृ. 224 में।

[1520] ऑर्थोडॉक्स विश्वास की सटीक व्याख्या, पुस्तक II, अध्याय 29, पृ. 125। इसी विचार को अन्य शिक्षकों ने इससे भी पहले व्यक्त किया था, उदाहरण के लिए: (क) *एंटिओक के थियोफिलिस:* 'यदि मैं परमप्रसाद की बात करता हूँ, तो मैं उसकी भलाई की बात कर रहा हूँ' (एड ऑटोल. I, पृ. 71) और ख) *नेमेसियस:* 'इसके अलावा, ईश्वर अच्छा है; अच्छा होने के नाते, वह परोपकारी है; और परोपकारी होने के नाते, वह प्रबंधक है' (दे नाट. होमिनि. c. 42).

[1521] *नेमेसेस.* दे नेचुर. होमिनि. c. 44.

[1522] *ऑगस्टीन,* *इन जॉन*, ट्रैक्टेट II, संख्या 10, *पैट्रोलॉजिया कर्सस कम्प्लेटस*, खंड XXXV, पृ. 1393। तुलना करें ग्रेगरी द ग्रेट के शब्दों से, जो नीचे टिप्पणी 1552 में उद्धृत हैं।

[1523] जॉन की होमीली V में, इन शब्दों पर: *'उसमें जीवन था।'*

[1524] *जॉन ऑफ़ डेमास्कस।* ऑर्थोडॉक्स विश्वास की सटीक व्याख्या, पुस्तक II, अध्याय 29, पृ. 124–125।

सामान्यत; जैसा कि चर्च के शिक्षकों ने देखा है, ईश्वर की दिव्य व्यवस्था को अस्वीकार करना ईश्वर के अस्तित्व को ही अस्वीकार करना है—क्योंकि यदि ईश्वर, सर्वोत्तम पूर्ण सत्ता, मौजूद है, तो वह अनिवार्य रूप से संसार का पालन-पोषण करता है; और यदि वह ऐसा नहीं करता, तो उसका अस्तित्व ही नहीं है।[1525]

दुनिया को संबोधित करते हुए, चर्च के शिक्षकों और लेखकों ने मुख्य रूप से निम्नलिखित बातों पर ध्यान केंद्रित किया:

1) कि ईश्वर की दिव्य व्यवस्था के बिना संसार अपनी इच्छा से अस्तित्व में नहीं रह सकता, क्योंकि उसे शून्य से अस्तित्व में बुलाया गया है और वह लगातार उसी शून्य के ऊपर मंडराता रहता है। यह विचार व्यक्त किया गया है:

क) *लैक्टैंटियस:* "प्रकृति, यदि सृष्टिकर्ता की दिव्य व्यवस्था और शक्ति उससे हटा दी जाए, तो वह पूर्ण शून्यता है;"[1526]

ख) *महाधर्माध्यक्ष अथेनासियस:* "सृष्टि की प्रकृति, जो शून्यता से उत्पन्न हुई है, स्वतः परिवर्तनशील, अस्थायी, नश्वर है...; इसलिए, ताकि जो कुछ भी सृजित है—जो अपनी प्रकृति से ही परिवर्तनशील और नाशवान है—वह वास्तव में नष्ट न हो जाए, और संसार अपनी पूर्व शून्यता में वापस न लौट जाए, जिसने अपने शाश्वत वचन द्वारा सभी चीजों की रचना की और प्राणियों को स्वभाव प्रदान किया, उसने उन्हें अपनी ही दयालुता पर नहीं छोड़ा, कहीं वे अपनी पूर्व शून्यता में वापस न लौट जाएँ, बल्कि अपनी दयालुता से उन्हें संरक्षित करता है और अपने वचन द्वारा उनका शासन करता है, जो स्वयं परमेश्वर है;"[1527]

ग) *अलेक्जेंड्रिया के सिरिल:* "सभी चीजों का सृष्टिकर्ता अपनी प्रकृति से ही जीवन है, और एक अकल्पनीय तरीके से सभी चीजों में अपनी शक्ति का संचार करता है; क्योंकि अन्यथा, शून्य से अस्तित्व में आई सत्ताएं अस्तित्व में संरक्षित और बनी नहीं रह सकतीं; अन्यथा, वे अचानक अपनी ही प्रकृति, यानी शून्यता में लौट जाएँगी;"[1528]

घ) *ऑगस्टीन:* "सृष्टिकर्ता की सामर्थ्य और सर्वशक्तिमान और सर्व-व्यापी की शक्ति प्रत्येक प्राणी के अस्तित्व का कारण हैं; और यदि यह शक्ति किसी भी प्राणियों को शासित करना बंद कर दे, तो उनके रूप तुरंत अस्तित्व में नहीं रहेंगे, और सारी प्रकृति नष्ट हो जाएगी। क्योंकि यद्यपि पृथ्वी पर बनी एक इमारत तब भी खड़ी रहती है जब निर्माणकर्ता अपना काम पूरा करके चला जाता है, परन्तु यदि ईश्वर अपनी दिव्य व्यवस्था उससे वापस ले लेता, तो यह संसार पलक झपकते भी नहीं टिक सकता था।"[1529]

२) कि ईश्वर की व्यवस्था के बिना, दुनिया उस अद्भुत व्यवस्था को बनाए नहीं रख सकती जो देखी जाती है; इसके विपरीत, सब कुछ अपनी सीमाओं से बाहर चला जाएगा, अव्यवस्था और अराजकता में गिर जाएगा। यह सेंट ग्रेगरी द थियोलोजियन, धन्य ऑगस्टीन, धन्य थियोडोरेट और अन्य लोगों का तर्क है। पहला कहता है: "हमें यह विश्वास करना चाहिए कि एक दिव्य व्यवस्था है जो संसार की सभी चीजों को बनाए रखती है और एक साथ बाँधती है—क्योंकि जिन प्राणियों के लिए एक सृष्टिकर्ता आवश्यक है, उनके लिए एक व्यवस्थापक भी उतना ही आवश्यक है; अन्यथा संसार, एक भँवर में जहाज की तरह संयोग से इधर-उधर उछाला जाता हुआ, पदार्थ की अव्यवस्थित हलचलों के कारण, तुरंत नष्ट हो जाएगा, बिखर जाएगा और अपने मूल अराजकता और अव्यवस्था में लौट जाएगा।"[1530] दूसरा लिखता है: "ईश्वर अपने प्राणियों के शासन के कार्य से एक भी दिन विराम नहीं लेते, कहीं ऐसा न हो कि वे तुरंत

[1525] अलेक्जेंड्रिया के क्लेमेंट कहते हैं: 'यह स्पष्ट है कि जो कोई भी दिव्य व्यवस्था को स्वीकार नहीं करता है, वह खंडन की तुलना में दंड का अधिक पात्र है, और वास्तव में, एक नास्तिक है' (स्ट्रॉम. VI, पृ. 486)। लैक्टैंशियस एपिक्यूरस के विरुद्ध और भी अधिक दृढ़ता से बोलते हैं: 'यदि ईश्वर है, तो वह निश्चित रूप से परोपकारी है, जैसा कि एक ईश्वर के लिए उचित है; और दिव्यता को किसी अन्य तरीके से उस पर लागू नहीं किया जा सकता, जब तक कि वह अतीत को दृढ़ता से न थामे, वर्तमान को न जाने, और भविष्य की पूर्वदृष्टि न रखे। अत; चूँकि उसने परोपकारिता को अस्वीकार कर दिया, उसने ईश्वर के अस्तित्व को भी नकार दिया।' फिर भी जब उन्होंने ईश्वर के अस्तित्व की घोषणा की, तो उन्होंने एक ही समय में दिव्य व्यवस्था को भी स्वीकार किया। क्योंकि एक के बिना दूसरा न तो अस्तित्व में रह सकता है, न ही समझा जा सकता है (De ira Dei, अध्याय 9; तुलना करें अध्याय 4, Patrolog. Curs. compl., खंड VII, पृष्ठ 98 और 86)।

[1526] *De falsa sapientia*, पुस्तक III, अध्याय 28, उपरोक्त *Patrologia* में, खंड VI, पृ. 437.

[1527] ओरेट. कॉन्ट्रा जेंट. एन. 41, इन ओप. वॉल. I, पी. 40, सं. पेरिस, 1698.

[1528] जॉन में, पुस्तक IX; पृ. 793।

[1529] De Genes. ad litt. IV, ch. 12, n. 22.

[1530] गरीबों के प्रति प्रेम पर एक भाषण, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स* में, II, 39.

अपने प्राकृतिक मार्गों से भटक जाएँ, जिनके द्वारा उन्हें उनके विकास की पूर्णता प्राप्त करने के लिए निर्देशित और मार्गदर्शन किया जाता है, और प्रत्येक अपनी ही जाति के भीतर वही बना रहे जो वह है। और वास्तव में, यदि ईश्वर की उस बुद्धिमत्ता की गति, जिससे प्रभु *उनके भले के लिए* शासन करते हैं (Wisdom 8:1), उनसे छीन ली जाए, तो वे कुछ भी नहीं रह जाएँगे।[1531] अंत में, धन्य थियोडोरेट निम्नलिखित तर्क प्रस्तुत करते हैं: "जो लोग दैवीय व्यवस्था के अस्तित्व पर विश्वास नहीं करते और मूर्खतापूर्वक यह दावा करते हैं कि स्वर्ग और पृथ्वी से मिलकर बनी यह दुनिया बिना किसी नाविक के इतनी सामंजस्य और व्यवस्था में चल रही है, वे मुझे ऐसे प्रतीत होते हैं जैसे कोई व्यक्ति जिहाज पर बैठकर समुद्र पार कर रहा हो, और यह देख रहा हो कि नाविक कैसे चप्पूओं को निर्देशित करता है और पतवार को ठीक वैसे ही चलाता है जैसे उसे चलाना चाहिए, — तो वे यह घोर झूठ बोलते कि नाव के पिछले हिस्से में कोई नाविक नहीं है, नाव में कोई चप्पू नहीं है, उसे पतवार की चाल से कोई मार्गदर्शन नहीं मिलता, बल्कि वह अपने आप चलती है, खुद ही लहरों की ताकत को पार करती है, हवाओं के हमले का सामना करती है, और उसे नाविकों या उस नाविक से किसी मदद की ज़रूरत नहीं है जो सभी चप्पू चलाने वालों को ज़रूरी आदेश देता है। जो लोग इस प्रकार सोचते हैं, जबकि वे स्पष्ट रूप से और निस्संदेह उस ब्रह्मांड के स्वामी को देखते हैं, जो अपने द्वारा बनाई गई सृष्टि का शासन करते हैं, और जो सभी चीजों को सामंजस्यपूर्ण क्रम में मार्गदर्शन और संचालित करते हैं..., जानबूझकर आँखें मूंद लेते हैं या निर्लज्जता से काम लेते हैं; और जबकि वे दैवीय कृपा के उपहारों को प्राप्त करते हैं, वे उसी समय उनका अपमान करते हैं, और जिन चीजों का वे आनंद लेते हैं, उन्हीं से वे स्वयं को प्रदाता के विरुद्ध हथियारबंद करते हैं।"[1532]

§ 98. दैवीय अनुग्रह के प्रत्येक कार्य की वास्तविकता

सामान्य रूप से संसार की व्यवस्था का श्रेय ईश्वर को देते हुए, पवित्र शास्त्र—और उसका अनुसरण करने वाले चर्च के शिक्षक—विशेष रूप से, व्यवस्था के प्रत्येक कार्य का श्रेय उन्हें देते हैं, अर्थात्:

1) प्राणियों का संरक्षण। यह पवित्र शास्त्र में—के द्वारा सिखाया गया है—

क) भजन संहिता 103 में भजन संहिताकार, और विशेष रूप से निम्नलिखित छंदों में: *'वे सभी समय पर उनका भोजन देने के लिए आप का इंतजार करते हैं* (27); *'आप उन्हें देते हैं, और वे प्राप्त करते हैं; आप अपना हाथ खोलते हैं, और वे भलाई से परिपूर्ण हो जाते हैं* (28); *'यदि आप अपना मुँह छिपाएँ, तो वे व्याकुल हो जाते हैं; यदि आप उनकी साँस ले लें, तो वे मरकर धूल में लौट जाते हैं* (29); 'जब *आप अपनी आत्मा भेजते हैं, तो वे सृजित हो जाते हैं, और आप पृथ्वी का मुख नवीनीकृत करते हैं* (30);

6) भविष्यवक्ता यशायाह: *'अपनी आँखें उठाकर आकाश की ऊँचाइयों को देखो और देखो: इन्हें किसने बनाया? जो अपनी सेना को गिनती से बाहर निकालता है? वह उन सब को नाम से पुकारता है; उसकी सामर्थ्य की अधिकता और उसकी शक्ति की महानता के कारण, एक भी नहीं खोता'* (यशायाह 40:26);

ग) प्रेरित पौलुस: 'परमेश्वर *किसी मानवीय हाथों से सेवा नहीं पाते, मानो उन्हें किसी वस्तु की आवश्यकता हो, क्योंकि वे स्वयं सभी को जीवन और श्वास और सब कुछ देते हैं* (प्रेरितों के काम 17:25); *'वह* (परमेश्वर का पुत्र) *सभी वस्तुओं से पहले है, और उसी में सभी वस्तुएँ एक साथ टिकी रहती हैं* (कुलुस्सियों 1:17)।

चर्च के शिक्षक और लेखक भी यही भावनाएँ व्यक्त करते हैं, उदाहरण के लिए:

क) *एथेनागोरस:* "यह आवश्यक है कि जो लोग ईश्वर को सभी चीजों का स्रष्टा मानते हैं, उन्हें अपने सिद्धांतों के प्रति सच्चे रहने के लिए, जो कुछ भी अस्तित्व में है, उसकी संरक्षण (φυλακήν) का श्रेय उनकी बुद्धि और सत्य को देना चाहिए;"[1533]

ख) *बेसिल द ग्रेट:* "प्रत्येक सृजित प्राणी, चाहे वह दृश्यमान हो या बोधगम्य, उसे अपने अस्तित्व के लिए ईश्वर की देखभाल की आवश्यकता होती है;"[1534]

(c) *महात्मा अथेनासियस:* "पिता का सर्वशक्तिमान और परम पवित्र वचन, जो सभी चीजों में व्याप्त है, हर जगह अपनी शक्ति का प्रकटीकरण करता है, और जो कुछ भी दृश्यमान और अदृश्य है उसे प्रकाशित करता है, वह सभी

[1531] De Genes. ad litt. IV, ch. 12, n. 23.

[1532] De provid. Orat. II, खंड IV, पृ. 332–333 में।

[1533] मृतकों के पुनरुत्थान पर, पृ. 55, सं. 1559.

[1534] पवित्र आत्मा पर, अध्याय 8, *द वर्क्स ऑफ़ द होली फ़ादर्स*, VII, 259 में।

चीजों को अपने भीतर समाहति और धारण करता है, ताकि उसकी शक्ति की पहुँच से बाहर कुछ भी न रहे, बल्कि सभी चीजों के माध्यम से और सभी चीजों में, प्रत्येक प्राणी व्यक्तिगत रूप से और सभी प्राणी सामूहकि रूप से, वह जीवन प्रदान करता है और उनका पालन-पोषण करता है;"[1535]

घ) *जेरोम:* "आइए हम यह पहचानें कि हम कुछ भी नहीं हैं, यदि परमेश्वर स्वयं हमारे भीतर उस वरदान को बनाए न रखते जो उन्होंने हमें दिया है, जैसा कि प्रेरित कहते हैं: *'न तो इच्छा करने वाले की, न ही दौड़ने वाले की, परन्तु परमेश्वर की, जो दया दिखाता है* (रोमियों 9:16)।"[1536]

२) सृष्टि के प्राणियों के साथ ईश्वर का सहयोग या अनुमति। सृष्टि के प्राणियों, विशेष रूप से नैतिक प्राणियों के साथ ईश्वर के सहयोग का विचार पवित्र धर्मग्रंथ में व्यक्त किया गया है, जब यह कहा जाता है कि ईश्वर *अपनी शक्ति के वचन द्वारा सभी चीजों को धारण करता है* (इब्रानियों १:३), और *वह सभी जीवन का स्रोत है* (१ तीमुथियुस ६:१३); कि यद्यपि सृजित प्राणियों के *कार्य भिन्न-भिन्न हैं, परमेश्वर एक ही हैं, जो सब में सब कुछ करते हैं* (1 कुरिन्थियों 12:6); कि *परमेश्वर अपनी इच्छा के अनुसार काम करने और इच्छा रखने के लिए तुम में काम करते हैं* (फिलिप्पियों 2:13), *और यह कि उसी में हम जीते और घूमते और अपनी सत्ता रखते हैं* (प्रेरितों के काम 17:28)। ईश्वर की अनुमति का विचार, उदाहरण के लिए, प्रेरित संत पौलुस द्वारा तब व्यक्त किया जाता है जब वे अन्यजातियों के बारे में लिखते हैं: *'इसलिये परमेश्वर ने उन्हें उनके हृदय की अभिलाषाओं के वश में अशुद्धता के लिये छोड़ दिया* (रोमियों 1:24), और आगे: *'इसलिये परमेश्वर ने उन्हें लज्जाजनक वासनाओं के वश में छोड़ दिया* (26), और फिर: *'और चूँकि उन्होंने परमेश्वर को मानना उचित नहीं समझा, इसलिए परमेश्वर ने उन्हें एक भ्रष्ट मन के हवाले कर दिया, ताकि वे अनुचित काम करें* (28); या, जब वह यहूदियों के बारे में बोलते हैं: *'ईश्वर ने उन्हें सुस्ती की आत्मा दी है, ऐसी आँखें जो नहीं देखतीं और ऐसे कान जो नहीं सुनते* (रोमियों 11:8), *'ईश्वर ने उन्हें अवज्ञा के हवाले कर दिया है* (32)।[1537] चर्च के इवैंजेलिकल पिता और शिक्षक भी यही सिखाते हैं:

a) *जॉन क्रिसोस्टोम:* "हर चीज़ पर ईश्वर की दिव्य-दृष्टि का शासन है; लेकिन कुछ चीज़ें ईश्वर की अनुमति (συγχωροῦντος) से होती हैं, जबकि अन्य उनके सक्रिय हस्तक्षेप (ἐνεργούντος) से होती हैं"[1538] और अन्यत्र: "जान लो कि ईश्वर सभी चीजों का विधान करता है, सभी चीजों का प्रबंध करता है; कि हम स्वतंत्र हैं; कि कुछ मामलों में ईश्वर हमारे पक्ष में कार्य करता है, जबकि अन्य मामलों में वह केवल उन्हें होने की अनुमति देता है; कि वह किसी भी बुराई की इच्छा नहीं करता; कि हर चीज केवल उसकी इच्छा से नहीं होती, बल्कि हमारी इच्छा से भी होती है—हर बुराई केवल हमारी इच्छा से, हर अच्छाई हमारी इच्छा से और साथ ही उसकी सक्रिय हस्तक्षेप से;"[1539]

ख) *डोरोथियस:* "जो कुछ भी होता है वह या तो ईश्वर की अनुमति से होता है या उनकी सद्इच्छा से;"[1540]

ग) *थियोडोरेट:* "ईश्वर की इच्छा के बिना कुछ भी नहीं होता; लेकिन या तो ईश्वर अच्छाई लाने के लिए कार्य करता है, या वह पहले किए गए पापों के कारण दुर्भाग्य की अनुमति देता है;"[1541]

d) *दमास्कीन:* "जो दिव्य व्यवस्था पर निर्भर करता है, वह या तो ईश्वर की सद्इच्छा से होता है या उनकी अनुमति से। उनकी सद्इच्छा से वह सब आता है जो निस्संदेह अच्छा है; उनकी अनुमति से, विपरीत... कर्मों का चुनाव हम पर निर्भर करता है; हालाँकि, अच्छे कर्मों का परिणाम ईश्वर की सहायता पर निर्भर करता है—क्योंकि ईश्वर, अपनी पूर्वज्ञान के अनुसार, सही विवेक से अच्छाई का चुनाव करने वालों की न्यायसंगत रूप से सहायता करते हैं; जबकि

[1535] ओरेट. कॉन्ट्रा जेंट., नं. 42.

[1536] पत्र XLIII, क्तेसिफोन बनाम पेलैजियस पर टिप्पणी 6।

[1537] 'वचन: *परमेश्वर ने सभी को अवज्ञा के हवाले कर दिया है* (रोमियों 11:32); और फिर: *'ईश्वर ने उन्हें सुस्ती का आत्मा, ऐसी आँखें दी हैं जिनसे वे देख नहीं सकते, और ऐसे कान जिनसे वे सुन नहीं सकते* (रोमियों 11:8) को इस प्रकार नहीं समझना चाहिए जैसे ईश्वर स्वयं इन सब का कारण हों, बल्कि इस प्रकार समझना चाहिए कि उन्होंने केवल इसकी अनुमति दी; क्योंकि मनुष्य को स्वतंत्रता दी गई है, और एक अच्छा कार्य अपनी इच्छा से किया जाना चाहिए" *(जॉन ऑफ़ डेमास्कस,* सच्चे विश्वास की सटीक व्याख्या, पुस्तक IV, अध्याय 19, पृ. 282)।

[1538] *अक्टा अपोस्टोलिका*, उपदेश XXIII, संख्या 4 में।

[1539] तिमोथी को दूसरी पत्री, अध्याय IV, उपदेश VIII, n. 4.

[1540] डॉक्ट्रिन. XIV, इन बिब्लियोथ. पैट्र. ग्रेको-लेट. वॉल्यूम XII, पृ. 836, पेरिस 1644।

[1541] यहेजकेल के अध्याय 38 में।

बुरे कर्मों का परिणाम ईश्वर द्वारा मनुष्य को त्यागने पर निर्भर करता है, क्योंकि ईश्वर उसी पूर्वज्ञान के अनुसार मनुष्य को न्यायसंगत रूप से त्याग देते हैं।"[1542]

3) प्राणियों का शासन। ईश्वर का यह कार्य पवित्र शास्त्र के निम्नलिखित अंशों में उल्लिखित है।

1 इति. 29:11–12. *हे यहोवा, महानता, सामर्थ्य, महिमा, जय और शोभा तेरी ही है; और जो कुछ आकाश और पृथ्वी में है, वह सब तेरा ही है; हे यहोवा, राज्य तेरा ही है, और तू सर्वोपरि प्रभु के रूप में प्रतिष्ठित है। 12 धन-संपत्ति और आदर दोनों आपकी उपस्थिति से आते हैं; आप सर्व पर शासन करते हैं, और आपके हाथ में सामर्थ्य और शक्ति है; और सब वस्तुओं को ऊँचा करने और बल देने की शक्ति आपके ही हाथ में है।*

दानिय्येल 2:21. *वही समयों और ऋतुओं को बदलता है; वही राजाओं को सिंहासन से उखाड़ता और राजाओं को स्थापित करता है; वही बुद्धिमानों को बुद्धि और समझदारों को समझ प्रदान करता है।*

हितोपदेश 8:1. *यह* (परमेश्वर का ज्ञान) *एक छोर से दूसरे छोर तक शीघ्रता से फैलता है और सब वस्तुओं को भलाई के लिए व्यवस्थित करता है।*

सभोपदेश 14:3. *हे पिता, आपकी परमप्रबंधकता जहाज को चलाती है, क्योंकि आपने समुद्र के बीच एक मार्ग और लहरों के बीच एक सुरक्षित पथ प्रदान किया है।*

मत्ती 11:25। *यीशु ने कहा: 'हे स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु, पिता, मैं तेरी स्तुति करता हूँ।'*

1 तीमुथियुस 1:17. *युगों के राजा, अविनाशी, अदृश्य, एकमात्र बुद्धिमान परमेश्वर को अनन्तकाल तक सम्मान और महिमा हो।*

प्रकाशितवाक्य 17:14. *वह प्रभुओं का प्रभु और राजाओं का राजा है* (देखें 1 तीमुथियुस 6:15)।

ईश्वर का यह कार्य चर्च के शिक्षकों द्वारा भी प्रचारित किया जाता है:

संत ग्रेगरी द थियोलोजियन: 'जो लोग ईश्वर की आज्ञाओं की अथाह गहराई को समझने में असफल रहते हैं, जिनके द्वारा सभी चीजें पूरी होती हैं, वे इस पर चकित न हों!' जो लोग संसार के शासन को उस कलाकार के हाथ सौंपते हैं, जो निस्संदेह हमसे अधिक बुद्धिमान है, और जो अपनी सृष्टि को अपनी इच्छानुसार किसी भी लक्ष्य और किसी भी तरीके से मार्गदर्शन करता है—उनके लिए आश्चर्य की बात नहीं होनी चाहिए, भले ही जिनका उपचार हो रहा हो वे पीड़ित हों! इस प्रकार के विधानों के अनुसार, वह (जूलियन) बुराई के लिए प्रेरित नहीं किया जाता है (देवता, जो स्वभाव से अच्छे हैं, किसी भी तरह से बुराई के दोषी नहीं हैं, और बुरे कर्म उन लोगों के हैं जो स्वतंत्र रूप से बुराई का चुनाव करते हैं), लेकिन उसकी प्रवृत्ति में बाधा नहीं डाली जाती है।"[1543]

संत जॉन क्राइसोस्टोम: "यह कि दिव्य व्यवस्था सभी चीजों को संचालित करती है, यह हमारे साथ होने वाली घटनाओं से देखा जा सकता है। क्योंकि दिव्य व्यवस्था के बिना कुछ भी नहीं होता, लेकिन झुंडों और अन्य सभी चीजों को मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। और यह कि अतीत में भी सब कुछ संयोग से नहीं हुआ, यह गेहेना द्वारा, साथ ही नूह के समय की बाढ़, आग, मिस्रवासियों के डूबने, और जंगल में हुई घटनाओं से भी स्पष्ट होता है।"[1544]

यरूशलेम के संत सिरिल: "दिव्य शास्त्र और सत्य की शिक्षा एक ईश्वर को स्वीकार करती है, जो अपनी शक्ति से सभी पर शासन करते हुए भी अपनी इच्छा से अनेक बातें सहन करते हैं। वह मूर्तिपूजकों पर भी शासन करते हैं; फिर भी वह अपनी कृपा से उन्हें सहन करते हैं।" वह उन ईसा-विरोधियों पर शासन करता है जो उससे मुंह मोड़ लेते हैं; फिर भी वह उन्हें अपनी महान सहनशीलता से सहन करता है; वह शैतान पर शासन करता है, फिर भी वह उसे भी सहन करता है; वह उसे कमजोरी के कारण नहीं सहन करता, जैसे कि वह उससे पराजित हो जाएगा... हे ईश्वर की सर्व-प्रज्ञापूर्ण व्यवस्था! यह दुष्ट इरादे को विश्वासियों के उद्धार का साधन बना देती है। क्योंकि जिस प्रकार इसने भाइयों की यूसुफ के प्रति घृणा को उसके अपने घर को स्थापित करने के साधन में बदल दिया, और, उन्हें घृणा के कारण अपने भाई को बेचने की अनुमति देकर, उस व्यक्ति के सिंहासनारोहण का मार्ग खोल दिया जिसे यह स्वयं चाहती थी, उसी प्रकार इसने शैतान को मानव जाति के विरुद्ध युद्ध करने की अनुमति दी, ताकि विजेताओं को मुकुट पहनाया जा सके, और ताकि जीत हासिल

[1542] सही आस्था की व्याख्या, पुस्तक II, अध्याय 29, पृ. 125–127।

[1543] जूलियन पर प्रवचन 1, पवित्र पिताओं के कार्य, I, 112 में।

[1544] *एपिस्ट. एड कोलोस.*, पुस्तक II, होमीली V।

करने पर, वह स्वयं—सबसे कमजोर से पराजित होकर—सबसे बड़ी अपमानितता झेलता है, जबकि मनुष्य और अधिक महिमामय हो उठते हैं, क्योंकि उन्होंने एक समय के महादूत को हराया था।"[1545]

संत एफ्रेम सीरियाई: "मैं इमारतें देखता हूँ, और मैं निर्माता का अनुमान लगाता हूँ; मैं दुनिया को देखता हूँ, और मैं दैवीय व्यवस्था को पहचानता हूँ; मैं देखता हूँ कि एक नाविक के बिना जहाज डूब जाता है: मैंने देखा है कि जब तक ईश्वर उनका निर्देशन नहीं करते, मानव मामले कुछ भी नहीं होते। मैं एक शहर और नागरिक समाजों के विविध संगठन को देखता हूँ, और मुझे एहसास होता है कि सब कुछ ईश्वर की दिव्य व्यवस्था से ही कायम है। झुंड चरवाहे पर निर्भर है, और पृथ्वी पर जो कुछ भी उगता है वह ईश्वर पर निर्भर है। किसान के अधिकार में है कि वह खरपतवार से गेहूँ को अलग करे; यह ईश्वर के अधिकार में है कि वह पृथ्वी पर रहने वालों की पारस्परिक एकता और मानसिक सामंजस्य में विवेक सुनिश्चित करे। राजा के अधिकार में है कि वह सैनिकों की टुकड़ियाँ तैनात करे; यह ईश्वर के अधिकार में है कि वह सभी चीजों के लिए एक निश्चित व्यवस्था स्थापित करे। पृथ्वी पर कोई भी चीज़ बिना किसी मुखिया के अस्तित्व में नहीं है, क्योंकि ईश्वर ही सभी चीजों की शुरुआत है। नदियाँ अपने स्रोतों से बहती हैं, और कानून ईश्वर की बुद्धि से उत्पन्न होते हैं। पृथ्वी फल देती है, लेकिन यदि स्वर्ग से वर्षा न हो, तो वह अपनी इच्छा से कुछ भी उत्पन्न नहीं कर सकती। दिन प्रकाश के सार को मूर्त रूप देता है, लेकिन उसे पूर्ण होने के लिए सूर्य की आवश्यकता होती है। इसी प्रकार, अच्छे कर्म मनुष्यों द्वारा किए जाते हैं, लेकिन उन्हें ईश्वर द्वारा पूर्ण किया जाता है।"[1546]

धन्य थियोडोरेट: "सृष्टिकर्ता अपनी सृष्टि का शासन करते हैं, और उन्होंने अपनी बनाई हुई नाव को मार्गदर्शन के बिना नहीं छोड़ा है; बल्कि वह स्वयं नाव बनाने वाले और माली दोनों हैं जिन्होंने भौतिक दुनिया का पोषण किया है। उन्होंने भौतिक दुनिया की रचना की, नाव बनाई, और लगातार इसकी पतवार संभालते हैं।"[1547]

§ 99. दोनों प्रकार की दैवीय व्यवस्था की वास्तविकता

दिव्य प्रबंध, अपने सभी कार्यों के साथ, न केवल सामान्य रूप से संसार, प्राणियों के कुल और प्रजातियों तक, बल्कि प्रत्येक सृजित प्राणी तक विशेष रूप से भी फैला हुआ है — अर्थात्, न केवल सामान्य प्रबंध है, बल्कि विशेष प्रबंध भी है।

उदाहरण के लिए, यह वही है जो पवित्र शास्त्र सिखाता है:

(क) भजनकार के शब्दों में: *'सभी की आँखें तुझ पर लगी हैं, और तू समय पर उन्हें उनका भोजन देता है; तू अपना हाथ खोलता है और अपनी कृपा के अनुसार हर जीवित प्राणी को तृप्त करता है'* (भजन संहिता 144:15–16); या: *'बारी-बारी से प्रभु की स्तुति का भजन गाओ; हमारे परमेश्वर के लिए वीणा के साथ गाओ। वह आकाश को बादलों से ढाँकता है, पृथ्वी के लिए वर्षा तैयार करता है, पहाड़ों पर घास उगाता है [और मानव जाति के लाभ के लिए अनाज]; वह मवेशियों को और जब काले कौवे उसके पास पुकारते हैं तो उन्हें चारा देता है'* (भजन संहिता 146:7–9);

ख) बुद्धिमान के शब्दों में: *आप जो कुछ भी अस्तित्व में है उससे प्रेम करते हैं, और आपने अपनी बनाई किसी भी चीज़ से घृणा नहीं की, क्योंकि यदि आप उससे घृणा करते तो आपने उसे बनाया ही नहीं होता। और यदि आपकी इच्छा न होती तो कुछ भी कैसे बना रहता? या जो कुछ भी आपके द्वारा अस्तित्व में नहीं लाया गया, वह कैसे संरक्षित हो सकता था? परन्तु आप सभी चीज़ों को क्षमा करते हैं, क्योंकि हे प्रभु, आत्माओं के प्रेम करने वाले, सभी वस्तुएँ आपकी ही हैं* (ज्ञान 11:25–27);

ग) स्वयं उद्धारकर्ता के शब्दों में: *'इसलिये तुम अपने स्वर्गीय पिता के बच्चे बनो, क्योंकि वह अपने सूर्य को दुष्टों और भलों पर उदय करता है, और धर्मी और अधर्मी दोनों पर वर्षा करता है'* (मत्ती 5:45); *आकाश के पक्षियों को देखो: वे न बोते हैं, न काटते हैं, और न भण्डारों में इकट्ठा करते हैं; फिर भी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उन्हें खिलाता है। क्या तुम उनसे कहीं अधिक मूल्यवान नहीं हो?* (6:26)। *यदि परमेश्वर खेत के घास को, जो आज है और कल आग में डाल दी जाती है, इतना सुसज्जित करता है, तो वह तुम्हें, हे अल्पविश्वासी, कितना अधिक सुसज्जित करेगा!* (6:30). *क्या दो छोटे पक्षी एक पैसा में नहीं बिकते? फिर भी, तुम्हारे पिता की इच्छा के बिना उनमें से एक भी नहीं गिरेगा; और तुम्हारे सिर के सभी बाल भी गिने हुए हैं* (10:29–30)।

[1545] प्रवचन VIII, II. 4, पृष्ठ 146 रूसी अनुवाद में।

[1546] आत्म-निंदा और स्वीकारोक्ति, पवित्र पिताओं के कार्यों में, XII, 216.

[1547] दिव्य प्रबंध पर, भाषण 1, खंड VI, पृ. 325 में।

पवित्र पिताओं और चर्च के लेखकों का यही उपदेश है:

क) *आइरेनियस:* "यदि कोई हमसे पूछे कि जो कुछ भी सृजित होता है और घटित होता है, वह ईश्वर को ज्ञात है या नहीं, और क्या, उनकी दिव्य व्यवस्था द्वारा, प्रत्येक प्राणी वह सब कुछ अनुभव करता है जो उस पर आता है, तो हम सर्वसम्मति से उत्तर देंगे कि जो कुछ भी सृजित होता है, जो घटित होता है, या जो आने वाला है, वह ईश्वर के ज्ञान से परे नहीं है; इसके विपरीत, उनकी दिव्य व्यवस्था द्वारा प्रत्येक प्राणी को उसकी अपनी प्रकृति, संरचना, संख्या और गुण प्राप्त होता है, और बिल्कुल भी कुछ भी संयोग से नहीं होता है..."[1548]

ख) *एथेनागोरस:* "यह जानना आवश्यक है कि न तो पृथ्वी पर और न ही स्वर्ग में कोई भी चीज़ देखभाल या दिव्य व्यवस्था के बिना नहीं रहती; लेकिन सृष्टिकर्ता की देखभाल सभी चीजों पर समान रूप से लागू होती है, चाहे वे अदृश्य हों या दृश्यमान, छोटी हों या बड़ी: क्योंकि सभी प्राणी सृष्टिकर्ता की देखभाल के जरूरतमंद हैं, ठीक वैसे ही जैसे प्रत्येक व्यक्ति अपनी प्रकृति और अपने उद्देश्य के अनुसार होता है;"[1549]

ग) *अलेक्जेंड्रिया के क्लेमेंट:* "मसीह के सिद्धांत के अनुरूप एक सिद्धांत ईश्वर को सभी चीजों का स्रष्टा मानता है, और उसकी दिव्य व्यवस्था व्यक्तिगत प्राणियों (μέχρι τών κατά μέρος) तक भी फैली हुई है;"[1550]

घ) *साइप्रियन:* "यह कहना कि ईश्वर की इच्छा के बिना कुछ भी, यहाँ तक कि सबसे छोटी वस्तु भी, घटित नहीं होता, तब तक ईश्वर को सम्मान देना नहीं है, जब तक हम यह जानते और मानते हैं कि सभी चीजें उनके इशारे और आदेश द्वारा शासित हैं;"[1551]

ई) *अलेक्जेंड्रिया के सिरिल:* "दैवीय स्वभाव की विशेषताओं में से एक यह है कि ईश्वर एक साथ सभी चीजों को बनाए रख सकते हैं और अपनी व्यवस्था को प्रत्येक प्राणी तक, यहां तक कि सबसे तुच्छ वस्तुओं तक भी विस्तारित कर सकते हैं।"[1552]

आखिरकार, यही वह है जो विवेक सिखाता है। यदि ईश्वर अपने सभी प्राणियों का पालन-पोषण नहीं करते, या यदि उनकी दिव्य व्यवस्था केवल संसार की महान चीजों, केवल प्राणियों के कुल और प्रजातियों तक ही सीमित है, लेकिन छोटी चीजों और प्रत्येक अविभाज्य इकाई तक नहीं फैली है, तो ऐसा दो कारणों से संभव है: या तो इसलिए कि ईश्वर अपने सभी प्राणियों का पालन-पोषण *नहीं कर सकते*, या इसलिए कि *वे* नहीं *करना चाहते*। लेकिन पूर्व या उत्तरवर्ती कोई भी कारण स्वीकार्य नहीं है।

यदि ईश्वर दुनिया की सभी वस्तुओं और सभी प्राणियों, प्रत्येक को विशेष रूप से, पालन-पोषण *नहीं* कर *सकते*, तो ऐसा या तो इसलिए है क्योंकि वह इन सभी वस्तुओं और प्राणियों को, उनकी असाधारण बहुतायत के कारण, नहीं जानते हैं, या फिर ऐसी बड़ी संख्या में, विविध और तरह-तरह की वस्तुओं और प्राणियों को व्यवस्थित करने और शासित करने के लिए बुद्धि और शक्ति की कमी के कारण। लेकिन ईश्वर सबसे पूर्ण सत्ता हैं; अत; वह सर्वज्ञ, अनंत रूप से बुद्धिमान, और सर्वशक्तिमान हैं।

यदि ईश्वर अपनी सभी सृष्टियों—सामान्यतःसभी और विशेषतःप्रत्येक—की व्यवस्था करना *नहीं चाहता*, तो यह या तो भलाई की कमी के कारण है; या लापरवाही और उदासीनता के कारण; या इसलिए कि छोटे-मोटे मामलों और अविभाज्य प्राणियों की व्यवस्था करना उसकी महिमा के अनुरूप नहीं है। लेकिन पहले दो अनुमान स्पष्ट रूप से ऐसे हैं कि कोई भी विवेकी व्यक्ति उन्हें क्षण भर के लिए भी नहीं सोचेगा। जहाँ तक अंतिम धारणा का सवाल है, जो अधिक

[1548] *Contr. haeres.* II, पृ. 26, i. 3.

[1549] मृतकों के पुनरुत्थान पर, पृ. 56, संस्करण 1559.

[1550] स्ट्रोम. 1, अध्याय II; तुलना करें IV, अध्याय 6, 12.

[1551] एपिस्टल, पुस्तक I, पत्र 3।

[1552] लिब. थिसिव्हर. XXII, पृ. 306. इसके अतिरिक्त इनके शब्द भी उल्लेखनीय हैं: (क) *धन्य ऑगस्टीन:* 'जो (ईश्वर) न केवल स्वर्ग और पृथ्वी को, न केवल देवदूत और मनुष्य को, बल्कि सबसे छोटे और सबसे तुच्छ जीव के आंतरिक अंगों को भी, न तो पक्षी के पंख को, न तो घास के फूल को, न ही किसी पेड़ की पत्तियों को, उनके अंगों की उचित व्यवस्था और एक प्रकार की शांति के बिना नहीं छोड़ता...' (De civit. Dei V, c. 11); ख) *ग्रेगरी महान:* 'जो सर्वोच्च चीजों का शासन करता है वह सबसे निचली चीजों को भी नहीं छोड़ता, क्योंकि जिस विवेक वह सबसे बड़े के प्रति इतना समर्पित है, शासन की यही देखभाल सबसे छोटे तक विस्तारित होने से नहीं रुकती; क्योंकि जो सर्वत्र उपस्थित है और सर्वत्र एक समान है, वह अपने से भिन्न चीजों में भी स्वयं से अलग नहीं है; और इसलिए वह सभी चीजों पर दृष्टि रखता है और सभी चीजों को स्वयं व्यवस्थित करता है, सभी स्थानों में उपस्थित होकर, न तो किसी विशेष स्थान तक सीमित है और न ही विभिन्न मामलों में व्यस्त होने से बदलता है (पुस्तक XXVII, अध्याय 18, यॉब के अध्याय 37 पर टिप्पणी 35)।

वशि्वसनीय प्रतीत होती है और इसलिए मुख्य रूप से उन लोगों द्वारा प्रस्तुत की जाती है जो केवल सामान्य व्यवस्था को स्वीकार करते हैं और वशिेष व्यवस्था को अस्वीकार करते हैं, इस धारणा को भी कसिी भी परस्थितिमिें स्वीकार नहीं कयिा जा सकता। क्योंकि, सबसे पहले, यदि ईश्वर ने छोटे और अवभिाज्य प्राणयिों को सृजति करना अपनी महमिा के अनुरूप समझा, तो नस्सिंदेह, उन पर उनकी व्यवस्था भी उनकी महमिा के अनुरूप ही हो सकती है। दूसरा, वस्तुएँ और प्राणी केवल हमारे लिए छोटे और बड़े प्रतीत होते हैं जब हम उन्हें एक-दूसरे से तुलना करते हैं; लेकनि ईश्वर, उस अनंत सत्ता के सामने, वे सभी अनंत रूप से छोटे हैं। तदनुसार, यदि केवल हमें बड़े प्रतीत होने वाले जीवों और वस्तुओं की व्यवस्था करना ईश्वर की महानता के अनुरूप नहीं है, तो फरि हमारे लिए छोटे प्रतीत होने वाले जीवों और वस्तुओं की व्यवस्था करना उनके लिए अनुपयुक्त क्यों होगा? या इसे दूसरे शब्दों में कहें तो: वस्तुएँ एक-दूसरे के संबंध में और हमारी अवधारणाओं के अनुसार ही बड़ी और छोटी होती हैं; लेकनि सृष्टकिर्ता और सर्वशक्तमिान की असीम महानता के सामने, कुछ भी बड़ा नहीं है, ठीक उसी तरह, जैसे उनकी असीम भलाई के सामने, उन चीजों में से कोई भी छोट ा नहीं है जन्हिें उन्होंने स्वयं अस्तत्वि प्रदान कयिा है। तीसरा, संसार की सबसे बड़ी वस्तुएँ छोटे-छोटे भागों से मलिकर बनी होती हैं, और प्राणयिों के सबसे व्यापक कुल और प्रजातयिाँ केवल अवभिाज्यों के वैचारकि समूह मात्र हैं, जनिमें से केवल उत्तरवर्ती ही अनुभव में मौजूद होते हैं। तो फरि, वशिेष दव्यि व्यवस्था के बनिा सामान्य दव्यि व्यवस्था क्या होगी, और क्या पूर्व को उत्तर से अलग करना संभव है? चौथा, यह सर्ववदिति है कि दुनयिा में महान घटनाएँ अक्सर उन कारणों से उत्पन्न होती हैं जो आँखों को सबसे कम महत्व के प्रतीत होते हैं; उदाहरण के लिए, एक चगिारी से—पूरे, सबसे अधकि आबादी वाले शहरों को नष्ट करने वाली आग; या कुछ व्यक्तयिों के मतभेद से—राष्ट्रों के बीच भयानक युद्ध। तो फरि, सार्वभौमकि प्रावधान कैसे संभव है यदि कोई वशिेष प्रावधान नहीं है? यह इसी कारण से है कि ईश्वर की प्रावधान—सार्वभौमकि और वशिेष दोनों—न केवल ईसाई वचिारकों,[1553] द्वारा, बल्कि सही सोच वाले मूर्तपिूजकों द्वारा भी मान्यता प्राप्त थी।[1554]

§ 100. परम पवत्रि त्रमिूर्ति के सभी व्यक्तयिों की प्रॉवडिेंस के कार्य में भागीदारी

जसि प्रकार सृष्टि के कार्य में, उसी प्रकार प्रॉवडिेंस के कार्य में भी, ऑर्थोडॉक्स चर्च समान रूप से दोनों को परम पवत्रि त्रमिूर्ति के सभी व्यक्तयिों को श्रेय देता है: ईश्वर पति को *सर्वशक्तमिान* कहा जाता है (नकिने-कॉन्स्टेंटनिोपोलटिन प्रतीक); ईश्वर पुत्र — *सभी चीजों की रचना को धारण करने वाली बुद्धि* (ग्रेगरी द वंडरवर्कर का प्रतीक); ईश्वर पवत्रि आत्मा को *जीवन-प्रदाता प्रभु और वह जीवन के रूप में, जसिमें जीवति लोग अपना स्रोत पाते हैं* (उसी धर्मवशि्वासों में)।[1555]

यह शकि्षा पवत्रि शास्त्र से ली गई है, जहाँ संसार पर परमेश्वर की व्यवस्था भी परमेश्वरत्व के तीनों व्यक्तयिों को समान रूप से दी गई है, अर्थात्:

1) परमे श्वर पति। । उदाहरण के लिए, उद्धारकर्ता के शब्दों में: *'मेरे पति आज तक काम करते रहे हैं, और मैं भी काम कर रहा हूँ* (यूहन्ना 5:17)। *'इसलयि तुम अपने स्वर्गीय पति के बच्चे बन जाओ, क्योंकि वह अपने सूर्य को दुष्टों और भलों पर उदय करता है, और धर्मी और अधर्मी दोनों पर वर्षा भेजता है'* (मत्ती 5:45)। *'आकाश के पक्षयिों को देखो: वे न बोते हैं, न काटते हैं, और न ही अपने लिए कोठारों में इकट्ठा करते हैं, और फरि भी तुम्हारा स्वर्गीय पति उन्हें खलिाता है* (6:26)। *मैदान के कमल-पुष्पों पर वचिार करो, कि वे कैसे बढ़ते हैं: वे न परशि्रम करते हैं और न ही सूत कातते हैं; फरि भी मैं तुम से कहता हूँ कि सुलैमान भी अपनी सारी शोभा में इन में से कसिी के समान वस्त्र-युक्त नहीं हुआ। तो यदि परमेश्वर घास को, जो आज जीवति है और कल आग में डाली जाती है, इतना सुसज्जति करता है, तो तुम को तो*

[1553] प्रोवडिेंस के दोनों रूपों की प्रकृति के बारे में हमारे द्वारा प्रस्तुत की गई बौद्धकि वचिारणाएँ, *धन्य थियोडोरेट* (De Provid. Orat. II, पृ. 38, सं. मोरेल) और *नेमेसयिस* (De natur. hom. c. 44) *की कृतयिों में* पाई जा सकती हैं।

[1554] *प्लेटो,* *डे लेगबिस* X; *एम्मोन.* अरस्तू के *डे इंटरप्रटिेशन*, पृ. 12, सं. *अल्सी; प्लॉटनिस,* *एनेड्स* IV, पुस्तक 8, अध्याय 2.

[1555] इसी तरह, संस्कार संबंधी पुस्तकों में, यह *परमेश्वर की* व्यवस्था का कार्य श्रेय देती है: (क) *परमेश्वर पति को:* 'हे सर्वशक्तमिान प्रभु, शक्तयिों और सभी मनुष्यों के परमेश्वर, जो ऊँचे में वास करते हैं और दीनों पर दृष्टि रखते हैं, जो हृदयों और अंतरतम होने को परखते हैं...; हमारी प्रार्थनाओं को स्वीकार करें' (कैनन, फोलयिो 5 वर्सो, मॉस्को 1843); ख) और *परमेश्वर पुत्र को:* 'आप अपनी बाहों में मसीह को धारण करते हैं, जो आपकी इच्छा से सभी चीजों को धारण करते हैं, उनसे अपने पुत्र के रूप में वनिती करें' (जनरल लटिर्जी, फोलयिो 88, मास्को, 1834); c) और *पवत्रि आत्मा ईश्वर को:* "सभी धन्यवाद पवत्रि आत्मा को, जो परमपति और पुत्र के समकक्ष हैं, जनिमें सभी जीते और चलते हैं" (ऑक्टोएकोस, भाग 1, फोलयिो 167, मास्को, 1838)।

और भी अधिक सुसज्जित करेगा, हे अल्पविश्वासियो (6:28–30)। *क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, बल्कि अनंत जीवन पाए। क्योंकि परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा कि वह जगत का न्याय करे, बल्कि इसलिये भेजा कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए* (यूहन्ना 3:16–17)। *मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, जो कुछ तुम पिता से मेरे नाम में माँगोगे, वह तुम्हें देगा* (यूहन्ना 16:23; तुलना करें यूहन्ना 14:16, 23, 26; 15:1, 2; 17:11, 15, 17; रोमियों 1:7; 2 कुरिन्थियों 1:4)।

2) परमेश्वर पुत्र को। *वह सभी वस्तुओं से पहले है, जैसा कि पवित्र प्रेरित उनके बारे में कहते हैं, और सभी वस्तुएं उनके द्वारा एक साथ टिकी रहती हैं* (कुलु. 1:17), *अपनी सामर्थ्य के वचन द्वारा सभी वस्तुओं को धारण करते हुए* (इब्रानियों 1:3)। *'मेरा पिता अब तक काम कर रहा है, और मैं भी काम कर रहा हूँ'* परमेश्वर के पुत्र स्वयं गवाही देते हैं (यूहन्ना 5:17)। *'मैं युग के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूँ* (मत्ती 28:20; तुलना करें यूहन्ना 1:9–13; 10:16; इफिसियों 1:22; 2:20; कुलुस्सियों 2:19)।

3) परमेश्वर पवित्र आत्मा को। भजनकार परमेश्वर पिता से अपनी प्रार्थना में भौतिक जगत पर उनकी व्यवस्था की घोषणा करता है: *वे सभी समय पर अपना भोजन देने के लिए आप पर निहारते हैं। आप उन्हें देते हैं, और वे ग्रहण करते हैं; आप अपना हाथ खोलते हैं, और वे अच्छी-अच्छी वस्तुओं से तृप्त हो जाते हैं; आप अपना मुंह छिपाते हैं, और वे घबरा जाते हैं; आप उनकी साँस छीन लेते हैं, और वे मरकर मिट्टी में मिल जाते हैं; आप अपनी आत्मा भेजते हैं, और वे उत्पन्न होते हैं, और आप पृथ्वी का मुख नया कर देते हैं* (भजन संहिता 104:27–30)। प्रेरित धार्मिक जगत के संबंध में परमेश्वर की व्यवस्था का प्रचार करते हैं: *'वरदानों में तो भेद-भेद हैं, परन्तु आत्मा एक ही है… एक-एक को तो सामान्य भले के लिये आत्मा का एक-एक प्रगटन दिया गया है… फिर भी ये सब एक ही आत्मा से होते हैं, जो जैसा चाहे वैसा ही हर एक को अलग-अलग बांट देता है'* (1 कुरिन्थियों 12:4, 7, 11)।

प्रोविडेंस के कार्य में सभी दैवीय व्यक्तियों की भागीदारी के संबंध में यही शिक्षा चर्च के पवित्र पिताओं और शिक्षकों द्वारा समझाई गई है:

(क) *संत अथेनासियस महान:* "पिता सभी कार्य पुत्र के माध्यम से पवित्र आत्मा में करते हैं, और इस प्रकार पवित्र त्रिमूर्ति की एकता बनी रहती है, और कलीसिया में एक ईश्वर की घोषणा की जाती है, *जो सभी के ऊपर है, और सबके माध्यम से ( ) सब में, और हम सभी में* (एफि. 4:6) — *सभी के ऊपर*: पिता के रूप में, आरंभ और स्रोत के रूप में; *सभी* के द्वारा: यह पुत्र के द्वारा है; *सभी में*: यह पवित्र आत्मा में है;"[1556]

ख) *संत बेसिल द ग्रेट:* "दिव्य आत्मा हमेशा निश्चित रूप से वह सब कुछ पूरा करती है जो पुत्र के माध्यम से परमेश्वर से निकलता है;"[1557] और अन्यत्र: "आत्मा हर क्रिया में पिता और पुत्र के साथ एकजुट और अविभाज्य है; ईश्वर के साथ, जो मंत्रालयों का वितरण करते हैं, पवित्र आत्मा भी सह-अस्तित्व में हैं, जो प्रत्येक व्यक्ति के मूल्य के अनुसार वरदानों के वितरण में पूर्ण अधिकार का प्रयोग करते हैं;"[1558]

(ग) *संत ग्रेगरी द थियोलोजियन:* "देवत्व को ईश्वर कहा जाता है, हालांकि यह तीन सबसे उत्कृष्ट से मिलकर बना है: कारण, सृष्टिकर्ता, पूर्णकर्ता, अर्थात्, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा;"[1559]

घ) *अलेक्जेंड्रिया के* संत *सिरिल:* "सब कुछ परमेश्वर पिता द्वारा पुत्र के माध्यम से पवित्र आत्मा में पूरा होता है;"[1560]

ई) *धन्य ऑगस्टीन:* "इस वर्तमान जीवन में हमें जितना समझने की अनुमति है, उस हद तक त्रिमूर्ति को समझने के बाद, हम निस्संदेह विश्वास करते हैं कि प्रत्येक प्राणी—चाहे वह तर्कशील, आध्यात्मिक या देहधारी हो— अस्तित्व में आया है, अपनी ही रूप-रंग रखता है, और एक ही रचनात्मक त्रिमूर्ति द्वारा बुद्धिमानी से शासित है; हालाँकि, इस तरह से नहीं कि सारी सृष्टि का एक हिस्सा पिता द्वारा, एक दूसरा पुत्र द्वारा, और एक तीसरा पवित्र आत्मा द्वारा अस्तित्व

[1556] एपिस्ट. I, एड सेरापियन, n. 28। और आगे, n. 30: 'क्योंकि आत्मा प्रत्येक को बांटता है, और ये चीजें पिता द्वारा वचन के माध्यम से प्रदान की जाती हैं।'

[1557] यूनोमियस के विरुद्ध, पुस्तक V, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, VII, 193 में।

[1558] पवित्र आत्मा पर, अध्याय 16, वही, पृ. 386.

[1559] मिस्र से आए लोगों के लिए उपदेश, *पवित्र पिताओं के कार्य*, III, 189 में।

[1560] De fide ad Reg. Serm. II, n. 51.

में लाया गया हो, बल्कि इस तरह से कि पिता ने सामान्य रूप से सब कुछ और विशेष रूप से प्रत्येक स्वभाव को पुत्र के माध्यम से पवित्र आत्मा की देन (dono) द्वारा बनाया;"[1561]

e) *सेंट जॉन ऑफ़ डेमास्कस:* "ईश्वर (पिता) विचार के माध्यम से सृजन करते हैं, और यह विचार एक कर्म बन जाता है, जिसे वचन द्वारा पूर्ण किया जाता है और आत्मा द्वारा संपन्न किया जाता है।"[1562] एक विश्वासी के लिए यह समझाना कठिन नहीं है कि ईश्वरत्व के तीनों व्यक्तियों ने प्रॉविडेंस के कार्य में भाग क्यों लिया। ऐसा इसलिए है क्योंकि संसार पर परमेश्वर की व्यवस्था परमेश्वर के सर्वज्ञता, सर्वव्यापकता, बुद्धि, सर्वशक्तिमत्ता और सद्गुण का एक कार्य है — ये गुण पवित्र त्रिमूर्ति के सभी व्यक्तियों में समान रूप से निहित हैं।

§101. ईश्वर की परमप्रबन्धकता और नैतिक प्राणियों की स्वतंत्रता तथा संसार में विद्यमान बुराई के बीच संबंध

यद्यपि ईश्वर की व्यवस्था संसार में सभी चीजों को समाहित करती है और सभी चीजों पर शासन करती है, वह ऐसा इस तरह से करती है कि नैतिक प्राणियों की स्वतंत्रता का किसी भी तरह से उल्लंघन नहीं होता है, और संसार में मौजूद बुराई के विभिन्न रूप विश्व के शासक पर कोई दोष नहीं लगाते हैं।

1. दिव्य प्रबंध नैतिक प्राणियों की स्वतंत्रता का उल्लंघन नहीं करता। यह बात हमें परमेश्वर के वचन और हमारे अपने विवेक और तर्क, दोनों से ही पुष्ट होती है, जो समान रूप से इस बात की पुष्टि करते हैं कि हम सभी निरंतर परमेश्वर की व्यवस्था के अधीन हैं (देखें §§81, 93) और यह कि हम सभी अपने नैतिक कार्यों में स्वतंत्र हैं (§§ 97–99)। जहाँ तक इस बात का संबंध है कि नैतिक जगत में अपनी सभी व्यवस्थाओं में ईश्वर की दिव्य व्यवस्था नैतिक प्राणियों की स्वतंत्रता का उल्लंघन कैसे नहीं करती—यद्यपि हम इसका पूर्ण रूप से स्पष्टीकरण नहीं दे सकते, फिर भी हम इसे कुछ हद तक अपनी समझ की पहुँच में ला सकते हैं।

(क) ईश्वर एक अपरिवर्तनीय, सर्वज्ञ और अनंत रूप से बुद्धिमान सत्ता है। एक अपरिवर्तनीय सत्ता के रूप में, एक बार अपने तर्कशील प्राणियों को स्वतंत्रता प्रदान करने का विकल्प चुनने के बाद, वह अपने निर्णय को बदल नहीं सकता और उस स्वतंत्रता को प्रतिबंधित या पूरी तरह से नष्ट नहीं कर सकता। सर्वज्ञ होने के नाते, वह स्वतंत्र प्राणियों की सभी इच्छाओं, इरादों और कार्यों को पहले से जानता है। और अनंत रूप से बुद्धिमान होने के नाते, वह हमेशा इन कार्यों को इस तरह निर्देशित करने के तरीके खोज लेता है कि कार्य करने वालों की स्वतंत्रता अछूती रहे।

ख) प्राणियों पर ईश्वर की व्यवस्था इस तथ्य में व्यक्त होती है कि वह उन्हें संरक्षित करता है, सहायता या अनुमति देता है, और उनका शासन करता है। जब ईश्वर नैतिक प्राणियों को संरक्षित करता है—उनके अस्तित्व और क्षमताओं को संरक्षित करते हुए—तो, निस्संदेह, वह उनकी स्वतंत्रता को प्रतिबंधित नहीं करता—यह स्वयंसिद्ध है। जब वह उन्हें अच्छा करने में सहायता करता है, तो वह इसी तरह उनकी स्वतंत्रता को प्रतिबंधित नहीं करता—क्योंकि वे ही कर्ता बने रहते हैं, अर्थात्, जो एक विशेष कार्य का चयन करते हैं और उसे करते हैं, जबकि ईश्वर केवल उनकी सहायता या मदद करता है। जब वह उन्हें कोई बुराई करने की अनुमति देता है, तो वह उनकी स्वतंत्रता को और भी कम प्रतिबंधित करता है, बल्कि केवल उसे अपनी इच्छा के अनुसार, अपनी ही सहायता के बिना, अपने आप कार्य करने देता है। अंत में, नैतिक प्राणियों के शासन में, ईश्वर की व्यवस्था वास्तव में उन्हें उस अंत की ओर निर्देशित करती है जिसके लिए उन्हें बनाया गया था, लेकिन उनकी स्वतंत्रता का उचित प्रयोग उनके अस्तित्व के अंतिम लक्ष्य की ओर प्रयास करने में निहित है। परिणामस्वरूप, ईश्वर का शासन किसी भी तरह से नैतिक स्वतंत्रता को प्रतिबंधित नहीं करता है, बल्कि केवल उस लक्ष्य की ओर उसकी प्रयासरतता में सहायता करता है।

ग) हम अनुभव से जानते हैं कि हम भी, अक्सर अपने शब्दों के माध्यम से, इशारों और विभिन्न अन्य साधनों से, हम अपने पड़ोसियों को कुछ निश्चित कार्यों की ओर झुका सकते हैं, हम उन्हें उनकी स्वतंत्रता को प्रतिबंधित किए बिना मार्गदर्शन कर सकते हैं — तो क्या अनंत रूप से बुद्धिमान और सर्वशक्तिमान, नैतिक प्राणियों का इस तरह मार्गदर्शन करने के तरीके खोजने में कहीं अधिक सक्षम नहीं हैं कि उनकी स्वतंत्रता को थोड़ी भी हानि पहुँचे?..

२. संसार में विद्यमान बुराई संसार के शासक पर कलंक नहीं लगाती।

[1561] De vera relig., अध्याय VII, संख्या 13, *Patrologia Cursus Completus*, खंड XXXIV, पृ. 129.

[1562] सच्चे विश्वास की सटीक व्याख्या, पुस्तक II, अध्याय 2, पृ. 52.

सबसे पहले, नैतिक बुराई, जो ईश्वर के नैतिक *कानून के उल्लंघन* में निहित है (रोमियों 2:23), विश्व के शासक पर निर्भर नहीं करती, बल्कि स्वयं नैतिक प्राणियों पर निर्भर करती है, जिन्हें उन्होंने स्वतंत्रता प्रदान की है, और जो केवल पाप करने की अनुमति देते हैं, लेकिन किसी भी तरह से इसे प्रोत्साहित नहीं करते।[1563] इसके विपरीत, उसी समय वह उन्हें पाप से रोकने के लिए हर संभव उपाय करता है, अपने नियमों द्वारा इसे मना करता है, अपराधियों को इसके लिए दंड की धमकी देता है (निर्ग. 20:1–18, आदि), और वास्तव में उन्हें दंडित भी करता है (उत्प. 7:7 ff.; 19:24–29; निर्गमन 17:8, 14 आदि), और परिस्थितियों को इस प्रकार व्यवस्थित और निर्धारित करता है कि पहले से किए गए पाप की शक्ति सीमित और कम हो सके, और अच्छे परिणाम उत्पन्न हों (उत्पत्ति 50:20).[1564] इसके अतिरिक्त, संसार में बुराई को धीरे-धीरे कमजोर करने और समाप्त करने के लिए, प्रभु, जो संसार की परवाह करते हैं, ने अलौकिक साधनों का उपयोग करने में संकोच नहीं किया है: उन्होंने मानवजाति पर अपना प्रकाशन प्रदान किया है, उनके पास भविष्यवक्ताओं को भेजा है, अपने एकलौते पुत्र को मृत्यु के हवाले कर दिया है, पृथ्वी पर अपनी पवित्र कलीसिया की स्थापना की है, सभी पर अपना उद्धारक अनुग्रह प्रदान करते हैं, और अनगिनत चमत्कार किए हैं और करते रहते हैं (तुलना करें §§ 14, 21)।

भौतिक बुराई, जो कुछ वस्तुओं की अपूर्णता में निहित है जो सोचने और संवेदनशील प्राणियों को हानि और पीड़ा पहुँचाती हैं, —

क) अपने आप में, अर्थात् इन प्राणियों से संबंध के बिना, बुराई नहीं है, बल्कि यह संपूर्ण की पूर्णता के लिए भी काम करती है और सामान्य भलाई के लिए आवश्यक या लाभदायक हो सकती है। उदाहरण के लिए, ऐसे भूकंप, तूफ़ान और हानिकारक पौधे हैं। यह सर्वविदित है कि विष भी, जब सही ढंग से उपयोग किया जाए, तो कभी-कभी एक औषधि के रूप में काम करता है, और चित्रों में काला रंग, जब अन्य रंगों के साथ सामंजस्य स्थापित किया जाए, तो पूरे की सुंदरता को बढ़ाता है।[1565] हम अक्सर पृथ्वी पर कुछ घटनाओं को भौतिक बुराइयाँ कहने का एकमात्र कारण यह है कि हम उन्हें अलग-थलग, या केवल अपने संबंध में ही देखते हैं, और उन्हें संपूर्ण का हिस्सा मानकर उनकी महत्ता निर्धारित करने में असमर्थ रहते हैं।[1566] यदि, हालांकि —

(ख) जब हम पृथ्वी पर उस भौतिक बुराई पर विचार करते हैं जो संवेदनशील और तर्कशील प्राणियों को प्रभावित करती है, तो हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि यह पहले मनुष्य द्वारा की गई नैतिक बुराई के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुई और बनी हुई है: 'हे मनुष्य, *तेरे कारण भूमि पर शाप लगा* (उत्पत्ति 3:17); *क्योंकि सृष्टि अपनी इच्छा से नहीं, बल्कि उस की इच्छा से व्यर्थता के अधीन हो गई जिसने इसे अधीन किया* (रोमियों 8:20); और जहाँ तक स्वयं मनुष्य का प्रश्न है, यह उसके पापों का एक स्वाभाविक परिणाम और उनके लिए एक न्यायसंगत दंड है (§ 90)। दूसरी ओर, ईश्वर की

1563 *टर्तुल्लियन,* अगेंस्ट मार्कियन, पुस्तक II, पृ. 14; *क्लेमेंट ऑफ एलेक्जेंड्रिया,* स्ट्रोमाटा, 1, 17; *एथनासियस,* अगेंस्ट द पैगन्स, अध्याय 7; *ग्रेगरी ऑफ निस्सा,* कैटेकिज्म, अध्याय 5; *ऑगस्टीन,* ऑन जेनेसिस अगेंस्ट मनिचियन्स, पुस्तक II, अध्याय 29, n. 43; *जॉन ऑफ़ डेमास्कस,* सटीक व्याख्यान ऑफ़ द ऑर्थोडॉक्स फेथ, पुस्तक II, अध्याय 29 और 30।

1564 *क्लेम. एलेक्स.* स्ट्रॉम. 1, 17; *ऑगस्टीन,* *डे सिविटिटे देई*, पुस्तक XXII, अध्याय 2: 'ईश्वर की इच्छा के विरुद्ध कई चीजें वास्तव में बुराई के माध्यम से होती हैं, फिर भी ईश्वर की बुद्धिमत्ता और शक्ति इतनी महान है कि जो भी चीजें उसकी इच्छा के विपरीत प्रतीत होती हैं, वे उन परिणामों या उद्देश्यों की ओर उन्मुख होती हैं जिन्हें उसने स्वयं अच्छा और न्यायसंगत निर्धारित किया है' (तुलना करें *एडवर्सस फाउसटस*, पुस्तक XXII, अध्याय 78)।

1565 धन्य ऑगस्टीन लिखते हैं, 'और ईश्वर ने प्रकाश और अंधकार के बीच विभाजन किया, ताकि इन अभावों को भी अपना क्रम प्राप्त हो।' ईश्वर द्वारा सभी चीजों के शासन और प्रशासन के साथ: ठीक वैसे ही जैसे गायन में, निश्चित और मध्यम अंतराल पर मौन के अंतराल, यद्यपि वे ध्वनि की अनुपस्थिति हैं, फिर भी, जो लोग गाना जानते हैं, वे उन्हें अच्छी तरह से व्यवस्थित करते हैं, और धुन की समग्र सामंजस्य में कुछ योगदान करते हैं; और चित्रों में, प्रमुख विशेषताओं को अलग करने वाली परछाइयाँ अपनी उपस्थिति से नहीं बल्कि अपनी व्यवस्था से प्रसन्न करती हैं (उत्पत्ति पर, अपूर्ण काल पर, अध्याय 5)। और अन्यत्र: जैसे एक-दूसरे के विपरीत रखे गए विरोधाभास वाक्-चातुर्य की सुंदरता को बहाल करते हैं, वैसे ही संसार की सुंदरता शब्दों की वाक्-चातुर्य से नहीं बल्कि विरोधाभासों के सह-अस्तित्व के माध्यम से वस्तुओं की वाक्-चातुर्य से प्रशंसित होती है (डे सिविटिटे देई, पुस्तक XI, अध्याय 18)।

1566 संत ग्रेगरी द थियोलोजियन कहते हैं, 'जो हमें असमान लगता है, उसे निस्संदेह ईश्वर द्वारा समतल किया जाता है। जैसे शरीर के कुछ अंग बाहर की ओर निकले होते हैं और कुछ पीछे की ओर, कुछ बड़े होते हैं और कुछ छोटे, वैसे ही पृथ्वी पर भी ऊँचे स्थान और नीचे स्थान हैं; लेकिन यह सब, अपने पारस्परिक संबंध में, हमारी आँखों के सामने एक सुंदर संपूर्णता का निर्माण और प्रस्तुत करता है। इसी तरह, एक कलाकार के मामले में, जो सामग्री पहली बार में अव्यवस्थित और असमान होती है, वह बाद में किसी कलाकृति में ढलने पर बहुत कुशलता से तैयार की हुई प्रतीत होती है; जिस पर हम, इस कृति को उसकी सारी सुंदरता में निहारते हुए, कलाकार की कुशलता को समझते और स्वीकार करते हैं। इसलिए हम ईश्वर को ऐसा अपूर्ण कलाकार न मानें जैसे हम स्वयं हैं; हम दुनिया के शासन में अव्यवस्था न खोजें, केवल इसलिए कि उस शासन की प्रकृति हमारे लिए अज्ञात है" (*गरीबों से प्रेम पर उपदेश*, *पवित्र पिताओं के कार्य*, II, 37 में)।

व्यवस्था मनुष्य के पतन के परिणामस्वरूप उत्पन्न इस बुराई का उपयोग पापियों को पश्चाताप और सत्य के मार्ग पर लौटने के लिए बुलाने के एक साधन के रूप में करती है (1 राजा 9:9; 2 इतिहास 33:12, 13; नहेमायाह 9:27; दानियेल 4:30), लोगों को पाप में गिरने से बचाने के लिए (भजन संहिता 118:71; 2 कुरिन्थियों 1:9), उन्हें पाप से शुद्ध करने के लिए (नीतिवचन 17:3), और उन्हें सद्गुण में सिद्ध करने के लिए (याकूब 1:2–4; रोमियों 3:3; 2 थिस्सलुनीकियों 1:4)।

संत बेसिल द ग्रेट का तर्क है, 'शहरों और लोगों में बीमारियाँ, हवा में शुष्कता, पृथ्वी की बाँझपन, और जीवन में हर किसी पर आने वाली विपत्तियाँ, पाप के प्रसार को रोकती हैं। और इस प्रकार का हर बुराई, सच्ची बुराइयों के जन्म को रोकने के लिए परमेश्वर द्वारा भेजा जाता है। क्योंकि शारीरिक कष्ट और बाहरी विपत्तियाँ दोनों ही पाप को रोकने के लिए रची गई हैं। इस प्रकार परमेश्वर बुराई को समाप्त करता है, लेकिन बुराई परमेश्वर से नहीं आती है। ठीक वैसे ही जैसे एक डॉक्टर बीमारी को समाप्त करता है, न कि उसे शरीर में डालता है। जहाँ तक शहरों के विनाश, भूकंप, बाढ़, सेनाओं की हार, जहाजों के डूबने, और भूमि पर, या समुद्र में, या हवा में, या आग से, या किसी भी कारण से होने वाली लोगों की हर सामूहिक हत्या का सवाल है, ये घटनाएँ बचे हुए लोगों को सीधे और संकीर्ण मार्ग पर बनाए रखने के लिए होती हैं; क्योंकि ईश्वर संपूर्ण संसार के पापों को संपूर्ण संसार को प्रभावित करने वाली सज़ाओं के माध्यम से अनुशासित करता है।"[1567] यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि इस संबंध में भी, हमारी बुद्धि की सीमाओं के कारण, हम अक्सर उन छिपी हुई योजनाओं को समझने में असमर्थ रहते हैं, जिनके द्वारा सर्व-ज्ञानी परम-प्रभु संवेदनशील प्राणियों को शारीरिक दुष्टता सहने की अनुमति देते हैं।

§102. सिद्धांत का नैतिक अनुप्रयोग

ईश्वर की व्यवस्था में विश्वास, जो संसार में प्रत्येक व्यक्ति और हर वस्तु की देखभाल करता है, हमें सिखाता है:

1. हमारे प्रभु और स्वामी की महिमा करना और धन्यवाद देना, जो सभी प्राणियों के सामान्य पिता हैं, जिन्होंने केवल अनंत दया से उन्हें अस्तित्व प्रदान किया है, और केवल उसी दया से उनकी व्यवस्था करते हैं।

2. अपनी सारी आशा ईश्वर में रखना, इस पूर्ण विश्वास के साथ कि जो कुछ भी हम पर आए, वह हमारे भले के लिए बुद्धिमानी से व्यवस्था करेंगे।

3. अपनी ज़रूरत के समय में प्रार्थना में उसकी ओर मुड़ना, और साथ ही उद्धारकर्ता के इन शब्दों को ध्यान में रखना: *'यदि तुम, बुरे होने पर भी, अपने बच्चों को अच्छी चीज़ें देना जानते हो, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता उनसे कितनी अधिक अच्छी चीज़ें देगा जो उससे माँगते हैं'* (मत्ती 7:11)।

४. अपने जीवन में परमेश्वर की व्यवस्था के मार्गों पर ध्यानपूर्वक और श्रद्धापूर्वक विचार करना, और पूरी लगन के साथ अपने आचरण को उनके अनुरूप बनाना।

5. हमारे स्वर्गीय पिता के उदाहरण का अनुसरण करना, जो संसार के लिए अपनी व्यवस्था में, *अपने सूर्य को दुष्टों और भलों दोनों पर उदय होने की आज्ञा देते हैं और धर्मी और अधर्मी दोनों पर वर्षा भेजते हैं* (मत्ती 5:45), हमें सभी के साथ भलाई करनी चाहिए, न केवल अपने मित्रों के साथ बल्कि अपने शत्रुओं के साथ भी।

2. ईश्वर की प्रबंधक शक्ति के संबंध में उसकी सृष्टि के मुख्य प्रकारों पर

2.1. आध्यात्मिक जगत के संबंध में

§ 103. पिछले खंड के साथ संबंध और विषय पर दृष्टिकोण

ईश्वर की सर्वव्यापी व्यवस्था के सामान्य सिद्धांत से, जो संपूर्ण जगत को समाहित करता है, स्वाभाविक रूप से आध्यात्मिक जगत, भौतिक जगत और सूक्ष्म जगत—मानव के संबंध में ईश्वर की व्यवस्था का विशिष्ट सिद्धांत उत्पन्न होता है। हालाँकि, इस विशिष्ट सिद्धांत की कुछ विशेषताएँ ऐसी हैं कि वे ऊपर बताए गए सामान्य सिद्धांत के

[1567] ईश्वर बुराई का कारण नहीं है, इस तथ्य पर एक प्रवचन, *द वर्क्स ऑफ़ द होली फ़ादर्स*, VIII, 150; तुलना करें 146।

प्रकाश में पूरी तरह से स्पष्ट और समझने योग्य हैं, और इसलिए उन्हें और अधिक विस्तार की आवश्यकता नहीं है; उदाहरण के लिए, यह विचार कि ईश्वर, जो पूरी दुनिया को विनाश से बचाता है, विशेष रूप से आध्यात्मिक दुनिया को भी बचाता है; या यह कि परम पवित्र त्रिमूर्ति के सभी व्यक्तियाँ भौतिक जगत के संबंध में परमेश्वर की व्यवस्था में शामिल हैं। हालांकि, अन्य भाग, यद्यपि वे भी परमेश्वर की व्यवस्था के सामान्य सिद्धांत पर आधारित हैं, हमारे लिए अधिक स्पष्टता और समझ के लिए, या उनकी जटिलता और हमारे लिए उनकी प्रासंगिकता के कारण, अधिक विस्तृत व्याख्या की आवश्यकता होती है।

इस प्रकार, जब अच्छे स्वर्गदूतों और बुरे स्वर्गदूतों से मिलकर बनी आध्यात्मिक दुनिया के संबंध में ईश्वर की दिव्य व्यवस्था की बात की जाती है, तो ऑर्थोडॉक्स चर्च एक ओर यह सिखाती है कि ईश्वर अच्छे स्वर्गदूतों की सहायता करता है और उनके अस्तित्व के उद्देश्य के अनुसार उनका शासन करता है; और, दूसरी ओर, कि वह केवल दुष्ट स्वर्गदूतों की दुष्ट गतिविधियों की अनुमति देता है, और, जहाँ तक संभव हो, उन्हें सीमित करता है और सीमित करना जारी रखता है, साथ ही उन्हें अच्छे परिणामों की ओर निर्देशित करता है।

§ 104. ईश्वर अच्छे स्वर्गदूतों की सहायता करते हैं

संतजनों की सहायता पर चर्च की शिक्षा निम्नलिखित शब्दों में देखी जा सकती है: 'वे (दिव्य पदक्रम) इस तरह व्यवस्थित हैं कि निम्नतर स्वर्गदूत उच्चतर स्वर्गदूतों के माध्यम से ईश्वर की प्रबुद्धता और आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। ये स्वर्गदूत परमेश्वर की कृपा में हमेशा के लिए स्थापित किए गए हैं; चूँकि उन्होंने लूसिफर के साथ परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह करने में सहमति नहीं दी, इसलिए उन्होंने उसकी कृपा इस तरह से प्राप्त की है कि वे अब पाप नहीं कर सकते—न अपनी प्रकृति से, बल्कि परमेश्वर की कृपा से' (द ऑर्थोडॉक्स कन्फेशन, भाग 1, प्रश्न 20 का उत्तर)। अर्थात्:

1. ईश्वर सत्य की खोज में देवदूत के मन की सहायता करते हैं, उसे स्वयं से प्रबोधन और प्रकाशन प्रदान करते हैं। यह विचार पवित्र धर्मग्रंथ के उन अंशों पर आधारित है जिनमें कहा गया है:

(क) कि स्वर्गदूत स्वर्ग में वास करते हैं (मत्ती 22:30; मरकुस 13:32), परमेश्वर के सिंहासन को घेरे रहते हैं (यशायाह 6:2), और *हमेशा मेरे स्वर्गीय पिता का मुख देखते हैं* (मत्ती 18:10); परिणामस्वरूप, उन्हें परमेश्वर का, और उनके द्वारा, सभी चीजों का प्रत्यक्ष ज्ञान है;

ख) कि *परमेश्वर* आध्यात्मिक *प्रकाश हैं* (1 यूहन्ना 1:5), *शाश्वत प्रकाश* (यशायाह 60:19-20); परिणामस्वरूप, जब वह अपनी किरणें फैलाते हैं, तो वह सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से अपने सिंहासन के चारों ओर रहने वाले श्रेष्ठ आत्माओं को इनसे प्रकाशित करते हैं;

ग) अंत में, कि ईश्वर अक्सर स्वर्गदूतों को अपनी इच्छा का प्रकटीकरण करते हैं, या तो किसी विशेष तरीके से या विशेष अवसरों पर, ताकि वे इसे मानव जाति तक संप्रेषित कर सकें (दानिय्येल 9:21, 27; लूका 1:26-38, आदि)।

चर्च के पवित्र पिताओं और शिक्षकों ने इस विचार को बहुत बार दोहराया है; उदाहरण के लिए:

क) *संत ग्रेगरी द थियोलोजियन:* "ऐसे (अर्थात्. भावों से ऊपर) सर्वप्रथम, सबसे तेजस्वी और महान ईश्वर हैं; और उनके बाद, ईश्वर के सेवक भी ऐसे ही हैं, जो उच्च सिंहासन के पास खड़े हैं, शुद्ध ईश्वर की पहली किरण स्वयं पर ग्रहण करते हैं, और उससे प्रबुद्ध होकर, नश्वर प्राणियों को प्रकाश प्रदान करते हैं;"[1568] और अन्यत्र: "ये (दिव्य) स्वभाव—जैसा कोई और उनके बारे में गा सकता है—या तो प्रथम कारण से शुद्धतम किरणों द्वारा प्रबुद्ध होते हैं, या, अपनी प्रकृति और पद के अनुसार, एक अलग तरीके से एक अलग प्रकाश प्राप्त करते हैं; उन्होंने अपने भीतर उस शुभ को इस प्रकार धारण और अंकित किया है कि वे गौण प्रकाश बन गए हैं, और प्रथम प्रकाश के प्रवाह और संचरण के माध्यम से वे दूसरों को प्रबुद्ध करने में सक्षम हैं;"[1569]

[1568] अपने ही आत्मा के दुखों पर एक विलाप, *द वर्क्स ऑफ़ द होली फ़ादर्स*, खंड IV, 313.

[1569] धर्मोपदेश पर दैवशास्त्र II, वही, III, 50–51; तुलना करें IV, 235: 'जैसे बादलों रहित आकाश से निकली सूर्य की किरण, जब दृश्यमान और उसे परावर्तित करने वाले बादलों से मिलती है, जिससे वर्षा होती है, एक बहुरंगी इंद्रधनुष फैलाती है, और सारा आसपास का एथर अखंड और धीरे-धीरे फीके पड़ते वृत्तों से जगमगाता है; उसी प्रकार प्रकाशमान पिंडों का स्वभाव भी अस्तित्व में इस तथ्य से बना रहता है कि सर्वोच्च प्रकाश अपनी किरणों से निचले मन को अथक रूप से प्रकाशित करता रहता है;" III, 20: "मैं नहीं जानता कि यह उच्च और आध्यात्मिक स्वभावों के लिए

ख) *संत अथेनासियस द ग्रेट:* "सिंहासन, सेराफिम और स्वरूप (केरूबी) सीधे परमेश्वर द्वारा सिखाए जाते हैं, क्योंकि वे सभी में सर्वोच्च और परमेश्वर के सबसे निकट हैं; फिर वे अन्य आदेशों को सिखाते हैं, और इस प्रकार, उचित क्रम में, उच्चतर वाले निम्नतर वालों को सिखाते हैं;"[1570]

ग) *संत एफ्रेम द सीरियन:* "जब स्वर्गीय आत्माएं पुत्र के बारे में कुछ जानना चाहती हैं, तो वे अपने प्रश्न उच्च स्वर्गदूतों से पूछती हैं, और उन्हें आत्मा के प्रेरण द्वारा निर्देशित किया जाता है;"[1571]

d) *धन्य ऑगस्टीन:* "*सच्चा प्रकाश, जो संसार में आने वाले हर मनुष्य को प्रकाशित करता है*" (यूहन्ना 1:9) — यही प्रकाश हर दैवीय स्वर्गदूत को भी प्रकाशित करता है, बशर्ते कि वह स्वयं में नहीं बल्कि परमेश्वर में प्रकाश हो; लेकिन जैसे ही कोई स्वर्गदूत ईश्वर से मुंह मोड़ता है, वह अंधकारमय हो जाता है, ठीक वैसे ही जैसे सभी तथाकथित अंधकारमय आत्माएं, जो अब प्रभु में प्रकाश नहीं हैं, बल्कि स्वयं में अंधकार हैं, क्योंकि उन्हें शाश्वत प्रकाश के साथ सहभागिता से वंचित कर दिया गया है;"[1572]

(डी) *दमास्कस के संत जॉन:* "देवदूत दूसरी तर्कशील ज्योतियाँ हैं, जो पहली और शाश्वत ज्योति से अपना प्रकाश प्राप्त करती हैं"...; और आगे: "सभी स्वर्गदूत वचन द्वारा बनाए गए थे और उन्होंने पवित्रता के माध्यम से पवित्र आत्मा से पूर्णता प्राप्त की, और अपनी योग्यता और पद के अनुसार प्रकाश और अनुग्रह के सहभागी बने...; उनमें पवित्रता उनके अपने अस्तित्व से नहीं, बल्कि आत्मा से है; वे परमेश्वर की कृपा से भविष्यवाणी करते हैं....; वे प्रकाश और पद में एक-दूसरे से भिन्न हैं, या तो अपने प्रकाश के अनुरूप पद धारण करके या अपने पद के अनुपात में प्रकाश में भाग लेकर, और अपने पद या स्वभाव की श्रेष्ठता के अनुसार एक-दूसरे को प्रबुद्ध करके। लेकिन यह ज्ञात है कि उच्चतर वाले निम्नतर वालों को प्रकाश और ज्ञान प्रदान करते हैं।"[1573]

२. ईश्वर अपनी सर्वशक्तिमान कृपा के द्वारा स्वर्गदूतों की स्वतंत्र इच्छा को उनके कार्यों में समर्थन देते हैं, जिसके माध्यम से वे पहले ही सद्गुण में इतने दृढ़ता से स्थापित हो चुके हैं कि वे न तो गिर सकते हैं और न ही कभी बुरे हो सकते हैं। इस तर्क का पहला भाग, एक ओर, इस तथ्य से स्वाभाविक रूप से निकलता है कि स्वर्गदूत, सीमित प्राणी होने के नाते, *जन्मजात स्वयं में जीवन* नहीं है (यूहन्ना 5:26), परंतु *जीवन का स्रोत* (भजन संहिता 35:10) से प्राप्त करके, अपने जीवन और गतिविधि को जारी रखने के लिए, परमेश्वर से निरंतर पोषण की आवश्यकता होती है, और, सभी प्राणियों की तरह, *पोषण प्रदान करने* के लिए उसी की ओर देखते हैं (भजन संहिता 103:27), जो उनके लिए केवल परमेश्वर की अनुग्रह हो सकती है। दूसरी ओर—चूंकि, जैसा कि पवित्र शास्त्र सिखाता है, परमेश्वर *अपनी सामर्थ्य के वचन* (इब्र. 1:3) द्वारा *सभी चीजों को*, और परिणामस्वरूप स्वर्गदूतों को भी, *धारण करते हैं*, और *सभी चीजों को*, और परिणामस्वरूप स्वर्गदूतों को भी जीवन देते हैं (1 तीमु. 6:13; नेहेम्याह 9:6); कि *हर जीवित प्राणी की आत्मा उनके हाथ में है* (अय्यूब 12:10), और यद्यपि दुनिया में *आध्यात्मिक वरदानों, सेवकाइयों और कार्यों के संबंध में भिन्नताएँ हैं*, फिर *भी वही* त्रिएक *प्रभु सब में सब कुछ करता है* (1 कुरिन्थियों 12:4–6), और परिणामस्वरूप स्वर्गदूतों में भी। इस विचार का दूसरा भाग, अर्थात् अनुग्रह द्वारा दुष्टता के प्रति स्वर्गदूतों का प्रतिरोध और उनकी सद्गुण में स्थायी स्थापना, धर्मग्रंथ के उन अंशों द्वारा पुष्ट होता है जहाँ स्वर्गदूतों को परमेश्वर के *सेवक* कहा गया है *जो उसकी इच्छा को पूरा करते हैं* (भजन संहिता 102:21; तुलना करें मत्ती 6:10), और उसकी *चुनी हुई स्वर्गदूतों के रूप में* (1 तीमुथियुस 5:21); उन्हें स्वयं परमेश्वर की उपस्थिति में स्वर्ग में निवास करते हुए (मत्ती 22:30) और उसकी धन्य दृष्टि का आनंद लेते हुए (मत्ती 18:10) चित्रित किया गया है; और जहाँ यह कहा गया है कि स्वर्गदूत दुनिया के अंत में भी *पवित्र* बने रहेंगे, जब उनके साथ प्रभु जीवितों और मृतकों का न्याय करने के लिए प्रकट होंगे (मत्ती 25:31), और वे स्वर्ग में विजयी कलीसिया के सदस्य बने रहेंगे (इब्रानियों 12:22–23), या महिमा के राज्य के, जो *युगानुयुग* रहेगा (प्रकाशितवाक्य 22:5)।

चर्च के पवित्र पिताओं और शिक्षकों में, जिस विचार की हम व्याख्या कर रहे हैं, उसे विशेष रूप से निम्नलिखित लोगों ने व्यक्त किया है:

संभव है या नहीं, जो ईश्वर के करीब होने और पूर्ण प्रकाश से प्रबुद्ध होने के कारण, शायद हमसे अधिक पूरी तरह से, या कम से कम अधिक पूर्ण और स्पष्ट रूप से देखते हैं, और इसके अलावा, अपनी-अपनी पदवी के अनुसार, कुछ दूसरों की तुलना में अधिक और कुछ कम देखते हैं।"

[1570] De communi ess. Patr., Fil. et Spir. S. n. 52: ἀμέσως παρά Θεοῦ μανθάνουσιν...

[1571] एडवर्स. स्क्रुटैट. सेर्म. वी.

[1572] De civit. Dei XI, 9, in Patrolog. curs. compl. Vol. XLI, p. 325.

[1573] सही आस्था की सटीक व्याख्या, पुस्तक II, अध्याय 3, पृष्ठ 54, 55।

संत बेसलि द ग्रेट: "वे (देवदूत) पाप के प्रतिप्रवृत्त नहीं हैं, क्योंकि, मानो, उन्हें पवित्रता किसी प्रकार की द्रव्यता की तरह तुरंत आच्छादित करती है, और वे पवित्र आत्मा की देन के द्वारा सद्गुण में दृढ़ता रखते हैं।"[1574] "प्रधानताएँ और शक्तियाँ, और हर समान प्राणी जो सावधानी और परिश्रम के परिणामस्वरूप अपने भीतर पवित्रता रखता है, को, पूरी निष्पक्षता से, स्वभाव से पवित्र नहीं कहा जा सकता, क्योंकि, अच्छाई की इच्छा रखते हुए, वे परमेश्वर के प्रति अपने प्रेम के अनुपात में पवित्रता का एक हिस्सा प्राप्त करते हैं। और जैसे लोहा, आग के बीच रखा जाने पर, लोहा होना बंद नहीं करता, बल्कि, आग के सर्वोच्च सदृशता तक गर्म हो जाने और आग के सभी गुणों को धारण कर लेने के बाद, और रंग तथा क्रिया में आग के समान हो जाता है, उसी प्रकार ये पवित्र शक्तियाँ भी, स्वभाव से पवित्रतम के साथ अपने मिलन के परिणामस्वरूप, अपने भीतर एक ऐसी पवित्रता रखती हैं जो पहले ही उनके पूरे अस्तित्व में व्याप्त हो चुकी है और उनके स्वभाव के साथ एक हो गई है। हालाँकि, उनके और पवित्र आत्मा के बीच अंतर यह है कि आत्मा में पवित्रता उनका अपना स्वभाव है, जबकि उनमें यह मिलन के माध्यम से पवित्रता प्राप्त करना है।"[1575]

"यदि हम आत्मा को मानसिक रूप से हटा दें, तो दैवीय पंक्तियाँ अव्यवस्था में पड़ जाएँगी, और महादूत प्रधानताएँ नष्ट हो जाएँगी; सब कुछ भ्रम में पड़ जाएगा, और उनका जीवन कानूनहीन, अव्यवस्थित और अनिश्चित हो जाएगा। क्योंकि आत्मा से सामर्थ्य न पाए हुए स्वर्गदूत कैसे कह सकते थे: *'महानतम में परमेश्वर का महिमा* हो' (लूका 2:14)? *परमेश्वर की आत्मा से बोलने वाला कोई भी यीशु के विरुद्ध शाप का वचन नहीं बोलेगा, और पवित्र आत्मा के सिवा कोई भी यीशु को 'प्रभु नहीं कह सकता* (1 कुरिन्थियों 12:3)। "जैसे रात में, यदि आप घर से रोशनी निकाल दें, तो आपकी आँखें अंधी हो जाती हैं, आपकी शक्ति निष्क्रिय हो जाती है, और चीजों का मूल्य अज्ञात रह जाता है, और सोना और चाँदी अज्ञानता के कारण मिट्टी की तरह पैरों तले रौंदे जाते हैं; इसी प्रकार, उच्च पदस्थ बुद्धिमान पुरुषों के लिए भी, आत्मा के बिना उनका जीवन कानून के अनुरूप रहना असंभव है, जैसे एक सेना में एक कमांडर के बिना व्यवस्था असंभव है, और गायकों के एक समूह में सामंजस्य एक कोरमास्टर के बिना असंभव है जो उन्हें व्यवस्थित करे। सेराफिम यह कैसे कहते कि: *'पवित्र, पवित्र, पवित्र है सेनाओं का यहोवा*( )' (यशायाह 6:3), यदि उन्हें आत्मा द्वारा यह नहीं सिखाया गया होता कि इस स्तुति-गीत को कितनी बार परमेश्वर के भय में घोषित किया जाना चाहिए? इसलिए, यदि उसके सभी स्वर्गदूत परमेश्वर की स्तुति करते हैं, और उसकी सभी शक्तियाँ उसकी स्तुति करती हैं, तो यह आत्मा के कार्य करने से ही है। यदि हजारों-हजारों स्वर्गदूत और उनकी सेवा करने वालों की भीड़ उनके सामने खड़ी होती है, तो यह पवित्र आत्मा की शक्ति से ही है कि वे अपनी सेवा का कार्य निर्दोष रूप से करते हैं। इसलिए, वह सारी स्वर्गीय और अकथनीय सामंजस्यता—चाहे ईश्वर की सेवा में हो या शाश्वत शक्तियों के बीच पारस्परिक सहमति में—पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन के अलावा संरक्षित नहीं रह सकती।

इस प्रकार, सृष्टि में, पवित्र आत्मा प्राणियों में इस प्रकार उपस्थित है कि वह धीरे-धीरे परिपूर्ण होने वाली कोई चीज़ नहीं, बल्कि सृष्टि के क्षण से ही पहले से परिपूर्ण है, और वह उनमें स्वयं से प्रत्येक सत्ता (τής ὑποστάσεως) की पूर्णता और परिपूर्णता के लिए अनुग्रह प्रदान करता है।[1576]

संत ग्रेगरी द थियोलोजियन: "पहले और अविभाज्य स्वभाव—ईश्वर (क्योंकि सरलता शांति और सुकून से भरी होती है)—के लिए पाप करना पूरी तरह से अपरिचित है; और इसी प्रकार, मैं कहने की हिम्मत करता हूँ, स्वदूतों के स्वभाव, या ईश्वर के सबसे निकट स्वभाव के लिए, उसी निकटता के कारण।"[1577] "मैं यह कहना चाहूँगा कि वे बुराई से अचल हैं और अच्छाई की ओर एक ही गति रखते हैं, परमेश्वर की उपस्थिति में रहने वाले प्राणी के रूप में (क्योंकि सांसारिक क्षेत्र को द्वितीयक प्रकाश प्राप्त होता है); लेकिन उन्हें अचल के रूप में नहीं, बल्कि हिलने में कठिन के रूप में पहचानने और वर्णन करने के लिए, मैं उसकी चमक में प्रातःतारा से प्रेरित हूँ, जबकि वह जो अपने अहंकार के कारण अंधकार बन गया है और जिसे अंधकार कहा जाता है, उसके अधीन अधर्मी शक्तियों के साथ—जो भलाई से अलग होकर बुराई के कर्ता बन गए हैं और हमें उसमें खींचते हैं।"[1578] "पवित्र आत्मा ने, सबसे पहले, दैवीय और स्वर्गीय शक्तियों में, अर्थात् उनमें

[1574] भजन संहिता 32 पर टीका, *पवित्र पिताओं की रचनाएँ*, खंड V, पृ. 271–272।

[1575] यूनोमियस के विरुद्ध, पुस्तक III, *पवित्र पिताओं के कार्यों* में, खंड VII, पृ. 134.

[1576] पवित्र आत्मा पर, अध्याय 16, वही, पृ. 289, 290–291।

[1577] पवित्र बपतिस्मा पर प्रवचन, *पवित्र पिताओं के कार्य*, III, 276; तुलना करें पृ. 50: 'वहाँ बुद्धिमान शक्तियाँ और मन हैं, जो शुद्ध स्वभाव की हैं, अपरिष्कृत, अडिग या बुराई की ओर आसानी से न झुकने वाली, प्रथम कारण की उपस्थिति में अनवरत आनंद मनाती हैं।'

[1578] उद्धारकर्ता के जन्म पर उपदेश, वही, पृ. 241.

जो परमेश्वर के बाद प्रथम हैं और परमेश्वर के चारों ओर हैं, उनके पूर्णत्व और प्रबोधन के लिए कार्य किया, और उनके द्वारा बुराई के प्रति किया गया प्रतिरोध या उससे अचलता, पवित्र आत्मा के सिवा और किसी से नहीं आती।"[1579]

यरूशलेम के संत सिरिल: "आपने उसकी (पवित्र आत्मा की) शक्ति को संसार भर में कार्यरत देखा है; पृथ्वी पर न ठहरो, बल्कि ऊँचाइयों पर उठो; अपना मन प्रथम स्वर्ग की ओर उठाओ, और वहाँ अनगिनत देवदूतों को निहारो। यदि तुम कर सकते हो, तो अपने विचारों को और भी ऊँचा उड़ने दो। देखो महादूतों को, देखो इन आत्माओं को, देखो शक्तियों को, देखो प्रधानताओं को, देखो अधिकारों को, देखो सिंहासनों को, देखो प्रभुत्वों को। इन सभी का सांत्वनादाता परमेश्वर से आत्मा, शिक्षक और पवित्रकर्ता है।"[1580] "उसमें जीवन और स्व-अस्तित्व है; वह बोलता और कार्य करता है, और वह मसीह के माध्यम से परमेश्वर द्वारा सृजित सभी तर्कशील प्राणियों, अर्थात् स्वर्गदूतों और मनुष्यों का पवित्रकर्ता है।"[1581]

एम्ब्रोस: "जिस प्रकार, प्रेरितों को पवित्र करने में, पवित्र आत्मा मानव स्वभाव का सहभागी नहीं बना, उसी प्रकार, स्वर्गदूतों, प्रधानताओं और शक्तियों को पवित्र करने में, वह सृष्टि का सहभागी नहीं बनता। और जो कोई यह सोचे कि स्वर्गदूतों में पवित्रता पवित्र आत्मा से नहीं, बल्कि उनकी अपनी प्रकृति के कारण किसी अन्य अनुग्रह से है, तो वह वास्तव में स्वर्गदूतों को मनुष्यों से नीच समझ रहा होगा। क्योंकि यदि यह असंभव है—जैसा कि हर कोई सहमत होगा—कि स्वर्गदूतों की तुलना पवित्र आत्मा से की जाए, और यह इनकार किया जाए कि पवित्र आत्मा मनुष्यों के हृदयों में उंडेल दिया जाता है, और आत्मा द्वारा पवित्रता परमेश्वर का एक उपहार है, तो निस्संदेह ऐसे लोग होने चाहिए जिनके पास सबसे बड़ी पवित्रता हो, जिन्हें स्वर्गदूतों से ऊपर रखना आवश्यक होगा। लेकिन चूँकि स्वर्गदूत लोगों की सहायता के लिए भेजे जाते हैं (इब्रानियों 1:14), इसलिए यह समझना चाहिए कि स्वर्गदूतों का स्वभाव मनुष्यों से श्रेष्ठ है, और यह आध्यात्मिक अनुग्रह के लिए अधिक ग्रहणशील है।"[1582]

सेंट जॉन ऑफ डेमास्कस: "देवदूत बुराई की ओर आसानी से झुकते नहीं हैं, लेकिन वे इससे पूरी तरह से प्रतिरक्षित भी नहीं हैं। अब, हालाँकि, वे पूरी तरह से प्रतिरक्षित हैं, अपनी प्रकृति के कारण नहीं, बल्कि अनुग्रह और एकमात्र सत्त्व के प्रति अपनी निरंतर निकटता के कारण।"[1583]

§ 105. ईश्वर अपने अच्छे स्वर्गदूतों को उनकी सेवा में शासन करते हैं

जब यह कहा जाता है कि ईश्वर स्वर्गदूतों पर शासन करते हैं, जैसा कि वे वास्तव में अपनी सभी सृष्टियों पर करते हैं, तो इसका अर्थ है कि वे उन्हें उनके अस्तित्व के उद्देश्य की ओर निर्देशित करते हैं, या उन्हें उनके ध्येय के अनुसार नियोजित करते हैं। लेकिन 'प्रेरित, ऑर्थोडॉक्स चर्च की शिक्षा के अनुसार, ईश्वर द्वारा अस्तित्वहीनता से अस्तित्व में लाए गए हैं ताकि वे उनकी महिमा करें और उनकी सेवा करें, और इसके अलावा इस दुनिया में लोगों की सेवा करें, उन्हें ईश्वर के राज्य में मार्गदर्शन करते हुए' (ऑर्थोडॉक्स कन्फेशन, भाग 1, प्रश्न 19 का उत्तर)। इस प्रकार, सर्वशक्तिमान का स्वर्गदूतों पर शासन, उनके उद्देश्य के अनुसार उन्हें नियोजित करने में निहित है:

(क) स्वयं की सेवा करने के लिए, और —

ख) मानवता की सेवा करना।

देवदूतों की ईश्वर की सेवा दो प्रकार की है:

1) वे सीधे तौर पर परमेश्वर की सेवा करते हैं, उनके सामने खड़े होकर, उनकी आराधना और महिमा करके। भविष्यवक्ता यशायाह ने देखा कि सेराफिम परमेश्वर के सिंहासन के चारों ओर खड़े थे, *और वे एक-दूसरे से कहकर पुकार*

[1579] पवित्र पेंटेकोस्ट पर उपदेश, वही, IV, 16। संत अथेनासियस स्वर्गदूतों के बारे में भी यही कहते हैं: οὐ τί γε διά τήν ἰδίαν φύσιν (γεννητά), ἀλλά διά μόνου τοῦ Χριστου ἐν ἁγίω πνεύματι (Contr. Arian. Orat. 1, II. 56)।

[1580] कैटेकेटिकल प्रवचन, XVI, n. 23, पृ. 362.

[1581] कैटेकेटिकल लेक्चर्स, XVII, n. 2, पृ. 373. तुलना करें: *सिलिसियस ऑफ़ अलेक्ज़ेंड्रिया,* आत्मा और सत्य की उपासना पर, पुस्तक IX: 'क्योंकि स्वर्गदूत और महादूत हैं, और उनसे भी परे के, और ये भी केरूबी हैं; फिर भी वे एक अलग तरीके से पवित्र हैं, क्योंकि वे पवित्र आत्मा में केवल मसीह के द्वारा हैं।'

[1582] De Spirit. S. 1, 7, n. 83, Patrologia Cursus Completus, खंड XVI, पृ. 724 में।

[1583] सही व्याख्या ऑर्थोडॉक्स विश्वास की, पुस्तक II, अध्याय 3, पृ. 56। यही विचार धन्य ऑगस्टीन में भी मिलता है: 'ईश्वर उन दोनों में उनकी प्रकृति के स्रोत और अनुग्रह के दाता के रूप में उपस्थित थे; इसलिए, यह मानना चाहिए कि पवित्र स्वर्गदूत कभी भी सद्भावना के बिना, यानी ईश्वर के प्रेम के बिना, अस्तित्व में नहीं थे' (De civit. Dei XI, c. 9).

रहे थे: 'पवित्र, पवित्र, पवित्र है सेनाओं का यहोवा; सारी पृथ्वी उसकी महिमा से भरपूर है (यशायाह 6:3)। भविष्यवक्ता दानियेल को भी स्वर्गीय सिंहासन पर विराजमान *प्राचीनकाल के दिनों का* दर्शन मिला, जबकि *हजारों-हजारों* स्वर्गदूत *उसकी सेवा कर रहे थे और अनगिनत लोग उसके सामने खड़े थे* (दानियेल 7:10)। भजनकार बार-बार स्वर्गदूतों से *प्रभु की स्तुति करने* (भजन संहिता 148:2), उसे *धन्य कहने* (102:20), और उसकी *आराधना करने* (96:7) के लिए कहता है। नए नियम का द्रष्टा स्वर्गीय सेनाओं की गवाही देता है: *वे न तो दिन में और न ही रात में विश्राम करते हैं, यह पुकारते हुए: 'पवित्र, पवित्र, पवित्र है सर्वशक्तिमान यहोवा परमेश्वर, जो था, और है, और आने वाला है* (प्रकाशितवाक्य 4:8); और एक अन्य अंश में: *सभी स्वर्गदूत सिंहासन के चारों ओर खड़े थे... वे सिंहासन के सामने मुँह के बल गिर पड़े और परमेश्वर की आराधना करके कहने लगे: 'आमीन! हमारे परमेश्वर के लिए आशीष और महिमा, ज्ञान और धन्यवाद, सम्मान और सामर्थ्य और शक्ति युगानुयुग तक हो! आमीन' (*7:11–12)।

चर्च के पवित्र पिता और शिक्षक भी स्वर्गदूतों की ईश्वर की प्रत्यक्ष सेवा के संबंध में यही बात दोहराते हैं:

क) *संत बेसिल द ग्रेट:* "देवदूतों का कार्य परमेश्वर की महिमा करना है। संपूर्ण स्वर्गीय सेना का केवल एक ही कार्य है—सृष्टिकर्ता को महिमा देना;"[1584] या: "उनके जीवन का प्राथमिक और प्रकृति-उचित उद्देश्य परमेश्वर की सुंदरता पर अपनी दृष्टि केंद्रित करना और परमेश्वर की अखंड महिमा करना है;"[1585]

ख) *संत ग्रेगरी द थियोलोजियन:* "दूसरे स्थान पर (ईश्वर के बाद) उच्चतम प्रकाश के महान सेवक हैं, जो मूलभूत सद्गुण के उतने ही करीब हैं जितना कि एथर सूर्य के;"[1586] "वे ईश्वर की महानता का गायन करते हैं, उसकी शाश्वत महिमा पर मनन करते हैं, और ऐसा शाश्वत रूप से करते हैं;"[1587]

ग) *संत अथेनासियस द ग्रेट:* "स्वर्गीय शक्तियों का कार्य क्या है? दिव्य महिमा के लिए अखंड स्तुति और निरंतर प्रेम;"[1588]

d) *धन्य थियोडोरेट:* "देवदूतों की सेवा स्तुति के गीत गाने में निहित है। क्योंकि सेराफिम के विषय में, धन्य यशायाह कहते हैं कि वे एक-दूसरे को पुकारते हैं और कहते हैं: *'सेनाओं का यहोवा पवित्र, पवित्र, पवित्र है; सारी पृथ्वी उसकी महिमा से भरपूर है!'* (6:3)। जहाँ तक करूबों का प्रश्न है, दैवीय यहेज़केल ने कहा कि उन्होंने उन्हें यह कहते हुए सुना: *'धन्य हो प्रभु की महिमा अपने स्थान से* (3:12);"[1589]

(घ) *सेंट जॉन ऑफ़ डेमास्कस:* "वे (देवदूत) स्वर्ग में निवास करते हैं, और उनका एकमात्र कार्य ईश्वर की स्तुति करना और उसकी दिव्य इच्छा की सेवा करना है।"[1590]

यह भी जोड़ना चाहिए कि, चूँकि स्वर्गदूत पूरी तरह से अदेह आत्माएँ हैं, इसलिए परमेश्वर के सामने उनकी उपस्थिति, उनकी स्तुति और उनकी आराधना को आध्यात्मिक अर्थ में समझना चाहिए।

2) वे ब्रह्मांड पर ईश्वर की व्यवस्था के उपकरण के रूप में ईश्वर की सेवा करते हैं। यह पवित्र शास्त्र द्वारा पुष्टि की जाती है, जो मुख्य रूप से उन्हें *स्वर्गदूत* (ἄγγελός, संदेशवाहक) (इब्रानियों 1:4–6; 1 तीमुथियुस 5:1, आदि) और *ईश्वर के* स्वर्गदूत (मत्ती 22:30; लूका 15:10), *प्रभु के* स्वर्गदूत (मत्ती 1:20; प्रेरितों के काम 5:19; 12:7), अर्थात् ईश्वर द्वारा अपनी आज्ञाओं को पूरा करने के लिए संसार में भेजे गए प्राणी; यह उन्हें उसकी *शक्तियाँ* और *उसकी इच्छा को पूरा करने वाले* उसके *सेवक* (भजन संहिता 102:20–21) के रूप में भी संदर्भित करता है, और दुनिया में उनके वास्तविक मिशन के कई उदाहरण प्रस्तुत करता है (उत्पत्ति अध्याय 18:19, 28; दानियेल 9:21; लूका 1:28; मत्ती 1:20, आदि)। यह चर्च के शिक्षकों द्वारा भी सिखाया जाता है, उदाहरण के लिए:

क) *संत ग्रेगरी द थियोलोजियन:* 'उनमें से (देवदूतों में से), कुछ महान ईश्वर के सामने खड़े हैं, जबकि अन्य, उनकी सहायता के माध्यम से, संपूर्ण विश्व को धारण करते हैं;'[1591] और आगे: 'इनमें से प्रत्येक ने ब्रह्मांड का कोई न कोई

[1584] भजन संहिता 28 पर टीका, *द वर्क्स ऑफ़ द होली फ़ादर्स*, खंड V, पृ. 244.

[1585] यशायाह भविष्यवक्ता की पुस्तक 6 पर भाष्य, वही, VI, 255.

[1586] संस्कारों पर भजन, परमेश्वर की व्यवस्था पर भजन V, वही, IV, 237.

[1587] धर्मोपदेश 3, वही, खंड III, पृ. 51.

[1588] पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के सामान्य सार पर, संख्या 52।

[1589] ईश्वरीय सिद्धांतों की संक्षिप्त व्याख्या, अध्याय 7, *क्रिश्चियन रीडिंग्स* 1844, IV, 208 में।

[1590] ऑर्थोडॉक्स विश्वास की सटीक व्याख्या, पुस्तक II, अध्याय 3, पृ. 56.

[1591] रहस्यों पर भजन, संख्या 6, *पवित्र पिताओं के कार्यों* में, खंड IV, पृ. 236.

हस्सिा अपने ऊपर ले लयिा है, या उन्हें दुनयिा में कसिी वशिेष चीज़ के लिए नयिुक्त कयिा गया है, जैसा कि उसको ज्ञात था जसिने सभी चीज़ों को व्यवस्थति और वतिरति कयिा, और वे सभी सभी चीज़ों के स्रष्टा की आज्ञा पर एक ही उद्देश्य की ओर ले जाते हैं;"[1592]

ख) *धन्य थियोडोरेट:* "वे न केवल स्तुति के गीत गाते हैं, बल्कि ईश्वर की दव्यि व्यवस्था के कार्यों में भी उनकी सेवा करते हैं;"[1593]

ग) *दमास्कस के संत जॉन:* "वे शक्तशिाली हैं और ईश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिए तैयार हैं, और अपनी प्रकृति की तीव्रता से वे तुरंत wherever दव्यि आज्ञा उन्हें नर्दिेशति करे, वहां प्रकट हो जाते हैं। वे पृथ्वी के हस्सिों की रक्षा भी करते हैं, लोगों और स्थानों पर शासन करते हैं, जैसा कि सृष्टकिर्ता द्वारा ऐसा करने के लिए नयिुक्त कयिा गया है, हमारे मामलों को व्यवस्थति करते हैं और हमारी सहायता करते हैं।"[1594]

वशिेष रूप से, स्वर्गदूत परमेश्वर की व्यवस्था के उपकरण के रूप में कार्य करते हैं:

1. स्वर्गदूतों की दुनयिा के बारे में स्वयं। बल्कुि शुरुआत से, प्रभु परमेश्वर ने, अदेह आत्माओं के बीच उनकी प्राकृतकि शक्तयिों और सद्धियिों के अनुसार अंतर के अनुसार, उन्हें वर्गों में वभिाजति कयिा और उनके बीच एक पदानुक्रम या पवत्रि व्यवस्था स्थापति की, ताकि उनके बीच उच्च और नम्निि पद हों, उनमें अधकिार रखने वाले और अधकिार के अधीन रहने वाले हैं, और कुछ, अपनी सेवा के संबंध में, उदाहरण के लिए, *प्रधानताएँ, अधपित्तयिाँ और शक्तयिाँ* (कुलु. 1:16) कहलाते हैं, अन्य — *महादूत* (1 थस्सि. 4:19), और अन्य — केवल *स्वर्गदूत* (1 पत. 3:22) (ऊपर § 66 देखें). स्वर्गीय जगत की इस संरचना के कारण, सर्वोच्च प्रभु स्वर्गदूतों को केवल स्वर्गदूतों के माध्यम से ही शासन करते हैं, और स्वर्गदूतों के नम्निि क्रम परमेश्वर से प्रबोधन और पवत्रिता प्राप्त करते हैं, और उन्हें उनके अस्तत्वि के अंतमि उद्देश्य की ओर केवल उच्चतरों के माध्यम से ही ले जाया जाता है। हमने पहले ही कुछ पवत्रि पतिाओं, जैसे कि महा आथेनासयिस, एफ्रेम द सीरयिन और जॉन ऑफ़ डेमास्कस, की इस वषिय पर शकि्षाओं पर वचिार कर लयिा है।[1595]

अब इस वषिय पर संत डायोनसियिस द एरोपागटि के वचिारों का, यद्यपि संक्षप्ति रूप में, उद्धरण करना पर्याप्त है, जन्हिोंने स्वर्गीय पदानुक्रम के रहस्यों में सबसे गहराई तक प्रवेश कयिा और सबसे स्पष्ट अंतर्दृष्टि प्राप्त की। वे वशिेष रूप से कहते हैं:

क) कि "सबसे उच्च पदक्रम—सराफ़ीम, करूब और सहिासन, जो असीम को वशिेष रूप से नकिट हैं—दूसरे पर शासन करते हैं, जो और भी दूर स्थति है; जबकि दूसरी, जसिमें पवत्रि प्रभुत्व, शक्तयिाँ और अधकिार शामलि हैं, प्रधानताओं, महादूतों और स्वर्गदूतों की पदानुक्रम को शासति करती है, जो प्रभु से और भी अधकि दूरी पर स्थति है;"[1596]

(ख) कि "और प्रत्येक पदानुक्रम के भीतर—न केवल उच्च और नम्निि आदेशों के बीच, बल्कि एक ही पद के बीच भी—पहले, मध्य और अंतमि रैंक और शक्तयिाँ होती हैं, और उच्च वाले नम्निि वालों के लिए गुप्त मार्गदर्शक और नेता के रूप में कार्य करते हैं;"[1597]

ग) कि स्वर्गीय आदेशों का यह मार्गदर्शन और गतविधि "वास्तवकि शुद्धकिरण, दैवी प्रकाश और पूर्ण करने वाले ज्ञान को स्वयं ग्रहण करने और दूसरों तक संप्रेषति करने में वभिाजति है: पहली पदानुक्रम, जो सीधे परमेश्वर के चारों ओर और परमेश्वर के करीब स्थति है, यह सब स्वयं परमेश्वर से प्राप्त करती है, और इसे दूसरे को संप्रेषति करती है; दूसरा, जो अब सीधे ईश्वर से नहीं बल्कि पहले से प्राप्त करता है, उसे तीसरे को सौंपता है। और इसलिए—

[1592] धर्मशास्त्र पर प्रवचन, संख्या 2, वही, III, 51.
[1593] उपरोक्त टप्पिणी 1589 देखें।
[1594] सच्चे वश्विास की सटीक व्याख्या, पुस्तक II, अध्याय 3, पृ. 55.
[1595] ऊपर § 104 और टप्पिणयिाँ 1570, 1571, 1573 देखें।
[1596] दव्यि पदानुक्रम पर, पृ. 39, मॉस्को, 1839.
[1597] उपरोक्त, पृ. 21.

(d) पहले मन को निम्नलिखित के संबंध में परिष्कारक, प्रबुद्ध करने वाली और शुद्ध करने वाली शक्तियाँ कहा जाता है, जबकि बाद वाले, पहले वालों के माध्यम से, सभी के सर्वोच्च सिद्धांत तक उठाए जाते हैं, और जहाँ तक संभव हो, रहस्यमय शुद्धिकरण, प्रबुद्धता और पूर्णता के सहभागी बन जाते हैं।"[1598] इस प्रकार —

d) "श्रेणीक्रम का प्रत्येक पद, अपनी क्षमता के अनुसार, दिव्य कार्यों और दैवीय शक्ति में भाग लेता है, अपनी शक्तियों को निम्नतर प्राणियों तक संप्रेषित करके।"[1599]

2. भौतिक जगत के संबंध में। कम से कम, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में चार स्वर्गदूतों के बारे में विवरण है *जो पृथ्वी की चार हवाओं को रोक रहे हैं* (7:1), *जल के स्वर्गदूत के* बारे में (16:5), और *उस स्वर्गदूत के* बारे में *जिसके पास आग पर अधिकार है* (14:18)। इन संकेतों के आधार पर, मसीह की कलीसिया के भीतर लंबे समय से यह रहा है—यदि एक धर्मशास्त्रीय शिक्षण नहीं, तो कम से कम यह दृष्टिकोण—कि परमेश्वर स्वर्गदूतों को दृश्यमान जगत के भागों और तत्वों के शासन का कार्य सौंपता है। यह विचार पवित्र शहीद जस्टिन द्वारा व्यक्त किया गया है: 'ईश्वर ने मानव जाति और स्वर्ग के अधीन सभी चीजों की देखभाल का काम स्वर्गदूतों को सौंपा है, जिन्हें उसने इन सभी चीजों पर नियुक्त किया है।'[1600] फिर, और भी अधिक जोर देकर, एथेनागोरस कहते हैं: "संसार का सृष्टिकर्ता और वास्तुकार, ईश्वर, ने उन्हें (देवदूतों को) अपने वचन द्वारा विभाजित किया, और उन्हें तत्त्वों, और स्वर्गों, और संसार, और उसमें जो कुछ भी है, और उनके क्रम पर नियुक्त किया।"[1601] इसके बाद ओरिजिन, सेसरेआ के यूसेबियस, ग्रेगरी द थियोलोजियन, जेरोम, ऑगस्टीन, जॉन ऑफ़ डेमास्कस और हमारे अपने रूसी संत, रोस्तोव के दिमित्री।[1602] कुछ ने जैविक और अजैविक दुनिया के विभिन्न हिस्सों पर नियुक्त विशिष्ट स्वर्गदूतों के अस्तित्व को स्वीकार किया,[1603] जानवरों पर,[1604] पौधों पर[1605] और सामान्यतःसभी दृश्यमान वस्तुओं पर।[1606]

3. निम्नतर जगत, या मानव जाति पर। इस संबंध में, पवित्र प्रेरित पौलुस स्वर्गदूतों के विषय में स्पष्ट रूप से कहते हैं: *क्या वे सब सेवा करने वाली आत्माएँ नहीं हैं, जिन्हें उन लोगों की सेवा के लिए भेजा गया है जो उद्धार के वारिस होने वाले हैं?* (इब्रानियों 1:14)? फिर भी, स्वदूतों की इस दूसरी सेवा का स्वरूप, अपनी महत्वता और हमारे निकट होने के कारण, सबसे विस्तृत विचार का पात्र है।

§ 106. ईश्वर सामान्य रूप से मानव जाति की सेवा में अच्छे स्वर्गदूतों का निर्देशन करते हैं

ऑर्थोडॉक्स चर्च लोगों के प्रति स्वर्गदूतों की सेवा के संबंध में निम्नलिखित सिखाती है: 'उन्हें शहरों, राज्यों, क्षेत्रों, मठों, चर्चों और लोगों, आध्यात्मिक और सांसारिक दोनों की रक्षा के लिए नियुक्त किया गया है... पुरानी वाचा में, मूसा की व्यवस्था दिए जाने से पहले, स्वर्गदूतों ने हमारे पूर्वजों को व्यवस्था और परमेश्वर की इच्छा सिखाई, और उन्हें उद्धार का मार्ग दिखाया; और बाद में, जब व्यवस्था दी गई, तो उन्होंने उन्हें सिखाया और उन्हें भलाई की ओर निर्देशित किया... वे ईश्वर के कार्यों की घोषणा भी करते हैं—इस प्रकार, मसीह के जन्म पर, उन्होंने चरवाहों को यह बताया कि मसीह का जन्म बेतलहम में हुआ था। इसके अलावा, ईश्वर की आज्ञा से, वे हर व्यक्ति के साथ हर जगह मौजूद रहते हैं" (ऑर्थोडॉक्स कन्फेशन, भाग 1, प्रश्न 19 का उत्तर)। इससे यह स्पष्ट है कि मानव जाति के प्रति स्वर्गदूतों की सेवा तीन विशिष्ट क्षेत्रों में विभाजित है। स्वर्गदूत—

[1598] उपरोक्त, पृ. 35 और 37।

[1599] उपरोक्त, पृ. 17 और 59। सामान्यत; स्वर्गीय पदानुक्रम, प्रत्येक क्रम के विशिष्ट उद्देश्य और मंत्रालय पर सबसे विस्तृत जानकारी संत डायोनिसियस द एरोपागिट की उपरोक्त कृति और 8 नवंबर (नए संस्करण) के अंतर्गत चेती-मिनेई में पाई जा सकती है।

[1600] डायलॉग. कुम ट्रायफ. एन. वी.

[1601] लेगैट. X, XXIV.

[1602] *ओरिजिन,* यिर्मयाह पर उपदेश X, n. 6; *यूसेबियस,* सुसमाचार का प्रदर्शन, IV, 10; *ग्रेगरी द थियोलोजियन,* परमेश्वर के धर्मशास्त्र पर उपदेश 2, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स* में, III, 51; *जेरोम,* गलातियों पर टीका, IV, 3; *ऑगस्टीन,* *डे जेनेसी एड लिट.* XII, 36; *जॉन ऑफ डेमास्कस,* *एक्ज़ैक्ट एक्सपोज़िशन ऑफ़ द ऑर्थोडॉक्स फेथ*, पुस्तक II, अध्याय 3; *डेमेट्रियस ऑफ रोस्टोव,* *चेट्टी-मिनेई* 8 नवंबर के लिए (उपरोक्त)।

[1603] *ओरिजिन,* जॉन पर भाष्य, खंड XIII, संख्या 49.

[1604] *हर्म.* पास्ट. विस. II, पृ. II; *एथेनाग.* अपुड *फोटो.* बाइब्लियोथ. कोड. CCXXXII; *ओरिजिन,* संख्या पर प्रवचन, प्रवचन XIV, n. 2.

[1605] *ओरिजिन,* संख्या पर होमीली, XIV, n. 2.

[1606] *ऑगस्टीन,* *डे डिविर्ससि क्वेश्चनसि*, LXXXIII, प्रश्न 79.

1) ने पूरे मानव जाति की सेवा की जब उन्होंने पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य, या परमेश्वर की कलीसिया की स्थापना में सक्रिय भाग लिया, जो पुराने और नए नियम दोनों में हुआ;

2) मानव समुदायों की सेवा करते हैं: ये राज्यों, क्षेत्रों और चर्चों के संरक्षक देवदूत हैं;

3) व्यक्तिगत लोगों की सेवा करते हैं: ये निजी व्यक्तियों के संरक्षक स्वर्गदूत हैं।

पवित्र शास्त्र स्पष्ट रूप से इस तथ्य की गवाही देते हैं कि पृथ्वी पर परमेश्वर की कलीसिया की स्थापना के दौरान स्वर्गदूतों ने संपूर्ण मानव जाति की सेवा की:

पुरानी वाचा की कलीसिया में —

1. स्वर्गदूतों ने अक्सर लोगों को व्यवस्था से पहले, कुलपिता के काल में, ईश्वर की इच्छा सिखाई, जब वे धर्मी लोगों के पास प्रकट हुए, उदाहरण के लिए: अब्राहम (उत्पत्ति अध्याय 18), लूत (19), याकूब (28:12; 32:1–2), या तो उन्हें भविष्य बताने के लिए, या उन्हें विनाश से बचाने के लिए, या उन्हें सांत्वना देने और मदद का हाथ बढ़ाने के लिए; और कभी-कभी उन्हें परमेश्वर के धर्मी न्याय के अनुसार, पापियों को दंड देने के लिए भेजा जाता था, उदाहरण के लिए, सदोम के निवासियों को (उत्पत्ति 19:13), पृथ्वी पर सभी लोगों की शिक्षा और निर्माण के लिए (2 पतरस 2:6)।

2. स्वर्गदूतों के मध्यस्थता या सहयोग के माध्यम से, पत्थरों पर लिखित व्यवस्था स्वयं मानव जाति को दी गई, जैसा कि स्पष्ट है:

(क) आंशिक रूप से मूसा के वृत्तांत से कि व्यवस्था देने वाले परमेश्वर सिनाई पर्वत पर *संतों की एक मंडली के साथ* प्रकट हुए (व्यव. 33:2);

ख) यहूदियों से पहले शहीद स्तेफन के शब्दों से और भी अधिक स्पष्ट होता है: *'तुम जिन्होंने स्वर्गदूतों की सेवा* (εἰς διαταγάς ἀγγέλων) *द्वारा व्यवस्था प्राप्त की और उसे नहीं माना'* (प्रेरितों के काम 7:53); और —

ग) पवित्र प्रेरित पौलुस के इस कथन से कि व्यवस्था *स्वर्गदूतों के द्वारा* (διαταγείς δι' αγγέλων) *दी गई थी* (गला. 3:19; तुलना करें इब्र. 2:2)।

3. अंत में, लिखित व्यवस्था दिए जाने के बाद भी स्वर्गदूतों ने लोगों को अक्सर निर्देश दिया, उदाहरण के लिए भविष्यवक्ताओं, जैसे दानियेल (9:21) और जकर्याह (3:1) के पास प्रकट होकर, और उन्हें मानव उद्धार के संबंध में परमेश्वर की इच्छा का प्रकाशन किया।

नए नियम की कलीसिया के इतिहास में:

1. हम स्वर्गदूतों को मानव जाति के प्रति उनकी उत्कृष्ट सेवकाई के सभी सबसे महत्वपूर्ण क्षणों में हमारे विश्वास के स्वयं रचयिता और परिपूर्णकर्ता के सेवकों के रूप में देखते हैं। अर्थात्—

क) पृथ्वी पर उनके आगमन के समय, जब स्वर्गदूतों ने उनके अग्रदूत (लूका 1:28) और स्वयं उनके (मत्ती 1:20) गर्भधारण की घोषणा की, और उनके जन्म की घोषणा की और उसकी महिमा की (लूका 2:9);

ख) एक शिक्षक के रूप में उनकी सार्वजनिक सेवकाई की शुरुआत में, जब प्रभु को जंगल में शैतान द्वारा परीक्षा देने के बाद, *स्वर्गदूत आए और उनकी सेवा की* (मत्ती 4:5);

ग) सूली पर उसकी मृत्यु से पहले, जिसके द्वारा उसने हमें व्यवस्था के श्राप से छुड़ाया, गेथ्सेमनी के बगीचे में, *स्वर्ग से एक स्वर्गदूत उसके पास प्रकट हुआ और उसे बल दिया* (लूका 22:43);

ग) स्वर्ग में उनकी आरोहण के समय (प्रेरितों के काम 1:11), जहाँ से उन्होंने प्रेरितों पर पवित्र आत्मा को भेजा।

2. स्वर्गदूतों ने पवित्र प्रेरितों की भी सेवा की, जिन्हें प्रभु ने स्वर्ग में आरोहण करते समय, अपने अनुग्रह के राज्य की पृथ्वी पर स्थापना को पूरा करने का कार्य सौंपा था, जिसकी शुरुआत उन्होंने स्वयं की थी। इस प्रकार, एक स्वर्गदूत ने प्रेरितों को उस जेल से बाहर निकाला जहाँ उन्हें मसीह के क्रूस के शत्रुओं द्वारा बंद किया गया था (प्रेरितों के काम 5:19); बाद में एक स्वर्गदूत ने प्रेरित पतरस को जेल से बाहर निकाला (प्रेरितों के काम 12:7); एक स्वर्गदूत ने गैर-यहूदी कोर्नेलियस को इस प्रेरित को अपने घर पर आमंत्रित करने और उनसे बपतिस्मा लेने के लिए निर्देश दिया (प्रेरितों के काम 10:3); एक स्वर्गदूत ने पवित्र प्रेरित पौलुस को समुद्र में एक भयानक तूफान के दौरान सांत्वना दी, जिसने उन्हें और उनके साथियों को मृत्यु के खतरे में डाल दिया था (प्रेरितों के काम 27:23), और इसी तरह।

§107. मानव समाजों के संरक्षक स्वर्गदूत

प्रभु संपूर्ण मानव समाजों को स्वर्गदूतों की देखभाल के लिए सौंपते हैं।

1. राज्यों और राष्ट्रों के संरक्षक स्वर्गदूत होते हैं। इस शिक्षा का आधार दानियेल की पुस्तक (अध्याय 10) में मिलता है। वहाँ यह वर्णित है कि एक बार, जब दानियेल ने फारसी जूए से यहूदियों की मुक्ति के लिए परमेश्वर से अपनी प्रार्थनाएँ तीव्र कीं, और *तीन सप्ताह* (3) से प्रार्थना कर रहे थे, एक महादूत (गैब्रियल) उसे दिखाई दिए और कहा: *'पहले ही दिन से,* जैसे ही आपने प्रार्थना करना शुरू किया, *आपके वचन सुने गए, और मैं आपके वचनों के अनुसार,* परमप्रभु के सिंहासन के सामने आपके लिए मध्यस्थता करने *आया*।'[1607] लेकिन पूरे *इक्कीस दिन* (यानी, तीन सप्ताह) तक, जब मैं आपके लोगों को फारस के जुए से मुक्ति दिलाने के लिए आपके साथ प्रार्थना कर रहा था, *फारस के राज्य का राजकुमार मेरे विरोध में खड़ा रहा* (13), और उसने परमेश्वर से यहूदियों को फारसी शासन के अधीन रखने का अनुरोध किया। और यह तब तक नहीं हुआ जब तक कि *प्रमुख राजकुमारों में से एक, माइकल,* यहूदियों की ओर से मध्यस्थता करने में *मेरी सहायता के लिए नहीं आया, और तब तक मैं फारस के राजाओं के साथ वहाँ रहा। और अब मैं तुम्हें यह बताने आया हूँ कि अंतिम दिनों में तुम्हारे लोगों के साथ क्या होगा* (13–14)। अब *मैं फारसि के राजकुमार से लड़ने को लौटूँगा; और जब मैं चला जाऊँगा, तो देखो, यूनान का राजकुमार आएगा* (20)। *परन्तु मैं तुझ पर वह प्रगट करूँगा जो सच्चे धर्मग्रन्थ में लिखा है; और इस में मेरा सहायक कोई नहीं है, सिवाय मिकैल, तुम्हारे राजकुमार के* (21)। हम यह न भूलें कि जिसने ये वचन बोले, उसे परमेश्वर ने स्वर्ग से दानियेल के पास भेजा था; इसलिए, जिस घटना के बारे में स्वर्गीय दूत ने बात की, वह स्वर्गीय क्षेत्र में हुई, जहाँ वह फारसि के राजकुमार से लड़ने के लिए वापस जाने की जल्दी में था। यदि ऐसा है, तो फ़ारसी, यूनानी और यहूदी राज्यों के राजकुमारों के नामों से हमारा तात्पर्य सांसारिक राजकुमारों से नहीं, बल्कि स्वर्गीय राजकुमारों से होना चाहिए, अर्थात् स्वर्गदूतों से, जिन्हें परमेश्वर ने उक्त राज्यों का प्रभार सौंपा था। यह और भी निश्चित है क्योंकि यहूदी राजकुमार का स्पष्ट रूप से नाम *माइकल* बताया गया है — जो स्वर्गीय सेनाओं के एक महादूत का नाम है; और पृथ्वी पर, दानियेल के दिनों में, यहूदियों का कोई माइकल नामक राजकुमार नहीं था।[1608] इसी आधार पर,[1609] चर्च के पवित्र पिता और शिक्षकों ने लगातार यह सिखाया है कि पूरे राष्ट्रों के लिए संरक्षक स्वर्गदूत होते हैं, जैसा कि इन शब्दों से स्पष्ट है:

a) *संत डायोनिसियस द एरोपागिट:* "दैवीय धर्मशास्त्र हमारे आध्यात्मिक नेतृत्व को स्वर्गदूतों को सौंपता है, जब यह माइकल को यहूदी लोगों का राजकुमार कहता है, ठीक वैसे ही जैसे यह अन्य स्वर्गदूतों को अन्य राष्ट्रों के राजकुमार कहता है;"[1610]

ख) *संत बेसिल द ग्रेट:* "सभी स्वर्गदूत एक ही नाम और, बेशक, सभी के लिए सामान्य एक ही स्वभाव को साझा करते हैं; फिर भी उनमें से कुछ को राष्ट्रों पर शासन करने के लिए नियुक्त किया जाता है, जबकि अन्य को प्रत्येक विश्वासी के साथी होने के लिए नियुक्त किया जाता है। लेकिन जिस हद तक एक संपूर्ण लोगों को एक व्यक्ति से बेहतर

[1607] धन्य जेरोम टिप्पणी करते हैं, 'जहाँ तक इस बात का प्रश्न है, यह कहा गया है: *"और मैं भी तुम्हारे शब्दों के कारण प्रभु के सामने आया हूँ"* इसका अर्थ यह है: "जब तुमने अच्छे कर्मों, आँसुओं और उपवास के द्वारा ईश्वर की दया का आह्वान करना शुरू किया, तब मैंने भी यह अवसर लिया कि प्रभु के सामने आकर तुम्हारे लिए प्रार्थना करूँ" (पैट्रोलोजिया कर्सस कम्प्लेटस, खंड XXVI, पृ. 556 में दानियेल पर भाष्य, अध्याय X, श्लोक 12)।

[1608] "लेकिन वे पूछते हैं, हमें उन स्वर्गदूतों के इस विरोध को कैसे समझना चाहिए जो राष्ट्रों पर शासन करते हैं, जबकि स्वर्गदूत अच्छे और ईश्वर की इच्छा के प्रति आज्ञाकारी होते हैं? फारस के राजकुमार ने यहूदियों के राजकुमार का विरोध कैसे किया?" इसके उत्तर में, संत जॉन क्राइसोस्टोम और चर्च के अन्य शिक्षकों के पदचिन्हों पर चलते हुए, निम्नलिखित उत्तर दिया जा सकता है: उस समय जब स्वर्गदूत गब्रियल और यहूदी लोगों के स्वर्गदूत, नबी दानियेल के साथ, इसराएल के पुत्रों की यरूशलेम से कैद से वापसी के लिए परमेश्वर से प्रार्थना कर रहे थे, इसे उनके भले के लिए मानते हुए, — फारसियों के राजकुमार या देवदूत ने ईश्वर से बंधन जारी रखने के लिए प्रार्थना की, और इसके लाभ बताए — दोनों के लिए, उन पगनों के लिए जिन्हें उसे सौंपा गया था, जिन्होंने बंधन के दौरान यहूदियों से आस्था और धार्मिकता के कई सत्य उधार लिए थे और यदि वे ऐसे शिक्षकों को खो देते तो वे आसानी से अपनी पूर्व दुष्टता में वापस डूब सकते थे, और स्वयं यहूदियों के लिए भी, जो, अपने स्वदेश में समृद्धि के बीच, बहुत आसानी से मूर्तिपूजा में पड़ गए थे, लेकिन बंधन में उन्होंने अपने पूर्वजों के परमेश्वर की लगन से खोज की थी। यद्यपि दोनों स्वर्गदूतों ने अच्छे इरादों से इस प्रकार प्रार्थना की, चूँकि परमेश्वर की इच्छा अभी तक उनके लिए अज्ञात थी, वे, एक तरह से, एक-दूसरे के विरोधी थे (सेंट *जॉन क्रिसोम,* इन *फोटो.* बाइब्लियोथ., कोड. CCLXXVII, पृ. 1543–1546, सं. जेनेवा 1612; वही, दानियेल की पुस्तक के प्रमुख अंशों पर व्याख्या, पवित्र पिताओं द्वारा निर्देशित, क्र. खि. 1845, I, 195)।

[1609] और साथ ही सप्तुअगिंट अनुवाद के अनुसार व्यवस्थाविवरण 32:8 पर आधारित।

[1610] स्वर्गीय पदानुक्रम पर, रूसी अनुवाद के पृष्ठ 40 पर।

माना जाता है, उसी तरह, निस्संदेह, एक लोगों पर शासन करने वाले स्वर्गदूत की गरिमा, एक व्यक्ति की देखभाल के लिए सौंपे गए स्वर्गदूत की गरिमा से अनिवार्य रूप से उच्चतर होती है;"[1611]

(ग) *संत ग्रेगरी द थियोलोजियन:* "प्रत्येक (दूत) को राजा द्वारा लोगों, शहरों और संपूर्ण राष्ट्रों की देखरेख के लिए एक विशेष अधिकार प्रदान किया गया है;"[1612]

d) *धन्य थियोडोरेट:* "दिव्य नबी दानियेल कहते हैं कि उनमें से कुछ को राष्ट्रों पर अधिकार सौंपा गया है: *'फारसी के राज्य का राजकुमार मेरे विरुद्ध खड़ा हुआ* (10:13)। वह ग्रीस के राजकुमार का भी उल्लेख करते हैं, और जोड़ते हैं कि यहूदियों की स्वतंत्रता के लिए परमेश्वर के सामने मध्यस्थता करने में उनकी मदद करने वाला कोई नहीं था, सिवाय उनके राजकुमार माइकल के (दानियेल 10:20-21)...; कुछ स्वर्गदूत पूरे राष्ट्रों पर शासन करते हैं, जबकि अन्य प्रत्येक व्यक्ति के मानव की देखभाल के लिए सौंपे गए हैं;"[1613]

(डी) *दमास्कस के संत जॉन:* "वे (देवदूत) पृथ्वी के हिस्सों की रक्षा करते हैं, राष्ट्रों और स्थानों पर शासन करते हैं, जैसा कि सृष्टिकर्ता द्वारा उन्हें ऐसा करने के लिए नियुक्त किया गया है;"[1614] और कई अन्य पवित्र पिताओं का उल्लेख है।[1615]

तो, राष्ट्रों पर शासन करने वाले स्वर्गदूतों की सेवा में क्या शामिल है? निस्संदेह, यह उन लोगों के कल्याण को हर संभव तरीके से बढ़ावा देने और उन्हें हर बुराई से बचाने या मुक्त करने में, उन्हें नागरिक सुधार के मार्ग पर मार्गदर्शन करने में, और विशेष रूप से उन्हें ईश्वर की ओर, मसीह के उद्धारक विश्वास के माध्यम से प्रबोधन की ओर ले जाने में निहित है, यदि वे अभी तक प्रबुद्ध नहीं हुए हैं, और यदि वे पहले से ही प्रबुद्ध हो चुके हैं, तो उन्हें ईसाई भक्ति के मार्ग पर ले जाना—यह परोपकारी ईश्वर की अवधारणा से स्वतःस्पष्ट है, जो राष्ट्रों की देखभाल का कार्य स्वर्गदूतों को सौंपता है, और स्वयं अच्छे स्वर्गदूतों की अवधारणा से, जिन्हें ऐसा कार्य सौंपा गया है। संत डायोनिसियस द एरोपागिट कहते हैं, 'सभी स्वर्गदूत,' 'प्रत्येक अपने-अपने लोगों पर नियुक्त है, जो स्वेच्छा से उनकी आज्ञा मानते हैं, उन्हें परमेश्वर, जो उनका स्रोत है, तक यथासंभव ले जाता है; और अन्य लोग (यहूदी लोगों के अलावा) किसी विदेशी देवताओं द्वारा नहीं, बल्कि सभी चीजों के एकमात्र स्रोत द्वारा शासित थे, और स्वर्गदूत, प्रत्येक अपने-अपने लोगों पर अध्यक्षता करते हुए, अपने अनुयायियों को उसी के पास ले गए।'[1616] "इन बुद्धियों ने," सेंट ग्रेगरी द थियोलोजियन ( ) लिखते हैं, "प्रत्येक ने ब्रह्मांड का एक निश्चित हिस्सा अपने ऊपर ले लिया, या उन्हें दुनिया में किसी विशेष चीज़ के लिए नियुक्त किया गया था, जैसा कि उस एक को पता था जिसने सभी चीजों को व्यवस्थित और वितरित किया, और वे सभी सभी चीजों के स्रष्टा की आज्ञा पर एक ही लक्ष्य की ओर ले जाते हैं।"[1617]

पालक स्वर्गदूतों के पास अपने उद्देश्य की प्राप्ति के दो मुख्य साधन हैं। पहला है परमेश्वर के सामने मध्यस्थता और उन लोगों के लिए प्रार्थना जिन्हें उनके सुपुर्द किया गया है, जैसा कि दानियेल भविष्यवक्ता के अध्याय 10 में उल्लेखित राष्ट्रों पर शासन करने वाले स्वर्गदूतों द्वारा परमेश्वर के सिंहासन के सामने प्रार्थनापूर्ण संवाद से, और उनके प्रधान माइकल द्वारा यहूदी लोगों के लिए एक अन्य मध्यस्थता से स्पष्ट है, जिसका उल्लेख आगे किया गया है (अध्याय 12:1)। और सबसे पूर्ण आत्माओं तथा ईश्वर के सबसे निकट आत्माओं की प्रार्थना निस्संदेह मनुष्यों की प्रार्थना से, या यहाँ तक कि पूरे राष्ट्रों की प्रार्थना से भी अधिक शक्तिशाली और प्रभावशाली होती है। दूसरा है लोगों—विशेषकर राजाओं और अन्य शासकों—में राष्ट्रों की भलाई से संबंधित विचारों और इरादों का संचार करना: संत डायोनिसियस लिखते हैं, "इस प्रकार, फिरौन को मिस्रियों पर नियुक्त एक स्वर्गदूत द्वारा सूचित किया गया था (उत्पत्ति 41:1–28), और बेबीलोन के राजा को उसके स्वर्गदूत द्वारा सर्व-नियंता और सर्व-शासक प्रभु की व्यवस्था और शक्ति के दर्शनों में सूचित किया गया था।"[1618] और, बौद्धिक रूप से अपेक्षाकृत अधिक परिपूर्ण होने के कारण, स्वर्गदूत उन

[1611] यूनोमियस के विरुद्ध, पुस्तक III, *पवित्र पिताओं के कार्यों* में, VII, 128–130। तुलना करें V, 341–342।

[1612] धार्मिक भजनों की शब्दावली, खंड 6, *पवित्र पिताओं के कार्य*, खंड IV, पृ. 236 में।

[1613] ईश्वरीय सिद्धांतों का संक्षिप्त प्रतिपादन, अध्याय 7, *क्रिश्चियन रीडिंग्स* 1844, IV, 209 में।

[1614] सही व्याख्या ऑर्थोडॉक्स विश्वास की, पुस्तक II, अध्याय 3, पृ. 55.

[1615] *क्लेम.* स्ट्रोम. VI, VI; *ओरिजि.* उत्पत्ति पर उपदेश, XVI, 2; निर्गमन पर उपदेश, VIII, n. 2; *यूसेबियस,* सुसमाचार का बचाव, IV, 10; *एरिनेस,* विधर्म पर, LI, n. 34; *क्रिसोस्टोम,* मत्ती पर उपदेश, XLIX, कृतियाँ, खंड VII, पृ. 599, सं. मॉन्टफ.

[1616] स्वर्गीय पदानुक्रम पर, पृ. 41, रूसी अनुवाद से।

[1617] 'धर्मशास्त्र पर प्रवचन' 2, *पवित्र पिताओं के कार्य*, III, 51 में।

[1618] स्वर्गीय पदानुक्रम पर, पृ. 41, रूसी अनुवाद से।

राज्यों और लोगों की आवश्यकताओं को पहचानने में, और शासकों को मनुष्यों द्वारा दी जा सकने वाली किसी भी सलाह से कहीं अधिक लाभकारी परामर्श देने में बेहतर सक्षम हैं।

2. प्रत्येक चर्च या विश्वासियों के समुदायों के संरक्षक स्वर्गदूत होते हैं। इसका प्रमाण प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में, प्रभु के उन शब्दों में मिलता है जो यूहन्ना को प्रकट हुए: *'जो रहस्य है उन सात तारों का जिन्हें तूने मेरे दाहिने हाथ में देखा, और उन सात सोने के दीवदानों का, वह यह है: ये सात तारे उन सात कलीसियाओं के स्वर्गदूत हैं* (1:20)। यहाँ, चर्चों (एशिया माइनर में सात) के स्वर्गदूतों का स्पष्ट संदर्भ दिया गया है; और यद्यपि आगे (अध्यायों में 2 और 3), जैसा कि कोई अनुमान लगा सकता है, यह उपाधि संबंधित चर्चों के बिशपों या दृश्यमान नेताओं पर लागू होती है, यह रूपक रूप से लागू की गई है, विशेष रूप से इसलिए क्योंकि चर्चों के अदृश्य नेता और संरक्षक भी हैं, जो सच्चे अर्थ में चर्चों के स्वर्गदूत हैं। इस प्रकार, या इसी तरह से, निम्नलिखित ने तर्क दिया:

क) *ओरिजिन:* "प्रकाशितवाक्य में यूहन्ना ने जो लिखा है, उसके आधार पर, सामान्यतः प्रत्येक गिरिजाघर को एक स्वर्गदूत नियुक्त किया गया है;"[1619]

(b) *संत ग्रेगरी द थियोलोजियन:* "मुझे यकीन है कि प्रत्येक चर्च पर एक विशेष देवदूत की निगरानी रहती है, जैसा कि यूहन्ना ने मुझे प्रकाशितवाक्य (1:20) में सिखाया है;"[1620]

c) *संत एपिफेनियस:* "प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में, यूहन्ना ने प्रभु मसीह की ओर से एक कलीसिया को, या उस पर अध्यक्षता करने वाले बिशप को, वेदी के रक्षक पवित्र स्वर्गदूत की सहायता से लिखा: *'यह तेरे लिए अच्छा है कि तू निकोलातियों के कामों से घृणा करता है, जिनसे मैं भी घृणा करता हूँ'* (प्रकाशितवाक्य 2:6)।"[1621] हमें विश्वासियों के समुदायों की देखरेख करने वाले स्वर्गदूतों के बारे में वही शिक्षा मिलती है:

a) *संत अम्ब्रोज़ में:* "ईश्वर के झुंड की रक्षा के लिए प्रभु ने न केवल बिशप नियुक्त किए हैं, बल्कि स्वर्गदूतों को भी नियुक्त किया है;"[1622]

b) *सेंट बेसिल द ग्रेट,* जिन्होंने निकोपोलिस की चर्च के पुरोहितों को लिखा: "आप इस बात से दुखी हैं कि आपको दीवारों के घेरे से बाहर निकाल दिया गया है; लेकिन आप स्वर्गीय ईश्वर की शरण में रहते हैं, और आपके साथ चर्च (यानी निकोपोलिस) का संरक्षक देवदूत है;"[1623] और अन्य लेखकों की रचनाओं में।[1624]

जिस उद्देश्य से ईश्वर व्यक्तिगत चर्चों को संरक्षक स्वर्गदूत नियुक्त करते हैं, वह यह हो ही नहीं सकता कि वे इन चर्चों और उनके सभी सदस्यों को स्वर्गीय स्वदेश की ओर ले जाने वाले मार्गदर्शक हों; ताकि, ईश्वर के समक्ष जो अधिक शक्तिशाली हैं, वे वे उनके सुपुर्द किए गए आध्यात्मिक झुंडों की ओर से उनके सिंहासन के सामने मध्यस्थता कर सकें, और, बुद्धिमानी से परिपूर्ण प्राणी होने के नाते, स्वयं चरवाहों को निर्देश दे सकें और उनके झुंड के लिए हितकर सलाह से उन्हें प्रेरित कर सकें — यह वही है जो हमें विश्वास करना सिखाता है कि ईश्वर, जो भरोसा करते हैं, और स्वर्गदूतों, जिन्हें विश्वासियों के समुदाय की सुरक्षा के लिए सौंपा गया है, की सही अवधारणाएँ हमें विश्वास करना सिखाती हैं। संत ग्रेगरी द थियोलोजियन, एक अंश में—यद्यपि संक्षेप में—इस विषय पर निम्नलिखित लिखते हैं: 'प्रभु रक्षक स्वर्गदूतों को पुकारते हैं (क्योंकि मुझे यकीन है कि एक विशेष स्वर्गदूत हर चर्च की देखभाल करता है, जैसा कि यूहन्ना मुझे प्रकाशितवाक्य में सिखाते हैं): *लोगों के लिए मार्ग तैयार करो! रास्ता सीधा करो, रास्ता सीधा करो; पत्थरों को हटा दो* (यशायाह 62:10), ताकि मेरे लोगों के दिव्य जुलूस और प्रवेश में—अब मानव-निर्मित मंदिरों में, और बाद में स्वर्गीय यरूशलेम और वहाँ के परम पवित्र स्थान में—कोई बाधा या अड़चन न हो।"[1625]

[1619] गिनती पर होमलियों में, होमली XI, संख्या 5; XX, संख्या 3; तुलना करें लूका पर होमलियों में, होमलियों XII, XIII से।

[1620] *द वर्क्स ऑफ़ द होली फ़ादर्स*, IV, 33 में 150 बिशपों के सामने विदाई उपदेश।

[1621] हैरेस. XXV, II. 3, ऑर. खंड 1, पृ. 77, कोलोन.

[1622] एक्सपोजिट. इवैंग. लुक. पुस्तक II, संख्या 50.

[1623] पत्र 230, *द वर्क्स ऑफ़ द होली फ़ादर्स*, XI, 178 में।

[1624] *यूसेबियस,* भजन संहिता 90:12 में; *हिलारी,* भजन संहिता 124 में: 'हम मानते हैं कि कई आध्यात्मिक शक्तियाँ हैं, जिन्हें स्वर्गदूत कहा जाता है, जो चर्च पर शासन करती हैं।'

[1625] उपरोक्त टिप्पणी 1620 देखें।

§ 108. व्यक्तियों के संरक्षक स्वर्गदूत

1. व्यक्तियों के लिए रक्षक स्वर्गदूतों का सिद्धांत पवित्र धर्मग्रंथ में एक ठोस आधार रखता है।

1.1. इस सिद्धांत के निशान पुराने नियम की पुस्तकों में भी मिलते हैं। इस प्रकार, भजनकार, जो परमेश्वर का भय मानने वालों और उन पर अपना विश्वास रखने वालों की स्थिति का वर्णन करते हैं, एक स्थान पर कहते हैं: *'यहोवा का दूत उसके डरने वालों के चारों ओर डेरा डाले रहता है और उन्हें बचाता है* (भजन संहिता 33:8); और दूसरे में: *'कोई बुराई तुम्हें नहीं होगी, और न कोई महामारी तुम्हारे निवास के समीप आएगी; क्योंकि वह तुम्हारे विषय में अपने स्वर्गदूतों को आज्ञा देगा—कि वे तुम्हारे सब मार्गों में तुम्हारी रक्षा करें* (भजन संहिता 90:10-11)। इससे कम से कम यह स्पष्ट है कि ईश्वर व्यक्तिगत लोगों को भी स्वर्गदूत भेजते हैं, जो उनके चारों ओर डेरा डालते हैं और उन्हें उनके सभी मार्गों में सुरक्षित रखते हैं; परिणामस्वरूप, वे उन्हें लगातार, उनके पूरे जीवन भर सुरक्षित रखते हैं — यद्यपि यह अभी तक स्पष्ट नहीं है कि प्रत्येक ऐसे व्यक्ति को एक विशिष्ट, नियुक्त स्वर्गदूत सौंपा जाता है या नहीं।[1626]

1.2. नए नियम में, उद्धारकर्ता स्वयं उन सभी में से प्रत्येक को विशेष रक्षक स्वर्गदूतों के नियुक्त किए जाने की अवधारणा को स्पष्ट रूप से व्यक्त करते हैं जो उन पर विश्वास करते हैं। अपने शिष्यों के प्रश्न के उत्तर में: *'स्वर्ग के राज्य में सबसे बड़ा कौन है?* (मत्ती 18:1), प्रभु ने *एक छोटे बच्चे को अपने पास बुलाया, उसे उनके बीच में खड़ा किया, और कहा: 'मैं तुम से सच कहता हूँ, जब तक तुम फिर कर छोटे बच्चों के समान न बन जाओ, तब तक तुम स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करोगे; इसलिए, जो कोई भी इस बालक के समान स्वयं को नम्र बनाता है, वह स्वर्ग के राज्य में सबसे महान है; और जो कोई भी ऐसे एक बालक को* (यहाँ, स्पष्ट रूप से, बालक का तात्पर्य आध्यात्मिक अर्थ में है, अर्थात्, कोई भी जो ईसाई धर्म में परिवर्तित हो गया है, *स्वयं को इस बालक के समान नम्र बनाता है*) *मेरे नाम पर ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है: परन्तु जो इन छोटे-छोटे विश्वासियों में से किसी एक को भी ठोकर खिलाता है* (यह और भी स्पष्ट संकेत है कि यहाँ *'छोटे-छोटे'* या *'बच्चों'* से तात्पर्य मसीह में विश्वास करने वालों, नम्र और दीन-दलित लोगों से है), *उसके लिए तो यह बेहतर होगा कि उसके गले में एक चक्की का पाट लटका दिया जाए और वह समुद्र की गहराई में डूब जाए* (2–6)। तब प्रलोभनों के बारे में कुछ और शब्द कहने के बाद—कि वे दुनिया में कितने प्रचुर और कितने विनाशकारी हैं, और उनसे कैसे लड़ना है (श्लोक 7–9)—प्रभु ने फिर से उन छोटे बच्चों की ओर अपना ध्यान मोड़ा जिन्हें उन्होंने अभी-अभी अपने में विश्वास करने वाले कहा था, और निष्कर्ष निकाला: *'देखो, इन में से किसी एक को भी तुच्छ न समझना; क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ कि स्वर्ग में उनके स्वर्गदूत मेरे स्वर्गीय पिता का मुंह सदा देखते हैं* (10)। इन्हीं अंतिम शब्दों में हमें यह स्पष्ट शिक्षा मिलती है कि मसीह में हर विश्वासी का अपना एक विशेष रक्षक स्वर्गदूत होता है। क्योंकि—

क) जैसा कि हमने उद्धारकर्ता के पूरे प्रवचन से देखा है, *'छोटे बच्चों'* या *'शिशुओं'* से उनका तात्पर्य ठीक उनके अनुयायियों से था, जो आध्यात्मिक दृष्टि से शिशु हैं, और

ख) उन्हीं के बारे में उन्होंने कहा: *'उनके स्वर्गदूत* (οἱ ἄγγελοι αὐτών), अर्थात् उनमें से प्रत्येक को सौंपे गए स्वर्गदूत, उनके अपने स्वर्गदूत। चर्च के सबसे प्रमुख धर्मगुरुओं—बेसिल द ग्रेट, क्रिसोस्टोम और अन्य—ने छोटे बच्चों और उनके स्वर्गदूतों के बारे में उद्धारकर्ता के शब्दों को ठीक इसी अर्थ में समझा था।[1627]

1.3. स्वयं प्रभु की ऐसी स्पष्ट शिक्षा के परिणामस्वरूप, प्रत्येक ईसाई के लिए एक विशेष रक्षक स्वर्गदूत के अस्तित्व में विश्वास प्रेरितों की कलीसिया में पहले से ही मौजूद था, जैसा कि निम्नलिखित घटना दर्शाती है (प्रेरितों

[1626] पुरानी वाचा में अन्य समान अंश हैं उत्पत्ति 24:7, 14; 2 राजा 1:3–16; तोबित 5:17, 22; युदिथ 13:20; जेकर्याह 2:3; 4:4; 5:5।

[1627] अधिक जानकारी के लिए टिप्पणियाँ 1629–1631 और उस पाठ को देखें जिसका वे उल्लेख करते हैं। हालाँकि, यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि 'यद्यपि यह कथन, अपने उच्चतम अर्थ में, एक दृष्टांत के रूप में, विश्वास के शिशुओं को संदर्भित करता था, यह प्राकृतिक शिशुओं की अवहेलना में नहीं कहा गया था, जिनमें से एक प्रभु के वचनों का दृश्यमान और तत्काल विषय था, और विशेष रूप से ईसाई बच्चों की अवहेलना में नहीं, जो आमतौर पर बपतिस्मा द्वारा विश्वास के शिशु भी होते हैं" (मॉस्को के मेट्रोपॉलिटन फिलारेट द्वारा 17 अप्रैल 1835 का प्रवचन *फिलारेट*, खंड III, पृ. 143, मॉस्को 1845)। यहाँ तक कि यदि हम उद्धारकर्ता के शब्दों में *'छोटे बच्चों'* का अर्थ केवल प्राकृतिक शिशुओं से ही समझें, तो हम स्वाभाविक रूप से इस निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि प्रत्येक विश्वासी को एक रक्षक स्वर्गदूत दिया गया है। क्योंकि — "यदि, छोटे बच्चों के लिए, जिनकी आध्यात्मिक शक्तियाँ और क्षमताएँ स्वतंत्र कार्रवाई के लिए अभी तक पर्याप्त रूप से विकसित नहीं हुई हैं, और जो इसलिए वयस्कों की तुलना में प्रलोभन के प्रति कम प्रवृत्त हैं, यह व्यवस्था आवश्यक मानी जाती है ताकि उनके अपने स्वर्गदूत हों, तो हमें और भी अधिक यह निष्कर्ष निकालना चाहिए कि वयस्कों को इस व्यवस्था से बाहर नहीं रखा गया है, जो प्रलोभन के प्रति अधिक प्रवृत्त हैं, और परिणामस्वरूप उन्हें आध्यात्मिक सहायता की अधिक आवश्यकता है, और, आध्यात्मिक शक्तियों के उच्च विकास के अधिकारी होने के कारण, वे आध्यात्मिक संवाद के लिए अधिक सक्षम हैं' (उसी अर्चपिस का एक उपदेश, महादूत माइकल के पर्व के लिए, खंड II, पृ. 228)।

के काम, अध्याय 12)। हेरोध के आदेश पर प्रेरति पतरस को कैद कर लिया गया था और उसकी कड़ी निगिरानी रखी जा रही थी (4)। सारी कलीसिया उसकी रिहाई के लिए विनितीपूर्वक प्रार्थना कर रही थी (5)। और इस प्रकार, एक रात, जब *प्रेरति पतरस जेल में था, तो* मरियम के घर में *कई लोग इकट्ठा हुए थे और प्रार्थना कर रहे थे* (12), प्रेरति, एक स्वर्गदूत द्वारा चमत्कारिक रूप से जेल से बाहर निकाले जाने के बाद, अचानक उस घर पर आए और दरवाज़ा खटखटाया। दरवाज़े की खटखटाहट की आवाज़ सुनकर बाहर दौड़ी एक दासी ने पतरस की आवाज़ को पहचान लिया और, खुशी से भरकर, दरवाज़ा खोले बिना, यह खबर लेकर दौड़ पड़ी कि पितरस आ गए हैं। आश्चर्य से स्तब्ध, ईसाइयों ने दासी पर विश्वास नहीं करना चाहा, यह सोचकर कि उसने कोई गलती की है; और जब उसने ज़िद की, तो उन्होंने अंत में कहा: 'निश्चय ही वह स्वयं नहीं है, बल्कि उसका दूत है'—*उन्होंने कहा: 'यह उसका दूत है'* (15)। यहाँ जो महत्वपूर्ण है, वह सबसे पहले तो यह अभिव्यक्ति है: *'उसका स्वर्गदूत*, अर्थात् प्रेरति पतरस को व्यक्तिगत रूप से सौंपा गया एक विशेष स्वर्गदूत; और दूसरी बात, यह तथ्य कि उन्होंने इसे इन शब्दों में कहा। परिणामस्वरूप, यह उस समय प्रार्थना में इकट्ठा हुए सभी मसीहियों का विश्वास था, और उनकी *संख्या बहुत* थी।[1628]

1.4. अंत में, व्यक्तियों के लिए रक्षक स्वर्गदूतों का विचार प्रेरति पौलुस के स्वर्गदूतों के बारे में शब्दों से निष्कर्ष निकाला जा सकता है: *क्या वे सभी सेवकाई करने वाली आत्माएँ नहीं हैं, जिन्हें उन लोगों की सेवा के लिए भेजा गया है जो उद्धार के वारिस होने वाले हैं* (इब्रानियों 1:14)? यदि स्वर्गदूत *उन लोगों की सेवा के लिए* भेजे जाते हैं *जो उद्धार के वारिस होने वाले हैं*, और मसीह में बपतिस्मा लेने वाले और उस पर विश्वास करने वाले सभी निश्चित रूप से उन लोगों की संख्या में आते हैं जो इसे चाहते हैं, तो इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि स्वर्गदूत मसीह में हर विश्वासी की सेवा के लिए भेजे जाते हैं।

2. प्रारंभिक चर्च के पवित्र पिताओं और पादरियों ने न केवल सर्वसम्मति से यह सिखाया कि व्यक्तियों के लिए वास्तव में रक्षक स्वर्गदूत होते हैं, बल्कि, जहाँ संभव था, उन्होंने इस शिक्षा को विस्तार से भी प्रस्तुत किया। उन्होंने यह निर्धारित करने का प्रयास किया: 1) एक रक्षक स्वर्गदूत ठीक-ठीक किसके लिए और किस समय से नियुक्त किया जाता है; 2) क्या संरक्षक देवदूत उस समय से उस व्यक्ति के साथ निरंतर रहता है; और 3) उस व्यक्ति के प्रति उसकी सेवा किसमें निहित है।

2.1. भजनकार के शब्दों से यह निष्कर्ष निकालते हुए कि प्रभु का स्वर्गदूत केवल उन लोगों के चारों ओर डेरा डाले रहता है जो परमेश्वर का भय मानते हैं (भजन संहिता 33:8), साथ ही उद्धारकर्ता के उन शब्दों से कि विशेष रूप से *वही छोटे* लोग *हैं* जो उस पर विश्वास करते हैं जो *मेरे स्वर्गीय पिता का मुख देखते हैं* (मत्ती 18:10), और अंत में, उन लोगों के पास स्वर्गदूतों को भेजने के बारे में पवित्र प्रेरति के वचन (इब्रानियों 1:14), जो उद्धार का वारिस होने की खोज में हैं, के आधार पर, कलीसिया के सबसे प्रमुख शिक्षकों ने यह निष्कर्ष निकाला कि एक संरक्षक स्वर्गदूत हर व्यक्ति को मनमाने ढंग से नहीं दिया जाता है, बल्कि केवल ईसाइयों को दिया जाता है; और परिणामस्वरूप, यह उन्हें ईसाई बनने के तुरंत बाद, यानी बपतिस्मा के समय से ही प्रदान किया जाता है; जबकि कुछ ने यह भी जोड़ा कि पुराने नियम में यह केवल उन यहूदियों को प्रदान किया गया था जो आने वाले मसीहा पर विश्वास करते थे। यह विचार, उदाहरण के लिए, द्वारा प्रस्तुत किया गया है:

ओरिजिन: "हम में से प्रत्येक को, यहाँ तक कि हम में से सबसे छोटे को भी, जो परमेश्वर की कलीसिया में हैं, एक अच्छा स्वर्गदूत, प्रभु का एक स्वर्गदूत नियुक्त किया जाता है, जो हमें सिखाता है, मनाता है और हमारा मार्गदर्शन करता है; जो हमारे कर्मों को सुधारने और हमारे लिए मध्यस्थता करने के लिए, हमेशा स्वर्गीय पिता का मुख देखता है, जैसा कि प्रभु ने सुसमाचार में कहा था।"[1629]

संत बेसिल द ग्रेट: "प्रत्येक विश्वासी को एक ऐसा देवदूत नियुक्त किया गया है जो स्वर्गीय पिता को देखने के योग्य है;"[1630] और अन्यत्र: "कि प्रत्येक विश्वासी के साथ एक स्वर्गदूत नियुक्त है, जो एक रक्षक और चरवाहे के रूप

[1628] *'उसका एक देवदूत है* शब्द उद्धृत करने के बाद, ओरिजिन टिप्पणी करते हैं: 'अतः यह समझा जाता है कि पौलुस का भी एक अन्य देवदूत है, जैसे कि पितरस का एक है, और अन्य सभी प्रेरितों में से प्रत्येक का, और क्रमशः प्रत्येक व्यक्ति का' (इन नं. होमलि. XI); और संत जॉन क्राइसोस्टोम निम्नलिखित निष्कर्ष निकालते हैं: 'इसलिए यह सच है कि हम में से प्रत्येक के पास एक देवदूत है' (प्रेरितों के काम पर धर्मोपदेश, XXVI, II. 3)।

[1629] संख्यकों पर होमीली XX, खंड 3।

[1630] *द वर्क्स ऑफ़ द होली फ़ादर्स*, खंड V, पृ. 370 में भजन संहिता 48, पद 15 पर एक उपदेश।

में, उसके जीवन का मार्गदर्शन करता है; कोई भी इस पर विवाद नहीं करेगा, प्रभु के वचनों को ध्यान में रखते हुए, जिन्होंने कहा: *'इन छोटे लोगों में से किसी की भी तुच्छ न समझना; क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ कि उनके स्वर्गदूत स्वर्ग में मेरे स्वर्गीय पिता का मुखड़ा सदा देखते हैं* (मत्ती 18:10)और भजनकार कहता है: *'प्रभु का दूत उनके चारों ओर डेरा डाले रहता है जो उससे डरते हैं* (भजन संहिता 33:8)।[1631]

संत जॉन क्राइसोस्टोम: "पहले, स्वर्गदूतों को राष्ट्रों की संख्या के अनुसार गिना जाता था, लेकिन अब विश्वासियों की संख्या के अनुसार। हमें यह कैसे पता चलता है? मसीह की बात सुनें: *'देखो, तुम इन छोटे-छोटे लोगों में से किसी को तुच्छ न समझना; क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ कि स्वर्ग में उनके स्वर्गदूत मेरे स्वर्गीय पिता का मुखड़ा सदा देखते* हैं' (मत्ती 18:10)। तब जान लो कि हर विश्वासी के पास एक स्वर्गदूत है, और वास्तव में पुराने समय के हर धर्मी व्यक्ति के पास एक स्वर्गदूत था, जैसा कि याकूब कहते हैं: *'वह स्वर्गदूत जो मुझे हर बुराई से बचाता है, इन युवकों को आशीष दे* (उत्पत्ति 48:16)।[1632]

संत एम्ब्रोस: "ईश्वर उन लोगों की रक्षा और सहायता के लिए अपने स्वर्गदूत भेजते हैं जिन्हें आने वाले जीवन में वादा की गई आशीर्वादों को विरासत में पाने का अधिकार दिया गया है।"[1633]

सिनाई के संत अनास्तासियस: "जिन लोगों को बपतिस्मा के योग्य समझा गया है और जो सद्गुणों की ऊँचाइयों तक पहुँचते हैं, उन्हें ईश्वर ऐसे स्वर्गदूत प्रदान करते हैं जो उन पर निगरानी रखते हैं और उनकी आध्यात्मिक प्रबोधन में सहायता करते हैं... प्रभु हमें इसका आश्वासन देते हैं जब वे कहते हैं कि उन सभी के लिए संरक्षक स्वर्गदूत होते हैं जो उन पर विश्वास करते हैं।"[1634]

रक्षक स्वर्गदूतों पर इसी प्रकार के विचार चर्च के कई अन्य शिक्षकों की रचनाओं में भी पाए जाते हैं।[1635] हालाँकि, कुछ ने इन विचारों को कम निश्चित रूप में व्यक्त किया, यह कहते हुए कि प्रत्येक व्यक्ति को एक रक्षक स्वर्गदूत दिया जाता है,[1636] या कि किसी व्यक्ति के जन्म के क्षण से ही आत्मा को एक स्वर्गदूत नियुक्त किया जाता है।[1637]

2.2. भजन रचयिता के उन्हीं शब्दों के आधार पर, कि स्वर्गदूत परमेश्वर का भय मानने वालों के चारों ओर डेरा डाले रहते हैं (भजन संहिता 33:8), प्रारंभिक चर्च के पितरों ने निष्कर्ष निकाला:

क) कि एक रक्षक स्वर्गदूत हर विश्वासी के साथ लगातार, उनके पूरे जीवन भर रहता है, जब तक वे ईश्वर का भय मानते हैं; और

ख) कि संरक्षक देवदूत कभी-कभी एक ईसाई को तब छोड़ देता है जब वे ईश्वर का भय छोड़ देते हैं और दुष्टता की ओर मुड़ जाते हैं; या, दूसरे शब्दों में, कि हमारे पाप हमारे देवदूतों को हमसे दूर कर सकते हैं। यह, उदाहरण के लिए, की तर्कसंगत थी:

क) *बेसिल द ग्रेट: "प्रभु का दूत उनके चारों ओर डेरा डाले रहता है जो उससे डरते हैं* — दूत उन सभी से नहीं जाएगा जिन्होंने प्रभु पर विश्वास किया है, जब तक कि हम स्वयं अपने बुरे कर्मों से उसे भगा न दें; क्योंकि जैसे धुआं मधुमक्खियों को और बदबू कबूतरों को भगा देता है, वैसे ही एक घृणित और बदबूदार पाप हमारे जीवन के रक्षक—देवदूत को भगा देता है;"[1638] और अन्यत्र: "चूँकि हम में से प्रत्येक के पास एक पवित्र स्वर्गदूत है जो प्रभु का भय मानने वालों की रखवाली करता है, वह, पाप में उजागर होने पर, विपत्ति के अधीन हो सकता है; दीवार जो उसकी रक्षा करती है—

[1631] यूएनोमियस के विरुद्ध, पुस्तक III, वही, VII, 130–132।

[1632] कोलोसियों को लिखे पत्र में, अध्याय 1, व्याख्यान III, संख्या 3।

[1633] भजन संहिता 118 पर व्याख्या, खंड 1, पृ. 276, पेरिस, 1680.

[1634] हेक्साएम. में, पुस्तक V, बाइबिल. पीपी. में, खंड IX, पृ. 880, ल्यों.

[1635] *हियेरोनिमस,* यूस्टोचियम को पत्र, LXXXVI; *थियोडोरेट,* भजन संहिता XL पर टीका, II; *अलेक्जेंड्रिया के सिरिल,* जूलियन के विरुद्ध, पुस्तक IV, कृतियाँ, खंड VI, पृ. 122, सं. 1638; *हिलेरी,* मत्ती पर टीका, अध्याय XVIII, खंड 5; भजन संहिता CXVIII पर प्रबंध, पत्र 1; *थियोफिलैक्ट,* मत्ती पर भाष्य XVIII, 10, पृ. 105, लुटेटिया, 1731.

[1636] *ग्रेग. निस्स.* *दे वीटा मोस.* खंड 1, पृ. 194, सं. 1638; *ऑगस्टिन.* *दे सिविट. देई* XX, 14; *थियोडोरेट.* *इन जेनेस.* क्वेस्ट. 3, *इन क्रॉन. क्वार्ट.* 1843, III, 323: "प्रभु ने कहा कि हर मनुष्य को एक विशेष स्वर्गदूत की देखभाल में सौंपा गया है।"

[1637] *हयरोनिमस,* मत्ती पर टीका, अध्याय XVIII: "मानव आत्माओं का गौरव महान है; क्योंकि उनमें से प्रत्येक के लिए, जन्म के क्षण से ही, एक देवदूत उसकी देखभाल के लिए नियुक्त किया जाता है" (ओर., खंड IV, पृ. 83, सं. 1706)।

[1638] भजन संहिता 33, श्लोक 8 पर प्रवचन, *पवित्र पिताओं के कार्यों* में, खंड V, 295–296।

अर्थात् पवित्र शक्तियों की सुरक्षा, जो किसी व्यक्ति के साथ रहते हुए, जिनकी वे रक्षा करते हैं उन्हें अजेय बनाए रखती है—वह उसकी रक्षा करना बंद कर देगी;"[1639]

b) *हिलारी:* "यदि छोटे बच्चों के स्वर्गदूत प्रतिदिन हमारे *स्वर्गीय पिता का मुख देखते हैं* (मत्ती 18:10), तो क्या हम उन लोगों की गवाही से डरने में असफल हो सकते हैं, जो, जैसा कि हम जानते हैं, प्रतिदिन हमारे साथ रहते हैं और परमेश्वर के सामने खड़े रहते हैं?"[1640]

c) *इवाग्रियस:* "दुष्ट मनुष्य अपने आप को बचपन से दिए गए स्वर्गदूत से अलग कर लेता है, क्योंकि आध्यात्मिक सहभागिता केवल सद्गुण और ईश्वर के ज्ञान के माध्यम से ही संभव है, जिसके द्वारा हम पवित्र स्वर्गदूतों के साथ एकता में प्रवेश करते हैं।"[1641]

2.3. अंत में, संत पौलुस के शब्दों के अनुसार: *'क्या वे सभी सेवा करने वाली आत्माएँ नहीं हैं, जिन्हें उन लोगों की सेवा के लिए भेजा गया है जो उद्धार के वारिस होने वाले हैं?'* (इब्रानियों 1:14), चर्च के शिक्षकों का मानना था कि, सामान्यतः 'हमारे लिए स्वर्गदूतों (संरक्षक स्वर्गदूतों) की सेवा ईश्वर की इच्छानुसार हमारे उद्धार को बढ़ावा देने में निहित है।'[1642] विशेष रूप से, उन्होंने सिखाया कि स्वर्गदूत हैं:

क) विश्वास और धार्मिकता में हमारे विश्वसनीय मार्गदर्शक (2 राजा 1:3, 15–17; ज़ेकार्याह 2:3; न्यायाधीश 2:1–6)। हिलारी लिखते हैं, '(देवदूत) ईश्वर की आज्ञाओं और इच्छा को समझने में हमारे सहायक हैं,' 'जो हमें धन्य शांति प्रदान करते हैं... हमारी दृष्टि उन पर टिकी है: क्योंकि उनके माध्यम से, उनके निर्देश द्वारा, मन की उच्चतम और शाश्वत की ओर आरोहण पूर्ण होता है।"[1643] "जब मैं महान सफलता की लालसा कर रहा था," जॉन क्लाइमक्स स्वयं के बारे में गवाही देते हैं, "एक स्वर्गदूत मेरे सामने प्रकट हुआ और उस अवसर पर मुझे प्रबुद्ध किया।"[1644]

b) हमारी आत्माओं और शरीरों के रक्षक (भजन संहिता 90:10–11)। निम्नलिखित गवाहियाँ इस श्रेणी में आती हैं:

क) *संत बेसिल द ग्रेट:* "जैसे नगर की दीवारें नगर को घेरे हुए चारों ओर से शत्रु के आक्रमणों को रोकती हैं; वैसे ही दूत सामने एक दीवार के रूप में सेवा करता है, पीछे से रक्षा करता है, और दोनों ओर कुछ भी असुरक्षित नहीं छोड़ता। इसीलिए *तुम्हारे पास एक हजार और तुम्हारे दहिने हाथ पर दस हजार गिर सकते हैं; परन्तु तुम पर* कोई आघात *न पड़ेगा* (भजन संहिता 90:7), *क्योंकि* वह *तुम्हारे विषय में अपने स्वर्गदूतों को आज्ञा देता है* (11);"[1645]

बीबी) *एम्ब्रोस:* "मसीह के सेवक दृश्यमान लोगों की तुलना में अदृश्य, अर्थात् स्वर्गदूतों द्वारा, आपदाओं से अधिक सुरक्षित रहते हैं;"[1646]

cc) *हिलारी:* "हमारी दुर्बलता में, हम इतने सारे आध्यात्मिक शत्रुओं के सभी दुर्भावनापूर्ण हमलों का सामना नहीं कर पाते, यदि हमारे रक्षण के लिए हमें स्वर्गदूत न दिए गए होते;"[1647]

dd) *थियोडोर द स्टुडाइट:* "आपके पास प्रभु हैं, जिन्हें आप प्रेम करते हैं, वे आपके समीप हैं; आपके पास एक स्वर्गदूत भी है, जो आपके जीवन का रक्षक है, जिसका कर्तव्य आपको हर बुराई से बचाना है।"[1648]

[1639] यशायाह की पुस्तक पर भाष्य, अध्याय 5, *द वर्क्स ऑफ़ द होली फ़ादर्स*, VI, 192 में।

[1640] भजन संहिता 18 पर प्रबंध, पत्र 1, टिप्पणी 8, *पैट्रोलॉजिया कर्सस कम्प्लेटस*, खंड IX, पृ. 507 में।

[1641] एपud *Damasc.* Sacr. Parall. Tit. VII, in Opp. Vol. II, p. 309, पेरिस, 1712. निम्नलिखित भी यही कहते हैं: *ओरिजिन* (in Ezech. homil. 1, Vol. III, p. 358; in Matth. XIII, Vol. III, p. 607, ed. Bened.); *क्लेमेंट ऑफ एलेक्जेंड्रिया* (स्ट्रॉम. V, पृ. 253, सं. सिल्ब.); *ऑगस्टीन* (डे सिविटिटे देई, पुस्तक XIX, इन ऑप., खंड VII, पृ. 545, वेनिस, 1731); *सिनाई के अनास्तासियस* (एपिस्ट., पुस्तक II, एंथमिस को, पृ. 432)।

[1642] ये संत जॉन क्रिसोस्टम के शब्द हैं (Epist. ad Hebr. अध्याय 1, hom. III, in Opp. खंड XII, पृ. 28, सं. Montf.). संत ग्रेगरी ऑफ़ निस्सा भी इसी प्रकार का दृष्टिकोण व्यक्त करते हैं (contr. Eunom. पुस्तक 1, Opp. खंड II, पृ. 350, सं. Morel.).

[1643] ट्रैक्ट. इन सॉस. CXX, v. 1.

[1644] मौन रहने वालों के भेद और विभाजन पर। *दिव्य आरोहण की सीढ़ी*, 27, पृ. 120, स्लावोनिक अनुवाद के अनुसार, 1812 संस्करण। एक समान विचार *बेसिल द ग्रेट* (भजन संहिता 48 पर उपदेश, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, V, 370) और *ग्रेगरी द थियोलोजियन* (बपतिस्मा पर उपदेश, वही, III, 310) में भी पाया जाता है।

[1645] भजन संहिता 33 पर व्याख्यान, *पवित्र पिताओं की कृतियाँ*, खंड V, 296।

[1646] ऑक्सेनियस के विरुद्ध प्रवचन, एपिस्टोलाए क्लासिकाए 1 में, खंड 1, पृष्ठ 866, पेरिस, 1690।

[1647] भजन संहिता 134, श्लोक 7, टिप्पणी 17 पर प्रबंध।

[1648] प्रोवोस्ट यूफ्रोसिनिस को पत्र, पुस्तक II, खंड V, पृ. 468, सं. सिर्मोंडी।

c) परमेश्वर के सामने हमारे मध्यस्थ और वकील (मत्ती 18:10; प्रकाशतिवाक्य 8:3; तोबयि 12:15–20)। उनका वर्णन इस प्रकार है:

a) *हलिारी:* "यह एक नर्विवाद सत्य है कि स्वर्गदूत वशि्वासयिों की प्रार्थनाओं में उपस्थति रहते हैं; इस प्रकार, मसीह द्वारा उद्धार पाए हुए लोगों की प्रार्थनाएं स्वर्गदूतों द्वारा प्रतदिनि परमेश्वर को अर्पति की जाती हैं;"[1649]

ख) *नीलस,* संत जॉन क्राइसोस्टोम के एक शष्यि: "क्योंकि वास्तव में, पवत्रि स्वर्गदूत हमें प्रार्थना के लिए प्रोत्साहति करते हैं और हमारे साथ खड़े होते हैं, हमारे साथ आनंदति होते हैं और हमारे लिए प्रार्थना करते हैं;"[1650]

c) *जॉन क्लाइमैकस:* "जब, अपनी प्रार्थना का कोई भी भाग उच्चारण करते समय, आप एक आंतरकि आनंद या कोमलता की अनुभूति करते हैं, तो वहीं रुकें: क्योंकि तब आपका रक्षक स्वर्गदूत हमारे साथ प्रार्थना कर रहा होता है।"[1651]

d) वे मृत्यु के क्षण में हमें नहीं छोड़ते, बल्कि दविंगत आत्माओं को अनंत काल के क्षेत्र में ले जाते हैं (लूका 16:22)। नम्निलखिति लेखक इस वषिय पर लखिते हैं:

a) *थयिोडोर द स्टुडाइट:* "हमेशा अपने मन में मृत्यु का वचिार रखें...; शरीर से आत्मा के अलगाव पर मनन करें—एक अलगाव जो आपके देवदूत की सतर्क देखरेख में होगा; आत्मा को स्वर्गीय क्षेत्र में ले जाए जाने पर भी मनन करें;"[1652]

ख) *अलेक्जेंड्रयिा के सरिलि:* "यह (आत्मा) पवत्रि स्वर्गदूतों द्वारा हवा में यात्रा करते समय सहारा दयिा जाता है, और जैसे ही यह ऊपर उठती है, यह उन शुल्क-गृहों का सामना करती है जो आरोहण की रक्षा करते हैं, जो ऊपर उठती आत्माओं को रोकते और थामते हैं;"[1653]

ग) हलिारी: "धर्मीजन आनंद से भर जाते हैं जब, स्वर्गदूतों द्वारा शाश्वत वशि्राम के धाम में ले जाए जाने के बाद, वे पापयिों के लिए योग्य प्रतशिोध पर अपने वचिार केंद्रति करते हैं।"[1654]

3. सामान्यतःमानवजाति की सेवा में स्वर्गदूतों के कार्य के संबंध में भ्रामक सोच रखने वालों द्वारा उठाए गए आपत्तयिों के वरिुद्ध, हम यह अवलोकन करते हैं:

3.1. कि इस सेवा को ईश्वर की व्यवस्था के संदर्भ में कसिी भी तरह से अनावश्यक नहीं कहा जा सकता, क्योंकि स्वर्गदूत ईश्वर की व्यवस्था के केवल उपकरण हैं, और व्यवस्था सामान्यतःदुनयिा में दो तरीकों से काम करती है: न केवल सीधे, अपनी सर्वशक्तमिान शक्ति के माध्यम से, बल्कि उन प्राणयिों के माध्यम से भी जो उसके अधीन हैं। इस प्रकार, परमेश्वर पृथ्वी के राज्यों का प्रबंध करते हैं (दानयि्येल 4:14, 22); परन्तु वह उन पर अपनी सार्वभौमकि व्यवस्था के दृश्यमान साधन के रूप में राजाओं और अन्य नीचले अधकिारयिों को नयिुक्त करते हैं (रोमयिों 13:4)। वह अपनी पवत्रि कलीसयिा के लिए भी प्रदान करता है (इफसियिों 1:22); फरि भी वह इसे चरवाहों और शकि्षकों के द्वारा दृश्यमान रूप से संचालति करता है (प्रेरतिों के काम 20:28)। वह उस प्राकृतकि जगत का भी प्रबंध करते हैं जसिे हम देख सकते हैं (मत्ती 6:26, 30); फरि भी वह सूर्य के प्रकाश और स्वयं प्रकृति के अन्य साधनों के द्वारा उसे गर्माहट देते हैं और बनाए रखते हैं (मत्ती 5:45)। इसी प्रकार, वह मानव जाति के लिए अपनी देखभाल के अदृश्य साधनों के रूप में स्वर्गदूतों को नयिुक्त कर सकते हैं।

3.2 कि स्वर्गदूतों की मानवता के प्रति यह सेवा कसिी भी तरह से उनके लिए अपमानजनक नहीं है — ठीक उसी तरह जैसे अपने प्रजा की भलाई का ध्यान रखना और परणिामस्वरूप उनकी सेवा करना राजाओं के लिए अपमानजनक नहीं है; न ही अपने झुंड की सेवा करना चरवाहों के लिए अपमानजनक है; न ही अपने मार्गदर्शन में आने वाले युवाओं की सेवा करना शकि्षकों के लिए अपमानजनक है; और, सामान्य रूप से, यह उन लोगों के लिए अपमानजनक नहीं है जो

[1649] मत्ती पर भाष्य, अध्याय XVIII, श्लोक 5, *पैट्रोलॉजयिा कर्सस कम्प्लेटस*, खंड IX, पृ. 1020 में।

[1650] फलिोप्टोलेमकि, भाग IV, अध्याय 81, फोलयिो 250, संस्करण 1840।

[1651] *सीढ़ी,* 28, स्लावोनकि अनुवाद के अनुसार, पृ. 125। यह भी देखें — *अलेक्जेंड्रयिा के सरिल,* जूलयिन के वरिुद्ध, पुस्तक IV, ओपी., खंड VI, पृ. 123, सं. 1638; *ऑगस्टीन।* होनोरयिस को नए नयिम की कृपा पर पत्र, पत्र CXI, c. 29; *आइज़ैक कपनि,* दुनयिा से वापसी पर अपने प्रवचन में, क्रश्चियिन रीडगि्स 1825, XVIII, 267।

[1652] एपस्टि. CXXXIV एड यूफ्रोस. खंड V, पृ. 467, एड. सरि्मोंडी।

[1653] आत्मा के प्रस्थान पर प्रवचन, Or. खंड V, भाग II, पृ. 405–406, सं. लुटेट., Chr. 1841, 1, 203 में।

[1654] भजन संहति LVII पर प्रबंध, खंड 6.

अधिकार में हैं, उनके लिए जो उनके पर्यवेक्षण और देखभाल के लिए सौंपे गए हैं, सेवा करना। स्वर्गदूतों के लिए मानव जाति की सेवा करना अपमानजनक नहीं है, विशेष रूप से जब से परमेश्वर के पुत्र ने स्वयं मानव जाति की *सेवा करने और अपना जीवन बलिदान करने* के लिए पृथ्वी पर आकर देह धारण किया (मत्ती 20:28)।

3.3. मानव जाति के प्रति स्वर्गदूतों की इस सेवा में, स्वयं स्वर्गदूतों के लिए ईश्वर की प्रबंधकीय देखभाल को पहचाना जाना चाहिए। यहाँ वह उनके लिए गतिविधि का सबसे विशाल और पूरी तरह से योग्य क्षेत्र प्रकट करते हैं, ताकि वे अपनी शक्तियों का प्रयोग और विकास कर सकें, शुद्धतम और सबसे उत्कट प्रेम के महान कार्य कर सकें, और अनगिनत उदाहरणों में आत्म-बलिदान, पापियों के प्रति सहिष्णुता, धैर्य और कई अन्य सद्गुणों को प्रकट कर सकें। और जैसे मसीह उद्धारकर्ता की पापी लोगों के प्रति सेवा ने उन्हें महिमा तक पहुँचाया (लूका 24:26), और उसी सेवा के कार्यों में उन्होंने पहले ही अपनी महिमा देख ली थी (यूहन्ना 13:31); इसी प्रकार पापी मानव जाति के प्रति स्वर्गदूतों की सेवा भी उनकी अपनी महिमा में योगदान करती है—यह उन्हें परमेश्वर की अनंत धार्मिकता के सामने नए और उच्चतर पुण्यों के अवसर प्रदान करती है, और संपूर्ण नैतिक जगत के सामने हमारी सेवा करने वाले आत्माओं की सिद्धियों को प्रकट करती है।

§ 109. ईश्वर केवल दुष्ट स्वर्गदूतों की गतिविधि की अनुमति देते हैं

जबकि वह अच्छे स्वर्गदूतों को उनके अच्छे कार्यों में सहायता करता है और उनके अस्तित्व के उद्देश्य के अनुसार उनका मार्गदर्शन करता है। प्रभु परमेश्वर दुष्ट स्वर्गदूतों की दुष्ट गतिविधियों को केवल अनुमति देता है और उन्हें सीमित करता है, और जहाँ तक संभव हो, उनके परिणामों को अच्छे उद्देश्यों की ओर निर्देशित करता है। पतनशील आत्माओं की इस दुष्ट गतिविधि के संबंध में, जिसे ईश्वर की दिव्य-प्रबंध केवल इसलिए अनुमति देती है क्योंकि वह उनकी स्वतंत्रता को प्रतिबंधित नहीं करना चाहता, ऑर्थोडॉक्स चर्च इस प्रकार सिखाता है: "वे (दुष्ट आत्माएं) सभी दुष्टता के उकसाने वाले, ईश्वर की महिमा के अपमानकर्ता, मानव आत्माओं के भ्रष्टकर्ता... हालाँकि, वे किसी भी मनुष्य के खिलाफ हिंसा नहीं कर सकते… जब तक कि ईश्वर उन्हें ऐसा करने की अनुमति न दें' (ऑर्थोडॉक्स कन्फेशन, भाग 1, प्रश्न 21 का उत्तर)। अर्थात्, शैतान कार्य करता है: 1) ईश्वर के शत्रु के रूप में, और साथ ही — 2) मानवता के शत्रु के रूप में।

1). शैतान अपनी सृष्टि के प्रति अपनी शत्रुता मुख्य रूप से इस तथ्य से व्यक्त करता है कि उसने हमेशा पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य को नष्ट करने का प्रयास किया है, और ऐसा करना जारी रखता है, उसकी जगह अपना राज्य स्थापित करने के लिए, और इस प्रकार एकमात्र परमेश्वर को मिलने वाले सम्मान को अपने लिए हड़पने के लिए। यही कारण है कि

1.1. उद्धारकर्ता स्वयं शैतान को अपना *शत्रु* कहते हैं, जो उस खेत में *खरपतवार* बोता है जहाँ वह, मनुष्य का पुत्र, *अच्छा बीज* बोता है (मत्ती 13:37, 39); *इस संसार का राजकुमार* (यूहन्ना 12:31; 14:30; 16:11), जो परमेश्वर के राज्य के बिल्कुल विपरीत एक राज्य का मालिक है (मत्ती 12:26, 28), और इस विचार को व्यक्त किया कि *शैतान की* यह *शक्ति* मूर्तिपूजा (प्रेरितों 26:18) और, अधिक सामान्य रूप से, मानव जाति की पापी स्थिति है, जिसका पिता शैतान है (यूहन्ना 8:44)।

1.2. पवित्र प्रेरितों ने शैतान और उसके स्वर्गदूतों को *प्रमुखताएँ, शक्तियाँ और इस युग के अंधकार के अधिकारी* कहा (इफिसियों 6:12); उसके राज्य को *मृत्यु का अधिकार* कहा (इब्रानियों 2:14), *अंधकार की शक्ति*, जो परमेश्वर के पुत्र के राज्य के विरोध में है (कुलु. 1:13), और यह पुष्टि की कि दुष्ट आत्माओं की सारी गतिविधि लोगों के बीच मूर्तिपूजा और अधर्मीपन को बनाए रखने, और मसीही धर्म की प्रगति का विरोध करने की ओर निर्देशित है (प्रका. 2:9, 13 और 24; 1 तीमु. 4:1; 2 कुरिन्थियों 4:4)।

1.3. चर्च के पवित्र पिताओं और शिक्षकों ने भी यह पुष्टि की कि शैतान मूर्तिपूजक दुनिया में राज करता था;[1655] कि मसीह के आगमन से पहले 'सभी राष्ट्र राक्षसों की शक्ति के अधीन थे; मंदिर राक्षसों के लिए बनाए गए थे, वेदियाँ राक्षसों के लिए स्थापित की गई थीं, पुरोहित राक्षसों के लिए नियुक्त किए गए थे, और बलिदान राक्षसों को चढ़ाए जाते

[1655] *एथेनागोरस,* लेगेटस, XXV, XXVI; *थियोफिलस,* एड ऑटोल्यकस, II, 28; *यूसेबियस,* डेमोंस्ट्रेशन ऑफ़ द गॉस्पेल, IV, 9.

थे;"[1656] कि दुष्ट आत्माएँ मूर्तिपूजक मूर्तियों में वास करती थीं, रक्त और धूप में मग्न होकर , बलिदानों और उनके लिए अनुचित दैवी सम्मान में;[1657] कि उन्होंने मानव जाति को कवियों की कल्पनाओं,[1658] रहस्यों,[1659] ओरेकल्स,[1660] और भविष्यवाणियों से बहकाया;[1661] और यह कि अब भी, मसीह के आगमन के बाद—जैसे कि वह, मसीह, अपनी अनुग्रह की राजशाही, कलीसिया का प्रमुख है—वैसे ही शैतान भी उन सभी दुष्टों का प्रमुख और नेता है जो उसकी इच्छाओं को पूरा करते हैं।[1662]

2) मनुष्यजाति के प्रति शैतान की शत्रुता इस तथ्य में निहित है कि—

2.1. वह, *आरंभ से ही एक हत्यारा* रहा है—अर्थात्, जब हमारे प्रथम माता-पिता स्वर्ग में थे तब उसने उन्हें प्रलोभित किया था (यूहन्ना 8:44)—उस समय से लेकर अब तक उसने हर संभव तरीके से हर एक व्यक्ति को नैतिक बुराई में प्रलोभित करने और उसे बहकाने का काम बंद नहीं किया है।

परमेश्वर के वचन की शिक्षा के अनुसार, वह *एक गरजते हुए सिंह की तरह इधर-उधर घूमता है, यह खोजते हुए कि वह किसे निगल जाए* (1 पतरस 5:8): कुछ लोगों में, वह *उनके* मन को अंधा कर देता है *ताकि मसीह की महिमा के सुसमाचार का प्रकाश उन पर न चमके* (2 कुरिन्थियों 4:4); दूसरों में, जिन पर यह प्रकाश पहले ही चमक चुका है, वह *उनके हृदय से वचन छीन लेता है, ताकि वे विश्वास करके उद्धार न पाएं* (लूका 8:12); और तीसरे समूह के लिए, जैसे कि धर्मी अय्यूब (अय्यूब 1:9 आदि), परमेश्वर की अनुमति से, यह उन्हें विपत्तियों से पीछा करता है; और यह *तुम में से कुछ को परीक्षा के लिए जेल में डाल* देगा (प्रकाशितवाक्य 2:10), और इसी तरह।

पवित्र पिताओं की शिक्षा के अनुसार:

(क) "जब से पाप के द्वारा दुष्टता संसार में आई है, तब से उसकी (शैतान की) आत्मा तक मुक्त पहुँच रही है, ताकि वह उससे प्रतिदिन वैसे ही बात कर सके जैसे एक व्यक्ति दूसरे से बात करता है, और उसे बेतुकी बातें सुझा सके;"[1663]

b) "और हमारा संघर्ष उस शत्रु के विरुद्ध है जो हम में युद्ध छेड़ता है और हमारा विरोध करता है, जो हमें स्वयं के विरुद्ध हथियार के रूप में उपयोग करता है (जो सभी से भयानक बात है!), और हमें पापी मृत्यु के हवाले कर देता है;"[1664]

[1656] *ऑगस्टीन,* भजन संहिता XCIV पर भाष्य, श्लोक 6; तुलना करें: *जस्टिन,* अपोलॉजी 1, अध्याय 9, 12; *टाटियन,* ग्रीकों के विरुद्ध XII, XVIII; *एथेनागोरस,* लेगेटस XXVI।

[1657] *मिनियूटियस फेलिक्स,* ऑक्टावी (Minut. *Fel*. Octav. XXVII); *क्लेमेंट्स ऑफ एलेक्जेंड्रिया,* कोहर्न्स (*Clem. Alex*. Coh. II); *ओरिजिन,* कॉन्ट्रा सेल्सियस (*Origen*. contra Cels. III, 29; VIII, 47); *टर्टुलियन,* डी स्पेक्टैकलिस (Tertull. de Spectac. X, XII); *बेसिल द ग्रेट,* इज़ाया की पुस्तक के अध्याय 10 पर टीका, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, VI, 335: "पेड़ों, पत्थरों, या वास्तव में सोने, चांदी और हाथीदांत में, और कीमती तथा साधारण सामग्रियों से बने अन्य सभी रूपों में, जिन्हें मूर्तिपूजक पूजते हैं, ऐसे राक्षस होते हैं जो अदृश्य रूप से उड़ते हैं और अशुद्ध वाष्पों की सुखदता में आनंदित होते हैं...; बलिदानों के रक्त और चर्बी का भक्षण करने के अवसर का लाभ उठाते हुए, वे वेदियों और उन पर स्थापित मूर्तियों के पास रहना पसंद करते हैं।"

[1658] *Theoph.* ad Autol. II, 10,

[1659] *Tertull.* de praescr. haeret. XL; Apolog. XXII.

[1660] *Tertull.* de orat. XIII; *Origen.* contr. Cels. IV, 92; *Sozom.* Hist. eccl. V, 18. चर्च के शिक्षकों ने इन भविष्यवाणियों को लोगों को धोखा देने और अपनी ओर खींचने के लिए शैतान के सबसे चालाक साधनों में से एक माना, ऐसे लोग जो आम तौर पर भविष्य जानने के लिए बहुत उत्सुक रहते थे *(Chrysost.* in Joann. homil. LXXVIII)। इन भविष्यवाणियों के महत्व के संबंध में, उन्होंने इस प्रकार तर्क दिया: 'यदि कोई कहे कि मूर्तियों द्वारा कई बातों की भविष्यवाणी की गई थी, तो यह समझना चाहिए कि वे हमेशा सत्य में असत्य मिलाते थे; और उन्होंने अपनी भविष्यवाणियों को इस तरह से व्यक्त किया कि, चाहे कोई अच्छा या बुरा कुछ भी घटित हुआ हो, उसे दोनों तरह से व्याख्यायित किया जा सकता था। जैसा कि एपिरिस के राजा पायरस के मामले में: '*तुम रोमनों को हराने में सक्षम होगे,*' और क्रोइसस के मामले में: '*क्रोइसस, हेलिस पार करने के बाद, अपना महान साम्राज्य* खो देगा' *(हिएरोन्यमस,* यशायाह पर, अध्याय XLI)। "न तो परमेश्वर के स्वर्गदूत और न ही दानव भविष्य जानते हैं, फिर भी वे भविष्यवाणी करते हैं: स्वर्गदूत—जब परमेश्वर उन्हें यह प्रकट करते हैं और भविष्यवाणी करने की आज्ञा देते हैं; इसीलिए जो वे कहते हैं वह पूरा होता है। दैत्य भी भविष्यवाणी करते हैं, कभी-कभी दूर की घटनाओं को भांपकर, और कभी-कभी केवल अनुमान से; इसीलिए वे इतनी बार झूठ बोलते हैं;" (जॉन ऑफ़ डेमास्कस, एक्सैक्ट एक्सपोज़िशन ऑफ़ द ट्रू फेथ, पुस्तक II, पृ. 58–59)।

[1661] *लैक्टैंटियस,* *ओन द डेथ ऑफ पर्सेक्यूटर्स*, अध्याय X.

[1662] *ग्रेग. पाप.* मोरल. IV, पृ. 14.

[1663] *मैकैरियस द ग्रेट,* मन की स्वतंत्रता पर प्रवचन, क्रिश्चियन रीडिंग्स 1821, III, 4.

[1664] *ग्रेगरी द थियोलोजियन,* होमीली 3, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, 1, 30 में।

c) "वह प्रत्येक व्यक्ति की आदतों का अवलोकन करता है, उनकी प्रवृत्तियों को नोट करता है, उनकी कामनाओं को पहचानता है, और उस दिशा से हमला करता है जहाँ उसे अपने लिए सबसे बड़ा लाभ दिखाई देता है;"[1665]

d) "कभी-कभी स्वाभाविक रूप से उत्पन्न होने वाली प्रवृत्तियों का, और कभी-कभी निषिद्ध जुनून का उपयोग करता है, जिनके माध्यम से वह उन लोगों को, जो अपने प्रति सतर्क नहीं हैं, उन जुनूनों के अनुरूप कर्मों की ओर ले जाने का प्रयास करता है;"[1666]

e) "वह हर चीज़ और हर व्यक्ति के अनुकूल स्वयं को ढाल लेता है, ताकि इस अनुकूलन द्वारा वह उन्हें अपने अधीन कर सके, और एक विश्वसनीय बहाने के तहत उनका विनाश तैयार कर सके।"[1667]

सामान्य रूप से, पवित्र पिताओं और तपस्वियों, जो अपने स्वयं के अनुभव से प्रलोभक की चालाकियों को जानते थे, ने शैतानी प्रलोभनों के सिद्धांत को बहुत विस्तार से और उनकी वास्तविकता के बारे में पूर्ण निश्चितता के साथ प्रस्तुत किया।[1668] चर्च के कुछ पिता मानते थे कि प्रत्येक व्यक्ति को प्रलोभन की एक विशिष्ट आत्मा सौंपी जाती है, ठीक उसी तरह जैसे उन्हें एक संरक्षक देवदूत सौंपा जाता है;[1669] लेकिन यह केवल एक अल्पसंख्यक दृष्टिकोण था।

2.2. वह स्वयं या उसके दानव अक्सर ईश्वर की अनुमति से[1670] , किसी व्यक्ति में प्रवेश कर जाते थे—और आज भी करते हैं—ताकि उन्हें पीड़ा पहुँचा सकें। राक्षसों से ग्रस्त लोगों के सुसमाचार विवरण निस्संदेह हमें इस बात का विश्वास दिलाते हैं:

क) उद्धारकर्ता स्वयं उन पर अधिकार किए गए लोगों को मानव ही मानते थे। जिनके भीतर वास्तव में राक्षस थे; और इसलिए, जब उन्होंने राक्षसों से ग्रस्त लोगों से बात की, तो उन्होंने अपने शब्द लोगों को नहीं बल्कि सीधे राक्षसों को संबोधित किए, और स्पष्ट रूप से उन्हें अशुद्ध आत्माएं कहा और लोगों से बाहर निकलने का आदेश दिया: *'इस आदमी से, अशुद्ध आत्मा, निकल आ'* (मार्क 5:8; तुलना करें 1:25); *'हे मूक और बधिर! मैं तुझे आज्ञा देता हूँ उसमें से निकल आ और फिर कभी उसमें प्रवेश न करना* (मरकुस 9:25)।

ख) लोगों के भीतर रहने वाले दुष्टात्माएँ—जिन व्यक्तियों में वे रहते थे, उनसे अलग वास्तविक प्राणी के रूप में—मसीह को परमेश्वर का पुत्र के रूप में पहचानती थीं और उन पर उनकी सामर्थ्य और अधिकार से काँपती थीं, और चिल्लाती थीं: *'हे यीशु, परमेश्वर के पुत्र, हमारा तुझसे क्या काम है? क्या तू समय से पहिले हमें यातना देने आया है?'*

1665 *लियो महान,* प्रभु के जन्म पर उपदेश VII, अध्याय 3, *पैट्रोलोजिया कर्सस कम्प्लेटस*, खंड LIV, पृ. 218 में। तुलना करें *ग्रेगरी द थियोलोजियन,* धर्मोपदेश 37, *द वर्क्स ऑफ़ द होली फ़ादर्स*, III, 224 में: "अपने आपको वचन, कर्म, जीवन, विचारों और हृदय की हलचलों में अभेद्य रखें; क्योंकि दुष्ट हर ओर से परीक्षा करता है और आपको गिराने या घायल करने के लिए हर अवसर की प्रतीक्षा करता है, यदि उसे कोई असुरक्षित और हमले के लिए खुला हुआ हिस्सा मिल जाए। आपमें जितनी अधिक पवित्रता वह देखता है, उतना ही अधिक वह आपको कलंकित करने का प्रयास करता है, क्योंकि साफ कपड़ों पर दाग़ अधिक दिखाई देते हैं।"

1666 *बेसिल द ग्रेट,* द करेक्ट डॉक्ट्रिन, ए ब्रीफ एक्सपोजिशन, प्रश्न 75 का उत्तर, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, IX, 251 में।

1667 *मैकारियस महान,* 'मन की स्वतंत्रता पर एक प्रवचन', *क्रॉनिकल ऑफ रीडिंग्स*, 1821, III, 8 में। तुलना करें: *एंथनी महान,* भिक्षुओं को पत्र VI, *क्रॉनिकल ऑफ रीडिंग्स*, 1826, XXIII, 180 में; वे (दुष्ट आत्माएँ) हमें पाप में फँसाने के लिए विभिन्न तरीकों से प्रयास करती हैं। वे हमारे प्रति अपनी घृणा और हमारे विरुद्ध अपने शत्रुतापूर्ण कार्यों, दोनों को छिपाती हैं; वे हममें ईश्वर-निन्दा के विचार उत्पन्न करती हैं; वे हमें विश्वास के सत्यों पर संदेह करने के लिए प्रेरित करती हैं, ताकि हमें अविश्वास की ओर ले जा सकें; वे हमारे मन पर अँधेरा छा देती हैं; वे हमारे हृदय में दुष्ट इच्छाएँ उत्पन्न करती हैं; हमें निराशा और हताशा में धकेलते हैं, हमारे भीतर क्रोध को भड़काते हैं, हममें दूसरों को दोष देने की प्रवृत्ति उत्पन्न करते और उसे मजबूत करते हैं जबकि हम हमेशा अपना ही पक्ष सही ठहराते हैं, हमें अपने पड़ोसियों की बदनामी करना सिखाते हैं, उन लोगों से दयालुता और सौहार्दपूर्वक बात करना सिखाते हैं जिनके प्रति हम, उनकी उकसावे पर, तीव्र घृणा रखते हैं, वे हमारे पड़ोसी की बाहरी कमियों की ओर इशारा करते हैं, फिर भी हमसे हमारी अपनी आंतरिक भ्रष्टता को छिपाते हैं; वे हमारे बीच संघर्ष और कलह को भड़काते हैं, जब उनकी उकसावे पर हम खुद को दूसरों से बेहतर समझते हैं। इसके अलावा, वे हमें अपनी क्षमता से परे के कार्यों को करने के लिए प्रेरित करते हैं और हमें उस कार्य से भटकाते हैं जो हमारे लिए लाभदायक और आवश्यक है। जब हमें रोना चाहिए, तो वे हमें हँसने के लिए प्रेरित करते हैं; जब हमें आनंदित होना चाहिए, तो वे हमारे हृदय में दुख भर देते हैं।"

1668 विशेष रूप से निम्नलिखित के तपस्वी लेखन देखें: एंथनी द ग्रेट, एफ्रेम द सीरियन, मकारियस द ग्रेट, इसिडोर ऑफ़ पेलसियम, साथ ही *द लव ऑफ़ गुडनेस*, *द प्रोलाग्स*, *द पैटेरिकॉन* और *द चेती-मिनी*।

1669 *हर्म.* पास्ट. II, मैंडेट. VI, n. 2: "मनुष्य के साथ दो स्वर्गदूत होते हैं: एक अच्छा और एक बुरा;" *ओरिजिन.* डी प्रिंसिपि. III, 2, n. 10; *ग्रेग. निस्स.* डी वीटा मोस. वॉल. I, पीपी. 194–195, पेरिस, 1638; *सिरिल ऑफ़ टुरोव,* मेमोरियल्स ऑफ 12वीं-सदी रूसी साहित्य, पृ. 92.

1670 "उनके पास किसी पर अधिकार या शक्ति नहीं है, जब तक कि ईश्वर की इच्छा से अनुमति न हो, जैसा कि अय्यूब के साथ हुआ था, और जैसा कि गदारा के सूअरों के बारे में सुसमाचार में लिखा है" *(जॉन ऑफ़ डेमास्कस,* सच्चे विश्वास की सटीक व्याख्या, पुस्तक II, अध्याय 4, पृ. 58)। यही बात *टर्टुलियन* (डे फुगा इन पर्सिक्युट. II), *थियोफाइलैक्ट* (इन मार्क. V) और अन्य लोगों द्वारा भी कही गई है।

(मत्ती 8:29; मरकुस 5:7); और एक अवसर पर उन्होंने उससे विनती की कि जब वे मनुष्य से निकलें, तो उन्हें *सूअरों में प्रवेश करने की* अनुमति दे (लूका 8:32–33)।

ग) जब उद्धारकर्ता के शत्रुओं ने उन पर यह आरोप लगाया कि *वे बीलज़बूल, यानी दुष्टात्माओं के राजा, की शक्ति से दुष्टात्माओं को निकालते हैं* (लूका 11:15)। उद्धारकर्ता ने उत्तर दिया: *'हर राज्य जो अपने ही विरुद्ध बँटा हुआ है, उजाड़ हो जाएगा, और घर जो अपने ही विरुद्ध बँटा हुआ है, वह गिर जाएगा; यदि शैतान भी अपने ही विरुद्ध बँटा हुआ है, तो उसका राज्य कैसे टिक सकता है?* (17–18). और अपनी बात जारी रखते हुए, उन्होंने कहा: *'जब एक अशुद्ध आत्मा मनुष्य से निकलती है, तो वह विश्राम की खोज में सूखी जगहों में भटकती है, और जब उसे कोई विश्राम नहीं मिलता, तो वह कहती है: "मैं अपने उस घर में लौट जाऊँगी जहाँ से मैं निकली थी"; और, आकर, वह उसे झाड़ू से साफ किया हुआ और सँवारा हुआ पाता है; तब वह जाता है और अपने साथ और भी सात दुष्टात्माओं को ले आता है, और वे भीतर आकर वहाँ बस जाते हैं—और उस मनुष्य की अन्तिम दशा पहली से भी बदतर हो जाती है* (24–26)।

(घ) जब शिष्यों ने यीशु से पूछा कि वे एक दैत्य-ग्रस्त मनुष्य से एक अशुद्ध आत्मा को क्यों नहीं निकाल सके, तो प्रभु ने उत्तर दिया: *'यह प्रकार प्रार्थना और उपवास के सिवाय और किसी भी बात से नहीं निकलता'* (मरकुस 9:29)। जब सत्तर शिष्यों ने, अपने मिशन से लौटकर, खुशी-खुशी उन्हें बताया, *'प्रभु, यहाँ तक कि दुष्टात्माएँ भी आपके नाम से हमारे वश में हो जाती हैं,' तो* उन्होंने उत्तर दिया, *'मैंने शैतान को बिजली की तरह आकाश से गिरते देखा'* (लूका 10:17-18)। जब उन्होंने अपने ग्यारह शिष्यों को सारी दुनिया में प्रचार करने के लिए भेजा, *तो* उन्होंने अन्य बातों के अलावा कहा: *'जो विश्वास करेंगे, उन पर ये चिन्ह होंगे: वे मेरे नाम पर दुष्टात्माओं को निकालेंगे; ... वे बीमारों पर हाथ रखेंगे, और वे चंगे हो जाएँगे* (मरकुस 16:17-18)।

(e) प्रेरितों के काम की पुस्तक से हम जानते हैं कि प्रेरितों ने भी लोगों से अशुद्ध आत्माओं को निकाला; उदाहरण के लिए, प्रेरित पौलुस ने एक युवती से एक आत्मा को निकाला जब *वह आत्मा से मुड़ा और कहा: 'मैं तुझे यीशु मसीह के नाम की आज्ञा देता हूँ कि तू उससे निकल आ।' और आत्मा उसी घड़ी निकल आई* (16:18)।

f) पवित्र लेखकों ने, दुष्टात्माओं से ग्रस्त लोगों के अपने विवरणों में, उन्हें बीमारी से पीड़ित लोगों से स्पष्ट रूप से अलग किया है। उदाहरण के लिए, सुसमाचार लेखक मत्ती गवाही देते हैं: *'और उसने अपने बारह चेलों को बुलाया और उन्हें अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार दिया, कि वे उन्हें निकालें और हर प्रकार की बीमारी और हर प्रकार की दुर्बलता को चंगा करें* (10:1); सुसमाचार लेखक मरकुस: *'जब साँझ हुई, सूर्य अस्त होने के बाद, वे उसके पास सब बीमारों और जिन्हें दुष्टात्माओं ने पकड़ रखा था, को ले* आए...', *और उन्होंने कई लोगों को जो विभिन्न प्रकार की बीमारियों से पीड़ित थे, चंगा किया; उन्होंने कई दुष्टात्माओं को निकाला, और दुष्टात्माओं को यह कहने की अनुमति नहीं दी कि वे जानते थे कि वह मसीह हैं* (1:32–34); सुसमाचार लेखक लूका: *जो उन्हें सुनने और अपनी बीमारियों से चंगा होने के लिए आए थे, साथ ही अशुद्ध आत्माओं से ग्रस्त लोग भी; और वे चंगे हो गए* (6:18); या: *आसपास के कई नगरों से भी लोग यरूशलेम आए, और वे बीमारों तथा अशुद्ध आत्माओं से ग्रस्त लोगों को लाए, और वे सब चंगे हो गए* (प्रेरितों के काम 5:16)।

चर्च के पवित्र पिताओं और शिक्षकों ने न केवल सुसमाचार में उल्लिखित सभी पिशाचग्रस्त लोगों को सर्वसम्मति से वास्तव में अशुद्ध आत्माओं द्वारा ग्रस्त माना, न केवल यह स्वीकार किया कि ऐसे पिशाचग्रस्त लोग उनके अपने समय में मौजूद थे और हमेशा मौजूद रह सकते हैं, परन्तु उन्होंने साहसपूर्वक स्वयं मूर्तिपूजकों के सामने उद्धारकर्ता द्वारा प्रदान किए गए अधिकार से लोगों से अशुद्ध आत्माओं को निकालने के कई उदाहरण बताए, और साहसपूर्वक घोषणा की:

'और अब आप जो अपने नेत्रों के सामने हो रहा है, उससे जान सकते हैं। क्योंकि दुनिया भर में और आपके अपने शहर में, आत्माओं से ग्रस्त कई लोगों को हमारे कई लोगों, ईसाइयों द्वारा, जो पोंटियस पिलातुस के अधीन क्रूस पर चढ़ाए गए यीशु मसीह के नाम का आह्वान करते हैं, चंगा किया गया है—और अभी भी चंगा किया जा रहा है—जबकि कोई अन्य मंत्र, न तो जादू-टोना, न ही कोई चिकित्सकीय उपचार उन्हें ठीक कर सकता था।"[1671]

"हम न केवल दुष्टात्माओं से घृणा करते हैं, बल्कि हम उन पर विजय भी प्राप्त करते हैं, उन्हें प्रतिदिन लज्जित करते हैं, और लोगों से उन्हें निकालते हैं, जैसा कि बहुत से लोगों को अच्छी तरह पता है।"[1672] "कोई भी व्यक्ति जो निस्संदेह

[1671] *जस्टिन,* एपोलॉजी II, संख्या 6.

[1672] *टर्तुल्लियन,* एड स्कैप. II.

एक राक्षस के वश में है, उसे यहाँ आपके न्यायालयों के सामने आने दें: यह आत्मा, किसी भी ईसाई की आज्ञा से, बोलकर यह स्वीकार करेगी कि वह एक राक्षस है, जबकि अन्यत्र यह झूठ बोलकर खुद को एक देवता कहती है।"[1673]

"आप में से अधिकांश लोग यह सब जानते हैं: कि राक्षस स्वयं अपनी प्रकृति की गवाही देते हैं, चाहे हमने उन्हें शब्दों की यातना और प्रार्थना की अग्नि के माध्यम से कितनी भी बार शरीरों से बाहर निकाला हो।"[1674]

"कई ईसाई उन लोगों से जिन पर राक्षस सवार होते हैं, राक्षसों को भगा देते हैं, और वे ऐसा जादू-टोने या तंत्र-मंत्र का सहारा लिए बिना, बल्कि केवल प्रार्थनाओं और साधारण मंत्रों द्वारा करते हैं।"[1675]

§ 110. ईश्वर ने दुष्ट आत्माओं की गतिविधियों को सीमित किया है और उन्हें सीमित करना जारी रखता है, साथ ही उन्हें अच्छे परिणामों की ओर निर्देशित करता है

हालाँकि, पतित आत्माओं की दुष्ट गतिविधियों को उनकी स्वतंत्रता से वंचित न करने के लिए अनुमति देते हुए, प्रभु परमेश्वर, जो अनंत रूप से न्यायप्रिय और सर्वज्ञानी हैं, ने उन्हें सीमित किया है और सीमित करना जारी रखा है, लेकिन इस तरह से कि वे, जहाँ तक संभव हो, एक अच्छा परिणाम उत्पन्न करें।

1). उसने उन्हें सीमित किया है और सीमित करना जारी रखता है:

1.1. इस प्रकार कि, जैसे ही दुष्ट आत्माएँ गिरीं, उन्होंने उन्हें उनके योग्य दंड के अधीन कर दिया, और, *उन्हें नरकीय अंधकार की जंजीरों से बाँधकर, दंड के लिए न्याय के दिन तक हिरासत में रखने के लिए सौंप दिया* (2 पतरस 2:4)। पतित स्वर्गदूतों की यह सजा चाहे किसी भी रूप में हो—हालांकि यह अभी अंतिम नहीं है—वे यह महसूस किए बिना नहीं रह सकते कि जिस के विरुद्ध उन्होंने विद्रोह करने की हिम्मत की, वह *गेहेन्ना में* उन्हें *नष्ट करने के लिए* पर्याप्त शक्तिशाली है (मत्ती 10:28); वे जानते हैं कि उन्हें *उस महान दिन के न्याय* (यहूदा 6) *के लिए* उसके द्वारा *रखा जा रहा है*, जब उन्हें अपने सभी कर्मों का हिसाब देना होगा; और परिणामस्वरूप, वे अब परमेश्वर और मनुष्यों के विरुद्ध जितना अधिक युद्ध करने की अनुमति स्वयं को देते हैं, उतनी ही बड़ी निंदा का सामना उन्हें तब करना होगा।[1676]

1.2. पृथ्वी पर दुष्टात्माओं के राज्य को पहले ही आंशिक रूप से नष्ट करके, और नष्ट करना जारी रखकर। इसी कारण से, अन्य बातों के अलावा, परमेश्वर के पुत्र ने हमारा *शरीर और रक्त धारण किया, ताकि मृत्यु के द्वारा वह उसे शक्ति से वंचित कर सके जिसके पास मृत्यु की शक्ति है, अर्थात् शैतान* (इब्रानियों 2:14); और इस प्रकार वह *शैतान के कामों को नाश करने के लिए* संसार में आया (1 यूहन्ना 3:8)। जब उसने अपनी सार्वजनिक सेवकाई शुरू की, तो उसने खुले तौर पर घोषणा की: *'अब इस संसार का न्याय होता है; अब इस संसार का अधिपति निकाल फेंका जाएगा'* (यूहन्ना 12:31); उन्होंने लोगों से दुष्टात्माओं को निकालकर अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते हुए बार-बार यह भी गवाही दी: *'मैंने शैतान को बिजली की तरह स्वर्ग से गिरते देखा'* (लूका 10:18)। तब, वास्तव में, उन्होंने अपनी मृत्यु द्वारा *मृत्यु के अधिकार रखने वाले को* समाप्त कर दिया, *और उस बलवान को* बाँध दिया (मत्ती 12:29) नरक में उतरकर, और, अपने पुनरुत्थान के बाद, प्रेरितों को *उनकी आँखें खोलने के लिए* भेजकर (लोगों की आँखें), *ताकि वे अंधकार से प्रकाश में और शैतान की शक्ति से परमेश्वर की ओर मुड़ें, और मुझ पर विश्वास करके पापों की क्षमा और पवित्र लोगों के साथ भाग प्राप्त करें* (प्रेरितों के काम 26:18), हमारे उद्धारकर्ता ने शैतान के इस अधिकार को और भी तोड़ दिया है, और तब से, युग-युग से, अपने अनुग्रह के राज्य के अनवरत विस्तार के द्वारा, और उनकी कृपा से *आज्ञा न मानने वालों के* पहिले के *बेटों* (इफिसियों 2:2) *और शैतान की संतानों के* निरंतर पुनर्जन्म और पवित्रिकरण के द्वारा (1 यूहन्ना 3:10), उसने मानव जाति पर उसके अधिकार को सीमित कर दिया है और करना जारी रखता है।[1677]

[1673] *टर्तुल्लियन,* *अपोलाजी*, अध्याय XXIII.

[1674] *Minut. Fel.* in Octav. XXVII.

[1675] *ओरिजिन,* अगेंस्ट सेल्सस, VII, 4, 1, 5। इसी विचार को *क्लेमेंट,* रेकॉग्निशिन, VI, 20, 32; *लैक्टैंटियस,* इंस्टिट्यूट्स ऑफ द डिविइन, II, 15; IV, 27; V, 22; *साइप्रियन,* टू डेमेट्रियस; *सिरिल, कैटेकिज़्म,* XVI, 15 में देखें।

[1676] दुष्ट आत्माएँ जानती हैं कि जब ईश्वर उन्हें अपने प्रति समर्पित किसी व्यक्ति को परीक्षा में डालने की अनुमति देते हैं, तो वह उनके लिए एक बड़ी सज़ा तैयार कर लेते हैं। वे पहले से ही निश्चित हैं कि उनका यातना अवश्यंभावी है, कि ईश्वर से उनका विमुख होना और उसके प्रति उनकी शत्रुता ने अनिवार्य रूप से उन्हें नरक के वारिस बना दिया है" *(संत एंथनी महान,* भिक्षुओं को पत्र VI, क्रि. ट. 1826, XXIII, 179)।

[1677] *बेसिल द ग्रेट,* *द वर्क्स ऑफ़ द होली फ़ादर्स*, VIII, 161–162 में, इस तथ्य पर एक प्रवचन कि ईश्वर बुराई का कारण नहीं है।

1.3. इस तथ्य से कि, *उनकी दिव्य शक्ति के द्वारा, हमें जीवन और भक्ति के लिए आवश्यक सभी चीज़ें प्रदान की गई हैं* (2 पतरस 1:3), जिनके द्वारा हम *दुष्ट के सभी अग्निबाणों को बुझा* सकते हैं (इफिसियों 6:16)—और शैतान का विरोध करने और उस पर विजय प्राप्त करने का सबसे विश्वसनीय साधन, अर्थात्:

क) उनके परम पवित्र नाम का आह्वान करना: *'जो विश्वास करेंगे, उन पर ये चिन्ह होंगे: वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे* (मरकुस 16:17)। और वास्तव में, — "पवित्र शहीद जस्टिन के शब्दों में, मसीह के नाम की शक्ति दुष्टात्माओं को काँपने और भयभीत होने के लिए प्रेरित करती है; और आज भी, जब क्रूस पर चढ़ाए गए यीशु मसीह के नाम से पुकारा जाता है, तो वे हमारी आज्ञा मानते हैं;"[1678] या, संत ग्रेगरी द थियोलोजियन के साथ: "आज भी दुष्टात्माएँ मसीह के नाम से काँपती हैं; इस नाम की शक्ति हमारे पापों से कमजोर नहीं हुई है।"[1679]

ख) प्रार्थना, उपवास और आध्यात्मिक सतर्कता: *'इस प्रकार की,'* उद्धारकर्ता ने दुष्टात्माओं के विषय में कहा, *'इस प्रकार की किसी भी अन्य चीज़ से नहीं, परन्तु प्रार्थना और उपवास से ही निकाल जाती है* (मरकुस 9:29); *'जागते रहो और प्रार्थना करो, कहीं ऐसा न हो कि तुम परीक्षा में पड़ जाओ* (मत्ती 26:41)। "क्योंकि हमारे *संघर्ष का विषय,"* संत बेसिल द ग्रेट लिखते हैं, *"मांस और रक्त से नहीं, बल्कि प्रधानताओं, शक्तियों, इस युग के अंधकार के अधिपतियों, स्वर्गीय क्षेत्रों में बुराई की आध्यात्मिक शक्तियों से है* (इफिसियों 6:12); इसलिए, संयम और उपवास के माध्यम से इस संघर्ष के लिए तैयारी करना आवश्यक है;"[1680] और अन्यत्र: "जब शैतान अपनी योजनाएँ बुनने लगता है, और बड़ी ताकत से अपने विचारों को—जैसे किसी तरह के जलते हुए तीरों की तरह—एक शांत और प्रसन्न आत्मा में डालने का प्रयास करता है, ताकि उसे अचानक आग में झोंक दिया जाए, और उसमें उन चीजों की स्थायी और अविनाशी यादें पैदा की जाएँ जो कभी उस पर अंकित हो चुकी हैं, तो ऐसे हमलों को संयम और अत्यधिक सतर्कता के साथ विफल करना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे एक पहलवान, अत्यधिक सावधानी और शरीर की चपलता के साथ, अपने विरोधियों के प्रहारों को विफल कर देता है; और फिर भी सब कुछ—अर्थात् संघर्ष का विराम और तीरों का विफल होना—प्रार्थना और ऊपर से सहायता के आह्वान को ही श्रेय दिया जाना चाहिए। क्योंकि यही बात पौलुस हमें सिखाते हैं, कहते हुए: *'सबसे बढ़कर, विश्वास की ढाल उठा लो, जिससे तुम उस दुष्ट के सभी जलते हुए तीरों को बुझा सकोगे'* (इफिसियों 6:16)।"[1681] "जब शैतान देखता है—जैसा कि संत जॉन क्राइसोस्टोम भी कहते हैं—कि हम सतर्क और संयमी हैं, तो वह समझ जाता है कि उसके प्रयास व्यर्थ होंगे, और इसलिए वह हमसे पीछे हट जाता है और खुद को छिपा लेता है।"[1682]

c) हृदय में विश्वास के साथ क्रॉस का चिह्न बनाना। "क्रॉस का चिह्न केवल उंगली से नहीं बनाना चाहिए," वही पवित्र पिता आज्ञा देते हैं, "बल्कि इससे पहले हृदय की तैयारी और पूर्ण विश्वास होना चाहिए।" यदि आप इस प्रकार अपने चेहरे पर यह चिह्न बनाते हैं, तो एक भी अशुद्ध आत्मा आपके पास नहीं आ पाएगा, क्योंकि वह उस तलवार को देखकर भयभीत हो जाएगा जिससे वह घायल हुआ था, और उस हथियार को देखकर भी जिसे देखकर उसे घातक घाव मिला था। क्योंकि यदि हम अपराधियों को फाँसी दिए जाने वाले स्थानों को भी भय के साथ देखते हैं, तो कल्पना कीजिए कि शैतान और राक्षस कितने भयभीत होते हैं जब वे उस हथियार को देखते हैं जिससे मसीह ने उनकी सारी शक्ति को नष्ट कर दिया और सर्प का सिर काट दिया।"[1683]

1.4. अंत में, क्योंकि वह कभी भी शैतान को हमें उस सीमा से अधिक परीक्षा में नहीं डालने देता, जिसे हम सहन कर सकते हैं। *'ईश्वर विश्वासयोग्य है,'* पवित्र प्रेरित पौलुस ने कोरिन्थ में अपने बच्चों को लिखा, *'ईश्वर विश्वासयोग्य है, जो तुम्हें तुम्हारी शक्ति से अधिक परीक्षा में नहीं पड़ने देगा, परन्तु परीक्षा के साथ निकलने का मार्ग भी प्रदान करेगा, ताकि तुम उसे सहन कर सको* (1 कुरिन्थियों 10:13)। और चाहे प्रभु ने अपने सेवक अय्यूब को परीक्षा में डालने के लिए शैतान को जितना भी अनुमति दी, फिर भी उन्होंने उस दुष्ट परीक्षाकर्ता की कार्रवाइयों पर एक सीमा निर्धारित की: *'और प्रभु ने शैतान से कहा, "देख, जो कुछ भी उसके पास है, वह सब तेरे हाथ में है; केवल उस पर अपना हाथ न*

[1678] ट्राइफो से संवाद और एपोलॉजी II, 6।

[1679] होमीली 3, *द वर्क्स ऑफ़ द होली फ़ादर्स*, 1, 67–68 में।

[1680] उपवास पर प्रवचन 2, *पवित्र पिताओं के कार्य*, VIII, 19 में।

[1681] संयमियों का नियम, अध्याय 17, वही, IX, 425.

[1682] उत्पत्ति के अध्याय 1 पर, व्याख्यान VII, खंड 3।

[1683] मत्ती के सुसमाचार पर, प्रवचन LIV, भाग 17, पृ. 427, रूसी अनुवाद के अनुसार। मॉस्को, 1843। यरूशलेम के संत सिरील भी इसी प्रकार तर्क देते हैं (कैटेकेटिकल लेक्चर्स XIII, 36, पृ. 272, रूसी अनुवाद के अनुसार)।

लगाना" (अय्यूब 1:12)। इस व्यवस्था को देखते हुए, शैतान किसी भी तरह से हमें पाप करने के लिए मजबूर नहीं करता है: "वह," सेंट जॉन क्राइसोस्टोम कहते हैं, "असंख्य प्रलोभनों के बावजूद, इयोब को एक भी अपमानजनक शब्द बोलने के लिए मना नहीं सका; जिससे यह स्पष्ट है कि उसकी सलाह मानना या न मानना हमारी शक्ति में है, और यह कि हम उसके हाथों किसी भी हिंसा, किसी भी अत्याचार (τυραννίδα) का शिकार नहीं होते हैं।"[1684] "वह हमें, धन्य ऑगस्टीन के शब्दों में, बुराई करने के लिए मजबूर करके नहीं, बल्कि केवल सलाह देकर नुकसान पहुँचाता है; वह हमसे सहमति नहीं छीनता, बल्कि उसे माँगता है।"[1685] इसलिए, उसके परामर्श का दृढ़ता से विरोध करके, हम उसे अपने से दूर भगा सकते हैं: *'शैतान का विरोध करो, और वह तुमसे दूर भागेगा* (याकूब 4:7)। और यदि उसके विरुद्ध संघर्ष कठिन है, तो यह केवल उन लोगों के लिए है जो विश्वास में कमज़ोर हैं: 'जो परमेश्वर से अपनी पूरी आत्मा से प्रेम करते हैं, उनके लिए उसके (शैतान) विरुद्ध संघर्ष लगभग कुछ भी नहीं है, लेकिन जो संसार से प्रेम करते हैं, उनके लिए यह कठिन और असहनीय है,' संत एफ्रेम द सीरियन गवाही देते हैं।[1686]

२) वह उद्देश्य जिसके लिए प्रभु प्राचीन धोखेबाज़ की सभी चालाकियों को, जो हमारे विनाश की तलाश में है, अनुमति देते हैं, वह हमारा नैतिक लाभ, हमारा उद्धार है। क्योंकि शैतान के प्रलोभन, ईश्वर द्वारा हम पर अनुमत सभी प्रलोभनों की तरह हैं:

2.1. अक्सर वे हमें आध्यात्मिक बीमारियों से ठीक करने के लिए एक उपाय के रूप में काम करते हैं, या हमारे पिछले पापों के लिए दंड होते हैं, ताकि हमें होश में लाया जा सके, हमें नए पाप करने से रोका जा सके, और हमें बड़ी, शाश्वत सज़ाओं से बचाया जा सके: *इसी कारण से,* पवित्र प्रेरित ने कोरिंथियों को लिखा, *तुम में से कई कमज़ोर और बीमार हैं, और कुछ नहीं बल्कि कई मर रहे हैं। क्योंकि यदि हम स्वयं का न्याय करते, तो हम दण्डित नहीं किए जाते। परन्तु चूंकि हम दण्डित किए जाते हैं, इसलिये हम प्रभु द्वारा अनुशासित किए जाते हैं, ताकि हम संसार के साथ दण्डित न हों* (1 कुरिन्थियों 11:30–32)। इस प्रकार की परीक्षाओं में, विशेष रूप से वे परीक्षाएँ शामिल हैं, जिनमें दुष्टात्माएँ, ईश्वर की अनुमति से, किसी व्यक्ति में प्रवेश करके उसे पीड़ा पहुँचाती हैं। 'मनुष्यजाति के प्रेमी परमेश्वर,' संत बेसिल द ग्रेट कहते हैं, 'उनकी (दैत्यों की) क्रूरता का उपयोग हमारे उपचार के लिए करते हैं, ठीक वैसे ही जैसे एक बुद्धिमान चिकित्सक एक सांप के विष का उपयोग बीमारों के इलाज के लिए करता है। क्योंकि ऐसे लोगों को *शरीर के नाश के लिए शैतान के हवाले कर दिया जाता है, ताकि आत्मा बच सके* (1 कुरिन्थियों 5:5)। लेकिन फिगेलुस और हर्मोगेनेस (2 तीमुथियुस 1:15) दोनों को पौलुस ने *शैतान के* हवाले कर दिया था, *ताकि वे ईश्वरनिंदा न करना सीखें* (1 तीमुथियुस 1:20);"[1687] और अन्यत्र: "चूंकि शैतान एक धर्मत्यागी, परमेश्वर का शत्रु, और परमेश्वर के स्वरूप में बनाए गए मनुष्यों का शत्रु बन गया (वह उसी कारण से मानव-द्वेषी है क्योंकि वह ईश्वर-निंदक है; वह हमसे प्राणी के रूप में नफरत करता है, और हमसे ईश्वर की प्रतिमा होने के कारण भी नफरत करता है); इसलिए मानव मामलों के बुद्धिमान और दूरदर्शी वास्तुकार ने हमारी आत्माओं के शिक्षण के लिए उसकी चालाकी का उपयोग किया, ठीक वैसे ही जैसे एक चिकित्सक जीवन-रक्षक औषधि के निर्माण में सांप के विष का उपयोग करता है।"[1688] इसी प्रकार, संत क्रिसोस्टोम तर्क देते हैं: "भविष्य की यातनाएँ हमारे लिए इस वर्तमान जीवन में ईश्वर द्वारा भेजी गई सजाओं या विपत्तियों से बहुत हद तक कम हो जाती हैं। इसका प्रमाण धर्मग्रंथों से लिया जा सकता है। पौलुस (और जब मैं पौलुस की बात करता हूँ, तो मेरा तात्पर्य स्वयं मसीह की आज्ञाओं से है, क्योंकि वही इस धन्य आत्मा को प्रेरित कर रहे थे), जब उसने कोरिन्थियों को व्यभिचारी के विषय में लिखा, तो आज्ञा दी कि उसे *देह की पीड़ा के लिए* सौंप दिया जाए, *ताकि उसकी आत्मा हमारे प्रभु यीशु मसीह के दिन बचाई जाए* (1 कुरिन्थियों 5:5)। क्या आप मानवता के लिए इस अकथनीय प्रेम और दया की इस प्रचुरता को देखते हैं? क्या आप देखते

[1684] De Lasar. conc. II, n. 2, in Opp. Vol. 1, पृ. 728–729, सं. Montf.

[1685] त्रित्व के बाद वाले रविवार पर उपदेश II। तुलना करें: *जॉन ऑफ़ डेमास्कस,* सच्चे विश्वास की सटीक व्याख्या, पुस्तक II, अध्याय 4, पृ. 59: 'यद्यपि उन्हें मनुष्य को परीक्षा में डालने की अनुमति है, तथापि वे किसी को मजबूर नहीं कर सकते; क्योंकि यह हम पर निर्भर है कि हम उनके सुझावों को स्वीकारें या अस्वीकार करें।'

[1686] *द वर्क्स ऑफ़ द होली फ़ादर्स*, XII, 343 में, एक प्रवचन इस पर कि जब आत्मा शत्रु द्वारा आक्रमित होती है, तो उसे आँसुओं के साथ ईश्वर से कैसे प्रार्थना करनी चाहिए।

[1687] *द वर्क्स ऑफ़ द होली फ़ादर्स*, VI, 371 में, यशायाह की पुस्तक के अध्याय XIII पर भाष्य।

[1688] ईश्वर बुराई का कारण नहीं है, इस तथ्य पर एक प्रवचन, वही, VIII, 160.

हैं कि परमेश्वर हर संभव साधन कैसे अपनाता है ताकि हम, पाप करने के बाद भी, हमें जो दंड मिलना चाहिए उससे हल्का दंड भोगें, या उससे पूरी तरह से छुटकारा भी पा सकें?"[1689]

2.2. वे हमें आध्यात्मिक अहंकार से बचाते हैं और हमें नम्रता सिखाते हैं, जिसके बिना कोई सच्चा सद्गुण नहीं हो सकता। पवित्र प्रेरित ने इस विचार को तब व्यक्त किया जब उन्होंने अपने बारे में कहा: *'इसीलिए कि मैं अतिशय प्रकाशनों के कारण घमण्ड न करूँ मेरे शरीर में एक काँटा, शैतान का एक दूत दिया गया, जो मुझे घूँस मारता है, इसीलिए कि मैं घमण्ड न करूँ।' मैंने तीन बार प्रभु से विनती की कि इसे मुझसे दूर कर दें। परन्तु प्रभु ने मुझसे कहा, 'मेरा अनुग्रह तेरे लिए पर्याप्त है, क्योंकि मेरी शक्ति दुर्बलता में सिद्ध होती है।' और इसलिए मैं अपनी दुर्बलताओं पर और भी प्रसन्नता से घमण्ड करूँगा, ताकि मसीह की शक्ति मुझ पर बनी रहे* (2 कुरिन्थियों 12:7–9)। और दमिश्क के संत जॉन ने इस अवसर पर टिप्पणी की: 'कुछ मामलों में, ईश्वर किसी संत को दुख सहने की अनुमति देते हैं ताकि वह संत अपने धर्मपरायण विवेक से भटक न जाए, या उस पर प्रदान की गई शक्ति और अनुग्रह के कारण घमंड में न पड़ जाए; जैसा कि पौलुस के साथ हुआ था (2 कुरिन्थियों 12:7)।'[1690]

2.3. वे हमें हमारे विश्वास और ईश्वर में हमारी आशा की दृढ़ता की गवाही देने, और भलाई में दिन-ब-दिन मज़बूत होने का सबसे अनुकूल अवसर प्रदान करते हैं। सिराख के सबसे बुद्धिमान पुत्र ने भी कहा है: *'सोने की परीक्षा आग में होती है, और जो परमेश्वर को प्रसन्न करते हैं, उनकी परीक्षा अपमान के कड़ाही में होती है* (सिराख 2:5)। और पवित्र प्रेरित पतरस ने ईसाइयों को लिखा: *'इस पर आनन्द मनाओ, यद्यपि अब कुछ समय के लिए, यदि आवश्यक हो, तो तुम्हें विभिन्न परीक्षाओं का सामना करना चाहिए, ताकि तुम्हारा विश्वास, एक बार परखा जाने पर, सोने से भी अधिक कीमती सिद्ध हो सके—जो आग में परखा जाने पर भी नष्ट हो जाता है—यीशु मसीह के प्रकट होने पर प्रशंसा और सम्मान और महिमा के लिए'* (1 पतरस 1:6–7)। चर्च के पवित्र पिताओं ने भी परीक्षणों को इसी दृष्टिकोण से देखा। उदाहरण के लिए, *बेसिल द ग्रेट*: 'दुख स्वयं, उस प्रभु की इच्छा से जो उन्हें हम पर भेजता है, परमेश्वर के सेवकों पर व्यर्थ नहीं आते, बल्कि इसलिए आते हैं ताकि हम उस परमेश्वर के प्रति सच्चा प्रेम अनुभव कर सकें जिसने हमें बनाया है। क्योंकि जैसे पहलवानों द्वारा अपने मुकाबलों के दौरान सहन की गई कठिनाइयाँ मुकुट दिलाती हैं, वैसे ही प्रलोभनों में परीक्षाएँ भी मसीहियों को पूर्णता की ओर ले जाती हैं, यदि हम हमारे विषय में प्रभु की इच्छा को उचित धैर्य और पूरी कृतज्ञता के साथ स्वीकार करें।"[1691] *संत जॉन क्राइसोस्टोम* और भी विशेष रूप से तर्क देते हैं: "यदि कोई पूछे: 'भगवान ने प्राचीन प्रलोभक को क्यों नहीं नष्ट किया?' (तो हम उत्तर देंगे कि) उन्होंने यह भी हमारे प्रति अपनी महान देखभाल के कारण किया। क्योंकि यदि दुष्ट हमें जबरदस्ती अपने वश में कर लेता, तो इस प्रश्न में कुछ औचित्य होता; लेकिन चूँकि उसके पास ऐसी शक्ति नहीं है, और वह केवल हमें बहकाने का प्रयास करता है (जबकि हमारे पास बहकाए न जाने की स्वतंत्रता है), तो आप पुण्य अर्जित करने का अवसर क्यों छीनते हैं और मुकुट प्राप्त करने के साधनों को क्यों अस्वीकार करते हैं?... ईश्वर ने शैतान को उसी अवस्था में छोड़ दिया है ताकि जो लोग पहले ही उससे पराजित हो चुके हैं, वे भी उसे परास्त कर सकें, *और* ताकि पराक्रमी लोगों को अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति दिखाने का अवसर मिल सके... शैतान अपने लिए दुष्ट है, हमारे लिए नहीं: क्योंकि, यदि हम चाहें, तो हम उसके माध्यम से बहुत अच्छा प्राप्त कर सकते हैं—बेशक, उसकी इच्छा और चाहत के विरुद्ध: यहीं पर मानव जाति के लिए ईश्वर का विशेष चमत्कार और असाधारण महान प्रेम निहित है... जब दुष्ट हमें डराता और भ्रमित करता है, तभी हम होश में आते हैं, तभी हम खुद को जानते हैं, और तभी हम परम उत्साह के साथ ईश्वर की ओर मुड़ते हैं।"[1692]

4. और परिणामस्वरूप, वे हमें धर्मात्मा पुरस्कारदाता से और भी बड़े पुरस्कार प्राप्त करने का सबसे अनुकूल अवसर प्रदान करते हैं: *'धन्य है वह मनुष्य जो परीक्षा में स्थिर रहता है; क्योंकि जब वह परीक्षा में खरा उतर जाएगा, तो उसे जीवन का मुकुट प्राप्त होगा* (याकूब 1:12)। "ईश्वर, जो हमारे मामलों का संचालन करता है," संत बेसिल द ग्रेट कहते हैं, "जो महान संघर्ष सहने में सक्षम हैं, उन्हें महिमा के लिए और भी महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करता है।"[1693]

[1689] संन्यासी स्टैगिरियस को संबोधित प्रथम पत्र, II. 7, खंड III, पृ. 252, सेंट जॉन क्रिसोस्टोम के कार्यों के रूसी अनुवाद से, सेंट पीटर्सबर्ग, 1850।

[1690] ऑर्थोडॉक्स विश्वास की सटीक व्याख्या, पुस्तक II, अध्याय 29, पृ. 126.

[1691] सांत्वनादायक पत्र, *द वर्क्स ऑफ़ द होली फ़ादर्स* में, X, 239; तुलना करें IX, 352.

[1692] स्टैगिरिइट पर भाष्य, पुस्तक I, II. 8. 9, खंड III, पृ. 253–257, रूसी अनुवाद के अनुसार।

[1693] रक्षात्मक पत्र, *पवित्र पिताओं के कार्यों* में, XI, 80।

"इसलिए, जितनी बड़ी परीक्षाएँ आप झेलते हैं, उतना ही कीमती पुरस्कार आप धर्मी न्यायाधीश से अपेक्षा कर सकते हैं।"[1694]

§ 111. सिद्धांत का नैतिक अनुप्रयोग

1. और परमेश्वर के स्वर्गदूत, सबसे नीचले से लेकर सबसे ऊँचे तक, अपनी बुद्धि की पूर्णता के बावजूद, सत्य के सूर्य से प्रेरणा और प्रबोधन की आवश्यकता रखते हैं; और, अपनी इच्छा की सारी पूर्णता के बावजूद, यदि वे भलाई में स्थिर हैं, तो वे केवल सर्वशक्तिमान की कृपा से ही ऐसा हैं; तो क्या यह हमारी बुद्धि के लिए और भी अधिक आवश्यक नहीं है—जो कम परिपूर्ण है और पाप से ढकी हुई है—कि वह प्रभु से प्रबोधन प्राप्त करे? क्या हमारे इच्छाशक्ति के लिए, जो कमजोर और भ्रष्ट है, ईश्वर की कृपा और भी अधिक आवश्यक नहीं है? अतः आइए हम सीखें कि हम अपनी बुद्धि या इच्छाशक्ति की शक्तियों से बड़ी उम्मीदें न रखें, बल्कि, विनम्रता की भावना में, अपने मन को विश्वास की आज्ञाकारिता के अधीन करें, और उस प्रकाशन का कृतज्ञतापूर्वक उपयोग करें जो प्रभु ने हम पर प्रदान किया है, और उन साधनों का भी जिनके द्वारा वह हमें अपनी कृपा प्रदान करते हैं।

२. परमेश्वर के स्वर्गदूत, जो स्वभाव से ही हमसे अधिक सिद्ध हैं, उनकी भी एक ऐसी सेवा है जो अति उत्तम और हमारे लिए अत्यंत लाभदायक है—वे परमप्रभु के सबसे निकटतम सेवक हैं, जो सीधे उसके सिंहासन के चारों ओर रहते हैं और उसकी इच्छा को पूरा करते हैं; वे ब्रह्मांड के विभिन्न भागों पर, और विशेष रूप से मानव समाजों और प्रत्येक व्यक्ति पर, उसकी व्यवस्था के उपकरण हैं; वे हमें दिखाई देने वाले और न दिखाई देने वाले दोनों प्रकार के शत्रुओं से बचाते हैं; वे हमें सत्य और धार्मिकता के मार्ग पर मार्गदर्शन करते हैं; वे अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा परमेश्वर के सामने हमारे लिए मध्यस्थता करते हैं; और वे विश्वास में चल बसे लोगों के साथ कब्र के पार के क्षेत्र में भी साथ जाते हैं। परिणामस्वरूप, न्याय और कृतज्ञ प्रेम की भावना से, और स्वर्गदूतों की हमारी सेवा की लाभकारी प्रकृति को पहचानते हुए, हम स्वर्गदूतों का सम्मान करने के लिए बाध्य हैं (नहूम 5:14; न्यायी 13:20; दानिय्येल 10:9; प्रकाशितवाक्य 22:8–9), और उन्हें अपनी प्रार्थनाओं में पुकारना, जैसा कि पवित्र चर्च हमें सिखाती है,[1695] उनके सम्मान में स्थापित पर्वों का उत्सव मनाना, उनके नाम समर्पित चर्चों का सम्मान करना, और उनकी पवित्र प्रतिमाओं के सामने विनम्रता से सिर झुकाना।[1696]

3. हालाँकि, स्वर्गदूतों का सम्मान करते और अपनी प्रार्थनाओं में उनका आह्वान करते समय, हमें यह न भूलें कि वे केवल सर्वशक्तिमान के सेवक और हमारे प्रति उनकी पितृत्वपूर्ण व्यवस्था के दयालु साधन हैं। तदनुसार, हमें उन्हें इस तरह सम्मानित करना चाहिए कि सारा सम्मान मुख्य रूप से उन्हीं और हमारे प्रभु की ओर निर्देशित हो, और किसी भी तरह से उन्हें देवता नहीं बनाना चाहिए या उन्हें दिव्य पूजा अर्पित नहीं करनी चाहिए; हमें हर तरह से उस हानिकारक अंधविश्वास से अपना बचाव करना चाहिए, जिसके बारे में प्रेरित स्वयं ने मसीहियों को चेतावनी दी थी—'[1697]

[1694] निकोपोलिस के वरिष्ठों को पत्र, वही, 178। संत अम्ब्रोज़ लगभग यही कहते हैं: 'मुकुट हमारे सामने रखा गया है; प्रतियोगिताओं को सहना होगा। कोई भी तब तक मुकुट नहीं पहन सकता जब तक उसने विजय प्राप्त न की हो; कोई भी तब तक विजय प्राप्त नहीं कर सकता जब तक उसने पहले प्रतिस्पर्धा न की हो। मुकुट का फल स्वयं वहाँ और भी अधिक होता है जहाँ श्रम अधिक होता है।' (एक्सपोजिटि. इवैंग. सेक. लुक. लाइब्रे. IV, संख्या 37; तुलना करें संख्या 41, पैट्रोलॉज. कर्स. कॉम्प्ल. खंड XV, पृ. 1623)।

[1695] "यह जानते हुए कि स्वर्गदूत हमारी सहायता करते हैं और हमारे लिए मध्यस्थता करते हैं, हम अपनी सभी प्रार्थनाओं में उनका आह्वान करते हैं, ताकि वे हमारी ओर से परमेश्वर से प्रार्थना करें; और सबसे बढ़कर हम उस स्वर्गदूत का आह्वान करते हैं जो हमारा रक्षक है" (पश्चाताप के नियम, भाग 1, प्रश्न 20 का उत्तर)।

[1696] सातवें सार्वभौमिक परिषद का धर्मशास्त्र

[1697] प्रेरित विशेष रूप से कहते हैं: *'कोई भी तुम्हें स्व-निर्मित नम्रता और स्वर्गदूतों की उपासना से धोखा न दे, जो उन बातों में दखल देता है जिन्हें उसने नहीं देखा, और अपने सांसारिक मन से अकारण घमंड करता है, और उस सिर से जुड़ा नहीं रहता, जिससे सारा शरीर, अपनी हड्डियों और जोड़ों से जुड़ा और बंधा हुआ, परमेश्वर से मिलने वाली वृद्धि से बढ़ता है* (कुलुस्सियों 2:18-19)अर्थात्, यह मसीहियों को ऐसे झूठे शिक्षकों से सावधान करती है, जो नम्रता के भेष में, पूर्ण अज्ञानता के कारण, यह सिखाया कि देवदूतों को *पूजा* (θρησκεία) या दिव्य सम्मान दिया जाना चाहिए, और इस प्रकार अनिवार्य रूप से चर्च के मुखिया, प्रभु यीशु, एकमात्र सच्चे परमेश्वर का विश्वासघात किया, और स्वयं को उनके शरीर, पवित्र चर्च से अलग कर लिया (सेंट *जॉन क्राइसोस्टोम* एपिस्ट. एड कोलोस. अध्याय II, होमलि. VII, संख्या 1; *थियोडोरेट.* इन एपिस्ट. एड कोलोस., ओप. वॉल्यूम III, पृ. 355, संस्करण 1684)।

'—और जसि बाद में लाओदीकयिा की परषिद ने एकमात्र सच्चे परमेश्वर, हमारे प्रभु यीशु मसीह की उपासना के अनुकूल न होने के कारण नदिति कयिा था।[1698]

४. वशिेष रूप से, हमारे संरक्षक स्वर्गदूतों के साथ हमारे संबंध को ध्यान में रखते हुए, आइए हम सीखें:

(क) सत्य और सद्भाव के मार्ग पर हमारे वशि्वसनीय मार्गदर्शक के रूप में उनकी बात सुनना, और इस उद्देश्य के लिए उनकी अच्छी सलाह को स्वीकार करने के लिए हमेशा अपने मन और हृदय को खुला रखना;

ख) अपनी सभी ज़रूरतों और परेशानयिों में प्रार्थना में उनकी ओर मुड़ना, क्योंकि वे परमेश्वर के सामने हमारे मध्यस्थ और हमारी आत्माओं तथा शरीरों के रक्षक हैं;[1699]

ग) उन से प्रेम करना और उस सभी कोमल और देखभाल करने वाले प्रेम के लिए उनका धन्यवाद करना, जसिसे वे हम पापयिों के प्रति अपनी सेवा का नर्विहन करते हैं, और उन सभी आशीर्वादों के लिए जो वे हम पर प्रदान करते हैं;

d) अपनी लापरवाही और दुष्ट कर्मों से उन्हें दुखी न करें, बल्कि ईश्वर की ओर मुड़कर और एक सदाचारी जीवन जीकर उन्हें प्रसन्न करें (लूका 15:10)।

5. अंत में, दुष्ट आत्माओं के संबंध में, जिन्हें प्रभु कभी-कभी हमारे अपने भले के लिए हमें परीक्षा में डालने की अनुमति देते हैं, हमें यह ध्यान रखना चाहिए:

(क) उद्धारकर्ता की आज्ञा: *'जागते रहो और प्रार्थना करो, कहीं ऐसा न हो कि तुम परीक्षा में पड़ जाओ* (मत्ती 26:41); और —

ख) प्रेरति की आज्ञा: *'परमेश्वर का पूरा हथयिार पहन लो, ताकि तुम शैतान की युक्तयिों के वरिुद्ध टकि सको... ' इसलिए कमर कसकर सत्य का आवरण पहनकर और धार्मकिता का कवच ओढ़कर, तथा अपने पाँवों में शान्ति के सुसमाचार की तैयारी के जूते जूतों में जकड़कर स्थरि खड़े रहो; और इन सब के ऊपर वशि्वास की ढाल उठा लो, जसिसे तुम उस दुष्ट की सभी आग की ज्वालाओं को बुझा सको; और उद्धार का टोप और आत्मा की तलवार, जो परमेश्वर का वचन है, ले लो। आत्मा के द्वारा हर समय हर प्रकार की प्रार्थनाओं और वनितयिों के साथ प्रार्थना करो* (इफसियिों 6:11, 14-18)।

हमारे पास शैतान का वरिोध करने और उस पर वजिय प्राप्त करने के लिए पर्याप्त साधन हैं! और यदि हम संघर्ष में गरि भी जाएँ, यदि हम पाप भी कर दें, तो हमें बुराई से न डरना चाहिए, और न ही नराशिा में डूबना चाहिए: *हमारे पास पति के पास एक वकील है, यीशु मसीह धर्मी* (1 यूहन्ना 2:1)। आइए हम केवल उसी को पुकारें, अपनी असफलता के लिए सच्ची पश्चाताप और सच्चे वशि्वास के साथ, और वह हमें उठाएगा और एक बार फरि हमें परमेश्वर के पूरे हथयिारबंद वस्त्र से परधिानति करेगा, ताकि हम अपने पुराने शत्रु का प्रतरिोध कर सकें।

2.2. भौतकि जगत पर

§ 112. पछिले वर्षियों से संबंध

यह तो स्वतः ही स्पष्ट है कि भौतकि जगत, आध्यात्मकि जगत की ही तरह, ईश्वर की अनवरत संरक्षण के अभाव में न तो अपनी अस्तत्वि बनाए रख सकता है और न ही अस्तत्वि में बना रह सकता है। लेकनि भौतकि जगत में ईश्वर की सहायता और मार्गदर्शन उतनी आवश्यक नहीं लगती जतिनी आध्यात्मकि जगत में है: वहाँ, अमूर्त आत्माओं के क्षेत्र में, तर्क और स्वतंत्रता कार्यरत हैं—जागरूक शक्तयिाँ जो वभिन्नि कारणों से और अपनी इच्छा से, सत्य और सद्गुण से भटक सकती हैं, और इसलिए उन्हें एक उच्चतर शक्ति से सहायता और मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है;

[1698] नयिम 35: 'ईसाइयों के लिए यह उचति नहीं है कि वे परमेश्वर की कलीसयिा को त्याग दें, उससे अलग हो जाएँ, स्वर्गदूतों को पुकारें, या सभाएँ करें। इसे अस्वीकार कयिा जाता है। इसलिए, यदि कोई ऐसे गुप्त मूर्तपिूजा का अभ्यास करते हुए पाया जाता है, तो वह अनाथेमा (शापति) हो: क्योंकि उसने हमारे प्रभु यीशु मसीह, परमेश्वर के पुत्र, को त्याग दयिा है और मूर्तपिूजा की ओर मुड़ गया है" (देखें कैनन की पुस्तक... पृ. 156, सेंट पीटर्सबर्ग 1843)।

[1699] "बीमार," संत एम्ब्रोज़ कहते हैं, "एक डॉक्टर से मदद नहीं मांग सकते जब तक कि उसे दूसरों के प्रयासों से उनके पास नहीं बुलाया जाता। हमारा शरीर कमजोर है; हमारी आत्मा बीमार है, पाप की बेड़ियों से बंधी है, और (स्वर्गीय) चकित्सिक को वह सब कुछ समझा नहीं सकती जसिकी आवश्यकता है। इसीलिए हमें उन स्वर्गदूतों की ओर प्रार्थना में मुड़ना चाहिए जिन्हें हमारे सहायक के रूप में हमें दयिा गया है" (डे वडिुइस, अध्याय IX, संख्या 55)।

यहाँ, नर्जीव प्रकृति के क्षेत्र में, केवल यांत्रिक शक्तियाँ ही कार्यरत हैं, जो उन अनिवार्यता के नियमों से मनमाने ढंग से भटकने में कभी सक्षम नहीं होतीं, जिनके वे अधीन हैं। परिणामस्वरूप, ऐसा प्रतीत होता है कि इस विशाल यंत्र को आरंभ में गति प्रदान करना और उसके बाद केवल इसे बनाए रखना ही पर्याप्त है, ताकि यह अपनी इच्छा से अपने निर्धारित लक्ष्य की ओर अपना मार्ग जारी रख सके।

लेकिन —

क) यद्यपि यांत्रिक शक्तियाँ भी, समग्र रूप से—सीमित शक्तियाँ होने के कारण—अनवरत रूप से कार्य करते हुए अनंत शक्ति से सुदृढ़ीकरण, नवीनीकरण और सहायता की अनिवार्य रूप से आवश्यकता होती है;

ख) भौतिक जगत की असाधारण विशालता, और इसके भीतर कार्यरत शक्तियों और तत्वों की विविधता और यहां तक कि विरोध को देखते हुए—यद्यपि आवश्यकता के नियमों के अनुसार, फिर भी अंधेरे और अचेतन रूप से—शक्तियों का टकराव और तत्वों का संघर्ष अनिवार्य रूप से इसके भीतर होगा, यदि यह एक सर्वोच्च, तर्कसंगत शक्ति द्वारा लगातार शासित न किया जाता;

ग) भौतिक जगत, अन्य बातों के अलावा, कई नैतिक प्राणियों के लिए एक आवास-स्थान के रूप में कार्य करने के लिए अभिप्रेत है; और इसलिए यह स्वाभाविक है कि इसके भीतर जीवन का क्रम, अन्य बातों के अलावा, इन प्राणियों के जीवन के क्रम और उनकी गतिविधियों के स्वभाव के अनुरूप होना चाहिए, चाहे वह उनके सद्गुणों के लिए एक पुरस्कार के रूप में हो या उनके पापों के लिए एक दंड के रूप में। तदनुसार, यह आवश्यक है कि प्रकृति की यांत्रिक शक्तियाँ, जो आवश्यकता के नियमों के अधीन हैं, उस एक के अधीन हों जो नैतिक जगत का शासन करता है और अपने बुद्धिमानी भरे योजनाओं के अनुसार उनका मार्ग बदलने में सक्षम है।

दिव्य प्रकटीकरण वास्तव में हमें यही सिखाता है कि ईश्वर भौतिक जगत के प्राणियों को उनके जीवन में सहायता या समर्थन भी करते हैं, और वह उनका शासन करते हैं।

§ 113. ईश्वर दृश्यमान जगत के प्राणियों के हित के लिए कार्य करता है

शास्त्र इस सत्य को बहुत स्पष्ट रूप से व्यक्त करता है:

1. जब यह सामान्य रूप से माना जाता है कि दृश्य प्राणी, मानो, सर्वशक्तिमान की शक्ति के केवल उपकरण हैं, जबकि वह स्वयं उनमें और उनके माध्यम से कार्य करते हैं, और सभी चीजों को अस्तित्व में लाते हैं: *प्रभु... मृत्यु की छाया को भोर की रोशनी में बदल देते हैं, और दिन को रात जितना अंधेरा कर देते हैं* (आमोस 5:8); *आप जल के ऊपर अपने स्वर्गीय महल स्थापित करते हैं, बादलों को अपना रथ बनाते हैं, और हवा के पंखों पर सवारी करते हैं* (भजन संहिता 103:3) — *आग और ओले, बर्फ और कोहरा, तूफानी हवा जो उसके वचन को पूरा करती है* (भजन संहिता 148:8), *सभी आपकी सेवा करते हैं* (भजन संहिता 118:91)।

2. जब वह विस्तार से उन तरीकों को बताता है जिनसे वह विभिन्न दृश्यमान प्राणियों को बनाए रखता है, गवाही देते हुए:

क) कि *आपने घाटियों में झरने भेजे हैं..., और अपनी ऊँचाइयों से पहाड़ों को पानी देते हैं* (भजन संहिता 103:10-13);

ख) कि *आप मवेशियों के लिए घास उगाते हैं, और मानवता के लाभ के लिए हरी वनस्पतियाँ; प्रभु के वृक्ष तृप्त हैं, लेबनान के देवदार* (भजन संहिता 103:14 और 16);

ग) कि वह *मवेशियों को और जब काले कौवे उससे पुकारते हैं तो उन्हें भोजन देता है* (भजन संहिता 146:9), *खेतों के कमलों को* वस्त्र पहनाता है (मत्ती 6:28), और आकाश के पक्षियों को खिलाता है (26);

ग) कि वह *तारों की संख्या गिनता है; वह उन सभी को नाम से बुलाता है* (भजन संहिता 146:4); *वह पृथ्वी के छोर से बादल उठाता है, वर्षा के साथ बिजली बनाता है, अपनी कोठरियों से हवा निकालता है* (भजन संहिता 134:7), और इसी तरह।

चर्च के पिता और लेखकों ने इन सच्चाइयों को बहुत ठोस रूप में चित्रित किया; उदाहरण के लिए:

क) *संत जॉन क्राइसोस्टोम:* 'जब आप सूर्य का उदय या चंद्रमा की गति देखते हैं, जब आप झीलों, नदियों, बारिश और बीजों में देखी जा सकने वाली प्रकृति की क्रियाओं को देखते हैं, हमारे शरीरों में और अकल प्राणियों के शरीरों में, और जब आप उस सब को देखते हैं जिससे यह संसार बना है, तो पिता के अविराम कार्य को *पहचानें—वह अपने सूर्य को*

दुष्टों और धर्मीयों दोनों पर उदय होने की आज्ञा देता है, और धर्मीयों और अधर्मीयों दोनों पर वर्षा भेजता है (मत्ती 5:45);"[1700]

ख) *लैक्टैंटियस:* "तारों के मार्गों की व्यवस्था में ईश्वर की शक्ति की कलात्मकता को समझने में असफल होकर, दार्शनिकों ने स्वयं तारों को जीवित प्राणी माना, मानो वे ईश्वर की इच्छा और सहायता के बजाय, अपने पैरों से और अपनी मर्जी से अपना मार्ग तय करते हों;"[1701]

ग) *संत अथेनासियस द ग्रेट:* "ब्रह्मांड के शासक और प्रबंधक, परमेश्वर वचन के, इशारे और शक्ति से, आकाश घूमते हैं, तारे चलते हैं, सूर्य चमकता है, चंद्रमा घूमता है, हवा गर्म होती है, हवाएं चलती हैं, पहाड़ दृढ़ खड़े हैं, समुद्र लहराता है, और जो कुछ भी उसमें रहते हैं वे सभी पोषित होते हैं...; संक्षेप में — सब कुछ जीवंत हो उठता है और गति करता है; आग गर्माहट देती है, पानी ताज़गी देता है, धरती से झरने फूटते हैं, नदियाँ बहती हैं, मौसम एक के बाद एक आते हैं, बारिश होती है, बादल पानी से भर जाते हैं, ओले और बर्फबारी होती है, बर्फ; पक्षी उड़ते हैं, साँप रेंगते हैं, जलीय जीव तैरते हैं, पृथ्वी पर बोआई जाती है और समय पर अंकुर निकलते हैं, पौधे और पेड़ बढ़ते हैं;"[1702]

(घ) *संत एम्ब्रोज़:* "सभी चीज़ों में प्रभु की बुद्धि व्याप्त है; सभी चीज़ें उसी के द्वारा व्यवस्थित हैं; और यह तर्कशील प्राणियों के तर्क से कहीं बेहतर अतर्कशील प्राणियों की इंद्रियों द्वारा प्रदर्शित होता है, क्योंकि प्रकृति की गवाही विज्ञान के प्रमाण से अधिक शक्तिशाली है। हर जानवर जानता है कि अपने जीवन की रक्षा कैसे करें, अर्थात्: यदि उसमें शक्ति है, तो प्रतिरोध के माध्यम से; यदि उसमें गति है, तो भागकर; यदि उसमें चतुराई है, तो सावधानी बरतकर। उन्हें भोजन करना किसने सिखाया और जड़ी-बूटियों का ज्ञान किसने प्रदान किया? हम मनुष्य भी अक्सर पौधों की दिखावट से धोखा खाते हैं, और अधिकतर उन चीजों को हानिकारक पाते हैं जिन्हें हम लाभदायक समझते हैं... जंगली जानवर, हालांकि, केवल गंध से ही यह भेद कर सकते हैं कि उनके लिए क्या हानिकारक है और क्या लाभदायक।[1703]

हालाँकि, यह नहीं सोचना चाहिए कि भौतिक जगत में केवल ईश्वर ही सीधे कार्य करते हैं; नहीं, वे केवल उन शक्तियों की सहायता करते हैं जो उन्होंने स्वयं प्रकृति को प्रदान की हैं, और उन नियमों की जिन्हें उन्होंने आरंभ से ही *स्वर्ग और पृथ्वी के विधान के* रूप में स्थापित किया है। (यर. 33:25), और जिनके अनुसार, तब से, ईश्वर की सहायता से, सभी चीजें अपरिवर्तित रूप से चलती आ रही हैं, ताकि *पृथ्वी के दिनों तक, बोआई और कटनी, ठंड और गर्मी, ग्रीष्म और शीत, दिन और रात बंद न हों* (उत्प. 8:22)।

§ 114. परमेश्वर दृश्यमान संसार का शासन करता है

ईश्वर का वचन हमें इस सत्य का आश्वासन देता है कि दृश्यमान संसार, अपने सभी भागों में, यहाँ तक कि सबसे छोटे भाग में भी, सर्व-ज्ञानी शासक की पूरी तरह से पहुँच में है; संसार पर ईश्वर के शासन के बारे में सामान्य गवाहियों (1 इति. 29:11–12; बुद्धि. 8:1; 14:13) के अलावा, यह विशेष रूप से इनसे पुष्ट होता है:

1. संसार में परमेश्वर के चमत्कारों के अनगिनत वृत्तांत, जिनके द्वारा घटनाओं के सामान्य क्रम को एक से अधिक अवसरों पर रोका या स्थिर किया गया है, और जो निस्संदेह असंभव होते यदि परमेश्वर ने ब्रह्मांड पर शासन न किया होता। इस प्रकार उन्होंने एक बार समुद्र के जल को रोक दिया: *मूसा ने समुद्र पर अपना हाथ फैलाया, और यहोवा ने सारी रात एक तेज पूरब की आँधी से समुद्र को पीछे हटा दिया, और समुद्र को सूखी भूमि बना दिया, और जल फूट पड़ा* (निर्गमन 14:21)। उसने सूर्य और चंद्रमा के मार्ग को रोका: *यीशु ने प्रभु से पुकारा... 'हे गिबियोन के ऊपर हे सूर्य, और हे अय्यालोन की घाटी के ऊपर हे चंद्रमा, स्थिर हो जा!' और सूर्य ठहर गया, और चंद्रमा स्थिर रहा...* (यहोशू 10:12-13)। उसने समय के प्रवाह को भी पीछे मोड़ दिया: *और यशायाह नबी ने यहोवा से पुकारा, और उसने छाया को दस सीढ़ियाँ पीछे मोड़ दिया* (2 राजा 20:11)।

२. विश्वास और प्रार्थना की शक्ति के विषय में शिक्षा, जिसके द्वारा परमेश्वर के लोग, स्वयं उद्धारकर्ता की प्रतिज्ञा के अनुसार, प्रकृति के नियमों के अनुरूप ऐसे चमत्कार कर सकते हैं—और वास्तव में कर चुके हैं। मसीह

[1700] इन जोन. होमलि. XVIII, संख्या 2, ओप. खंड VIII, पृ. 219, मोंटफ.

[1701] Divin. inst. II, पृ. 5.

[1702] Contr. gentes n. 44, Opp. Vol. I, pp. 42–43, पेरिस, 1698.

[1703] हेक्साएम. VI, अध्याय 4, संख्या 21 और बाद में। तुलना करें: सेरम. दे प्रोविडिन्सिया, इन एपेंडिक्स ओपस एस. *बेसिलि मैग्नी,* खंड III, पृष्ठ 581, 585, पेरिस 1730, जहाँ अतर्कशील जानवरों के संबंध में ईश्वर की दिव्य योजना का भी विस्तार से वर्णन किया गया है।

गवाही देते हैं, *'मैं तुम से सच कहता हूँ, यदि तुम में विश्वास हो और संदेह न करो, तो न केवल जो अंजीर के वृक्ष पर हुआ, वही तुम करोगे, बल्कि यदि तुम इस पहाड़ से कहो, "उठकर समुद्र में जा पड़," तो वह भी हो जाएगा; और जो कुछ भी तुम विश्वास से प्रार्थना में माँगोगे, वह तुम्हें मिलेगा* ( ) (मत्ती 21:21–22)। *एलियाह हमारे ही समान एक मनुष्य था, और उसने बड़ी प्रार्थना की कि वर्षा न हो; और साढ़े तीन वर्ष तक पृथ्वी पर वर्षा नहीं हुई। फिर उसने प्रार्थना की, और आकाश ने वर्षा दी, और पृथ्वी ने अपना फल उत्पन्न किया* (याकूब 5:17–18)।

चर्च के पवित्र पिता और पादरी भी यह सिखाते थे कि ईश्वर भौतिक जगत का शासन करते हैं। उदाहरण के लिए:

रोम के संत क्लेमेंट: "आकाश, उनके शासन से प्रेरित होकर, संसार में उनकी आज्ञा का पालन करते हैं—दिन और रात एक-दूसरे को बाधित किए बिना, अपने लिए निर्धारित मार्ग का अनुसरण करते हैं। सूर्य, चंद्रमा और नक्षत्र, उनकी आज्ञा पर, अपने निर्धारित सीमाओं के भीतर सामंजस्य से परिक्रमा करते हैं, अपने मार्ग से थोड़े से भी विचलित हुए बिना। उसकी इच्छा से, फलदायी पृथ्वी, उसके द्वारा निर्धारित नियमों को बदले या बदले बिना, समय पर मनुष्यों, जानवरों और उस पर मौजूद सभी प्राणियों के लिए प्रचुर भोजन उत्पन्न करती है। गहराई और अधोलोक के अथाह और अकल्पनीय नियम भी उसी प्रकार उसकी आज्ञाओं द्वारा शासित हैं। असीम समुद्र, जो उनकी योजना से बेसिनों में समाया है, अपनी निर्धारित सीमाओं को पार नहीं करता, बल्कि वैसा ही कार्य करता है जैसा उसने आज्ञा दी है। क्योंकि उसने कहा: *'तुम यहाँ तक आ सकते हो, पर आगे नहीं; यहाँ तुम्हारी गर्वीली लहरों की सीमा है* (योब 38:11)। मनुष्यों के लिए अतिक्रम्य महासागर और उससे परे की दुनियाएँ भी प्रभु की उन्हीं आज्ञाओं द्वारा शासित हैं। ऋतुएँ—वसंत, ग्रीष्म, शरद और हेमंत—शांतिपूर्वक एक के बाद एक आती हैं। हवाएँ, प्रत्येक अपनी दिशा में और अपने समय पर, बिना रुके अपनी सेवा करती हैं। अक्षय झरने, जो आनंद और स्वास्थ्य के लिए बनाए गए हैं, लोगों को उनके जीवन के लिए आवश्यक जल का अखंड प्रवाह प्रदान करते हैं। अंत में, सबसे छोटे जानवर भी शांति और सद्भाव से एक साथ रहते हैं। यह सब सर्वव्यापी महान सृष्टिकर्ता और शासक द्वारा सद्भाव और शांति से बनाए रखा जाता है, जो सभी पर अपनी कृपा प्रदान करते हैं।[1704]

अलेक्जेंड्रिया के संत अथेनासियस: "भौतिक प्रकृति के तत्वों—गर्मी और ठंड, नमी और शुष्कता—को एकजुट करके, वह (वचन ईश्वर) यह सुनिश्चित करता है कि वे एक-दूसरे के साथ संघर्ष न करें, बल्कि एक एकल, व्यवस्थित सामंजस्य बनाएं। उनके द्वारा और उनकी शक्ति से, न तो आग ठंड से लड़ती है, न ही नमी सूखापन से; बल्कि, यद्यपि वे स्वभाव से ही विपरीत हैं, वे एक साथ मित्रवत और एक-दूसरे के संबंधी के रूप में दिखाई देते हैं, और शरीरों के अस्तित्व के सिद्धांतों के रूप में कार्य करते हैं। क्योंकि जैसे एक कुशल वादक, एक लीर को सुर में लाते हुए और कुशलता से ऊँचे, मध्यम और निम्न सुरों को मिलाकर एक ही सुमधुर गीत रचता है; उसी प्रकार ईश्वर भी, अपनी बुद्धिमत्ता से ब्रह्मांड को धारण करते हुए, ठीक वैसे ही जैसे एक लीर, और वायुमंडलीय को पृथ्वी से, स्वर्गीय को वायुमंडलीय से मिलाते हुए, और अपनी इच्छा और आज्ञा से सभी का शासन करते हुए, अद्भुत और सुंदर तरीके से एक ही संसार और एक ही व्यवस्था को संरक्षित करते हैं।"[1705]

संत ग्रेगरी द थियोलोजियन: "ईश्वर ने, जैसे ही संसार की रचना की, उसी प्रथम क्षण से, महान और अपरिवर्तनीय नियमों के अनुसार, इसे एक घूमते हुए गुड़िया की तरह घुमाते और मार्गदर्शन करते हैं, जो एक प्रहार की शक्ति से वृत्त में घूमती है। क्योंकि इस विशाल और सुंदर दुनिया की प्रकृति—जिसकी कोई तुलना भी कल्पना नहीं की जा सकती—किस्मत पर नहीं छोड़ी गई है, न ही यह इतने लंबे समय से संयोग के नियमों के अधीन रही है... और यदि कोई उन्हें निर्देशित न करे तो गायकों का समूह सुर से बाहर हो जाएगा। लेकिन ब्रह्मांड की प्रकृति यह नहीं है कि उसका कोई शासक उस एक के अलावा कोई और हो जिसने इसे बनाया है।"[1706]

धन्य थियोडोरेट: "दृश्य प्राणियों की प्रकृति, उनकी व्यवस्था, क्रम, स्थिति, गति, अनुपात, उपयोगिता, सुंदरता, विविधता, परिवर्तन और सुखदता पर विचार करें... ईश्वर की व्यवस्था पर विचार करें, जो संसार के हर हिस्से में स्पष्ट है... स्वर्ग और स्वर्गीय पिंडों में, सूर्य, चंद्रमा और तारों में, हवा और बादलों में, पृथ्वी और समुद्र पर, और पृथ्वी पर मौजूद सभी चीजों में—पौधों, घासों और बीजों में; पशुओं में, तर्कशील और अतर्कशील दोनों, जो पृथ्वी पर चलते हैं और जो उड़ते हैं, जलीय जीव, सरीसृप और उभयचर, पालतू और जंगली, पाले-पोसे और जंगली। इस पर स्वयं विचार करो: कौन

[1704] 1 कुरिन्थियों, अध्याय 20, *क्रिश्चियन रीडिंग्स* 1824, XIV, 259–260 में।

[1705] Contr. gentes, संख्या 42; तुलना करें संख्या 43, जहाँ इसी विचार को अधिक विस्तार से समझाया गया है।

[1706] पवित्र संस्कार संबंधी भजनों पर, 5, *पवित्र पिताओं के कार्यों* में, खंड IV, पृ. 231.

स्वर्गीय गोलों को धारण किए हुए है? यह कैसे है कि, इतने सहस्राब्दियों से, आकाश दृढ़ खड़ा रहा है और बूढ़ा नहीं हुआ है? यह कैसे है कि, समय के बीतने के बावजूद, वे किसी भी परिवर्तन से नहीं गुजरते, भले ही उनमें परिवर्तन करने में सक्षम स्वभाव हो, धन्य दाऊद (भजन संहिता 101:27–28) की शिक्षा के अनुसार? इसकी प्रकृति परिवर्तनशील और नश्वर है, फिर भी आज तक यह वैसा ही बना हुआ है जैसा यह बनाया गया था, क्योंकि यह सृष्टिकर्ता की शक्ति द्वारा धारण किया जाता है। क्योंकि वह वचन जिसने इसे बनाया है, उसे संरक्षित करता है और उस पर शासन करता है, और जब तक उसे प्रसन्नता होती है, तब तक उसे स्थिरता और दृढ़ता प्रदान करता है।"[1707]

§ 116. सिद्धांत का नैतिक अनुप्रयोग

यह निश्चितता कि जिस भौतिक दुनिया में हम रहते हैं, यद्यपि वह यांत्रिक नियमों के अधीन है, फिर भी वह सर्व-शासक दिव्य व्यवस्था के पूर्ण नियंत्रण में है—यह निश्चितता हमें सिखाती है:

1. उन सभी आशीर्वादों के लिए प्रभु से प्रार्थना करना जिनकी हमें बाहरी दुनिया से आवश्यकता है: समय पर वर्षा, सूर्य की जीवन-दायक गर्मी, पृथ्वी की उर्वरता, एक सौम्य जलवायु, सांसारिक उपज की प्रचुरता, और इसी तरह। क्योंकि ये सभी आशीर्वाद हमें अंधी किस्मत से, न ही आवश्यकता के नियमों के परिणामस्वरूप प्रदान किए जाते हैं—या हमसे वंचित रखे जाते हैं—बल्कि हमेशा उस की इच्छा के अनुसार दिए जाते हैं, जिसके अधिकार में हम और प्रकृति दोनों हैं।

२. हमें प्रभु से उन सभी बुराइयों से मुक्ति के लिए प्रार्थना करनी चाहिए जो प्राकृतिक दुनिया में हम पर आती हैं: अकाल, भूकंप, बाढ़, आग, घातक महामारियों, और अनगिनत अन्य कारणों से जो हमारी संपत्ति को नष्ट करते हैं, हमारे स्वास्थ्य को बर्बाद करते हैं, और हमारे जीवन को छोटा कर देते हैं।

3. सभी खतरों के बीच हतोत्साहित न होना, चाहे भौतिक दुनिया के तत्व कितनी भी भयानक रूप से हमें धमकी दें; इसके विपरीत, अपनी आशा पूरी तरह से ईश्वर की व्यवस्था में रखना, यह विश्वास करते हुए कि स्वर्गीय पिता की इच्छा के बिना हमारे सिर का एक भी बाल नष्ट नहीं होगा (लूका 12:7; 21:18*)*, यह याद करते हुए कि प्रभु ने कितनी बार और चमत्कारिक रूप से अपने चुने हुओं को निश्चित विनाश से बचाया है, और भजनकार के साथ यह कहते हुए पुकारना: *'यद्यपि मैं मृत्यु की छाया की घाटी में से भी गुज़रूँ, तौभी मैं किसी विपत्ति से न डरूँगा* (भजन संहिता 22:4)।

४. दूसरी ओर, हमें जानबूझकर और लापरवाही से खुद को किसी भी खतरे में नहीं डालना चाहिए, इस विश्वास के साथ कि परमेश्वर, जिस पर हम भरोसा करते हैं, हमें चमत्कारिक रूप से हर बुराई से बचा लेंगे: क्योंकि यह परमेश्वर को *आज़माना* होगा (मत्ती 4:7); यह दंभी होकर यह माँग करना होगा कि अनंत बुद्धिमान के कार्य, जो अपने चमत्कारों को व्यर्थ में नहीं बरबाद करते, हमारे बाल-सुलभ मनमाने विचारों और मूर्खता के अधीन हों।

2.3. दीनों के लिए, मनुष्य के लिए

§ 117. पिछले भाग से संबंध: मानव जाति के लिए ईश्वर की विशेष देखभाल

ईश्वर की व्यवस्था, जो संपूर्ण दृश्यमान जगत को अपने आगोश में समेटे हुए है, निस्संदेह इस जगत के निवासी मानव जाति तक भी फैली हुई है। लेकिन मानव जाति को सृष्टि के समय ही सभी दृश्यमान प्राणियों से श्रेष्ठ बनाकर, केवल मानव को तर्कशील और स्वतंत्र आत्मा प्रदान करके, उसे अपनी प्रतिमा में सम्मानित करके, और प्रकृति के समस्त प्राणियों का शासक नियुक्त करके, परम बुद्धिमान और सर्वदयालु स्रष्टा मानव जाति के प्रति एक विशेष संरक्षण प्रकट करने में प्रसन्न हैं। उद्धारकर्ता ने अपने शिष्यों से कहा, *'आकाश के पक्षियों को देखो: वे न बोते हैं, न काटते हैं, और न ही किसी कोठरी में इकट्ठा करते हैं; फिर भी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उन्हें खिलाता है। क्या तुम उनसे कहीं अधिक मूल्यवान नहीं हो? ... मैदान के कमल-पुष्पों पर विचार करो, कि वे कैसे बढ़ते हैं: वे न परिश्रम करते हैं और न ही सूत कातते हैं; तथापि मैं तुम से कहता हूँ कि सुलैमान भी अपनी सारी वैभव-शोभा में इन में से किसी के समान वस्त्र-सज्जित नहीं हुआ; सो यदि परमेश्वर खेत के घास को, जो आज है और कल भट्टी में डाल दी जाती है, इतना पोषित करता है, तो वह तुम लोगों को, हे अल्पविश्वासी, कितना अधिक सुसज्जित करेगा!* (मत्ती 6:26, 28–30)?

[1707] प्रोविडेंस पर, भाषण I, खंड IV, पृ. 323–324.

विशेष रूप से, मानवजाति के लिए परमेश्वर की देखभाल इस तथ्य में व्यक्त होती है कि प्रभु प्रदान करते हैं: 1) संपूर्ण राज्यों और राष्ट्रों को; 2) व्यक्तियों को, प्रत्येक को अलग से; और 3) मुख्य रूप से धर्मी लोगों को।

ईश्वर राज्यों और राष्ट्रों का भरण-पोषण करता है।

पवित्र शास्त्र इस सत्य को बहुत स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करता है जब यह कहता है:

1. कि परमेश्वर *सारी पृथ्वी का महान राजा* है (भजन संहिता 46:3, 8; 94:3), कि वह *राष्ट्रों पर शासन करता है* (भजन संहिता 46:9), कि *वह राष्ट्रों का प्रभु है* (21:29), कि *उसकी दृष्टि राष्ट्रों पर है* (65:7), और कि *वह पृथ्वी के कुल-कुलों पर शासन करता है* (66:5)।

2. कि वह—

क) स्वयं राष्ट्रों पर राजा नियुक्त करता है: *सर्वोच्च मनुष्यों के राज्य पर शासन करता है और इसे जिसे चाहे उसे दे देता है* (दानिय्येल 4:22, 29; तुलना करें सिरिख 10:4); *वह राजाओं को पदच्युत करता है और राजाओं को स्थापित करता है* (दानिय्येल 2:21), *उसने हर राष्ट्र के लिए एक नेता नियुक्त किया है* (सिरिख 17:14; तुलना करें बुद्धिमान 6:1–3);

6) वह उन्हें हर राज्य में अपने दृश्यमान प्रतिनिधियों के रूप में नियुक्त करता है: *'मैंने कहा, "तुम देवता हो,"'* वह उनसे कहता है, *'और तुम सब परमप्रभु के पुत्र हो'* (भजन संहिता 81:1–6; तुलना करें निर्गमन 22:28);

ग) और इस उद्देश्य के लिए उन पर स्वयं से *अधिकार और शक्ति* प्रदान करता है (ज्ञान 6:3), *उन्हें महिमा और सम्मान का मुकुट पहनाता है* (भजन संहिता 8:6), और *उन्हें* अपने *पवित्र तेल से अभिषेक करता है* (भजन संहिता 88:21; तुलना करें 1 शमूएल 12:3–6; 16:3; 19:16; 24:7; यशायाह 41:1), ताकि *उस दिन से प्रभु का आत्मा* उन पर विश्राम करे (1 शमूएल 16:11-13);

घ) अंत में, वह स्वयं राजाओं के माध्यम से सांसारिक राज्यों पर शासन करते हैं: *'मेरे द्वारा राजा राज्य करते हैं और शासक न्याय का प्रवर्तन करते हैं* (नीतिवचन 8:15)। *राजा का मन प्रभु के हाथ में है, पानी की धाराओं के समान: वह जहाँ चाहे, वहाँ उसे मोड़ देता है* (नीतिवचन 21:1)।

3. कि वह—

क) अपने अभिषिक्तों के माध्यम से, और अन्य सभी, निम्न प्राधिकरणों को स्थापित करता है: *'हर आत्मा उच्च शक्तियों के अधीन रहे, क्योंकि परमेश्वर के सिवाय कोई अधिकार नहीं है; और जो अधिकार हैं, उन्हें परमेश्वर ने स्थापित किया है'* (रोमियों 13:1); *इसलिए, प्रभु के वश में रहने के लिए हर मानवीय अधिकार के अधीन रहो: चाहे राजा के रूप में सर्वोच्च अधिकार हो, या उसके द्वारा भेजे गए राज्यपालों के रूप में* (1 पतरस 2:13-14);

ख) और उन्हें, अपने सेवकों के रूप में, मानव समाजों के भले के लिए नियुक्त करता है: *जो अधिकारी हैं, उनसे भले कामों के लिए नहीं, बल्कि बुरे कामों के लिए डरना चाहिए। क्या आप अधिकारियों से नहीं डरना चाहते? जो सही है, वह करें, और आप उनकी प्रशंसा पाएंगे, क्योंकि शासक परमेश्वर का सेवक है, जो आपके भले के लिए काम करता है। लेकिन यदि आप बुरा करते हैं, तो डरिए, क्योंकि वह व्यर्थ में तलवार नहीं उठाता: वह परमेश्वर का सेवक है, एक प्रतिशोधकर्ता जो अन्याय करने वालों पर दंड लाता है। और इसलिए आज्ञाकारिता केवल दंड के भय से ही नहीं, बल्कि विवेक से भी करनी चाहिए। इसी कारण आप कर देते हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के सेवक हैं, जो इसी काम में निरंतर लगे रहते हैं* (रोमियों 13:3–6)।

चर्च के पवित्र पिताओं और शिक्षकों ने भी बहुत बार दोहराया कि ईश्वर मानव राज्यों पर शासन करता है और उन पर राजाओं और अन्य अधिकारियों को भेजता है। उदाहरण के लिए, यहाँ शब्द हैं

संत आइरेनियस: 'जिस प्रकार शैतान ने आरंभ में झूठ बोला था, उसी प्रकार उसने बाद में भी झूठ बोला, यह कहते हुए: *"मैं तुझे इन सभी राज्यों और उनकी महिमा पर अधिकार दूँगा, क्योंकि यह मुझे सौंप दिया गया है, और मैं इसे उसको देता हूँ जिसे मैं चाहूँ"* (लूका 4:6)। इस संसार के राज्य उसे नहीं, बल्कि ईश्वर ने स्थापित किए हैं, क्योंकि *राजा का मन यहोवा के हाथ में है* (नीतिवचन 21:1); और सोलोमन के द्वारा वचन कहता है: *'मेरे द्वारा राजा राज्य करते हैं और शासक न्याय करते हैं; मेरे द्वारा राजकुमार शासन करते हैं, और शासक न्याय स्थापित करते हैं; और पृथ्वी के सभी न्यायाधीश* (नीतिवचन 8:15–16); और प्रेरित पौलुस ने भी यही कहा: *हर आत्मा उच्च अधिकारियों के अधीन रहे, क्योंकि परमेश्वर के सिवा कोई अधिकार नहीं है; और जो अधिकार हैं, वे परमेश्वर द्वारा स्थापित हैं* (रोमियों 13:1); और आगे: *क्योंकि वह व्यर्थ में तलवार नहीं उठाता; वह परमेश्वर का सेवक है, जो बुराई करने वालों को दंड देने के लिए दंडदाता है* (4)... इस

प्रकार, सांसारकि राज्य लोगों की भलाई के लिए परमेश्वर द्वारा स्थापति कए गए हैं (और शैतान द्वारा नहीं, जो कभी वश्राम नहीं करता और लोगों को शांत से नहीं रहने देना चाहता), ताक, मानव प्राधकिरण से डरकर, लोग एक-दूसरे को मछलयिों की तरह नष्ट न करें, बल्क, कानूनों की आज्ञा मानकर, मूर्तपिूजकों की अनेक दुष्टताओं को त्याग दें... यही कारण है क *परमेश्वर के सेवक,* जो *लगातार इसी कार्य* में लगे रहते हैं—हमसे कर की माँग करते *हैं—लगातार इसी कार्य में लगे रहते हैं* (रोमयिों 13:6)... जनिके आज्ञा से मनुष्य जन्म लेते हैं, उन्हीं की आज्ञा से राजा नयिुक्त होते हैं, जो उन पर शासन करते हैं, उनके अनुकूल (अप्त) होते हैं। क्योंक उनमें से कुछ अपने प्रजा के सुधार और लाभ के लिए, और न्याय की रक्षा के लिए नयिुक्त कए जाते हैं; कुछ भय और दंड के लिए; और कुछ राष्ट्रों की अपमानति करने के लिए, या उनकी महमिा के लिए, यह इस पर नर्भिर करता है क ईश्वर के धर्मी न्याय के अनुसार इन राष्ट्रों को कसि बात के योग्य समझा जाता है, जो सभी पर समान रूप से लागू होता है।"[1708]

टर्टुलयिन: "तो क्या तुम यह नहीं देखते क वही है जो राज्यों को उन लोगों को बांटता है, जनिके अधीन वह ब्रह्मांड है जसि पर वे शासन करते हैं, और स्वयं मनुष्य, जो शासन करता है? क्या वही नहीं हैं, जो इस वर्तमान युग में समय के अनुसार सरकारों के भाग बाँटते हैं—वही जन्हिोंने सर्वकाल से पहले अस्तत्वि में थे और जन्हिोंने युग को समयों का पात्र बनाया? क्या वही नहीं हैं जो प्राधकिरणों को गौरवान्वति करते हैं, या उन्हें पदच्युत करते हैं?"[1709]

संत ग्रेगरी द थयिोलोजयिन: "हे राजाओं! यह जानए क आप पर जो वश्वास कयिा गया है वह कतिना महत्वपूर्ण है, और आपके माध्यम से कतिना बड़ा रहस्य पूरा हो रहा है। सारी दुनयिा आपकी आज्ञा में है, जसि एक छोटा ताज और एक छोटी चादर नयिंत्रति करती है। जो ऊपर है वह एकमात्र ईश्वर का है, और जो नीचे है वह आपका है; अपने प्रजा के लिए (मैं नडिर होकर कहूँगा) देवता बनें। कहा जाता है (और हम वश्वास करते हैं) क *'राजा का मन प्रभु के हाथ में* है' (नीतविचन 21:1)।[1710]

संत जॉन क्राइसोस्टोम: "प्रेरति ने हमें राजाओं के लिए *प्रार्थना करने के लिए* क्यों प्रोत्साहति कयिा (1 तीमु. 2:2)? उस समय, राजा अभी भी मूर्तपिूजक थे, और सहिासन पर एक के बाद दूसरे मूर्तपिूजक के आने में बहुत समय बीत गया... क्योंक ऐसा न हो क ईसाई की आत्मा, इसे सुनकर, जैसा क संभव था, भ्रमति हो जाए और ई इस उपदेश को अस्वीकार कर दे—जैसे क किसी को दैवीय सेवाओं के दौरान एक मूर्तपिूजक के लिए प्रार्थना करनी चाहए—देखो प्रेरति क्या कहते हैं, और कैसे वे लाभ को इंगति करते हैं, ताक, इसी तरह से भी, वे उनके उपदेश को स्वीकार कर सकें: वे कहते हैं, *'आओ हम इस वर्तमान युग में एक शांत और शांतपिूर्ण जीवन जएिँ।'* अर्थात्, उनकी (राजाओं की) भलाई हमें शांत लाती है... क्योंक परिमेश्वर ने सामान्य भलाई के लिए प्राधकिरणों को स्थापति कयिा है। और क्या यह अन्यायपूर्ण नहीं होगा यद वे हथयिार उठाएँ और युद्ध करें ताक हम शांत से रह सकें, जबक हम उन लोगों के लिए प्रार्थना भी न करें जो खतरों का सामना करते हैं और युद्ध करते हैं? इसलिए, यह मामला (राजाओं के लिए प्रार्थना करना) चापलूसी नहीं है, बल्क न्याय के नयिम के अनुसार कयिा जाता है।"[1711] और अन्यत्र: "न्याय के न्यायालयों को नष्ट कर दो, और तुम हमारे जीवन के सभी क्रम को नष्ट कर दोगे; जहाज से नावकि को हटा दो, और तुम जहाज को डुबा दोगे; सेना से सेनापत को हटा दो, और तुम सैनकिों को शत्रु के हाथों में सौंप दोगे। इस प्रकार, यद आप नगरों से शासकों को हटा दें, तो हम मूक पशुओं से भी अधकि मूर्खतापूर्ण व्यवहार करेंगे—हम एक-दूसरे को खाना शुरू कर देंगे (गलातयिों 5:15): अमीर गरीबों को, मजबूत कमजोरों को, अभमिानी नम्र लोगों को खा जाएंगे। लेकनि अब, परमेश्वर की कृपा से, ऐसा कुछ भी नहीं होता। जो लोग धार्मकि जीवन जीते हैं, उन्हें बेशक, अधकिारयिों से सुधारात्मक उपायों की कोई आवश्यकता नहीं है: *'कानून धर्मी लोगों के लिए नहीं है,'* जैसा क कहा गया है (1 तीमुथयिुस 1:9)। लेकनि दुष्ट लोग, यद उन्हें अधकिारयिों के भय से रोका न जाए, तो वे शहरों को अनगनित वपित्तयिों से भर देंगे। यह जानते हुए, पौलुस ने भी कहा: *'जसिका परमेश्वर ने वधिान कयिा है, उसके सवाय कोई अधकिार नहीं है; जो अधकिार हैं, उन्हें परमेश्वर ने ही स्थापति कयिा* है' (रोमयिों 13:1)। जैसे बीम घरों को एक साथ बनाए रखते हैं, वैसे ही अधकिारी शहरों को एक साथ बनाए रखते हैं। यद आप बीमों को नष्ट कर दें, तो दीवारें, अलग होकर, अपने आप एक-दूसरे पर ढह जाएँगी; इसी प्रकार, यद आप ब्रह्मांड से प्राधकिरणों और उनके द्वारा पैदा कए गए भय को हटा दें, तो घर, शहर और राष्ट्र बड़ी नर्लिज्जता से एक-दूसरे पर हमला करेंगे, क्योंक तब

[1708] *Contr. haeres.* V, पृ. 24, II. 1, 2, 3.

[1709] एपोलोजेट., अध्याय 26, *पैट्रोलॉजयिा कर्सस कम्प्लेटस*, खंड I, पृ. 431–432.

[1710] अपने बारे में एक प्रवचन, *पवत्रि पतिाओं के कार्य*, III, 210–211 में।

[1711] 1 तीमुथयिुस को लखिी पहली पत्र, अध्याय II, व्याख्यान IV, कृतयिाँ, खंड XI, पृ. 579, वेनसि 1741।

उन्हें रोकने और रोकने वाला कोई नहीं होगा, या उन्हें दंड के भय से शांत रहने के लिए मजबूर करने वाला कोई नहीं होगा।"[1712]

धन्य ऑगस्टीन: "ईश्वर, जो सुख का स्रोत और प्रदाता है—क्योंकि वह स्वयं ही सच्चा ईश्वर है—वह स्वयं ही धार्मिक और अधर्मी दोनों को सांसारिक साम्राज्यों का वितरण करता है... और वह उन्हें बिना उद्देश्य के नहीं, संयोग से नहीं, भाग्य से नहीं, बल्कि घटनाओं और समय के क्रम के अनुसार प्रदान करता है, जो हमसे छिपा हुआ है लेकिन उसे पूरी तरह से ज्ञात है, जिसके अधीन वह स्वयं नहीं है, बल्कि जिसे वह स्वयं प्रभु और शासक के रूप में शासन और निर्देशित करता है।"[1713] "सत्य में, मानव साम्राज्यों पर दैवीय प्रबंध द्वारा शासन किया जाता है।"[1714] "और सर्वशक्तिमान की व्यवस्था के बिना नहीं, जिसके अधिकार में यह है कि युद्ध में प्रत्येक व्यक्ति या तो पराजित हो या विजयी हो, कि कुछ को साम्राज्य प्राप्त हों, जबकि अन्य राजाओं के प्रजाजन बनें।"[1715]

§ 118. ईश्वर व्यक्तियों की व्यवस्था करता है

ईश्वर का वचन कहता है कि ईश्वर—

1. स्वयं हम में से प्रत्येक को अस्तित्व प्रदान करते हैं: *उन्हें मानव हाथों की सेवा की आवश्यकता नहीं है, जैसे कि उन्हें किसी चीज़ की आवश्यकता हो, बल्कि वे स्वयं सभी को जीवन और सांस और सब कुछ देते हैं* (प्रेरितों के काम 17:25)। विशेष रूप से:

(क) वह स्वयं हमारी माँ के गर्भ में हमारे शरीर का निर्माण करता है: *'उसने मुझे चमड़ी और मांस से आच्छादित किया, और मुझे हड्डियों और स्नायुओं से जोड़ दिया* (अय्यूब 10:11; तुलना करें भजन संहिता 138:15)।

ख) वह स्वयं हमें एक आत्मा देता है: *इस प्रकार यहोवा परमेश्वर कहता है, जिसने आकाशों और उनकी विस्तार को बनाया, जिसने पृथ्वी को उस पर की सारी वस्तुओं सहित फैलाया, जो उस पर के लोगों को साँस और उस पर चलने वालों को आत्मा देता है* (यशायाह 42:5; तुलना करें उपदेशक 12:7; जकर्याह 12:1)।

ग) वह स्वयं हमें कुछ गुणों से संपन्न करता है: *यहोवा ने [मोशे से] कहा: 'मनुष्य को मुँह किसने दिया? उसे मूक, या बधिर, या देखनेवाला, या अंधा किसने बनाया? क्या यह मैं, यहोवा [ईश्वर] नहीं हूँ?'* (निर्ग. 4:11; तुलना करें भजन संहिता 93:9; याकूब 1:17)?

घ) वह स्वयं हमें हमारी माँ के गर्भ से इस दुनिया में लाता है: *'किन्तु तूने मुझे गर्भ से निकाला; तूने मुझे मेरी माता के स्तन पर आशा दी। मैं गर्भ से ही तेरे भरोसे में रहा; मेरी माता के गर्भ से ही तू मेरा परमेश्वर है'* (भजन संहिता 21:10-11; तुलना करें 138:13)।

२. हमारे पूरे जीवन भर हमें सुरक्षित रखने के लिए: क्योंकि—

क) वह हमें हमारा अस्तित्व बनाए रखने और उसे मीठा बनाने के लिए आवश्यक सभी चीजें प्रदान करता है: *'इस वर्तमान युग में जो धनी हैं, उन्हें घमंडी न होने और न तो धन की अनिश्चितता पर अपनी आशा रखने की, बल्कि परमेश्वर पर, जो आनंद लेने के लिए हमें सब कुछ भरपूर प्रदान करता है* (1 तीमुथियुस 6:17; तुलना करें प्रेरितों के काम 17:25)।

ख) वह हम में से प्रत्येक की भलाई का ध्यान रखता है: *'अपनी सारी चिंताएँ उसी पर डाल दो, क्योंकि वह तुम्हारा ध्यान रखता है'* (1 पतरस 5:7)। *'हे प्रभु, मैं तुझ पर भरोसा करता हूँ; मैं कहता हूँ "तू मेरा परमेश्वर है।" मेरे दिन तेरे हाथ में हैं'* (भजन संहिता 30:15-16)। *प्रभु अंधों की आँखें खोलता है; प्रभु झुके हुए लोगों को सीधा करता है; प्रभु धर्मी प्रेम करता है। प्रभु परदेशी की रक्षा करता है, अनाथ और विधवा को सहारा देता है, परन्तु दुष्टों का मार्ग उलट-पुलट कर देता है* (भजन संहिता 145:8–9)।

3. वह हमारे प्रयासों में हमारी सहायता करता है:

क) वह हमें सहायता और शक्ति भेजता है: *'मेरी सहायता यहोवा से आती है, जिसने आकाश और पृथ्वी को बनाया* (भजन संहिता 120:2)। *'यहोवा अपने लोगों को बल देगा* (भजन संहिता 28:11, आदि)।

[1712] मूर्तियों के गिरने के अवसर पर प्रवचन V, II. 1, पृ. 329, सेंट जॉन क्राइसोस्टोम के अंतीयोकिया के लोगों को दिए गए प्रवचनों के खंड 1 में, सेंट पीटर्सबर्ग थियोलॉजिकल अकादमी द्वारा 1848 में रूसी में अनुवादित।

[1713] डे सिविट. देई IV, पृ. 33, पैट्रोलोजिया कर्सस कम्प्लेटस, खंड XLI, पृ. 139 में।

[1714] De civit. Dei V, c. 1, ibid., p. 141.

[1715] De civit. Dei XVIII, c. 2, ibid., p. 560.

ख) वह हमारा मार्गदर्शन और निर्देशन करता है: *'मनुष्य के चलने फिरने का मार्ग यहोवा के वश में है, फिर मनुष्य अपनी चाल कैसे समझ सकता है?'* (नीतिवचन 20:24)। *'हर एक मनुष्य की चाल उसकी अपनी दृष्टि में सीधी है, परन्तु यहोवा हृदयों का तराजू है* (नीतिवचन 21:2; तुलना करें 16:1)।

(ग) उसकी मदद के बिना, हम कुछ भी नहीं कर सकते: *जब तक यहोवा घर का निर्माण न करे, तब तक जो लोग उसे बनाते हैं, वे व्यर्थ में परिश्रम करते हैं; जब तक यहोवा नगर की रक्षा न करे, तब तक पहरुआ व्यर्थ में जागता रहता है* (भजन संहिता 126:1)।

4. अंत में, वह स्वयं हमारे सांसारिक जीवन और गतिविधि की सीमा निर्धारित करता है: *'उसके दिन निश्चित हैं, और उसके महीनों की संख्या तेरे ही पास है; क्योंकि तूने एक सीमा निर्धारित की है जिसे वह पार नहीं कर सकता* (अय्यूब 14:5)।

चर्च के पवित्र पिताओं और शिक्षकों में से, इस विषय पर सबसे प्रमुख तीन के कथनों का उद्धरण देना पर्याप्त है:

बेसिल द ग्रेट: "हमारे मामले संयोग पर नहीं छोड़े गए हैं, जैसा कि हम सुसमाचार से जानते हैं कि एक गौरैया भी हमारे पिता की इच्छा के बिना नहीं गिरती (मत्ती 10:29)। और इसलिए, जो कुछ भी हम पर पड़ा है, वह हमारे स्रष्टा की इच्छा से हुआ है। और *उसकी इच्छा का विरोध कौन कर सकता है* (रोमियों 9:19)?"[1716] "यद्यपि परमेश्वर के विधान के कारण हमसे छिपे हुए हैं, तथापि सर्व-ज्ञानी और प्रेममय परमेश्वर के विधान से जो कुछ भी होता है, वह चाहे कितना भी कठिन क्यों न हो, निस्संदेह हमें प्रसन्न करना चाहिए। क्योंकि वह जानता है कि प्रत्येक व्यक्ति को उनके लिए क्या अच्छा है वह कैसे प्रदान किया जाए, और हमारे जीवन पर विभिन्न सीमाएँ क्यों निर्धारित करना आवश्यक है; और एक कारण है, जो मनुष्यों के लिए अकल्पनीय है, कि कुछ लोगों को इस दुनिया से जल्दी क्यों ले जाया जाता है, जबकि अन्य को इस कष्टों से भरे जीवन में और अधिक समय तक पीड़ित रहने के लिए क्यों छोड़ दिया जाता है। इन सब के लिए, हमें मानवता के प्रति उनके प्रेम के लिए धन्यवाद देना चाहिए।"[1717] "सब कुछ प्रभु की भलाई से संचालित होता है। जो कुछ भी हम पर आता है, हमें उसे कष्टप्रद नहीं मानना चाहिए, भले ही, वर्तमान क्षण में, यह हमारी दुर्बलता को तीव्र रूप से छूता हो। यद्यपि हम उन नियमों को नहीं जानते जिनके द्वारा प्रभु हमारे भले के लिए हमारे साथ जो कुछ भी घटित करते हैं, हमें फिर भी इस बात का निश्चित होना चाहिए कि हमारे साथ जो हुआ है वह निस्संदेह लाभदायक है।"[1718] "ईश्वर, निस्संदेह, हमारे मामलों को हम स्वयं जितना बेहतर योजना बना सकते थे, उससे भी बेहतर संचालित करते हैं।"[1719]

ग्रेगरी द थियोलोजियन: "हमें विश्वास करना चाहिए कि हमारे स्रष्टा या कर्त्ता (कोई भी नाम दे जिसे कोई उन्हें बुलाना चाहे) हमारी दशा की विशेष रूप से परवाह करते हैं, भले ही हमारा जीवन विभिन्न विपत्तियों के बीच बीतता हो, जिनके कारण ज्ञात हो सकते हैं और रह सकते हैं, ताकि उन्हें समझने में असफल होकर, हम सभी और भी अधिक उस सर्वोच्च बुद्धि पर आश्चर्यचकित हों जो इन सब के पीछे है। जिस हर चीज़ को हम आसानी से समझ लेते हैं, हम उसे आसानी से नज़रअंदाज़ भी कर देते हैं; लेकिन, इसके विपरीत, कोई चीज़ हमसे जितनी अधिक ऊँची होती है, वह उतनी ही अधिक अपार होती है, और वह हममें उतनी ही बड़ी विस्मय उत्पन्न करती है।"[1720]

जॉन क्राइसोस्टोम: "कि ईश्वर न केवल सभी की सामान्य रूप से, बल्कि प्रत्येक (व्यक्ति) की विशेष रूप से भी परवाह करते हैं, यह हम स्वयं उनसे सुन सकते हैं जब वे कहते हैं: *'तुम्हारे स्वर्गीय पिता की इच्छा* यह नहीं है *कि इन छोटे लोगों में से एक भी नाश हो जाए* (मत्ती 18:14), और यह उन लोगों के बारे में है जो उन पर विश्वास करते हैं। वास्तव में, वह चाहता है कि जो लोग उस पर विश्वास नहीं करते हैं, वे भी पश्चाताप करके और (उस पर) विश्वास करके उद्धार पाएँ, जैसा कि पौलुस भी कहते हैं: *'जो चाहता है कि सब मनुष्य बचें और सत्य के ज्ञान में पहुँचें* (1 तीमु. 2:4); और उसने स्वयं यहूदियों से कहा: *'मैं धर्मी को नहीं, बल्कि पापियों को मन परिवर्तन के लिए बुलाने आया हूँ* (मत्ती 9:13); और इसी प्रकार भविष्यवक्ता के द्वारा: *'मैं दया चाहता हूँ, बलिदान नहीं* (होशे 6:6)। भले ही, उनके प्रति इतनी देखभाल के बाद, वे मन परिवर्तन करने और सत्य को जानने के लिए अनिच्छुक हों, फिर भी वह उन्हें नहीं छोड़ता; लेकिन चूँकि उन्होंने स्वेच्छा

[1716] नेक्टारियस की पत्नी को पत्र, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स* में, X, 22.

[1717] नेक्टारियस को पत्र, वही, पृ. 20.

[1718] सांत्वना पत्र, वही, पृ. 239.

[1719] ईस्टाथियस द फिलॉसफर को पत्र, वही, पृ. 5.

[1720] *द वर्क्स ऑफ़ द होली फ़ादर्स*, II, 39–40 में गरीबों के प्रति प्रेम पर उपदेश।

से स्वयं को स्वर्गीय जीवन से वंचित कर लिया है, वह कम से कम उन्हें इस वर्तमान जीवन के सभी आशीर्वाद प्रदान करते हैं; वह आज्ञा देते हैं कि उनका सूर्य दुष्टों और भलों दोनों पर चमके, धर्मी और अधर्मी दोनों पर वर्षा भेजे, और इस वर्तमान जीवन को जारी रखने के लिए आवश्यक सभी चीजें प्रदान करते हैं (मत्ती 5:45)। यदि तब, वह अपने शत्रुओं की इतनी परवाह करता है, तो क्या वह उन लोगों को कभी अपनी देखभाल से वंचित रखेगा जो उस पर विश्वास करते हैं और अपनी पूरी क्षमता से उसे प्रसन्न करते हैं? नहीं, नहीं; वह सबसे अधिक उनकी ही परवाह करता है; *और,* वह कहता है, *तुम्हारे सिर के सभी बाल भी गिने हुए हैं* (लूका 12:7)।[1721]

§119. ईश्वर की व्यवस्था सभी से बढ़कर धर्मी लोगों पर अनुग्रह करती है: संदेह का समाधान

1. यद्यपि परमेश्वर, सर्व-सत्पुरुष होने के नाते, अपनी पितृत्वपूर्ण व्यवस्था सभी लोगों पर, चाहे वे जो भी हों, फैलाते हैं, *और आज्ञा देते हैं कि उनका सूर्य दुष्टों और भलों दोनों पर उदय हो और धार्मियों और अधार्मियों पर वर्षा भेजते हैं* (मत्ती 5:45); फिर भी, एक न्यायी ईश्वर के रूप में, वह अपनी विशेष देखभाल धर्मी लोगों पर केंद्रित करते हैं। पवित्र शास्त्र कई कथनों और उदाहरणों के माध्यम से इस सत्य की पुष्टि करता है।

ऐसे कथन हैं:

प्रभु की दृष्टि सारी पृथ्वी पर इसलिये फिरती है कि वह उन लोगों को बल दे जो उसके प्रति पूरी तरह से समर्पित हैं (2 इति. 16:9)।

प्रभु की दृष्टि धर्मी लोगों पर रहती है, और उनके पुकारने पर वह ध्यान देता है। परन्तु जो बुराई करते हैं, उनके विरुद्ध प्रभु का मुख रहता है, कि पृथ्वी पर से उनकी स्मृति मिटा डाले। धर्मी पुकारते हैं, और प्रभु उनकी सुनता है; वह उन्हें सब क्लेशों से छुड़ाता है। प्रभु टूटे हुए दिल वालों के करीब है, और वह आत्मा में नम्र लोगों को बचाएगा। धर्मी व्यक्ति को कई परेशानियाँ होती हैं, लेकिन प्रभु उसे उन सभी से बचाता है। वह उसकी सभी हड्डियों की रक्षा करता है; उनमें से एक भी नहीं टूटेगी (भजन संहिता 33:16–21; तुलना करें 1 पतरस 3:12)।

अपनी चिंताएँ प्रभु पर डाल दो, और वह तुम्हें सहारा देगा। वह धर्मी को कभी भी डगमगाने नहीं देगा (भजन संहिता 54:23; तुलना करें 32:18-19)।

धर्मी खजूर के पेड़ की तरह फलते-फूलते हैं; वे लेबनान के देवदार के समान ऊँचे बढ़ते हैं। 14 जो यहोवा के भवन में लगाए गए हैं, वे हमारे परमेश्वर के आँगनों में फलते-फूलते हैं; 15 वे वृद्धावस्था में भी फलदायी, सदा हृष्ट-पुष्ट और ताज़ा रहते हैं, 16 यह घोषित करने के लिए कि यहोवा धर्मी है, मेरा दृढ़ शिला है, और उसमें कोई अधर्म नहीं है (भजन संहिता 91:13-16)।

जैसे एक पिता अपने बच्चों पर दया करता है, वैसे ही प्रभु उन पर दया करते हैं जो उनसे डरते हैं… प्रभु की दया उन पर जो उनसे डरते हैं, युगानुयुग बनी रहती है, और उनकी धार्मिकता उनके बच्चों के बच्चों तक पहुँचती है, उन पर जो उनकी वाचा का पालन करते हैं और उनके आज्ञाओं को याद रखते हैं कि उन्हें पूरा करें (भजन संहिता 102:13, 17-18)।

प्रभु उन सब के निकट है जो पुकारते हैं, उन सब के जो सच्चाई से पुकारते हैं। वह अपने भक्तों की इच्छा पूरी करता है; वह उनकी पुकार सुनता है और उन्हें बचाता है। प्रभु अपने प्रेमियों की रक्षा करता है, परन्तु वह सब दुष्टों का नाश कर देगा (भजन संहिता 144:18-20)।

धर्मी के सिर पर आशीषें होती हैं, परन्तु दुष्टों का मुँह हिंसा से बंद हो जाएगा (नीतिवचन 10:6)।

क्या दो छोटे पक्षी एक पैसा में नहीं बिकते? फिर भी, तुम्हारे पिता की इच्छा के बिना उनमें से एक भी नहीं गिरेगा; और यहाँ तक कि तुम्हारे सिर के सारे बाल भी गिने हुए हैं (मत्ती 10:29-30)।

मेरे नाम के कारण तुम सब से घृणा की जाएँगी, पर तुम्हारे सिर का एक भी बाल नष्ट नहीं होगा (लूका 21:17–18)।

प्रभु जानते हैं कि धर्मी को परीक्षा से कैसे बचाना है, और अधर्मी को न्याय के दिन दंडित होने के लिए कैसे सुरक्षित रखना है (2 पतरस 2:9)।

जो लोग परमेश्वर से प्रेम करते हैं, जिन्हें उनके उद्देश्य के अनुसार बुलाया गया है, उनके लिए सब कुछ भलाई के लिए मिलकर काम करता है (रोमियों 8:28)।

[1721] स्टैगैरियस को, उपदेश 1, खंड II, पृ. 265–266, सेंट जॉन क्राइसोस्टोम के उपदेशों के खंड III में, 1850 में सेंट पीटर्सबर्ग थियोलॉजिकल अकादमी द्वारा रूसी में अनुवादित।

धर्मी लोगों के प्रति परमेश्वर की विशेष व्यवस्था के कई उदाहरणों में से, हम कुछ का उल्लेख करेंगे:

(क) धर्मी नूह और उनका परिवार, जिन्हें प्रभु ने सार्वभौमिक प्रलय के दौरान विनाश से बचाया (उत्पत्ति 7:18; 8:4);

ख) इब्राहीम, विश्वासियों के पिता, जिनके साथ परमेश्वर का दयालु हाथ सदा उपस्थिति था, जो सभी प्रलोभनों के बीच उन्हें मजबूत करता था और विपत्तियों से बचाता था (उत्पत्ति 12:1; 22:2); ग) पवित्र यूसुफ पर, जिसे उसके भाइयों ने बेच दिया और मिस्र ले जाया गया, और जिसने बाद में अपने भाइयों से कहा: *'तुमने मुझे नुकसान पहुँचाने का इरादा किया था, लेकिन ईश्वर ने इसे भलाई के लिए किया* (उत्पत्ति 50:20);

घ) राजा और नबी दाऊद, जिन्होंने अपने ऊपर परमेश्वर का हाथ बहुत स्पष्ट रूप से देखा, विशेष रूप से शाऊल और अपने ही पुत्र अबीशालोम द्वारा सताए जाने के दौरान, और जिन्होंने भजनों में अक्सर इसका इकरार किया (देखें भजन 17:22; 26:33; 102, आदि);

(ई) भविष्यवक्ता एलियाह, जिनकी कौवों द्वारा (1 राजा, अध्याय 17) और बाद में एक स्वर्गदूत द्वारा (अध्याय 19) चमत्कारिक रूप से व्यवस्था की गई;

f) सभी पवित्र प्रेरित, जिन्होंने अपने ऊपर परमेश्वर की विशेष व्यवस्था को महसूस करते हुए, गवाही दी: *हम अज्ञात हैं, फिर भी हमें पहचाना जाता है; हमें मृतक माना जाता है, फिर भी देखो, हम जीवित हैं; हमें दंडित किया जाता है, फिर भी हम नहीं मरते; हम दुखी हैं, फिर भी हम हमेशा आनंदित रहते हैं; हम गरीब हैं, फिर भी हम बहुतों को धनी बनाते हैं; हमारे पास कुछ भी नहीं है, फिर भी हम सब कुछ के स्वामी हैं* (2 कुरिन्थियों 6:9–10)।

2. "लेकिन यदि, वास्तव में, यह कहा जाता है कि मनुष्य के संबंध में ईश्वर की एक विशेष व्यवस्था है, और यदि ईश्वर, न्यायी होने के नाते, पापियों की तुलना में धर्मी लोगों की अधिक परवाह करते हैं, तो फिर हम स्वयं जीवन में इसकी पुष्टि क्यों नहीं देखते? यह क्यों है कि धर्मी अक्सर पृथ्वी पर कष्ट सहते हैं, जबकि पापी फलते-फूलते हैं और सुख की सभी आशीषों का आनंद लेते हैं?" इस भ्रम के जवाब में, जिसे युगों-युगों से व्यक्त किया जाता रहा है और जो अक्सर दोहराया जाता है, पहले से कही गई बातों (§ 21 में) के अलावा, आइए हम आगे यह अवलोकन करें:

2.1. हम अक्सर सदाचारी और दुष्ट लोगों के बारे में अपने निर्णय में गलत होते हैं, क्योंकि हम दोनों का निर्णय केवल बाहरी दिखावे से करते हैं, और उनके दिलों की गहराइयों में झाँककर उनके गुप्त कर्मों को जानने में असमर्थ होते हैं। हम अक्सर उन लोगों को सदाचारी मान लेते हैं जो केवल धार्मिकता का मुखौटा पहनते हैं और कुशलता से अपनी बुराइयों को छिपाते हैं, जबकि वे गुप्त रूप से उनमें लगातार लिप्त रहते हैं; जबकि हम उन लोगों को पापी और दुष्ट मानते हैं, जिन्हें उनकी निर्दोषता के बावजूद, ईर्ष्या और द्वेष बदनामी के माध्यम से कलंकित करते हैं, या जो शायद लापरवाही से, किसी घोर गैरकानूनी कृत्य द्वारा, केवल एक बार ही स्वयं को कलंकित कर चुके हैं, और जिन्होंने बाद में इसके लिए सच्चे मन से पश्चाताप किया है और उत्साहपूर्वक एक धार्मिक जीवन जीते हैं। केवल *प्रभु ही सब दिलों को परखता है और मन की सभी गतिविधियों को जानता है* (1 इतिहास 28:9); केवल वही बिना त्रुटि के निर्णय कर सकता है कि कौन वास्तव में धर्मी है और कौन पापी है।

2.2. हम अक्सर अपने पड़ोसियों की खुशी या दुख के बारे में अपने निर्णयों में भी गलत होते हैं। हम किसी पापी को 'खुश' कहते हैं, उदाहरण के लिए, केवल इसलिए कि वह अमीर है, विशेष सम्मान और मान-सम्मान का आनंद लेता है, और सुख-भोग में लिप्त रहता है। फिर भी हम यह नहीं जानते कि यह व्यक्ति शायद सबसे बड़ी पारिवारिक विपत्तियों को झेल रहा हो, जिन्हें वह केवल छिपाता है; कि यह व्यक्ति शायद अपनी आत्मा को चीरने वाली इच्छाओं और दुर्गुणों के क्रूस को उठाए हुए हो, जो उसकी शक्ति को कम कर देते हैं, उसे विभिन्न बीमारियों के संपर्क में लाते हैं और उसे समय से पहले कब्र में पहुँचा देते हैं; कि वह अक्सर अंतरात्मा के कटु वेदनाओं से पीड़ित रहता है, शर्म, और क्षणिक तथा शाश्वत दंड का भय। इसके विपरीत, हम किसी धर्मी व्यक्ति को केवल इसलिए 'दुर्भाग्यपूर्ण' कहते हैं क्योंकि वह गरीब है, उसे सांसारिक सम्मान नहीं मिलता, और वह सुखों का आनंद नहीं लेता — जबकि वास्तव में धर्मी व्यक्ति की आत्मा सांसारिक वस्तुओं की बिल्कुल भी लालसा नहीं करती, जो परिणामस्वरूप, उसके लिए खुशी का कारण नहीं बन सकतीं; लेकिन धर्मी लोगों के लिए सच्ची खुशी उनकी धार्मिकता और निर्दोषता की जागरूकता में, एक स्पष्ट अंतरात्मा में, आध्यात्मिक आनंद (रोमियों 14:17) में और मृत्यु के बाद शाश्वत आनंद प्राप्त करने की आशा में निहित है।

2.3. यदि परमेश्वर वास्तव में धर्मपरायण लोगों को पृथ्वी पर अक्सर विपत्तियों को सहने देते हैं, तो यह उनके अपने भले के लिए है। सबसे पहले, एक भी धर्मी व्यक्ति ऐसा नहीं है जो सभी पापों से पूरी तरह से मुक्त हो (नीतिवचन

24:16; 1 यूहन्ना 1:8): परीक्षाओं और दुखों के बीच, धर्मी व्यक्ति की आत्मा, *भट्टी में सोने की* तरह शुद्ध हो जाती है (ज्ञान 3:6; 1 पतरस 1:6–7)। दूसरा, क्लेश और परीक्षाएँ धर्मी लोगों को भलाई में और अधिक मज़बूत करती हैं, उनकी नैतिक गरिमा को ऊँचा उठाती हैं, परमेश्वर के प्रति उनके प्रेम और उनके गुणों को और अधिक शुद्ध तथा निस्वार्थ बनाती हैं, और उनमें नए गुणों को प्रकट करती हैं: धैर्य, उदारता, साहस और अन्य: *और न केवल इतना ही, बल्कि हम अपनी पीड़ाओं पर भी घमंड करते हैं, यह जानते हुए कि पीड़ा से धैर्य, धैर्य से सिद्ध चरित्र, सिद्ध चरित्र से आशा उत्पन्न होती है, और आशा हमें लज्जित नहीं करती* (रोमियों 5:3–5); *इसलिए हम हियाव नहीं छोड़ते; परन्तु चाहे हमारा बाहरी मनुष्य क्षीण हो जाता है, तौभी हमारा भीतरी मनुष्य दिन-दिन नया होता जाता है* (2 कुरिन्थियों 4:16)। तीसरा, क्लेश और परीक्षाएँ धर्मी लोगों की भविष्य की महिमा को ऊँचा उठाने में योगदान करती हैं: *क्योंकि, यद्यपि उन्हें मनुष्यों की दृष्टि में दण्ड दिया जाता है, परन्तु उनकी आशा अमरत्व से परिपूर्ण है। और थोड़ी सी दंड-भोग के बाद, वे अत्यधिक धन्य होंगे, क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें परखा है और उन्हें अपने योग्य पाया है* (ज्ञान 3:4-5); *क्योंकि हमारी क्षणिक और हलकी क्लेश, एक अमापनीय प्रचुरता में, अनंत महिमा उत्पन्न करती है* (2 कुरिन्थियों 4:17)।

इसके अलावा, भले ही ईश्वर धर्मी लोगों को पृथ्वी पर दुख और कष्ट सहने दें, वह—

क) वह उन्हें अपनी मदद के बिना कभी नहीं छोड़ता, न ही उन्हें उनकी क्षमता से अधिक परीक्षा में डालता है: *हम हर ओर से घिरे हुए हैं, फिर भी कुचले नहीं गए; हम कठिन परिस्थितियों में हैं, फिर भी निराश नहीं हैं; हम सताए जाते हैं, परन्तु त्यागे हुए नहीं; हम गिरा दिए जाते हैं, परन्तु नष्ट नहीं हुए* (2 कुरिन्थियों 4:8–9); *परमेश्वर विश्वासयोग्य है, जो तुम्हें अपनी शक्ति से अधिक परीक्षा में नहीं डालेंगे, बल्कि परीक्षा के साथ निकलने का मार्ग भी देंगे, ताकि तुम उसे सहन कर सको* (1 कुरिन्थियों 10:13);

6) वह उन्हें अपनी सांत्वना के बिना कभी नहीं छोड़ता: *क्योंकि जैसे मसीह की पीड़ाएँ हम में बहुतायत से हैं, वैसे ही मसीह के द्वारा हमारी सांत्वना भी बहुतायत से है* (2 कुरिन्थियों 1:5)। इसीलिए धर्मी लोगों पर परमेश्वर द्वारा भेजे गए परीक्षण और दुख उनके प्रति उनके प्रेम की गवाही देते हैं, जैसा कि प्रेरित कहते हैं: *'प्रभु जिसे प्रेम करते हैं, उसे अनुशासित करते हैं; और जिसे वे अपनाते हैं, उसे दण्ड देते हैं।' यदि आपको अनुशासित किया जा रहा है, तो परमेश्वर आपके साथ पुत्रों जैसा व्यवहार कर रहे हैं। क्योंकि ऐसा कौन सा पुत्र है जिसे उसका पिता अनुशासित नहीं करता? परन्तु यदि आपको अनुशासन के बिना छोड़ दिया गया है—जो सभी के लिए सामान्य है—तो आप नाजायज़ संतान हैं, न कि पुत्र* (इब्रानियों 12:6-8)।

2.4. दूसरी ओर, यदि परमेश्वर दुष्ट लोगों पर सांसारिक सुख के उपहार अक्सर प्रदान करता है, तो यह भी एक अच्छे उद्देश्य के लिए है। पापियों—जो उसकी इच्छा का विरोध करते हैं—पर अपनी आशीर्वादों के माध्यम से, वह उनके ठंडे दिलों को गर्म करना चाहता है, उन्हें अपने पितृत्वपूर्ण प्रेम से छूना और उन्हें अपने पक्ष में करना चाहता है, *बुराई को अच्छाई से जीतना* चाहता है (रोमियों 12:21), उनमें पश्चाताप की भावना जगाने के लिए (रोमियों 2:4), उन्हें दुष्टता की खाई से बाहर निकालने और उन्हें सद्गुण के मार्ग पर स्थापित करने के लिए (2 पतरस 3:9; नीतिवचन 25:22; रोमियों 12:20)। और यदि पापी इस कोमल आवाज़ पर ध्यान नहीं देते जो उन्हें पश्चाताप के लिए बुलाती है, यदि वे अपने उद्धार के साधन के रूप में परमेश्वर के आशीर्वादों का उपयोग करने का प्रयास नहीं करते, और *अपने हठी स्वभाव और अविश्वासी हृदय के कारण* दुष्टता में बने रहते हैं, *तुम स्वयं क्रोध के दिन और परमेश्वर के धर्मी न्याय के प्रकट होने के लिए अपने लिए क्रोध इकट्ठा कर रहे हो* (रोमियों 2:5)।

2.5. यह ध्यान में रखना चाहिए कि जिन दुर्भाग्यों के अधीन धर्मी लोग होते हैं, वे अक्सर लोगों पर, उनकी अन्याय और दुर्भावना पर निर्भर करते हैं; ठीक उसी तरह जैसे पापियों की सौभाग्यपूर्ण परिस्थितियाँ भी अक्सर लोगों पर, उनकी कृपा, पक्षपात और इसी तरह के कारणों पर निर्भर करती हैं। परिणामस्वरूप, यहाँ मानवीय स्वतंत्रता कार्य कर रही है। परन्तु परमेश्वर, जैसे कि वह सामान्यतः अपनी सृष्टियों की स्वतंत्रता को प्रतिबंधित नहीं करते, वैसे ही इस मामले में भी इसे प्रतिबंधित नहीं कर सकते और न ही करना चाहते हैं; जैसे कि वह सामान्यतः लोगों को बुराई करने की अनुमति देते हैं, वैसे ही, विशेष रूप से, वह उन्हें इस प्रकार की बुराई करने की अनुमति देते हैं, जिससे वे अन्यायपूर्वक धर्मी लोगों का उत्पीड़न करते हैं और पापियों का पक्ष लेते हैं। यही कारण है कि उद्धारकर्ता ने अपने शिष्यों से कहा: *'यदि संसार तुम से बैर रखता है, तो यह जानो कि उसने तुम से बैर रखने से पहिले मुझ से बैर रखा। यदि तुम संसार के होते, तो संसार अपना प्रेम करता; परन्तु तुम संसार के नहीं हो, वरन् मैं तुम्हें संसार में से चुन चुका हूँ, इसलिये संसार तुम से बैर रखता है। मेरे कहे हुए वचन को याद करो: 'सेवक अपने मालिक से बड़ा नहीं होता।' उन्होंने यदि मेरा तिरस्कार किया, तो तुम्हारा भी*

तरिस्कार करेंगे (यूहन्ना 15:18–20)। इसीलिए प्रेरति ने भवष्यिद्वाणी की: *'जो कोई मसीह यीशु में भक्त‍ि से जीना चाहता है, वह सताया जाएगा* (2 तीमुथियुस 3:12)। यह तो अपेक्षति ही है: संसार, जो दुष्टता में पड़ा है, प्रकाश के बच्चों, यानी धर्मी लोगों को, सताए बनिा उनसे प्रेम नहीं कर सकता। परमेश्वर केवल, जहाँ तक संभव हो, पापयिों द्वारा उन पर डाले गए इस बुराई से धर्मी लोगों के लिए कुछ नैतकि भलाई नकिालता है।[1722]

2.6. यह वर्तमान जीवन प्रयास का समय है: धर्मी और पापी दोनों ही यहाँ अभी भी सक्रयि हैं, कुछ एक तरह से, कुछ दूसरी तरह से, और उन्होंने अभी तक अपना मार्ग पूरा नहीं कयिा है। इसलिए, उनका पुरस्कार यहाँ नहीं होना चाहिए, बल्कि केवल उनके प्रयासों के समाप्त होने के बाद ही होना चाहिए। और ऐसा ही होगा: यह सबसे न्यायसंगत प्रतफिल आने वाले जीवन में, कब्र के पार के जीवन में मलिेगा, जहाँ *धर्मी अपने पति‍ा के राज्य में सूर्य के समान चमकेंगे* (मत्ती 13:43), और पापयिों को *शैतान और उसके स्वर्गदूतों के लिए तैयार की गई अनंत आग में* डाल दयिा जाएगा (मत्ती 25:41)। संत जॉन क्राइसोस्टोम कहते हैं, 'चूँकि हमें स्वर्ग का राज्य प्रकट कयिा गया है, और आने वाले जीवन में पुरस्कार दखिाया गया है, इसलिए अब यह पूछने की कोई आवश्यकता नहीं है कि धर्मी यहाँ क्यों दुख सहते हैं, जबकि दुष्ट आनंद में रहते हैं। क्योंकि यदि वहाँ प्रत्येक व्यक्ति के लिए उसके कर्मों के अनुरूप पुरस्कार प्रतीक्षा कर रहा है, तो हमें यहाँ की घटनाओं से, चाहे वे सुखद हों या दुखद, परेशान क्यों होना चाहिए? इन परीक्षणों के माध्यम से, ईश्वर उन लोगों को प्रशक्षिति करते हैं जो उन पर आज्ञाकारी हैं, जैसे कि वे पराक्रमी पहलवान हों; जबकि वह पहले कमजोरों, लापरवाहों और जो कुछ भी कठनि सहन करने में असमर्थ हैं, उन्हें अच्छे कर्म करने की शक्षिा देते हैं।"[1723]

2.7. अंत में, यह सर्वविदति है कि पृथ्वी पर सभी धर्मी लोग ज़रूरतमंद नहीं होते, न ही वे हर समय ऐसे होते हैं; इसके वपिरीत, वे अक्सर जीवन के आशीर्वादों का आनंद लेते हैं, और *धार्मकि लोगों के घर* परमेश्वर द्वारा स्पष्ट रूप से *आशीर्वादति होते हैं* (नीतविचन 3:33)। इसी तरह, सभी पापी यहाँ सफल नहीं होते, न ही वे हमेशा ऐसा करते हैं; बल्कि, वे अक्सर अपने ही पापों से पीड़ति होते हैं (ज्ञान 11:17), अक्सर मनुष्यों के हाथों उचति दंड सहते हैं, और *दुष्टों के घरों में प्रभु का श्राप* अक्सर सभी द्वारा स्पष्ट रूप से महसूस कयिा जाता है (नीतविचन 3:33)। और इसके भी कारण हैं। संत जॉन क्राइसोस्टोम आगे कहते हैं, 'यदि, हालांकि, इसके वपिरीत अक्सर होता है, यदि कई धर्मी लोग शांति और सम्मान में रहते हैं, जबकि दुष्ट अपमान और अत्यधकि दुर्भाग्य में रहते हैं, तो यह हमारे खलिाफ पहले उठाए गए आपत्ति का खंडन करता है, जसिकी ताकत इस तथ्य में नहिति थी कि धर्मी यहाँ दुख सहते हैं, जबकि दुष्ट आनंद का अनुभव करते हैं। लेकनि यदि हमें इसे भी सुलझाना है (यानी, यहाँ भी धर्मात्मा कभी-कभी खुश क्यों होते हैं जबकि दुष्ट पीड़ति होते हैं), तो मैं कहूँगा कि ईश्वर हमारी भलाई का प्रबंध वभिन्नि तरीकों से करते हैं; फरि भी, अपने साधनों में अक्षय होते हुए, वे मोक्ष के कई मार्ग प्रशस्त करते हैं। चूंकि कई लोग आने वाले जीवन और पुनरुत्थान के बारे में शक्षिाओं को स्वीकार करने के लिए अनचि्छुक हैं, वह यहाँ न्याय की एक छोटी सी झलक प्रस्तुत करते हैं, अर्थात् दुष्टों को दंड देकर और अच्छे लोगों को पुरस्कृत करके। यह भवष्यि के न्याय में पूरी तरह से साकार होगा, लेकनि यह आंशकि रूप से यहाँ और अभी साकार हो रहा है, ताकि जो लोग उस न्याय की दूरता के कारण पाप में डूब गए हैं, वे कम से कम वर्तमान में हो रही घटनाओं से होश में आ सकें। यदि यहाँ दुष्टों में से कसिी को भी दंडति नहीं कयिा जाता, और धर्मात्माओं में से कसिी को भी पुरस्कार नहीं मलिता, तो पुनरुत्थान के सद्धिांत पर वश्विास न करने वालों में से कई लोग सदाचार से मुंह मोड़ लेंगे, और इसे बुराई का कारण मानकर पाप को अच्छाई का कारण समझकर उससे प्रेम करेंगे; दूसरी ओर, यदि यहाँ हर कसिी को उसका उचति पुरस्कार मलि जाए, तो वे सोचेंगे कि अंतमि न्याय का सद्धिांत अनावश्यक और झूठा है। इसलिए, ताकि इस सद्धिांत पर सवाल न उठाया जाए, और ताकि अनगनित और अज्ञानी जन लापरवाही के कारण और बुरे न हो जाएँ, ईश्वर यहाँ भी कई पापयिों को दंडति करते हैं और कुछ धर्मात्माओं को पुरस्कृत करते हैं; और सभी के साथ ऐसा न करके, वह अंतमि न्याय के सद्धिांत की पुष्टि करते हैं; जबकि अंतमि न्याय से पहले कुछ लोगों को दंड देकर, वह गहरी नींद में सो रहे लोगों को जगाते हैं। दुष्टों पर पड़ने वाली सज़ा के कारण, कई लोग इस डर से सुधर जाते हैं कि उनके साथ भी ऐसा

[1722] 'धर्मयिों को दुष्टों के हाथों में सौंप दयिा जाना असामान्य नहीं है—दुष्टों की महमिा के लिए नहीं, बल्कि धर्मयिों की परीक्षा के लिए। और यद्यपि, धर्मग्रंथ के अनुसार, *यदि वह अचानक उन्हें कोड़े से पीटता है, तो वह नर्दिोषों के कष्ट का उपहास करता है* (अय्यूब 9:23), फरि भी ईश्वर की दया और भवष्यि में उनके दोनों के लिए तैयार कए गए महान खजाने तब तक छपि रहते हैं, जब तक वह समय नहीं आ जाता जब वचन, कर्म और वचिार ईश्वर के न्यायसंगत तराजू पर तौले जाएँगे" *(ग्रेगरी द थियोलोजयिन,* यूलोजी टू एथनासयिस द ग्रेट, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, II, 190)।

[1723] स्टाजरि पर, अध्याय 1, II, 16, पृ. 278, *सेंट जॉन क्रसिोस्टोम के* होमलीज़ के खंड III में, रूसी अनुवाद।

ही हो सकता है; और क्योंकि यहाँ हर किसी को उसकी योग्यता के अनुसार दंड नहीं मिलता, कई लोग अनजाने में यह सोचने लगते हैं कि इस (पूर्ण प्रतिफल) को किसी और समय के लिए टाल दिया गया है। एक न्यायप्रिय ईश्वर निश्चित रूप से इतने सारे दुष्ट लोगों को बिना सज़ा के इस जीवन से जाने नहीं देंगे, और न ही शुभ लोगों को अनगिनत दुर्भाग्यों को सहने देंगे, यदि उन्होंने आने वाले युग में दोनों के लिए एक अलग अवस्था तैयार न की होती। इसीलिए वह सभी को नहीं, बल्कि केवल कुछ लोगों को दंडित और पुरस्कृत करते हैं।[1724]

§ 120. वे तरीके जिनसे ईश्वर मानवता का पालन-पोषण करते हैं और अगले भाग में संक्रमण

जिस प्रकार ईश्वर मानव जाति के लिए प्रबंध करते हैं, वे अनेक और विविध हैं; लेकिन वे सभी दो मुख्य श्रेणियों में आते हैं, जिनमें से एक को प्राकृतिक मार्ग और दूसरे को अलौकिक मार्ग कहा जाता है।

ईश्वर की मानव जाति के लिए प्राकृतिक व्यवस्था में उनका संरक्षण करना, उन्हें अच्छे कार्यों में सहायता करना, और उन्हें प्राकृतिक साधनों द्वारा उनके अस्तित्व के अंतिम उद्देश्य की ओर मार्गदर्शन करना शामिल है; अर्थात्, मानव स्वभाव और बाहरी दुनिया में निहित शक्तियों और कानूनों के माध्यम से, और दुनिया में घटनाओं और परिस्थितियों के प्राकृतिक क्रम के माध्यम से। उदाहरण के लिए:

(क) *हमें स्वर्ग से वर्षा और फलदायी मौसम भेजकर, और हमारे हृदयों को भोजन और आनंद से भरकर* (प्रेरितों के काम 14:17);

ख) जब वह हमारे अंतरात्मा के माध्यम से हमें सत्य और सदाचार के मार्ग पर मार्गदर्शन करता है—जैसा कि अन्यजातियों के मामले में है, *जो यह दर्शाते हैं कि कानून की मांगें उनके हृदयों पर लिखी हुई हैं, जैसा कि उनका अंतरात्मा और उनके विचार गवाही देते हैं* (रोमियों 2:15)—या नागरिक कानूनों के माध्यम से (नीतिवचन 8:15) और शासकों के माध्यम से, जो *परमेश्वर के सेवक के रूप में और कुछ नहीं हैं, तुम्हारे भले के लिए;* और *वह परमेश्वर का सेवक है, जो बुराई करने वालों को दंड देने के लिए दंडदाता है* (रोमियों 13:3–6);

ग) जब वह पाप के अवसरों को दूर करके हमें बुराई करने से रोकता है, जैसा कि शाऊल के उदाहरण में देखा गया है (1 शमूएल 19:11), या हमारे अधर्मी प्रयासों के विरुद्ध महान शक्तियों को खड़ा करके, जैसा कि उसने अबीशालोम के साथ किया था (2 शमूएल 18);

(घ) जब वह पापियों को प्राकृतिक तरीके से दंडित करता है, ताकि वे होश में आएं और उनका सुधार हो (1 कुरिन्थियों 11:32), या ताकि उनका दंड दूसरों को होश में लाए और उनका सुधार करे (2 पतरस 2:6); ई) जब वह परिस्थितियों का ऐसा प्रबंध करता है कि दुष्ट कर्मों से लोगों के लिए अच्छे परिणाम उत्पन्न हों, जिसका एक उदाहरण यूसुफ की कहानी में मिलता है (उत्पत्ति 50:20)।

मनुष्यजाति के लिए ईश्वर की अलौकिक व्यवस्था तब होती है जब प्रभु, जो हमारी परवाह करते हैं, हमारे भले के लिए अलौकिक और चमत्कारिक साधनों का उपयोग करते हैं। इस प्रकार, उन्होंने ज़ारेफ़थ की गरीब विधवा को दो साल के अकाल के दौरान चमत्कारिक रूप से जीवित रखा; अद्भुत रूप से सीरियाई सेनापति Naaman को कुष्ठ रोग से चंगा किया; अद्भुत रूप से बेबीलोन की भट्टी में तीन युवकों को बचाया; अद्भुत रूप से प्रेरित पतरस को जेल से मुक्त किया; अद्भुत रूप से सऊल का ईसाईकरण किया; और इसी प्रकार अन्य कई उदाहरण हैं। लेकिन मानव जाति के प्रति ईश्वर की अलौकिक व्यवस्था के इन विशिष्ट उदाहरणों—जो अत्यंत विविध और बहुविध हैं—के अलावा, इस श्रेणी में विशेष रूप से दिव्य व्यवस्था के उन सभी अलौकिक कार्यों की शृंखला भी शामिल है, जो प्रभु ने किए हैं और करते रहते हैं, विशेष रूप से समग्र मानव जाति के उद्धारकर्ता के रूप में, और जो हमारे इस ग्रंथ के अगले भाग का विषय बनेंगे।

[1724] उपरोक्त, पृ. 279–280; तुलना करें: *ग्रेगरी द थियोलोजियन,* *गरीबों के प्रति प्रेम पर उपदेश*, *द वर्क्स ऑफ द होली फादर्स*, खंड II, 36। वास्तव में, इस प्रश्न को कि धर्मी लोग अक्सर गरीबी क्यों झेलते हैं जबकि पापी समृद्धि प्राप्त करते हैं, कई चर्च फादर्स ने संबोधित किया है। उदाहरण के लिए देखें: *एम्ब्रोज़,* *ऑफिसियम* 1, पृ. 12; *बोस्टन के टाइटस,* *कॉन्ट्रा मनीकियस*, पुस्तक II; *थियोडोरेट,* *दिव्य प्रावधान पर अंतिम पाँच पुस्तकों पर टीका*; *ऑगस्टीन,* *भजन संहिता पर टीका* 36 और 136; *साल्वियन,* *दिव्य प्रावधान पर*; *जूलियन अफ़्रीकन,* दैवीय कानून के भागों पर, पुस्तक II; *अलेक्जेंड्रिया के सिरिल,* जूलियन के विरुद्ध, पुस्तक III; *नेमेसियस,* मनुष्य की प्रकृति पर, अध्याय 44।

§ 121. सिद्धांत का नैतिक अनुप्रयोग

1. पृथ्वी के राज्यों का भाग्य सर्वशक्तिमान के दाहिने हाथ में है। वह राष्ट्रों को *शांति का आशीर्वाद देता है* (भजन संहिता 28:11), उन पर पृथ्वी की उदारताएँ प्रदान करता है, और जब राष्ट्र उसके नियम के प्रति विफादार होते हैं तो उन्हें ऊँचा उठाता और महिमामय बनाता है; वह उन पर विपत्तियाँ भी भेजता है, *राष्ट्रों को* नम्र करता है और यहाँ तक कि *नष्ट भी कर देता है* (भजन संहिता 43:3) जब वे उससे बेवफ़ा होते हैं और दुष्टता में स्वयं को दे देते हैं (यिर्मयाह 18:6-10)। इससे हर राष्ट्र के लिए तीन महत्वपूर्ण सबक निकलते हैं:

(क) सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, सच्चे विश्वास और अच्छे कर्मों के माध्यम से परमेश्वर को प्रसन्न करने का ध्यान रखना: क्योंकि वह *राष्ट्रों का न्याय करता है* (भजन संहिता 66:5; 95:10), और *प्रत्येक व्यक्ति को उनके कर्मों के अनुसार प्रतिफल देगा* (रोमियों 2:6) — यही कारण है कि बुद्धिमान ने कहा, यह *धार्मिकता* ही है जो *किसी राष्ट्र को गौरवान्वित करती है, जबकि अधर्म राष्ट्रों पर अपमान लाता है* (नीतिवचन 14:34);

ख) सार्वजनिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी सभी सच्ची सफलताओं, अपनी भलाई, समृद्धि, महिमा और सभी सुखद परिस्थितियों का श्रेय स्वयं को न देकर ईश्वर को देना (भजन संहिता 126:11), और भजनकार के साथ यह उद्घोष करते हुए उनकी स्तुति करना: *'प्रभु, महिमा हमें नहीं, हमें नहीं, बल्कि तेरे नाम की महिमा हो, तेरी दया और तेरे सत्य के कारण'* (भजन संहिता 113:9);

ग) सार्वजनिक विपत्ति या खतरे के समय में, सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, दया और सहायता के लिए उत्कट प्रार्थनाओं के साथ उसकी ओर मुड़ना, और पापों के लिए सच्ची पश्चाताप और अपने चरित्र के सुधार के माध्यम से उसकी कृपा प्राप्त करने का प्रयास करना।

२. पृथ्वी के राज्यों पर शासन करने में, सर्वोच्च स्वयं उन पर राजा नियुक्त करते हैं, संस्कारात्मक अभिषेक के माध्यम से अपने चुने हुओं पर शक्ति और अधिकार प्रदान करते हैं, और लोगों के भले के लिए उन्हें सम्मान और महिमा का मुकुट पहनाते हैं। अतः देशभक्त की प्रत्येक संतान का कर्तव्य है:

(क) अपने सम्राट का परमेश्वर के अभिषिक्त के रूप में सम्मान करना (भजन संहिता 104:15; तुलना करें नीतिगमन 22:28);

ख) उसे एक सामान्य पिता के रूप में प्रेम करना, जिसे सर्वोच्च ने राष्ट्र के महान परिवार को दिया है, और जो प्रत्येक व्यक्ति की खुशी के लिए चिंतित है;

(ग) उन्हें उच्च से प्राधिकरण प्राप्त व्यक्ति के रूप में, और एक ऐसे व्यक्ति के रूप में आज्ञा मानना जो स्वयं ईश्वर द्वारा अपने शाही फरमानों में शासित और निर्देशित होता है (नीतिवचन 8:15; 21:1); घ) राजा के लिए प्रार्थना करना, कि प्रभु उसे अपने प्रजा की खुशी के लिए स्वास्थ्य और उद्धार, सभी अच्छे प्रयासों में सफलता, और अपने शत्रुओं पर विजय और जीत प्रदान करें, और कि वह उसे दीर्घायु प्रदान करें (1 तीमु. 2:1)।

3. राजाओं के माध्यम से, जो उनके अभिषिक्त हैं, परमेश्वर सभी निम्न प्राधिकरणों को राष्ट्रों के पास भेजते हैं। इसलिए हर नागरिक का कर्तव्य है:

(क) *हर मानवीय प्राधिकरण के* अधीन रहने के लिए, *प्रभु के लिए* (1 पतरस 2:13) — क्योंकि *जो कोई भी प्राधिकरण का विरोध करता है, वह परमेश्वर की आज्ञा का विरोध करता है* (रोमियों 13:2);

ख) *हर किसी को उसका हक देना: जिससे कर वसूल किया जाता है, उसे कर; जिससे शुल्क वसूल किया जाता है, उसे शुल्क; जिससे सम्मान मिलता है, उसे सम्मान; जिससे आदर मिलता है, उसे आदर* (7); और

ग) *राजाओं और सत्ता में रहने वालों के लिए* प्रार्थना करना, *ताकि हम हर धर्मपरायणता और पवित्रता में एक शांत और शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत करें* (1 तीमु. 2:2)।

४. हम में से प्रत्येक की तक़दीर भी सर्वशक्तिमान के दाहिने हाथ में है। वह *मारता भी है और जिलाता भी है, कब्र में उतारता भी है और उठाता भी है;* वह *गरीब करता भी है और अमीर भी बनाता है, नीचा भी करता है और ऊँचा भी करता है* (1 शमूएल 2:6-8)। और इसलिए,

क) भले ही हमारे काम अच्छी तरह से चलें, हमें घमंड न करना चाहिए, क्योंकि जो कुछ भी हमारे पास है वह हमारा अपना नहीं है, बल्कि यह ईश्वर की व्यवस्था पर निर्भर करता है, जिसने हमें ये आशीर्वाद दिए हैं, वह इन्हें वापस भी ले सकता है (1 कुरिन्थियों 4:7; याकूब 1:17);

ख) यदि हमें दुर्भाग्य आता है, तो हमें निराश न हों: क्योंकि दुर्भाग्य भी सर्व-ज्ञानी और सर्व-सत्कार्य करने वाली दिव्य व्यवस्था द्वारा हमें भेजे जाते हैं, जो उन्हें हमारी शक्ति के अनुसार मापती है (1 कुरिन्थियों 10:13), और उन्हें हमारे नैतिक लाभ की ओर निर्देशित करती है (1 पतरस 1:6-7; रोमियों 5:3–5);

ग) हम हमेशा और हर चीज़ में परमेश्वर पर भरोसा करें, सुख के समय में उनकी सभी दया और अनुग्रह के लिए उनका धन्यवाद करें, और दुख के समय में उनकी मदद और मध्यस्थता माँगें।

5. सभी लोगों की देखभाल करते हुए, प्रभु विशेष रूप से *धर्मी लोगों से प्रेम करते हैं* (भजन संहिता 145:8), और उन पर ही वह *अपनी अद्भुत दया* सबसे अधिक दिखाते हैं; वह उन्हें *अपनी आँख के तारे की तरह* सुरक्षित रखते हैं (भजन संहिता 16:7-8) — यह हम में से प्रत्येक के लिए पाप से बचने और *स्वयं को धार्मिकता में प्रशिक्षित करने* (1 तीमु. 4:7) के लिए एक प्रोत्साहन हो, ताकि हम भी परमेश्वर के चुने हुओं में गिने जाएँ, जिनके लिए *सब कुछ मिलकर भलाई के लिए काम करता है* (रोम. 8:28)।